MPPSC **2026**

सहायक प्राध्यापक

पेपर – II

मनोविज्ञान
PSYCHOLOGY

अध्यायवार MCQs

Nodia

Scan QR for Demo PDF

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग
2026

सहायक प्राध्यापक
पेपर – II

मनोविज्ञान

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक
आयोग द्वारा जारी पाठ्यक्रम के अनुसार

NODIA

MPPSC सहायक प्राध्यापक मनोविज्ञान
Edition May 2026
Published by :NODIA
An Imprint of NODIA EDITIONS LLP

MRP ₹620.00

NODIA

NODIA EDITIONS LLP
125, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur 302039
Phone :+91 9001005245
email : mail@nodia.in

विषय-सूची

सहायक प्राध्यापक परीक्षा–2026
द्वितीय प्रश्न–पत्र
पाठ्यक्रम – मनोविज्ञान

इकाई– 01 प्रस्तावना अध्ययन विधियाँ, व्यवहार के दैहिक आधार एवं भारतीय मनोविज्ञान

- मनोविज्ञान एक विज्ञान, स्वरुप एवं कार्यक्षेत्र, अन्य सामाजिक विज्ञान एवं प्राकृतिक विज्ञान से संबंध।
- अध्ययन विधियाँ : प्रेक्षण, प्रयोगात्मक, नैदानिक या केस अध्ययन, साक्षात्कार, प्रश्नावली, सर्वे एवं अन्तरवस्तु विश्लेषण।
- ग्राहक, प्रभावक तथा समायोजक प्रक्रम, व्यवहार के वंशानुगत आधार, हारमोन्स– इनकी भूमिका शारीरिक वृद्धि, संवेगात्मक क्रियाएं एवं व्यक्तित्व विकास में।
- संवेदना : दृश्यात्मक, भावनात्मक एवं त्वचीय संरचना तथा कार्य।
- भारतीय मनोविज्ञान : स्वरुप, इतिहास एवं उपयोगिता व्यक्तित्व विकास के संदर्भ में।

इकाई–02 अवधान, प्रत्यक्षीकरण एवं अधिगम

- अवधान : स्वरुप तथा मूलभूत निर्धारक, चयनात्मक अवधान (मॉडल) संकेत पहचान सिद्धांत, अवधान के जैविक आधार।
- प्रत्यक्षीकरण : स्वरुप तथा निर्धारक, प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम।
- संरुप प्रतिभिज्ञान : चित्र प्रत्यक्षीकरण, गहराई, दूरी एवं गति–प्रत्यक्षीकरण।
- अधिगम : स्वरुप एवं सिद्धांत (पैवलाव, स्कीनर, हल, टॉलमैन एवं थार्नडाइक) कार्यक्रमिक अधिगम।
- शाब्दिक अधिगम : प्रविधियाँ, सामग्री एवं निर्धारक, सामान्यीकरण, विभेदन।

इकाई–03 स्मृति चिन्तन एवं समस्या समाधान

- स्मृति : अर्थ, संगघटक एवं प्रकार, विस्मरण के सिद्धांत, लघुकालीन स्मृति (STM) एवं दीर्घकालीन स्मृति, पृष्ठोन्मुख एवं अग्रोन्मुख व्यतिकरण।
- अर्थगत स्मृति मॉडल, अधि–स्मृति, अधि–संज्ञान, स्मृतिसुधार, स्मृति के संबंध में स्कीमा।
- चिन्तन : स्वरुप एवं प्रकार, चिन्तन में भाषा की भूमिका, सर्जनात्मक चिन्तन को प्रभावित करने वाले कारक।
- संप्रत्यय निर्माण : स्वरुप, प्रकार एवं कारक, निर्णय प्रक्रिया में अभिनतियाँ, उत्तम निर्णय प्रक्रिया के कारक।
- समस्या समाधान : स्वरुप, विधियाँ एवं कारक।

इकाई–04 बुद्धि, सर्जनात्मकता एवं शिक्षा मनोविज्ञान

- बुद्धि : स्वरुप/प्रकृति एवं प्रकार, बुद्धि का मापन, परीक्षण वेक्सलर मापनी, स्वेन प्रोग्रेसिव मैट्रीसेज, सिद्धांत– स्पीयरमेन का द्विकारक सिद्धांत, थर्स्टन का समूह कारक सिद्धांत, बहुकारेक सिद्धांत, कैटल का सिद्धांत।
- सर्जनात्मकता : बुद्धि तथा सर्जनात्मकता में संबंध, क्षमता परीक्षण– बहु क्षमता परीक्षण माला, विशिष्ट क्षमता परीक्षण, सर्जनात्मकता के पहलू।
- शिक्षा मनोविज्ञान : स्वरुप एवं उपयोगिता, शिक्षा में मनोविज्ञान का योगदान, कक्षा में अधिगम प्रक्रिया, शिक्षक की प्रभाविकता।
- व्यवहारवादी सिद्धांत, सामाजिक अधिगमस सिद्धांत।
- शिक्षक केन्द्रित विधियाँ, विद्यार्थी केन्द्रित विधियाँ।

इकाई–05 अभिप्रेरणा, संवेग, प्रतिबल एवं मानव व्यवहार का विकास

- अभिप्रेरणा : स्वरूप एवं अभिप्रेरक के प्रकार, अभिप्रेरित व्यवहार की कसौटी, अभिप्रेरणा के सिद्धांत मूलप्रवृति सिद्धांत, प्रणोद सिद्धांत, प्रोत्साहन सिद्धांत, आवश्यकता–पदानुक्रम सिद्धांत।
- संवेग : अर्थ एवं विशेषताएँ, संवेग का वर्गीकरण, तंत्रिका तंत्र का संवेग में महत्व, संवेग का दैहिक सहसंबद्धता।
- संवेग के सिद्धांत : स्केकंटर– सिंगर सिद्धांत, संज्ञानात्मक–मूल्यांकन सिद्धांत एवं लिंडस्ले का सक्रियण सिद्धांत।
- प्रतिबल : अर्थ एवं विशेषताएँ, प्रतिबल की प्रतिक्रियाएँ, प्रतिबल कम करने के उपाय, प्रतिबल का प्रबंधन।
- विकास की प्रकृति एवं नियम, जीवन कॉल के विकास की गंभीर अवधि, समांजीकरण– परिवार, सम-आयु समूह, विद्यालय, संस्कृति एवं मीडिया की समाजीकरण में भूमिका, नैतिक विकास।

इकाई–06 शोध विधियाँ एवं सांख्यिकी

- वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रकृति/स्वरूप, परिकल्पना, चर–प्रकार तथा नियंत्रण, प्रतिदर्शन के प्रकार, टाइप I & II त्रुटि।
- प्रयोगात्मक अभिकल्प : स्वरुप, उद्देश्य, प्रायोगिक अभिकल्प के प्रकार।
- कारक अभिकल्प : 2x2 कारक अभिकल्प, एक एवं द्विमार्गी।
- सहसंबंध विधियाँ : प्रोडक्ट मोमेण्ट, द्विपंक्ति, अंक द्विपंक्ति, चतुष्कोटिक सहसम्बंध।
- मध्यमानों के बीच अंतरों की सार्थकता, टी–परीक्षण–सहसम्बंधित एवं असहसम्बंधित प्रतिदर्श, परिकल्पना परीक्षण– काई-वर्ग परीक्षण।

इकाई–07 व्यक्तित्व एवं सामाजिक व्यवहार

- व्यक्तित्व का संप्रत्यय एवं परिभाषा, व्यक्तित्व के सिद्धांत–फ्रायड, एडलर, युंग, सुलीवान, अल्पोर्ट, लेविन, एरिक्सन।
- व्यक्तित्व के निर्धारक, व्यक्तित्व के मापन– प्रक्षेपण परीक्षण, व्यक्तित्व की अनुसूचियाँ, परिस्थितिजन्य परीक्षण।
- अभिवृत्ति : स्वरुप एवं कार्य, अभिवृत्ति परिवर्तन के सिद्धांत, अभिवृत्ति मापन।
- सामाजिक प्रत्यक्षीकरण, छवि निर्माण, गुणारोपण सिद्धांत, अन्तैवैयक्तिक आकर्षण।
- समूह गत्यात्मकता : अनुरुपता – स्वरुप एवं निर्धारक, समूह संलग्न शीलता तथा नेतृत्व।

इकाई–08 मनोव्याधिकी एवं नैदानिक मनोविज्ञान

- असामान्यता का वर्गीकरण, चिंता विकृति– भीतिका विकृति, दुर्भित, मनोग्रस्ति-बाध्यता विकृति, सामान्यीकृत-चिन्ता विकृति।
- मनोभाव विकृति, मनोविदलता, व्यामोह, व्यक्तित्व विकृति।
- द्रव्य संबंधी विकृति, मानसिक मन्दता– वर्गीकरण, प्रकार तथा कारण।
- नैदानिक मनोविज्ञान के प्रतिरुप : मनोगत्यात्मक, व्यवहारात्मक, अन्तः वैयाक्तिक।
- मनोचिकित्सा : मनोविश्लेषणात्मक, रोगी केन्द्रित, संज्ञानात्मक, बायोफीड बैक।

इकाई–09 स्वास्थ्य, परामर्श एवं सामुदायिक मनोविज्ञान

- स्वास्थ्य मॉडल्स/प्रारुप, स्वास्थ्य हानि व स्वास्थ्य उन्नयन की जीवन शैली एवं व्यवहार।
- हृदयवाहिका विकृति, मधुमेह प्रकृति, प्रकार एवं कारण।
- निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता व नियम, परामर्श के उपागम– निर्देशित व अनिर्देशित, रेशनल इमोटिव।
- विद्यालय एवं महाविद्यालय में निर्देशन कार्यक्रमों का आयोजन।
- सामुदायिक मनोविज्ञान में मध्यस्ता के प्रकार– प्रथम एवं द्वितीय चरणों में सुरक्षा कार्यक्रम।

इकाई–10 संगठनात्मक एवं मनोविज्ञान के अन्य अनुप्रयोग क्षेत्र

- संगठन में कर्मचारी चयन तथा प्रशिक्षण, कार्य अभिवृत्ति एवं कार्य संतोष।

- औद्योगिक सुरक्षा एवं दुर्घटनाएँ, संगठनात्मक वातावरण, संगठन में नेतृत्व की भूमिका।
- संगठनात्मक विकास, सम्प्रेषण प्रकम एवं निर्णय क्षमता।
- खेल मनोविज्ञान– खेल निष्पादन के अभिवृद्धन, व्यायाम एवं शारीरिक स्वास्थ्य।
- वातावरण मनोविज्ञान– ध्वनि प्रदूषण एवं प्रदूषण का प्रभाव, भीड़ एवं जनसंख्या घनत्व का प्रभाव, ज्ञानेन्द्रीय वंचन के प्रभाव।

****

अध्याय 01

प्रस्तावना अध्ययन विधियाँ, व्यवहार के दैहिक आधार एवं भारतीय मनोविज्ञान

1. विज्ञान के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन मनोविज्ञान को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) आत्मा और उसके परलोक का दार्शनिक अध्ययन।
(B) व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं का व्यवस्थित और आनुभविक अध्ययन।
(C) मानव चेतना और अंतर्ज्ञान का काल्पनिक विश्लेषण।
(D) मानवीय भावनाओं और अनुभवों की कलात्मक व्याख्या।

2. मनोविज्ञान के क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र केवल मानसिक रोगों के उपचार तक ही सीमित है।
कथन II: मनोविज्ञान का जीव विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान जैसे प्राकृतिक विज्ञानों के साथ महत्वपूर्ण संबंध है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

3. किस शोध पद्धति में किसी एक व्यक्ति, समूह या घटना की गहन जाँच शामिल होती है?
(A) व्यवस्थित प्रयोगात्मक पद्धति
(B) मानकीकृत सर्वेक्षण पद्धति
(C) नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन पद्धति
(D) वैज्ञानिक विषय-वस्तु विश्लेषण

4. व्यवहार के जैविक आधार में ग्राही तंत्र का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) मांसपेशियों या ग्रंथियों में प्रतिक्रिया शुरू करना।
(B) आने वाली संवेदी सूचनाओं को संसाधित करना और उनकी व्याख्या करना।
(C) लक्षणों के अनुवांशिक संचरण को नियंत्रित करना।
(D) आंतरिक या बाहरी वातावरण से उद्दीपकों का पता लगाना।

5. मनोविज्ञान की प्रकृति के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) मनोविज्ञान व्यवहार के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग करता है।
(B) मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र में स्वास्थ्य, शिक्षा और उद्योग जैसे क्षेत्र शामिल हैं।
(C) मनोविज्ञान विशेष रूप से एक सामाजिक विज्ञान है जिसका प्राकृतिक विज्ञानों से कोई संबंध नहीं है।
(D) मनोविज्ञान व्यवहार को समझने, भविष्यवाणी करने और नियंत्रित करने का प्रयास करता है।

6. एक शोधकर्ता नई शिक्षा नीति के प्रति छात्रों की एक बड़ी जनसंख्या के दृष्टिकोण को समझना चाहता है।
कौन सी अध्ययन पद्धति सबसे उपयुक्त और कुशल होगी?
(A) अनुदैर्ध्य व्यक्ति अध्ययन
(B) मानकीकृत सर्वेक्षण पद्धति
(C) नियंत्रित प्रयोगात्मक पद्धति
(D) प्रत्यक्ष प्राकृतिक अवलोकन

7. जैविक घटकों और उनके कार्यों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (जैविक घटक)
P. ग्राही
Q. प्रभावक
R. समायोजक
S. हार्मोन
सूची II: (प्राथमिक कार्य)
1. केंद्रीय तंत्रिका तंत्र प्रसंस्करण
2. मांसपेशियां और ग्रंथियां जो प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं
3. रक्तप्रवाह में रासायनिक संदेशवाहक
4. संवेदी कोशिकाएं जो उद्दीपकों का पता लगाती हैं
कूट:
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

8. व्यवहार का अनुवांशिक आधार मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के लक्षणों और कार्यों पर किसके प्रभाव को संदर्भित करता है?
(A) विरासत में मिले जीन और गुणसूत्र संरचना
(B) पर्यावरणीय परिवेश और सामाजिक अधिगम
(C) विकास के दौरान हार्मोन का असंतुलन
(D) पोषण संबंधी कारक और शारीरिक व्यायाम

9. निम्नलिखित में से किसे प्राथमिक त्वचा संवेदना नहीं माना जाता है?
(A) स्थानीय स्पर्श
(B) दैहिक दर्द
(C) संवेदी संतुलन
(D) परिवेश का तापमान

10. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): मनोविज्ञान को एक विज्ञान माना जाता है।
कारण (R): यह डेटा एकत्र करने और विश्लेषण करने के लिए व्यवस्थित अवलोकन और प्रयोग का उपयोग करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

11. भारतीय मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र में विशेष संदर्भ के साथ इसके अनुप्रयोग शामिल हैं:
(A) नैदानिक साइकोफार्माकोलॉजी
(B) जटिल कृत्रिम बुद्धिमत्ता
(C) वृहद आर्थिक नीति निर्माण
(D) व्यक्तिगत व्यक्तित्व विकास

12. अध्ययन पद्धतियों के संदर्भ में, साक्षात्कार पद्धति की प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) एक स्वतंत्र चर का हेरफेर।
(B) शोधकर्ता और सहभागी के बीच प्रत्यक्ष मौखिक बातचीत।
(C) पहले से मौजूद लिखित या दृश्य सामग्रियों का विश्लेषण।
(D) प्राकृतिक, अनियंत्रित वातावरण में व्यवहार का अवलोकन।

13. प्रयोगात्मक पद्धति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी एक व्यक्ति के गहन अध्ययन के लिए किया जाता है।
2. यह शोधकर्ताओं को कार्य-कारण संबंध स्थापित करने की अनुमति देता है।
3. इसमें एक स्वतंत्र चर का व्यवस्थित हेरफेर शामिल है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

14. आँख की वह संरचना जो प्रकाश ऊर्जा को तंत्रिका संकेतों में बदलने के लिए उत्तरदायी है, वह है:
(A) बाहरी सुरक्षात्मक स्वच्छमंडल
(B) केंद्रित क्रिस्टलीय लेंस
(C) रंजित पेशीय परितारिका
(D) प्रकाश संवेदनशील दृष्टिपटल

15. शरीर के प्रभावक तंत्र मुख्य रूप से किससे बने होते हैं?
(A) मांसपेशियां और ग्रंथियां।
(B) संवेदी तंत्रिका कोशिकाएं और ग्राही।
(C) मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी।
(D) जीन और गुणसूत्र।

16. निम्नलिखित में से कौन मनोविज्ञान और समाजशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञानों के बीच संबंध का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) वे अलग-अलग नामों वाले समान विषय हैं।
(B) वे परस्पर व्यापी क्षेत्र हैं, जहाँ मनोविज्ञान व्यक्तिगत व्यवहार पर और समाजशास्त्र समूह व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करता है।
(C) वे अध्ययन के पूरी तरह से असंबंधित क्षेत्र हैं।
(D) मनोविज्ञान समाजशास्त्र का एक उप-विषय है।

17. एक मनोवैज्ञानिक जो किसी राजनीतिक नेता के भाषणों में विशिष्ट विषयों की आवृत्ति का अध्ययन कर रहा है, वह किस शोध पद्धति का उपयोग करने की सबसे अधिक संभावना रखेगा?
वह किस शोध पद्धति का उपयोग करने की सबसे अधिक संभावना रखेगा?
(A) संरचित प्रयोगात्मक पद्धति
(B) व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण
(C) गहन नैदानिक व्यक्ति अध्ययन
(D) सक्रिय सहभागी अवलोकन

18. कौन सा कथन मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में हार्मोन के कार्य की सही पहचान करता है?
(A) हार्मोन संवेगात्मक गतिविधि और व्यक्तित्व विकास को नियंत्रित करने में भूमिका निभाते हैं।
(B) हार्मोन विशेष रूप से लक्षणों के अनुवांशिक संचरण को नियंत्रित करते हैं।
(C) हार्मोन मुख्य रूप से बाहरी उद्दीपकों के लिए संवेदी ग्राही के रूप में कार्य करते हैं।
(D) हार्मोन समायोजक तंत्र के प्राथमिक घटक हैं।

19. ध्वनि की संवेदना किस प्राथमिक संवेदी प्रणाली के माध्यम से संसाधित होती है?
(A) दृश्य विधा
(B) घ्राण विधा
(C) श्रवण विधा
(D) त्वचीय विधा

20. एक सामान्य प्रयोगात्मक अध्ययन के निम्नलिखित चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. परिकल्पना का निर्माण।

2. डेटा का संग्रह।
3. डेटा का विश्लेषण और निष्कर्ष निकालना।
4. शोध समस्या की पहचान।

(A) 4, 1, 2, 3
(B) 1, 4, 2, 3
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 2, 1, 4, 3

21. एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की प्रकृति का तात्पर्य है कि इसके निष्कर्ष किस पर आधारित हैं:
(A) व्यक्तिगत विश्वास और उपाख्यान।
(B) दार्शनिक अटकलें।
(C) पारंपरिक ज्ञान और लोककथाएं।
(D) वस्तुनिष्ठ साक्ष्य और आनुभविक डेटा।

22. व्यवहार के जैविक आधारों में वर्णित समायोजक तंत्र किसे संदर्भित करता है?
(A) उद्दीपकों का पता लगाने वाले संवेदी अंग।
(B) प्रतिक्रिया उत्पन्न करने वाली मांसपेशियां और ग्रंथियां।
(C) केंद्रीय तंत्रिका तंत्र जो सूचनाओं को एकीकृत करता है और प्रतिक्रिया का निर्णय लेता है।
(D) दीर्घकालिक विकास को नियंत्रित करने वाले हार्मोन।

23. निम्नलिखित में से कौन सा अध्ययन पद्धति और उसके प्राथमिक लाभ का युग्म गलत सुमेलित है?
(A) प्रयोगात्मक पद्धति - कार्य-कारण स्थापित करना।
(B) व्यक्ति अध्ययन - जनसंख्या के लिए उच्च सामान्यीकरण क्षमता।
(C) सर्वेक्षण - बड़े नमूनों से डेटा एकत्र करना।
(D) अवलोकन - प्राकृतिक वातावरण में व्यवहार को रिकॉर्ड करना।

24. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): हार्मोन व्यक्तित्व विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकते हैं।
कारण (R): अंतःस्रावी ग्रंथियां उन हार्मोन का स्राव करती हैं जो संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं और चयापचय दर सहित विभिन्न शारीरिक कार्यों को नियंत्रित करते हैं, जो स्थिर व्यक्तित्व लक्षणों में योगदान करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

25. कान का वह भाग जिसमें सुनने के लिए प्राथमिक ग्राही होते हैं, वह है:
(A) बाहरी पिन्ना संरचना
(B) पतली कर्णपटह झिल्ली
(C) आंतरिक कोकलिया तंत्र
(D) मध्य कान की अस्थिकाएं

26. व्यक्तित्व विकास के प्रति भारतीय मनोविज्ञान के दृष्टिकोण को अक्सर किस रूप में वर्णित किया जाता है:
(A) एकीकृत, विभिन्न कोशों के माध्यम से 'स्व' के विकास पर विचार करना।
(B) विशुद्ध रूप से व्यवहारवादी, केवल देखने योग्य क्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) कड़ाई से जैविक, अनुवांशिक प्रवृत्तियों पर जोर देना।
(D) विशेष रूप से संज्ञानात्मक, विचार पैटर्न पर ध्यान केंद्रित करना।

27. एक शोधकर्ता छात्रों के एक समूह को नई स्मृति-वर्धक औषधि देता है और दूसरे समूह को औषधि रहित गोली देता है, फिर स्मृति परीक्षण पर उनके प्रदर्शन को मापता है। यह किस अध्ययन पद्धति का उदाहरण है?
(A) वर्णनात्मक सर्वेक्षण
(B) गहन व्यक्ति अध्ययन
(C) व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण
(D) नियंत्रित प्रयोगात्मक पद्धति

28. अध्ययन पद्धतियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: प्रश्नावली पद्धति स्व-रिपोर्ट डेटा संग्रह का एक रूप है।
कथन II: प्रश्नावली पद्धति की एक प्रमुख सीमा बड़े समूहों को इसे प्रशासित करने में कठिनाई है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

29. वह अनुवांशिक सामग्री जो जीव के विकास के लिए ब्लूप्रिंट के रूप में कार्य करती है, किसके भीतर समाहित होती है?
(A) जैविक गुणसूत्र
(B) अंतःस्रावी हार्मोन
(C) मस्तिष्क न्यूरोट्रांसमीटर
(D) संवेदी ग्राही

30. मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र में निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी शामिल हैं:
(A) पशु व्यवहार का अध्ययन।
(B) स्मृति और प्रत्यक्षीकरण जैसी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की जाँच।
(C) मानसिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए सिद्धांतों का अनुप्रयोग।
(D) सामाजिक संरचनाओं और संस्थानों का विश्लेषण।

31. मनोवैज्ञानिक पद्धतियों और उनकी विशेषताओं के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (मनोवैज्ञानिक पद्धति)

P. व्यक्ति अध्ययन
Q. सर्वेक्षण
R. प्रयोग
S. विषय-वस्तु विश्लेषण

सूची II: (प्रमुख विशेषता)

1. चरों का हेरफेर
2. संचार का विश्लेषण
3. बड़ी जनसंख्या के दृष्टिकोण का अध्ययन
4. एक व्यक्ति का गहन अध्ययन

कूट:

(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

32. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा पर्यावरण से भौतिक ऊर्जा को तंत्रिका संकेत में परिवर्तित किया जाता है, कहलाती है:

(A) संवेदी अनुकूलन
(B) तंत्रिका पारांतरण
(C) उद्दीपक अभ्यस्तता
(D) संज्ञानात्मक प्रत्यक्षीकरण

33. भारतीय मनोविज्ञान की "प्रकृति" का सबसे सटीक वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?

(A) विशेष रूप से आत्मनिरीक्षण और ध्यान पर केंद्रित प्रणाली।
(B) भारतीय नमूनों का उपयोग करके पश्चिमी मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों की प्रतिकृति।
(C) एक ढांचा जो अनुभवात्मक दृष्टिकोण से चेतना और मानवीय क्षमता को समझने का प्रयास करता है।
(D) दर्शन की एक शाखा जिसका कोई आनुभविक या व्यावहारिक अनुप्रयोग नहीं है।

34. मनोविज्ञान और जीव विज्ञान के बीच संबंधों की जाँच करने वाला अध्ययन सबसे अधिक किस पर ध्यान केंद्रित करेगा?

(A) सामाजिक मानदंड व्यक्तिगत व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं।
(B) सांस्कृतिक मूल्य व्यक्तित्व को कैसे आकार देते हैं।
(C) आर्थिक स्थितियां सामुदायिक कल्याण को कैसे प्रभावित करती हैं।
(D) मस्तिष्क की संरचनाएं और तंत्रिका रसायन मानसिक प्रक्रियाओं को कैसे प्रभावित करते हैं।

35. जैविक तंत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ग्राही व्यवहारात्मक प्रतिक्रियाएं शुरू करने के लिए उत्तरदायी हैं।
2. प्रभावक मांसपेशियां और ग्रंथियां हैं।
3. समायोजक तंत्र में केंद्रीय तंत्रिका तंत्र शामिल है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

36. निम्नलिखित में से कौन कार्य कर रहे एक प्रभावक का सबसे अच्छा उदाहरण है?

(A) आँख में छड़ें और शंकु प्रकाश का पता लगाते हैं।
(B) गेंद को मारने के लिए पैर की मांसपेशी का सिकुड़ना।
(C) मस्तिष्क का तेज़ शोर की व्याख्या करना।
(D) त्वचा की कोशिका का दबाव महसूस करना।

37. नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन पद्धति की एक प्रमुख सीमा इसकी:

(A) समृद्ध, विस्तृत जानकारी प्रदान करने में असमर्थता है।
(B) सहभागियों के बड़े, यादृच्छिक नमूने की आवश्यकता है।
(C) सामान्यीकरण की कम संभावना है।
(D) प्रयोगात्मक चरों पर सख्त नियंत्रण है।

38. दबाव, तापमान और दर्द की संवेदना को सामूहिक रूप से कहा जाता है:

(A) श्रवण संवेदनाएं
(B) प्राथमिक त्वचा संवेदनाएं
(C) दृश्य संवेदनाएं
(D) घ्राण संवेदनाएं

39. भारतीय मनोविज्ञान के इतिहास का पता लगाया जा सकता है:

(A) लीपज़िग में पहली मनोविज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना से।
(B) वियना में सिगमंड फ्रायड के कार्यों से।
(C) भारत के प्राचीन दार्शनिक और आध्यात्मिक ग्रंथों से।
(D) संयुक्त राज्य अमेरिका में व्यवहारवाद के उदय से।

40. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।

अभिकथन (A): प्रयोगात्मक पद्धति को कार्य-कारण संबंधों को निर्धारित करने के लिए सबसे शक्तिशाली उपकरण माना जाता है।

कारण (R): इसमें एक स्वतंत्र चर का व्यवस्थित हेरफेर और बाहरी चरों का नियंत्रण शामिल है, जिससे कार्य-कारण के बारे में स्पष्ट निष्कर्ष निकल सकते हैं।

(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

41. निम्नलिखित में से कौन सा एक संवेदी प्रणाली और उसके प्राथमिक उद्दीपक का सही युग्म है?
(A) श्रवण प्रणाली - वायु दाब परिवर्तन
(B) दृश्य प्रणाली - वायुमंडलीय ध्वनि तरंगें
(C) श्रवण प्रणाली - विद्युत चुम्बकीय प्रकाश तरंगें
(D) त्वचा संवेदना - वायुजनित रासायनिक अणु

42. शारीरिक विकास पर हार्मोन का प्रभाव अध्ययन के किस क्षेत्र का एक प्रमुख पक्ष है?
(A) सामाजिक मनोविज्ञान
(B) संज्ञानात्मक मनोविज्ञान
(C) व्यवहार के जैविक आधार
(D) भारतीय मनोविज्ञान

43. एक संरचित साक्षात्कार में, प्रश्न आमतौर पर होते हैं:
(A) मुक्त और स्वतःस्फूर्त।
(B) पूर्व निर्धारित और एक निश्चित क्रम में पूछे गए।
(C) सत्र के दौरान साक्षात्कारकर्ता द्वारा विकसित किए गए।
(D) विशेष रुप से गैर-मौखिक संकेतों पर केंद्रित।

44. दृश्य मार्ग के निम्नलिखित भागों को उस क्रम में व्यवस्थित कीजिए जिसमें प्रकाश संवेदी ग्राहियों तक पहुँचने के लिए उनसे होकर गुजरता है:
1. लेंस
2. स्वच्छमंडल
3. दृष्टिपटल
4. पुतली
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 3, 1, 4, 2

45. प्राकृतिक विज्ञानों के साथ मनोविज्ञान का संबंध किसके साथ इसके जुड़ाव में सबसे स्पष्ट है:
(A) वृहद अर्थशास्त्र
(B) राजनीति विज्ञान
(C) सांस्कृतिक नृविज्ञान
(D) मानव शरीर क्रिया विज्ञान

46. व्यवहार के अनुवांशिक आधार के संबंध में कौन सा कथन गलत है?
(A) जीन तंत्रिका तंत्र के विकास के लिए एक ब्लूप्रिंट प्रदान करते हैं।
(B) व्यवहार पूरी तरह से जीन द्वारा निर्धारित होता है, इसमें कोई पर्यावरणीय प्रभाव नहीं होता।
(C) व्यवहार एक जटिल अंतःक्रिया के माध्यम से निर्धारित होता है जहाँ अनुवांशिक प्रवृत्तियाँ व्यक्तित्व लक्षणों को प्रभावित कर सकती हैं।
(D) आनुवंशिकी का अध्ययन मनोवैज्ञानिक विशेषताओं की आनुवंशिकता को समझने में सहायता करता है।

47. शोध में प्रश्नावली का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) व्यवहार को उसके प्राकृतिक संदर्भ में देखना।
(B) लिखित प्रश्नों के एक समूह के माध्यम से उत्तरदाताओं से जानकारी एकत्र करना।
(C) इसके प्रभाव को देखने के लिए एक स्वतंत्र चर में हेरफेर करना।
(D) आवर्ती विषयों के लिए ऐतिहासिक दस्तावेजों का विश्लेषण करना।

48. संवेदना और दृश्य प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: संवेदना संवेदी सूचनाओं की व्याख्या और व्यवस्थित करने की प्रक्रिया है।
कथन II: दृश्य प्रणाली की संरचना में छड़ें और शंकु शामिल हैं, जो प्रकाश ग्राही हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

49. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रभावक तंत्र का उदाहरण है?
(A) अधिवृक्क ग्रंथि द्वारा एड्रेनालाईन जारी करना।
(B) दृष्टिपटल द्वारा किसी बिंब का पता लगाना।
(C) कोकलिया द्वारा ध्वनि तरंगों का प्रसंस्करण।
(D) रीढ़ की हड्डी द्वारा मस्तिष्क को संकेत भेजना।

50. एक विषय के रुप में मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र का सबसे अच्छा वर्णन किस प्रकार किया गया है:
(A) संकीर्ण और केवल असामान्य व्यवहार पर केंद्रित।
(B) स्थिर और समय के साथ अपरिवर्तित।
(C) व्यापक, जो व्यवहार पर जैविक से लेकर सामाजिक प्रभावों तक फैला हुआ है।
(D) अन्य वैज्ञानिक विषयों से स्वतंत्र।

51. हार्मोन की भूमिका के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वे तंत्रिका आवेगों के संचरण के लिए सीधे उत्तरदायी होते हैं।
2. वे शारीरिक विकास जैसी दीर्घकालिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करते हैं।
3. वे संवेगात्मक गतिविधि को नियंत्रित कर सकते हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

52. प्रयोगात्मक पद्धति और अवलोकन पद्धति के बीच मूलभूत अंतर क्या है?
(A) अवलोकन का उपयोग केवल सामाजिक विज्ञान में किया जाता है, जबकि प्रयोगों का उपयोग केवल

प्राकृतिक विज्ञान में किया जाता है।
(B) अवलोकन हमेशा गुणात्मक होता है, जबकि प्रयोग हमेशा मात्रात्मक होते हैं।
(C) प्रयोगात्मक पद्धति अवलोकन पद्धति की तुलना में कम वैज्ञानिक है।
(D) प्रयोगात्मक पद्धति में चरों का हेरफेर शामिल होता है, जबकि अवलोकन में नहीं।

53. भारतीय मनोविज्ञान की "प्रकृति" किस पर बल देती है:
(A) चेतना के प्रति एक न्यूनीकरणवादी दृष्टिकोण।
(B) 'स्व' और चेतना का केंद्रीय विषयों के रूप में अध्ययन।
(C) सभी आनुभविक पद्धतियों का परित्याग।
(D) विशुद्ध रूप से पश्चिमी मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत पर आधारित मन का एक मॉडल।

54. इंद्रियों और उनके प्राथमिक ग्राही प्रकारों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (इंद्रिय)
P. दृष्टि
Q. श्रवण
R. त्वचा संवेदना (स्पर्श)
S. त्वचा संवेदना (तापमान)
सूची II: (प्राथमिक ग्राही प्रकार)
1. यांत्रिकग्राही
2. तापग्राही
3. प्रकाशग्राही
4. रोम कोशिकाएं
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

55. व्यवहार का अनुवांशिक आधार बताता है कि मनोवैज्ञानिक लक्षण किसका परिणाम हैं:
(A) केवल अधिगम और अनुभव का।
(B) केवल सांस्कृतिक कारकों का।
(C) आनुवंशिकता और पर्यावरण के बीच एक अंतःक्रिया का।
(D) यादृच्छिक, अप्रत्याशित घटनाओं का।

56. निम्नलिखित में से कौन मनोवैज्ञानिक अध्ययन की एक मानक पद्धति नहीं है?
(A) व्यक्तिगत साक्षात्कार
(B) संरचित प्रश्नावली
(C) व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण
(D) छद्म-वैज्ञानिक ज्योतिषीय चार्टिंग

57. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): एक व्यक्ति अध्ययन किसी व्यक्ति के बारे में गहरी और समृद्ध जानकारी प्रदान करता है।
कारण (R): किसी एक व्यक्ति अध्ययन के निष्कर्षों को पूरे आत्मविश्वास के साथ पूरी जनसंख्या पर सामान्यीकृत किया जा सकता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

58. केंद्रीय तंत्रिका तंत्र का वह भाग जो सूचनाओं को एकीकृत करके और गतिविधियों का समन्वय करके प्राथमिक "समायोजक" के रूप में कार्य करता है, वह है:
(A) संवेदी ग्राही तंत्र।
(B) मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी।
(C) अंतःस्रावी तंत्र।
(D) परिधीय तंत्रिका तंत्र।

59. श्रवण अस्थिकाओं का कार्य क्या है?
(A) पर्यावरण से ध्वनि तरंगों को एकत्र करना।
(B) ध्वनि कंपनों को तंत्रिका आवेगों में बदलना।
(C) कान के पर्दे से आंतरिक कान तक ध्वनि कंपनों को प्रवर्धित करना।
(D) संतुलन और स्थानिक अभिविन्यास बनाए रखना।

60. एक व्यक्ति अध्ययन में एक छात्रा शामिल है जो अत्यधिक परीक्षा संबंधी चिंता प्रदर्शित कर रही है। एक मनोवैज्ञानिक छात्रा, उसके माता-पिता और उसके शिक्षकों से जानकारी एकत्र करता है, और उसके शैक्षणिक अभिलेखों की भी समीक्षा करता है।
इस दृष्टिकोण का सबसे अच्छा वर्णन किस प्रकार किया गया है:
(A) प्रयोगात्मक, क्योंकि यह कारण खोजने का प्रयास करता है।
(B) एक सर्वेक्षण, क्योंकि इसमें प्रश्न पूछना शामिल है।
(C) विषय-वस्तु विश्लेषण, क्योंकि इसमें शैक्षणिक अभिलेखों की समीक्षा करना शामिल है।
(D) नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन, क्योंकि यह एक व्यक्ति की गहन जाँच है।

61. मनोविज्ञान और प्राकृतिक विज्ञानों के बीच संबंध किसके अध्ययन द्वारा उदाहरण स्वरुप प्रस्तुत किया जाता है:
(A) व्यवहार के जैविक आधार।
(B) सांस्कृतिक मानदंड।
(C) राजनीतिक विचारधाराएं।
(D) कला में ऐतिहासिक रुझान।

62. निम्नलिखित में से कौन मनोविज्ञान के "विषय-क्षेत्र" का एक प्रमुख पक्ष है?
(A) यह केवल मनुष्यों के अध्ययन तक ही सीमित है।
(B) इसमें बुनियादी अनुसंधान और अनुप्रयुक्त क्षेत्र दोनों शामिल हैं।
(C) यह मुख्य रूप से दार्शनिक प्रश्नों से संबंधित है।
(D) यह सामाजिक आवश्यकताओं से स्वतंत्र रूप से संचालित होता है।

63. निम्नलिखित तंत्रों को एक उद्दीपक-प्रतिक्रिया घटना के विशिष्ट अनुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. समायोजक तंत्र
2. प्रभावक तंत्र
3. ग्राही तंत्र
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 1, 2
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 2, 1

64. दृश्य संवेदना की संरचना और कार्य में यह समझना शामिल है कि आँख कैसे संसाधित करती है:
(A) वायुमंडलीय ध्वनि तरंगें।
(B) गतिज यांत्रिक दबाव।
(C) चयापचय रासायनिक पदार्थ।
(D) विद्युत चुम्बकीय विकिरण।

65. मनोविज्ञान में अध्ययन पद्धतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. चरों के बीच कार्य-कारण संबंध स्थापित करने के लिए सर्वेक्षण आदर्श है।
2. साक्षात्कार समृद्ध, गुणात्मक डेटा प्रदान कर सकता है।
3. एक व्यक्ति अध्ययन जनसंख्या के एक बड़े, प्रतिनिधि नमूने पर ध्यान केंद्रित करता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

66. कौन सा कथन "व्यवहार के अनुवांशिक आधार" को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) यह विचार कि सभी व्यवहार जन्म के समय पूर्व निर्धारित होते हैं और उन्हें बदला नहीं जा सकता।
(B) इस बात का अध्ययन कि विरासत में मिली जैविक सामग्री मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को कैसे प्रभावित करती है।
(C) यह अवधारणा कि व्यवहार विशेष रूप से अपने पर्यावरण से सीखा जाता है।
(D) इस बात का विश्लेषण कि हार्मोन सभी मानवीय क्रियाओं को कैसे नियंत्रित करते हैं।

67. संवेगात्मक गतिविधि में हार्मोन की भूमिका का अर्थ है कि कुछ हार्मोन स्तरों में उतार-चढ़ाव किसे प्रभावित कर सकता है:
(A) किसी व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता।
(B) श्रवण प्रणाली की संरचना।
(C) किसी व्यक्ति का मूड और संवेगात्मक प्रतिक्रियाएं।
(D) तंत्रिका आवेग संचरण की गति।

68. भारतीय मनोविज्ञान के इतिहास का पता लगाया जा सकता है:
(A) व्यवहारवादी सिद्धांतकारों के हालिया योगदान से।
(B) प्रारंभिक अमेरिकी मनोविज्ञान प्रयोगशालाओं से।
(C) आधुनिक संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के विकास से।
(D) प्राचीन भारतीय शास्त्रों और परंपराओं से।

69. एक सर्वेक्षण अध्ययन में, एक संभावित समस्या जहाँ सहभागी सत्य के स्थान पर उस तरह से उत्तर देते हैं जो उन्हें लगता है कि सामाजिक रूप से स्वीकार्य है, कहलाती है:
वह क्या कहलाती है?
(A) सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रह
(B) यादृच्छिक नमूनाकरण त्रुटि
(C) प्रयोगकर्ता पूर्वाग्रह
(D) प्लेसबो प्रभाव

70. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): समायोजक तंत्र अनुकूलनशील व्यवहार के लिए महत्वपूर्ण है।
कारण (R): इसमें पूरी तरह से मांसपेशियां और ग्रंथियां जैसे प्रभावक अंग होते हैं जो प्रतिक्रियाओं को निष्पादित करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

71. "एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की प्रकृति" का अर्थ है कि मनोवैज्ञानिक ज्ञान किसके माध्यम से आगे बढ़ता है:
(A) अंतर्ज्ञान और व्यक्तिगत रहस्योद्घाटन।
(B) पारंपरिक सिद्धांतों का पालन।
(C) आनुभविक अनुसंधान और व्यवस्थित अवलोकन।
(D) पूर्व सिद्धांतों से तार्किक कटौती।

72. शोध पद्धतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मनोविज्ञान में साक्षात्कार पद्धति हमेशा असंरचित होती है।
कथन II: विषय-वस्तु विश्लेषण पद्धति का उपयोग पाठ, चित्र और संचार के अन्य रूपों का विश्लेषण करने के लिए किया जा सकता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।

(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

73. अंतःस्रावी ग्रंथियों और उनके प्राथमिक संबंधित कार्यों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (ग्रंथि)
P. अधिवृक्क ग्रंथि
Q. थायराइड ग्रंथि
R. पीयूष ग्रंथि
S. जननग्रंथि
सूची II: (प्राथमिक संबंधित कार्य)
1. चयापचय और ऊर्जा स्तर का विनियमन
2. "लड़ो या भागो" प्रतिक्रिया और संवेगात्मक उत्तेजना का नियंत्रण
3. वृद्धि और अन्य ग्रंथियों का विनियमन
4. द्वितीयक यौन विशेषताओं का विकास
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

74. कर्णपटह झिल्ली किस संवेदी प्रणाली की एक प्रमुख संरचना है?
(A) दृश्य विधा
(B) त्वचीय विधा
(C) घ्राण विधा
(D) श्रवण विधा

75. भारतीय मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र, व्यक्तित्व विकास में इसके अनुप्रयोग में, संभवतः किन अवधारणाओं पर बल देगा:
(A) बुनियादी उद्दीपक-प्रतिक्रिया अनुकूलन।
(B) पारंपरिक फ्रायडियन अवधारणाएं।
(C) आध्यात्मिक आत्म-साक्षात्कार और पारलौकिकता।
(D) संज्ञानात्मक सूचना प्रसंस्करण मॉडल।

76. निम्नलिखित में से कौन सा प्रयोगात्मक पद्धति की एक विशेषता है?
(A) इसमें चरों पर नियंत्रण का अभाव होता है।
(B) इसका उद्देश्य दूसरे पर इसके प्रभाव को देखने के लिए एक चर में हेरफेर करके संबंधों का अध्ययन करना है।
(C) यह मुख्य रूप से प्रकृति में वर्णनात्मक है।
(D) इसे केवल प्राकृतिक, वास्तविक दुनिया की स्थितियों में ही आयोजित किया जा सकता है।

77. जीन व्यवहार और व्यक्तित्व को सबसे सीधे तौर पर कैसे प्रभावित करते हैं:
(A) विशिष्ट विचारों और कार्यों को निर्देशित करके।
(B) जन्म से हार्मोनल असंतुलन पैदा करके।
(C) उन प्रोटीनों के उत्पादन को नियंत्रित करके जो तंत्रिका तंत्र की संरचना और कार्य को प्रभावित करते हैं।
(D) उस सामाजिक वातावरण को निर्धारित करके जिसमें व्यक्ति का पालन-पोषण होता है।

78. निम्नलिखित में से कौन सा एक ग्राही का उदाहरण है?
(A) हाथ में एक मांसपेशी कोशिका।
(B) मस्तिष्क के वल्कुट में एक न्यूरॉन।
(C) एक ग्रंथि जो हार्मोन स्रावित करती है।
(D) आँख के दृष्टिपटल में एक शंकु कोशिका।

79. मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के बीच संबंध का सबसे अच्छा वर्णन किस प्रकार किया गया है:
(A) पूरक, मनोविज्ञान व्यक्ति पर और समाजशास्त्र समूह या समाज पर ध्यान केंद्रित करता है।
(B) बिना किसी परस्पर व्याप्ति के पूरी तरह से अलग।
(C) विरोधी, परस्पर विरोधी सिद्धांतों और पद्धतियों के साथ।
(D) समान, एक ही अवधारणाओं के लिए अलग-अलग शब्दावली के साथ।

80. मनोविज्ञान से संबंधित निम्नलिखित ऐतिहासिक चरणों को उद्भव के तार्किक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. व्यवहारवाद का उदय।
2. वुंट द्वारा पहली मनोविज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना।
3. प्राचीन विचारकों द्वारा मन की दार्शनिक जाँच।
4. संज्ञानात्मक क्रांति।
(A) 3, 2, 1, 4
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 3, 1, 2, 4
(D) 1, 2, 3, 4

81. एक शोधकर्ता बिना किसी हस्तक्षेप के विद्यालय में बच्चों के खेल के व्यवहार को देखता और रिकॉर्ड करता है।
यह किसका उदाहरण है:
(A) एक नियंत्रित प्रयोग।
(B) प्राकृतिक अवलोकन।
(C) एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण।
(D) एक गहन व्यक्ति अध्ययन।

82. त्वचा संवेदनाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. त्वचा में दबाव, दर्द और तापमान के लिए अलग-अलग ग्राही होते हैं।
2. 'गीलापन' की संवेदना एक प्राथमिक त्वचा संवेदना है जिसका अपना अनूठा ग्राही होता है।
3. संवेदी ग्राहियों का वितरण पूरे शरीर में समान होता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 3
(D) केवल 2 और 3

83. हार्मोन व्यक्तित्व को कैसे प्रभावित करते हैं, इसका अध्ययन किसके अंतर्गत आता है:
(A) संवेदी मनोभौतिकी
(B) अंतःक्रियात्मक सामाजिक मनोविज्ञान
(C) आधारभूत दैहिक मनोविज्ञान
(D) अनुदैर्ध्य विकासात्मक मनोविज्ञान

84. मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में प्रश्नावली का उपयोग करने का प्राथमिक लक्ष्य क्या है?
(A) नियंत्रित वातावरण में व्यवहार का अवलोकन करना।
(B) किसी एक व्यक्ति के जीवन का गहन विश्लेषण करना।
(C) एक स्वतंत्र चर में हेरफेर करना और उसके प्रभाव को मापना।
(D) व्यक्तियों के एक नमूने से दृष्टिकोण, विश्वास या व्यवहार पर स्व-रिपोर्ट किया गया डेटा एकत्र करना।

85. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): मनोविज्ञान जैविक विज्ञानों के साथ एक महत्वपूर्ण संबंध साझा करता है।
कारण (R): व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं का एक शारीरिक आधार होता है, जिसमें मस्तिष्क, तंत्रिका तंत्र और अंतःस्रावी तंत्र शामिल होते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

86. निम्नलिखित में से कौन श्रवण प्रणाली की संरचना का हिस्सा नहीं है?
(A) आंतरिक कान का कोकलिया
(B) प्रकाश संवेदनशील दृष्टिपटल
(C) पतली कर्णपटह झिल्ली
(D) मध्य कान की अस्थिकाएं

87. भारतीय मनोविज्ञान के संदर्भ में, 'व्यक्तित्व विकास' को अक्सर किसकी ओर एक यात्रा के रुप में देखा जाता है:
(A) विवश सामाजिक अनुरुपता।
(B) बाहरी भौतिक सफलता।
(C) चेतना की उच्च अवस्थाएँ।
(D) तीव्र प्रतिस्पर्धी उत्कृष्टता।

88. एक शोधकर्ता मानसिक रोग के चित्रण में रुझानों की पहचान करने के लिए पिछले दशक की लोकप्रिय फिल्मों की पटकथाओं का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करता है।
यह शोध पद्धति है:
(A) एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण।
(B) एक नियंत्रित प्रयोग।
(C) एक नैदानिक अध्ययन।
(D) एक विषय-वस्तु विश्लेषण।

89. उद्दीपक-जीव-प्रतिक्रिया प्रतिमान में 'समायोजक तंत्र' का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व किसके द्वारा किया जाता है:
(A) आंतरिक जीव।
(B) बाहरी उद्दीपक।
(C) व्यवहारात्मक प्रतिक्रिया।
(D) भौतिक वातावरण।

90. सर्वेक्षण पद्धति का एक प्रमुख लाभ इसकी क्षमता है:
(A) निश्चित कारण संबंध स्थापित करना।
(B) अपेक्षाकृत शीघ्र बड़ी संख्या में व्यक्तियों से डेटा एकत्र करना।
(C) किसी व्यक्ति के जीवन के बारे में समृद्ध, विस्तृत जानकारी प्रदान करना।
(D) सहभागी की जानकारी के बिना व्यवहार का अवलोकन करना।

91. आँख के भागों और उनके कार्यों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (आँख का भाग)
P. स्वच्छमंडल
Q. लेंस
R. दृष्टिपटल
S. पुतली
सूची II: (कार्य)
1. प्रकाशग्राही कोशिकाएं होती हैं
2. दृष्टिपटल पर प्रकाश केंद्रित करता है
3. आँख में प्रवेश करने वाले प्रकाश की मात्रा को नियंत्रित करता है
4. सुरक्षात्मक बाहरी परत जो प्रकाश को केंद्रित करना शुरु करती है
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

92. व्यवहार के अनुवांशिक आधार का तात्पर्य है कि:
(A) पर्यावरणीय परिवेश अप्रासंगिक है।
(B) प्रत्येक व्यवहार डीएनए में कोडित है।
(C) जीन ही एकमात्र कारक हैं।
(D) लक्षण आनुवंशिकता से प्रभावित होते हैं।

93. मनोविज्ञान और प्राकृतिक विज्ञानों के बीच संबंधों का अध्ययन करने वाले मनोवैज्ञानिक के लिए निम्नलिखित में से कौन सा प्रश्न सर्वाधिक रुचिकर होगा?
(A) सामाजिक-आर्थिक वर्गों में मतदान के पैटर्न कैसे भिन्न होते हैं?
(B) सांस्कृतिक मिथक समाज के मूल्यों को कैसे आकार देते

हैं?
(C) मूड पर एक विशिष्ट न्यूरोट्रांसमीटर के प्रभाव क्या हैं?
(D) सरकार का सबसे प्रभावी रुप कौन सा है?

94. मनोविज्ञान की वैज्ञानिक प्रकृति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का परीक्षण आनुभविक साक्ष्यों का उपयोग करके किया जाता है।
कथन II: मनोविज्ञान निष्कर्ष निकालने के लिए उपाख्यानात्मक साक्ष्यों और सामान्य ज्ञान पर निर्भर करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

95. एक प्रभावक की प्राथमिक भूमिका है:
(A) उद्दीपक का पता लगाना।
(B) संकेत संचारित करना।
(C) सूचना को संसाधित करना।
(D) प्रतिक्रिया उत्पन्न करना।

96. शोध पद्धति के रूप में साक्षात्कार का उपयोग करने की एक सीमा निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) साक्षात्कारकर्ता की उपस्थिति उत्तरदाता के जवाबों को प्रभावित कर सकती है।
(B) गहन जानकारी एकत्र करना असंभव है।
(C) इसका उपयोग दृष्टिकोण या विश्वासों के अध्ययन के लिए नहीं किया जा सकता है।
(D) यह केवल बड़ी, विविध जनसंख्या के अध्ययन के लिए उपयुक्त है।

97. संवेगात्मक गतिविधि और व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले हार्मोन की अवधारणा अंतःस्रावी तंत्र को किसके साथ जोड़ती है:
(A) व्यवहारात्मक शास्त्रीय अनुकूलन
(B) स्थिर व्यक्तिगत अंतर
(C) अंतःक्रियात्मक सामाजिक संज्ञान
(D) प्रारंभिक भाषाई विकास

98. कान में कोकलिया की संरचना किसके लिए महत्वपूर्ण है:
(A) शरीर का संतुलन बनाना।
(B) ध्वनि को प्रवर्धित करना।
(C) ध्वनि कंपनों को तंत्रिका संकेतों में बदलना।
(D) ध्वनि तरंगों को कान की नली में भेजना।

99. भारतीय मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र का सबसे अच्छा वर्णन किस प्रकार किया गया है:
(A) प्राचीन ग्रंथों के ऐतिहासिक विश्लेषण तक सीमित।
(B) एक नया क्षेत्र जो अध्यात्म के सभी रुपों को नकारता है।
(C) भारतीय संदर्भ में पश्चिमी मनोविज्ञान की पुनर्व्याख्या करने का प्रयास।
(D) तनाव प्रबंधन और व्यक्तिगत विकास जैसे आधुनिक मुद्दों पर प्राचीन ज्ञान को लागू करने पर केंद्रित।

100. एक शोधकर्ता कई वर्षों में एक विलक्षण प्रतिभा वाले बालक की संगीत प्रतिभा के विकास का अध्ययन करना चाहता है। सबसे उपयुक्त पद्धति होगी:
(A) एक नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन।
(B) पेशेवर संगीतकारों का सर्वेक्षण।
(C) उस बालक की तुलना एक नियंत्रण समूह से करने वाला प्रयोग।
(D) संगीत स्कोर का विषय-वस्तु विश्लेषण।

101. मनोविज्ञान की अध्ययन पद्धतियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. अवलोकन पद्धति सहभागी या गैर-सहभागी हो सकती है।
2. प्रयोगात्मक पद्धति मनोविज्ञान में एकमात्र वैज्ञानिक पद्धति है।
3. विषय-वस्तु विश्लेषण में संचार का व्यवस्थित विश्लेषण शामिल है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

102. कौन सा जैविक तंत्र संवेदना और क्रिया के बीच एकीकरण और निर्णय लेने का कार्य करता है?
(A) संवेदी ग्राही तंत्र
(B) केंद्रीय समायोजक तंत्र
(C) व्यवहारात्मक प्रभावक तंत्र
(D) प्रणालीगत हार्मोनल तंत्र

103. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): प्रश्नावली पद्धति एक बड़े नमूने से डेटा के कुशल संग्रह की अनुमति देती है।
कारण (R): प्रश्नावलियों में प्रतिक्रिया दर कम हो सकती है और ये सामाजिक वांछनीयता जैसे पूर्वाग्रहों के अधीन हो सकती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

104. गर्माहट और ठंडक की संवेदना त्वचा में किस प्रकार के ग्राहियों द्वारा महसूस की जाती है?
(A) दृश्य प्रकाशग्राही
(B) घ्राण रसायनग्राही

(C) स्पर्श यांत्रिकग्राही
(D) संवेदी तापग्राही

105. मनोविज्ञान की वैज्ञानिक प्रकृति मुख्य रूप से किस पर इसकी निर्भरता के माध्यम से प्रदर्शित होती है:
(A) आनुभविक पद्धतियां।
(B) व्यक्तिपरक अंतर्ज्ञान।
(C) दार्शनिक तर्क-वितर्क।
(D) ऐतिहासिक परंपरा।

106. यह अध्ययन कि दूसरों की उपस्थिति किसी कार्य पर व्यक्ति के प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करती है, मनोविज्ञान और किस अन्य विषय के मिलन को सबसे अच्छी तरह दर्शाता है?
(A) आधारभूत जीव विज्ञान
(B) व्यवस्थित समाजशास्त्र
(C) सैद्धांतिक भौतिकी
(D) भौतिक भूविज्ञान

107. 'व्यवहार का अनुवांशिक आधार' किसके अध्ययन को संदर्भित करता है:
(A) पालन-पोषण की शैलियाँ व्यक्तित्व को कैसे आकार देती हैं।
(B) सांस्कृतिक मानदंड पीढ़ियों तक कैसे प्रसारित होते हैं।
(C) आनुवंशिकता मनोवैज्ञानिक लक्षणों को कैसे प्रभावित करती है।
(D) बचपन के शुरुआती अनुभव वयस्क व्यवहार को कैसे निर्धारित करते हैं।

108. किस अध्ययन पद्धति में व्यक्तियों के समूह को दिए गए लिखित प्रश्नों के माध्यम से डेटा एकत्र करना शामिल है?
(A) व्यक्तिगत साक्षात्कार
(B) प्राकृतिक अवलोकन
(C) गहन व्यक्ति अध्ययन
(D) मानक प्रश्नावली

109. तनावपूर्ण स्थिति में एड्रेनालाईन का स्राव, जिससे हृदय गति और सतर्कता बढ़ जाती है, हार्मोन की किस भूमिका का एक उदाहरण है:
वह हार्मोन की किस भूमिका का एक उदाहरण है:
(A) प्रणालीगत संवेगात्मक गतिविधि।
(B) अनुदैर्ध्य शारीरिक विकास।
(C) दीर्घकालिक विकास।
(D) प्रत्यक्ष अनुवांशिक संचरण।

110. मानव आँख में लेंस का कार्य क्या है:
(A) प्रकाश प्राप्त करना और उसे तंत्रिका ऊर्जा में बदलना।
(B) दृष्टिपटल पर प्रकाश के फोकस को सटीक रूप से समायोजित करना।
(C) आँख में प्रवेश करने वाले प्रकाश की मात्रा को नियंत्रित करना।
(D) बाहरी वस्तुओं से आँख की रक्षा करना।

111. भारतीय मनोविज्ञान की ऐतिहासिक जड़ें किसमें गहराई से समाहित हैं:
(A) यूरोपीय पुनर्जागरण।
(B) अमेरिकी कार्यात्मकवाद।
(C) भारत की दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपराएं।
(D) 20वीं सदी की संज्ञानात्मक क्रांति।

112. व्यवहार की जैविक श्रृंखला में, कौन सा घटक प्रतिक्रिया को निष्पादित करने के लिए उत्तरदायी है?
(A) संवेदी ग्राही
(B) केंद्रीय समायोजक
(C) बाहरी उद्दीपक
(D) दैहिक प्रभावक

113. कान की संरचनाओं को उस क्रम में व्यवस्थित कीजिए जिसमें ध्वनि कंपन उनसे होकर गुजरते हैं:
1. कोकलिया
2. अस्थिकाएं
3. कर्णपटह झिल्ली
4. श्रवण नली
(A) 4, 3, 2, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 2, 3, 1
(D) 2, 3, 1, 4

114. मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) यह शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में समस्याओं को हल करने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू करता है।
(B) यह अधिगम और स्मृति जैसी बुनियादी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं की जाँच करता है।
(C) यह शैशवावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक पूरे जीवनकाल के व्यवहार का अध्ययन करता है।
(D) यह विशेष रूप से केवल गंभीर मानसिक विकारों के उपचार से संबंधित है।

115. एक संरचित साक्षात्कार और एक असंरचित साक्षात्कार के बीच एक मुख्य अंतर यह है कि असंरचित साक्षात्कार:
(A) प्रश्नों के एक निश्चित समूह का उपयोग करता है।
(B) केवल लिखित प्रारूप में ही प्रशासित किया जा सकता है।
(C) अधिक लचीला होता है और स्वतःस्फूर्त प्रश्नों की अनुमति देता है।
(D) संचालित करने और विश्लेषण करने में कम समय लेने वाला होता है।

116. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों और उनके केंद्र बिंदु के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण)
P. एक प्राकृतिक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान

Q. एक सामाजिक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान
R. भारतीय मनोविज्ञान
S. नैदानिक मनोविज्ञान

सूची II: (ध्यान का क्षेत्र)
1. समूह गतिशीलता और सामाजिक प्रभाव का अध्ययन
2. मनोवैज्ञानिक विकारों का निदान और उपचार
3. व्यवहार के जैविक आधारों का अध्ययन
4. चेतना और आत्म-साक्षात्कार को समझना

कूट:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

117. किसी व्यक्ति की अनुवांशिक संरचना को _______ के रूप में जाना जाता है, जबकि इस संरचना की दृश्य अभिव्यक्ति _______ है।
(A) जीनोटाइप; फेनोटाइप
(B) फेनोटाइप; जीनोटाइप
(C) गुणसूत्र; जीन
(D) जीन; गुणसूत्र

118. निम्नलिखित में से कौन सा एक ग्राही तंत्र नहीं है?
(A) आँख की दृष्टिपटल का प्रकाश को महसूस करना।
(B) तंत्रिका आवेग के जवाब में मांसपेशी तंतु का सिकुड़ना।
(C) कोकलिया में रोम कोशिकाओं का कंपन महसूस करना।
(D) त्वचा की तंत्रिकाओं के सिरों का तापमान में बदलाव महसूस करना।

119. दृश्य प्रणाली के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: छड़ें कम रोशनी की स्थिति में दृष्टि के लिए विशिष्ट प्रकाशग्राही हैं।
कथन II: शंकु रंग दृष्टि के लिए उत्तरदायी हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

120. मनोविज्ञान किस तरह से सामाजिक विज्ञानों से संबंधित है?
(A) स्मृति के तंत्रिका-रासायनिक आधार का अध्ययन करके।
(B) शारीरिक विकारों के उपचार विकसित करके।
(C) बुद्धि की अनुवांशिक आनुवंशिकता का विश्लेषण करके।
(D) यह जाँच करके कि सामाजिक संदर्भ और सांस्कृतिक मानदंड व्यक्तिगत व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं।

121. व्यवहार के जैविक आधारों से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. हार्मोन अंतःस्रावी ग्रंथियों द्वारा स्रावित रासायनिक संदेशवाहक हैं।
2. व्यवहार का अनुवांशिक आधार सीखे गए अनुभवों के प्रभाव को संदर्भित करता है।
3. प्रभावक तंत्र में मांसपेशियां और ग्रंथियां शामिल हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

122. एक शोधकर्ता "स्वतंत्रता" और "सुरक्षा" से संबंधित शब्दों की आवृत्ति की पहचान करने के लिए राजनीतिक भाषणों का विश्लेषण कर रहा है।
किस पद्धति का उपयोग किया जा रहा है?
(A) प्राकृतिक अवलोकन
(B) व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण
(C) नियंत्रित प्रयोग
(D) गहन व्यक्ति अध्ययन

123. भारतीय मनोविज्ञान का "विषय-क्षेत्र" मुख्य रूप से किसे संबोधित करता है:
(A) पश्चिमी मनोविज्ञान की तुलना में इसकी सीमाएँ।
(B) केवल आर्थिक विकास में इसकी भूमिका।
(C) मानवीय अनुभव, विशेष रूप से व्यक्तित्व विकास को समझने और बढ़ाने की इसकी क्षमता।
(D) विशेष रूप से केवल पशु व्यवहार पर इसका ध्यान।

124. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): पिन्ना, या बाहरी कान, श्रवण संवेदना के लिए एक महत्वपूर्ण ग्राही है।
कारण (R): पिन्ना का प्राथमिक कार्य ध्वनि तरंगों को तंत्रिका ऊर्जा में बदलना है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

125. यह अध्ययन कि पीयूष ग्रंथि के हार्मोन शारीरिक विकास को कैसे नियंत्रित करते हैं, किसके शोध का एक उदाहरण है:
(A) सामाजिक-पर्यावरणीय आधार
(B) संज्ञानात्मक-प्रक्रिया आधार
(C) जैविक आधार
(D) नृवंश-सांस्कृतिक आधार

126. एक मनोवैज्ञानिक विकासात्मक परिवर्तनों को समझने के लिए एक दशक तक प्रति दो वर्ष में बच्चों के एक ही समूह का अध्ययन करता है। यह अनुदैर्ध्य अध्ययन का एक उदाहरण है।
वह किसका एक प्रकार है:
(A) प्रयोगात्मक डिजाइन।

(B) सर्वेक्षण दृष्टिकोण।
(C) विषय-वस्तु विश्लेषण।
(D) अवलोकन पद्धति।

127. निम्नलिखित में से कौन सा एक जैविक तंत्र और उसके कार्य का सही युग्म है?
(A) ग्राही - व्यवहारात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करना।
(B) समायोजक - संवेदी सूचनाओं को एकीकृत करना।
(C) प्रभावक - पर्यावरणीय उद्दीपकों का पता लगाना।
(D) हार्मोन - तंत्रिकाओं के साथ विद्युत संकेतों को प्रसारित करना।

128. अन्य शोध पद्धतियों की तुलना में प्रयोगात्मक पद्धति का सबसे महत्वपूर्ण लाभ क्या है?
(A) यह उनके प्राकृतिक वातावरण में घटनाओं के अध्ययन की अनुमति देता है।
(B) यह संचालित करने के लिए सबसे आसान और तेज़ पद्धति है।
(C) यह कार्य-कारण संबंध निर्धारित कर सकता है।
(D) यह एक व्यक्ति की सबसे गहन समझ प्रदान करता है।

129. स्पर्श की संवेदना किसके द्वारा संचालित होती है:
(A) संवेदी यांत्रिकग्राही
(B) दृश्य प्रकाशग्राही
(C) चयापचय रसायनग्राही
(D) परिवेशी तापग्राही

130. एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की प्रकृति का अर्थ है कि इसके प्रस्ताव होने चाहिए:
(A) लोकप्रिय राय पर आधारित।
(B) मिथ्याकरणीय और परीक्षण योग्य।
(C) अपरिवर्तनीय और पूर्ण।
(D) प्राचीन ग्रंथों के अनुरूप।

131. व्यक्तित्व विकास के संबंध में भारतीय मनोविज्ञान का मुख्य केंद्र निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) मनोवैज्ञानिक संघर्षों का समाधान।
(B) व्यवहार को आकार देने में सुदृढीकरण की भूमिका।
(C) चेतना की एक संतुलित और एकीकृत अवस्था की प्राप्ति।
(D) संज्ञानात्मक स्कीमा की संरचना।

132. विषय-वस्तु विश्लेषण की प्रक्रिया में निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी शामिल हैं:
(A) संचार की विशिष्ट विशेषताओं की पहचान करना।
(B) पहचानी गई विशेषताओं को व्यवस्थित रूप से कोड करना और उनकी मात्रा निर्धारित करना।
(C) संचार की विषय-वस्तु के बारे में निष्कर्ष निकालना।
(D) संचार पर इसके प्रभाव को देखने के लिए किसी चर में हेरफेर करना।

133. व्यवहार के अनुवांशिक और हार्मोनल आधार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: व्यवहार के अनुवांशिक आधार का अर्थ है कि व्यक्ति को आकार देने में पर्यावरण की कोई भूमिका नहीं है।
कथन II: हार्मोन संवेगात्मक अवस्थाओं को प्रभावित कर सकते हैं और व्यक्तित्व लक्षणों में योगदान दे सकते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

134. निम्नलिखित में से कौन समायोजक तंत्र के कार्य का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) यह पर्यावरण से उद्दीपकों का पता लगाता है।
(B) यह संवेदी इनपुट को मोटर आउटपुट से जोड़ता है, जिसमें केंद्रीय तंत्रिका तंत्र शामिल है।
(C) यह शारीरिक क्रिया या स्राव को अंजाम देता है।
(D) यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक वंशानुगत जानकारी ले जाता है।

135. छात्र के ध्यान पर कक्षा के अभिकल्प के प्रभाव का अध्ययन करने वाला मनोवैज्ञानिक किसके विषय-क्षेत्र के भीतर एक विषय की खोज कर रहा है:
वह किसके विषय-क्षेत्र के भीतर एक विषय की खोज कर रहा है:
(A) नैदानिक मनोविज्ञान।
(B) भारतीय मनोविज्ञान।
(C) पर्यावरणीय मनोविज्ञान।
(D) शारीरिक मनोविज्ञान।

136. शोध पद्धतियों और उनके लक्ष्यों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (पद्धति)
P. नैदानिक/व्यक्ति अध्ययन
Q. सर्वेक्षण
R. अवलोकन
S. प्रयोग
सूची II: (प्राथमिक लक्ष्य)
1. कार्य और कारण का निर्धारण करें
2. प्राकृतिक वातावरण में व्यवहार का वर्णन करें
3. एक बड़े समूह से दृष्टिकोण पर डेटा एकत्र करें
4. किसी व्यक्ति का गहन अध्ययन करें
कूट:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

137. श्रवण प्रणाली की वह संरचना जो यांत्रिक कंपनों को विद्युत-रासायनिक संकेतों में परिवर्तित करती है, वह है:

(A) कोकलिया के भीतर रोम कोशिकाएं।
(B) बाहरी कान की पिन्ना संरचना।
(C) पतली कर्णपटह झिल्ली का क्षेत्र।
(D) मध्य कान की अस्थिका प्रणाली।

138. ग्राही और प्रभावक के बीच प्राथमिक अंतर यह है कि ग्राही ________, जबकि प्रभावक _______।
(A) प्रतिक्रिया करता है; पता लगाता है
(B) पता लगाता है; प्रतिक्रिया करता है
(C) निर्णय लेता है; प्रतिक्रिया करता है
(D) संसाधित करता है; पता लगाता है

139. भारतीय मनोविज्ञान का इतिहास पश्चिमी मनोविज्ञान से मुख्य रूप से भिन्न है क्योंकि इसकी उत्पत्ति किसमें हुई है:
(A) औपचारिक प्रयोगशाला प्रयोग।
(B) बुनियादी व्यवहारवादी सिद्धांत।
(C) दार्शनिक और चिंतनशील परंपराएं।
(D) मन का कंप्यूटर मॉडलिंग।

140. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): हार्मोन शरीर के प्रभावक तंत्र का हिस्सा हैं।
कारण (R): हार्मोन ग्रंथियों द्वारा स्रावित होते हैं, और ग्रंथियां एक प्रकार की प्रभावक होती हैं जो प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

141. एक शोधकर्ता सहभागियों से आमने-सामने पूर्व निर्धारित प्रश्नों का एक समूह पूछता है।
यह किसका उदाहरण है:
(A) प्राकृतिक अवलोकन।
(B) गहन व्यक्ति अध्ययन।
(C) नियंत्रित प्रयोग।
(D) संरचित साक्षात्कार।

142. आँख का वह भाग जो अलग-अलग दूरी पर स्थित वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपनी वक्रता को समायोजित करता है, वह है:
(A) पेशीय परितारिका।
(B) क्रिस्टलीय लेंस।
(C) बाहरी स्वच्छमंडल।
(D) आंतरिक दृष्टिपटल।

143. अन्य विज्ञानों के साथ मनोविज्ञान के संबंध के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जीव विज्ञान के साथ मनोविज्ञान का संबंध मस्तिष्क और व्यवहार के अध्ययन में देखा जाता है।
2. समाजशास्त्र के साथ मनोविज्ञान का संबंध व्यक्तियों पर समूह के प्रभाव के अध्ययन में देखा जाता है।
3. मनोविज्ञान पृथकता में संचालित होता है और अन्य विज्ञानों के साथ इसका कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

144. इनमें से कौन व्यवहार के जैविक आधार में एक घटक और उसकी भूमिका की सही पहचान करता है?
(A) ग्राही: मांसपेशी जो सिकुड़ती है
(B) प्रभावक: मस्तिष्क जो सूचनाओं को संसाधित करता है
(C) हार्मोन: आँख में संवेदी कोशिका
(D) समायोजक: रीढ़ की हड्डी जो संकेतों को एकीकृत करती है

145. "सोच, स्मृति और समस्या समाधान जैसी मानसिक प्रक्रियाओं का व्यवस्थित अध्ययन" मनोविज्ञान के किस उपक्षेत्र के विषय-क्षेत्र में आता है?
(A) आधारभूत संज्ञानात्मक मनोविज्ञान
(B) अंतःक्रियात्मक सामाजिक मनोविज्ञान
(C) संगठनात्मक औद्योगिक मनोविज्ञान
(D) चिकित्सीय नैदानिक मनोविज्ञान

146. निम्नलिखित व्यक्तियों को मनोविज्ञान के इतिहास में उनके प्रमुख योगदान के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. बी.एफ. स्किनर
2. विल्हेम वुंट
3. सिगमंड फ्रायड
4. अरस्तू

(A) 4, 2, 3, 1
(B) 2, 3, 1, 4
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 1, 3, 2, 4

147. एक अध्ययन जिसका उद्देश्य किसी भी चर में हेरफेर किए बिना दो चरों के बीच संबंध खोजना है, उसे सबसे अच्छी तरह वर्णित किया जाता है:
(A) नियंत्रित प्रयोगात्मक
(B) व्यवस्थित सहसंबंधी
(C) गहन व्यक्ति अध्ययन
(D) विस्तृत विषय-वस्तु विश्लेषण

148. शारीरिक विकास में हार्मोन की भूमिका किस जीवन अवस्था के दौरान सर्वाधिक प्रमुख होती है?
(A) स्थिर वयस्कता
(B) शैशवावस्था और किशोरावस्था
(C) वृद्धावस्था

(D) केवल प्रसव पूर्व अवधि

149. दृश्य प्रणाली के प्राथमिक ग्राही हैं:
(A) रोम कोशिकाएं और तंत्रिका सिरे।
(B) अस्थिकाएं और कान के पर्दे।
(C) दृष्टिपटल की छड़ें और शंकु।
(D) तापग्राही और यांत्रिकग्राही।

150. व्यक्तित्व विकास पर भारतीय मनोविज्ञान का दृष्टिकोण अक्सर किस पर अधिक बल देकर पश्चिमी मॉडलों के विपरीत होता है:
(A) पर्यावरणीय नियतिवाद।
(B) अचेतन संघर्ष।
(C) देखने योग्य व्यवहार और पुरस्कार।
(D) आध्यात्मिक विकास और 'स्व' की प्रकृति।

151. निम्नलिखित में से कौन सा एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की एक परिभाषित विशेषता है?
(A) यह व्यवस्थित अनुभववाद का उपयोग करता है।
(B) यह व्यक्तिगत गवाही पर निर्भर करता है।
(C) इसके सिद्धांत परीक्षण योग्य नहीं हैं।
(D) यह सामान्य ज्ञान पर आधारित है।

152. शोध पद्धतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: व्यक्ति अध्ययन एक शोध पद्धति है जिसमें चरों का हेरफेर शामिल होता है।
कथन II: सर्वेक्षण एक शोध पद्धति है जिसका उपयोग नमूने से स्व-रिपोर्ट डेटा एकत्र करने के लिए किया जाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

153. रक्तप्रवाह में हार्मोन का स्राव करने वाली ग्रंथि किसका उदाहरण है:
(A) संवेदी ग्राही तंत्र।
(B) प्रणालीगत प्रभावक तंत्र।
(C) केंद्रीय समायोजक तंत्र।
(D) परिधीय संवेदी तंत्र।

154. जैविक घटकों और विवरणों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (घटक)
P. जीन
Q. हार्मोन
R. ग्राही
S. प्रभावक
सूची II: (विवरण)
1. एक कोशिका जो एक निश्चित प्रकार के उद्दीपक का पता लगाने के लिए विशिष्ट है
2. एक मांसपेशी या ग्रंथि जो प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है
3. आनुवंशिकता की एक इकाई जो किसी लक्षण को प्रभावित करती है
4. एक रासायनिक पदार्थ जो शरीर में संदेशवाहक के रूप में कार्य करता है
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

155. दर्द की संवेदना को किसके अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है:
(A) दृश्य विधा
(B) श्रवण विधा
(C) त्वचा संवेदना
(D) वेस्टिबुलर विधा

156. भारतीय मनोविज्ञान का ऐतिहासिक दृष्टिकोण बताता है कि मन का अध्ययन किससे अविभाज्य है:
(A) राजनीतिक प्रणालियों का अध्ययन।
(B) आर्थिक व्यवहार के सिद्धांत।
(C) शास्त्रीय भौतिकी के नियम।
(D) आध्यात्मिक मुक्ति की खोज।

157. एक मनोवैज्ञानिक यह परीक्षण करना चाहता है कि क्या शिक्षण की नई पद्धति परीक्षा के अंकों में सुधार करती है। वह एक कक्षा को दो समूहों में विभाजित करती है, एक को नई पद्धति से और दूसरे को पुरानी पद्धति से पढ़ाती है, और फिर उनके परीक्षा अंकों की तुलना करती है।
यह किसका स्पष्ट अनुप्रयोग है:
(A) प्रयोगात्मक पद्धति।
(B) सर्वेक्षण पद्धति।
(C) व्यक्ति अध्ययन पद्धति।
(D) अवलोकन पद्धति।

158. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): मनोविज्ञान और समाजशास्त्र तथा नृविज्ञान जैसे सामाजिक विज्ञानों के बीच संबंध महत्वपूर्ण है।
कारण (R): मानव व्यवहार न केवल आंतरिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं द्वारा बल्कि सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक मानदंडों और समूह गतिशीलता द्वारा भी आकार लेता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

159. दृष्टिपटल का प्राथमिक कार्य क्या है:

(A) एक केंद्रित बिंब बनाने के लिए प्रकाश को मोड़ना।
(B) पुतली के आकार को नियंत्रित करना।
(C) प्रकाशग्राहियों को आधार देना।
(D) आँख को पोषक तत्व प्रदान करना।

160. व्यवहार के अनुवांशिक आधार में किस जैविक तत्व को आनुवंशिकता की बुनियादी इकाई माना जाता है?
(A) प्रणालीगत हार्मोन
(B) तंत्रिका न्यूरॉन
(C) ग्राही कोशिका
(D) विरासत में मिला जीन

161. एक शोधकर्ता जो सार्वजनिक उद्यान में बैठता है और लोगों के मुस्कुराने की संख्या गिनता है।
वह किसका उपयोग कर रहा है:
(A) प्रयोगात्मक पद्धति।
(B) अवलोकन पद्धति।
(C) व्यक्ति अध्ययन पद्धति।
(D) सर्वेक्षण पद्धति।

162. मनोवैज्ञानिक शोध पद्धतियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. साक्षात्कार उत्तरों को स्पष्ट करने के लिए अनुवर्ती प्रश्नों की अनुमति देता है।
2. प्रश्नावली किसी एक विषय के गहन विश्लेषण के लिए सबसे उपयुक्त है।
3. विषय-वस्तु विश्लेषण संचार के अध्ययन के लिए एक मात्रात्मक पद्धति है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

163. शरीर विज्ञान में "समायोजक तंत्र" की अवधारणा किसके कार्य को संदर्भित करती है:
(A) बाहरी संवेदी अंग।
(B) सक्रिय मांसपेशियां और ग्रंथियां।
(C) केंद्रीय तंत्रिका तंत्र।
(D) प्रणालीगत अंतःस्रावी तंत्र।

164. व्यक्तित्व विकास पर हार्मोन के प्रभाव को सबसे अच्छी तरह किस प्रकार समझा जाता है:
(A) एक प्रत्यक्ष कारण के रूप में, जहाँ एक विशिष्ट हार्मोन एक विशिष्ट व्यक्तित्व बनाता है।
(B) अप्रासंगिक के रूप में, क्योंकि व्यक्तित्व पूरी तरह से सीखा जाता है।
(C) व्यक्तित्व के एकमात्र निर्धारक के रूप में, जो अन्य सभी कारकों पर हावी होता है।
(D) एक योगदानकर्ता कारक के रूप में जो संवेगात्मक और व्यवहारात्मक प्रवृत्तियों को प्रभावित कर सकता है।

165. व्यक्ति एक-दूसरे के बारे में कैसे सोचते हैं, प्रभावित करते हैं और एक-दूसरे से कैसे संबंधित हैं, इसका वैज्ञानिक अध्ययन किसके विषय-क्षेत्र में आता है:
(A) शारीरिक मनोविज्ञान।
(B) भारतीय मनोविज्ञान।
(C) सामाजिक मनोविज्ञान।
(D) नैदानिक मनोविज्ञान।

166. व्यक्ति अध्ययन पद्धति का एक प्रमुख दोष है:
(A) एकत्र किए गए डेटा की सतही प्रकृति।
(B) कार्य-कारण संबंध स्थापित करने में कठिनाई।
(C) दुर्लभ या असामान्य घटनाओं के अध्ययन में असमर्थता।
(D) एक बड़े, यादृच्छिक नमूने की आवश्यकता।

167. निम्नलिखित में से कौन त्वचा द्वारा महसूस की जाने वाली प्राथमिक संवेदना नहीं है?
(A) शारीरिक दबाव
(B) तीव्र दर्द
(C) परिवर्तनशील तापमान
(D) श्रवण तारत्व

168. एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की "प्रकृति" इसकी किसके प्रति प्रतिबद्धता से पहचानी जाती है:
(A) वस्तुनिष्ठता, अनुभववाद और परीक्षण क्षमता।
(B) व्यक्तिपरकता, अंतर्ज्ञान और हठधर्मिता।
(C) अटकलें, दर्शन और बहस।
(D) परंपरा, अधिकार और उपाख्यान।

169. शरीर की प्रतिक्रिया प्रणाली में प्रभावकों की क्या भूमिका है?
(A) पर्यावरण में परिवर्तनों का पता लगाना।
(B) केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को संकेत संचारित करना।
(C) क्रियाओं को अंजाम देना, जैसे कि मांसपेशियों का संकुचन या ग्रंथियों का स्राव।
(D) संवेदी सूचनाओं को संसाधित करना और उनके बारे में निर्णय लेना।

170. निम्नलिखित में से कौन मनोविज्ञान और शरीर विज्ञान के प्राकृतिक विज्ञान के बीच संबंध को सबसे अच्छी तरह दर्शाता है?
(A) स्मृति पर मस्तिष्क की चोट के प्रभाव का अध्ययन।
(B) अनुरूपता पर समूह के दबाव के प्रभाव का अध्ययन।
(C) बच्चों में भाषा के विकास का अध्ययन।
(D) संवेगात्मक अभिव्यक्ति में सांस्कृतिक अंतर का अध्ययन।

171. भारतीय मनोविज्ञान का इतिहास मुख्य रूप से उन पाठ्य स्रोतों में निहित है जो चेतना, 'स्व' और वास्तविकता की प्रकृति पर चर्चा करते हैं। इस दृष्टिकोण को इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:
(A) आधुनिक व्यवहारवादी
(B) विशुद्ध रूप से जैविक
(C) मानक गणनात्मक

(D) घटनात्मक और अनुभवात्मक

172. संवेदी प्रणालियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: कर्णपटह झिल्ली कान का वह भाग है जहाँ ध्वनि तंत्रिका आवेगों में परिवर्तित होती है।
कथन II: श्रवण प्रणाली का कार्य प्रकाश तरंगों को संसाधित करना है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

173. अध्ययन पद्धतियों और उनके अनुप्रयोगों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (अध्ययन पद्धति)
P. साक्षात्कार
Q. विषय-वस्तु विश्लेषण
R. व्यक्ति अध्ययन
S. सर्वेक्षण
सूची II: (अनुप्रयोग उदाहरण)
1. डायरी में कुछ शब्दों की आवृत्ति का विश्लेषण करना।
2. मतदान वरीयताओं पर 1000 व्यक्तियों से उत्तर एकत्र करना।
3. मस्तिष्क की दुर्लभ चोट वाले व्यक्ति का विस्तृत 5-वर्षीय अध्ययन करना।
4. व्यक्ति के जीवन के अनुभवों को समझने के लिए आमने-सामने बातचीत करना।
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

174. जीन किसमें अपनी भूमिका के माध्यम से व्यवहार को प्रभावित करते हैं:
(A) सीधे विचार और भावनाएं पैदा करने में।
(B) उन प्रोटीनों के संश्लेषण का मार्गदर्शन करने में जो तंत्रिका तंत्र की विकास और कार्यप्रणाली को प्रभावित करते हैं।
(C) उस वातावरण को नियंत्रित करने में जिसमें व्यक्ति का पालन-पोषण होता है।
(D) विशेष रूप से व्यक्ति की बुद्धि लब्धि निर्धारित करने में।

175. संवेगात्मक गतिविधि में हार्मोन की भूमिका का अध्ययन यह जाँच कर किया जाता है कि अधिवृक्क ग्रंथियां किसे प्रभावित करती हैं:
(A) सूक्ष्म संवेदी तीक्ष्णता।
(B) मोटर समन्वय कौशल।
(C) भय और क्रोध की अवस्थाएँ।
(D) अमूर्त तार्किक तर्क।

176. मनोविज्ञान में अवलोकन पद्धति का मूलभूत लक्ष्य क्या है?
(A) व्यवहार का कारण निर्धारित करना।
(B) बड़े समूहों से स्व-रिपोर्ट डेटा एकत्र करना।
(C) संचार की विषय-वस्तु का विश्लेषण करना।
(D) व्यवहार का वर्णन करना जैसा कि वह स्वाभाविक रूप से होता है।

177. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन पद्धति की सामान्यीकरण क्षमता कम होती है।
कारण (R): इसमें आमतौर पर किसी एक व्यक्ति या बहुत छोटे समूह का गहन अध्ययन शामिल होता है, जिसकी विशेषताएँ बड़ी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

178. दृश्य ग्राही जो तेज़ रोशनी में दृष्टि और रंग प्रसंस्करण के लिए उत्तरदायी हैं, वे हैं:
(A) छड़ें।
(B) शंकु।
(C) द्विध्रुवी कोशिकाएं।
(D) गेंग्लियन कोशिकाएं।

179. एक विषय के रूप में मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र को किस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है:
(A) मानव आत्मा का अध्ययन।
(B) जीवन के अर्थ की दार्शनिक जाँच।
(C) व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन।
(D) ऐतिहासिक घटनाओं का विश्लेषण।

180. व्यवहार के जैविक आधारों में निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी का अध्ययन शामिल है:
(A) व्यवहार का अनुवांशिक आधार।
(B) ग्राही और प्रभावक तंत्र।
(C) हार्मोन की भूमिका।
(D) आर्थिक नीतियों का प्रभाव।

181. व्यक्तित्व पर भारतीय मनोविज्ञान के दृष्टिकोण का एक प्रमुख पक्ष यह विचार है:
(A) मन, शरीर और चेतना के एकीकरण की अवस्था की ओर विकास।
(B) निश्चित, सार्वभौमिक मनोयौन चरणों के माध्यम से विकास।
(C) सीखे गए उद्दीपक-प्रतिक्रिया संघों के समूह के रूप में व्यक्तित्व।

(D) विशेष रूप से केवल आनुवंशिकी द्वारा निर्धारित लक्षणों के एक स्थिर समूह के रूप में व्यक्तित्व।

182. कौन सी शोध पद्धति सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रह के प्रति सर्वाधिक संवेदनशील है?
(A) प्राकृतिक अवलोकन पद्धति
(B) प्रश्नावली और साक्षात्कार पद्धतियां
(C) व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण पद्धति
(D) नियंत्रित डबल ब्लाइंड प्रयोग

183. जैविक आधारों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ग्राही उद्दीपकों का पता लगाते हैं।
2. केंद्रीय तंत्रिका तंत्र समायोजक के रूप में कार्य करता है।
3. मांसपेशियां और ग्रंथियां प्रभावक हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

184. मनोविज्ञान और सामाजिक विज्ञान के बीच संबंध तब स्पष्ट होता है जब मनोवैज्ञानिक अध्ययन करते हैं:
(A) मूड पर न्यूरोट्रांसमीटर के प्रभाव।
(B) बुद्धि में जीन की भूमिका।
(C) मानव आँख की संरचना।
(D) व्यक्तिगत व्यवहार पर सांस्कृतिक मानदंडों का प्रभाव।

185. मध्य कान में अस्थिकाओं का कार्य क्या है:
(A) कान के पर्दे के कंपन को प्रवर्धित करना।
(B) कंपनों को तंत्रिका आवेगों में बदलना।
(C) आंतरिक कान को तेज़ आवाज़ों से बचाना।
(D) शरीर के संतुलन की भावना बनाए रखना।

186. मनोविज्ञान में वैज्ञानिक दृष्टिकोण किस पर बल देता है:
(A) अधिकार पर निर्भरता।
(B) आनुभविक डेटा का संग्रह।
(C) अकेले तार्किक कटौती के माध्यम से प्रमाण।
(D) सामान्य ज्ञान की स्वीकृति।

187. हार्मोन व्यक्तित्व विकास में कैसे योगदान करते हैं:
(A) हर स्थिति में व्यक्ति की पसंद को निर्देशित करके।
(B) व्यक्ति की बुद्धि और विशिष्ट कौशल निर्धारित करके।
(C) स्वभावगत कारकों जैसे कि संवेगात्मक प्रतिक्रिया और ऊर्जा स्तर को प्रभावित करके।
(D) पिछली घटनाओं की यादें बनाकर।

188. निम्नलिखित में से कौन सा प्रभावक का उदाहरण है?
(A) दृष्टिपटल में एक छड़ कोशिका।
(B) जिह्वा पर एक स्वाद कलिका।
(C) प्रमस्तिष्क वल्कुट में एक न्यूरॉन।
(D) हाथ की बाइसेप मांसपेशी।

189. व्यक्ति जानकारी कैसे प्राप्त करते हैं, संग्रहीत करते हैं और संसाधित करते हैं, इसका अध्ययन किसके विषय-क्षेत्र के लिए केंद्रीय है:
(A) आधारभूत संज्ञानात्मक मनोविज्ञान।
(B) प्रारंभिक व्यवहारवाद।
(C) पारंपरिक मनोविश्लेषण।
(D) आधुनिक मानवतावादी मनोविज्ञान।

190. प्रश्नावली की तुलना में साक्षात्कार पद्धति का प्राथमिक लाभ यह है कि यह:
(A) कम समय लेने वाली है।
(B) शोधकर्ता को प्रश्नों को स्पष्ट करने और अधिक विस्तृत उत्तरों के लिए जाँच करने की अनुमति देती है।
(C) साक्षात्कारकर्ता के पूर्वाग्रह के जोखिम को समाप्त करती है।
(D) गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए बेहतर है।

191. मनोविज्ञान में विश्लेषण के निम्नलिखित स्तरों को सबसे सूक्ष्म से सबसे व्यापक के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. समूह-स्तरीय प्रभाव
2. मस्तिष्क प्रणाली और तंत्रिका रसायन
3. व्यक्तिगत विचार और भावनाएं
(A) 2, 3, 1
(B) 1, 3, 2
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 1, 3

192. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): बुद्धि या व्यक्तित्व जैसे जटिल मनोवैज्ञानिक लक्षण के लिए आमतौर पर एक अकेला जीन उत्तरदायी होता है।
कारण (R): जटिल मनोवैज्ञानिक लक्षण बहुजनी होते हैं, जिसका अर्थ है कि वे पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया में अनेक जीनों की क्रिया से प्रभावित होते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

193. मनोवैज्ञानिक डेटा के लिए डायरियों, पत्रों और सार्वजनिक अभिलेखों का विश्लेषण किस पद्धति का अनुप्रयोग है?
(A) व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण
(B) मानकीकृत सर्वेक्षण पद्धति
(C) नियंत्रित प्रयोगात्मक पद्धति
(D) प्रत्यक्ष अवलोकन पद्धति

194. त्वचा संवेदनाओं की संरचना और कार्य में निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी के लिए ग्राही शामिल हैं:
(A) संवेदी दबाव
(B) दृश्य प्रकाश
(C) तीव्र दर्द
(D) परिवर्तनशील तापमान

195. भारतीय मनोविज्ञान की प्रकृति को अक्सर समग्र कहा जाता है क्योंकि यह:
(A) केवल व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करता है और मन की उपेक्षा करता है।
(B) किसी भी प्रकार की आनुभविक जाँच को नकारता है।
(C) शरीर, मन और चेतना के परस्पर प्रभाव पर विचार करता है।
(D) विशेष रूप से केवल पश्चिमी मनोवैज्ञानिक मॉडलों पर आधारित है।

196. ग्राहियों और प्रभावकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: एक ग्राही का प्राथमिक कार्य प्रतिक्रिया निष्पादित करना है।
कथन II: एक प्रभावक का प्राथमिक कार्य उद्दीपक का पता लगाना है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

197. साक्षात्कार और प्रश्नावली पद्धतियों के बीच एक प्रमुख समानता यह है कि दोनों:
(A) सहभागियों के स्व-रिपोर्ट डेटा पर निर्भर करते हैं।
(B) एक स्वतंत्र चर के हेरफेर में शामिल हैं।
(C) प्राकृतिक अवलोकन के रूप हैं।
(D) एक ही व्यक्ति के बारे में गहन जानकारी प्रदान करते हैं।

198. शारीरिक विकास में हार्मोन की भूमिका, जैसे पीयूष ग्रंथि से वृद्धि हार्मोन का स्राव, किसके अंतर्गत एक विषय है:
(A) संवादात्मक सामाजिक मनोविज्ञान
(B) आधारभूत शारीरिक मनोविज्ञान
(C) संज्ञानात्मक अनुसंधान मनोविज्ञान
(D) नृवंश-सांस्कृतिक मनोविज्ञान

199. मनोविज्ञान की शाखाओं और उनके विषय-क्षेत्र/अनुप्रयोग के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (मनोविज्ञान की शाखा)
P. स्वास्थ्य मनोविज्ञान
Q. शैक्षिक मनोविज्ञान
R. औद्योगिक-संगठनात्मक मनोविज्ञान
S. विधि मनोविज्ञान
सूची II: (विषय-क्षेत्र/अनुप्रयोग)
1. विधिक प्रणाली में मनोविज्ञान को लागू करना
2. कार्यस्थल की उत्पादकता और कर्मियों के चयन में सुधार करना
3. यह समझना कि लोग कैसे सीखते हैं और बेहतर शिक्षण विधियाँ बनाना
4. रोग में मनोवैज्ञानिक कारकों का अध्ययन करना और कल्याण को बढ़ावा देना
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

200. आँख का वह भाग जिसमें शंकु की सांद्रता सर्वाधिक होती है और जो स्पष्ट, विस्तृत दृष्टि के लिए उत्तरदायी है, वह है:
(A) पुतली।
(B) केंद्रीय फोविया।
(C) बाहरी श्वेतपटल।
(D) दृष्टि तंत्रिका।

201. यह तथ्य कि मनोविज्ञान न्यूरोट्रांसमीटर और मस्तिष्क के कार्य जैसे विषयों का अध्ययन करता है, ________ विज्ञानों के साथ इसका संबंध दर्शाता है, जबकि समूह अनुरूपता जैसे विषयों का इसका अध्ययन ________ विज्ञानों के साथ इसका संबंध दर्शाता है।
(A) सामाजिक; प्राकृतिक
(B) प्राकृतिक; सामाजिक
(C) औपचारिक; अनुप्रयुक्त
(D) अनुप्रयुक्त; औपचारिक

202. निम्नलिखित में से कौन मनोवैज्ञानिक पद्धति की सही पहचान है?
(A) विषय-वस्तु विश्लेषण: विशिष्ट विषयों के लिए मीडिया की व्यवस्थित जाँच और कोडिंग करना।
(B) व्यक्ति अध्ययन: एक बड़े समूह पर इसके प्रभाव को देखने के लिए किसी चर में हेरफेर करना।
(C) सर्वेक्षण: एक व्यक्ति का दीर्घकालिक, गहन विश्लेषण करना।
(D) प्रयोग: हस्तक्षेप के बिना प्राकृतिक वातावरण में व्यवहार का अवलोकन करना।

203. एक शोधकर्ता समरूप बनाम भ्रातृ जुड़वा बच्चों में लक्षण की समानता की तुलना करके शर्मीलेपन के वंशानुगत आधार का अध्ययन करता है।
यह शोध किसके अध्ययन के अंतर्गत आता है:
(A) हार्मोन की भूमिका।
(B) प्रभावक तंत्र।
(C) व्यवहार का अनुवांशिक आधार।
(D) ग्राही तंत्र।

204. संवेदी प्रणालियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. श्रवण प्रणाली ध्वनि का पता लगाने के लिए प्रकाशग्राहियों का उपयोग करती है।
2. दृश्य प्रणाली प्रकाश ऊर्जा को तंत्रिका संकेतों में परिवर्तित करती है।
3. त्वचा में दबाव की संवेदना के लिए यांत्रिकग्राही होते हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?

(A) केवल 2 और 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

205. असंरचित साक्षात्कार का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?

(A) यह सुनिश्चित करना कि सभी सहभागी बिल्कुल एक जैसे प्रश्नों के उत्तर दें।
(B) एक बड़े नमूने से मात्रात्मक डेटा एकत्र करना।
(C) विषयों के सामने आने पर लचीलेपन और उनकी खोज की अनुमति देना।
(D) साक्षात्कारकर्ता के प्रभाव को समाप्त करना।

206. व्यक्तित्व विकास के प्रति भारतीय मनोविज्ञान के दृष्टिकोण को सबसे अच्छी तरह किस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:

(A) आधुनिक न्यूनीकरणवादी
(B) आध्यात्मिक परिवर्तनकारी
(C) रेखीय यंत्रवत
(D) स्थिर नियतिवादी

207. एक मांसपेशी तंतु का सिकुड़ना एक _______ का उदाहरण है, जबकि एक दृष्टिपटल की छड़ का प्रकाश का पता लगाना एक _______ का उदाहरण है।

(A) ग्राही; प्रभावक
(B) समायोजक; ग्राही
(C) प्रभावक; समायोजक
(D) प्रभावक; ग्राही

208. संवेदना और प्रत्यक्षीकरण के बीच मुख्य अंतर यह है कि संवेदना _______ के बारे में है, जबकि प्रत्यक्षीकरण _______ के बारे में है।

(A) पता लगाना; व्याख्या करना
(B) व्याख्या करना; पता लगाना
(C) प्रतिक्रिया; उद्दीपक
(D) उद्दीपक; प्रतिक्रिया

209. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।

अभिकथन (A): मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र बहुत व्यापक है।
कारण (R): इसमें जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोणों से व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन शामिल है।

(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

210. द्वितीयक यौन विशेषताओं के विकास में टेस्टोस्टेरोन और एस्ट्रोजन जैसे हार्मोन की भूमिका उनके किस प्रभाव का एक उदाहरण है:

(A) अल्पकालिक संवेगात्मक गतिविधि।
(B) अनुदैर्ध्य शारीरिक विकास।
(C) तत्काल व्यवहारात्मक प्रतिक्रियाएं।
(D) संवेदी प्रत्यक्षीकरण विधा।

211. व्यवहार का कारण निर्धारित करने के लिए कौन सी पद्धति सबसे कम प्रभावी होगी?

(A) प्रयोगात्मक पद्धति
(B) एक नियंत्रित प्रयोगशाला प्रयोग
(C) प्रत्यक्ष अवलोकन पद्धति
(D) एक नियंत्रण समूह वाला प्रयोग

212. एक औपचारिक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान का ऐतिहासिक विकास किसके साथ शुरु हुआ:

(A) दार्शनिक यूनानी लेखन
(B) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत
(C) भारतीय मनोवैज्ञानिक अवधारणाएं
(D) प्रयोगशाला व्यवस्थित अध्ययन

213. कर्णपटह झिल्ली, अस्थिकाएं और कोकलिया सभी किसके लिए प्रमुख संरचनाएं हैं:

(A) श्रवण संवेदना
(B) दृश्य संवेदना
(C) त्वचा संवेदना
(D) घ्राण संवेदना

214. व्यवहार के अनुवांशिक आधार के बारे में कौन सा कथन सर्वाधिक सटीक है?

(A) एक अकेला "व्यवहार जीन" प्रत्येक क्रिया को निर्धारित करता है।
(B) जीन प्रवृत्तियाँ उत्पन्न करते हैं, जिन्हें बाद में पर्यावरणीय कारकों द्वारा आकार दिया जाता है।
(C) अनुभव और अधिगम अप्रासंगिक हैं; व्यवहार विशुद्ध रूप से अनुवांशिक है।
(D) व्यवहार के अनुवांशिक आधार का अध्ययन प्रश्नावलियों और साक्षात्कारों के माध्यम से किया जाता है।

215. एक आनुभविक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की प्रकृति का अर्थ है कि इसका ज्ञान किसके माध्यम से प्राप्त किया जाता है:

(A) केवल तार्किक तर्क।
(B) अंतर्ज्ञान और अंतर्दृष्टि।

(C) अवलोकन और प्रयोग।
(D) प्रामाणिक सूत्रों की बात स्वीकार करना।

216. मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: एक प्रयोग में, वह चर जिसे शोधकर्ता द्वारा हेरफेर किया जाता है, आश्रित चर है।
कथन II: नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन पद्धति निष्कर्षों के उच्च सामान्यीकरण की अनुमति देती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

217. "समायोजक" के रूप में केंद्रीय तंत्रिका तंत्र का कार्य क्या है:
(A) बाहरी ऊर्जा का पता लगाना।
(B) शारीरिक प्रतिक्रिया उत्पन्न करना।
(C) रक्तप्रवाह में हार्मोन स्रावित करना।
(D) संवेदी इनपुट को एकीकृत करना और प्रतिक्रिया का समन्वय करना।

218. व्यक्तित्व विकास में भारतीय मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र किन अवधारणाओं की व्याख्या करने के लिए 'संस्कार' और 'गुण' जैसी अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित करता है:
(A) व्यक्तिगत अंतर और प्रवृत्तियाँ।
(B) उद्दीपक-प्रतिक्रिया अधिगम।
(C) सूचना प्रसंस्करण क्षमता।
(D) सामाजिक अधिगम तंत्र।

219. कान का वह भाग जिसमें सुनने के लिए रोम कोशिकाओं वाली तरल से भरी संरचना होती है, वह है:
(A) पिन्ना।
(B) कोकलिया।
(C) अस्थिकाएं।
(D) कर्णपटह।

220. दृष्टिकोण मापने के लिए प्रश्नावली का उपयोग किस अध्ययन पद्धति का उदाहरण है?
(A) नियंत्रित प्रयोगात्मक
(B) व्यवस्थित अवलोकनात्मक
(C) वर्णनात्मक सर्वेक्षण
(D) गहन व्यक्ति अध्ययन

221. जैविक शब्दों और उदाहरणों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (जैविक शब्द)
P. ग्राही
Q. प्रभावक
R. समायोजक
S. जीन
सूची II: (उदाहरण)
1. मस्तिष्क
2. मांसपेशी
3. डीएनए की इकाई
4. दृष्टिपटल में छड़ कोशिका
कूट:
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

222. प्राकृतिक विज्ञानों के साथ मनोविज्ञान का संबंध किसके क्षेत्र के माध्यम से सर्वाधिक दृढ़ता से प्रदर्शित होता है:
(A) अंतःक्रियात्मक सामाजिक मनोविज्ञान
(B) आधारभूत शारीरिक मनोविज्ञान
(C) व्याख्यात्मक सांस्कृतिक मनोविज्ञान
(D) विधिक मनोविज्ञान

223. सर्वेक्षण पद्धति का प्राथमिक दोष क्या है?
(A) इसका उपयोग दृष्टिकोण या राय के अध्ययन के लिए नहीं किया जा सकता है।
(B) एकत्र किया गया डेटा अक्सर विश्लेषण के लिए बहुत गहन और जटिल होता है।
(C) डेटा की शुद्धता उत्तरदाताओं की ईमानदारी और जागरूकता पर निर्भर करती है।
(D) इसे व्यक्तियों के बड़े समूहों को प्रशासित करना कठिन है।

224. हार्मोन किसे प्रभावित करके व्यक्तित्व को प्रभावित कर सकते हैं:
(A) वह विशिष्ट भाषा जो व्यक्ति सीखता है।
(B) वह राजनीतिक विश्वास जो व्यक्ति रखता है।
(C) व्यक्ति की गणितीय क्षमताओं को सीधे तौर पर।
(D) व्यक्ति के संवेगात्मक प्रतिक्रिया और मूड का स्तर।

225. मनोविज्ञान में वैज्ञानिक पद्धति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसमें एक परीक्षण योग्य परिकल्पना तैयार करना शामिल है।
2. यह डेटा के व्यवस्थित संग्रह पर निर्भर करता है।
3. इसका लक्ष्य वस्तुनिष्ठ तथ्यों के स्थान पर व्यक्तिपरक व्याख्याएं प्रदान करना है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

226. कोकलिया में रोम कोशिकाएं किस प्रकार के ग्राही हैं?
(A) दृश्य प्रकाशग्राही
(B) संवेदी यांत्रिकग्राही

(C) चयापचय रसायनग्राही
(D) परिवेशी तापग्राही

227. भारतीय मनोविज्ञान में व्यक्तित्व विकास में 'अहं' को पार करना शामिल है, जो किस पर इसके ध्यान के अनुरूप है:
(A) सामाजिक समायोजन।
(B) आजीविका की उन्नति।
(C) आध्यात्मिक विकास।
(D) बौद्धिक कौशल।

228. किस पद्धति में मौजूदा अभिलेखों या संचार, जैसे रोगी की संचिका या मीडिया प्रसारणों की व्यवस्थित जाँच शामिल है?
(A) नियंत्रित प्रयोग
(B) वर्णनात्मक सर्वेक्षण
(C) व्यक्तिगत साक्षात्कार
(D) विषय-वस्तु विश्लेषण

229. निम्नलिखित में से कौन सा प्रभावक का उदाहरण नहीं है?
(A) दृष्टि तंत्रिका में एक न्यूरॉन।
(B) लार ग्रंथि।
(C) हृदय की मांसपेशी।
(D) अधिवृक्क ग्रंथि।

230. एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र किससे संबंधित है:
(A) केवल असामान्य व्यवहार।
(B) व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाएं।
(C) केवल मानव व्यवहार।
(D) केवल सामाजिक व्यवहार।

231. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): भारतीय मनोविज्ञान की 'प्रकृति' को अक्सर पारंपरिक पश्चिमी मनोविज्ञान की तुलना में अधिक समग्र माना जाता है।
कारण (R): यह मन, शरीर, चेतना और आध्यात्मिकता के अध्ययन को एकीकृत करता है, जो अक्सर दार्शनिक और चिंतनशील परंपराओं से लिया जाता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

232. 'प्रकृति बनाम पोषण' की बहस मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में किस विषय के लिए सर्वाधिक प्रासंगिक है?
(A) विशिष्ट अध्ययन पद्धतियां
(B) आंतरिक श्रवण प्रणाली
(C) व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण
(D) विरासत में मिला अनुवांशिक आधार

233. दृष्टिपटल में छड़ों का प्राथमिक कार्य क्या है:
(A) कम रोशनी में दृष्टि।
(B) ज्वलंत रंग दृष्टि।
(C) बिंब को केंद्रित करना।
(D) सूक्ष्म विवरणों का पता लगाना।

234. एक मनोवैज्ञानिक सहभागियों से उनकी अध्ययन की आदतों के बारे में प्रश्नों वाली एक प्रश्नावली भरने के लिए कहता है। यह किसका उदाहरण है:
(A) प्रत्यक्ष अवलोकन पद्धति।
(B) संरचित प्रश्नावली पद्धति।
(C) नियंत्रित प्रयोगात्मक पद्धति।
(D) गहन व्यक्ति अध्ययन पद्धति।

235. मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के बीच संबंध को किसके क्षेत्र द्वारा सबसे अच्छी तरह से उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है:
(A) आधारभूत शारीरिक मनोविज्ञान।
(B) जैविक तंत्रिका-मनोविज्ञान।
(C) व्यवस्थित सामाजिक मनोविज्ञान।
(D) विकासात्मक जैव-मनोविज्ञान।

236. केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से आदेश को क्रियान्वित करने के लिए उत्तरदायी जैविक तंत्र कौन सा है?
(A) संवेदी ग्राही।
(B) केंद्रीय समायोजक।
(C) आने वाला संवेदी न्यूरॉन।
(D) व्यवहारात्मक दैहिक प्रभावक।

237. भारतीय मनोविज्ञान पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य किसमें इसकी उत्पत्ति पर बल देता है:
(A) वेदों, उपनिषदों और योग सूत्रों जैसे प्राचीन ग्रंथों में।
(B) अमेरिका में व्यवहारवादी प्रयोगशालाओं में।
(C) यूरोप में मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सालयों में।
(D) 1950 के दशक की संज्ञानात्मक क्रांति में।

238. निम्नलिखित में से कौन सी अध्ययन पद्धति चरों पर उच्चतम स्तर का नियंत्रण प्रदान करती है?
(A) प्रत्यक्ष प्राकृतिक अवलोकन
(B) नियंत्रित वैज्ञानिक प्रयोग
(C) अनुदैर्ध्य गहन व्यक्ति अध्ययन
(D) व्यापक वर्णनात्मक सर्वेक्षण

239. त्वचा के स्पर्श या विस्थापित होने की संवेदना किसके द्वारा महसूस की जाती है:
(A) दैहिक नोसिसेप्टर्स।
(B) परिवेशी तापग्राही।
(C) स्पर्श यांत्रिकग्राही।
(D) दृश्य प्रकाशग्राही।

240. संवेगात्मक गतिविधि पर अंतःस्रावी तंत्र का प्रभाव किसके अध्ययन का एक प्रमुख भाग है:
(A) सामाजिक संज्ञान।
(B) भाषाई सापेक्षता।
(C) अधिगम सिद्धांत।
(D) व्यवहार के जैविक आधार।

241. मनोविज्ञान की प्रकृति और विषय-क्षेत्र के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मनोविज्ञान को एक विज्ञान माना जाता है क्योंकि यह आनुभविक पद्धतियों का उपयोग करता है।
2. मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र केवल मानसिक विकारों के उपचार तक सीमित है।
3. मनोविज्ञान का प्राकृतिक और सामाजिक दोनों विज्ञानों के साथ गहरा संबंध है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

242. एक शोध साक्षात्कार में, यदि शोधकर्ता स्पष्टीकरण के लिए "क्या आप मुझे इसके बारे में और बता सकते हैं?" जैसे प्रश्न पूछता है।
यह संभवतः एक:
(A) निश्चित संरचित साक्षात्कार है।
(B) लचीला असंरचित साक्षात्कार है।
(C) मानकीकृत प्रश्नावली है।
(D) व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण है।

243. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा आँख का लेंस पास या दूर की वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपना आकार बदलता है, कहलाती है:
(A) तंत्रिका पारांतरण।
(B) संवेदी अनुकूलन।
(C) दृश्य समंजन।
(D) प्रकाश अपवर्तन।

244. यह विचार कि व्यक्तित्व तीन मौलिक गुणों (सत्व, रजस, तमस) के संतुलन से प्रभावित होता है, किसकी एक अवधारणा है:
(A) पारंपरिक मनोविश्लेषण।
(B) व्यवहारवाद।
(C) आधुनिक मानवतावादी मनोविज्ञान।
(D) आधारभूत भारतीय मनोविज्ञान।

245. तंत्रिका तंत्र, हार्मोन और आनुवंशिकी व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं, इसका अध्ययन किसके अंतर्गत आता है:
(A) व्यवहार के जैविक आधार।
(B) व्यवहार के सामाजिक आधार।
(C) व्यवहार के सांस्कृतिक आधार।
(D) व्यवहार के ऐतिहासिक आधार।

246. मनोवैज्ञानिक शोध पद्धतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: प्रयोगात्मक पद्धति का उपयोग मुख्य रूप से बिना किसी हेरफेर के प्राकृतिक वातावरण में व्यवहार का वर्णन करने के लिए किया जाता है।
कथन II: अवलोकन पद्धति शोधकर्ता को चरों के बीच कार्य-कारण संबंध निर्धारित करने की अनुमति देती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

247. ग्रंथियों को प्रभावक माना जाता है क्योंकि वे:
(A) बाहरी उद्दीपकों का पता लगाती हैं।
(B) संवेदी सूचनाओं को संसाधित करती हैं।
(C) आंतरिक अनुवांशिक जानकारी ले जाती हैं।
(D) स्राव के माध्यम से प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं।

248. दृष्टिकोण कैसे बनते और बदलते हैं, इसका अध्ययन किसके विषय-क्षेत्र के भीतर एक केंद्रीय विषय है:
(A) अंतःक्रियात्मक सामाजिक मनोविज्ञान।
(B) आधारभूत शारीरिक मनोविज्ञान।
(C) बुनियादी संवेदना और प्रत्यक्षीकरण।
(D) पारंपरिक भारतीय मनोविज्ञान।

249. श्रवण संवेदना के लिए ग्राही कहाँ स्थित होते हैं:
(A) दृष्टिपटल क्षेत्र में।
(B) घ्राण कंद में।
(C) आंतरिक कोकलिया में।
(D) बाहरी त्वचा में।

250. व्यक्ति अध्ययन पद्धति की एक प्रमुख शक्ति यह है कि यह:
(A) व्यापक सामान्यीकरण की अनुमति देती है।
(B) अत्यंत गहन जानकारी प्रदान करती है।
(C) संचालित करने में त्वरित और अल्पव्ययी है।
(D) शोधकर्ता के पूर्वाग्रह से मुक्त है।

251. संवेदी ग्राहियों और संवेदनाओं के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (संवेदी ग्राही)
P. छड़ें और शंकु
Q. रोम कोशिकाएं
R. यांत्रिकग्राही
S. तापग्राही

सूची II: (संवेदना)
1. श्रवण
2. दृष्टि
3. तापमान

4. स्पर्श/दबाव

कूट:

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

252. "व्यवहार का अनुवांशिक आधार" इस बात की खोज करता है कि मनोवैज्ञानिक विशेषताएं किस सीमा तक हैं:
(A) विशुद्ध रूप से सीखी हुई।
(B) सांस्कृतिक रूप से निर्धारित।
(C) विशुद्ध रूप से स्थितिजन्य।
(D) जैविक रूप से आनुवंशिक।

253. निम्नलिखित में से कौन सी हार्मोन की एक भूमिका है?
(A) संवेगात्मक गतिविधि और व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करना।
(B) न्यूरॉन्स के बीच तीव्र विद्युत संकेतों को प्रसारित करना।
(C) सीधे भाषा जैसे विशिष्ट जटिल व्यवहार उत्पन्न करना।
(D) दृष्टि और श्रवण के लिए प्राथमिक ग्राही के रूप में कार्य करना।

254. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): मनोविज्ञान एक सामाजिक विज्ञान है।
कारण (R): मनोविज्ञान एक प्राकृतिक विज्ञान भी है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

255. बाल्यकाल से वयस्कता तक नैतिकता के विकास का अध्ययन करने वाला मनोवैज्ञानिक किसके विषय-क्षेत्र के भीतर कार्य कर रहा है:
(A) संगठनात्मक औद्योगिक मनोविज्ञान।
(B) आधारभूत शारीरिक मनोविज्ञान।
(C) अनुदैर्ध्य विकासात्मक मनोविज्ञान।
(D) पारंपरिक भारतीय मनोविज्ञान।

256. एक प्रयोग को एक सर्वेक्षण से क्या पृथक करता है?
(A) प्रयोग में प्रत्यक्ष अवलोकन शामिल है, जबकि सर्वेक्षण में नहीं।
(B) सर्वेक्षण प्रयोग की तुलना में अधिक वैज्ञानिक है।
(C) सर्वेक्षण का उपयोग व्यक्तियों के लिए किया जाता है, जबकि प्रयोग का उपयोग समूहों के लिए किया जाता है।
(D) प्रयोग में किसी चर का हेरफेर शामिल होता है, जबकि सर्वेक्षण मौजूदा दृष्टिकोणों या व्यवहारों को मापता है।

257. मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी मिलकर प्राथमिक रूप से क्या बनते हैं:
(A) समायोजक तंत्र।
(B) ग्राही तंत्र।
(C) प्रभावक तंत्र।
(D) हार्मोनल तंत्र।

258. व्यक्तित्व विकास के लक्ष्य के रूप में 'आत्म-साक्षात्कार' की अवधारणा किसका एक प्रमुख विषय है:
(A) व्यवहारवाद।
(B) पारंपरिक भारतीय मनोविज्ञान।
(C) संज्ञानवादी सूचना प्रसंस्करण।
(D) मनोविश्लेषण।

259. आँख में परितारिका का कार्य क्या है:
(A) दृष्टिपटल पर प्रकाश केंद्रित करना।
(B) प्रकाश को तंत्रिका संकेतों में बदलना।
(C) आँख में प्रवेश करने वाले प्रकाश की मात्रा को नियंत्रित करना।
(D) आँख को पोषक तत्व प्रदान करना।

260. एक अध्ययन जो वयस्कों के प्रसन्नता के स्तर के बारे में राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि नमूने से डेटा एकत्र करता है।
यह किसका उदाहरण है:
(A) गहन व्यक्ति अध्ययन।
(B) नियंत्रित प्रयोग।
(C) व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण।
(D) वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति।

261. मनोविज्ञान की पद्धतियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. व्यक्ति अध्ययन पद्धति समृद्ध गुणात्मक डेटा प्रदान करती है लेकिन इसकी सामान्यीकरण क्षमता कम होती है।
2. प्रयोगात्मक पद्धति का उपयोग कार्य-कारण संबंधों का पता लगाने के लिए किया जाता है।
3. सर्वेक्षण पद्धति बड़ी जनसंख्या से डेटा एकत्र करने के लिए कुशल है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

262. व्यवहार के जैविक आधार इस बात पर बल देते हैं कि मनोवैज्ञानिक घटनाएं किसमें निहित हैं:
(A) विशुद्ध रूप से सामाजिक अंतःक्रियाएं।
(B) शारीरिक और अनुवांशिक प्रक्रियाएं।
(C) दार्शनिक सिद्धांत।
(D) ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ।

263. श्रवण तंत्रिका का कार्य संकेतों को _______ से _______ तक संचारित करना है।
(A) आँख; मस्तिष्क
(B) त्वचा; रीढ़ की हड्डी
(C) कोकलिया; मस्तिष्क
(D) मस्तिष्क; मांसपेशियां

264. एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की स्थिति किसके उपयोग पर आधारित है:
(A) केवल तर्क और कारण।
(B) आत्मनिरीक्षण और व्यक्तिपरक अनुभव।
(C) परंपरा और ऐतिहासिक मिसाल।
(D) व्यवस्थित अवलोकन और मापन।

265. व्यक्तित्व विकास में हार्मोन की भूमिका बताती है कि स्वभाव किससे प्रभावित हो सकता है:
(A) अंतःस्रावी तंत्र।
(B) कान की संरचना।
(C) भाषाई क्षमता।
(D) वृहद आर्थिक स्थिति।

266. निम्नलिखित में से कौन सा अध्ययन पद्धति और एक प्रमुख सीमा का सही युग्म है?
(A) प्रयोग - कार्य-कारण का निर्धारण नहीं कर सकता।
(B) सर्वेक्षण - उत्तर गलत या पक्षपाती हो सकते हैं।
(C) व्यक्ति अध्ययन - सभी व्यक्तियों पर सुगमता से सामान्यीकृत किया जा सकता है।
(D) अवलोकन - इसमें चरों का हेरफेर शामिल है।

267. केंद्रीय तंत्रिका तंत्र किसके द्वारा 'समायोजक' के रूप में कार्य करता है:
(A) बाहरी उद्दीपकों का पता लगाना।
(B) मोटर निर्देश निष्पादित करना।
(C) विकास को नियंत्रित करने वाले हार्मोन स्रावित करना।
(D) संवेदी इनपुट और मोटर आउटपुट के बीच जानकारी को एकीकृत करना।

268. भारतीय मनोविज्ञान के इतिहास की विशेषता किसके प्रति इसके झुकाव से है:
(A) चेतना, 'स्व' और आत्म-साक्षात्कार की पद्धतियां।
(B) केवल देखने योग्य व्यवहार।
(C) सूचना प्रसंस्करण मॉडल।
(D) गंभीर मनोरोग का उपचार।

269. स्पर्श, दबाव और तापमान की भावना के ग्राही कहाँ स्थित होते हैं:
(A) आंतरिक दृष्टिपटल।
(B) आंतरिक कोकलिया।
(C) दैहिक त्वचा।
(D) केंद्रीय अधःश्वेतक।

270. व्यवहार के जैविक आधार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: जीन आनुवंशिकता की मूलभूत इकाइयाँ हैं।
कथन II: हार्मोन रासायनिक संदेशवाहक हैं जो व्यवहार और भावनाओं को प्रभावित कर सकते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

271. अवधारणाओं और उनके विवरणों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. मनोविज्ञान की प्रकृति
Q. मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र
R. ग्राही तंत्र
S. प्रभावक तंत्र
सूची II: (विवरण)
1. मांसपेशियां और ग्रंथियां
2. क्षेत्र में विषयों और अनुप्रयोगों की श्रेणी
3. उद्दीपक का पता लगाने वाला एक संवेदी अंग
4. एक वैज्ञानिक विषय के रूप में इसका स्वरूप
कूट:
(A) P-4, Q-2, R-3, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

272. अवलोकन पद्धति की एक प्रमुख सीमा यह है कि:
(A) इसका उपयोग जटिल व्यवहारों के अध्ययन के लिए नहीं किया जा सकता है।
(B) इसका उपयोग प्राकृतिक वातावरण में व्यवहार के अध्ययन के लिए नहीं किया जा सकता है।
(C) यह कार्य और कारण निर्धारित करने के लिए सर्वाधिक प्रभावी पद्धति है।
(D) प्रेक्षक की उपस्थिति देखे जा रहे व्यवहार को परिवर्तित कर सकती है।

273. आँख का वह भाग जिसमें 'अंध बिंदु' होता है क्योंकि इसमें कोई प्रकाशग्राही नहीं होते, वह है:
(A) संवेदी ऑप्टिक डिस्क।
(B) केंद्रीय दृष्टिपटल फोविया।
(C) रंजित पेशीय परितारिका।
(D) क्रिस्टलीय लेंस।

274. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): सर्वेक्षण पद्धति एक बड़ी जनसंख्या के दृष्टिकोण और राय पर डेटा एकत्र करने का एक कुशल मार्ग

है।
कारण (R): कार्य-कारण संबंध स्थापित करने के लिए सर्वेक्षण पद्धति सर्वश्रेष्ठ पद्धति है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

275. संवेगात्मक गतिविधि में हार्मोन की भूमिका किसके बीच संबंध द्वारा उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत की जाती है:
(A) प्रणालीगत एसिटाइलकोलाइन और मांसपेशियों का संकुचन।
(B) आधारभूत डोपामाइन और व्यवहारात्मक मोटर नियंत्रण।
(C) अधिवृक्क एड्रेनालाईन और पलायन प्रतिक्रिया।
(D) मस्तिष्क सेरोटोनिन और प्रणालीगत निद्रा विनियमन।

276. व्यवहार के अनुवांशिक आधार को इस अध्ययन के रूप में सबसे अच्छा वर्णित किया गया है कि कैसे:
(A) वातावरण सभी व्यवहारों को निर्धारित करता है।
(B) जीन सीधे विशिष्ट, जटिल क्रियाओं का कारण बनते हैं।
(C) हार्मोन माता-पिता से संतान में स्थानांतरित होते हैं।
(D) आनुवंशिकता कुछ व्यवहारों और लक्षणों के लिए प्रवृत्तियों को प्रभावित करती है।

277. व्यक्तित्व विकास पर भारतीय मनोविज्ञान का ध्यान एक आध्यात्मिक प्रकटीकरण की प्रक्रिया के रूप में इसके विषय-क्षेत्र को किसके लिए विशेष रूप से प्रासंगिक बनाता है:
(A) सकारात्मक मनोविज्ञान और कल्याण।
(B) संगठनात्मक व्यवहार।
(C) विपणन और विज्ञापन।
(D) कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुसंधान।

278. किस पद्धति में बिना किसी हेरफेर के जो देखा जाता है उसे व्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड करना शामिल है?
(A) नियंत्रित प्रयोगात्मक पद्धति
(B) व्यवस्थित अवलोकन पद्धति
(C) वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति
(D) गहन नैदानिक पद्धति

279. बाहरी कान से आंतरिक कान तक ध्वनि के संचरण में संरचनाओं का कौन सा क्रम शामिल है?
(A) कोकलिया → अस्थिकाएं → कान का पर्दा
(B) कान का पर्दा → कोकलिया → अस्थिकाएं
(C) कान का पर्दा → अस्थिकाएं → कोकलिया
(D) अस्थिकाएं → कान का पर्दा → कोकलिया

280. एक मनोवैज्ञानिक जो अध्ययन करता है कि विभिन्न संस्कृतियों के व्यक्ति "बुद्धि" को कैसे परिभाषित करते हैं।
वह मनोविज्ञान और किसके बीच संबंध की जाँच कर रहा है:
(A) आधारभूत जीव विज्ञान।
(B) सैद्धांतिक भौतिकी।
(C) चयापचय रसायन विज्ञान।
(D) सांस्कृतिक नृविज्ञान।

281. 'प्रभावक' शब्द शरीर के उन अंगों को संदर्भित करता है जो:
(A) प्रतिक्रिया या क्रिया को अंजाम देते हैं।
(B) संवेदी जानकारी प्राप्त करते हैं।
(C) जानकारी को संसाधित और एकीकृत करते हैं।
(D) पीढ़ियों के बीच जानकारी प्रसारित करते हैं।

282. मनोविज्ञान जैसे विज्ञान की 'प्रकृति' का तात्पर्य है कि यह है:
(A) हठधर्मी और अपरिवर्तनीय।
(B) प्रगतिशील और आत्म-सुधारक।
(C) व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित।
(D) साक्ष्यों से स्वतंत्र।

283. विषय-वस्तु विश्लेषण पद्धति की एक प्रमुख विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) सहभागियों के साथ प्रत्यक्ष बातचीत।
(B) एक स्वतंत्र चर का हेरफेर।
(C) मौजूदा संचार का व्यवस्थित विश्लेषण।
(D) एक व्यक्ति के इतिहास का गहन अध्ययन।

284. दृष्टिपटल में शंकु का कार्य मुख्य रूप से किसके लिए है:
(A) कम रोशनी में दृष्टि।
(B) परिधीय स्थानिक दृष्टि।
(C) अचानक होने वाली हलचल का पता लगाना।
(D) रंग दृष्टि और सूक्ष्म विवरण।

285. भारतीय मनोविज्ञान में, व्यक्तित्व के विकास को अक्सर अज्ञानता की अवस्था से किसकी अवस्था की ओर गति के रूप में देखा जाता है:
(A) आत्म-ज्ञान और ज्ञानोदय।
(B) अधिक भौतिक संपदा।
(C) सामाजिक शक्ति।
(D) बौद्धिक जटिलता।

286. व्यवहार के जैविक आधार के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ग्राही, समायोजक और प्रभावक प्रतिक्रिया अनुक्रम में तीन प्रमुख तंत्र हैं।
2. हार्मोन भावनाओं को प्रभावित करते हैं लेकिन शारीरिक विकास में उनकी कोई भूमिका नहीं है।
3. व्यवहार का अनुवांशिक आधार बताता है कि लक्षण विशेष रूप से डीएनए द्वारा निर्धारित होते हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 3
(D) केवल 2 और 3

287. निम्नलिखित में से कौन मनोविज्ञान और प्राकृतिक विज्ञान के बीच संबंध का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(A) यह जाँचना कि सामाजिक मानदंड अनुरूपता को कैसे प्रभावित करते हैं।
(B) देश की लोककथाओं में विषयों का विश्लेषण करना।
(C) भाषा क्षमता पर मस्तिष्क की चोट के प्रभाव की जाँच करना।
(D) बाल विकास पर पालन-पोषण की शैलियों के प्रभाव का अध्ययन करना।

288. एक ही रोगी में दुर्लभ मनोवैज्ञानिक विकार की गहन खोज के लिए कौन सी शोध पद्धति सर्वाधिक उपयुक्त होगी?
(A) व्यापक वर्णनात्मक सर्वेक्षण
(B) नियंत्रित वैज्ञानिक प्रयोग
(C) व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण
(D) नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन

289. व्यक्तित्व विकास में हार्मोन की भूमिका इस बात में देखी जा सकती है कि अंतःस्रावी असंतुलन किसके परिवर्तनों के साथ जुड़ा हो सकता है:
(A) मूड, ऊर्जा स्तर और तनाव प्रतिक्रिया।
(B) बुनियादी भाषा कौशल।
(C) जटिल गणितीय क्षमता।
(D) विशिष्ट राजनीतिक संबद्धता।

290. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
अभिकथन (A): केंद्रीय तंत्रिका तंत्र व्यवहार में समायोजक तंत्र के रूप में कार्य करता है।
कारण (R): यह संवेगी जानकारी प्राप्त करता है, उसे संसाधित करता है, और प्रभावकों द्वारा की जाने वाली उचित प्रतिक्रिया का समन्वय करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

291. निम्नलिखित में से कौन प्राथमिक प्रकार की त्वचा संवेदना है?
(A) वेस्टिबुलर काइनेस्थेसिस
(B) घ्राण का पता लगाना
(C) दैहिक दर्द का पता लगाना
(D) श्रवण तारत्व का पता लगाना

292. मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र में शामिल है:
(A) केवल बुनियादी शोध।
(B) केवल अनुप्रयुक्त शोध।
(C) केवल असामान्य व्यवहार का अध्ययन।
(D) बुनियादी शोध और समस्याओं को हल करने के लिए शोध का अनुप्रयोग दोनों।

293. व्यवहार के अनुवांशिक आधार का अध्ययन किस क्षेत्र में किया जाता है:
(A) व्यवस्थित व्यवहार आनुवंशिकी
(B) अंतःक्रियात्मक सामाजिक मनोविज्ञान
(C) सैद्धांतिक संज्ञानात्मक विज्ञान
(D) चिकित्सीय नैदानिक मनोविज्ञान

294. सुनने की प्रक्रिया में कोकलिया का कार्य क्या है:
(A) ध्वनि तरंगों को प्रवर्धित करना।
(B) यांत्रिक कंपनों को तंत्रिका आवेगों में बदलना।
(C) ध्वनि को कान की नली में भेजना।
(D) सिर की मांसपेशियों को संकेत संचारित करना।

295. एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की प्रकृति के लिए आवश्यक है कि इसके सिद्धांत:
(A) सामान्य ज्ञान पर आधारित हों।
(B) विश्वास पर स्वीकार किए जाएं।
(C) आनुभविक साक्ष्यों द्वारा समर्थित हों।
(D) दार्शनिक तर्कों से प्राप्त हों।

296. मनोविज्ञान और अन्य विज्ञानों के बीच संबंधों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: समाजशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञानों के साथ मनोविज्ञान का कोई संबंध नहीं है।
कथन II: जीव विज्ञान जैसे प्राकृतिक विज्ञानों के साथ मनोविज्ञान का गहरा संबंध है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

297. ग्राही और प्रभावक तंत्र के बीच एक मुख्य अंतर उनका है:
(A) उद्दीपक-प्रतिक्रिया अनुक्रम में भूमिका।
(B) शरीर में स्थान।
(C) रासायनिक संरचना।
(D) अनुवांशिक उत्पत्ति।

298. भारतीय मनोविज्ञान का ऐतिहासिक दृष्टिकोण बताता है कि यह मुख्य रूप से किसे समझने से संबंधित है:
(A) बुनियादी बाजार व्यवहार।
(B) चेतना की प्रकृति।
(C) संवादात्मक राजनीतिक गतिशीलता।
(D) सरल पशु अधिगम।

299. एक प्रयोग में, वह समूह जिसे उपचार या हेरफेर प्राप्त नहीं होता है, कहलाता है:
(A) गहन प्रयोगात्मक समूह
(B) वर्णनात्मक सर्वेक्षण समूह
(C) वैज्ञानिक नियंत्रण समूह
(D) विस्तृत व्यक्ति अध्ययन समूह

300. आँख की वह संरचना जो पुतली के आकार को नियंत्रित करती है और इस प्रकार प्रवेश करने वाले प्रकाश की मात्रा को नियंत्रित करती है, वह है:
(A) आंतरिक दृष्टिपटल।
(B) बाहरी स्वच्छमंडल।
(C) केंद्रित लेंस।
(D) पेशीय परितारिका।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं का व्यवस्थित और आनुभविक अध्ययन।
मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक विषय है क्योंकि यह मानव व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं का व्यवस्थित अध्ययन करता है। यह अध्ययन केवल अनुमानों पर आधारित नहीं होता, बल्कि प्रयोगात्मक और आनुभविक विधियों का उपयोग करता है। इसके अंतर्गत अधिगम, स्मृति, संवेग और व्यवहार के विभिन्न स्वरूपों का विश्लेषण वैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुसार किया जाता है। इससे प्राप्त निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ, प्रमाणिक और विश्वसनीय होते हैं। यह मनुष्य की आंतरिक और बाह्य गतिविधियों की गहरी समझ प्रदान करता है।

2. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है और यह केवल मानसिक विकारों के उपचार तक सीमित नहीं है। इसमें अधिगम, स्मृति और विकास जैसी प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन भी सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त, मनोविज्ञान का जीव विज्ञान और तंत्रिका तंत्र जैसे प्राकृतिक विज्ञानों के साथ गहरा संबंध है क्योंकि मानवीय व्यवहार के पीछे जैविक और शारीरिक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः मनोविज्ञान एक बहुआयामी विज्ञान है जो विभिन्न वैज्ञानिक अनुशासनों के साथ निरंतर अंतःक्रिया करता है।

3. (C) नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन पद्धति
नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन पद्धति शोध की एक ऐसी विशिष्ट तकनीक है जिसमें किसी एक व्यक्ति, विशिष्ट समूह या विशेष घटना का गहराई से विश्लेषण किया जाता है। इस विधि का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के व्यवहार, अतीत के अनुभवों और सामाजिक परिवेश के बीच संबंधों को विस्तार से समझना है। यह पद्धति चिकित्सा मनोविज्ञान में अत्यंत उपयोगी है जहाँ रोगी की समस्याओं का सूक्ष्म अध्ययन आवश्यक होता है। इसमें प्राप्त आँकड़े अत्यंत समृद्ध होते हैं जो शोध में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

4. (D) आंतरिक या बाहरी वातावरण से उद्दीपकों का पता लगाना।
मानव शरीर में ग्राही तंत्र का मुख्य कार्य आंतरिक या बाहरी वातावरण से प्राप्त विभिन्न उद्दीपकों की पहचान करना और उन्हें ग्रहण करना है। ये विशिष्ट संवेदी कोशिकाएं प्रकाश, ध्वनि, गंध और स्पर्श जैसे भौतिक संकेतों को विद्युत आवेगों में परिवर्तित करती हैं। इसके पश्चात ये आवेग तंत्रिका तंत्र के माध्यम से मस्तिष्क तक पहुँचते हैं, जहाँ उनकी व्याख्या की जाती है और उचित प्रतिक्रिया का निर्णय लिया जाता है। ग्राही तंत्र पर्यावरण के साथ संपर्क की प्रथम महत्वपूर्ण कड़ी है।

5. (C) मनोविज्ञान विशेष रूप से एक सामाजिक विज्ञान है जिसका प्राकृतिक विज्ञानों से कोई संबंध नहीं है।
मनोविज्ञान एक व्यापक विज्ञान है जो व्यवहार के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग करता है। यह न केवल एक सामाजिक विज्ञान है, बल्कि इसका प्राकृतिक विज्ञानों जैसे जीव विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान के साथ भी अटूट संबंध है। मनोविज्ञान मानवीय व्यवहार को समझने, उसकी भविष्यवाणी करने और उसे सकारात्मक रूप से नियंत्रित करने का प्रयास करता है। इसका उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य और उद्योग जैसे विविध क्षेत्रों में समस्याओं को सुलझाने हेतु किया जाता है जो इसकी वैज्ञानिक प्रकृति को दर्शाता है।

6. (B) मानकीकृत सर्वेक्षण पद्धति
जब किसी विशाल जनसंख्या के दृष्टिकोण या राय को समझना हो, तो मानकीकृत सर्वेक्षण पद्धति सबसे प्रभावी और कुशल मानी जाती है। इस विधि में प्रश्नावली या साक्षात्कार के माध्यम से बड़े समूह से आँकड़े एकत्र किए जाते हैं। यह कम समय और कम लागत में व्यापक जानकारी प्राप्त करने में सहायक होती है। शिक्षा नीति जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक विषयों पर व्यापक जनमत और सांख्यिकीय निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए यह शोध का सर्वोत्तम और सबसे विश्वसनीय वैज्ञानिक साधन माना जाता है।

7. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
जैविक घटकों के कार्यों का सटीक समन्वय मानवीय व्यवहार के लिए अनिवार्य है। ग्राही विशिष्ट संवेदी कोशिकाएं हैं जो पर्यावरण से उद्दीपकों का पता लगाती हैं। प्रभावक के रूप में मांसपेशियां और ग्रंथियां कार्य करती हैं जो तंत्रिका तंत्र के निर्देशानुसार प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं। समायोजक तंत्र सूचनाओं का प्रसंस्करण मुख्य रूप से केंद्रीय तंत्रिका तंत्र में करता है। अंत में, हार्मोन रक्तप्रवाह में बहने वाले रासायनिक संदेशवाहक हैं जो शरीर की विभिन्न गतिविधियों और संवेगात्मक संतुलन को सूक्ष्मता से प्रभावित करते हैं।

8. (A) विरासत में मिले जीन और गुणसूत्र संरचना
व्यवहार के अनुवांशिक आधार का तात्पर्य उन जैविक कारकों से है जो माता-पिता से विरासत में प्राप्त होते हैं। इसमें मुख्य रूप से जीन और गुणसूत्रों की संरचना सम्मिलित होती है, जो व्यक्ति के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक लक्षणों को निर्धारित करती है। यह जैविक ब्लूप्रिंट तंत्रिका तंत्र के विकास और कार्यप्रणाली को सीधे प्रभावित करता है, जिससे व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं और व्यवहारगत प्रवृत्तियों को आधार मिलता है। आनुवंशिकता और पर्यावरण की अंतःक्रिया ही अंततः किसी व्यक्ति के पूर्ण व्यवहार को स्वरूप प्रदान करती है।

9. (C) संवेदी संतुलन
मानव त्वचा में विभिन्न प्रकार के संवेदी ग्राही होते हैं जो विशिष्ट प्राथमिक संवेदनाओं को ग्रहण करते हैं। इनमें स्पर्श, दबाव, पीड़ा और तापमान मुख्य रूप से सम्मिलित हैं। इन संवेदनाओं के लिए त्वचा में पृथक तंत्रिका सिरे उत्तरदायी होते हैं जो मस्तिष्क को बाहरी वातावरण की सूचना देते हैं। संतुलन की भावना का संबंध त्वचा से नहीं बल्कि आंतरिक कान की संरचनाओं और वेस्टिबुलर प्रणाली से होता है, जो शरीर के अभिविन्यास और गुरुत्वाकर्षण के प्रति जागरूकता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

10. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मनोविज्ञान को एक पूर्ण विज्ञान माना जाता है क्योंकि यह ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित अवलोकन, प्रयोग और साक्ष्य-आधारित पद्धतियों का उपयोग करता है। यह व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करने हेतु विशिष्ट आँकड़े एकत्र करता है और उनका वैज्ञानिक विश्लेषण करता है। वैज्ञानिक पद्धति का कड़ाई से पालन करने के कारण इसके सिद्धांतों का निष्पक्ष परीक्षण और पुनरावृत्ति संभव है। यह तार्किक आधार ही इसे केवल दार्शनिक कल्पनाओं से अलग कर एक प्रमाणिक और विश्वसनीय आधुनिक विज्ञान की श्रेणी में रखता है।

11. (D) व्यक्तिगत व्यक्तित्व विकास
भारतीय मनोविज्ञान व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर विशेष बल देता है। इसका मुख्य अनुप्रयोग व्यक्तिगत व्यक्तित्व विकास में देखा जाता है, जहाँ प्राचीन ग्रंथों और दर्शन के माध्यम से 'स्व' की गहरी समझ विकसित की जाती है। यह दृष्टिकोण पश्चिमी मॉडलों से भिन्न है क्योंकि इसमें चेतना के विभिन्न स्तरों और आध्यात्मिक उन्नति को प्राथमिकता दी जाती है। इससे व्यक्ति को मानसिक शांति और संतुलन प्राप्त करने में सहायता मिलती है। यह आधुनिक तनाव प्रबंधन के लिए एक अत्यंत प्रभावी और व्यवहारिक मार्ग प्रशस्त करता है।

12. (B) शोधकर्ता और सहभागी के बीच प्रत्यक्ष मौखिक बातचीत।
साक्षात्कार पद्धति में शोधकर्ता और सहभागी के बीच आमने-सामने की मौखिक बातचीत होती है। यह विधि व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और दृष्टिकोण को गहराई से समझने में सहायक होती है। इसमें संरचित या असंरचित दोनों प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं, जिससे प्राप्त जानकारी अधिक समृद्ध और गुणात्मक होती है। यह विधि सामाजिक और नैदानिक मनोविज्ञान में सूचना एकत्र करने का एक अत्यंत प्रभावशाली और प्रत्यक्ष साधन है, जो प्रश्नावली की तुलना में उत्तरों को स्पष्ट करने का अवसर भी प्रदान करती है।

13. (B) केवल 2 और 3
प्रयोगात्मक पद्धति का उपयोग चरों के बीच कार्य-कारण संबंध स्थापित करने के लिए किया जाता है। इसमें शोधकर्ता एक स्वतंत्र चर में व्यवस्थित हेरफेर करता है और उसके प्रभाव को आश्रित चर पर मापता है। इस प्रक्रिया में अन्य बाह्य चरों को नियंत्रित रखा जाता है ताकि निष्कर्षों की वैज्ञानिक सटीकता बनी रहे। यह विधि मनोविज्ञान को प्रमाणिक आधार प्रदान करती है और सिद्धांतों के सत्यापन के लिए अनिवार्य मानी जाती है। हालाँकि, व्यक्तिगत गहन अध्ययन के लिए व्यक्ति अध्ययन पद्धति को अधिक उपयुक्त माना जाता है।

14. (D) प्रकाश संवेदनशील दृष्टिपटल
दृष्टिपटल या रेटिना मानव आँख की सबसे महत्वपूर्ण आंतरिक परत है जो प्रकाश के प्रति संवेदनशील होती है। इसमें स्थित छड़ें और शंकु जैसी विशेष कोशिकाएं प्रकाश ऊर्जा को ग्रहण करती हैं। ये कोशिकाएं भौतिक प्रकाश को विद्युत-रासायनिक संकेतों या तंत्रिका आवेगों में परिवर्तित कर देती हैं। इसके पश्चात, ये संकेत दृष्टि तंत्रिका के माध्यम से मस्तिष्क तक पहुँचते हैं, जिससे हमें वस्तुओं को देखने और पहचानने में सहायता मिलती है। दृष्टिपटल के बिना दृश्य सूचनाओं का तंत्रिका तंत्र में पारांतरण संभव नहीं है।

15. (A) मांसपेशियां और ग्रंथियां।
मानव शरीर के प्रभावक तंत्र में वे अंग सम्मिलित होते हैं जो केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से प्राप्त निर्देशों के अनुसार प्रतिक्रिया करते हैं। इनमें प्रमुख रूप से मांसपेशियां और ग्रंथियां आती हैं। जब मस्तिष्क किसी कार्य का निर्णय लेता है, तो तंत्रिका संकेत इन प्रभावकों तक पहुँचते हैं। मांसपेशियां संकुचित होकर शारीरिक गति उत्पन्न करती हैं, जबकि ग्रंथियां हार्मोन या अन्य तरल पदार्थों का स्राव करती हैं, जिससे शरीर आंतरिक और बाह्य उद्दीपकों के प्रति अनुकूल व्यवहार करता है। यह तंत्र क्रियाओं का निष्पादन केंद्र है।

16. (B) वे परस्पर व्यापी क्षेत्र हैं, जहाँ मनोविज्ञान व्यक्तिगत व्यवहार पर और समाजशास्त्र समूह व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करता है।
मनोविज्ञान और समाजशास्त्र दोनों सामाजिक विज्ञान की शाखाएं हैं जो मानवीय व्यवहार का अध्ययन करती हैं। हालाँकि, दोनों का दृष्टिकोण भिन्न है; मनोविज्ञान जहाँ व्यक्तिगत व्यवहार, मानसिक प्रक्रियाओं और अनुभवों पर ध्यान केंद्रित करता है, वहीं समाजशास्त्र सामाजिक संरचनाओं, समूहों और संस्थानों के प्रभाव का विश्लेषण करता है। ये दोनों क्षेत्र अक्सर एक-दूसरे के पूरक होते हैं, जिससे व्यक्ति और समाज के बीच के जटिल संबंधों को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। यह अंतःविषय दृष्टिकोण व्यवहार की व्याख्या को अधिक पूर्ण बनाता है।

17. (B) व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण
जब किसी लिखित या मौखिक संचार सामग्री, जैसे कि राजनीतिक भाषणों का विश्लेषण करना हो, तो विषय-वस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया जाता है। इस विधि में विशिष्ट शब्दों, विषयों या विचारों की आवृत्ति और प्रतिमान को व्यवस्थित रूप से कूटबद्ध किया जाता है। यह शोधकर्ता को संदेश के पीछे छिपे अर्थों और प्रवृत्तियों को वस्तुनिष्ठ रूप से समझने में सहायता करता है। यह संचार अनुसंधान और सामाजिक मनोविज्ञान में एक अत्यंत प्रभावी तकनीक है जो गुणात्मक आँकड़ों को मात्रात्मक रूप में बदलने में पूर्णतः सक्षम है।

18. (A) हार्मोन संवेगात्मक गतिविधि और व्यक्तित्व विकास को नियंत्रित करने में भूमिका निभाते हैं।
अंतःस्रावी ग्रंथियों द्वारा स्रावित हार्मोन मानवीय व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये रासायनिक संदेशवाहक शरीर के संवेगात्मक संतुलन, ऊर्जा स्तर और व्यक्तित्व विकास को गहराई से प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ हार्मोन तनाव के प्रति प्रतिक्रिया को नियंत्रित करते हैं, जबकि अन्य हार्मोन शारीरिक वृद्धि और मनोदशा को स्वरूप देते हैं। हार्मोन की मात्रा में असंतुलन से व्यवहार और व्यक्तित्व में महत्वपूर्ण परिवर्तन आ सकते हैं। यह जैविक नियंत्रण मानवीय स्वभाव के निर्धारण में एक आधारभूत कारक है।

19. (C) श्रवण विधा
श्रवण विधा वह संवेदी प्रणाली है जिसके माध्यम से हम ध्वनि को ग्रहण और संसाधित करते हैं। इसमें कान की संरचनाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जहाँ बाहरी ध्वनि तरंगें एकत्रित होकर आंतरिक कान तक पहुँचती हैं। वहाँ ये यांत्रिक कंपन कोकलिया द्वारा तंत्रिका संकेतों में परिवर्तित हो जाते हैं और मस्तिष्क के श्रवण क्षेत्र को प्रेषित किए जाते हैं। यह प्रक्रिया हमें भाषा समझने, संगीत का आनंद लेने और वातावरण की ध्वनियों को पहचानने में सक्षम बनाती है, जो संचार और सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

20. (A) (4, 1, 2, 3)
वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया एक निश्चित और तार्किक क्रम का पालन करती है। इसकी शुरुआत किसी शोध समस्या की स्पष्ट पहचान करने से होती है, जिसके पश्चात संभावित समाधान के रूप में एक परीक्षण योग्य परिकल्पना का निर्माण किया जाता है। इसके उपरांत, परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए प्रासंगिक आँकड़ों का व्यवस्थित संग्रह किया जाता है। अंत में, एकत्रित आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है और प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकालकर शोध समस्या का समाधान खोजा जाता है।

21. (D) वस्तुनिष्ठ साक्ष्य और आनुभविक डेटा।
मनोविज्ञान एक विज्ञान के रूप में केवल व्यक्तिगत विश्वासों या दार्शनिक अटकलों पर आधारित नहीं है। इसके निष्कर्ष सदैव वस्तुनिष्ठ साक्ष्य और आनुभविक आंकड़ों पर आधारित होते हैं। वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग से व्यवहार का वस्तुनिष्ठ मापन किया जाता है और सिद्धांतों का कठोर परीक्षण किया जाता है। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि प्राप्त जानकारी विश्वसनीय, सटीक और पुनरावृत्ति योग्य हो। आनुभविक आँकड़ों के आधार पर ही मनोवैज्ञानिक व्यवहार के सार्वभौमिक नियमों का प्रतिपादन करते हैं जो वैज्ञानिक प्रमाणिकता प्रदान करते हैं।

22. (C) केंद्रीय तंत्रिका तंत्र जो सूचनाओं को एकीकृत करता है और प्रतिक्रिया का निर्णय लेता है।
समायोजक तंत्र मानवीय व्यवहार का वह मुख्य केंद्र है जहाँ विभिन्न सूचनाओं का समन्वय और निर्णय लिया जाता है। इसमें मुख्य रूप से मस्तिष्क और मेरुरज्जु से निर्मित केंद्रीय तंत्रिका तंत्र सम्मिलित होता है। यह तंत्र संवेदी अंगों से प्राप्त आँकड़ों को एकत्रित करता है, उनका अर्थ निकालता है और फिर उचित प्रतिक्रिया देने हेतु प्रभावकों को निर्देश भेजता है। यह जटिल प्रक्रिया ही व्यक्ति को पर्यावरण के प्रति सटीक, त्वरित और अनुकूलित व्यवहार करने में पूर्णतः सक्षम बनाती है।

23. (B) व्यक्ति अध्ययन - जनसंख्या के लिए उच्च सामान्यीकरण क्षमता।
शोध पद्धतियों की अपनी विशिष्ट विशेषताएं होती हैं। व्यक्ति अध्ययन किसी एक मामले की गहरी समझ प्रदान करता है, किंतु इसके निष्कर्षों को संपूर्ण जनसंख्या पर लागू करना दुष्कर होता है क्योंकि इसका प्रतिदर्श बहुत छोटा होता है। इसके विपरीत, सर्वेक्षण पद्धति बड़े समूहों से आँकड़े लेने में सक्षम है और प्रयोगात्मक पद्धति कार्य-कारण संबंध स्पष्ट करती है। अवलोकन पद्धति प्राकृतिक व्यवहार को अंकित करने के लिए आदर्श मानी जाती है। अतः व्यक्ति अध्ययन में उच्च सामान्यीकरण क्षमता का अभाव इस पद्धति की एक प्रमुख सीमा है।

24. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अंतःस्रावी ग्रंथियां उन विशिष्ट हार्मोन का स्राव करती हैं जो मानव व्यवहार और शरीर की आंतरिक गतिविधियों को नियंत्रित करते हैं। ये हार्मोन चयापचय, विकास और संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं को प्रभावित कर व्यक्तित्व लक्षणों की ठोस नींव रखते हैं। उदाहरण के लिए, एड्रेनालाईन जैसे हार्मोन तत्काल तनाव प्रतिक्रिया को नियंत्रित करते हैं, जबकि अन्य हार्मोन दीर्घकालिक मनोदशा और स्वभाव को स्थिर रखते हैं। इस प्रकार जैविक प्रक्रियाएं व्यक्तित्व के निर्माण और उसके निरंतर विकास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

25. (C) आंतरिक कोकलिया तंत्र
आंतरिक कान में स्थित कोकलिया श्रवण प्रक्रिया का मुख्य अंग है। यह घोंघे के आकार की एक तरल से भरी संरचना होती है जिसमें सूक्ष्म रोम कोशिकाएं पाई जाती हैं। जब ध्वनि के कंपन कोकलिया तक पहुँचते हैं, तो ये रोम कोशिकाएं सक्रिय हो जाती हैं और उन यांत्रिक कंपनों को विद्युत आवेगों में परिवर्तित कर देती हैं। ये आवेग श्रवण तंत्रिका द्वारा मस्तिष्क तक पहुँचाए जाते हैं, जिससे हमें ध्वनि की संवेदना प्राप्त होती है। यह पारांतरण प्रक्रिया श्रवण संवेदना के लिए पूर्णतः अनिवार्य है।

26. (A) एकीकृत, विभिन्न कोशों के माध्यम से 'स्व' के विकास पर विचार करना।
भारतीय मनोविज्ञान में व्यक्तित्व के विकास को एक एकीकृत और समग्र दृष्टिकोण से देखा जाता है। इसमें मानव अस्तित्व को विभिन्न 'कोशों' या परतों के माध्यम से समझा जाता है, जो शारीरिक से लेकर आध्यात्मिक स्तर तक विस्तृत होते हैं। यह दृष्टिकोण 'स्व' के पूर्ण विकास और चेतना की उच्च अवस्था प्राप्त करने पर बल देता है। यह केवल बाहरी व्यवहार तक सीमित न रहकर आंतरिक शांति और मानसिक संतुलन को प्राथमिकता देता है, जिससे व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित होता है और जीवन सार्थक बनता है।

27. (D) नियंत्रित प्रयोगात्मक पद्धति
नियंत्रित प्रयोगात्मक पद्धति में शोधकर्ता चरों के बीच संबंधों की जाँच करने के लिए समूहों का निर्माण करता है। इसमें एक समूह को प्रयोगात्मक उपचार दिया जाता है, जबकि दूसरे को नियंत्रण के लिए सामान्य स्थिति में रखा जाता है। इस विधि में बाह्य चरों को स्थिर रखकर केवल स्वतंत्र चर के प्रभाव का मापन किया जाता है। यह शोध का सर्वाधिक वैज्ञानिक मार्ग है क्योंकि यह स्पष्ट रूप से कार्य और कारण के बीच संबंध प्रदर्शित करता है, जिससे स्मृति जैसी मानसिक प्रक्रियाओं का सटीक अध्ययन संभव होता है।

28. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
प्रश्नावली पद्धति स्व-प्रतिवेदन आँकड़े संग्रह का एक अत्यंत प्रभावी माध्यम है, जहाँ सहभागी लिखित प्रश्नों के उत्तर स्वयं देते हैं। इस पद्धति का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसे एक साथ बहुत बड़े समूहों या जनसंख्या के नमूनों पर सुगमता से प्रशासित किया जा सकता है। यह कम समय में अधिक जानकारी जुटाने का एक किफायती साधन है। हालाँकि, इसकी सफलता उत्तरदाताओं की सत्यनिष्ठा और प्रश्नों की स्पष्टता पर निर्भर करती है। बड़े समूहों पर इसे प्रशासित करना कठिन नहीं, बल्कि अत्यंत सरल होता है।

29. (A) जैविक गुणसूत्र
प्रत्येक जीव के विकास और उसके विशिष्ट लक्षणों के लिए आवश्यक निर्देश गुणसूत्रों के भीतर समाहित होते हैं। ये गुणसूत्र कोशिका के केंद्रक में पाए जाते हैं और इनमें डीएनए के रूप में अनुवांशिक सामग्री होती है। यह जैविक ब्लूप्रिंट ही निर्धारित करता है कि शरीर की संरचना कैसी होगी और तंत्रिका तंत्र कैसे कार्य करेगा। विरासत में मिले ये गुणसूत्र ही व्यक्ति की अनुवांशिक थाती और भविष्य की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों का मुख्य आधार बनते हैं, जो प्रकृति और पोषण की अंतःक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

30. (D) सामाजिक संरचनाओं और संस्थानों का विश्लेषण।
मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र अत्यंत विशाल है, जिसमें पशु व्यवहार का अध्ययन और मानवीय संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की जाँच सम्मिलित है। यह मानसिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए विभिन्न सिद्धांतों का व्यवहारिक अनुप्रयोग भी करता है। हालाँकि, सामाजिक संरचनाओं और संस्थानों का विस्तृत विश्लेषण मुख्य रूप से समाजशास्त्र का विषय है। मनोविज्ञान का केंद्र व्यक्ति का व्यवहार और उसके पीछे की मानसिक प्रक्रियाएं होती हैं। यह व्यक्तिगत अनुभव और व्यवहार के जैविक एवं सामाजिक आधारों को समझने पर अपना मुख्य ध्यान केंद्रित करता है।

31. (B) P-1, Q-2, R-3, S-4
मनोवैज्ञानिक शोध की विभिन्न पद्धतियों की अपनी अनूठी विशेषताएं होती हैं। व्यक्ति अध्ययन किसी एक इकाई या व्यक्ति की गहन जाँच पर केंद्रित होता है। सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग व्यापक जनसंख्या के विचारों और दृष्टिकोणों को जानने के लिए किया जाता है। प्रयोगात्मक पद्धति में चरों का व्यवस्थित हेरफेर कर कार्य-कारण संबंध खोजा जाता है। अंत में, विषय-वस्तु विश्लेषण का उपयोग संचार के माध्यमों और दस्तावेजों में निहित संदेशों की मात्रात्मक एवं गुणात्मक समीक्षा करने के लिए किया जाता है, जो संचार प्रतिमानों को उजागर करता है।

32. (B) तंत्रिका पारांतरण
तंत्रिका पारांतरण वह जैविक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बाहरी वातावरण की भौतिक ऊर्जा, जैसे प्रकाश या ध्वनि, को तंत्रिका तंत्र द्वारा समझी जा सकने वाली भाषा में परिवर्तित किया जाता है। इस प्रक्रिया में संवेदी ग्राही उद्दीपकों को विद्युत-रासायनिक संकेतों में परिवर्तित करते हैं। यह परिवर्तन अनिवार्य है क्योंकि मस्तिष्क केवल इन विद्युत आवेगों को ही संसाधित और विश्लेषित कर सकता है। इस प्रकार, पारांतरण हमारे शरीर के भीतर बाहरी दुनिया का प्रतिनिधित्व करने वाली प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण संवेदी कड़ी के रूप में कार्य करता है।

33. (C) एक ढांचा जो अनुभवात्मक दृष्टिकोण से चेतना और मानवीय क्षमता को समझने का प्रयास करता है।
भारतीय मनोविज्ञान मानव चेतना और उसकी असीमित क्षमताओं को समझने का एक गहरा और समग्र ढांचा प्रदान करता है। यह अनुभवात्मक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो मन की शांति, आत्म-साक्षात्कार और आंतरिक संतुलन को महत्व देता है। यह केवल पश्चिमी सिद्धांतों की अनुकृति नहीं है, बल्कि प्राचीन ग्रंथों से उद्भूत एक स्वतंत्र ज्ञान प्रणाली है। इसमें ध्यान, नैतिकता और चेतना के विभिन्न स्तरों का अध्ययन कर मानवीय जीवन को श्रेष्ठ बनाने और उच्च क्षमता प्राप्त करने का मार्ग बताया गया है।

34. (D) मस्तिष्क की संरचनाएं और तंत्रिका रसायन मानसिक प्रक्रियाओं को कैसे प्रभावित करते हैं।
मनोविज्ञान और जीव विज्ञान के परस्पर संबंधों का अध्ययन मुख्य रूप से व्यवहार के जैविक आधारों पर केंद्रित होता है। शोधकर्ता यह जाँच करते हैं कि मस्तिष्क की विभिन्न संरचनाएं, तंत्रिका मार्ग और न्यूरोट्रांसमीटर किस प्रकार हमारी सोच, भावनाओं और क्रियाओं को प्रभावित करते हैं। यह क्षेत्र स्पष्ट करता है कि शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक प्रक्रियाओं के बीच एक अटूट संबंध है। तंत्रिका तंत्र की कार्यप्रणाली और जैविक आधारों को समझकर ही व्यवहार के जटिल स्वरूपों की वैज्ञानिक व्याख्या करना संभव हो पाता है।

35. (C) केवल 2 और 3
मानवीय व्यवहार की जैविक श्रृंखला में तीन मुख्य तंत्र सक्रिय होते हैं। ग्राही अंग उद्दीपकों का पता लगाने और उन्हें संकेतों में बदलने के लिए उत्तरदायी होते हैं, न कि प्रतिक्रिया आरंभ करने के लिए। प्रभावक तंत्र में मांसपेशियां और ग्रंथियां सम्मिलित होती हैं जो केंद्रीय निर्देशों के अनुसार प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं। समायोजक तंत्र, जिसमें मस्तिष्क और मेरुरज्जु आते हैं, सूचनाओं के एकीकरण और समन्वय का कार्य करता है। ये घटक मिलकर व्यक्ति को पर्यावरण के प्रति सटीक और अनुकूलित व्यवहार करने में सक्षम बनाते हैं।

36. (B) गेंद को मारने के लिए पैर की मांसपेशी का सिकुड़ना।
प्रभावक वे अंग होते हैं जो तंत्रिका तंत्र से प्राप्त आदेशों को वास्तविक क्रिया में परिवर्तित करते हैं। जब कोई व्यक्ति गेंद को मारने के लिए अपने पैर की मांसपेशियों को संकुचित करता है, तो यह प्रभावक के कार्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यहाँ मांसपेशियां शारीरिक गति उत्पन्न कर रही हैं। इसी प्रकार, ग्रंथियां भी प्रभावक के रूप में कार्य करती हैं जो विभिन्न आंतरिक और बाह्य स्थितियों में रसायनों का स्राव करती हैं। ये क्रियाएं सीधे तौर पर व्यक्ति के प्रत्यक्ष व्यवहार को जन्म देती हैं।

37. (C) सामान्यीकरण की कम संभावना है।
नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन पद्धति किसी विशिष्ट मामले का अत्यंत विस्तृत विवरण प्रदान करती है। हालाँकि, इसकी सबसे बड़ी सीमा यह है कि इसमें सामान्यीकरण की संभावना बहुत कम होती है। चूँकि यह अध्ययन केवल एक व्यक्ति या बहुत छोटे समूह पर आधारित होता है, इसलिए इसके निष्कर्षों को संपूर्ण जनसंख्या पर वैज्ञानिक विश्वास के साथ लागू नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति के अनुभव और परिस्थितियां अद्वितीय होती हैं, जो इस पद्धति के परिणामों को सार्वभौमिक नियम बनाने में एक बड़ी बाधा उत्पन्न करती हैं।

38. (B) प्राथमिक त्वचा संवेदनाएं
मानव शरीर की सबसे बड़ी इंद्रिय त्वचा है, जो हमें बाहरी दुनिया के भौतिक संपर्क से अवगत कराती है। दबाव, तापमान और पीड़ा को प्राथमिक त्वचा संवेदनाओं के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। इन संवेदनाओं को अनुभव करने के लिए त्वचा की विभिन्न परतों में विशिष्ट और समर्पित ग्राही पाए जाते हैं। ये ग्राही मस्तिष्क को तुरंत सूचना प्रेषित करते हैं, जिससे हम क्षति से बच सकते हैं या अपने आस-पास के वातावरण के तापमान के अनुकूल स्वयं को ढाल सकते हैं। यह हमारी सुरक्षा का प्राथमिक तंत्र है।

39. (C) भारत के प्राचीन दार्शनिक और आध्यात्मिक ग्रंथों से।
भारतीय मनोविज्ञान की जड़ें भारत के अत्यंत प्राचीन दार्शनिक और आध्यात्मिक ग्रंथों में गहराई से समाहित हैं। वेदों, उपनिषदों, भगवद्गीता और योग सूत्रों जैसे शास्त्रों में मन की प्रकृति, बुद्धि और चेतना के विषय में विस्तार से चर्चा की गई है। यह परंपरा सहस्रों वर्षों से चली आ रही है और आत्म-ज्ञान की खोज पर केंद्रित है। आधुनिक युग में इन प्राचीन सिद्धांतों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ जोड़कर मानवीय व्यवहार को समझने के नवीन और व्यवहारिक आयाम स्थापित किए गए हैं।

40. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रयोगात्मक पद्धति को मनोविज्ञान में कार्य-कारण संबंधों की जाँच हेतु सबसे सशक्त उपकरण माना जाता है। इसकी शक्ति इस तथ्य में निहित है कि शोधकर्ता एक स्वतंत्र चर में व्यवस्थित परिवर्तन करता है और अन्य सभी बाह्य चरों को कठोरता से नियंत्रित करता है। इस प्रक्रिया से यह स्पष्ट हो जाता है कि देखा गया प्रभाव वास्तव में किए गए परिवर्तन के कारण ही उत्पन्न हुआ है। यही कारण है कि वैज्ञानिक शोध में प्रयोगों को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि वे चरों के बीच स्पष्ट संबंध स्थापित करते हैं।

41. (A) श्रवण प्रणाली - वायु दाब परिवर्तन
प्रत्येक संवेदी प्रणाली एक विशिष्ट प्रकार के भौतिक उद्दीपक के प्रति संवेदनशील होती है। श्रवण प्रणाली के संदर्भ में, वातावरण में होने वाले वायु दाब के परिवर्तन ही ध्वनि तरंगें उत्पन्न करते हैं। कान की संरचना इन तरंगों को ग्रहण करती है और मस्तिष्क तक पहुँचाती है। इसी प्रकार, दृश्य प्रणाली विद्युत चुम्बकीय प्रकाश तरंगों के प्रति प्रतिक्रिया करती है। यह विशिष्टता ही हमारे मस्तिष्क को अलग-अलग प्रकार की संवेदी सूचनाओं, जैसे देखना और सुनना, के बीच सटीक और त्वरित अंतर करने में सक्षम बनाती है।

42. (C) व्यवहार के जैविक आधार
व्यवहार के जैविक आधार का अध्ययन यह समझने पर केंद्रित होता है कि शारीरिक प्रक्रियाएं हमारे व्यवहार को कैसे स्वरूप देती हैं। इसमें हार्मोन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि ये अंतःस्रावी ग्रंथियों से निकलकर हमारे शारीरिक विकास और मानसिक अवस्थाओं को प्रभावित करते हैं। वृद्धि हार्मोन जैसे तत्व शरीर की बनावट के साथ-साथ संवेगात्मक प्रवृत्तियों को भी परिवर्तित करते हैं। यह क्षेत्र स्पष्ट करता है कि हमारी मनोवैज्ञानिक पहचान के पीछे सुदृढ़ जैविक और शारीरिक कारक निरंतर सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

43. (B) पूर्व निर्धारित और एक निश्चित क्रम में पूछे गए।
एक संरचित साक्षात्कार में प्रश्न पहले से ही निर्धारित होते हैं और उन्हें एक निश्चित क्रम में पूछा जाता है। इस विधि का मुख्य उद्देश्य सभी सहभागियों से समान प्रकार की जानकारी प्राप्त करना है ताकि आँकड़ों की तुलना सुगमता से की जा सके। साक्षात्कारकर्ता अपनी ओर से नवीन प्रश्न नहीं जोड़ता, जिससे प्रक्रिया में वस्तुनिष्ठता और एकरूपता बनी रहती है। यह पद्धति शोध में मानकीकृत आँकड़े एकत्र करने के लिए अत्यंत उपयोगी और विश्वसनीय मानी जाती है, जो परिणामों को सटीक बनाती है।

44. (A) 2, 4, 1, 3
दृश्य मार्ग की प्रक्रिया प्रकाश के स्वच्छमंडल या कॉर्निया से टकराने के साथ आरंभ होती है, जो आँख की सुरक्षात्मक परत है। इसके पश्चात प्रकाश पुतली के माध्यम से आँख के भीतर प्रवेश करता है। पुतली के ठीक पीछे स्थित लेंस प्रकाश को सटीक रूप से केंद्रित करने का कार्य करता है। अंत में, यह केंद्रित प्रकाश दृष्टिपटल या रेटिना पर पहुँचता है, जहाँ संवेदी कोशिकाएं इसे तंत्रिका संकेतों में परिवर्तित कर देती हैं। यह क्रमिक मार्ग स्पष्ट और सटीक दृष्टि प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है।

45. (D) मानव शरीर क्रिया विज्ञान
मनोविज्ञान का प्राकृतिक विज्ञानों के साथ संबंध मानव शरीर क्रिया विज्ञान के माध्यम से सबसे स्पष्ट होता है। व्यवहार को समझने के लिए मस्तिष्क की संरचना, तंत्रिका तंत्र की कार्यप्रणाली और जैविक प्रक्रियाओं का ज्ञान होना अत्यंत

आवश्यक है। जब हम तंत्रिका आवेगों, संवेदी अंगों के कार्यों और शारीरिक परिवर्तनों का अध्ययन करते हैं, तो मनोविज्ञान विशुद्ध विज्ञान के समीप पहुँच जाता है। यह अंतःविषय दृष्टिकोण व्यवहार की वैज्ञानिक व्याख्या करने में सहायता करता है और इसे एक ठोस एवं प्रमाणिक आधार प्रदान करता है।

46. (B) व्यवहार पूरी तरह से जीन द्वारा निर्धारित होता है, इसमें कोई पर्यावरणीय प्रभाव नहीं होता।
व्यवहार के अनुवांशिक आधार का अर्थ यह नहीं है कि सब कुछ केवल जन्म से निश्चित है। वास्तव में, व्यवहार आनुवंशिकता और पर्यावरण के बीच एक निरंतर और जटिल अंतःक्रिया का परिणाम होता है। जहाँ जीन हमें कुछ विशेष शारीरिक और मानसिक प्रवृत्तियाँ प्रदान करते हैं, वहीं हमारे अनुभव और परिवेश उन्हें अंतिम स्वरुप प्रदान करते हैं। यह मानना त्रुटिपूर्ण होगा कि पर्यावरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता; व्यक्ति का विकास सदैव जैविक ब्लूप्रिंट और जीवन के विविध अनुभवों के समन्वय से ही संभव होता है।

47. (B) लिखित प्रश्नों के एक समूह के माध्यम से उत्तरदाताओं से जानकारी एकत्र करना।
शोध में प्रश्नावली का प्राथमिक उद्देश्य लिखित प्रश्नों के एक व्यवस्थित समूह के माध्यम से उत्तरदाताओं से विशिष्ट जानकारी प्राप्त करना है। इसमें उत्तरदाता अपनी राय, विश्वास, आदतों या व्यवहार के विषय में विवरण देते हैं। यह विधि बड़ी संख्या में लोगों से एक साथ आँकड़े एकत्र करने के लिए बहुत प्रभावी है। इसके संरचित स्वरूप के कारण प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करना सरल होता है। यह सामाजिक और मनोवैज्ञानिक शोध में व्यापक रूप से प्रयुक्त होने वाली एक अत्यंत लोकप्रिय पद्धति है।

48. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
संवेदना वह प्रारंभिक प्रक्रिया है जिसमें हमारे संवेदी अंग बाह्य उद्दीपकों का पता लगाते हैं, जबकि सूचनाओं की व्याख्या और उन्हें अर्थ प्रदान करना प्रत्यक्षीकरण कहलाता है। दृश्य प्रणाली के संदर्भ में, दृष्टिपटल या रेटिना पर स्थित छड़ें और शंकु प्रकाश को ग्रहण करने वाले मुख्य ग्राही हैं। छड़ें हमें मंद प्रकाश में देखने में सहायता करती हैं, जबकि शंकु रंग और सूक्ष्मताओं को पहचानने के लिए उत्तरदायी होते हैं। अतः दृष्टिपटल की संरचना में इन प्रकाशग्राहियों का होना वैज्ञानिक रूप से सत्य है।

49. (A) अधिवृक्क ग्रंथि द्वारा एड्रेनालाईन जारी करना।
प्रभावक शरीर के वे अंग या तंत्र होते हैं जो केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से प्राप्त निर्देशों पर प्रतिक्रिया देते हैं। अधिवृक्क ग्रंथि द्वारा एड्रेनालाईन हार्मोन का स्राव करना एक प्रभावक तंत्र का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह क्रिया शरीर को तनावपूर्ण या आपातकालीन स्थिति के लिए सज्जित करती है। मांसपेशियां भी प्रभावक के रूप में कार्य करती हैं जो शारीरिक गति उत्पन्न करती हैं। इस प्रकार, प्रभावक हमें आंतरिक और बाह्य संकेतों के प्रति प्रभावी प्रतिक्रिया करने और वातावरण के साथ अनुकूलन करने में सक्षम बनाते हैं।

50. (C) व्यापक, जो व्यवहार पर जैविक से लेकर सामाजिक प्रभावों तक फैला हुआ है।
मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र अत्यंत व्यापक और गतिशील है। इसमें केवल असामान्य व्यवहार ही नहीं, बल्कि सामान्य मानवीय अनुभवों, संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं और सामाजिक अंतःक्रियाओं का अध्ययन भी सम्मिलित है। इसका विस्तार सूक्ष्म जैविक स्तर से लेकर, जहाँ मस्तिष्क और जीन की भूमिका देखी जाती है, व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर तक है। यह क्षेत्र निरंतर विकसित हो रहा है और शिक्षा, उद्योग तथा स्वास्थ्य जैसे विविध क्षेत्रों में मानवीय समस्याओं को हल करने के लिए वैज्ञानिक सिद्धांतों का सफलतापूर्वक अनुप्रयोग करता है।

51. (B) केवल 2 और 3
हार्मोन रासायनिक संदेशवाहक होते हैं जो अंतःस्त्रावी ग्रंथियों से स्त्रावित होकर शरीर की दीर्घकालिक प्रक्रियाओं को नियंत्रित करते हैं। इनमें शारीरिक वृद्धि, चयापचय और संवेगात्मक संतुलन सम्मिलित हैं। ये तंत्रिका आवेगों के प्रत्यक्ष संचरण के लिए उत्तरदायी नहीं होते, बल्कि मानवीय भावनाओं, मनोदशा और संवेगात्मक उत्तेजना को गहराई से प्रभावित करते हैं। इस प्रकार, ये जैविक घटक हमारे व्यवहार और व्यक्तित्व को स्वरूप देने में एक शक्तिशाली भूमिका निभाते हैं। हार्मोन का संतुलन मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है।

52. (D) प्रयोगात्मक पद्धति में चरों का हेरफेर शामिल होता है, जबकि अवलोकन में नहीं।
प्रयोगात्मक और अवलोकन पद्धति के बीच मूलभूत अंतर नियंत्रण और सक्रिय हस्तक्षेप का है। प्रयोग में शोधकर्ता स्वतंत्र चर में व्यवस्थित परिवर्तन करता है ताकि यह देखा जा सके कि उसका प्रभाव क्या होता है। इसके विपरीत, अवलोकन पद्धति में व्यवहार को उसके स्वाभाविक रूप में अंकित किया जाता है, बिना किसी बाह्य हस्तक्षेप या चरों में परिवर्तन किए। जहाँ प्रयोग कार्य-कारण संबंध स्थापित करने में सहायता करता है, वहीं अवलोकन हमें व्यवहार के वास्तविक और अछूते स्वरूप का विस्तृत विवरण प्रदान करने में सक्षम है।

53. (B) 'स्व' और चेतना का केंद्रीय विषयों के रूप में अध्ययन।
भारतीय मनोविज्ञान की प्रकृति मुख्य रूप से 'स्व' और चेतना के अध्ययन पर केंद्रित है। यह दृष्टिकोण मनुष्य को केवल एक जैविक यंत्र नहीं मानता, बल्कि उसकी आंतरिक क्षमता और मानसिक ऊंचाइयों को समझने का प्रयास करता है। इसमें ध्यान, एकाग्रता, नैतिकता और आत्म-साक्षात्कार जैसे तत्वों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसका लक्ष्य व्यक्ति को स्वयं के विषय में गहरी समझ विकसित करने में सहायता करना है, ताकि वह एक संतुलित, तनावमुक्त और सार्थक जीवन जीने में सक्षम हो सके।

54. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
मानवीय संवेदी प्रणालियाँ विशिष्ट प्रकार के ग्राहियों पर निर्भर करती हैं। दृष्टि के लिए आँखों में प्रकाशग्राही होते हैं जो प्रकाश ऊर्जा को पहचानते हैं। श्रवण के लिए कान के भीतर सूक्ष्म रोम कोशिकाएं पाई जाती हैं जो ध्वनि के कंपनों को ग्रहण करती हैं। त्वचा संवेदनाओं में स्पर्श और दबाव को यांत्रिकग्राहियों

द्वारा अनुभव किया जाता है, जबकि ऊष्मा और शीतलता जैसी ताप संवेदनाओं को तापग्राही पहचानते हैं। यह विशिष्टता ही हमें पर्यावरण के विविध और जटिल अनुभवों को सटीक रूप से अनुभव करने में सहायता करती हैं।

55. (C) आनुवंशिकता और पर्यावरण के बीच एक अंतःक्रिया का।
व्यवहार का अनुवांशिक आधार यह स्पष्ट करता है कि हमारे मनोवैज्ञानिक लक्षण किसी एक पृथक कारक का परिणाम नहीं हैं। यह आनुवंशिकता और पर्यावरण के बीच होने वाली एक निरंतर अंतःक्रिया है। जीन हमें एक आधारभूत क्षमता या शारीरिक प्रवृत्ति प्रदान करते हैं, किंतु उस प्रवृत्ति का विकास कैसे होगा, यह हमारे परिवेश, शिक्षा और जीवन के अनुभवों पर निर्भर करता है। इस प्रकार, प्रकृति और पोषण दोनों मिलकर ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व, व्यवहार और विशिष्ट कौशलों को अंतिम स्वरुप प्रदान करते हैं।

56. (D) छद्म-वैज्ञानिक ज्योतिषीय चार्टिंग
मनोविज्ञान एक आधुनिक विज्ञान है जो आनुभविक और साक्ष्य-आधारित पद्धतियों पर निर्भर करता है। व्यक्तिगत साक्षात्कार, संरचित प्रश्नावली और व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण जैसी विधियाँ शोध के मानक और वैज्ञानिक रूप से स्वीकृत मार्ग हैं। ये विधियाँ वस्तुनिष्ठ आँकड़े प्रदान करती हैं जिनका विश्लेषण किया जा सकता है। इसके विपरीत, ज्योतिषीय चार्टिंग या भविष्यवाणियां छद्म-विज्ञान की श्रेणी में आती हैं क्योंकि इनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता और न ही इन्हें शोध की प्रमाणिक पद्धति माना जा सकता है।

57. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
व्यक्ति अध्ययन पद्धति किसी एक व्यक्ति के जीवन, व्यवहार और अनुभवों का अत्यंत विस्तृत और गहरा विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इससे प्राप्त जानकारी शोध में नवीन अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए बहुत मूल्यवान मानी जाती है। हालाँकि, इस पद्धति का सबसे बड़ा दोष यह है कि इसके निष्कर्षों को संपूर्ण जनसंख्या पर सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है। चूँकि प्रत्येक मामला अद्वितीय होता है और प्रतिदर्श बहुत छोटा होता है, इसलिए एक व्यक्ति के आँकड़ों को सभी पर लागू करना वैज्ञानिक रूप से तर्कसंगत नहीं है।

58. (B) मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी।
समायोजक तंत्र का मुख्य कार्य शरीर के विभिन्न अंगों से प्राप्त सूचनाओं को एकत्रित करना और उनका विश्लेषण करना है। इसमें मस्तिष्क और मेरुरज्जु सम्मिलित होते हैं, जो मिलकर केंद्रीय तंत्रिका तंत्र का निर्माण करते हैं। यह तंत्र प्राप्त संवेदी सूचनाओं के आधार पर उचित निर्णय लेता है और प्रभावकों को प्रतिक्रिया देने हेतु निर्देश प्रेषित करता है। इस प्रकार, यह हमारे संपूर्ण व्यवहार और शारीरिक गतिविधियों के बीच एक मुख्य नियंत्रक एवं समन्वयक की भूमिका निभाता है, जो अनुकूलन के लिए अनिवार्य है।

59. (C) कान के पर्दे से आंतरिक कान तक ध्वनि कंपनों को प्रवर्धित करना।
मध्य कान में स्थित श्रवण अस्थिकाएं, सुनने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करती हैं। इनका मुख्य कार्य कान के पर्दे पर होने वाले ध्वनि कंपनों को ग्रहण करना और उन्हें प्रवर्धित करके आंतरिक कान तक पहुँचाना है। प्रवर्धन की यह प्रक्रिया अत्यंत आवश्यक है क्योंकि आंतरिक कान तरल से भरा होता है, जहाँ कंपनों को तंत्रिका आवेगों में परिवर्तित करने के लिए अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। ये अस्थिकाएं ध्वनि ऊर्जा को नष्ट होने से बचाती हैं और सुनने की क्षमता में वृद्धि करती हैं।

60. (D) नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन, क्योंकि यह एक व्यक्ति की गहन जाँच है।
जब किसी व्यक्ति की विशिष्ट समस्या को समझने के लिए उसके इतिहास, माता-पिता, शिक्षकों और शैक्षणिक अभिलेखों से गहन जानकारी जुटाई जाती है, तो इसे नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन कहा जाता है। यह पद्धति किसी एक मामले का सूक्ष्म और सर्वांगीण विश्लेषण करने पर केंद्रित होती है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के व्यवहार के पीछे छिपे वास्तविक कारणों को गहराई से समझना है। यह विधि शैक्षिक और चिकित्सीय मनोविज्ञान में व्यक्तिगत मार्गदर्शन और उपचार प्रदान करने हेतु अत्यंत प्रभावी मानी जाती है।

61. (A) व्यवहार के जैविक आधार।
मनोविज्ञान और प्राकृतिक विज्ञानों का गहरा संबंध व्यवहार के जैविक आधारों के अध्ययन में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इस क्षेत्र में यह विश्लेषण किया जाता है कि कैसे हमारा तंत्रिका तंत्र, मस्तिष्क की जटिल संरचनाएं और विभिन्न हार्मोन हमारे व्यवहार को संचालित करते हैं। जिस प्रकार जीव विज्ञान शरीर के अंगों और उनकी कार्यप्रणाली का अध्ययन करता है, उसी प्रकार मनोविज्ञान इन जैविक अंगों और मानसिक प्रक्रियाओं के बीच के अटूट संबंध को वैज्ञानिक ढंग से समझने और व्यवहार की व्याख्या करने का प्रयास करता है।

62. (B) इसमें बुनियादी अनुसंधान और अनुप्रयुक्त क्षेत्र दोनों शामिल हैं।
मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र अत्यंत व्यापक है और इसमें बुनियादी अनुसंधान के साथ-साथ व्यावहारिक अनुप्रयोग भी सम्मिलित हैं। बुनियादी अनुसंधान जहाँ अधिगम, स्मृति और प्रत्यक्षीकरण जैसे मूलभूत सिद्धांतों को समझने पर ध्यान देता है, वहीं व्यावहारिक क्षेत्र इन सिद्धांतों का उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य और कार्यस्थल की समस्याओं को सुलझाने में करता है। यह विषय केवल सैद्धांतिक अध्ययन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य मानवीय जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कल्याण को बढ़ावा देना है।

63. (B) 3, 1, 2
किसी भी उद्दीपक के प्रति व्यवहार का एक निश्चित जैविक क्रम होता है। सर्वप्रथम ग्राही तंत्र बाह्य वातावरण से संकेत या ऊर्जा प्राप्त करता है। इसके पश्चात, यह संकेत समायोजक तंत्र तक

पहुँचता है, जहाँ प्राप्त सूचना का विश्लेषण और निर्णय लिया जाता है। अंत में, समायोजक तंत्र प्रभावक तंत्र को आवश्यक निर्देश प्रेषित करता है, जिससे मांसपेशियां या ग्रंथियां शारीरिक प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं। यह क्रमिक और व्यवस्थित प्रक्रिया ही मानवीय क्रियाओं और पर्यावरण के प्रति अनुकूलन का मुख्य आधार है।

64. (D) विद्युत चुम्बकीय विकिरण।
दृश्य संवेदना की प्रक्रिया यह समझने पर आधारित है कि हमारी आँखें विद्युत चुम्बकीय विकिरण या प्रकाश ऊर्जा को कैसे ग्रहण करती हैं। प्रकाश की किरणें जब आँख में प्रवेश करती हैं, तो वे दृष्टिपटल पर स्थित विशिष्ट संवेदी कोशिकाओं को सक्रिय करती हैं। ये कोशिकाएं भौतिक प्रकाश को तंत्रिका संकेतों में परिवर्तित कर देती हैं जिन्हें हमारा मस्तिष्क समझ और विश्लेषित कर सकता है। यह जटिल प्रणाली हमें रंगों, आकृतियों और गहराई को पहचानने में सक्षम बनाती है, जो हमारे दैनिक जीवन के लिए अनिवार्य है।

65. (A) केवल 2
मनोविज्ञान में प्रयुक्त शोध पद्धतियों की अपनी विशिष्ट विशेषताएं होती हैं। साक्षात्कार एक ऐसी विधि है जो शोधकर्ता को सहभागी से प्रत्यक्ष बातचीत के माध्यम से समृद्ध और गुणात्मक जानकारी प्राप्त करने में सहायता करती है। हालाँकि, सर्वेक्षण का उपयोग मुख्य रूप से बड़े समूहों की राय जानने के लिए किया जाता है, न कि कार्य-कारण संबंध के लिए। इसी प्रकार, व्यक्ति अध्ययन किसी एक इकाई पर केंद्रित होता है, न कि जनसंख्या के प्रतिनिधि प्रतिदर्श पर। अतः साक्षात्कार गुणात्मक गहराई के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।

66. (B) इस बात का अध्ययन कि विरासत में मिली जैविक सामग्री मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को कैसे प्रभावित करती है।
व्यवहार के अनुवांशिक आधार उस वैज्ञानिक अध्ययन को कहते हैं जो यह जाँचता है कि माता-पिता से विरासत में मिली जैविक सामग्री हमारी मानसिक विशेषताओं और क्रियाओं को कैसे प्रभावित करती है। इसमें जीन और गुणसूत्रों की भूमिका का विश्लेषण किया जाता है। यह क्षेत्र स्पष्ट करता है कि शारीरिक बनावट की भाँति ही कुछ मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियाँ और व्यक्तित्व लक्षण भी जैविक रूप से विरासत में मिल सकते हैं, जो बाद में हमारे पर्यावरण और अनुभवों के साथ मिलकर व्यक्ति के पूर्ण व्यवहार को स्वरूप प्रदान करते हैं।

67. (C) किसी व्यक्ति का मूड और संवेगात्मक प्रतिक्रियाएं।
हार्मोन शरीर के रासायनिक संदेशवाहक हैं जो रक्तप्रवाह के माध्यम से विभिन्न अंगों तक पहुँचते हैं। ये मानवीय भावनाओं और मनोदशा को नियंत्रित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब शरीर में कुछ विशिष्ट हार्मोन के स्तर में परिवर्तन आता है, तो इसका सीधा प्रभाव व्यक्ति की संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं और व्यवहार पर पड़ता है। उदाहरण के लिए, तनाव के समय निकलने वाले हार्मोन व्यक्ति को उत्तेजित या भयभीत कर सकते हैं। इस प्रकार हार्मोन हमारे मानसिक स्वास्थ्य और व्यक्तित्व का आधार निर्मित करते हैं।

68. (D) प्राचीन भारतीय शास्त्रों और परंपराओं से।
भारतीय मनोविज्ञान की जड़ें भारत की अत्यंत प्राचीन दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपराओं में निहित हैं। वेदों, उपनिषदों और योग दर्शन जैसे प्राचीन शास्त्रों में मन की प्रकृति, चेतना के विभिन्न स्तरों और 'स्व' के विषय में गहन विचार प्रस्तुत किए गए हैं। यह इतिहास सहस्रों वर्ष पुराना है और आत्म-ज्ञान की मानवीय खोज पर केंद्रित है। आधुनिक भारतीय मनोविज्ञान इन्हीं समृद्ध शास्त्रीय स्रोतों से प्रेरणा लेकर वर्तमान समय की मानसिक समस्याओं का समाधान खोजने और व्यक्तित्व विकास करने का प्रयास करता है।

69. (A) सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रह
सर्वेक्षणों में अक्सर सहभागी अपनी वास्तविक भावनाओं के स्थान पर वे उत्तर देते हैं जो समाज में श्रेष्ठ या स्वीकार्य माने जाते हैं। इस प्रवृत्ति को सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रह कहा जाता है। यह शोध में आँकड़ों की शुद्धता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है क्योंकि व्यक्ति अपनी कमियों को छिपाने या स्वयं को उत्तम दिखाने का प्रयास करता है। शोधकर्ताओं को प्रश्नावली तैयार करते समय इस तथ्य का विशेष ध्यान रखना पड़ता है ताकि प्राप्त परिणाम निष्पक्ष और वास्तविकता के अधिक समीप हो सकें।

70. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
समायोजक तंत्र अनुकूलनशील व्यवहार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सूचनाओं के विश्लेषण और समन्वय का केंद्र है। इसमें मुख्य रूप से मस्तिष्क और मेरुरज्जु सम्मिलित होते हैं, न कि मांसपेशियां और ग्रंथियां। मांसपेशियां और ग्रंथियां प्रभावक अंग हैं जो केवल समायोजक से निर्देश प्राप्त करने के उपरांत प्रतिक्रिया निष्पादित करते हैं। समायोजक का कार्य संवेदी इनपुट और मोटर आउटपुट के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करना है, जिससे शरीर पर्यावरण के प्रति सटीक और समन्वित प्रतिक्रिया दे सके।

71. (C) आनुभविक अनुसंधान और व्यवस्थित अवलोकन।
मनोविज्ञान की वैज्ञानिक प्रकृति यह सुनिश्चित करती है कि ज्ञान केवल अंतर्ज्ञान या प्राचीन मान्यताओं पर आधारित न हो। मनोवैज्ञानिक ज्ञान का विकास सदैव आनुभविक अनुसंधान और व्यवस्थित अवलोकन के माध्यम से होता है। शोधकर्ता परिकल्पनाएं बनाते हैं, आँकड़े एकत्र करते हैं और फिर साक्ष्यों के आधार पर सिद्धांतों की पुष्टि या उनमें संशोधन करते हैं। यह निरंतर चलने वाली वैज्ञानिक प्रक्रिया है जो नवीन तथ्यों की खोज और पुराने विचारों के परिष्करण के माध्यम से विषय को विश्वसनीय, प्रमाणिक और वस्तुनिष्ठ बनाती है।

72. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
मनोविज्ञान में शोध की विभिन्न तकनीकें प्रयुक्त होती हैं। साक्षात्कार पद्धति केवल असंरचित नहीं होती, बल्कि यह संरचित भी हो सकती है जहाँ प्रश्न पूर्व निर्धारित होते हैं। वहीं, विषय-वस्तु विश्लेषण एक अत्यंत उपयोगी विधि है जिसके द्वारा पाठ, चित्रों, पत्रों या संचार के किसी भी लिखित और दृश्य रूप का व्यवस्थित अध्ययन किया जा सकता है। यह शोधकर्ता को सामाजिक और मनोवैज्ञानिक रुझानों की पहचान करने में

सहायता करता है, जिससे संचार सामग्री के पीछे छिपे अर्थ और प्रवृत्तियाँ पूरी तरह स्पष्ट होती हैं।

73. (B) P-2, Q-1, R-3, S-4
अंतःस्रावी ग्रंथियां शरीर के विभिन्न कार्यों का समन्वय करती हैं। थायराइड ग्रंथि चयापचय और ऊर्जा स्तर को नियंत्रित करती है। अधिवृक्क ग्रंथि तनाव के समय सक्रिय होकर संवेगात्मक उत्तेजना को नियंत्रित करती है। पीयूष ग्रंथि शरीर की वृद्धि और अन्य ग्रंथियों के कार्य का नियमन करती है। जननग्रंथियाँ द्वितीयक यौन विशेषताओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह जैविक संतुलन हमारे व्यवहार और स्वास्थ्य के लिए आधारभूत है, जो शारीरिक और मानसिक विकास को निर्देशित करता है।

74. (D) श्रवण विधा
कर्णपटह झिल्ली, जिसे सामान्य भाषा में कान का पर्दा कहा जाता है, श्रवण संवेदी प्रणाली का एक अनिवार्य अंग है। जब वातावरण से ध्वनि तरंगें कान में प्रवेश करती हैं, तो वे इस झिल्ली से टकराती हैं और इसमें कंपन उत्पन्न करती हैं। ये कंपन ही आगे चलकर आंतरिक कान तक पहुँचते हैं, जहाँ वे तंत्रिका संकेतों में परिवर्तित हो जाते हैं। इसके बिना ध्वनि को ग्रहण करना और सुनना संभव नहीं होता, इसलिए यह सुनने की प्रक्रिया की सबसे पहली और अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी मानी जाती है।

75. (C) आध्यात्मिक आत्म-साक्षात्कार और पारलौकिकता।
भारतीय मनोविज्ञान के अंतर्गत व्यक्तित्व विकास का मुख्य उद्देश्य केवल सामाजिक समायोजन नहीं, बल्कि आध्यात्मिक आत्म-साक्षात्कार और चेतना की उच्च अवस्था प्राप्त करना है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति को अपनी आंतरिक सीमाओं से ऊपर उठने और उच्च वास्तविकता का अनुभव करने के लिए प्रेरित करता है। इसमें ध्यान, मन की शांति और नैतिकता जैसे तत्वों पर बल दिया जाता है ताकि व्यक्ति एक एकीकृत और सार्थक जीवन जी सके। यह मानवीय अस्तित्व के आध्यात्मिक आयाम को गहराई से समझने का प्रयास करता है।

76. (B) इसका उद्देश्य दूसरे पर इसके प्रभाव को देखने के लिए एक चर में हेरफेर करके संबंधों का अध्ययन करना है।
प्रयोगात्मक पद्धति की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें शोधकर्ता स्वतंत्र चर में व्यवस्थित रुप से हेरफेर करता है। इसका मुख्य उद्देश्य यह देखना होता है कि इस परिवर्तन का आश्रित चर पर क्या प्रभाव पड़ता है। कार्य-कारण संबंध स्थापित करने के लिए यह सर्वश्रेष्ठ विधि है क्योंकि इसमें बाह्य चरों को कठोरता से नियंत्रित किया जाता है। यह शोध का एक सक्रिय रुप है जहाँ शोधकर्ता केवल अवलोकन नहीं करता, बल्कि परिणामों को गहराई से समझने के लिए परिस्थितियों में परिवर्तन करता है।

77. (C) उन प्रोटीनों के उत्पादन को नियंत्रित करके जो तंत्रिका तंत्र की संरचना और कार्य को प्रभावित करते हैं।
जीन हमारे व्यवहार को प्रत्यक्ष नियंत्रित नहीं करते, बल्कि वे उन प्रोटीनों के उत्पादन का मार्गदर्शन करते हैं जो तंत्रिका तंत्र की संरचना और विकास को प्रभावित करते हैं। मस्तिष्क की बनावट और न्यूरोट्रांसमीटर की कार्यप्रणाली काफी हद तक इन अनुवांशिक निर्देशों पर ही निर्भर करती है। ये जैविक कारक अंततः हमारी सीखने की क्षमता, संवेगात्मक स्थिरता और अन्य मनोवैज्ञानिक लक्षणों के लिए एक ठोस आधार निर्मित करते हैं। इस प्रकार, जीन और पर्यावरण मिलकर व्यक्ति के व्यवहार और व्यक्तित्व का क्रमिक निर्माण करते हैं।

78. (D) आँख के दृष्टिपटल में एक शंकु कोशिका।
ग्राही वे विशिष्ट कोशिकाएं या अंग होते हैं जो बाहरी या आंतरिक वातावरण से आने वाले उद्दीपकों का पता लगाते हैं। आँख के दृष्टिपटल या रेटिना में स्थित शंकु कोशिकाएं इसका एक प्रमुख उदाहरण हैं। ये कोशिकाएं प्रकाश के प्रति संवेदनशील होती हैं और उसे तंत्रिका संकेतों में परिवर्तित करने का कार्य करती हैं। जबकि मांसपेशियां और ग्रंथियां प्रभावक हैं जो प्रतिक्रिया करती हैं, शंकु कोशिकाएं सूचना को प्राप्त करने वाली प्रथम कड़ी के रूप में कार्य करती हैं, जिससे दृष्टि संभव होती है।

79. (A) पूरक, मनोविज्ञान व्यक्ति पर और समाजशास्त्र समूह या समाज पर ध्यान केंद्रित करता है।
मनोविज्ञान और समाजशास्त्र परस्पर पूरक विज्ञान हैं। मनोविज्ञान व्यक्ति के मानसिक प्रक्रियाओं, व्यवहार और भावनाओं का अध्ययन करता है, जबकि समाजशास्त्र समूहों, सामाजिक संरचनाओं और सामाजिक व्यवहार पर केंद्रित है। दोनों के संयोग से सामाजिक मनोविज्ञान जैसे क्षेत्र उभरे हैं जो व्यक्ति और समाज की अंतःक्रिया को समझने में सहायक हैं।

80. (A) 3, 2, 1, 4
मनोविज्ञान का विकास एक लंबी और क्रमिक ऐतिहासिक यात्रा रही है। इसकी शुरुआत प्राचीन दार्शनिकों द्वारा मन की प्रकृति की खोज के साथ हुई थी। इसके पश्चात, 1879 में विल्हेम वुंट ने प्रथम प्रयोगशाला स्थापित कर इसे प्रयोगात्मक विज्ञान का दर्जा प्रदान किया। 20वीं सदी के आरंभ में व्यवहारवाद का उदय हुआ, जिसने केवल प्रत्यक्ष क्रियाओं पर बल दिया। अंत में, 1950 के दशक के आस-पास संज्ञानात्मक क्रांति आई, जिसने स्मृति और चिंतन जैसी मानसिक प्रक्रियाओं को पुनः केंद्र में स्थापित किया।

81. (B) प्राकृतिक अवलोकन।
प्राकृतिक अवलोकन एक ऐसी शोध पद्धति है जिसमें व्यवहार को बिना किसी हस्तक्षेप के उसके वास्तविक वातावरण में अंकित किया जाता है। जब कोई शोधकर्ता सार्वजनिक स्थान पर बच्चों के खेल का अध्ययन करता है, तो वह यह देख सकता है कि बच्चे स्वाभाविक रुप से कैसे वार्तालाप करते हैं। इसमें किसी भी चर को नियंत्रित नहीं किया जाता, जिससे प्राप्त आँकड़े वास्तविकता के अधिक समीप और विश्वसनीय होते हैं। यह विधि सामाजिक व्यवहार को समझने के लिए मनोविज्ञान में अत्यंत उपयोगी मानी जाती है।

82. (A) केवल 1
मानव त्वचा में विभिन्न प्रकार के विशिष्ट ग्राही पाए जाते हैं जो दबाव, पीड़ा और तापमान का पृथक-पृथक पता लगाते हैं। प्रत्येक संवेदना के लिए समर्पित तंत्रिका सिरे होते हैं जो मस्तिष्क को विशिष्ट सूचना प्रेषित करते हैं। 'आर्द्रता' कोई प्राथमिक संवेदना नहीं है, बल्कि यह दबाव और तापमान के अनुभवों का एक संयुक्त प्रभाव है। साथ ही, संपूर्ण शरीर में ग्राहियों का वितरण समान नहीं होता; संवेदनशील क्षेत्रों में पृष्ठ भाग की तुलना में कहीं अधिक संवेदी ग्राही पाए जाते हैं, जो मापन को प्रभावित करते हैं।

83. (C) आधारभूत दैहिक मनोविज्ञान
दैहिक मनोविज्ञान के अंतर्गत इस तथ्य का गहन अध्ययन किया जाता है कि हमारे जैविक घटक, जैसे हार्मोन और तंत्रिका तंत्र, मानवीय व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं। हार्मोन व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि वे हमारी मनोदशा, ऊर्जा के स्तर और स्वभाव को निर्देशित करते हैं। यह क्षेत्र जीव विज्ञान और मनोविज्ञान के मिलन बिंदु पर स्थित है, जो मानवीय क्रियाओं की व्याख्या शारीरिक प्रक्रियाओं और अंतःस्रावी ग्रंथियों के कार्यों के आधार पर करने का प्रयास करता है।

84. (D) व्यक्तियों के एक नमूने से दृष्टिकोण, विश्वास या व्यवहार पर स्व-रिपोर्ट किया गया डेटा एकत्र करना।
मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में प्रश्नावली का मुख्य लक्ष्य किसी बड़े समूह या प्रतिदर्श से उनके दृष्टिकोण, विश्वासों या आदतों के विषय में स्व-प्रतिवेदन आँकड़े एकत्र करना है। यह शोधकर्ता को कम समय और लागत में बहुत सारे लोगों की राय जानने में सक्षम बनाती है। इसमें उत्तरदाता अपनी जानकारी स्वयं प्रदान करते हैं, जिससे उनके आंतरिक विचारों को वस्तुनिष्ठ रूप से समझना संभव होता है। सामाजिक और शैक्षिक अनुसंधान में जनसंख्या के रुझानों को समझने के लिए यह एक अत्यंत लोकप्रिय और अनिवार्य पद्धति है।

85. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मनोविज्ञान और जैविक विज्ञान का गहरा संबंध इस तथ्य पर आधारित है कि प्रत्येक मानसिक प्रक्रिया और व्यवहार का एक शारीरिक आधार होता है। मस्तिष्क की जटिल संरचना, तंत्रिका तंत्र के विद्युत संकेत और अंतःस्रावी ग्रंथियों से निकलने वाले हार्मोन सीधे तौर पर हमारी सोच और क्रियाओं को नियंत्रित करते हैं। बिना इन जैविक प्रणालियों को समझे मानवीय व्यवहार की पूर्ण व्याख्या करना असंभव है। यही कारण है कि आधुनिक मनोविज्ञान में जैविक दृष्टिकोण को वैज्ञानिक प्रमाणिकता और विश्वसनीयता हेतु अनिवार्य आधार माना जाता है।

86. (B) प्रकाश संवेदनशील दृष्टिपटल
श्रवण प्रणाली की संरचना में कान के विभिन्न भाग सम्मिलित होते हैं जो ध्वनि तरंगों को संसाधित करते हैं। इनमें मध्य कान की सूक्ष्म अस्थिकाएं, कंपन करने वाली कर्णपटह झिल्ली और आंतरिक कान का कोकलिया मुख्य अंग हैं। दृष्टिपटल या रेटिना इस प्रणाली का भाग नहीं है, क्योंकि यह दृश्य प्रणाली से संबंधित है। दृष्टिपटल आँख के पिछले भाग में स्थित होता है और इसमें प्रकाशग्राही कोशिकाएं होती हैं जो हमें देखने में सहायता करती हैं, न कि सुनने में। अतः यह केवल दृष्टि का अंग है।

87. (C) चेतना की उच्च अवस्थाएँ।
भारतीय मनोविज्ञान के व्यापक संदर्भ में, व्यक्तित्व विकास का अंतिम लक्ष्य केवल भौतिक सुख या सामाजिक सफलता नहीं है। इसे चेतना की उच्च और पवित्र अवस्थाओं की ओर एक निरंतर यात्रा के रूप में देखा जाता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को स्वार्थ और अज्ञानता से मुक्त कर आत्म-ज्ञान और आंतरिक शांति की ओर ले जाना है। यह दृष्टिकोण आध्यात्मिक उन्नति को प्राथमिकता देता है, जहाँ व्यक्ति ब्रह्मांड के साथ अपना गहरा संबंध अनुभव करने में सक्षम हो जाता है, जिससे जीवन में पूर्णता और संतुलन आता है।

88. (D) एक विषय-वस्तु विश्लेषण।
विषय-वस्तु विश्लेषण एक वैज्ञानिक शोध पद्धति है जिसका उपयोग संचार के विभिन्न माध्यमों, जैसे चलचित्रों, पुस्तकों या पटकथाओं का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। जब शोधकर्ता चलचित्रों में मानसिक रोगों के चित्रण के प्रतिमान को व्यवस्थित रुप से कूटबद्ध करता है, तो वह मात्रात्मक रूप से रुझानों की पहचान करता है। यह विधि सामाजिक धारणाओं और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों को वस्तुनिष्ठ रूप से समझने में सहायता करती है, जिससे किसी विशेष कालखंड की प्रवृत्तियों के विषय में सटीक और विश्वसनीय निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

89. (A) आंतरिक जीव।
उद्दीपक-जीव-प्रतिक्रिया प्रतिमान में 'जीव' आंतरिक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है जो बाह्य उद्दीपक और अंततः होने वाली प्रतिक्रिया के बीच एक मुख्य कड़ी है। यहाँ जीव ही 'समायोजक तंत्र' का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें मस्तिष्क और मानसिक प्रक्रियाएं सम्मिलित होती हैं। यह तंत्र प्राप्त सूचनाओं का सूक्ष्म प्रसंस्करण करता है और यह निर्धारित करता है कि किस प्रकार की प्रतिक्रिया दी जानी चाहिए। इस प्रकार, जीव की आंतरिक अवस्था और निर्णय ही उद्दीपक के प्रति होने वाले व्यवहार के स्वरूप को निर्धारित करते हैं।

90. (B) अपेक्षाकृत शीघ्र बड़ी संख्या में व्यक्तियों से डेटा एकत्र करना।
सर्वेक्षण पद्धति का सबसे महत्वपूर्ण लाभ इसकी व्यापकता और कार्यकुशलता है। यह शोधकर्ताओं को बहुत कम समय में बड़ी संख्या में व्यक्तियों से उनके विचारों, विश्वासों और व्यवहारों के विषय में आँकड़े एकत्र करने की अनुमति देती है। अन्य पद्धतियों की तुलना में यह अधिक किफायती है और जनसंख्या के व्यापक रुझानों को सांख्यिकीय रूप से समझने में सहायता करती है। प्रश्नावली या साक्षात्कार के माध्यम से एकत्रित यह जानकारी सामाजिक और विपणन अनुसंधान के लिए अत्यंत मूल्यवान और प्रभावशाली आधार प्रदान करती है।

91. (B) P-4, Q-2, R-1, S-3
मानव आँख के विभिन्न भाग प्रकाश को संसाधित करने के लिए मिलकर कार्य करते हैं। स्वच्छमंडल या कॉर्निया बाह्य सुरक्षात्मक परत है जो प्रकाश को केंद्रित करना आरंभ करती है। पुतली आँख में प्रवेश करने वाले प्रकाश की मात्रा को नियंत्रित करती है, जबकि लेंस इस प्रकाश को दृष्टिपटल पर सटीक रूप से केंद्रित करता है। दृष्टिपटल में छड़ें और शंकु जैसी प्रकाशग्राही कोशिकाएं होती हैं जो प्राप्त प्रकाश को तंत्रिका संकेतों में बदलकर हमें देखने और रंगों की पहचान करने की क्षमता प्रदान करती हैं।

92. (D) लक्षण आनुवंशिकता से प्रभावित होते हैं।
व्यवहार के अनुवांशिक आधार का मूल अर्थ यह है कि हमारे व्यक्तित्व के कई महत्वपूर्ण लक्षण और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियाँ आनुवंशिकता से गहराई से प्रभावित होती हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि पर्यावरण का कोई महत्व नहीं है, बल्कि यह कि जीन हमें एक जैविक नींव प्रदान करते हैं। विरासत में मिले डीएनए के निर्देश हमारे तंत्रिका तंत्र और शारीरिक बनावट को स्वरूप देते हैं, जो भविष्य में हमारे व्यवहार की सीमाएं निर्धारित करते हैं। अतः आनुवंशिकता व्यवहारिक विकास का एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य आधार है।

93. (C) मूड पर एक विशिष्ट न्यूरोट्रांसमीटर के प्रभाव क्या हैं?
मनोविज्ञान और प्राकृतिक विज्ञान के अंतर्संबंधों में रुचि रखने वाला शोधकर्ता सदैव व्यवहार के जैविक और शारीरिक आधारों की खोज करेगा। उसके लिए यह समझना महत्वपूर्ण होगा कि न्यूरोट्रांसमीटर जैसे रासायनिक पदार्थ हमारी मनोदशा और मानसिक स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन सीधे तौर पर जीव विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान से संबंधित है क्योंकि यह व्यवहार की व्याख्या मस्तिष्क की कार्यप्रणाली के आधार पर करता है। इस प्रकार के वैज्ञानिक प्रश्न मनोविज्ञान को एक वस्तुनिष्ठ और प्रमाणिक विषय बनाते हैं।

94. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
मनोविज्ञान की वैज्ञानिक प्रकृति इस तथ्य पर निर्भर करती है कि उसके सिद्धांतों का परीक्षण सदैव आनुभविक साक्ष्यों और व्यवस्थित शोध के माध्यम से किया जाए। यह केवल सामान्य ज्ञान या व्यक्तिगत धारणाओं पर आधारित नहीं होता, बल्कि आँकड़ों के वस्तुनिष्ठ विश्लेषण पर निर्भर करता है। वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करने के कारण ही मनोवैज्ञानिक निष्कर्षों को सत्यापित और विश्वसनीय बनाया जा सकता है। यह दृष्टिकोण इसे अंधविश्वासों से पृथक करता है, जिससे प्राप्त ज्ञान को आधुनिक विज्ञान की श्रेणी में प्रमाणिक स्थान प्राप्त होता है।

95. (D) प्रतिक्रिया उत्पन्न करना।
प्रभावक तंत्र का मुख्य कार्य शरीर में प्रतिक्रिया उत्पन्न करना है। जब केंद्रीय तंत्रिका तंत्र किसी सूचना को संसाधित कर लेता है और निर्णय ले लेता है, तो वह प्रभावकों को आवश्यक निर्देश प्रेषित करता है। प्रभावक के रूप में मांसपेशियां संकुचित होकर शारीरिक गति करती हैं और ग्रंथियां रसायनों या विशिष्ट हार्मोन का स्राव करती हैं। ये क्रियाएं ही हमारे आंतरिक निर्णयों को बाह्य व्यवहार के रूप में मूर्त रूप प्रदान करती हैं। इस प्रकार, प्रभावक हमारे तंत्रिका तंत्र के निर्देशों को क्रियान्वित करने वाले जैविक माध्यम हैं।

96. (A) साक्षात्कारकर्ता की उपस्थिति उत्तरदाता के जवाबों को प्रभावित कर सकती है।
शोध पद्धति के रूप में साक्षात्कार की एक प्रमुख सीमा साक्षात्कारकर्ता का प्रभाव है। सहभागी अक्सर साक्षात्कारकर्ता की उपस्थिति या उसके व्यवहार से प्रभावित होकर अपने वास्तविक उत्तर परिवर्तित कर सकते हैं। इसे साक्षात्कारकर्ता पूर्वाग्रह कहा जाता है, जहाँ उत्तरदाता स्वयं को सामाजिक रूप से श्रेष्ठ दिखाने का प्रयत्न करता है। यह स्थिति प्राप्त आँकड़ों की स्वाभाविकता और शुद्धता को न्यून कर सकती है, जिससे शोध के निष्कर्षों की वस्तुनिष्ठता प्रभावित होने का संकट रहता है। अतः इस विधि में अत्यधिक तटस्थता आवश्यक है।

97. (B) स्थिर व्यक्तिगत अंतर
अंतःस्रावी तंत्र से निकलने वाले हार्मोन मानवीय भावनाओं और मनोदशा को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह जैविक प्रक्रिया सीधे तौर पर स्थिर व्यक्तिगत अंतरों या व्यक्तित्व लक्षणों से जुड़ी होती है। कुछ व्यक्तियों में हार्मोनल स्तर की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ उन्हें अधिक उत्तेजित, उत्साही या शांत बना सकती हैं, जो उनके दीर्घकालिक व्यक्तित्व का अंग बन जाती हैं। अतः हार्मोन की भूमिका को समझकर ही हम इस तथ्य की वैज्ञानिक व्याख्या कर सकते हैं कि विभिन्न लोग एक जैसी परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न व्यवहार क्यों करते हैं।

98. (C) ध्वनि कंपनों को तंत्रिका संकेतों में बदलना।
कोकलिया आंतरिक कान की एक अत्यंत महत्वपूर्ण संरचना है जो सुनने की प्रक्रिया के केंद्र में स्थित होती है। इसका मुख्य कार्य बाह्य ध्वनि से प्राप्त यांत्रिक कंपनों को विद्युत-रासायनिक संकेतों में परिवर्तित करना है। कोकलिया के भीतर उपस्थित तरल और सूक्ष्म रोम कोशिकाएं इस पारांतरण प्रक्रिया को कुशलतापूर्वक संपादित करती हैं। बिना इस रूपांतरण के मस्तिष्क ध्वनि की व्याख्या नहीं कर सकता। अतः कोकलिया भौतिक ध्वनि को तंत्रिका भाषा में बदलने के लिए अनिवार्य है, जो हमारी संपूर्ण श्रवण संवेदना का आधार है।

99. (D) तनाव प्रबंधन और व्यक्तिगत विकास जैसे आधुनिक मुद्दों पर प्राचीन ज्ञान को लागू करने पर केंद्रित।
भारतीय मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि यह आधुनिक जीवन की जटिल समस्याओं, जैसे तनाव और अशांति, को सुलझाने के लिए प्राचीन ज्ञान का उपयोग करता है। यह दृष्टिकोण वेदों और योग दर्शन के सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप में लागू करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य केवल सैद्धांतिक चर्चा नहीं, बल्कि व्यक्तिगत विकास और मानसिक कल्याण को प्रभावी ढंग से प्रोत्साहित करना है। यह प्राचीन और आधुनिक दृष्टिकोणों का एक अनूठा संगम है जो मानवीय अनुभव को और अधिक सार्थक बनाता है।

100. (A) एक नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन।
जब किसी विशिष्ट व्यक्ति, जैसे कि एक विलक्षण प्रतिभा वाले बालक की संगीत क्षमताओं का दीर्घकाल तक और गहराई से अध्ययन करना हो, तो व्यक्ति अध्ययन पद्धति सर्वाधिक उपयुक्त होती है। यह विधि शोधकर्ता को बालक की प्रतिभा के विकास, उसके परिवेश और व्यक्तिगत अनुभवों का सूक्ष्म विश्लेषण करने की अनुमति प्रदान करती है। इसमें प्राप्त आँकड़े अत्यंत विस्तृत होते हैं, जिससे प्रतिभा के उभरने की क्रमिक प्रक्रिया को विस्तार से समझना संभव हो पाता है, जो सामान्य सांख्यिकीय विधियों से दुष्कर है।

101. (C) केवल 1 और 3
अवलोकन पद्धति मनोविज्ञान में व्यवहार के वैज्ञानिक अध्ययन का एक महत्वपूर्ण साधन है, जिसे सहभागी या गैर-सहभागी दोनों रूपों में निष्पादित किया जा सकता है। इसी प्रकार, विषय-वस्तु विश्लेषण का उपयोग संचार के विभिन्न माध्यमों में निहित संदेशों के व्यवस्थित विश्लेषण हेतु किया जाता है। हालाँकि, प्रयोगात्मक पद्धति अत्यंत महत्वपूर्ण है, किंतु यह एकमात्र वैज्ञानिक विधि नहीं है; सर्वेक्षण और व्यक्ति अध्ययन जैसी अन्य विधियाँ भी आनुभविक आँकड़े प्रदान करने हेतु समान रूप से वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक शोध में पूरी तरह मान्य हैं।

102. (B) केंद्रीय समायोजक तंत्र
केंद्रीय समायोजक तंत्र, जिसमें मस्तिष्क और मेरुरज्जु सम्मिलित होते हैं, मानवीय व्यवहार में एकीकरण और निर्णय लेने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। यह संवेदी अंगों से प्राप्त सूचनाओं को एकत्रित करता है, उनका सूक्ष्म विश्लेषण करता है और फिर प्रतिक्रिया का निर्णय लेता है। यह तंत्र संवेदना और क्रिया के बीच एक सेतु की भाँति कार्य करता है, जिससे शरीर पर्यावरण के प्रति समन्वित और प्रभावी व्यवहार कर सके। इसके बिना, संवेदी इनपुट और मोटर आउटपुट के बीच कोई सार्थक सामंजस्य संभव नहीं होता।

103. (B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
प्रश्नावली पद्धति एक बड़े प्रतिदर्श से आँकड़ों के कुशल और त्वरित संग्रह की अनुमति देती है, जो इसकी एक बड़ी शक्ति है। वहीं, यह भी सत्य है कि इस विधि में प्रतिक्रिया दर न्यून हो सकती है और उत्तरदाता सामाजिक वांछनीयता जैसे पूर्वाग्रहों से प्रभावित हो सकते हैं। हालाँकि ये दोनों तथ्य अपनी जगह सत्य हैं, किंतु सीमाएं होने का अर्थ यह नहीं है कि वे आँकड़े संग्रह की कुशलता की व्याख्या करती हैं। ये दोनों बिंदु इस पद्धति के भिन्न-भिन्न पक्षों और उसकी व्यवहारिक चुनौतियों को दर्शाते हैं।

104. (D) संवेदी तापग्राही
मानव त्वचा में ऊष्मा और शीतलता की संवेदना अनुभव करने के लिए विशिष्ट प्रकार के संवेदी तापग्राही पाए जाते हैं। ये ग्राही बाहरी वातावरण के तापमान में होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों के प्रति संवेदनशील होते हैं और तुरंत मस्तिष्क को संकेत प्रेषित करते हैं। यह प्रक्रिया हमें अपने आस-पास के वातावरण के अनुसार शरीर को ढालने और सुरक्षात्मक कदम उठाने में सहायता करती है। अन्य ग्राहियों की तुलना में, तापग्राही केवल तापमान के अनुभवों को पहचानने के लिए समर्पित होते हैं, जो हमारी उत्तरजीविता के लिए आवश्यक है।

105. (A) आनुभविक पद्धतियां।
मनोविज्ञान की वैज्ञानिक प्रकृति मुख्य रूप से इसकी आनुभविक पद्धतियों पर निर्भरता के माध्यम से प्रदर्शित होती है। वैज्ञानिक होने का अर्थ है कि ज्ञान केवल अंतर्ज्ञान या दार्शनिक तर्क पर आधारित न होकर, व्यवस्थित अवलोकन और प्रयोग से प्राप्त आँकड़ों पर आधारित हो। मनोविज्ञान में सिद्धांतों का परीक्षण आनुभविक साक्ष्यों के आधार पर किया जाता है, जिससे वस्तुनिष्ठता और सटीकता सुनिश्चित होती है। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष विश्वसनीय हों और उन्हें वैज्ञानिक कसौटी पर बार-बार परखा जा सके।

106. (B) व्यवस्थित समाजशास्त्र
जब हम यह अध्ययन करते हैं कि दूसरों की उपस्थिति व्यक्ति के प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करती है, तो यह मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के मिलन बिंदु को दर्शाता है। यह क्षेत्र सामाजिक मनोविज्ञान कहलाता है, जहाँ व्यक्तिगत व्यवहार पर सामाजिक परिवेश और समूहों के प्रभाव की जाँच की जाती है। यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसकी मानसिक प्रक्रियाएं सामाजिक संदर्भों से अविभाज्य हैं। समाजशास्त्र समूह गतिशीलता के अध्ययन के माध्यम से मनोविज्ञान को मानवीय व्यवहार की व्यापक समझ प्रदान करता है।

107. (C) आनुवंशिकता मनोवैज्ञानिक लक्षणों को कैसे प्रभावित करती है।
व्यवहार के अनुवांशिक आधार मुख्य रुप से इस वैज्ञानिक अध्ययन को संदर्भित करता है कि आनुवंशिकता हमारे मनोवैज्ञानिक लक्षणों और व्यवहारगत प्रवृत्तियों को किस प्रकार स्वरुप प्रदान करती है। इसमें यह खोजा जाता है कि माता-पिता से प्राप्त जीन और गुणसूत्र मानसिक क्षमताओं, स्वभाव और व्यक्तित्व को कैसे प्रभावित करते हैं। यह क्षेत्र स्पष्ट करता है कि जैविक बनावट हमारे व्यवहार की नींव सज्जित करती है, जिस पर कालांतर में पर्यावरण और अनुभव अपना प्रभाव डालते हैं। आनुवंशिकता और विकास के बीच का यह संबंध अत्यंत प्रगाढ़ है।

108. (D) मानक प्रश्नावली
मानक प्रश्नावली एक ऐसी शोध पद्धति है जिसमें व्यक्तियों के समूह को लिखित प्रश्नों का एक निश्चित संच दिया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य एक साथ कई उत्तरदाताओं से उनके विचारों, दृष्टिकोणों या आदतों पर व्यवस्थित आँकड़े एकत्र करना है। यह विधि बहुत ही कुशल और किफायती है, जो शोधकर्ता को जनसंख्या के बड़े प्रतिदर्श का सांख्यिकीय विश्लेषण करने में सक्षम बनाती है। स्व-प्रतिवेदन पर आधारित यह तकनीक सामाजिक अनुसंधान में व्यापक रूप से प्रचलित है और विश्वसनीय परिणाम प्रदान करने में सहायक होती है।

109. (A) प्रणालीगत संवेगात्मक गतिविधि।
तनावपूर्ण स्थितियों में एड्रेनालाईन का स्राव शरीर की प्रणालीगत संवेगात्मक गतिविधि का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। यह हार्मोन तत्काल प्रतिक्रिया के रूप में हृदय गति और सतर्कता को बढ़ा देता है, जिसे "लड़ो या भागो" प्रतिक्रिया कहा जाता है। यह जैविक तंत्र व्यक्ति को बाह्य संकटों का सामना करने या उनसे बचने के लिए शारीरिक रूप से तैयार करता है। इस प्रकार, हार्मोन हमारे तत्काल व्यवहार और संवेगात्मक अवस्थाओं को तीव्रता से प्रभावित करते हैं, जो हमारी सुरक्षा और अनुकूलन के लिए अत्यंत आवश्यक होता है।

110. (B) दृष्टिपटल पर प्रकाश के फोकस को सटीक रूप से समायोजित करना।
मानव आँख में लेंस का प्राथमिक कार्य दृष्टिपटल या रेटिना पर प्रकाश के केंद्रण को सटीक रूप से समायोजित करना है। इस प्रक्रिया को 'समंजन' कहा जाता है, जिसमें लेंस अपनी वक्रता परिवर्तित कर निकट या दूर की वस्तुओं को स्पष्ट देखने में सहायता करता है। लेंस प्रकाश की किरणों को इस प्रकार मोड़ता है कि वे रेटिना पर एक स्पष्ट प्रतिबिंब निर्मित कर सकें। इसके बिना, हमें वस्तुएं धुंधली दृष्टिगोचर होंगी। अतः लेंस दृष्टि की स्पष्टता और सूक्ष्म विवरणों को पहचानने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है।

111. (C) भारत की दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपराएं।
भारतीय मनोविज्ञान की ऐतिहासिक जड़ें भारत की प्राचीन दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपराओं में गहराई से समाहित हैं। वेदों, उपनिषदों और योग दर्शन जैसे प्राचीन ग्रंथों में सहस्रों वर्षों से मन, चेतना और 'स्व' की प्रकृति पर गहन चिंतन किया गया है। यह ज्ञान परंपरा आत्म-ज्ञान और आंतरिक विकास की मानवीय खोज पर आधारित है। आधुनिक भारतीय मनोविज्ञान इन्हीं समृद्ध शास्त्रीय स्रोतों से प्रेरणा लेकर मानवीय व्यवहार और मानसिक कल्याण को समझने के लिए एक समग्र और अनुभवात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

112. (D) दैहिक प्रभावक
व्यवहार की जैविक श्रृंखला में दैहिक प्रभावक वे अंग होते हैं जो प्रतिक्रिया को वास्तव में निष्पादित करते हैं। इनमें मांसपेशियां और ग्रंथियां सम्मिलित होती हैं जो केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से निर्देश प्राप्त करने के पश्चात सक्रिय होती हैं। जब कोई व्यक्ति किसी उद्दीपक के प्रति शारीरिक गति करता है या कोई हार्मोन स्रावित होता है, तो वह प्रभावक के कार्य का परिणाम होता है। यह तंत्र समायोजक द्वारा लिए गए निर्णयों को भौतिक क्रिया में परिवर्तित करने के लिए उत्तरदायी है, जिससे व्यवहार मूर्त रूप ग्रहण करता है।

113. (A) 4, 3, 2, 1
सुनने की प्रक्रिया में ध्वनि कंपन एक निश्चित क्रमिक पथ का अनुसरण करते हैं। सर्वप्रथम ध्वनि तरंगें श्रवण नली के माध्यम से कान में प्रवेश करती हैं। इसके पश्चात वे कर्णपटह झिल्ली या कान के पर्दे से टकराती हैं और कंपन उत्पन्न करती हैं। ये कंपन मध्य कान की छोटी अस्थिकाओं द्वारा प्रवर्धित किए जाते हैं और अंत में आंतरिक कान के कोकलिया तक पहुँचते हैं। कोकलिया में ये यांत्रिक कंपन तंत्रिका आवेगों में परिवर्तित हो जाते हैं, जिससे हमें ध्वनि का अनुभव प्राप्त होता है।

114. (D) यह विशेष रूप से केवल गंभीर मानसिक विकारों के उपचार से संबंधित है।
मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र के विषय में यह धारणा त्रुटिपूर्ण है कि यह केवल मानसिक विकारों के उपचार तक सीमित है। वास्तव में, यह एक अत्यंत व्यापक विषय है जो शैशवावस्था से वृद्धावस्था तक संपूर्ण जीवनकाल के सामान्य व्यवहार का अध्ययन करता है। इसमें अधिगम, स्मृति, प्रत्यक्षीकरण जैसी आधारभूत प्रक्रियाओं की जाँच के साथ-साथ शिक्षा, स्वास्थ्य और उद्योग जैसे क्षेत्रों में व्यवहारिक समस्याओं को हल करना भी सम्मिलित है। मनोविज्ञान मानव अनुभव के प्रत्येक पक्ष को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का निरंतर प्रयास करता है।

115. (C) अधिक लचीला होता है और स्वतःस्फूर्त प्रश्नों की अनुमति देता है।
असंरचित साक्षात्कार और संरचित साक्षात्कार के बीच मुख्य अंतर लचीलेपन का है। असंरचित साक्षात्कार में प्रश्नों का कोई पूर्व निश्चित क्रम नहीं होता, जिससे साक्षात्कारकर्ता को सहभागी के उत्तरों के आधार पर नवीन और स्वतःस्फूर्त प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है। यह विधि किसी विषय की गहराई से खोज करने और सहभागी के व्यक्तिगत दृष्टिकोण को विस्तार से समझने के लिए अत्यंत उपयोगी है। हालाँकि इसमें आँकड़ों का विश्लेषण करना अधिक समय लेने वाला हो सकता है, किंतु यह अधिक समृद्ध जानकारी प्रदान करता है।

116. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
मनोविज्ञान के विभिन्न दृष्टिकोण विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। एक प्राकृतिक विज्ञान के रूप में यह व्यवहार के जैविक और शारीरिक आधारों का अध्ययन करता है। सामाजिक विज्ञान के रूप में यह समूह गतिशीलता और सामाजिक प्रभाव का विश्लेषण करता है। भारतीय मनोविज्ञान चेतना और आत्म-साक्षात्कार के आंतरिक आयामों को समझने पर बल देता है। अंत में, नैदानिक मनोविज्ञान मनोवैज्ञानिक विकारों के निदान और उनके प्रभावी उपचार के व्यवहारिक पक्ष से संबंधित है। यह विविधता मनोविज्ञान को एक व्यापक और बहुआयामी विषय बनाती है।

117. (A) जीनोटाइप; फेनोटाइप
किसी व्यक्ति की विशिष्ट अनुवांशिक संरचना को 'जीनोटाइप' के रूप में जाना जाता है, जो माता-पिता से प्राप्त जीन का कुल समूह है। इसके विपरीत, इस संरचना की बाह्य और दृश्य अभिव्यक्ति को 'फेनोटाइप' कहा जाता है, जिसमें शारीरिक लक्षण और व्यवहारगत विशेषताएं सम्मिलित होती हैं। फेनोटाइप जीनोटाइप और पर्यावरणीय कारकों के बीच की अंतःक्रिया का परिणाम होता है। इस प्रकार, जहाँ जीनोटाइप एक जैविक ब्लूप्रिंट प्रदान करता है, वहीं फेनोटाइप उस ब्लूप्रिंट का वास्तविक रूप है जिसे हम देख और माप सकते हैं।

118. (B) तंत्रिका आवेग के जवाब में मांसपेशी तंतु का सिकुड़ना।
ग्राही तंत्र का मुख्य कार्य बाह्य या आंतरिक उद्दीपकों का पता लगाना और उन्हें सूचना के रूप में ग्रहण करना है। आँख की रेटिना द्वारा प्रकाश अनुभव करना या कोकलिया की रोम कोशिकाओं द्वारा कंपन पहचानना ग्राही क्रियाओं के उदाहरण हैं। इसके विपरीत, तंत्रिका आवेग के उत्तर में मांसपेशी तंतु का संकुचन एक प्रभावक क्रिया है, न कि ग्राही क्रिया। प्रभावक वे अंग होते हैं जो सूचना प्राप्त करने के पश्चात प्रतिक्रिया या कार्य को पूर्ण करते हैं। अतः मांसपेशियां प्रतिक्रिया व्यक्त करने वाले अंग हैं।

119. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
दृश्य प्रणाली में दृष्टिपटल पर दो मुख्य प्रकार के प्रकाशग्राही पाए जाते हैं। छड़ें अत्यंत संवेदनशील होती हैं और मंद प्रकाश की स्थिति में या रात्रि में दृष्टि के लिए उत्तरदायी होती हैं। इसके विपरीत, शंकु तीव्र प्रकाश में कार्य करते हैं और सूक्ष्म विवरणों के साथ-साथ रंग दृष्टि प्रदान करने के लिए विशिष्ट होते हैं। ये दोनों कोशिकाएं मिलकर हमें विभिन्न प्रकाश स्थितियों और रंगीन वातावरण को देखने एवं समझने में सक्षम बनाती हैं। इनका संतुलन ही हमारी संपूर्ण दृश्य क्षमता का आधार है।

120. (D) यह जाँच करके कि सामाजिक संदर्भ और सांस्कृतिक मानदंड व्यक्तिगत व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं।
मनोविज्ञान सामाजिक विज्ञानों से गहराई से संबद्ध है क्योंकि यह केवल व्यक्ति का एकांत में अध्ययन नहीं करता, बल्कि उसे उसके सामाजिक परिवेश में देखता है। यह इस तथ्य का विश्लेषण करता है कि कैसे सामाजिक संदर्भ, समूह और सांस्कृतिक मानदंड हमारे व्यवहार, चिंतन और भावनाओं को स्वरूप प्रदान करते हैं। मनुष्य का विकास और उसकी क्रियाएं समाज से अविभाज्य हैं। सामाजिक मनोविज्ञान इसी अंतर्संबंध की वैज्ञानिक जाँच करता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति और समाज एक-दूसरे को निरंतर प्रभावित करते रहते हैं।

121. (A) केवल 1 और 3
व्यवहार के जैविक आधारों में हार्मोन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे अंतःस्रावी ग्रंथियों द्वारा स्रावित रासायनिक संदेशवाहक के रूप में कार्य करते हैं। ये हार्मोन शरीर की वृद्धि और संवेगात्मक संतुलन को प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार, प्रभावक तंत्र में मांसपेशियां और ग्रंथियां सम्मिलित होती हैं जो तंत्रिका तंत्र के निर्देशानुसार प्रतिक्रियाएं देती हैं। हालाँकि, व्यवहार का अनुवांशिक आधार केवल सीखे गए अनुभवों को नहीं, बल्कि विरासत में मिले जीन के प्रभाव को संदर्भित करता है, जो व्यवहार की जैविक नींव सज्जित करते हैं।

122. (B) व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण
जब कोई शोधकर्ता राजनीतिक भाषणों या किसी अन्य संचार माध्यम में विशिष्ट शब्दों और विषयों की आवृत्ति की पहचान करता है, तो वह विषय-वस्तु विश्लेषण पद्धति का उपयोग कर रहा होता है। यह एक व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ विधि है जिसका उपयोग संचार सामग्री के पीछे छिपे संदेशों और प्रवृत्तियों को कूटबद्ध करने के लिए किया जाता है। यह विधि शोधकर्ता को सामाजिक और राजनीतिक विचारधाराओं के प्रतिमान को मात्रात्मक रूप से समझने में सहायता करती है, जिससे साक्ष्यों के आधार पर प्रमाणिक निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

123. (C) मानवीय अनुभव, विशेष रूप से व्यक्तित्व विकास को समझने और बढ़ाने की इसकी क्षमता।
भारतीय मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र मुख्य रूप से मानवीय अनुभव की गहराई और व्यक्तित्व विकास की अपार संभावनाओं को संबोधित करता है। यह दृष्टिकोण केवल व्यवहार के बाह्य अवलोकन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आंतरिक शांति, चेतना और 'स्व' के वास्तविक स्वरूप को समझने पर बल देता है। यह प्राचीन ज्ञान को आधुनिक समस्याओं के समाधान हेतु लागू करने का प्रयास करता है, जिससे व्यक्ति अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास कर सके। इसका उद्देश्य जीवन की गुणवत्ता को आध्यात्मिक और मानसिक स्तर पर उन्नत करना है।

124. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
पिन्ना या बाह्य कान श्रवण प्रणाली की एक महत्वपूर्ण संरचना है जो वातावरण से ध्वनि तरंगों को एकत्रित करने का कार्य करती है। हालाँकि, पिन्ना का कार्य ध्वनि को तंत्रिका ऊर्जा में परिवर्तित करना नहीं है। ध्वनि तरंगों को विद्युत-रासायनिक संकेतों या तंत्रिका आवेगों में बदलने की पारांतरण प्रक्रिया आंतरिक कान के कोकलिया में स्थित रोम कोशिकाओं द्वारा की जाती है। पिन्ना केवल एक दिशात्मक ग्राही की भाँति कार्य करता है जो ध्वनि को कान की नली की ओर निर्देशित करता है, जिससे श्रवण में सहायता मिलती है।

125. (C) जैविक आधार
पीयूष ग्रंथि से निकलने वाले हार्मोन का शारीरिक विकास पर पड़ने वाला प्रभाव व्यवहार के जैविक आधारों के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। यह शोध इस तथ्य पर केंद्रित होता है कि कैसे हमारी अंतःस्रावी प्रणाली और रासायनिक संदेशवाहक शरीर की वृद्धि और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। चूँकि यह अध्ययन सीधे तौर पर शारीरिक अंगों और उनकी कार्यप्रणाली से संबद्ध है, इसलिए इसे जैविक आधारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। यह स्पष्ट करता है कि मनोवैज्ञानिक विकास के पीछे सुदृढ़ शारीरिक और रासायनिक कारण होते हैं।

126. (D) अवलोकन पद्धति।
विकासात्मक परिवर्तनों को समझने के लिए सहस्त्रों वर्षों तक बच्चों के एक ही समूह का अध्ययन करना अनुदैर्ध्य अध्ययन कहलाता है, जो वास्तव में अवलोकन पद्धति का एक विशिष्ट प्रकार है। इस विधि में शोधकर्ता बिना किसी हस्तक्षेप के समय के साथ होने वाले स्वाभाविक व्यवहारिक परिवर्तनों को अंकित करता है। यह पद्धति विकास की निरंतरता और व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने के लिए अत्यंत प्रभावी है। इसमें चरों का हेरफेर नहीं किया जाता, बल्कि विकास की प्राकृतिक प्रक्रिया का सावधानीपूर्वक और क्रमिक अवलोकन किया जाता है।

127. (B) समायोजक - संवेदी सूचनाओं को एकीकृत करना।
जैविक तंत्र में समायोजक का मुख्य कार्य संवेदी सूचनाओं को एकीकृत करना और उचित प्रतिक्रिया का समन्वय करना है। इसमें मस्तिष्क और मेरुरज्जु सम्मिलित होते हैं। ग्राही

अंग उद्दीपकों का पता लगाते हैं, जबकि प्रभावक अंग (जैसे मांसपेशियां) प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। हार्मोन रक्तप्रवाह में रासायनिक संदेशवाहक के रूप में कार्य करते हैं, न कि तंत्रिकाओं के साथ विद्युत संकेतों के रूप में। अतः समायोजक तंत्र ही वह केंद्र है जहाँ प्राप्त जानकारी को संसाधित कर व्यवहारिक निर्णयों में परिवर्तित किया जाता है।

128. (C) यह कार्य-कारण संबंध निर्धारित कर सकता है।
प्रयोगात्मक पद्धति का अन्य शोध पद्धतियों की तुलना में सर्वाधिक महत्वपूर्ण लाभ इसकी कार्य-कारण संबंध निर्धारित करने की क्षमता है। इसमें शोधकर्ता एक स्वतंत्र चर में हेरफेर करता है और अन्य सभी बाह्य चरों को कठोरता से नियंत्रित करता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि देखा गया प्रभाव केवल उसी चर के कारण हुआ है। अन्य विधियाँ, जैसे अवलोकन या सर्वेक्षण, केवल सहसंबंध बता सकती हैं, किंतु प्रयोग ही वह वैज्ञानिक उपकरण है जो निश्चित रूप से 'क्यों' और 'कैसे' का उत्तर दे सकता है।

129. (A) संवेदी यांत्रिकग्राही
स्पर्श की संवेदना मुख्य रूप से त्वचा में स्थित संवेदी यांत्रिकग्राहियों द्वारा संचालित होती है। ये विशिष्ट ग्राही त्वचा के दबने, खिंचने या विस्थापित होने के प्रति अत्यंत संवेदनशील होते हैं और इन यांत्रिक परिवर्तनों को तंत्रिका संकेतों में परिवर्तित कर देते हैं। इसके विपरीत, प्रकाशग्राही दृष्टि के लिए और तापग्राही तापमान के लिए होते हैं। यांत्रिकग्राही ही हमें वस्तुओं की बनावट, कठोरता और स्पर्श का अनुभव कराते हैं, जो हमारे दैनिक जीवन की क्रियाओं और सुरक्षा के लिए एक अनिवार्य संवेदी माध्यम है।

130. (B) मिथ्याकरणीय और परीक्षण योग्य।
एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की प्रकृति यह अपेक्षा करती है कि इसके प्रस्ताव और सिद्धांत मिथ्याकरणीय और परीक्षण योग्य होने चाहिए। इसका अर्थ है कि वैज्ञानिक सिद्धांतों को आनुभविक साक्ष्यों के आधार पर परखा जा सके और यदि साक्ष्य विपरीत हों, तो उन्हें असत्य सिद्ध किया जा सके। विज्ञान केवल उन दावों को स्वीकार करता है जिन्हें व्यवस्थित अवलोकन और प्रयोग के माध्यम से सत्यापित किया जा सके। यह कसौटी मनोविज्ञान को अंधविश्वासों और मनगढ़ंत सिद्धांतों से पृथक कर एक प्रमाणिक विषय बनाती है।

131. (C) चेतना की एक संतुलित और एकीकृत अवस्था की प्राप्ति।
व्यक्तित्व विकास के संबंध में भारतीय मनोविज्ञान का मुख्य लक्ष्य चेतना की एक संतुलित, शांत और एकीकृत अवस्था प्राप्त करना है। यह दृष्टिकोण केवल बाह्य व्यवहार में सुधार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आंतरिक विकास और मानसिक सामंजस्य पर बल देता है। इसमें व्यक्ति को अपनी वास्तविक प्रकृति को समझने और द्वंद्वों से मुक्त होकर एक सार्थक जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक विकास का एक ऐसा संगम है जो पूर्ण आत्म-ज्ञान और आंतरिक प्रसन्नता की ओर ले जाता है।

132. (D) संचार पर इसके प्रभाव को देखने के लिए किसी चर में हेरफेर करना।
विषय-वस्तु विश्लेषण एक ऐसी शोध पद्धति है जिसमें संचार की सामग्री का व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया जाता है। इसमें विशिष्ट विशेषताओं की पहचान करना, उन्हें कूटबद्ध करना और सांख्यिकीय निष्कर्ष निकालना सम्मिलित है। हालाँकि, इसमें चरों का हेरफेर करना सम्मिलित नहीं है। चरों का हेरफेर प्रयोगात्मक पद्धति की मुख्य विशेषता है। विषय-वस्तु विश्लेषण मुख्य रूप से विद्यमान दस्तावेजों, भाषणों या माध्यमों के संदेशों के विश्लेषण तक ही सीमित रहता है, जिससे संचार के पीछे के सामाजिक रुझानों को समझा जा सके।

133. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
व्यवहार का अनुवांशिक आधार यह नहीं कहता कि पर्यावरण की कोई भूमिका नहीं है; वास्तव में, व्यवहार जीन और परिवेश की जटिल अंतःक्रिया का परिणाम होता है। वहीं, यह पूर्णतः सत्य है कि हार्मोन मानवीय भावनाओं और संवेगात्मक अवस्थाओं को गहराई से प्रभावित करते हैं और व्यक्तित्व लक्षणों के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। हार्मोन और आनुवंशिकता मिलकर व्यवहार की जैविक नींव तैयार करते हैं, जिसे पश्चात हमारे अनुभव और शिक्षा द्वारा अंतिम स्वरूप और दिशा प्रदान की जाती है।

134. (B) यह संवेदी इनपुट को मोटर आउटपुट से जोड़ता है, जिसमें केंद्रीय तंत्रिका तंत्र शामिल है।
समायोजक तंत्र मानवीय व्यवहार का वह केंद्र है जो संवेदी इनपुट को मोटर आउटपुट से जोड़ने का कार्य करता है। इसमें मुख्य रूप से मस्तिष्क और मेरुरज्जु से निर्मित केंद्रीय तंत्रिका तंत्र सम्मिलित होता है। यह तंत्र संवेदी अंगों से प्राप्त सूचनाओं को ग्रहण करता है, उनका प्रसंस्करण और एकीकरण करता है, और फिर प्रभावकों को उचित प्रतिक्रिया देने हेतु निर्देश प्रेषित करता है। यह प्रक्रिया ही यह सुनिश्चित करती है कि शरीर पर्यावरण के प्रति एक सटीक, समन्वित और अर्थपूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त कर सके।

135. (C) पर्यावरणीय मनोविज्ञान।
पर्यावरणीय मनोविज्ञान वह क्षेत्र है जो भौतिक परिवेश, जैसे कक्षा की रूपरेखा, प्रकाश और स्थान, तथा मानवीय व्यवहार के बीच के संबंधों का अध्ययन करता है। जब एक मनोवैज्ञानिक यह जाँच करता है कि कक्षा की बनावट छात्रों के ध्यान और सीखने की क्षमता को कैसे प्रभावित करती है, तो वह इसी विषय-क्षेत्र के अंतर्गत कार्य कर रहा होता है। इसका उद्देश्य ऐसे वातावरण का निर्माण करना है जो मानव कल्याण और कार्यक्षमता को प्रोत्साहित कर सके, जो शिक्षा और कार्यस्थलों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

136. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
मनोविज्ञान की शोध पद्धतियों के अपने विशिष्ट लक्ष्य होते हैं। व्यक्ति अध्ययन किसी एक व्यक्ति का गहन और विस्तृत विश्लेषण प्रदान करता है। सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग बड़ी जनसंख्या के दृष्टिकोण पर सांख्यिकीय आँकड़े एकत्र करने हेतु किया जाता है। अवलोकन पद्धति प्राकृतिक वातावरण में

व्यवहार के स्वाभाविक विवरण को अंकित करने में सक्षम है। अंत में, प्रयोगात्मक पद्धति चरों में हेरफेर करके कार्य-कारण संबंध स्थापित करने का सर्वाधिक वैज्ञानिक मार्ग है। ये सभी विधियाँ मिलकर मानवीय व्यवहार की व्यापक और सटीक समझ प्रदान करती हैं।

137. (A) कोकलिया के भीतर रोम कोशिकाएं।
श्रवण प्रणाली में कोकलिया के भीतर स्थित सूक्ष्म रोम कोशिकाएं यांत्रिक कंपनों को विद्युत-रासायनिक संकेतों में परिवर्तित करने के लिए उत्तरदायी होती हैं। जब ध्वनि की तरंगें आंतरिक कान तक पहुँचती हैं, तो ये कोशिकाएं सक्रिय हो जाती हैं और भौतिक कंपनों को तंत्रिका आवेगों में परिवर्तित कर देती हैं जिन्हें मस्तिष्क समझ सकता है। इस प्रक्रिया को पारांतरण कहा जाता है। बाह्य पिन्ना या मध्य कान की अस्थिकाएं केवल ध्वनि को प्रेषित करने और प्रवर्धित करने का कार्य करती हैं, जबकि वास्तविक रूपांतरण कोकलिया में ही संपन्न होता है।

138. (B) पता लगाता है; प्रतिक्रिया करता है
ग्राही और प्रभावक के बीच मूलभूत अंतर उनकी भूमिका का है। ग्राही वे विशिष्ट अंग या कोशिकाएं हैं जो पर्यावरण से आने वाले उद्दीपकों, जैसे प्रकाश या ध्वनि, का पता लगाते हैं और उन्हें संकेतों में परिवर्तित करते हैं। इसके विपरीत, प्रभावक (जैसे मांसपेशियां और ग्रंथियां) वे अंग हैं जो तंत्रिका तंत्र से निर्देश प्राप्त करने के पश्चात वास्तविक प्रतिक्रिया या क्रिया को संपादित करते हैं। इस प्रकार, ग्राही सूचना प्राप्त करने का माध्यम हैं और प्रभावक उस सूचना पर व्यवहारिक प्रतिक्रिया व्यक्त करने का अंतिम साधन हैं।

139. (C) दार्शनिक और चिंतनशील परंपराएं।
भारतीय मनोविज्ञान का इतिहास पश्चिमी मनोविज्ञान से मौलिक रूप से भिन्न है क्योंकि इसकी उत्पत्ति प्राचीन भारतीय दार्शनिक और चिंतनशील परंपराओं में हुई है। जहाँ पश्चिमी मनोविज्ञान प्रयोगशाला प्रयोगों से आरंभ हुआ, वहीं भारतीय परंपरा ने सहस्त्रों वर्षों तक चेतना, 'स्व' और वास्तविकता की गहन आंतरिक खोज पर बल दिया। वेदों और योग दर्शन के ये आध्यात्मिक ग्रंथ मन की सूक्ष्म कार्यप्रणाली को समझने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जो आज भी मानवीय मानसिक शांति और कल्याण के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

140. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ग्रंथियों द्वारा हार्मोन का स्राव करना शरीर के प्रभावक तंत्र का एक अंग है क्योंकि ग्रंथियाँ स्वयं एक प्रकार की प्रभावक होती हैं। प्रभावक वे अंग हैं जो तंत्रिका तंत्र से निर्देश प्राप्त होने पर प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। जब शरीर को किसी विशिष्ट कार्य या संतुलन की आवश्यकता होती है, तो समायोजक तंत्र ग्रंथियों को संकेत प्रेषित करता है, जिसके परिणामस्वरूप वे रक्तप्रवाह में हार्मोन छोड़ती हैं। यह रासायनिक प्रतिक्रिया मानवीय व्यवहार और शारीरिक अवस्था को प्रभावित करती है, जो प्रभावक की भूमिका को पूर्णतः पुष्ट करती है।

141. (D) संरचित साक्षात्कार।
संरचित साक्षात्कार एक ऐसी शोध विधि है जिसमें शोधकर्ता सहभागी से आमने-सामने पूर्व निर्धारित प्रश्नों का एक निश्चित संच पूछता है। इसमें प्रश्नों का क्रम और स्वरूप स्थिर रहता है ताकि सभी सहभागियों से प्राप्त आँकड़ों की निष्पक्ष तुलना की जा सके। यह विधि शोध में वस्तुनिष्ठता सुनिश्चित करती है और साक्षात्कारकर्ता के व्यक्तिगत प्रभाव को न्यून करती है। यह विशेष रूप से तब उपयोगी होती है जब शोधकर्ता को एक बड़े समूह से मानकीकृत और सटीक जानकारी प्राप्त करनी हो, जो सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए उपयुक्त हो।

142. (B) क्रिस्टलीय लेंस।
मानव आँख में क्रिस्टलीय लेंस वह लचीली संरचना है जो अपनी वक्रता को परिवर्तित कर भिन्न-भिन्न दूरी पर स्थित वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करती है। इस प्रक्रिया को समंजन कहा जाता है, जहाँ सिलियरी मांसपेशियां लेंस के आकार को समायोजित करती हैं। इससे प्रकाश की किरणें दृष्टिपटल पर सटीक रूप से केंद्रित होती हैं, जिससे हमें निकट और दूर की वस्तुएं स्पष्ट दृष्टिगोचर होती हैं। लेंस की यह अनुकूलन क्षमता ही हमें निरंतर परिवर्तित होते दृश्य वातावरण को स्पष्टता के साथ देखने में पूर्णतः सक्षम बनाती है।

143. (A) केवल 1 और 2
मनोविज्ञान एक अंतःविषय विज्ञान है जिसका अन्य विज्ञानों के साथ गहरा संबंध है। जीव विज्ञान के साथ इसका संबंध मस्तिष्क की संरचना और व्यवहार के अध्ययन में स्पष्ट होता है। समाजशास्त्र के साथ इसका संबंध इस जाँच में देखा जाता है कि सामाजिक समूह और परिस्थितियां व्यक्तिगत व्यवहार को कैसे प्रभावित करती हैं। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि मनोविज्ञान पृथकता में कार्य करता है; वास्तव में, यह प्राकृतिक और सामाजिक दोनों विज्ञानों के सिद्धांतों को अंगीकार कर मानवीय अनुभव की एक व्यापक और वैज्ञानिक समझ विकसित करने का प्रयास करता है।

144. (D) समायोजक: रीढ़ की हड्डी जो संकेतों को एकीकृत करती है।
व्यवहार के जैविक आधारों में प्रत्येक घटक की एक विशिष्ट भूमिका होती है। समायोजक तंत्र, जिसमें मस्तिष्क और मेरुरज्जु सम्मिलित होते हैं, संवेगी संकेतों को एकीकृत करने और प्रतिक्रिया का समन्वय करने का कार्य करता है। ग्राही अंग उद्दीपकों का पता लगाते हैं, न कि प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। प्रभावक अंग, जैसे मांसपेशियां, प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, न कि सूचना का प्रसंस्करण। अतः मेरुरज्जु समायोजक के रूप में एक केंद्रीय भूमिका निभाती है जो संवेदी इनपुट और मोटर आउटपुट के बीच एक अनिवार्य कड़ी के रूप में कार्य करती है।

145. (A) आधारभूत संज्ञानात्मक मनोविज्ञान
संज्ञानात्मक मनोविज्ञान वह उपक्षेत्र है जो उन मानसिक प्रक्रियाओं के व्यवस्थित अध्ययन पर केंद्रित है जिनके माध्यम से हम जानकारी प्राप्त करते हैं, संचित करते हैं और उपयोग करते हैं। इसमें चिंतन, स्मृति, समस्या समाधान, ध्यान और भाषा जैसी जटिल प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण सम्मिलित है।

यह क्षेत्र यह समझने का प्रयास करता है कि हमारा मन एक सूचना प्रसंस्करण प्रणाली के रूप में कैसे कार्य करता है। यह शोध न केवल हमारे सामान्य ज्ञान में वृद्धि करता है, बल्कि शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

146. (A) 4, 2, 3, 1
मनोविज्ञान का इतिहास सहस्त्रों वर्ष पुराना है। इसकी शुरुआत अरस्तू जैसे प्राचीन यूनानी विचारकों द्वारा मन की दार्शनिक जाँच से हुई थी। इसके पश्चात, 1879 में विल्हेम वुंट ने प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित की। 20वीं सदी के प्रारंभ में सिगमंड फ्रायड ने मनोविश्लेषण के माध्यम से अचेतन मन के सिद्धांतों को लोकप्रिय बनाया। अंत में, बी.एफ. स्किनर ने व्यवहारवाद के अंतर्गत सुदृढीकरण और अधिगम के नियमों का प्रतिपादन किया। यह क्रम मनोविज्ञान के एक दर्शन से आधुनिक विज्ञान बनने की क्रमिक यात्रा को दर्शाता है।

147. (B) व्यवस्थित सहसंबंधी
एक अध्ययन जिसका उद्देश्य चरों में हेरफेर किए बिना उनके बीच केवल संबंध की जाँच करना है, व्यवस्थित सहसंबंधी अध्ययन कहलाता है। इसमें शोधकर्ता यह देखता है कि एक चर में परिवर्तन होने पर दूसरे चर में किस प्रकार का परिवर्तन आता है। यह विधि चरों के बीच सह-अस्तित्व को उजागर करती है, किंतु यह कार्य-कारण संबंध स्थापित नहीं कर सकती। यह उन स्थितियों में अत्यंत उपयोगी है जहाँ चरों को प्रयोगात्मक रूप से नियंत्रित करना दुष्कर या अनैतिक होता है, जिससे वास्तविक जगत के आँकड़ों का विश्लेषण संभव हो पाता है।

148. (B) शैशवावस्था और किशोरावस्था
शारीरिक विकास में हार्मोन की भूमिका जीवन की प्रारंभिक अवस्थाओं, विशेषकर शैशवावस्था और किशोरावस्था के दौरान सर्वाधिक प्रमुख और प्रभावशाली होती है। शैशवावस्था में वृद्धि हार्मोन शरीर की बनावट और अंगों के विकास को निर्देशित करते हैं। किशोरावस्था के दौरान यौन हार्मोन के स्राव में होने वाली वृद्धि न केवल तीव्रता से शारीरिक परिवर्तन लाती है, बल्कि संवेगात्मक उतार-चढ़ाव और व्यवहारिक प्रवृत्तियों को भी प्रभावित करती है। यह अवधि जैविक रूप से अत्यंत सक्रिय होती है, जहाँ हार्मोन व्यक्तित्व और शारीरिक पहचान की नींव रखते हैं।

149. (C) दृष्टिपटल की छड़ें और शंकु।
दृश्य प्रणाली के प्राथमिक ग्राही दृष्टिपटल या रेटिना में स्थित छड़ें और शंकु कोशिकाएं होती हैं। छड़ें प्रकाश के प्रति अत्यंत संवेदनशील होती हैं और हमें मंद प्रकाश या रात्रि के समय देखने में सहायता करती हैं। इसके विपरीत, शंकु तीव्र प्रकाश में कार्य करते हैं और सूक्ष्म विवरणों को पहचानने के साथ-साथ रंग दृष्टि के लिए उत्तरदायी होते हैं। ये कोशिकाएं भौतिक प्रकाश ऊर्जा को तंत्रिका आवेगों में परिवर्तित करती हैं, जिन्हें मस्तिष्क दृश्य सूचना के रूप में संसाधित करता है। इनकी स्वस्थ कार्यप्रणाली ही स्पष्ट दृष्टि का आधार है।

150. (D) आध्यात्मिक विकास और 'स्व' की प्रकृति।
भारतीय मनोविज्ञान व्यक्तित्व विकास को आध्यात्मिक विकास और 'स्व' की वास्तविक प्रकृति को जानने की एक प्रक्रिया के रूप में देखता है। जहाँ पश्चिमी मॉडल प्रायः व्यवहार, अचेतन संघर्षों या संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वहीं भारतीय दृष्टिकोण चेतना की उच्च अवस्था और आंतरिक शांति प्राप्त करने पर बल देता है। इसमें व्यक्ति को अपनी सीमाओं से ऊपर उठकर आत्म-साक्षात्कार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह समग्र दृष्टिकोण मन, शरीर और आत्मा के सामंजस्य को व्यक्तित्व का उच्चतम स्वरूप मानता है।

151. (A) यह व्यवस्थित अनुभववाद का उपयोग करता है।
मनोविज्ञान एक विज्ञान है क्योंकि यह व्यवस्थित अनुभववाद पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि यह ज्ञान प्राप्त करने के लिए इंद्रियों के माध्यम से किए गए वस्तुनिष्ठ अवलोकन और प्रयोगों पर निर्भर करता है। वैज्ञानिक शोध में केवल व्यक्तिगत विश्वास या उपाख्यानों को प्रमाण नहीं माना जाता। सिद्धांतों का परीक्षण साक्ष्यों के आधार पर किया जाता है ताकि वे विश्वसनीय और पुनरावृत्ति योग्य हों। यह व्यवस्थित दृष्टिकोण ही मनोविज्ञान को अन्य कला विषयों से पृथक करता है और इसे मानवीय व्यवहार के अध्ययन के लिए एक प्रमाणिक विज्ञान बनाता है।

152. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
शोध पद्धतियों में व्यक्ति अध्ययन एक गहन अवलोकन विधि है जिसमें चरों का हेरफेर नहीं किया जाता, बल्कि किसी एक मामले का विस्तृत विश्लेषण किया जाता है। चरों का हेरफेर प्रयोगात्मक पद्धति की विशेषता है। वहीं, सर्वेक्षण पद्धति पूर्णतः सत्य है, क्योंकि इसका उपयोग बड़े जनसंख्या के प्रतिदर्श से दृष्टिकोण, राय और व्यवहार पर स्व-प्रतिवेदन आँकड़े एकत्र करने के लिए किया जाता है। यह शोधकर्ता को कम समय में व्यापक सांख्यिकीय जानकारी प्रदान करने में सक्षम है, जो सामाजिक शोध के लिए अत्यंत मूल्यवान है।

153. (B) प्रणालीगत प्रभावक तंत्र।
ग्रंथियां जो रक्तप्रवाह में सीधे हार्मोन का स्राव करती हैं, प्रणालीगत प्रभावक तंत्र का एक अंग हैं। प्रभावक वे अंग होते हैं जो तंत्रिका तंत्र से प्राप्त संकेतों के उत्तर में कार्य या प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। जब शरीर को तनाव या विकास जैसी स्थितियों के लिए रसायनों की आवश्यकता होती है, तो ये ग्रंथियां सक्रिय होकर प्रतिक्रिया देती हैं। इस प्रकार, हार्मोन का स्राव करना एक जैविक कार्य है जो हमारे व्यवहार और शारीरिक अवस्था को प्रभावित करता है, जिससे ग्रंथियां प्रभावी प्रतिक्रिया देने वाले अंगों के रूप में कार्य करती हैं।

154. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
व्यवहार के जैविक आधारों में प्रत्येक घटक की विशिष्ट भूमिका होती है। जीन आनुवंशिकता की आधारभूत इकाई है जो लक्षणों को निर्धारित करती है। हार्मोन शरीर में रासायनिक संदेशवाहक के रूप में कार्य करते हैं जो विकास और भावनाओं को नियंत्रित करते हैं। ग्राही अंग विशिष्ट संवेदी कोशिकाएं होते हैं जो पर्यावरण से उद्दीपकों का पता लगाते हैं। अंत में, प्रभावक

अंग (जैसे मांसपेशियां और ग्रंथियां) तंत्रिका तंत्र के निर्देशों के अनुसार प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। यह व्यवस्थित श्रृंखला मानवीय व्यवहार को शारीरिक और रासायनिक आधार प्रदान करती है।

155. (C) त्वचा संवेदना
पीड़ा की संवेदना को प्राथमिक त्वचा संवेदना के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। मानव त्वचा में विशिष्ट पीड़ा ग्राही या नोसिसेप्टर्स होते हैं जो ऊतकों को होने वाली क्षति या हानिकारक उद्दीपकों के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं। ये ग्राही तुरंत मस्तिष्क को चेतावनी संकेत प्रेषित करते हैं, जिससे हम सुरक्षात्मक कदम उठा सकते हैं। पीड़ा की यह भावना हमारी उत्तरजीविता के लिए अनिवार्य है क्योंकि यह शरीर को क्षति से बचाने में सहायता करती है। यह दृष्टि या श्रवण की भाँति एक बाह्य इंद्रिय अनुभव है जो त्वचा के माध्यम से अनुभूत होता है।

156. (D) आध्यात्मिक मुक्ति की खोज।
भारतीय मनोविज्ञान का ऐतिहासिक और दार्शनिक दृष्टिकोण यह मानता है कि मन का अध्ययन आध्यात्मिक मुक्ति या 'मोक्ष' की खोज से अविभाज्य है। इस परंपरा में मन को केवल एक जैविक अंग नहीं, बल्कि चेतना का एक साधन माना गया है जिसे साधना और आत्म-नियंत्रण के माध्यम से उन्नत किया जा सकता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को सांसारिक बंधनों और दुखों से मुक्त कर परम शांति और सत्य की अनुभूति कराना है। यह दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को आध्यात्मिक विकास के साथ गहराई से जोड़ता है।

157. (A) प्रयोगात्मक पद्धति।
जब कोई शोधकर्ता किसी चर (जैसे शिक्षण पद्धति) में परिवर्तन करता है और उसके प्रभाव को दूसरे चर (जैसे परीक्षा के अंक) पर मापता है, तो यह प्रयोगात्मक पद्धति का उदाहरण है। इसमें दो समूहों का उपयोग करना और चरों को नियंत्रित करना शोध को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। यह विधि स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शित करने का प्रयास करती है कि क्या नवीन पद्धति वास्तव में सुधार का कारण बनी है। कार्य-कारण संबंध स्थापित करने के लिए प्रयोगात्मक पद्धति मनोविज्ञान में सबसे विश्वसनीय और सशक्त उपकरण मानी जाती है।

158. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मनोविज्ञान का समाजशास्त्र और नृविज्ञान जैसे सामाजिक विज्ञानों के साथ संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण और गहरा है। इसका कारण यह है कि मानवीय व्यवहार केवल आंतरिक मानसिक प्रक्रियाओं या जैविक कारकों से ही संचालित नहीं होता, बल्कि उसे सामाजिक संरचनाएं, सांस्कृतिक मानदंड और समूह की गतिशीलता भी व्यापक रूप से स्वरूप प्रदान करती हैं। व्यक्ति जिस समाज में रहता है, उसके नियम और मूल्य उसकी सोच और क्रियाओं को प्रभावित करते हैं। अतः व्यवहार की पूर्ण समझ के लिए इन सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों का अध्ययन मनोविज्ञान के लिए अनिवार्य है।

159. (C) प्रकाशग्राहियों को आधार देना।
दृष्टिपटल या रेटिना आँख की सबसे आंतरिक परत है जिसका मुख्य कार्य प्रकाशग्राही कोशिकाओं (छड़ें और शंकु) को आधार प्रदान करना और प्रकाश को तंत्रिका संकेतों में परिवर्तित करना है। जब प्रकाश लेंस के माध्यम से इस परत पर गिरता है, तो यहाँ स्थित कोशिकाएं सक्रिय हो जाती हैं। ये कोशिकाएं प्रकाश ऊर्जा को विद्युत आवेगों में परिवर्तित करती हैं, जो फिर मस्तिष्क तक पहुँचती हैं। दृष्टिपटल एक संवेदनशील पर्दे की भाँति कार्य करता है जिस पर बाह्य जगत का प्रतिबिंब निर्मित होता है, जिससे वस्तुओं की पहचान और दृश्य संवेदना संभव होती है।

160. (D) विरासत में मिला जीन
व्यवहार के अनुवांशिक आधार में विरासत में मिले जीन को आनुवंशिकता की मूलभूत इकाई माना जाता है। ये जीन ही माता-पिता से संतान में शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को स्थानांतरित करते हैं। जीन तंत्रिका तंत्र के विकास, मस्तिष्क की संरचना और रसायनों के स्तर को निर्देशित करते हैं, जो अंततः हमारे व्यक्तित्व और व्यवहारगत प्रवृत्तियों को प्रभावित करते हैं। आनुवंशिकता की यह जैविक प्रक्रिया हमारे अस्तित्व के ब्लूप्रिंट के रूप में कार्य करती है, जिस पर कालांतर में पर्यावरण और अनुभव मानवीय व्यवहार की अट्टालिका सज्जित करते हैं।

161. (B) अवलोकन पद्धति।
जब कोई शोधकर्ता बिना किसी हस्तक्षेप या चरों में हेरफेर किए, लोगों के स्वाभाविक व्यवहार को अंकित करता है, तो इसे अवलोकन पद्धति कहा जाता है। उदाहरण के लिए, सार्वजनिक उद्यान में मुस्कुराने की संख्या की गणना करना व्यवहार का एक वस्तुनिष्ठ और प्राकृतिक विवरण प्रदान करता है। यह विधि वास्तविकता के अत्यंत समीप होती है क्योंकि सहभागी को यह ज्ञात नहीं होता कि उसका अध्ययन किया जा रहा है, जिससे उसका व्यवहार कृत्रिम नहीं होता। सामाजिक मनोविज्ञान में लोगों की वास्तविक प्रतिक्रियाओं को समझने के लिए यह अत्यंत प्रभावी तकनीक है।

162. (A) केवल 1 और 3
मनोवैज्ञानिक शोध में साक्षात्कार पद्धति का बड़ा लाभ यह है कि यह उत्तरों को स्पष्ट करने हेतु अनुवर्ती प्रश्न पूछने का अवसर प्रदान करती है, जिससे आँकड़ों की गहराई बढ़ती है। इसी प्रकार, विषय-वस्तु विश्लेषण संचार के लिखित या दृश्य माध्यमों का अध्ययन करने की एक व्यवस्थित और प्रायः मात्रात्मक पद्धति है। हालाँकि, प्रश्नावली किसी एक विषय के गहन विश्लेषण के स्थान पर बड़े समूहों से आँकड़े लेने हेतु अधिक उपयुक्त है; गहन विश्लेषण हेतु व्यक्ति अध्ययन या साक्षात्कार को प्राथमिकता दी जाती है। अतः ये पद्धतियाँ अपनी-अपनी भूमिकाओं में महत्वपूर्ण हैं।

163. (C) केंद्रीय तंत्रिका तंत्र।
समायोजक तंत्र के रूप में केंद्रीय तंत्रिका तंत्र, जिसमें मस्तिष्क और मेरुरज्जु सम्मिलित हैं, शरीर का मुख्य नियंत्रण केंद्र है। इसका कार्य संवेदी अंगों से प्राप्त विभिन्न सूचनाओं को ग्रहण

करना, उनका विश्लेषण करना और फिर उचित शारीरिक प्रतिक्रिया का समन्वय करना है। यह तंत्र यह सुनिश्चित करता है कि शरीर के सभी अंग एक इकाई के रूप में कार्य करें और बाह्य वातावरण के परिवर्तनों के प्रति अनुकूल प्रतिक्रिया दें। समायोजक के बिना, प्राप्त संवेदनाओं को सार्थक क्रियाओं में परिवर्तित करना और जटिल व्यवहार का समन्वय करना असंभव होता।

164. (D) एक योगदानकर्ता कारक के रूप में जो संवेगात्मक और व्यवहारात्मक प्रवृत्तियों को प्रभावित कर सकता है।
व्यक्तित्व विकास पर हार्मोन के प्रभाव को एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता कारक के रूप में समझा जाना चाहिए। हार्मोन सीधे तौर पर व्यक्तित्व के एकमात्र निर्धारक नहीं होते, किंतु वे व्यक्ति के संवेगात्मक ऊर्जा स्तर, मनोदशा और स्वभावगत प्रवृत्तियों को व्यापक रूप से प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ हार्मोन व्यक्ति को अधिक साहसी या तनाव के प्रति अधिक संवेदनशील बना सकते हैं। यह जैविक प्रभाव पर्यावरणीय कारकों और व्यक्तिगत अनुभवों के साथ मिलकर अंततः एक स्थिर और अद्वितीय व्यक्तित्व के निर्माण में अपनी सक्रिय एवं सूक्ष्म भूमिका निभाता है।

165. (C) सामाजिक मनोविज्ञान।
सामाजिक मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक क्षेत्र है जो यह अध्ययन करता है कि व्यक्ति एक-दूसरे के विषय में कैसे चिंतन करते हैं, एक-दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं और उनके बीच कैसे संबंध निर्मित होते हैं। यह जाँचता है कि दूसरों की उपस्थिति, चाहे वह वास्तविक हो या काल्पनिक, हमारे व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं को कैसे परिवर्तित कर देती है। अनुरुपता, नेतृत्व, पूर्वाग्रह और सामाजिक प्रभाव जैसे विषय इसी क्षेत्र के केंद्र में हैं। यह स्पष्ट करता है कि मानव व्यवहार केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक अंतःक्रियाओं और परिवेश का एक जटिल परिणाम है।

166. (B) कार्य-कारण संबंध स्थापित करने में कठिनाई।
व्यक्ति अध्ययन पद्धति की एक प्रमुख सीमा यह है कि इसके माध्यम से कार्य-कारण संबंध स्थापित करना अत्यंत दुष्कर होता है। चूँकि यह अध्ययन केवल एक विशिष्ट व्यक्ति या समूह के अनूठे अनुभवों पर आधारित होता है और इसमें चरों का प्रयोगात्मक नियंत्रण नहीं होता, इसलिए यह निश्चित रुप से नहीं कहा जा सकता कि किस विशेष कारक ने विशिष्ट व्यवहार को जन्म दिया। इसके निष्कर्ष केवल उस विशेष मामले तक ही सीमित रहते हैं और उन्हें वैज्ञानिक आधार पर संपूर्ण जनसंख्या पर लागू करने या सामान्य नियम बनाने के लिए पर्याप्त नहीं माना जाता।

167. (D) श्रवण तारत्व
त्वचा द्वारा अनुभव की जाने वाली प्राथमिक संवेदनाओं में शारीरिक दबाव, पीड़ा और तापमान (ऊष्मा एवं शीतलता) सम्मिलित हैं। इन अनुभवों के लिए त्वचा में विशिष्ट ग्राही होते हैं जो मस्तिष्क को बाहरी वातावरण की भौतिक स्थिति की सूचना प्रेषित करते हैं। इसके विपरीत, श्रवण तारत्व या पिच का संबंध कान की श्रवण प्रणाली से है, जहाँ कोकलिया में ध्वनि तरंगों की आवृत्ति को पहचाना जाता है। अतः श्रवण तारत्व कोई त्वचा संवेदना नहीं है, बल्कि यह ध्वनि की एक विशिष्ट विशेषता है जिसे केवल श्रवण इंद्रिय द्वारा अनुभव किया जा सकता है।

168. (A) वस्तुनिष्ठता, अनुभववाद और परीक्षण क्षमता।
मनोविज्ञान की वैज्ञानिक प्रकृति इसकी वस्तुनिष्ठता, अनुभववाद और परीक्षण क्षमता के प्रति प्रतिबद्धता से पहचानी जाती है। इसका अर्थ है कि मनोवैज्ञानिक ज्ञान व्यवस्थित अवलोकन और प्रयोगों से प्राप्त साक्ष्यों पर आधारित होता है, न कि व्यक्तिगत राय या अटकलों पर। वैज्ञानिक होने के लिए सिद्धांतों का ऐसा होना आवश्यक है जिनका स्वतंत्र रुप से परीक्षण और सत्यापन किया जा सके। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि मनोविज्ञान मानवीय व्यवहार के अध्ययन के लिए एक प्रमाणिक, विश्वसनीय और तथ्य-आधारित विषय बना रहे, जो निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर हो।

169. (C) क्रियाओं को अंजाम देना, जैसे कि मांसपेशियों का संकुचन या ग्रंथियों का स्राव।
शरीर की प्रतिक्रिया प्रणाली में प्रभावकों की भूमिका केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से प्राप्त आदेशों को वास्तविक क्रियाओं में परिवर्तित करना है। जब मस्तिष्क किसी उद्दीपक के प्रति निर्णय लेता है, तो प्रभावक (जैसे मांसपेशियां और ग्रंथियां) सक्रिय हो जाते हैं। मांसपेशियां संकुचित होकर शारीरिक गति उत्पन्न करती हैं, जबकि ग्रंथियां आवश्यक रसायनों या हार्मोन का स्राव करती हैं। ये क्रियाएं ही व्यक्ति के बाह्य व्यवहार को मूर्त रुप प्रदान करती हैं। इस प्रकार, प्रभावक हमारे आंतरिक तंत्रिका संकेतों और बाह्य व्यवहारिक जगत के बीच एक अनिवार्य जैविक कड़ी के रुप में कार्य करते हैं।

170. (A) स्मृति पर मस्तिष्क की चोट के प्रभाव का अध्ययन।
मनोविज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान का संबंध तब सबसे स्पष्ट होता है जब हम मानसिक प्रक्रियाओं के शारीरिक आधारों का अध्ययन करते हैं। मस्तिष्क की क्षति स्मृति, भाषा और व्यक्तित्व को कैसे प्रभावित करती है, यह जाँच सीधे तौर पर प्राकृतिक विज्ञान से संबद्ध है। यह प्रदर्शित करता है कि मानसिक कार्य पूर्णतः जैविक संरचनाओं और तंत्रिका तंत्र की स्वस्थ कार्यप्रणाली पर निर्भर करते हैं। इस प्रकार का वैज्ञानिक शोध व्यवहार की व्याख्या करने के लिए जैविक प्रमाण प्रदान करता है, जो मनोविज्ञान को एक ठोस वैज्ञानिक आधार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

171. (D) घटनात्मक और अनुभवात्मक
भारतीय मनोविज्ञान का इतिहास मन और चेतना के अध्ययन के प्रति एक घटनात्मक और अनुभवात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह प्राचीन शास्त्रों पर आधारित है जो चेतना के विभिन्न स्तरों, 'स्व' की गहराई और वास्तविकता की प्रकृति को व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से समझने पर बल देते हैं। यह पद्धति केवल बाह्य व्यवहार के अवलोकन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आंतरिक जागरूकता और आत्म-साक्षात्कार को प्राथमिकता देती है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति को स्वयं की मानसिक अवस्थाओं

को गहराई से अनुभव करने और उन्हें उच्च स्तर तक ले जाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

172. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
श्रवण प्रणाली के संदर्भ में, कर्णपटह झिल्ली केवल ध्वनि कंपनों को ग्रहण करती है और उन्हें आगे प्रेषित करती है; ध्वनि को तंत्रिका आवेगों में परिवर्तित करने का वास्तविक कार्य आंतरिक कान के कोकलिया में होता है। वहीं, दृश्य प्रणाली प्रकाश तरंगों को संसाधित करने के लिए उत्तरदायी है, न कि श्रवण प्रणाली। श्रवण प्रणाली का कार्य वातावरण की ध्वनि तरंगों को ग्रहण करना और उनका विश्लेषण करना है। अतः ये दोनों कथन संवेदी अंगों के कार्यों और उनकी संरचनात्मक विशेषताओं के विषय में वैज्ञानिक रूप से त्रुटिपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं।

173. (D) P-4, Q-1, R-3, S-2
मनोविज्ञान की विभिन्न अध्ययन पद्धतियों के व्यवहारिक अनुप्रयोग पृथक-पृथक होते हैं। साक्षात्कार का उपयोग व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों को गहराई से समझने हेतु आमने-सामने संवाद के लिए किया जाता है। विषय-वस्तु विश्लेषण लिखित दस्तावेजों या डायरियों में विशिष्ट शब्दों की आवृत्ति खोजने में सहायक है। व्यक्ति अध्ययन किसी विरल मस्तिष्क क्षति जैसे विशिष्ट मामले का दीर्घकालिक और विस्तृत विश्लेषण प्रदान करता है। सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग व्यापक जनसंख्या की मतदान प्राथमिकताओं या सामान्य राय को शीघ्रता से जानने के लिए किया जाता है, जो सांख्यिकीय निष्कर्षों का आधार बनता है।

174. (B) उन प्रोटीनों के संश्लेषण का मार्गदर्शन करने में जो तंत्रिका तंत्र की विकास और कार्यप्रणाली को प्रभावित करते हैं।
जीन व्यवहार को प्रत्यक्ष निर्देशित नहीं करते, बल्कि वे सूक्ष्म जैविक स्तर पर कार्य करते हैं। वे विशिष्ट प्रोटीनों के संश्लेषण का मार्गदर्शन करते हैं, जो अंततः हमारे तंत्रिका तंत्र के विकास और मस्तिष्क की जटिल कार्यप्रणाली को स्वरूप प्रदान करते हैं। न्यूरोट्रांसमीटर का स्तर और तंत्रिका मार्गों की संरचना काफी हद तक अनुवांशिक निर्देशों पर निर्भर करती है। ये जैविक आधार ही हमारी सीखने की क्षमता, संवेगात्मक स्थिरता और व्यक्तित्व लक्षणों की नींव सज्जित करते हैं, जो पश्चात पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया करके पूर्ण व्यवहार के रूप में प्रकट होते हैं।

175. (C) भय और क्रोध की अवस्थाएँ।
संवेगात्मक गतिविधि में हार्मोन की भूमिका का अध्ययन अधिवृक्क ग्रंथियों के कार्यों के माध्यम से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। ये ग्रंथियां तनावपूर्ण स्थितियों में एड्रेनालाईन जैसे हार्मोन छोड़ती हैं, जो शरीर में भय, क्रोध और उत्तेजना की तीव्र अवस्थाएँ उत्पन्न करते हैं। यह प्रतिक्रिया हृदय गति को बढ़ाकर और ऊर्जा स्तर में वृद्धि कर व्यक्ति को आपातकालीन स्थितियों का सामना करने के लिए तैयार करती है। इस प्रकार, हार्मोन सीधे तौर पर हमारी मनोदशा और संवेगात्मक व्यवहार को प्रभावित करते हैं, जो व्यक्तित्व और तात्कालिक प्रतिक्रियाओं को निर्देशित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

176. (D) व्यवहार का वर्णन करना जैसा कि वह स्वाभाविक रूप से होता है।
मनोविज्ञान में अवलोकन पद्धति का मूलभूत लक्ष्य व्यवहार का वस्तुनिष्ठ और सटीक विवरण प्रदान करना है जैसा कि वह अपने प्राकृतिक वातावरण में स्वाभाविक रूप से घटित होता है। इस विधि में शोधकर्ता व्यवहार में कोई हस्तक्षेप या हेरफेर नहीं करता, जिससे प्राप्त आँकड़े वास्तविकता के अत्यंत समीप होते हैं। यह विशेष रूप से उन सामाजिक व्यवहारों के अध्ययन के लिए उपयोगी है जिन्हें प्रयोगशाला में कृत्रिम रूप से उत्पन्न नहीं किया जा सकता है। अवलोकन हमें व्यवहार के जटिल और स्वाभाविक स्वरूप की वास्तविक समझ विकसित करने में पूर्णतः सक्षम बनाता है।

177. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन पद्धति की सबसे बड़ी सीमा इसकी न्यून सामान्यीकरण क्षमता है। इसका कारण यह है कि इस विधि में शोधकर्ता किसी एक व्यक्ति या बहुत छोटे समूह का अत्यंत गहराई से अध्ययन करता है। चूँकि प्रत्येक व्यक्ति की परिस्थितियां, अनुभव और जैविक विशेषताएं अनूठी और विशिष्ट होती हैं, इसलिए उन परिणामों को संपूर्ण विशाल जनसंख्या पर विश्वास के साथ लागू करना वैज्ञानिक रूप से संभव नहीं है। यह पद्धति व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि के लिए तो श्रेष्ठ है, किंतु यह सार्वभौमिक नियम निर्मित करने के लिए उपयुक्त नहीं मानी जाती है।

178. (B) शंकु।
मानव आँख के दृष्टिपटल या रेटिना में शंकु वे विशिष्ट प्रकाशग्राही होते हैं जो तीव्र प्रकाश की स्थिति में कार्य करते हैं। ये कोशिकाएं हमें वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों को देखने और विविध रंगों को पहचानने में सक्षम बनाती हैं। शंकु मुख्य रूप से रेटिना के मध्य भाग में केंद्रित होते हैं, जो स्पष्ट दृष्टि के लिए अनिवार्य है। इसके विपरीत, छड़ें केवल प्रकाश की तीव्रता के प्रति संवेदनशील होती हैं और रंग पहचानने में अक्षम होती हैं। अतः शंकु ही हमारी रंगीन और विस्तृत दृष्टि का आधार हैं।

179. (C) व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन।
एक आधुनिक विषय के रूप में मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र को व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसका अर्थ है कि यह न केवल प्रत्यक्ष क्रियाओं का विश्लेषण करता है, बल्कि स्मृति, चिंतन, भावना और प्रत्यक्षीकरण जैसी आंतरिक गतिविधियों की भी वैज्ञानिक जाँच करता है। यह अध्ययन व्यवस्थित अवलोकन, प्रयोग और साक्ष्यों पर आधारित होता है। मनोविज्ञान का लक्ष्य मानवीय व्यवहार को वैज्ञानिक नियमों के माध्यम से समझना, उसकी भविष्यवाणी करना और अंततः जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने हेतु उन सिद्धांतों का अनुप्रयोग करना है।

180. (D) आर्थिक नीतियों का प्रभाव।
व्यवहार के जैविक आधारों के अध्ययन में मुख्य रूप से उन शारीरिक कारकों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है जो मानवीय क्रियाओं को संचालित करते हैं। इसमें आनुवंशिकता, गुणसूत्रों की भूमिका, ग्राही और प्रभावक तंत्रों के कार्य तथा अंतःस्रावी

ग्रंथियों से निकलने वाले हार्मोन का प्रभाव सम्मिलित है। ये सभी घटक मिलकर यह स्पष्ट करते हैं कि हमारा शरीर और मस्तिष्क व्यवहार को कैसे नियंत्रित करते हैं। आर्थिक नीतियों का प्रभाव सामाजिक या पर्यावरणीय अध्ययन का विषय हो सकता है, किंतु यह जैविक आधारों के अंतर्गत नहीं आता, क्योंकि इसका सीधा संबंध शरीर क्रिया विज्ञान से नहीं है।

181. (A) मन, शरीर और चेतना के एकीकरण की अवस्था की ओर विकास।
व्यक्तित्व पर भारतीय मनोविज्ञान का दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक और समग्र है। यह मानता है कि व्यक्तित्व का विकास केवल बाह्य व्यवहार को परिवर्तित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मन, शरीर और चेतना के पूर्ण एकीकरण की दिशा में एक निरंतर प्रगति है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को आंतरिक सामंजस्य और मानसिक शांति की ओर ले जाना है, जिससे वह स्वयं के वास्तविक स्वरूप को पहचान सके। यह एकीकृत अवस्था व्यक्ति को न केवल मानसिक रूप से स्वस्थ बनाती है, बल्कि उसे आध्यात्मिक पूर्णता और उच्च जीवन मूल्यों की ओर भी अग्रसर करती है।

182. (B) प्रश्नावली और साक्षात्कार पद्धतियां
प्रश्नावली और साक्षात्कार पद्धतियां सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रह के प्रति सर्वाधिक संवेदनशील मानी जाती हैं क्योंकि ये सहभागियों के स्व-प्रतिवेदन आँकड़ों पर निर्भर करती हैं। अक्सर उत्तरदाता दूसरों के सम्मुख स्वयं को श्रेष्ठ या अधिक सभ्य दिखाने के लिए उन उत्तरों का चयन करते हैं जो समाज में स्वीकार्य माने जाते हैं, चाहे वे उनकी वास्तविक भावनाओं से भिन्न ही क्यों न हों। यह मानवीय प्रवृत्ति शोध की शुद्धता को प्रभावित कर सकती है। इसके विपरीत, अवलोकन या विषय-वस्तु विश्लेषण में शोधकर्ता व्यवहार या दस्तावेजों का प्रत्यक्ष विश्लेषण करता है, जहाँ ऐसा पूर्वाग्रह न्यून प्रभावी होता है।

183. (D) 1, 2 और 3
मानवीय व्यवहार के जैविक आधार तीन मुख्य और परस्पर जुड़े तंत्रों पर आधारित हैं। ग्राही अंग, जैसे आँख और कान, पर्यावरण से आने वाले उद्दीपकों का पता लगाते हैं और उन्हें संकेतों में परिवर्तित करते हैं। केंद्रीय तंत्रिका तंत्र, जिसमें मस्तिष्क सम्मिलित है, एक समायोजक के रूप में कार्य करता है जो इन संकेतों को संसाधित करता है और निर्णय लेता है। अंत में, मांसपेशियां और ग्रंथियां प्रभावक के रूप में इन निर्णयों को शारीरिक प्रतिक्रियाओं या स्राव में परिवर्तित कर व्यवहार को मूर्त रूप प्रदान करती हैं। यह संपूर्ण श्रृंखला सफल अनुकूलन के लिए अनिवार्य है।

184. (D) व्यक्तिगत व्यवहार पर सांस्कृतिक मानदंडों का प्रभाव।
मनोविज्ञान और सामाजिक विज्ञान के बीच का अटूट संबंध तब सर्वाधिक स्पष्ट होता है जब मनोवैज्ञानिक इस तथ्य का अध्ययन करते हैं कि सांस्कृतिक मानदंड और सामाजिक परिवेश व्यक्तिगत व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसके चिंतन, अनुभव और कार्य करने की शैली काफी हद तक उस समाज के मूल्यों और परंपराओं द्वारा स्वरूप प्राप्त करती है जिसमें वह निवास करता है। यह अंतःविषय दृष्टिकोण व्यवहार की व्याख्या केवल जैविक स्तर पर नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में करने में पूर्णतः सहायता करता है।

185. (A) कान के पर्दे के कंपन को प्रवर्धित करना।
मध्य कान में स्थित सूक्ष्म अस्थिकाओं (मैलियस, इनकस और स्टेप्स) का प्राथमिक कार्य कान के पर्दे से प्राप्त होने वाले ध्वनि कंपनों को प्रवर्धित करना है। यह प्रवर्धन प्रक्रिया श्रवण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह ध्वनि ऊर्जा में वृद्धि कर देती है, जिससे वह आंतरिक कान के तरल माध्यम में प्रभावी ढंग से प्रवेश कर सके। बिना इन अस्थिकाओं के, ध्वनि तरंगें आंतरिक कान तक पहुँचने से पूर्व ही अपनी शक्ति खो देंगी, जिससे सुनने की क्षमता अत्यंत क्षीण हो जाएगी। अतः ये अस्थिकाएं श्रवण संवेदना को स्पष्ट और तीव्र बनाती हैं।

186. (B) आनुभविक डेटा का संग्रह।
मनोविज्ञान में वैज्ञानिक दृष्टिकोण मुख्य रूप से आनुभविक आँकड़ों के व्यवस्थित संग्रह और उसके वस्तुनिष्ठ विश्लेषण पर बल देता है। इसका अर्थ है कि निष्कर्ष केवल व्यक्तिगत अंतर्ज्ञान, अधिकार या सामान्य ज्ञान पर आधारित नहीं होने चाहिए, बल्कि वे ठोस साक्ष्यों और मापनीय तथ्यों द्वारा समर्थित होने चाहिए। वैज्ञानिक पद्धति के उपयोग से यह सुनिश्चित किया जाता है कि प्राप्त जानकारी विश्वसनीय, तटस्थ और पुनरावृत्ति योग्य हो। आनुभविक शोध ही वह आधार है जो मनोविज्ञान को एक प्रमाणिक विज्ञान के रूप में स्थापित करता है और ज्ञान को निरंतर परिष्कृत करता है।

187. (C) स्वभावगत कारकों जैसे कि संवेगात्मक प्रतिक्रिया और ऊर्जा स्तर को प्रभावित करके।
हार्मोन व्यक्तित्व विकास में अपनी सूक्ष्म किंतु शक्तिशाली भूमिका संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं और ऊर्जा स्तरों को प्रभावित करके निर्वहन करते हैं। अंतःस्रावी ग्रंथियों से निकलने वाले ये रासायनिक संदेशवाहक व्यक्ति के स्वभाव, मनोदशा और तनाव के प्रति प्रतिक्रिया देने की शैली को निर्देशित करते हैं। उदाहरण के लिए, थायराइड हार्मोन ऊर्जा के स्तर को नियंत्रित करते हैं, जबकि अन्य हार्मोन सामाजिक व्यवहार और संवेगात्मक स्थिरता को प्रभावित करते हैं। ये जैविक कारक व्यक्ति की आधारभूत प्रवृत्तियों को स्वरूप प्रदान करते हैं, जो दीर्घकाल में एक स्थिर और विशिष्ट व्यक्तित्व लक्षण के रूप में उभरती हैं।

188. (D) हाथ की बाइसेप मांसपेशी।
प्रभावक वे अंग होते हैं जो केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से प्राप्त संकेतों के उत्तर में वास्तविक प्रतिक्रिया या कार्य को संपादित करते हैं। हाथ की बाइसेप मांसपेशी इसका एक सटीक उदाहरण है, क्योंकि यह तंत्रिका आवेग प्राप्त करने पर संकुचित होती है और शारीरिक गति उत्पन्न करती हैं। इसके विपरीत, दृष्टिपटल की छड़ें और जिह्वा की स्वाद कलिकाएं ग्राही हैं जो सूचना ग्रहण करती हैं, जबकि प्रमस्तिष्क वल्कुट का न्यूरॉन समायोजक तंत्र का भाग है। प्रभावक तंत्र ही हमारे व्यवहार को बाह्य जगत में क्रियाशील और प्रत्यक्ष बनाने के लिए उत्तरदायी होता है।

189. (A) आधारभूत संज्ञानात्मक मनोविज्ञान।
आधारभूत संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का मुख्य केंद्र यह समझना है कि व्यक्ति जानकारी को किस प्रकार प्राप्त करते हैं, उसे मस्तिष्क में कैसे संचित करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उसे कैसे संसाधित करते हैं। इसमें ध्यान, प्रत्यक्षीकरण, स्मृति, भाषा और समस्या समाधान जैसी महत्वपूर्ण मानसिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन सम्मिलित है। यह क्षेत्र मन को एक सूचना प्रसंस्करण प्रणाली के रूप में देखता है जो बाह्य उद्दीपकों को सार्थक ज्ञान में परिवर्तित करती है। संज्ञानात्मक शोध हमें यह समझने में सहायता करता है कि मानवीय बुद्धि और चिंतन प्रक्रियाएं वास्तविक जीवन में कैसे कार्य करती हैं।

190. (B) शोधकर्ता को प्रश्नों को स्पष्ट करने और अधिक विस्तृत उत्तरों के लिए जाँच करने की अनुमति देती है।
प्रश्नावली की तुलना में साक्षात्कार पद्धति का सबसे बड़ा लाभ इसमें निहित लचीलापन और गहराई है। साक्षात्कार के दौरान शोधकर्ता सहभागी से प्रत्यक्ष संवाद करता है, जिससे वह अस्पष्ट उत्तरों को तुरंत स्पष्ट कर सकता है और अधिक विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए अनुवर्ती प्रश्न पूछ सकता है। यह विधि सहभागी की भावनाओं और गैर-मौखिक संकेतों को समझने का अवसर भी प्रदान करती है, जो लिखित प्रश्नावली में संभव नहीं है। अतः साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त आँकड़े अधिक समृद्ध, गुणात्मक और व्यक्ति के दृष्टिकोण के अधिक समीप होते हैं।

191. (A) 2, 3, 1
मनोविज्ञान में व्यवहार का विश्लेषण विभिन्न स्तरों पर किया जाता है। सबसे सूक्ष्म स्तर जैविक है, जिसमें मस्तिष्क की प्रणालियाँ और तंत्रिका रसायनों की सूक्ष्म गतिविधियों का अध्ययन होता है। इसके पश्चात व्यक्तिगत स्तर आता है, जहाँ व्यक्ति के निजी चिंतन, भावनाओं और आंतरिक अनुभवों का विश्लेषण किया जाता है। सबसे व्यापक स्तर सामाजिक-सांस्कृतिक है, जिसमें समूहों के प्रभाव और सामाजिक अंतःक्रियाओं का अध्ययन होता है। यह क्रमिक दृष्टिकोण हमें मानवीय व्यवहार को उसकी पूर्णता में समझने में सहायता करता है, जो सूक्ष्म से व्यापक कारकों तक विस्तृत है।

192. (D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
बुद्धि और व्यक्तित्व जैसे जटिल मनोवैज्ञानिक लक्षण किसी एक पृथक जीन द्वारा निर्धारित नहीं होते; यह धारणा वैज्ञानिक रूप से पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है। वास्तव में, ये लक्षण 'बहुजनी' होते हैं, जिसका अर्थ है कि वे अनेक जीनों की सामूहिक क्रिया और उनके पर्यावरण के साथ होने वाली जटिल अंतःक्रिया का परिणाम होते हैं। आनुवंशिकता हमें कुछ आधारभूत प्रवृत्तियाँ प्रदान करती है, किंतु उन प्रवृत्तियों का अंतिम प्रकटीकरण व्यक्ति के पालन-पोषण, शिक्षा और जीवन के अनुभवों पर निर्भर करता है। अतः आनुवंशिकता और पर्यावरण दोनों मिलकर इन जटिल लक्षणों को स्वरूप प्रदान करते हैं।

193. (A) व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण
मनोवैज्ञानिक आँकड़े प्राप्त करने के लिए डायरियों, निजी पत्रों और सार्वजनिक अभिलेखों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना व्यवस्थित विषय-वस्तु विश्लेषण पद्धति का एक स्पष्ट अनुप्रयोग है। इस विधि में शोधकर्ता लिखित या दृश्य सामग्री में निहित विषयों, प्रतीकों और संदेशों का विश्लेषण करता है। यह तकनीक व्यक्ति के अतीत के विचारों, सामाजिक प्रवृत्तियों और सांस्कृतिक मूल्यों को वस्तुनिष्ठ रूप से समझने में सहायता करती है। यह उन स्थितियों में अत्यंत उपयोगी है जहाँ सहभागी से प्रत्यक्ष आँकड़े लेना संभव नहीं होता, जिससे ऐतिहासिक और व्यक्तिगत दस्तावेजों के माध्यम से सार्थक निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

194. (B) दृश्य प्रकाश
त्वचा संवेदनाओं की संरचना और कार्य में विभिन्न विशिष्ट ग्राही सम्मिलित होते हैं जो दबाव, पीड़ा और तापमान (शीतलता एवं ऊष्मा) जैसी भौतिक संवेदनाओं का पता लगाने के लिए समर्पित हैं। ये ग्राही त्वचा की विभिन्न परतों में स्थित होते हैं और मस्तिष्क को बाह्य जगत के स्पर्श संबंधी अनुभवों की सूचना प्रेषित करते हैं। दृश्य प्रकाश का पता लगाना त्वचा का कार्य नहीं है; इसके लिए आँखों में विशेष रूप से प्रकाशग्राही कोशिकाएं (छड़ें और शंकु) पाई जाती हैं। अतः दृश्य प्रकाश का प्रसंस्करण केवल दृष्टि इंद्रिय के माध्यम से होता है, त्वचा द्वारा नहीं।

195. (C) शरीर, मन और चेतना के परस्पर प्रभाव पर विचार करता है।
भारतीय मनोविज्ञान की प्रकृति को समग्र कहा जाता है क्योंकि यह मनुष्य को खंडों में नहीं देखता। यह शरीर, मन और चेतना के बीच के प्रगाढ़ और परस्पर संबंधों को समझने पर बल देता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, स्वास्थ्य और कल्याण केवल शारीरिक या मानसिक नहीं होता, बल्कि यह चेतना की संतुलित अवस्था पर निर्भर करता है। इसमें योग, ध्यान और नैतिकता जैसे तत्वों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है ताकि मानवीय अनुभव के सभी आयामों का एक साथ विकास हो सके। यह समग्रता ही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है।

196. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
ग्राही और प्रभावक तंत्र के कार्यों के विषय में ये दोनों कथन वैज्ञानिक रूप से त्रुटिपूर्ण हैं। एक ग्राही का प्राथमिक कार्य पर्यावरण से आने वाले उद्दीपकों का पता लगाना और उन्हें संकेतों में परिवर्तित करना है, न कि प्रतिक्रिया निष्पादित करना। इसी प्रकार, एक प्रभावक (जैसे मांसपेशी या ग्रंथि) का मुख्य कार्य तंत्रिका तंत्र से निर्देश प्राप्त होने पर वास्तविक शारीरिक प्रतिक्रिया उत्पन्न करना है, न कि उद्दीपक का पता लगाना। ग्राही सूचना प्राप्त करने वाले अंग हैं और प्रभावक उस सूचना पर कार्य करने वाले अंग हैं। ये दोनों अपनी विशिष्ट भूमिकाओं में स्वतंत्र हैं।

197. (A) सहभागियों के स्व-रिपोर्ट डेटा पर निर्भर करते हैं।
साक्षात्कार और प्रश्नावली पद्धतियों के बीच सर्वाधिक समानता यह है कि ये दोनों ही सहभागियों के स्व-प्रतिवेदन आँकड़ों पर निर्भर करती हैं। इसका अर्थ है कि इन दोनों विधियों में प्राप्त जानकारी उत्तरदाताओं द्वारा स्वयं प्रेषित सूचनाओं, उनकी राय और अनुभवों पर आधारित होती है। शोधकर्ता सीधे तौर पर व्यवहार को नहीं मापता, बल्कि सहभागी द्वारा वर्णित

विवरणों पर विश्वास करता है। ये दोनों तकनीकें सामाजिक और मनोवैज्ञानिक शोध में व्यक्तियों के आंतरिक विचारों, विश्वासों और दृष्टिकोणों को जानने के लिए प्राथमिक और अत्यंत महत्वपूर्ण साधनों के रूप में प्रयुक्त की जाती हैं।

198. (B) आधारभूत शारीरिक मनोविज्ञान
शारीरिक विकास में हार्मोन की भूमिका का अध्ययन, जैसे पीयूष ग्रंथि से वृद्धि हार्मोन का स्राव, आधारभूत शारीरिक मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र के अंतर्गत आता है। यह क्षेत्र इस तथ्य की जाँच करता है कि कैसे जैविक प्रणालियाँ, अंतःस्रावी ग्रंथियाँ और रासायनिक संदेशवाहक शरीर की बनावट और मानसिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करते हैं। चूँकि विकास की यह प्रक्रिया विशुद्ध रूप से शरीर क्रिया विज्ञान और जैविक कारकों से संचालित होती है, इसलिए इसे समझने के लिए शारीरिक दृष्टिकोण अनिवार्य है। यह व्यवहार की जैविक जड़ों को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण वैज्ञानिक भूमिका निभाता है।

199. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं के अपने विशिष्ट विषय-क्षेत्र और अनुप्रयोग हैं। स्वास्थ्य मनोविज्ञान रोग के दौरान मनोवैज्ञानिक कारकों के प्रभाव और कल्याण को प्रोत्साहित करने पर ध्यान केंद्रित करता है। शैक्षिक मनोविज्ञान अधिगम की प्रक्रियाओं को समझने और शिक्षण विधियों में सुधार करने के लिए समर्पित है। औद्योगिक-संगठनात्मक मनोविज्ञान कार्यस्थल की उत्पादकता बढ़ाने और कर्मचारियों के चयन पर केंद्रित है। अंत में, विधि मनोविज्ञान विधिक और न्यायिक प्रणालियों में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू करता है। यह विविधता दर्शाती है कि मनोविज्ञान समाज के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में मानवीय समस्याओं के समाधान में सहायक है।

200. (B) केंद्रीय फोविया।
आँख के दृष्टिपटल या रेटिना के मध्य में स्थित 'फोविया' वह स्थान है जहाँ शंकु कोशिकाओं की सांद्रता सर्वाधिक होती है। यह क्षेत्र स्पष्ट, तीक्ष्ण और विस्तृत दृष्टि के लिए पूर्णतः उत्तरदायी है। जब हम किसी वस्तु को बहुत सूक्ष्मता से देखने का प्रयास करते हैं, तो प्रकाश की किरणें फोविया पर ही केंद्रित होती हैं। शंकु कोशिकाओं की बहुलता के कारण यह रंगों की पहचान करने में भी श्रेष्ठ है। इसके विपरीत, रेटिना के अन्य भागों में फोविया जैसी स्पष्टता नहीं होती, जो इसे दृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र निर्मित करती है।

201. (B) प्राकृतिक; सामाजिक
मनोविज्ञान की प्रकृति द्वैध है जो इसे एक अनूठा विषय बनाती है। जब यह न्यूरोट्रांसमीटर, मस्तिष्क की संरचना और जैविक कार्यों का अध्ययन करता है, तो इसका संबंध प्राकृतिक विज्ञानों (जैसे जीव विज्ञान) से होता है। वहीं, जब यह समूह अनुरूपता, सामाजिक प्रभाव और मानवीय अंतःक्रियाओं का विश्लेषण करता है, तो इसका गहरा संबंध सामाजिक विज्ञानों (जैसे समाजशास्त्र) के साथ स्पष्ट होता है। यह विज्ञान व्यक्ति के जैविक आधार और उसके सामाजिक परिवेश दोनों के बीच के जटिल संबंधों को समझने का प्रयास करता है, जिससे मानवीय व्यवहार की व्याख्या पूर्ण होती है।

202. (A) विषय-वस्तु विश्लेषण: विशिष्ट विषयों के लिए मीडिया की व्यवस्थित जाँच और कोडिंग करना।
विषय-वस्तु विश्लेषण मनोविज्ञान में एक प्रमाणिक शोध पद्धति है जिसमें माध्यमों, पुस्तकों या भाषणों जैसे संचार साधनों की व्यवस्थित जाँच और कोडिंग की जाती है। इसका उद्देश्य संचार सामग्री में निहित प्रवृत्तियों और सामाजिक संदेशों की वस्तुनिष्ठ पहचान करना है। अन्य विकल्पों में दी गई परिभाषाएं त्रुटिपूर्ण हैं क्योंकि प्रयोग में चरों का हेरफेर होता है, सर्वेक्षण बड़े समूहों के लिए होता है और व्यक्ति अध्ययन एक इकाई की गहन जाँच है। विषय-वस्तु विश्लेषण दस्तावेजों के माध्यम से सामाजिक व्यवहार को समझने का एक वैज्ञानिक और विश्वसनीय मार्ग है।

203. (C) व्यवहार का अनुवांशिक आधार।
जब कोई शोधकर्ता समरूप और भ्रातृ जुड़वा बच्चों के बीच लक्षणों की समानता की तुलना करता है, तो वह मुख्य रूप से व्यवहार के अनुवांशिक आधार का अध्ययन कर रहा होता है। इस शोध का उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि आनुवंशिकता और जीन किसी विशेष लक्षण, जैसे संकोच, को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं। जुड़वा बच्चों के अध्ययन के माध्यम से आनुवंशिकता और पर्यावरण के पृथक-पृथक प्रभावों को समझना संभव हो पाता है। यह क्षेत्र स्पष्ट करता है कि हमारे व्यवहार और व्यक्तित्व के पीछे एक सुदृढ़ जैविक और अनुवांशिक ब्लूप्रिंट कार्य करता है।

204. (B) केवल 2 और 3
संवेदी प्रणालियों में प्रत्येक अंग का विशिष्ट कार्य होता है। दृश्य प्रणाली प्रकाश ऊर्जा को ग्रहण कर उसे तंत्रिका संकेतों में परिवर्तित करती है, जिससे हमें देखने की क्षमता प्राप्त होती है। इसी प्रकार, त्वचा में दबाव और स्पर्श की संवेदना अनुभव करने के लिए यांत्रिकग्राही पाए जाते हैं। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि श्रवण प्रणाली प्रकाशग्राहियों का उपयोग करती है; वास्तव में, सुनने के लिए कान में रोम कोशिकाएं होती हैं जो ध्वनि के कंपनों के प्रति संवेदनशील होती हैं। अतः दृश्य और त्वचीय संवेदनाओं के विषय में दिए गए तथ्य वैज्ञानिक रूप से पूर्णतः सत्य हैं।

205. (C) विषयों के सामने आने पर लचीलेपन और उनकी खोज की अनुमति देना।
असंरचित साक्षात्कार का प्राथमिक उद्देश्य सहभागी के विचारों और अनुभवों की गहराई से खोज करना है। इसमें कोई निश्चित प्रश्नावली नहीं होती, जिससे साक्षात्कारकर्ता को चर्चा के दौरान उभरने वाले नवीन विषयों पर प्रश्न पूछने का लचीलापन प्राप्त होता है। यह पद्धति सहभागी को अपने विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे प्राप्त जानकारी अधिक समृद्ध और गुणात्मक होती है। यह विशेष रूप से उन शोधों के लिए उपयोगी है जहाँ शोधकर्ता किसी समस्या के अनछुए पहलुओं को गहराई से समझना चाहता है और नवीन अंतर्दृष्टि प्राप्त करना चाहता है।

206. (B) आध्यात्मिक परिवर्तनकारी
व्यक्तित्व विकास के प्रति भारतीय मनोविज्ञान के दृष्टिकोण को 'आध्यात्मिक परिवर्तनकारी' के रूप में सर्वोत्तम वर्णित किया

जा सकता है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति को केवल एक जैविक या व्यवहारिक इकाई नहीं मानता, बल्कि उसे अपनी चेतना को उन्नत करने और 'स्व' के वास्तविक स्वरूप को पहचानने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसमें व्यक्तित्व का विकास एक आंतरिक यात्रा है जिसका लक्ष्य अहंकार को त्यागकर आत्म-साक्षात्कार और मानसिक पूर्णता प्राप्त करना है। यह परिवर्तन व्यक्ति को सांसारिक दुखों से ऊपर उठाकर उसे स्थायी शांति और संतोष की ओर ले जाता है।

207. (D) प्रभावक; ग्राही
जैविक तंत्र में प्रत्येक अंग की भूमिका स्पष्ट रूप से परिभाषित है। मांसपेशी तंतु का संकुचन प्रभावक के कार्य का उदाहरण है, क्योंकि मांसपेशियां तंत्रिका निर्देशों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करती हैं। इसके विपरीत, दृष्टिपटल या रेटिना की छड़ कोशिका द्वारा प्रकाश का पता लगाना ग्राही के कार्य का उदाहरण है, क्योंकि ग्राही का मुख्य कार्य बाह्य उद्दीपकों को ग्रहण करना है। ग्राही सूचना को प्राप्त करने का द्वार हैं, जबकि प्रभावक उस सूचना पर शरीर की अंतिम प्रतिक्रिया को क्रियान्वित करने वाले अंग हैं। यह क्रम व्यवहार का आधार है।

208. (A) पता लगाना; व्याख्या करना
संवेदना और प्रत्यक्षीकरण मानवीय अनुभव की दो पृथक किंतु संबद्ध प्रक्रियाएं हैं। संवेदना का संबंध बाह्य वातावरण से उद्दीपकों, जैसे प्रकाश या ध्वनि, का संवेदी अंगों द्वारा पता लगाने से है। यह एक प्राथमिक जैविक प्रक्रिया है। इसके विपरीत, प्रत्यक्षीकरण वह मानसिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हमारा मस्तिष्क इन प्राप्त संकेतों की व्याख्या करता है और उन्हें एक सार्थक अर्थ प्रदान करता है। जहाँ संवेदना हमें भौतिक ऊर्जा का अनुभव कराती है, वहीं प्रत्यक्षीकरण हमें यह बोध कराता है कि हम वास्तव में क्या देख या सुन रहे हैं।

209. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है क्योंकि यह मानव अस्तित्व के लगभग प्रत्येक पक्ष को समाहित करता है। यह व्यापकता इस तथ्य के कारण है कि मनोविज्ञान व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं का जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोणों से गहराई से अध्ययन करता है। यह सूक्ष्म तंत्रिका प्रक्रियाओं से लेकर व्यापक सामाजिक प्रभावों तक विस्तृत है। इन विभिन्न परिप्रेक्ष्यों का समावेश ही मनोविज्ञान को एक समृद्ध और संपूर्ण विषय निर्मित करता है, जो मानवीय व्यवहार की जटिलता को उसकी पूर्णता में समझने का वैज्ञानिक प्रयास करता है।

210. (B) अनुदैर्ध्य शारीरिक विकास।
टेस्टोस्टेरोन और एस्ट्रोजन जैसे हार्मोन की द्वितीयक यौन विशेषताओं के विकास में भूमिका अनुदैर्ध्य शारीरिक विकास का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह प्रक्रिया किशोरावस्था के दौरान आरंभ होती है और शरीर की बनावट में महत्वपूर्ण और स्थायी परिवर्तन लाती है। यह हार्मोनल प्रभाव एक लंबी अवधि तक चलता है और केवल शारीरिक ही नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक और व्यवहारिक प्रवृत्तियों को भी स्वरूप प्रदान करता है। यह प्रदर्शित करता है कि कैसे शरीर के भीतर होने वाले रासायनिक परिवर्तन समय के साथ व्यक्ति की पहचान और व्यक्तित्व के विकास में केंद्रीय भूमिका निर्वहन करते हैं।

211. (C) प्रत्यक्ष अवलोकन पद्धति
व्यवहार का कारण निर्धारित करने के लिए प्रत्यक्ष अवलोकन पद्धति सबसे न्यून प्रभावी मानी जाती है। हालाँकि यह विधि व्यवहार का विस्तृत विवरण प्रदान करती है, किंतु इसमें शोधकर्ता का चरों पर कोई नियंत्रण नहीं होता। इसके विपरीत, प्रयोगात्मक पद्धतियों में चरों का हेरफेर और नियंत्रण समूह का उपयोग किया जाता है, जिससे स्पष्ट रूप से कार्य-कारण संबंध स्थापित किया जा सकता है। अवलोकन केवल यह बता सकता है कि 'क्या' घटित हो रहा है, किंतु वह 'क्यों' घटित हो रहा है, इसका वैज्ञानिक प्रमाण देने में यह विधि प्रयोगात्मक शोध की तुलना में सीमित है।

212. (D) प्रयोगशाला व्यवस्थित अध्ययन
मनोविज्ञान का एक औपचारिक और स्वतंत्र विज्ञान के रूप में विकास 1879 में विल्हेम वुंट द्वारा जर्मनी के लीपज़िग में प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना के साथ आरंभ हुआ। इस घटना ने मनोविज्ञान को दर्शन से पृथक कर व्यवस्थित अवलोकन और प्रयोग के आधार पर एक वैज्ञानिक पहचान प्रदान की। यहाँ से ही मानसिक प्रक्रियाओं और व्यवहार का मापन वैज्ञानिक उपकरणों और नियंत्रित परिस्थितियों में किया जाने लगा। प्रयोगशाला में किए गए इन व्यवस्थित अध्ययनों ने ही मनोविज्ञान को एक आनुभविक आधुनिक विज्ञान की नींव प्रदान की, जो निरंतर विकसित हो रहा है।

213. (A) श्रवण संवेदना
कर्णपटह झिल्ली, अस्थिकाएं और कोकलिया मानव शरीर की श्रवण प्रणाली की तीन प्रमुख संरचनाएं हैं जो श्रवण की प्रक्रिया के लिए अनिवार्य हैं। कर्णपटह झिल्ली ध्वनि तरंगों को ग्रहण कर कंपन करती है, जिसे मध्य कान की सूक्ष्म अस्थिकाएं प्रवर्धित करती हैं। अंत में, आंतरिक कान का कोकलिया इन यांत्रिक कंपनों को तंत्रिका आवेगों में परिवर्तित कर देता है, जिससे मस्तिष्क ध्वनि की पहचान कर पाता है। इन तीनों अंगों का सफल समन्वय ही हमें वातावरण की विविध ध्वनियों और संगीत को अनुभव करने तथा भाषा समझने में सक्षम बनाता है।

214. (B) जीन प्रवृत्तियाँ उत्पन्न करते हैं, जिन्हें बाद में पर्यावरणीय कारकों द्वारा आकार दिया जाता है।
व्यवहार के अनुवांशिक आधार के विषय में सर्वाधिक सटीक तथ्य यह है कि जीन सीधे तौर पर प्रत्येक व्यवहार को निर्धारित नहीं करते, बल्कि वे कुछ मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियाँ और जैविक क्षमताएं उत्पन्न करते हैं। इन आधारभूत प्रवृत्तियों का अंतिम स्वरूप और विकास व्यक्ति के पर्यावरण, पालन-पोषण और जीवन के अनुभवों द्वारा निर्धारित होता है। यह आनुवंशिकता और परिवेश के बीच होने वाली एक निरंतर और सूक्ष्म अंतःक्रिया है। अतः व्यवहार न तो पूर्णतः अनुवांशिक है और न ही पूर्णतः अधिगमित, बल्कि यह दोनों का एक संयुक्त परिणाम है।

215. (C) अवलोकन और प्रयोग।
एक आनुभविक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की प्रकृति का मूल अर्थ यह है कि इसका ज्ञान व्यवस्थित अवलोकन और प्रयोग के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। आनुभविक होने का तात्पर्य है कि सिद्धांतों और तथ्यों को वास्तविक जगत के आँकड़ों और साक्ष्यों के आधार पर सत्यापित किया जाना चाहिए। मनोवैज्ञानिक केवल दार्शनिक तर्क या अंतर्ज्ञान पर निर्भर नहीं रहते, बल्कि वे व्यवहार को मापते हैं, परिकल्पनाओं का परीक्षण करते हैं और सांख्यिकीय विश्लेषण करते हैं। यह व्यवस्थित दृष्टिकोण ही मनोविज्ञान के निष्कर्षों को वैज्ञानिक रूप से प्रमाणिक, विश्वसनीय और वस्तुनिष्ठ बनाने का कार्य करता है।

216. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
शोध पद्धतियों के विषय में ये दोनों कथन वैज्ञानिक रूप से त्रुटिपूर्ण हैं। एक प्रयोग में, वह चर जिसे शोधकर्ता द्वारा परिवर्तित किया जाता है, 'स्वतंत्र चर' कहलाता है, न कि आश्रित चर। आश्रित चर वह होता है जिस पर प्रभाव मापा जाता है। इसी प्रकार, नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन पद्धति निष्कर्षों के उच्च सामान्यीकरण की अनुमति नहीं देती क्योंकि यह केवल एक या बहुत न्यून व्यक्तियों पर आधारित होती है। व्यक्ति अध्ययन किसी विशेष मामले की गहराई से समझ प्रदान करता है, किंतु इसके परिणाम संपूर्ण जनसंख्या पर लागू नहीं किए जा सकते।

217. (D) संवेगी इनपुट को एकीकृत करना और प्रतिक्रिया का समन्वय करना।
'समायोजक' के रूप में केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (मस्तिष्क और मेरुरज्जु) का मुख्य कार्य संवेदी अंगों से प्राप्त इनपुट को एकीकृत करना और उस पर आधारित उचित प्रतिक्रिया का समन्वय करना है। यह तंत्र बाह्य वातावरण से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करता है, उनकी व्याख्या करता है और फिर प्रभावकों (मांसपेशियों और ग्रंथियों) को आवश्यक निर्देश प्रेषित करता है। यह प्रक्रिया शरीर के भीतर और बाहर के बीच एक संतुलन बनाए रखती है। समायोजक के बिना, मानवीय व्यवहार असंगठित होता और पर्यावरण के प्रति अनुकूल प्रतिक्रिया देना मानवीय शरीर के लिए असंभव होता।

218. (A) व्यक्तिगत अंतर और प्रवृत्तियाँ।
व्यक्तित्व विकास में भारतीय मनोविज्ञान 'संस्कार' और 'गुण' (सत्व, रजस, तमस) जैसी अवधारणाओं का उपयोग व्यक्तिगत अंतरों और जन्मजात प्रवृत्तियों की व्याख्या करने के लिए करता है। 'संस्कार' व्यक्ति के अतीत के अनुभवों और कार्यों के संचित प्रभाव को प्रदर्शित करते हैं जो उसके वर्तमान स्वभाव को स्वरूप प्रदान करते हैं, जबकि 'गुण' उसकी मनोवैज्ञानिक संरचना के विभिन्न पहलुओं को प्रकट करते हैं। ये अवधारणाएं यह समझने में सहायता करती हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय क्यों है और उसके व्यवहार के पीछे कौन सी प्रगाढ़ प्रवृत्तियाँ सक्रिय हैं, जो आध्यात्मिक और मानसिक विकास का आधार निर्मित करती हैं।

219. (B) कोकलिया।
कान का वह भाग जिसमें श्रवण के लिए प्राथमिक ग्राही स्थित होते हैं, कोकलिया कहलाता है। यह घोंघे की आकृति वाली एक तरल से भरी संरचना है जिसमें सूक्ष्म रोम कोशिकाएं पाई जाती हैं। जब ध्वनि के कंपन आंतरिक कान तक पहुँचते हैं, तो कोकलिया के भीतर का तरल संचलित होता है, जिससे ये रोम कोशिकाएं सक्रिय हो जाती हैं। ये कोशिकाएं यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत संकेतों में परिवर्तित करती हैं, जो श्रवण तंत्रिका द्वारा मस्तिष्क तक पहुँचाई जाती हैं। कोकलिया के बिना ध्वनि तरंगों को तंत्रिका भाषा में परिवर्तित करना संभव नहीं होता।

220. (C) वर्णनात्मक सर्वेक्षण
दृष्टिकोण मापने के लिए प्रश्नावली का उपयोग करना वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का एक प्रमुख उदाहरण है। इस विधि का उद्देश्य किसी विशिष्ट जनसंख्या के विचारों, विश्वासों या दृष्टिकोणों का वर्तमान स्वरूप में वर्णन करना है। इसमें शोधकर्ता चरों में कोई परिवर्तन या हेरफेर नहीं करता, बल्कि आँकड़ों को यथावत एकत्र करता है। यह पद्धति बड़े समूहों से सूचना जुटाने के लिए अत्यंत कुशल और प्रभावी है, जिससे प्राप्त सांख्यिकीय निष्कर्ष सामाजिक रुझानों और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों को व्यापक रूप से समझने में सहायता करते हैं।

221. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
मानवीय व्यवहार के जैविक आधारों में प्रत्येक शब्द का एक विशिष्ट अर्थ और उदाहरण है। ग्राही तंत्र का उदाहरण दृष्टिपटल में स्थित छड़ कोशिका है जो प्रकाश का पता लगाती है। प्रभावक तंत्र में मांसपेशियां सम्मिलित होती हैं जो तंत्रिका संकेतों के उत्तर में शारीरिक प्रतिक्रिया व्यक्त करती हैं। समायोजक तंत्र का मुख्य अंग मस्तिष्क है जो प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण और समन्वय करता है। अंत में, जीन डीएनए की वह आधारभूत इकाई है जो आनुवंशिक लक्षणों के संचरण और विकास के लिए पूर्णतः उत्तरदायी होती है।

222. (B) आधारभूत शारीरिक मनोविज्ञान
प्राकृतिक विज्ञानों के साथ मनोविज्ञान का अटूट संबंध आधारभूत शारीरिक मनोविज्ञान के माध्यम से सर्वाधिक दृढ़ता से परिलक्षित होता है। यह क्षेत्र सीधे तौर पर जीव विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान के सिद्धांतों का उपयोग मानवीय व्यवहार की व्याख्या करने के लिए करता है। इसमें तंत्रिका तंत्र की कार्यप्रणाली, मस्तिष्क की संरचना और रासायनिक परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है। चूँकि यह मानसिक प्रक्रियाओं को जैविक अंगों के कार्यों के साथ संबद्ध करता है, इसलिए यह मनोविज्ञान को एक ठोस वैज्ञानिक और आनुभविक आधार प्रदान करता है, जो इसे विशुद्ध विज्ञान के समकक्ष स्थापित करता है।

223. (C) डेटा की शुद्धता उत्तरदाताओं की ईमानदारी और जागरूकता पर निर्भर करती है।
सर्वेक्षण पद्धति का एक प्राथमिक दोष यह है कि इसमें एकत्र किए गए आँकड़ों की शुद्धता और विश्वसनीयता पूर्णतः उत्तरदाताओं की सत्यनिष्ठा और उनकी आत्म-जागरूकता पर निर्भर करती है। अक्सर सहभागी अपनी वास्तविक भावनाओं के

स्थान पर वे उत्तर देते हैं जो उन्हें प्रतीत होता है कि सामाजिक रूप से सत्य हैं, या वे अपनी आदतों के विषय में त्रुटिपूर्ण जानकारी दे सकते हैं। यदि उत्तरदाता सत्यनिष्ठ नहीं हैं या प्रश्नों को सही ढंग से नहीं समझते, तो प्राप्त निष्कर्ष दोषपूर्ण और भ्रामक हो सकते हैं, जो शोध की वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता को अत्यंत न्यून कर देते हैं।

224. (D) व्यक्ति के संवेगात्मक प्रतिक्रिया और मूड का स्तर।
हार्मोन व्यक्ति के संवेगात्मक प्रतिक्रिया और मनोदशा के स्तर को प्रभावित करके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करते हैं। अंतःस्रावी ग्रंथियों से स्रावित होने वाले ये रसायन सीधे तौर पर हमारे व्यवहारिक आवेगों, ऊर्जा और संवेगात्मक स्थिरता को नियंत्रित करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ हार्मोन तनाव के प्रति व्यक्ति की संवेदनशीलता में वृद्धि करते हैं, जबकि अन्य सामाजिक जुड़ाव और प्रसन्नता की भावनाओं को प्रोत्साहित करते हैं। ये जैविक कारक व्यक्ति की आधारभूत प्रवृत्तियों को स्वरूप प्रदान करते हैं, जो दीर्घकाल में एक स्थिर व्यक्तित्व लक्षण के रूप में विकसित होती हैं।

225. (A) केवल 1 और 2
मनोविज्ञान में वैज्ञानिक पद्धति अनिवार्य रूप से एक परीक्षण योग्य परिकल्पना निर्मित करने और उसके सत्यापन के लिए आँकड़ों के व्यवस्थित संग्रह पर आधारित होती है। यह सिद्धांतों को आनुभविक साक्ष्यों के माध्यम से परखने का प्रयास करती है। हालाँकि, इस पद्धति का लक्ष्य व्यक्तिपरक व्याख्याएं प्रदान करना नहीं, बल्कि वस्तुनिष्ठ तथ्य और सार्वभौमिक नियम खोजना है जो मानवीय व्यवहार की सटीक व्याख्या कर सकें। विज्ञान व्यक्तिगत राय के स्थान पर प्रमाणों और मापनीय आंकड़ों को प्राथमिकता प्रदान करता है, जिससे प्राप्त ज्ञान विश्वसनीय, तटस्थ और सार्वभौमिक रूप से मान्य होता है।

226. (B) संवेगी यांत्रिकग्राही
कोकलिया में स्थित रोम कोशिकाएं वास्तव में संवेदी यांत्रिकग्राही होती हैं। इनका कार्य ध्वनि की लहरों द्वारा उत्पन्न होने वाले सूक्ष्म यांत्रिक कंपनों के प्रति प्रतिक्रिया करना है। जब आंतरिक कान में तरल पदार्थ का कंपन इन रोम कोशिकाओं से टकराता है, तो वे झुक जाती हैं और इस यांत्रिक गति को विद्युत संकेतों में परिवर्तित कर देती हैं। यह पारांतरण प्रक्रिया ही श्रवण का आधार है। अतः ये कोशिकाएं प्रकाश या रसायनों के स्थान पर केवल यांत्रिक ऊर्जा के प्रति संवेदनशील होती हैं, जो इन्हें एक विशिष्ट प्रकार का संवेदी ग्राही निर्मित करती है।

227. (C) आध्यात्मिक विकास।
भारतीय मनोविज्ञान में व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया में 'अहं' या अहंकार को पार करना एक केंद्रीय और अनिवार्य लक्ष्य माना गया है। यह विचार सीधे तौर पर आध्यात्मिक विकास के अनुरूप है, जहाँ व्यक्ति स्वयं को संकुचित स्वार्थों से मुक्त कर व्यापक चेतना के साथ संबद्ध करने का प्रयास करता है। अहंकार का त्याग व्यक्ति को आंतरिक शांति, स्पष्टता और आत्म-साक्षात्कार की ओर अग्रसर करता है। यह दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को उच्च आध्यात्मिक मूल्यों और आत्म-नियंत्रण के साथ जोड़ता है, जिससे व्यक्ति का सर्वांगीण और सार्थक विकास सुनिश्चित होता है।

228. (D) विषय-वस्तु विश्लेषण
विषय-वस्तु विश्लेषण एक ऐसी शोध पद्धति है जिसमें विद्यमान अभिलेखों, रोगी की संचिकाओं, पत्रों या माध्यमों के प्रसारणों जैसे संचार साधनों की व्यवस्थित और वैज्ञानिक जाँच सम्मिलित है। इस विधि में शोधकर्ता लिखित या दृश्य सामग्री में निहित विशिष्ट विषयों, प्रतिमानों और प्रतीकों को कूटबद्ध करता है ताकि सामाजिक या व्यक्तिगत रुझानों को समझा जा सके। यह तकनीक उन स्थितियों में अत्यंत उपयोगी है जहाँ पुरातन जानकारी का विश्लेषण करना आवश्यक हो। यह पद्धति संचार और मनोविज्ञान के क्षेत्र में गुणात्मक आँकड़ों को वस्तुनिष्ठ आधार प्रदान करने में सक्षम है।

229. (A) दृष्टि तंत्रिका में एक न्यूरॉन।
प्रभावक वे अंग या ग्रंथियां होती हैं जो तंत्रिका तंत्र से प्राप्त निर्देशों के उत्तर में प्रतिक्रिया या कार्य उत्पन्न करती हैं। लार ग्रंथि, हृदय की मांसपेशी और अधिवृक्क ग्रंथि सभी प्रभावक के उदाहरण हैं क्योंकि वे स्राव या शारीरिक गति के माध्यम से प्रतिक्रिया प्रदान करती हैं। इसके विपरीत, दृष्टि तंत्रिका में एक न्यूरॉन समायोजक या संवाहक तंत्र का भाग है, न कि प्रभावक का। न्यूरॉन का कार्य संकेतों को मस्तिष्क तक प्रेषित करना है, न कि स्वयं कोई बाह्य प्रतिक्रिया या स्राव उत्पन्न करना। अतः यह प्रभावक श्रेणी में सम्मिलित नहीं है।

230. (B) व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाएं।
एक आधुनिक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान का विषय-क्षेत्र मानव और पशु दोनों के व्यवहार और उनके पीछे निहित मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन से संबद्ध है। इसमें न केवल प्रत्यक्ष क्रियाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण सम्मिलित है, बल्कि स्मृति, चिंतन, संवेग और प्रत्यक्षीकरण जैसी आंतरिक गतिविधियों की भी व्यवस्थित जाँच की जाती है। मनोविज्ञान का लक्ष्य इन प्रक्रियाओं के पीछे के नियमों को समझना, उनकी भविष्यवाणी करना और अंततः मानवीय कल्याण के लिए उन सिद्धांतों का व्यवहारिक अनुप्रयोग करना है। यह सूक्ष्म जैविक प्रक्रियाओं से लेकर व्यापक सामाजिक अंतःक्रियाओं तक विस्तृत है।

231. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारतीय मनोविज्ञान की प्रकृति को पश्चिमी मॉडलों की तुलना में अधिक समग्र माना जाता है क्योंकि यह मानव अस्तित्व को केवल व्यवहार या संज्ञान तक सीमित नहीं करता। यह मन, शरीर, चेतना और आध्यात्मिकता के प्रगाढ़ अंतर्संबंधों को एकीकृत रूप में समझने पर बल देता है। यह दृष्टिकोण प्राचीन दार्शनिक और चिंतनशील परंपराओं से उद्भूत है, जो आत्म-साक्षात्कार और मानसिक शांति को प्राथमिकता प्रदान करते हैं। यह मनुष्य को एक ऐसी इकाई के रूप में देखता है जिसका आंतरिक विकास और बाह्य व्यवहार दोनों आध्यात्मिक मूल्यों से गहराई से संबद्ध हैं।

232. (D) विरासत में मिला अनुवांशिक आधार
'प्रकृति बनाम पोषण' की प्रसिद्ध चर्चा मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में विरासत में मिले अनुवांशिक आधार के लिए सर्वाधिक प्रासंगिक है। 'प्रकृति' का अर्थ उन जैविक और अनुवांशिक कारकों से है जो हमें जन्म से प्राप्त होते हैं, जबकि 'पोषण' हमारे पर्यावरण और अनुभवों को संदर्भित करता है। यह चर्चा इस तथ्य पर केंद्रित है कि हमारे व्यवहार और व्यक्तित्व को स्वरूप प्रदान करने में आनुवंशिकता और परिवेश का कितना और कैसा प्रभाव होता है। आधुनिक मनोविज्ञान स्वीकार करता है कि ये दोनों कारक निरंतर एक-दूसरे के साथ अंतःक्रिया कर मानवीय विकास को अंतिम स्वरूप प्रदान करते हैं।

233. (A) कम रोशनी में दृष्टि।
दृष्टिपटल या रेटिना में स्थित छड़ों का प्राथमिक कार्य मंद प्रकाश की स्थितियों में या रात्रि के समय दृष्टि प्रदान करना है। ये कोशिकाएं प्रकाश के प्रति अत्यंत संवेदनशील होती हैं, जिससे हम बहुत धुंधले वातावरण में भी आकृतियों को देख सकते हैं। हालाँकि, छड़ें रंग पहचानने में सक्षम नहीं होतीं और न ही ये वस्तुओं के सूक्ष्म विवरण प्रदान कर सकती हैं। स्पष्ट रंगीन दृष्टि और बारीक विवरणों के लिए शंकु कोशिकाएं उत्तरदायी होती हैं। अतः छड़ें हमारी रात्रि की दृष्टि और परिधीय संवेदनशीलता के लिए अनिवार्य जैविक घटक हैं।

234. (B) संरचित प्रश्नावली पद्धति।
जब एक शोधकर्ता सहभागियों से उनकी आदतों के विषय में विशिष्ट प्रश्नों वाली प्रश्नावली पूर्ण करने के लिए कहता है, तो यह संरचित प्रश्नावली पद्धति का उदाहरण है। यह विधि स्व-प्रतिवेदन आँकड़े संग्रह का एक व्यवस्थित स्वरूप है, जिसमें सभी उत्तरदाताओं से समान प्रश्न पूछे जाते हैं। यह शोधकर्ता को कम समय में बड़ी मात्रा में जानकारी एकत्र करने और उसका सांख्यिकीय विश्लेषण करने में सक्षम बनाती है। यह सामाजिक शोध और शैक्षिक मनोविज्ञान में व्यक्तियों के दृष्टिकोण और व्यवहारिक प्रवृत्तियों को वस्तुनिष्ठ रूप से मापने के लिए एक अत्यंत प्रभावी तकनीक है।

235. (C) व्यवस्थित सामाजिक मनोविज्ञान।
मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के बीच का संबंध व्यवस्थित सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र द्वारा सर्वोत्तम ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। यह क्षेत्र यह जाँचता है कि सामाजिक परिवेश, समूह की गतिशीलता और सांस्कृतिक मानदंड व्यक्ति के व्यवहार, चिंतन और भावनाओं को कैसे प्रभावित करते हैं। यह स्पष्ट करता है कि मानवीय क्रियाएं केवल आंतरिक मानसिक प्रक्रियाओं का परिणाम नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक संदर्भों से गहराई से संबद्ध हैं। यह अंतःविषय दृष्टिकोण व्यक्ति और समाज के बीच के जटिल अंतर्संबंधों को वैज्ञानिक रूप से समझने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।

236. (D) व्यवहारात्मक दैहिक प्रभावक।
केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से प्राप्त आदेशों को वास्तविक क्रिया में परिवर्तित करने के लिए व्यवहारात्मक दैहिक प्रभावक उत्तरदायी होते हैं। इनमें मुख्य रूप से मांसपेशियां और ग्रंथियां सम्मिलित होती हैं जो शरीर की प्रतिक्रिया प्रणाली का अंतिम भाग हैं। जब मस्तिष्क किसी कार्य का निर्णय लेता है, तो तंत्रिका संकेत इन प्रभावकों तक पहुँचते हैं, जिससे मांसपेशियां शारीरिक गति संपादित करती हैं या ग्रंथियां आवश्यक रसायनों का स्राव करती हैं। यह जैविक प्रक्रिया ही हमारे आंतरिक निर्णयों को बाह्य व्यवहार के रूप में प्रकट करती है, जिससे हम पर्यावरण के प्रति प्रतिक्रिया प्रदान कर पाते हैं।

237. (A) वेदों, उपनिषदों और योग सूत्रों जैसे प्राचीन ग्रंथों में।
भारतीय मनोविज्ञान का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य इसकी उत्पत्ति को भारत के अत्यंत प्राचीन और समृद्ध ग्रंथों, जैसे वेदों, उपनिषदों और योग सूत्रों में गहराई से खोजता है। इन ग्रंथों में सहस्रों वर्षों से मन की प्रकृति, चेतना के विभिन्न स्तरों और 'स्व' के विषय में गहन मनोवैज्ञानिक विचार प्रस्तुत किए गए हैं। यह परंपरा आत्म-ज्ञान और आंतरिक विकास की मानवीय खोज पर आधारित है। आधुनिक भारतीय मनोविज्ञान इन्हीं शास्त्रीय स्रोतों से प्रेरणा लेकर मानवीय व्यवहार और मानसिक कल्याण को समझने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है।

238. (B) नियंत्रित वैज्ञानिक प्रयोग
शोध की समस्त पद्धतियों में नियंत्रित वैज्ञानिक प्रयोग ही चरों पर उच्चतम स्तर का नियंत्रण प्रदान करता है। इसमें शोधकर्ता एक स्वतंत्र चर में व्यवस्थित रूप से हेरफेर करता है और अन्य सभी बाह्य कारकों को स्थिर या नियंत्रित रखता है। यह विधि चरों के बीच कार्य-कारण संबंध स्थापित करने के लिए सर्वाधिक विश्वसनीय मानी जाती है। अन्य विधियाँ, जैसे अवलोकन या सर्वेक्षण, व्यवहार का वर्णन तो कर सकती हैं, किंतु वे प्रयोग की भाँति चरों को नियंत्रित कर यह सिद्ध नहीं कर सकतीं कि एक विशेष कारक ही दूसरे का वास्तविक कारण है।

239. (C) स्पर्श यांत्रिकग्राही।
त्वचा पर होने वाले स्पर्श, दबाव या विस्थापन की संवेदना त्वचा में स्थित विशिष्ट संवेदी यांत्रिकग्राहियों द्वारा अनुभूत की जाती है। ये ग्राही बाहरी भौतिक उद्दीपकों के प्रति अत्यंत संवेदनशील होते हैं और त्वचा के दबने या खिंचने पर सक्रिय हो जाते हैं। वे इन भौतिक परिवर्तनों को तंत्रिका आवेगों में परिवर्तित कर देते हैं जो मस्तिष्क तक पहुँचते हैं। यांत्रिकग्राही हमें वस्तुओं की बनावट, उनकी कठोरता और स्पर्श का अनुभव कराते हैं, जो हमारे दैनिक जीवन की क्रियाओं, संचार और सुरक्षा के लिए एक अनिवार्य और प्राथमिक संवेदी माध्यम है।

240. (D) व्यवहार के जैविक आधार।
संवेगात्मक गतिविधि पर अंतःस्रावी तंत्र और हार्मोन का प्रभाव व्यवहार के जैविक आधारों के अध्ययन का एक मुख्य हिस्सा है। यह क्षेत्र यह जाँचता है कि कैसे हमारे शरीर के भीतर होने वाले रासायनिक परिवर्तन सीधे तौर पर हमारे मनोदशा, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को संचालित करते हैं। जिस प्रकार तंत्रिका तंत्र व्यवहार को प्रभावित करता है, उसी प्रकार ग्रंथियों से निकलने वाले हार्मोन संवेगात्मक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करते हैं। यह दृष्टिकोण मनोविज्ञान को जीव विज्ञान के साथ संबद्ध कर मानवीय व्यवहार की एक ठोस वैज्ञानिक व्याख्या प्रदान करता है।

241. (A) केवल 1 और 3
मनोविज्ञान को एक विज्ञान माना जाता है क्योंकि यह मानवीय व्यवहार के अध्ययन के लिए आनुभविक और व्यवस्थित पद्धतियों का उपयोग करता है। साथ ही, इसका प्राकृतिक विज्ञानों (जैसे जीव विज्ञान) और सामाजिक विज्ञानों (जैसे समाजशास्त्र) के साथ गहरा संबंध है, क्योंकि व्यवहार जैविक और सामाजिक दोनों कारकों से प्रभावित होता है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि मनोविज्ञान केवल मानसिक विकारों के उपचार तक सीमित है; वास्तव में, यह सामान्य मानवीय अनुभवों, अधिगम, स्मृति और विकास जैसे व्यापक क्षेत्रों का भी वैज्ञानिक अध्ययन करता है।

242. (B) लचीला असंरचित साक्षात्कार है।
जब एक शोधकर्ता सहभागी से अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए स्वतःस्फूर्त प्रश्न पूछता है, तो यह एक लचीला असंरचित साक्षात्कार होता है। इस पद्धति में प्रश्नों का कोई कठोर या पूर्व निर्धारित क्रम नहीं होता, जिससे शोधकर्ता को चर्चा के दौरान उभरने वाले नवीन और महत्वपूर्ण विषयों की गहराई से खोज करने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है। यह विधि सहभागी के व्यक्तिगत अनुभवों और दृष्टिकोणों को विस्तार से समझने के लिए अत्यंत प्रभावी है, क्योंकि यह अधिक समृद्ध और गुणात्मक आँकड़े प्रदान करती है।

243. (C) दृश्य समंजन।
दृश्य समंजन वह महत्वपूर्ण जैविक प्रक्रिया है जिसके द्वारा आँख का लचीला लेंस अपनी वक्रता और आकार परिवर्तित कर भिन्न-भिन्न दूरी पर स्थित वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करता है। जब हम किसी निकट या दूर की वस्तु को देखते हैं, तो सिलियरी मांसपेशियां लेंस को समायोजित करती हैं ताकि प्रकाश की किरणें दृष्टिपटल पर सटीक रूप से केंद्रित हो सकें। यह प्रक्रिया हमें निरंतर परिवर्तित होते दृश्य वातावरण में स्पष्ट और तीक्ष्ण दृष्टि बनाए रखने में सक्षम बनाती है। इसके बिना, हमें वस्तुएं धुंधली और अस्पष्ट दृष्टिगोचर होंगी, जिससे प्रत्यक्षीकरण प्रभावित होगा।

244. (D) आधारभूत भारतीय मनोविज्ञान।
यह विचार कि व्यक्तित्व 'सत्व', 'रजस' और 'तमस' नामक तीन मौलिक गुणों के संतुलन से प्रभावित होता है, आधारभूत भारतीय मनोविज्ञान की एक मुख्य अवधारणा है। इन गुणों को 'त्रिगुण' कहा जाता है, जो व्यक्ति की मानसिक और व्यवहारिक प्रवृत्तियों को स्वरूप प्रदान करते हैं। 'सत्व' शुद्धता और ज्ञान का, 'रजस' गतिविधि और आवेग का, तथा 'तमस' जड़ता और अंधकार का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार, इन गुणों का विशिष्ट अनुपात ही व्यक्ति के अद्वितीय स्वभाव और उसके व्यवहारिक प्रतिमानों को निर्धारित करता है, जो आध्यात्मिक विकास का आधार है।

245. (A) व्यवहार के जैविक आधार।
व्यवहार के जैविक आधारों के अंतर्गत यह अध्ययन किया जाता है कि कैसे हमारा तंत्रिका तंत्र, अंतःस्रावी ग्रंथियाँ (हार्मोन) और अनुवांशिक कारक मानवीय व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करते हैं। यह क्षेत्र जीव विज्ञान और मनोविज्ञान के मिलन बिंदु पर स्थित है और व्यवहार की वैज्ञानिक व्याख्या शारीरिक अंगों की कार्यप्रणाली के आधार पर करने का प्रयास करता है। इसमें मस्तिष्क की संरचना, न्यूरोट्रांसमीटर की भूमिका और विरासत में मिले जीन के प्रभाव का विश्लेषण किया जाता है। यह स्पष्ट करता है कि हमारी मनोवैज्ञानिक पहचान के पीछे सुदृढ़ जैविक और शारीरिक कारण सक्रिय होते हैं।

246. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
मनोवैज्ञानिक शोध पद्धतियों के विषय में ये दोनों कथन पूर्णतः असत्य हैं। प्रयोगात्मक पद्धति का मुख्य उपयोग केवल व्यवहार का वर्णन करना नहीं, बल्कि चरों के बीच कार्य-कारण संबंध स्थापित करना है। इसमें शोधकर्ता चरों में व्यवस्थित हेरफेर करता है। इसी प्रकार, अवलोकन पद्धति शोधकर्ता को चरों के बीच कार्य-कारण संबंध निर्धारित करने की अनुमति नहीं देती, क्योंकि इसमें चरों का नियंत्रण और हेरफेर सम्मिलित नहीं होता। अवलोकन केवल प्राकृतिक वातावरण में व्यवहार के स्वाभाविक स्वरूप का विस्तृत विवरण प्रदान करने में सक्षम है, जिससे सहसंबंध का संकेत प्राप्त हो सकता है।

247. (D) स्राव के माध्यम से प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं।
ग्रंथियों को प्रभावक माना जाता है क्योंकि वे केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से निर्देश प्राप्त करने के पश्चात सक्रिय होती हैं और विशिष्ट रसायनों या हार्मोन का स्राव करके प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं। प्रभावक वे अंग होते हैं जो सूचना प्राप्त करने के पश्चात किसी कार्य को पूर्ण करते हैं। ग्रंथियों द्वारा स्रावित हार्मोन रक्तप्रवाह के माध्यम से शरीर के विभिन्न अंगों तक पहुँचता है और व्यवहार, ऊर्जा स्तर तथा संवेगात्मक अवस्थाओं को प्रभावित करता है। इस प्रकार, ग्रंथियाँ आंतरिक निर्णयों को जैविक प्रतिक्रियाओं में परिवर्तित कर शरीर के अनुकूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करती हैं।

248. (A) अंतःक्रियात्मक सामाजिक मनोविज्ञान।
दृष्टिकोण कैसे निर्मित होते हैं और उन्हें कैसे परिवर्तित किया जा सकता है, इसका अध्ययन अंतःक्रियात्मक सामाजिक मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र के भीतर एक केंद्रीय विषय है। यह क्षेत्र यह जाँचता है कि सामाजिक प्रभाव, संचार, और अन्य व्यक्तियों के साथ हमारी अंतःक्रियाएं हमारे विश्वासों और व्यवहारों को कैसे स्वरूप प्रदान करती हैं। दृष्टिकोण का निर्माण हमारे सामाजिक अनुभवों और प्राप्त जानकारी का परिणाम होता है। सामाजिक मनोविज्ञान इन प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक रूप से समझने का प्रयास करता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि समाज और व्यक्ति एक-दूसरे के विचारों को निरंतर कैसे प्रभावित करते हैं।

249. (C) आंतरिक कोकलिया में।
श्रवण संवेदना के लिए उत्तरदायी मुख्य ग्राही आंतरिक कान के भीतर स्थित कोकलिया में पाए जाते हैं। कोकलिया एक घोंघे की आकृति वाली तरल से भरी संरचना है जिसमें सूक्ष्म रोम कोशिकाएं होती हैं। ये रोम कोशिकाएं ही ध्वनि के कंपनों के प्रति संवेदनशील होती हैं और उन्हें विद्युत आवेगों में परिवर्तित करती हैं। बाह्य कान या मध्य कान केवल ध्वनि तरंगों को ग्रहण करने और उन्हें प्रवर्धित करने का कार्य करते हैं, जबकि

वास्तविक संवेदी पारांतरण कोकलिया के भीतर ही संपादित होता है, जहाँ से सूचना मस्तिष्क को प्रेषित की जाती है।

250. (B) अत्यंत गहन जानकारी प्रदान करती है।
व्यक्ति अध्ययन पद्धति की सबसे बड़ी शक्ति यह है कि यह किसी एक व्यक्ति, समूह या घटना के विषय में अत्यंत गहन और विस्तृत जानकारी प्रदान करती है। इसमें शोधकर्ता व्यक्ति के अतीत, वर्तमान अनुभवों, सामाजिक परिवेश और व्यवहार का सर्वांगीण विश्लेषण करता है। यह विधि उन स्थितियों में अमूल्य है जहाँ किसी विरल मनोवैज्ञानिक विकार या विशिष्ट मानवीय क्षमता को गहराई से समझना आवश्यक हो। हालाँकि इसकी सामान्यीकरण क्षमता न्यून है, किंतु इसके द्वारा प्राप्त विस्तृत आँकड़े नवीन परिकल्पनाओं और सिद्धांतों के निर्माण के लिए एक सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं।

251. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
मानवीय संवेदी ग्राहियों का प्रत्येक समूह एक विशिष्ट संवेदना के लिए समर्पित होता है। आँखों में स्थित छड़ें और शंकु दृष्टि संवेदना के लिए उत्तरदायी होते हैं, जो प्रकाश को ग्रहण करते हैं। कोकलिया की रोम कोशिकाएं श्रवण संवेदना हेतु ध्वनि कंपनों को तंत्रिका संकेतों में परिवर्तित करती हैं। त्वचा में स्थित यांत्रिकग्राही स्पर्श और दबाव के अनुभवों को अनुभव करते हैं, जबकि तापग्राही बाह्य वातावरण के तापमान (ऊष्मा एवं शीतलता) की सूचना देते हैं। यह विशिष्ट संवेदी तंत्र ही हमें हमारे आस-पास की दुनिया का संपूर्ण और विविध अनुभव प्रदान करने में सक्षम बनाता है।

252. (D) जैविक रूप से आनुवंशिक।
व्यवहार का अनुवांशिक आधार मुख्य रूप से इस वैज्ञानिक तथ्य की खोज करता है कि मनोवैज्ञानिक विशेषताएं और व्यवहारगत प्रवृत्तियाँ किस सीमा तक जैविक रूप से आनुवंशिक होती हैं। इसका तात्पर्य यह है कि माता-पिता से प्राप्त जीन और गुणसूत्र हमारे मानसिक स्वास्थ्य, बुद्धि, और व्यक्तित्व के कई पहलुओं को आधार प्रदान करते हैं। हालाँकि पर्यावरण का प्रभाव भी महत्वपूर्ण है, किंतु यह क्षेत्र स्पष्ट करता है कि हमारी कई क्षमताएं और स्वभावगत प्रवृत्तियाँ जैविक रूप से विरासत में प्राप्त होती हैं। यह मानवीय विकास को समझने के लिए प्रकृति और पोषण के अंतर्संबंधों पर बल देता है।

253. (A) संवेगात्मक गतिविधि और व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करना।
हार्मोन की एक महत्वपूर्ण भूमिका मानवीय संवेगात्मक गतिविधि और व्यक्तित्व विकास को गहराई से प्रभावित करना है। अंतःस्रावी ग्रंथियों से निकलने वाले ये रासायनिक संदेशवाहक शरीर के संवेगात्मक संतुलन, ऊर्जा स्तर और मनोदशा को नियंत्रित करते हैं। उदाहरण के लिए, तनाव के दौरान स्रावित होने वाले हार्मोन व्यक्ति की तत्परता और उत्तेजना को परिवर्तित करते हैं। दीर्घकालिक हार्मोनल प्रवृत्तियाँ व्यक्ति के स्वभाव और व्यक्तित्व लक्षणों के निर्माण में योगदान प्रदान करती हैं। इस प्रकार, हार्मोन हमारे व्यवहार को जैविक रूप से स्वरुप देने में एक सूक्ष्म किंतु अत्यंत शक्तिशाली भूमिका निर्वहन करते हैं।

254. (B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
मनोविज्ञान की प्रकृति बहुआयामी है और यह एक सामाजिक विज्ञान होने के साथ-साथ एक प्राकृतिक विज्ञान भी है। सामाजिक विज्ञान के रूप में यह मानवीय व्यवहार पर समूह और समाज के प्रभावों का अध्ययन करता है। प्राकृतिक विज्ञान के रूप में यह मस्तिष्क, तंत्रिका तंत्र और जैविक आधारों पर ध्यान केंद्रित करता है। हालाँकि ये दोनों तथ्य सत्य हैं, किंतु एक का विज्ञान होना दूसरे की व्याख्या नहीं करता। ये दोनों पक्ष स्वतंत्र रूप से मनोविज्ञान की वैज्ञानिक व्यापकता को प्रदर्शित करते हैं, जो इसे एक अनूठा और अंतःविषय शैक्षणिक विषय निर्मित करता है।

255. (C) अनुदैर्ध्य विकासात्मक मनोविज्ञान।
बाल्यकाल से वयस्कता तक नैतिकता या किसी अन्य मनोवैज्ञानिक लक्षण के विकास का अध्ययन करना अनुदैर्ध्य विकासात्मक मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र में आता है। यह शाखा समय के साथ व्यक्ति के व्यवहार, चिंतन और सामाजिक कौशल में होने वाले क्रमिक और स्थायी परिवर्तनों की वैज्ञानिक जाँच करती है। इसमें यह समझने का प्रयास किया जाता है कि आयु और अनुभव के साथ मानवीय चेतना कैसे विकसित होती है। यह दृष्टिकोण विकास की निरंतरता को उजागर करता है और यह स्पष्ट करता है कि हमारे बचपन के अनुभव वयस्क जीवन की नैतिकता को कैसे स्वरुप प्रदान करते हैं।

256. (D) प्रयोग में किसी चर का हेरफेर शामिल होता है, जबकि सर्वेक्षण मौजूदा दृष्टिकोणों या व्यवहारों को मापता है।
प्रयोग और सर्वेक्षण के बीच मूलभूत अंतर शोधकर्ता की भूमिका और नियंत्रण का है। प्रयोग में शोधकर्ता स्वतंत्र चर में व्यवस्थित हेरफेर करता है ताकि वह आश्रित चर पर उसके प्रभाव का अवलोकन कर सके और कार्य-कारण संबंध स्थापित कर सके। इसके विपरीत, सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग केवल विद्यमान दृष्टिकोणों, विश्वासों या व्यवहारों को बिना किसी परिवर्तन के मापने के लिए किया जाता है। सर्वेक्षण जनसंख्या के रुझानों का विवरण प्रदान करता है, जबकि प्रयोग यह विश्लेषण करता है कि एक विशेष कारक किसी विशिष्ट व्यवहार का कारण क्यों है, जो वैज्ञानिक गहराई में वृद्धि करता है।

257. (A) समायोजक तंत्र।
मस्तिष्क और मेरुरज्जु मिलकर मानवीय व्यवहार के प्राथमिक समायोजक तंत्र का निर्माण करते हैं, जिसे केंद्रीय तंत्रिका तंत्र भी कहा जाता है। इस तंत्र का मुख्य कार्य संवेदी अंगों से प्राप्त विभिन्न सूचनाओं को एकत्रित करना, उनका सूक्ष्म प्रसंस्करण करना और फिर उचित शारीरिक प्रतिक्रिया का समन्वय करना है। यह समायोजक केंद्र प्राप्त आँकड़ों के आधार पर निर्णय लेता है और प्रभावकों को निर्देश प्रेषित करता है। इस प्रकार, यह हमारे संपूर्ण व्यवहार और शारीरिक गतिविधियों के बीच एक मुख्य नियंत्रक एवं एकीकृत कड़ी के रूप में कार्य करता है, जो अनुकूलन के लिए अनिवार्य है।

258. (B) पारंपरिक भारतीय मनोविज्ञान।
व्यक्तित्व विकास के सर्वोच्च लक्ष्य के रूप में 'आत्म-साक्षात्कार' की अवधारणा पारंपरिक भारतीय मनोविज्ञान का एक प्रमुख और केंद्रीय विषय है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति को अपनी बाह्य पहचान और अहंकार से ऊपर उठकर अपनी वास्तविक चेतना को पहचानने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसमें व्यक्तित्व का विकास केवल सामाजिक सफलता नहीं, बल्कि आंतरिक शांति और सत्य की अनुभूति है। यह आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक विकास का एक ऐसा एकीकृत मॉडल है जो प्राचीन ग्रंथों से प्रेरित है और मानवीय जीवन को अर्थ और पूर्णता प्रदान करने का एक व्यवहारिक मार्ग प्रदर्शित करता है।

259. (C) आँख में प्रवेश करने वाले प्रकाश की मात्रा को नियंत्रित करना।
मानव आँख में परितारिका या आईरिस वह रंगीन पेशीय संरचना है जो पुतली के आकार को समायोजित करके आँख में प्रवेश करने वाले प्रकाश की मात्रा को नियंत्रित करती है। तीव्र प्रकाश में परितारिका पुतली को संकुचित कर देती है ताकि आँख को क्षति न हो, और मंद प्रकाश में यह पुतली को विस्तृत कर देती है ताकि अधिक प्रकाश प्रवेश कर सके और हम स्पष्ट देख सकें। यह एक स्वचालित सुरक्षात्मक तंत्र है जो दृष्टिपटल पर गिरने वाले प्रकाश की तीव्रता को संतुलित रखता है, जिससे दृष्टि की गुणवत्ता और सुरक्षा दोनों सुनिश्चित होती हैं।

260. (D) वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति।
जब कोई अध्ययन राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि प्रतिदर्श से आँकड़े एकत्र करता है, जैसे कि प्रसन्नता के स्तर के विषय में, तो यह वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का एक उदाहरण है। इस विधि का उद्देश्य किसी विशिष्ट जनसंख्या की वर्तमान स्थिति, विचारों या व्यवहारों का यथावत वर्णन करना है। इसमें किसी भी चर को प्रयोगात्मक रूप से परिवर्तित नहीं किया जाता, बल्कि सांख्यिकीय निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए प्रश्नावली या साक्षात्कार का उपयोग किया जाता है। यह पद्धति बड़े पैमाने पर सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों को समझने के लिए अत्यंत प्रभावशाली और व्यापक जानकारी प्रदान करती है।

261. (D) 1, 2 और 3
मनोविज्ञान की विभिन्न शोध पद्धतियों के अपने अनूठे लाभ हैं। व्यक्ति अध्ययन किसी एक इकाई की गहरी जाँच कर समृद्ध आँकड़े प्रदान करता है, भले ही इसका सामान्यीकरण सीमित हो। प्रयोगात्मक पद्धति चरों के बीच कार्य-कारण संबंधों को वैज्ञानिक रूप से सिद्ध करने का एकमात्र सशक्त माध्यम है। सर्वेक्षण पद्धति बड़ी जनसंख्या से शीघ्रता और न्यून लागत में आँकड़े एकत्र करने के लिए सर्वाधिक कुशल मानी जाती है। ये तीनों विधियाँ मिलकर मानवीय व्यवहार की व्याख्या करने, उसकी भविष्यवाणी करने और उसे सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के लिए एक संपूर्ण वैज्ञानिक ढांचा प्रदान करती हैं।

262. (B) शारीरिक और अनुवांशिक प्रक्रियाएं।
व्यवहार के जैविक आधार इस वैज्ञानिक तथ्य पर बल देते हैं कि मानवीय मनोवैज्ञानिक घटनाएं और क्रियाएं शारीरिक और अनुवांशिक प्रक्रियाओं में गहराई से निहित हैं। इसका अर्थ है कि हमारे व्यवहार को स्वरूप प्रदान करने में मस्तिष्क की संरचना, तंत्रिका तंत्र की कार्यप्रणाली, न्यूरोट्रांसमीटर का स्तर और माता-पिता से विरासत में प्राप्त जीन की मुख्य भूमिका होती है। यह दृष्टिकोण मनोविज्ञान को जीव विज्ञान के साथ संबद्ध कर व्यवहार की एक वस्तुनिष्ठ व्याख्या प्रदान करता है। यह स्पष्ट करता है कि प्रत्येक मानसिक प्रक्रिया का एक ठोस और मापने योग्य जैविक आधार होता है।

263. (C) कोकलिया; मस्तिष्क
श्रवण तंत्रिका का मुख्य कार्य कोकलिया द्वारा उत्पन्न विद्युत संकेतों को मस्तिष्क के श्रवण क्षेत्र तक संचारित करना है। जब आंतरिक कान का कोकलिया ध्वनि कंपनों को तंत्रिका आवेगों में परिवर्तित कर देता है, तो ये आवेग इसी तंत्रिका के माध्यम से प्रेषित होते हैं। मस्तिष्क इन प्राप्त संकेतों की व्याख्या करता है, जिससे हमें ध्वनि, भाषा या संगीत का अर्थ बोध होता है। इस प्रकार, श्रवण तंत्रिका कान के संवेदी ग्राही और मस्तिष्क के प्रसंस्करण केंद्र के बीच एक अनिवार्य सूचना मार्ग या सेतु के रूप में कार्य करती है, जिससे श्रवण संभव होता है।

264. (D) व्यवस्थित अवलोकन और मापन।
एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की प्रतिष्ठा और स्थिति पूर्णतः व्यवस्थित अवलोकन और वस्तुनिष्ठ मापन के उपयोग पर आधारित है। वैज्ञानिक होने का अर्थ है कि किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने से पूर्व आँकड़ों को नियंत्रित परिस्थितियों में एकत्र किया जाए और सांख्यिकीय रूप से उनका विश्लेषण किया जाए। मनोविज्ञान केवल व्यक्तिगत राय या अंतर्ज्ञान पर निर्भर नहीं रहता, बल्कि यह व्यवहार को मापने के लिए प्रमाणिक उपकरणों का उपयोग करता है। यह व्यवस्थित दृष्टिकोण ही इसके सिद्धांतों को विश्वसनीय, सार्वभौमिक और वैज्ञानिक रूप से सत्यापित करने का आधार प्रदान करता है।

265. (A) अंतःस्रावी तंत्र।
व्यक्तित्व विकास में हार्मोन की भूमिका यह स्पष्ट करती है कि व्यक्ति का स्वभाव और उसकी संवेगात्मक प्रवृत्तियाँ काफी हद तक अंतःस्रावी तंत्र द्वारा प्रभावित होती हैं। ग्रंथियों से निकलने वाले ये हार्मोन हमारे ऊर्जा स्तर, तनाव के प्रति प्रतिक्रिया और मनोदशा को प्रत्यक्ष रूप से नियंत्रित करते हैं। उदाहरण के लिए, थायराइड या अधिवृक्क ग्रंथियों के कार्यों में असंतुलन व्यक्ति के व्यवहार में चिड़चिड़ापन या उत्साह की न्यूनता ला सकता है। अतः हार्मोनल संतुलन न केवल शारीरिक स्वास्थ्य, बल्कि एक स्थिर और संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण के लिए भी एक आधारभूत जैविक आवश्यकता है।

266. (B) सर्वेक्षण - उत्तर गलत या पक्षपाती हो सकते हैं।
सर्वेक्षण पद्धति की एक प्रमुख और महत्वपूर्ण सीमा यह है कि इसमें प्राप्त उत्तर त्रुटिपूर्ण या पक्षपाती हो सकते हैं। चूँकि यह विधि सहभागियों की स्व-प्रतिवेदन पर निर्भर करती है, इसलिए प्रायः लोग अपनी वास्तविक राय छिपा लेते हैं या स्वयं को सामाजिक रूप से श्रेष्ठ दिखाने के लिए गलत जानकारी दे सकते हैं। इसे सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रह कहा जाता है। इसके अतिरिक्त, यदि उत्तरदाता प्रश्नों को सही ढंग से नहीं समझते या उन्हें स्मरण रखने में कठिनाई होती है, तो भी आँकड़ों

की शुद्धता और शोध के निष्कर्षों की वैज्ञानिक प्रमाणिकता प्रभावित हो सकती है।

267. (D) संवेगी इनपुट और मोटर आउटपुट के बीच जानकारी को एकीकृत करना।
केंद्रीय तंत्रिका तंत्र एक 'समायोजक' के रूप में अपनी भूमिका संवेगी इनपुट और मोटर आउटपुट के बीच जानकारी को एकीकृत करके निर्वहन करता है। इसमें मस्तिष्क और मेरुरज्जु सम्मिलित होते हैं जो संवेदी अंगों से प्राप्त संकेतों को ग्रहण करते हैं, उनका विश्लेषण करते हैं और फिर प्रभावकों को उचित प्रतिक्रिया देने के लिए निर्देश प्रेषित करते हैं। यह तंत्र यह सुनिश्चित करता है कि शरीर का प्रत्येक अंग समन्वित शैली में कार्य करे। समायोजक के बिना, प्राप्त संवेदनाओं को सार्थक शारीरिक क्रियाओं में परिवर्तित करना और वातावरण के साथ जटिल अनुकूलन करना मानवीय शरीर के लिए असंभव होता।

268. (A) चेतना, 'स्व' और आत्म-साक्षात्कार की पद्धतियां।
भारतीय मनोविज्ञान के इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता चेतना, 'स्व' और आत्म-साक्षात्कार की गहन पद्धतियों के प्रति इसके झुकाव में निहित है। यह प्राचीन दार्शनिक परंपराओं से उद्भूत है जो मन की आंतरिक खोज और मानसिक शांति को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करते हैं। इसमें ध्यान और आत्म-चिंतन जैसी तकनीकों का उपयोग चेतना के विभिन्न स्तरों को समझने और मानवीय क्षमता के उच्चतम शिखर तक पहुँचने के लिए किया जाता है। यह दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को आध्यात्मिक विकास के साथ एकीकृत करता है, जिससे व्यक्ति अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य और आंतरिक प्रसन्नता को प्राप्त कर सके।

269. (C) दैहिक त्वचा।
स्पर्श, दबाव और तापमान (शीतलता एवं ऊष्मा) की संवेदनाओं के लिए समर्पित ग्राही मुख्य रूप से हमारी दैहिक त्वचा में स्थित होते हैं। त्वचा की विभिन्न परतों में स्थित ये विशिष्ट तंत्रिका सिरे बाह्य वातावरण के भौतिक उद्दीपकों के प्रति अत्यंत संवेदनशील होते हैं। जब कोई वस्तु त्वचा को स्पर्श करती है या तापमान परिवर्तित होता है, तो ये ग्राही तुरंत सक्रिय हो जाते हैं और इन सूचनाओं को विद्युत संकेतों के रूप में मस्तिष्क तक पहुँचाते हैं। यह त्वचीय संवेदी तंत्र हमें हमारे परिवेश की भौतिक स्थिति से अवगत कराता है और सुरक्षात्मक प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाता है।

270. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
व्यवहार के जैविक आधारों के अध्ययन में जीन और हार्मोन दोनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और सत्य है। जीन आनुवंशिकता की वह आधारभूत इकाइयाँ हैं जो माता-पिता से प्राप्त होती हैं और हमारे शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक लक्षणों का ब्लूप्रिंट प्रदान करती हैं। इसी प्रकार, हार्मोन रक्तप्रवाह में स्रावित होने वाले रासायनिक संदेशवाहक हैं जो मानवीय भावनाओं, मनोदशा और व्यवहार को गहराई से प्रभावित करते हैं। ये दोनों घटक मिलकर व्यवहार की एक सुदृढ़ जैविक नींव तैयार करते हैं, जो मानवीय व्यक्तित्व और विकास को शारीरिक स्तर पर निरंतर निर्देशित करने का कार्य करते हैं।

271. (A) P-4, Q-2, R-3, S-1
मनोविज्ञान की अवधारणाएं और जैविक तंत्र मानवीय व्यवहार की व्याख्या के लिए विशिष्ट भूमिकाएं निर्वहन करते हैं। मनोविज्ञान की प्रकृति इसकी एक वैज्ञानिक विषय के रूप में पहचान को प्रदर्शित करती है। इसका विषय-क्षेत्र अध्ययन के विविध विषयों और उनके व्यवहारिक अनुप्रयोगों की व्यापक श्रेणी को समाहित करता है। ग्राही तंत्र पर्यावरण से उद्दीपकों का पता लगाने वाले संवेदी अंगों के रूप में कार्य करता है। अंत में, प्रभावक तंत्र में मांसपेशियां और ग्रंथियां सम्मिलित होती हैं जो प्राप्त निर्देशों के अनुसार शारीरिक प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं। ये सभी घटक मिलकर मानवीय क्रियाओं का आधार निर्मित करते हैं।

272. (D) प्रेक्षक की उपस्थिति देखे जा रहे व्यवहार को परिवर्तित कर सकती है।
अवलोकन पद्धति की एक प्रमुख और गंभीर सीमा यह है कि प्रेक्षक या शोधकर्ता की उपस्थिति स्वयं उस व्यवहार को परिवर्तित कर सकती है जिसका अध्ययन किया जा रहा है। जब लोगों को यह ज्ञात होता है कि उनका अवलोकन किया जा रहा है, तो वे अक्सर अपना स्वाभाविक व्यवहार त्यागकर कृत्रिम या सामाजिक रूप से स्वीकार्य व्यवहार करने लगते हैं। इसे 'प्रेक्षक प्रभाव' कहा जाता है, जो प्राप्त आँकड़ों की स्वाभाविकता और शोध की वस्तुनिष्ठता को न्यून कर सकता है। अतः शोधकर्ताओं को इस प्रभाव को न्यून करने के लिए प्रायः अत्यधिक सावधानी और परोक्ष विधियों का उपयोग करना पड़ता है।

273. (A) संवेदी ऑप्टिक डिस्क।
आँख के दृष्टिपटल या रेटिना का वह भाग जहाँ से दृष्टि तंत्रिका नेत्रगोलक को त्यागकर मस्तिष्क की ओर प्रस्थान करती है, उसे ऑप्टिक डिस्क या 'अंध बिंदु' कहा जाता है। इस विशिष्ट क्षेत्र में कोई भी प्रकाशग्राही कोशिकाएं (छड़ें या शंकु) नहीं पाई जाती हैं। इसके परिणामस्वरुप, यदि किसी वस्तु का प्रतिबिंब रेटिना के इस विशेष भाग पर निर्मित होता है, तो वह वस्तु हमें दिखाई नहीं देती क्योंकि यहाँ प्रकाश संकेतों को तंत्रिका आवेगों में परिवर्तित करने का कोई साधन उपलब्ध नहीं होता। यह हमारी दृश्य प्रणाली की एक अनूठी और प्राकृतिक शारीरिक संरचनात्मक सीमा है।

274. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
सर्वेक्षण पद्धति निस्संदेह एक विशाल जनसंख्या के दृष्टिकोण और राय पर आँकड़े एकत्र करने का एक अत्यंत कुशल और किफायती मार्ग है, जो सांख्यिकीय निष्कर्ष प्रदान करता है। हालाँकि, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि कार्य-कारण संबंध स्थापित करने के लिए यह सर्वश्रेष्ठ पद्धति है। कार्य-कारण संबंध केवल नियंत्रित प्रयोगात्मक पद्धति के माध्यम से ही स्थापित किया जा सकता है। सर्वेक्षण केवल चरों के बीच सहसंबंध या वर्तमान रुझानों को प्रदर्शित कर सकता है, किंतु वह यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध नहीं कर सकता कि एक कारक ही दूसरे का वास्तविक और प्रत्यक्ष कारण है।

275. (C) अधिवृक्क एड्रेनालाईन और पलायन प्रतिक्रिया।
संवेगात्मक गतिविधि में हार्मोन की भूमिका को अधिवृक्क ग्रंथियों द्वारा स्रावित एड्रेनालाईन और उससे उत्पन्न होने वाली पलायन प्रतिक्रिया के बीच के संबंध द्वारा सर्वोत्तम शैली में समझा जा सकता है। आपातकालीन स्थितियों में एड्रेनालाईन तीव्रता से रक्तप्रवाह में स्रावित होता है, जिससे हृदय गति और ऊर्जा का स्तर बढ़ जाता है। यह जैविक प्रतिक्रिया व्यक्ति को संकट का सामना करने या उससे दूर भागने के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से सज्जित करती है। इस प्रकार, हार्मोन सीधे तौर पर हमारी तीव्र भावनाओं और उत्तरजीविता से संबद्ध व्यवहारों को नियंत्रित और निर्देशित करने का कार्य करते हैं।

276. (D) आनुवंशिकता कुछ व्यवहारों और लक्षणों के लिए प्रवृत्तियों को प्रभावित करती है।
व्यवहार के अनुवांशिक आधार को इस वैज्ञानिक बोध के रूप में सर्वोत्तम वर्णित किया जा सकता है कि आनुवंशिकता प्रत्यक्ष व्यवहार का कारण नहीं बनती, बल्कि वह कुछ विशिष्ट व्यवहारों और मनोवैज्ञानिक लक्षणों के लिए केवल प्रवृत्तियाँ प्रदान करती है। माता-पिता से प्राप्त जीन हमारे तंत्रिका तंत्र और शारीरिक संरचना को स्वरूप प्रदान करते हैं, जो भविष्य में व्यवहार की सीमाएं और क्षमताएं निर्धारित करते हैं। ये अनुवांशिक प्रवृत्तियाँ पश्चात पर्यावरण, शिक्षा और व्यक्तिगत अनुभवों के साथ मिलकर अंततः एक व्यक्ति के संपूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व के रूप में पूर्णतः विकसित और प्रकट होती हैं।

277. (A) सकारात्मक मनोविज्ञान और कल्याण।
व्यक्तित्व विकास पर भारतीय मनोविज्ञान का विशेष ध्यान, जिसे एक आध्यात्मिक प्रकटीकरण की प्रक्रिया माना जाता है, इसे आधुनिक सकारात्मक मनोविज्ञान और कल्याण के क्षेत्र के लिए अत्यंत प्रासंगिक निर्मित करता है। यह दृष्टिकोण केवल रोगों के उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानवीय क्षमताओं को संवर्धित करने, आंतरिक प्रसन्नता प्राप्त करने और एक सार्थक जीवन जीने पर बल देता है। आत्म-साक्षात्कार, माइंडफुलनेस और नैतिक मूल्यों का अभ्यास मानसिक स्वास्थ्य को उत्कृष्ट बनाने और जीवन में समग्र संतुष्टि लाने के लिए एक ठोस एवं व्यवहारिक आधार प्रदान करता है।

278. (B) व्यवस्थित अवलोकन पद्धति
व्यवस्थित अवलोकन पद्धति एक ऐसी शोध तकनीक है जिसमें शोधकर्ता बिना किसी हस्तक्षेप या चरों में हेरफेर किए, जो कुछ भी घटित होता है उसे सावधानीपूर्वक और वैज्ञानिक रूप से अंकित करता है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यवहार को उसके वास्तविक और प्राकृतिक वातावरण में यथावत समझना है। यह पद्धति उन सामाजिक स्थितियों में अत्यंत उपयोगी है जहाँ कृत्रिम प्रयोगशाला प्रयोग संभव नहीं होते। यह विधि मानवीय क्रियाओं के स्वाभाविक स्वरूप का विस्तृत और विश्वसनीय विवरण प्रदान करती है, जिससे व्यवहार के वास्तविक प्रतिमानों को समझना सुगम हो जाता है, जो शोध के लिए आवश्यक है।

279. (C) कान का पर्दा → अस्थिकाएं → कोकलिया
बाह्य कान से आंतरिक कान तक ध्वनि के सफल संचरण में एक निश्चित संरचनात्मक क्रम सम्मिलित होता है। सर्वप्रथम ध्वनि की लहरें कान के पर्दे या कर्णपटह झिल्ली से टकराती हैं और कंपन उत्पन्न करती हैं। इसके पश्चात, ये कंपन मध्य कान की तीन सूक्ष्म अस्थिकाओं (मैलियस, इनकस और स्टेप्स) के माध्यम से प्रवर्धित होकर अग्रसर होते हैं। अंत में, ये प्रवर्धित कंपन आंतरिक कान के कोकलिया तक पहुँचते हैं, जहाँ तरल के संचलन से रोम कोशिकाएं सक्रिय होती हैं और यांत्रिक ऊर्जा को तंत्रिका आवेगों में परिवर्तित कर देती हैं, जिससे श्रवण संभव होता है।

280. (D) सांस्कृतिक नृविज्ञान।
जब कोई मनोवैज्ञानिक यह अध्ययन करता है कि विभिन्न संस्कृतियाँ "बुद्धि" जैसी अवधारणाओं को कैसे परिभाषित और अनुभव करती हैं, तो वह मनोविज्ञान और सांस्कृतिक नृविज्ञान के बीच के प्रगाढ़ संबंध की जाँच कर रहा होता है। यह क्षेत्र हमें यह समझने में सहायता करता है कि मानवीय संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं और मूल्य पूर्णतः सार्वभौमिक नहीं होते, बल्कि वे उस समाज की परंपराओं, भाषा और परिवेश से प्रभावित होते हैं जिसमें व्यक्ति निवास करता है। यह अंतःविषय दृष्टिकोण व्यवहार की व्याख्या को केवल व्यक्तिगत स्तर से पृथक कर व्यापक सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों में प्रस्तुत करने का कार्य करता है।

281. (A) प्रतिक्रिया या क्रिया को अंजाम देते हैं।
'प्रभावक' शब्द शरीर के उन जैविक अंगों को संदर्भित करता है जो केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से प्राप्त संकेतों के उत्तर में वास्तविक प्रतिक्रिया या शारीरिक क्रिया को संपादित करते हैं। प्रभावकों में मुख्य रूप से मांसपेशियां और ग्रंथियां सम्मिलित होती हैं। जब मस्तिष्क किसी बाह्य उद्दीपक के प्रति निर्णय लेता है, तो वह प्रभावकों को विद्युत-रासायनिक निर्देश प्रेषित करता है। इसके परिणामस्वरूप मांसपेशियां संकुचित होकर गति करती हैं और ग्रंथियां आवश्यक हार्मोन या रसायनों का स्राव करती हैं। प्रभावक ही वह माध्यम हैं जिनसे हमारे आंतरिक मानसिक निर्णय बाह्य व्यवहार में परिवर्तित होते हैं।

282. (B) प्रगतिशील और आत्म-सुधारक।
मनोविज्ञान जैसे किसी भी आधुनिक विज्ञान की प्रकृति अनिवार्य रूप से प्रगतिशील और आत्म-सुधारक होती है। इसका अर्थ है कि वैज्ञानिक ज्ञान स्थिर नहीं है, बल्कि नवीन साक्ष्यों, उन्नत शोध पद्धतियों और आधुनिक तकनीकों के आगमन पर पुरातन सिद्धांतों में संशोधन किया जाता है या उन्हें परिवर्तित किया जाता है। विज्ञान व्यक्तिगत विश्वासों के स्थान पर वस्तुनिष्ठ प्रमाणों पर निर्भर करता है, जिससे यह समय के साथ अधिक सटीक और विश्वसनीय निर्मित होता जाता है। यह निरंतर चलने वाली जाँच और सुधार की प्रक्रिया ही मनोविज्ञान को एक प्रमाणिक शैक्षणिक विषय के रूप में स्थापित करती है।

283. (C) मौजूदा संचार का व्यवस्थित विश्लेषण।
विषय-वस्तु विश्लेषण पद्धति की एक प्रमुख और विशिष्ट विशेषता विद्यमान संचार साधनों, जैसे पत्रों, डायरियों, पुस्तकों या विज्ञापनों का व्यवस्थित और वैज्ञानिक विश्लेषण करना है। इसमें शोधकर्ता सामग्री में निहित विशिष्ट विषयों, शब्दों और प्रतीकों की मात्रात्मक या गुणात्मक जाँच करता है ताकि

उनके पीछे छिपे सामाजिक रुझानों या व्यक्तिगत प्रवृत्तियों को समझा जा सके। यह विधि शोधकर्ता को बिना किसी प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के ऐतिहासिक या वर्तमान संचार सामग्री के माध्यम से सार्थक निष्कर्ष निकालने में सक्षम बनाती है, जो सामाजिक और संचार अनुसंधान के लिए अत्यंत विश्वसनीय मानी जाती है।

284. (D) रंग दृष्टि और सूक्ष्म विवरण।
मानव आँख के दृष्टिपटल या रेटिना में स्थित शंकु कोशिकाओं का मुख्य कार्य तीव्र प्रकाश की स्थिति में रंग दृष्टि और वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों को पहचानना है। ये प्रकाशग्राही कोशिकाएं हमें जगत को रंगीन स्वरूप में देखने और बारीक आकृतियों में अंतर करने में सक्षम बनाती हैं। शंकु मुख्य रूप से रेटिना के मध्य भाग में केंद्रित होते हैं, जो तीक्ष्ण और स्पष्ट दृष्टि के लिए अनिवार्य है। इसके विपरीत, छड़ें केवल प्रकाश की तीव्रता के प्रति संवेदनशील होती हैं और रंग पहचानने में अक्षम होती हैं। अतः शंकु ही हमारी रंगीन और विस्तृत दृष्टि का आधार हैं।

285. (A) आत्म-ज्ञान और ज्ञानोदय।
भारतीय मनोविज्ञान की समृद्ध परंपरा में, व्यक्तित्व के विकास को प्रायः अज्ञानता की अंधकारमय अवस्था से आत्म-ज्ञान और ज्ञानोदय की प्रकाशमय अवस्था की ओर एक निरंतर गति के रूप में देखा जाता है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति अपनी सीमित पहचान और अहंकार को त्यागकर अपनी वास्तविक चेतना और ब्रह्मांड के साथ अपने संबंध को पहचानने का प्रयत्न करता है। यह विकास व्यक्ति को मानसिक अशांति और भ्रम से मुक्त कर आंतरिक स्पष्टता, शांति और परम संतोष की ओर ले जाता है। यह मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक उन्नति का एक ऐसा एकीकृत मार्ग है जो जीवन को पूर्णता प्रदान करता है।

286. (A) केवल 1
मानवीय व्यवहार की जैविक श्रृंखला में ग्राही, समायोजक और प्रभावक तीन प्रमुख तंत्र हैं जो किसी भी प्रतिक्रिया के लिए अनिवार्य आधार प्रदान करते हैं। हालाँकि, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि हार्मोन की शारीरिक विकास में कोई भूमिका नहीं है; वास्तव में, वे शारीरिक वृद्धि और मानसिक अवस्थाओं दोनों को व्यापक रूप से प्रभावित करते हैं। साथ ही, व्यवहार पूर्णतः जीन द्वारा निर्धारित नहीं होता, बल्कि यह आनुवंशिकता और पर्यावरण की निरंतर अंतःक्रिया का परिणाम है। अतः केवल तंत्रों का क्रमिक अनुक्रम ही वैज्ञानिक रूप से एक पूर्ण और सत्य कथन है।

287. (C) भाषा क्षमता पर मस्तिष्क की चोट के प्रभाव की जाँच करना।
मनोविज्ञान और प्राकृतिक विज्ञान के बीच का प्रगाढ़ संबंध तब सर्वाधिक स्पष्ट होता है जब हम मानसिक प्रक्रियाओं के शारीरिक और जैविक आधारों का अध्ययन करते हैं। भाषा क्षमता पर मस्तिष्क की क्षति के प्रभाव की वैज्ञानिक जाँच करना इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह शोध सीधे तौर पर जीव विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान से संबद्ध है, क्योंकि यह प्रदर्शित करता है कि हमारे संज्ञानात्मक कार्य पूर्णतः मस्तिष्क की भौतिक संरचना और उसके तंत्रिका मार्गों के स्वास्थ्य पर निर्भर करते हैं। इस प्रकार का वस्तुनिष्ठ अध्ययन मनोविज्ञान को एक प्रमाणिक और तथ्य-आधारित वैज्ञानिक विषय के रूप में स्थापित करता है।

288. (D) नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन
किसी एक ही रोगी में पाए जाने वाले विरल मनोवैज्ञानिक विकार की अत्यंत गहन और विस्तृत खोज के लिए नैदानिक या व्यक्ति अध्ययन पद्धति सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती है। यह विधि शोधकर्ता को उस व्यक्ति के जीवन, व्यवहार, अतीत के अनुभवों और जैविक कारकों का सर्वांगीण और सूक्ष्म विश्लेषण करने की अनुमति प्रदान करती है। चूँकि ऐसे मामले बहुत न्यून होते हैं, इसलिए सांख्यिकीय सर्वेक्षण प्रभावी नहीं होते। व्यक्ति अध्ययन से प्राप्त समृद्ध और विस्तृत जानकारी न केवल उस विकार को समझने में सहायता करती है, बल्कि भविष्य के उपचार और नवीन सिद्धांतों के निर्माण के लिए भी आधार प्रदान करती है।

289. (A) मूड, ऊर्जा स्तर और तनाव प्रतिक्रिया।
व्यक्तित्व विकास में हार्मोन की महत्वपूर्ण भूमिका इस तथ्य में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है कि अंतःस्रावी ग्रंथियों में होने वाले असंतुलन सीधे तौर पर व्यक्ति के मनोदशा, ऊर्जा स्तर और तनाव के प्रति उसकी प्रतिक्रिया को परिवर्तित कर देते हैं। हार्मोन रक्तप्रवाह के माध्यम से संपूर्ण शरीर में संचारित होते हैं और हमारे संवेगात्मक संतुलन को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ हार्मोन की न्यूनता या अधिकता व्यक्ति को असामान्य रूप से उत्तेजित, क्लांत या उदास बना सकती है। यह जैविक प्रभाव दीर्घकाल में व्यक्ति के स्वभाव को स्वरूप प्रदान कर उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का एक अभिन्न अंग बन जाता है।

290. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
केंद्रीय तंत्रिका तंत्र मानवीय व्यवहार में एक मुख्य 'समायोजक तंत्र' के रूप में अपनी भूमिका अत्यंत कुशलता से निर्वहन करता है। इसका वैज्ञानिक कारण यह है कि यह तंत्र संवेदी अंगों से आने वाली समस्त प्रकार की सूचनाओं को प्राप्त करता है, उनका सूक्ष्म प्रसंस्करण करता है और फिर प्रभावकों (मांसपेशियों और ग्रंथियों) द्वारा की जाने वाली सर्वाधिक उचित और अनुकूल प्रतिक्रिया का सटीक समन्वय करता है। समायोजक के बिना, संवेदी अनुभव और व्यवहारिक क्रियाओं के बीच कोई सार्थक सामंजस्य संभव नहीं होता। यह संपूर्ण प्रक्रिया ही व्यक्ति को अपने पर्यावरण के साथ सफलतापूर्वक सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम बनाती है।

291. (C) दैहिक दर्द का पता लगाना
दैहिक पीड़ा का पता लगाना एक प्राथमिक प्रकार की त्वचा संवेदना है जो हमारी सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। मानव त्वचा में विशिष्ट पीड़ा ग्राही या नोसिसेप्टर्स होते हैं जो हानिकारक उद्दीपकों या ऊतकों को होने वाली क्षति के प्रति तुरंत प्रतिक्रिया करते हैं। ये ग्राही मस्तिष्क को चेतावनी संकेत प्रेषित करते हैं, जिससे व्यक्ति सुरक्षात्मक कदम उठाने में सक्षम होता है। इसके विपरीत, श्रवण या घ्राण संवेदनाएं अन्य इंद्रियों से संबंधित हैं। पीड़ा की संवेदना त्वचा के माध्यम से भौतिक जगत के साथ हमारे संपर्क और शरीर की अखंडता को बनाए रखने का एक मूलभूत संवेदी माध्यम है।

292. (D) बुनियादी शोध और समस्याओं को हल करने के लिए शोध का अनुप्रयोग दोनों।
एक आधुनिक वैज्ञानिक विषय के रूप में मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र में बुनियादी शोध और व्यवहारिक समस्याओं को हल करने के लिए उन सिद्धांतों का अनुप्रयोग, दोनों ही समान रूप से सम्मिलित हैं। बुनियादी अनुसंधान जहाँ मानवीय व्यवहार, अधिगम, स्मृति और प्रत्यक्षीकरण के मूलभूत नियमों को समझने पर ध्यान केंद्रित करता है, वहीं अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान इन वैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग और व्यक्तिगत विकास जैसे क्षेत्रों में आने वाली वास्तविक समस्याओं के समाधान हेतु करता है। यह दोहरा दृष्टिकोण मनोविज्ञान को एक सैद्धांतिक रूप से समृद्ध और व्यवहारिक रूप से उपयोगी विषय निर्मित करता है।

293. (A) व्यवस्थित व्यवहार आनुवंशिकी
व्यवहार के अनुवांशिक आधार का अध्ययन मुख्य रूप से व्यवस्थित व्यवहार आनुवंशिकी के वैज्ञानिक क्षेत्र में किया जाता है। यह शाखा यह जाँच करती है कि माता-पिता से विरासत में प्राप्त जीन और गुणसूत्र मानवीय व्यवहार, बुद्धि, और व्यक्तित्व के विभिन्न लक्षणों को किस प्रकार और किस सीमा तक प्रभावित करते हैं। इसमें जुड़वा बच्चों और दत्तक बच्चों के अध्ययनों के माध्यम से आनुवंशिकता और पर्यावरण के पृथक-पृथक प्रभावों को समझने का प्रयास किया जाता है। यह क्षेत्र स्पष्ट करता है कि हमारे व्यवहार के पीछे एक ठोस जैविक ब्लूप्रिंट होता है जो हमारी क्षमताओं और प्रवृत्तियों को निर्देशित करता है।

294. (B) यांत्रिक कंपनों को तंत्रिका आवेगों में बदलना।
श्रवण की जटिल प्रक्रिया में कोकलिया का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह यांत्रिक कंपनों को विद्युत-रासायनिक संकेतों या तंत्रिका आवेगों में परिवर्तित करने के लिए उत्तरदायी है। कोकलिया आंतरिक कान में स्थित एक तरल से भरी घोंघे जैसी संरचना है। जब मध्य कान की अस्थिकाओं से कंपन कोकलिया तक पहुँचते हैं, तो इसके भीतर की सूक्ष्म रोम कोशिकाएं सक्रिय हो जाती हैं। ये कोशिकाएं भौतिक ऊर्जा को तंत्रिका संकेतों में पारांतरित करती हैं जिन्हें मस्तिष्क ध्वनि के रूप में समझ सकता है। कोकलिया के बिना, भौतिक ध्वनि को मानसिक अनुभव में परिवर्तित करना पूर्णतः असंभव होता।

295. (C) आनुभविक साक्ष्यों द्वारा समर्थित हों।
एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की प्रकृति के लिए यह अनिवार्य शर्त है कि इसके समस्त सिद्धांत और निष्कर्ष आनुभविक साक्ष्यों द्वारा पूर्णतः समर्थित होने चाहिए। इसका अर्थ है कि मनोवैज्ञानिक ज्ञान केवल व्यक्तिगत राय, अंतर्ज्ञान या दार्शनिक तर्क पर आधारित नहीं हो सकता। वैज्ञानिक सिद्धांतों को वस्तुनिष्ठ अवलोकन, प्रयोग और व्यवस्थित आँकड़े संग्रह के माध्यम से बार-बार परखा और सत्यापित किया जाना चाहिए। यह आनुभविक आधार ही मनोविज्ञान को अन्य कला विषयों से पृथक करता है और इसे मानवीय व्यवहार की व्याख्या करने के लिए एक प्रमाणिक और विश्वसनीय आधुनिक विज्ञान निर्मित करता है।

296. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
मनोविज्ञान और अन्य विज्ञानों के बीच संबंधों के विषय में यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि समाजशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञानों के साथ इसका कोई संबंध नहीं है; वास्तव में, व्यवहार को समझने के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों का अध्ययन अनिवार्य है। वहीं, यह पूर्णतः सत्य है कि जीव विज्ञान जैसे प्राकृतिक विज्ञानों के साथ मनोविज्ञान का प्रगाढ़ और अटूट संबंध है। व्यवहार का एक सुदृढ़ शारीरिक आधार होता है जिसमें मस्तिष्क, तंत्रिका तंत्र और जैविक प्रणालियाँ सम्मिलित हैं। अतः मनोविज्ञान एक अंतःविषय विज्ञान है जो प्राकृतिक और सामाजिक दोनों क्षेत्रों से महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त करता है।

297. (A) उद्दीपक-प्रतिक्रिया अनुक्रम में भूमिका।
ग्राही और प्रभावक तंत्र के बीच का मुख्य अंतर उद्दीपक-प्रतिक्रिया अनुक्रम में उनकी विशिष्ट भूमिका का है। ग्राही तंत्र का कार्य बाह्य या आंतरिक पर्यावरण से आने वाले उद्दीपकों का पता लगाना और उन्हें सूचना के रूप में ग्रहण करना है, जो अनुक्रम की प्रथम कड़ी है। इसके विपरीत, प्रभावक तंत्र (जैसे मांसपेशियां और ग्रंथियां) का कार्य तंत्रिका तंत्र से निर्देश प्राप्त होने के पश्चात वास्तविक प्रतिक्रिया या क्रिया को संपादित करना है, जो अनुक्रम का अंतिम चरण है। इस प्रकार, एक सूचना प्राप्त करने का माध्यम है और दूसरा उस सूचना पर सक्रिय कार्य करने का साधन है।

298. (B) चेतना की प्रकृति।
भारतीय मनोविज्ञान का ऐतिहासिक दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि यह मुख्य रूप से चेतना की वास्तविक प्रकृति को समझने से गहराई से संबद्ध है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों और दार्शनिक परंपराओं ने सहस्रों वर्षों तक मन, बुद्धि और अहंकार से परे चेतना के विभिन्न स्तरों का सूक्ष्म अध्ययन किया है। इसका उद्देश्य केवल व्यवहार का बाह्य अवलोकन नहीं, बल्कि आंतरिक जागरुकता और आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करना है। यह दृष्टिकोण मानवीय अस्तित्व को आध्यात्मिक और मानसिक एकता के रूप में देखता है, जहाँ चेतना को समझने से ही जीवन के दुखों का समाधान संभव माना गया है।

299. (C) वैज्ञानिक नियंत्रण समूह
एक प्रयोगात्मक अध्ययन में वह समूह जिसे कोई विशेष उपचार, हस्तक्षेप या चरों का हेरफेर प्राप्त नहीं होता है, उसे वैज्ञानिक नियंत्रण समूह कहा जाता है। इस समूह की मुख्य भूमिका तुलना के लिए एक मानक आधार प्रदान करना है। शोधकर्ता इस समूह के परिणामों की तुलना उस प्रयोगात्मक समूह से करते हैं जिसे उपचार प्रदान किया गया है। इससे यह निर्धारित करना संभव हो पाता है कि क्या देखा गया प्रभाव वास्तव में स्वतंत्र चर के कारण हुआ है या किसी अन्य सामान्य कारक के कारण। नियंत्रण समूह वैज्ञानिक शोध की वस्तुनिष्ठता और प्रमाणिकता सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य है।

300. (D) पेशीय परितारिका।
आँख की वह विशिष्ट संरचना जो पुतली के आकार को सक्रिय रूप से नियंत्रित करती है, उसे पेशीय परितारिका या आईरिस कहा जाता है। यह पुतली को विस्तृत कर या संकुचित कर

आँख के भीतर प्रवेश करने वाले प्रकाश की मात्रा का सटीक नियमन करती है। तीव्र प्रकाश में यह पुतली को संकुचित करती है ताकि दृष्टिपटल सुरक्षित रहे, और मंद प्रकाश में यह इसे विस्तृत कर देती है ताकि अधिक प्रकाश अंदर जा सके और हम स्पष्ट देख सकें। परितारिका का यह पेशीय नियंत्रण हमारी आँखों को विभिन्न प्रकाश स्थितियों के अनुकूल बनाने और स्पष्ट दृश्य प्रत्यक्षीकरण सुनिश्चित करने में एक अनिवार्य भूमिका निर्वहन करता है।

अध्याय 02

अवधान, प्रत्यक्षीकरण एवं अधिगम

1. मनोविज्ञान में अवधान को निम्नलिखित में से कौन सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) संवेदी जानकारी को दीर्घकालिक स्मृति में कूटबद्ध करने की प्रक्रिया।
(B) अन्य पर्यावरणीय इनपुट को छानकर हटाते हुए विशिष्ट उद्दीपकों पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) प्रदर्शन की गति को कम किए बिना एक साथ कई कार्य करना।
(D) किसी विशिष्ट उद्दीपक के प्रति तंत्रिका तंत्र में शारीरिक उत्तेजना की स्थिति।

2. प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियमों के अनुसार, एक-दूसरे के निकट स्थित वस्तुओं को एक समूह के रूप में देखने की प्रवृत्ति को क्या कहा जाता है?
(A) सामीप्य का नियम
(B) समानता का नियम
(C) पूर्ति का नियम
(D) निरंतरता का नियम

3. अधिगम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अधिगम व्यवहार में एक अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है जो अनुभव के परिणामस्वरूप होता है।
कथन II: परिपक्वता, थकान या दवाओं के कारण व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों को अधिगम का उदाहरण माना जाता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

4. निम्नलिखित में से कौन शाब्दिक अधिगम में प्रयुक्त होने वाली विधि का एक उदाहरण है?
(A) रूपण
(B) श्रृंखला निर्माण
(C) व्यवस्थित विसंवेदीकरण
(D) युग्मित-साहचर्य अधिगम

5. अवधान का निम्नलिखित में से कौन-सा निर्धारक एक आंतरिक कारक माना जाता है?
(A) उद्दीपक की भौतिक तीव्रता।
(B) उद्दीपक की नवीनता।
(C) व्यक्ति के आंतरिक उद्देश्य।
(D) उद्दीपक का स्थानिक आयाम।

6. हवाई अड्डे पर एक सुरक्षा गार्ड को सूटकेस में हथियार की धुंधली छवि के लिए स्क्रीन की निगरानी करनी चाहिए। संकेत संसूचन सिद्धांत के संदर्भ में, हथियार मौजूद होने पर उसकी सही पहचान करना क्या कहलाता है?
(A) चूक
(B) हिट
(C) मिथ्या सचेत
(D) सही अस्वीकृति

7. निम्नलिखित में से कौन-सा गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तावित प्रत्यक्षणात्मक संगठन का नियम नहीं है?
(A) समान नियति का नियम
(B) प्रैग्नैन्ज़ का नियम
(C) समानता का नियम
(D) प्रभाव का नियम

8. पावलव के प्रयोगों में, भोजन के साथ युग्मित होने के बाद घंटी अंततः अपने आप लार टपकाने की अनुक्रिया उत्पन्न करने लगी। इस संदर्भ में, घंटी क्या है?
(A) अनुबंधित उद्दीपक
(B) अननुबंधित उद्दीपक
(C) अननुबंधित अनुक्रिया
(D) अनुबंधित अनुक्रिया

9. शाब्दिक अधिगम सामग्रियों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) अर्थपूर्ण सामग्रियों को सामान्यतः अर्थहीन सामग्रियों की तुलना में अधिक आसानी से सीखा जाता है।
(B) CVC ट्रिग्राम कम अर्थपूर्णता वाली सामग्रियों के उदाहरण हैं।
(C) सामग्री की लंबाई का सीखने की गति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(D) अपरिचित या दुर्लभ शब्दों की तुलना में परिचित शब्दों को तेजी से सीखा जाता है।

10. कौन-सी अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि क्यों एक बच्चा जो सफेद खरगोश से डरता है, वह सफेद सांता क्लॉज की दाढ़ी से भी डर सकता है?
(A) सामान्यीकरण
(B) विभेदन
(C) विलोपन
(D) स्वतः पुनर्प्राप्ति

11. अवधान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. विभाजित अवधान से तात्पर्य एक लंबी अवधि तक एक ही कार्य पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता से है।
II. चयनात्मक अवधान पर्यावरण में किसी विशेष वस्तु पर एक निश्चित अवधि के लिए ध्यान केंद्रित करने की प्रक्रिया है।
III. अवधान के जैविक आधार में रेटिकुलर एक्टिवेटिंग सिस्टम और फ्रंटल लोब्स जैसी संरचनाएं शामिल होती हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

12. फाई-परिघटना, जहां एक के बाद एक टिमटिमाती दो या दो से अधिक स्थिर बत्तियां एक ही चलती हुई बत्ती के रूप में महसूस होती हैं, किसका उदाहरण है?
(A) वास्तविक गति प्रत्यक्षण
(B) आभासी गति प्रत्यक्षण
(C) स्वतःगतिक प्रभाव
(D) गहराई प्रत्यक्षण

13. बी.एफ. स्किनर के अनुसार, वांछित व्यवहार स्थापित करने और बनाए रखने का सबसे प्रभावी तरीका क्या है?
(A) अवांछित व्यवहारों के दंड के माध्यम से
(B) अवलोकन और मॉडलिंग के माध्यम से
(C) निरंतर सुदृढ़ीकरण के माध्यम से
(D) वांछित व्यवहारों के नकारात्मक सुदृढ़ीकरण के माध्यम से

14. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): संकेत संसूचन सिद्धांत में, किसी व्यक्ति का अनुक्रिया पक्षपात (β) अनिश्चितता की स्थिति में उनके निर्णय लेने को प्रभावित कर सकता है।
कारण (R): एक उदार अनुक्रिया पक्षपात (कम β) का अर्थ है कि प्रेक्षक द्वारा 'हाँ' कहने की संभावना अधिक होती है, जिससे अधिक हिट्स होते हैं लेकिन अधिक मिथ्या सचेत भी होते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

15. 'कॉकटेल पार्टी प्रभाव', जहाँ कोई शोरगुल वाले कमरे में भी एक ही बातचीत पर ध्यान केंद्रित कर सकता है, किसका उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) चयनात्मक अवधान
(B) विभाजित अवधान
(C) सतत अवधान
(D) अवधान पलक

16. कौन-सा प्रत्यक्षणात्मक नियम यह सबसे अच्छी तरह से समझाता है कि क्यों हम एक ही दिशा में उड़ते हुए पक्षियों के झुंड को एक ही समूह के रूप में देखते हैं?
(A) सामीप्य का नियम
(B) समान नियति का नियम
(C) पूर्ति का नियम
(D) समानता का नियम

17. नैमित्तिक अनुबंधन में, वह उद्दीपक जिसे किसी व्यवहार की संभावना बढ़ाने के लिए व्यवहार के बाद हटा दिया जाता है, क्या कहलाता है?
(A) सकारात्मक सुदृढ़ीकरण
(B) नकारात्मक सुदृढ़ीकरण
(C) सकारात्मक दंड
(D) नकारात्मक दंड

18. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अधिगम अवधारणा)
P. प्रभाव का नियम
Q. अवव्यय अधिगम
R. शास्त्रीय अनुबंधन
S. नैमित्तिक अनुबंधन
सूची II: (सिद्धांतकार)
1. इवान पावलव
2. एडवर्ड थार्नडाइक
3. बी.एफ. स्किनर
4. एडवर्ड टोलमैन
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

19. शाब्दिक अधिगम की वह विधि जिसमें प्रतिभागी को वस्तुओं की सूची उसी क्रम में सीखनी होती है जिस क्रम में वे प्रस्तुत की गई हैं, क्या कहलाती है?
(A) मुक्त पुनरावाहन
(B) युग्मित-साहचर्य अधिगम
(C) क्रमिक अधिगम
(D) संकेतित पुनरावाहन

20. मस्तिष्क की कौन-सी संरचना उत्तेजना और अवधान के बुनियादी जैविक नियमन में महत्वपूर्ण रूप से शामिल है?
(A) अनुमस्तिष्क
(B) हिप्पोकैम्पस
(C) एमिग्डाला
(D) रेटिकुलर एक्टिवेटिंग सिस्टम

21. किसी परिचित धुन को पहचानने की क्षमता, भले ही वह अलग-अलग वाद्ययंत्रों द्वारा या अलग सुर में बजाई गई हो, किसका उदाहरण है?
(A) चित्र प्रत्यक्षण
(B) गहराई प्रत्यक्षण
(C) स्वरूप पहचान
(D) संकेत संसूचन

22. एक छात्र सोडियम के लिए रासायनिक प्रतीक 'Na' और पोटेशियम के लिए 'K' के बीच अंतर करना सीखता है। यह किसका उदाहरण है?
(A) विभेदन
(B) सामान्यीकरण
(C) विलोपन
(D) स्वतः पुनर्प्राप्ति

23. निम्नलिखित में से कौन अवधान का निर्धारक नहीं है?
(A) उद्दीपक का आकार
(B) उद्दीपक की पुनरावृत्ति
(C) उद्दीपक का रंग
(D) उद्दीपक की अव्यक्त सामग्री

24. शास्त्रीय अनुबंधन के निम्नलिखित चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. अर्जन
II. स्वतः पुनर्प्राप्ति
III. विलोपन
(A) I, III, II
(B) II, I, III
(C) III, II, I
(D) I, II, III

25. भूलभुलैया में एक चूहा बिना किसी इनाम के भूलभुलैया का खाका सीख लेता है, लेकिन इस सीख का प्रदर्शन केवल तभी करता है जब इनाम दिया जाता है। टोलमैन द्वारा अध्ययन की गई इस परिघटना को क्या कहा जाता है?
(A) प्रेक्षणात्मक अधिगम
(B) अंतर्दृष्टि अधिगम
(C) अव्यक्त अधिगम
(D) अभिक्रमित अधिगम

26. चयनात्मक अवधान का कौन-सा मॉडल यह प्रस्तावित करता है कि आने वाली जानकारी के लिए फिल्टर 'पूर्ण या शून्य' नहीं है, बल्कि एक क्षीणक है जो अनपेक्षित उद्दीपकों को कमजोर कर देता है?
(A) ब्रॉडबेंट का फिल्टर मॉडल
(B) ट्रिसमैन का क्षीणन मॉडल
(C) ड्यूश और ड्यूश का विलंबित चयन मॉडल
(D) नीसर का संश्लेषण मॉडल

27. एकनेत्री गहराई संकेत जिसमें समानांतर रेखाएं दूरी में एक बिंदु पर मिलती हुई प्रतीत होती हैं, कहलाती है:
(A) बनावट प्रवणता
(B) अंतःस्थिति
(C) सापेक्ष आकार
(D) रैखिक परिप्रेक्ष्य

28. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अभिक्रमित अधिगम में, जानकारी को छोटे, क्रमिक चरणों में प्रस्तुत किया जाता है जिन्हें फ्रेम कहा जाता है।
कथन II: अभिक्रमित अधिगम शिक्षार्थी को तत्काल फीडबैक प्रदान नहीं करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

29. क्लार्क हल का अधिगम का सिद्धांत मुख्य रूप से क्या है?
(A) संज्ञानात्मक सिद्धांत
(B) सामाजिक अधिगम सिद्धांत
(C) अंतर्नोद-न्यूनता सिद्धांत
(D) क्षेत्र सिद्धांत

30. शाब्दिक अधिगम में, किसी सूची के प्रारंभ और अंत की वस्तुओं को बीच की वस्तुओं की तुलना में बेहतर याद रखने की प्रवृत्ति को क्या कहा जाता है?
(A) क्रमिक स्थिति प्रभाव
(B) वॉन रेस्टोर्फ प्रभाव
(C) ज़ीगार्निक प्रभाव
(D) गार्सिया प्रभाव

31. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): ब्रॉडबेंट के मॉडल के अनुसार, चयनात्मक अवधान प्रसंस्करण के प्रारंभिक चरण में कार्य करता है।
कारण (R): मॉडल एक संवेदी फिल्टर प्रस्तावित करता है जो भौतिक विशेषताओं के आधार पर जानकारी को गुजरने देता है, और अर्थ संबंधी विश्लेषण से पहले अनपेक्षित जानकारी को पूरी तरह से रोक देता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

32. अपूर्ण आकृतियों को पूर्ण के रूप में देखने के लिए रिक्त स्थानों को भरने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) समानता
(B) पूर्ति
(C) सामीप्य

(D) निरंतरता

33. निम्नलिखित में से कौन थार्नडाइक के अधिगम के सिद्धांत में एक प्रमुख अवधारणा का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) संज्ञानात्मक मानचित्र
(B) अननुबंधित प्रतिवर्त
(C) प्रभाव का नियम
(D) सुदृढ़ीकरण की अनुसूचियां

34. हरमन एबिंगहास द्वारा किसका अध्ययन करने के लिए CVC ट्रिग्राम के उपयोग का बीड़ा उठाया गया था?
(A) अवधान विस्तार
(B) प्रत्यक्षणात्मक संगठन
(C) शास्त्रीय अनुबंधन
(D) शाब्दिक अधिगम और स्मृति

35. संकेत संसूचन सिद्धांत में प्राचल 'डी-प्राइम' किसका माप है?
(A) प्रेक्षक का अनुक्रिया पक्षपात
(B) मिथ्या सचेत की संख्या
(C) संकेत के प्रति प्रेक्षक की संवेदनशीलता
(D) हिट होने की संभावना

36. स्थिर छवियों के अनुक्रम को निरंतर गति के रूप में देखना, जैसा कि फिल्म में होता है, किस सिद्धांत पर आधारित है?
(A) स्वतःगतिक प्रभाव
(B) स्ट्रोबोस्कोपिक गति
(C) गति लंबन
(D) रेटिनल असमानता

37. अधिगम के सिद्धांतों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. टोलमैन के सिद्धांत ने अधिगम में उद्देश्य और संज्ञान की भूमिका पर जोर दिया।
II. हल का सिद्धांत बिना किसी मध्यवर्ती चर के एक कड़ाई से S-R सिद्धांत है।
III. थार्नडाइक के प्रयोगों में अक्सर पहेली बक्सों में बिल्लियाँ शामिल होती थीं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

38. किस प्रकार का अभिक्रमित अधिगम शिक्षार्थियों को उन अनुभागों को छोड़ने की अनुमति देता है जिनमें उन्होंने महारत हासिल कर ली है और त्रुटि करने वालों के लिए उपचारात्मक लूप प्रदान करता है?
(A) रेखीय प्रोग्रामिंग
(B) जननात्मक प्रोग्रामिंग
(C) मैथेटिक्स प्रोग्रामिंग
(D) शाखीय प्रोग्रामिंग

39. जब अनुबंधित उद्दीपक को अननुबंधित उद्दीपक के बिना बार-बार प्रस्तुत किया जाता है, तो अनुबंधित अनुक्रिया का धीरे-धीरे कमजोर होना और गायब होना क्या कहलाता है?
(A) अर्जन
(B) स्वतः पुनर्प्राप्ति
(C) विभेदन
(D) विलोपन

40. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (प्रत्यक्षणात्मक संकेत)
P. रेटिनल असमानता
Q. रैखिक परिप्रेक्ष्य
R. अंतःस्थिति
S. अभिसरण
सूची II: (संकेत का प्रकार)
1. एकनेत्री संकेत
2. द्विनेत्री संकेत
(A) P-1, Q-1, R-2, S-2
(B) P-2, Q-1, R-1, S-2
(C) P-1, Q-2, R-1, S-2
(D) P-2, Q-2, R-2, S-1

41. निम्नलिखित में से किसे उद्दीपक से संबंधित 'प्रत्यक्षण का निर्धारक' माना जाता है?
(A) अतीत के अनुभव
(B) अभिप्रेरणा
(C) उद्दीपक तीव्रता
(D) संवेगात्मक स्थिति

42. स्किनर के ढांचे में, एक स्लॉट मशीन सुदृढ़ीकरण की किस अनुसूची पर भुगतान करती है?
(A) निश्चित-अनुपात
(B) चर-अनुपात
(C) निश्चित-अंतराल
(D) चर-अंतराल

43. शाब्दिक विभेदन अधिगम के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) एक ऐसी विधि जो मुक्त पुनरावाहन तकनीकों के उपयोग पर बहुत अधिक निर्भर करती है।
(B) शाब्दिक कार्यों के भीतर उद्दीपक सामान्यीकरण के समान प्रक्रिया।
(C) एक कार्य जो तब आसान होता है जब शाब्दिक उद्दीपक अत्यधिक भिन्न होते हैं।
(D) विभिन्न समान शाब्दिक उद्दीपकों के प्रति विशिष्ट रूप से अनुक्रिया करना सीखना।

44. चयनात्मक श्रवण अवधान का जैविक आधार अक्सर किसके कामकाज से जुड़ा होता है?
(A) विज़ुअल कॉर्टेक्स
(B) मोटर कॉर्टेक्स

(C) हिप्पोकैम्पस
(D) सुपीरियर ओलिवरी न्यूक्लियस और ऑडिटरी कॉर्टेक्स

45. 'आकृति-पृष्ठभूमि' संबंध मनोविज्ञान के किस क्षेत्र में एक मौलिक सिद्धांत है?
(A) प्रत्यक्षणात्मक संगठन
(B) अधिगम सिद्धांत
(C) संकेत संसूचन सिद्धांत
(D) शाब्दिक अधिगम

46. हल के सिद्धांत के अनुसार, sEr = sHr x D. यहाँ sEr का क्या अर्थ है?
(A) आदत शक्ति
(B) प्रतिक्रिया विभव
(C) अंतर्नोद
(D) उद्दीपक तीव्रता

47. शाब्दिक अधिगम की वह विधि जिसमें प्रतिभागी किसी भी क्रम में वस्तुओं को याद कर सकता है, कहलाती है:
(A) क्रमिक अधिगम
(B) अनुक्रमिक अधिगम
(C) मुक्त पुनरावाहन
(D) युग्मित-साहचर्य अधिगम

48. एक शिक्षक अप्रत्याशित समय पर छात्रों का सरप्राइज टेस्ट लेता है। यह सुदृढ़ीकरण की किस अनुसूची का उदाहरण है?
(A) निश्चित-अनुपात
(B) चर-अनुपात
(C) निश्चित-अंतराल
(D) चर-अंतराल

49. ड्यूश और ड्यूश के चयनात्मक अवधान मॉडल को 'विलंबित चयन' मॉडल के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह प्रस्तावित करता है कि:
(A) फिल्टर संवेदी पंजीकरण के बाद लेकिन प्रत्यक्षणात्मक विश्लेषण से पहले होता है।
(B) चयन पूरी तरह से उद्दीपक की भौतिक विशेषताओं पर आधारित होता है।
(C) किसी भी चयन से पहले सभी आने वाले उद्दीपकों का अर्थ के लिए पूरी तरह से विश्लेषण किया जाता है।
(D) अवधान की बाधा अनुक्रिया प्रणाली में स्थित होती है, न कि प्रत्यक्षणात्मक प्रणाली में।

50. केवल एक आँख का उपयोग करके गहराई और दूरी का प्रत्यक्षण किसके कारण संभव है?
(A) एकनेत्री संकेत
(B) रेटिनल असमानता
(C) अभिसरण
(D) द्विनेत्री संकेत

51. निम्नलिखित सिद्धांतकारों को अधिगम सिद्धांत में उनके प्रमुख योगदान के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. इवान पावलव
II. एडवर्ड थार्नडाइक
III. बी.एफ. स्किनर
(A) II, I, III
(B) I, II, III
(C) III, I, II
(D) II, III, I

52. प्रत्यक्षण की प्रक्रिया में स्वरूप पहचान का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) संवेदी जानकारी को स्थिर और सुसंगत रूपों में व्यवस्थित करना।
(B) किसी वस्तु या घटना को स्मृति में मौजूद जानकारी के साथ सुमेलित करके उसे अर्थ प्रदान करना।
(C) एक दृश्य परिदृश्य को आकृति और पृष्ठभूमि में अलग करना।
(D) किसी धुंधले उद्दीपक की उपस्थिति या अनुपस्थिति का पता लगाना।

53. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): शास्त्रीय अनुबंधन में, उद्दीपक विभेदन एक CS और अन्य समान उद्दीपकों के बीच अंतर करने की क्षमता है।
कारण (R): विभेदन प्रशिक्षण में CS को US के साथ युग्मित करना शामिल है, जबकि अन्य समान उद्दीपकों को US के बिना प्रस्तुत किया जाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

54. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा हम एक निरंतर या अपरिवर्तित उद्दीपक के प्रति कम संवेदनशील हो जाते हैं, कहलाती है:
(A) संकेत संसूचन
(B) संवेदी अनुकूलन
(C) प्रत्यक्षणात्मक स्थिरता
(D) चयनात्मक अवधान

55. हल के सूत्र sEr = sHr x D x K में, 'K' क्या दर्शाता है?
(A) अंतर्नोद
(B) आदत शक्ति
(C) प्रोत्साहन अभिप्रेरणा
(D) प्रतिक्रिया विभव

56. शाब्दिक अधिगम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सामग्री की अर्थपूर्णता अधिगम की दर का एक प्रमुख

निर्धारक है।
II. युग्मित-साहचर्य अधिगम में वस्तुओं के युग्मों को सीखना शामिल है, जैसे कि एक उद्दीपक और एक अनुक्रिया।
III. सामान्यीकरण तब होता है जब एक शाब्दिक उद्दीपक के प्रति सीखी गई अनुक्रिया किसी समान उद्दीपक के प्रति भी की जाती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

57. स्वरुप पहचान का टेम्पलेट-मैचिंग सिद्धांत हमारी किस क्षमता को स्पष्ट करने में सबसे अधिक कठिनाई महसूस करेगा?
(A) एक विशिष्ट, मानकीकृत फॉन्ट को पहचानना।
(B) किसी मित्र द्वारा लिखे गए 'A' को कई अलग-अलग रूपों में पहचानना।
(C) सरल ज्यामितीय आकृतियों की पहचान करना।
(D) एक चाबी को सही ताले से मिलाना।

58. गहराई प्रत्यक्षण के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा एक द्विनेत्री संकेत है?
(A) रेटिनल असमानता
(B) बनावट प्रवणता
(C) गति लंबन
(D) रैखिक परिप्रेक्ष्य

59. एक छात्र को उसके द्वारा पूरे किए गए प्रत्येक पांच असाइनमेंट के लिए 100 रुपये दिए जाते हैं। यह सुदृढ़ीकरण की किस अनुसूची का उदाहरण है?
(A) निश्चित-अनुपात
(B) चर-अनुपात
(C) निश्चित-अंतराल
(D) चर-अंतराल

60. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधान अवधारणा)
P. फिल्टर सिद्धांत
Q. क्षीणन सिद्धांत
R. विलंबित चयन सिद्धांत
S. संकेत संसूचन सिद्धांत

सूची II: (संबद्ध विचार)
1. अनुक्रिया पक्षपात
2. चयन से पहले अर्थ संबंधी विश्लेषण
3. पूर्ण-या-शून्य फिल्टर
4. अनपेक्षित संकेतों का कमजोर होना

(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

61. विश्राम की अवधि के बाद पहले से विलुप्त हो चुकी अनुबंधित अनुक्रिया का पुनः प्रकट होना क्या कहलाता है?
(A) अर्जन
(B) सामान्यीकरण
(C) स्वतः पुनर्प्राप्ति
(D) विभेदन

62. समानता का गेस्टाल्ट नियम क्या कहता है?
(A) पास की वस्तुओं को एक ही समूह से संबंधित माना जाता है।
(B) एक पूर्ण और समग्र मानसिक वस्तु बनाने के लिए रिक्त स्थान भरे जाते हैं।
(C) टूटे हुए पैटर्न के बजाय सुचारु और निरंतर पैटर्न को प्राथमिकता दी जाती है।
(D) समान दिखने वाले तत्वों को एक समूह के हिस्से के रूप में देखा जाता है।

63. कौन-सा सिद्धांतकार 'संज्ञानात्मक मानचित्र' और 'अव्यक्त अधिगम' की अवधारणाओं से सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) बी.एफ. स्किनर
(B) क्लार्क हल
(C) एडवर्ड टोलमैन
(D) इवान पावलव

64. क्रमिक अधिगम की विधि के माध्यम से निम्नलिखित में से किसे सीखना सबसे कठिन होगा?
(A) तुकबंदी वाले शब्दों की एक सूची।
(B) वर्णमाला।
(C) असंबद्ध CVC ट्रिग्राम की एक सूची।
(D) एक छोटी, अर्थपूर्ण कविता।

65. अवधान का जैविक आधार, विशेष रूप से अवधान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करने की क्षमता, दृढ़ता से किसके साथ जुड़ी हुई है?
(A) मेडुला ऑब्लांगेटा
(B) पोन्स
(C) प्रमस्तिष्क वल्कुट का पैरिएटल लोब
(D) प्रमस्तिष्क वल्कुट का ओसीसीपिटल लोब

66. जब आप रेल की पटरी को देखते हैं, तो स्लीपर करीब की तुलना में दूर अधिक करीब दिखाई देते हैं। यह किस गहराई संकेत का उदाहरण है?
(A) अंतःस्थिति
(B) सापेक्ष आकार
(C) बनावट प्रवणता
(D) छायांकन और प्रकाश

67. स्किनर की शब्दावली में, कोई भी परिणाम जो पूर्ववर्ती व्यवहार की आवृत्ति को कम करता है, वह क्या है?
(A) सुदृढ़क
(B) दंडक

(C) विभेदक उद्दीपक
(D) अनुबंधित उद्दीपक

68. प्रत्यक्षण की 'प्रकृति' इस विचार को संदर्भित करती है कि प्रत्यक्षण है:
(A) संवेदी डेटा प्राप्त करने की एक निष्क्रिय प्रक्रिया।
(B) संवेदी डेटा को व्यवस्थित करने और व्याख्या करने की एक सक्रिय प्रक्रिया।
(C) पूरी तरह से उद्दीपक के भौतिक गुणों द्वारा निर्धारित।
(D) संवेदना के समान।

69. रेखीय अभिक्रमित अधिगम किसके कार्य से सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) बी.एफ. स्किनर
(B) नॉर्मन क्राउडर
(C) एडवर्ड टोलमैन
(D) इवान पावलव

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): टोलमैन के अनुसार, अधिगम बिना किसी स्पष्ट सुदृढ़ीकरण के हो सकता है।
कारण (R): अव्यक्त अधिगम पर उनके प्रयोगों ने दिखाया कि चूहों ने बिना इनाम दिए भी भूलभुलैया के 'संज्ञानात्मक मानचित्र' बना लिए थे, और इस अधिगम का प्रदर्शन केवल तभी किया गया जब इनाम दिया गया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

71. संकेत संसूचन सिद्धांत में, 'मिथ्या सचेत' तब होता है जब प्रेक्षक रिपोर्ट करता है कि:
(A) संकेत मौजूद है, और वह वास्तव में है।
(B) संकेत अनुपस्थित है, लेकिन वह मौजूद है।
(C) संकेत मौजूद है, लेकिन वह अनुपस्थित है।
(D) संकेत अनुपस्थित है, और वह वास्तव में है।

72. दो प्रतिच्छेदी रेखाओं द्वारा निर्मित दो अलग-अलग कोणों के बजाय एक 'V' आकार देखना गेस्टाल्ट के किस सिद्धांत का उदाहरण है?
(A) पूर्ति
(B) समानता
(C) निरंतरता
(D) सामीप्य

73. थार्नडाइक के प्रभाव के नियम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. संतोषजनक परिणामों वाले व्यवहारों के दोहराए जाने की संभावना अधिक होती है।
II. असंतोषजनक परिणामों वाले व्यवहारों के दोहराए जाने की संभावना कम होती है।
III. यह नियम केवल मानव अधिगम पर लागू होता है, पशु अधिगम पर नहीं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

74. शाब्दिक अधिगम में एक स्थिति से नई, समान स्थिति में अधिगम का स्थानांतरण कहलाता है:
(A) विभेदन
(B) सामान्यीकरण
(C) युग्मित-साहचर्य
(D) प्रतिगामी अवरोध

75. पल्विनार न्यूक्लियस, जो ________ में स्थित होता है, ध्यान भटकाने वाली जानकारी को छानने और अवधान को निर्देशित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
(A) थैलेमस
(B) हाइपोथैलेमस
(C) एमिग्डाला
(D) अनुमस्तिष्क

76. रेटिना की छवि में परिवर्तन के बावजूद किसी भौतिक वस्तु को स्थिर गुणों (जैसे, आकार, आकृति, रंग) के रूप में देखने की क्षमता को क्या कहा जाता है?
(A) प्रत्यक्षणात्मक भ्रम
(B) प्रत्यक्षणात्मक स्थिरता
(C) प्रत्यक्षणात्मक समुच्चय
(D) प्रत्यक्षणात्मक संगठन

77. वांछित व्यवहार के क्रमिक सन्निकटन को सुदृढ़ करने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) श्रृंखला निर्माण
(B) रूपण
(C) फेडिंग
(D) मॉडलिंग

78. निम्नलिखित में से कौन शाब्दिक अधिगम की विधि नहीं है?
(A) मुक्त पुनरावाहन
(B) क्रमिक पुनरावाहन
(C) युग्मित-साहचर्य अधिगम
(D) अव्यक्त अधिगम

79. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (गेस्टाल्ट नियम)
P. सामीप्य
Q. समानता
R. पूर्ति

S. निरंतरता

सूची II: (उदाहरण)

1. ( ) को एक वृत्त के रूप में देखना
2. || || || को दो रेखाओं के तीन समूहों के रूप में देखना
3. >>>>> को एक समूह के रूप में देखना
4. एक घुमावदार सड़क को एक ही सड़क के रूप में देखना

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

80. नीसर के अनुसार, प्रत्यक्षण प्रत्याशा, सूचना संग्रहण और संशोधन की एक चक्रीय प्रक्रिया है। यह दृष्टिकोण प्रसंस्करण के किन दो रूपों को एकीकृत करता है?
(A) स्वचालित और नियंत्रित प्रसंस्करण
(B) सचेत और अचेतन प्रसंस्करण
(C) अधोमुखी और उर्ध्वमुखी प्रसंस्करण
(D) क्रमिक और समानांतर प्रसंस्करण

81. एक चित्र में, एक वस्तु दूसरी वस्तु को आंशिक रूप से ढक लेती है। आंशिक रूप से ढकी हुई वस्तु को अधिक दूर माना जाता है। यह किसका एकनेत्री गहराई संकेत है?
(A) रैखिक परिप्रेक्ष्य
(B) अंतःस्थिति
(C) बनावट प्रवणता
(D) सापेक्ष आकार

82. हल के अंतर्नोद-न्यूनता सिद्धांत में, 'आदत शक्ति' मुख्य रूप से किसका कार्य है?
(A) सुदृढ़ प्रयासों की संख्या
(B) इनाम का परिमाण
(C) शारीरिक अंतर्नोद का स्तर
(D) सुदृढ़ीकरण में देरी

83. व्यक्ति की स्थिति से संबंधित अवधान का प्राथमिक निर्धारक निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) विषमता
(B) गति
(C) रुचि
(D) आकार

84. स्वरूप पहचान सिद्धांत का वह प्रकार जो यह सुझाव देता है कि हम पैटर्न को उनके प्राथमिक घटकों में तोड़कर पहचानते हैं, क्या कहलाता है?
(A) टेम्पलेट सिद्धांत
(B) प्रोटोटाइप सिद्धांत
(C) विशेषता-विश्लेषण सिद्धांत
(D) गेस्टाल्ट सिद्धांत

85. पावलव के प्रयोग को संदर्भ के रूप में उपयोग करते हुए शास्त्रीय अनुबंधन के निम्नलिखित चरणों को व्यवस्थित कीजिए:
I. भोजन की प्रस्तुति से लार टपकना शुरु होता है।
II. घंटी और भोजन का बार-बार युग्मन।
III. केवल घंटी की प्रस्तुति से लार टपकना शुरु होता है।
(A) I, II, III
(B) III, II, I
(C) II, III, I
(D) II, I, III

86. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: शास्त्रीय और नैमित्तिक अनुबंधन के बीच प्राथमिक अंतर यह है कि शास्त्रीय अनुबंधन में स्वैच्छिक व्यवहार शामिल होते हैं, जबकि नैमित्तिक अनुबंधन में प्रतिवर्ती अनुक्रियाएं शामिल होती हैं।
कथन II: नैमित्तिक अनुबंधन में, जीव की अनुक्रिया परिणाम उत्पन्न करने के लिए पर्यावरण पर कार्य करती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

87. गेस्टाल्ट मनोविज्ञान में 'प्रैग्नैन्ज़' की अवधारणा इस विचार को संदर्भित करती है कि हमारा प्रत्यक्षण होगा:
(A) उतना ही जटिल जितना उद्दीपक अनुमति देता है।
(B) यथासंभव अच्छा।
(C) पूरी तरह से पिछले अनुभव से निर्धारित।
(D) इसके सबसे छोटे विशेषता घटकों में विभाजित।

88. निम्नलिखित में से कौन अधिगम की 'प्रकृति' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) परिपक्वता के कारण व्यवहार में एक अस्थायी परिवर्तन।
(B) निष्पादन में परिवर्तनों से अनुमानित एक प्रक्रिया।
(C) जन्म से मौजूद एक जन्मजात प्रतिवर्त।
(D) बीमारी या थकान के कारण व्यवहार में होने वाला परिवर्तन।

89. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): युग्मित-साहचर्य अधिगम तब अधिक कठिन होता है जब उद्दीपक और अनुक्रिया वस्तुएं एक-दूसरे के बहुत समान होती हैं।
कारण (R): उच्च अंतः-सूची समानता हस्तक्षेप की संभावना को बढ़ाती है और युग्मों के बीच विभेदन को अधिक चुनौतीपूर्ण बनाती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।

(D) A गलत है लेकिन R सही है।

90. संकेत संसूचन सिद्धांत में, एक 'चूक' तब होती है जब प्रेक्षक रिपोर्ट करता है कि:
(A) संकेत मौजूद है, और वह वास्तव में है।
(B) संकेत अनुपस्थित है, लेकिन वह मौजूद है।
(C) संकेत मौजूद है, लेकिन वह अनुपस्थित है।
(D) संकेत अनुपस्थित है, और वह वास्तव में है।

91. गहराई प्रत्यक्षण के लिए द्विनेत्री संकेत जिसमें मस्तिष्क आंखों की मांसपेशियों में तनाव को दर्ज करता है जब वे किसी वस्तु पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अंदर की ओर मुड़ती हैं, वह है:
(A) रेटिनल असमानता
(B) अभिसरण
(C) समायोजन
(D) गति लंबन

92. अधिगम सिद्धांतकारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. थार्नडाइक ने 'प्रभाव का नियम' प्रस्तावित किया।
II. स्किनर शास्त्रीय अनुबंधन पर अपने काम के लिए जाने जाते हैं।
III. टोलमैन ने अधिगम के संज्ञानात्मक पहलुओं पर जोर दिया।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

93. शाखीय अभिक्रमित अधिगम की प्राथमिक विशेषता यह है कि:
(A) यह सभी शिक्षार्थियों के लिए एक समान और रेखीय मार्ग प्रदान करता है।
(B) यह मुख्य रूप से शास्त्रीय अनुबंधन के सिद्धांतों पर निर्भर करता है।
(C) यह शिक्षार्थी के प्रदर्शन के आधार पर विभिन्न उपचारात्मक लूप प्रदान करता है।
(D) इसे सिद्धांतकार एडवर्ड थार्नडाइक द्वारा विकसित और लोकप्रिय बनाया गया था।

94. निम्नलिखित में से कौन अवधान का एक बाह्य निर्धारक है?
(A) आदत
(B) रुचि
(C) गति
(D) अभिवृत्ति

95. स्वरूप पहचान का प्रोटोटाइप सिद्धांत यह सुझाव देता है कि हम वस्तुओं को कैसे पहचानते हैं?
(A) संवेदी इनपुट को संग्रहीत, सटीक प्रतिनिधित्व या टेम्पलेट से सुमेलित करके।
(B) किसी वस्तु का अलग-अलग विशेषताओं के समूह में विश्लेषण करके उसकी पहचान करना।
(C) इनपुट की तुलना किसी वर्ग के आदर्श, औसत प्रतिनिधित्व से करना।
(D) गेस्टाल्ट संगठन नियमों के अनुसार संवेदी जानकारी को व्यवस्थित करना।

96. एक बच्चा सीखता है कि रोने-चिल्लाने से उसे खिलौना मिल जाता है। यह किसके माध्यम से अधिगम का एक उदाहरण है?
(A) शास्त्रीय अनुबंधन
(B) नैमित्तिक अनुबंधन
(C) अव्यक्त अधिगम
(D) प्रेक्षणात्मक अधिगम

97. अधिगम में सामान्यीकरण और विभेदन के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) सामान्यीकरण समानताओं के प्रति अनुक्रिया करना है, जबकि विभेदन अंतरों के प्रति अनुक्रिया करना है।
(B) सामान्यीकरण शास्त्रीय अनुबंधन में होता है, जबकि विभेदन नैमित्तिक अनुबंधन में होता है।
(C) सामान्यीकरण एक सचेत प्रक्रिया है, जबकि विभेदन अचेतन है।
(D) सामान्यीकरण में शाब्दिक सामग्री शामिल होती है, जबकि विभेदन में अशाब्दिक सामग्री शामिल होती।

98. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सिद्धांत घटक)
P. अननुबंधित उद्दीपक
Q. सुदृढ़ीकरण
R. संज्ञानात्मक मानचित्र
S. प्रभाव का नियम
सूची II: (संबद्ध सिद्धांत)
1. स्किनर का नैमित्तिक अनुबंधन
2. पावलव का शास्त्रीय अनुबंधन
3. थार्नडाइक का संबंधवाद
4. टोलमैन का संकेत अधिगम
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

99. लोग शब्दों की सूची, निरर्थक शब्दांशों और अन्य शाब्दिक सामग्रियों को कैसे सीखते हैं, इसका अध्ययन किसके अंतर्गत आता है?
(A) प्रत्यक्षणात्मक अधिगम
(B) मोटर अधिगम
(C) शाब्दिक अधिगम
(D) सामाजिक अधिगम

100. मस्तिष्क के फ्रंटल लोब्स, विशेष रूप से प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स, अवधान के किस पहलू के लिए आवश्यक हैं?
(A) बुनियादी उत्तेजना और सतर्कता
(B) संवेदी उद्दीपकों की ओर उन्मुख होना
(C) कार्यकारी नियंत्रण, योजना और लक्ष्य-निर्देशित अवधान
(D) श्रवण जानकारी को छानना

101. किसी दरवाजे को आयताकार के रूप में देखना, भले ही वह आंशिक रूप से खुला हो और रेटिना पर एक समलंब छवि बनाता हो, किसका उदाहरण है?
(A) आकार स्थिरता
(B) आकृति स्थिरता
(C) रंग स्थिरता
(D) चमक स्थिरता

102. पहेली बक्सों में बिल्लियों के साथ थार्नडाइक के प्रयोगों ने उनके किस सिद्धांत के लिए प्रमाण प्रदान किया?
(A) अंतर्दृष्टि अधिगम
(B) प्रयास और त्रुटि अधिगम
(C) प्रेक्षणात्मक अधिगम
(D) अव्यक्त अधिगम

103. चयनात्मक अवधान के किस मॉडल को यह समझाने में असमर्थ होने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा कि अनपेक्षित जानकारी कभी-कभी अवधान को कैसे खींच लेती है?
(A) ट्रिसमैन का क्षीणन मॉडल
(B) ब्रॉडबेंट का फिल्टर मॉडल
(C) ड्यूश और ड्यूश का विलंबित चयन मॉडल
(D) नीसर का संश्लेषण मॉडल

104. जब किसी गतिशील वस्तु को देखा जाता है, तो रेटिना पर वस्तु की बदलती स्थिति किसका प्राथमिक संकेत होती है?
(A) गहराई प्रत्यक्षण
(B) दूरी प्रत्यक्षण
(C) गति प्रत्यक्षण
(D) स्वरूप पहचान

105. अधिगम पर निम्नलिखित सैद्धांतिक दृष्टिकोणों को उनके उद्भव के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. संबंधवाद
II. व्यवहारवाद
III. संज्ञानवाद
(A) I, III, II
(B) I, II, III
(C) II, I, III
(D) III, II, I

106. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: संकेत संसूचन सिद्धांत में, एक रुढ़िवादी अनुक्रिया पक्षपात से मिथ्या सचेत कम होते हैं लेकिन हिट्स भी कम होते हैं।
कथन II: संवेदनशीलता माप d′ प्रेक्षक के अनुक्रिया पक्षपात से स्वतंत्र होता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

107. 'आकृति-पृष्ठभूमि' का गेस्टाल्ट नियम क्या कहता है?
(A) हम उन वस्तुओं को समूहबद्ध करते हैं जो समान होती हैं।
(B) हम अपने प्रत्यक्षण को एक ऐसी आकृति में व्यवस्थित करते हैं जो अलग दिखाई देती है और एक पृष्ठभूमि में।
(C) हम निरंतर पैटर्न देखने की प्रवृत्ति रखते हैं।
(D) हम किसी आकृति के छूटे हुए हिस्सों को भर देते हैं।

108. हल के नव-व्यवहारवादी सिद्धांत में, निम्नलिखित में से किसे एक मध्यवर्ती चर माना जाता है?
(A) अधिगम प्रयासों की संख्या।
(B) भूलभुलैया में चूहे की गति।
(C) आदत शक्ति।
(D) उद्दीपक के भौतिक आयाम।

109. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): अभिक्रमित अधिगम सामग्रियां त्रुटियों को कम करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं।
कारण (R): स्किनर के सिद्धांतों के आधार पर, त्रुटियों को अधिगम के लिए अनुपयोगी माना जाता है, और सामग्री को छोटे, आसान चरणों में संरचित किया जाना चाहिए जिसमें सही उत्तरों के लिए तत्काल सुदृढ़ीकरण हो।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

110. निम्नलिखित में से कौन अभ्यास की विधि से संबंधित शाब्दिक अधिगम का एक निर्धारक है?
(A) सामग्री की अर्थपूर्णता
(B) पूर्ण बनाम अंश अधिगम
(C) CVC ट्रिग्राम का उपयोग
(D) शिक्षार्थी की अभिप्रेरणा

111. प्रत्यक्षण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. चित्र प्रत्यक्षण में 2D छवियों की 3D स्थान के प्रतिनिधित्व के रूप में व्याख्या करना शामिल है।
II. गहराई प्रत्यक्षण पूरी तरह से द्विनेत्री संकेतों पर निर्भर है।
III. प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम मुख्य रूप से व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तावित किए गए थे।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

112. लाल रंग के लिए स्पेनिश शब्द 'rojo' सीखने के बाद, एक छात्र को लाल रंग के लिए इतालवी शब्द 'rosso' सीखने में कठिनाई होती है। यह किसका उदाहरण है?
(A) सकारात्मक स्थानांतरण
(B) अग्रलक्षी अवरोध
(C) प्रतिगामी अवरोध
(D) उद्दीपक सामान्यीकरण

113. पावलव के अनुसार, अनुबंधन के सबसे प्रभावी ढंग से होने के लिए, अनुबंधित उद्दीपक को प्रस्तुत किया जाना चाहिए:
(A) अननुबंधित उद्दीपक के साथ साथ।
(B) अननुबंधित उद्दीपक के तुरंत बाद।
(C) अननुबंधित उद्दीपक से काफी समय पहले।
(D) अननुबंधित उद्दीपक से कुछ समय पहले।

114. स्वतःगतिक प्रभाव, एक अंधेरे कमरे में प्रकाश के एक स्थिर बिंदु की आभासी गति, किसकी एक परिघटना है?
(A) वास्तविक गति प्रत्यक्षण
(B) कथित गति
(C) गहराई प्रत्यक्षण
(D) स्वरूप पहचान

115. निम्नलिखित में से कौन अवधान का बुनियादी निर्धारक नहीं है?
(A) नवीनता
(B) तीव्रता
(C) पुनरावृत्ति
(D) समविभवता

116. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (SDT परिणाम)
P. हिट
Q. चूक
R. मिथ्या सचेत
S. सही अस्वीकृति
सूची II: (विवरण)
1. संकेत अनुपस्थित, प्रेक्षक कहता है 'नहीं'
2. संकेत मौजूद, प्रेक्षक कहता है 'नहीं'
3. संकेत मौजूद, प्रेक्षक कहता है 'हाँ'
4. संकेत अनुपस्थित, प्रेक्षक कहता है 'हाँ'
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-2, R-4, S-1
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

117. थार्नडाइक के "प्रयास और त्रुटि" अधिगम को किस नाम से भी जाना जाता है?
(A) संबंधवाद
(B) शास्त्रीय अनुबंधन
(C) संकेत अधिगम
(D) अंतर्दृष्टि अधिगम

118. कौन-सा कथन प्रत्यक्षण को संवेदना से सबसे अच्छी तरह अलग करता है?
(A) संवेदना संवेदी जानकारी की व्याख्या है, जबकि प्रत्यक्षण उद्दीपकों का पता लगाना है।
(B) संवेदना और प्रत्यक्षण समान प्रक्रियाएं हैं।
(C) संवेदना उद्दीपकों का पता लगाने की प्रक्रिया है, जबकि प्रत्यक्षण उस जानकारी की व्याख्या और संगठन की प्रक्रिया है।
(D) संवेदना मस्तिष्क में होती है, जबकि प्रत्यक्षण ज्ञानेंद्रियों में होता है।

119. शाब्दिक अधिगम का एक प्रमुख निर्धारक 'अर्थपूर्णता' है। शोध में आमतौर पर अर्थपूर्णता को कैसे क्रियान्वित किया जाता है?
(A) शब्द में अक्षरों की संख्या के द्वारा।
(B) शब्द द्वारा उत्पन्न साहचर्यों की संख्या के द्वारा।
(C) शब्द की संवेगात्मक सामग्री के द्वारा।
(D) भाषा में शब्द की आवृत्ति के द्वारा।

120. एक बच्चा सुई को देखने से डरना सीख जाता है क्योंकि इसे बार-बार इंजेक्शन के दर्द के साथ जोड़ा गया है। इस उदाहरण में, इंजेक्शन का दर्द क्या है?
(A) अनुबंधित उद्दीपक
(B) अनुबंधित अनुक्रिया
(C) अननुबंधित उद्दीपक
(D) अननुबंधित अनुक्रिया

121. अवधान का कौन-सा सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि कार्य की मांगों के आधार पर बाधा जल्दी या देरी से आ सकती है?
(A) ब्रॉडबेंट का फिल्टर मॉडल
(B) ट्रिसमैन का क्षीणन मॉडल
(C) मल्टीमोड थ्योरी
(D) ड्यूश और ड्यूश का विलंबित चयन मॉडल

122. फाई-परिघटना एक महत्वपूर्ण उदाहरण है जिसका उपयोग गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा यह तर्क देने के लिए किया गया कि:
(A) प्रत्यक्षण केवल इसके संवेदी भागों का योग है।
(B) समग्र अपने भागों के योग से भिन्न होता है।
(C) अधिगम प्रयास और त्रुटि पर आधारित है।
(D) सारा प्रत्यक्षण एकनेत्री संकेतों पर आधारित होता है।

123. अधिगम के प्रति स्किनर के दृष्टिकोण की एक प्रमुख विशेषता किस पर इसका जोर था?

(A) आंतरिक मानसिक अवस्थाएं और संज्ञान।
(B) अवलोकन योग्य व्यवहार और पर्यावरणीय परिणाम।
(C) जन्मजात अंतर्नोद और उनकी कमी।
(D) मन की संरचना।

124. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): मुक्त पुनरावाहन में, सूची के आरंभ की वस्तुएं अक्सर अच्छी तरह से याद आती हैं।
कारण (R): ऐसा इसलिए है क्योंकि शुरुआती वस्तुओं का अधिक अभ्यास किया गया है और उनके दीर्घकालिक स्मृति में स्थानांतरित होने की संभावना अधिक होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

125. तस्वीरों और चित्रों जैसी 2D छवियों से गहराई को महसूस करने की क्षमता किस पर बहुत अधिक निर्भर करती है?
(A) द्विनेत्री संकेत
(B) अभिसरण
(C) चित्रीय संकेत
(D) रेटिनल असमानता

126. अवधान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अवधान का जैविक आधार एकल मस्तिष्क क्षेत्र में स्थित होता है।
II. चयनात्मक अवधान लंबे समय तक किसी कार्य पर ध्यान केंद्रित बनाए रखने की क्षमता है।
III. संकेत संसूचन सिद्धांत अनिश्चितता की स्थिति में निर्णय लेने को समझने के लिए एक ढांचा प्रदान करता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

127. कौन-सा सिद्धांतकार इसमें सबसे अधिक रुचि रखेगा कि चूहा भूलभुलैया का 'मानसिक प्रतिनिधित्व' कैसे विकसित करता है?
(A) बी.एफ. स्किनर
(B) इवान पावलव
(C) एडवर्ड टोलमैन
(D) एडवर्ड थार्नडाइक

128. शाब्दिक अधिगम में, यदि कोई व्यक्ति सूची A सीखता है, फिर सूची B सीखता है, और फिर उसे सूची A को याद करने में कठिनाई होती है, तो यह किसका उदाहरण है?
(A) अग्रलक्षी अवरोध
(B) प्रतिगामी अवरोध
(C) सकारात्मक स्थानांतरण
(D) युग्मित-साहचर्य अधिगम

129. भाषण ध्वनि की सबसे छोटी इकाई जिसका उपयोग एक उच्चारण को दूसरे से अलग करने के लिए किया जा सकता है, कहलाती है:
(A) रुपिम
(B) स्वनिम
(C) ट्रिग्राम
(D) शब्दांश

130. प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम मनोविज्ञान के किस संप्रदाय द्वारा विकसित किए गए थे?
(A) व्यवहारवाद
(B) मनोविश्लेषण
(C) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान
(D) संज्ञानात्मक मनोविज्ञान

131. अधिगम सिद्धांतों के संदर्भ में, कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) टोलमैन - नैमित्तिक अनुबंधन
(B) हल - शास्त्रीय अनुबंधन
(C) थार्नडाइक - प्रभाव का नियम
(D) स्किनर - अव्यक्त अधिगम

132. निम्नलिखित में से कौन शाब्दिक अधिगम का निर्धारक नहीं है?
(A) सामग्री की अर्थपूर्णता
(B) सामग्री की मात्रा
(C) अभ्यास का वितरण
(D) रेटिनल असमानता

133. 'कॉकटेल पार्टी परिघटना' चयनात्मक अवधान के किस मॉडल के विरुद्ध इसके मूल, सख्त रूप में प्रमाण प्रदान करती है?
(A) ट्रिसमैन का क्षीणन मॉडल
(B) ब्रॉडबेंट का फिल्टर मॉडल
(C) ड्यूश और ड्यूश का विलंबित चयन मॉडल
(D) नीसर का प्रत्यक्षणात्मक चक्र

134. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (शाब्दिक अधिगम विधि)
P. क्रमिक अधिगम
Q. युग्मित-साहचर्य अधिगम
R. मुक्त पुनरावाहन
S. विभेदन अधिगम
सूची II: (कार्य उदाहरण)
1. किसी भी क्रम में याद करने के लिए शब्दों की सूची सीखना
2. विदेशी भाषा की शब्दावली सीखना
3. 'b' और 'd' के बीच अंतर करना सीखना
4. किसी कविता को पंक्ति दर पंक्ति याद करना

(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

135. दृश्य क्षेत्र को उन वस्तुओं में व्यवस्थित करने की प्रक्रिया जो उनके परिवेश से अलग दिखाई देती हैं, कहलाती है:
(A) गहराई प्रत्यक्षण
(B) आकृति-पृष्ठभूमि प्रत्यक्षण
(C) रंग स्थिरता
(D) स्वरूप पहचान

136. एक माता-पिता होमवर्क न करने पर बच्चे के वीडियो गेम खेलने के अधिकार को छीन लेते हैं। यह किसका उदाहरण है?
(A) सकारात्मक सुदृढ़ीकरण
(B) नकारात्मक सुदृढ़ीकरण
(C) सकारात्मक दंड
(D) नकारात्मक दंड

137. व्यवहार की गणितीय भविष्यवाणी करने के लिए किस अधिगम सिद्धांतकार ने समीकरण sEr = f(sHr, D, K, V) प्रस्तावित किया था?
(A) एडवर्ड टोलमैन
(B) क्लार्क हल
(C) बी.एफ. स्किनर
(D) एडवर्ड थार्नडाइक

138. यह तथ्य कि किसी नवीन या अप्रत्याशित उद्दीपक के हमारे अवधान को खींचने की संभावना अधिक होती है, किस निर्धारक के कारण है?
(A) पुनरावृत्ति
(B) तीव्रता
(C) नवीनता
(D) अभिप्रेरणा

139. संकेत संसूचन कार्य में, किसी व्यक्ति की 'हाँ, मैंने संकेत का पता लगा लिया' कहने की इच्छा किस प्राचल द्वारा दर्शायी जाती है?
(A) d'
(B) β
(C) हिट दर
(D) चूक दर

140. चयनात्मक अवधान के निम्नलिखित मॉडलों को उनके प्रस्ताव के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. ब्रॉडबेंट का फिल्टर मॉडल
II. ट्रिसमैन का क्षीणन मॉडल
III. ड्यूश और ड्यूश का विलंबित चयन मॉडल
(A) I, II, III
(B) I, III, II
(C) III, II, I
(D) II, III, I

141. गति का वह प्रत्यक्षण जिसमें किसी वस्तु की छवि रेटिना पर चलती है, कहलाता है:
(A) आभासी गति
(B) स्ट्रोबोस्कोपिक गति
(C) वास्तविक गति
(D) प्रेरित गति

142. अभिक्रमित अधिगम का मुख्य सिद्धांत यह है कि:
(A) अधिगम सामग्री को बड़े और चुनौतीपूर्ण अंशों में प्रस्तुत करना।
(B) बेहतर दीर्घकालिक स्मृति बनाए रखने के लिए फीडबैक में देरी करना।
(C) अपनी गति से चलने वाले चरणों का उपयोग करना जो तत्काल सुदृढ़ीकरण प्रदान करते हैं।
(D) त्रुटियों को प्रक्रिया के एक आवश्यक और सहायक हिस्से के रूप में मानना।

143. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: शाब्दिक अधिगम में, उद्दीपक सामान्यीकरण तब होता है जब एक उद्दीपक के प्रति सीखी गई अनुक्रिया एक समान लेकिन भिन्न उद्दीपक द्वारा भी उत्पन्न होती है।
कथन II: शाब्दिक विभेदन समान उद्दीपकों के प्रति अलग-अलग अनुक्रियाएं करना सीखने की प्रक्रिया है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

144. पावलव के अनुबंधन में, यदि अनुबंधित उद्दीपक से ठीक पहले एक नया तटस्थ उद्दीपक प्रस्तुत किया जाता है, और समय के साथ यह नया उद्दीपक भी अनुबंधित अनुक्रिया उत्पन्न करने लगता है, तो इसे क्या कहा जाता है?
(A) द्वितीय-क्रम अनुबंधन
(B) विलोपन
(C) अव्यक्त निषेध
(D) ब्लॉकिंग

145. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): प्रत्यक्षणात्मक संगठन के गेस्टाल्ट नियम उर्ध्वमुखी प्रसंस्करण के उदाहरण हैं।
कारण (R): वे वर्णन करते हैं कि कैसे हमारा मन आने वाली संवेदी जानकारी को केवल निष्क्रिय रुप से प्राप्त करने के बजाय उस पर संरचना और व्याख्या आरोपित करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।

(D) A गलत है लेकिन R सही है।

146. स्वरूप पहचान का एक विशेषता-विश्लेषण मॉडल यह सुझाव देगा कि हम अक्षर 'A' को उसके घटकों की पहचान करके पहचानते हैं:
(A) एक समग्र, त्रिकोणीय आकृति।
(B) एक संग्रहीत 'A' प्रोटोटाइप के साथ इसकी समानता।
(C) दो तिरछी रेखाएं और एक क्षैतिज क्रॉसबार।
(D) वर्णमाला के आरंभ में इसकी सामान्य स्थिति।

147. हल के अधिगम सिद्धांत में 'अंतर्नोद' की अवधारणा किसको संदर्भित करती है?
(A) एक विशिष्ट लक्ष्य या उद्देश्य।
(B) उत्तेजना या आवश्यकता की एक सामान्य, गैर-विशिष्ट अवस्था।
(C) एक सीखे हुए S-R संबंध की शक्ति।
(D) इनाम का मूल्य।

148. अधिगम के निर्धारकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अर्थपूर्ण सामग्री को निरर्थक सामग्री की तुलना में अधिक तेज़ी से सीखा जाता है।
II. अंतराल वाला अभ्यास अक्सर केंद्रित अभ्यास की तुलना में दीर्घकालिक प्रतिधारण के लिए अधिक प्रभावी होता है।
III. निष्पादन पर फीडबैक का अधिगम की दर पर बहुत कम या कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

149. बातचीत पर ध्यान केंद्रित करने के लिए यातायात की आवाज को छानकर निकालने की क्षमता मस्तिष्क की किस संरचना के कार्य का उदाहरण है?
(A) हिप्पोकैम्पस
(B) विज़ुअल कॉर्टेक्स
(C) द्वार के रूप में कार्य करने वाला थैलेमिक रेटिकुलर न्यूक्लियस
(D) अनुमस्तिष्क

150. एक पुलिस लाइनअप जहाँ एक गवाह को एक संदिग्ध की पहचान करनी होती है, किसका अनुप्रयुक्त उदाहरण है?
(A) प्रत्यक्षणात्मक अधिगम
(B) संकेत संसूचन सिद्धांत
(C) शास्त्रीय अनुबंधन
(D) अभिक्रमित अधिगम

151. निम्नलिखित में से कौन गहराई प्रत्यक्षण के लिए एकनेत्री संकेत नहीं है?
(A) सापेक्ष आकार
(B) अभिसरण
(C) अंतःस्थिति
(D) रैखिक परिप्रेक्ष्य

152. नैमित्तिक अनुबंधन में, 'रूपण' तब आवश्यक होता है जब:
(A) लक्ष्य व्यवहार पहले से ही जीव के व्यवहार का हिस्सा हो।
(B) जीव को दो उद्दीपक प्रकारों के बीच अंतर करना सीखना चाहिए।
(C) लक्ष्य व्यवहार जटिल हो और स्वाभाविक रूप से होने की संभावना न हो।
(D) प्राथमिक लक्ष्य पहले से सीखे गए व्यवहार को समाप्त करना हो।

153. एक शिक्षार्थी जो अभिक्रमित अधिगम अनुक्रम में सामग्री में जल्दी महारत हासिल कर लेता है और उसे अधिक उन्नत विषयों पर आगे बढ़ने की अनुमति दी जाती है, वह संभवतः किसका उपयोग कर रहा है?
(A) रेखीय प्रोग्राम
(B) स्किनरियन प्रोग्राम
(C) शाखीय प्रोग्राम
(D) श्रृंखला निर्माण प्रोग्राम

154. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सिद्धांतकार)
P. पावलव
Q. थार्नडाइक
R. टोलमैन
S. स्किनर
सूची II: (प्रमुख अवधारणा)
1. संज्ञानात्मक मानचित्र
2. कट्टर व्यवहारवाद
3. अनुबंधित प्रतिवर्त
4. नैमित्तिक अनुबंधन
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

155. साइकिल चलाना सीखना मुख्य रूप से किसका एक उदाहरण है?
(A) शाब्दिक अधिगम
(B) प्रत्यक्षणात्मक अधिगम
(C) गत्यात्मक कौशल अधिगम
(D) शास्त्रीय अनुबंधन

156. यह तथ्य कि आप अपने मित्र के चेहरे को अलग-अलग कोणों और अलग-अलग रोशनी की स्थितियों में पहचान सकते हैं, किसका उदाहरण है?
(A) प्रत्यक्षणात्मक स्थिरता

(B) सामीप्य का नियम
(C) संकेत संसूचन
(D) फाई-परिघटना

157. सुदृढ़ीकरण की कौन-सी अनुसूची प्रत्येक सुदृढ़ीकरण के बाद थोड़े विराम के साथ अनुक्रिया की उच्च दर उत्पन्न करती है?
(A) चर-अनुपात
(B) निश्चित-अनुपात
(C) चर-अंतराल
(D) निश्चित-अंतराल

158. निम्नलिखित में से कौन-सा अवधान का निर्धारक उद्दीपक की विशेषताओं पर आधारित है, न कि व्यक्ति पर?
(A) उद्देश्य
(B) अभिवृत्तियां
(C) विषमता
(D) पिछला अनुभव

159. ड्यूश और ड्यूश द्वारा प्रस्तावित अवधान का 'विलंबित चयन' मॉडल सुझाव देता है कि आगे के प्रसंस्करण के लिए चयन किसके आधार पर होता है?
(A) भौतिक विशेषताएं
(B) संवेदी माध्यम
(C) अर्थपूर्ण महत्व
(D) उद्दीपक की नवीनता

160. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): स्किनर के अनुसार, लंबे समय में व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए दंड एक बहुत प्रभावी तरीका नहीं है।
कारण (R): दंड केवल व्यवहार को अस्थायी रूप से दबा देता है और भय, चिंता और परिहार जैसे नकारात्मक दुष्प्रभाव पैदा कर सकता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

161. स्वरूप पहचान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. टेम्पलेट मैचिंग सिद्धांत बहुत लचीले होते हैं और विविध उद्दीपकों की पहचान को आसानी से स्पष्ट कर सकते हैं।
II. विशेषता विश्लेषण सिद्धांत प्रस्तावित करते हैं कि हम वस्तुओं को उनके घटक भागों द्वारा पहचानते हैं।
III. प्रोटोटाइप सिद्धांतों में किसी वस्तु का एक पूर्ण, आदर्श प्रतिनिधित्व के साथ मिलान करना शामिल है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

162. शाब्दिक अधिगम में एक विशेष उद्दीपक और अनुक्रिया के बीच संबंध सीखने की प्रक्रिया किसके लिए केंद्रीय है?
(A) मुक्त पुनरावाहन विधि
(B) क्रमिक अधिगम विधि
(C) युग्मित-साहचर्य विधि
(D) विभेदन विधि

163. CS और US के बार-बार युग्मन के माध्यम से अनुबंधित अनुक्रिया की शक्ति में क्रमिक वृद्धि कहलाती है:
(A) विलोपन
(B) अर्जन
(C) सामान्यीकरण
(D) विभेदन

164. शोरगुल वाले कमरे के दूसरी ओर से अपने नाम की आवाज़ को महसूस करना किसके द्वारा सबसे अच्छी तरह समझाया गया है?
(A) ब्रॉडबेंट का फिल्टर मॉडल
(B) ट्रिसमैन का क्षीणन मॉडल
(C) सामीप्य का नियम
(D) संकेत संसूचन सिद्धांत

165. मध्यमस्तिष्क में सुपीरियर कोलिकुलस किसके लिए एक प्रमुख जैविक संरचना है?
(A) अवधान का कार्यकारी नियंत्रण
(B) सामान्य उत्तेजना बनाए रखना
(C) दृश्य उद्दीपकों की ओर अवधान को उन्मुख करना
(D) शब्दों के अर्थ को समझना

166. कौन-सा अधिगम सिद्धांत यह बताता है कि संतोषजनक स्थिति के बाद होने वाली अनुक्रिया के फिर से होने की संभावना अधिक होगी?
(A) सामीप्य का सिद्धांत
(B) प्रभाव का नियम
(C) सुदृढ़ीकरण का सिद्धांत
(D) गार्सिया प्रभाव

167. निम्नलिखित में से कौन प्रत्यक्षणात्मक संगठन का निर्धारक नहीं है?
(A) सामीप्य
(B) समानता
(C) पूर्ति
(D) सुदृढ़ीकरण

168. निम्नलिखित मामले पर विचार कीजिए: एक रेडियोलॉजिस्ट ट्यूमर के संकेतों के लिए एक्स-रे की जांच कर रहा है। ट्यूमर बहुत धुंधला है। रेडियोलॉजिस्ट के कार्य का सबसे अच्छा विश्लेषण किसके ढांचे का उपयोग करके किया जा सकता है?
(A) चयनात्मक अवधान मॉडल

(B) संकेत संसूचन सिद्धांत
(C) प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम
(D) शास्त्रीय अनुबंधन

169. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: हल का सिद्धांत एक मोलर सिद्धांत है, जो व्यवहार के समग्र उद्देश्य पर केंद्रित है।
कथन II: टोलमैन का सिद्धांत एक मॉलिक्यूलर सिद्धांत है, जो विशिष्ट उद्दीपक-अनुक्रिया संबंधों पर केंद्रित है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

170. निम्नलिखित में से कौन शाब्दिक अधिगम में विभेदन की भूमिका का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) समान शब्दों के प्रति एक ही तरह से अनुक्रिया करना।
(B) उन शब्दों के प्रति अलग-अलग अनुक्रिया करना सीखना जो सुनने या दिखने में समान हैं।
(C) किसी भी क्रम में शब्दों की सूची को याद करना।
(D) एक निरर्थक शब्दांश को एक वास्तविक शब्द के साथ जोड़ना।

171. एक व्यक्ति को याद करने के लिए शब्दों की एक सूची दी जाती है: 'बिल्ली', 'घर', 'पेड़', 'जाइलो़फोन', 'किताब'। 'जाइलो़फोन' शब्द के 'पेड़' या 'घर' की तुलना में याद रहने की संभावना अधिक है। इस परिघटना को किस रूप में जाना जाता है?
(A) क्रमिक स्थिति प्रभाव
(B) वॉन रेस्टोर्फ प्रभाव
(C) प्राथमिकता प्रभाव
(D) नवीनता प्रभाव

172. रेखीय और शाखीय अभिक्रमित अधिगम के बीच मुख्य अंतर है:
(A) फ्रेम का आकार।
(B) तत्काल फीडबैक की उपस्थिति।
(C) गलत अनुक्रियाओं का प्रबंधन।
(D) इसे विकसित करने वाला सिद्धांतकार।

173. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (परिघटना)
P. फाई-परिघटना
Q. स्वतःगतिक प्रभाव
R. रेटिनल असमानता
S. अंतःस्थिति
सूची II: (विवरण)
1. गहराई के लिए द्विनेत्री संकेत
2. एक स्थिर प्रकाश की आभासी गति
3. गहराई के लिए एकनेत्री संकेत
4. क्रमिक प्रकाशों से आभासी गति
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

174. अधिगम में "तैयारी" की अवधारणा यह सुझाव देती है कि:
(A) सभी साहचर्य समान आसानी से सीखे जाते हैं।
(B) जीव जैविक रूप से कुछ साहचर्यों को दूसरों की तुलना में अधिक आसानी से सीखने के लिए प्रवृत्त होते हैं।
(C) अधिगम पूरी तरह से संज्ञानात्मक तैयारी का परिणाम है।
(D) केवल मनुष्य ही भाषा सीखने के लिए तैयार होते हैं।

175. अवधान की प्रकृति को किस रुप में वर्णित किया जा सकता है?
(A) चयनात्मक और स्थायी
(B) विभाजित और असीमित
(C) चयनात्मक और क्षमता में सीमित
(D) स्वचालित और प्रयासहीन

176. प्रत्यक्षणात्मक संगठन का कौन-सा नियम यह स्पष्ट करता है कि क्यों हम बिंदुओं की एक रेखा को अलग-अलग बिंदुओं के बजाय एक निरंतर रेखा के रुप में देखते हैं?
(A) सामीप्य का नियम
(B) समानता का नियम
(C) निरंतरता का नियम
(D) पूर्ति का नियम

177. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): थार्नडाइक के अधिगम सिद्धांत को उद्दीपक-अनुक्रिया सिद्धांत माना जाता है।
कारण (R): यह पर्यावरण में एक उद्दीपक और जीव द्वारा की गई अनुक्रिया के बीच बने संबंध पर केंद्रित है, जिसे परिणामों द्वारा सुदृढ़ किया जाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

178. युग्मित-साहचर्य अधिगम में एक प्रमुख निर्धारक क्या है?
(A) उद्दीपक वस्तुओं और अनुक्रिया वस्तुओं के बीच समानता की डिग्री।
(B) वह क्रम जिसमें वस्तुएं प्रस्तुत की जाती हैं।
(C) किसी भी क्रम में वस्तुओं को याद करने की क्षमता।
(D) अधिगम के बाद विश्राम की अवधि की लंबाई।

179. एक बच्चा जो कुकी पाने के लिए "कृपया" कहना सीखता है, वह ऐसे अधिगम का प्रदर्शन कर रहा है जिसे किसके द्वारा सबसे अच्छी तरह समझाया गया है?
(A) इवान पावलव
(B) बी.एफ. स्किनर
(C) एडवर्ड टोलमैन
(D) क्लार्क हल

180. अवधान के जैविक आधार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. रेटिकुलर एक्टिवेटिंग सिस्टम मुख्य रूप से उत्तेजना और सतर्कता के लिए जिम्मेदार है।
II. पैरिएटल लोब स्थानों के बीच अवधान को स्थानांतरित करने में शामिल होता है।
III. फ्रंटल लोब अवधान के कार्यकारी नियंत्रण में शामिल होता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

181. किसी वस्तु के रेटिना छवि आकार में परिवर्तन होने पर भी उसके आकार को समान महसूस करने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) आकृति स्थिरता
(B) आकार स्थिरता
(C) चमक स्थिरता
(D) पोन्ज़ो भ्रम

182. एक कबूतर को की-पेकिंग के लिए भोजन के साथ सुदृढ़ किया जाता है, लेकिन केवल औसतन 10 पेक्स के बाद। यह एक ________ अनुसूची है।
(A) निश्चित-अनुपात
(B) चर-अनुपात
(C) निश्चित-अंतराल
(D) चर-अंतराल

183. शाब्दिक अधिगम के प्रयोग में सामान्यतः होने वाली निम्नलिखित प्रक्रियाओं को क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. अर्जन
II. सामान्यीकरण
III. विभेदन
(A) I, II, III
(B) III, II, I
(C) II, III, I
(D) I, III, II

184. प्रत्यक्षण में उर्ध्वमुखी प्रसंस्करण प्रत्यक्षण पर किसके प्रभाव को संदर्भित करता है?
(A) संवेदी डेटा
(B) भौतिक उद्दीपक गुण
(C) ज्ञान, अपेक्षाएं और संदर्भ
(D) ज्ञानेंद्रियां

185. टोलमैन के अधिगम के सिद्धांत को अक्सर 'सोद्देश्य व्यवहारवाद' या 'संकेत अधिगम' कहा जाता है क्योंकि इसने इस बात पर जोर दिया कि जीव सीखते हैं:
(A) सरल S-R संबंध।
(B) जैविक अंतर्नोद में कमी।
(C) संकेत या सिग्नल जो लक्ष्यों की ओर ले जाते हैं।
(D) प्रयास और त्रुटि के माध्यम से।

186. निम्नलिखित में से कौन संकेत संसूचन सिद्धांत विश्लेषण का मुख्य घटक नहीं है?
(A) हिट दर
(B) मिथ्या सचेत दर
(C) डी-प्राइम
(D) CS

187. शाब्दिक अधिगम में, एक नए लेकिन समान उद्दीपक के प्रति पहले से सीखी गई अनुक्रिया करना किसका उदाहरण है?
(A) विभेदन
(B) सामान्यीकरण
(C) विलोपन
(D) नकारात्मक स्थानांतरण

188. सुदृढ़ीकरण की कौन-सी अनुसूची अनुक्रिया के 'स्कैलप्ड' पैटर्न की ओर ले जाती है, जहां सुदृढ़ीकरण का समय आने पर अनुक्रियाएं बढ़ जाती हैं?
(A) निश्चित-अनुपात
(B) चर-अनुपात
(C) निश्चित-अंतराल
(D) चर-अंतराल

189. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधान मॉडल)
P. ब्रॉडबेंट
Q. ट्रिसमैन
R. ड्यूश और ड्यूश
S. नीसर
सूची II: (प्रमुख विशेषता)
1. विलंबित चयन
2. प्रत्यक्षणात्मक चक्र
3. प्रारंभिक चयन
4. क्षीणन
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

190. प्रत्यक्षण में समान नियति का नियम एक गेस्टाल्ट सिद्धांत है जो बताता है कि:
(A) जो तत्व एक-दूसरे के निकट होते हैं, उन्हें एक समूह के रूप में देखा जाता है।
(B) हम उन आकृतियों को पूर्ण करने की प्रवृत्ति रखते हैं जो अपूर्ण हैं।
(C) जो तत्व एक ही दिशा में एक साथ चलते हैं, उन्हें एक समूह के रूप में देखा जाता है।
(D) समान तत्वों को एक साथ संबंधित माना जाता है।

191. अधिगम पर थार्नडाइक और स्किनर के दृष्टिकोण के बीच एक मुख्य अंतर यह था कि:
(A) थार्नडाइक ने जानवरों का अध्ययन किया, जबकि स्किनर ने केवल मनुष्यों का अध्ययन किया।
(B) स्किनर ने थार्नडाइक की 'संतुष्टि' की मानसिक अवधारणा को खारिज कर दिया।
(C) थार्नडाइक ने प्रतिवर्तों पर जोर दिया, जबकि स्किनर ने स्वैच्छिक व्यवहार पर जोर दिया।
(D) स्किनर ने पहेली बक्सों का उपयोग किया, जबकि थार्नडाइक ने नैमित्तिक कक्ष का उपयोग किया।

192. जब आप पीले फूलों के खेत में एक अकेला लाल फूल देखते हैं, तो अवधान का कौन-सा निर्धारक कार्य कर रहा होता है?
(A) पुनरावृत्ति
(B) विषमता
(C) आकार
(D) गति

193. "मुलर-लायर भ्रम" किसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि:
(A) गति के प्रति हमारे प्रत्यक्षण को धोखा दिया जा सकता है।
(B) गहराई का हमारा प्रत्यक्षण लंबाई के हमारे प्रत्यक्षण को प्रभावित कर सकता है।
(C) रंग का हमारा प्रत्यक्षण सापेक्ष होता है।
(D) पूर्ति का नियम कैसे कार्य करता है।

194. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: हल के अनुसार, अधिगम तभी होता है जब अंतर्नोद कम हो जाता है।
कथन II: टोलमैन का मानना था कि सुदृढ़ीकरण अधिगम के लिए आवश्यक था, लेकिन निष्पादन के लिए नहीं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

195. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): निरर्थक शब्दांशों को सीखना आमतौर पर अर्थपूर्ण शब्दों को सीखने की तुलना में अधिक कठिन होता है और इसमें अधिक समय लगता है।
कारण (R): अर्थपूर्ण शब्दों के स्मृति में पहले से मौजूद साहचर्य होते हैं, जिनका उपयोग कूटलेखन और पुनरावाहन में सहायता के लिए किया जा सकता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

196. शास्त्रीय अनुबंधन की वह प्रक्रिया जिसमें अनुबंधित अनुक्रिया न केवल मूल अनुबंधित उद्दीपक द्वारा बल्कि समान उद्दीपकों द्वारा भी उत्पन्न होती है, कहलाती है:
(A) विभेदन
(B) विलोपन
(C) स्वतः पुनर्प्राप्ति
(D) सामान्यीकरण

197. निम्नलिखित में से कौन अवधान की 'प्रकृति' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) एक असीमित संज्ञानात्मक संसाधन।
(B) चेतना को उद्दीपकों की एक सीमित श्रेणी पर केंद्रित करने की प्रक्रिया।
(C) एक विशुद्ध शारीरिक प्रतिवर्त।
(D) संज्ञानात्मक क्षमता में एक स्थायी परिवर्तन।

198. प्रत्यक्षणात्मक प्रक्रियाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अधोमुखी प्रसंस्करण उद्दीपक की विशेषताओं द्वारा संचालित होता है।
II. उर्ध्वमुखी प्रसंस्करण हमारे ज्ञान और अपेक्षाओं से प्रभावित होता है।
III. प्रत्यक्षण लगभग हमेशा अधोमुखी और उर्ध्वमुखी प्रसंस्करण दोनों का संयोजन होता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

199. शिक्षण के प्रति स्किनर का दृष्टिकोण, जिसमें किसी कार्य को छोटे चरणों में तोड़ना और तत्काल सुदृढ़ीकरण प्रदान करना शामिल है, कहलाता है:
(A) अव्यक्त अधिगम
(B) अभिक्रमित अधिगम
(C) अंतर्दृष्टि अधिगम
(D) प्रेक्षणात्मक अधिगम

200. शाब्दिक अधिगम में, यह खोज कि उन वस्तुओं की सूची सीखना कठिन है जो सभी एक ही श्रेणी से हैं, असंबद्ध वस्तुओं की सूची की तुलना में क्या कहलाती है?

(A) अग्रलक्षी अवरोध
(B) अग्रलक्षी अवरोध से मुक्ति
(C) वॉन रेस्टोर्फ प्रभाव
(D) अग्रलक्षी अवरोध का निर्माण

201. प्रत्यक्षण में अधोमुखी प्रसंस्करण कहाँ से शुरु होता है?
(A) प्रेक्षक की अपेक्षाओं और ज्ञान से।
(B) उस संदर्भ से जिसमें उद्दीपक दिखाई देता है।
(C) पर्यावरण से प्राप्त संवेदी जानकारी से।
(D) उद्दीपक की अंतिम व्याख्या से।

202. 'अवधान एक संसाधन के रूप में' की अवधारणा का तात्पर्य है कि:
(A) हमारे पास आवंटित करने के लिए अनंत मात्रा में अवधान है।
(B) अवधान मानसिक ऊर्जा का एक एकल, अविभाजित भंडार है।
(C) हम एक कार्य पर जितना अधिक ध्यान देते हैं, दूसरों के लिए उतना ही कम उपलब्ध होता है।
(D) अवधान को कार्यों के बीच विभाजित नहीं किया जा सकता है।

203. शास्त्रीय अनुबंधन में, अननुबंधित अनुक्रिया क्या है?
(A) पहले के तटस्थ उद्दीपक के प्रति सीखी गई प्रतिक्रिया।
(B) किसी उद्दीपक के प्रति एक जन्मजात, प्रतिवर्ती प्रतिक्रिया।
(C) एक उद्दीपक जो स्वाभाविक रूप से बिना किसी पूर्व अधिगम के प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है।
(D) एक पहले तटस्थ उद्दीपक जो प्रतिक्रिया उत्पन्न करने लगता है।

204. क्रमिक अधिगम वक्र, जो सूची के आरंभ और अंत की वस्तुओं के लिए बेहतर पुनरावाहन दिखाता है, किसके अध्ययन में एक प्रमुख खोज है?
(A) अवधान
(B) प्रत्यक्षण
(C) शाब्दिक अधिगम
(D) नैमित्तिक अनुबंधन

205. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के अनुसार, प्रत्यक्षण केवल संवेदी भागों का योग नहीं है।
कारण (R): मस्तिष्क सामीप्य, समानता और पूर्ति जैसे सिद्धांतों के आधार पर संवेदी जानकारी को सक्रिय रूप से एक अर्थपूर्ण "पूर्ण" में व्यवस्थित करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

206. इनमें से कौन-सा अधिगम सिद्धांतकार व्यवहारवादी नहीं माना जाता है?
(A) थार्नडाइक
(B) पावलव
(C) स्किनर
(D) टोलमैन

207. निम्नलिखित में से कौन विभाजित अवधान की आवश्यकता वाले कार्य का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) ध्यान लगाकर फिल्म देखना।
(B) अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) हैंड-फ्री फोन पर बात करते हुए कार चलाना।
(D) भीड़ में किसी विशेष चेहरे की तलाश करना।

208. 'गति लंबन' का एकनेत्री गहराई संकेत इस तथ्य को संदर्भित करता है कि:
(A) समानांतर रेखाएं दूरी में एक बिंदु पर मिलती हुई प्रतीत होती हैं।
(B) निकट की वस्तुएं दूर की वस्तुओं की तुलना में अधिक तेजी से और विपरीत दिशा में चलती हुई प्रतीत होती हैं।
(C) जो वस्तुएं अन्य वस्तुओं के दृश्य को अवरुद्ध करती हैं, उन्हें करीब माना जाता है।
(D) पास की वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए आंखें अंदर की ओर मुड़ती हैं।

209. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अधिगम शब्द)
P. अर्जन
Q. रूपण
R. विलोपन
S. संज्ञानात्मक मानचित्र
सूची II: (संक्षिप्त विवरण)
1. अनुबंधित अनुक्रिया का धीरे-धीरे कमजोर होना
2. नई अनुक्रिया सीखने का प्रारंभिक चरण
3. स्थानिक खाके का मानसिक प्रतिनिधित्व
4. व्यवहार के क्रमिक सन्निकटन को सुदृढ़ करना
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

210. प्रारंभिक शाब्दिक अधिगम अनुसंधान में निरर्थक शब्दांशों का उपयोग करने का प्राथमिक लक्ष्य था:
(A) अधिगम कार्य को अधिक मनोरंजक बनाना।
(B) अधिगम का इस तरह से अध्ययन करना जिससे पूर्व ज्ञान और अर्थ के प्रभाव को कम किया जा सके।
(C) अल्पकालिक स्मृति क्षमता की सीमाओं का परीक्षण करना।
(D) शास्त्रीय अनुबंधन के सिद्धांतों का प्रदर्शन करना।

211. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?

(A) चयनात्मक अवधान - एक चीज़ पर ध्यान केंद्रित करना
(B) विभाजित अवधान - एक साथ कई कार्य करना
(C) सतत अवधान - सतर्कता
(D) कार्यकारी अवधान - अव्यक्त अधिगम

212. रिक्त स्थानों के साथ खींचे जाने पर भी एक पूर्ण वृत्त का प्रत्यक्षण करना गेस्टाल्ट के किस सिद्धांत का उदाहरण है?
(A) सामीप्य
(B) समानता
(C) पूर्ति
(D) समान नियति

213. "सुदृढ़ अभ्यास के परिणामस्वरुप व्यवहार क्षमता में होने वाला अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन।" अधिगम की यह परिभाषा किसके साथ सबसे निकटता से जुड़ी है?
(A) गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिक
(B) संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक
(C) व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक जैसे हल या स्किनर
(D) मनोविश्लेषणात्मक मनोवैज्ञानिक

214. अभिक्रमित अधिगम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह सक्रिय अनुक्रिया के सिद्धांत पर आधारित है।
II. यह सामग्री को छोटे, तार्किक चरणों में प्रस्तुत करके सफलता की उच्च दर सुनिश्चित करता है।
III. शाखीय प्रोग्राम रेखीय प्रोग्राम की तुलना में अधिक लचीले होते हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

215. 'स्ट्रूप प्रभाव', जहाँ किसी शब्द के स्याही के रंग का नाम बताना कठिन होता है जब शब्द स्वयं किसी भिन्न रंग का नाम हो, किसमें हस्तक्षेप प्रदर्शित करता है?
(A) प्रत्यक्षणात्मक संगठन
(B) अवधान और स्वचालित प्रसंस्करण
(C) गहराई प्रत्यक्षण
(D) शाब्दिक अधिगम

216. पावलव के प्रयोग में, भोजन के प्रति लार टपकना क्या था?
(A) अनुबंधित उद्दीपक
(B) अननुबंधित उद्दीपक
(C) अनुबंधित अनुक्रिया
(D) अननुबंधित अनुक्रिया

217. स्वरुप पहचान का प्रोटोटाइप सिद्धांत यह मानता है कि हम संग्रहीत करते हैं:
(A) हमारे द्वारा देखी गई प्रत्येक वस्तु के लिए एक सटीक टेम्पलेट।
(B) प्रत्येक श्रेणी के लिए महत्वपूर्ण विशेषताओं की एक सूची।
(C) किसी श्रेणी का एक अमूर्त औसत या 'सर्वश्रेष्ठ' उदाहरण।
(D) प्रत्यक्षण के गेस्टाल्ट नियम।

218. किसी सूची को शुरु से अंत तक बार-बार अभ्यास करके सीखने की विधि कहलाती है:
(A) अंश अधिगम
(B) पूर्ण अधिगम
(C) अंतराल वाला अभ्यास
(D) केंद्रित अभ्यास

219. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अवधान एकल कार्य वाली एक एकीकृत अवधारणा है।
कथन II: अवधान के जैविक आधार में मस्तिष्क क्षेत्रों का एक नेटवर्क शामिल है, जिसमें रेटिकुलर फॉर्मेशन, थैलेमस, पैरिएटल और फ्रंटल लोब्स शामिल हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

220. प्रभाव का नियम सबसे पहले किसके द्वारा प्रस्तावित किया गया था?
(A) बी.एफ. स्किनर
(B) इवान पावलव
(C) एडवर्ड थार्नडाइक
(D) क्लार्क हल

221. जब आप पहली बार घड़ी पहनते हैं, तो आप इसे अपनी कलाई पर महसूस करते हैं, लेकिन कुछ समय बाद आप इसे नोटिस नहीं करते हैं। यह किसका उदाहरण है?
(A) चयनात्मक अवधान
(B) संवेदी अनुकूलन
(C) प्रत्यक्षणात्मक रक्षा
(D) विभाजित अवधान

222. गहराई के लिए द्विनेत्री संकेत निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) बनावट प्रवणता
(B) रैखिक परिप्रेक्ष्य
(C) रेटिनल असमानता
(D) अंतःस्थिति

223. टोलमैन के अनुसार, वह अधिगम जो व्यवहार में तुरंत प्रदर्शित नहीं होता है, कहलाती है:
(A) नैमित्तिक अधिगम
(B) अनुबंधित अधिगम
(C) अव्यक्त अधिगम
(D) अभिक्रमित अधिगम

224. रेखीय प्रोग्रामिंग की तुलना में शाखीय प्रोग्रामिंग का मुख्य लाभ इसकी:
(A) डिज़ाइन की सरलता है।
(B) स्किनर के सिद्धांतों का पालन है।
(C) शिक्षार्थियों में व्यक्तिगत अंतरों के अनुकूल होने की क्षमता है।
(D) छोटे फ्रेम का उपयोग है।

225. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): युग्मित-साहचर्य कार्य में, अधिगम तब तेज़ होता है जब युग्म की वस्तुएं अर्थपूर्ण रूप से संबंधित होती हैं (जैसे, मेज-कुर्सी) तुलना में जब वे नहीं होती हैं (जैसे, आकाश-दस्ताना)।
कारण (R): पहले से मौजूद अर्थ संबंधी साहचर्य नए संबंधों के निर्माण को सुगम बनाते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

226. उन्मुखी अनुक्रिया किसकी एक बुनियादी जैविक अभिव्यक्ति है?
(A) अधिगम
(B) प्रत्यक्षण
(C) अवधान
(D) स्मृति

227. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (गहराई संकेत)
P. अंतःस्थिति
Q. रैखिक परिप्रेक्ष्य
R. अभिसरण
S. बनावट प्रवणता
सूची II: (उदाहरण)
1. पास की वस्तु के लिए आँखों की मांसपेशियों का अंदर की ओर मुड़ना
2. पास की वस्तु द्वारा दूर की वस्तु के दृश्य को अवरुद्ध करना
3. खेत के दूर के हिस्सों का कम विस्तृत दिखाई देना
4. समानांतर रेल की पटरियों का दूरी पर मिलते हुए प्रतीत होना
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

228. अधिगम का निम्नलिखित में से कौन-सा सिद्धांत सुदृढ़ीकरण पर जोर नहीं देता है?
(A) स्किनर का नैमित्तिक अनुबंधन
(B) हल का अंतर्नोद-न्यूनता सिद्धांत
(C) टोलमैन का संकेत अधिगम
(D) थार्नडाइक का प्रभाव का नियम

229. निम्नलिखित में से कौन शाब्दिक अधिगम का निर्धारक नहीं है?
(A) सामग्री की अर्थपूर्णता
(B) अधिगम की विधियाँ
(C) शिक्षार्थी की अभिप्रेरणा
(D) समान नियति का नियम

230. शिक्षक द्वारा सही उत्तर के लिए छात्र की प्रशंसा करना किसका उदाहरण है?
(A) शास्त्रीय अनुबंधन
(B) सकारात्मक सुदृढ़ीकरण
(C) नकारात्मक सुदृढ़ीकरण
(D) दंड

231. निम्नलिखित में से किसे अवधान का बाह्य निर्धारक माना जाता है?
(A) पिछला अनुभव
(B) मानसिक समुच्चय
(C) तीव्रता
(D) उद्देश्य

232. प्रत्यक्षण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पोन्ज़ो भ्रम दर्शाता है कि गहराई संकेत कैसे कथित आकार को प्रभावित कर सकते हैं।
II. चित्र प्रत्यक्षण में कोई व्याख्या शामिल नहीं होती है, क्योंकि छवि वास्तविकता की सीधी प्रतिलिपि होती है।
III. गेस्टाल्ट नियम संवेदी जानकारी को व्यवस्थित करने की जन्मजात प्रवृत्तियों का वर्णन करते हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

233. 'आहा!' अनुभव, या समाधान का अचानक एहसास होना, किस प्रकार के अधिगम की विशेषता है?
(A) प्रयास और त्रुटि अधिगम
(B) शास्त्रीय अनुबंधन
(C) अंतर्दृष्टि अधिगम
(D) अभिक्रमित अधिगम

234. शाब्दिक अधिगम में, 'फल' शब्द के प्रति उसी तरह अनुक्रिया करने की प्रवृत्ति जो आपने 'सेब' शब्द के लिए सीखी थी, किसका उदाहरण है?
(A) अनुक्रिया सामान्यीकरण
(B) अर्थ संबंधी सामान्यीकरण
(C) विभेदन

(D) युग्मित-साहचर्य अधिगम

235. यह खोज कि किसी का अपना नाम तब भी सुना जा सकता है जब वह एक अनपेक्षित श्रवण चैनल का हिस्सा हो, किस प्रकार के चयनात्मक अवधान मॉडल का समर्थन करती है?
(A) एक सख्त प्रारंभिक-चयन मॉडल
(B) एक विलंबित-चयन मॉडल या एक क्षीणन मॉडल
(C) बिना फिल्टर वाला मॉडल
(D) पूरी तरह से भौतिक संकेतों पर आधारित मॉडल

236. 'प्रैग्नैन्ज़ का नियम' किस विचारधारा का मूल सिद्धांत है?
(A) व्यवहारवाद
(B) मनोविश्लेषण
(C) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान
(D) मानवतावाद

237. वह प्रक्रिया जिसमें किसी व्यवहार के बाद अप्रिय उद्दीपक को हटा दिया जाता है, जिसके परिणामस्वरुप उस व्यवहार में वृद्धि होती है, कहलाती है:
(A) सकारात्मक सुदृढ़ीकरण
(B) नकारात्मक सुदृढ़ीकरण
(C) दंड
(D) विलोपन

238. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: क्रमिक अधिगम में वस्तुओं की सूची को एक विशिष्ट क्रम में याद करना शामिल है।
कथन II: मुक्त पुनरावाहन में किसी भी क्रम में याद की जाने वाली वस्तुओं की सूची को याद करना शामिल है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

239. मस्तिष्क में इनाम और सुदृढ़ीकरण का जैविक आधार किस न्यूरोट्रांसमीटर से दृढ़ता से जुड़ा हुआ है?
(A) एसिटिलकोलाइन
(B) गाबा
(C) डोपामाइन
(D) सेरोटोनिन

240. 'वॉटरफॉल भ्रम' किसका उदाहरण है?
(A) गहराई प्रत्यक्षण भ्रम
(B) गति पश्च-प्रभाव
(C) आकृति स्थिरता भ्रम
(D) फाई-परिघटना

241. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक किसी उद्दीपक के आपके अवधान को खींचने की संभावना को सबसे कम कर देगा?
(A) उच्च तीव्रता
(B) नवीनता
(C) निरंतर और अपरिवर्तित
(D) गति

242. एक अधिगम प्रयोग में, एक चूहे को पहले भोजन के लिए लीवर दबाना सिखाया जाता है। फिर, लीवर दबाने को सुदृढ़ करने से पहले एक रोशनी जलाई जाती है। रोशनी भोजन की उपलब्धता का संकेत बन जाती है। रोशनी क्या है?
(A) प्राथमिक सुदृढ़क
(B) अनुबंधित उद्दीपक
(C) विभेदक उद्दीपक
(D) अननुबंधित उद्दीपक

243. "प्रभाव का नियम" बताता है कि एक ________ स्थिति की ओर ले जाने वाले व्यवहार सुदृढ़ हो जाते हैं।
(A) संतोषजनक
(B) तटस्थ
(C) दंडात्मक
(D) नवीन

244. शाब्दिक अधिगम में 'सामान्यीकरण' का क्या अर्थ है?
(A) किसी भी क्रम में सूची को याद करने की क्षमता।
(B) मूल उद्दीपक के समान उद्दीपकों के प्रति सीखी गई अनुक्रिया को लागू करने की प्रवृत्ति।
(C) एक विशिष्ट अनुक्रम में वस्तुओं को सीखने की प्रक्रिया।
(D) दो अलग-अलग उद्दीपकों के बीच अंतर करने में विफलता।

245. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): त्रिविम दृष्टि के लिए रेटिनल असमानता एक महत्वपूर्ण संकेत है।
कारण (R): मस्तिष्क गहराई और दूरी की गणना करने के लिए दोनों आंखों द्वारा प्राप्त छवियों के बीच सूक्ष्म अंतर का उपयोग करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

246. 'सोद्देश्य व्यवहारवाद' से सबसे अधिक कौन-सा सिद्धांतकार जुड़ा है?
(A) स्किनर
(B) हल
(C) पावलव
(D) टोलमैन

247. सुदृढ़ीकरण और दंड के बीच मुख्य अंतर यह है कि सुदृढ़ीकरण व्यवहार को मजबूत करता है, जबकि दंड व्यवहार को ________ है।

(A) कमजोर करता
(B) मजबूत करता
(C) समाप्त करता
(D) रूप देता

248. हम दो-आयामी तस्वीर में गहराई को कैसे महसूस करते हैं, इसका अध्ययन किसके अंतर्गत आता है?
(A) संकेत संसूचन सिद्धांत
(B) चित्र प्रत्यक्षण
(C) अवधान का जैविक आधार
(D) अभिक्रमित अधिगम

249. निम्नलिखित में से कौन युग्मित-साहचर्य अधिगम का एक उदाहरण है?
(A) राज्यों की राजधानियों को याद करना।
(B) ग्रहों के क्रम को सीखना।
(C) याददाश्त से कविता सुनाना।
(D) स्टोर से दूध खरीदना याद रखना।

250. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अधिगम प्रतिमान)
P. शास्त्रीय अनुबंधन
Q. नैमित्तिक अनुबंधन
R. अव्यक्त अधिगम
S. प्रयास और त्रुटि अधिगम
सूची II: (अनुक्रिया की प्रकृति)
1. परिणामों द्वारा रुप दिया गया स्वैच्छिक व्यवहार
2. नए उद्दीपक के प्रति अनैच्छिक, प्रतिवर्ती अनुक्रिया
3. तत्काल निष्पादन के बिना अधिगम
4. सफलता द्वारा मजबूत हुआ S-R संबंध
(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

251. अवधान की एक प्रमुख विशेषता इसकी _______ है।
(A) चयनात्मकता
(B) स्थायित्व
(C) असीमित क्षमता
(D) अभिप्रेरणा से स्वतंत्रता

252. प्रकाश की स्थिति में परिवर्तन के बावजूद किसी वस्तु को स्थिर रंग के रूप में देखने की प्रवृत्ति को क्या कहा जाता है?
(A) आकृति स्थिरता
(B) आकार स्थिरता
(C) रंग स्थिरता
(D) चमक स्थिरता

253. अधिगम के सिद्धांतों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. स्किनर का सिद्धांत एक संज्ञानात्मक सिद्धांत है।
II. हल का सिद्धांत एक अंतर्नोद-न्यूनता सिद्धांत है।
III. टोलमैन का सिद्धांत संज्ञानात्मक मानचित्रों के निर्माण पर जोर देता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

254. जब एक सीखी हुई अनुक्रिया को अब और सुदृढ़ नहीं किया जाता है, तो वह धीरे-धीरे कमजोर होकर गायब हो जाएगी। इस प्रक्रिया को कहा जाता है:
(A) अर्जन
(B) सामान्यीकरण
(C) विभेदन
(D) विलोपन

255. शाब्दिक अधिगम के संदर्भ में, CVC ट्रिग्राम की सूची सीखना कठिन है क्योंकि उनमें किसका अभाव होता है?
(A) ध्वन्यात्मक जटिलता
(B) अर्थपूर्णता
(C) दृश्य विशिष्टता
(D) लयात्मक गुण

256. अवधान के ब्रॉडबेंट मॉडल को अक्सर ________ मॉडल कहा जाता है।
(A) विलंबित-चयन
(B) क्षीणन
(C) प्रारंभिक-चयन बाधा
(D) क्षमता

257. निम्नलिखित में से कौन प्रत्यक्षण का एक प्रमुख निर्धारक है जो प्रत्यक्षणकर्ता के भीतर स्थित होता है?
(A) उद्दीपक तीव्रता
(B) उद्दीपक नवीनता
(C) उद्दीपक विषमता
(D) प्रत्यक्षणकर्ता की अभिप्रेरणा

258. "हर बार जब आप नहाते हैं, कोई शौचालय फ्लश करता है, जिससे पानी ठंडा हो जाता है और आप उछल पड़ते हैं। अब, जैसे ही आप शौचालय फ्लश की आवाज़ सुनते हैं, आप उछल पड़ते हैं।" इस उदाहरण में, शौचालय फ्लश की आवाज़ क्या है?
(A) अननुबंधित उद्दीपक
(B) अनुबंधित उद्दीपक
(C) अननुबंधित अनुक्रिया
(D) अनुबंधित अनुक्रिया

259. अधिगम के सभी व्यवहारवादी सिद्धांतों की एक प्रमुख धारणा यह है कि:
(A) मानसिक अवस्थाएं व्यवहार का प्राथमिक कारण हैं।

(B) अधिगम अनुभव और पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया का परिणाम है।
(C) मनुष्य जन्मजात ज्ञान के साथ पैदा होते हैं।
(D) अधिगम का अध्ययन केवल अंतर्दर्शन के माध्यम से किया जा सकता है।

260. एक नया फोन नंबर सीखना आपके पुराने फोन नंबर को याद रखना कठिन बना सकता है। यह किसका उदाहरण है?
(A) अग्रलक्षी अवरोध
(B) प्रतिगामी अवरोध
(C) अर्थ संबंधी सामान्यीकरण
(D) अनुक्रिया विभेदन

261. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): ट्रिसमैन के क्षीणन मॉडल में, अनपेक्षित संदेशों को पूरी तरह से अवरुद्ध नहीं किया जाता है बल्कि उन्हें कमजोर कर दिया जाता है।
कारण (R): यह अनपेक्षित चैनल में महत्वपूर्ण या अर्थपूर्ण जानकारी, जैसे किसी का अपना नाम, को चेतना तक पहुँचने की अनुमति देता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

262. परिदृश्य के एक चित्र में, जो पेड़ अधिक दूर हैं, उन्हें अक्सर छोटा और धुंधला दिखाया जाता है। यह किन चित्रीय संकेतों के उपयोग को प्रदर्शित करता है?
(A) अंतःस्थिति और अभिसरण
(B) सापेक्ष आकार और वायुमंडलीय परिप्रेक्ष्य
(C) बनावट प्रवणता और रेटिनल असमानता
(D) रैखिक परिप्रेक्ष्य और गति लंबन

263. एक चूहा जिसने भोजन प्राप्त करने के लिए बार दबाना सीख लिया है, वह किसका प्रदर्शन कर रहा है?
(A) शास्त्रीय अनुबंधन
(B) नैमित्तिक अनुबंधन
(C) अव्यक्त अधिगम
(D) प्रतिनिधिक अधिगम

264. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: हल का मानना था कि सभी प्राथमिक अंतर्नोद जैविक आवश्यकताओं पर आधारित होते हैं।
कथन II: हल के सिद्धांत में, आदत शक्ति सुदृढ़ प्रयासों की संख्या के साथ बढ़ती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-sa/se सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

265. निम्नलिखित में से कौन संकेत संसूचन सिद्धांत विश्लेषण का मुख्य घटक नहीं है?
(A) हिट दर
(B) मिथ्या सचेत दर
(C) डी-प्राइम
(D) CS

266. स्वरुप पहचान के टेम्पलेट-मैचिंग सिद्धांतों की एक प्रमुख आलोचना क्या है?
(A) मॉडल को डेटा विश्लेषण के लिए काफी अधिक लचीला माना जाता है।
(B) मॉडल अत्यधिक विविध या नवीन उद्दीपकों की पहचान को स्पष्ट नहीं कर सकता है।
(C) मॉडल सरल श्रवण पैटर्न की पहचान तक सीमित है।
(D) मॉडल विशिष्ट उद्दीपक विशेषताओं की महत्वपूर्ण भूमिका को अनदेखा करता है।

267. निम्नलिखित में से किस अधिगम सिद्धांतकार द्वारा "सुदृढ़ीकरण" शब्द का उपयोग करने की सबसे अधिक संभावना है?
(A) पावलव
(B) स्किनर
(C) टोलमैन
(D) एबिंगहास

268. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मनोवैज्ञानिक)
P. टोलमैन
Q. पावलव
R. स्किनर
S. थार्नडाइक
सूची II: (प्रायोगिक विषय/उपकरण)
1. कुत्ते और लार ग्रंथियां
2. पहेली बक्सों में बिल्लियाँ
3. नैमित्तिक कक्षों में चूहे और कबूतर
4. भूलभुलैया में चूहे
(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-2, R-4, S-1

269. अवधान को स्थानांतरित करने और जानकारी के कई अंशों और कार्यों को संभालने की क्षमता किसका एक प्रमुख कार्य है?
(A) उन्मुखी प्रतिवर्त
(B) कार्यकारी अवधान
(C) सतत अवधान
(D) संवेदी अनुकूलन

270. सामीप्य का गेस्टाल्ट सिद्धांत बताता है कि वे तत्व जो _______ हैं, एक समूह के रूप में महसूस किए जाते हैं।
(A) आकृति में समान
(B) एक साथ गति कर रहे
(C) एक-दूसरे के निकट
(D) रंग में भिन्न

271. अवधान के बुनियादी निर्धारकों में निम्नलिखित में से क्या शामिल है?
(A) केवल आनुवंशिक और विकासवादी कारक
(B) उद्दीपक और व्यक्ति से संबंधित कारक
(C) दिन का समय और चंद्र चक्र
(D) गणितीय समीकरणों की जटिलता

272. टोलमैन के सिद्धांत का एक प्रमुख घटक जिसने इसे सख्त व्यवहारवाद से अलग किया, वह किसकी अवधारणा थी?
(A) सुदृढ़ीकरण
(B) मध्यवर्ती चर
(C) अननुबंधित अनुक्रियाएं
(D) अंतर्नोद न्यूनता

273. शाब्दिक अधिगम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सामान्यीकरण समान उद्दीपकों के प्रति समान रूप से अनुक्रिया करना है।
II. विभेदन समान उद्दीपकों के प्रति अलग-अलग अनुक्रिया करना है।
III. दोनों प्रक्रियाएं भाषा अर्जन के लिए अप्रासंगिक हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

274. संकेत संसूचन सिद्धांत में, यदि एक प्रेक्षक का d′ उच्च है, तो इसका अर्थ है कि वह:
(A) 'हाँ' कहने के प्रति प्रबल पक्षपात रखता है।
(B) 'नहीं' कहने के प्रति प्रबल पक्षपात रखता है।
(C) शोर से संकेत को अलग करने में बहुत कुशल है।
(D) शोर से संकेत को अलग करने में बहुत कुशल नहीं है।

275. एक माता-पिता बच्चे को अपना कमरा साफ करने के लिए टोकते रहते हैं। बच्चा कमरा साफ करता है, और टोकना बंद हो जाता है। भविष्य में बच्चे द्वारा अपना कमरा साफ करने की संभावना अधिक होती है। यह किसका उदाहरण है?
(A) सकारात्मक सुदृढ़ीकरण
(B) नकारात्मक सुदृढ़ीकरण
(C) सकारात्मक दंड
(D) नकारात्मक दंड

276. 'पृष्ठभूमि' पर एक 'आकृति' का प्रत्यक्षण किसकी एक मौलिक अवधारणा है?
(A) अधिगम सिद्धांत
(B) प्रत्यक्षणात्मक संगठन
(C) चयनात्मक अवधान
(D) शाब्दिक अधिगम

277. किस सिद्धांतकार के कार्य ने सीधे तौर पर रेखीय अभिक्रमित अधिगम के विकास का मार्ग प्रशस्त किया?
(A) टोलमैन
(B) हल
(C) पावलव
(D) स्किनर

278. जिस कुत्ते ने आपको काटा था, केवल उसी से डरना सीखना, लेकिन अन्य कुत्तों से नहीं, किसका उदाहरण है?
(A) उद्दीपक सामान्यीकरण
(B) उद्दीपक विभेदन
(C) स्वतः पुनर्प्राप्ति
(D) द्वितीय-क्रम अनुबंधन

279. एम्स रूम भ्रम _______ का हेरफेर करके _______ का गलत प्रत्यक्षण उत्पन्न करने का कार्य करता है।
(A) एकनेत्री गहराई संकेत; आकार
(B) द्विनेत्री संकेत; रंग
(C) आकृति-पृष्ठभूमि संबंध; गति
(D) अवधान केंद्र; आकृति

280. पावलव और थार्नडाइक के शोध के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) पावलव ने स्वैच्छिक अनुक्रियाओं का अध्ययन किया, जबकि थार्नडाइक ने प्रतिवर्तों का अध्ययन किया।
(B) पावलव ने नैमित्तिक अनुबंधन का अध्ययन किया, जबकि थार्नडाइक ने शास्त्रीय अनुबंधन का अध्ययन किया।
(C) पावलव ने उत्पन्न प्रतिवर्तों का अध्ययन किया, जबकि थार्नडाइक ने उत्सर्जित, स्वैच्छिक क्रियाओं का अध्ययन किया।
(D) पावलव ने कुत्तों का उपयोग किया, जबकि थार्नडाइक ने बिल्लियों का।

281. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): अवधान एक सीमित संसाधन है।
कारण (R): जब लोग एक साथ दो जटिल कार्य करने की कोशिश करते हैं, तो एक या दोनों कार्यों के निष्पादन में गिरावट आने की प्रवृत्ति होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

282. प्रत्यक्षण की प्रक्रिया को सबसे अच्छी तरह इस रूप में वर्णित किया जा सकता है:
(A) संवेदी उद्दीपकों का एक निष्क्रिय स्वागत।
(B) व्याख्या और संगठन की एक सक्रिय प्रक्रिया।
(C) संवेदना की प्रक्रिया के समान।
(D) एक विशुद्ध रूप से अधोमुखी प्रक्रिया।

283. हल के सिद्धांत में, D का अर्थ अंतर्नोद है। उनके मॉडल में अंतर्नोद की क्या भूमिका है?
(A) यह व्यवहार को एक विशिष्ट लक्ष्य की ओर निर्देशित करता है।
(B) यह व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करता है लेकिन उसे निर्देशित नहीं करता है।
(C) यह व्यवहार का सीखा हुआ घटक है।
(D) यह इनाम का प्रोत्साहन मूल्य है।

284. निम्नलिखित में से कौन-सी शाब्दिक सामग्री सबसे जल्दी सीखी जाएगी?
(A) निरर्थक शब्दांशों की एक सूची।
(B) दुर्लभ, तकनीकी शब्दों की एक सूची।
(C) सामान्य, उच्च-आवृत्ति वाले शब्दों की एक सूची।
(D) विदेशी शब्दों की एक सूची।

285. इन सिद्धांतकारों को उनके अधिगम सिद्धांतों की बढ़ती संज्ञानात्मक जटिलता के आधार पर व्यवस्थित कीजिए।
I. पावलव
II. हल
III. टोलमैन
(A) I, II, III
(B) II, III, I
(C) III, I, II
(D) II, I, III

286. जब एक उद्दीपक जो पहले तटस्थ था, स्वाभाविक रूप से अनुक्रिया उत्पन्न करने वाले उद्दीपक के साथ युग्मित होने के बाद अनुक्रिया उत्पन्न करने लगता है, तो _______ हुआ है।
(A) नैमित्तिक अनुबंधन
(B) शास्त्रीय अनुबंधन
(C) अव्यक्त अधिगम
(D) प्रेक्षणात्मक अधिगम

287. निम्नलिखित में से कौन गहराई प्रत्यक्षण के लिए एकनेत्री संकेत नहीं है?
(A) छायांकन
(B) वायुमंडलीय परिप्रेक्ष्य
(C) अभिसरण
(D) सापेक्ष आकार

288. शाब्दिक अधिगम के कार्य में, 'DOG-CAT' युग्म को सीखना 'XUJ-QIK' को सीखने की तुलना में आसान है। यह शाब्दिक अधिगम के किस निर्धारक के महत्व को दर्शाता है?
(A) विधि
(B) सामग्री की अर्थपूर्णता
(C) सामान्यीकरण
(D) विभेदन

289. अवधान मॉडलों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ब्रॉडबेंट का मॉडल एक प्रारंभिक चयन मॉडल है।
II. ट्रिसमैन के मॉडल में एक क्षीणक शामिल है, न कि पूर्ण-या-शून्य फिल्टर।
III. ड्यूश और ड्यूश का मॉडल एक विलंबित चयन मॉडल है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

290. यह अवधारणा कि अधिगम में एक उद्दीपक और एक अनुक्रिया के बीच संबंध बनाना शामिल है, किसके सिद्धांत के लिए केंद्रीय थी?
(A) एडवर्ड टोलमैन
(B) एडवर्ड थार्नडाइक
(C) वोल्फगैंग कोहलर
(D) जीन पियाजे

291. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. विभाजित अवधान
Q. आकृति-पृष्ठभूमि
R. प्रभाव का नियम
S. अव्यक्त अधिगम
सूची II: (मूल विचार)
1. परिणाम व्यवहार को रूप देते हैं
2. सुदृढ़ीकरण के बिना अधिगम
3. कई कार्यों के लिए संसाधन आवंटित करना
4. प्रत्यक्षणात्मक संगठन
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

292. अनुक्रिया में 'स्कैलप' प्रभाव किस सुदृढ़ीकरण अनुसूची की विशेषता है?
(A) निश्चित अनुपात
(B) चर अनुपात
(C) निश्चित अंतराल
(D) चर अंतराल

293. हम गहराई, दूरी और गति को कैसे महसूस करते हैं, इसका अध्ययन किसके अंतर्गत एक मुख्य विषय है?

(A) अवधान
(B) प्रत्यक्षण
(C) अधिगम
(D) शाब्दिक अधिगम

294. एक छात्र परीक्षा से ठीक पहले रात भर पढ़ाई करके परीक्षा की तैयारी करता है। यह किसका उदाहरण है?
(A) अंतराल वाला अभ्यास
(B) केंद्रित अभ्यास
(C) अंश अधिगम
(D) क्रमिक अधिगम

295. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: संकेत संसूचन सिद्धांत के अनुसार, प्रत्यक्षण एक निर्णय लेने की प्रक्रिया है।
कथन II: सिद्धांत उद्दीपक संवेदनशीलता के प्रभाव को अनुक्रिया पक्षपात से अलग करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

296. फाई-परिघटना ________ गति का एक उदाहरण है।
(A) वास्तविक
(B) आभासी
(C) प्रेरित
(D) स्वतःगतिक

297. निम्नलिखित में से कौन हल के अधिगम के सिद्धांत में एक प्रमुख अवधारणा नहीं है?
(A) अंतर्नोद
(B) आदत शक्ति
(C) संज्ञानात्मक मानचित्र
(D) प्रतिक्रिया विभव

298. पावलव और स्किनर के शोध मनोविज्ञान के किस प्रमुख दृष्टिकोण के हिस्से हैं?
(A) मनोविश्लेषण
(B) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान
(C) व्यवहारवाद
(D) मानवतावादी मनोविज्ञान

299. शाब्दिक अधिगम के अध्ययन में विभेदन क्या है?
(A) समान उद्दीपकों के प्रति एक ही तरह से अनुक्रिया करना सीखना।
(B) अलग-अलग उद्दीपकों के प्रति अलग-अलग अनुक्रिया करना सीखना।
(C) समय के साथ जानकारी भूलना।
(D) नए अधिगम पर पूर्व अधिगम का प्रभाव।

300. कौन-सा मस्तिष्क नेटवर्क सतर्कता और उत्तेजना बनाए रखने से सबसे अधिक जुड़ा हुआ है, जो अवधान का एक मूलभूत पहलू है?
(A) लिम्बिक सिस्टम
(B) रेटिकुलर एक्टिवेटिंग सिस्टम
(C) विज़ुअल कॉर्टेक्स
(D) मोटर कॉर्टेक्स

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) अन्य पर्यावरणीय इनपुट को छानकर हटाते हुए विशिष्ट उद्दीपकों पर ध्यान केंद्रित करना।
मनोविज्ञान में अवधान वह प्रक्रिया है जिसमें हम वातावरण के विभिन्न उद्दीपकों में से विशिष्ट सूचनाओं का चयन करते हैं। यह सीमित मानसिक संसाधनों के उचित प्रबंधन के लिए अनिवार्य है। इसमें अप्रासंगिक पर्यावरणीय निवेशों को छानकर अलग कर दिया जाता है ताकि संज्ञानात्मक क्षमता का प्रभावी उपयोग हो सके। यह चयनात्मक प्रक्रिया सतर्कता बनाए रखने और सूचना प्रसंस्करण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2. (A) सामीप्य का नियम
प्रत्यक्षण संगठन के सिद्धांतों में सामीप्य का नियम यह स्पष्ट करता है कि मानव मस्तिष्क एक-दूसरे के निकट स्थित वस्तुओं को स्वाभाविक रूप से एक समूह के रूप में देखता है। यह नियम बताता है कि दूरी कम होने पर हम अलग-अलग तत्वों को स्वतंत्र रूप से देखने के बजाय उन्हें एक प्रतिरूप में जोड़कर देखते हैं। यह दृश्य सूचनाओं को व्यवस्थित करने की एक जन्मजात प्रवृत्ति है।

3. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
अधिगम व्यवहार में होने वाला एक अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है जो अनुभव या अभ्यास से उत्पन्न होता है। यह प्रक्रिया केवल उन परिवर्तनों तक सीमित है जो व्यक्ति की क्रियाओं और अनुभवों के माध्यम से विकसित होते हैं। इसमें थकान, परिपक्वता, मादक द्रव्यों के सेवन या किसी रोग के कारण होने वाले व्यवहारगत परिवर्तनों को सम्मिलित नहीं किया जाता है क्योंकि ये परिवर्तन अस्थायी और अनुभवहीन होते हैं।

4. (D) युग्मित-साहचर्य अधिगम
शाब्दिक अधिगम की तकनीकों में युग्मित साहचर्य अधिगम एक प्रमुख विधि है जिसका उपयोग दो शब्दों या वस्तुओं के मध्य संबंध स्थापित करने के लिए किया जाता है। इसमें शिक्षार्थी को उद्दीपक और अनुक्रिया के युग्मों को स्मरण करना होता है ताकि एक शब्द प्रस्तुत होने पर वह उससे संबंधित दूसरा शब्द बता सके। यह विधि विदेशी भाषा की शब्दावली या ऐतिहासिक तिथियों को याद करने में अत्यंत प्रभावी है।

5. (C) व्यक्ति के आंतरिक उद्देश्य।
अवधान को प्रभावित करने वाले कारकों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। आंतरिक निर्धारक वे कारक हैं जो व्यक्ति की अपनी मनोवैज्ञानिक स्थिति, आवश्यकताओं, रुचियों और उद्देश्यों से संबंधित होते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति करना चाहता है, तो उसका ध्यान स्वाभाविक रूप से उस लक्ष्य से संबंधित उद्दीपकों की ओर आकर्षित होता है। यह तीव्रता या नवीनता जैसे बाह्य कारकों से भिन्न है।

6. (B) हिट
संकेत संसूचन सिद्धांत के अंतर्गत चार संभावित निर्णय परिणाम होते हैं। जब कोई वास्तविक संकेत वातावरण में उपस्थित होता है और प्रेक्षक सफलतापूर्वक उसकी उपस्थिति को पहचान लेता है, तो उसे 'हिट' कहा जाता है। सुरक्षा जांच जैसे संवेदनशील कार्यों में इसकी उच्च दर अत्यंत आवश्यक होती है। यह सटीक पहचान प्रेक्षक की संवेदनशीलता और उसके निर्णय लेने के मापदंडों पर निर्भर करती है जो अनिश्चितता को कम करती है।

7. (D) प्रभाव का नियम
गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने प्रत्यक्षण संगठन के कई नियम दिए हैं जो यह बताते हैं कि हम सूचनाओं को समूहों में कैसे व्यवस्थित करते हैं। इनमें सामीप्य, समानता, निरंतरता और पूर्ति जैसे नियम सम्मिलित हैं। इसके विपरीत, प्रभाव का नियम अधिगम से संबंधित है जिसे एडवर्ड थार्नडाइक ने प्रतिपादित किया था। यह नियम बताता है कि संतोषजनक परिणामों वाले व्यवहारों के दोहराए जाने की संभावना अधिक होती है, जो संगठन से भिन्न है।

8. (A) अनुबंधित उद्दीपक
इवान पावलव के शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत में अनुबंधित उद्दीपक वह तटस्थ वस्तु होती है जो बार-बार अननुबंधित उद्दीपक के साथ प्रस्तुत किए जाने पर विशिष्ट अनुक्रिया उत्पन्न करने लगती है। प्रयोग के प्रारंभ में घंटी एक तटस्थ उद्दीपक थी जिसका लार स्रवण से कोई संबंध नहीं था। भोजन के साथ बार-बार युग्मित होने के पश्चात घंटी स्वयं ही लार स्रवण की अनुक्रिया उत्पन्न करने में सक्षम हो गई।

9. (C) सामग्री की लंबाई का सीखने की गति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
शाब्दिक अधिगम में सामग्री की विशेषताएं अधिगम की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। सामान्यतः सामग्री जितनी लंबी और जटिल होती है, उसे सीखने में उतना ही अधिक समय और प्रयास लगता है। इसके विपरीत, अर्थपूर्ण और परिचित शब्दों को निरर्थक शब्दांशों की तुलना में शीघ्र सीखा जा सकता है। सीवीसी त्रयक्षर जैसे कम अर्थपूर्ण शब्दों का उपयोग प्रयोगशालाओं में अधिगम की सीमाओं का परीक्षण करने हेतु किया जाता है।

10. (A) सामान्यीकरण
शास्त्रीय अनुबंधन में सामान्यीकरण वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत एक जीव मूल अनुबंधित उद्दीपक के समान दिखने वाले अन्य उद्दीपकों के प्रति भी वैसी ही अनुक्रिया करता है। जब कोई बालक किसी विशिष्ट श्वेत वस्तु से भयभीत होना सीख जाता है, तो उसका मस्तिष्क उस भय को अन्य समान दिखने वाली

श्वेत और रोएंदार वस्तुओं पर भी लागू कर देता है। यह व्यवहार अधिगम के विस्तार को दर्शाता है।

11. (B) केवल II और III
अवधान एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें चयनात्मक और सतत जैसे विभिन्न प्रकार सम्मिलित हैं। चयनात्मक अवधान किसी विशिष्ट वस्तु पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता है, जबकि विभाजित अवधान एक साथ कई कार्यों पर ध्यान देने से संबंधित है। इसके जैविक आधार में मस्तिष्क की जालावत सक्रियण प्रणाली और ललाट खंड जैसी संरचनाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये संरचनाएं व्यक्ति को सतर्क रखने और संज्ञानात्मक संसाधनों को प्रबंधित करने में सहायक हैं।

12. (B) आभासी गति प्रत्यक्षण
फाई परिघटना दृष्टि संबंधी एक ऐसा भ्रम है जिसमें दो या दो से अधिक स्थिर प्रकाश स्रोतों को एक निश्चित अंतराल पर बारी-बारी से प्रदीप्त करने पर वे गतिमान प्रतीत होते हैं। यह वास्तविक गति के अभाव में भी गति का अनुभव कराता है, अतः इसे आभासी गति कहा जाता है। गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने इस सिद्धांत का उपयोग यह सिद्ध करने के लिए किया था कि हमारा प्रत्यक्षण केवल संवेदी अंगों का योग नहीं है।

13. (C) निरंतर सुदृढ़ीकरण के माध्यम से
बी.एफ. स्किनर के नैमित्तिक अनुबंधन सिद्धांत के अनुसार, सुदृढ़ीकरण की अनुसूचियां व्यवहार के अर्जन और अनुरक्षण में महत्वपूर्ण होती हैं। वांछित व्यवहार को तीव्रता से स्थापित करने के लिए निरंतर सुदृढ़ीकरण सर्वाधिक प्रभावी माना जाता है, जिसमें प्रत्येक सही अनुक्रिया के पश्चात पुरस्कार दिया जाता है। यद्यपि व्यवहार को दीर्घकाल तक बनाए रखने के लिए आंशिक सुदृढ़ीकरण उपयोगी है, किंतु प्रारंभिक चरण में निरंतरता ही सीखने की गति को बढ़ाती है।

14. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संकेत संसूचन सिद्धांत में निर्णय लेने की प्रक्रिया दो मुख्य कारकों पर निर्भर करती है, जिनमें संवेदनशीलता और अनुक्रिया पक्षपात सम्मिलित हैं। उदार अनुक्रिया पक्षपात वाला व्यक्ति अनिश्चितता की स्थिति में भी स्वीकारात्मक प्रतिक्रिया देने की प्रवृत्ति रखता है। इसके परिणामस्वरूप संकेत की पहचान की दर अर्थात 'हिट' बढ़ जाते हैं, किंतु साथ ही मिथ्या सचेत होने की संभावना भी बढ़ जाती है। यह संतुलन प्रेक्षक की निर्णय रणनीति को दर्शाता है।

15. (A) चयनात्मक अवधान
कॉकटेल पार्टी प्रभाव अवधान की उस क्षमता को दर्शाता है जिसमें कोई व्यक्ति कोलाहलपूर्ण वातावरण में भी अपनी रुचि की विशिष्ट वार्ता पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। यह चयनात्मक अवधान का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ हमारा मस्तिष्क अनावश्यक ध्वनियों को छानकर अलग कर देता है और केवल महत्वपूर्ण सूचनाओं को संसाधित करता है। यह प्रक्रिया सिद्ध करती है कि अवधान की प्रकृति चयनात्मक है और हम केवल सीमित सूचनाएं ग्रहण करते हैं।

16. (B) समान नियति का नियम
गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के अनुसार समान नियति का नियम यह बताता है कि जो तत्व एक ही दिशा और गति से चलते हैं, उन्हें हमारा मस्तिष्क एक समूह के रूप में देखता है। पक्षियों का एक साथ उड़ना या वाहनों का एक दिशा में चलना इसी सिद्धांत के अंतर्गत आता है। यह नियम दृश्य जगत में गतिमान वस्तुओं को अर्थपूर्ण समूहों में व्यवस्थित करने में सहायता करता है ताकि हम उन्हें एक इकाई मानें।

17. (B) नकारात्मक सुदृढ़ीकरण
नैमित्तिक अनुबंधन में नकारात्मक सुदृढ़ीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें किसी अप्रिय या कष्टदायक उद्दीपक को हटाकर वांछित व्यवहार की आवृत्ति को बढ़ाया जाता है। इसमें दंड के विपरीत, व्यवहार को सुदृढ़ करने का प्रयास किया जाता है। उदाहरण के लिए, तीव्र शोर को बंद करने के लिए खिड़की लगाना एक ऐसा व्यवहार है जो भविष्य में दोहराया जाएगा क्योंकि इससे एक अप्रिय स्थिति समाप्त होती है। यह सुदृढ़ीकरण परिहार अधिगम हेतु महत्वपूर्ण है।

18. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
अधिगम के विभिन्न सिद्धांतों ने व्यवहार परिवर्तन की व्याख्या भिन्न प्रकार से की है। एडवर्ड थार्नडाइक ने प्रभाव का नियम दिया, जबकि एडवर्ड टोलमैन ने चूहों पर प्रयोग कर अव्यक्त अधिगम और संज्ञानात्मक मानचित्र की अवधारणा प्रस्तुत की। इवान पावलव को शास्त्रीय अनुबंधन के लिए जाना जाता है जिसमें उद्दीपकों के साहचर्य पर बल दिया गया है। बी.एफ. स्किनर ने नैमित्तिक अनुबंधन का विकास किया, जो व्यवहार के परिणामों और सुदृढ़ीकरण पर केंद्रित है।

19. (C) क्रमिक अधिगम
शाब्दिक अधिगम की क्रमिक विधि में शिक्षार्थी को सूचनाओं या शब्दों की सूची उसी विशिष्ट क्रम में याद करनी होती है जिस क्रम में वे प्रस्तुत किए गए थे। इसमें प्रत्येक शब्द आने वाले अगले शब्द के लिए एक संकेत के रूप में कार्य करता है। कविताएं स्मरण करना या वर्णमाला सीखना इसके सामान्य उदाहरण हैं। इस प्रक्रिया में प्रायः सूची के आदि और अंत के शब्द मध्य वाले शब्दों की तुलना में शीघ्र याद हो जाते हैं।

20. (D) रेटिकुलर एक्टिवेटिंग सिस्टम
मस्तिष्क की जालावत सक्रियण प्रणाली सतर्कता और उत्तेजना के स्तर को नियंत्रित करने में प्राथमिक भूमिका निभाती है। यह मस्तिष्क स्तंभ में स्थित तंत्रिकाओं का एक जाल है जो संवेदी सूचनाओं को छानकर प्रमस्तिष्क वल्कुट तक प्रेषित करता है। जब यह प्रणाली सक्रिय होती है, तो व्यक्ति बाह्य उद्दीपकों के प्रति अधिक जागरूक और अवधानशील होता है। इसके बिना अवधान की बुनियादी जैविक क्रियाएं और सामान्य चेतना संभव नहीं होती है।

21. (C) स्वरूप पहचान
स्वरूप पहचान वह मानसिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम संवेदी सूचनाओं को पूर्व में संग्रहीत स्मृतियों के साथ सुमेलित करके उन्हें पहचानते हैं। किसी धुन को विभिन्न वाद्ययंत्रों पर

बजने के पश्चात भी पहचान लेना यह दर्शाता है कि हमारा मस्तिष्क उसके मूल ढांचे को समझता है। यह क्षमता हमें बदलते परिवेश में भी वस्तुओं और ध्वनियों की निरंतरता बनाए रखने में सहायता करती है। यह भौतिक गुणों के साथ उनके विन्यास पर आधारित है।

22. (A) विभेदन
विभेदन अधिगम की वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति दो या अधिक समान दिखने वाले उद्दीपकों के मध्य सूक्ष्म अंतर करना सीखता है। जब छात्र सोडियम और पोटेशियम के प्रतीकों को अलग-अलग पहचानता है, तो वह विशिष्ट अनुक्रियाएं करना सीख रहा होता है। यह क्षमता सामान्यीकरण के विपरीत कार्य करती है और सटीक ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। इसमें त्रुटियों को कम करने के लिए उद्दीपकों की विशिष्ट विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

23. (D) उद्दीपक की अव्यक्त सामग्री
अवधान के निर्धारकों को बाह्य और आंतरिक श्रेणियों में विभाजित किया गया है। बाह्य निर्धारक उद्दीपक की भौतिक विशेषताओं जैसे आकार, रंग, तीव्रता और पुनरावृत्ति से संबंधित होते हैं जो स्वाभाविक रूप से हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। अव्यक्त सामग्री जैसा कोई कारक अवधान का मानक निर्धारक नहीं माना जाता है क्योंकि यह उद्दीपक के प्रत्यक्ष गुणों का भाग नहीं है। अवधान मुख्य रूप से उद्दीपक की स्पष्टता और व्यक्ति की तत्परता पर आधारित प्रक्रिया है।

24. (A) I, III, II
शास्त्रीय अनुबंधन की प्रक्रिया एक निश्चित क्रम में विकसित होती है। सर्वप्रथम अर्जन का चरण आता है जिसमें उद्दीपक और अनुक्रिया के मध्य साहचर्य बनता है। इसके पश्चात, यदि सुदृढ़ीकरण बंद कर दिया जाए, तो विलोपन होता है और अनुक्रिया धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है। अंत में, कुछ समय बीतने के बाद बिना किसी अतिरिक्त प्रशिक्षण के वह अनुक्रिया अचानक पुनः प्रकट हो सकती है, जिसे स्वतः पुनर्प्राप्ति कहा जाता है। यह अधिगम के लचीलेपन को दर्शाता है।

25. (C) अव्यक्त अधिगम
एडवर्ड टोलमैन द्वारा प्रस्तुत अव्यक्त अधिगम की अवधारणा यह बताती है कि अधिगम सुदृढ़ीकरण के बिना भी हो सकता है, किंतु वह व्यवहार में तब तक प्रकट नहीं होता जब तक उचित प्रोत्साहन न मिले। चूहों ने बिना खाद्य पुरस्कार के भी भूलभुलैया का संज्ञानात्मक मानचित्र विकसित कर लिया था। यह सिद्धांत सिद्ध करता है कि संज्ञान और आंतरिक प्रतिनिधित्व अधिगम का आधार हैं। यह व्यवहारवाद के उस विचार को चुनौती देता है जो केवल सुदृढ़ीकरण पर आधारित था।

26. (B) ट्रिसमैन का क्षीणन मॉडल
एनी ट्रिसमैन का क्षीणन मॉडल चयनात्मक अवधान की व्याख्या करते हुए बताता है कि अनपेक्षित सूचनाएं पूर्णतः अवरुद्ध नहीं होती हैं। इसके स्थान पर, एक क्षीणक यंत्र इन सूचनाओं की शक्ति को कम कर देता है। यदि इन सूचनाओं में कोई महत्वपूर्ण संकेत जैसे व्यक्ति का अपना नाम हो, तो वे कम शक्ति के बावजूद चेतना तक पहुँच सकती हैं। यह मॉडल ब्रॉडबेंट के कठोर फिल्टर सिद्धांत की तुलना में अधिक लचीला और व्यावहारिक है।

27. (D) रैखिक परिप्रेक्ष्य
रैखिक परिप्रेक्ष्य एक महत्वपूर्ण एकनेत्री गहराई संकेत है जिसका उपयोग कलाकार और मानव मस्तिष्क दूरी का अनुमान लगाने हेतु करते हैं। इसमें दो समानांतर रेखाएं, जैसे रेल की पटरियाँ, जैसे-जैसे दूर जाती हैं, वे एक बिंदु पर मिलती हुई प्रतीत होती हैं। रेखाओं के मध्य की घटती दूरी गहराई और विस्तार का आभास कराती है। यह संकेत केवल एक आँख के उपयोग से भी दूरी का प्रभावी ढंग से बोध कराने में पूर्णतः सक्षम होता है।

28. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
अभिक्रमित अधिगम एक शिक्षण पद्धति है जिसमें सूचनाओं को लघु और व्यवस्थित चरणों में प्रस्तुत किया जाता है जिन्हें 'फ्रेम' कहा जाता है। इसकी मुख्य विशेषता शिक्षार्थी को उसकी अनुक्रिया के पश्चात तत्काल प्रतिपुष्टि प्रदान करना है। यह प्रतिपुष्टि सीखने वाले को अपनी त्रुटियों को सुधारने और सही उत्तरों के माध्यम से सुदृढ़ीकरण प्राप्त करने में सहायता करती है। यह प्रक्रिया व्यक्तिगत गति पर आधारित होती है, जिससे प्रत्येक छात्र अपनी क्षमतानुसार आगे बढ़ सकता है।

29. (C) अंतर्नोद-न्यूनता सिद्धांत
क्लार्क हल का अधिगम सिद्धांत मुख्य रूप से जैविक आवश्यकताओं और उनकी तुष्टि पर केंद्रित है। उन्होंने प्रस्तावित किया कि जब शरीर में किसी तत्व की न्यूनता होती है, तो अंतर्नोद उत्पन्न होता है जो जीव को क्रिया हेतु प्रेरित करता है। व्यवहार का उद्देश्य इस अंतर्नोद को कम करना और शारीरिक साम्यावस्था प्राप्त करना होता है। यह एक व्यवस्थित व्यवहार सिद्धांत है जिसमें आदत शक्ति और प्रोत्साहन जैसे मध्यवर्ती चरों का उपयोग करके व्यवहार की भविष्यवाणी की जाती है।

30. (A) क्रमिक स्थिति प्रभाव
क्रमिक स्थिति प्रभाव शाब्दिक अधिगम की वह घटना है जिसमें किसी सूची की वस्तुओं को स्मरण रखने की क्षमता उनकी स्थिति पर निर्भर करती है। व्यक्ति सामान्यतः सूची के प्रारंभिक और अंतिम शब्दों को मध्य वाले शब्दों की तुलना में अधिक सटीकता से याद रख पाते हैं। इसे प्राथमिकता प्रभाव और नवीनता प्रभाव के संयोजन के रूप में देखा जाता है। यह प्रभाव स्मृति के अल्पकालिक और दीर्घकालिक भंडारण की कार्यप्रणाली को समझने में सहायता प्रदान करता है।

31. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ब्रॉडबेंट का फिल्टर मॉडल चयनात्मक अवधान का एक प्रारंभिक चयन सिद्धांत है जो सूचना प्रसंस्करण की सीमित क्षमता को स्पष्ट करता है। यह मॉडल प्रस्तावित करता है कि संवेदी स्तर पर एक फिल्टर होता है जो केवल भौतिक विशेषताओं के आधार पर सूचनाओं का चयन करता है। अनपेक्षित सूचनाओं को अर्थ संबंधी विश्लेषण से पूर्व ही पूर्णतः रोक दिया जाता है।

इस प्रकार, केवल वही सूचनाएं उच्च स्तर के प्रसंस्करण तक पहुँच पाती हैं जिन्हें फिल्टर द्वारा चुना जाता है।

32. (B) पूर्ति
गेस्टाल्ट मनोविज्ञान में पूर्ति का नियम यह बताता है कि हमारा मस्तिष्क अपूर्ण आकृतियों को पूर्ण और अर्थपूर्ण रुपों में देखने की प्रवृत्ति रखता है। जब हम किसी खंडित रेखा या अधूरी आकृति को देखते हैं, तो हम मानसिक रुप से रिक्त स्थानों को भर देते हैं ताकि एक सुसंगत चित्र बन सके। यह जन्मजात मानसिक प्रक्रिया हमें अव्यवस्थित संवेदी सूचनाओं से भी स्पष्ट और समग्र प्रत्यक्षण प्राप्त करने में सक्षम बनाती है, जिससे हमारा अनुभव स्थिर होता है।

33. (C) प्रभाव का नियम
एडवर्ड थार्नडाइक ने अपने संबंधवाद के सिद्धांत में प्रभाव के नियम को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना है। उनके अनुसार, यदि किसी अनुक्रिया के पश्चात संतोषजनक परिणाम प्राप्त होता है, तो उद्दीपक और अनुक्रिया के मध्य का बंधन सुदृढ़ हो जाता है। इसके विपरीत, कष्टदायक परिणामों से यह बंधन दुर्बल हो जाता है। यह नियम आधुनिक सुदृढ़ीकरण के सिद्धांतों का आधार बना और यह स्पष्ट करता है कि पुरस्कार और दंड अधिगम की प्रक्रिया को किस प्रकार निर्देशित करते हैं।

34. (D) शाब्दिक अधिगम और स्मृति
हरमन एबिंगहास ने स्मृति और विस्मृति के वैज्ञानिक अध्ययन हेतु निरर्थक शब्दांशों या सीवीसी त्रयक्षर का आविष्कार किया था। ये ऐसे अक्षर समूह थे जिनका कोई पूर्व अर्थ नहीं था, जिससे वे पूर्व ज्ञान के प्रभाव को नियंत्रित कर सके। उन्होंने स्वयं पर प्रयोग करके अधिगम वक्र और विस्मृति वक्र का प्रतिपादन किया। उनके शोध ने यह समझने में सहायता की कि अभ्यास की मात्रा और समय अंतराल सूचनाओं को याद रखने की क्षमता को कैसे प्रभावित करते हैं।

35. (C) संकेत के प्रति प्रेक्षक की संवेदनशीलता
संकेत संसूचन सिद्धांत में 'डी-प्राइम' एक सांख्यिकीय माप है जो प्रेक्षक की संवेदी क्षमता या संवेदनशीलता को दर्शाता है। यह माप बताता है कि प्रेक्षक कितनी सटीकता से पृष्ठभूमि के कोलाहल में से वास्तविक संकेत को पहचान सकता है। उच्च डी-प्राइम का अर्थ है बेहतर संवेदनशीलता, जबकि कम मान का अर्थ है संकेत और शोर के मध्य अंतर करने में कठिनाई। यह माप व्यक्ति के निर्णय लेने के पक्षपात से पूर्णतः स्वतंत्र और वस्तुनिष्ठ होता है।

36. (B) स्ट्रोबोस्कोपिक गति
स्ट्रोबोस्कोपिक गति एक आभासी गति प्रत्यक्षण है जो तब होता है जब स्थिर चित्रों के अनुक्रम को अत्यंत तीव्र गति से प्रस्तुत किया जाता है। चलचित्रों और एनीमेशन में इसी सिद्धांत का उपयोग किया जाता है, जहाँ मस्तिष्क पृथक चित्रों को जोड़ने हेतु निरंतरता का उपयोग करता है। यह हमारे दृश्य तंत्र की उस विशेषता को दर्शाती है जो पृथक उद्दीपकों को एक प्रवाह के रूप में देखती है। यह वास्तविक भौतिक गति के बिना भी गति का अनुभव प्रदान करता है।

37. (C) केवल I और III
अधिगम के विभिन्न सिद्धांतों ने व्यवहार और संज्ञान के अंतर्संबंधों को स्पष्ट किया है। एडवर्ड टोलमैन ने संज्ञानात्मक मानचित्रों के माध्यम से अधिगम में उद्देश्य की भूमिका को रेखांकित किया। दूसरी ओर, थार्नडाइक ने पहेली मंजूषा में बिल्लियों का उपयोग करके प्रयास और त्रुटि अधिगम का प्रदर्शन किया। क्लार्क हल का सिद्धांत एक जटिल प्रणाली है जिसमें कई मध्यवर्ती चर सम्मिलित हैं, न कि केवल साधारण उद्दीपक-अनुक्रिया संबंध। ये सिद्धांत आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान के आधार स्तंभ हैं।

38. (D) शाखीय प्रोग्रामिंग
नॉर्मन क्राउडर द्वारा विकसित शाखीय प्रोग्रामिंग एक लचीली अभिक्रमित अधिगम विधि है। इसमें शिक्षार्थी के उत्तरों के आधार पर अनुदेशन का मार्ग परिवर्तित हो जाता है। यदि कोई छात्र सही उत्तर देता है, तो वह आगामी कठिन स्तरों पर जा सकता है। त्रुटिपूर्ण उत्तर देने पर उसे उपचारात्मक सामग्री की ओर प्रेषित कर दिया जाता है ताकि वह अपनी कमियों को दूर कर सके। यह विधि व्यक्तिगत भिन्नताओं का सम्मान करती है और प्रत्येक छात्र को उनकी गति अनुसार शिक्षा देती है।

39. (D) विलोपन
शास्त्रीय अनुबंधन में विलोपन वह प्रक्रिया है जिसमें अनुबंधित अनुक्रिया धीरे-धीरे दुर्बल होकर समाप्त हो जाती है। यह तब होता है जब अनुबंधित उद्दीपक को बिना अननुबंधित उद्दीपक के बार-बार प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि घंटी बजने के पश्चात भोजन न दिया जाए, तो कुत्ता अंततः घंटी पर लार स्रवण बंद कर देता है। विलोपन दर्शाता है कि अधिगम एक गतिशील प्रक्रिया है जिसे निरंतर सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता होती है, अन्यथा संबंध विच्छेद हो जाता है।

40. (B) P-2, Q-1, R-1, S-2
गहराई और दूरी के प्रत्यक्षण हेतु हमारा मस्तिष्क विभिन्न प्रकार के संकेतों का उपयोग करता है। रेटिनल असमानता और अभिसरण द्विनेत्री संकेत हैं जिनमें दोनों आँखों की सूचनाओं का समन्वय अनिवार्य है। रैखिक परिप्रेक्ष्य और अंतःस्थिति एकनेत्री संकेत हैं जिन्हें केवल एक आँख से भी पहचाना जा सकता है। ये संकेत हमें द्वि-आयामी छवियों से त्रि-आयामी जगत का अनुभव करने में सहायता करते हैं और स्थान संबंधी सटीकता सुनिश्चित करने हेतु समन्वय में कार्य करते हैं।

41. (C) उद्दीपक तीव्रता
प्रत्यक्षण की प्रक्रिया उद्दीपक की विशेषताओं और व्यक्ति की अपनी आंतरिक अवस्थाओं दोनों से प्रभावित होती है। उद्दीपक की तीव्रता, जैसे तीव्र प्रकाश या उच्च स्वर, एक ऐसा बाह्य निर्धारक है जो हमारे संवेदी अंगों को स्वतः ही सक्रिय कर देता है। शक्तिशाली उद्दीपकों को दुर्बल उद्दीपकों की तुलना में अधिक सुगमता से और शीघ्र पहचाना जाता है। यह कारक व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर नहीं होता वरन पूर्णतः उद्दीपक के भौतिक गुणों पर आधारित होता है।

42. (B) चर-अनुपात
सुदृढ़ीकरण की चर-अनुपात अनुसूची में पुरस्कार एक अनिश्चित संख्या में अनुक्रियाएं करने के पश्चात दिया जाता है। स्लॉट मशीन इसी सिद्धांत पर कार्य करती है, जहाँ खिलाड़ी को यह ज्ञात नहीं होता कि आगामी विजय कब होगी। इस अनिश्चितता के कारण अनुक्रिया की दर अत्यंत उच्च और स्थिर बनी रहती है। यह अनुसूची विलोपन के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी होती है, जिससे द्यूत जैसी आदतों को त्यागना कठिन हो जाता है क्योंकि पुरस्कार की निरंतर प्रत्याशा बनी रहती है।

43. (D) विभिन्न समान शाब्दिक उद्दीपकों के प्रति विशिष्ट रूप से अनुक्रिया करना सीखना।
शाब्दिक विभेदन अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति दो या अधिक समान दिखने या सुनने वाले शब्दों के मध्य सूक्ष्म अंतर करना सीखता है। यह क्षमता तब महत्वपूर्ण होती है जब हमें मिलते-जुलते शब्दों हेतु पृथक अर्थ या अनुक्रियाएं देनी होती हैं। इसमें उद्दीपकों की विशिष्ट विशेषताओं की पहचान सम्मिलित है। यह प्रक्रिया सीखने की सटीकता को बढ़ाती है और भाषा के प्रभावी उपयोग में सहायता करती है, विशेषकर जब सामग्री के मध्य उच्च समानता हो।

44. (D) सुपीरियर ओलिवरी न्यूक्लियस और ऑडिटरी कॉर्टेक्स
चयनात्मक श्रवण अवधान की प्रक्रिया में मस्तिष्क के विभिन्न केंद्र समन्वित रूप से कार्य करते हैं। सुपीरियर ओलिवरी न्यूक्लियस ध्वनि के स्थान का पता लगाने में सहायता करता है, जो विशिष्ट वार्ता पर ध्यान केंद्रित करने हेतु आवश्यक है। ऑडिटरी कॉर्टेक्स ध्वनि की विशेषताओं का विश्लेषण करता है और अनपेक्षित कोलाहल को छानने में सहायता करता है। यह जैविक तंत्र हमें जटिल ध्वनि वातावरण में भी महत्वपूर्ण सूचनाओं को चयन करने और संसाधित करने की क्षमता प्रदान करता है।

45. (A) प्रत्यक्षणात्मक संगठन
आकृति-पृष्ठभूमि संबंध गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का एक मौलिक नियम है जो प्रत्यक्षण संगठन की व्याख्या करता है। हमारा मस्तिष्क दृश्य क्षेत्र को दो भागों में विभाजित करता है: 'आकृति', जो मुख्य वस्तु होती है, और 'पृष्ठभूमि', जो इसके पीछे का परिवेश होती है। आकृति सामान्यतः स्पष्ट और अग्रभाग में दिखाई देती है, जबकि पृष्ठभूमि कम स्पष्ट होती है। यह विभाजन हमें वस्तुओं को उनके परिवेश से पृथक पहचानने और अर्थपूर्ण दृश्य अनुभव प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है।

46. (B) प्रतिक्रिया विभव
क्लार्क हल के व्यवस्थित व्यवहार सिद्धांत में 'sEr' का प्रतीक प्रतिक्रिया विभव को दर्शाता है, जो किसी विशिष्ट अनुक्रिया के होने की संभावना या शक्ति है। यह आदत शक्ति और अंतर्नोद के गुणनफल के रूप में परिभाषित है। यदि इनमें से कोई भी कारक शून्य होता है, तो प्रतिक्रिया विभव भी शून्य हो जाता है और व्यवहार घटित नहीं होता है। यह सूत्र व्यवहार की मात्रात्मक भविष्यवाणी हेतु एक गणितीय ढांचा प्रदान करता है जो अधिगम और अभिप्रेरणा को जोड़ता है।

47. (C) मुक्त पुनरावाहन
शाब्दिक अधिगम की मुक्त पुनरावाहन विधि में प्रतिभागी को वस्तुओं की सूची याद करने हेतु दी जाती है और वह उन्हें किसी भी क्रम में सुना सकता है। यह विधि स्मृतिकरण की सहज प्रवृत्तियों को प्रकट करती है, जहाँ व्यक्ति प्रायः संबंधित वस्तुओं को समूहबद्ध करते हैं। इसमें क्रमिक स्थिति प्रभाव भी देखा जाता है, जहाँ सूची के प्रारंभ और अंत की वस्तुएं बेहतर याद रहती हैं। यह विधि स्मृति की लचीली और संगठनात्मक प्रकृति का अध्ययन करने में उपयोगी है।

48. (D) चर-अंतराल
चर-अंतराल सुदृढ़ीकरण अनुसूची में पुरस्कार एक अनिश्चित और अप्रत्याशित समय अंतराल के पश्चात दिया जाता है। आकस्मिक परीक्षा इसका एक सामान्य उदाहरण है, जहाँ छात्रों को यह ज्ञात नहीं होता कि अगली परीक्षा कब होगी। इस अनिश्चितता के कारण छात्र निरंतर अध्ययन करते रहते हैं और व्यवहार की दर स्थिर बनी रहती है। यह अनुसूची विलोपन के प्रति बहुत प्रतिरोधी होती है क्योंकि सुदृढ़ीकरण की संभावना सदैव बनी रहती है, जिससे सतर्कता बनी रहती है।

49. (C) किसी भी चयन से पहले सभी आने वाले उद्दीपकों का अर्थ के लिए पूरी तरह से विश्लेषण किया जाता है।
ड्यूश और ड्यूश का विलंबित चयन मॉडल प्रस्तावित करता है कि अवधान का फिल्टर सूचना प्रसंस्करण के अंतिम चरण में स्थित होता है। इस सिद्धांत के अनुसार, सभी संवेदी उद्दीपकों का अर्थ हेतु स्वतः विश्लेषण किया जाता है, भले ही उन पर ध्यान न दिया गया हो। चयन केवल प्रतिक्रिया के स्तर पर होता है, जहाँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण सूचना को व्यवहार हेतु चुना जाता है। यह मॉडल समझाता है कि अनपेक्षित सूचनाएं कभी-कभी हमारी चेतना में कैसे आ जाती हैं।

50. (A) एकनेत्री संकेत
एकनेत्री संकेत वे दृश्य जानकारी के स्रोत हैं जिन्हें केवल एक आँख के उपयोग से भी पहचाना जा सकता है। इनमें रैखिक परिप्रेक्ष्य, सापेक्ष आकार, अंतःस्थिति और बनावट प्रवणता जैसे कारक सम्मिलित हैं। ये संकेत हमें समतल सतहों या चित्रों पर भी गहराई और दूरी का अनुभव कराने में सक्षम बनाते हैं। यद्यपि द्विनेत्री संकेत अधिक सटीक होते हैं, किंतु एकनेत्री संकेत दैनिक जीवन में दूरी के अनुमान और त्रि-आयामी जगत को समझने हेतु पर्याप्त सूचनाएं प्रदान करते हैं।

51. (B) I, II, III
अधिगम के सिद्धांतों का विकास एक क्रमिक ऐतिहासिक प्रक्रिया रही है। इवान पावलव ने 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में शास्त्रीय अनुबंधन की नींव रखी, जो प्रतिवर्ती अनुक्रियाओं पर केंद्रित था। इसके लगभग उसी समय, एडवर्ड थार्नडाइक ने संबंधवाद और प्रभाव के नियम को प्रतिपादित किया। पश्चात, बी.एफ. स्किनर ने इन सिद्धांतों को आगे बढ़ाते हुए नैमित्तिक अनुबंधन का विकास किया, जिसने व्यवहार के परिणामों और सुदृढ़ीकरण पर बल दिया। यह विकास क्रम व्यवहारवादी मनोविज्ञान की प्रगति को दर्शाता है।

52. (B) किसी वस्तु या घटना को स्मृति में मौजूद जानकारी के साथ सुमेलित करके उसे अर्थ प्रदान करना।
स्वरुप पहचान प्रत्यक्षण का वह चरण है जहाँ संवेदी निवेश को पूर्व ज्ञान के साथ एकीकृत किया जाता है। जब हम किसी वस्तु को देखते हैं, तो हमारा मस्तिष्क उसकी विशेषताओं की तुलना पूर्व संचित श्रेणियों से करता है। यह प्रक्रिया हमें केवल वस्तुओं को देखने के स्थान पर उन्हें पहचानने और समझने में सक्षम बनाती है। इसके बिना, हमारा दृश्य अनुभव अर्थहीन आकृतियों का समूह मात्र रह जाएगा, जिससे विश्व के साथ संवाद करना असंभव हो जाएगा।

53. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उद्दीपक विभेदन शास्त्रीय अनुबंधन की एक परिष्कृत प्रक्रिया है जो सामान्यीकरण को नियंत्रित करती है। इसमें जीव को यह सिखाया जाता है कि केवल एक विशिष्ट अनुबंधित उद्दीपक ही अननुबंधित उद्दीपक के साथ जुड़ा है। प्रशिक्षण के दौरान, लक्ष्य उद्दीपक के पश्चात सदैव पुरस्कार दिया जाता है, जबकि समान उद्दीपकों के पश्चात कुछ नहीं दिया जाता। इसके परिणामस्वरुप, जीव केवल सही संकेत पर ही अनुक्रिया करना सीख जाता है, जो व्यवहारिक सटीकता हेतु अत्यंत आवश्यक है।

54. (B) संवेदी अनुकूलन
संवेदी अनुकूलन वह प्रक्रिया है जिसमें निरंतर और अपरिवर्तित रहने वाले उद्दीपकों के प्रति हमारी संवेदी संवेदनशीलता न्यून हो जाती है। यह मस्तिष्क का एक रक्षात्मक तंत्र है जो हमें अप्रासंगिक सूचनाओं को अनदेखा करने और पर्यावरण में होने वाले नवीन परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देता है। उदाहरण के लिए, कक्ष में घड़ी की टिक-टिक या किसी गंध को कुछ समय पश्चात अनुभव न करना इसी का परिणाम है। यह हमें संज्ञानात्मक अतिभार से बचाता है।

55. (C) प्रोत्साहन अभिप्रेरणा
क्लार्क हल के संशोधित सिद्धांत में 'K' प्रोत्साहन अभिप्रेरणा का प्रतिनिधित्व करता है, जो पुरस्कार की गुणवत्ता या मात्रा से संबंधित है। हल ने अनुभव किया कि केवल आदत शक्ति और आंतरिक अंतर्नोद व्यवहार की व्याख्या हेतु पर्याप्त नहीं हैं। पुरस्कार का मूल्य भी यह निर्धारित करता है कि कोई अनुक्रिया कितनी तीव्रता से की जाएगी। बड़ा पुरस्कार अधिक प्रोत्साहन प्रदान करता है, जिससे प्रतिक्रिया विभव बढ़ जाता है। यह अधिगम प्रक्रिया में बाह्य कारकों के महत्व को दर्शाता है।

56. (D) I, II और III
शाब्दिक अधिगम एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें सामग्री की प्रकृति और साहचर्य की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अर्थपूर्ण सामग्री सीखने की दर को बहुत बढ़ा देती है क्योंकि इसे विद्यमान ज्ञान के साथ जोड़ना सरल होता है। युग्मित-साहचर्य अधिगम में शब्दों के युग्मों के मध्य संबंध बनाना सम्मिलित है, जो स्मृति हेतु बुनियादी है। सामान्यीकरण तब होता है जब सीखी गई अनुक्रियाएं समान शब्दों पर भी लागू होती हैं। ये सभी तत्व प्रभावी भाषा विकास हेतु उत्तरदायी हैं।

57. (B) किसी मित्र द्वारा लिखे गए 'A' को कई अलग-अलग रुपों में पहचानना।
प्रतिरुप मिलान सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि हम वस्तुओं को तब पहचानते हैं जब वे हमारी स्मृति में संचित एक सटीक मानसिक प्रतिलिपि से मेल खाती हैं। इस सिद्धांत की मुख्य सीमा यह है कि यह उद्दीपकों की विविधता को संभालने में असमर्थ है। हस्तलेखन में अत्यधिक भिन्नता होती है, और एक ही अक्षर को सहस्रों भिन्न शैलियों में लिखा जा सकता है। इतनी अधिक विविधता हेतु पृथक प्रतिरुपों का होना मानसिक रुप से संभव नहीं है, जो इस सिद्धांत को अपूर्ण बनाता है।

58. (A) रेटिनल असमानता
रेटिनल असमानता गहराई प्रत्यक्षण का एक प्रमुख द्विनेत्री संकेत है जो इस तथ्य पर आधारित है कि हमारी दोनों आँखें एक ही वस्तु की थोड़ी भिन्न छवियां प्राप्त करती हैं। चूंकि आँखें मुख पर एक-दूसरे से कुछ दूरी पर स्थित होती हैं, अतः वे भिन्न कोणों से दृश्य ग्रहण करती हैं। मस्तिष्क इन दो भिन्न छवियों के मध्य के अंतर का विश्लेषण करता है और उसका उपयोग त्रि-आयामी दूरी और गहराई की गणना हेतु करता है। यह सूक्ष्म गहराई बोध हेतु अनिवार्य है।

59. (A) निश्चित-अनुपात
निश्चित-अनुपात सुदृढ़ीकरण अनुसूची में पुरस्कार एक विशिष्ट और पूर्व-निर्धारित संख्या में अनुक्रियाएं करने के पश्चात दिया जाता है। प्रत्येक पांच सत्रीय कार्यों के पश्चात धन प्राप्त होना इस अनुसूची का सटीक उदाहरण है क्योंकि पुरस्कार का आधार कार्यों की निश्चित संख्या है। यह अनुसूची कार्य की बहुत उच्च दर उत्पन्न करती है क्योंकि व्यक्ति जानता है कि वह जितनी शीघ्र कार्य पूर्ण करेगा, उतनी ही शीघ्र उसे पुरस्कार प्राप्त होगा। इसमें कार्य पूर्णता के पश्चात छोटा विराम देखा जाता है।

60. (C) P-3, Q-4, R-2, S-1
अवधान और प्रत्यक्षण के विभिन्न सिद्धांतों ने सूचना प्रसंस्करण के भिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। ब्रॉडबेंट का फिल्टर सिद्धांत एक कठोर प्रणाली प्रस्तावित करता है, जबकि ट्रिसमैन का मॉडल अनपेक्षित संकेतों को केवल क्षीण करने की बात करता है। ड्यूश और ड्यूश का विलंबित चयन मॉडल मानता है कि चयन से पूर्व अर्थ का पूर्ण विश्लेषण होता है। अंत में, संकेत संसूचन सिद्धांत स्पष्ट करता है कि कैसे प्रेक्षक का अनुक्रिया पक्षपात उसके निर्णय को प्रभावित करता है।

61. (C) स्वतः पुनर्प्राप्ति
स्वतः पुनर्प्राप्ति शास्त्रीय अनुबंधन की एक विशेष घटना है जहाँ विलोपन के पश्चात एक शांत अवधि बीतने पर अनुबंधित अनुक्रिया अचानक पुनः प्रकट हो जाती है। यह तब होता है जब अनुबंधित उद्दीपक को पुनः प्रस्तुत किया जाता है, भले ही कोई नवीन प्रशिक्षण न दिया गया हो। यह सिद्ध करता है कि विलोपन मूल अधिगम को पूर्णतः विलुप्त नहीं करता, वरन उसे केवल दबा देता है। यह प्रक्रिया अधिगम की स्थिरता और स्मृति के लचीलेपन को उजागर करती है।

62. (D) समान दिखने वाले तत्वों को एक समूह के हिस्से के रूप में देखा जाता है।
समानता का गेस्टाल्ट नियम यह बताता है कि हमारा दृश्य तंत्र उन उद्दीपकों को एक साथ समूहबद्ध करने की प्रवृत्ति रखता है जो रंग, आकार, बनावट या अन्य गुणों में एक जैसे दिखते हैं। जब हम किसी भीड़ में एक ही रंग की वेशभूषा पहने लोगों को देखते हैं, तो हम उन्हें एक दल या समूह के रूप में अनुभव करते हैं। यह नियम हमें जटिल दृश्य सूचनाओं को सरल और अर्थपूर्ण इकाइयों में व्यवस्थित करने में सहायता करता है, जिससे प्रत्यक्षण सुगम होता है।

63. (C) एडवर्ड टोलमैन
एडवर्ड टोलमैन एक नव-व्यवहारवादी थे जिन्होंने अधिगम में संज्ञानात्मक कारकों के महत्व पर बल दिया। उन्होंने चूहों पर प्रयोग करके दर्शाया कि वे भूलभुलैया का एक मानसिक मानचित्र विकसित करते हैं। यह अधिगम बिना किसी बाह्य पुरस्कार के भी सूक्ष्म रूप से होता रहता है, जिसे उन्होंने अव्यक्त अधिगम कहा। टोलमैन का कार्य व्यवहारवाद और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के मध्य एक सेतु का कार्य करता है, जो दर्शाता है कि व्यवहार केवल यंत्रवत अनुक्रिया नहीं है।

64. (C) असंबद्ध CVC ट्रिग्राम की एक सूची।
क्रमिक अधिगम में वस्तुओं को एक निश्चित क्रम में याद करना होता है, जहाँ प्रत्येक वस्तु आगामी वस्तु हेतु संकेत बनती है। असंबद्ध सीवीसी त्रयक्षर को सीखना सर्वाधिक कठिन होता है क्योंकि उनमें किसी भी प्रकार का अर्थ या तार्किक संबंध नहीं होता। इसके विपरीत, कविताओं या अर्थपूर्ण वाक्यों में लय और अर्थ होते हैं जो स्मृति को सहारा देते हैं। बिना किसी संदर्भ के क्रमिक स्मृति पर भार बढ़ जाता है, जिससे सीखने की गति मंद हो जाती है।

65. (C) प्रमस्तिष्क वल्कुट का पैरिएटल लोब
पैरिएटल लोब अवधान के स्थानिक नियंत्रण और उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करने हेतु उत्तरदायी प्रमुख मस्तिष्क क्षेत्र है। यह दृश्य-स्थानिक सूचनाओं को संसाधित करता है और हमें यह निर्धारित करने में सहायता करता है कि वातावरण में हमारा ध्यान कहाँ जाना चाहिए। जब हम एक वस्तु से ध्यान हटाकर दूसरी ओर मोड़ते हैं, तो इस क्षेत्र में तंत्रिका गतिविधियाँ सक्रिय हो जाती हैं। इस क्षेत्र में क्षति होने पर व्यक्ति अवधान संबंधी विकारों का अनुभव कर सकता है।

66. (C) बनावट प्रवणता
बनावट प्रवणता एक एकनेत्री गहराई संकेत है जो सतह के विवरण और स्पष्टता में होने वाले परिवर्तन पर आधारित है। जैसे-जैसे कोई वस्तु या सतह दूर जाती है, उसकी बनावट के विवरण कम स्पष्ट होते जाते हैं और वे एक-दूसरे के अधिक निकट दिखाई देने लगते हैं। रेल की पटरियों के मध्य के स्लीपर समीप होने पर पृथक और विस्तृत दिखते हैं, किंतु दूर होने पर वे एक सघन पट्टी की भांति प्रतीत होते हैं। यह दूरी का बोध कराने का प्रभावी माध्यम है।

67. (B) दंडक
स्किनर के नैमित्तिक अनुबंधन में दंडक वह कोई भी परिणाम है जो उसके ठीक पूर्व किए गए व्यवहार की भविष्य में होने वाली आवृत्ति को न्यून कर देता है। दंड का मुख्य उद्देश्य अवांछित व्यवहार को रोकना या दबाना होता है। यह सुदृढ़ीकरण के विपरीत कार्य करता है, जो व्यवहार को सुदृढ़ करता है। दंड दो प्रकार का हो सकता है: किसी अप्रिय वस्तु को जोड़ना या किसी सुखद वस्तु को हटाना। यद्यपि स्किनर ने चेतावनी दी थी कि दंड के प्रभाव प्रायः अस्थायी होते हैं।

68. (B) संवेदी डेटा को व्यवस्थित करने और व्याख्या करने की एक सक्रिय प्रक्रिया।
प्रत्यक्षण केवल संवेदी अंगों द्वारा प्राप्त अपरिष्कृत सूचनाओं का संग्रह नहीं है, वरन एक जटिल और सक्रिय मानसिक प्रक्रिया है। इसमें मस्तिष्क आने वाले संवेदी संकेतों को पूर्व ज्ञान, अनुभवों और अपेक्षाओं के साथ जोड़कर उन्हें अर्थ प्रदान करता है। यह प्रक्रिया चयनात्मक होती है, जहाँ हम केवल प्रासंगिक सूचनाओं को चुनते हैं और उन्हें संगठित करते हैं। इस प्रकार, प्रत्यक्षण हमें विश्व का एक स्थिर और अर्थपूर्ण मानसिक प्रतिनिधित्व प्रदान करने में सहायता करता है।

69. (A) बी.एफ. स्किनर
रेखीय अभिक्रमित अधिगम का विकास बी.एफ. स्किनर द्वारा नैमित्तिक अनुबंधन के सिद्धांतों के आधार पर किया गया था। इसमें अधिगम सामग्री को अत्यंत लघु चरणों में विभाजित किया जाता है ताकि शिक्षार्थी सुगमता से सही उत्तर दे सके। प्रत्येक सही अनुक्रिया के पश्चात तत्काल सुदृढ़ीकरण प्रदान किया जाता है। सभी छात्रों को एक ही सरल मार्ग से गुजरना होता है, जहाँ त्रुटियों की संभावना न्यूनतम रखी जाती है। यह पद्धति व्यवहार को क्रमिक रूप से ढालने पर केंद्रित है।

70. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
एडवर्ड टोलमैन के प्रयोगों ने यह सिद्ध किया कि अधिगम और निष्पादन दो पृथक प्रक्रियाएं हैं। चूहों ने खाद्य पुरस्कार के बिना भी भूलभुलैया के रास्तों को सीख लिया था, जो उनके मस्तिष्क में निर्मित संज्ञानात्मक मानचित्र में सुरक्षित था। इस अधिगम का कोई बाह्य प्रमाण तब तक नहीं मिला जब तक उन्हें भोजन का प्रलोभन नहीं दिया गया। जैसे ही पुरस्कार मिला, उन्होंने अपनी सीख का प्रदर्शन किया। यह दर्शाता है कि आंतरिक मानसिक प्रक्रियाओं के माध्यम से अधिगम निरंतर होता रहता है।

71. (C) संकेत मौजूद है, लेकिन वह अनुपस्थित है।
संकेत संसूचन सिद्धांत में मिथ्या सचेत एक ऐसी त्रुटि है जहाँ प्रेक्षक यह दावा करता है कि उसने संकेत को पहचान लिया है, जबकि वास्तव में केवल कोलाहल उपस्थित था। यह स्थिति प्रायः तब उत्पन्न होती है जब व्यक्ति अत्यधिक सतर्क होता है या उसके पास स्वीकारात्मक उत्तर देने का उदार पक्षपात होता है। उदाहरण के लिए, एक रेडार चालक पक्षियों के झुंड को शत्रु का विमान समझ सकता है। यह परिणाम प्रेक्षक की निर्णय लेने की रणनीति को दर्शाता है।

72. (C) निरंतरता
निरंतरता का गेस्टाल्ट नियम यह बताता है कि हमारा मस्तिष्क उन उद्दीपकों को एक साथ जोड़ने की प्रवृत्ति रखता है जो एक सुगम और अखंड दिशा का अनुसरण करते हैं। जब दो रेखाएं एक-दूसरे को प्रतिच्छेद करती हैं, तो हम उन्हें दो पृथक कोणों के स्थान पर दो निरंतर रेखाओं के रूप में देखते हैं। यह नियम हमें जटिल आकृतियों में भी प्रवाह और व्यवस्था देखने में सहायता करता है। यह प्रत्यक्षण की एक जन्मजात प्रवृत्ति है जो दृश्य जगत को अधिक सरल और सुसंगत बनाती है।

73. (A) केवल I और II
थार्नडाइक का प्रभाव का नियम यह प्रस्तावित करता है कि व्यवहार और उसके परिणामों के मध्य एक गहरा संबंध होता है। संतोषजनक परिणामों वाले कार्यों के दोहराए जाने की संभावना बढ़ जाती है, जबकि कष्टदायक परिणामों वाले कार्यों की संभावना न्यून हो जाती है। थार्नडाइक ने यह नियम बिल्लियों पर प्रयोग करके विकसित किया था, किंतु यह मानव अधिगम पर भी समान रुप से लागू होता है। यह सिद्धांत आधुनिक शिक्षा और व्यवहार संशोधन तकनीकों का एक महत्वपूर्ण आधार माना जाता है।

74. (B) सामान्यीकरण
शाब्दिक अधिगम में सामान्यीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति एक परिस्थिति में सीखी गई अनुक्रियाओं को दूसरी समान परिस्थितियों में लागू करता है। यह अधिगम के स्थानांतरण का एक रूप है जो समानताओं की पहचान पर आधारित है। उदाहरण के लिए, यदि किसी ने एक विशिष्ट प्रारुप में डेटा अंकित करना सीखा है, तो वह दूसरे समान सॉफ्टवेयर पर भी उसे सुगमता से कर सकता है। यह क्षमता हमें पिछले अनुभव का लाभ उठाने में सहायता करती है।

75. (A) थैलेमस
थैलेमस में स्थित पल्विनार न्यूक्लियस अवधान के नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह एक संवेदी द्वार के रूप में कार्य करता है जो दृश्य सूचनाओं के प्रवाह को नियंत्रित करता है। यह संरचना अनावश्यक या ध्यान भटकाने वाली जानकारी को छानकर हटा देती है और केवल प्रासंगिक उद्दीपकों को ही प्रमस्तिष्क वल्कुट तक पहुँचने देती है। यह अवधान को किसी विशिष्ट स्थान की ओर निर्देशित करने और दृश्य खोज कार्यों में सटीकता बनाए रखने हेतु अनिवार्य जैविक घटक माना जाता है।

76. (B) प्रत्यक्षणात्मक स्थिरता
प्रत्यक्षणात्मक स्थिरता वह मानसिक क्षमता है जिसके कारण हम वस्तुओं को उनके स्थिर गुणों के साथ देखते हैं, भले ही संवेदी सूचनाओं में परिवर्तन हो रहा हो। उदाहरण के लिए, प्रकाश परिवर्तित होने पर भी हम एक श्वेत वस्त्र को श्वेत ही मानते हैं। इसी प्रकार, दूरी बढ़ने पर रेटिना पर छवि लघु होने के बावजूद हम वस्तु का वास्तविक आकार समझते हैं। यह प्रक्रिया हमारे अनुभव को सुसंगत और विश्वसनीय बनाती है, जिससे हम बदलते पर्यावरण में वस्तुओं की पहचान बनाए रखते हैं।

77. (B) रुपण
रुपण नैमित्तिक अनुबंधन की एक तकनीक है जिसका उपयोग जटिल व्यवहारों को सिखाने हेतु किया जाता है। इसमें वांछित अंतिम व्यवहार की ओर बढ़ने वाले प्रत्येक लघु और क्रमिक चरण को सुदृढ़ किया जाता है। इसे क्रमिक सन्निकटन की विधि भी कहा जाता है। उदाहरण के लिए, किसी जीव को जटिल करतब सिखाने हेतु पहले उसकी सूक्ष्म सही क्रियाओं को पुरस्कार दिया जाता है। यह प्रक्रिया तब तक चलती है जब तक जीव पूर्ण और जटिल व्यवहार करना नहीं सीख जाता है।

78. (D) अव्यक्त अधिगम
शाब्दिक अधिगम उन प्रक्रियाओं से संबंधित है जिनमें शब्दों, अक्षरों या भाषाई प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। इसके मुख्य प्रकारों में मुक्त पुनरावाहन, क्रमिक अधिगम और युग्मित-साहचर्य अधिगम सम्मिलित हैं। इसके विपरीत, अव्यक्त अधिगम एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसे एडवर्ड टोलमैन ने भूलभुलैया में चूहों के माध्यम से प्रदर्शित किया था। इसमें बिना किसी बाह्य सुदृढ़ीकरण के सूचनाओं का संग्रहण होता है। यह मुख्य रुप से स्थानिक और संज्ञानात्मक अधिगम से संबंधित है, न कि शाब्दिक सामग्रियों से।

79. (B) P-2, Q-3, R-1, S-4
गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने प्रत्यक्षण संगठन के कई नियम दिए हैं जो हमारे दृश्य अनुभवों को अर्थ प्रदान करते हैं। सामीप्य के कारण हम समीप की रेखाओं को समूहों में देखते हैं, जबकि समानता के कारण हम समान चिन्हों को एक साथ जोड़ते हैं। पूर्ति का नियम हमें अपूर्ण वृत्तों को पूर्ण देखने में सहायता करता है। निरंतरता का नियम हमें मुड़ी हुई सड़क या रेखा को एक ही अखंड इकाई के रुप में देखने हेतु प्रेरित करता है। ये नियम मानसिक व्यवस्था के प्रतीक हैं।

80. (C) अधोमुखी और उर्ध्वमुखी प्रसंस्करण
उलरिक नीसर का प्रत्यक्षण चक्र मॉडल यह प्रस्तावित करता है कि प्रत्यक्षण एक गतिशील और चक्रीय प्रक्रिया है। इसमें उर्ध्वमुखी प्रसंस्करण के माध्यम से पर्यावरण से संवेदी सूचनाएं संचित की जाती हैं, और अधोमुखी प्रसंस्करण के माध्यम से हमारा पूर्व ज्ञान उस सूचना की व्याख्या करता है। यह चक्रीय क्रिया सूचनाओं के निरंतर संशोधन और संवर्धन की अनुमति देती है। यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि हमारा प्रत्यक्षण वास्तविकता और मानसिक संरचनाओं का एक संतुलित एकीकरण है जो निरंतर चलता रहता है।

81. (B) अंतःस्थिति
अंतःस्थिति, जिसे अध्यारोपण भी कहा जाता है, एक सरल किंतु प्रभावी एकनेत्री गहराई संकेत है। जब एक वस्तु दूसरी वस्तु के दृश्य को आंशिक रूप से ढक लेती है, तो हमारा मस्तिष्क स्वतः ही यह मान लेता है कि ढकी हुई वस्तु अधिक दूर है और ढकने वाली वस्तु समीप है। इस संकेत का उपयोग कला और छायाचित्रण में गहराई का आभास उत्पन्न करने हेतु व्यापक रूप से किया जाता है। यह हमें वस्तुओं के सापेक्ष स्थान को समझने में सहायता करता है।

82. (A) सुदृढ़ प्रयासों की संख्या
क्लार्क हल के अधिगम सिद्धांत में आदत शक्ति (sHr) उद्दीपक और अनुक्रिया के मध्य संबंध की सुदृढ़ता को दर्शाती है। उन्होंने प्रस्तावित किया कि यह शक्ति मुख्य रूप से सुदृढ़ प्रयासों या अभ्यासों की संख्या पर निर्भर करती है। जितनी अधिक बार किसी व्यवहार को पुरस्कार दिया जाता है, उद्दीपक-अनुक्रिया बंधन उतना ही सुदृढ़ होता जाता है। यह एक संचयी प्रक्रिया है जो अधिगम के स्थायित्व को निर्धारित करती है। आदत शक्ति ही दीर्घकालिक व्यवहार परिवर्तनों को संचालित करने वाला बुनियादी कारक है।

83. (C) रुचि
अवधान के आंतरिक निर्धारकों में रुचि का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह व्यक्ति की अपनी मानसिक प्रवृत्ति और अभिरुचि पर आधारित होती है। जिस विषय या वस्तु में हमारी रुचि होती है, उसकी ओर हमारा ध्यान बिना किसी अतिरिक्त प्रयास के स्वतः ही चला जाता है। रुचि हमारे अवधान को दीर्घकाल तक बनाए रखने में भी सहायक होती है। यह बाह्य कारकों जैसे गति या तीव्रता से भिन्न है, क्योंकि यह पूर्णतः व्यक्ति के आंतरिक मनोविज्ञान से संचालित होती है।

84. (C) विशेषता-विश्लेषण सिद्धांत
विशेषता-विश्लेषण सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि प्रत्यक्षण की प्रक्रिया में हम किसी वस्तु को उसके बुनियादी घटकों या विशेषताओं में खंडित कर देते हैं। उदाहरण के लिए, अक्षर 'A' को पहचानने हेतु हमारा मस्तिष्क दो तिरछी रेखाओं और एक क्षैतिज रेखा का पता लगाता है। इन विशेषताओं का मिलान स्मृति में संचित सूचनाओं से किया जाता है। यह सिद्धांत समझाता है कि कैसे हम विभिन्न आकारों और फोंट में भी वस्तुओं और अक्षरों को सही ढंग से पहचान लेते हैं।

85. (A) I, II, III
इवान पावलव के शास्त्रीय अनुबंधन प्रयोगों में एक सुनियोजित क्रम का पालन किया गया था। सर्वप्रथम, भोजन की उपस्थिति में कुत्ते की लार स्त्रवण की स्वाभाविक अनुक्रिया दर्ज की गई। द्वितीय चरण में, घंटी की ध्वनि को भोजन के साथ बार-बार युग्मित किया गया ताकि साहचर्य बन सके। अंत में, प्रशिक्षण पूर्ण होने पर केवल घंटी की ध्वनि सुनकर ही कुत्ते ने लार टपकाना प्रारंभ कर दिया। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि कैसे एक तटस्थ उद्दीपक अनुबंधित अनुक्रिया उत्पन्न करने में सक्षम हो जाता है।

86. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
शास्त्रीय और नैमित्तिक अनुबंधन में मुख्य अंतर व्यवहार की प्रकृति और उसके नियंत्रण में है। शास्त्रीय अनुबंधन में प्रतिवर्ती और अनैच्छिक अनुक्रियाएं सम्मिलित होती हैं जो उद्दीपक द्वारा उत्पन्न की जाती हैं। नैमित्तिक अनुबंधन में स्वैच्छिक व्यवहार सम्मिलित होते हैं जहाँ जीव सक्रिय रुप से पर्यावरण पर कार्य करता है ताकि कोई परिणाम या पुरस्कार प्राप्त कर सके। नैमित्तिक अनुबंधन में व्यवहार परिणामों द्वारा सुदृढ़ किया जाता है, जो इसे सीखने की अधिक सक्रिय प्रक्रिया बनाता है।

87. (B) यथासंभव अच्छा।
प्रैग्नैन्ज़ का नियम, जिसे सरलता का नियम भी कहा जाता है, गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का एक केंद्रीय सिद्धांत है। यह बताता है कि हमारा मस्तिष्क संवेदी सूचनाओं को यथासंभव सबसे सरल, संतुलित और सुसंगत रुप में व्यवस्थित करने का प्रयास करता है। हम जटिल उद्दीपकों को भी सरल आकृतियों जैसे वृत्त या रेखा में देखने की प्रवृत्ति रखते हैं। यह मानसिक अर्थव्यवस्था का एक रुप है जो हमें अव्यवस्थित वातावरण से स्पष्ट और स्थिर प्रत्यक्षण प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है।

88. (B) निष्पादन में परिवर्तनों से अनुमानित एक प्रक्रिया।
अधिगम एक आंतरिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसे प्रत्यक्ष रुप से देखा नहीं जा सकता, वरन इसके अस्तित्व का अनुमान व्यक्ति के निष्पादन या व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों से लगाया जाता है। यह प्रक्रिया अनुभव और अभ्यास का परिणाम होती है। यह परिपक्वता या अस्थायी शारीरिक अवस्थाओं जैसे थकान से भिन्न है। अधिगम के माध्यम से व्यवहार करने की क्षमता में सुधार होता है, और यह परिवर्तन दीर्घकाल तक बना रहता है, जो व्यक्ति के अनुकूलन में सहायता करता है।

89. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
युग्मित-साहचर्य अधिगम में उद्दीपकों और अनुक्रियाओं की प्रकृति सीखने की दर को प्रभावित करती है। जब किसी सूची में शब्द एक-दूसरे के अत्यधिक समान होते हैं, तो हस्तक्षेप उत्पन्न होता है जिससे भ्रम की स्थिति पैदा होती है। उच्च अंतः-सूची समानता के कारण मस्तिष्क को युग्मों के मध्य अंतर करने में कठिनाई होती है, जिससे त्रुटियां बढ़ जाती हैं। अतः, विभेदन को चुनौतीपूर्ण बनाने वाला यह कारक अधिगम की प्रक्रिया को मंद कर देता है, जो शाब्दिक अधिगम का महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

90. (B) संकेत अनुपस्थित है, लेकिन वह मौजूद है।
संकेत संसूचन सिद्धांत के संदर्भ में 'चूक' एक ऐसी त्रुटि है जहाँ वातावरण में वास्तविक संकेत उपस्थित होता है, किंतु प्रेक्षक उसे पहचानने में विफल रहता है। यह स्थिति प्रायः तब होती है जब संकेत अत्यंत दुर्बल होता है या प्रेक्षक अत्यधिक रुढ़िवादी निर्णय ले रहा होता है। उदाहरण के लिए, एक चिकित्सक का एक्स-रे में किसी रोग के लक्षण को न देख पाना एक गंभीर चूक मानी जा सकती है। यह परिणाम प्रेक्षक की संवेदनशीलता की न्यूनता को भी दर्शाता है।

91. (B) अभिसरण
अभिसरण एक शारीरिक और द्विनेत्री गहराई संकेत है जो आँखों की मांसपेशियों की गतिविधियों पर आधारित है। जब हम किसी अत्यंत समीप की वस्तु पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हमारी दोनों आँखें एक-दूसरे की ओर भीतर की ओर मुड़ती हैं। आँखों की मांसपेशियों में होने वाले इस तनाव और खिंचाव को मस्तिष्क दर्ज करता है और इसका उपयोग वस्तु की निकटता का अनुमान लगाने हेतु करता है। जैसे-जैसे वस्तु दूर जाती है, आँखें सीधी हो जाती हैं और मांसपेशियों का तनाव कम हो जाता है।

92. (C) केवल I और III
अधिगम के क्षेत्र में विभिन्न विद्वानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एडवर्ड थार्नडाइक ने प्रभाव के नियम और प्रयास एवं त्रुटि अधिगम का प्रतिपादन किया। एडवर्ड टोलमैन ने संज्ञानात्मक मानचित्रों और अव्यक्त अधिगम के माध्यम से संज्ञान की भूमिका को स्पष्ट किया। इवान पावलव को शास्त्रीय अनुबंधन हेतु जाना जाता है, जबकि बी.एफ. स्किनर नैमित्तिक अनुबंधन पर अपने शोध हेतु प्रसिद्ध हैं। ये सिद्धांतकार व्यवहारवादी और संज्ञानात्मक दृष्टिकोणों के विकास में केंद्रीय भूमिका निभाते रहे हैं।

93. (C) यह शिक्षार्थी के प्रदर्शन के आधार पर विभिन्न उपचारात्मक लूप प्रदान करता है।
नॉर्मन क्राउडर द्वारा प्रतिपादित शाखीय अभिक्रमित अधिगम अपनी लचीली संरचना हेतु जाना जाता है। इसमें शिक्षार्थी को बहुविकल्पीय प्रश्न दिए जाते हैं और उसके उत्तर के आधार पर आगामी चरण निर्धारित होता है। यदि छात्र त्रुटिपूर्ण उत्तर देता है, तो उसे एक 'शाखा' या उपचारात्मक चक्र के माध्यम से अतिरिक्त जानकारी प्रदान की जाती है ताकि वह अपनी त्रुटि समझ सके। यह विधि मानती है कि सीखने की प्रक्रिया व्यक्तिगत होती है और त्रुटियां सुधारने के अवसर प्रदान करके गहरी समझ विकसित करती है।

94. (C) गति
अवधान के बाह्य निर्धारक उद्दीपक की भौतिक विशेषताओं जैसे आकार, रंग, तीव्रता और पुनरावृत्ति से संबंधित होते हैं जो स्वाभाविक रूप से हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। गति एक शक्तिशाली बाह्य निर्धारक है; एक स्थिर पृष्ठभूमि में गतिमान वस्तु स्वतः ही हमारा ध्यान आकर्षित कर लेती है। यह एक उत्तरजीविता तंत्र भी है जो हमें पर्यावरण में परिवर्तनों के प्रति सतर्क रखता है। इसके विपरीत, आदत, रुचि और अभिवृत्ति आंतरिक निर्धारक हैं जो व्यक्ति की अपनी मनोवैज्ञानिक अवस्था पर आधारित होते हैं।

95. (C) इनपुट की तुलना किसी वर्ग के आदर्श, औसत प्रतिनिधित्व से करना।
स्वरूप पहचान का प्रोटोटाइप सिद्धांत यह सुझाव देता है कि हमारा मस्तिष्क प्रत्येक श्रेणी हेतु एक 'आदर्श' या औसत मानसिक चित्र संचित करता है। जब हम किसी नवीन वस्तु को देखते हैं, तो हम उसकी तुलना सीधे प्रतिरूप से करने के बजाय इस प्रोटोटाइप से करते हैं। यदि नवीन वस्तु प्रोटोटाइप के पर्याप्त समीप होती है, तो उसे उस श्रेणी के भाग के रूप में पहचान लिया जाता है। यह सिद्धांत प्रभावी ढंग से समझाता है कि कैसे हम वस्तुओं के विभिन्न रूपों को पहचानते हैं।

96. (B) नैमित्तिक अनुबंधन
नैमित्तिक अनुबंधन में अधिगम व्यवहार के परिणामों पर आधारित होता है। जब कोई बालक रोता है और उसके परिणामस्वरूप उसे खिलौना प्राप्त होता है, तो वह यह सीख जाता है कि उसका विशिष्ट व्यवहार एक सुखद परिणाम उत्पन्न करता है। भविष्य में खिलौना प्राप्त करने हेतु वह इस व्यवहार को दोहराने की अधिक संभावना रखेगा। यह स्वैच्छिक व्यवहार का उदाहरण है जहाँ जीव पर्यावरण पर सक्रिय रूप से कार्य करता है। सुदृढ़ीकरण की यह प्रक्रिया व्यवहार को रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

97. (A) सामान्यीकरण समानताओं के प्रति अनुक्रिया करना है, जबकि विभेदन अंतरों के प्रति अनुक्रिया करना है।
सामान्यीकरण और विभेदन अधिगम की दो पूरक प्रक्रियाएं हैं। सामान्यीकरण में जीव मूल उद्दीपक के समान दिखने वाले अन्य संकेतों के प्रति भी वही अनुक्रिया करता है, जो व्यवहार के विस्तार में सहायता करता है। दूसरी ओर, विभेदन वह क्षमता है जिसमें जीव दो समान उद्दीपकों के मध्य के सूक्ष्म अंतर को पहचानकर पृथक अनुक्रियाएं करना सीखता है। ये दोनों प्रक्रियाएं मिलकर हमें जटिल वातावरण में सटीक और प्रभावी ढंग से व्यवहार करने में सक्षम बनाती हैं, जो व्यवहारिक सटीकता सुनिश्चित करती हैं।

98. (P-2, Q-1, R-4, S-3)
अधिगम के विभिन्न सिद्धांतों ने व्यवहार परिवर्तन की व्याख्या हेतु विशिष्ट अवधारणाएं प्रदान की हैं। इवान पावलव ने अननुबंधित उद्दीपक और प्रतिवर्ती अनुक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित किया। बी.एफ. स्किनर ने सुदृढ़ीकरण के माध्यम से व्यवहार को रूप देने की व्याख्या की। एडवर्ड टोलमैन ने मानसिक प्रक्रियाओं और संज्ञानात्मक मानचित्रों के महत्व को रेखांकित किया। एडवर्ड थार्नडाइक ने प्रभाव के नियम के माध्यम से संतोषजनक परिणामों की भूमिका को स्पष्ट किया। ये सभी घटक मिलकर आधुनिक अधिगम मनोविज्ञान को परिभाषित करते हैं।

99. (C) शाब्दिक अधिगम
शाब्दिक अधिगम मनोविज्ञान की वह शाखा है जो इस तथ्य का अध्ययन करती है कि मनुष्य शब्दों, निरर्थक शब्दांशों और भाषाई सूचनाओं को कैसे प्राप्त करते हैं और याद रखते हैं। इसमें सामग्री की अर्थपूर्णता, साहचर्य की शक्ति और अभ्यास के प्रभाव जैसे कारकों का विश्लेषण किया जाता है। प्रयोगशालाओं में प्रायः सीवीसी त्रयक्षर या शब्दों की सूचियों का उपयोग करके स्मृति और सीखने की दर का परीक्षण किया जाता है। यह भाषा अर्जन और संज्ञानात्मक विकास को समझने हेतु एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

100. (C) कार्यकारी नियंत्रण, योजना और लक्ष्य-निर्देशित अवधान
मस्तिष्क के ललाट खंड, विशेष रूप से प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स, उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक कार्यों हेतु उत्तरदायी होते हैं। अवधान के संदर्भ में, यह क्षेत्र 'कार्यकारी नियंत्रण' का केंद्र है, जो हमें लक्ष्यों को निर्धारित करने, ध्यान को एक कार्य से दूसरे पर स्थानांतरित करने और विचलित करने वाली सूचनाओं को रोकने में सहायता करता है। यह जटिल समस्याओं को हल करने और रणनीतिक योजना बनाने हेतु आवश्यक है। इसके बिना, हम अपने अवधान को व्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण ढंग से संचालित नहीं कर पाएंगे।

101. (B) आकृति स्थिरता
आकृति स्थिरता वह प्रत्यक्षण प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम किसी वस्तु के वास्तविक आकार को पहचानते हैं, भले ही उसे

देखने का कोण परिवर्तित हो जाए। जब कोई द्वार खुलता है, तो रेटिना पर निर्मित उसकी छवि आयत से बदलकर समलंब हो जाती है, किंतु हमारा मस्तिष्क उसे अभी भी आयताकार ही अनुभव करता है। यह स्थिरता हमें विश्व की वस्तुओं के बारे में एक विश्वसनीय और स्थिर बोध बनाए रखने में सहायता करती है, जिससे दृश्य अनुभव में भ्रम की संभावना न्यून हो जाती है।

102. (B) प्रयास और त्रुटि अधिगम
एडवर्ड थार्नडाइक ने पहेली मंजूषा में बिल्लियों का अध्ययन करके प्रयास और त्रुटि अधिगम का सिद्धांत प्रतिपादित किया। उन्होंने देखा कि बिल्ली प्रारंभ में बाहर निकलने हेतु कई यादृच्छिक और असफल प्रयास करती है। समय के साथ, वह उन क्रियाओं को त्याग देती है जो सफल नहीं होतीं और उस विशिष्ट क्रिया को सीख लेती है जो द्वार खोलती है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि अधिगम शनैः-शनैः सफल अनुक्रियाओं के चयन और असफल अनुक्रियाओं के उन्मूलन के माध्यम से होता है जो साहचर्य निर्मित करता है।

103. (B) ब्रॉडबेंट का फिल्टर मॉडल
डोनाल्ड ब्रॉडबेंट के फिल्टर मॉडल को 'कठोर फिल्टर' माना जाता था क्योंकि यह प्रस्तावित करता था कि अनपेक्षित सूचनाओं को पूर्णतः अवरुद्ध कर दिया जाता है। इस मॉडल की मुख्य आलोचना यह थी कि यह 'कॉकटेल पार्टी प्रभाव' की व्याख्या नहीं कर सका, जहाँ व्यक्ति कोलाहल के मध्य भी अपना नाम सुन सकता है। यदि फिल्टर केवल भौतिक गुणों पर आधारित होता और अर्थ का विश्लेषण नहीं करता, तो अनपेक्षित चैनल से महत्वपूर्ण जानकारी चेतना तक कभी नहीं पहुँच पाती। इसी कारण संशोधित मॉडलों का विकास हुआ।

104. (C) गति प्रत्यक्षण
गति प्रत्यक्षण एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें रेटिना पर छवि के विस्थापन और आँखों की मांसपेशियों की गतिविधियों का समन्वय होता है। जब कोई वस्तु हमारे समक्ष से गुजरती है, तो उसकी छवि रेटिना पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होती है, जिसे मस्तिष्क गति के रूप में व्याख्यायित करता है। यह हमें वातावरण में हो रहे परिवर्तनों और वस्तुओं की गति की दिशा एवं वेग का अनुमान लगाने में सक्षम बनाता है। यह उत्तरजीविता और दैनिक गतिविधियों के संचालन हेतु एक अनिवार्य क्षमता है।

105. (B) I, II, III
मनोविज्ञान के इतिहास में अधिगम के सिद्धांतों का विकास एक तार्किक क्रम में हुआ है। सर्वप्रथम एडवर्ड थार्नडाइक ने संबंधवाद की नींव रखी, जो उद्दीपक और अनुक्रिया के मध्य के बंधनों पर केंद्रित था। इसके पश्चात व्यवहारवाद का उदय हुआ, जिसने अवलोकन योग्य व्यवहार और सुदृढ़ीकरण पर बल दिया। अंत में, संज्ञानवाद विकसित हुआ, जिसने मानसिक प्रक्रियाओं, स्मृति और सूचना प्रसंस्करण को अधिगम का केंद्र माना। यह प्रगति सरल यांत्रिक व्याख्याओं से जटिल मानसिक विश्लेषणों की ओर जाने की यात्रा को दर्शाती है।

106. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
संकेत संसूचन सिद्धांत स्पष्ट करता है कि संवेदी निर्णय केवल उद्दीपक की शक्ति पर नहीं, वरन व्यक्ति की रणनीति पर भी निर्भर करते हैं। एक रुढ़िवादी पक्षपात वाला प्रेक्षक केवल तभी स्वीकारात्मक प्रतिक्रिया देता है जब वह पूर्णतः सुनिश्चित हो, जिससे त्रुटियां न्यून होती हैं किंतु वास्तविक संकेत भी छूट सकते हैं। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि संवेदनशीलता माप 'd-prime' प्रेक्षक की इस मानसिक रणनीति से स्वतंत्र होता है, जिससे यह संवेदी क्षमता का एक शुद्ध और वस्तुनिष्ठ माप बन जाता है।

107. (B) हम अपने प्रत्यक्षण को एक ऐसी आकृति में व्यवस्थित करते हैं जो अलग दिखाई देती है और एक पृष्ठभूमि में।
आकृति-पृष्ठभूमि का नियम गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का एक मौलिक स्तंभ है जो बताता है कि हम दृश्य सूचनाओं को अर्थपूर्ण ढंग से कैसे व्यवस्थित करते हैं। हमारा मस्तिष्क स्वाभाविक रूप से दृश्य क्षेत्र के एक भाग को 'आकृति' के रूप में चुनता है, जो स्पष्ट और परिभाषित होती है, जबकि शेष भाग 'पृष्ठभूमि' बन जाता है जो कम महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। यह पृथक्करण हमें वस्तुओं को उनके परिवेश से स्वतंत्र रूप से पहचानने की अनुमति देता है और हमारे दृश्य अनुभव को एक तार्किक संरचना प्रदान करता है।

108. (C) आदत शक्ति।
क्लार्क हल के व्यवस्थित व्यवहार सिद्धांत में आदत शक्ति (sHr) एक प्रमुख मध्यवर्ती चर है। यह उद्दीपक और अनुक्रिया के मध्य उस सीखे हुए साहचर्य की सुदृढ़ता को दर्शाता है जो सुदृढ़ अभ्यास के माध्यम से विकसित होता है। इसे प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता, किंतु व्यवहार की भविष्यवाणी करने हेतु इसका उपयोग किया जाता है। हल का मानना था कि अधिगम को समझने हेतु बाह्य उद्दीपक और आंतरिक अवस्थाओं के मध्य के इन गणितीय संबंधों को समझना आवश्यक है जो व्यवहार को निर्देशित करते हैं।

109. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बी.एफ. स्किनर के सिद्धांतों पर आधारित अभिक्रमित अधिगम का मुख्य उद्देश्य सीखने की प्रक्रिया को त्रुटिहीन बनाना है। स्किनर का मानना था कि त्रुटियां केवल समय का अपव्यय हैं और वे अधिगम में बाधक होती हैं। अतः, सामग्री को इतने सरल और लघु चरणों में व्यवस्थित किया जाता है कि शिक्षार्थी सदैव सही उत्तर दे सके और उसे तत्काल सुदृढ़ीकरण प्राप्त हो। यह निरंतर सफलता शिक्षार्थी के आत्मविश्वास को बढ़ाती है और वांछित व्यवहार को अधिक प्रभावी ढंग से और तीव्रता से स्थापित करती है।

110. (B) पूर्ण बनाम अंश अधिगम
शाब्दिक अधिगम की प्रभावशीलता अभ्यास की विधि पर निर्भर करती है, जिसमें 'पूर्ण बनाम अंश अधिगम' एक प्रमुख निर्धारक है। पूर्ण विधि में शिक्षार्थी संपूर्ण सामग्री को एक साथ बार-बार पढ़ता है, जबकि अंश विधि में सामग्री को लघु भागों में विभाजित करके पृथक रूप से सीखा जाता है। यह निर्णय सामग्री की लंबाई और जटिलता पर आधारित होता है।

अभ्यास का यह वितरण निर्धारित करता है कि सूचनाएं कितनी कुशलता से स्मृति में संचित होंगी। यह शाब्दिक कौशल विकास हेतु एक रणनीतिक दृष्टिकोण है।

111. (A) केवल I

प्रत्यक्षण की प्रक्रिया में चित्र प्रत्यक्षण एक महत्वपूर्ण पक्ष है, जहाँ हम द्वि-आयामी सतह पर निर्मित संकेतों की व्याख्या त्रि-आयामी स्थान के रूप में करते हैं। यह गहराई प्रत्यक्षण के एकनेत्री संकेतों पर आधारित होता है। गहराई प्रत्यक्षण केवल द्विनेत्री संकेतों पर ही नहीं वरन एकनेत्री संकेतों पर भी निर्भर करता है जो एक आँख से भी कार्य करते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रत्यक्षण संगठन के नियम मुख्य रूप से गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित किए गए थे, जिन्होंने समग्र अनुभव के महत्व पर बल दिया था।

112. (B) अग्रलक्षी अवरोध

अग्रलक्षी अवरोध तब होता है जब पूर्व में सीखी गई जानकारी नवीन जानकारी को सीखने या स्मरण रखने में बाधा उत्पन्न करती है। जब कोई छात्र स्पेनिश शब्द 'rojo' सीखता है, तो उसके मस्तिष्क में यह शब्द इतना सुदृढ़ हो जाता है कि वह इतालवी भाषा के समान शब्द 'rosso' को सीखने में हस्तक्षेप करता है। यह स्मृति में होने वाले अवरोध का एक सामान्य रूप है जहाँ पुरानी स्मृतियाँ नवीन स्मृतियों के निर्माण में प्रतिस्पर्धा करती हैं। यह शाब्दिक अधिगम की एक महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक चुनौती है।

113. (D) अननुबंधित उद्दीपक से कुछ समय पहले।

इवान पावलव के शास्त्रीय अनुबंधन में समय संबंधी संबंध अधिगम की सफलता हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। सर्वाधिक प्रभावी अनुबंधन तब होता है जब अनुबंधित उद्दीपक अननुबंधित उद्दीपक से लगभग आधा सेकंड पूर्व प्रस्तुत किया जाता है। इसे अग्रगामी अनुबंधन कहा जाता है। यह समय अंतराल अनुबंधित उद्दीपक को एक विश्वसनीय संकेत के रूप में स्थापित करता है जो आगामी महत्वपूर्ण घटना की भविष्यवाणी करता है। यदि अंतराल अत्यधिक अधिक या कम हो, तो साहचर्य दुर्बल हो जाता है और अधिगम बाधित होता है।

114. (B) कथित गति

स्वतःगतिक प्रभाव एक दृश्य भ्रम है जो तब घटित होता है जब एक पूर्णतः अंधकारमय कक्ष में प्रकाश के एक स्थिर बिंदु को देखा जाता है। किसी संदर्भ बिंदु के अभाव में, हमारी आँखों की सूक्ष्म मांसपेशियों की गतिविधियों के कारण वह प्रकाश बिंदु गतिमान प्रतीत होता है। यह दर्शाता है कि हमारा गति प्रत्यक्षण सापेक्ष होता है और इसके लिए परिवेश की सूचनाएं आवश्यक होती हैं। यह आभासी गति की श्रेणी में आता है क्योंकि इसमें वास्तविक भौतिक विस्थापन नहीं होता वरन केवल गति का आभास होता है।

115. (D) समविभवता

अवधान के बुनियादी निर्धारकों को उन कारकों के रूप में पहचाना जाता है जो किसी उद्दीपक की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने की शक्ति रखते हैं। इनमें नवीनता, तीव्रता, पुनरावृत्ति, आकार और गति जैसे बाह्य कारक सम्मिलित हैं जो संवेदी प्रणालियों को उत्तेजित करते हैं। समविभवता इन निर्धारकों का भाग नहीं है; यह शब्द सामान्यतः मस्तिष्क की कार्यक्षमता से संबंधित सिद्धांतों में प्रयुक्त होता है। अवधान मुख्य रूप से उद्दीपक की स्पष्टता और व्यक्ति की तत्परता पर आधारित एक चयनात्मक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है।

116. (B) P-3, Q-2, R-4, S-1

संकेत संसूचन सिद्धांत के चार प्रमुख परिणाम प्रेक्षक की निर्णय लेने की प्रक्रिया को दर्शाते हैं। 'हित' तब होता है जब संकेत की उपस्थिति सही पहचानी जाती है, जबकि 'चूक' में उपस्थित संकेत को अनदेखा कर दिया जाता है। 'मिथ्या सचेत' में शोर को त्रुटिवश संकेत मान लिया जाता है, और 'सही अस्वीकृति' में शोर की अनुपस्थिति को सटीकता से पहचाना जाता है। ये परिणाम प्रेक्षक की संवेदनशीलता और उसके द्वारा अपनाए गए निर्णय मापदंडों के मध्य के जटिल संतुलन को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं।

117. (A) संबंधवाद

एडवर्ड थार्नडाइक के अधिगम सिद्धांत को 'संबंधवाद' के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह उद्दीपक और अनुक्रिया के मध्य निर्मित तंत्रिका संबंधों पर आधारित है। उनका मानना था कि अधिगम सफल अनुक्रियाओं के चयन और उन्हें उद्दीपक के साथ जोड़ने की एक प्रक्रिया है। यह बंधन परिणामों की संतुष्टि से सुदृढ़ होता है। प्रयास और त्रुटि की यह विधि दर्शाती है कि अधिगम आकस्मिक होने के स्थान पर शनैः-शनैः विकसित होता है। यह आधुनिक व्यवहारवादी सिद्धांतों के विकास में महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है।

118. (C) संवेदना उद्दीपकों का पता लगाने की प्रक्रिया है, जबकि प्रत्यक्षण उस जानकारी की व्याख्या और संगठन की प्रक्रिया है।

संवेदना और प्रत्यक्षण यद्यपि निकटता से संबंधित हैं, किंतु वे सूचना प्रसंस्करण के दो पृथक स्तर हैं। संवेदना वह प्रारंभिक प्रक्रिया है जहाँ हमारी ज्ञानेंद्रियाँ वातावरण से अपरिष्कृत डेटा प्राप्त करती हैं और उसे तंत्रिका संकेतों में परिवर्तित करती हैं। प्रत्यक्षण इसके पश्चात आने वाली उच्च-स्तरीय मानसिक प्रक्रिया है जिसमें मस्तिष्क उन संकेतों को व्यवस्थित करता है और उन्हें अर्थ प्रदान करने हेतु पूर्व स्मृतियों का उपयोग करता है। सरल शब्दों में, संवेदना केवल अनुभव करना है, जबकि प्रत्यक्षण उसे समझना है।

119. (B) शब्द द्वारा उत्पन्न साहचर्यों की संख्या के द्वारा।

शाब्दिक अधिगम में अर्थपूर्णता एक महत्वपूर्ण कारक है जो सीखने की गति को निर्धारित करती है। शोध में इसे प्रायः 'साहचर्य मूल्य' के रूप में मापा जाता है, जिसका अर्थ है कि एक शब्द सुनकर व्यक्ति के मन में कितने अन्य विचार उत्पन्न होते हैं। शब्द के जितने अधिक साहचर्य होंगे, उसे याद रखना उतना ही सुगम होगा क्योंकि वह स्मृति के एक विस्तृत जाल का भाग बन जाता है। यह मानसिक जुड़ाव सूचनाओं के कूटलेखन और पुनरावाहन को अत्यंत सरल बना देता है, जिससे अधिगम तीव्र होता है।

120. (C) अननुबंधित उद्दीपक
शास्त्रीय अनुबंधन के उदाहरण में, सुई का चुभना एक अननुबंधित उद्दीपक है क्योंकि यह स्वाभाविक रूप से और बिना किसी पूर्व अधिगम के भय या पीड़ा की अनुक्रिया उत्पन्न करता है। सुई प्रारंभ में एक तटस्थ उद्दीपक होती है, किंतु दर्द के साथ बार-बार जुड़ने के कारण वह एक अनुबंधित उद्दीपक बन जाती है। यह प्रक्रिया बताती है कि कैसे हमारे पर्यावरण के संकेत जैविक रूप से महत्वपूर्ण घटनाओं की भविष्यवाणी करना सीख जाते हैं, जिससे भविष्य हेतु एक सुरक्षात्मक व्यवहार विकसित होता है।

121. (C) मल्टीमोड थ्योरी
जॉनसन और हाइन्ज़ द्वारा प्रस्तावित अवधान की 'मल्टीमोड थ्योरी' यह सुझाव देती है कि अवधान का फिल्टर लचीला होता है। यह कार्य की कठिनाई और मांगों के आधार पर सूचना प्रसंस्करण के प्रारंभिक या अंतिम चरणों में कार्य कर सकता है। यदि कार्य सरल है, तो चयन विलंब से हो सकता है, किंतु जटिल कार्यों हेतु चयन शीघ्र करना पड़ता है ताकि मानसिक संसाधनों की बचत हो सके। यह सिद्धांत चयनात्मक अवधान की व्याख्या में अधिक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है जो परिस्थितियों के अनुकूल है।

122. (B) समग्र अपने भागों के योग से भिन्न होता है।
गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का मुख्य दर्शन यह है कि हमारा प्रत्यक्षण केवल पृथक संवेदी इकाइयों को जोड़ने का परिणाम नहीं है। फाई-परिघटना इसका प्रबल प्रमाण है, जहाँ स्थिर प्रकाशों का संयोजन गति का एक नवीन अनुभव उत्पन्न करता है जो मूल भागों में विद्यमान नहीं था। यह सिद्धांत सिद्ध करता है कि मस्तिष्क सूचनाओं को सक्रिय रूप से संगठित करके एक नया 'पूर्ण' निर्मित करता है। यह दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक अध्ययन में विश्लेषण के स्थान पर संश्लेषण के महत्व पर विशेष बल देता है।

123. (B) अवलोकन योग्य व्यवहार और पर्यावरणीय परिणाम।
बी.एफ. स्किनर का कट्टर व्यवहारवाद इस विचार पर आधारित था कि मनोविज्ञान को केवल उन्हीं तथ्यों का अध्ययन करना चाहिए जिन्हें वस्तुनिष्ठ रूप से मापा और देखा जा सके। उन्होंने आंतरिक मानसिक अवस्थाओं जैसे विचारों या भावनाओं को व्यवहार की व्याख्या हेतु अप्रासंगिक माना। उनका ध्यान इस बात पर था कि कैसे पर्यावरणीय परिणाम, जैसे पुरस्कार और दंड, व्यवहार को रूप देते हैं और उसे बनाए रखते हैं। स्किनर हेतु अधिगम पर्यावरण और जीव के मध्य होने वाली एक प्रत्यक्ष और मापन योग्य अंतःक्रिया थी।

124. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मुक्त पुनरावाहन कार्यों में 'प्राथमिकता प्रभाव' के कारण सूची के प्रारंभिक शब्दों का स्मरण बेहतर होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि जब प्रथम शब्द प्रस्तुत किए जाते हैं, तो मस्तिष्क के पास उनका अभ्यास करने और उन्हें दोहराने हेतु पर्याप्त समय और मानसिक संसाधन होते हैं। यह निरंतर अभ्यास इन सूचनाओं को अल्पकालिक स्मृति से दीर्घकालिक स्मृति में स्थानांतरित करने में सहायता करता है। इस प्रकार, ये शब्द स्मृति भंडार में अधिक सुदृढ़ता से स्थापित होकर पुनरावाहन हेतु सुलभ होते हैं।

125. (C) चित्रीय संकेत
चित्रीय संकेत वे एकनेत्री गहराई संकेत हैं जिनका उपयोग द्वि-आयामी सतहों, जैसे चित्रों और छायाचित्रों में गहराई और त्रि-आयामी विस्तार का भ्रम उत्पन्न करने हेतु किया जाता है। इनमें रैखिक परिप्रेक्ष्य, छायांकन, सापेक्ष आकार और अंतःस्थिति सम्मिलित हैं। चूंकि छायाचित्र स्थिर होते हैं और दोनों आँखों को एक ही सपाट छवि प्रदान करते हैं, अतः हमारा मस्तिष्क गहराई को अनुभव करने हेतु पूर्णतः इन दृश्य युक्तियों पर निर्भर करता है। ये संकेत कला के माध्यम से स्थान का यथार्थवादी बोध कराते हैं।

126. (B) केवल III
अवधान एक बहुआयामी संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसका कोई एकल जैविक केंद्र नहीं है, वरन इसमें मस्तिष्क के कई क्षेत्रों का एक जटिल नेटवर्क सम्मिलित होता है। सतत अवधान और चयनात्मक अवधान पृथक क्षमताएं हैं; सतत अवधान दीर्घ अवधि तक सतर्क रहने से संबंधित है। संकेत संसूचन सिद्धांत एक अत्यंत महत्वपूर्ण ढांचा है जो यह समझने में सहायता करता है कि अनिश्चितता और कोलाहल के वातावरण में मनुष्य निर्णय कैसे लेते हैं। यह सिद्धांत संवेदी संवेदनशीलता और निर्णय मापदंडों के अंतर को स्पष्ट करता है।

127. (C) एडवर्ड टोलमैन
एडवर्ड टोलमैन व्यवहारवादी होने के बावजूद मानसिक प्रतिनिधियों के अध्ययन में गहरी रुचि रखते थे। उन्होंने प्रस्तावित किया कि अधिगम केवल उद्दीपक-अनुक्रिया संबंधों का संग्रह नहीं है, वरन पर्यावरण का एक आंतरिक ज्ञान प्राप्त करना है। उनके अनुसार, चूहे भूलभुलैया में केवल भोजन हेतु नहीं दौड़ते, वरन वे मार्गों का एक मानसिक मानचित्र या 'संज्ञानात्मक मानचित्र' विकसित करते हैं। यह दृष्टिकोण अधिगम की प्रक्रिया में संज्ञान, उद्देश्य और समझ को केंद्र में लाता है जो इसे यंत्रवत व्यवहारवाद से पृथक करता है।

128. (B) प्रतिगामी अवरोध
प्रतिगामी अवरोध स्मृति में होने वाला एक प्रकार का हस्तक्षेप है जहाँ नवीन सीखी गई जानकारी पूर्व जानकारी को याद रखने में बाधा उत्पन्न करती है। यदि कोई व्यक्ति सूची 'क' सीखने के पश्चात सूची 'ख' सीखता है, तो नवीन सामग्री के प्रभाव के कारण उसे सूची 'क' के शब्दों को पुनः स्मरण करने में कठिनाई हो सकती है। यह दर्शाता है कि हमारा स्मृति भंडार स्थिर नहीं है और नवीन सूचनाएं पुरानी सूचनाओं के पुनरावाहन में प्रतिस्पर्धा कर सकती हैं। यह विस्मृति को समझने हेतु महत्वपूर्ण अवधारणा है।

129. (B) स्वनिम
स्वनिम या फोनीम किसी भाषा में ध्वनि की लघुतम विशिष्ट इकाई है जो अर्थ में अंतर उत्पन्न करने में सक्षम होती है। यद्यपि स्वनिम का स्वयं का कोई अर्थ नहीं होता, किंतु एक स्वनिम को दूसरे से परिवर्तित करने पर शब्द का अर्थ पूर्णतः बदल सकता

है। उदाहरण के लिए, 'कल' और 'चल' में प्रारंभिक ध्वनियां भिन्न स्वनिम हैं। स्वनिम को समझना भाषा अर्जन, उच्चारण और शाब्दिक अधिगम की प्रक्रियाओं के विश्लेषण हेतु अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यह भाषाई संरचना का बुनियादी आधार प्रदान करता है।

130. (C) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान
प्रत्यक्षण संगठन के नियम गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के प्रमुख योगदानों में से एक हैं, जो 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में जर्मनी में विकसित हुआ था। मैक्स वर्थाइमर, कोहलर और कोफ्का जैसे विद्वानों ने तर्क दिया कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से संवेदी सूचनाओं को अर्थपूर्ण 'पूर्ण' या समग्र इकाइयों में व्यवस्थित करते हैं। उन्होंने सामीप्य, समानता, पूर्ति और निरंतरता जैसे सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जो यह बताते हैं कि हमारा मस्तिष्क दृश्य जगत को व्यवस्थित करने हेतु किन जन्मजात नियमों का अनुपालन करता है।

131. (C) थार्नडाइक - प्रभाव का नियम
अधिगम के विभिन्न सिद्धांतों ने व्यवहार परिवर्तन के विशिष्ट तंत्रों की पहचान की है। एडवर्ड थार्नडाइक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान 'प्रभाव का नियम' है, जो बताता है कि व्यवहार के परिणाम ही यह निर्धारित करते हैं कि वह व्यवहार भविष्य में दोहराया जाएगा या नहीं। इसके विपरीत, टोलमैन को संज्ञानात्मक मानचित्रों हेतु, हल को अंतर्नोद-न्यूनता हेतु और स्किनर को नैमित्तिक अनुबंधन हेतु जाना जाता है। थार्नडाइक का यह नियम आधुनिक शिक्षा और व्यवहारवाद की नींव रखने में अत्यंत प्रभावशाली रहा है।

132. (D) रेटिनल असमानता
शाब्दिक अधिगम के निर्धारक उन कारकों को संदर्भित करते हैं जो शब्दों और भाषाई सूचनाओं को सीखने की दर और स्मृति को प्रभावित करते हैं। इनमें सामग्री की अर्थपूर्णता, सूची की लंबाई, साहचर्य मूल्य और अभ्यास के प्रकार जैसे कारक सम्मिलित हैं। इसके विपरीत, रेटिनल असमानता एक दृश्य गहराई संकेत है जो हमारी दोनों आँखों द्वारा प्राप्त छवियों के अंतर से संबंधित है। इसका शाब्दिक सूचनाओं को सीखने या याद रखने की प्रक्रिया से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है। यह पूर्णतः दृश्य प्रत्यक्षण का विषय है।

133. (B) ब्रॉडबेंट का फिल्टर मॉडल
'कॉकटेल पार्टी परिघटना' ब्रॉडबेंट के प्रारंभिक-चयन फिल्टर मॉडल हेतु एक बड़ी चुनौती सिद्ध हुई। ब्रॉडबेंट का मानना था कि जिस सूचना पर ध्यान नहीं दिया जाता, वह फिल्टर द्वारा पूर्णतः अवरुद्ध कर दी जाती है और उसका अर्थ संसाधित नहीं होता। हालांकि, कोलाहल में भी अपना नाम सुन लेना यह दर्शाता है कि अनपेक्षित सूचनाओं का भी किसी स्तर पर अर्थ हेतु विश्लेषण होता है। यह साक्ष्य बताता है कि फिल्टर 'पूर्ण-या-शून्य' होने के स्थान पर अधिक लचीला या क्षीणक जैसा होना चाहिए।

134. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
शाब्दिक अधिगम की विभिन्न विधियाँ विशिष्ट शैक्षिक लक्ष्यों को पूर्ण करने हेतु प्रयुक्त की जाती हैं। क्रमिक अधिगम का उपयोग वर्णमाला या कविताओं को पंक्तिबद्ध याद करने हेतु किया जाता है। युग्मित-साहचर्य अधिगम विदेशी भाषा की शब्दावली सीखने में अत्यंत प्रभावी है, जहाँ एक शब्द को उसके अर्थ के साथ जोड़ा जाता है। मुक्त पुनरावाहन स्मृति संगठन का परीक्षण करने हेतु प्रयुक्त होता है, जबकि विभेदन अधिगम हमें समान दिखने वाले अक्षरों या प्रतीकों के मध्य सूक्ष्म अंतर करना सिखाता है ताकि सटीकता बनी रहे।

135. (B) आकृति-पृष्ठभूमि प्रत्यक्षण
आकृति-पृष्ठभूमि प्रत्यक्षण दृश्य संगठन की वह बुनियादी प्रक्रिया है जो हमें यह निर्णय लेने में सहायता करती है कि दृश्य क्षेत्र में कौन सी वस्तु मुख्य है और कौन सा भाग केवल परिवेश है। 'आकृति' वह तत्व है जिस पर हमारा ध्यान केंद्रित होता है और जिसमें स्पष्ट सीमाएं होती हैं, जबकि 'पृष्ठभूमि' आकृति के पीछे फैली हुई दिखाई देती है। यह पृथक्करण वस्तुओं की पहचान करने और उनके संबंधों को समझने हेतु अनिवार्य है। यह गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का अत्यंत महत्वपूर्ण और आधारभूत सिद्धांत है।

136. (D) नकारात्मक दंड
नकारात्मक दंड नैमित्तिक अनुबंधन की एक प्रक्रिया है जिसमें किसी अवांछित व्यवहार को न्यून करने हेतु किसी सुखद उद्दीपक या विशेषाधिकार को हटा लिया जाता है। जब गृहकार्य न करने पर बालक से उसका खिलौना ले लिया जाता है, तो उद्देश्य उसे यह सिखाना है कि उसके व्यवहार का परिणाम एक हानि है। यह दंड का वह रूप है जो किसी कष्टदायक वस्तु को जोड़ने के स्थान पर किसी प्रिय वस्तु को कम करने पर आधारित है। यह व्यवहार संशोधन हेतु एक सामान्य और प्रभावी रीति मानी जाती है।

137. (B) क्लार्क हल
क्लार्क हल एक प्रमुख नव-व्यवहारवादी थे जिन्होंने व्यवहार की व्याख्या हेतु एक विस्तृत और गणितीय सिद्धांत विकसित किया। उन्होंने प्रस्तावित किया कि व्यवहार (sEr) कई कारकों का प्रतिफल है, जिसमें आदत शक्ति (sHr), अंतर्नोद (D), प्रोत्साहन (K) और उद्दीपक तीव्रता (V) सम्मिलित हैं। हल का मानना था कि इन चरों के मध्य के संबंधों को समीकरणों के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है। उनका यह दृष्टिकोण अधिगम को एक कठोर विज्ञान के रूप में स्थापित करने का प्रयास था जो मापन योग्य चरों पर आधारित था।

138. (C) नवीनता
नवीनता अवधान का एक शक्तिशाली बाह्य निर्धारक है जो इस तथ्य पर आधारित है कि हमारा मस्तिष्क अप्रत्याशित या नवीन सूचनाओं के प्रति अधिक संवेदनशील होता है। जब हमारे समक्ष कोई ऐसा उद्दीपक आता है जो हमारे परिचित परिवेश से भिन्न होता है, तो वह स्वतः ही हमारा ध्यान आकर्षित कर लेता है। यह एक विकासवादी सुरक्षा तंत्र भी है जो हमें पर्यावरण में संभावित खतरों या नवीन अवसरों के प्रति जागरूक रखता

है। बार-बार आने वाले पुराने उद्दीपक अपनी ध्यान खींचने की शक्ति खो देते हैं।

139. (B) β
संकेत संसूचन सिद्धांत में बीटा (β) प्रेक्षक के अनुक्रिया मापदंड या पक्षपात को दर्शाता है। यह उस निर्णय सीमा को मापता है जिस पर कोई व्यक्ति स्वीकारात्मक या नकारात्मक उत्तर देने का निर्णय लेता है। एक निम्न बीटा मान का अर्थ है कि प्रेक्षक उदार है और संकेत होने की सूचना देने हेतु अधिक तत्पर है, जिससे हित और मिथ्या सचेत दोनों बढ़ जाते हैं। उच्च बीटा मान एक रुढ़िवादी रणनीति को दर्शाता है जहाँ व्यक्ति केवल पूर्ण निश्चितता पर ही अनुक्रिया करता है। यह संवेदी संवेदनशीलता से भिन्न है।

140. (A) I, II, III
चयनात्मक अवधान के मॉडलों का विकास सूचना प्रसंस्करण की सीमाओं को समझने की यात्रा रही है। सर्वप्रथम ब्रॉडबेंट ने 1958 में फिल्टर मॉडल दिया, जो संवेदी स्तर पर चयन की बात करता था। इसके पश्चात ट्रिसमैन ने 1960 में क्षीणन मॉडल प्रस्तुत किया जो अधिक लचीला था। अंत में, ड्यूश और ड्यूश ने 1963 में विलंबित चयन मॉडल प्रस्तावित किया, जिसमें अर्थ के विश्लेषण को प्राथमिकता दी गई। यह कालानुक्रमिक क्रम मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक साक्ष्यों के साथ मॉडलों के निरंतर परिष्करण को दर्शाता है।

141. (C) वास्तविक गति
वास्तविक गति का प्रत्यक्षण तब होता है जब कोई भौतिक वस्तु वास्तव में स्थान परिवर्तन करती है और उसकी छवि रेटिना पर लगातार विभिन्न बिंदुओं को उत्तेजित करती है। यह आभासी गति से भिन्न है क्योंकि इसमें उद्दीपक का वास्तविक भौतिक विस्थापन सम्मिलित होता है। हमारा दृश्य तंत्र वस्तु की गति और दिशा की गणना करने हेतु रेटिनल छवि के वेग और आँखों की मांसपेशियों की प्रतिक्रियाओं का उपयोग करता है। यह क्षमता हमें गतिमान वाहनों को ट्रैक करने या उड़ते हुए पक्षियों को देखने में सहायता प्रदान करती है।

142. (C) अपनी गति से चलने वाले चरणों का उपयोग करना जो तत्काल सुदृढ़ीकरण प्रदान करते हैं।
अभिक्रमित अधिगम एक छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति है जो सक्रिय सहभागिता और व्यक्तिगत गति पर बल देती है। इसकी सफलता का मुख्य कारण यह है कि प्रत्येक छात्र अपनी बोध क्षमता के अनुसार आगे बढ़ता है। जैसे ही शिक्षार्थी एक लघु फ्रेम का उत्तर देता है, उसे तत्काल ज्ञात हो जाता है कि वह सही है या नहीं। यह तत्काल प्रतिपुष्टि एक सुदृढ़क के रूप में कार्य करती है जो सीखने की प्रेरणा को बनाए रखती है और त्रुटियों को तुरंत सुधारने का अवसर प्रदान करती है, जिससे अधिगम सुदृढ़ होता है।

143. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
शाब्दिक अधिगम में सामान्यीकरण और विभेदन दो महत्वपूर्ण प्रक्रियाएं हैं जो भाषा के प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करती हैं। सामान्यीकरण हमें एक शब्द हेतु सीखी गई अनुक्रिया को समान शब्दों पर लागू करने की अनुमति देता है, जो सीखने की दक्षता बढ़ाता है। दूसरी ओर, विभेदन हमें समान दिखने वाले शब्दों के मध्य सूक्ष्म अंतर को पहचानने में सहायता करता है ताकि हम त्रुटिपूर्ण अर्थ न निकालें। ये दोनों प्रक्रियाएं मिलकर एक संतुलित संज्ञानात्मक तंत्र निर्मित करती हैं जो सटीकता और लचीलेपन में समन्वय स्थापित करता है।

144. (A) द्वितीय-क्रम अनुबंधन
द्वितीय-क्रम अनुबंधन शास्त्रीय अनुबंधन का एक उन्नत रूप है जहाँ एक पूर्व स्थापित अनुबंधित उद्दीपक का उपयोग एक नवीन तटस्थ उद्दीपक को अनुबंधित करने हेतु किया जाता है। इसमें नवीन उद्दीपक को कभी भी प्रत्यक्ष रूप से अननुबंधित उद्दीपक के साथ नहीं जोड़ा जाता। फिर भी, पूर्व अनुबंधित उद्दीपक के साथ साहचर्य के कारण नवीन उद्दीपक वही अनुक्रिया उत्पन्न करने लगता है। यह प्रक्रिया बताती है कि कैसे जटिल साहचर्यों की श्रृंखला निर्मित होती है, जिससे हमारे व्यवहार और संवेगों का दायरा विस्तृत होता जाता है।

145. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गेस्टाल्ट संगठन के नियम सक्रिय मानसिक प्रक्रियाओं के उदाहरण हैं क्योंकि वे दर्शाते हैं कि हमारा मस्तिष्क केवल सूचनाओं का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं है। जब हम बिखरे हुए बिंदुओं को देखते हैं, तो अधोमुखी प्रसंस्करण की भांति हमारा मस्तिष्क उन पर एक संरचना आरोपित करता है और उन्हें एक रेखा या आकृति के रुप में देखता है। यह अर्थ का निर्माण हमारे भीतर विद्यमान जन्मजात नियमों के माध्यम से होता है। यह दर्शाता है कि प्रत्यक्षण संवेदी डेटा और मानसिक संगठन के मध्य एक सक्रिय अंतःक्रिया है।

146. (C) दो तिरछी रेखाएं और एक क्षैतिज क्रॉसबार।
विशेषता-विश्लेषण मॉडल यह प्रस्तावित करता है कि प्रत्यक्षण की प्रक्रिया में मस्तिष्क उद्दीपकों को उनके बुनियादी घटकों या 'विशेषताओं' में विभाजित कर देता है। अक्षर 'A' की पहचान करने हेतु, तंत्रिका तंत्र विशिष्ट विशेषता पहचानकर्ताओं का उपयोग करता है जो ऊर्ध्वाधर, क्षैतिज और तिरछी रेखाओं के प्रति संवेदनशील होते हैं। इन सरल रेखाओं के संयोजन को पहचानकर मस्तिष्क उच्च स्तर पर अक्षर की पूर्ण पहचान सुनिश्चित करता है। यह मॉडल जटिल आकृतियों को समझने हेतु एक व्यवस्थित और तार्किक आधार प्रदान करता है।

147. (B) उत्तेजना या आवश्यकता की एक सामान्य, गैर-विशिष्ट अवस्था।
क्लार्क हल के सिद्धांत में अंतर्नोद (D) एक आंतरिक प्रेरणा शक्ति है जो किसी शारीरिक आवश्यकता या साम्यावस्था की न्यूनता से उत्पन्न होती है। यह एक सामान्य उत्तेजना की स्थिति है जो जीव को क्रियाशील बनाती है किंतु उसे यह नहीं बताती कि क्या करना है। व्यवहार की दिशा आदत शक्ति द्वारा निर्धारित होती है, जबकि अंतर्नोद उस व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करता है। जब व्यवहार सफल होता है और आवश्यकता पूर्ण हो जाती है, तो अंतर्नोद न्यून हो जाता है, जिससे अधिगम की प्रक्रिया सुदृढ़ होती है।

148. (A) केवल I और II
अधिगम की प्रभावशीलता कई निर्धारकों पर निर्भर करती है, जिनमें सामग्री की प्रकृति और अभ्यास का प्रकार प्रमुख हैं। अर्थपूर्ण सामग्री को याद रखना बहुत सरल होता है क्योंकि इसे पूर्व ज्ञान के साथ जोड़ा जा सकता है। अतिरिक्त रुप से, दीर्घकाल तक सूचनाओं को बनाए रखने हेतु अभ्यास के मध्य अंतराल देना (अंतराल वाला अभ्यास) एक ही बार में सब कुछ पढ़ने से अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। निष्पादन पर मिलने वाली प्रतिपुष्टि अधिगम की दर को बढ़ाने हेतु एक अनिवार्य घटक मानी जाती है जो सुधार में सहायक है।

149. (C) द्वार के रुप में कार्य करने वाला थैलेमिक रेटिकुलर न्यूक्लियस
थैलेमिक रेटिकुलर न्यूक्लियस अवधान के नियंत्रण में एक 'द्वारपाल' की भांति कार्य करता है। यह मस्तिष्क की उस क्षमता का आधार है जिसमें हम एक संवेदी माध्यम से आने वाली सूचनाओं को प्राथमिकता देते हैं और दूसरों को रोक देते हैं। जब हम किसी की वार्ता सुन रहे होते हैं, तो यह केंद्र पृष्ठभूमि के कोलाहल जैसे यातायात की ध्वनि को प्रमस्तिष्क वल्कुट तक पहुँचने से पूर्व ही दबा देता है। यह चयनात्मक निरोध हमें महत्वपूर्ण सूचनाओं पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाता है और एकाग्रता बढ़ाता है।

150. (B) संकेत संसूचन सिद्धांत
पुलिस लाइनअप एक व्यावहारिक स्थिति है जिसका विश्लेषण संकेत संसूचन सिद्धांत के माध्यम से किया जा सकता है। यहाँ गवाह का कार्य शोर (निर्दोष लोगों) के मध्य से संकेत (वास्तविक अपराधी) को पहचानना है। गवाह के निर्णय पर उसकी संवेदनशीलता (अपराधी को पहचानने की क्षमता) और उसके अनुक्रिया पक्षपात (किसी को चुनने की इच्छा या दबाव) का प्रभाव पड़ता है। यह सिद्धांत यह समझने में सहायता करता है कि क्यों कभी-कभी त्रुटिपूर्ण पहचान होती है या क्यों गवाह अपराधी की उपस्थिति पर भी उसे नहीं पहचान पाता।

151. (B) अभिसरण
गहराई प्रत्यक्षण हेतु अभिसरण एक द्विनेत्री संकेत है क्योंकि इसमें दोनों आँखों का एक साथ उपयोग और उनकी मांसपेशियों के मध्य समन्वय अनिवार्य है। इसके विपरीत, सापेक्ष आकार, अंतःस्थिति और रैखिक परिप्रेक्ष्य जैसे संकेत एकनेत्री हैं, जिसका अर्थ है कि इन्हें केवल एक आँख से भी गहराई और दूरी का अनुमान लगाने हेतु प्रयुक्त किया जा सकता है। द्विनेत्री संकेत सामान्यतः निकट की वस्तुओं हेतु अधिक सटीक जानकारी प्रदान करते हैं, जबकि एकनेत्री संकेत दूर की वस्तुओं और चित्रों हेतु प्रभावी होते हैं।

152. (C) लक्ष्य व्यवहार जटिल हो और स्वाभाविक रुप से होने की संभावना न हो।
नैमित्तिक अनुबंधन में रुपण या शेपिंग एक अनिवार्य प्रक्रिया है जब हमें जीव को कोई ऐसा नवीन और जटिल व्यवहार सिखाना होता है जो वह स्वतः कभी नहीं करता। इसमें वांछित लक्ष्य तक पहुँचने हेतु व्यवहार के लघु क्रमिक सन्निकटन को सुदृढ़ किया जाता है। उदाहरण के लिए, किसी पक्षी को विशिष्ट नृत्य सिखाने हेतु पहले उसकी सूक्ष्म सही क्रियाओं पर पुरस्कार दिया जाता है। धीरे-धीरे केवल पूर्ण होने वाली क्रियाओं को ही सुदृढ़ किया जाता है, जिससे जटिल व्यवहार व्यवहार की श्रृंखला स्थापित होती है।

153. (C) शाखीय प्रोग्राम
शाखीय प्रोग्रामिंग एक उन्नत अभिक्रमित अधिगम पद्धति है जो शिक्षार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुकूल होती है। इसमें सामग्री को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है कि शिक्षार्थी की दक्षता के आधार पर उसे पृथक मार्ग दिए जा सकें। यदि कोई छात्र तीव्र बोध प्रदर्शित करता है, तो प्रोग्राम उसे सरल चरणों को छोड़ने और सीधे उन्नत अनुभागों पर जाने की अनुमति देता है। यह लचीलापन सीखने के समय को बचाता है और कुशल शिक्षार्थियों को उनकी योग्यता अनुसार चुनौती प्रदान करता है, जिससे अधिगम सफल होता है।

154. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
अधिगम के विभिन्न सिद्धांतों ने व्यवहार को समझने हेतु अद्वितीय दृष्टिकोण प्रदान किए हैं। इवान पावलव ने प्रतिवर्ती अनुक्रियाओं और अनुबंधित प्रतिवर्तों की खोज की। एडवर्ड थार्नडाइक ने नैमित्तिक अनुबंधन के प्रारंभिक रुपों का अध्ययन किया और उद्दीपक-अनुक्रिया संबंधों पर बल दिया। एडवर्ड टोलमैन ने मानसिक प्रक्रियाओं को महत्व देते हुए संज्ञानात्मक मानचित्रों की अवधारणा दी। बी.एफ. स्किनर को उनके कट्टर व्यवहारवाद हेतु जाना जाता है, जहाँ उन्होंने अवलोकन योग्य व्यवहार को ही मनोविज्ञान का विषय माना।

155. (C) गत्यात्मक कौशल अधिगम
गत्यात्मक कौशल अधिगम में शारीरिक गतिविधियों और मांसपेशियों के समन्वय का अभ्यास सम्मिलित होता है। साइकिल चलाना इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि इसमें संतुलन, पेडल मारना और दिशा नियंत्रण जैसी कई क्रियाओं का एक साथ समन्वय करना होता है। इस प्रकार का अधिगम शनैः-शनैः अभ्यास और प्रतिपुष्टि के माध्यम से विकसित होता है और एक बार सीख लेने के पश्चात यह स्वचालित और स्थायी हो जाता है। यह शाब्दिक अधिगम से भिन्न है क्योंकि इसमें भाषाई सूचनाओं के स्थान पर शारीरिक दक्षता की आवश्यकता होती है।

156. (A) प्रत्यक्षणात्मक स्थिरता
प्रत्यक्षणात्मक स्थिरता वह संज्ञानात्मक क्षमता है जिसके कारण हम वस्तुओं को उनके स्थायी गुणों के साथ पहचानते हैं, भले ही संवेदी सूचनाएं निरंतर परिवर्तित हो रही हों। जब आप अपने मित्र का मुख पृथक कोणों या प्रकाश में देखते हैं, तो रेटिना पर निर्मित छवि बदल जाती है, किंतु आपका मस्तिष्क उसे उसी व्यक्ति के रूप में पहचानता है। यह स्थिरता हमारे दृश्य जगत को विश्वसनीय और अर्थपूर्ण बनाती है। इसके बिना, संवेदी विश्व अत्यधिक अस्थिर और भ्रमित करने वाला होता, जिससे पहचान करना कठिन हो जाता।

157. (B) निश्चित-अनुपात
निश्चित-अनुपात सुदृढ़ीकरण अनुसूची की एक विशिष्ट विशेषता अनुक्रियाओं की उच्च दर और प्रत्येक पुरस्कार के पश्चात आने वाला एक लघु विराम है। चूंकि पुरस्कार एक निश्चित संख्या में अनुक्रियाएं करने के पश्चात मिलना सुनिश्चित होता है, अतः व्यक्ति पुरस्कार प्राप्ति हेतु तीव्रता से कार्य करता है। पुरस्कार मिलने के तुरंत पश्चात, आगामी चक्र को प्रारंभ करने से पूर्व एक संक्षिप्त विश्राम की प्रवृत्ति देखी जाती है। यह अनुसूची कार्य की मात्रा और उत्पादन को बढ़ाने हेतु औद्योगिक परिवेश में अत्यंत प्रभावी मानी जाती है।

158. (C) विषमता
विषमता अवधान का एक महत्वपूर्ण बाह्य निर्धारक है जो पूर्णतः उद्दीपक के भौतिक गुणों और उसके परिवेश पर निर्भर करता है। जब कोई वस्तु अपने पार्श्व की वस्तुओं से रंग, आकार या दीप्ति में अत्यधिक भिन्न होती है, तो वह हमारा ध्यान स्वतः ही आकर्षित कर लेती है। उदाहरण के लिए, कृष्ण वर्ण के कागज़ पर एक श्वेत बिंदु तत्काल दृष्टिगोचर होता है। यह कारक व्यक्ति की आंतरिक रुचियों से स्वतंत्र होता है। यह दृश्य खोज को सरल बनाने और महत्वपूर्ण सूचनाओं को प्रमुखता से उभारने में सहायता करता है।

159. (C) अर्थपूर्ण महत्व
ड्यूश और ड्यूश का विलंबित चयन मॉडल प्रस्तावित करता है कि अवधान की बाधा सूचना प्रसंस्करण के अंतिम चरण में होती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, सभी आने वाले उद्दीपकों को प्रारंभिक रूप से अर्थ हेतु संसाधित किया जाता है। आगामी सचेत प्रसंस्करण और अनुक्रिया हेतु चयन उस सूचना के अर्थपूर्ण महत्व पर आधारित होता है। यदि कोई सूचना व्यक्ति हेतु महत्वपूर्ण है, तो उसे चेतना में प्रवेश दिया जाता है। यह मॉडल समझाता है कि क्यों हम अनपेक्षित किंतु महत्वपूर्ण बातें, जैसे अपना नाम, सहज ही सुन लेते हैं।

160. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बी.एफ. स्किनर ने व्यवहार संशोधन में दंड की प्रभावशीलता के विषय में संदेह व्यक्त किया था। उनका तर्क था कि दंड केवल अस्थायी रूप से व्यवहार को दबाता है, किंतु उसे पूर्णतः समाप्त नहीं करता। जैसे ही दंड का भय समाप्त होता है, अवांछित व्यवहार प्रायः पुनरावृत्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त, दंड के कारण जीव में भय, चिंता और आक्रामकता जैसे नकारात्मक संवेग उत्पन्न हो सकते हैं, जो सीखने के वातावरण को दूषित करते हैं। स्किनर ने वांछित व्यवहार को बढ़ावा देने हेतु सुदृढ़ीकरण को अधिक प्रभावी माना।

161. (B) केवल II
स्वरूप पहचान के क्षेत्र में विशेषता विश्लेषण सिद्धांत सर्वाधिक मान्य है क्योंकि यह उद्दीपकों की जटिलता और विविधता को बेहतर ढंग से समझाता है। इसके अनुसार, हम वस्तुओं को उनकी बुनियादी विशेषताओं के संयोजन के रूप में पहचानते हैं। प्रतिरूप मिलान सिद्धांतों की आलोचना इसलिए की जाती है क्योंकि वे अत्यधिक कठोर होते हैं और सूक्ष्म परिवर्तनों को भी नहीं संभाल सकते। प्रोटोटाइप सिद्धांतों में किसी वस्तु का औसत प्रतिनिधित्व सम्मिलित होता है, न कि प्रत्येक व्यक्तिगत वस्तु का पूर्ण और सटीक मिलान।

162. (C) युग्मित-साहचर्य विधि
शाब्दिक अधिगम की युग्मित-साहचर्य विधि का मुख्य आधार उद्दीपक और अनुक्रिया के मध्य एक सुदृढ़ साहचर्य स्थापित करना है। इसमें शिक्षार्थी को वस्तुओं के युग्मों को याद करना होता है, जहाँ प्रथम शब्द द्वितीय शब्द को स्मरण करने हेतु एक संकेत के रूप में कार्य करता है। यह विधि स्मृतिकरण की एक बुनियादी प्रक्रिया है जो भाषा सीखने और सूचनाओं को वर्गीकृत करने में सहायता करती है। इसमें सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि युग्मों के मध्य का संबंध कितना अर्थपूर्ण या सुस्पष्ट रूप से स्थापित किया गया है।

163. (B) अर्जन
अर्जन अधिगम की वह प्रारंभिक अवस्था है जिसमें जीव उद्दीपक और अनुक्रिया के मध्य संबंध निर्मित करना प्रारंभ करता है। शास्त्रीय अनुबंधन में, जब अनुबंधित उद्दीपक को बार-बार अननुबंधित उद्दीपक के साथ प्रस्तुत किया जाता है, तो अनुबंधित अनुक्रिया की शक्ति शनैः-शनैः बढ़ती है। यह तब तक जारी रहता है जब तक कि साहचर्य पूर्णतः स्थापित नहीं हो जाता और अनुक्रिया अपने चरम स्तर पर नहीं पहुँच जाती। अर्जन की दर उद्दीपकों की तीव्रता और उनके मध्य के समय अंतराल जैसे कारकों पर निर्भर करती है।

164. (B) ट्रिसमैन का क्षीणन मॉडल
एनी ट्रिसमैन का क्षीणन मॉडल यह स्पष्ट करता है कि कैसे हम कोलाहलपूर्ण वातावरण में अपना नाम सुन सकते हैं। उनके अनुसार, अनपेक्षित सूचनाएं पूर्णतः अवरुद्ध नहीं होतीं, वरन उन्हें क्षीण कर दिया जाता है। चूंकि हमारा अपना नाम हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, अतः उसकी पहचान करने की दहलीज बहुत कम होती है। अतः एक दुर्बल या क्षीण संकेत भी उस दहलीज को पार कर चेतना तक पहुँचने में सक्षम होता है। यह मॉडल अवधान की चयनात्मकता और लचीलेपन का एक संतुलित वर्णन प्रदान करता है।

165. (C) दृश्य उद्दीपकों की ओर अवधान को उन्मुख करना
सुपीरियर कोलिकुलस मध्यमस्तिष्क की एक महत्वपूर्ण संरचना है जो दृश्य सूचनाओं के प्रसंस्करण और आँखों की गतिविधियों के समन्वय में सम्मिलित होती है। यह विशेष रूप से 'उन्मुखी प्रतिवर्त' हेतु उत्तरदायी है, जहाँ हम अचानक दृष्टिगोचर होने वाले उद्दीपकों की ओर अपनी आँखें और सिर मोड़ते हैं। यह जैविक तंत्र हमें पर्यावरण में संभावित महत्वपूर्ण परिवर्तनों का तत्काल पता लगाने और उन पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाता है। यह अवधान की प्रक्रिया का एक बुनियादी और स्वचालित शारीरिक घटक है।

166. (B) प्रभाव का नियम
एडवर्ड थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित प्रभाव का नियम स्पष्ट करता है कि व्यवहार के परिणाम अधिगम की प्रक्रिया को कैसे निर्देशित करते हैं। उनके अनुसार, यदि किसी क्रिया के पश्चात एक सुखद या संतोषजनक स्थिति उत्पन्न होती है, तो

उस व्यवहार के भविष्य में पुनः होने की संभावना बढ़ जाती है। इसके विपरीत, असंतोषजनक परिणामों से व्यवहार दुर्बल हो जाता है। यह नियम सुदृढ़ीकरण के आधुनिक सिद्धांतों का पूर्वगामी है और बताता है कि पर्यावरण से मिलने वाली प्रतिपुष्टि हमारे व्यवहार को रूप देने में मौलिक है।

167. (D) सुदृढ़ीकरण
प्रत्यक्षण संगठन के नियम यह बताते हैं कि हम दृश्य सूचनाओं को अर्थपूर्ण समूहों में कैसे व्यवस्थित करते हैं। गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के अनुसार सामीप्य, समानता और पूर्ति जैसे नियम हमारे प्रत्यक्षण को एक संरचना प्रदान करते हैं जो जन्मजात और स्वचालित होती है। सुदृढ़ीकरण, इसके विपरीत, अधिगम का एक सिद्धांत है जो व्यवहार की आवृत्ति बढ़ाने हेतु पुरस्कारों के उपयोग पर केंद्रित है। इसका प्रत्यक्ष दृश्य संगठन की प्रारंभिक प्रक्रिया से कोई संबंध नहीं है, क्योंकि प्रत्यक्षण एक पूर्व-अधिगम संज्ञानात्मक क्रिया है।

168. (B) संकेत संसूचन सिद्धांत
रेडियोलॉजिस्ट का कार्य एक चुनौतीपूर्ण संवेदी निर्णय लेने की प्रक्रिया है जिसे संकेत संसूचन सिद्धांत के माध्यम से श्रेष्ठता से समझा जा सकता है। यहाँ अर्बुद 'संकेत' है और एक्स-रे की धुंधली छवि 'कोलाहल' है। रेडियोलॉजिस्ट को संवेदी अनिश्चितता के मध्य यह निर्धारित करना होता है कि रोग विद्यमान है या नहीं। उनके परिणाम उनकी संवेदी संवेदनशीलता और उनके निर्णय लेने के मापदंड (जैसे त्रुटि का जोखिम उठाने की इच्छा) पर निर्भर करते हैं। यह सिद्धांत वास्तविक विश्व के जटिल कार्यों के विश्लेषण हेतु अनिवार्य है।

169. (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
अधिगम के सिद्धांतों को उनकी विश्लेषण शैली के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। क्लार्क हल का सिद्धांत एक आणविक सिद्धांत है क्योंकि यह सूक्ष्म उद्दीपक-अनुक्रिया संबंधों और विशिष्ट चरों पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके विपरीत, एडवर्ड टोलमैन का सिद्धांत एक समग्र सिद्धांत माना जाता है क्योंकि वह व्यवहार को पूर्ण, उद्देश्यपूर्ण और लक्ष्य-निर्देशित मानता है। टोलमैन ने विशिष्ट पेशीय अनुक्रियाओं के स्थान पर व्यापक संज्ञानात्मक मानचित्रों के निर्माण पर बल दिया। अतः दोनों सिद्धांतों के दृष्टिकोण पृथक दिशाओं में हैं।

170. (B) उन शब्दों के प्रति अलग-अलग अनुक्रिया करना सीखना जो सुनने या दिखने में समान हैं।
शाब्दिक अधिगम में विभेदन वह महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें शिक्षार्थी मिलते-जुलते उद्दीपकों के मध्य सूक्ष्म अंतर करना सीखता है। यह क्षमता तब आवश्यक होती है जब दो शब्द दिखने या सुनने में बहुत समान हों, किंतु उनके अर्थ और संदर्भ पूर्णतः भिन्न हों। विभेदन के माध्यम से हम उद्दीपकों की विशिष्ट विशेषताओं की पहचान करते हैं, जिससे दोषपूर्ण सामान्यीकरण की संभावना न्यून हो जाती है। यह भाषाई सटीकता और जटिल सूचनाओं को सही ढंग से संसाधित करने हेतु एक अनिवार्य संज्ञानात्मक कौशल है।

171. (B) वॉन रेस्टोर्फ प्रभाव
वॉन रेस्टोर्फ प्रभाव, जिसे अलगाव प्रभाव भी कहा जाता है, यह बताता है कि यदि किसी समान वस्तुओं की सूची में एक वस्तु अपनी विशेषताओं के कारण पृथक दिखाई देती है, तो उसके स्मरण रहने की संभावना सर्वाधिक होती है। 'जाइलोफोन' शब्द अपने अनूठे अक्षरों और ध्वनि के कारण अन्य सरल शब्दों की तुलना में अधिक विशिष्ट है। यह विशिष्टता उसे अवधान में प्रमुखता देती है, जिससे उसका स्मृति कूटलेखन अधिक प्रभावी होता है। यह प्रभाव विज्ञापन और शिक्षण में महत्वपूर्ण सूचनाओं को उभारने हेतु प्रयुक्त होता है।

172. (C) गलत अनुक्रियाओं का प्रबंधन।
रेखीय और शाखीय अभिक्रमित अधिगम के मध्य सर्वाधिक मौलिक अंतर शिक्षार्थी की त्रुटियों को संभालने की रीति में है। रेखीय प्रोग्रामिंग में यह मान लिया जाता है कि शिक्षार्थी त्रुटि नहीं करेगा, और यदि करता भी है, तो वह केवल अग्रसर होता है। शाखीय प्रोग्रामिंग में प्रत्येक त्रुटिपूर्ण उत्तर को सीखने के अवसर के रूप में देखा जाता है। त्रुटिपूर्ण अनुक्रिया करने पर शिक्षार्थी को एक पृथक उपचारात्मक मार्ग पर प्रेषित किया जाता है, जहाँ उसे उसकी त्रुटि समझाई जाती है और अवधारणा को पुनः स्पष्ट किया जाता है।

173. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
दृष्टि और प्रत्यक्षण के विभिन्न सिद्धांतों ने आभासी गति और गहराई के अनुभवों को स्पष्ट किया है। फाई-परिघटना क्रमिक रूप से टिमटिमाते प्रकाशों से उत्पन्न होने वाली गति का भ्रम है। स्वतःगतिक प्रभाव अंधकार में एक स्थिर प्रकाश बिंदु के गतिमान होने का आभास है। गहराई प्रत्यक्षण हेतु रेटिनल असमानता एक द्विनेत्री संकेत है जो दोनों आँखों की छवियों के अंतर का उपयोग करता है, जबकि अंतःस्थिति एक एकनेत्री संकेत है जहाँ एक वस्तु दूसरी को ढक लेती है। ये प्रक्रियाएं हमारे समृद्ध दृश्य अनुभव का आधार हैं।

174. (B) जीव जैविक रूप से कुछ साहचर्यों को दूसरों की तुलना में अधिक आसानी से सीखने के लिए प्रवृत्त होते हैं।
अधिगम में तैयारी की अवधारणा यह बताती है कि विकासवादी इतिहास के कारण कुछ साहचर्य प्राकृतिक रूप से शीघ्र सीखे जाते हैं। उदाहरण के लिए, जीव भोजन के स्वाद को रोग के साथ अत्यंत तीव्रता से जोड़ लेते हैं, क्योंकि यह उनके जीवित रहने हेतु आवश्यक है। यह सिद्धांत पारंपरिक व्यवहारवाद की इस धारणा को चुनौती देता है कि किसी भी उद्दीपक को किसी भी अनुक्रिया के साथ समान सुगमता से जोड़ा जा सकता है। यह जैविक सीमाओं और अधिगम के मध्य के अंतर्संबंधों को उजागर करता है।

175. (C) चयनात्मक और क्षमता में सीमित
अवधान की प्रकृति को दो प्रमुख विशेषताओं द्वारा परिभाषित किया जा सकता है। प्रथम, यह चयनात्मक है, जिसका अर्थ है कि हम पर्यावरण की असंख्य सूचनाओं में से केवल कुछ का ही चयन करते हैं। द्वितीय, इसकी क्षमता सीमित है; हमारा मस्तिष्क एक निश्चित समय में केवल एक सीमित मात्रा में ही सूचनाओं को संसाधित कर सकता है। यदि हम इस सीमा से

अधिक कार्य करने का प्रयास करते हैं, तो हमारे निष्पादन की गुणवत्ता न्यून हो जाती है। यह सीमित संसाधन प्रबंधन प्रभावी संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली हेतु अनिवार्य है।

176. (C) निरंतरता का नियम
निरंतरता का गेस्टाल्ट नियम यह स्पष्ट करता है कि हमारा मस्तिष्क संवेदी सूचनाओं को ऐसी रीति से व्यवस्थित करता है जो एक सुचारू और अखंड दिशा की ओर संकेत करती है। जब हम बिंदुओं की एक श्रृंखला देखते हैं, तो हम उन्हें पृथक इकाइयों के रूप में देखने के स्थान पर एक काल्पनिक रेखा से संबद्ध अनुभव करते हैं। यह नियम हमारे प्रत्यक्षण में प्रवाह और व्यवस्था बनाए रखने में सहायता करता है। यह दृश्य सूचनाओं को सरल बनाने की एक स्वाभाविक मानसिक प्रवृत्ति है जो हमें बिखरे उद्दीपकों में पैटर्न देखने देती है।

177. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
एडवर्ड थार्नडाइक का अधिगम सिद्धांत व्यवहारवाद की उद्दीपक-अनुक्रिया परंपरा का एक प्रमुख भाग है। उनका मानना था कि अधिगम एक यांत्रिक प्रक्रिया है जहाँ विशिष्ट पर्यावरणीय उद्दीपकों और जीव की अनुक्रियाओं के मध्य संबंध निर्मित होते हैं। ये संबंध परिणामों की संतुष्टि या असंतोष के आधार पर सुदृढ़ या दुर्बल होते हैं। थार्नडाइक ने इस साहचर्य को 'संबंध' कहा, और इसी कारण उनके दृष्टिकोण को संबंधवाद कहा जाता है। यह व्यवहार को परिणामों के माध्यम से समझने का एक व्यवस्थित वैज्ञानिक प्रयास था।

178. (A) उद्दीपक वस्तुओं और अनुक्रिया वस्तुओं के बीच समानता की डिग्री।
युग्मित-साहचर्य अधिगम में सफलता पर्याप्त सीमा तक उद्दीपकों और अनुक्रियाओं के मध्य की समानता पर निर्भर करती है। यदि सूची के भीतर उद्दीपक एक-दूसरे के अत्यधिक समान हैं, तो शिक्षार्थी को उनके मध्य विभेदन करने में कठिनाई होती है, जिससे त्रुटियां बढ़ जाती हैं। इसे अंतः-सूची हस्तक्षेप कहा जाता है। दूसरी ओर, यदि उद्दीपक और अनुक्रिया के मध्य कोई स्वाभाविक या अर्थपूर्ण संबंध पूर्व से विद्यमान हो, तो अधिगम की गति तीव्र हो जाती है। यह दर्शाता है कि सूचनाओं की संरचना अधिगम को प्रभावित करती है।

179. (B) बी.एफ. स्किनर
बी.एफ. स्किनर के नैमित्तिक अनुबंधन सिद्धांत के अनुसार, व्यवहार उन परिणामों के माध्यम से सीखा जाता है जो उसके पश्चात घटित होते हैं। जब बालक "कृपया" कहता है और उसे पुरस्कार स्वरुप कोई वस्तु प्राप्त होती है, तो यह सकारात्मक सुदृढ़ीकरण का उदाहरण है। यह सुखद परिणाम बालक के उस व्यवहार को भविष्य में दोहराने की संभावना को सुदृढ़ करता है। स्किनर ने इस बात पर बल दिया कि वातावरण द्वारा प्रदत्त पुरस्कार और दंड ही हमारे अधिकांश स्वैच्छिक व्यवहारों को रूप देते हैं, जो अधिगम का आधार है।

180. (D) I, II और III
अवधान का जैविक आधार मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य एक परिष्कृत समन्वय का प्रतिफल है। जालावत सक्रियण प्रणाली सामान्य सतर्कता को बनाए रखती है, जो अवधान की प्रथम शर्त है। पैरिएटल लोब हमें दृश्य वातावरण में अवधान को एक बिंदु से दूसरे पर सफलतापूर्वक स्थानांतरित करने में सक्षम बनाता है। फ्रंटल लोब, विशेष रूप से प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स, उच्च-स्तरीय नियंत्रण और रणनीतिक योजना हेतु उत्तरदायी है। ये सभी संरचनाएं मिलकर एक एकीकृत अवधान तंत्र निर्मित करती हैं जो हमें प्रभावी कार्यक्षमता प्रदान करता है।

181. (B) आकार स्थिरता
आकार स्थिरता एक महत्वपूर्ण प्रत्यक्षणात्मक क्षमता है जो हमें वस्तुओं के वास्तविक भौतिक आकार को पहचानने में सहायता करती है, भले ही वे हमसे कितनी भी दूर हों। जब कोई वस्तु हमसे दूर जाती है, तो रेटिना पर उसकी छवि लघु हो जाती है, किंतु हम उसे छोटा होते हुए अनुभव नहीं करते। हमारा मस्तिष्क दूरी के संकेतों का उपयोग करता है और छवि के आकार में होने वाले परिवर्तन की क्षतिपूर्ति करता है। यह स्थिरता हमें विश्व का एक यथार्थवादी बोध प्रदान करती है और दूरी के बावजूद वस्तुओं की निरंतरता बनाए रखती है।

182. (B) चर-अनुपात
सुदृढ़ीकरण की चर-अनुपात अनुसूची में पुरस्कार एक अनिश्चित संख्या में अनुक्रियाएं करने के पश्चात दिया जाता है, जहाँ एक औसत संख्या निर्धारित होती है। कबूतर के उदाहरण में, 'औसत 10' का अर्थ है कि सुदृढ़ीकरण कभी 5 अनुक्रियाओं के बाद मिल सकता है और कभी 15 के बाद। यह अनिश्चितता जीव को निरंतर कार्य करने हेतु प्रेरित करती है। इस अनुसूची की विशेषता यह है कि इसमें अनुक्रिया की दर अत्यंत उच्च और स्थिर होती है और यह व्यवहार विलोपन के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी बन जाता है, जैसा कि द्यूत में होता है।

183. (A) I, II, III
शाब्दिक अधिगम और अनुबंधन के प्रयोगों में प्रक्रियाओं का एक निश्चित तार्किक क्रम होता है। सर्वप्रथम 'अर्जन' का चरण आता है जहाँ शिक्षार्थी नवीन सूचनाओं या साहचर्यों को प्राप्त करना प्रारंभ करता है। एक बार अधिगम स्थापित हो जाने के पश्चात, 'सामान्यीकरण' देखा जा सकता है जहाँ जीव मूल उद्दीपक के समान अन्य उद्दीपकों के प्रति भी वैसी ही अनुक्रिया करता है। अंत में, सूक्ष्म प्रशिक्षण के माध्यम से 'विभेदन' विकसित होता है, जहाँ शिक्षार्थी समान उद्दीपकों के मध्य अंतर करना और विशिष्ट अनुक्रियाएं देना सीख जाता है।

184. (C) ज्ञान, अपेक्षाएं और संदर्भ
प्रत्यक्षण में अधोमुखी प्रसंस्करण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें उच्च-स्तरीय मानसिक क्रियाएं संवेदी सूचनाओं की व्याख्या को प्रभावित करती हैं। इसमें हमारे पूर्व ज्ञान, स्मृतियाँ, अपेक्षाएं और वह संदर्भ जिसमें उद्दीपक प्रकट होता है, महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, किसी धुंधले अक्षर को शब्द के मध्य देखकर हम उसे शब्द के अर्थ के आधार पर सही पहचान लेते हैं। यह प्रक्रिया हमें संवेदी अपूर्णताओं के बावजूद तीव्रता से और अर्थपूर्ण ढंग से वस्तुओं को समझने और पहचानने में सहायता प्रदान करती है।

185. (C) संकेत या सिग्नल जो लक्ष्यों की ओर ले जाते हैं।
एडवर्ड टोलमैन का 'संकेत अधिगम' सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि अधिगम केवल यांत्रिक अनुक्रियाओं का संग्रह नहीं है। उनके अनुसार, जीव वातावरण के विभिन्न संकेतों के मध्य संबंधों को सीखते हैं और यह समझते हैं कि कौन सा मार्ग किस लक्ष्य की ओर ले जाएगा। यह ज्ञान एक मानसिक मानचित्र के रूप में संचित होता है। टोलमैन ने तर्क दिया कि व्यवहार सोद्देश्य होता है और जीव अपनी अपेक्षाओं के आधार पर सक्रिय निर्णय लेते हैं। यह दृष्टिकोण अधिगम में संज्ञान और मानसिक प्रतिनिधित्व के महत्व को स्थापित करता है।

186. (D) CS
संकेत संसूचन सिद्धांत के विश्लेषण में प्रयुक्त होने वाले मुख्य घटकों में हित दर, मिथ्या सचेत दर और डी-प्राइम सम्मिलित हैं जो निर्णय लेने की प्रक्रिया और संवेदी क्षमता को दर्शाते हैं। 'CS' या अनुबंधित उद्दीपक इस सिद्धांत का भाग नहीं है; यह अवधारणा इवान पावलव के शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत से संबंधित है। संकेत संसूचन सिद्धांत का ध्यान अनिश्चितता और शोर के मध्य संकेतों की पहचान करने पर होता है, जबकि शास्त्रीय अनुबंधन उद्दीपकों के साहचर्य और सीखी गई अनुक्रियाओं के विषय में है।

187. (B) सामान्यीकरण
शाब्दिक अधिगम में सामान्यीकरण वह घटना है जहाँ एक विशेष शब्द या अक्षरों के समूह हेतु सीखी गई अनुक्रिया स्वतः ही समान दिखने या सुनने वाले अन्य शब्दों पर लागू हो जाती है। यह संज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था का एक रूप है जो हमें समान सूचनाओं को तीव्रता से संसाधित करने में सहायता करता है। हालांकि, यदि यह प्रक्रिया अनियंत्रित हो, तो यह त्रुटियों का कारण बन सकती है। प्रभावी अधिगम हेतु सामान्यीकरण और विभेदन के मध्य संतुलन आवश्यक है ताकि हम समानताओं का लाभ उठा सकें और अंतरों को भी पहचान सकें।

188. (C) निश्चित-अंतराल
निश्चित-अंतराल सुदृढ़ीकरण अनुसूची में एक विशिष्ट 'स्कैलप्ड' अनुक्रिया पैटर्न देखा जाता है। इसमें सुदृढ़ीकरण प्राप्त होने के तुरंत पश्चात अनुक्रिया की दर अत्यंत मंद हो जाती है। जैसे-जैसे आगामी सुदृढ़ीकरण मिलने का समय समीप आता है, अनुक्रियाओं की संख्या तीव्रता से बढ़ने लगती है। यह पैटर्न दर्शाता है कि जीव सुदृढ़ीकरण के समय का अनुमान लगाना सीख जाता है। इसका एक सामान्य उदाहरण परीक्षा के समय छात्रों के स्वाध्याय में होने वाली आकस्मिक वृद्धि है, जो समय सीमा समीप आने पर होती है।

189. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
अवधान के विभिन्न सिद्धांतों ने सूचना प्रसंस्करण की बाधाओं और प्रणालियों को भिन्न रीति से समझाया है। ब्रॉडबेंट ने प्रारंभिक-चयन फिल्टर का प्रस्ताव दिया, जबकि ट्रिसमैन ने क्षीणन मॉडल के माध्यम से लचीलेपन पर बल दिया। ड्यूश और ड्यूश ने विलंबित-चयन मॉडल दिया जिसमें अर्थ संबंधी प्रसंस्करण पहले होता है। उलरिक नीसर ने प्रत्यक्षण चक्र की अवधारणा दी जो ज्ञान और सूचना के मध्य निरंतर अंतःक्रिया पर आधारित है। ये सभी मॉडल मिलकर मानव अवधान की जटिल कार्यप्रणाली को समझने हेतु एक व्यापक ढांचा प्रदान करते हैं।

190. (C) जो तत्व एक ही दिशा में एक साथ चलते हैं, उन्हें एक समूह के रूप में देखा जाता हैं।
गेस्टाल्ट मनोविज्ञान में समान नियति का नियम प्रत्यक्षण संगठन का एक गतिशील सिद्धांत है। यह बताता है कि हमारा मस्तिष्क उन पृथक तत्वों को स्वाभाविक रूप से एक साथ जोड़ देता है जो समय और स्थान में एक ही दिशा और वेग का अनुसरण करते हैं। जब हम उड़ते हुए पक्षियों के झुंड को देखते हैं, तो हम प्रत्येक पक्षी को पृथक देखने के स्थान पर संपूर्ण झुंड को एक इकाई के रूप में देखते हैं। यह नियम हमें गतिशील वातावरण में अर्थपूर्ण पैटर्न और समूहों की पहचान करने में सहायता करता है, जिससे अनुभव सुसंगत होता है।

191. (B) स्किनर ने थार्नडाइक की 'संतुष्टि' की मानसिक अवधारणा को खारिज कर दिया।
थार्नडाइक और स्किनर दोनों ने सुदृढ़ीकरण के महत्व को स्वीकार किया, किंतु उनके सैद्धांतिक आधारों में महत्वपूर्ण अंतर था। थार्नडाइक ने 'संतुष्टि' और 'असंतोष' जैसे शब्दों का उपयोग किया, जो आंतरिक मानसिक अवस्थाओं की ओर संकेत करते थे। स्किनर ने, जो एक कट्टर व्यवहारवादी थे, ऐसी किसी भी मानसिक व्याख्या को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने केवल सुदृढ़ीकरण और दंड के अवलोकन योग्य प्रभावों पर ध्यान केंद्रित किया। स्किनर हेतु व्यवहार में परिवर्तन केवल पर्यावरणीय परिणामों का प्रतिफल था, न कि किसी आंतरिक संतुष्टि का।

192. (B) विषमता
विषमता अवधान का एक प्रमुख बाह्य निर्धारक है जो उद्दीपक की अपने परिवेश से भिन्नता पर आधारित है। पीले पुष्पों के क्षेत्र में एक एकाकी रक्त वर्ण का पुष्प अपने रंग की विषमता के कारण तत्काल ध्यान आकर्षित करता है। हमारा दृश्य तंत्र स्वतः ही उन सूचनाओं को प्राथमिकता देता है जो पृष्ठभूमि से पृथक और विशिष्ट होती हैं। यह सिद्धांत विज्ञापन और संकेत प्रणालियों में महत्वपूर्ण सूचनाओं को प्रमुखता देने हेतु प्रयुक्त होता है। विषमता हमारे प्रत्यक्षण को व्यवस्थित करने और महत्वपूर्ण वस्तुओं की पहचान को सुगम बनाती है।

193. (B) गहराई का हमारा प्रत्यक्षण लंबाई के हमारे प्रत्यक्षण को प्रभावित कर सकता है।
मुलर-लायर भ्रम एक प्रसिद्ध दृश्य भ्रम है जहाँ दो समान लंबाई की रेखाएं भिन्न लंबाई की प्रतीत होती हैं क्योंकि उनके सिरों पर बाण के चिन्ह पृथक दिशाओं में होते हैं। एक प्रमुख व्याख्या यह है कि हमारा मस्तिष्क इन चिन्हों को कोनों और गहराई के संकेतों के रूप में व्याख्यायित करता है। बाहर की ओर मुड़े बाण एक दूरस्थ कोने की भांति लगते हैं, जिससे मस्तिष्क उस रेखा को अधिक लंबी अनुभव करता है। यह भ्रम दर्शाता है कि कैसे गहराई के संकेत हमारे आकार और लंबाई के प्रत्यक्षण को विकृत कर सकते हैं।

194. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
क्लार्क हल का अधिगम सिद्धांत मुख्य रूप से अंतर्नोद-न्यूनता पर आधारित है, जहाँ अधिगम तभी होता है जब व्यवहार के परिणामस्वरूप जैविक आवश्यकता पूर्ण होती है और अंतर्नोद न्यून होता है। इसके विपरीत, एडवर्ड टोलमैन का दृष्टिकोण अधिक संज्ञानात्मक था। उन्होंने माना कि सुदृढ़ीकरण अधिगम हेतु अनिवार्य नहीं है; जीव बिना पुरस्कार के भी सूचनाएं सीख सकते हैं। हालांकि, टोलमैन ने स्पष्ट किया कि सुदृढ़ीकरण अधिगम के निष्पादन हेतु एक आवश्यक प्रोत्साहन के रूप में कार्य करता है, जो सीखने और करने में अंतर करता है।

195. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
शाब्दिक अधिगम में सामग्री की अर्थपूर्णता सीखने की दर को निर्धारित करने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है। अर्थपूर्ण शब्दों का लाभ यह है कि वे स्मृति में पूर्व विद्यमान भाषाई और वैचारिक साहचर्यों के साथ सुगमता से जुड़ जाते हैं। निरर्थक शब्दांशों के पास ऐसा कोई आधार नहीं होता, जिससे उन्हें स्मरण करने हेतु अधिक संज्ञानात्मक प्रयास की आवश्यकता होती है। पूर्व-स्थापित साहचर्य कूटलेखन को सरल बनाते हैं और पुनरावाहन हेतु प्रभावी संकेत प्रदान करते हैं, जिससे अर्थपूर्ण सामग्री को सीखना बहुत अधिक कुशल हो जाता है।

196. (D) सामान्यीकरण
शास्त्रीय अनुबंधन में सामान्यीकरण वह प्रक्रिया है जहाँ जीव न केवल मूल अनुबंधित उद्दीपक के प्रति, वरन उसके समान अन्य उद्दीपकों के प्रति भी अनुक्रिया करता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी कुत्ते को एक विशिष्ट घंटी की ध्वनि पर लार स्रवण सिखाया गया है, तो वह दूसरी समान घंटी बजने पर भी वही अनुक्रिया कर सकता है। यह अधिगम का एक व्यापक विस्तार है जो जीव को बदलती परिस्थितियों में भी अनुकूलन करने में सहायता करता है। यह समानता की पहचान पर आधारित एक स्वाभाविक संज्ञानात्मक प्रवृत्ति है।

197. (B) चेतना को उद्दीपकों की एक सीमित श्रेणी पर केंद्रित करने की प्रक्रिया।
अवधान की प्रकृति चयनात्मक और केंद्रित होती है। हमारे वातावरण में सूचनाओं की अतिशयता होती है, और हमारी संज्ञानात्मक प्रणाली की क्षमता सीमित है। अतः अवधान एक फिल्टर की भांति कार्य करता है जो केवल प्रासंगिक उद्दीपकों को चेतना में प्रवेश की अनुमति देता है और अप्रासंगिक सूचनाओं को अपवर्जित कर देता है। यह चयनात्मक एकाग्रता हमें जटिल कार्यों को सफलतापूर्वक पूर्ण करने और सूचनाओं के अतिभार से बचने में सहायता करती है। अवधान की यह प्रक्रिया सचेत और अचेतन दोनों स्तरों पर कार्य कर सकती है।

198. (D) I, II और III
प्रत्यक्षण एक द्वि-मार्गी प्रक्रिया है जिसमें उर्ध्वमुखी और अधोमुखी दोनों प्रकार के प्रसंस्करण सम्मिलित होते हैं। उर्ध्वमुखी प्रसंस्करण संवेदी अंगों द्वारा प्राप्त भौतिक डेटा से प्रारंभ होता है। अधोमुखी प्रसंस्करण में हमारा ज्ञान, अनुभव और अपेक्षाएं उस डेटा को अर्थ प्रदान करती हैं। वास्तव में, हमारा अधिकांश प्रत्यक्षणात्मक अनुभव इन दोनों का एक जटिल एकीकरण है। संवेदी जानकारी हमें वास्तविकता से जोड़ती है, जबकि मानसिक संरचनाएं उस वास्तविकता को बोधगम्य बनाती हैं, जिससे एक सुसंगत दृश्य अनुभव निर्मित होता है।

199. (B) अभिक्रमित अधिगम
अभिक्रमित अधिगम बी.एफ. स्किनर द्वारा प्रतिपादित एक शैक्षिक तकनीक है जो नैमित्तिक अनुबंधन के सिद्धांतों पर आधारित है। इसमें जटिल पाठ्यसामग्री को अत्यंत लघु और तार्किक चरणों में विभाजित किया जाता है। शिक्षार्थी को प्रत्येक चरण में सक्रिय रूप से अनुक्रिया देनी होती है और उसे तत्काल प्रतिपुष्टि प्राप्त होती है। यह निरंतर सुदृढ़ीकरण सीखने की गति को बढ़ाता है और त्रुटियों को न्यून करता है। यह विधि व्यक्तिगत गति से सीखने की सुविधा प्रदान करती है, जिससे प्रत्येक छात्र अपनी क्षमता अनुसार सफल हो सकता है।

200. (D) अग्रलक्षी अवरोध का निर्माण
शाब्दिक अधिगम में जब एक ही श्रेणी की वस्तुओं की सूची याद की जाती है, तो उनके मध्य उच्च समानता के कारण स्मृति में हस्तक्षेप उत्पन्न होता है। इसे अग्रलक्षी अवरोध का निर्माण कहा जाता है। चूंकि सभी शब्द एक ही संदर्भ से संबद्ध होते हैं, अतः मस्तिष्क को उनके मध्य अंतर करने और उन्हें पृथक रूप से याद रखने में अधिक कठिनाई होती है। यह दर्शाता है कि सामग्री की एकरूपता सदैव अधिगम को सरल नहीं बनाती, वरन कभी-कभी भ्रम उत्पन्न करके उसे और अधिक चुनौतीपूर्ण बना देती है, जिससे विस्मृति बढ़ती है।

201. (C) पर्यावरण से प्राप्त संवेदी जानकारी से।
प्रत्यक्षण की प्रक्रिया में उर्ध्वमुखी प्रसंस्करण का आधार संवेदी डेटा होता है। यह प्रक्रिया ज्ञानेंद्रियों द्वारा प्राप्त भौतिक उद्दीपकों से प्रारंभ होती है, जैसे प्रकाश की तरंगें या ध्वनि के कंपन। मस्तिष्क इन लघु संवेदी घटकों को शनैः-शनैः उच्च स्तर की जटिल आकृतियों और अर्थों में एकीकृत करता है। यह पूर्णतः डेटा-संचालित प्रक्रिया है जिसमें पूर्व अपेक्षाओं की भूमिका गौण होती है। यह हमें पर्यावरण की वस्तुनिष्ठ वास्तविकता को बिना किसी पूर्व पक्षपात के समझने में प्राथमिक आधार प्रदान करती है।

202. (C) हम एक कार्य पर जितना अधिक ध्यान देते हैं, दूसरों के लिए उतना ही कम उपलब्ध होता है।
अवधान को एक सीमित मानसिक संसाधन के रूप में देखा जाता है, जिसका अर्थ है कि हमारे पास किसी भी समय व्यय करने हेतु अवधान की एक निश्चित मात्रा होती है। जब हम एक कठिन या नवीन कार्य करते हैं, तो वह हमारे अधिकांश संसाधनों का उपभोग कर लेता है, जिससे अन्य कार्यों हेतु बहुत कम ध्यान शेष बचता है। इसे 'क्षमता मॉडल' कहा जाता है। यदि कार्यों की कुल मांग हमारी उपलब्ध क्षमता से अधिक हो जाती है, तो प्रदर्शन में गिरावट आती है। यह विभाजित अवधान की सीमाओं को स्पष्ट करता है।

203. (B) किसी उद्दीपक के प्रति एक जन्मजात, प्रतिवर्ती प्रतिक्रिया।
शास्त्रीय अनुबंधन में अननुबंधित अनुक्रिया वह स्वाभाविक प्रतिक्रिया है जो बिना किसी पूर्व अधिगम या प्रशिक्षण के

स्वतः उत्पन्न होती है। यह सामान्यतः एक जैविक प्रतिवर्त होता है, जैसे भोजन देखकर लार स्रवण होना या तीव्र ध्वनि पर चौंक जाना। यह अनुक्रिया एक अननुबंधित उद्दीपक द्वारा उत्पन्न की जाती है। अधिगम की प्रक्रिया में, इसी स्वाभाविक अनुक्रिया को एक नवीन, तटस्थ उद्दीपक के साथ संबद्ध करने का प्रयास किया जाता है ताकि वह अनुबंधित अनुक्रिया बन सके। यह साहचर्य ही अधिगम का आधार है।

204. (C) शाब्दिक अधिगम
क्रमिक स्थिति प्रभाव शाब्दिक अधिगम के अध्ययन में एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह बताता है कि जब व्यक्तियों को शब्दों की सूची याद करने हेतु दी जाती है, तो वे प्रायः सूची के प्रारंभिक शब्दों और अंतिम शब्दों को सर्वाधिक श्रेष्ठता से याद रखते हैं। मध्य के शब्दों को स्मरण रखना सर्वाधिक कठिन होता है। यह प्रभाव यह समझने में सहायता करता है कि सूचनाएं कैसे संसाधित और संचित की जाती हैं। यह शिक्षण सामग्री की योजना बनाने और प्रभावी स्मृतिकरण रणनीतियों को विकसित करने हेतु भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

205. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का मुख्य तर्क है कि प्रत्यक्षण एक संगठनात्मक प्रक्रिया है जो संवेदी अंगों के सरल योग से कहीं अधिक है। मस्तिष्क में जन्मजात प्रवृत्तियाँ होती हैं जो आने वाली सूचनाओं को सामीप्य, समानता और निरंतरता जैसे नियमों के आधार पर तत्काल व्यवस्थित कर देती हैं। इसके परिणामस्वरूप, हम पृथक बिंदुओं के स्थान पर एक रेखा या बिखरे रंगों के स्थान पर एक अर्थपूर्ण चित्र देखते हैं। यह 'पूर्ण' का प्रत्यक्षण ही गेस्टाल्ट है, जो हमारे अनुभव को समग्रता और अर्थ प्रदान करता है।

206. (D) टोलमैन
एडवर्ड टोलमैन को पारंपरिक व्यवहारवादियों से पृथक माना जाता है क्योंकि उन्होंने अधिगम में मानसिक और संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को स्थान दिया। यद्यपि उन्होंने चूहों के व्यवहार का अध्ययन किया, किंतु उनके निष्कर्षों ने दर्शाया कि व्यवहार केवल उद्दीपक-अनुक्रिया संबंधों का प्रतिफल नहीं है। टोलमैन ने संज्ञानात्मक मानचित्रों और सोद्देश्य व्यवहारवाद की बात की, जो संज्ञानवाद की ओर संकेत करते हैं। इसके विपरीत, पावलव, थार्नडाइक और स्किनर अधिक कट्टर व्यवहारवादी माने जाते हैं क्योंकि उन्होंने केवल बाह्य घटनाओं पर ध्यान दिया।

207. (C) हैंड-फ्री फोन पर बात करते हुए कार चलाना।
विभाजित अवधान की आवश्यकता तब होती है जब एक व्यक्ति को एक साथ दो या अधिक कार्यों को प्रबंधित करना होता है जिनमें संज्ञानात्मक संसाधनों की मांग होती है। कार चलाना और फोन पर वार्ता करना दोनों ही प्रसंस्करण क्षमता का उपयोग करते हैं। जब अवधान इन कार्यों के मध्य विभाजित होता है, तो प्रत्येक कार्य हेतु उपलब्ध संसाधन न्यून हो जाते हैं। यदि एक कार्य अत्यधिक जटिल हो जाए, तो दूसरे कार्य में त्रुटि की संभावना बढ़ जाती है। यह हमारी सीमित प्रसंस्करण क्षमता का व्यावहारिक उदाहरण है।

208. (B) निकट की वस्तुएं दूर की वस्तुओं की तुलना में अधिक तेजी से और विपरीत दिशा में चलती हुई प्रतीत होती हैं।
गति लंबन एक शक्तिशाली एकनेत्री गहराई संकेत है जो तब अनुभव होता है जब हम स्वयं गति कर रहे होते हैं। जब हम गतिमान रेलगाड़ी से बाहर देखते हैं, तो समीप के वृक्ष और खंभे अत्यंत तीव्रता से पीछे की ओर भागते प्रतीत होते हैं। इसके विपरीत, दूरस्थ पर्वत या मेघ बहुत मंद गति से चलते हुए या स्थिर प्रतीत होते हैं। मस्तिष्क वेग के इस सापेक्ष अंतर का उपयोग दूरी और गहराई का सटीक अनुमान लगाने हेतु करता है। यह संकेत गहराई का सजीव और गतिशील अनुभव प्रदान करता है।

209. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
अधिगम की प्रक्रिया में विभिन्न चरणों और तकनीकों का महत्व होता है। अर्जन वह प्रारंभिक काल है जब साहचर्य प्रथम बार निर्मित होता है। रूपण का उपयोग व्यवहार को शनैः-शनैः वांछित लक्ष्य की ओर मोड़ने हेतु किया जाता है। विलोपन तब होता है जब सुदृढ़ीकरण के अभाव में सीखी गई अनुक्रिया समाप्त होने लगती है। संज्ञानात्मक मानचित्र टोलमैन द्वारा प्रस्तावित एक मानसिक प्रतिनिधित्व है जो जीव को वातावरण के स्थानिक संबंधों को समझने में सहायता करता है। ये सभी अवधारणाएं अधिगम की जटिलता को व्यक्त करती हैं।

210. (B) अधिगम का इस तरह से अध्ययन करना जिससे पूर्व ज्ञान और अर्थ के प्रभाव को कम किया जा सके।
हरमन एबिंगहास ने निरर्थक शब्दांशों का उपयोग इसलिए किया क्योंकि वे पूर्व अनुभवों से मुक्त थे। यदि हम वास्तविक शब्दों का उपयोग करते हैं, तो व्यक्ति उन्हें अपने पूर्व ज्ञान और साहचर्यों के कारण अधिक सुगमता से याद रख सकते हैं, जो प्रयोग के परिणामों को प्रभावित कर सकता है। निरर्थक शब्दांशों ने शोधकर्ताओं को शुद्ध अधिगम और स्मृति प्रक्रियाओं का अध्ययन करने की अनुमति प्रदान की। इससे यह ज्ञात हुआ कि बिना किसी अर्थ के साहचर्य कैसे निर्मित होते हैं और विस्मृति की दर समय के साथ कैसे परिवर्तित होती है।

211. (D) कार्यकारी अवधान - अव्यक्त अधिगम
अवधान के विभिन्न प्रकार विशिष्ट संज्ञानात्मक कार्यों से संबद्ध हैं। चयनात्मक अवधान एकाग्रता हेतु है, विभाजित अवधान बहुकार्यण हेतु और सतत अवधान सतर्कता हेतु होता है। कार्यकारी अवधान मस्तिष्क की वह क्षमता है जो योजना बनाने, निर्णय लेने और व्यवहार को नियंत्रित करने में सहायता करती है। इसके विपरीत, अव्यक्त अधिगम एक प्रकार का अधिगम है जो बिना किसी स्पष्ट सुदृढ़ीकरण के होता है। इन दोनों का परस्पर कोई सीधा कार्यात्मक संबंध नहीं है, जिससे यह युग्म अनुपयुक्त और गलत सुमेलित है।

212. (C) पूर्ति
पूर्ति का गेस्टाल्ट नियम यह बताता है कि हमारा प्रत्यक्षणात्मक तंत्र अपूर्ण सूचनाओं को अर्थपूर्ण बनाने हेतु रिक्त स्थानों को भरने का प्रयास करता है। जब हम बिंदुओं की एक ऐसी श्रृंखला देखते हैं जो लगभग एक वृत्त निर्मित करती है, तो हमारा मस्तिष्क उन्हें पृथक बिंदुओं के स्थान पर एक पूर्ण वृत्त

के रूप में अनुभव करता है। यह जन्मजात मानसिक प्रवृत्ति हमें अव्यवस्थित वातावरण में भी अर्थपूर्ण और स्थिर आकृतियों को पहचानने में सहायता करती है। यह नियम दृश्य प्रत्यक्षण को सुगम और तर्कसंगत बनाने का कार्य करता है।

213. (C) व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक जैसे हल या स्किनर
अधिगम की यह विशिष्ट परिभाषा व्यवहारवाद की मूल मान्यताओं को प्रतिबिंबित करती है। इसमें 'व्यवहार क्षमता' पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसका अर्थ है कि अधिगम को केवल बाह्य क्रियाओं के माध्यम से ही मापा जा सकता है। 'अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन' शब्द परिपक्वता या थकान के अस्थायी प्रभावों को पृथक करता है। 'सुदृढ़ अभ्यास' सुदृढ़ीकरण और दोहराव की भूमिका को रेखांकित करता है, जो व्यवहारवादियों हेतु अधिगम का मुख्य कारक है। यह दृष्टिकोण अधिगम को अनुभव के माध्यम से होने वाले मापन योग्य बदलाव के रूप में देखता है।

214. (D) I, II और III
अभिक्रमित अधिगम एक वैज्ञानिक रूप से संरचित शिक्षण पद्धति है। यह सक्रिय अनुक्रिया के सिद्धांत का अनुपालन करती है, जहाँ छात्र को निरंतर सक्रिय रहना पड़ता है। सामग्री को अत्यंत लघु चरणों में विभाजित करने से छात्र की सफलता सुनिश्चित होती है, जिससे उसकी प्रेरणा अक्षुण्ण रहती है। शाखीय प्रोग्रामिंग रेखीय की तुलना में अधिक लचीली है क्योंकि यह छात्र की विशिष्ट त्रुटियों के आधार पर पृथक मार्ग प्रदान करती है। ये सभी विशेषताएं मिलकर अधिगम को प्रभावी, व्यक्तिगत और त्रुटिहीन बनाने में सहायक हैं।

215. (B) अवधान और स्वचालित प्रसंस्करण
स्ट्रूप प्रभाव अवधान की सीमाओं और स्वचालित प्रसंस्करण के हस्तक्षेप को प्रदर्शित करता है। शब्द पढ़ना एक स्वचालित प्रक्रिया है जिसे हम रोकना भी चाहें तो नहीं रोक पाते। जब शब्द का अर्थ (जैसे 'रक्त वर्ण') उसके स्याही के रंग (जैसे 'हरित वर्ण') से मेल नहीं खाता, तो हमारा मस्तिष्क अर्थ को पूर्व संसाधित कर देता है, जिससे रंग बताने में विलंब और त्रुटियां होती हैं। यह संघर्ष दर्शाता है कि कैसे दो सूचनाओं के मध्य प्रतिस्पर्धा होने पर हमारा अवधान चयनात्मक रूप से कार्य करने में कठिनाई अनुभव करता है।

216. (D) अननुबंधित अनुक्रिया
इवान पावलव के शास्त्रीय अनुबंधन प्रयोग में, भोजन के प्रति कुत्ते की लार स्रवण एक अननुबंधित अनुक्रिया थी। यह एक स्वाभाविक और जन्मजात प्रतिवर्त है जिसके लिए किसी प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। भोजन यहाँ अननुबंधित उद्दीपक के रूप में कार्य करता है जो इस अनुक्रिया को सीधे उत्पन्न करता है। अधिगम का लक्ष्य इस स्वाभाविक अनुक्रिया को घंटी जैसे एक नवीन संकेत के साथ संबद्ध करना था। अनुबंधन के पश्चात, जब वही लार घंटी बजने पर स्रावित होती है, तो उसे अनुबंधित अनुक्रिया कहा जाता है।

217. (C) किसी श्रेणी का एक अमूर्त औसत या 'सर्वश्रेष्ठ' उदाहरण।
स्वरूप पहचान का प्रोटोटाइप सिद्धांत यह मानता है कि हम अपनी स्मृति में प्रत्येक श्रेणी हेतु एक आदर्श प्रतिनिधित्व संचित करते हैं। यह प्रोटोटाइप उस श्रेणी के सभी सदस्यों की औसत विशेषताओं का सम्मिश्रण होता है। जब हम किसी नवीन उद्दीपक को देखते हैं, तो हमारा मस्तिष्क उसकी समानता की तुलना इस प्रोटोटाइप से करता है। यह विधि अत्यधिक लचीली है क्योंकि यह हमें उन वस्तुओं को भी पहचानने की अनुमति देती है जो हमने पूर्व में कभी पूर्णतः उसी रूप में नहीं देखी हैं, जिससे संज्ञानात्मक लचीलापन बढ़ता है।

218. (B) पूर्ण अधिगम
पूर्ण अधिगम की विधि में शिक्षार्थी संपूर्ण पाठ्यसामग्री को एक ही इकाई के रूप में बार-बार प्रारंभ से अंत तक पढ़ता है। यह विधि उन सामग्रियों हेतु अधिक प्रभावी होती है जो अत्यधिक लंबी नहीं होतीं और जिनमें आंतरिक तार्किक संबंध या अर्थ विद्यमान होता है। इसके विपरीत, अंश विधि में सामग्री को खंडों में विभाजित किया जाता है। पूर्ण विधि का लाभ यह है कि यह शिक्षार्थी को सूचनाओं के मध्य के समग्र संबंधों और संदर्भ को समझने में सहायता करती है, जो गहरी और स्थायी समझ विकसित करने हेतु महत्वपूर्ण है।

219. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
अवधान एक एकीकृत अवधारणा नहीं है, वरन इसमें चयनात्मक, विभाजित और सतत जैसे कई पृथक कार्य सम्मिलित हैं। इसके जैविक आधार के संबंध में कथन II पूर्णतः सत्य है, क्योंकि अवधान का कोई एक केंद्र नहीं होता। यह मस्तिष्क स्तंभ से लेकर उच्च प्रमस्तिष्क वल्कुट तक विस्तृत एक व्यापक तंत्रिका जाल पर निर्भर करता है। जालावत संरचना सतर्कता उत्पन्न करती है, जबकि पैरिएटल और फ्रंटल लोब अवधान को निर्देशित और नियंत्रित करते हैं। यह जटिलता मानव चेतना की बहुआयामी प्रकृति को प्रतिपादित करती है।

220. (C) एडवर्ड थार्नडाइक
एडवर्ड थार्नडाइक ने 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में अपने पहेली मंजूषा के प्रयोगों के माध्यम से प्रभाव के नियम का प्रतिपादन किया। यह नियम व्यवहारवादी मनोविज्ञान के सर्वाधिक बुनियादी सिद्धांतों में से एक बन गया। यह बताता है कि संतोषजनक परिणामों वाले व्यवहारों का उद्दीपक के साथ संबंध सुदृढ़ हो जाता है। यद्यपि पश्चात में बी.एफ. स्किनर ने सुदृढ़ीकरण के रूप में इस अवधारणा को और अधिक विस्तार प्रदान किया, किंतु इसकी आधारशिला थार्नडाइक के कार्य से ही रखी गई थी। यह अधिगम के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी विचार था।

221. (B) संवेदी अनुकूलन
संवेदी अनुकूलन वह प्रक्रिया है जिसमें हमारी संवेदी कोशिकाएं निरंतर और अपरिवर्तित रहने वाले उद्दीपकों के प्रति अपनी अनुक्रिया न्यून कर देती हैं। जब हम प्रथम बार घड़ी धारण करते हैं, तो स्पर्श की संवेदना नवीन होती है और हमारा मस्तिष्क उसे दर्ज करता है। कुछ समय पश्चात, त्वचा के संवेदी अंग उस निरंतर दबाव के अभ्यस्त हो जाते हैं और मस्तिष्क को

संकेत प्रेषण बंद कर देते हैं। यह हमें अप्रासंगिक सूचनाओं को अनदेखा करने और पर्यावरण के नवीन परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाता है।

222. (C) रेटिनल असमानता
रेटिनल असमानता गहराई प्रत्यक्षण का एक प्राथमिक द्विनेत्री संकेत है। चूंकि हमारी दोनों आँखों के मध्य लगभग 6 सेंटीमीटर की दूरी होती है, अतः प्रत्येक आँख वस्तु की थोड़ी भिन्न छवि प्राप्त करती है। मस्तिष्क इन दो पृथक छवियों के मध्य के सूक्ष्म अंतर या असमानता का विश्लेषण करता है। यह अंतर जितना अधिक होता है, वस्तु उतनी ही समीप अनुभव होती है। यह प्रक्रिया हमें त्रि-आयामी गहराई और स्थान का सटीक बोध कराने हेतु अनिवार्य है, जिसे एक आँख से पूर्णतः प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

223. (C) अव्यक्त अधिगम
एडवर्ड टोलमैन ने अव्यक्त अधिगम की अवधारणा दी, जो यह बताती है कि अधिगम सुदृढ़ीकरण के बिना भी घटित हो सकता है। यह अधिगम मस्तिष्क में सूक्ष्म रूप से संचित रहता है और केवल तभी व्यवहार में प्रदर्शित होता है जब उसके लिए कोई उचित पुरस्कार या प्रोत्साहन प्रदान किया जाए। चूहों ने खाद्य पुरस्कार के बिना भी भूलभुलैया सीखी थी, किंतु उन्होंने इसका प्रदर्शन केवल तभी किया जब उन्हें भोजन प्राप्त हुआ। यह सिद्ध करता है कि संज्ञान और स्मृति अधिगम की प्रक्रिया में सुदृढ़ीकरण से स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकते हैं।

224. (C) शिक्षार्थियों में व्यक्तिगत अंतरों के अनुकूल होने की क्षमता है।
शाखीय प्रोग्रामिंग की सर्वाधिक शक्ति इसकी अनुकूलन क्षमता है। रेखीय प्रोग्रामिंग के विपरीत, जहाँ सभी छात्र एक ही मार्ग का अनुसरण करते हैं, शाखीय प्रोग्रामिंग प्रत्येक छात्र की बोध क्षमता के अनुसार अपना मार्ग परिवर्तित करती है। यदि कोई शिक्षार्थी त्रुटि करता है, तो उसे उपचारात्मक सामग्री प्रदान की जाती है, और यदि वह निपुणता प्रदर्शित करता है, तो वह अग्रसर हो सकता है। यह विधि स्वीकार करती है कि छात्र भिन्न गति से सीखते हैं। यह व्यक्तिगत भिन्नताओं का सम्मान करके अधिगम को प्रभावी बनाती है।

225. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
शाब्दिक अधिगम में युग्मित-साहचर्य कार्यों की सफलता पर्याप्त सीमा तक वस्तुओं के मध्य पूर्व विद्यमान अर्थपूर्ण संबंधों पर निर्भर करती है। 'मेज-कुर्सी' जैसे शब्दों के मध्य पूर्व से ही एक सुदृढ़ मानसिक साहचर्य होता है क्योंकि वे दैनिक जीवन में साथ प्रयुक्त होते हैं। जब हमें ऐसे शब्दों को साथ सीखना होता है, तो मस्तिष्क को शून्य से नवीन संबंध बनाने की आवश्यकता नहीं होती। यह अर्थपूर्णता कूटलेखन को सुगम बनाती है और पुनरावाहन को अत्यंत तीव्र और सटीक बनाती है, जिससे सीखने का प्रयास न्यून हो जाता है।

226. (C) अवधान
उन्मुखी अनुक्रिया अवधान की एक मौलिक और स्वचालित जैविक अभिव्यक्ति है। यह तब घटित होती है जब वातावरण में आकस्मिक कोई नवीन या तीव्र उद्दीपक प्रकट होता है। इसके परिणामस्वरुप शरीर में सूक्ष्म शारीरिक परिवर्तन होते हैं, जैसे आँखों का उस दिशा में मुड़ना, हृदय गति में परिवर्तन और मस्तिष्क की विद्युत गतिविधि में वृद्धि। यह प्रतिक्रिया हमें संभावित रुप से महत्वपूर्ण सूचनाओं के प्रति तत्काल सतर्क करती है। यह अवधान की प्रक्रिया का सर्वाधिक बुनियादी स्तर है जो उत्तरजीविता हेतु आवश्यक है।

227. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
गहराई और दूरी का प्रत्यक्षण विभिन्न दृश्य और शारीरिक संकेतों के समन्वय पर आधारित होता है। अंतःस्थिति हमें यह बताती है कि एक वस्तु दूसरी के पीछे है जब उसका दृश्य बाधित होता है। रैखिक परिप्रेक्ष्य समानांतर रेखाओं के अभिसरण के माध्यम से दूरी का आभास कराता है। अभिसरण आँखों की मांसपेशियों के खिंचाव से निकटता का बोध कराता है। बनावट प्रवणता में दूरी के साथ विवरणों का धुंधला होना सम्मिलित है। ये सभी संकेत मिलकर हमें द्वि-आयामी छवियों से त्रि-आयामी स्थान का अनुभव प्रदान करते हैं।

228. (C) टोलमैन का संकेत अधिगम
एडवर्ड टोलमैन का संकेत अधिगम सिद्धांत व्यवहारवाद के सुदृढ़ीकरण पर आधारित मॉडलों से पृथक है। टोलमैन ने तर्क दिया कि अधिगम सुदृढ़ीकरण के बिना भी हो सकता है; जीव केवल वातावरण के संकेतों और लक्ष्यों के मध्य संबंधों का एक मानसिक मानचित्र निर्मित करते हैं। उन्होंने सुदृढ़ीकरण को अधिगम का कारण नहीं, वरन निष्पादन हेतु एक प्रेरक कारक माना। इसके विपरीत, स्किनर, थार्नडाइक और हल सभी ने सुदृढ़ीकरण को अधिगम की प्रक्रिया का अनिवार्य केंद्र माना है। टोलमैन का दृष्टिकोण संज्ञानात्मक पक्ष को प्राथमिकता देता है।

229. (D) समान नियति का नियम
शाब्दिक अधिगम के निर्धारक उन कारकों को संदर्भित करते हैं जो शब्दों और भाषाई सूचनाओं को सीखने की दर को प्रभावित करते हैं, जैसे सामग्री की अर्थपूर्णता, विधि और अभिप्रेरणा। इसके विपरीत, समान नियति का नियम प्रत्यक्षण संगठन का एक गेस्टाल्ट सिद्धांत है। यह बताता है कि हम उन तत्वों को एक साथ समूहबद्ध करते हैं जो एक ही दिशा में गति करते हैं। यह दृश्य संगठन से संबंधित है और इसका शाब्दिक सूचनाओं के स्मृतिकरण या अर्जन से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है। यह पूर्णतः प्रत्यक्षण का विषय है।

230. (B) सकारात्मक सुदृढ़ीकरण
सकारात्मक सुदृढ़ीकरण नैमित्तिक अनुबंधन की एक प्रक्रिया है जिसमें किसी वांछित व्यवहार के पश्चात एक सुखद उद्दीपक प्रदान किया जाता है। जब शिक्षक छात्र के सही उत्तर की प्रशंसा करता है, तो वह प्रशंसा एक पुरस्कार के रूप में कार्य करती है। इसका उद्देश्य छात्र को भविष्य में भी सही उत्तर देने हेतु प्रोत्साहित करना और उस व्यवहार को सुदृढ़ करना है। प्रशंसा एक सामाजिक सुदृढ़क है जो सीखने की प्रेरणा और आत्मविश्वास को बढ़ाती है। यह व्यवहार को रूप देने का सर्वाधिक प्रभावी और सकारात्मक मार्ग माना जाता है।

231. (C) तीव्रता
अवधान के बाह्य निर्धारक उद्दीपक की उन भौतिक विशेषताओं को संदर्भित करते हैं जो स्वाभाविक रूप से हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। तीव्रता एक प्रमुख बाह्य कारक है; अत्यंत तीव्र प्रकाश, उच्च ध्वनि या गहरा वर्ण दुर्बल उद्दीपकों की तुलना में अधिक सुगमता से हमारा ध्यान आकर्षित कर लेते हैं। यह एक प्रतिवर्ती प्रक्रिया है जो हमारी इच्छा पर निर्भर नहीं होती। इसके विपरीत, पूर्व अनुभव, मानसिक समुच्चय और उद्देश्य आंतरिक निर्धारक हैं क्योंकि वे व्यक्ति के निजी इतिहास, रुचियों और वर्तमान मानसिक अवस्था से उत्पन्न होते हैं।

232. (C) केवल I और III
प्रत्यक्षण की प्रक्रिया में दृश्य संकेतों और मानसिक संगठन का गहरा समन्वय होता है। पोन्ज़ो भ्रम यह स्पष्ट करता है कि दूरी के संकेत कैसे हमारे आकार के प्रत्यक्षण को विकृत कर सकते हैं। गेस्टाल्ट नियम यह बताते हैं कि हमारा मस्तिष्क जन्मजात रूप से सूचनाओं को अर्थपूर्ण समूहों में व्यवस्थित करता है। इसके विपरीत, चित्र प्रत्यक्षण केवल वास्तविकता की प्रतिलिपि नहीं है; इसमें द्वि-आयामी संकेतों की त्रि-आयामी व्याख्या सम्मिलित होती है, जो एक सक्रिय संज्ञानात्मक प्रक्रिया है। प्रत्यक्षण सदैव संवेदी डेटा की मानसिक व्याख्या है।

233. (C) अंतर्दृष्टि अधिगम
अंतर्दृष्टि अधिगम, जिसे वोल्फगैंग कोहलर ने प्रतिपादित किया था, एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ समाधान शनैः-शनैः अभ्यास से नहीं, वरन आकस्मिक बोध से प्राप्त होता है। इसे 'आहा!' अनुभव कहा जाता है क्योंकि व्यक्ति समस्या के विभिन्न भागों के मध्य संबंधों को अचानक समझ जाता है। यह प्रयास और त्रुटि अधिगम से भिन्न है क्योंकि इसमें मानसिक पुनर्गठन सम्मिलित होता है। एक बार समाधान प्राप्त हो जाने के पश्चात, उसे भविष्य में बिना किसी त्रुटि के तत्काल दोहराया जा सकता है। यह उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक अधिगम है।

234. (B) अर्थ संबंधी सामान्यीकरण
अर्थ संबंधी सामान्यीकरण शाब्दिक अधिगम की एक विशेष प्रक्रिया है जहाँ अनुक्रिया केवल समान दिखने वाले शब्दों तक ही सीमित नहीं रहती, वरन समान अर्थ वाले शब्दों पर भी लागू होती है। 'सेब' और 'फल' अर्थ के आधार पर संबंधित हैं। यदि किसी ने 'सेब' के प्रति एक अनुक्रिया सीखी है, तो वह 'फल' शब्द सुनकर भी वैसी ही अनुक्रिया कर सकता है क्योंकि दोनों शब्द एक ही वैचारिक श्रेणी का भाग हैं। यह दर्शाता है कि हमारा मस्तिष्क शब्दों को केवल ध्वनियों के रूप में नहीं, वरन अर्थों के जाल के रूप में संचित करता है।

235. (B) एक विलंबित-चयन मॉडल या एक क्षीणन मॉडल
कोलाहलपूर्ण कक्ष में अपना नाम सुनने की क्षमता यह सिद्ध करती है कि अनपेक्षित सूचनाओं का भी किसी स्तर पर अर्थ हेतु विश्लेषण किया जाता है। ब्रॉडबेंट का कठोर प्रारंभिक-चयन मॉडल इस घटना की व्याख्या नहीं कर सकता क्योंकि वह अर्थ संबंधी विश्लेषण से पूर्व ही फिल्टर आरोपित कर देता है। क्षीणन मॉडल और विलंबित-चयन मॉडल यह प्रस्तावित करते हैं कि फिल्टर या तो दुर्बल होता है या अर्थ के विश्लेषण के पश्चात कार्य करता है। यह साक्ष्य चयनात्मक अवधान की लचीली कार्यप्रणाली का समर्थन करता है जो महत्वपूर्ण सूचनाओं को प्राथमिकता देती है।

236. (C) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान
प्रैग्नैन्ज़ का नियम गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का एक आधारभूत सिद्धांत है जो हमारे प्रत्यक्षण की संगठनात्मक प्रकृति को स्पष्ट करता है। 'प्रैग्नैन्ज़' एक जर्मन शब्द है जिसका अर्थ है 'स्पष्ट' या 'संक्षिप्त'। यह नियम बताता है कि हमारा मस्तिष्क संवेदी सूचनाओं को यथासंभव सबसे सरल, सुसंगत और अर्थपूर्ण रूप में व्यवस्थित करने की जन्मजात प्रवृत्ति रखता है। गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों हेतु हमारा अनुभव केवल भागों का योग नहीं वरन एक संगठित 'पूर्ण' है, और यह नियम उसी मानसिक व्यवस्था का मूल आधार प्रदान करता है।

237. (B) नकारात्मक सुदृढ़ीकरण
नकारात्मक सुदृढ़ीकरण नैमित्तिक अनुबंधन की वह प्रक्रिया है जिसमें एक अप्रिय स्थिति को समाप्त करके वांछित व्यवहार को सुदृढ़ किया जाता है। 'नकारात्मक' शब्द का अर्थ दंड नहीं, वरन किसी कष्टदायक उद्दीपक को 'हटाना' है। उदाहरण के लिए, शिरःशूल से बचने हेतु औषधि लेना एक व्यवहार है जिसे नकारात्मक सुदृढ़ीकरण द्वारा सुदृढ़ किया जाता है क्योंकि औषधि लेने से वेदना समाप्त होती है। यह प्रक्रिया जीव को कष्टप्रद स्थितियों से बचने या उन्हें दूर करने हेतु सक्रिय व्यवहार करने हेतु प्रेरित करती है जो सीखने का प्रभावी मार्ग है।

238. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
शाब्दिक अधिगम की विभिन्न विधियाँ स्मृति के पृथक पक्षों का परीक्षण करती हैं। क्रमिक अधिगम में शिक्षार्थी को सूचनाओं को एक विशिष्ट और निश्चित अनुक्रम में याद करना होता है, जो वर्णमाला या गणना सीखने हेतु आवश्यक है। इसके विपरीत, मुक्त पुनरावाहन में शिक्षार्थी को केवल वस्तुओं को याद रखने पर ध्यान देना होता है, और उन्हें सुनाने का क्रम उसकी अपनी इच्छा पर निर्भर करता है। ये दोनों विधियाँ यह समझने में सहायता करती हैं कि कैसे हमारा मस्तिष्क सूचनाओं को क्रमबद्ध करता है या उन्हें श्रेणियों में व्यवस्थित करता है।

239. (C) डोपामाइन
डोपामाइन मस्तिष्क का एक प्रमुख तंत्रिका प्रेषक है जो पुरस्कार, सुख और अभिप्रेरणा की प्रक्रियाओं में केंद्रीय भूमिका निभाता है। जब हम कोई ऐसा कार्य करते हैं जिसके परिणामस्वरूप सुदृढ़ीकरण या पुरस्कार प्राप्त होता है, तो मस्तिष्क के पुरस्कार पथों में डोपामाइन का स्राव बढ़ जाता है। यह रासायनिक संकेत उस व्यवहार को सुखद बनाता है और भविष्य में उसे दोहराने की इच्छा उत्पन्न करता है। अधिगम और आदत निर्माण में डोपामाइन का यह स्तर सुदृढ़ीकरण की प्रभावशीलता को निर्धारित करने वाला एक अनिवार्य जैविक कारक माना जाता है।

240. (B) गति पश्च-प्रभाव
जलप्रपात भ्रम, जिसे गति पश्च-प्रभाव कहा जाता है, एक दृश्य भ्रम है जो तब घटित होता है जब हम दीर्घकाल तक

एक ही दिशा में गतिमान किसी वस्तु को देखते हैं। यदि आप कुछ समय तक गिरते जल को देखें और पश्चात समीप की स्थिर चट्टान को देखें, तो वह चट्टान विपरीत दिशा में (ऊपर की ओर) गतिमान प्रतीत होगी। यह दृश्य तंत्र की थकान के कारण होता है, जहाँ विशिष्ट गति पहचानकर्ता अल्प समय हेतु अपनी संवेदनशीलता खो देते हैं। यह हमारे गति प्रत्यक्षण की अनुकूलन क्षमता को दर्शाता है।

241. (C) निरंतर और अपरिवर्तित
अवधान की प्रकृति चयनात्मक होती है और यह परिवर्तन के प्रति अधिक संवेदनशील होती है। जब कोई उद्दीपक दीर्घकाल तक निरंतर और बिना किसी परिवर्तन के बना रहता है, तो हमारा मस्तिष्क उसके प्रति अभ्यस्त हो जाता है, जिसे 'आदत' कहा जाता है। संवेदी तंत्र ऐसे स्थिर संकेतों को अप्रासंगिक मानकर उन पर ध्यान देना बंद कर देते हैं। इसके विपरीत, उच्च तीव्रता, नवीनता और गति जैसे कारक परिवर्तन का संकेत देते हैं, जिससे उनके ध्यान आकर्षित करने की संभावना सदैव अधिक बनी रहती है। स्थिरता अवधान हेतु बाधक है।

242. (C) विभेदक उद्दीपक
नैमित्तिक अनुबंधन में विभेदक उद्दीपक वह संकेत है जो जीव को यह बताता है कि कब कोई विशेष व्यवहार करने पर सुदृढ़ीकरण या पुरस्कार प्राप्त होगा। प्रकाश की उपस्थिति चूहों हेतु एक संकेत है कि अब लीवर दबाने पर भोजन प्राप्त होगा। यदि प्रकाश उपस्थित नहीं है, तो व्यवहार सुदृढ़ नहीं किया जाएगा। यह जीव को पर्यावरण के संकेतों के आधार पर अपने व्यवहार को नियंत्रित करना सिखाता है। विभेदक उद्दीपक व्यवहार की भविष्यवाणी करने और उसे विशिष्ट परिस्थितियों में नियंत्रित करने हेतु एक महत्वपूर्ण उपकरण है।

243. (A) संतोषजनक
एडवर्ड थार्नडाइक का प्रभाव का नियम यह स्थापित करता है कि व्यवहार का भविष्य उसके परिणामों पर निर्भर करता है। उनके अनुसार, यदि किसी अनुक्रिया के पश्चात जीव को एक संतोषजनक स्थिति का अनुभव होता है, तो वह उद्दीपक और अनुक्रिया के मध्य का तंत्रिका बंधन सुदृढ़ हो जाता है। यह सुदृढ़ता उस व्यवहार के पुनः दोहराए जाने की संभावना को बढ़ाती है। यह नियम बताता है कि सफलता और संतोष अधिगम की प्रक्रिया हेतु प्राथमिक प्रेरक हैं। यह आधुनिक शिक्षाशास्त्र में पुरस्कार के महत्व को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

244. (B) मूल उद्दीपक के समान उद्दीपकों के प्रति सीखी गई अनुक्रिया को लागू करने की प्रवृत्ति।
शाब्दिक अधिगम में सामान्यीकरण एक ऐसी संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम एक शब्द या स्थिति में सीखी गई जानकारी का विस्तार अन्य समान क्षेत्रों में करते हैं। यदि किसी ने एक प्रकार के व्याकरण नियम को सीखा है, तो वह उसे समान संरचना वाले अन्य वाक्यों पर भी लागू करने का प्रयास करता है। यह हमें प्रत्येक समय नवीन प्रारंभ करने के स्थान पर पिछले ज्ञान का लाभ उठाने में सक्षम बनाता है। हालांकि, प्रभावी अधिगम हेतु इस प्रवृत्ति को विभेदन के साथ संतुलित करना आवश्यक है ताकि सटीक ज्ञान प्राप्त हो सके।

245. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
रेटिनल असमानता गहराई प्रत्यक्षण का एक अनिवार्य द्विनेत्री संकेत है जो मानव दृष्टि की त्रि-आयामी क्षमता का आधार है। चूंकि हमारी आँखें मुख पर पृथक स्थानों पर स्थित होती हैं, अतः वे एक ही दृश्य को थोड़े भिन्न कोणों से देखती हैं। मस्तिष्क को प्राप्त होने वाली ये दो छवियां पूर्णतः समान नहीं होतीं। इन सूक्ष्म अंतरों का प्रसंस्करण करके मस्तिष्क यह गणना करता है कि वस्तु कितनी समीप या दूर है। यह प्रक्रिया हमें गहराई और ठोस रूप का एक समृद्ध और सटीक अनुभव प्रदान करती है।

246. (D) टोलमैन
एडवर्ड टोलमैन को 'सोद्देश्य व्यवहारवाद' के जनक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने पारंपरिक व्यवहारवाद के इस विचार को चुनौती दी कि व्यवहार केवल एक यांत्रिक उद्दीपक-अनुक्रिया संबंध है। टोलमैन ने तर्क दिया कि समस्त व्यवहार किसी लक्ष्य की ओर निर्देशित होते हैं और जीव सक्रिय रूप से अर्थपूर्ण जानकारी प्राप्त करते हैं। उन्होंने अधिगम में अपेक्षाओं, संज्ञान और उद्देश्य की भूमिका को केंद्र में रखा। उनका मानना था कि व्यवहार को केवल तभी समझा जा सकता है जब हम उसे जीव के लक्ष्यों और मानसिक मानचित्रों के संदर्भ में देखें।

247. (A) कमजोर करता
सुदृढ़ीकरण और दंड नैमित्तिक अनुबंधन के दो विपरीत परिणाम हैं जो व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। सुदृढ़ीकरण का लक्ष्य सदैव व्यवहार की आवृत्ति को बढ़ाना और उसे सुदृढ़ करना होता है, चाहे वह सकारात्मक हो या नकारात्मक। इसके विपरीत, दंड का प्राथमिक कार्य किसी व्यवहार की संभावना को न्यून करना या उसे भविष्य में घटित होने से रोकना है। दंड व्यवहार को दुर्बल करता है क्योंकि वह व्यवहार के पश्चात एक अप्रिय स्थिति उत्पन्न करता है। यद्यपि दोनों व्यवहार संशोधन के उपकरण हैं, किंतु उनके प्रभाव और उद्देश्य विपरीत होते हैं।

248. (B) चित्र प्रत्यक्षण
चित्र प्रत्यक्षण प्रत्यक्षण मनोविज्ञान का वह क्षेत्र है जो यह अध्ययन करता है कि हम द्वि-आयामी सपाट सतहों जैसे चित्रों या पटलों पर गहराई और त्रि-आयामी जगत को कैसे अनुभव करते हैं। यह प्रक्रिया पूर्णतः चित्रीय संकेतों या एकनेत्री संकेतों पर निर्भर करती है। मस्तिष्क इन संकेतों, जैसे रैखिक परिप्रेक्ष्य और बनावट प्रवणता, की व्याख्या करके समतल चित्र में भी दूरी और स्थान का आभास प्राप्त कर लेता है। यह हमारी दृश्य प्रणाली की एक परिष्कृत व्याख्यात्मक क्षमता है जो हमें कला और दृश्य संचार को समझने में सहायता करती है।

249. (A) राज्यों की राजधानियों को याद करना।
राज्यों की राजधानियों को स्मरण करना युग्मित-साहचर्य अधिगम का एक आदर्श उदाहरण है। इसमें शिक्षार्थी को एक उद्दीपक (राज्य का नाम) को एक विशिष्ट अनुक्रिया (राजधानी का नाम) के साथ संबद्ध करना होता है। यह साहचर्य बार-बार अभ्यास के माध्यम से सुदृढ़ होता है, जिससे राज्य का नाम सुनने

पर राजधानी का नाम स्वतः ही याद आ जाता है। यह विधि तथ्यों, ऐतिहासिक तिथियों और शब्दावली को सीखने हेतु अत्यंत प्रभावी है। यह दर्शाता है कि हमारा मस्तिष्क सूचनाओं के युग्मों के मध्य संबंध बनाकर ज्ञान का निर्माण करता है।

250. (C) P-2, Q-1, R-3, S-4
अधिगम के विभिन्न प्रतिमान व्यवहार और संज्ञान के पृथक पक्षों को स्पष्ट करते हैं। शास्त्रीय अनुबंधन में प्रतिवर्ती अनुक्रियाएं सम्मिलित होती हैं जो नवीन संकेतों के साथ जुड़ जाती हैं। नैमित्तिक अनुबंधन में स्वैच्छिक व्यवहार परिणामों द्वारा रूप दिया जाता है। अव्यक्त अधिगम वह ज्ञान है जो तत्काल प्रदर्शित नहीं होता, वरन आंतरिक रूप से संचित रहता है। प्रयास और त्रुटि अधिगम सफल संबंधों के क्रमिक सुदृढ़ीकरण पर आधारित है। ये सभी सिद्धांत मिलकर अधिगम की विविध और जटिल प्रकृति की एक पूर्ण चित्रमाला प्रस्तुत करते हैं।

251. (A) चयनात्मकता
अवधान की सर्वाधिक महत्वपूर्ण और आधारभूत विशेषता इसकी चयनात्मकता है। हमारा वातावरण अनगिनत उद्दीपकों से परिपूर्ण होता है, किंतु हमारी संज्ञानात्मक क्षमता सीमित होती है। अतः हम केवल उन्हीं सूचनाओं का चयन करते हैं जो हमारे लिए प्रासंगिक, महत्वपूर्ण या रोचक होती हैं। यह चयनात्मक प्रक्रिया एक फिल्टर की भांति कार्य करती है जो अप्रासंगिक कोलाहल को पृथक कर देती है और हमें विशिष्ट कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देती है। इसके बिना, हमारा मस्तिष्क सूचनाओं के अतिभार से अभिभूत हो जाएगा।

252. (C) रंग स्थिरता
रंग स्थिरता वह प्रत्यक्षणात्मक क्षमता है जिसके कारण हम किसी वस्तु के रंग को स्थिर अनुभव करते हैं, भले ही उस पर पड़ने वाले प्रकाश की गुणवत्ता परिवर्तित हो जाए। उदाहरण के लिए, एक रक्त वर्ण का सेब दिन के तीव्र प्रकाश में और संध्या के धुंधले प्रकाश में भी हमें रक्त वर्ण का ही दृष्टिगोचर होता है। यद्यपि भौतिक रूप से आँखों तक पहुँचने वाले प्रकाश की तरंगदैर्ध्य बदल जाती है, किंतु हमारा मस्तिष्क परिवेश के प्रकाश के आधार पर क्षतिपूर्ति करता है। यह स्थिरता हमें वस्तुओं की पहचान को सुसंगत बनाए रखने में सहायता करती है।

253. (B) केवल II और III
क्लार्क हल और एडवर्ड टोलमैन दोनों ने अधिगम के सिद्धांतों को उन्नत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हल का सिद्धांत एक व्यवस्थित व्यवहारवाद है जो जैविक आवश्यकताओं और अंतर्नोद को न्यून करने पर केंद्रित है। टोलमैन ने व्यवहारवाद में संज्ञानात्मक क्रांति का सूत्रपात किया और यह प्रस्तावित किया कि जीव पर्यावरण का एक आंतरिक संज्ञानात्मक मानचित्र विकसित करते हैं। स्किनर का सिद्धांत, इसके विपरीत, एक कट्टर व्यवहारवादी दृष्टिकोण है जो मानसिक प्रक्रियाओं के स्थान पर केवल बाह्य सुदृढ़ीकरण और परिणामों पर आधारित है।

254. (D) विलोपन
विलोपन अधिगम की वह प्रक्रिया है जिसमें एक पूर्व सीखी गई अनुक्रिया धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है। यह तब घटित होता है जब अनुबंधित उद्दीपक को बिना किसी सुदृढ़ीकरण या पुरस्कार के बार-बार प्रस्तुत किया जाता है। अधिगम का यह विलोपन दर्शाता है कि जीव और पर्यावरण के मध्य का संबंध केवल तभी बना रहता है जब वह उपयोगी या फलदायी हो। यद्यपि अनुक्रिया ओझल हो जाती है, किंतु वह पूर्णतः लुप्त नहीं होती, जैसा कि स्वतः पुनर्प्राप्ति की घटना से सिद्ध होता है। यह अधिगम के लचीलेपन और गत्यात्मकता को दर्शाता है।

255. (B) अर्थपूर्णता
शाब्दिक अधिगम में अर्थपूर्णता एक प्राथमिक कारक है जो सीखने की गति और स्मृतिकरण को प्रभावित करता है। सीवीसी त्रयक्षर जैसे 'XUJ' या 'ZEQ' निरर्थक शब्दांश होते हैं जिनका कोई भाषाई या व्यावहारिक अर्थ नहीं होता। मस्तिष्क को ऐसी सूचनाओं को संबद्ध करने हेतु कोई पूर्व आधार नहीं प्राप्त होता, जिससे उन्हें सीखना अत्यंत कठिन और समय लेने वाला हो जाता है। इसके विपरीत, अर्थपूर्ण शब्दों का अपना एक संदर्भ और साहचर्य होता है, जो उन्हें स्मृति में अधिक सुदृढ़ता और शीघ्रता से स्थापित करने में सहायता प्रदान करता है।

256. (C) प्रारंभिक-चयन बाधा
ब्रॉडबेंट के अवधान मॉडल को प्रायः 'प्रारंभिक-चयन बाधा मॉडल' कहा जाता है क्योंकि यह प्रस्तावित करता है कि अवधान का फिल्टर सूचना प्रसंस्करण के अत्यंत प्रारंभिक चरण में कार्य करता है। इसके अनुसार, संवेदी पंजीकरण के तत्काल पश्चात सूचनाओं को उनकी भौतिक विशेषताओं के आधार पर छाना जाता है। जिस सूचना पर ध्यान नहीं दिया जाता, उसे अर्थ संबंधी विश्लेषण से पूर्व ही रोक दिया जाता है। यह मॉडल सूचना प्रसंस्करण की सीमित क्षमता को स्पष्ट करने का एक प्रारंभिक प्रयास था, जिसे पश्चात में अधिक परिष्कृत किया गया।

257. (D) प्रत्यक्षणकर्ता की अभिप्रेरणा
प्रत्यक्षण के निर्धारक दो श्रेणियों में विभक्त होते हैं: उद्दीपक-संबंधी और व्यक्ति-संबंधी। अभिप्रेरणा एक व्यक्ति-संबंधी या आंतरिक निर्धारक है जो प्रत्यक्षणकर्ता के अंतःकरण में स्थित होता है। जब कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट आवश्यकता या क्षुधा से प्रेरित होता है, तो उसका प्रत्यक्षण स्वतः ही उन उद्दीपकों की ओर मुड़ जाता है जो उस आवश्यकता की पूर्ति कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, भूखे व्यक्ति को भोजन के चित्र अधिक स्पष्ट और आकर्षक प्रतीत होते हैं। यह दर्शाता है कि हमारी आंतरिक अवस्थाएं विश्व को देखने के हमारे दृष्टिकोण को रूप देती हैं।

258. (B) अनुबंधित उद्दीपक
इस शास्त्रीय अनुबंधन के उदाहरण में, प्रक्षालन ध्वनि प्रारंभ में एक तटस्थ उद्दीपक थी। हालांकि, इसे शीतल जल और उसके प्रति होने वाली स्वाभाविक अनुक्रिया के साथ बार-बार जोड़ा गया। समय के साथ, केवल प्रक्षालन ध्वनि ही अनुक्रिया उत्पन्न करने लगी, जिससे यह एक अनुबंधित उद्दीपक बन गई। यह प्रक्रिया प्रदर्शित करती है कि कैसे हमारा मस्तिष्क पर्यावरण

के संकेतों को आगामी घटनाओं की भविष्यवाणी हेतु प्रयुक्त करना सीख जाता है, जो हमारे व्यवहारिक अनुकूलन का आधार है। यह अधिगम के साहचर्य सिद्धांत को पुष्ट करता है।

259. (B) अधिगम अनुभव और पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया का परिणाम है।
व्यवहारवादी सिद्धांतों की मूल धारणा यह है कि अधिगम बाह्य जगत के साथ जीव के अनुभवों से उत्पन्न होता है। व्यवहारवादियों हेतु जन्मजात प्रवृत्तियाँ या आंतरिक मानसिक विचार अधिगम की व्याख्या हेतु गौण हैं। उनका विश्वास है कि पर्यावरण से प्राप्त होने वाले उद्दीपक और परिणाम ही यह निर्धारित करते हैं कि हम क्या और कैसे सीखते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, व्यवहार को उपयुक्त प्रशिक्षण और सुदृढ़ीकरण के माध्यम से पूर्णतः परिवर्तित या रूप दिया जा सकता है। यह अनुभववाद पर आधारित एक वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण है।

260. (B) प्रतिगामी अवरोध
प्रतिगामी अवरोध तब घटित होता है जब नवीन सीखी गई जानकारी पूर्व सूचनाओं के पुनरावाहन में हस्तक्षेप करती है। जब आप एक नवीन दूरभाष संख्या स्मरण करते हैं, तो यह नवीन सूचना आपके स्मृति तंत्र में इतनी सक्रिय हो जाती है कि वह पुरानी संख्या के साहचर्यों को अस्थायी रूप से दबा देती है। यह दर्शाता है कि हमारा स्मृति भंडार एक गतिशील प्रणाली है जहाँ नवीन और पुरानी सूचनाएं परस्पर प्रतिस्पर्धा करती हैं। यह विस्मृति का एक सामान्य कारण है और यह स्मृतियों के निरंतर अद्यतन होने की प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है।

261. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
एनी ट्रिसमैन का क्षीणन मॉडल ब्रॉडबेंट के फिल्टर सिद्धांत का एक अधिक लचीला और व्यावहारिक परिष्कार है। यह प्रस्तावित करता है कि अनपेक्षित संदेश पूर्णतः अवरुद्ध नहीं होते, वरन उन्हें एक क्षीणक यंत्र के माध्यम से केवल निर्बल कर दिया जाता है। इस दुर्बलता के पश्चात भी, यदि किसी सूचना का अर्थ अत्यंत महत्वपूर्ण है, जैसे कि व्यक्ति का अपना नाम, तो वह सचेत प्रसंस्करण तक पहुँचने में सक्षम होती है। यह मॉडल समझाता है कि हम कोलाहल के मध्य भी महत्वपूर्ण संकेतों के प्रति कैसे जागरूक रहते हैं और अवधान बनाए रखते हैं।

262. (B) सापेक्ष आकार और वायुमंडलीय परिप्रेक्ष्य
चित्र प्रत्यक्षण में गहराई और दूरी का आभास उत्पन्न करने हेतु विभिन्न एकनेत्री संकेतों का उपयोग किया जाता है। सापेक्ष आकार के नियम के अनुसार, समान वस्तुओं में से लघु दिखने वाली वस्तु को अधिक दूर माना जाता है। वायुमंडलीय परिप्रेक्ष्य का अर्थ है कि दूरस्थ वस्तुएं वायु के कणों और रज के कारण धुंधली और कम स्पष्ट दृष्टिगोचर होती हैं। चित्रकार इन दोनों युक्तियों का उपयोग करके एक समतल सतह पर त्रि-आयामी विस्तार का यथार्थवादी भ्रम उत्पन्न करते हैं, जो हमारे मस्तिष्क द्वारा दूरी के अनुमान हेतु अनिवार्य है।

263. (B) नैमित्तिक अनुबंधन
नैमित्तिक अनुबंधन में अधिगम जीव के स्वैच्छिक व्यवहार और उसके पश्चात प्राप्त होने वाले परिणामों के मध्य संबंधों पर आधारित होता है। जब एक चूहा लीवर दबाता है और उसे भोजन प्राप्त होता है, तो वह यह सीख जाता है कि उसका विशिष्ट कार्य एक पुरस्कार उत्पन्न करता है। भोजन यहाँ एक सुदृढ़क के रूप में कार्य करता है जो भविष्य में लीवर दबाने के व्यवहार की संभावना को पुष्ट करता है। यह शास्त्रीय अनुबंधन से पृथक है क्योंकि इसमें जीव सक्रिय रूप से पर्यावरण पर प्रतिक्रिया करता है, न कि केवल तटस्थ संकेतों पर।

264. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
क्लार्क हल का व्यवस्थित व्यवहार सिद्धांत जैविक और मनोवैज्ञानिक चरों के अंतर्संबंधों पर आधारित है। उनका विश्वास था कि समस्त प्राथमिक अंतर्नोद, जैसे क्षुधा या पिपासा, सीधे जैविक आवश्यकताओं से उत्पन्न होते हैं जो जीव को सक्रिय करते हैं। अधिगम की सुदृढ़ता, जिसे उन्होंने आदत शक्ति कहा, मुख्य रूप से इस तथ्य पर निर्भर करती है कि व्यवहार को कितनी बार सफलतापूर्वक सुदृढ़ या पुरस्कृत किया गया है। अभ्यास की मात्रा और सुदृढ़ीकरण का यह संयोजन ही व्यवहार की भविष्यवाणी और नियंत्रण का आधार निर्मित करता है।

265. (D) CS
संकेत संसूचन सिद्धांत के विश्लेषण में प्रयुक्त होने वाले मुख्य घटकों में हित दर, मिथ्या सचेत दर और डी-प्राइम सम्मिलित हैं जो निर्णय लेने की प्रक्रिया और संवेदी क्षमता को दर्शाते हैं। 'CS' या अनुबंधित उद्दीपक इस सिद्धांत का भाग नहीं है; यह अवधारणा इवान पावलव के शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत से संबंधित है। संकेत संसूचन सिद्धांत का ध्यान अनिश्चितता और शोर के मध्य संकेतों की पहचान करने पर होता है, जबकि शास्त्रीय अनुबंधन उद्दीपकों के साहचर्य और सीखी गई अनुक्रियाओं के विषय में विस्तार से चर्चा करता है।

266. (B) मॉडल अत्यधिक विविध या नवीन उद्दीपकों की पहचान को स्पष्ट नहीं कर सकता है।
प्रतिरूप मिलान सिद्धांतों की सर्वाधिक दुर्बलता उनकी अत्यधिक कठोरता है। ये सिद्धांत मानते हैं कि प्रत्यक्षण हेतु उद्दीपक का हमारी स्मृति में संचित एक सटीक मानसिक प्रतिलिपि से मेल खाना अनिवार्य है। हालांकि, वास्तविक जगत में हम वस्तुओं को भिन्न कोणों, आकारों और दीप्ति में देखते हैं। हस्तलेखन की विविधता इसके लिए सर्वाधिक चुनौती है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति की लेखन शैली पृथक होती है। इतने व्यापक परिवर्तनों हेतु पृथक प्रतिरूपों का होना संज्ञानात्मक रूप से अव्यावहारिक है, जो इस मॉडल की उपयोगिता को सीमित करता है।

267. (B) स्किनर
बी.एफ. स्किनर नैमित्तिक अनुबंधन के क्षेत्र में अपने कार्यों हेतु प्रसिद्ध हैं, जहाँ उन्होंने 'सुदृढ़ीकरण' शब्द को अधिगम की प्रक्रिया का केंद्र बिंदु बनाया। उन्होंने इसे किसी भी ऐसे परिणाम के रूप में परिभाषित किया जो उसके पूर्ववर्ती व्यवहार को सुदृढ़ करता है और उसकी भविष्य में होने वाली आवृत्ति को

बढ़ाता है। यद्यपि थार्नडाइक ने भी परिणामों की चर्चा की थी, किंतु स्किनर ने सुदृढ़ीकरण की विभिन्न अनुसूचियों और व्यवहार को रूप देने की तकनीकों का व्यवस्थित अध्ययन किया। उनके हेतु अधिगम सुदृढ़ीकरण के प्रबंधन का प्रतिफल था।

268. (A) P-4, Q-1, R-3, S-2
अधिगम के क्षेत्र में महान मनोवैज्ञानिकों ने अपनी खोजों हेतु विशिष्ट प्रायोगिक विषयों और उपकरणों का उपयोग किया है। टोलमैन ने भूलभुलैया में चूहों का उपयोग करके संज्ञानात्मक मानचित्रों का प्रदर्शन किया। पावलव ने कुत्तों की लार ग्रंथियों के माध्यम से शास्त्रीय अनुबंधन की आधारशिला रखी। स्किनर ने नैमित्तिक कक्षों का उपयोग करके चूहे और कबूतरों के व्यवहार को रूप प्रदान किया। थार्नडाइक ने पहेली मंजूषा में बिल्लियों का अध्ययन किया। ये सभी प्रयोग आधुनिक अधिगम विज्ञान के आधारभूत साक्ष्य और प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

269. (B) कार्यकारी अवधान
कार्यकारी अवधान मस्तिष्क की वह उच्च-स्तरीय क्षमता है जो हमें जटिल संज्ञानात्मक कार्यों को व्यवस्थित और नियंत्रित करने में सक्षम बनाती है। यह विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण होता है जब हमें एक साथ अनेक सूचनाओं को संसाधित करना होता है या अवधान को एक कार्य से हटाकर दूसरे पर तत्काल स्थानांतरित करना होता है। यह योजना बनाने, निर्णय लेने और ध्यान भटकाने वाली सूचनाओं को अवरुद्ध करने हेतु उत्तरदायी है। कार्यकारी अवधान के माध्यम से ही हम अपनी सीमित संज्ञानात्मक क्षमता का प्रभावी प्रबंधन कर पाते हैं।

270. (C) एक-दूसरे के निकट
सामीप्य का गेस्टाल्ट सिद्धांत प्रत्यक्षण संगठन का एक मौलिक नियम है। यह बताता है कि हमारा मस्तिष्क दृश्य क्षेत्र में उन तत्वों को स्वाभाविक रूप से एक समूह के रूप में देखता है जो स्थान या समय में एक-दूसरे के समीप स्थित होते हैं। यह एक जन्मजात मानसिक प्रवृत्ति है जो हमें बिखरे उद्दीपकों को अर्थपूर्ण इकाइयों में संबद्ध करने में सहायता करती है। उदाहरण के लिए, कागज़ पर निकट खींची गई रेखाओं को हम पृथक देखने के स्थान पर एक स्तंभ या खंड के रूप में अनुभव करते हैं। यह नियम प्रत्यक्षण को सरल बनाता है।

271. (B) उद्दीपक और व्यक्ति से संबंधित कारक
अवधान की चयनात्मक प्रक्रिया दो मुख्य प्रकार के निर्धारकों द्वारा संचालित होती है। बाह्य या उद्दीपक-संबंधी कारकों में उद्दीपक की तीव्रता, आकार, वेग और नवीनता सम्मिलित हैं जो स्वतः ही हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। आंतरिक या व्यक्ति-संबंधी कारकों में व्यक्ति की अपनी अभिरुचियाँ, आवश्यकताएं, उद्देश्य और पूर्व अनुभव सम्मिलित होते हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि वह किस वस्तु पर ध्यान केंद्रित करना चाहेगा। इन दोनों प्रकार के कारकों के मध्य की अंतःक्रिया ही क्षणिक अवधान के केंद्र को निर्धारित करती है।

272. (B) मध्यवर्ती चर
एडवर्ड टोलमैन ने अधिगम के विश्लेषण में 'मध्यवर्ती चर' की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसने उन्हें कट्टर व्यवहारवादियों से पृथक किया। उन्होंने तर्क दिया कि उद्दीपक (S) और अनुक्रिया (R) के मध्य कुछ आंतरिक मानसिक प्रक्रियाएं होती हैं जिन्हें प्रत्यक्ष देखा नहीं जा सकता किंतु वे व्यवहार को प्रभावित करती हैं। इनमें उद्देश्य, प्रत्याशाएं और संज्ञानात्मक मानचित्र सम्मिलित हैं। टोलमैन हेतु अधिगम केवल यांत्रिक नहीं था, वरन इसमें जीव की अपनी आंतरिक स्थिति और बोध का महत्वपूर्ण योगदान था। यह संज्ञानवाद की दिशा में एक बड़ा पदक्षेप था।

273. (A) केवल I और II
शाब्दिक अधिगम और भाषा विकास में सामान्यीकरण और विभेदन दो अनिवार्य आधार स्तंभ हैं। सामान्यीकरण हमें एक शब्द से सीखी गई जानकारी को दूसरे समान शब्द पर लागू करने में सहायता करता है, जो सीखने की गति और दक्षता बढ़ाता है। विभेदन वह सूक्ष्म क्षमता है जो हमें समान दिखने वाले शब्दों या प्रतीकों के मध्य अंतर करने और सटीक अर्थ समझने में सक्षम बनाती है। ये दोनों प्रक्रियाएं भाषा अर्जन हेतु अत्यंत प्रासंगिक हैं क्योंकि इनके बिना शब्दों का सही उपयोग और प्रभावी संचार संभव नहीं है।

274. (C) शोर से संकेत को अलग करने में बहुत कुशल है।
संकेत संसूचन सिद्धांत में 'd-prime' संवेदी संवेदनशीलता का एक शुद्ध माप है। उच्च डी-प्राइम का अर्थ है कि प्रेक्षक के पास संकेत और शोर के मध्य अंतर करने की उत्कृष्ट क्षमता है। इसका तात्पर्य है कि वह बहुत कम चूक और मिथ्या सचेत की त्रुटियां करता है और पृष्ठभूमि के कोलाहल में से भी वास्तविक संकेत को सटीकता से पहचान लेता है। यह माप व्यक्ति के निर्णय लेने के पक्षपात से पूर्णतः स्वतंत्र होता है, जिससे यह उसकी संवेदी प्रणाली की वास्तविक दक्षता और स्पष्टता को प्रदर्शित करता है।

275. (B) नकारात्मक सुदृढ़ीकरण
नकारात्मक सुदृढ़ीकरण नैमित्तिक अनुबंधन की एक ऐसी तकनीक है जहाँ किसी वांछित व्यवहार की आवृत्ति बढ़ाने हेतु एक अप्रिय स्थिति को हटा दिया जाता है। इस उदाहरण में, अभिभावकों का उपालंभ (अप्रिय उद्दीपक) तब रुक जाता है जब बालक कक्ष स्वच्छ करता है (वांछित व्यवहार)। भविष्य में उस उपालंभ से बचने हेतु बालक अपना कक्ष स्वच्छ करने हेतु अधिक तत्पर रहेगा। यह सुदृढ़ीकरण है क्योंकि यह व्यवहार को पुष्ट कर रहा है, और यह नकारात्मक है क्योंकि इसमें किसी अप्रिय वस्तु का निष्कासन किया गया है।

276. (B) प्रत्यक्षणात्मक संगठन
आकृति-पृष्ठभूमि संबंध प्रत्यक्षण संगठन का एक मौलिक नियम है जिसे गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने प्रतिपादित किया था। यह हमारे दृश्य अनुभव को एक संरचना प्रदान करता है, जहाँ हम दृश्य क्षेत्र के एक भाग को 'आकृति' और शेष को 'पृष्ठभूमि' के रूप में देखते हैं। यह पृथक्करण हमें वस्तुओं को उनके वातावरण से पृथक पहचानने और उन्हें अर्थ प्रदान करने में सक्षम बनाता है। इसके बिना, हमारी दृश्य दुनिया वर्णों और आकारों का एक भ्रमित करने वाला संचय मात्र रह जाएगी। यह प्रत्यक्षण की बुनियादी प्रक्रिया है।

277. (D) स्किनर
बी.एफ. स्किनर के नैमित्तिक अनुबंधन और व्यवहार संशोधन के सिद्धांतों ने प्रत्यक्ष रूप से रेखीय अभिक्रमित अधिगम के विकास को अभिप्रेरित किया। स्किनर का विश्वास था कि शिक्षा को एक व्यवस्थित प्रक्रिया होना चाहिए जहाँ व्यवहार को क्रमिक रूप से ढालने हेतु लघु चरणों और तत्काल सुदृढ़ीकरण का उपयोग किया जाए। उन्होंने अनुभव किया कि पारंपरिक कक्षाएं सुदृढ़ीकरण प्रदान करने में अत्यंत मंद हैं। रेखीय प्रोग्रामिंग उनकी इसी वैचारिकी का प्रतिफल थी, जिसका उद्देश्य अधिगम को अधिक कुशल, व्यक्तिगत और त्रुटिहीन बनाना था।

278. (B) उद्दीपक विभेदन
उद्दीपक विभेदन अधिगम की वह क्षमता है जिसमें जीव दो या अधिक समान उद्दीपकों के मध्य सूक्ष्म अंतर करना सीखता है और केवल एक विशिष्ट उद्दीपक के प्रति ही अनुक्रिया करता है। जब कोई व्यक्ति केवल उस श्वान से भयभीत होता है जिसने उसे दंश मारा था, न कि समस्त श्वानों से, तो वह विभेदन का प्रदर्शन कर रहा है। यह प्रक्रिया अनुचित सामान्यीकरण को नियंत्रित करती है और व्यवहार को सटीक एवं संदर्भ-विशिष्ट बनाती है। यह सुरक्षित और प्रभावी व्यवहार हेतु एक अनिवार्य संज्ञानात्मक कौशल माना जाता है।

279. (A) एकनेत्री गहराई संकेत; आकार
एम्स कक्ष एक विशेष रूप से निर्मित कक्ष है जो गहराई के प्रत्यक्षण को विकृत करके एक शक्तिशाली दृश्य भ्रम उत्पन्न करता है। यह कक्ष वास्तव में विषम होता है, किंतु एक विशेष छिद्र से देखने पर यह सामान्य और आयताकार प्रतीत होता है। हमारा मस्तिष्क एकनेत्री गहराई संकेतों की व्याख्या त्रुटिपूर्ण रीति से करता है। इसके परिणामस्वरूप, हम कोने में स्थित व्यक्तियों के वास्तविक आकार का दोषपूर्ण प्रत्यक्षण करते हैं, जिससे एक व्यक्ति विशाल और दूसरा अति लघु दृष्टिगोचर होता है। यह प्रत्यक्षण की जटिलता दर्शाता है।

280. (C) पावलव ने उत्पन्न प्रतिवर्तों का अध्ययन किया, जबकि थार्नडाइक ने उत्सर्जित, स्वैच्छिक क्रियाओं का अध्ययन किया।
पावलव और थार्नडाइक के सिद्धांतों में मुख्य अंतर अनुक्रिया की प्रकृति और जीव की भूमिका में है। पावलव का शास्त्रीय अनुबंधन प्रतिवर्ती और अनैच्छिक क्रियाओं पर केंद्रित है जो उद्दीपक द्वारा उत्पन्न की जाती हैं। इसके विपरीत, थार्नडाइक का कार्य उन व्यवहारों पर आधारित है जो जीव द्वारा सक्रिय रूप से निष्पादित किए जाते हैं ताकि कोई लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। थार्नडाइक के प्रयोगों में जीव की इच्छा और स्वैच्छिक क्रिया अधिगम का केंद्र हैं, जो इसे नैमित्तिक अनुबंधन की आधारशिला बनाती हैं।

281. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अवधान को एक सीमित संज्ञानात्मक संसाधन के रूप में देखा जाता है, जिसका अर्थ है कि एक समय में संसाधित की जा सकने वाली सूचनाओं की मात्रा पूर्व निर्धारित होती है। जब कोई व्यक्ति एक साथ दो जटिल कार्य करने का प्रयास करता है, तो दोनों कार्य एक ही संसाधन भंडार हेतु प्रतिस्पर्धा करते हैं। यदि उनकी कुल मांग उपलब्ध क्षमता से अधिक हो जाती है, तो अवधान विभाजित हो जाता है और कार्यों के निष्पादन में गिरावट आती है। यह बहुकार्यण की सीमाओं को स्पष्ट करता है और चयनात्मक अवधान के महत्व को रेखांकित करता है।

282. (B) व्याख्या और संगठन की एक सक्रिय प्रक्रिया।
प्रत्यक्षण केवल संवेदी डेटा का संचयन नहीं है, वरन एक अत्यंत सक्रिय और गत्यात्मक मानसिक प्रक्रिया है। इसमें मस्तिष्क संवेदी सूचनाओं को प्राप्त करता है, उन्हें व्यवस्थित करता है और पश्चात पूर्व ज्ञान एवं संदर्भ के आधार पर उनकी व्याख्या करता है। यह प्रक्रिया चयनात्मक होती है और हमें विश्व का एक अर्थपूर्ण और स्थिर चित्र प्रदान करती है। संवेदी सूचनाएं केवल कच्चा माल प्रदान करती हैं, जबकि मस्तिष्क उस कच्चे माल को एक सुसंगत अनुभव में ढालने और उसे अर्थपूर्ण बनाने का कार्य सक्रिय रूप से करता है।

283. (B) यह व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करता है लेकिन उसे निर्देशित नहीं करता है।
क्लार्क हल के व्यवस्थित व्यवहार सिद्धांत में अंतर्नोद एक प्रेरक शक्ति है जो जैविक आवश्यकता से उत्पन्न होती है। यह एक सामान्य उत्तेजना की अवस्था है जो जीव को सक्रिय और ऊर्जावान बनाती है ताकि वह क्रिया कर सके। हालांकि, अंतर्नोद स्वयं यह निर्धारित नहीं करता कि जीव क्या करेगा। व्यवहार की दिशा आदत शक्ति द्वारा निर्धारित होती है, जो पिछले अधिगम का परिणाम है। इस प्रकार, अंतर्नोद इंजन के ईंधन की भांति है जो व्यवहार को शक्ति प्रदान करता है, जबकि आदत उसे निश्चित दिशा की ओर ले जाती है।

284. (C) सामान्य, उच्च-आवृत्ति वाले शब्दों की एक सूची।
शाब्दिक अधिगम में सामग्री की परिचितता और अर्थपूर्णता सीखने की दर को निर्धारित करने वाले मुख्य कारक हैं। सामान्य और उच्च-आवृत्ति वाले शब्द हमारे दैनिक जीवन का अंग होते हैं और उनके पास स्मृति में पूर्व स्थापित सुदृढ़ साहचर्य होते हैं। इन शब्दों को सीखने हेतु न्यूनतम संज्ञानात्मक प्रयास की आवश्यकता होती है क्योंकि उनका अर्थ और संदर्भ पूर्व से ही स्पष्ट होता है। इसके विपरीत, निरर्थक शब्दांशों या विरल तकनीकी शब्दों को सीखने हेतु नवीन और जटिल मानसिक संबंध निर्मित करने पड़ते हैं, जिससे प्रक्रिया मंद होती है।

285. (B) II, III, I
अधिगम के सिद्धांतों का विकास यांत्रिक व्यवहारवाद से अधिक जटिल संज्ञानात्मक मॉडलों की ओर हुआ है। इवान पावलव का शास्त्रीय अनुबंधन सर्वाधिक सरल रूप है जो प्रतिवर्तों पर आधारित है। क्लार्क हल ने जैविक चरों और अंतर्नोद को संबद्ध करके इसमें और अधिक जटिलता प्रस्तुत की। अंत में, एडवर्ड टोलमैन ने संज्ञानात्मक मानचित्रों और उद्देश्य की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसने अधिगम को केवल एक यांत्रिक प्रक्रिया के स्थान पर एक आंतरिक संज्ञानात्मक क्रिया के रूप में स्थापित किया। यह क्रम अधिगम की वैज्ञानिक समझ को दर्शाता है।

286. (B) शास्त्रीय अनुबंधन
शास्त्रीय अनुबंधन अधिगम की वह प्रक्रिया है जिसमें एक तटस्थ उद्दीपक और एक अननुबंधित उद्दीपक के मध्य साहचर्य

निर्मित होता है। प्रयोग के दौरान, जब ये दोनों उद्दीपक बार-बार एक साथ प्रस्तुत किए जाते हैं, तो तटस्थ उद्दीपक भी वैसी ही अनुक्रिया उत्पन्न करने लगता है जो पूर्व में केवल स्वाभाविक उद्दीपक द्वारा उत्पन्न होती थी। यह दर्शाता है कि कैसे हम पर्यावरण के संकेतों को महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ संबद्ध करना सीख जाते हैं। यह हमारे भावनात्मक और प्रतिवर्ती व्यवहार को समझने का आधारभूत सिद्धांत है।

287. (C) अभिसरण
गहराई प्रत्यक्षण हेतु अभिसरण एक द्विनेत्री संकेत है क्योंकि इसमें मस्तिष्क को दोनों आँखों की मांसपेशियों से प्राप्त सूचनाओं के समन्वय की आवश्यकता होती है। यह विशेष रूप से तब कार्य करता है जब हम समीप की वस्तुओं को देखते हैं और आँखें भीतर की ओर मुड़ती हैं। इसके विपरीत, छायांकन, वायुमंडलीय परिप्रेक्ष्य और सापेक्ष आकार एकनेत्री संकेत हैं। इन्हें केवल एक आँख से भी गहराई और दूरी का प्रभावी अनुमान लगाने हेतु प्रयुक्त किया जा सकता है। द्विनेत्री संकेत त्रि-आयामी स्थान के सूक्ष्म बोध हेतु अधिक सटीक हैं।

288. (B) सामग्री की अर्थपूर्णता
शाब्दिक अधिगम में अर्थपूर्णता एक अत्यंत प्रभावशाली निर्धारक है। परिचित शब्दों के युग्म सीखना सरल है क्योंकि वे पूर्व से ही अर्थपूर्ण हैं और हमारी भाषा एवं संस्कृति में परस्पर संबंधित हैं। इन शब्दों के मध्य पूर्व विद्यमान साहचर्य अधिगम के प्रयासों को न्यून कर देते हैं। इसके विपरीत, निरर्थक शब्दांशों का कोई पूर्व अर्थ नहीं होता, जिससे उनके मध्य नवीन संबंध निर्मित करना अत्यंत दुष्कर होता है। यह स्पष्ट करता है कि सूचनाओं की तार्किकता और अर्थपूर्णता स्मृतिकरण की गति और सुगमता को पर्याप्त रूप से बढ़ाती है।

289. (D) I, II और III
चयनात्मक अवधान के विभिन्न मॉडलों ने सूचना प्रसंस्करण की सीमाओं और तंत्रों को भिन्न दृष्टिकोणों से स्पष्ट किया है। ब्रॉडबेंट का प्रारंभिक-चयन मॉडल संवेदी स्तर पर कठोर फिल्टर प्रस्तावित करता है। ट्रिसमैन का मॉडल अधिक लचीला है और अनपेक्षित सूचनाओं को केवल निर्बल करने की बात करता है। ड्यूश और ड्यूश का विलंबित-चयन मॉडल मानता है कि चयन से पूर्व समस्त सूचनाओं का अर्थ हेतु पूर्ण विश्लेषण होता है। ये सभी मॉडल मिलकर अवधान की जटिलता को समझने हेतु एक एकीकृत संज्ञानात्मक ढांचा प्रदान करते हैं।

290. (B) एडवर्ड थार्नडाइक
एडवर्ड थार्नडाइक का संबंधवाद सिद्धांत इस मूल विचार पर आधारित है कि अधिगम एक उद्दीपक और एक अनुक्रिया के मध्य तंत्रिका बंधन निर्मित करने की प्रक्रिया है। थार्नडाइक का विश्वास था कि यह साहचर्य अभ्यास और परिणामों की संतुष्टि के माध्यम से स्थापित होता है। उन्होंने इस प्रक्रिया को यांत्रिक माना जहाँ सफल अनुक्रियाएं शनैः-शनैः चुनी जाती हैं और असफल अनुक्रियाएं त्याग दी जाती हैं। थार्नडाइक का यह दृष्टिकोण आधुनिक व्यवहारवाद की नींव रखने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रारंभिक सोपान सिद्ध हुआ है।

291. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
मनोविज्ञान की विभिन्न अवधारणाएं अवधान, प्रत्यक्षण और अधिगम के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करती हैं। विभाजित अवधान बहुकार्यण की हमारी क्षमता को प्रदर्शित करता है। आकृति-पृष्ठभूमि संबंध दृश्य प्रत्यक्षण को व्यवस्थित करने का एक मौलिक गेस्टाल्ट नियम है। प्रभाव का नियम थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित किया गया था जो बताता है कि परिणाम व्यवहार को कैसे सुदृढ़ या दुर्बल करते हैं। अवव्यय अधिगम वह संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसमें जीव बिना पुरस्कार के सूचनाएं सीखता है। ये तत्व मानव संज्ञान की बहुमुखी प्रतिभा को उजागर करते हैं।

292. (C) निश्चित अंतराल
निश्चित-अंतराल सुदृढ़ीकरण अनुसूची में 'स्कैलप' प्रभाव एक विशिष्ट अनुक्रिया प्रतिरूप है। इसमें सुदृढ़ीकरण प्राप्त होने के तत्काल पश्चात अनुक्रिया की दर अत्यंत न्यून हो जाती है क्योंकि जीव को ज्ञात होता है कि आगामी पुरस्कार एक निश्चित अवधि के पश्चात ही प्राप्त होगा। जैसे-जैसे वह समय अंतराल समाप्त होने के समीप आता है, अनुक्रियाओं की संख्या और वेग तीव्रता से बढ़ते हैं। यह प्रतिरूप दर्शाता है कि जीव सुदृढ़ीकरण के समय का प्रभावी अनुमान लगाना सीख गया है। यह व्यवहार के समयबद्ध नियंत्रण का उदाहरण है।

293. (B) प्रत्यक्षण
प्रत्यक्षण मनोविज्ञान का वह मुख्य क्षेत्र है जो अध्ययन करता है कि हम संवेदी सूचनाओं को कैसे व्यवस्थित करते हैं और उन्हें त्रि-आयामी जगत के अनुभव में कैसे परिवर्तित करते हैं। गहराई, दूरी और गति का बोध हमारे अस्तित्व हेतु अनिवार्य है क्योंकि यह हमें वातावरण में सुरक्षित रूप से गमन करने और वस्तुओं के साथ अंतःक्रिया करने में सक्षम बनाता है। इसमें विभिन्न एकनेत्री और द्विनेत्री संकेतों का विश्लेषण सम्मिलित है। प्रत्यक्षण हमें संवेदी अपरिष्कृत डेटा से परे ले जाकर विश्व का एक सुसंगत मानसिक प्रतिनिधित्व प्रदान करता है।

294. (B) केंद्रित अभ्यास
केंद्रित अभ्यास अधिगम की वह विधि है जिसमें शिक्षार्थी बिना किसी विश्राम या दीर्घ अंतराल के एक ही समय में संपूर्ण सामग्री को सीखने का प्रयास करता है। परीक्षा से पूर्व की रात्रि में निरंतर अध्ययन करना इसका सामान्य उदाहरण है। यद्यपि यह विधि तात्कालिक स्मृति हेतु उपयोगी प्रतीत हो सकती है, किंतु यह सामान्यतः दीर्घकालिक प्रतिधारण हेतु कम प्रभावी होती है। इसके विपरीत, अंतराल वाले अभ्यास में सूचनाओं को लघु सत्रों में विभक्त किया जाता है, जिससे मस्तिष्क को कूटलेखन हेतु अधिक समय प्राप्त होता है और स्मृति स्थायी होती है।

295. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
संकेत संसूचन सिद्धांत प्रत्यक्षण को केवल एक संवेदी प्रक्रिया के स्थान पर एक निर्णय लेने वाली प्रक्रिया के रूप में देखता है। यह सिद्धांत स्वीकार करता है कि अनिश्चितता की स्थिति में प्रेक्षक की अपनी रणनीति और मानदंड महत्वपूर्ण होते हैं। इसकी सर्वाधिक विशेषता यह है कि यह वास्तविक संवेदी

संवेदनशीलता को और व्यक्ति के अनुक्रिया पक्षपात या निर्णय मानदंडों को पृथक-पृथक मापता है। यह विभाजन हमें यह समझने में सहायता करता है कि क्यों दो समान क्षमता वाले व्यक्ति एक ही स्थिति में भिन्न-भिन्न निर्णय ले सकते हैं।

296. (B) आभासी
फाई-परिघटना आभासी गति प्रत्यक्षण का एक प्रसिद्ध उदाहरण है जहाँ वास्तव में कोई भौतिक विस्थापन नहीं होता। यह तब घटित होता है जब दो या अधिक प्रकाश स्रोतों को एक निश्चित समय अंतराल पर क्रमिक रूप से प्रदीप्त किया जाता है। हमारा मस्तिष्क इन पृथक टिमटिमाते प्रकाशों को संबद्ध करने हेतु निरंतरता का उपयोग करता है, जिससे हमें एक ही प्रकाश के गतिमान होने का आभास प्राप्त होता है। यह दर्शाता है कि हमारा प्रत्यक्षण केवल बाह्य उद्दीपकों का प्रतिबिंब नहीं है, वरन मस्तिष्क द्वारा की गई एक सक्रिय व्याख्या है।

297. (C) संज्ञानात्मक मानचित्र
क्लार्क हल के अधिगम सिद्धांत में अंतर्नोद, आदत शक्ति और प्रतिक्रिया विभव जैसे चर सम्मिलित हैं जो व्यवहार की गणितीय भविष्यवाणी हेतु प्रयुक्त होते हैं। संज्ञानात्मक मानचित्र की अवधारणा एडवर्ड टोलमैन द्वारा प्रस्तुत की गई थी, न कि हल द्वारा। टोलमैन का विश्वास था कि जीव वातावरण का एक मानसिक प्रतिनिधित्व सीखते हैं, जबकि हल का ध्यान उद्दीपक-अनुक्रिया संबंधों और जैविक आवश्यकताओं की तुष्टि पर अधिक था। यह अंतर व्यवहारवाद और संज्ञानवाद के मध्य के सैद्धांतिक विभाजन को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

298. (C) व्यवहारवाद
इवान पावलव और बी.एफ. स्किनर के शोध व्यवहारवाद के संप्रदाय के आधार स्तंभ माने जाते हैं। व्यवहारवाद का मुख्य उद्देश्य मनोविज्ञान को एक वस्तुनिष्ठ विज्ञान बनाना था जो केवल अवलोकन योग्य व्यवहार और पर्यावरणीय उद्दीपकों पर केंद्रित हो। पावलव ने शास्त्रीय अनुबंधन के माध्यम से अनैच्छिक प्रतिवर्तों के अधिगम को स्पष्ट किया, जबकि स्किनर ने नैमित्तिक अनुबंधन के माध्यम से स्वैच्छिक व्यवहार और सुदृढ़ीकरण की भूमिका को रेखांकित किया। इन सिद्धांतों ने अधिगम को समझने हेतु एक वैज्ञानिक और प्रयोगात्मक ढांचा प्रदान किया है।

299. (B) अलग-अलग उद्दीपकों के प्रति अलग-अलग अनुक्रिया करना सीखना।
शाब्दिक अधिगम में विभेदन वह प्रक्रिया है जिसमें शिक्षार्थी समान दिखने या सुनने वाले शब्दों के मध्य सूक्ष्म अंतर करना सीखता है। यह क्षमता तब अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है जब हमें मिलते-जुलते शब्दों हेतु पृथक अर्थ या अनुक्रियाएं प्रदान करनी होती हैं। विभेदन के माध्यम से हम उद्दीपकों की विशिष्ट विशेषताओं की पहचान करते हैं, जिससे दोषपूर्ण सामान्यीकरण की संभावना न्यून हो जाती है। यह भाषाई सटीकता और जटिल सूचनाओं को सही ढंग से संसाधित करने हेतु एक अनिवार्य संज्ञानात्मक कौशल है जो अधिगम को प्रभावी बनाता है।

300. (B) रेटिकुलर एक्टिवेटिंग सिस्टम
जालावत सक्रियण प्रणाली मस्तिष्क स्तंभ में स्थित तंत्रिकाओं का एक जटिल जाल है जो सतर्कता और सामान्य उत्तेजना के नियमन हेतु उत्तरदायी है। यह एक संवेदी फिल्टर के रूप में कार्य करता है जो प्रमस्तिष्क वल्कुट को संकेत देता है कि वातावरण में कोई महत्वपूर्ण सूचना आ रही है। इस प्रणाली की सक्रियता के बिना अवधान की कोई भी उच्च-स्तरीय प्रक्रिया संभव नहीं है क्योंकि यह चेतना और सतर्कता का जैविक आधार प्रदान करता है। यह हमें बाह्य उद्दीपकों के प्रति सजग रखता है और अवधान बनाए रखने में सहायता करता है।

अध्याय 03

स्मृति चिन्तन एवं समस्या समाधान

1. निम्नलिखित में से कौन सा स्मृति की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) विभिन्न जटिल समस्याओं को हल करने की संज्ञानात्मक क्षमता।
(B) सूचनाओं को प्राप्त करने, संचित करने और उन्हें पुनः प्राप्त करने की प्रक्रिया।
(C) रचनात्मक और अमूर्त विचार प्रक्रियाओं की क्षमता।
(D) पर्यावरण के संवेदी बोध के लिए तंत्र।

2. निम्नलिखित में से किसे स्मृति प्रक्रिया का मूल घटक नहीं माना जाता है?
(A) प्रत्यक्षण
(B) कूटलेखन
(C) संचयन
(D) प्रत्यानयन या पुनर्प्राप्ति

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अल्पकालिक स्मृति की क्षमता सीमित और अवधि संक्षिप्त होती है।
कथन II: माना जाता है कि दीर्घकालिक स्मृति की क्षमता लगभग असीमित होती है और यह जीवन भर के लिए सूचनाओं को संचित कर सकती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

4. वह परिघटना जिसमें नई सीखी गई जानकारी, पहले सीखी गई जानकारी को याद करने में बाधा डालती है, कहलाती है:
(A) अग्रलक्षी अवरोध
(B) ह्रास सिद्धांत
(C) पुनर्प्राप्ति विफलता
(D) पश्चलक्षी अवरोध

5. परा-संज्ञान के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) इसमें स्वयं की विचार प्रक्रियाओं के बारे में सोचना शामिल है।
(B) इसमें स्वयं के अधिगम की योजना बनाना, निगरानी करना और मूल्यांकन करना शामिल है।
(C) यह प्राथमिक संज्ञानात्मक प्रक्रिया का ही पर्यायवाची है।
(D) यह प्रभावी अधिगम और समस्या समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): अग्रलक्षी अवरोध हस्तक्षेप का एक रूप है जो स्मृति को प्रभावित करता है।
कारण (R): यह तब होता है जब पिछला अधिगम नई जानकारी को याद करने की क्षमता में बाधा डालता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

7. निम्नलिखित में से कौन सा अर्थगत स्मृति की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) यह विशिष्ट व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों और प्रासंगिक घटनाओं को संचित करती है।
(B) यह कौशल और क्रियाओं को करने के तरीके के बारे में विस्तृत जानकारी रखती है।
(C) यह पश्चलक्षी अवरोध के प्रभावों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है।
(D) यह तथ्यों, अवधारणाओं और दुनिया के सामान्य ज्ञान की स्मृति है।

8. फ्रेंच सीखने वाले एक छात्र को पता चलता है कि स्पेनिश का उसका पिछला ज्ञान नई फ्रेंच शब्दावली को याद रखने में कठिनाई पैदा कर रहा है। यह किसका उदाहरण है?
(A) अग्रलक्षी अवरोध
(B) पश्चलक्षी अवरोध
(C) स्मृति ह्रास
(D) अभिप्रेरित विस्मरण

9. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (स्मृति अवधारणा)
P. अल्पकालिक स्मृति
Q. दीर्घकालिक स्मृति
R. अग्रलक्षी अवरोध
S. पश्चलक्षी अवरोध
सूची II: (विवरण)
1. पुरानी यादें नई यादों में बाधा डालती हैं।
2. नई यादें पुरानी यादों में बाधा डालती हैं।

3. सीमित क्षमता, कम अवधि।
4. विशाल क्षमता, लंबी अवधि।

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

10. विस्मरण के सिद्धांतों का प्राथमिक ध्यान किस पर है?
(A) उन तंत्रों का वर्णन करना जिनके द्वारा स्मृति से जानकारी लुप्त हो जाती है।
(B) यह स्पष्ट करना कि जानकारी प्रारंभ में प्रणाली में कैसे कूटबद्ध की जाती है।
(C) दीर्घकालिक स्मृति के विभिन्न संरचनात्मक प्रकारों को रेखांकित करना।
(D) संवेदी पंजीकरण की आंतरिक प्रक्रिया का विवरण देना।

11. "स्वयं की स्मृति के बारे में सोचना" किस अवधारणा के लिए सबसे उपयुक्त परिभाषा है?
(A) परा-संज्ञान
(B) अर्थगत स्मृति
(C) संप्रत्यय निर्माण
(D) परा-स्मृति

12. स्मृति सुधार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. स्मृति-सहायक युक्तियों का उपयोग प्रत्यानयन को बढ़ा सकता है।
II. अंतराल अभ्यास आमतौर पर सघन अभ्यास की तुलना में अधिक प्रभावी होता है।
III. स्मृति सुधार पूरी तरह से जन्मजात क्षमता पर निर्भर है और इसे प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

13. चिंतन में भाषा की भूमिका क्या संकेत देती है?
(A) भाषा और चिंतन पूरी तरह से स्वतंत्र प्रक्रियाएं हैं।
(B) चिंतन केवल भाषा प्राप्ति पूर्ण होने के बाद ही संभव है।
(C) किसी भाषा की संरचना उसके बोलने वालों के सोचने के तरीके को प्रभावित कर सकती है।
(D) भाषा का उपयोग केवल संचार के लिए किया जाता है, आंतरिक चिंतन के लिए नहीं।

14. निम्नलिखित में से किसे समस्या समाधान की एक विधि माना जाता है?
(A) अग्रलक्षी अवरोध
(B) परा-संज्ञान
(C) अर्थगत नेटवर्क
(D) हेयूरिस्टिक्स

15. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): स्कीमा इस बात को प्रभावित कर सकते हैं कि हम स्मृतियों को कैसे कूटबद्ध और पुनर्प्राप्त करते हैं।
कारण (R): स्कीमा मानसिक ढांचे हैं जो जानकारी को व्यवस्थित और व्याख्यायित करते हैं, जो कभी-कभी विकृति या रिक्त स्थानों को भरने का कारण बनते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

16. सृजनात्मक चिंतन को प्रभावित करने वाले कारकों में आमतौर पर किसे सूचीबद्ध नहीं किया जाता है?
(A) बुद्धि
(B) रटकर याद करने की क्षमता
(C) व्यक्तित्व लक्षण
(D) पर्यावरणीय प्रोत्साहन

17. निर्णय लेने के संदर्भ में, 'पूर्वाग्रह' का तात्पर्य है:
(A) उच्च दबाव में तेजी से और सटीक विकल्प चुनने की मानसिक क्षमता।
(B) निर्णय में मानक या तर्कसंगतता से विचलन का एक व्यवस्थित पैटर्न।
(C) सभी उपलब्ध विकल्पों के मूल्यांकन के लिए एक व्यवस्थित और तार्किक दृष्टिकोण।
(D) आंतरिक विचार-विमर्श की लंबी अवधि के बाद किया गया अंतिम चयन।

18. एक सामान्य समस्या-समाधान प्रक्रिया के निम्नलिखित चरणों पर विचार कीजिए:
I. समाधान का मूल्यांकन करना
II. समस्या को परिभाषित करना
III. संभावित समाधान उत्पन्न करना
IV. समाधान को लागू करना

निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक क्रम है?
(A) II, III, IV, I
(B) III, II, I, IV
(C) I, II, III, IV
(D) II, IV, III, I

19. निम्नलिखित में से कौन चिंतन की प्रकृति का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) आने वाली संवेदी सूचनाओं का पूरी तरह से निष्क्रिय ग्रहण।
(B) संचार के लिए बोलने या लिखने की शारीरिक क्रिया।
(C) सूचनाओं के हेरफेर से जुड़ी एक जटिल मानसिक प्रक्रिया।
(D) बाहरी पर्यावरणीय उत्तेजनाओं के प्रति एक प्रतिवर्ती अनुक्रिया।

20. निम्नलिखित सभी चिंतन के प्रकार हैं, सिवाय:
(A) सृजनात्मक चिंतन
(B) आलोचनात्मक चिंतन
(C) समस्या समाधान
(D) संवेदी चिंतन

21. स्मृति के संदर्भ में, एक 'स्कीमा' को सबसे अच्छी तरह वर्णित किया जा सकता है:
(A) किसी विशिष्ट व्यक्तिगत घटना की एक स्पष्ट और सजीव स्मृति।
(B) मस्तिष्क के भीतर स्मृति का शारीरिक चिह्न।
(C) ज्ञान का एक संगठित समूह या एक मानसिक ढांचा।
(D) जटिल श्रवण सूचनाओं के लिए एक अस्थायी भंडारण बफर।

22. विस्मरण का कौन सा सिद्धांत सुझाव देता है कि यदि यादों का उपयोग नहीं किया जाता है तो वे समय के साथ धुंधली हो जाती हैं?
(A) हस्तक्षेप सिद्धांत
(B) ह्रास सिद्धांत
(C) पुनर्प्राप्ति विफलता सिद्धांत
(D) अभिप्रेरित विस्मरण सिद्धांत

23. एक छात्र किराने की दुकान के लिए वस्तुओं की सूची याद रखने की कोशिश कर रहा है। वह वस्तुओं को 'डेयरी', 'सब्जी' और 'डिब्बाबंद सामान' जैसी श्रेणियों में व्यवस्थित करता है। यह स्मृति सुधार रणनीति किसका उदाहरण है?
(A) स्मृति-सहायक युक्ति का उपयोग करना
(B) लोकी की विधि
(C) सघन अभ्यास
(D) संगठनात्मक कूटलेखन

24. संप्रत्यय निर्माण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति विविध अनुभवों को वर्गों में समूहित करना सीखता है।
II. अप्रासंगिक विशेषताओं की उपस्थिति संप्रत्यय निर्माण को अधिक कठिन बना सकती है।
III. संप्रत्यय निर्माण एक जन्मजात क्षमता है जो अनुभव पर निर्भर नहीं करती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

25. दीर्घकालिक स्मृति में संचित जानकारी को याद करने में असमर्थता कहलाती है:
(A) कूटलेखन विफलता
(B) भंडारण ह्रास
(C) पुनर्प्राप्ति विफलता
(D) अग्रलक्षी अवरोध

26. निम्नलिखित में से कौन सा उस कारक का उदाहरण है जो समस्या-समाधान को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है?
(A) कार्यात्मक स्थिरता
(B) मंथन
(C) एल्गोरिदम का उपयोग करना
(D) उच्च अभिप्रेरणा

27. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (निर्णय लेने में पूर्वाग्रह)
P. पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
Q. एंकरिंग पूर्वाग्रह
R. उपलब्धता हेयूरिस्टिक
S. पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह
सूची II: (विवरण)
1. दी गई जानकारी के पहले अंश पर अत्यधिक निर्भर होना।
2. अतीत की घटनाओं को वास्तव में होने की तुलना में अधिक पूर्वानुमेय देखने की प्रवृत्ति।
3. स्मृति में उनकी उपलब्धता के आधार पर घटनाओं की संभावना का अनुमान लगाना।
4. मौजूदा विश्वासों की पुष्टि करने वाली जानकारी का पक्ष लेना।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-3, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

28. किसी संप्रत्यय की प्रकृति का सबसे अच्छा वर्णन किया जा सकता है:
(A) किसी वस्तु या घटना का एक विशिष्ट उदाहरण।
(B) समान वस्तुओं, घटनाओं, विचारों या लोगों का एक मानसिक समूह।
(C) व्यक्तिगत अनुभव की एक कालानुक्रमिक स्मृति।
(D) बिना किसी अंतर्निहित अर्थ वाला एक मौखिक लेबल।

29. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): जटिल मानव चिंतन के लिए भाषा अत्यंत महत्वपूर्ण है।
कारण (R): भाषा ऐसे प्रतीक और नियम प्रदान करती है जो अमूर्त विचारों के हेरफेर और संगठन में मदद करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

30. सृजनात्मक चिंतन के संदर्भ में, 'अपसारी चिंतन' का तात्पर्य है:
(A) किसी समस्या का एकमात्र सर्वोत्तम समाधान खोजने का संज्ञानात्मक प्रयास।
(B) एक निश्चित अपेक्षित निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए सख्त तार्किक नियमों को लागू करना।
(C) विकल्पों के एक निश्चित सेट का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना और उन्हें कम करना।
(D) एक ही प्रारंभिक बिंदु से कई, अद्वितीय विचार उत्पन्न करना।

31. निम्नलिखित में से कौन सा संप्रत्यय का प्रकार नहीं है?
(A) अवरुद्ध संप्रत्यय
(B) प्राकृतिक संप्रत्यय
(C) कृत्रिम संप्रत्यय
(D) पदानुक्रमित संप्रत्यय

32. संवेदी इनपुट को ऐसे रूप में बदलने की प्रक्रिया जिसे संसाधित किया जा सके और स्मृति में संचित किया जा सके, कहलाती है:
(A) प्रत्यानयन
(B) कूटलेखन
(C) संचयन
(D) रिहर्सल

33. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: परा-स्मृति का तात्पर्य अपनी स्मृति क्षमताओं और स्मृति में शामिल प्रक्रियाओं के बारे में स्वयं के ज्ञान और जागरुकता से है।
कथन II: एक छात्र जो महसूस करता है कि वह नामों की तुलना में चेहरों को याद रखने में बेहतर है, वह परा-स्मृति प्रदर्शित कर रहा है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

34. बेहतर निर्णय लेने के कारकों में शामिल हैं:
(A) स्पष्ट मानदंडों के विरुद्ध विकल्पों का व्यवस्थित रूप से मूल्यांकन करना।
(B) पूरी तरह से अंतर्ज्ञान पर निर्भर रहना।
(C) सभी संभावित जोखिमों से बचना।
(D) विचार-विमर्श से बचने के लिए जितनी जल्दी हो सके चुनाव करना।

35. समस्या समाधान की प्रकृति को सबसे अच्छी तरह से इस प्रकार वर्णित किया जाता है:
(A) एक यादृच्छिक त्रुटि-और-प्रयास प्रक्रिया जिसमें कोई विशिष्ट मानसिक दिशा नहीं होती है।
(B) पहले से सीखे गए और संचित विशिष्ट समाधान का प्रत्यक्ष स्मरण।
(C) जब कोई स्पष्ट समाधान उपलब्ध न हो, तो लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में निर्देशित एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया।
(D) अंतर्दृष्टि की आंतरिक चमक होने की प्रतीक्षा करने वाली एक निष्क्रिय अवस्था।

36. अर्थगत स्मृति का कौन सा मॉडल प्रस्तावित करता है कि संप्रत्यय एक दूसरे से जुड़े हुए नोड्स के नेटवर्क में संचित होते हैं?
(A) ह्रास मॉडल
(B) अवरोध मॉडल
(C) स्कीमा मॉडल
(D) स्प्रेडिंग एक्टिवेशन मॉडल

37. एक बढ़ई जो हथौड़े का उपयोग केवल कील ठोकने के लिए ही सोच सकता है और भार के रूप में नहीं, वह किसका उदाहरण दिखा रहा है?
(A) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
(B) एक एल्गोरिदम
(C) कार्यात्मक स्थिरता
(D) अपसारी चिंतन

38. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अग्रलक्षी अवरोध में नए अधिगम पर पुरानी यादों का हस्तक्षेप शामिल है।
II. पश्चलक्षी अवरोध में पुरानी जानकारी को याद करने पर नई यादों का हस्तक्षेप शामिल है।
III. दोनों हस्तक्षेप के प्रकार हैं जो विस्मरण का कारण बन सकते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और III
(B) केवल II और III
(C) केवल I और II
(D) I, II और III

39. अल्पकालिक स्मृति और दीर्घकालिक स्मृति के बीच मुख्य अंतर किससे संबंधित है?
(A) संवेदी इनपुट का प्रकार
(B) मस्तिष्क में शारीरिक स्थान
(C) स्मृति की भावनात्मक सामग्री
(D) क्षमता और अवधि

40. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रमुख कारक है जो संप्रत्यय निर्माण को सुगम बना सकता है?
(A) संप्रत्यय के उदाहरणों और गैर-उदाहरणों दोनों की प्रस्तुति।
(B) संप्रत्यय श्रेणी के केवल सकारात्मक उदाहरणों का प्रदर्शन।
(C) प्राथमिक अधिगम के माहौल में व्याकुलता का उच्च स्तर।
(D) लक्षित संप्रत्यय के लिए जटिल और अस्पष्ट परिभाषाओं का उपयोग करना।

41. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): निर्णय लेना अक्सर संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों के अधीन होता है।
कारण (R): मनुष्य जटिल निर्णयों को सरल बनाने के लिए मानसिक शॉर्टकट या हेयूरिस्टिक्स का उपयोग करते हैं, जो कभी-कभी व्यवस्थित त्रुटियों का कारण बन सकते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

42. "जीभ की नोक पर होना" परिघटना किसका उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) पुनर्प्राप्ति विफलता
(B) भंडारण विफलता
(C) कूटलेखन विफलता
(D) पूर्ण स्मृति लोप

43. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता आमतौर पर सृजनात्मक व्यक्तियों से जुड़ी नहीं है?
(A) अस्पष्टता के लिए उच्च सहनशीलता
(B) आंतरिक अभिप्रेरणा
(C) नए अनुभवों के प्रति खुलापन
(D) कठोर और अनम्य चिंतन

44. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (समस्या-समाधान घटक)
P. एल्गोरिदम
Q. हेयूरिस्टिक
R. अंतर्दृष्टि
S. मानसिक विन्यास
सूची II: (अर्थ)
1. समस्या के समाधान का अचानक अहसास।
2. किसी समस्या को एक विशेष तरीके से हल करने की प्रवृत्ति।
3. एक चरण-दर-चरण प्रक्रिया जो समाधान की गारंटी देती है।
4. एक सरल चिंतन रणनीति या मानसिक शॉर्टकट।
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

45. स्मृति के संदर्भ में 'अवरोध' का अर्थ है:
(A) स्मृति चिह्न का मजबूत होना।
(B) किसी चीज को सक्रिय रूप से भूलने की कोशिश करने की प्रक्रिया।
(C) एक स्मृति द्वारा दूसरी स्मृति में रुकावट या हस्तक्षेप।
(D) संवेदी सूचनाओं का प्रारंभिक कूटलेखन।

46. निम्नलिखित में से कौन सा दीर्घकालिक स्मृति के प्रकार का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) संवेदी स्मृति
(B) प्रतिबिंबात्मक स्मृति
(C) प्रतिध्वन्यात्मक स्मृति
(D) प्रासंगिक स्मृति

47. निम्नलिखित स्मृति प्रणालियों पर विचार कीजिए:
I. दीर्घकालिक स्मृति
II. अल्पकालिक स्मृति
III. संवेदी स्मृति
एटकिन्सन-शिफ्रिन मॉडल के अनुसार सूचना प्रसंस्करण का विशिष्ट क्रम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) III, II, I
(B) II, I, III
(C) I, II, III
(D) III, I, II

48. एक छात्र परीक्षा के लिए लगातार 8 घंटे तक पढ़कर तैयारी करता है, वह किस तकनीक का उपयोग कर रहा है?
(A) अंतराल अभ्यास
(B) सघन अभ्यास
(C) सविस्तार रिहर्सल
(D) लोकी की विधि

49. स्मृति के संबंध में स्कीमा की भूमिका का सबसे अच्छा वर्णन कौन सा कथन करता है?
(A) स्कीमा यह सुनिश्चित करते हैं कि यादें हमेशा पूरी तरह सटीक और वस्तुनिष्ठ हों।
(B) स्कीमा केवल अल्पकालिक स्मृति के लिए प्रासंगिक हैं और दीर्घकालिक भंडारण पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(C) स्कीमा एक संगठनात्मक ढांचा प्रदान करते हैं जो कूटलेखन और पुनर्प्राप्ति का मार्गदर्शन कर सकता है।
(D) स्कीमा पश्चलक्षी अवरोध की परिघटना का प्रत्यक्ष परिणाम हैं।

50. बेहतर निर्णय लेने के प्रमुख कारकों में से एक है:
(A) कई दृष्टिकोणों और विकल्पों पर विचार करना।
(B) मन में आने वाले पहले विचार पर टिके रहना।
(C) आशावाद बनाए रखने के लिए संभावित नकारात्मक परिणामों की अनदेखी करना।
(D) भावनाओं को विकल्पों के लिए एकमात्र मार्गदर्शक बनने देना।

51. कुछ समय के लिए अल्पकालिक स्मृति में जानकारी बनाए रखने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) कूटलेखन
(B) पुनर्प्राप्ति

(C) विस्मरण
(D) रिहर्सल

52. निर्णय लेने में पूर्वाग्रहों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पुष्टिकरण पूर्वाग्रह अपनी पूर्वधारणाओं की पुष्टि करने वाली जानकारी खोजने की प्रवृत्ति है।
II. उपलब्धता हेयूरिस्टिक में किसी घटना की संभावना का अनुमान इस आधार पर लगाया जाता है कि उदाहरण कितनी आसानी से मन में आते हैं।
III. ये पूर्वाग्रह हमेशा गलत निर्णयों की ओर ले जाते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

53. निम्नलिखित में से कौन सा परा-संज्ञान का एक प्रमुख पहलू है?
(A) तथ्यात्मक ज्ञान संचित करना
(B) शारीरिक कौशल का निष्पादन करना
(C) अपनी समझ की स्वयं निगरानी करना
(D) दृश्य उत्तेजनाओं को ग्रहण करना

54. चिंतन की 'प्रकृति' का तात्पर्य है:
(A) मस्तिष्क में विचार प्रक्रियाओं का जैविक आधार।
(B) वह गति जिस पर कोई व्यक्ति सोच सकता है।
(C) किसी विशेष विचार से जुड़ी भावनात्मक स्थिति।
(D) विचार की मौलिक विशेषताएं और प्रक्रियाएं।

55. हस्तक्षेप सिद्धांत के अनुसार, दीर्घकालिक स्मृति में विस्मरण क्यों होता है?
(A) जानकारी उपलब्ध नहीं होती क्योंकि अन्य जानकारी रास्ते में आ जाती है।
(B) शारीरिक स्मृति चिह्न समय के साथ समाप्त हो जाता है।
(C) जानकारी को शुरु में ही ठीक से कूटबद्ध नहीं किया गया था।
(D) दमन अवांछित स्मृतियों को अचेतन में धकेल देता है।

56. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): सृजनात्मक चिंतन में अक्सर स्थापित पैटर्न और मानसिक विन्यासों से दूर होना शामिल होता है।
कारण (R): मानसिक विन्यास, जो समस्याओं को एक निश्चित तरीके से हल करने की प्रवृत्तियां हैं, नए समाधानों की खोज में बाधा डाल सकते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

57. निम्नलिखित में से कौन सी स्मृति सुधार की विधि नहीं है?
(A) सविस्तार रिहर्सल
(B) स्मृति-सहायक युक्तियों का उपयोग
(C) कई दिनों तक अंतराल अभ्यास
(D) परीक्षा से ठीक पहले सघन अभ्यास

58. संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया किससे बहुत अधिक प्रभावित होती है?
(A) सामना किए गए सकारात्मक और नकारात्मक उदाहरणों की संख्या।
(B) अग्रलक्षी अवरोध का उपयोग करने की क्षमता।
(C) प्रतिध्वन्यात्मक स्मृति की क्षमता।
(D) तंत्रिका संचरण की गति।

59. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संज्ञानात्मक अवधारणा)
P. स्कीमा
Q. परा-स्मृति
R. संप्रत्यय
S. पश्चलक्षी अवरोध
सूची II: (उदाहरण)
1. यह महसूस करना कि आप तारीखें याद रखने में खराब हैं।
2. "पुस्तकालय" कैसा होता है, इस बारे में आपका विचार।
3. नया फोन नंबर सीखने के बाद अपना पुराना फोन नंबर भूल जाना।
4. "कुत्ता" की मानसिक श्रेणी।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

60. समस्या-समाधान विधियों के बारे में कौन सा कथन सही है?
(A) एल्गोरिदम एक सही समाधान की गारंटी देते हैं, जबकि हेयूरिस्टिक्स नहीं।
(B) हेयूरिस्टिक्स एक सही समाधान की गारंटी देते हैं, जबकि एल्गोरिदम नहीं।
(C) एल्गोरिदम और हेयूरिस्टिक्स दोनों ही मानसिक विन्यास के प्रकार हैं।
(D) हेयूरिस्टिक्स धीमे और व्यवस्थित होते हैं, जबकि एल्गोरिदम तेज मानसिक शॉर्टकट होते हैं।

61. बहुत कम अवधि के लिए कम मात्रा में जानकारी रखने के लिए जिम्मेदार स्मृति का घटक है:
(A) दीर्घकालिक स्मृति
(B) अर्थगत स्मृति
(C) प्रासंगिक स्मृति
(D) अल्पकालिक स्मृति

62. जब कोई व्यक्ति इस आधार पर निर्णय लेता है कि कोई उदाहरण कितनी आसानी से मन में आता है, तो वह किसका उपयोग कर रहा है:
(A) एंकरिंग पूर्वाग्रह
(B) उपलब्धता हेयूरिस्टिक
(C) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
(D) पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह

63. चिंतन में भाषा की भूमिका का उदाहरण सापिर-वोर्फ परिकल्पना द्वारा दिया गया है, जो सुझाव देती है कि:
(A) सभी मनुष्य भाषा की परवाह किए बिना बिल्कुल एक ही तरह से सोचते हैं।
(B) चिंतन भाषा विकास के लिए एक पूर्व शर्त है।
(C) भाषा चिंतन को निर्धारित करती है।
(D) भाषा केवल पहले से मौजूद विचारों को व्यक्त करने का एक उपकरण है।

64. वह कारक जो प्रभावी समस्या समाधान में बाधा डाल सकता है, वह है:
(A) मंथन
(B) उपमाओं का उपयोग करना
(C) समस्या को उप-लक्ष्यों में विभाजित करना
(D) मानसिक विन्यास

65. निम्नलिखित में से कौन विस्मरण का मान्यता प्राप्त सिद्धांत नहीं है?
(A) सुदृढ़ीकरण
(B) ह्रास
(C) हस्तक्षेप
(D) पुनर्प्राप्ति विफलता

66. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: परा-संज्ञान व्यक्तियों को अपने स्वयं के अधिगम पर नियंत्रण रखने की अनुमति देता है।
कथन II: परा-संज्ञानात्मक रणनीतियों का उपयोग करने वाला छात्र खुद से पूछ सकता है, "क्या मैं इस अवधारणा को किसी और को समझाने के लिए पर्याप्त रूप से समझता हूँ?"
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

67. निम्नलिखित में से सही जोड़े की पहचान कीजिए:
(A) अग्रलक्षी अवरोध : नई यादें पुरानी यादों में हस्तक्षेप करती हैं
(B) पश्चलक्षी अवरोध : पुरानी यादें नई यादों में हस्तक्षेप करती हैं
(C) अर्थगत स्मृति : व्यक्तिगत घटनाओं की स्मृति
(D) प्रासंगिक स्मृति : जीवन की घटनाओं की स्मृति

68. समस्या-समाधान में एक "समस्या" की प्रकृति ऐसी स्थिति है जहाँ:
(A) पहुँचने के लिए एक लक्ष्य है, लेकिन लक्ष्य तक जाने का रास्ता तुरंत स्पष्ट नहीं है।
(B) समाधान तुरंत स्पष्ट है।
(C) व्यक्ति के पास समाधान खोजने की कोई अभिप्रेरणा नहीं है।
(D) लक्ष्य तक पहुँचने का केवल एक ही संभव मार्ग है।

69. सृजनात्मक चिंतन के संदर्भ में निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
I. कार्यात्मक स्थिरता
II. अपसारी चिंतन
III. आंतरिक अभिप्रेरणा
निम्नलिखित में से कौन आमतौर पर सकारात्मक प्रभाव से नकारात्मक प्रभाव के क्रम को दर्शाता है?
(A) I, II, III
(B) II, III, I
(C) III, I, II
(D) I, III, II

70. "यह जानना कि आप जानते हैं" या "यह जानना कि आप क्या नहीं जानते हैं" किसका वर्णन करने का एक सरल तरीका है?
(A) परा-स्मृति
(B) अर्थगत स्मृति
(C) प्रक्रियात्मक स्मृति
(D) प्रतिध्वन्यात्मक स्मृति

71. अर्थगत स्मृति के मॉडल अक्सर ज्ञान का प्रतिनिधित्व करने के लिए किस प्रकार की संरचना का उपयोग करते हैं?
(A) एक रैखिक सूची
(B) तथ्यों का एक यादृच्छिक वर्गीकरण
(C) एक कालानुक्रमिक समयरेखा
(D) एक पदानुक्रमित या नेटवर्क संरचना

72. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. संप्रत्यय किसी श्रेणी का मानसिक प्रतिनिधित्व है।
II. संप्रत्यय निर्माण सूचनाओं को सार्थक समूहों में वर्गीकृत करने की प्रक्रिया है।
III. कृत्रिम संप्रत्ययों के विपरीत, प्राकृतिक संप्रत्यय नियमों के एक सटीक समूह द्वारा परिभाषित होते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

73. अग्रलक्षी और पश्चलक्षी अवरोध के बीच एक मुख्य अंतर किसमें निहित है?
(A) याद रखी जाने वाली जानकारी का प्रकार।
(B) वह अवधि जिसके लिए स्मृति संचित की जाती है।

(C) हस्तक्षेप की लौकिक दिशा।
(D) स्मृति का भावनात्मक महत्व।

74. बेहतर निर्णय लेने की एक रणनीति सक्रिय रूप से ऐसी जानकारी खोजना है जो आपकी प्रारंभिक राय का खंडन करती हो। यह किस पूर्वाग्रह का मुकाबला करने में मदद करता है?
(A) उपलब्धता हेयूरिस्टिक
(B) पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह
(C) एंकरिंग पूर्वाग्रह
(D) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह

75. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): समस्या समाधान और निर्णय लेने में हेयूरिस्टिक्स मूल्यवान उपकरण हैं।
कारण (R): वे चरण-दर-चरण प्रक्रियाएं हैं जो हमेशा सही उत्तर की गारंटी देती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

76. स्मृति की 'प्रकृति' में कौन सी तीन प्रमुख प्रक्रियाएं शामिल हैं?
(A) चिंतन, अनुभव और क्रिया
(B) कूटलेखन, संचयन और पुनर्प्राप्ति
(C) संवेदन, प्रत्यक्षण और अवधान
(D) अधिगम, विस्मरण और पुन: अधिगम

77. निम्नलिखित में से कौन सा दीर्घकालिक स्मृति का प्रकार नहीं है?
(A) प्रासंगिक
(B) अर्थगत
(C) प्रक्रियात्मक
(D) प्रतिबिंबात्मक

78. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (चिंतन अवधारणा)
P. सृजनात्मक चिंतन
Q. भाषा की भूमिका
R. संप्रत्यय निर्माण
S. समस्या समाधान
सूची II: (विवरण)
1. साझा गुणों के आधार पर वस्तुओं को वर्गीकृत करना।
2. नए और उपयोगी विचार उत्पन्न करना।
3. लक्ष्य तक पहुँचने के लिए बाधाओं को पार करना।
4. विचारों का प्रतिनिधित्व करने और उनमें हेरफेर करने के लिए प्रतीकों का उपयोग करना।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

79. उन मानसिक ढांचों के लिए क्या शब्द है जो हमें जानकारी व्यवस्थित करने में मदद करते हैं, जो उपयोगी हो सकते हैं लेकिन स्मृति त्रुटियों का कारण भी बन सकते हैं?
(A) हेयूरिस्टिक्स
(B) एल्गोरिदम
(C) स्कीमा
(D) अवरोध

80. वह विस्मरण जो इसलिए होता है क्योंकि जानकारी को शुरु में दीर्घकालिक स्मृति में नहीं डाला गया था, कहलाता है:
(A) कूटलेखन विफलता
(B) पुनर्प्राप्ति विफलता
(C) हस्तक्षेप
(D) अभिप्रेरित विस्मरण

81. चिंतन के संबंध में कौन सा कथन सबसे सटीक है?
(A) चिंतन एक सरल, एकल प्रक्रिया है।
(B) जानवर किसी भी प्रकार के चिंतन में असमर्थ होते हैं।
(C) चिंतन भाषा का पर्यायवाची है।
(D) चिंतन में तर्क, समस्या समाधान और निर्णय लेने जैसी विभिन्न मानसिक गतिविधियाँ शामिल हैं।

82. समस्या-समाधान की ऐसी रणनीति का उपयोग करते रहने की प्रवृत्ति जो अतीत में काम कर चुकी है, भले ही वह अब प्रभावी न हो, कहलाती है:
(A) कार्यात्मक स्थिरता
(B) मानसिक विन्यास
(C) एक हेयूरिस्टिक
(D) अंतर्दृष्टि

83. निम्नलिखित में से कौन परा-संज्ञान का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) किसी के विचारों की सामग्री।
(B) सूचना प्रसंस्करण की गति।
(C) स्वयं की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के बारे में जागरूकता और नियमन।
(D) विशिष्ट तथ्यों और घटनाओं की स्मृति।

84. सृजनात्मक चिंतन के संदर्भ में, 'अभिसारी चिंतन' में शामिल है:
(A) कई अलग-अलग संभावित उत्तर उत्पन्न करना।
(B) अव्यवस्थित और असंरचित तरीके से सोचना।
(C) अंतर्दृष्टि की अचानक चमक।
(D) एकमात्र सर्वोत्तम उत्तर खोजने के लिए संभावनाओं को कम करना।

85. स्मृति घटकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कूटलेखन स्मृति प्रणाली में जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया है।

II. संचयन समय के साथ कूटबद्ध जानकारी का प्रतिधारण है।
III. पुनर्प्राप्ति स्मृति भंडारण से जानकारी निकालने की प्रक्रिया है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

86. एक रसोइया जिसे अचानक अहसास होता है कि लहसुन की कली को कुचलने के लिए नींबू निचोड़ने वाली मशीन का उपयोग किया जा सकता है, वह किस पर विजय पा रहा है?
(A) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
(B) कार्यात्मक स्थिरता
(C) पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह
(D) एक मानसिक विन्यास

87. निम्नलिखित में से कौन सा कारक सबसे अधिक संभावना है कि बेहतर निर्णय लेने की ओर ले जाए?
(A) बढ़ा हुआ भावनात्मक उत्तेजन
(B) किसी निष्कर्ष पर पहुंचने में जल्दबाजी करना
(C) जानकारी के एक ही अंश पर अत्यधिक निर्भरता
(D) सावधानीपूर्वक विश्लेषण और सामान्य पूर्वाग्रहों से बचना

88. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): पश्चलक्षी अवरोध तब होता है जब नया अधिगम पुरानी जानकारी को याद करने में बाधा डालता है।
कारण (R): ऐसा इसलिए होता है क्योंकि नई प्राप्त जानकारी पहले से संचित स्मृतियों को अधिलिखित कर देती है या बाधित करती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

89. "पेरिस फ्रांस की राजधानी है" जैसे सामान्य विश्व ज्ञान को संचित करने वाली स्मृति का प्रकार है:
(A) प्रासंगिक स्मृति
(B) प्रक्रियात्मक स्मृति
(C) अर्थगत स्मृति
(D) संवेदी स्मृति

90. निम्नलिखित सभी संप्रत्यय निर्माण को प्रभावित करने वाले कारक हैं, सिवाय:
(A) व्यक्ति की प्रतिबिंबात्मक स्मृति की क्षमता।
(B) संप्रत्यय की जटिलता।
(C) प्रस्तुत किए गए उदाहरणों के प्रकार।
(D) शिक्षार्थी का मौजूदा ज्ञान।

91. निम्नलिखित स्मृति भंडारणों पर विचार कीजिए:
I. दीर्घकालिक स्मृति
II. संवेदी स्मृति
III. अल्पकालिक स्मृति

निम्नलिखित में से कौन सा संक्षिप्ततम अवधि से सबसे लंबी अवधि तक के क्रम को दर्शाता है?
(A) I, II, III
(B) II, III, I
(C) III, II, I
(D) II, I, III

92. कॉलेज के अपने पहले दिन को याद रखना किस प्रकार की स्मृति का उदाहरण है?
(A) अर्थगत स्मृति
(B) प्रासंगिक स्मृति
(C) प्रक्रियात्मक स्मृति
(D) अंतर्निहित स्मृति

93. एक 'प्रोटोटाइप' को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:
(A) किसी संप्रत्यय का सबसे पहला सीखा गया उदाहरण।
(B) संप्रत्यय निर्माण में तुलना के लिए उपयोग किया जाने वाला एक गैर-उदाहरण।
(C) किसी संप्रत्यय श्रेणी का सबसे अच्छा उदाहरण या सबसे विशिष्ट सदस्य।
(D) किसी संप्रत्यय का एक त्रुटिपूर्ण या गलत मानसिक प्रतिनिधित्व।

94. "भाषा चिंतन को प्रभावित करती है लेकिन पूरी तरह से निर्धारित नहीं करती है" यह कथन किस परिकल्पना का अधिक उदार संस्करण है?
(A) हस्तक्षेप परिकल्पना
(B) ह्रास परिकल्पना
(C) स्प्रेडिंग एक्टिवेशन परिकल्पना
(D) भाषाई सापेक्षता परिकल्पना

95. अर्थगत स्मृति के मॉडल में, संप्रत्ययों को अक्सर पदानुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है। इसका अर्थ है कि:
(A) अधिक सामान्य संप्रत्ययों को अधिक विशिष्ट संप्रत्ययों के ऊपर रखा जाता है।
(B) सभी संप्रत्यय विस्तार के समान स्तर पर संचित होते हैं।
(C) संप्रत्यय यादृच्छिक, गैर-संबंधात्मक तरीके से संचित होते हैं।
(D) प्रत्येक संप्रत्यय दूसरों से पूरी तरह स्वतंत्र रूप से संचित होता है।

96. समस्या समाधान की किस विधि में सही समाधान मिलने तक सभी संभावित समाधानों को आजमाना शामिल है?
(A) हेयूरिस्टिक
(B) प्रयास और त्रुटि
(C) अंतर्दृष्टि

(D) उपमा

97. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: "पुस्तकालय" के लिए किसी व्यक्ति के स्कीमा में किताबें, अलमारियां और शांति शामिल हो सकती हैं।
कथन II: पुस्तकालय जाने की कहानी को याद करते समय, यह स्कीमा व्यक्ति को गलत तरीके से यह याद दिलाने का कारण बन सकता है कि लाइब्रेरियन ने "शश..." कहा था, भले ही वह कहानी में न हो।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

98. किसी समस्या को नए दृष्टिकोण से देखने में विफलता समस्या समाधान में एक बड़ी बाधा है और इसे कहा जाता है:
(A) नियतन या स्थिरीकरण
(B) अंतर्दृष्टि
(C) एल्गोरिदम
(D) हेयूरिस्टिक

99. निम्नलिखित में से कौन निर्णय लेने में पूर्वाग्रह नहीं है?
(A) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
(B) पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह
(C) भविष्योन्मुखी पूर्वाग्रह
(D) एंकरिंग पूर्वाग्रह

100. 'परा-स्मृति' शब्द विशेष रूप से व्यक्ति के किसके ज्ञान और विश्वासों को संदर्भित करता है?
(A) उनकी अपनी स्मृति प्रणाली और इसकी कार्यप्रणाली।
(B) भाषा की प्रकृति।
(C) तार्किक तर्क के सिद्धांत।
(D) समस्या समाधान की प्रक्रिया।

101. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (स्मृति परिघटना)
P. अग्रलक्षी अवरोध
Q. पश्चलक्षी अवरोध
R. ह्रास
S. पुनर्प्राप्ति संकेत
सूची II: (विशेषता)
1. समय के साथ स्मृति का धुंधला होना
2. एक उत्तेजना जो जानकारी को याद करने में मदद करती है
3. पिछला अधिगम नए अधिगम में बाधा डालता है
4. नया अधिगम पुराने अधिगम को याद करने में बाधा डालता है
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

102. हस्तक्षेप के दो प्राथमिक प्रकार क्या हैं जो दीर्घकालिक स्मृति में विस्मरण का कारण बनते हैं?
(A) अग्रगामी और प्रतिगामी
(B) अग्रलक्षी और पश्चलक्षी
(C) अंतर्निहित और स्पष्ट
(D) अर्थगत और प्रासंगिक

103. चिंतन को किसके मानसिक हेरफेर के रूप में परिभाषित किया जा सकता है?
(A) भौतिक वस्तुएं
(B) केवल संवेदी इनपुट
(C) सूचना के प्रतिनिधित्व
(D) सामाजिक अंतःक्रियाएं

104. सृजनात्मक चिंतन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी विशेषता नवीनता और मौलिकता है।
II. यह अपसारी चिंतन से निकटता से जुड़ा हुआ है।
III. यह कठोर वातावरण और विफलता के डर से बाधित हो सकता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

105. एक व्यक्ति जो एक नए, तेज़ राजमार्ग बनने के बावजूद गंतव्य तक जाने के लिए पुराने, अक्षम मार्ग का उपयोग करना जारी रखता है, वह क्या प्रदर्शित कर रहा है?
(A) कार्यात्मक स्थिरता
(B) उपलब्धता हेयूरिस्टिक
(C) एक मानसिक विन्यास
(D) पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह

106. समस्या समाधान में, 'अंतर्दृष्टि' का तात्पर्य है:
(A) चरण-दर-चरण एल्गोरिदम का उपयोग।
(B) किसी समस्या के समाधान का अचानक और अक्सर नया अहसास।
(C) एक व्यावहारिक चिंतन रणनीति।
(D) समस्या की स्थिति की प्रारंभिक परिभाषा।

107. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): स्मृति सुधार के लिए एक अच्छी रणनीति सविस्तार रिहर्सल है।
कारण (R): सविस्तार रिहर्सल में जानकारी को तब तक बार-बार दोहराना शामिल है जब तक कि वह याद न हो जाए।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या

नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

108. निम्नलिखित सभी बेहतर निर्णय लेने के कारकों के उदाहरण हैं, सिवाय:
(A) पूरी तरह से भावनात्मक प्रतिक्रियाओं पर निर्भर रहना।
(B) कई विकल्प उत्पन्न करना।
(C) प्रत्येक विकल्प के पक्ष और विपक्ष का मूल्यांकन करना।
(D) व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के बारे में जागरूक होना।

109. निम्नलिखित में से कौन सी एक खराब परिभाषित समस्या का उदाहरण है?
(A) 2+x=5 जैसे गणितीय समीकरण को हल करना।
(B) भूलभुलैया से बाहर निकलने का रास्ता खोजना।
(C) विश्व शांति कैसे प्राप्त करें, यह पता लगाना।
(D) निर्देशों के साथ फर्नीचर के एक टुकड़े को असेंबल करना।

110. "स्कीमा" की अवधारणा यह समझने के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक है कि:
(A) नई जानकारी कैसे व्यवस्थित होती है और मौजूदा ज्ञान के साथ एकीकृत होती है।
(B) संवेदी जानकारी शुरू में कैसे पंजीकृत होती है।
(C) मस्तिष्क में यादें शारीरिक रूप से कैसे नष्ट होती हैं।
(D) हस्तक्षेप विस्मरण का कारण कैसे बनता है।

111. कौन सा कथन स्मृति के घटक का गलत वर्णन करता है?
(A) अल्पकालिक स्मृति उस जानकारी को रखती है जो वर्तमान में उपयोग में है।
(B) संवेदी स्मृति आने वाली उत्तेजनाओं के लिए एक संक्षिप्त बफर के रूप में कार्य करती है।
(C) कार्यकारी स्मृति एक सक्रिय प्रणाली है जो अल्पकालिक स्मृति में जानकारी का हेरफेर करती है।
(D) दीर्घकालिक स्मृति पुरानी जानकारी का एक निष्क्रिय गोदाम है।

112. संप्रत्यय निर्माण की प्रकृति में शामिल है:
(A) एक एकल, विशिष्ट तथ्य सीखना।
(B) विभिन्न उत्तेजनाओं के बीच सामान्य विशेषताओं की पहचान करना।
(C) आत्मकथात्मक घटनाओं को संचित करना।
(D) अग्रलक्षी अवरोध पर विजय पाना।

113. निम्नलिखित निर्णय लेने के चरणों पर विचार कीजिए:
I. निर्णय को लागू करना
II. किए जाने वाले निर्णय की पहचान करना
III. परिणाम का मूल्यांकन करना
IV. जानकारी इकट्ठा करना और विकल्पों की पहचान करना
निम्नलिखित में से कौन तार्किक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) II, IV, I, III
(B) IV, II, I, III
(C) I, II, IV, III
(D) II, I, IV, III

114. "उपलब्धता हेयूरिस्टिक" एक पूर्वाग्रह है जिसमें लोग किस पर आधारित निर्णय लेते हैं?
(A) उन्हें प्राप्त जानकारी के पहले अंश पर।
(B) ऐसी जानकारी पर जो उनके मौजूदा विश्वासों की पुष्टि करती है।
(C) इस विश्वास पर कि कोई घटना होने के बाद पूर्वानुमेय थी।
(D) उस सुगमता पर जिसके साथ वे किसी चीज को मन में ला सकते हैं।

115. अधिकांश संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार चिंतन में भाषा क्या भूमिका निभाती है?
(A) यह एक उपकरण है जो जटिल चिंतन को सुगम बनाता है और आकार देता है।
(B) इसकी कोई भूमिका नहीं है; चिंतन पूरी तरह से गैर-मौखिक है।
(C) यह चिंतन के समान है; एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं हो सकता।
(D) यह केवल विचारों के पूरी तरह से बन जाने के बाद उन्हें संप्रेषित करने का कार्य करती है।

116. एक छात्र इंद्रधनुष के रंगों को संक्षिप्त नाम "VIBGYOR" का उपयोग करके याद रखता है। यह किसका उदाहरण है?
(A) एक स्कीमा
(B) एक स्मृति-सहायक युक्ति
(C) परा-संज्ञान
(D) पश्चलक्षी अवरोध

117. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: समस्या समाधान में मानसिक विन्यास या कार्यात्मक स्थिरता जैसे कारकों द्वारा बाधा उत्पन्न हो सकती है।
कथन II: समस्या समाधान हमेशा एक तर्कसंगत और तार्किक प्रक्रिया होती है, जो संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों से अप्रभावित रहती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

118. विस्मरण का कौन सा सिद्धांत यह मानता है कि अन्य यादों की उपस्थिति लक्षित स्मृति की पुनर्प्राप्ति में बाधा डालती है?
(A) हस्तक्षेप सिद्धांत
(B) ह्रास सिद्धांत
(C) स्कीमा सिद्धांत
(D) अभिप्रेरणा सिद्धांत

119. सृजनात्मक चिंतन की एक परिभाषित विशेषता है:
(A) गणना की गति।
(B) स्थापित नियमों का पालन।
(C) नवीन और उपयुक्त विचारों का उत्पादन।
(D) तथ्यों को रटकर याद करना।

120. निम्नलिखित में से कौन स्मृति का प्रकार नहीं है?
(A) अर्थगत
(B) प्रासंगिक
(C) प्रक्रियात्मक
(D) हेयूरिस्टिक

121. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. परा-संज्ञान "चिंतन के बारे में सोचना" है।
II. परा-स्मृति परा-संज्ञान का एक घटक है।
III. परा-संज्ञानात्मक कौशल में सुधार से बेहतर अधिगम परिणाम मिल सकते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

122. विरोधाभासी साक्ष्यों की अनदेखी करते हुए अपने मौजूदा विश्वासों का समर्थन करने वाली जानकारी खोजने और उसका पक्ष लेने की प्रवृत्ति कहलाती है:
(A) पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह
(B) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
(C) उपलब्धता हेयूरिस्टिक
(D) कार्यात्मक स्थिरता

123. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. अग्रलक्षी अवरोध
Q. स्कीमा
R. हेयूरिस्टिक
S. परा-संज्ञान
सूची II: (संबद्ध विचार)
1. मानसिक शॉर्टकट
2. स्वयं के चिंतन के बारे में जागरूकता
3. मानसिक ढांचा
4. पुराना नए में हस्तक्षेप करता है
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

124. स्मृति के मूलभूत घटक हैं:
(A) इनपुट, प्रक्रिया, आउटपुट
(B) अल्पकालिक, दीर्घकालिक, संवेदी स्मृति
(C) विस्मरण, याद रखना, पुनः अधिगम
(D) कूटलेखन, संचयन, पुनर्प्राप्ति

125. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): समस्या समाधान में, एल्गोरिदम समाधान खोजने की एक गारंटीकृत विधि है।
कारण (R): एल्गोरिदम में चरणों का एक विशिष्ट समूह होता है, जिसका यदि सही ढंग से पालन किया जाए, तो वह किसी विशेष प्रकार की समस्या के लिए हमेशा सही उत्तर देगा।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

126. एक छात्रा जिसने अभी-अभी संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों के बारे में सीखा है, वह उन्हें अपने दोस्तों के निर्णयों में हर जगह देखने लगती है। यह किसका उदाहरण हो सकता है?
(A) पश्चलक्षी अवरोध
(B) उपलब्धता हेयूरिस्टिक
(C) कार्यात्मक स्थिरता
(D) ह्रास सिद्धांत

127. निम्नलिखित में से कौन प्रक्रियात्मक स्मृति का एक उदाहरण है?
(A) जापान की राजधानी जानना।
(B) साइकिल चलाना जानना।
(C) अपने 10वें जन्मदिन की पार्टी याद रखना।
(D) "न्याय" की अवधारणा को समझना।

128. सृजनात्मक चिंतन को बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है:
(A) ऐसा कार्य वातावरण जो जोखिम लेने को प्रोत्साहित करता है और विफलता को सहन करता है।
(B) एक अत्यधिक आलोचनात्मक और मूल्यांकनात्मक वातावरण।
(C) सामाजिक मानदंडों के प्रति उच्च स्तर की अनुरूपता।
(D) अन्य सभी को छोड़कर केवल अभिसारी चिंतन पर ध्यान केंद्रित करना।

129. स्मृति के "अर्थ" को इसके किस कार्य के रूप में सबसे अच्छी तरह समझा जा सकता है:
(A) चेतना की अनुमति देना।
(B) नई संवेदी जानकारी बनाना।
(C) अतीत के अनुभवों को वर्तमान कार्यों से जोड़ना।
(D) शारीरिक कार्यों को नियंत्रित करना।

130. "पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह" किसकी प्रवृत्ति है?
(A) हाल की घटनाओं के महत्व को बढ़ा-चढ़ाकर आंकना।
(B) अपने विश्वासों की पुष्टि करने वाली जानकारी खोजना।

(C) दी गई जानकारी के पहले अंश पर बहुत अधिक निर्भर रहना।
(D) किसी घटना के होने के बाद यह विश्वास करना कि किसी ने इसकी भविष्यवाणी की होगी।

131. निम्नलिखित में से कौन स्मृति अवधारणा को उसकी परिभाषा के साथ सही ढंग से सुमेलित करता है?
(A) अग्रलक्षी अवरोध: पुरानी जानकारी को याद करने पर नए अधिगम का विघटनकारी प्रभाव।
(B) पश्चलक्षी अवरोध: नई जानकारी को याद करने पर पिछले अधिगम का विघटनकारी प्रभाव।
(C) परा-स्मृति: अपनी स्मृति और उसकी कार्यप्रणाली के बारे में ज्ञान।
(D) स्कीमा: समय के साथ जानकारी भूलने की प्रक्रिया।

132. संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया में ये दोनों शामिल हैं:
(A) कूटलेखन और पुनर्प्राप्ति
(B) सामान्यीकरण और विभेदीकरण
(C) अग्रलक्षी और पश्चलक्षी अवरोध
(D) एल्गोरिदम और हेयूरिस्टिक्स

133. एक व्यक्ति जो बिना किसी प्रारंभिक निर्णय के अधिक से अधिक समाधान उत्पन्न करके किसी समस्या को हल करने का प्रयास कर रहा है, वह किसमें संलग्न है:
(A) कार्यात्मक स्थिरता
(B) एक मानसिक विन्यास
(C) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
(D) मंथन

134. अल्पकालिक स्मृति और दीर्घकालिक स्मृति के बीच संबंध के बारे में कौन सा कथन सबसे सटीक है?
(A) दीर्घकालिक स्मृति में जाने के लिए जानकारी को अल्पकालिक स्मृति से गुजरना होगा।
(B) वे दो पूरी तरह से अलग और असंबंधित प्रणालियाँ हैं।
(C) दीर्घकालिक स्मृति की क्षमता अल्पकालिक स्मृति की तुलना में कम होती है।
(D) दीर्घकालिक स्मृति में जानकारी अल्पकालिक स्मृति की तुलना में अधिक तेज़ी से नष्ट होती है।

135. उन सभी अलग-अलग तरीकों के बारे में सोचना जिनसे आप ईंट का उपयोग कर सकते हैं, किसका अभ्यास है:
(A) अभिसारी चिंतन
(B) एक मानसिक विन्यास
(C) अपसारी चिंतन
(D) एक एल्गोरिदम

136. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: स्प्रेडिंग एक्टिवेशन जैसे अर्थगत स्मृति के मॉडल प्रस्तावित करते हैं कि संबंधित संप्रत्यय एक साथ जुड़े हुए हैं।
कथन II: नेटवर्क में एक संप्रत्यय को सक्रिय करने से संबंधित संप्रत्ययों तक पहुँचना आसान हो सकता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

137. निम्नलिखित में से किसे बेहतर निर्णय लेने का कारक नहीं माना जाता है?
(A) पर्याप्त जानकारी एकत्र करना
(B) आवेगी चुनाव करना
(C) विकल्पों की पहचान और मूल्यांकन करना
(D) संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों के प्रति जागरूक होना

138. एल्गोरिदम और हेयूरिस्टिक के बीच मुख्य अंतर यह है कि एल्गोरिदम _________, जबकि हेयूरिस्टिक _________।
(A) समाधान की गारंटी देता है; समाधान की गारंटी नहीं देता है
(B) एक शॉर्टकट है; एक लंबी प्रक्रिया है
(C) त्रुटियों की संभावना वाला है; हमेशा सटीक होता है
(D) विशेषज्ञों द्वारा उपयोग किया जाता है; नौसिखियों द्वारा उपयोग किया जाता है

139. स्कीमा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. स्कीमा बड़ी मात्रा में जानकारी को कुशलतापूर्वक व्यवस्थित करने और व्याख्या करने में मदद करते हैं।
II. स्कीमा सामाजिक जानकारी को अत्यधिक सरल बनाकर रुढ़िवादिता पैदा कर सकते हैं।
III. स्कीमा हमेशा सचेत रूप से सुलभ होते हैं और आसानी से संशोधित किए जा सकते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

140. किसी दर्दनाक घटना को भूल जाना किसका उदाहरण हो सकता है:
(A) अग्रलक्षी अवरोध
(B) ह्रास
(C) पश्चलक्षी अवरोध
(D) अभिप्रेरित विस्मरण

141. चिंतन की प्रकृति का सबसे अच्छा वर्णन किया जा सकता है:
(A) अचेतन और स्वचालित
(B) हमेशा तार्किक और तर्कसंगत
(C) मानसिक अभ्यावेदन का एक विचारशील और सचेत हेरफेर
(D) भाषा और संप्रत्ययों से स्वतंत्र

142. एक सामान्य मॉडल के अनुसार सृजनात्मक चिंतन के निम्नलिखित चरणों पर विचार कीजिए:
I. उद्भवन

II. प्रमाणीकरण
III. तैयारी
IV. प्रदीप्ति
निम्नलिखित में से कौन सही क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) III, I, IV, II
(B) I, III, II, IV
(C) III, IV, I, II
(D) II, I, III, IV

143. निम्नलिखित में से कौन परा-संज्ञान का एक घटक है?
(A) प्रक्रियात्मक कौशल
(B) अर्थगत ज्ञान
(C) संज्ञानात्मक कार्य की योजना बनाना और निगरानी करना
(D) संवेदी प्रत्यक्षण

144. यह सिद्धांत कि अल्पकालिक स्मृति में विस्मरण समय बीतने के कारण होता है, कहलाता है:
(A) हस्तक्षेप सिद्धांत
(B) पुनर्प्राप्ति विफलता सिद्धांत
(C) अवरोध सिद्धांत
(D) ह्रास सिद्धांत

145. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (शब्द)
P. संप्रत्यय
Q. हेयूरिस्टिक
R. स्कीमा
S. मानसिक विन्यास
सूची II: (सबसे अच्छा उदाहरण)
1. किसी परियोजना के पूरा होने के समय का अनुमान लगाने के लिए व्यावहारिक नियम का उपयोग करना।
2. "फर्नीचर" की श्रेणी।
3. एक विशेषज्ञ शतरंज खिलाड़ी की अंतर्निहित रणनीतियाँ जो उन्हें एक नई चाल के प्रति अंधा कर देती हैं।
4. जब आप किसी रेस्तरां में जाते हैं तो क्या होता है, इसका आपका सामान्य ज्ञान।
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

146. एक व्यक्ति जो नए पते पर जाने के बाद अपना पुराना पता याद नहीं रख पा रहा है, वह किसका अनुभव कर रहा है:
(A) अग्रलक्षी अवरोध
(B) पश्चलक्षी अवरोध
(C) अग्रगामी स्मृति लोप
(D) स्मृति ह्रास

147. निम्नलिखित सभी चिंतन के प्रकार हैं, सिवाय:
(A) स्वलीन चिंतन
(B) सृजनात्मक चिंतन
(C) अवरुद्ध चिंतन
(D) यथार्थवादी चिंतन

148. संप्रत्ययों के निर्माण में एक प्रमुख कारक किसकी पहचान करने की क्षमता है:
(A) प्रत्येक वस्तु की विशिष्टता।
(B) घटनाओं का लौकिक क्रम।
(C) किसी स्थिति का भावनात्मक संदर्भ।
(D) किसी श्रेणी के सदस्यों द्वारा साझा की गई सामान्य विशेषताएं।

149. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): लोग अक्सर समस्या को फ्रेम करने के तरीके के आधार पर अलग-अलग निर्णय लेते हैं।
कारण (R): यह फ्रेमिंग प्रभाव एक संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जो विशुद्ध रूप से तर्कसंगत निर्णय लेने से विचलन को प्रदर्शित करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

150. जानकारी को अल्पकालिक स्मृति से दीर्घकालिक स्मृति में ले जाने के लिए कौन सा कारक सबसे महत्वपूर्ण है?
(A) संवेदी तीक्ष्णता
(B) गहन प्रसंस्करण और रिहर्सल
(C) आनुवंशिक प्रवृत्ति
(D) अग्रलक्षी अवरोध

151. समस्या-समाधान के लिए निम्नलिखित में से कौन सी एक खराब रणनीति है?
(A) एक बड़ी समस्या को छोटे, प्रबंधनीय भागों में तोड़ना।
(B) लक्ष्य से पीछे की ओर कार्य करना।
(C) ऐसी रणनीति पर टिके रहना जो बार-बार विफल हुई हो।
(D) किसी समान समस्या के साथ उपमा बनाना।

152. "वह मानसिक गतिविधि जो मस्तिष्क में तब होती है जब कोई व्यक्ति जानकारी को व्यवस्थित करने, समझने और दूसरों को जानकारी संप्रेषित करने का प्रयास कर रहा होता है" किसकी एक व्यापक परिभाषा है:
(A) स्मृति
(B) प्रत्यक्षण
(C) संवेदन
(D) चिंतन

153. समस्या-समाधान में मुख्य चुनौतियों में से एक _________ पर विजय पाना है, जो किसी वस्तु को उसके सामान्य कार्य के अलावा किसी अन्य कार्य के रूप में देखने में असमर्थता है।
(A) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
(B) मानसिक विन्यास
(C) कार्यात्मक स्थिरता
(D) पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह

154. एक छात्र यह तय करता है कि वह गणित में कमजोर है और बाद में गणित की कक्षाओं से बचता है, आंशिक रूप से क्योंकि वह वैकल्पिक अध्ययन रणनीतियों की तलाश नहीं करता है। यह किससे संबंधित है:
(A) अग्रलक्षी अवरोध
(B) अर्थगत स्मृति विफलता
(C) प्रासंगिक स्मृति प्रत्यानयन
(D) परा-संज्ञान

155. स्मृति अवरोध के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अग्रलक्षी अवरोध तब होता है जब पुरानी जानकारी नई जानकारी के अधिगम में बाधा डालती है।
II. पश्चलक्षी अवरोध तब होता है जब नई जानकारी पुरानी जानकारी को याद करने में बाधा डालती है।
III. दोनों प्रकार के अवरोध हस्तक्षेप के रूप हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

156. निर्णय लेने के संदर्भ में, 'डूबी हुई लागत का भ्रम' एक पूर्वाग्रह है जहाँ व्यक्ति:
(A) आसानी से याद किए गए उदाहरणों के आधार पर चुनाव करता है।
(B) पहले से निवेश किए गए संसाधनों के परिणामस्वरूप किसी व्यवहार या प्रयास को जारी रखता है।
(C) यह मानता है कि अतीत की घटनाएं वास्तव में होने की तुलना में अधिक पूर्वानुमेय थीं।
(D) ऐसी जानकारी चाहता है जो उसकी प्रारंभिक परिकल्पना की पुष्टि करे।

157. एक 'प्राकृतिक संप्रत्यय' वह है जो:
(A) नियमों और विशेषताओं के एक सख्त समूह द्वारा परिभाषित होता है।
(B) वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान उद्देश्यों के लिए बनाया गया है।
(C) जन्म से ही स्वाभाविक रूप से ज्ञात होता है।
(D) प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से सीखा जाता है और इसकी सीमाएं धुंधली होती हैं।

158. चिंतन में भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अनुमति देती है:
(A) अमूर्त संप्रत्ययों के प्रतिनिधित्व और हेरफेर की।
(B) कच्ची और जटिल मानवीय भावनाओं के आंतरिक अनुभव की।
(C) विभिन्न संवेदी उत्तेजनाओं के प्रत्यक्ष और निष्क्रिय बोध की।
(D) विभिन्न जटिल मोटर कौशलों के स्वचालित निष्पादन की।

159. क्रिया में परा-स्मृति का सबसे अच्छा उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) अपना घर का पता याद करना।
(B) बिना सोचे-समझे साइकिल चलाना।
(C) यह पहचानना कि नामों की लंबी सूची याद रखने के लिए आपको स्मृति-सहायक युक्ति का उपयोग करने की आवश्यकता है।
(D) किसी सुखद घटना को याद करके खुशी महसूस करना।

160. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (पूर्वाग्रह)
P. एंकरिंग पूर्वाग्रह
Q. पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
R. पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह
S. उपलब्धता हेयूरिस्टिक
सूची II: (चिंतन त्रुटि)
1. "मुझे यह पहले से ही पता था!"
2. "मैंने जो पहली संख्या सुनी वह सबसे महत्वपूर्ण होनी चाहिए।"
3. "मैं केवल वही समाचार स्रोत पढ़ता हूँ जो मेरे विचारों से सहमत हैं।"
4. "मैं शार्क के हमलों के बारे में खबरें देखता रहता हूँ, इसलिए वे बहुत आम होने चाहिए।"
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

161. विस्मरण का कौन सा सिद्धांत सुझाव देता है कि विस्मरण उपयुक्त पुनर्प्राप्ति संकेतों की कमी के कारण होता है?
(A) पुनर्प्राप्ति विफलता सिद्धांत
(B) ह्रास सिद्धांत
(C) हस्तक्षेप सिद्धांत
(D) अभिप्रेरित विस्मरण सिद्धांत

162. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: सृजनात्मक चिंतन पूरी तरह से उच्च बुद्धि का उत्पाद है।
कथन II: व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा और पर्यावरण जैसे कारक भी सृजनात्मक चिंतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

163. स्मृति में स्कीमा का प्राथमिक कार्य है:
(A) विवरणों का सटीक स्मरण सुनिश्चित करना।
(B) अग्रलक्षी अवरोध को रोकना।
(C) नई जानकारी के लिए एक संगठनात्मक ढांचा प्रदान करना।
(D) यादों को कालानुक्रमिक क्रम में संचित करना।

164. उन समस्याओं को हल करने के लिए किस प्रकार का चिंतन सबसे उपयोगी है जिनका एक ही सही उत्तर है?
(A) अपसारी चिंतन
(B) सृजनात्मक चिंतन
(C) साहचर्य चिंतन
(D) अभिसारी चिंतन

165. दीर्घकालिक स्मृति के तीन प्रमुख प्रकार हैं:
(A) संवेदी, अल्पकालिक, दीर्घकालिक
(B) अग्रलक्षी, पश्चलक्षी, अवरुद्ध
(C) प्रासंगिक, अर्थगत, प्रक्रियात्मक
(D) कूटलेखन, संचयन, पुनर्प्राप्ति

166. निर्णय लेने में सुधार की एक विधि स्वयं को पूर्वाग्रह मुक्त करना है, जिसमें शामिल है:
(A) स्वाभाविक अंतर्ज्ञान पर कार्य करना।
(B) अपने संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों के बारे में जागरूक होना और उन्हें सुधारना।
(C) तेजी से निर्णय लेना।
(D) केवल एक विश्वसनीय स्रोत से सलाह लेना।

167. एक व्यक्ति जिसे एक नया कंप्यूटर ऑपरेटिंग सिस्टम सीखने में संघर्ष करना पड़ रहा है क्योंकि वह अपने पुराने सिस्टम के कमांड का उपयोग करता रहता है, वह किसका अनुभव कर रहा है:
(A) पश्चलक्षी अवरोध
(B) स्मृति ह्रास
(C) कार्यात्मक स्थिरता
(D) अग्रलक्षी अवरोध

168. स्मृति प्रणाली में संवेदी जानकारी की प्रारंभिक, बहुत संक्षिप्त रिकॉर्डिंग है:
(A) संवेदी स्मृति
(B) अल्पकालिक स्मृति
(C) दीर्घकालिक स्मृति
(D) कार्यकारी स्मृति

169. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): प्रभावी स्व-नियमित अधिगम के लिए परा-संज्ञान आवश्यक है।
कारण (R): इसमें स्वयं की समझ की निगरानी करना और तदनुसार अधिगम की रणनीतियों को समायोजित करना शामिल है, जो स्व-नियमन का सार है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

170. निम्नलिखित सभी कारक समस्या समाधान को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं, सिवाय:
(A) प्रासंगिक क्षेत्र में विशेषज्ञता।
(B) एल्गोरिदम जैसा व्यवस्थित दृष्टिकोण।
(C) समस्या के बारे में सोचने के लिए उद्भवन समय।
(D) चिंता और तनाव का उच्च स्तर।

171. संप्रत्यय की 'प्रकृति' इसे क्या होने के रूप में संदर्भित करती है:
(A) भौतिक वस्तु।
(B) विशिष्ट स्मृति।
(C) मानसिक श्रेणी।
(D) संवेदी अनुभव।

172. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. समस्या समाधान में प्रारंभिक स्थिति से लक्ष्य स्थिति की ओर बढ़ना शामिल है।
II. समस्या समाधान के तरीकों में एल्गोरिदम और हेयूरिस्टिक्स शामिल हैं।
III. सभी समस्याएं स्पष्ट समाधानों के साथ अच्छी तरह से परिभाषित होती हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

173. 'लीक से हटकर सोचना' वाक्यांश किससे सबसे अधिक निकटता से जुड़ा है?
(A) अभिसारी चिंतन
(B) एक मानसिक विन्यास
(C) सृजनात्मक और अपसारी चिंतन
(D) एक एल्गोरिदम दृष्टिकोण

174. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत है?
(A) अल्पकालिक स्मृति - सीमित क्षमता
(B) दीर्घकालिक स्मृति - लंबी अवधि
(C) अर्थगत स्मृति - सामान्य ज्ञान
(D) अग्रलक्षी अवरोध - नया पुराने में हस्तक्षेप करता है

175. जानकारी को दीर्घकालिक स्मृति में स्थानांतरित करने के लिए उसे सार्थक बनाने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) सविस्तार रिहर्सल
(B) अनुरक्षण रिहर्सल
(C) संवेदी भंडारण
(D) चंकिंग

176. निर्णय लेने में कौन सा पूर्वाग्रह अपनी क्षमता और ज्ञान को बढ़ा-चढ़ाकर आंकने से जुड़ा है?
(A) एंकरिंग
(B) अति-आत्मविश्वास
(C) पश्चदृष्टि
(D) पुष्टिकरण

177. भाषा वह ________ प्रदान करती है जिसका उपयोग चिंतन में किया जाता है।
(A) भावनात्मक प्रतिक्रियाएं
(B) प्रतीक और नियम
(C) संवेदी अनुभव
(D) मोटर क्रियाएं

178. विस्मरण के हस्तक्षेप सिद्धांत का मुख्य तर्क क्या है?
(A) यादें अन्य यादों द्वारा अवरुद्ध हो जाती हैं।
(B) यादें समय के साथ धुंधली हो जाती हैं।
(C) मस्तिष्क की चोट के कारण यादें लुप्त हो जाती हैं।
(D) यादों का सक्रिय रूप से दमन किया जाता है।

179. 'पक्षी' क्या है, इस बारे में किसी व्यक्ति का सामान्य विचार, जिसमें पंख और उड़ने की क्षमता जैसी विशेषताएं शामिल हैं, किसका उदाहरण है:
(A) हेयूरिस्टिक
(B) परा-स्मृति
(C) स्कीमा या संप्रत्यय
(D) प्रक्रियात्मक स्मृति

180. निम्नलिखित में से कौन सा कारक सृजनात्मक चिंतन को बढ़ाता है?
(A) आलोचना का डर
(B) परंपरा का कठोर पालन
(C) अनुरूपता पर अत्यधिक बल
(D) विविध अनुभवों से संपर्क

181. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संज्ञानात्मक प्रक्रिया)
P. स्मृति
Q. चिंतन
R. समस्या समाधान
S. संप्रत्यय निर्माण
सूची II: (प्रमुख विशेषता)
1. लक्ष्य तक पहुँचने के लिए बाधा को पार करना।
2. मानसिक अभ्यावेदन का हेरफेर।
3. कूटलेखन, संचयन, पुनर्प्राप्ति।
4. साझा विशेषताओं के आधार पर वर्गीकरण।
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

182. समस्या-समाधान की वह प्रक्रिया जो समाधान की गारंटी देती है, कहलाती है:
(A) हेयूरिस्टिक
(B) एल्गोरिदम
(C) मानसिक विन्यास
(D) अंतर्दृष्टि

183. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: परा-संज्ञान में संज्ञान का ज्ञान और संज्ञान का नियमन दोनों शामिल हैं।
कथन II: एक छात्र जो अपने अध्ययन के समय की योजना बनाता है और अपनी समझ की निगरानी करता है, वह परा-संज्ञान में संलग्न है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

184. वह विस्मरण जो तब होता है जब पिछला अधिगम नई जानकारी को याद करने में बाधा डालता है, कहलाता है:
(A) पश्चलक्षी अवरोध
(B) ह्रास
(C) पुनर्प्राप्ति विफलता
(D) अग्रलक्षी अवरोध

185. बेहतर निर्णय लेने का एक कारक 'फ्रेमिंग प्रभाव' से बचना है, जिसका अर्थ है कि व्यक्ति को:
(A) बिना किसी उपलब्ध जानकारी के चुनाव करना चाहिए।
(B) हमेशा पहले प्रस्तुत विकल्प को चुनना चाहिए।
(C) यह पहचानना चाहिए कि विकल्पों की प्रस्तुति चुनाव को कैसे प्रभावित कर सकती है।
(D) पूरी तरह से तात्कालिक आंतरिक भावनात्मक प्रतिक्रियाओं पर निर्भर रहना चाहिए।

186. 'पक्षी' का संप्रत्यय प्राकृतिक संप्रत्यय का एक अच्छा उदाहरण है क्योंकि:
(A) यह एक सटीक गणितीय सूत्र द्वारा परिभाषित है।
(B) इसकी सीमाएं धुंधली हैं।
(C) यह केवल प्रयोगशाला सेटिंग्स में मौजूद है।
(D) यह एक बिना सीखा हुआ, जन्मजात विचार है।

187. "मानसिक मॉडल" या "मानसिक ढांचे" जो हमें जानकारी व्यवस्थित करने और व्याख्या करने में मदद करते हैं, कहलाते हैं:
(A) स्मृति-सहायक
(B) हेयूरिस्टिक्स
(C) अवरोध
(D) स्कीमा

188. इनमें से कौन समस्या समाधान की एक विधि है?
(A) साधन-साध्य विश्लेषण
(B) पश्चलक्षी अवरोध
(C) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
(D) परा-स्मृति

189. अल्पकालिक स्मृति की क्षमता आम तौर पर मानी जाती है:
(A) असीमित
(B) 20-30 सेकंड
(C) लगभग 7 +/- 2 इकाइयाँ
(D) एक एकल इकाई

190. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): स्कीमा कभी-कभी स्मृति विकृति का कारण बन सकते हैं।
कारण (R): हम अपनी स्मृति के रिक्त स्थानों को ऐसी जानकारी से भर सकते हैं जो हमारे पहले से मौजूद स्कीमा के अनुरूप हो, भले ही वह मूल अनुभव का हिस्सा न हो।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

191. सृजनात्मक चिंतन में एक प्रमुख कारक किस पर विजय पाने की क्षमता है?
(A) आंतरिक अभिप्रेरणा
(B) एक सहायक वातावरण
(C) अनुभव के प्रति खुलापन
(D) कार्यात्मक स्थिरता

192. चिंतन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. चिंतन एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है।
II. भाषा कुछ प्रकार के चिंतन के लिए उपकरण प्रदान करती है।
III. सारा चिंतन किसी समस्या को हल करने की ओर निर्देशित होता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

193. "जीभ की नोक पर" होने वाली अनुभूति विस्मरण के किस सिद्धांत का एक उदाहरण है?
(A) ह्रास
(B) हस्तक्षेप
(C) पुनर्प्राप्ति विफलता
(D) अभिप्रेरित विस्मरण

194. एक राजनेता जो केवल उन चुनावों पर ध्यान देता है जो उसे आगे दिखाते हैं, वह क्या प्रदर्शित कर रहा है:
(A) पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह
(B) उपलब्धता हेयूरिस्टिक
(C) कार्यात्मक स्थिरता
(D) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह

195. कीबोर्ड पर टाइप करना याद रखना, भले ही आप स्पष्ट रूप से प्रत्येक कुंजी का स्थान न बता सकें, किसका उदाहरण है:
(A) प्रक्रियात्मक स्मृति
(B) अर्थगत स्मृति
(C) प्रासंगिक स्मृति
(D) परा-स्मृति

196. बेहतर निर्णय लेने के लिए कौन सा कारक है?
(A) सभी संभावित जोखिमों की अनदेखी करना।
(B) प्रासंगिक जानकारी इकट्ठा करना और उसका मूल्यांकन करना।
(C) त्वरित, भावनात्मक निर्णय लेना।
(D) नए साक्ष्य सामने आने के बावजूद निर्णय पर टिके रहना।

197. स्मृति में स्कीमा की भूमिका को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:
(A) हस्तक्षेप का एक स्रोत।
(B) एक विशिष्ट आत्मकथात्मक स्मृति।
(C) एक संगठनात्मक संरचना।
(D) ह्रास के लिए एक तंत्र।

198. स्मृति के मूल अर्थ में समय के साथ अधिगम की निरंतरता शामिल है:
(A) चिंतन और समस्या समाधान के कार्य के माध्यम से।
(B) भाषा के विकास के माध्यम से।
(C) सृजनात्मक विचारों के निर्माण के माध्यम से।
(D) संचयन और पुनर्प्राप्ति की प्रक्रियाओं के माध्यम से।

199. कार खराब होने के बाद, एक आदमी केवल टो ट्रक बुलाने के बारे में ही सोच सका, ढीले हिस्से को अस्थायी रूप से ठीक करने के लिए अपने जूते के फीते का उपयोग करने के बारे में नहीं। यह किसका उदाहरण है:
(A) एक हेयूरिस्टिक
(B) अंतर्दृष्टि
(C) कार्यात्मक स्थिरता
(D) एक एल्गोरिदम

200. निर्णय लेने में, 'एंकरिंग प्रभाव' किसकी प्रवृत्ति को संदर्भित करता है?
(A) अपने मौजूदा विश्वासों की पुष्टि करने वाली जानकारी का पक्ष लेना।
(B) किसी घटना के होने के बाद उसे अधिक पूर्वानुमेय मानना।
(C) उन सूचनाओं के आधार पर निर्णय लेना जिन्हें सबसे आसानी से याद किया जा सकता है।
(D) जानकारी के प्रारंभिक अंश पर बहुत अधिक निर्भर रहना।

201. अपने स्वयं के अधिगम पर चिंतन करने, उसे समझने और नियंत्रित करने की क्षमता कहलाती है:
(A) अर्थगत स्मृति
(B) सृजनात्मक चिंतन
(C) परा-संज्ञान
(D) अग्रलक्षी अवरोध

202. वह सिद्धांत जो यह सुझाव देता है कि विस्मरण नई जानकारी द्वारा पुरानी जानकारी के विस्थापन के कारण होता है, किसका एक रूप है:
(A) ह्रास सिद्धांत
(B) हस्तक्षेप सिद्धांत
(C) पुनर्प्राप्ति विफलता सिद्धांत
(D) स्कीमा सिद्धांत

203. निम्नलिखित में से कौन समस्या समाधान की मान्यता प्राप्त विधि नहीं है?
(A) त्रुटि और प्रयास
(B) एल्गोरिदम
(C) हेयूरिस्टिक
(D) वैचारिक पूर्वाग्रह

204. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: हस्तक्षेप सिद्धांत के अनुसार अग्रलक्षी अवरोध और पश्चलक्षी अवरोध विस्मरण के दो प्रमुख तंत्र हैं।
कथन II: अग्रलक्षी अवरोध में पुरानी सामग्री के साथ नई सामग्री का हस्तक्षेप शामिल है, जबकि पश्चलक्षी अवरोध में नई सामग्री के साथ पुरानी सामग्री का हस्तक्षेप शामिल है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

205. संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में एक "संप्रत्यय" है:
(A) किसी व्यक्तिगत घटना की सजीव स्मृति।
(B) एक चरण-दर-चरण समस्या-समाधान प्रक्रिया।
(C) समान वस्तुओं का एक मानसिक समूह।
(D) याद करने में सक्षम हुए बिना जानने की भावना।

206. निम्नलिखित में से कौन सा कारक सृजनात्मक चिंतन को बढ़ावा देता है?
(A) कार्यात्मक स्थिरता
(B) एक गैर-मूल्यांकनात्मक वातावरण
(C) नियमों का कड़ाई से पालन
(D) गलतियाँ करने का डर

207. एक छात्र जो मानता है कि वह परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करेगा क्योंकि उसे लगता है कि वह सामग्री जानता है, बिना वास्तव में स्वयं का परीक्षण किए, उसमें किसकी कमी हो सकती है:
(A) अर्थगत स्मृति
(B) प्रक्रियात्मक स्मृति
(C) अग्रलक्षी अवरोध
(D) परा-संज्ञानात्मक सटीकता

208. अल्पकालिक स्मृति और दीर्घकालिक स्मृति के बीच मुख्य अंतर उनकी किस विशेषता में है?
(A) भंडारण की क्षमता और अवधि।
(B) संचित जानकारी के प्रकार।
(C) प्रमस्तिष्क में शारीरिक स्थान।
(D) अग्रलक्षी के प्रति संवेदनशीलता लेकिन पश्चलक्षी अवरोध के प्रति नहीं।

209. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (शब्द)
P. चिंतन
Q. स्मृति
R. विस्मरण
S. समस्या समाधान
सूची II: (विवरण)
1. जानकारी प्राप्त करने में असमर्थता।
2. जानकारी का मानसिक हेरफेर।
3. लक्ष्य प्राप्त करने का रास्ता खोजना।
4. समय के साथ जानकारी का प्रतिधारण।
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

210. किसी विषय के बारे में एक मानसिक ढांचा या ज्ञान का समूह है:
(A) स्कीमा
(B) हेयूरिस्टिक
(C) एल्गोरिदम
(D) अवरोध

211. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): भाषा इस बात को आकार दे सकती है कि हम दुनिया को कैसे देखते और सोचते हैं।
कारण (R): किसी भाषा में उपलब्ध शब्द और व्याकरणिक संरचनाएं उसके बोलने वालों के लिए सोचने के कुछ तरीकों

को आसान या अधिक सामान्य बना सकती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

212. निम्नलिखित में से कौन चिंतन का एक प्रकार है?
(A) प्रत्यक्षात्मक चिंतन
(B) उपरोक्त सभी
(C) संप्रत्ययात्मक चिंतन
(D) प्रतिज्ञाप्तियात्मक चिंतन

213. संप्रत्यय निर्माण में एक प्रमुख कारक किसकी प्रस्तुति है?
(A) केवल सकारात्मक उदाहरण।
(B) केवल नकारात्मक उदाहरण।
(C) सकारात्मक और नकारात्मक उदाहरण दोनों।
(D) केवल एक एकल, पूर्ण प्रोटोटाइप।

214. निम्नलिखित में से कौन सा कारक बेहतर निर्णय लेने में मदद करने के बजाय बाधा डालेगा?
(A) दीर्घकालिक परिणामों पर विचार करना।
(B) कई विकल्पों का मूल्यांकन करना।
(C) खंडन करने वाले साक्ष्य खोजना।
(D) एक परिणाम के प्रति गहरा भावनात्मक लगाव।

215. समस्या समाधान की प्रकृति अनिवार्य रूप से किसके बारे में है:
(A) वर्तमान स्थिति और वांछित लक्ष्य स्थिति के बीच विसंगति को कम करना।
(B) दीर्घकालिक स्मृति से तथ्यात्मक जानकारी को याद करना।
(C) प्रक्रियात्मक यादों का स्वचालित सक्रियण।
(D) एक नए प्रकार की घटना के लिए स्कीमा बनाना।

216. शब्दों और संप्रत्ययों के अर्थ के लिए स्मृति कहलाती है:
(A) प्रासंगिक स्मृति
(B) अर्थगत स्मृति
(C) प्रक्रियात्मक स्मृति
(D) प्रतिध्वन्यात्मक स्मृति

217. जब कोई छात्र रुपरेखा और संप्रत्यय मानचित्र बनाकर अध्ययन सामग्री व्यवस्थित करता है, तो वह किससे संबंधित स्मृति सुधार तकनीक का उपयोग कर रहा होता है:
(A) स्मृति-सहायक
(B) सघन अभ्यास
(C) संगठन और संरचना
(D) अग्रलक्षी अवरोध

218. संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पुष्टिकरण पूर्वाग्रह मौजूदा विश्वासों की पुष्टि करने वाली जानकारी का पक्ष लेने की प्रवृत्ति है।
II. उपलब्धता हेयूरिस्टिक एक मानसिक शॉर्टकट है जो मन में आने वाले तत्काल उदाहरणों पर निर्भर करता है।
III. पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह घटनाओं के होने के बाद उन्हें अधिक पूर्वानुमेय देखने की प्रवृत्ति है।
निर्णय लेने के संदर्भ में उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

219. "जानने के बारे में जानना" किसकी एक सरल परिभाषा है:
(A) स्मृति
(B) चिंतन
(C) परा-संज्ञान
(D) समस्या समाधान

220. स्मृति का सबसे क्षणभंगुर और अस्थायी प्रकार है:
(A) अल्पकालिक स्मृति
(B) दीर्घकालिक स्मृति
(C) अर्थगत स्मृति
(D) संवेदी स्मृति

221. एक सामान्य कारक जो समस्या समाधान को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है, वह __________ है, जो चीजों को एक निश्चित तरीके से देखने की प्रवृत्ति है।
(A) हेयूरिस्टिक
(B) मंथन सत्र
(C) मानसिक विन्यास
(D) अंतर्दृष्टि की चमक

222. वह शब्द जिसमें तर्क, समस्या समाधान और निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ शामिल हैं, वह है:
(A) स्मृति
(B) चिंतन
(C) विस्मरण
(D) अवरोध

223. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: विस्मरण कूटलेखन, संचयन या पुनर्प्राप्ति में विफलताओं के कारण हो सकता है।
कथन II: अग्रलक्षी और पश्चलक्षी अवरोध पुनर्प्राप्ति विफलता के उदाहरण हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

व्यवस्थित करती है। यह एक मानसिक खाका प्रदान करता है जिसके माध्यम से हम नई जानकारी को समझते और वर्गीकृत करते हैं। जब भी हम किसी परिचित स्थिति का सामना करते हैं, तो स्कीमा हमें अनुमान लगाने में सहायता करता है। यह संज्ञानात्मक दक्षता बढ़ाता है लेकिन कभी-कभी स्मृति त्रुटियां भी पैदा करता है।

22. (B) ह्रास सिद्धांत
ह्रास सिद्धांत के अनुसार, स्मृतियाँ मस्तिष्क में भौतिक चिह्नों के रूप में अंकित होती हैं, जिन्हें स्मृति चिह्न कहा जाता है। यदि इन यादों को समय-समय पर दोहराया या उपयोग नहीं किया जाता है, तो वे समय बीतने के साथ धीरे-धीरे कमजोर और अंततः लुप्त होने लगती हैं। यह सिद्धांत मानता है कि विस्मरण का मुख्य कारण केवल समय का बीत जाना है। अल्पकालिक स्मृति में जानकारी खोने की व्याख्या हेतु यह प्रभावी है।

23. (D) संगठनात्मक कूटलेखन
जब हम संबंधित जानकारी को समूहों या श्रेणियों में व्यवस्थित करते हैं, तो इसे संगठनात्मक कूटलेखन कहा जाता है। यहाँ छात्र वस्तुओं को उनके गुणों के आधार पर श्रेणियों में बाँट रहा है, जिससे स्मृति का बोझ कम हो जाता है। यह रणनीति सूचनाओं के बीच सार्थक संबंध स्थापित करती है, जिससे पुनर्प्राप्ति के समय संकेत आसानी से मिल जाते हैं। यह विधि बिखरी हुई जानकारी को एक संरचित रूप प्रदान करती है।

24. (A) केवल I और II
संप्रत्यय निर्माण एक मानसिक प्रक्रिया है जहाँ व्यक्ति समान गुणों वाली वस्तुओं को एक ही वर्ग में वर्गीकृत करना सीखता है। यह अनुभव और अधिगम पर गहराई से निर्भर करता है, इसलिए तीसरा कथन गलत है। जब किसी वस्तु में बहुत अधिक अप्रासंगिक विशेषताएं होती हैं, तो मुख्य विशेषताओं को पहचानना कठिन हो जाता है। अतः यह प्रक्रिया संज्ञानात्मक स्पष्टता और अनुभवों के विश्लेषण पर आधारित अमूर्त चिंतन का आधार है।

25. (C) पुनर्प्राप्ति विफलता
पुनर्प्राप्ति विफलता तब होती है जब जानकारी दीर्घकालिक स्मृति में संचित तो होती है, लेकिन उसे सही समय पर चेतना में नहीं लाया जा सकता है। यह अक्सर उपयुक्त संकेतों की कमी या अन्य यादों के हस्तक्षेप के कारण होता है। इसे 'जीभ की नोक पर' होने वाली स्थिति के रूप में भी जाना जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जानकारी लुप्त हो गई है, बल्कि पहुँच मार्ग अस्थायी रूप से बाधित है।

26. (A) कार्यात्मक स्थिरता
कार्यात्मक स्थिरता एक संज्ञानात्मक बाधा है जहाँ व्यक्ति किसी वस्तु को केवल उसके पारंपरिक या सामान्य कार्य के लिए ही देख पाता है। यह समस्या समाधान में रचनात्मकता को रोकता है क्योंकि व्यक्ति नए और अपरंपरागत समाधानों के बारे में नहीं सोच पाता। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति हथौड़े को केवल कील ठोकने के लिए देखता है, तो वह कार्यात्मक स्थिरता प्रदर्शित कर रहा है। यह एक मानसिक रुढ़िवादिता है।

27. (B) P-4, Q-1, R-3, S-2
पुष्टिकरण पूर्वाग्रह में हम केवल उन तथ्यों पर ध्यान देते हैं जो हमारे पूर्व विश्वासों का समर्थन करते हैं। एंकरिंग पूर्वाग्रह प्रारंभिक सूचना को आधार बनाकर निर्णय लेने की प्रवृत्ति है। उपलब्धता हेयूरिस्टिक में स्मृतियों की सुगमता के आधार पर घटनाओं की प्रायिकता तय की जाती है। पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह किसी घटना के बाद उसे पहले से ही ज्ञात मानने का भ्रम है। ये सभी त्रुटियां निर्णय क्षमता को प्रभावित करती हैं।

28. (B) समान वस्तुओं, घटनाओं, विचारों या लोगों का एक मानसिक समूह।
संप्रत्यय चिंतन की एक मौलिक इकाई है जो हमें संसार की विविध सूचनाओं को सार्थक श्रेणियों में बाँटने की अनुमति देती है। यह अलग-अलग अनुभवों के बीच सामान्य गुणों की पहचान करके उन्हें एक मानसिक समूह में एकीकृत करता है। जैसे, 'पक्षी' संप्रत्यय में हम उन सभी जीवों को रखते हैं जिनके पंख होते हैं। यह प्रक्रिया संज्ञानात्मक बोझ को कम करती है और नए अनुभवों को लागू करने की क्षमता देती है।

29. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मानव चिंतन की जटिलता भाषा पर काफी हद तक निर्भर करती है क्योंकि भाषा हमें विचारों को कूटबद्ध करने के लिए प्रतीक और नियम प्रदान करती है। अमूर्त अवधारणाओं जैसे न्याय या स्वतंत्रता की योजना बनाना बिना भाषाई ढांचे के अत्यंत कठिन होता है। कारण कथन की सही व्याख्या करता है क्योंकि भाषा हमारे मानसिक हेरफेर और विचारों के संगठन का मुख्य आधार है। भाषा चिंतन को स्पष्टता प्रदान करती है।

30. (D) एक ही प्रारंभिक बिंदु से कई, अद्वितीय विचार उत्पन्न करना।
अपसारी चिंतन सृजनात्मकता का एक प्रमुख घटक है जिसमें किसी समस्या के समाधान के लिए पारंपरिक रास्तों से हटकर कई दिशाओं में सोचा जाता है। इसमें व्यक्ति एक ही विचार से शुरू करके विविध और मौलिक उत्तर उत्पन्न करता है। इसे 'लीक से हटकर सोचना' भी कहा जाता है। यह अभिसारी चिंतन के विपरीत है, जो केवल एक सही समाधान पर केंद्रित होता है। कल्पनाशीलता इसकी मुख्य विशेषता है।

31. (A) अवरुद्ध संप्रत्यय
मनोविज्ञान में संप्रत्ययों के कई प्रकार हैं जैसे प्राकृतिक संप्रत्यय और कृत्रिम संप्रत्यय। पदानुक्रमित संप्रत्यय सूचनाओं को स्तरों में व्यवस्थित करते हैं। 'अवरुद्ध संप्रत्यय' जैसा कोई आधिकारिक या स्थापित वर्गीकरण संप्रत्यय निर्माण के सिद्धांतों में मौजूद नहीं है। संप्रत्यय सदैव सूचना के संगठन और श्रेणीकरण से संबंधित होते हैं, जबकि अवरोध विस्मरण या चिंतन की बाधाओं से जुड़ा शब्द है।

(C) विशेषताओं की जटिलता।
(D) फीडबैक की स्पष्टता।

237. स्मृति भंडारण से जानकारी प्राप्त करने और उसे चेतना में लाने की प्रक्रिया है:
(A) कूटलेखन
(B) रिहर्सल
(C) पुनर्प्राप्ति
(D) अवरोध

238. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): कार्यात्मक स्थिरता प्रभावी समस्या समाधान में एक बड़ी बाधा हो सकती है।
कारण (R): यह व्यक्ति को किसी वस्तु का उपयोग केवल उसी तरह करने तक सीमित कर देती है जिस तरह से पारंपरिक रुप से उपयोग किया जाता है, जिससे नए समाधान रुक जाते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

239. स्मृति सुधार के लिए एक अच्छी रणनीति नई जानकारी को उस जानकारी से जोड़ना है जिसे आप पहले से जानते हैं। इसे कहा जाता है:
(A) सघन अभ्यास
(B) अनुरक्षण रिहर्सल
(C) सविस्तार रिहर्सल
(D) अग्रलक्षी अवरोध

240. कौशल और आदतों के लिए स्मृति, जैसे पियानो बजाना, कहलाती है:
(A) घोषणात्मक स्मृति
(B) अर्थगत स्मृति
(C) प्रासंगिक स्मृति
(D) प्रक्रियात्मक स्मृति

241. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अर्थगत स्मृति के मॉडल अक्सर नेटवर्क संरचना का प्रस्ताव करते हैं।
II. परा-संज्ञान का तात्पर्य स्वयं की विचार प्रक्रियाओं की जागरुकता से है।
III. स्कीमा मानसिक ढांचे हैं जो ज्ञान को व्यवस्थित करते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

242. जब हम रुढ़िवादिता के आधार पर निर्णय लेते हैं, तो हम किसका उपयोग कर रहे होते हैं:
(A) एल्गोरिदम
(B) हेयूरिस्टिक या स्कीमा जो पक्षपाती हो सकता है
(C) सविस्तार रिहर्सल रणनीति
(D) लोकी की विधि

243. किसी समस्या की “प्रकृति” किसको संदर्भित करती है:
(A) इसके समाधान को।
(B) इसके द्वारा उत्पन्न भावनात्मक अनुक्रिया को।
(C) इसकी संरचना को, जिसमें प्रारंभिक स्थिति, लक्ष्य स्थिति और बाधाएं शामिल हैं।
(D) इसे हल करने का प्रयास करने वाले व्यक्ति को।

244. चिंतन में भाषा की भूमिका के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) भाषा अमूर्त संप्रत्ययों के लिए प्रतीक प्रदान करती है।
(B) भाषा की संरचना विचार पैटर्न को प्रभावित कर सकती है।
(C) भाषा विचारों को व्यवस्थित करने और संप्रेषित करने में मदद करती है।
(D) भाषा के बिना चिंतन असंभव है।

245. शारीरिक स्मृति चिह्न के धीरे-धीरे धुंधला होने के कारण होने वाले विस्मरण की व्याख्या किसके द्वारा की जाती है:
(A) ह्रास सिद्धांत
(B) हस्तक्षेप सिद्धांत
(C) पुनर्प्राप्ति विफलता सिद्धांत
(D) अभिप्रेरित विस्मरण

246. निम्नलिखित सभी दीर्घकालिक स्मृति के प्रकार हैं, सिवाय:
(A) प्रासंगिक स्मृति
(B) प्रक्रियात्मक स्मृति
(C) अर्थगत स्मृति
(D) संवेदी स्मृति

247. “डूबी हुई लागत का भ्रम” निर्णय लेने में एक पूर्वाग्रह है जहाँ व्यक्ति:
(A) आसानी से उपलब्ध जानकारी को अधिक महत्व देते हैं।
(B) विश्वास करते हैं कि वे परिणाम आने के बाद उसकी भविष्यवाणी कर सकते थे।
(C) पिछले निवेश के कारण विफल परियोजना में निवेश करना जारी रखते हैं।
(D) प्राप्त जानकारी के पहले अंश पर बहुत अधिक भरोसा करते हैं।

248. लोकी की विधि एक स्मृति सुधार तकनीक है जिसमें शामिल है:
(A) जानकारी को चुपचाप दोहराना।
(B) वस्तुओं के पहले अक्षरों से एक संक्षिप्त नाम बनाना।
(C) जानकारी को छोटी इकाइयों में तोड़ना।
(D) वस्तुओं को परिचित स्थानों के अनुक्रम के साथ जोड़ना।

224. एक नवीन और उपयोगी उत्पाद या विचार का निर्माण किसकी पहचान है:
(A) रटकर सीखना
(B) एक मानसिक विन्यास
(C) अग्रलक्षी अवरोध
(D) सृजनात्मक चिंतन

225. बेहतर निर्णय लेने का एक प्रमुख कारक है:
(A) संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों के प्रति जागरूक होना और उन्हें कम करने का प्रयास करना।
(B) महत्वपूर्ण जानकारी की अनदेखी करके समस्या को सरल बनाना।
(C) निर्णय में अनिश्चित काल के लिए देरी करना।
(D) केवल एक संभावित परिणाम पर विचार करना।

226. समस्या समाधान के 'तरीकों' का तात्पर्य है:
(A) संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह जो प्रक्रिया में हस्तक्षेप करते हैं।
(B) समाधान खोजने के लिए उपयोग की जाने वाली रणनीतियाँ और प्रक्रियाएँ।
(C) समस्या समाधानकर्ता की भावनात्मक स्थिति।
(D) समस्या को हल करने के लिए उपलब्ध भौतिक उपकरण।

227. "सब्जी" के संप्रत्यय को नियमों के एक सख्त समूह के साथ परिभाषित करना मुश्किल है। यह बताता है कि यह एक:
(A) कृत्रिम संप्रत्यय है
(B) प्रक्रियात्मक संप्रत्यय है
(C) प्राकृतिक संप्रत्यय है
(D) अवरुद्ध संप्रत्यय है

228. निम्नलिखित में से कौन स्मृति के मानक सूचना-प्रसंस्करण मॉडल का घटक नहीं है?
(A) अल्पकालिक स्मृति
(B) दीर्घकालिक स्मृति
(C) संवेदी स्मृति
(D) परा-स्मृति

229. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (समस्या-समाधान बाधा)
P. मानसिक विन्यास
Q. कार्यात्मक स्थिरता
R. पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
S. अप्रासंगिक जानकारी
सूची II: (विवरण)
1. अपनी परिकल्पना से मेल खाने वाली जानकारी पर ध्यान केंद्रित करना।
2. किसी वस्तु के लिए नए उपयोग को देख पाने में असमर्थता।
3. जानकारी जो समस्या को हल करने के लिए आवश्यक नहीं है, व्याकुलता पैदा करती है।
4. ऐसी रणनीति पर टिके रहना जो अब प्रभावी नहीं है।
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

230. दुनिया के बारे में किसी व्यक्ति का सामान्य ज्ञान उसकी _________ स्मृति में संचित होता है।
(A) प्रासंगिक
(B) अर्थगत
(C) प्रक्रियात्मक
(D) अल्पकालिक

231. स्मृति अनुसंधान में "अवरोध" शब्द मुख्य रूप से किसको संदर्भित करता है?
(A) यादों का सचेत दमन।
(B) समय के साथ स्मृति का प्राकृतिक ह्रास।
(C) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा एक स्मृति चिह्न दूसरे को बाधित करता है।
(D) शुरु में जानकारी को कूटबद्ध करने में विफलता।

232. चिंतन एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जो:
(A) हमेशा सचेत और विचारशील होती है।
(B) भावना से कभी प्रभावित नहीं होती है।
(C) पूरी तरह से बाहरी उत्तेजनाओं पर निर्भर है।
(D) लक्ष्य-निर्देशित है और इसमें जानकारी का हेरफेर शामिल है।

233. विरोधाभासी नई जानकारी प्राप्त करने के बाद भी अपने प्रारंभिक विश्वास पर अड़े रहने की प्रवृत्ति कहलाती है:
(A) उपलब्धता हेयूरिस्टिक
(B) कार्यात्मक स्थिरता
(C) विश्वास दृढ़ता
(D) पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह

234. एक छात्र फोन नंबर को बार-बार दोहराकर याद करने की कोशिश कर रहा है। यह किसका उदाहरण है:
(A) सविस्तार रिहर्सल
(B) एक स्कीमा
(C) परा-स्मृति
(D) अनुरक्षण रिहर्सल

235. सृजनात्मक चिंतन की प्रकृति में किसके बीच संतुलन शामिल है:
(A) अपसारी और अभिसारी चिंतन।
(B) अग्रलक्षी और पश्चलक्षी अवरोध।
(C) एल्गोरिदम और हेयूरिस्टिक्स।
(D) कूटलेखन और पुनर्प्राप्ति।

236. संप्रत्यय निर्माण में योगदान देने वाला कारक है:
(A) शिक्षार्थी की अभिप्रेरणा।
(B) उपरोक्त सभी।

S. अल्पकालिक स्मृति

सूची II: (उदाहरण)

1. अपने जूते के फीते बांधना जानना।
2. यह याद रखना कि आपने आज सुबह नाश्ते में क्या खाया।
3. किसी फोन नंबर को डायल करने तक मन में रखना।
4. यह जानना कि व्हेल एक स्तनधारी है।

(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

263. जब आप अपना नया पासवर्ड याद नहीं रख पाते क्योंकि आप पुराना पासवर्ड टाइप करते रहते हैं, तो आप किसका अनुभव कर रहे होते हैं:

(A) पश्चलक्षी अवरोध
(B) कूटलेखन विफलता
(C) अग्रलक्षी अवरोध
(D) स्मृति ह्रास

264. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. हेयूरिस्टिक एक व्यावहारिक नियम है।
II. एल्गोरिदम एक चरण-दर-चरण प्रक्रिया है।
III. एल्गोरिदम आमतौर पर हेयूरिस्टिक्स की तुलना में तेज़ लेकिन अधिक त्रुटि-प्रवण होते हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

265. "न्याय" या "स्वतंत्रता" जैसे संप्रत्यय की प्रकृति यह है कि यह एक:

(A) अमूर्त संप्रत्यय है।
(B) स्पष्ट प्रोटोटाइप वाला प्राकृतिक संप्रत्यय है।
(C) नियमों द्वारा परिभाषित कृत्रिम संप्रत्यय है।
(D) प्रक्रियात्मक संप्रत्यय है।

266. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

कथन (A): प्रभावी अध्ययन के लिए परा-स्मृति कौशल महत्वपूर्ण हैं।

कारण (R): अच्छी परा-स्मृति वाला छात्र अपने स्वयं के अधिगम का सटीक न्याय कर सकता है, जान सकता है कि सामग्री की समीक्षा कब करनी है, और उपयुक्त स्मृति रणनीतियों का चयन कर सकता है।

(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

267. वह चिंतन जिसका उद्देश्य किसी समस्या का एकमात्र, सर्वोत्तम समाधान खोजना है, कहलाता है:

(A) अपसारी चिंतन
(B) सृजनात्मक चिंतन
(C) अभिसारी चिंतन
(D) आलोचनात्मक चिंतन

268. निम्नलिखित में से कौन सा सृजनात्मक चिंतन को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है?

(A) एक समृद्ध ज्ञान आधार
(B) एक कल्पनाशील चिंतन शैली
(C) एक साहसी व्यक्तित्व
(D) उपरोक्त सभी

269. भाषा का इस बात पर प्रभाव कि हम दुनिया को कैसे देखते और वर्गीकृत करते हैं, किसके अध्ययन का एक केंद्रीय विषय है:

(A) अर्थगत स्मृति के मॉडल।
(B) विस्मरण के सिद्धांत।
(C) चिंतन में भाषा की भूमिका।
(D) निर्णय लेने में पूर्वाग्रह।

270. आपके अपने जीवन के अनुभवों की स्मृति आपकी ________ स्मृति है।

(A) अर्थगत
(B) प्रासंगिक
(C) प्रक्रियात्मक
(D) प्रतिबिंबात्मक

271. जब एक नई स्मृति पुरानी स्मृति को याद करना कठिन बना देती है, तो इसे कहा जाता है:

(A) अग्रलक्षी हस्तक्षेप
(B) ह्रास
(C) दमन
(D) पश्चलक्षी हस्तक्षेप

272. निर्णय लेने में 'पूर्वाग्रह' है:

(A) निर्णय में एक याद‍ृच्छिक त्रुटि।
(B) एक निश्चित तरीके से सोचने की व्यवस्थित प्रवृत्ति जो त्रुटियों का कारण बन सकती है।
(C) एक तार्किक और तर्कसंगत विचार प्रक्रिया।
(D) सर्वोत्तम संभव परिणाम सुनिश्चित करने की एक विधि।

273. समस्या-समाधान में 'अहा!' क्षण कहलाता है:

(A) एक एल्गोरिदम
(B) एक हेयूरिस्टिक
(C) अंतर्दृष्टि
(D) एक मानसिक विन्यास

274. स्कीमा सहायक हो सकता है क्योंकि यह ______, लेकिन यह समस्याग्रस्त हो सकता है क्योंकि यह ______।

(A) रुढ़िवादिता बनाता है; जानकारी व्यवस्थित करने में मदद करता है
(B) हमेशा सटीक होता है; उपयोग करने में धीमा होता है
(C) विस्मरण को रोकता है; हस्तक्षेप का कारण बनता है
(D) कुशल प्रसंस्करण की अनुमति देता है; विकृतियां पैदा कर सकता है

275. एक छात्र जो पाठ्यपुस्तक पढ़ते समय अपनी समझ की निगरानी करता है, वह किसमें संलग्न है:
(A) परा-संज्ञान
(B) अग्रलक्षी अवरोध
(C) अर्थगत नेटवर्किंग
(D) प्रक्रियात्मक स्मृति

276. अल्पकालिक स्मृति और दीर्घकालिक स्मृति के बीच का अंतर केवल अवधि ही नहीं है, बल्कि यह भी है:
(A) क्षमता
(B) रखी गई जानकारी का प्रकार
(C) इसमें शामिल मस्तिष्क क्षेत्र
(D) विस्मरण के प्रति संवेदनशीलता

277. कई अलग-अलग कुत्तों को देखकर और उनकी सामान्य विशेषताओं को निकालकर "कुत्ता" का संप्रत्यय बनाने की प्रक्रिया किसका उदाहरण है:
(A) नियम-आधारित संप्रत्यय निर्माण
(B) एल्गोरिथमिक समस्या समाधान
(C) प्रोटोटाइप-आधारित संप्रत्यय निर्माण
(D) पश्चलक्षी अवरोध

278. निम्नलिखित में से कौन सा निर्णय लेने में सुधार करने का सबसे अच्छा तरीका है?
(A) केवल अंतर्ज्ञान पर भरोसा करना।
(B) जितनी जल्दी हो सके निर्णय लेना।
(C) भ्रम से बचने के लिए बहुत अधिक जानकारी इकट्ठा करने से बचना।
(D) सामान्य पूर्वाग्रहों के बारे में जागरूक होना और सक्रिय रूप से उनके विरुद्ध कार्य करना।

279. निम्नलिखित में से कौन स्मृति का एक प्रकार है?
(A) हेयूरिस्टिक
(B) एल्गोरिथमिक
(C) अर्थगत
(D) संज्ञानात्मक

280. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: भाषा संचार के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रतीकों की एक प्रणाली है।
कथन II: चिंतन एक मानसिक प्रक्रिया है जो अक्सर इन प्रतीकों का उपयोग करती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

281. पश्चलक्षी अवरोध का एक उदाहरण है:
(A) नया फोन नंबर सीखने में कठिनाई क्योंकि पुराना बहुत परिचित है।
(B) अपना नया पता अच्छी तरह से सीखने के बाद पुराने पते को याद रखने में कठिनाई।
(C) समय बीतने के कारण कुछ भूल जाना।
(D) ध्यान न देने के कारण कुछ भूल जाना।

282. निम्नलिखित में से कौन सृजनात्मक चिंतन को प्रभावित करने वाला कारक नहीं है?
(A) व्यक्तित्व
(B) पर्यावरण
(C) ज्ञान का आधार
(D) अंकों के लिए स्मृति क्षमता

283. निर्णय लेने में, फ्रेमिंग प्रभाव यह प्रदर्शित करता है कि:
(A) लोग हमेशा तर्कसंगत होते हैं।
(B) पहला विकल्प हमेशा सबसे आकर्षक होता है।
(C) जिस तरह से समस्या प्रस्तुत की जाती है वह चुनाव को प्रभावित कर सकती है।
(D) पूर्वाग्रह वास्तविक दुनिया के निर्णयों को प्रभावित नहीं करते हैं।

284. जब आपको किसी क्षेत्र में बहुत कम ज्ञान हो, तो समस्या-समाधान की कौन सी विधि उपयोग किए जाने की सबसे अधिक संभावना है?
(A) एल्गोरिदम
(B) एक परिष्कृत हेयूरिस्टिक
(C) साधन-साध्य विश्लेषण
(D) प्रयास और त्रुटि

285. अर्थगत स्मृति के मॉडल के अनुसार, "कनारी एक पक्षी है" को सत्यापित करना "कनारी एक जानवर है" की तुलना में तेज़ क्यों है?
(A) अर्थगत नेटवर्क में "पक्षी", "कनारी" के अधिक करीब संचित है।
(B) "पक्षी" शब्द "जानवर" की तुलना में छोटा शब्द है।
(C) लोगों के पास पक्षियों के साथ अधिक व्यक्तिगत अनुभव होते हैं।
(D) "जानवर" का संप्रत्यय अधिक अमूर्त है और इस प्रकार संसाधित करना कठिन है।

286. अपनी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के बारे में सोचना किसका सार है:
(A) अर्थगत स्मृति
(B) परा-संज्ञान
(C) समस्या समाधान
(D) सृजनात्मक चिंतन

287. निम्नलिखित में से कौन दीर्घकालिक स्मृति की एक विशेषता है?
(A) इसकी क्षमता बहुत कम होती है।
(B) जानकारी कुछ सेकंड के लिए संचित की जाती है।
(C) माना जाता है कि इसकी क्षमता वस्तुतः असीमित है।
(D) यह मुख्य रूप से असंसाधित संवेदी जानकारी रखती है।

288. विस्मरण का कौन सा सिद्धांत "उपयोग करो या खो दो" सिद्धांत द्वारा स्पष्ट किया गया है?
(A) हस्तक्षेप सिद्धांत
(B) पुनर्प्राप्ति विफलता सिद्धांत
(C) अभिप्रेरित विस्मरण
(D) ह्रास सिद्धांत

289. अग्रलक्षी अवरोध का सही वर्णन कौन सा है?
(A) पिछला अधिगम नए अधिगम में हस्तक्षेप करता है।
(B) नया अधिगम पुरानी स्मृति में हस्तक्षेप करता है।
(C) संकेतों की कमी के कारण विस्मरण।
(D) समय बीतने के कारण विस्मरण।

290. निम्नलिखित सभी कारक स्मृति में सुधार कर सकते हैं, सिवाय:
(A) अंतराल अभ्यास
(B) हस्तक्षेप
(C) सविस्तार रिहर्सल
(D) स्मृति-सहायक युक्तियों का उपयोग

291. "पेपरक्लिप के लिए आप कौन से उपयोग सोच सकते हैं?" यह प्रश्न किसके परीक्षण के लिए बनाया गया है:
(A) अभिसारी चिंतन
(B) तथ्यों की स्मृति
(C) अपसारी चिंतन
(D) एक एल्गोरिदम दृष्टिकोण

292. विशिष्ट नियमों द्वारा परिभाषित एक संप्रत्यय, जैसे "वर्ग चार समान भुजाओं और चार समकोण वाली आकृति है," एक:
(A) प्राकृतिक संप्रत्यय है
(B) प्रोटोटाइप है
(C) अस्पष्ट संप्रत्यय है
(D) कृत्रिम संप्रत्यय है

293. निर्णय लेने में एक प्रमुख कारक सही होने की तुलना में अधिक आश्वस्त होने की प्रवृत्ति है। इसे कहा जाता है:
(A) अति-आत्मविश्वास
(B) पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह
(C) एंकरिंग
(D) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह

294. समस्या तब मौजूद होती है जब:
(A) व्यक्ति तनावग्रस्त या चिंतित महसूस करता है।
(B) वर्तमान स्थिति और वांछित लक्ष्य के बीच विसंगति होती है।
(C) निर्णय जल्दी लेना पड़ता है।
(D) स्मृति को पुनर्प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

295. किस प्रकार की स्मृति विस्मरण के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील है?
(A) दीर्घकालिक स्मृति
(B) प्रक्रियात्मक स्मृति
(C) अल्पकालिक स्मृति
(D) अर्थगत स्मृति

296. स्कीमा एक संज्ञानात्मक संरचना है जो:
(A) किसी समस्या के समाधान की गारंटी देती है।
(B) विस्मरण होने से रोकती है।
(C) सृजनात्मक चिंतन का एक रूप है।
(D) किसी संप्रत्यय या उत्तेजना के बारे में ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है।

297. नियमों के एक विशिष्ट समूह का पालन करके भाग की समस्या को हल करने का प्रयास करना किसका उदाहरण है:
(A) एल्गोरिदम
(B) हेयूरिस्टिक
(C) अंतर्दृष्टि
(D) मानसिक विन्यास

298. यह सोचना कि आगामी परीक्षा के लिए कौन सी अध्ययन रणनीति सबसे प्रभावी होगी, किसका उदाहरण है:
(A) अर्थगत स्मृति
(B) प्रासंगिक स्मृति
(C) परा-संज्ञान
(D) पश्चलक्षी अवरोध

299. चिंतन के संदर्भ में, भाषा की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका क्या प्रदान करना है:
(A) भावनात्मक संदर्भ
(B) संवेदी इनपुट
(C) सृजनात्मकता में बाधा
(D) प्रतिनिधित्व और हेरफेर के लिए प्रतीकों की एक प्रणाली

300. अपना पुराना मोबाइल नंबर याद न कर पाने की सबसे अधिक संभावना किसके कारण है:
(A) अग्रलक्षी अवरोध
(B) पश्चलक्षी अवरोध
(C) स्मृति ह्रास
(D) कूटलेखन विफलता

249. अग्रलक्षी और पश्चलक्षी अवरोध के बीच एक मुख्य अंतर है:
(A) हस्तक्षेप प्रभाव की दिशा।
(B) स्मृति भंडारण का प्रकार।
(C) स्मृतियों की भावनात्मक सामग्री।
(D) मूल अधिगम की विधि।

250. अपनी स्वयं की स्मृति के बारे में सोचने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) परा-संज्ञान
(B) परा-स्मृति
(C) अर्थगत स्मृति
(D) प्रासंगिक स्मृति

251. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: हेयूरिस्टिक्स मानसिक शॉर्टकट हैं जो समस्या-समाधान की गति बढ़ा सकते हैं।
कथन II: एल्गोरिदम के विपरीत, हेयूरिस्टिक्स सही समाधान की गारंटी नहीं देते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

252. संप्रत्यय निर्माण को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है:
(A) किसी की अल्पकालिक स्मृति की क्षमता।
(B) किसी के पुनर्प्राप्ति संकेतों की प्रभावशीलता।
(C) किसी की प्रक्रियात्मक स्मृतियों की शक्ति।
(D) उन उदाहरणों की संख्या और विविधता जिनसे कोई व्यक्ति अवगत होता है।

253. निम्नलिखित में से कौन चिंतन को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) जानकारी का संचयन और पुनर्प्राप्ति।
(B) अनुपयुक्त जानकारी को भूलने की प्रक्रिया।
(C) जानकारी का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीकों का मानसिक हेरफेर।
(D) संवेदी उत्तेजनाओं का प्रारंभिक पंजीकरण।

254. वह कारक जो सृजनात्मक चिंतन में बाधा डाल सकता है, वह है:
(A) नए अनुभवों के प्रति खुलापन।
(B) आंतरिक अभिप्रेरणा।
(C) जोखिम लेने की इच्छा।
(D) अनुरुपता का उच्च स्तर।

255. जानकारी को इस तरह खोजने, व्याख्या करने और याद करने की प्रवृत्ति जो किसी के पहले से मौजूद विश्वासों की पुष्टि करती है, कहलाती है:
(A) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
(B) एंकरिंग पूर्वाग्रह
(C) उपलब्धता हेयूरिस्टिक
(D) पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह

256. निम्नलिखित में से कौन एक अच्छी तरह से परिभाषित समस्या का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) सुखी जीवन कैसे जिएं।
(B) रुबिक क्यूब को कैसे हल करें।
(C) एक अधिक सृजनात्मक व्यक्ति कैसे बनें।
(D) समाज को कैसे सुधारें।

257. किसी स्मृति के स्रोत को भूल जाना कहलाती है:
(A) पश्चलक्षी अवरोध
(B) अग्रलक्षी अवरोध
(C) स्रोत स्मृति लोप
(D) स्मृति ह्रास

258. "कक्षा" के लिए स्कीमा में निम्नलिखित में से किसके शामिल होने की संभावना नहीं है?
(A) डेस्क और कुर्सियाँ
(B) एक शिक्षक
(C) एक ब्लैकबोर्ड या व्हाइटबोर्ड
(D) अब तक सुने गए प्रत्येक व्याख्यान का विस्तृत प्रतिलेख

259. बेहतर निर्णय लेने की कुंजी किसमें सक्षम होना है:
(A) विभिन्न विकल्पों के संभावित परिणामों की पहचान और मूल्यांकन करना।
(B) बिना किसी विचार-विमर्श के तुरंत चुनाव करना।
(C) दूसरों की सभी सलाहों की अनदेखी करना।
(D) मन में आने वाले पहले विकल्प पर टिके रहना।

260. स्मृति के तीन मुख्य घटक हैं:
(A) विचार, भाषा और समस्या-समाधान।
(B) कूटलेखन, संचयन और पुनर्प्राप्ति।
(C) संप्रत्यय, पूर्वाग्रह और कारक।
(D) अल्पकालिक, दीर्घकालिक स्मृति और अवरोध।

261. समस्या समाधान में एक महत्वपूर्ण कारक समस्या का सटीक प्रतिनिधित्व होना है, जिसमें शामिल है:
(A) प्रारंभिक स्थिति, लक्ष्य स्थिति और अनुमत संचालनों को समझना।
(B) वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करने के लिए लक्ष्य स्थिति की अनदेखी करना।
(C) केवल हेयूरिस्टिक दृष्टिकोण का उपयोग करना।
(D) कार्यात्मक स्थिरता को लागू करना।

262. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (स्मृति प्रकार)
P. अर्थगत
Q. प्रासंगिक
R. प्रक्रियात्मक

हो गई है या अन्य जानकारी ने उसमें बाधा डाली है। इनका लक्ष्य विस्मरण को समझना है।

11. (D) परा-स्मृति
परा-स्मृति परा-संज्ञान का एक विशिष्ट क्षेत्र है जो व्यक्ति की अपनी स्मृति प्रणाली की जागरूकता से संबंधित है। इसमें यह ज्ञान शामिल होता है कि हमारी स्मृति कैसे कार्य करती है और हम किसी जानकारी को याद रखने में कितने प्रभावी हैं। उदाहरण के लिए, यह जानना कि आपको नाम याद रखने में कठिनाई होती है, परा-स्मृति का हिस्सा है। यह व्यक्ति को रणनीतियों का चयन करने में सहायता करती है।

12. (A) केवल I और II
स्मृति सुधार एक कौशल है जिसे वैज्ञानिक युक्तियों द्वारा विकसित किया जा सकता है। स्मृति-सहायक युक्तियों का उपयोग सूचनाओं को सार्थक रूप में जोड़कर प्रत्यानयन को बढ़ाता है। साथ ही, अंतराल अभ्यास विधि सघन अभ्यास की तुलना में अधिक स्थायी प्रभाव डालती है। तीसरा कथन गलत है क्योंकि स्मृति केवल जन्मजात क्षमता नहीं है, बल्कि इसे अभ्यास और सही रणनीतियों के माध्यम से किसी भी स्तर पर प्रशिक्षित किया जा सकता है।

13. (C) किसी भाषा की संरचना उसके बोलने वालों के सोचने के तरीके को प्रभावित कर सकती है।
भाषाई सापेक्षता का सिद्धांत यह सुझाव देता है कि जिस भाषा को हम बोलते हैं, उसके शब्द और व्याकरण हमारे संसार को देखने के नजरिए को प्रभावित करते हैं। भाषा केवल विचारों को व्यक्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह चिंतन की प्रक्रिया को संगठित करने में भी सहायता करती है। विभिन्न संस्कृतियों में रंगों या दिशाओं के लिए उपयोग किए जाने वाले शब्द संज्ञानात्मक पहचान को आकार देते हैं।

14. (D) हेयूरिस्टिक्स
हेयूरिस्टिक्स समस्या समाधान की एक ऐसी विधि है जिसे 'व्यावहारिक नियम' या 'मानसिक शॉर्टकट' भी कहा जाता है। यह एल्गोरिदम की तरह हर चरण का पालन करने के बजाय कम समय में प्रभावी समाधान तक पहुँचने में सहायता करती है। यद्यपि यह हमेशा सही परिणाम की गारंटी नहीं देती, लेकिन जटिल परिस्थितियों में यह मस्तिष्क के संज्ञानात्मक बोझ को कम करती है। दैनिक निर्णयों के लिए यह सुविधाजनक रणनीति है।

15. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
स्कीमा ज्ञान के वे मानसिक ढांचे हैं जो हमें जानकारी को श्रेणीबद्ध करने और समझने में सहायता करते हैं। ये स्मृतियों के कूटलेखन और पुनर्प्राप्ति की प्रक्रिया को निर्देशित करते हैं, लेकिन कभी-कभी ये सूचनाओं को अपने अनुसार ढालकर उनमें विकृति भी उत्पन्न कर सकते हैं। कारण स्पष्ट करता है कि कैसे ये ढांचे रिक्त स्थानों को भरने के लिए पूर्व-धारणाओं का उपयोग करके स्मृति सटीकता प्रभावित करते हैं।

16. (B) रटकर याद करने की क्षमता
सृजनात्मक चिंतन में नवीनता, मौलिकता और लचीलापन शामिल होता है, जिसके लिए बुद्धि और सहायक वातावरण की आवश्यकता होती है। रटकर याद करना एक यांत्रिक प्रक्रिया है जो केवल सूचनाओं के पुनरुत्पादन पर ध्यान देती है और नए विचारों के सृजन में बाधा डालती है। सृजनात्मकता के लिए अपसारी चिंतन महत्वपूर्ण होता है। रटंत विद्या व्यक्ति को सीमित कर देती है, जिससे नई संभावनाओं को खोजने की क्षमता कम होती है।

17. (B) निर्णय में मानक या तर्कसंगतता से विचलन का एक व्यवस्थित पैटर्न।
निर्णय लेने की प्रक्रिया में 'पूर्वाग्रह' का अर्थ उन मानसिक त्रुटियों से है जो हमें वस्तुनिष्ठ तथ्यों के बजाय व्यक्तिगत धारणाओं की ओर ले जाती हैं। यह तर्कसंगतता से एक प्रकार का व्यवस्थित विचलन है जहाँ हमारा मस्तिष्क सूचनाओं को गलत तरीके से संसाधित करता है। यह अक्सर मानसिक शॉर्टकट के अत्यधिक उपयोग के कारण होता है। ऐसे पूर्वाग्रह हमारे निर्णयों को प्रभावित करते हैं और वास्तविकता से दूर ले जाते हैं।

18. (A) II, III, IV, I
एक प्रभावी समस्या-समाधान प्रक्रिया हमेशा एक तार्किक क्रम का पालन करती है। सबसे पहले, समस्या को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना आवश्यक होता है ताकि उसके मूल कारणों को समझा जा सके। इसके बाद, संभावित समाधानों की एक सूची तैयार की जाती है और उनमें से सर्वश्रेष्ठ को चुना जाता है। चुने गए समाधान को लागू करना अगला कदम होता है। अंत में, समाधान के परिणामों का मूल्यांकन किया जाता है।

19. (C) सूचनाओं के हेरफेर से जुड़ी एक जटिल मानसिक प्रक्रिया।
चिंतन एक आंतरिक संज्ञानात्मक गतिविधि है जिसमें मानसिक प्रतीकों, संप्रत्ययों और स्मृतियों का उपयोग करके सूचनाओं का विश्लेषण किया जाता है। यह केवल सूचना प्राप्त करना नहीं है, बल्कि प्राप्त जानकारी को पुनः व्यवस्थित करना, तर्क देना और निष्कर्ष निकालना है। चिंतन की प्रक्रिया किसी समस्या को हल करने या निर्णय लेने की दिशा में निर्देशित होती है। यह मानव मस्तिष्क की एक सक्रिय और गतिशील प्रक्रिया है।

20. (D) संवेदी चिंतन
मनोविज्ञान में चिंतन के कई मान्यता प्राप्त प्रकार हैं, जैसे सृजनात्मक चिंतन, जिसमें नए विचार उत्पन्न किए जाते हैं और आलोचनात्मक चिंतन, जिसमें सूचना का मूल्यांकन किया जाता है। समस्या समाधान भी चिंतन का एक महत्वपूर्ण रूप है। 'संवेदी चिंतन' कोई तकनीकी शब्द या चिंतन का स्थापित प्रकार नहीं है, क्योंकि संवेदनाएं प्राथमिक सूचना ग्रहण करने की प्रक्रियाएं हैं। चिंतन हमेशा उच्च-स्तरीय मानसिक प्रक्रियाओं से संबंधित होता है।

21. (C) ज्ञान का एक संगठित समूह या एक मानसिक ढांचा।
स्कीमा हमारे मस्तिष्क में संचित ज्ञान की वह संरचना है जो वस्तुओं, लोगों या स्थितियों के बारे में हमारी धारणाओं को

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) सूचनाओं को प्राप्त करने, संचित करने और उन्हें पुनः प्राप्त करने की प्रक्रिया।
स्मृति एक ऐसी संज्ञानात्मक क्षमता है जिसमें जानकारी का मानसिक निरुपण किया जाता है। इसकी प्रक्रिया में मुख्य रुप से तीन चरण कूटलेखन, संचयन और पुनर्प्राप्ति शामिल होते हैं। कूटलेखन संवेदी जानकारी को स्वीकार्य रूप में बदलता है, जबकि संचयन इसे समय के साथ सुरक्षित रखता है। अंत में, आवश्यकता होने पर जानकारी को चेतना में वापस लाना ही पुनर्प्राप्ति कहलाती है। यह अधिगम का आधार है।

2. (A) प्रत्यक्षण
प्रत्यक्षण स्मृति प्रक्रिया का प्रारंभिक अंग नहीं है, बल्कि यह संवेदी अंगों के माध्यम से सूचना प्राप्त करने की प्रक्रिया है। स्मृति के तीन मूलभूत घटकों में कूटलेखन, संचयन और पुनर्प्राप्ति शामिल हैं। कूटलेखन सूचना को मानसिक रूप में बदलता है, संचयन इसे भविष्य के लिए सुरक्षित करता है और पुनर्प्राप्ति संचित सूचना को वापस लाने का कार्य करती है। प्रत्यक्षण केवल सूचना के ग्रहण करने से संबंधित है।

3. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
स्मृति के एटकिन्सन और शिफ्रिन मॉडल के अनुसार, अल्पकालिक स्मृति की क्षमता सीमित होती है और जानकारी लगभग 20 से 30 सेकंड तक ही रहती है। इसके विपरीत, दीर्घकालिक स्मृति एक विशाल भंडार गृह की तरह कार्य करती है जिसमें सूचनाओं को जीवन भर के लिए संचित किया जा सकता है। इसमें जानकारी का अर्थगत रूप में कूटलेखन होता है, जो इसे स्थायी और लगभग असीमित बनाता है।

4. (D) पश्चलक्षी अवरोध
स्मृति के संदर्भ में हस्तक्षेप एक महत्वपूर्ण विस्मरण प्रक्रिया है। जब नई सीखी गई जानकारी पुरानी जानकारी की यादों के साथ टकराती है और उन्हें याद करने में बाधा डालती है, तो इसे पश्चलक्षी अवरोध कहा जाता है। इसमें नवीन स्मृतियाँ पुरानी स्मृतियों के संकेतों को कमजोर कर देती हैं या उनके पुनर्प्राप्ति मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती हैं। यह अक्सर तब होता है जब सामग्री समान प्रकृति की हो।

5. (C) यह प्राथमिक संज्ञानात्मक प्रक्रिया का ही पर्यायवाची है।
परा-संज्ञान का तात्पर्य स्वयं की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के बारे में जागरुकता और नियंत्रण से है। यह केवल एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि 'चिंतन के बारे में चिंतन' है। इसमें अधिगमकर्ता अपने स्वयं के सीखने के तरीकों की योजना बनाता है, उनकी निगरानी करता है और अंत में स्वयं मूल्यांकन करता है। यह विद्यार्थियों को उनकी बौद्धिक क्षमताओं को बेहतर बनाने और जटिल समस्याओं को सुलझाने में सहायता करता है।

6. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अग्रलक्षी अवरोध विस्मरण का एक ऐसा सिद्धांत है जहाँ पिछला अधिगम वर्तमान में सीखी जा रही नई जानकारी की पुनर्प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करता है। जब पुरानी यादें इतनी प्रभावी हो जाती हैं कि वे नए अनुभवों को संचित या पुनः प्राप्त नहीं होने देतीं, तब यह हस्तक्षेप होता है। कारण कथन की पुष्टि करता है क्योंकि यह पुरानी जानकारी के नकारात्मक प्रभाव को नई स्मृति पर दर्शाता है।

7. (D) यह तथ्यों, अवधारणाओं और दुनिया के सामान्य ज्ञान की स्मृति है।
अर्थगत स्मृति दीर्घकालिक स्मृति का वह हिस्सा है जो दुनिया के बारे में सामान्य ज्ञान, नियमों, तथ्यों और अवधारणाओं को सुरक्षित रखता है। इसमें व्यक्तिगत अनुभव या घटनाओं का समय और स्थान से कोई सीधा संबंध नहीं होता है। उदाहरण के लिए, किसी देश की राजधानी या गणितीय सूत्रों को याद रखना इसी के अंतर्गत आता है। यह एक मानसिक शब्दकोश या विश्वकोश की तरह कार्य करती है।

8. (A) अग्रलक्षी अवरोध
जब पहले से सीखा गया ज्ञान नए ज्ञान को सीखने या याद रखने में बाधा डालता है, तो उसे अग्रलक्षी अवरोध कहते हैं। यहाँ छात्र की पुरानी स्पेनिश शब्दावली नई फ्रेंच शब्दावली को याद करने की प्रक्रिया में हस्तक्षेप कर रही है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब पुरानी यादें नई सूचनाओं के लिए पुनर्प्राप्ति संकेतों को अवरुद्ध कर देती हैं। चूँकि पिछली जानकारी नई जानकारी के रास्ते में आ रही है।

9. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
अल्पकालिक स्मृति की विशेषता उसकी सीमित क्षमता और संक्षिप्त अवधि है, जबकि दीर्घकालिक स्मृति असीमित क्षमता और लंबी अवधि के लिए जानी जाती है। अग्रलक्षी अवरोध तब होता है जब पुरानी यादें नई सूचना को याद रखने में बाधा डालती हैं। इसके विपरीत, पश्चलक्षी अवरोध में नई जानकारी पुरानी यादों को याद करने में समस्या उत्पन्न करती है। इन विशेषताओं का सही मिलान स्मृति सिद्धांतों की स्पष्ट व्याख्या करता है।

10. (A) उन तंत्रों का वर्णन करना जिनके द्वारा स्मृति से जानकारी लुप्त हो जाती है।
विस्मरण के सिद्धांत मुख्य रूप से उन कारणों और प्रक्रियाओं की खोज करते हैं जिनके कारण हम संचित जानकारी को पुनः प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इनमें ह्रास सिद्धांत, हस्तक्षेप सिद्धांत और पुनर्प्राप्ति विफलता जैसे महत्वपूर्ण दृष्टिकोण शामिल हैं। ये सिद्धांत स्पष्ट करते हैं कि क्या जानकारी समय के साथ धुंधली

32. (B) कूटलेखन
कूटलेखन स्मृति प्रक्रिया का पहला महत्वपूर्ण चरण है जिसमें बाहरी वातावरण से प्राप्त संवेदी सूचनाओं को एक ऐसे मानसिक निरुपण में बदला जाता है जिसे मस्तिष्क समझ और संचित कर सके। यह प्रक्रिया सूचना को ध्वनि, दृश्य या अर्थ के रूप में व्यवस्थित करती है। बिना प्रभावी कूटलेखन के, सूचना को स्मृति में स्थायी रूप से जमा करना संभव नहीं होता है। यह अवधान और प्रत्यक्षण पर निर्भर करता है।

33. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
परा-स्मृति एक व्यक्ति की अपनी स्मृति क्षमताओं, सीमाओं और प्रक्रियाओं के बारे में आंतरिक ज्ञान और जागरूकता है। यह हमें यह समझने में सहायता करती है कि हम किस प्रकार की जानकारी को बेहतर याद रख सकते हैं और किन परिस्थितियों में भूल सकते हैं। जब कोई छात्र यह पहचानता है कि उसकी दृश्य स्मृति श्रवण स्मृति से बेहतर है, तो वह परा-स्मृति का उपयोग कर रहा है। अतः दोनों कथन सत्य हैं।

34. (A) स्पष्ट मानदंडों के विरुद्ध विकल्पों का व्यवस्थित रुप से मूल्यांकन करना।
बेहतर निर्णय लेने की प्रक्रिया में विकल्पों का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण और तार्किक मूल्यांकन अनिवार्य है। इसमें प्रत्येक विकल्प के संभावित लाभों और जोखिमों को पूर्व-निर्धारित मानदंडों के आधार पर तौला जाता है। केवल अंतर्ज्ञान पर निर्भर रहने से त्रुटियों की संभावना बढ़ जाती है। एक प्रभावी निर्णयकर्ता सभी उपलब्ध जानकारी को एकत्रित करता है और संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों से बचते हुए सर्वोत्तम विकल्प का चयन करता है।

35. (C) जब कोई स्पष्ट समाधान उपलब्ध न हो, तो लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में निर्देशित एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया।
समस्या समाधान एक उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक गतिविधि है जो वर्तमान स्थिति और वांछित लक्ष्य के बीच की बाधाओं को दूर करने पर केंद्रित होती है। यह केवल याददाश्त का खेल नहीं है, बल्कि इसमें उपलब्ध जानकारी का विश्लेषण, नए रास्तों की खोज और रणनीतियों का कार्यान्वयन शामिल है। यह प्रक्रिया तब शुरू होती है जब कोई व्यक्ति ऐसी स्थिति का सामना करता है जहाँ लक्ष्य स्पष्ट है पर मार्ग अनिश्चित।

36. (D) स्प्रेडिंग एक्टिवेशन मॉडल
स्प्रेडिंग एक्टिवेशन मॉडल यह प्रस्तावित करता है कि हमारी अर्थगत स्मृति एक जाल की तरह है जहाँ प्रत्येक विचार एक 'नोड' के रूप में जुड़ा होता है। जब हम किसी एक संप्रत्यय के बारे में सोचते हैं, तो उससे जुड़े अन्य संबंधित संप्रत्यय भी सक्रिय हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, 'लाल' शब्द सुनने पर 'सेब' का विचार स्वतः आ सकता है। यह मॉडल स्पष्ट करता है कि ज्ञान कैसे आपस में जुड़ा है।

37. (C) कार्यात्मक स्थिरता
कार्यात्मक स्थिरता एक प्रकार का संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जो व्यक्ति को किसी वस्तु के केवल उसके परिचित या पारंपरिक उपयोग तक सीमित कर देता है। यहाँ बढ़ई हथौड़े को केवल कील ठोकने का यंत्र मान रहा है और उसे किसी भारी वजन के रूप में उपयोग करने के बारे में नहीं सोच पा रहा है। यह मानसिक जड़ता समस्या समाधान में रचनात्मकता को बाधित करती है। नवीन समाधान हेतु इस सीमा को तोड़ना आवश्यक है।

38. (D) I, II और III
स्मृति में हस्तक्षेप एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ एक अधिगम दूसरे अधिगम को बाधित करता है। अग्रलक्षी अवरोध में पुराना ज्ञान नए ज्ञान को याद करने में समस्या पैदा करता है, जबकि पश्चलक्षी अवरोध में नई सीखी गई जानकारी पुरानी यादों को धुंधला कर देती है। ये दोनों ही विस्मरण के प्रमुख कारक हैं। ये सिद्धांत बताते हैं कि विस्मरण अक्सर सूचनाओं के बीच आपसी टकराव और भ्रम के कारण होता है।

39. (D) क्षमता और अवधि
अल्पकालिक और दीर्घकालिक स्मृति के बीच सबसे बुनियादी अंतर उनकी भंडारण क्षमता और सूचना को बनाए रखने की समय सीमा है। अल्पकालिक स्मृति में बहुत कम जानकारी और बहुत कम समय के लिए रहती है। इसके विपरीत, दीर्घकालिक स्मृति की क्षमता को असीमित माना जाता है और इसमें जानकारी वर्षों या जीवन भर के लिए सुरक्षित रह सकती है। यह अंतर सूचना प्रसंस्करण के विभिन्न स्तरों को दर्शाता है।

40. (A) संप्रत्यय के उदाहरणों और गैर-उदाहरणों दोनों की प्रस्तुति।
संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया तब सबसे प्रभावी होती है जब शिक्षार्थी को यह स्पष्ट हो कि उस श्रेणी में क्या आता है और क्या नहीं। उदाहरणों से संप्रत्यय की मुख्य विशेषताओं की पहचान होती है, जबकि गैर-उदाहरण उन सीमाओं को स्पष्ट करते हैं जहाँ वह संप्रत्यय लागू नहीं होता। यह तुलनात्मक अध्ययन मस्तिष्क को विभेदीकरण करने में सहायता करता है। यह संतुलन संज्ञानात्मक स्पष्टता और सटीक वर्गीकरण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

41. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मनुष्य अक्सर जटिल निर्णयों को सरल बनाने के लिए हेयूरिस्टिक्स या मानसिक शॉर्टकट का उपयोग करता है, क्योंकि विकल्प विश्लेषण के लिए समय और संसाधन सीमित होते हैं। यद्यपि ये शॉर्टकट आमतौर पर प्रभावी होते हैं, लेकिन ये संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों और व्यवस्थित त्रुटियों को भी जन्म दे सकते हैं। कारण स्पष्ट करता है कि कैसे ये मानसिक प्रक्रियाएं पूर्वाग्रहों का आधार बनती हैं। अतः कथन और कारण दोनों ही सत्य हैं।

42. (A) पुनर्प्राप्ति विफलता
"जीभ की नोक पर" होने वाली परिघटना एक ऐसी स्थिति है जहाँ व्यक्ति को विश्वास होता है कि उसे जानकारी पता है, लेकिन वह उसे वर्तमान में याद नहीं कर पाता। यह भंडारण की कमी नहीं, बल्कि पुनर्प्राप्ति की विफलता है। इसमें जानकारी दीर्घकालिक स्मृति में मौजूद होती है, लेकिन सही 'पुनर्प्राप्ति संकेत' न मिलने के कारण वह चेतना में नहीं आ पाती। यह स्मृति के गतिशील स्वभाव को दर्शाता है।

अनुसार, यदि किसी भाषा में किसी विशिष्ट संप्रत्यय के लिए शब्द नहीं हैं, तो उस भाषा को बोलने वाले लोग उस विचार को महसूस करने में भिन्न हो सकते हैं। यद्यपि इसका उदार संस्करण अधिक मान्य है, लेकिन इसका मूल तर्क भाषा की चिंतन प्रक्रिया पर प्रबल शक्ति को दर्शाता है।

64. (D) मानसिक विन्यास
मानसिक विन्यास किसी समस्या को हल करने के लिए उसी पुरानी और परिचित रणनीति का उपयोग करने की प्रवृत्ति है जो अतीत में सफल रही हो। यह चिंतन में जड़ता पैदा करता है और व्यक्ति को नई स्थितियों में बेहतर समाधान खोजने से रोकता है। जबकि मंथन, उपमाओं का उपयोग और समस्या को छोटे लक्ष्यों में बाँटना प्रभावी समस्या समाधान की सहायक रणनीतियाँ हैं, मानसिक विन्यास एक मनोवैज्ञानिक बाधा की तरह कार्य करता है जो रचनात्मकता को कम कर देता है।

65. (A) सुदृढ़ीकरण
विस्मरण के स्थापित मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों में ह्रास, हस्तक्षेप और पुनर्प्राप्ति विफलता प्रमुख हैं। ह्रास समय बीतने के साथ स्मृतियों के धुंधला होने को स्पष्ट करता है, जबकि हस्तक्षेप अन्य स्मृतियों के नकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है। पुनर्प्राप्ति विफलता संकेतों की अनुपलब्धता से संबंधित है। 'सुदृढ़ीकरण' विस्मरण का नहीं, बल्कि अधिगम और स्मृति को मजबूत करने का एक सिद्धांत है। यह उस प्रक्रिया का वर्णन करता है जिसके माध्यम से नई यादें मस्तिष्क में स्थायी और स्थिर बनती हैं।

66. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
परा-संज्ञान अधिगम की एक उच्च-स्तरीय प्रक्रिया है जहाँ व्यक्ति अपनी विचार प्रक्रियाओं का स्वयं प्रबंधक बनता है। यह उसे यह समझने में सक्षम बनाता है कि उसे क्या सीखने की आवश्यकता है और उसकी वर्तमान रणनीति कितनी प्रभावी है। कथन II में दिया गया उदाहरण परा-संज्ञानात्मक निगरानी का एक आदर्श रूप है। ऐसी रणनीतियाँ विद्यार्थियों को स्वतंत्र विचारक बनाती हैं और उन्हें जटिल सूचनाओं को गहराई से आत्मसात करने में सहायता करती हैं। अतः दोनों कथन सत्य हैं।

67. (D) प्रासंगिक स्मृति : जीवन की घटनाओं की स्मृति
प्रासंगिक स्मृति दीर्घकालिक स्मृति का वह हिस्सा है जो हमारे व्यक्तिगत जीवन की विशिष्ट घटनाओं और अनुभवों को सुरक्षित रखता है। यह एक प्रकार की मानसिक आत्मकथा है जिसमें घटना के साथ समय और स्थान की जानकारी भी जुड़ी होती है। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि अग्रलक्षी अवरोध में पुरानी यादें नई में बाधा डालती हैं और पश्चलक्षी में नई यादें पुरानी में। अर्थगत स्मृति सामान्य ज्ञान और तथ्यों से संबंधित होती है। अतः विकल्प (D) ही एकमात्र सही युग्म है।

68. (A) पहुँचने के लिए एक लक्ष्य है, लेकिन लक्ष्य तक जाने का रास्ता तुरंत स्पष्ट नहीं है।
समस्या समाधान की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब हमारे सामने एक निश्चित लक्ष्य होता है और हम उसे प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन वर्तमान में हमारे पास कोई स्पष्ट मार्ग उपलब्ध नहीं होता है। यह अंतराल ही मानसिक संघर्ष और चिंतन की प्रक्रिया को जन्म देता है। यदि समाधान तुरंत ज्ञात हो, तो वह समस्या नहीं बल्कि एक नियमित कार्य है। समस्या की प्रकृति में बाधाओं का होना और उन बाधाओं को दूर करने के लिए संज्ञानात्मक प्रयासों की आवश्यकता अनिवार्य होती है।

69. (B) II, III, I
सृजनात्मक चिंतन पर विभिन्न कारकों का प्रभाव अलग-अलग होता है। अपसारी चिंतन सबसे सकारात्मक कारक है क्योंकि यह कई नए विचार उत्पन्न करने की अनुमति देता है। आंतरिक अभिप्रेरणा व्यक्ति को बिना किसी बाहरी दबाव के सृजन करने की शक्ति देती है। इसके विपरीत, कार्यात्मक स्थिरता एक नकारात्मक कारक है क्योंकि यह व्यक्ति की सोच को वस्तुओं के पारंपरिक उपयोग तक सीमित कर देती है और रचनात्मकता को बाधित करती है। अतः यह क्रम सकारात्मक से नकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है।

70. (A) परा-स्मृति
परा-स्मृति एक व्यक्ति का अपनी स्मृति प्रणाली और उसकी क्षमताओं के बारे में सचेत ज्ञान है। इसमें यह समझना शामिल है कि हम किसी जानकारी को याद रखने में कितने सक्षम हैं और किन परिस्थितियों में हमारी याददाश्त बेहतर काम करती है। यह हमें यह आकलन करने में सहायता करती है कि क्या हमने पर्याप्त अध्ययन किया है या क्या हमें और अभ्यास की आवश्यकता है। यह 'जानने के बारे में जानना' एक महत्वपूर्ण परा-संज्ञानात्मक कौशल है जो सीखने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है।

71. (D) एक पदानुक्रमित या नेटवर्क संरचना
अर्थगत स्मृति के अधिकांश मॉडल ज्ञान को एक संगठित नेटवर्क के रूप में दर्शाते हैं। इसमें संप्रत्ययों को 'नोड्स' कहा जाता है और उनके बीच के संबंधों को जुड़ाव के माध्यम से दिखाया जाता है। यह संरचना अक्सर पदानुक्रमित होती है, जहाँ सामान्य श्रेणियाँ ऊपर होती हैं और विशिष्ट उदाहरण नीचे। यह व्यवस्था मस्तिष्क को सूचनाओं को तेजी से खोजने और संबंधित तथ्यों के बीच सार्थक संबंध स्थापित करने में सक्षम बनाती है, जो कुशल सूचना प्रसंस्करण का आधार है।

72. (A) केवल I और II
संप्रत्यय चिंतन का मुख्य आधार हैं जो हमें संसार की वस्तुओं को श्रेणियों में वर्गीकृत करने में सहायता करते हैं। संप्रत्यय निर्माण के माध्यम से हम विविध अनुभवों के बीच साझा गुणों को पहचानते हैं। तीसरा कथन गलत है क्योंकि प्राकृतिक संप्रत्यय अक्सर अस्पष्ट सीमाओं वाले होते हैं और अनुभवों से विकसित होते हैं, जबकि कृत्रिम संप्रत्यय ही कठोर नियमों द्वारा परिभाषित होते हैं। अतः पहले दो कथन संप्रत्यय की प्रकृति और उनकी निर्माण प्रक्रिया का सही वर्णन करते हैं।

73. (C) हस्तक्षेप की लौकिक दिशा।
अग्रलक्षी और पश्चलक्षी अवरोध के बीच का मूल अंतर समय के प्रवाह से संबंधित है। अग्रलक्षी अवरोध में पुरानी जानकारी नई जानकारी की ओर प्रभाव डालती है और उसे याद करने

की आवश्यकता है। यह केवल जानकारी को याद करना नहीं है, बल्कि अपनी मानसिक रणनीतियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना है। एक सफल शिक्षार्थी निरंतर यह जाँचता रहता है कि क्या उसकी पद्धति काम कर रही है। यह आत्म-नियमन बौद्धिक दक्षता बढ़ाता है।

54. (D) विचार की मौलिक विशेषताएं और प्रक्रियाएं।
चिंतन की प्रकृति का तात्पर्य उन आंतरिक मानसिक गतिविधियों से है जिनके माध्यम से हम सूचनाओं को संसाधित करते हैं। इसमें प्रत्यक्षण, स्मृति, तर्क और निर्णय लेना जैसी विभिन्न जटिल प्रक्रियाएं शामिल होती हैं। यह केवल विचारों का प्रवाह नहीं है, बल्कि एक उद्देश्यपूर्ण और लक्ष्य-निर्देशित गतिविधि है। चिंतन की मौलिक विशेषताओं में प्रतीकों का उपयोग और मानसिक मॉडलों का निर्माण शामिल है। यह मानव चेतना का आधार है जो समस्याओं को सुलझाता है।

55. (A) जानकारी उपलब्ध नहीं होती क्योंकि अन्य जानकारी रास्ते में आ जाती है।
हस्तक्षेप सिद्धांत यह मानता है कि विस्मरण इसलिए नहीं होता कि यादें समय के साथ मिट जाती हैं, बल्कि इसलिए होता है क्योंकि अन्य स्मृतियाँ उनके पुनर्प्राप्ति मार्ग में बाधा डालती हैं। जब दो सूचनाएं एक जैसी होती हैं, तो मस्तिष्क उनमें भ्रमित हो जाता है, जिससे लक्षित जानकारी तक पहुँचना कठिन हो जाता है। यह प्रतिस्पर्धा पुरानी और नई यादों के बीच होती है। यह सिद्धांत स्मृति की गतिशील और इंटरैक्टिव प्रकृति को स्पष्ट करता है।

56. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सृजनात्मक चिंतन के लिए मानसिक लचीलापन अनिवार्य है, जिसमें व्यक्ति को पुराने और घिसे-पिटे तरीकों से ऊपर उठना पड़ता है। मानसिक विन्यास हमें वही रणनीतियाँ अपनाने पर मजबूर करते हैं जो पहले सफल रही थीं, भले ही वे वर्तमान स्थिति के लिए उपयुक्त न हों। कारण स्पष्ट करता है कि कैसे ये विन्यास नवीनता के मार्ग में बाधा बनते हैं। अतः नई संभावनाओं की खोज के लिए इन मानसिक बंधनों को तोड़ना आवश्यक है।

57. (D) परीक्षा से ठीक पहले सघन अभ्यास
स्मृति सुधार की वैज्ञानिक विधियों में सविस्तार रिहर्सल, अंतराल अभ्यास और स्मृति-सहायक युक्तियों का उपयोग शामिल है। ये तकनीकें जानकारी को गहराई से संसाधित करने और उसे दीर्घकालिक स्मृति में स्थायी बनाने में सहायता करती हैं। इसके विपरीत, परीक्षा से ठीक पहले सघन अभ्यास केवल बहुत कम समय के लिए जानकारी को अल्पकालिक स्मृति में रखता है। यह विधि तनाव बढ़ाती है और जानकारी के जल्दी भूलने की संभावना को बढ़ा देती है।

58. (A) सामना किए गए सकारात्मक और नकारात्मक उदाहरणों की संख्या।
संप्रत्यय निर्माण एक अधिगम प्रक्रिया है जहाँ हम वस्तुओं के गुणों को पहचानकर उन्हें वर्गीकृत करना सीखते हैं। इसमें सकारात्मक उदाहरण यह बताते हैं कि संप्रत्यय में क्या विशेषताएं होनी चाहिए, जबकि नकारात्मक उदाहरण उन सीमाओं को स्पष्ट करते हैं। इन उदाहरणों की पर्याप्त संख्या मस्तिष्क को सटीक वर्गीकरण के लिए आवश्यक डेटा प्रदान करती है। अनुभवों की अधिकता से संप्रत्यय की समझ गहरी होती है, जिससे हम नई वस्तुओं को सही श्रेणी में रख पाते हैं।

59. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
स्कीमा हमारे मस्तिष्क में किसी स्थिति के बारे में एक सामान्य ढांचा है। परा-स्मृति अपनी स्मृति की क्षमताओं और कमजोरियों के बारे में स्वयं की जागरूकता है। संप्रत्यय वस्तुओं का एक मानसिक समूह है, जैसे 'कुत्ता' शब्द एक श्रेणी का प्रतिनिधित्व करता है। पश्चलक्षी अवरोध तब होता है जब नई जानकारी पुरानी यादों को याद करने में बाधा डालती है। इन अवधारणाओं का सही मिलान संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की बुनियादी समझ को स्पष्ट करता है।

60. (A) एल्गोरिदम एक सही समाधान की गारंटी देते हैं, जबकि हेयूरिस्टिक्स नहीं।
एल्गोरिदम और हेयूरिस्टिक्स समस्या समाधान की दो अलग-अलग रणनीतियाँ हैं। एल्गोरिदम एक चरण-दर-चरण, तार्किक प्रक्रिया है जो यदि सही ढंग से पालन की जाए, तो हमेशा सटीक समाधान तक पहुँचाती है। इसके विपरीत, हेयूरिस्टिक्स मानसिक शॉर्टकट हैं जो समाधान की गति तो बढ़ाते हैं, लेकिन उनमें त्रुटि की संभावना बनी रहती है। हेयूरिस्टिक्स अनिश्चित स्थितियों में उपयोगी होते हैं जहाँ समय कम हो, जबकि एल्गोरिदम गणितीय समस्याओं के लिए अधिक उपयुक्त होते हैं।

61. (D) अल्पकालिक स्मृति
अल्पकालिक स्मृति वह प्रणाली है जो वर्तमान में उपयोग की जा रही जानकारी को बहुत सीमित समय और मात्रा के लिए रखती है। इसकी विशिष्ट क्षमता लगभग सात इकाइयाँ मानी जाती है और यह सूचनाओं को केवल 20-30 सेकंड तक सुरक्षित रख सकती है। यदि जानकारी को दोहराया नहीं जाता है, तो वह शीघ्र ही नष्ट हो जाती है। यह एक कार्यकारी कार्यस्थल की तरह कार्य करती है जहाँ सूचना को संसाधित किया जाता है ताकि उसे दीर्घकालिक स्मृति में भेजा जा सके।

62. (B) उपलब्धता हेयूरिस्टिक
उपलब्धता हेयूरिस्टिक एक संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जिसमें लोग किसी घटना की संभावना का अनुमान इस आधार पर लगाते हैं कि उससे संबंधित उदाहरण उनके दिमाग में कितनी आसानी से आते हैं। अक्सर जो यादें हाल की या नाटकीय होती हैं, वे अधिक 'उपलब्ध' होती हैं, जिससे हम गलत निष्कर्ष निकाल सकते हैं। उदाहरण के लिए, विमान दुर्घटना की खबर देखने के बाद हवाई यात्रा को अधिक खतरनाक मानना। यह मानसिक शॉर्टकट त्वरित होता है, पर अक्सर सांख्यिकीय डेटा से मेल नहीं खाता।

63. (C) भाषा चिंतन को निर्धारित करती है।
सापिर-वोर्फ परिकल्पना यह मानती है कि हमारी भाषा केवल विचारों को व्यक्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि वह हमारे विचारों को सक्रिय रूप से आकार देती है। इस सिद्धांत के

पश्चलक्षी अवरोध में नया अधिगम पुरानी यादों को धुंधला कर देता है। ह्रास का अर्थ है समय बीतने के साथ स्मृति चिह्नों का स्वाभाविक रूप से कमजोर होना। पुनर्प्राप्ति संकेत वे उद्दीपन हैं जो हमें दबी हुई जानकारी को वापस चेतना में लाने में सहायता करते हैं। इन अवधारणाओं का यह मिलान स्मृति के गतिशील और प्रतिस्पर्धी स्वरूप को तार्किक रूप से स्पष्ट करता है।

102. (B) अग्रलक्षी और पश्चलक्षी
हस्तक्षेप सिद्धांत के अनुसार, दीर्घकालिक स्मृति में विस्मरण मुख्य रूप से दो प्रकार के हस्तक्षेपों के कारण होता है। अग्रलक्षी अवरोध तब होता है जब पुरानी स्मृतियाँ नई जानकारी के कूटलेखन या पुनर्प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करती हैं। पश्चलक्षी अवरोध तब होता है जब हाल ही में सीखी गई जानकारी पुरानी यादों तक पहुँचने में रुकावट डालती है। ये दोनों प्रक्रियाएं दर्शाती हैं कि स्मृतियाँ स्थिर नहीं होतीं, बल्कि वे एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं। विस्मरण अक्सर जानकारी के मिटने से नहीं, बल्कि स्मृतियों के बीच टकराव के कारण होता है।

103. (C) सूचना के प्रतिनिधित्व
चिंतन एक उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसे 'मानसिक अभ्यावेदन' के हेरफेर के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जब हम सोचते हैं, तो हम भौतिक वस्तुओं के बजाय उनके मानसिक प्रतीकों, संप्रत्ययों, छवियों और भाषा का उपयोग करते हैं। यह प्रक्रिया हमें उन चीजों के बारे में भी विचार करने की अनुमति देती है जो वर्तमान में हमारे सामने मौजूद नहीं हैं। चिंतन के माध्यम से हम जानकारी को व्यवस्थित करते हैं, उसका विश्लेषण करते हैं और भविष्य की कल्पना करते हैं। यह सूचना को नया रूप देने वाली आंतरिक मानसिक क्रिया है।

104. (D) I, II और III
सृजनात्मक चिंतन एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसकी मुख्य पहचान नवीनता और मौलिकता है। यह अनिवार्य रूप से अपसारी चिंतन से जुड़ा है, जहाँ एक ही समस्या के कई अनूठे समाधान खोजे जाते हैं। साथ ही, सृजनात्मकता पर्यावरणीय कारकों से गहराई से प्रभावित होती है; एक सहायक और खुला वातावरण इसे बढ़ावा देता है, जबकि अत्यधिक आलोचना और विफलता का डर इसे कुंठित कर सकता है। अतः दिए गए तीनों कथन सृजनात्मकता की प्रकृति, उसकी प्रक्रिया और उसे प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारकों का सटीक और व्यापक वर्णन करते हैं।

105. (C) एक मानसिक विन्यास
मानसिक विन्यास या 'मेंटल सेट' तब होता है जब हम किसी समस्या को हल करने के लिए उसी पुरानी पद्धति का उपयोग करते रहते हैं जो अतीत में हमारे लिए सफल रही है, भले ही अब अधिक बेहतर विकल्प उपलब्ध हों। यहाँ व्यक्ति का पुराने मार्ग पर टिके रहना एक संज्ञानात्मक जड़ता को दर्शाता है। वह अपनी आदत और पिछले अनुभव के कारण नए और अधिक कुशल राजमार्ग को अपनाने के प्रति मानसिक रूप से अवरुद्ध है। यह स्थिति समस्या समाधान में लचीलेपन की कमी और परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध को उजागर करती है।

106. (B) किसी समस्या के समाधान का अचानक और अक्सर नया अहसास।
अंतर्दृष्टि समस्या समाधान की वह स्थिति है जिसे अक्सर 'अहा!' अनुभव कहा जाता है। इसमें समाधान धीरे-धीरे नहीं, बल्कि अचानक एक झटके में मस्तिष्क में कौंधता है। यह तब होता है जब व्यक्ति समस्या के विभिन्न तत्वों को एक नए और सार्थक तरीके से पुनर्गठित करता है। अंतर्दृष्टि अक्सर तब आती है जब व्यक्ति समस्या पर लगातार विचार करने के बाद थोड़ा विराम लेता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि हमारा मस्तिष्क अचेतन रूप से सूचनाओं को संसाधित कर रहा होता है और अचानक एक पूर्ण समाधान प्रस्तुत कर देता है।

107. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
सविस्तार रिहर्सल वास्तव में स्मृति सुधार की एक उत्कृष्ट रणनीति है, इसलिए कथन सत्य है। हालाँकि, कारण गलत है क्योंकि जानकारी को केवल बार-बार दोहराना 'अनुरक्षण रिहर्सल' कहलाता है, सविस्तार नहीं। सविस्तार रिहर्सल में नई जानकारी को पहले से ज्ञात जानकारी के साथ सार्थक रूप से जोड़ना और उसका विस्तार करना शामिल होता है। यह कूटलेखन की गहराई को बढ़ाता है, जिससे जानकारी दीर्घकालिक स्मृति में अधिक मजबूती से संचित होती है। यांत्रिक दोहराव की तुलना में यह विधि अधिगम के लिए अधिक प्रभावी है।

108. (A) पूरी तरह से भावनात्मक प्रतिक्रियाओं पर निर्भर रहना।
बेहतर निर्णय लेने के लिए तार्किक विश्लेषण, विकल्पों का मूल्यांकन और व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के प्रति जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। भावनाओं का हमारे निर्णयों में स्थान होता है, लेकिन पूरी तरह से आवेगी प्रतिक्रियाओं पर निर्भर रहना अक्सर तर्कहीन और त्रुटिपूर्ण चुनाव का कारण बनता है। भावनाएं वास्तविकता को विकृत कर सकती हैं और हमें दीर्घकालिक परिणामों के बजाय तात्कालिक संतुष्टि की ओर ले जा सकती हैं। इसलिए, एक संतुलित निर्णय के लिए संज्ञानात्मक नियंत्रण और वस्तुनिष्ठ जानकारी का उपयोग करना अनिवार्य है।

109. (C) विश्व शांति कैसे प्राप्त करें, यह पता लगाना।
एक 'खराब परिभाषित समस्या' वह होती है जहाँ न तो प्रारंभिक स्थिति स्पष्ट होती है और न ही लक्ष्य स्थिति या उसे प्राप्त करने के साधन। 'विश्व शांति' का लक्ष्य अत्यंत विशाल, जटिल और अस्पष्ट है क्योंकि विभिन्न लोगों के लिए इसके अर्थ अलग-अलग हो सकते हैं और इसे प्राप्त करने का कोई निश्चित मार्ग नहीं है। इसके विपरीत, गणितीय समीकरण या फर्नीचर असेंबल करने जैसी समस्याओं में स्पष्ट नियम और लक्ष्य होते हैं। खराब परिभाषित समस्याओं को सुलझाने के लिए उच्च-स्तरीय सृजनात्मकता की आवश्यकता होती है।

110. (A) नई जानकारी कैसे व्यवस्थित होती है और मौजूदा ज्ञान के साथ एकीकृत होती है।
स्कीमा की अवधारणा यह समझने के लिए केंद्रीय है कि हमारा मस्तिष्क कैसे सूचनाओं को सार्थक रूप से श्रेणीबद्ध करता है। यह एक मानसिक मचान की तरह कार्य करता है जो हमें नई आने वाली जानकारी को पहले से मौजूद ज्ञान के ढांचे में

में बाधा बनती है। वहीं पश्चलक्षी अवरोध में नई सीखी गई जानकारी पीछे की ओर मुड़कर पुरानी यादों को प्रभावित करती है और उनके पुनर्प्राप्ति मार्ग को बाधित करती है। यह अंतर विस्मरण के हस्तक्षेप सिद्धांत को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह बताता है कि हस्तक्षेप भविष्यगामी है या अतीतगामी।

74. (D) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
पुष्टिकरण पूर्वाग्रह हमारी वह प्रवृत्ति है जिसमें हम केवल ऐसी जानकारी को महत्त्व देते हैं जो हमारी वर्तमान मान्यताओं का समर्थन करती है। इसके विपरीत जानकारी को हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं। अपनी राय के विरुद्ध साक्ष्य खोजना एक शक्तिशाली परा-संज्ञानात्मक रणनीति है जो इस पूर्वाग्रह को कम करती है। यह हमें अधिक वस्तुनिष्ठ बनाती है और हमें अपनी धारणाओं को चुनौती देने के लिए प्रोत्साहित करती है। ऐसा करने से हम एकतरफा सोच से बचते हैं और अधिक संतुलित निर्णय ले पाते हैं।

75. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
हेयूरिस्टिक्स वास्तव में समस्या समाधान और निर्णय लेने में बहुत प्रभावी उपकरण हैं क्योंकि वे मानसिक जटिलता को कम करते हैं और त्वरित प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाते हैं। हालाँकि, कारण गलत है क्योंकि हेयूरिस्टिक्स कोई चरण-दर-चरण प्रक्रिया नहीं हैं और न ही वे हमेशा सही उत्तर की गारंटी देते हैं। ये केवल 'व्यावहारिक नियम' हैं जो अधिकांश समय काम करते हैं। एल्गोरिदम ही वे प्रक्रियाएं हैं जो सटीक समाधान की गारंटी देती हैं। अतः कथन सत्य है पर कारण असत्य।

76. (B) कूटलेखन, संचयन और पुनर्प्राप्ति
स्मृति की प्रकृति एक गतिशील प्रक्रिया है जिसमें तीन मुख्य चरण शामिल होते हैं। कूटलेखन वह प्रक्रिया है जिसमें संवेदी सूचना को मस्तिष्क द्वारा समझने योग्य रुप में बदला जाता है। संचयन इस जानकारी को समय के साथ सुरक्षित रखने का कार्य करता है। पुनर्प्राप्ति वह अंतिम चरण है जहाँ संचित जानकारी को आवश्यकता पड़ने पर चेतना में वापस लाया जाता है। ये तीनों प्रक्रियाएं मिलकर एक एकीकृत प्रणाली के रूप में कार्य करती हैं, जिससे मनुष्य अपने अतीत के अनुभवों का उपयोग करता है।

77. (D) प्रतिबिंबात्मक
दीर्घकालिक स्मृति के प्रमुख प्रकारों में प्रासंगिक स्मृति, अर्थगत स्मृति और प्रक्रियात्मक स्मृति शामिल हैं। 'प्रतिबिंबात्मक' स्मृति दीर्घकालिक स्मृति का कोई वैज्ञानिक रुप से मान्यता प्राप्त या स्वतंत्र प्रकार नहीं है। यह शब्द अक्सर दार्शनिक चिंतन के संदर्भ में उपयोग किया जा सकता है, लेकिन स्मृति की संज्ञानात्मक संरचना में इसका स्थान नहीं है। स्मृति प्रणालियों का वर्गीकरण मुख्य रूप से संचित की जाने वाली जानकारी की प्रकृति और पुनर्प्राप्ति के तरीकों पर आधारित होता है।

78. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
सृजनात्मक चिंतन का अर्थ है नवीन और मौलिक विचारों को जन्म देना। भाषा की भूमिका चिंतन में प्रतीकों और नियमों के माध्यम से विचारों के हेरफेर को सुगम बनाना है। संप्रत्यय निर्माण साझा विशेषताओं के आधार पर वस्तुओं के वर्गीकरण की प्रक्रिया है। समस्या समाधान वह संज्ञानात्मक गतिविधि है जिसमें किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बाधाओं को पार किया जाता है। इन अवधारणाओं का सही मिलान करने पर चिंतन और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के विभिन्न पहलुओं के बीच कार्यात्मक संबंध स्थापित होता है।

79. (C) स्कीमा
स्कीमा ज्ञान के व्यवस्थित मानसिक ढांचे हैं जो हमें संसार की जटिल सूचनाओं को सरलता से संसाधित करने में सहायता करते हैं। ये हमें यह समझने में सक्षम बनाते हैं कि विभिन्न स्थितियों में क्या अपेक्षा की जानी चाहिए। यद्यपि ये सूचना प्रसंस्करण को कुशल बनाते हैं, लेकिन इनका नकारात्मक पक्ष यह है कि ये हमारी स्मृति में अंतराल को अपनी पूर्व-धारणाओं से भर सकते हैं। इसके परिणामस्वरुप, कभी-कभी हम घटनाओं को गलत तरीके से याद कर सकते हैं या उनमें ऐसे विवरण जोड़ सकते हैं जो वास्तव में नहीं थे।

80. (A) कूटलेखन विफलता
कई बार हम सोचते हैं कि हम कुछ भूल गए हैं, लेकिन वास्तविकता यह होती है कि वह जानकारी कभी हमारी दीर्घकालिक स्मृति में पहुँची ही नहीं थी। इसे कूटलेखन विफलता कहते हैं। यह तब होता है जब हम किसी जानकारी पर पर्याप्त ध्यान नहीं देते या उसे सार्थक रूप में संसाधित नहीं करते हैं। चूँकि जानकारी को स्थायी भंडारण के लिए ठीक से 'रिकॉर्ड' ही नहीं किया गया था, इसलिए उसे बाद में याद करना असंभव होता है। यह विस्मरण स्मृति के संचयन चरण से पहले की एक महत्वपूर्ण त्रुटि है।

81. (D) चिंतन में तर्क, समस्या समाधान और निर्णय लेने जैसी विभिन्न मानसिक गतिविधियाँ शामिल हैं।
चिंतन एक उच्च-स्तरीय और व्यापक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जो केवल सूचना को याद रखने तक सीमित नहीं है। इसमें उपलब्ध जानकारी का विश्लेषण करना, विभिन्न विकल्पों के बीच चुनाव करना और तार्किक निष्कर्ष निकालना शामिल है। यह एक सक्रिय मानसिक गतिविधि है जिसमें हम संप्रत्ययों, प्रतीकों और मानसिक छवियों का उपयोग करके अपने अनुभवों को नया रूप देते हैं। चिंतन ही वह क्षमता है जो मानव को अन्य प्रजातियों से अलग बनाती है और हमें भविष्य की योजना बनाने के योग्य बनाती है।

82. (B) मानसिक विन्यास
मानसिक विन्यास या 'मेंटल सेट' चिंतन की एक ऐसी जड़ता है जहाँ व्यक्ति समस्याओं को केवल उन्हीं तरीकों से हल करने की कोशिश करता है जो अतीत में सफल रहे हैं। यह लचीलेपन की कमी को दर्शाता है और व्यक्ति को नई स्थितियों के अनुसार अपनी रणनीति बदलने से रोकता है। यद्यपि पहले के अनुभव अक्सर मददगार होते हैं, लेकिन जब वे नई और भिन्न समस्याओं पर लागू किए जाते हैं, तो वे समाधान खोजने में बाधा बन सकते हैं। प्रभावी समस्या समाधान के लिए इस मानसिक जड़ता को तोड़ना अनिवार्य होता है।

43. (D) कठोर और अनम्य चिंतन
सृजनात्मक व्यक्तियों की पहचान उनके खुलेपन, जिज्ञासा और मानसिक लचीलेपन से होती है। वे समस्याओं को कई नए दृष्टिकोणों से देखने की क्षमता रखते हैं। कठोर और अनम्य चिंतन सृजनात्मकता का विरोधी है क्योंकि यह व्यक्ति को स्थापित नियमों और पुरानी पद्धतियों से चिपके रहने के लिए मजबूर करता है। सृजनात्मक होने के लिए पारंपरिक सोच की सीमाओं को तोड़ना और नवीन मार्गों का अन्वेषण करना अनिवार्य होता है।

44. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
एल्गोरिदम एक संरचित प्रक्रिया है जो सही उत्तर सुनिश्चित करती है, जबकि हेयूरिस्टिक एक व्यावहारिक शॉर्टकट है जो त्वरित निर्णय में सहायता करता है। अंतर्दृष्टि अचानक होने वाला समाधान का अहसास है, जिसे अक्सर 'अहा!' अनुभव कहा जाता है। मानसिक विन्यास किसी समस्या को केवल एक पुराने तरीके से ही हल करने की प्रवृत्ति है। इन अवधारणाओं का सही मिलान समस्या समाधान की विभिन्न रणनीतियों को स्पष्ट करता है।

45. (C) एक स्मृति द्वारा दूसरी स्मृति में रुकावट या हस्तक्षेप।
स्मृति के संदर्भ में अवरोध या हस्तक्षेप एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ एक जानकारी दूसरी जानकारी को याद रखने में बाधा उत्पन्न करती है। यह तब होता है जब दो स्मृतियों के बीच समानता हो और मस्तिष्क उन्हें अलग करने में भ्रमित हो जाए। यह मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है: अग्रलक्षी और पश्चलक्षी। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि हम जानकारी नष्ट होने के बजाय आपसी टकराव के कारण भूलते हैं।

46. (D) प्रासंगिक स्मृति
प्रासंगिक स्मृति दीर्घकालिक स्मृति का वह भाग है जिसमें हमारे जीवन की व्यक्तिगत घटनाओं और अनुभवों को समय और स्थान के संदर्भ में संचित किया जाता है। जैसे कि आपका पिछला जन्मदिन। अन्य विकल्प जैसे संवेदी स्मृति अत्यंत संक्षिप्त अवधि की होती हैं। प्रासंगिक स्मृति हमें अपनी आत्मकथात्मक स्मृतियों को याद रखने की क्षमता देती है, जिससे हमें अपने अतीत के साथ निरंतरता का अनुभव होता है। यह व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है।

47. (A) III, II, I
एटकिन्सन-शिफ्रिन मॉडल के अनुसार, सूचना प्रसंस्करण एक निश्चित क्रम में होता है। सबसे पहले, जानकारी संवेदी स्मृति में प्रवेश करती है, जहाँ यह एक सेकंड से भी कम समय के लिए रहती है। यदि इस पर ध्यान दिया जाता है, तो यह अल्पकालिक स्मृति में जाती है, जिसकी क्षमता सीमित होती है। अंत में, सार्थक कूटलेखन के माध्यम से जानकारी दीर्घकालिक स्मृति में स्थानांतरित हो जाती है। यह क्रम स्मृति के व्यवस्थित स्वरूप को दर्शाता है।

48. (B) सघन अभ्यास
सघन अभ्यास एक ऐसी तकनीक है जिसमें बिना किसी ब्रेक के लंबे समय तक किसी सामग्री को रटने का प्रयास किया जाता है। इसे अक्सर 'क्रैमिंग' भी कहा जाता है। यद्यपि यह अल्पकालिक परिणामों के लिए उपयोगी लग सकता है, लेकिन दीर्घकालिक स्मृति के लिए यह अंतराल अभ्यास की तुलना में बहुत कम प्रभावी होता है। लगातार पढ़ने से मस्तिष्क थक जाता है और सूचनाओं के बीच हस्तक्षेप बढ़ जाता है, जिससे कूटलेखन बाधित होता है।

49. (C) स्कीमा एक संगठनात्मक ढांचा प्रदान करते हैं जो कूटलेखन और पुनर्प्राप्ति का मार्गदर्शन कर सकता है।
स्कीमा हमारे ज्ञान के वे सक्रिय मानसिक ढांचे हैं जो नई जानकारी को समझने और व्यवस्थित करने में सहायता करते हैं। जब हम कुछ नया सीखते हैं, तो हमारा मस्तिष्क उसे पहले से मौजूद स्कीमा के साथ जोड़ने का प्रयास करता है। यह प्रक्रिया कूटलेखन को तेज और अधिक कुशल बनाती है। पुनर्प्राप्ति के दौरान भी स्कीमा हमें महत्वपूर्ण विवरणों को याद करने में संकेत प्रदान करते हैं। हालाँकि, ये कभी-कभी पूर्वाग्रह भी उत्पन्न करते हैं।

50. (A) कई दृष्टिकोणों और विकल्पों पर विचार करना।
एक संतुलित और प्रभावी निर्णय लेने के लिए उपलब्ध सभी सूचनाओं का विश्लेषण और विभिन्न दृष्टिकोणों को समझना आवश्यक है। जब हम केवल एक विकल्प पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम महत्वपूर्ण पहलुओं को नजरअंदाज कर सकते हैं। विभिन्न विकल्पों की पहचान करने और उनके संभावित परिणामों की तुलना करने से जोखिम कम होता है। यह प्रक्रिया संज्ञानात्मक लचीलापन बढ़ाती है और व्यक्ति को तार्किक चुनाव करने में सक्षम बनाती है।

51. (D) रिहर्सल
रिहर्सल वह प्रक्रिया है जिसमें जानकारी को बार-बार दोहराया जाता है ताकि उसे अल्पकालिक स्मृति में बनाए रखा जा सके। यदि रिहर्सल नहीं की जाती है, तो जानकारी आमतौर पर 20-30 सेकंड के भीतर लुप्त हो जाती है। यह दो प्रकार की होती है: अनुरक्षण रिहर्सल और सविस्तार रिहर्सल। सविस्तार रिहर्सल जानकारी को दीर्घकालिक स्मृति में भेजने में सहायता करती है। यह स्मृति प्रणाली का एक सक्रिय तंत्र है जो सूचना ह्रास रोकता है।

52. (A) केवल I और II
पुष्टिकरण पूर्वाग्रह और उपलब्धता हेयूरिस्टिक सामान्य संज्ञानात्मक त्रुटियां हैं जो हमारे निर्णयों को प्रभावित करती हैं। पुष्टिकरण पूर्वाग्रह हमें केवल अपने विश्वासों के अनुकूल जानकारी खोजने के लिए प्रेरित करता है, जबकि उपलब्धता हेयूरिस्टिक हाल की यादों के आधार पर निर्णय लेने की प्रवृत्ति है। तीसरा कथन गलत है क्योंकि ये मानसिक शॉर्टकट हमेशा गलत नहीं होते; कई बार ये त्वरित निर्णय लेने में सहायक होते हैं। ये जटिल स्थितियों में उपयोगी हैं।

53. (C) अपनी समझ की स्वयं निगरानी करना
परा-संज्ञान का एक मूल पहलू अपनी स्वयं की अधिगम प्रक्रिया का निरीक्षण करना है। इसमें यह समझना शामिल है कि आपने किसी विषय को कितना गहराई से समझा है और कहाँ सुधार

कॉलेज का पहला दिन एक विशिष्ट आत्मकथात्मक घटना है, जिसमें न केवल तथ्य शामिल हैं बल्कि उस समय की भावनाएं और वातावरण भी जुड़ा हुआ है। यह अर्थगत स्मृति से भिन्न है क्योंकि यह 'क्या' के साथ-साथ 'कब' और 'कहाँ' का भी उत्तर देती है। प्रासंगिक स्मृति हमें अपने स्वयं के अतीत में मानसिक रूप से यात्रा करने और विशिष्ट यादों को फिर से जीने की क्षमता प्रदान करती है।

93. (C) किसी संप्रत्यय श्रेणी का सबसे अच्छा उदाहरण या सबसे विशिष्ट सदस्य।
प्रोटोटाइप संप्रत्यय निर्माण का एक केंद्रीय बिंदु है जो किसी श्रेणी के सबसे आदर्श या विशिष्ट प्रतिनिधि का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरण के लिए, जब हम 'पक्षी' के बारे में सोचते हैं, तो हमारे मन में अक्सर गौरैया या कबूतर जैसी छवि आती है क्योंकि वे इस श्रेणी की मुख्य विशेषताओं को सबसे अच्छी तरह दर्शाते हैं। हम नए अनुभवों की तुलना अपने मानसिक प्रोटोटाइप से करके उन्हें जल्दी से वर्गीकृत करते हैं। यह संज्ञानात्मक शॉर्टकट हमें नई स्थितियों को तेजी से समझने और प्रतिक्रिया देने में सहायता करता है।

94. (D) भाषाई सापेक्षता परिकल्पना
भाषाई सापेक्षता परिकल्पना, जिसे वोर्फियन परिकल्पना के रूप में भी जाना जाता है, यह सुझाव देती है कि किसी व्यक्ति की भाषा की संरचना उसके सोचने के तरीके को प्रभावित करती है। इसका 'उदार संस्करण' मानता है कि यद्यपि भाषा चिंतन को पूरी तरह से निर्धारित नहीं करती, लेकिन यह निश्चित रूप से कुछ प्रकार के विचारों को अधिक सुलभ या आसान बना देती है। यह सिद्धांत भाषा और संज्ञान के बीच के जटिल अंतर्संबंधों को उजागर करता है और यह समझने में सहायता करता है कि विभिन्न संस्कृतियाँ दुनिया को अलग क्यों देखती हैं।

95. (A) अधिक सामान्य संप्रत्ययों को अधिक विशिष्ट संप्रत्ययों के ऊपर रखा जाता है।
अर्थगत स्मृति के पदानुक्रमित मॉडल में सूचना को स्तरों में व्यवस्थित किया जाता है ताकि प्रसंस्करण कुशल हो सके। इसमें सबसे ऊपर व्यापक और सामान्य संप्रत्यय होते हैं। इसके नीचे मध्यम स्तर के संप्रत्यय और सबसे नीचे विशिष्ट उदाहरण रखे जाते हैं। यह व्यवस्था 'संज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था' के सिद्धांत पर आधारित है, जहाँ सामान्य गुण उच्च स्तरों पर संचित होते हैं ताकि उन्हें बार-बार दोहराना न पड़े। यह तार्किक संरचना हमें नई जानकारी को तेजी से वर्गीकृत करने में सक्षम बनाती है और सूचना तक पहुँच बढ़ाती है।

96. (B) प्रयास और त्रुटि
प्रयास और त्रुटि समस्या समाधान की एक बुनियादी और प्रारंभिक विधि है जिसमें व्यक्ति किसी निश्चित योजना के बिना तब तक अलग-अलग समाधान आजमाता रहता है जब तक कि उसे सफलता न मिल जाए। यह विधि तब उपयोगी होती है जब समस्या के बारे में कोई पूर्व ज्ञान न हो या जब विकल्प सीमित हों। हालाँकि, यह काफी समय लेने वाली और कम कुशल हो सकती है क्योंकि इसमें कोई तार्किक या रणनीतिक दिशा नहीं होती। यह जटिल समस्याओं के बजाय सरल, शारीरिक या यांत्रिक बाधाओं को दूर करने में अधिक देखी जाती है।

97. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
स्कीमा हमारे ज्ञान के वे ढांचे हैं जो हमें जानकारी को संगठित करने में सहायता करते हैं। पुस्तकालय के बारे में हमारा स्कीमा हमें यह उम्मीद दिलाता है कि वहाँ शांति होगी और किताबें होंगी। कथन II स्पष्ट करता है कि कैसे ये स्कीमा हमारी स्मृति में 'पुनर्निर्माण' की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। हम अक्सर वास्तविक घटना को याद करने के बजाय अपने स्कीमा के आधार पर उसमें ऐसे विवरण जोड़ देते हैं जो हमें तार्किक लगते हैं, भले ही वे वास्तव में न हुए हों। अतः दोनों कथन पूर्णतः सत्य हैं।

98. (A) नियतन या स्थिरीकरण
नियतन या स्थिरीकरण समस्या समाधान के दौरान आने वाली एक मानसिक बाधा है जहाँ व्यक्ति किसी समस्या को एक ही पुराने दृष्टिकोण से देखने में फंस जाता है। वह नई संभावनाओं या वैकल्पिक समाधानों के प्रति अंधा हो जाता है क्योंकि उसका मस्तिष्क किसी विशिष्ट विचार या पद्धति पर स्थिर हो जाता है। इसमें 'कार्यात्मक स्थिरता' भी शामिल है जहाँ वस्तुओं के नए उपयोग नहीं सूझते। इस संज्ञानात्मक जड़ता को तोड़ना और समस्या को 'नए सिरे से' देखना ही सृजनात्मक समाधान और अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का एकमात्र प्रभावी मार्ग है।

99. (C) भविष्योन्मुखी पूर्वाग्रह
निर्णय लेने में सामान्यतः पहचाने जाने वाले संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों में पुष्टिकरण पूर्वाग्रह, पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह और एंकरिंग पूर्वाग्रह शामिल हैं। 'भविष्योन्मुखी पूर्वाग्रह' मनोवैज्ञानिक साहित्य में एक मानक या स्थापित संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं है। यद्यपि हम भविष्य के बारे में आशावादी या निराशावादी हो सकते हैं, लेकिन निर्णय लेने की त्रुटियों के आधिकारिक वर्गीकरण में यह शब्द अन्य विकल्पों की तरह एक विशिष्ट और परिभाषित पूर्वाग्रह नहीं माना जाता है। अतः विकल्प (C) ही असंगत है।

100. (A) उनकी अपनी स्मृति प्रणाली और इसकी कार्यप्रणाली।
परा-स्मृति एक व्यक्ति की अपनी याददाश्त के बारे में आत्म-जागरुकता और उसके विश्वासों का समूह है। इसमें यह ज्ञान शामिल है कि आप किसी चीज को कितनी अच्छी तरह याद रख सकते हैं, कौन सी जानकारी आपके लिए कठिन है और उसे याद करने के लिए कौन सी रणनीतियाँ काम करेंगी। यह आपको यह बताने में सहायता करती है कि कब आपको किसी सूची को दोहराने की जरूरत है या कब आपको उसे लिखकर याद करना चाहिए। यह अधिगम का एक अनिवार्य हिस्सा है जो हमें अपनी बौद्धिक सीमाओं के भीतर कार्य करने में सक्षम बनाता है।

101. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
स्मृति की विभिन्न परिघटनाएं सूचना के प्रतिधारण और विस्मरण को स्पष्ट करती हैं। अग्रलक्षी अवरोध तब होता है जब पिछला अधिगम नए अधिगम में बाधा डालता है। इसके विपरीत,

83. (C) स्वयं की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के बारे में जागरूकता और नियमन।
परा-संज्ञान को सरल शब्दों में 'चिंतन के बारे में चिंतन' कहा जा सकता है। यह व्यक्ति की अपनी समझ, अधिगम शैलियों और विचार प्रक्रियाओं का निरीक्षण करने की उच्च-स्तरीय क्षमता है। इसमें न केवल यह जानना शामिल है कि आप क्या सोच रहे हैं, बल्कि यह भी कि आप अपनी मानसिक गतिविधियों को कैसे नियंत्रित और समायोजित कर सकते हैं। एक सफल शिक्षार्थी परा-संज्ञान का उपयोग करके अपनी कमजोरियों को पहचानता है और कठिन कार्यों के लिए सही रणनीतियों का चयन करता है, जिससे बौद्धिक दक्षता बढ़ती है।

84. (D) एकमात्र सर्वोत्तम उत्तर खोजने के लिए संभावनाओं को कम करना।
अभिसारी चिंतन वह प्रक्रिया है जो किसी समस्या के एक सटीक और अक्सर पहले से निर्धारित समाधान तक पहुँचने पर केंद्रित होती है। यह तर्क और तथ्यों पर आधारित होता है और इसमें कई विकल्पों को छानकर सबसे उपयुक्त एक को चुना जाता है। यह सृजनात्मकता के 'अपसारी चिंतन' के विपरीत है। गणितीय गणनाओं और तार्किक पहेलियों को हल करने के लिए अभिसारी चिंतन अत्यंत आवश्यक है। इसका मुख्य उद्देश्य सूचनाओं को एकीकृत करके एक निश्चित निष्कर्ष या सत्य तक पहुँचना होता है।

85. (D) I, II और III
स्मृति प्रणाली के तीन मूलभूत स्तंभ कूटलेखन, संचयन और पुनर्प्राप्ति हैं। कूटलेखन सूचना को मानसिक रूप में अनुवादित करता है। संचयन इस सूचना को समय के साथ सुरक्षित रखने की क्षमता है, चाहे वह कुछ सेकंड के लिए हो या जीवन भर के लिए। पुनर्प्राप्ति वह सक्रिय प्रक्रिया है जिसमें संचित जानकारी को आवश्यकता पड़ने पर वापस चेतना में लाया जाता है। ये तीनों चरण एक श्रृंखला की तरह जुड़े हुए हैं और इनमें से किसी भी स्तर पर विफलता होने पर विस्मरण या स्मृति त्रुटि की स्थिति उत्पन्न होती है।

86. (B) कार्यात्मक स्थिरता
कार्यात्मक स्थिरता एक संज्ञानात्मक बाधा है जहाँ हम किसी वस्तु को केवल उसके पारंपरिक कार्य के लिए ही देख पाता है। यहाँ रसोइया नींबू निचोड़ने वाली मशीन का उपयोग लहसुन कुचलने के लिए करके इस मानसिक बाधा को तोड़ रहा है। वह वस्तु के भौतिक गुणों को उसके नाम या मुख्य कार्य से अलग करके देख पा रहा है। इस प्रकार की 'लीक से हटकर' सोच ही सृजनात्मकता का आधार है। कार्यात्मक स्थिरता पर विजय पाना अभिनव समाधान खोजने और जटिल समस्याओं को सुलझाने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

87. (D) सावधानीपूर्वक विश्लेषण और सामान्य पूर्वाग्रहों से बचना
प्रभावी निर्णय लेना एक सचेत और तार्किक प्रक्रिया है जिसमें भावनाओं और जल्दबाजी के बजाय तथ्यों पर ध्यान दिया जाता है। संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह, जैसे पुष्टिकरण पूर्वाग्रह या अति-आत्मविश्वास, अक्सर हमें गलत रास्ते पर ले जाते हैं। इसलिए, एक अच्छा निर्णयकर्ता इन पूर्वाग्रहों के प्रति सतर्क रहता है और उपलब्ध जानकारी का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करता है। वह विभिन्न विकल्पों की तुलना करता है और उनके दीर्घकालिक परिणामों पर विचार करता है। यह अनुशासित दृष्टिकोण अनिश्चितता को कम करता है और सर्वोत्तम परिणाम देता है।

88. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पश्चलक्षी अवरोध विस्मरण का एक ऐसा रूप है जहाँ वर्तमान में सीखी गई नई जानकारी अतीत की यादों के साथ हस्तक्षेप करती है। यह तब होता है जब नई और पुरानी जानकारी के बीच समानता होती है, जिससे पुरानी यादों को फिर से प्राप्त करना कठिन हो जाता है। कारण इस प्रक्रिया की गहराई से व्याख्या करता है कि कैसे नई यादें पुरानी यादों के पुनर्प्राप्ति संकेतों को दबा देती हैं या उन्हें संशोधित कर देती हैं। अतः कथन और कारण दोनों ही स्मृति हस्तक्षेप के इस महत्वपूर्ण सिद्धांत को सही ढंग से परिभाषित करते हैं।

89. (C) अर्थगत स्मृति
अर्थगत स्मृति हमारे दीर्घकालिक स्मृति भंडार का वह हिस्सा है जो दुनिया के बारे में तथ्यात्मक जानकारी, अवधारणाओं, अर्थों और नियमों को संचित करता है। इसमें व्यक्तिगत अनुभव या विशिष्ट समय और स्थान की जानकारी शामिल नहीं होती है। उदाहरण के लिए, यह जानना कि 'फ्रांस की राजधानी पेरिस है' या 'आग गर्म होती है', अर्थगत स्मृति का परिणाम है। यह एक मानसिक शब्दकोश या विश्वकोश की तरह काम करती है जो हमें संचार करने और अमूर्त विषयों पर चिंतन करने के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान करती है।

90. (A) व्यक्ति की प्रतिबिंबात्मक स्मृति की क्षमता।
संप्रत्यय निर्माण मुख्य रूप से प्रस्तुत उदाहरणों की विविधता, संप्रत्यय की जटिलता और शिक्षार्थी के पूर्व ज्ञान पर निर्भर करता है। सकारात्मक और नकारात्मक उदाहरणों का सही उपयोग वर्गीकरण को स्पष्ट बनाता है। 'प्रतिबिंबात्मक स्मृति' संप्रत्यय निर्माण के सिद्धांतों में कोई स्थापित या प्रासंगिक कारक नहीं मानी जाती है। संप्रत्यय निर्माण एक सक्रिय संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसमें सूचना का विश्लेषण, सामान्यीकरण और विभेदीकरण शामिल होता है। यह अनुभवों से अर्थ निकालने और संसार को व्यवस्थित करने की क्षमता है।

91. (B) II, III, I
स्मृति प्रणालियों की अवधि के अनुसार क्रम संवेदी स्मृति से शुरु होता है, जो सबसे संक्षिप्त होती है। इसके बाद अल्पकालिक स्मृति आती है, जहाँ जानकारी लगभग 20-30 सेकंड तक रहती है। अंत में दीर्घकालिक स्मृति आती है, जिसकी अवधि सबसे लंबी होती है और इसमें जानकारी वर्षों तक रह सकती है। यह क्रम सूचना प्रसंस्करण के चरणों को दर्शाता है जहाँ जानकारी पहले संवेदी अंगों द्वारा पकड़ी जाती है, फिर संसाधित होती है और अंत में स्थायी रूप से संचित की जाती है। यह स्मृति की संरचना स्पष्ट करता है।

92. (B) प्रासंगिक स्मृति
प्रासंगिक स्मृति में हमारे जीवन की व्यक्तिगत घटनाओं और अनुभवों को समय और स्थान के संदर्भ में सहेजा जाता है।

फिट करने की अनुमति देता है। स्कीमा के बिना, दुनिया की हर नई सूचना बिखरी हुई और असंबद्ध लगेगी। यह हमें तेजी से प्रत्यक्षण करने और सूचनाओं का अनुमान लगाने में सहायता करता है। इस प्रकार, स्कीमा अधिगम और स्मृति के संगठन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

111. (D) दीर्घकालिक स्मृति पुरानी जानकारी का एक निष्क्रिय गोदाम है।
दीर्घकालिक स्मृति को एक निष्क्रिय गोदाम मानना गलत है। वास्तव में, यह एक सक्रिय और गतिशील प्रणाली है जहाँ सूचनाओं को लगातार पुनर्गठित और अद्यतन किया जाता है। जब भी हम कुछ नया सीखते हैं, वह हमारी पुरानी यादों और ज्ञान के साथ अंतःक्रिया करता है। अन्य तीनों कथन सही हैं: अल्पकालिक स्मृति वर्तमान कार्य के लिए है, संवेदी स्मृति प्रारंभिक बफर है, और कार्यकारी स्मृति जानकारी का मानसिक हेरफेर करती है। स्मृति एक जीवंत प्रक्रिया है जहाँ सूचना का निरंतर प्रसंस्करण और एकीकरण होता रहता है।

112. (B) विभिन्न उत्तेजनाओं के बीच सामान्य विशेषताओं की पहचान करना।
संप्रत्यय निर्माण की प्रकृति अनिवार्य रूप से वर्गीकरण और संगठन पर आधारित है। इसमें मस्तिष्क अलग-अलग वस्तुओं या अनुभवों का विश्लेषण करता है और उनके बीच मौजूद समान गुणों या विशेषताओं को खोजता है। उदाहरण के लिए, विभिन्न प्रकार के फर्नीचर को देखकर उनमें 'बैठने' या 'उपयोगिता' की सामान्य विशेषता पहचानना 'फर्नीचर' संप्रत्यय को जन्म देता है। यह प्रक्रिया हमें दुनिया की विशाल विविधता को प्रबंधनीय मानसिक समूहों में बाँटने की अनुमति देती है, जिससे चिंतन और संचार अधिक सरल और प्रभावी हो जाता है।

113. (A) II, IV, I, III
एक तार्किक निर्णय प्रक्रिया की शुरुआत हमेशा समस्या या किए जाने वाले निर्णय की स्पष्ट पहचान से होती है। इसके बिना कोई भी अगला कदम दिशाहीन होगा। पहचान के बाद, प्रासंगिक जानकारी एकत्र की जाती है और उपलब्ध विकल्पों का अन्वेषण किया जाता है। तीसरे चरण में सर्वश्रेष्ठ विकल्प का चयन कर उसे क्रियान्वित या लागू किया जाता है। अंत में, लिए गए निर्णय के प्रभाव और परिणाम का मूल्यांकन करना अनिवार्य है ताकि भविष्य के लिए सीखा जा सके। यह व्यवस्थित क्रम त्रुटियों को कम करने में सहायता करता है।

114. (D) उस सुगमता पर जिसके साथ वे किसी चीज को मन में ला सकते हैं।
उपलब्धता हेयूरिस्टिक एक संज्ञानात्मक शॉर्टकट है जहाँ हम किसी घटना की आवृत्ति या संभावना का निर्णय इस आधार पर लेते हैं कि उससे संबंधित उदाहरण हमें कितनी जल्दी याद आते हैं। यदि कोई जानकारी हमारे मन में आसानी से 'उपलब्ध' है—चाहे वह हाल की घटना हो या बहुत भावनात्मक—तो हम उसे अधिक सामान्य मान लेते हैं। यह अक्सर हमें सांख्यिकीय वास्तविकता से दूर ले जाता है। उदाहरण के लिए, समाचारों में चोरी की खबरें बार-बार देखने पर यह मानना कि अपराध दर बहुत बढ़ गई है, इसी पूर्वाग्रह का परिणाम है।

115. (A) यह एक उपकरण है जो जटिल चिंतन को सुगम बनाता है और आकार देता है।
अधिकांश मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि भाषा और चिंतन के बीच एक गहरा और सहयोगात्मक संबंध है। भाषा केवल विचारों को व्यक्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह जटिल और अमूर्त चिंतन के लिए आवश्यक 'प्रतीकात्मक ढांचा' प्रदान करती है। यह हमें विचारों को श्रेणियों में बाँटने, तार्किक संबंध स्थापित करने और भविष्य की योजना बनाने में सहायता करती है। यद्यपि कुछ चिंतन गैर-भाषाई हो सकता है, लेकिन उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक कार्यों के लिए भाषा एक अनिवार्य और शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करती है।

116. (B) एक स्मृति-सहायक युक्ति
"विबग्योर" जैसे संक्षिप्त नामों का उपयोग करना एक प्रसिद्ध स्मृति-सहायक युक्ति है। यह तकनीक जटिल या असंबद्ध जानकारी को एक सार्थक और याद रखने योग्य शब्द या वाक्य में जोड़कर स्मृति को सुगम बनाती है। यहाँ इंद्रधनुष के सात रंगों के पहले अक्षरों को एक साथ जोड़कर एक नया शब्द बनाया गया है, जिसे याद रखना रंगों की पूरी सूची को अलग-अलग याद रखने से कहीं अधिक आसान है। ऐसी युक्तियाँ पुनर्प्राप्ति संकेतों के रूप में कार्य करती हैं और विस्मरण की संभावना को काफी कम कर देती हैं।

117. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
समस्या समाधान एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसमें कई बाधाएं आ सकती हैं। कथन I सही है क्योंकि मानसिक विन्यास और कार्यात्मक स्थिरता अक्सर नए समाधानों को रोकते हैं। हालाँकि, कथन II गलत है क्योंकि मानव समस्या-समाधान हमेशा पूरी तरह तर्कसंगत नहीं होता। हम अक्सर संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों, भावनाओं और अपूर्ण जानकारी से प्रभावित होते हैं। हमारे निर्णय अक्सर मानसिक शॉर्टकट या हेयूरिस्टिक्स पर आधारित होते हैं, जो तार्किकता से विचलन का कारण बन सकते हैं। अतः केवल पहला कथन सत्य है।

118. (A) हस्तक्षेप सिद्धांत
हस्तक्षेप सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि विस्मरण इसलिए होता है क्योंकि स्मृतियाँ एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं। जब हम कोई नई जानकारी सीखते हैं, तो वह पुरानी यादों के पुनर्प्राप्ति मार्ग में बाधा डाल सकती है या पुरानी यादें नई जानकारी को सही ढंग से संचित होने से रोक सकती हैं। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि जानकारी अभी भी स्मृति में मौजूद हो सकती है, लेकिन अन्य समान जानकारियों की उपस्थिति के कारण उसे पुनः प्राप्त करना कठिन हो जाता है। यह स्मृति की प्रतिस्पर्धी प्रकृति को दर्शाता है।

119. (C) नवीन और उपयुक्त विचारों का उत्पादन।
सृजनात्मक चिंतन की दो सबसे महत्वपूर्ण कसौटियाँ नवीनता और उपयोगिता हैं। केवल एक नया विचार होना पर्याप्त नहीं है; वह विचार किसी समस्या को सुलझाने या किसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए उपयुक्त भी होना चाहिए। इसमें स्थापित प्रतिमानों से हटकर सोचना और नई संभावनाओं का अन्वेषण करना शामिल है। सृजनात्मकता में अक्सर 'अपसारी चिंतन' का

उपयोग किया जाता है, जो किसी एक बिंदु से शुरु होकर कई दिशाओं में फैलता है। यह क्षमता कला, विज्ञान और दैनिक जीवन में नवाचार का मुख्य आधार है।

120. (D) हेयूरिस्टिक
स्मृति के स्थापित प्रकारों में अर्थगत स्मृति, प्रासंगिक स्मृति और प्रक्रियात्मक स्मृति शामिल हैं। 'हेयूरिस्टिक' स्मृति का प्रकार नहीं है, बल्कि यह समस्या समाधान और निर्णय लेने की एक 'रणनीति' या मानसिक शॉर्टकट है। स्मृति सूचना के संचयन और पुनर्प्राप्ति से संबंधित है, जबकि हेयूरिस्टिक्स उस सूचना के उपयोग और प्रसंस्करण से संबंधित हैं। इन दोनों के बीच यह अंतर समझना संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में महत्वपूर्ण है क्योंकि एक 'भंडारण' से जुड़ा है और दूसरा 'कार्यप्रणाली' से।

121. (D) I, II और III
परा-संज्ञान एक व्यापक अवधारणा है जिसमें अपनी विचार प्रक्रियाओं की जागरूकता और उनका नियमन शामिल है। परा-स्मृति इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो विशेष रुप से याद रखने की प्रक्रियाओं के ज्ञान पर केंद्रित है। शोध बताते हैं कि जो छात्र परा-संज्ञानात्मक रणनीतियों (जैसे योजना बनाना और आत्म-मूल्यांकन) का उपयोग करते हैं, वे अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं और उनका शैक्षणिक प्रदर्शन बेहतर होता है। अतः ये तीनों कथन परा-संज्ञान की प्रकृति, संरचना और इसके व्यावहारिक लाभों का सही और पूर्ण विवरण प्रदान करते हैं।

122. (B) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
पुष्टिकरण पूर्वाग्रह एक शक्तिशाली संज्ञानात्मक त्रुटि है जहाँ हमारा मस्तिष्क केवल उन्हीं सूचनाओं को चुनता है जो हमारे वर्तमान विश्वासों को सही ठहराती हैं। हम अनजाने में उन तथ्यों को नजरअंदाज कर देते हैं या उन्हें कम महत्त्व देते हैं जो हमारी धारणाओं को चुनौती देते हैं। यह पूर्वाग्रह हमें एक तरफा सोच की ओर ले जाता है और हमें वस्तुनिष्ठ होने से रोकता है। यह न केवल व्यक्तिगत निर्णयों को बल्कि सामाजिक और राजनीतिक विचारों को भी गहराई से प्रभावित करता है, जिससे समाज में ध्रुवीकरण बढ़ सकता है।

123. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
अग्रलक्षी अवरोध तब होता है जब पुरानी जानकारी नई यादों में हस्तक्षेप करती है। स्कीमा को एक मानसिक ढांचे के रुप में समझा जा सकता है जो ज्ञान को व्यवस्थित करता है। हेयूरिस्टिक समस्या समाधान के लिए उपयोग किया जाने वाला एक मानसिक शॉर्टकट है। परा-संज्ञान का अर्थ है अपनी स्वयं की विचार प्रक्रियाओं के बारे में सचेत जागरूकता। इन अवधारणाओं का सही मिलान संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की बुनियादी शब्दावली और उनके बीच के अंतर को स्पष्ट करता है, जो मानव व्यवहार और बुद्धि को समझने का आधार है।

124. (D) कूटलेखन, संचयन, पुनर्प्राप्ति
स्मृति प्रणाली को समझने के लिए कूटलेखन, संचयन और पुनर्प्राप्ति को इसके तीन अनिवार्य स्तंभ माना जाता है। कूटलेखन बाहरी सूचनाओं को मस्तिष्क के लिए उपयुक्त संकेतों में बदलता है। संचयन उन संकेतों को समय के साथ बनाए रखने का कार्य करता है। पुनर्प्राप्ति वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा संचित सूचना को आवश्यकता पड़ने पर फिर से उपयोग में लाया जाता है। यदि इनमें से किसी भी चरण में कोई त्रुटि आती है, तो पूरी स्मृति प्रक्रिया बाधित हो जाती है। यह त्रि-स्तरीय मॉडल स्मृति की कार्यात्मक संरचना को स्पष्ट करता है।

125. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
एल्गोरिदम समस्या समाधान की एक ऐसी विधि है जो निश्चित नियमों और चरणों के समूह पर आधारित होती है। चूँकि यह हर संभव विकल्प का व्यवस्थित रूप से परीक्षण करती है, इसलिए यह हमेशा एक सटीक और सही समाधान की गारंटी देती है, बशर्ते नियमों का सही पालन किया जाए। कारण यहाँ कथन की पुष्टि करता है क्योंकि यह एल्गोरिदम की कार्यप्रणाली को स्पष्ट करता है। हालाँकि ये विधियाँ धीमी हो सकती हैं, लेकिन गणितीय और तार्किक समस्याओं में इनकी प्रभावशीलता और सटीकता निर्विवाद है।

126. (B) उपलब्धता हेयूरिस्टिक
जब हम किसी विषय के बारे में हाल ही में सीखते हैं, तो वह जानकारी हमारी स्मृति में अत्यधिक 'उपलब्ध' हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप, हम उसे हर जगह देखने या उसे अधिक महत्त्व देने लगते हैं। यहाँ छात्रा के दिमाग में संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों की जानकारी ताजा है, इसलिए उसका मस्तिष्क इसे एक प्राथमिक फिल्टर के रूप में उपयोग कर रहा है। यह उपलब्धता हेयूरिस्टिक का एक रूप है जहाँ हाल की स्मृतियाँ हमारे प्रत्यक्षण और निर्णयों को प्रभावित करती हैं, जिससे हम वास्तविकता का एक तरफा आकलन करने लगते हैं।

127. (B) साइकिल चलाना जानना।
प्रक्रियात्मक स्मृति दीर्घकालिक स्मृति का वह हिस्सा है जो कौशलों, आदतों और कार्यों को करने के तरीकों को संचित करता है। इसमें अक्सर 'कैसे' वाली जानकारी होती है जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन हो सकता है लेकिन व्यवहार में प्रदर्शित करना आसान होता है। साइकिल चलाना एक ऐसा मोटर कौशल है जो अभ्यास के माध्यम से स्वचालित हो जाता है। एक बार सीखने के बाद, मस्तिष्क इन क्रियाओं को बिना किसी सचेत प्रयास के दोहरा सकता है। अन्य विकल्प तथ्यों या व्यक्तिगत घटनाओं से संबंधित हैं, जो घोषणात्मक स्मृति के अंतर्गत आते हैं।

128. (A) ऐसा कार्य वातावरण जो जोखिम लेने को प्रोत्साहित करता है और विफलता को सहन करता है।
सृजनात्मक चिंतन के फलने-फूलने के लिए मनोवैज्ञानिक सुरक्षा और स्वतंत्रता का होना अनिवार्य है। जब व्यक्तियों को यह पता होता है कि उनकी गलतियों पर उन्हें दंडित नहीं किया जाएगा, तो वे नए और साहसी विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रेरित होते हैं। इसके विपरीत, अत्यधिक आलोचनात्मक या अनम्य वातावरण नवीनता को मार देता है क्योंकि लोग जोखिम लेने से डरने लगते हैं। सृजनात्मकता के लिए प्रयोग करने की छूट और विफलता को अधिगम के एक हिस्से के रूप में स्वीकार करना सबसे महत्वपूर्ण प्रेरक कारक है।

129. (C) अतीत के अनुभवों को वर्तमान कार्यों से जोड़ना।
स्मृति का वास्तविक अर्थ केवल सूचनाओं को जमा करना नहीं है, बल्कि यह वह पुल है जो हमारे अतीत को वर्तमान से जोड़ता है। यह हमें अपने पिछले अनुभवों, सीखे गए कौशलों और प्राप्त ज्ञान का उपयोग वर्तमान समस्याओं को सुलझाने और भविष्य के निर्णय लेने में करने की अनुमति देती है। स्मृति के बिना, हर अनुभव नया लगेगा और अधिगम संभव नहीं होगा। यह निरंतरता प्रदान करती है, जिससे हमारी पहचान और बुद्धिमत्ता का निर्माण होता है। अतः इसका मुख्य कार्य अनुभवों का समय के पार एकीकरण करना है।

130. (D) किसी घटना के होने के बाद यह विश्वास करना कि किसी ने इसकी भविष्यवाणी की होगी।
पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह को 'मैने तो पहले ही कहा था' वाली प्रवृत्ति के रूप में जाना जाता है। जब कोई घटना घट जाती है, तो हमें अचानक ऐसा लगने लगता है कि वह बहुत स्पष्ट और पूर्वानुमेय थी, भले ही घटना से पहले हम अनिश्चित रहे हों। यह पूर्वाग्रह हमारी यादों को वर्तमान ज्ञान के अनुसार संशोधित कर देता है, जिससे हमें अपनी भविष्यवाणी करने की क्षमता पर अति-विश्वास हो जाता है। यह हमें अपनी पिछली गलतियों से सीखने से रोकता है क्योंकि हम मानते हैं कि परिणाम तो पहले से ही तय था।

131. (C) परा-स्मृतिः अपनी स्मृति और उसकी कार्यप्रणाली के बारे में ज्ञान।
परा-स्मृति एक परा-संज्ञानात्मक कौशल है जिसमें व्यक्ति को अपनी स्मृति की शक्ति, सीमाओं और उसके काम करने के तरीके की गहरी समझ होती है। यह उसे अपनी याददाश्त सुधारने के लिए रणनीतियाँ बनाने में सहायता करती है। अन्य विकल्प गलत सुमेलित हैं: अग्रलक्षी अवरोध में पुरानी जानकारी नए में बाधा डालती है, और पश्चलक्षी में नया पुराने में। स्कीमा विस्मरण नहीं, बल्कि ज्ञान का एक संगठित ढांचा है। अतः केवल विकल्प (C) ही अपनी अवधारणा और परिभाषा के बीच सही और सटीक संबंध प्रदर्शित करता है।

132. (B) सामान्यीकरण और विभेदीकरण
संप्रत्यय निर्माण दो पूरक मानसिक प्रक्रियाओं पर निर्भर करता है: सामान्यीकरण और विभेदीकरण। सामान्यीकरण के माध्यम से हम विभिन्न वस्तुओं के बीच समान गुणों की पहचान करते हैं और उन्हें एक समूह में रखते हैं। विभेदीकरण हमें उन सूक्ष्म अंतरों को पहचानने में सहायता करता है जो एक संप्रत्यय को दूसरे से अलग करते हैं। उदाहरण के लिए, 'कुत्ता' संप्रत्यय बनाने के लिए हम सभी कुत्तों की समानताएं देखते हैं और उन्हें बिल्लियों से अलग पहचानते हैं। ये दोनों प्रक्रियाएं मिलकर सटीक और स्पष्ट मानसिक श्रेणियों का निर्माण करती हैं।

133. (D) मंथन
मंथन या 'ब्रेनस्टॉर्मिंग' समस्या समाधान की एक सृजनात्मक तकनीक है जहाँ मुख्य उद्देश्य बिना किसी प्रारंभिक आलोचना के अधिक से अधिक विचार उत्पन्न करना होता है। इसमें मात्रा को गुणवत्ता से अधिक महत्त्व दिया जाता है, इस उम्मीद में कि विचारों के व्यापक ढेर से कोई मौलिक समाधान निकल आएगा। यह विधि मानसिक अवरोधों को हटाने और मुक्त चिंतन को प्रोत्साहित करने के लिए उपयोगी है। यह समूह या व्यक्तिगत स्तर पर नवीन संभावनाओं की खोज करने का एक गतिशील और प्रभावी तरीका है।

134. (A) दीर्घकालिक स्मृति में जाने के लिए जानकारी को अल्पकालिक स्मृति से गुजरना होगा।
स्मृति के मानक मॉडल के अनुसार, सूचना प्रसंस्करण एक रैखिक मार्ग का अनुसरण करता है। कोई भी बाहरी उत्तेजना पहले संवेदी स्मृति में आती है, फिर अल्पकालिक स्मृति में स्थानांतरित होती है। अल्पकालिक स्मृति एक 'द्वारपाल' की तरह कार्य करती है जहाँ जानकारी को सक्रिय रूप से दोहराया और संसाधित किया जाता है। यदि जानकारी पर पर्याप्त ध्यान दिया जाए और उसे सार्थक बनाया जाए, तभी वह दीर्घकालिक स्मृति में स्थायी रूप से संचित हो पाती है। यह क्रम स्मृति निर्माण की बुनियादी प्रक्रिया को दर्शाता है।

135. (C) अपसारी चिंतन
अपसारी चिंतन सृजनात्मकता का आधार है जहाँ व्यक्ति एक ही वस्तु या समस्या के लिए कई, विविध और अपरंपरागत समाधान खोजने का प्रयास करता है। ईंट के सामान्य उपयोग से हटकर उसके अन्य संभावित उपयोगों के बारे में सोचना इस चिंतन का सटीक उदाहरण है। इसमें लचीलापन, मौलिकता और विस्तार शामिल होता है। यह अभिसारी चिंतन के विपरीत है और व्यक्ति को मानसिक सीमाओं को तोड़कर नई संभावनाओं की दुनिया में ले जाने में सक्षम बनाता है। यह नवाचार के लिए अनिवार्य मानसिक प्रक्रिया है।

136. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
स्प्रेडिंग एक्टिवेशन मॉडल यह स्पष्ट करता है कि हमारा ज्ञान एक अंतःसंबंधित नेटवर्क के रूप में व्यवस्थित है। जब हम 'समुद्र' जैसे किसी शब्द के बारे में सोचते हैं, तो उससे जुड़े अन्य विचार जैसे 'मछली', 'नीला' या 'जहाज' स्वतः ही हमारे मन में सक्रिय हो जाते हैं। यह सक्रियण नेटवर्क के माध्यम से फैलता है, जिससे संबंधित सूचनाओं को याद करना आसान हो जाता है। अतः दोनों कथन इस मॉडल की कार्यप्रणाली और स्मृति पुनर्प्राप्ति में इसकी भूमिका को सही और वैज्ञानिक रूप से स्पष्ट करते हैं।

137. (B) आवेगी चुनाव करना
एक प्रभावी निर्णय लेने की प्रक्रिया के लिए धैर्य, विश्लेषण और आत्म-जागरूकता की आवश्यकता होती है। पर्याप्त जानकारी जुटाना, विकल्पों का मूल्यांकन करना और अपने व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के प्रति सतर्क रहना निर्णय की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं। इसके विपरीत, आवेगी चुनाव करना—बिना सोचे-समझे या केवल तात्कालिक भावनाओं के आधार पर निर्णय लेना—अक्सर पछतावे और गलत परिणामों की ओर ले जाता है। आवेगपूर्ण व्यवहार तार्किक चिंतन को बाधित करता है और व्यक्ति को समस्या के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर विचार करने से रोकता है।

138. (A) समाधान की गारंटी देता है; समाधान की गारंटी नहीं देता है
एल्गोरिदम और हेयूरिस्टिक्स के बीच सबसे बड़ा अंतर उनकी निश्चितता में है। एल्गोरिदम एक कठोर और चरण-दर-चरण विधि है जो यदि सही ढंग से लागू की जाए, तो हमेशा सही परिणाम तक पहुँचाती है। यह गणितीय सूत्रों की तरह विश्वसनीय होती है। इसके विपरीत, हेयूरिस्टिक एक 'व्यावहारिक नियम' या अनुमान है जो निर्णय लेने की गति तो बढ़ाते हैं, लेकिन इसमें त्रुटि की संभावना हमेशा बनी रहती है। हेयूरिस्टिक्स हमें जटिल दुनिया में तेजी से कार्य करने में सहायता करते हैं, जहाँ पूर्ण सटीकता संभव नहीं होती।

139. (A) केवल I और II
स्कीमा हमारे ज्ञान को संगठित करने और नई सूचनाओं की व्याख्या करने के लिए अत्यंत उपयोगी होते हैं। वे हमें सामाजिक वातावरण को तेजी से समझने में सहायता करते हैं, लेकिन इसी प्रक्रिया में वे रुढ़िवादिता को भी जन्म दे सकते हैं क्योंकि हम लोगों को श्रेणियों में फिट करने की कोशिश करते हैं। तीसरा कथन गलत है क्योंकि स्कीमा अक्सर अचेतन स्तर पर कार्य करते हैं और इन्हें बदलना काफी कठिन हो सकता है। ये एक बार बन जाने के बाद काफी स्थायी हो जाते हैं और नए अनुभवों के प्रति प्रतिरोधी हो सकते हैं।

140. (D) अभिप्रेरित विस्मरण
अभिप्रेरित विस्मरण एक मनोवैज्ञानिक रक्षा तंत्र है जहाँ व्यक्ति अनजाने में या सचेत रूप से ऐसी यादों को भूल जाता है जो बहुत कष्टदायक या चिंता पैदा करने वाली होती हैं। सिग्मंड फ्रायड ने इसे 'दमन' कहा था। इसमें मस्तिष्क स्वयं को मनोवैज्ञानिक आघात से बचाने के लिए उन यादों को अचेतन मन में धकेल देता है। यह अन्य प्रकार के विस्मरण से भिन्न है क्योंकि यह सूचना की कमी के कारण नहीं, बल्कि भावनात्मक सुरक्षा की आवश्यकता के कारण होता है। यह मन की एक सुरक्षात्मक प्रक्रिया है।

141. (C) मानसिक अभ्यावेदन का एक विचारशील और सचेत हेरफेर
चिंतन एक सक्रिय और उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसमें हम अपने मन में मौजूद सूचनाओं, प्रतीकों और अवधारणाओं को व्यवस्थित और पुनः व्यवस्थित करते हैं। यह एक सचेत गतिविधि है जिसका उद्देश्य किसी निष्कर्ष पर पहुँचना, समस्या को सुलझाना या निर्णय लेना होता है। यद्यपि कुछ मानसिक प्रक्रियाएं स्वचालित हो सकती हैं, लेकिन चिंतन की प्रकृति अनिवार्य रूप से उद्देश्यपूर्ण और विचारशील होती है। इसमें वर्तमान संवेदी इनपुट से परे जाकर अमूर्त विचारों और भविष्य की संभावनाओं के बारे में सोचने की क्षमता शामिल है।

142. (A) III, I, IV, II
सृजनात्मक चिंतन की प्रक्रिया एक विशिष्ट क्रम का पालन करती है। सबसे पहले 'तैयारी' होती है जहाँ समस्या से संबंधित जानकारी एकत्र की जाती है। इसके बाद 'उद्भवन' का चरण आता है, जहाँ व्यक्ति सचेत रुप से समस्या के बारे में सोचना बंद कर देता है लेकिन अचेतन मन कार्य जारी रखता है। फिर अचानक समाधान का अहसास होता है जिसे 'प्रदीप्ति' कहते हैं। अंत में 'प्रमाणीकरण' किया जाता है ताकि यह जाँचा जा सके कि समाधान वास्तव में व्यावहारिक है या नहीं। यह क्रम सृजनात्मकता के विकास को दर्शाता है।

143. (C) संज्ञानात्मक कार्य की योजना बनाना और निगरानी करना
परा-संज्ञान के दो मुख्य घटक हैं: संज्ञान का ज्ञान और संज्ञान का नियमन। योजना बनाना और निगरानी करना नियमन का हिस्सा है। इसमें यह तय करना शामिल है कि किसी कार्य को कैसे शुरु किया जाए, अपनी प्रगति की जाँच करना और यदि आवश्यक हो तो अपनी रणनीति को बदलना। यह केवल सूचना प्राप्त करना नहीं है, बल्कि यह देखना है कि आप उस सूचना को कैसे संसाधित कर रहे हैं। यह उच्च-स्तरीय क्षमता शिक्षार्थियों को अधिक स्वायत्त और सफल समस्या-समाधानकर्ता बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

144. (D) ह्रास सिद्धांत
ह्रास सिद्धांत के अनुसार, जब हम कुछ नया सीखते हैं, तो मस्तिष्क में एक 'स्मृति चिह्न' बनता है। यदि इस जानकारी को दोहराया नहीं जाता है, तो समय बीतने के साथ यह चिह्न स्वाभाविक रुप से कमजोर होने लगता है और अंततः गायब हो जाता है। यह सिद्धांत मानता है कि विस्मरण का मुख्य कारण केवल समय का अंतराल है। यह विशेष रुप से अल्पकालिक स्मृति के लिए बहुत सटीक बैठता है जहाँ सूचना का उपयोग न होने पर वह बहुत जल्दी लुप्त हो जाती है। यह स्मृति की 'उपयोग करो या खो दो' वाली प्रकृति को दर्शाता है।

145. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
संप्रत्यय वर्गीकरण का आधार है, जैसे 'फर्नीचर' एक व्यापक श्रेणी है। हेयूरिस्टिक एक व्यावहारिक नियम है जो समय बचाने में सहायता करता है। स्कीमा एक मानसिक ढांचा है जो हमें यह बताता है कि विशिष्ट स्थितियों में क्या उम्मीद करनी चाहिए। मानसिक विन्यास एक संज्ञानात्मक बाधा है जहाँ पुराने अनुभव नए समाधानों को देखने से रोकते हैं। इन उदाहरणों का यह मिलान संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की उन विभिन्न प्रक्रियाओं को स्पष्ट करता है जो हमारे दैनिक चिंतन और व्यवहार को निर्देशित करती हैं।

146. (B) पश्चलक्षी अवरोध
पश्चलक्षी अवरोध तब होता है जब नई सीखी गई जानकारी पुरानी जानकारी की पुनर्प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करती है। यहाँ व्यक्ति ने अपना नया पता सीख लिया है, और यह नया अधिगम इतना प्रभावी हो गया है कि वह पुराने पते की स्मृति को 'दबा' रहा है या उसके पुनर्प्राप्ति संकेतों को बाधित कर रहा है। यह हस्तक्षेप का एक सामान्य रूप है जो अक्सर तब होता है जब दो जानकारियों के बीच समानता हो। यह दर्शाता है कि हमारी स्मृति प्रणाली में नई सूचनाएं अक्सर पुरानी यादों के मार्ग को कठिन बना सकती हैं।

147. (C) अवरुद्ध चिंतन
मनोविज्ञान में चिंतन के कई स्थापित प्रकार हैं। स्वलीन चिंतन व्यक्तिगत और काल्पनिक होता है। सृजनात्मक चिंतन नवीन विचारों के लिए है और यथार्थवादी चिंतन वास्तविक दुनिया की समस्याओं और तथ्यों पर आधारित होता है। 'अवरुद्ध

चिंतन' चिंतन का कोई मानक या वैज्ञानिक प्रकार नहीं है। यद्यपि चिंतन की प्रक्रिया में बाधाएं या 'अवरोध' आ सकते हैं, लेकिन उन्हें स्वयं में चिंतन की एक अलग श्रेणी के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जाता है। चिंतन हमेशा एक सक्रिय संज्ञानात्मक गतिविधि है।

148. (D) किसी श्रेणी के सदस्यों द्वारा साझा की गई सामान्य विशेषताएं।
संप्रत्यय निर्माण का मुख्य उद्देश्य दुनिया की अनंत सूचनाओं को संगठित करना है। यह तब संभव होता है जब हमारा मस्तिष्क अलग-अलग वस्तुओं के बीच समानताएं या साझा गुणों को पहचान लेता है। उदाहरण के लिए, विभिन्न आकारों के मेजों को देखकर उनमें 'समतल सतह' और 'सहारा देने वाले पैर' जैसी सामान्य विशेषताएं खोजना 'मेज' के संप्रत्यय को पुख्ता करता है। यह क्षमता हमें हर नई वस्तु को एक अलग पहेली मानने के बजाय उसे पहले से ज्ञात श्रेणी में रखने में सहायता करती है।

149. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
फ्रेमिंग प्रभाव एक महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जो यह दर्शाता है कि किसी विकल्प की प्रस्तुति—चाहे वह लाभ के रूप में हो या हानि के रूप में—हमारे निर्णय को पूरी तरह से बदल सकती है। कारण यहाँ स्पष्ट करता है कि यह प्रभाव तर्कसंगतता से विचलन है, क्योंकि एक ही जानकारी के आधार पर अलग-अलग चुनाव करना तार्किक नहीं है। हम अक्सर तथ्यों के बजाय शब्दों और उनके द्वारा उत्पन्न भावनाओं से प्रभावित होकर निर्णय लेते हैं। अतः कथन और कारण दोनों ही इस मनोवैज्ञानिक वास्तविकता को उजागर करते हैं।

150. (B) गहन प्रसंस्करण और रिहर्सल
सूचना को केवल बार-बार दोहराना पर्याप्त नहीं है। स्थायी स्मृति के लिए 'गहन प्रसंस्करण' और 'सविस्तार रिहर्सल' आवश्यक है, जिसमें नई जानकारी को पहले से मौजूद ज्ञान के साथ जोड़कर उसे अर्थपूर्ण बनाया जाता है। जब हम किसी तथ्य के पीछे के 'क्यों' और 'कैसे' को समझते हैं, तो मस्तिष्क में अधिक मजबूत तंत्रिका जुड़ाव बनते हैं। यह सक्रिय जुड़ाव ही सूचना को अल्पकालिक भंडारण की क्षणभंगुर अवस्था से निकालकर दीर्घकालिक स्मृति के स्थायी भंडार में सुरक्षित रूप से स्थानांतरित करने की कुंजी है।

151. (C) ऐसी रणनीति पर टिके रहना जो बार-बार विफल हुई हो।
प्रभावी समस्या समाधान के लिए मानसिक लचीलापन अनिवार्य है। समस्याओं को छोटे भागों में तोड़ना, लक्ष्य से पीछे की ओर सोचना और उपमाओं का उपयोग करना वैज्ञानिक रूप से सिद्ध और सफल रणनीतियाँ हैं। इसके विपरीत, विफलता के बावजूद एक ही पुरानी पद्धति पर अड़े रहना 'मानसिक विन्यास' का लक्षण है, जो प्रगति को रोकता है। एक सफल समस्या-समाधानकर्ता अपनी रणनीतियों का निरंतर मूल्यांकन करता है और यदि वे काम नहीं करती हैं, तो वह नए दृष्टिकोण अपनाने के लिए तैयार रहता है। अडिग रहना समाधान में बाधक है।

152. (D) चिंतन
चिंतन एक व्यापक संज्ञानात्मक गतिविधि है जिसमें हम सूचनाओं को केवल संचित नहीं करते, बल्कि उन्हें सक्रिय रूप से संसाधित करते हैं। इसमें मानसिक प्रतीकों का हेरफेर, तुलना करना, विश्लेषण करना और निष्कर्ष निकालना शामिल है। यह वह आंतरिक संवाद और प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम अपनी समझ विकसित करते हैं और दूसरों के साथ अर्थ साझा करते हैं। चिंतन ही वह केंद्र है जहाँ स्मृति, प्रत्यक्षण और अधिगम मिलकर कार्य करते हैं ताकि हम दुनिया के साथ एक सार्थक और बुद्धिमान तरीके से अंतःक्रिया कर सकें।

153. (C) कार्यात्मक स्थिरता
कार्यात्मक स्थिरता समस्या समाधान में एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक अवरोध है। यह व्यक्ति को किसी वस्तु को केवल उसके सबसे सामान्य और परिचित कार्य तक सीमित रखने के लिए मजबूर करती है। जब हम किसी समस्या का सामना करते हैं, तो अक्सर समाधान हमारे सामने ही होता है, लेकिन हम उसे इसलिए नहीं देख पाते क्योंकि हम वस्तुओं के वैकल्पिक उपयोगों के बारे में नहीं सोच पाते। इस जड़ता को तोड़ना ही 'रचनात्मकता' है। जो व्यक्ति कार्यात्मक स्थिरता पर विजय पा लेता है, वह रोजमर्रा की चीजों में भी अद्भुत समाधान खोज सकता है।

154. (D) परा-संज्ञान
यहाँ छात्र अपने स्वयं के अधिगम और क्षमताओं के बारे में एक गलत धारणा बना रहा है और अपनी सीखने की रणनीतियों को बदलने का प्रयास नहीं कर रहा है। यह परा-संज्ञान की कमी को दर्शाता है। परा-संज्ञान में न केवल अपनी क्षमताओं को जानना शामिल है, बल्कि यह पहचानना भी शामिल है कि कब रणनीति बदलने की जरूरत है। यदि छात्र यह समझ पाता कि उसकी समस्या योग्यता की नहीं बल्कि अध्ययन पद्धति की है, तो वह बेहतर प्रदर्शन कर सकता था। यह स्वयं की विचार प्रक्रिया के अपर्याप्त नियमन का मामला है।

155. (D) I, II और III
स्मृति में हस्तक्षेप एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ एक जानकारी दूसरी जानकारी के पुनर्प्राप्ति मार्ग में बाधा डालती है। अग्रलक्षी अवरोध में पुरानी यादें नए अधिगम को कठिन बनाती हैं, जबकि पश्चलक्षी अवरोध में नया ज्ञान पुरानी यादों को धुंधला कर देता है। ये दोनों ही हस्तक्षेप के प्रमुख रूप हैं और विस्मरण के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक हैं। ये दर्शाते हैं कि स्मृतियाँ स्थिर नहीं होतीं बल्कि वे लगातार एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करती रहती हैं।

156. (B) पहले से निवेश किए गए संसाधनों के परिणामस्वरूप किसी व्यवहार या प्रयास को जारी रखता है।
'डूबी हुई लागत का भ्रम' एक तर्कहीन व्यवहार है जहाँ व्यक्ति किसी काम को केवल इसलिए जारी रखता है क्योंकि उसने उसमें पहले से ही समय, पैसा या प्रयास लगा दिया है। भले ही भविष्य में उस काम के सफल होने की संभावना न हो, फिर भी वह पिछले निवेश को 'बर्बाद' होने से बचाने के लिए और अधिक निवेश करता रहता है। तार्किक रूप से, निर्णय केवल

भविष्य के लाभ और हानि पर आधारित होने चाहिए, लेकिन भावनाओं के कारण हम अपने पुराने निवेशों से चिपके रहते हैं। यह निर्णय क्षमता को प्रभावित करता है।

157. (D) प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से सीखा जाता है और इसकी सीमाएं धुंधली होती हैं।
प्राकृतिक संप्रत्यय वे मानसिक श्रेणियाँ हैं जो हम वास्तविक दुनिया के साथ अपने रोजमर्रा के अनुभवों के माध्यम से बनाते हैं। कृत्रिम संप्रत्ययों के विपरीत, इनकी कोई कठोर या निश्चित सीमा नहीं होती। उदाहरण के लिए, 'फल' या 'पक्षी' के संप्रत्यय अनुभवों के आधार पर विकसित होते हैं और इनमें कुछ उदाहरण दूसरों की तुलना में अधिक विशिष्ट माने जाते हैं। यह लचीलापन हमारे मस्तिष्क को संसार की जटिलता और विविधता को सहजता से समझने और वर्गीकृत करने में सहायता प्रदान करता है।

158. (A) अमूर्त संप्रत्ययों के प्रतिनिधित्व और हेरफेर की।
भाषा चिंतन के लिए एक शक्तिशाली प्रतीकात्मक तंत्र प्रदान करती है। इसकी सबसे बड़ी शक्ति यह है कि यह हमें उन चीजों के बारे में सोचने और चर्चा करने में सक्षम बनाती है जो वर्तमान में हमारे सामने मौजूद नहीं हैं, जैसे 'न्याय', 'सत्य' या 'भविष्य'। शब्दों और व्याकरण के नियमों के माध्यम से हम जटिल विचारों को संगठित करते हैं और उन्हें मानसिक रूप से जोड़ते या तोड़ते हैं। भाषा के बिना, हमारा चिंतन केवल तात्कालिक संवेदी अनुभवों तक सीमित रह जाएगा। अतः भाषा उच्च-स्तरीय मानवीय सोच का मुख्य आधार है।

159. (C) यह पहचानना कि नामों की लंबी सूची याद रखने के लिए आपको स्मृति-सहायक युक्ति का उपयोग करने की आवश्यकता है।
परा-स्मृति अपनी स्मृति की सीमाओं को समझने और उन्हें दूर करने के लिए सक्रिय रणनीतियाँ अपनाने की क्षमता है। जब कोई व्यक्ति यह महसूस करता है कि उसकी याददाश्त किसी विशिष्ट कार्य के लिए अपर्याप्त है और वह सचेत रूप से स्मृति-सहायक जैसी तकनीक चुनने का निर्णय लेता है, तो यह परा-स्मृति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह दर्शाता है कि व्यक्ति न केवल जानकारी को याद कर रहा है, बल्कि वह अपनी याद करने की प्रक्रिया की स्वयं निगरानी और प्रबंधन भी कर रहा है।

160. (B) P-2, Q-3, R-1, S-4
ऐंकरिंग पूर्वाग्रह में हम प्राप्त हुई पहली जानकारी को मानक मान लेते हैं। पुष्टिकरण पूर्वाग्रह में हम केवल अपने अनुकूल विचारों को पढ़ते और सुनते हैं। पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह किसी घटना के होने के बाद उसे 'पहले से पता था' जैसा महसूस कराता है। उपलब्धता हेयूरिस्टिक में हम बार-बार देखी गई खबरों को वास्तविकता मान लेते हैं। इन संज्ञानात्मक त्रुटियों का सही मिलान यह समझने में सहायता करता है कि हमारा मस्तिष्क कैसे अनजाने में तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर देखता है और हमारे निर्णयों को प्रभावित करता है।

161. (A) पुनर्प्राप्ति विफलता सिद्धांत
पुनर्प्राप्ति विफलता सिद्धांत के अनुसार, विस्मरण का अर्थ यह नहीं है कि जानकारी स्मृति से मिट गई है, बल्कि यह है कि हम उस तक पहुँचने के लिए सही 'रास्ता' या 'संकेत' नहीं ढूँढ पा रहे हैं। यह 'जीभ की नोक पर' होने वाली स्थिति की तरह है जहाँ जानकारी मस्तिष्क में मौजूद होती है, लेकिन सही उद्दीपक की अनुपस्थिति में वह चेतना में नहीं आ पाती। उपयुक्त संकेत मिलने पर जानकारी अचानक याद आ जाती है। यह सिद्धांत स्मृति को सूचना के भंडारण के बजाय पुनर्प्राप्ति की प्रक्रिया के रूप में अधिक देखता है।

162. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
सृजनात्मकता और बुद्धि के बीच संबंध जटिल है; यद्यपि एक निश्चित स्तर की बुद्धि आवश्यक है, लेकिन उच्च बुद्धि हमेशा उच्च सृजनात्मकता की गारंटी नहीं देती। कथन I गलत है क्योंकि सृजनात्मकता केवल बुद्धि का परिणाम नहीं है। कथन II बिल्कुल सही है क्योंकि व्यक्ति का लचीलापन, जोखिम लेने का साहस, आंतरिक प्रेरणा और एक सहायक पर्यावरणीय वातावरण सृजनात्मक विचारों को जन्म देने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः सृजनात्मकता कई व्यक्तिगत और बाहरी कारकों के अंतर्संबंध का एक परिणाम है।

163. (C) नई जानकारी के लिए एक संगठनात्मक ढांचा प्रदान करना।
स्कीमा हमारे ज्ञान के वे मानसिक मचान हैं जो दुनिया से आने वाली नई सूचनाओं को व्यवस्थित करने में सहायता करते हैं। जब भी हम किसी नई स्थिति का सामना करते हैं, स्कीमा हमें उसे समझने के लिए एक संदर्भ प्रदान करते हैं। यह प्रक्रिया कूटलेखन को तेज और अधिक सार्थक बनाती है क्योंकि मस्तिष्क को पूरी जानकारी शून्य से शुरू नहीं करनी पड़ती। हालाँकि, स्कीमा कभी-कभी त्रुटियां पैदा कर सकते हैं, लेकिन उनका मुख्य कार्य सूचना प्रसंस्करण को सुगम बनाना और हमारे अनुभवों को एक एकीकृत रूप प्रदान करना है।

164. (D) अभिसारी चिंतन
अभिसारी चिंतन वह प्रक्रिया है जो तथ्यों और तार्किक नियमों का उपयोग करके किसी समस्या के 'एकमात्र सही उत्तर' तक पहुँचने पर केंद्रित होती है। यह उन समस्याओं के लिए सबसे उपयुक्त है जिनके समाधान निश्चित होते हैं, जैसे गणितीय प्रश्न या बहुविकल्पीय प्रश्न। इसमें व्यक्ति उपलब्ध जानकारी को छानता है और सबसे सटीक विकल्प चुनता है। सृजनात्मक समस्याओं के लिए जहाँ कई उत्तर संभव हों, वहाँ अपसारी चिंतन काम आता है, लेकिन जहाँ केवल एक ही समाधान मान्य हो, वहाँ अभिसारी चिंतन ही प्रभावी उपकरण है।

165. (C) प्रासंगिक, अर्थगत, प्रक्रियात्मक
दीर्घकालिक स्मृति को सूचना की प्रकृति के आधार पर तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है। प्रासंगिक स्मृति में हमारे व्यक्तिगत जीवन के अनुभव संचित होते हैं। अर्थगत स्मृति सामान्य ज्ञान, तथ्यों और शब्दों के अर्थों का भंडार है। प्रक्रियात्मक स्मृति विभिन्न कौशलों और कार्यों को करने की विधि से संबंधित है। ये तीनों प्रणालियाँ मिलकर हमें यह

समझने की क्षमता देती हैं कि हम कौन हैं, दुनिया कैसे काम करती है और कार्यों को कैसे निष्पादित किया जाता है। यह स्मृति की एकीकृत संरचना है।

166. (B) अपने संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों के बारे में जागरुक होना और उन्हें सुधारना।
बेहतर निर्णय लेने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम अपने स्वयं के मानसिक शॉर्टकट्स और पूर्वाग्रहों को पहचानना है। जब हम यह समझ लेते हैं कि हमारा मस्तिष्क अनजाने में जानकारी को कैसे मोड़ सकता है, तो हम सचेत रूप से अधिक तर्कसंगत और वस्तुनिष्ठ होने का प्रयास कर सकते हैं। इसे 'पूर्वाग्रह मुक्ति' कहा जाता है। इसमें तथ्यों की जाँच करना, विरोधाभासी साक्ष्यों पर विचार करना और भावनात्मक आवेगों को नियंत्रित करना शामिल है। यह जागरुक प्रक्रिया हमें त्रुटिहीन और अधिक प्रभावी चुनाव करने की क्षमता प्रदान करती है।

167. (D) अग्रलक्षी अवरोध
अग्रलक्षी अवरोध तब होता है जब पहले से सीखी गई जानकारी नई जानकारी को सीखने या याद रखने में बाधा उत्पन्न करती है। यहाँ व्यक्ति का पुराने ऑपरेटिंग सिस्टम का ज्ञान इतना गहरा है कि वह नए सिस्टम की प्रक्रियाओं को अपनाने में रुकावट डाल रहा है। उसका मस्तिष्क पुराने निर्देशों को स्वतः ही याद कर लेता है, जिससे नए निर्देशों के लिए जगह नहीं बन पाती। यह स्मृति हस्तक्षेप का एक सामान्य उदाहरण है, जो दर्शाता है कि हमारी पुरानी आदतें और स्मृतियाँ नए अधिगम के मार्ग में कितनी बड़ी बाधा बन सकती हैं।

168. (A) संवेदी स्मृति
संवेदी स्मृति सूचना प्रसंस्करण का वह प्रारंभिक चरण है जहाँ संवेदी अंगों से प्राप्त उत्तेजनाओं को उनके मूल रूप में बहुत ही संक्षिप्त समय के लिए रखा जाता है। यह एक त्वरित रिकॉर्डिंग की तरह है जो हमें दुनिया की निरंतरता का अनुभव कराती है। यदि हम इस जानकारी पर ध्यान देते हैं, तो यह आगे की प्रक्रिया के लिए अल्पकालिक स्मृति में चली जाती है, अन्यथा यह तुरंत लुप्त हो जाती है। यह प्रणाली हमें केवल उन्हीं सूचनाओं को चुनने में सहायता करती है जो वर्तमान में आवश्यक हैं। यह स्मृति का द्वार है।

169. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रभावी अधिगम के लिए केवल कड़ी मेहनत पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह जानना भी जरूरी है कि आप कैसे सीख रहे हैं। परा-संज्ञान वह उपकरण है जो शिक्षार्थियों को उनकी प्रगति की निगरानी करने और अपनी रणनीतियों को समायोजित करने में सक्षम बनाता है। कारण यहाँ स्पष्ट करता है कि स्व-नियमन का अर्थ ही अपनी समझ का निरंतर मूल्यांकन और सुधार है। जब कोई छात्र अपनी गलतियों को पहचानकर अपनी पढ़ाई का तरीका बदलता है, तो वह परा-संज्ञान का उपयोग कर रहा होता है। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं।

170. (D) चिंता और तनाव का उच्च स्तर।
समस्या समाधान एक संज्ञानात्मक कार्य है जिसमें स्पष्ट चिंतन और एकाग्रता की आवश्यकता होती है। विशेषज्ञता, व्यवस्थित दृष्टिकोण और उद्भवन इस प्रक्रिया को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं और बेहतर समाधान खोजने में सहायता करते हैं। इसके विपरीत, अत्यधिक चिंता और तनाव मस्तिष्क के कार्यकारी कार्यों को बाधित करते हैं। यह व्यक्ति की ध्यान केंद्रित करने, जानकारी को संसाधित करने और सृजनात्मक रूप से सोचने की क्षमता को कम कर देता है। उच्च तनाव स्तर अक्सर मानसिक जड़ता का कारण बनता है।

171. (C) मानसिक श्रेणी।
संप्रत्यय की प्रकृति अनिवार्य रूप से एक 'मानसिक श्रेणी' के रूप में होती है जो हमें समान गुणों वाली वस्तुओं, घटनाओं या विचारों को एक समूह में रखने की अनुमति देती है। यह हमें संसार की अनंत और विविध सूचनाओं को व्यवस्थित और संक्षिप्त करने में सहायता करता है। संप्रत्यय के माध्यम से हम जटिल अनुभवों को सरल प्रतीकों में बदल देते हैं, जिससे चिंतन और संचार संभव होता है। यह केवल एक विचार नहीं है, बल्कि एक संज्ञानात्मक संरचना है जो हमारे ज्ञान को एक सार्थक रूप और व्यवस्था प्रदान करती है।

172. (B) केवल I और II
समस्या समाधान एक लक्ष्य-निर्देशित प्रक्रिया है जहाँ व्यक्ति अपनी वर्तमान स्थिति से किसी वांछित स्थिति तक पहुँचने का प्रयास करता है। इसमें एल्गोरिदम और हेयूरिस्टिक्स जैसे विभिन्न तरीके अपनाए जाते हैं। तीसरा कथन गलत है क्योंकि वास्तविक जीवन की सभी समस्याएं 'अच्छी तरह से परिभाषित' नहीं होतीं। कई समस्याएं अस्पष्ट होती हैं जिनके न तो लक्ष्य स्पष्ट होते हैं और न ही समाधान का कोई निश्चित रास्ता। अतः केवल पहले दो कथन समस्या समाधान की बुनियादी प्रकृति और विधियों का सही वर्णन करते हैं।

173. (C) सृजनात्मक और अपसारी चिंतन
'लीक से हटकर सोचना' का सीधा संबंध सृजनात्मकता और अपसारी चिंतन से है। इसका अर्थ है समस्याओं को हल करने के लिए पारंपरिक, स्थापित और रुढ़िवादी तरीकों को त्यागकर पूरी तरह से नए और अपरंपरागत दृष्टिकोण अपनाना। यह मानसिक विन्यासों और कार्यात्मक स्थिरता की सीमाओं को तोड़ने की क्षमता है। अपसारी चिंतन हमें एक ही समस्या के कई अनूठे समाधान देखने की अनुमति देता है, जो नवाचार और रचनात्मकता के लिए अनिवार्य है। यह किसी भी क्षेत्र में मौलिक सुधार और विकास का मुख्य इंजन है।

174. (D) अग्रलक्षी अवरोध - नया पुराने में हस्तक्षेप करता है
स्मृति के संदर्भ में विकल्प (D) गलत युग्म है क्योंकि अग्रलक्षी अवरोध में 'पुरानी' जानकारी 'नई' जानकारी को सीखने या याद करने में बाधा डालती है। इसके विपरीत, पश्चलक्षी अवरोध में नई जानकारी पुरानी यादों में हस्तक्षेप करती है। अन्य तीनों विकल्प सही हैं: अल्पकालिक स्मृति सीमित होती है, दीर्घकालिक स्मृति स्थायी होती है, और अर्थगत स्मृति सामान्य ज्ञान से संबंधित होती है। अवरोधों की दिशा को समझना विस्मरण के सिद्धांतों को स्पष्ट करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

चिंतन अमूर्त श्रेणियों और सामान्यीकरण का उपयोग करता है। प्रतिज्ञप्तियात्मक चिंतन विचारों के बीच तार्किक संबंधों और कथनों के माध्यम से निष्कर्ष निकालने पर केंद्रित होता है। चूँकि ये सभी चिंतन की विभिन्न श्रेणियों और स्तरों का सही प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए विकल्प (B) ही सबसे व्यापक और सटीक उत्तर है। ये प्रक्रियाएं बुद्धि का निर्माण करती हैं।

213. (C) सकारात्मक और नकारात्मक उदाहरण दोनों।
संप्रत्यय निर्माण एक अधिगम प्रक्रिया है जहाँ हम वस्तुओं को श्रेणियों में बाँटना सीखते हैं। सकारात्मक उदाहरण यह स्पष्ट करते हैं कि उस श्रेणी में क्या आता है और उसकी मुख्य विशेषताएं क्या हैं। नकारात्मक उदाहरण उतने ही महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे उन सीमाओं को परिभाषित करते हैं जहाँ वह संप्रत्यय लागू नहीं होता। इन दोनों का तुलनात्मक अध्ययन मस्तिष्क को विभेदीकरण और सामान्यीकरण करने में सहायता करता है। यह संतुलन संज्ञानात्मक स्पष्टता सुनिश्चित करता है और व्यक्ति को भविष्य में सटीक वर्गीकरण के योग्य बनाता है।

214. (D) एक परिणाम के प्रति गहरा भावनात्मक लगाव।
प्रभावी निर्णय लेना एक तार्किक और वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया है जिसमें तथ्यों और विकल्पों का निष्पक्ष विश्लेषण आवश्यक होता है। दीर्घकालिक परिणामों पर विचार करना, कई विकल्पों का मूल्यांकन करना और खंडन करने वाले साक्ष्यों की तलाश करना तर्कसंगत निर्णय लेने के सहायक कारक हैं। इसके विपरीत, किसी एक परिणाम के प्रति गहरा भावनात्मक लगाव हमारे विवेक को धुंधला कर देता है। यह हमें साक्ष्यों की अनदेखी करने और केवल अपनी इच्छाओं के आधार पर चुनाव करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे अक्सर गलत निर्णय होते हैं।

215. (A) वर्तमान स्थिति और वांछित लक्ष्य स्थिति के बीच विसंगति को कम करना।
समस्या समाधान की मूल प्रकृति एक गतिशील मानसिक यात्रा है जो एक बाधा या अंतराल को दूर करने पर केंद्रित होती है। यह प्रक्रिया तब शुरू होती है जब हम महसूस करते हैं कि हमारी वर्तमान स्थिति वैसी नहीं है जैसी हम चाहते हैं। समाधान खोजने का अर्थ है उन चरणों, रणनीतियों और क्रियाओं की पहचान करना जो हमें उस वांछित लक्ष्य तक ले जा सकें। इसमें संज्ञानात्मक संसाधनों का उपयोग बाधाओं को हटाने और प्रारंभिक स्थिति एवं लक्ष्य के बीच की दूरी को पाटने के लिए किया जाता है, जो इसका मुख्य उद्देश्य है।

216. (B) अर्थगत स्मृति
अर्थगत स्मृति हमारे दीर्घकालिक स्मृति भंडार का वह भाग है जो दुनिया के बारे में तथ्यात्मक जानकारी, शब्दों के अर्थ, व्याकरण के नियमों और अमूर्त अवधारणाओं को संचित करता है। इसमें व्यक्तिगत अनुभवों का समय और स्थान से कोई संबंध नहीं होता। उदाहरण के लिए, यह जानना कि 'सत्य' का क्या अर्थ है या गणितीय सूत्रों को याद रखना अर्थगत स्मृति का कार्य है। यह हमारे 'मानसिक विश्वकोश' की तरह कार्य करती है जो हमें सोचने, तर्क करने और दूसरों के साथ अर्थपूर्ण संचार करने के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान करती है।

217. (C) संगठन और संरचना
जब हम जानकारी को एक व्यवस्थित रुप में, जैसे कि रुपरेखा या संप्रत्यय मानचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं, तो हम संगठन और संरचना की स्मृति रणनीति का उपयोग कर रहे होते हैं। यह तकनीक बिखरे हुए तथ्यों के बीच सार्थक संबंध स्थापित करती है, जिससे कूटलेखन की गहराई बढ़ जाती है। एक सुव्यवस्थित ढांचा मस्तिष्क को पुनर्प्राप्ति के दौरान स्पष्ट संकेत प्रदान करता है, जिससे जानकारी को याद करना बहुत आसान हो जाता है। यह बिखरी हुई सूचना को एक एकीकृत और तार्किक ज्ञान तंत्र में बदलने का सबसे प्रभावी तरीका है।

218. (D) I, II और III
निर्णय लेने की प्रक्रिया में संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह हमारी तार्किकता को गहराई से प्रभावित करते हैं। पुष्टिकरण पूर्वाग्रह हमें केवल अपने विश्वासों के अनुकूल तथ्य खोजने के लिए मजबूर करता है। उपलब्धता हेयूरिस्टिक हाल की या प्रमुख यादों के आधार पर संभावनाओं का आकलन करने की त्रुटि है। पश्चदृष्टि पूर्वाग्रह हमें यह भ्रम देता है कि हम अतीत के परिणामों की भविष्यवाणी कर सकते थे। ये तीनों ही पूर्वाग्रह निर्णय लेने में व्यवस्थित त्रुटियों का कारण बनते हैं। अतः ये सभी कथन मनोवैज्ञानिक रुप से सत्य हैं।

219. (C) परा-संज्ञान
परा-संज्ञान शब्द का मूल अर्थ 'संज्ञान के ऊपर संज्ञान' या 'जानने के बारे में जानना' है। यह व्यक्ति की वह उच्च-स्तरीय क्षमता है जिसके माध्यम से वह अपनी स्वयं की अधिगम प्रक्रियाओं, शक्तियों और सीमाओं का निरीक्षण करता है। इसमें न केवल यह जागरुकता शामिल है कि आप क्या जानते हैं, बल्कि यह भी कि आप नई जानकारी को कैसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। परा-संज्ञान हमें अपनी विचार प्रक्रियाओं को नियंत्रित करने, योजना बनाने और गलतियों को सुधारने की शक्ति देता है, जो एक कुशल विचारक बनने के लिए अनिवार्य है।

220. (D) संवेदी स्मृति
संवेदी स्मृति स्मृति प्रणाली का सबसे प्रारंभिक और क्षणभंगुर घटक है। यह संवेदी अंगों से प्राप्त सूचनाओं को उनके मूल रुप में बहुत ही संक्षिप्त समय के लिए संचित करती है, जो अक्सर एक सेकंड से भी कम होता है। इसका मुख्य कार्य हमें दुनिया की एक निरंतर और अटूट छवि प्रदान करना है। यदि इस क्षणिक जानकारी पर तुरंत ध्यान नहीं दिया जाता, तो यह हमेशा के लिए लुप्त हो जाती है। यह अन्य स्मृति प्रणालियों की तुलना में सबसे कम अवधि वाली होती है और सूचना का द्वार कहलाती है।

221. (C) मानसिक विन्यास
मानसिक विन्यास या 'मेंटल सेट' एक प्रकार की संज्ञानात्मक जड़ता है जहाँ व्यक्ति समस्याओं को केवल उन्हीं पुराने और परिचित तरीकों से हल करने का प्रयास करता है जो पहले सफल रहे हैं। यह लचीलेपन की कमी को दर्शाता है और व्यक्ति को नई स्थितियों के अनुसार नवीन समाधान खोजने से रोकता है। यद्यपि पहले के अनुभव अक्सर मददगार होते हैं,

लिए, पुराने फोन नंबर का बार-बार याद आना जिससे नया नंबर याद रखना कठिन हो जाए। यहाँ 'पुराना' ज्ञान 'नए' के रास्ते में आ रहा है, जो हस्तक्षेप की भविष्यगामी दिशा को दर्शाता है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि हमारी पुरानी आदतें और स्मृतियाँ कितनी प्रभावशाली हो सकती हैं।

185. (C) यह पहचानना कि विकल्पों की प्रस्तुति चुनाव को कैसे प्रभावित कर सकती है।
फ्रेमिंग प्रभाव एक संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जहाँ हम एक ही जानकारी पर अलग-अलग प्रतिक्रिया देते हैं, यह इस पर निर्भर करता है कि वह सकारात्मक या नकारात्मक रूप में कैसे प्रस्तुत की गई है। एक बेहतर निर्णयकर्ता इस प्रभाव के प्रति सचेत रहता है और वह शब्दों के जाल में फँसने के बजाय अंतर्निहित तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करता है। वह यह समझने का प्रयास करता है कि क्या उसे किसी विकल्प की ओर केवल इसलिए आकर्षित किया जा रहा है क्योंकि उसे एक विशिष्ट तरीके से प्रस्तुत किया गया है। यह जागरूकता सही निर्णय में सहायता करती है।

186. (B) इसकी सीमाएं धुंधली हैं।
प्राकृतिक संप्रत्यय कृत्रिम संप्रत्ययों की तरह कठोर नियमों से नहीं बंधे होते। इनकी सीमाएं 'धुंधली' होती हैं क्योंकि इनमें कुछ सदस्य पूरी तरह फिट बैठते हैं, जबकि कुछ अन्य कम विशिष्ट होते हैं, भले ही वे उसी श्रेणी का हिस्सा हों। हम इन्हें अनुभवों के माध्यम से सीखते हैं, न कि किसी औपचारिक परिभाषा से। यह लचीलापन हमारे मस्तिष्क को वास्तविक दुनिया की जटिलता और विविधता को सहजता से समझने और वर्गीकृत करने की अद्भुत क्षमता प्रदान करता है। यह हमारे दैनिक जीवन की श्रेणियों का आधार है।

187. (D) स्कीमा
स्कीमा हमारे ज्ञान के वे संगठित मानसिक ढांचे हैं जो हमें सूचनाओं को समझने, व्याख्या करने और याद रखने में सहायता करते हैं। ये एक प्रकार के 'मानसिक मॉडल' की तरह कार्य करते हैं जो हमें बताते हैं कि किसी विशिष्ट वस्तु या परिस्थिति से क्या अपेक्षा करनी चाहिए। स्कीमा के माध्यम से हम नई और अनजान सूचनाओं को अपने पुराने अनुभवों के साथ जोड़कर उन्हें सार्थक बनाते हैं। यद्यपि ये कभी-कभी पूर्वाग्रहों को जन्म दे सकते हैं, लेकिन वे सूचना प्रसंस्करण को अत्यंत कुशल बनाने के लिए अनिवार्य संज्ञानात्मक उपकरण हैं।

188. (A) साधन-साध्य विश्लेषण
साधन-साध्य विश्लेषण समस्या समाधान की एक बहुत ही प्रभावी और तार्किक विधि है। इसमें व्यक्ति अपनी वर्तमान स्थिति और अपने अंतिम लक्ष्य के बीच के अंतर को पहचानता है और फिर उस अंतर को कम करने के लिए छोटे-छोटे उप-लक्ष्य बनाता है। यह रणनीति जटिल समस्याओं को सरल और प्रबंधनीय भागों में तोड़ देती है, जिससे प्रत्येक कदम पर स्पष्टता बनी रहती है। यह 'लक्ष्य-निर्देशित' व्यवहार का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जहाँ प्रत्येक क्रिया व्यक्ति को धीरे-धीरे समाधान की दिशा में आगे बढ़ाती है।

189. (C) लगभग 7 +/- 2 इकाइयाँ
जॉर्ज मिलर के प्रसिद्ध शोध के अनुसार, मानव अल्पकालिक स्मृति की क्षमता सीमित होती है और यह एक समय में औसतन सात (प्लस या माइनस दो) इकाइयों को ही सुरक्षित रख सकती है। यह सीमा हमारे सूचना प्रसंस्करण की संज्ञानात्मक क्षमता को दर्शाती है। यद्यपि चंकिंग के माध्यम से हम इस सीमा को प्रभावी ढंग से बढ़ा सकते हैं, लेकिन इसकी मूल संरचना सीमित ही बनी रहती है। यह समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें जटिल सूचनाओं को छोटे भागों में बाँटने के लिए प्रेरित करता है ताकि वे याद रह सकें।

190. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
स्कीमा स्मृति में 'पुनर्निर्माण' की प्रक्रिया को सक्रिय करते हैं, जिसका अर्थ है कि हम घटनाओं को हूबहू याद नहीं करते, बल्कि उन्हें अपने ज्ञान के आधार पर फिर से बनाते हैं। जब किसी स्मृति में कुछ विवरण लुप्त होते हैं, तो हमारा मस्तिष्क अचेतन रूप से उन रिक्त स्थानों को ऐसी जानकारी से भर देता है जो हमारे स्कीमा के अनुसार 'सही' लगती है। कारण स्पष्ट रूप से इस विकृति के पीछे के तंत्र को समझाता है। अतः स्कीमा जहाँ सूचना को व्यवस्थित करते हैं, वहीं वे स्मृति की सटीकता को भी प्रभावित कर सकते हैं।

191. (D) कार्यात्मक स्थिरता
कार्यात्मक स्थिरता सृजनात्मक चिंतन के मार्ग में सबसे बड़ी मनोवैज्ञानिक बाधाओं में से एक है। यह हमें किसी वस्तु या विचार को केवल उसके पारंपरिक और सामान्य उपयोग तक ही सीमित रखने के लिए मजबूर करती है। सृजनात्मकता के लिए इस मानसिक जड़ता को तोड़ना और वस्तुओं के अपरंपरागत तथा नए उपयोगों के बारे में सोचना अनिवार्य है। जब कोई व्यक्ति कार्यात्मक स्थिरता पर विजय पा लेता है, तो वह समस्याओं को बिल्कुल नए दृष्टिकोण से देख पाता है, जो नवाचार और मौलिक समाधानों के लिए पहली शर्त है।

192. (A) केवल I और II
चिंतन एक उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसमें प्रतीकों, छवियों और संप्रत्ययों का मानसिक हेरफेर शामिल होता है। भाषा चिंतन को एक ढांचा प्रदान करती है, विशेष रूप से जटिल और अमूर्त विचारों के लिए। तीसरा कथन गलत है क्योंकि सारा चिंतन अनिवार्य रूप से समस्या समाधान की ओर निर्देशित नहीं होता; कुछ चिंतन केवल कल्पना या आत्म-चिंतन के रूप में भी हो सकता है। अतः पहले दो कथन चिंतन की प्रकृति और भाषा के साथ इसके अंतर्संबंधों का सही और वैज्ञानिक रूप से सटीक विवरण प्रदान करते हैं।

193. (C) पुनर्प्राप्ति विफलता
"जीभ की नोक पर" की स्थिति पुनर्प्राप्ति विफलता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें व्यक्ति को यह पूर्ण विश्वास होता है कि उसे जानकारी पता है, लेकिन वह उसे उस समय चेतना में लाने में असमर्थ होता है। यह विस्मरण की वह स्थिति है जहाँ जानकारी मस्तिष्क में संचित तो है, लेकिन सही 'पुनर्प्राप्ति संकेत' की अनुपस्थिति के कारण वह अप्राप्य है। यह दर्शाता है कि विस्मरण हमेशा सूचना के नष्ट होने से नहीं होता, बल्कि

कभी-कभी उस तक पहुँचने का मार्ग अस्थायी रूप से बाधित हो जाता है।

194. (D) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
पुष्टिकरण पूर्वाग्रह एक संज्ञानात्मक त्रुटि है जहाँ व्यक्ति केवल उन तथ्यों और सूचनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है जो उसके पूर्व-निर्धारित विचारों या विश्वासों का समर्थन करते हैं। यहाँ राजनेता केवल सकारात्मक परिणामों वाले चुनावों को महत्त्व दे रहा है और प्रतिकूल डेटा को अनदेखा कर रहा है। यह पूर्वाग्रह हमें वस्तुनिष्ठ वास्तविकता से दूर ले जाता है और एक तरफा दृष्टिकोण बनाने के लिए मजबूर करता है। यह हमें अपनी धारणाओं को चुनौती देने से रोकता है, जिससे अक्सर गलत निर्णय होने की संभावना बढ़ जाती है।

195. (A) प्रक्रियात्मक स्मृति
प्रक्रियात्मक स्मृति दीर्घकालिक स्मृति का वह हिस्सा है जो कौशलों और शारीरिक कार्यों को करने की विधि को संचित करता है। इसमें अक्सर ऐसी जानकारी होती है जिसे हम शब्दों में स्पष्ट नहीं कर सकते, लेकिन हमारा शरीर उसे स्वतः ही निष्पादित कर देता है। कीबोर्ड पर टाइप करना एक ऐसा मोटर कौशल है जो बार-बार के अभ्यास से 'स्वचालित' हो जाता है। इसे 'अघोषणात्मक स्मृति' भी कहा जाता है क्योंकि इसकी पुनर्प्राप्ति सचेत प्रयास के बिना होती है। यह अन्य स्मृति प्रकारों से भिन्न है जो तथ्यों पर आधारित होते हैं।

196. (B) प्रासंगिक जानकारी इकट्ठा करना और उसका मूल्यांकन करना।
बेहतर निर्णय लेना एक सचेत प्रक्रिया है जिसमें उपलब्ध विकल्पों का गहन विश्लेषण और उनके संभावित परिणामों का तार्किक मूल्यांकन शामिल होता है। केवल भावनाओं या अपूर्ण जानकारी पर निर्भर रहने से गलतियाँ होने की संभावना अधिक होती है। एक अच्छा निर्णयकर्ता सक्रिय रूप से सभी पक्षों को समझता है, जोखिमों का आकलन करता है और फिर सबसे उपयुक्त विकल्प का चुनाव करता है। यह व्यवस्थित दृष्टिकोण न केवल अनिश्चितता को कम करता है बल्कि निर्णय की प्रभावशीलता को भी काफी हद तक बढ़ा देता है।

197. (C) एक संगठनात्मक संरचना।
स्मृति में स्कीमा की मुख्य भूमिका जानकारी को एक सुव्यवस्थित और सार्थक ढांचे में पिरोना है। ये मानसिक मचानों की तरह कार्य करते हैं जो हमें बताते हैं कि नई सूचनाओं को कहाँ और कैसे संचित करना है। स्कीमा के बिना, हमारे अनुभव बिखरे हुए और असंबद्ध तथ्यों का एक ढेर मात्र रह जाएंगे। वे हमें परिवेश की घटनाओं का तेजी से अनुमान लगाने और उन्हें समझने में सहायता करते हैं। अतः स्कीमा हमारी संज्ञानात्मक दक्षता को बढ़ाने वाले अनिवार्य संगठनात्मक उपकरण हैं जो प्रत्यक्षण और पुनर्प्राप्ति को निर्देशित करते हैं।

198. (D) संचयन और पुनर्प्राप्ति की प्रक्रियाओं के माध्यम से।
स्मृति का मूल अर्थ समय के साथ अधिगम की निरंतरता को बनाए रखना है, जो अनिवार्य रूप से संचयन और पुनर्प्राप्ति पर निर्भर करता है। संचयन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सीखी गई जानकारी को भविष्य के लिए सुरक्षित रखा जाता है, जबकि पुनर्प्राप्ति उस संचित जानकारी को वर्तमान में उपयोग करने की क्षमता है। इन दोनों प्रक्रियाओं के बिना, अनुभव का कोई मूल्य नहीं रह जाएगा क्योंकि हम हर क्षण को पहली बार जैसा महसूस करेंगे। अतः ये दोनों प्रक्रियाएं मानव चेतना और बौद्धिक निरंतरता का वास्तविक आधार बनाती हैं।

199. (C) कार्यात्मक स्थिरता
कार्यात्मक स्थिरता एक संज्ञानात्मक बाधा है जहाँ हम किसी वस्तु को केवल उसके पारंपरिक और सामान्य कार्य के लिए ही देख पाते हैं। यहाँ व्यक्ति जूते के फीते को केवल जूता बाँधने का साधन मान रहा है और उसे मरम्मत के उपकरण के रूप में नहीं देख पा रहा है। यह जड़ता नवीन समस्या समाधान में बाधक होती है क्योंकि यह हमारी कल्पना को सीमित कर देती है। सृजनात्मक होने के लिए यह आवश्यक है कि हम वस्तुओं के भौतिक गुणों को उनके नाम या सामान्य उपयोग से स्वतंत्र होकर देखना सीखें। यह नवीनता की कुंजी है।

200. (D) जानकारी के प्रारंभिक अंश पर बहुत अधिक निर्भर रहना।
एंकरिंग प्रभाव एक संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जहाँ हम निर्णय लेते समय सबसे पहले प्राप्त हुई जानकारी या 'एंकर' पर अत्यधिक निर्भर हो जाते हैं। एक बार जब कोई संख्या या तथ्य हमारे दिमाग में बैठ जाता है, तो बाद की सभी जानकारियों का मूल्यांकन उसी के संदर्भ में किया जाता है, भले ही वह एंकर अप्रासंगिक हो। यह अक्सर वार्ताओं और कीमतों के निर्धारण में देखा जाता है। यह पूर्वाग्रह हमारी तार्किक क्षमता को सीमित करता है क्योंकि हम प्रारंभिक बिंदु से बहुत दूर नहीं जा पाते, जिससे गलत निष्कर्ष निकल सकते हैं।

201. (C) परा-संज्ञान
परा-संज्ञान, जिसे 'चिंतन के बारे में चिंतन' भी कहा जाता है, अपनी स्वयं की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की जागरुकता और नियंत्रण की उच्च-स्तरीय क्षमता है। इसमें यह समझना शामिल है कि आप कैसे सीखते हैं, अपनी प्रगति की निगरानी करना और आवश्यकतानुसार अपनी रणनीतियों को बदलना। यह केवल सूचना प्राप्त करना नहीं है, बल्कि उस सूचना को संसाधित करने के अपने तरीके का प्रबंधन करना है। एक सफल अधिगमकर्ता परा-संज्ञान का उपयोग करके अपनी बौद्धिक सीमाओं को समझता है और प्रभावी योजनाएँ बनाता है।

202. (B) हस्तक्षेप सिद्धांत
हस्तक्षेप सिद्धांत के अनुसार, विस्मरण इसलिए नहीं होता कि यादें समय के साथ मिट जाती हैं, बल्कि इसलिए होता है क्योंकि नई और पुरानी स्मृतियाँ एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं। विस्थापन इसका एक मुख्य रूप है जहाँ सीमित क्षमता वाली अल्पकालिक स्मृति में नई जानकारी पुरानी जानकारी को बाहर धकेल देती है। दीर्घकालिक स्मृति में भी, समान प्रकार की जानकारियों के बीच टकराव होने से पुनर्प्राप्ति बाधित होती है। यह सिद्धांत स्मृति को एक गतिशील क्षेत्र के रूप में देखता है जहाँ स्मृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं।

203. (D) वैचारिक पूर्वाग्रह
समस्या समाधान की मान्यता प्राप्त और वैज्ञानिक विधियों में त्रुटि और प्रयास, एल्गोरिदम और हेयूरिस्टिक शामिल हैं। ये रणनीतियाँ समाधान तक पहुँचने में सक्रिय रूप से सहायता करती हैं। 'वैचारिक पूर्वाग्रह' समस्या समाधान की कोई विधि नहीं है, बल्कि यह एक संज्ञानात्मक बाधा या त्रुटि है जो समाधान खोजने की प्रक्रिया को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। पूर्वाग्रह हमारे चिंतन को विकृत करते हैं और हमें गलत निष्कर्षों की ओर ले जाते हैं, इसलिए वे समस्या समाधान के सहायक उपकरण नहीं हो सकते।

204. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
हस्तक्षेप सिद्धांत विस्मरण की व्याख्या दो रूपों में करता है: अग्रलक्षी और पश्चलक्षी। कथन I सही है क्योंकि ये दोनों ही हस्तक्षेप के मुख्य तंत्र हैं। हालाँकि, कथन II गलत है क्योंकि इसमें परिभाषाओं को उलट दिया गया है। अग्रलक्षी अवरोध में पुरानी जानकारी नए अधिगम में बाधा डालती है, जबकि पश्चलक्षी अवरोध में नई सीखी गई जानकारी पुरानी यादों को याद करने में समस्या पैदा करती है। इन दोनों के बीच के सूक्ष्म अंतर को समझना स्मृति अनुसंधान और विस्मरण की प्रक्रियाओं को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक है।

205. (C) समान वस्तुओं का एक मानसिक समूह।
संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में संप्रत्यय चिंतन की वह मौलिक इकाई है जो हमें संसार की अनंत वस्तुओं और अनुभवों को सार्थक श्रेणियों में वर्गीकृत करने की अनुमति देती है। यह अलग-अलग उदाहरणों के बीच साझा गुणों या विशेषताओं की पहचान करके उन्हें एक मानसिक समूह में एकीकृत करता है। जैसे, 'पेन' संप्रत्यय में हम उन सभी वस्तुओं को रखते हैं जिनसे लिखा जा सकता है। यह प्रक्रिया हमारे संज्ञानात्मक बोझ को कम करती है और हमें नई स्थितियों में पुराने अनुभवों को प्रभावी ढंग से लागू करने की क्षमता प्रदान करती है।

206. (B) एक गैर-मूल्यांकनात्मक वातावरण
सृजनात्मक चिंतन के लिए मानसिक स्वतंत्रता और सुरक्षा का होना अत्यंत आवश्यक है। एक गैर-मूल्यांकनात्मक वातावरण वह होता है जहाँ व्यक्ति को बिना किसी तत्काल आलोचना के डर के अपने नए और अपरंपरागत विचारों को व्यक्त करने की छूट होती है। जब लोग गलतियाँ करने के लिए स्वतंत्र होते हैं, तभी वे जोखिम लेते हैं और मौलिक समाधान खोज पाते हैं। इसके विपरीत, नियमों का कठोर पालन और विफलता का डर रचनात्मकता को दबा देते हैं। अतः खुलापन और प्रोत्साहन सृजनात्मकता के फलने-फूलने के लिए सबसे उपजाऊ भूमि है।

207. (D) परा-संज्ञानात्मक सटीकता
परा-संज्ञानात्मक सटीकता का अर्थ है अपनी वास्तविक ज्ञान की स्थिति और अपनी क्षमताओं का सटीक आकलन करना। यहाँ छात्र को 'लगता' है कि वह जानता है, लेकिन उसने वास्तव में अपनी समझ की जाँच नहीं की है। यह अति-आत्मविश्वास और स्वयं की निगरानी की कमी को दर्शाता है। एक प्रभावी अधिगमकर्ता जानता है कि उसे क्या नहीं पता है और वह नियमित रूप से स्वयं का परीक्षण करता है। इस सटीकता के बिना, व्यक्ति अक्सर भ्रम में रहता है कि उसने अधिगम पूरा कर लिया है, जिससे वास्तविक प्रदर्शन नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है।

208. (A) भंडारण की क्षमता और अवधि।
अल्पकालिक स्मृति और दीर्घकालिक स्मृति के बीच सबसे स्पष्ट और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित अंतर उनकी क्षमता और सूचना को बनाए रखने की समय सीमा है। अल्पकालिक स्मृति की क्षमता बहुत सीमित होती है और यह केवल 20-30 सेकंड तक रहती है। इसके विपरीत, दीर्घकालिक स्मृति की क्षमता को असीमित माना जाता है और इसमें जानकारी वर्षों या जीवन भर के लिए सुरक्षित रह सकती है। यह अंतर सूचना प्रसंस्करण के विभिन्न स्तरों और कूटलेखन की गहराई को दर्शाता है, जो हमारी पूरी स्मृति प्रणाली का आधार है।

209. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
चिंतन अनिवार्य रूप से मानसिक अभ्यावेदन का हेरफेर है जो नए विचारों को जन्म देता है। स्मृति वह क्षमता है जिसके द्वारा हम समय के साथ सूचनाओं को संचित और सुरक्षित रखते हैं। विस्मरण का अर्थ है संचित जानकारी को पुनः प्राप्त करने में असमर्थ होना, चाहे वह ह्रास के कारण हो या हस्तक्षेप के। समस्या समाधान वह लक्ष्य-निर्देशित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम बाधाओं को पार करने का मार्ग खोजते हैं। इन प्रक्रियाओं का सही मिलान मानव संज्ञान के विभिन्न कार्यात्मक आयामों और उनकी विशिष्ट भूमिकाओं को स्पष्ट करता है।

210. (A) स्कीमा
स्कीमा हमारे ज्ञान के वे संगठित मानसिक ढांचे हैं जो किसी विशेष विषय, वस्तु या स्थिति के बारे में हमारे अनुभवों को एक एकीकृत रूप प्रदान करते हैं। ये एक मचान की तरह कार्य करते हैं जो हमें बताते हैं कि नई सूचनाओं को कैसे समझना और वर्गीकृत करना है। स्कीमा के माध्यम से हम दुनिया की जटिलता को सरल बना देते हैं और घटनाओं का पूर्वानुमान लगाने में सक्षम होते हैं। यद्यपि ये कभी-कभी रूढ़िवादिता और स्मृति विकृति का कारण बन सकते हैं, लेकिन वे सूचना प्रसंस्करण को कुशल बनाने के लिए अनिवार्य उपकरण हैं।

211. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भाषाई सापेक्षता का सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि भाषा केवल विचारों को व्यक्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि वह हमारे विचारों को सक्रिय रूप से आकार देती है। कारण स्पष्ट करता है कि किसी भाषा के विशिष्ट शब्द और उसकी व्याकरणिक संरचनाएं उसके बोलने वालों के लिए दुनिया को देखने और सोचने के कुछ तरीकों को अधिक सहज बना देती हैं। उदाहरण के लिए, जिन भाषाओं में दिशाओं के लिए अधिक शब्द होते हैं, वहाँ के लोग उन पहलुओं के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं।

212. (B) उपरोक्त सभी
मनोविज्ञान में चिंतन के कई रूपों को मान्यता दी गई है जो विभिन्न मानसिक क्रियाओं को दर्शाते हैं। प्रत्यक्षात्मक चिंतन वर्तमान संवेदी अनुभवों पर आधारित होता है। संप्रत्ययात्मक

175. (A) सविस्तार रिहर्सल
सविस्तार रिहर्सल वह प्रक्रिया है जिसमें नई जानकारी को केवल दोहराया नहीं जाता, बल्कि उसे पहले से संचित ज्ञान के साथ जोड़कर सार्थक बनाया जाता है। इसमें जानकारी का विश्लेषण करना, उसे उदाहरणों से जोड़ना या उसके अर्थ पर विचार करना शामिल है। यह 'गहन प्रसंस्करण' सूचना को अल्पकालिक स्मृति से दीर्घकालिक स्मृति में स्थानांतरित करने का सबसे प्रभावी तरीका है। केवल रटने की तुलना में, सविस्तार रिहर्सल स्मृतियों को अधिक स्थायी और सुलभ बनाती है, जिससे वास्तविक अधिगम सुनिश्चित होता है।

176. (B) अति-आत्मविश्वास
अति-आत्मविश्वास एक संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जहाँ व्यक्ति अपनी निर्णय लेने की क्षमता, ज्ञान और सटीकता को वास्तव में होने की तुलना में कहीं अधिक बढ़ा-चढ़ाकर आंकता है। यह पूर्वाग्रह हमें जोखिमों को कम आंकने और गलत निर्णयों पर अडिग रहने के लिए प्रेरित करता है। हम अक्सर मानते हैं कि हम दूसरों की तुलना में अधिक जानते हैं या हमारी भविष्यवाणियां सही होंगी, भले ही साक्ष्य इसके विपरीत हों। यह पूर्वाग्रह व्यवसाय, राजनीति और दैनिक जीवन में गंभीर त्रुटियों का एक प्रमुख कारण बनता है।

177. (B) प्रतीक और नियम
भाषा चिंतन की प्रक्रिया को संगठित करने के लिए आवश्यक मानसिक औजार प्रदान करती है। इसमें शब्दों के रूप में 'प्रतीक' और व्याकरण के रूप में 'नियम' शामिल होते हैं, जो हमें अमूर्त विचारों को व्यक्त करने और उनके बीच तार्किक संबंध स्थापित करने की अनुमति देते हैं। भाषा के बिना, उच्च-स्तरीय चिंतन जैसे योजना बनाना, तर्क देना और जटिल संप्रत्ययों को समझना लगभग असंभव होगा। यह हमारे विचारों को एक निश्चित संरचना देती है, जिससे हम न केवल दूसरों के साथ संचार कर सकते हैं बल्कि आंतरिक चिंतन को भी स्पष्टता दे सकते हैं।

178. (A) यादें अन्य यादों द्वारा अवरुद्ध हो जाती हैं।
हस्तक्षेप सिद्धांत यह मानता है कि विस्मरण का मुख्य कारण स्मृतियों के बीच होने वाली प्रतिस्पर्धा है। जब दो सूचनाएं एक जैसी होती हैं या एक ही समय के आसपास सीखी जाती हैं, तो वे एक-दूसरे के पुनर्प्राप्ति मार्ग में बाधा डालती हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि जानकारी मस्तिष्क से मिट गई है, बल्कि यह है कि वह अन्य यादों के कारण 'अवरुद्ध' हो गई है। यह सिद्धांत बताता है कि हम अक्सर इसलिए भूलते हैं क्योंकि नई और पुरानी स्मृतियाँ आपस में टकराती हैं, जिससे सही जानकारी तक पहुँचना कठिन हो जाता है।

179. (C) स्कीमा या संप्रत्यय
'पक्षी' के बारे में हमारा सामान्य विचार जिसमें उसके पंख, चोंच और उड़ने की क्षमता जैसी साझा विशेषताएं शामिल हैं, संप्रत्यय का एक सटीक उदाहरण है। यह एक मानसिक श्रेणी है जो हमें दुनिया के विभिन्न पक्षियों को एक ही समूह में व्यवस्थित करने में सहायता करती है। साथ ही, यह एक स्कीमा भी है क्योंकि यह हमें यह बताता है कि एक विशिष्ट वस्तु से क्या अपेक्षा की जानी चाहिए। ये संज्ञानात्मक ढांचे हमें नई सूचनाओं को जल्दी समझने और उन्हें सार्थक रूप से वर्गीकृत करने की शक्ति प्रदान करते हैं।

180. (D) विविध अनुभवों से संपर्क
सृजनात्मक चिंतन के लिए मानसिक लचीलापन और सूचनाओं का एक व्यापक भंडार आवश्यक है। जब कोई व्यक्ति विभिन्न संस्कृतियों, विषयों और अनुभवों के संपर्क में आता है, तो उसके पास नए विचारों को जोड़ने के लिए अधिक सामग्री होती है। विविधता जिज्ञासा को बढ़ाती है और व्यक्ति को समस्याओं को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके विपरीत, आलोचना का डर और कठोर परंपराएं सोच को सीमित कर देती हैं। अतः अनुभवों का विस्तार सृजनात्मकता का मुख्य ईंधन है जो नवाचार की क्षमता देता है।

181. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
स्मृति मुख्य रूप से कूटलेखन, संचयन और पुनर्प्राप्ति की त्रिकोणीय प्रक्रिया है। चिंतन का अर्थ मानसिक अभ्यावेदन का सक्रिय हेरफेर है जिसके माध्यम से हम जानकारी संसाधित करते हैं। समस्या समाधान का लक्ष्य किसी बाधा को दूर करके अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचना होता है। संप्रत्यय निर्माण साझा गुणों के आधार पर वस्तुओं को समूहों में वर्गीकृत करने की क्षमता है। इन संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का यह मिलान मानव मस्तिष्क की कार्यप्रणाली को स्पष्ट करता है कि कैसे हम जानकारी को सहेजते हैं और विचार करते हैं।

182. (B) एल्गोरिदम
एल्गोरिदम समस्या समाधान की एक ऐसी विधि है जो निश्चित चरणों और नियमों के एक कठोर समूह का पालन करती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यदि इसे सही ढंग से और पूरी तरह से लागू किया जाए, तो यह हमेशा एक सही समाधान की गारंटी देती है। यह गणितीय सूत्रों या कंप्यूटर प्रोग्राम की तरह कार्य करती है। यद्यपि यह विधि हेयूरिस्टिक्स की तुलना में धीमी और अधिक प्रयास वाली हो सकती है, लेकिन इसकी सटीकता और विश्वसनीयता इसे उन समस्याओं के लिए अनिवार्य बनाती है जहाँ त्रुटि की कोई गुंजाइश नहीं होती।

183. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
परा-संज्ञान एक द्वि-आयामी प्रक्रिया है जिसमें संज्ञान का ज्ञान और संज्ञान का नियमन शामिल हैं। जब कोई छात्र अपनी पढ़ाई की योजना बनाता है और समय-समय पर अपनी समझ की जाँच करता है, तो वह इन दोनों पहलुओं का सक्रिय रूप से उपयोग कर रहा होता है। यह क्षमता उसे एक प्रभावी अधिगमकर्ता बनाती है जो अपनी रणनीतियों को जरूरत के अनुसार बदल सकता है। अतः दोनों कथन परा-संज्ञान की परिभाषा और इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग को सही ढंग से दर्शाते हैं। यह शैक्षिक सफलता का आधार है।

184. (D) अग्रलक्षी अवरोध
अग्रलक्षी अवरोध विस्मरण का वह रूप है जहाँ अतीत में सीखा गया ज्ञान वर्तमान की नई यादों के पुनर्प्राप्ति मार्ग में बाधा डालता है। यह अक्सर तब होता है जब पुरानी और नई जानकारी के बीच उच्च स्तर की समानता होती है। उदाहरण के

लेकिन जब वे बाधा बन जाते हैं, तो वे समस्या समाधान की दक्षता को कम कर देते हैं। इस मानसिक जड़ता को तोड़ना ही सृजनात्मकता और प्रभावी चिंतन की पहली शर्त है।

222. (B) चिंतन
चिंतन एक व्यापक और सक्रिय संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसमें तर्क देना, समस्याओं को सुलझाना और विभिन्न विकल्पों के बीच निर्णय लेना शामिल है। यह केवल सूचना प्राप्त करना या उसे याद करना नहीं है, बल्कि प्राप्त जानकारी का मानसिक रूप से हेरफेर करना है ताकि हम निष्कर्ष निकाल सकें या नई समझ विकसित कर सकें। चिंतन वह केंद्र है जहाँ हमारी बुद्धि, अनुभव और भाषा मिलकर कार्य करते हैं। यह मानव चेतना का वह सक्रिय पहलू है जो हमें परिस्थितियों के अनुकूल प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाता है।

223. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
विस्मरण एक जटिल प्रक्रिया है जो स्मृति के विभिन्न चरणों में विफलता के कारण हो सकती है। कूटलेखन, संचयन या पुनर्प्राप्ति में कोई भी त्रुटि सूचना के लुप्त होने का कारण बनती है। हस्तक्षेप सिद्धांत के अंतर्गत अग्रलक्षी और पश्चलक्षी अवरोध पुनर्प्राप्ति विफलता के मुख्य उदाहरण हैं, जहाँ अन्य स्मृतियाँ लक्षित जानकारी तक पहुँचने के मार्ग को बाधित करती हैं। ये स्मृतियाँ मस्तिष्क में मौजूद तो होती हैं, लेकिन हस्तक्षेप के कारण उन्हें याद करना कठिन हो जाता है। अतः दोनों कथन विस्मरण की वैज्ञानिक व्याख्या करते हैं।

224. (D) सृजनात्मक चिंतन
सृजनात्मक चिंतन की मुख्य पहचान नवीनता और उपयोगिता का संगम है। इसमें व्यक्ति स्थापित प्रतिमानों से हटकर सोचता है और ऐसे विचारों या उत्पादों का निर्माण करता है जो मौलिक होने के साथ-साथ किसी समस्या का समाधान भी करते हैं। रटकर सीखना या मानसिक विन्यास तो इसके विपरीत हैं क्योंकि वे सोच को सीमित करते हैं। सृजनात्मकता में अक्सर अपसारी चिंतन का उपयोग होता है, जो कल्पनाशीलता और लचीलेपन के माध्यम से नई संभावनाओं के द्वार खोलता है। यह नवाचार और मौलिकता का आधार है।

225. (A) संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों के प्रति जागरूक होना और उन्हें कम करने का प्रयास करना।
एक संतुलित और तर्कसंगत निर्णय लेने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम अपने स्वयं के मानसिक पूर्वाग्रहों को पहचानना है। पुष्टिकरण पूर्वाग्रह या अति-आत्मविश्वास जैसे मानसिक शॉर्टकट अक्सर हमें गलत चुनाव की ओर ले जाते हैं। जब हम इन पूर्वाग्रहों के प्रति सतर्क रहते हैं, तो हम तथ्यों का अधिक वस्तुनिष्ठ विश्लेषण कर सकते हैं। यह जागरूकता हमें विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और साक्ष्यों के आधार पर सर्वोत्तम विकल्प चुनने में सहायता करती है। पूर्वाग्रहों को कम करना ही बेहतर निर्णय लेने का सबसे प्रभावी मार्ग है।

226. (B) समाधान खोजने के लिए उपयोग की जाने वाली रणनीतियाँ और प्रक्रियाएँ।
समस्या समाधान के 'तरीकों' से तात्पर्य उन व्यवस्थित मानसिक कौशलों और क्रियाओं से है जो हमें एक अज्ञात स्थिति से वांछित लक्ष्य तक ले जाते हैं। इसमें एल्गोरिदम जैसी चरण-दर-चरण प्रक्रियाएं या हेयूरिस्टिक्स जैसे मानसिक शॉर्टकट शामिल हो सकते हैं। ये तरीके हमें सूचनाओं को व्यवस्थित करने, संभावनाओं का परीक्षण करने और बाधाओं को दूर करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं। सही विधि का चयन समस्या की प्रकृति और उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर करता है। अतः ये हमारे रणनीतिक प्रयासों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

227. (C) प्राकृतिक संप्रत्यय है
प्राकृतिक संप्रत्यय वे मानसिक श्रेणियाँ हैं जो हम वास्तविक दुनिया के अनुभवों के माध्यम से बनाते हैं। इनकी सीमाएं अक्सर धुंधली और लचीली होती हैं, जिन्हें किसी एक सख्त नियम से परिभाषित करना कठिन होता है। 'सब्जी' का संप्रत्यय इसी का उदाहरण है क्योंकि इसमें कई प्रकार की वस्तुएं शामिल हैं जो गुणों में भिन्न हो सकती हैं। यह कृत्रिम संप्रत्ययों के विपरीत है जो निश्चित नियमों पर आधारित होते हैं। प्राकृतिक संप्रत्यय हमारे मस्तिष्क को दैनिक जीवन की विविधता को सहजता से वर्गीकृत करने में सहायता करते हैं।

228. (D) परा-स्मृति
एटकिन्सन-शिफ्रिन के मानक सूचना-प्रसंस्करण मॉडल में तीन मुख्य घटक शामिल हैं: संवेदी स्मृति, अल्पकालिक स्मृति और दीर्घकालिक स्मृति। ये प्रणालियाँ सूचना के प्रवाह और भंडारण के विभिन्न स्तरों का प्रतिनिधित्व करती हैं। परा-स्मृति इस मॉडल का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह एक उच्च-स्तरीय परा-संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के अपनी स्वयं की स्मृति प्रणालियों के ज्ञान से संबंधित है। जहाँ मूल मॉडल 'संचयन' की प्रक्रिया बताता है, वहीं परा-स्मृति उस संचयन के प्रति हमारी 'जागरूकता' और प्रबंधन से जुड़ी अवधारणा है।

229. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
समस्या समाधान में कई मानसिक बाधाएं आती हैं। मानसिक विन्यास का अर्थ है असफल होने के बावजूद पुरानी रणनीति पर अड़े रहना। कार्यात्मक स्थिरता वस्तुओं के नए उपयोग देखने में बाधक है। पुष्टिकरण पूर्वाग्रह केवल उन तथ्यों पर ध्यान देने की त्रुटि है जो हमारी परिकल्पना का समर्थन करते हैं। अप्रासंगिक जानकारी हमें मुख्य लक्ष्य से भटका देती है। इन अवधारणाओं का यह मिलान संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में उन रुकावटों को स्पष्ट करता है जो हमें तर्कसंगत समाधान तक पहुँचने से रोकती हैं।

230. (B) अर्थगत
अर्थगत स्मृति दीर्घकालिक स्मृति का वह विशिष्ट भाग है जो दुनिया के बारे में सामान्य ज्ञान, तथ्यों, नियमों और अर्थों को संचित करता है। इसमें वे सभी जानकारियाँ होती हैं जो हमारे व्यक्तिगत अनुभवों से जुड़ी नहीं हैं, जैसे भूगोल के तथ्य या भाषा का व्याकरण। इसे एक 'मानसिक शब्दकोश' माना जा सकता है। यह प्रासंगिक स्मृति से भिन्न है क्योंकि इसमें समय

उत्तर मान्य होता है, जैसे गणितीय समीकरण या बहुविकल्पीय प्रश्न। इसमें व्यक्ति विभिन्न विकल्पों को छानता है और सबसे उपयुक्त एक को चुनता है। यह सृजनात्मकता के 'अपसारी चिंतन' के विपरीत है, क्योंकि इसका उद्देश्य विविधता के बजाय सटीकता प्राप्त करना होता है।

268. (D) उपरोक्त सभी
सृजनात्मक चिंतन एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो कई आंतरिक और बाहरी कारकों के अंतर्संबंध से प्रभावित होती है। एक समृद्ध ज्ञान आधार नए विचारों को जोड़ने के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान करता है। एक कल्पनाशील चिंतन शैली व्यक्ति को अपरंपरागत रास्तों पर चलने के लिए प्रेरित करती है। एक साहसी व्यक्तित्व जोखिम लेने और विफलता को स्वीकार करने की शक्ति देता है, जो नवाचार के लिए अनिवार्य है। चूँकि ये सभी कारक सृजनात्मकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इसलिए विकल्प (D) ही सटीक है।

269. (C) चिंतन में भाषा की भूमिका।
भाषा हमारे संसार को देखने के नजरिए को गहराई से प्रभावित करती है। वह हमें वे शब्द और श्रेणियाँ प्रदान करती है जिनका उपयोग हम दुनिया की वस्तुओं और घटनाओं को वर्गीकृत करने के लिए करते हैं। यह सापिर-वोर्फ परिकल्पना के अध्ययन का मुख्य केंद्र है, जो यह सुझाव देती है कि हमारी भाषा की संरचना हमारे चिंतन के तरीकों को आकार दे सकती है। भाषा न केवल विचारों को संप्रेषित करने का साधन है, बल्कि यह एक संज्ञानात्मक उपकरण भी है जो हमारे अनुभवों को संगठित करने में सहायता करता है।

270. (B) प्रासंगिक
प्रासंगिक स्मृति दीर्घकालिक स्मृति का वह हिस्सा है जो हमारे व्यक्तिगत जीवन की विशिष्ट घटनाओं और अनुभवों को समय और स्थान के संदर्भ में सुरक्षित रखता है। यह एक 'मानसिक आत्मकथा' की तरह है जिसमें क्या, कब और कहाँ जैसे विवरण शामिल होते हैं। जैसे कि आपका पिछला जन्मदिन। यह अर्थगत स्मृति से भिन्न है क्योंकि इसमें व्यक्तिगत अनुभव का जुड़ाव होता है। यह हमें अपने अतीत की निरंतरता का अनुभव कराती है और हमारी पहचान के निर्माण में मुख्य भूमिका निभाती है। यह दीर्घकालिक स्मृति का अंग है।

271. (D) पश्चलक्षी हस्तक्षेप
पश्चलक्षी हस्तक्षेप विस्मरण का वह रूप है जहाँ नई सीखी गई जानकारी पुरानी यादों को याद करने में बाधा उत्पन्न करती है। यह तब होता है जब नई स्मृतियाँ इतनी प्रभावी हो जाती हैं कि वे पहले से संचित सूचनाओं के पुनर्प्राप्ति मार्ग को अवरुद्ध कर देती हैं। उदाहरण के लिए, नया मोबाइल नंबर याद करने के बाद पुराने नंबर को भूल जाना। यह दर्शाता है कि हमारी स्मृति प्रणाली एक सक्रिय क्षेत्र है जहाँ नई सूचनाएं पुरानी यादों को दबा सकती हैं। यह हस्तक्षेप का एक बहुत ही सामान्य और प्रभावशाली प्रकार है।

272. (B) एक निश्चित तरीके से सोचने की व्यवस्थित प्रवृत्ति जो त्रुटियों का कारण बन सकती है।
निर्णय लेने में 'पूर्वाग्रह' का अर्थ उन मानसिक त्रुटियों से है जो हमारी तर्कसंगतता को प्रभावित करती हैं। यह एक यादृच्छिक गलती नहीं है, बल्कि एक व्यवस्थित पैटर्न है जहाँ हमारा मस्तिष्क सूचनाओं को गलत तरीके से संसाधित करता है। यह अक्सर मानसिक शॉर्टकट के अत्यधिक उपयोग के कारण होता है। ऐसे पूर्वाग्रह हमें वस्तुनिष्ठ वास्तविकता से दूर ले जाते हैं और हमें केवल अपनी धारणाओं के पक्ष में निर्णय लेने के लिए प्रेरित करते हैं। इन्हें समझना बेहतर निर्णय लेने की दिशा में पहला कदम है।

273. (C) अंतर्दृष्टि
समस्या समाधान में 'अहा!' क्षण को अंतर्दृष्टि कहा जाता है। यह वह रोमांचक क्षण है जब किसी समस्या का समाधान अचानक, बिना किसी क्रमिक प्रयास के, मस्तिष्क में कौंधता है। यह तब होता है जब व्यक्ति समस्या के तत्वों को एक बिल्कुल नए और सार्थक तरीके से जोड़ लेता है। अंतर्दृष्टि अक्सर तब आती है जब व्यक्ति समस्या पर लगातार विचार करने के बाद थोड़ा विराम लेता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि हमारा मस्तिष्क अचेतन स्तर पर भी सूचनाओं को पुनर्गठित कर रहा होता है, जिससे नवीन समाधान प्राप्त होता है।

274. (D) कुशल प्रसंस्करण की अनुमति देता है; विकृतियां पैदा कर सकता है
स्कीमा हमारे ज्ञान के संगठित ढांचे हैं जो हमें दुनिया की विशाल सूचनाओं को तेजी से समझने और वर्गीकृत करने में सहायता करते हैं, जिससे हमारा संज्ञानात्मक बोझ कम होता है। हालाँकि, इनका नकारात्मक पक्ष यह है कि वे हमारी स्मृति में अंतराल को अपनी पूर्व-धारणाओं से भर सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप, हम घटनाओं को वैसे याद नहीं करते जैसी वे वास्तव में हुई थीं, बल्कि वैसे याद करते हैं जैसी हमारे स्कीमा के अनुसार उन्हें होना चाहिए था। अतः स्कीमा दक्षता बढ़ाते हैं पर सटीकता कम कर सकते हैं।

275. (A) परा-संज्ञान
जब कोई छात्र पढ़ते समय अपनी समझ की निगरानी करता है, तो वह यह जाँच रहा होता है कि वह जानकारी को कितना आत्मसात कर पा रहा है। यह अपनी विचार प्रक्रिया के बारे में जागरूक होने और उसे नियंत्रित करने का कार्य है, जिसे 'परा-संज्ञान' कहा जाता है। यदि उसे लगता है कि उसे कुछ समझ नहीं आया, तो वह अपनी अध्ययन रणनीति को बदलता है। यह उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक कौशल अधिगम को प्रभावी बनाता है क्योंकि यह शिक्षार्थी को अपनी बौद्धिक प्रगति का सक्रिय प्रबंधक बनने की अनुमति देता है।

276. (A) क्षमता
अल्पकालिक स्मृति और दीर्घकालिक स्मृति के बीच केवल सूचना को बनाए रखने की समय सीमा का ही अंतर नहीं है, बल्कि उनकी 'क्षमता' में भी भारी अंतर है। अल्पकालिक स्मृति की क्षमता बहुत सीमित होती है, जो सामान्यतः सात इकाइयों तक ही सीमित होती है। इसके विपरीत, दीर्घकालिक स्मृति की

प्राप्त करना बहुत आसान हो जाता है। यह प्रभावी अधिगम और दीर्घकालिक स्मृति के लिए सर्वोत्तम विधि है।

240. (D) प्रक्रियात्मक स्मृति
प्रक्रियात्मक स्मृति दीर्घकालिक स्मृति का वह हिस्सा है जो कौशलों, आदतों और शारीरिक कार्यों को करने की विधि को सुरक्षित रखता है। पियानो बजाना एक ऐसा जटिल मोटर कौशल है जो निरंतर अभ्यास के माध्यम से स्मृति में गहराई से अंकित हो जाता है। इसे 'अघोषणात्मक स्मृति' भी कहा जाता है क्योंकि हम इन कार्यों को शब्दों में व्यक्त करने के बजाय सीधे निष्पादित करके दिखाते हैं। एक बार सीख लेने के बाद, ये क्रियाएं अक्सर स्वचालित हो जाती हैं और बिना किसी सचेत प्रयास के आसानी से दोहराई जा सकती हैं।

241. (D) I, II और III
संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में ये तीनों अवधारणाएँ मानव बुद्धि और ज्ञान के संगठन को समझने के लिए अनिवार्य हैं। अर्थगत स्मृति का नेटवर्क मॉडल बताता है कि तथ्य आपस में कैसे जुड़े हैं। परा-संज्ञान हमारी अपनी सोच के प्रति जागरूकता है जो हमें बेहतर अधिगमकर्ता बनाती है। स्कीमा वे मानसिक ढांचे हैं जो दुनिया की विशाल सूचनाओं को व्यवस्थित और श्रेणीबद्ध करते हैं। ये तीनों मिलकर एक एकीकृत तंत्र का निर्माण करते हैं जो हमें सूचनाओं का बुद्धिमानी से उपयोग करने में सक्षम बनाता है।

242. (B) हेयूरिस्टिक या स्कीमा जो पक्षपाती हो सकता है
रूढ़िवादिता अक्सर उन मानसिक शॉर्टकट का परिणाम होती है जिनका उपयोग हमारा मस्तिष्क सूचनाओं को जल्दी संसाधित करने के लिए करता है। ये दोषपूर्ण स्कीमा हमें लोगों को व्यक्तिगत गुणों के बजाय उनके समूह की पूर्व-निर्धारित विशेषताओं के आधार पर आंकने के लिए मजबूर करते हैं। यद्यपि ये संज्ञानात्मक बोझ को कम करते हैं, लेकिन ये अक्सर पक्षपाती निर्णयों की ओर ले जाते हैं। यह प्रक्रिया तर्कसंगत चिंतन को बाधित करती है और वास्तविकता के एक विकृत चित्र को जन्म देती है, जो पूर्वाग्रह का आधार है।

243. (C) इसकी संरचना को, जिसमें प्रारंभिक स्थिति, लक्ष्य स्थिति और बाधाएं शामिल हैं।
किसी समस्या की 'प्रकृति' को उसकी संरचना के माध्यम से समझा जा सकता है। इसमें तीन अनिवार्य घटक होते हैं: वर्तमान स्थिति, लक्ष्य स्थिति और वे बाधाएं जो सीधे लक्ष्य तक पहुँचने के मार्ग को रोकती हैं। समस्या की जटिलता इस पर निर्भर करती है कि ये घटक कितने स्पष्ट या अस्पष्ट हैं। समस्या समाधान का अर्थ ही इन बाधाओं को दूर करने के लिए उपयुक्त रणनीतियों की पहचान करना है ताकि प्रारंभिक स्थिति और लक्ष्य के बीच के अंतराल को भरा जा सके। यह चिंतन का आधार है।

244. (D) भाषा के बिना चिंतन असंभव है।
यद्यपि भाषा चिंतन को आकार देने और अमूर्त विचारों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, लेकिन यह कहना गलत है कि भाषा के बिना चिंतन असंभव है। मनुष्य और यहाँ तक कि कुछ जानवर भी गैर-भाषाई चिंतन, जैसे दृश्य कल्पना और संवेदी प्रत्यक्षण के माध्यम से समस्याओं को सुलझा सकते हैं। भाषा चिंतन को सुगम बनाती है और उसे एक नया विस्तार देती है, लेकिन चिंतन की मौलिक प्रक्रिया संवेदी अनुभवों और मानसिक अभ्यावेदन पर भी आधारित हो सकती है, जो भाषा से स्वतंत्र है।

245. (A) ह्रास सिद्धांत
ह्रास सिद्धांत विस्मरण की व्याख्या एक जैविक और समय-आधारित प्रक्रिया के रूप में करता है। इसके अनुसार, जब भी कोई अनुभव होता है, तो मस्तिष्क की तंत्रिकाओं में एक भौतिक 'स्मृति चिह्न' बनता है। यदि इस जानकारी को समय-समय पर दोहराया नहीं जाता है, तो समय के साथ यह चिह्न धीरे-धीरे धुंधला होने लगता है और अंततः पूरी तरह मिट जाता है। यह सिद्धांत विशेष रूप से संवेदी और अल्पकालिक स्मृति के लिए बहुत सटीक बैठता है, जहाँ सूचना का उपयोग न होने पर वह बहुत जल्दी लुप्त हो जाती है।

246. (D) संवेदी स्मृति
दीर्घकालिक स्मृति के प्रमुख प्रकारों में प्रासंगिक, अर्थगत और प्रक्रियात्मक स्मृतियाँ शामिल हैं, जिनमें जानकारी वर्षों तक सुरक्षित रह सकती है। इसके विपरीत, संवेदी स्मृति दीर्घकालिक स्मृति का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह स्मृति प्रणाली का सबसे प्रारंभिक और क्षणभंगुर चरण है। यह केवल एक सेकंड या उससे भी कम समय के लिए संवेदी जानकारी को संचित करती है। यदि इस पर तुरंत ध्यान नहीं दिया जाता, तो यह जानकारी लुप्त हो जाती है और स्थायी भंडारण तक कभी नहीं पहुँच पाती है। अतः यह असंगत है।

247. (C) पिछले निवेश के कारण विफल परियोजना में निवेश करना जारी रखते हैं।
'डूबी हुई लागत का भ्रम' निर्णय लेने की एक ऐसी त्रुटि है जहाँ व्यक्ति भविष्य के लाभ-हानि को देखने के बजाय अपने पिछले खर्चों पर ध्यान देता है। वह किसी कार्य या निवेश को केवल इसलिए जारी रखता है क्योंकि उसने उसमें पहले से ही बहुत अधिक समय, पैसा या भावनाएँ लगा दी हैं। उसे लगता है कि यदि वह अब पीछे हट गया, तो उसका पिछला सारा निवेश बर्बाद हो जाएगा। यह एक तर्कहीन व्यवहार है जो अक्सर व्यक्ति को और भी अधिक नुकसान की ओर ले जाता है। यह पूर्वाग्रह तार्किकता बाधित करता है।

248. (D) वस्तुओं को परिचित स्थानों के अनुक्रम के साथ जोड़ना।
लोकी की विधि एक प्राचीन और अत्यंत प्रभावी स्मृति-सहायक तकनीक है जो दृश्य कल्पना और स्थानिक स्मृति का उपयोग करती है। इसमें याद रखने वाली वस्तुओं को मानसिक रूप से किसी परिचित स्थान, जैसे अपने घर के कमरों के विशिष्ट बिंदुओं के साथ 'रख' दिया जाता है। जब जानकारी को पुनः प्राप्त करना होता है, तो व्यक्ति मानसिक रूप से उस स्थान की यात्रा करता है और वहाँ रखी वस्तुओं को क्रमानुसार याद कर लेता है। यह विधि असंबद्ध जानकारी को एक सार्थक संरचना प्रदान करती है।

अध्याय 04
बुद्धि, सर्जनात्मकता एवं शिक्षा मनोविज्ञान

1. मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में, निम्नलिखित में से कौन 'बुद्धि' की अवधारणा को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करता है?
(A) मानकीकृत शैक्षिक परीक्षणों में उच्च अंक प्राप्त करना।
(B) विभिन्न कौशलों और ज्ञान को अर्जित करने तथा उन्हें लागू करने की क्षमता।
(C) वह तीव्र गति जिस पर कोई व्यक्ति गणितीय समस्याओं को हल करता है।
(D) तथ्यात्मक जानकारी की वह कुल मात्रा जिसे एक व्यक्ति ने स्मरण किया है।

2. बुद्धि की प्रकृति के संबंध में उस कथन की पहचान करें जो त्रुटिपूर्ण है।
(A) बुद्धि एक अखंड क्षमता है जो जीवन भर स्थिर रहती है।
(B) बुद्धि में तर्क करने और अमूर्त रूप से सोचने की क्षमता सम्मिलित है।
(C) सांस्कृतिक संदर्भ बौद्धिक क्षमता की अभिव्यक्ति को प्रभावित कर सकते हैं।
(D) इसमें अनुभव से सीखने और नवीनता के प्रति अनुकूलन करने की क्षमता शामिल है।

3. बुद्धि मापन के संदर्भ में, मूल बिने-साइमन मापनी का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) उन्नत शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान करना।
(B) प्रथम विश्व युद्ध के दौरान विशेष भूमिकाओं के लिए सेना के रंगरूटों का चयन करना।
(C) उन बच्चों की पहचान करना जिन्हें विशेष शैक्षिक सहायता की आवश्यकता थी।
(D) एक वयस्क की संज्ञानात्मक क्षमताओं का व्यापक विवरण प्रदान करना।

4. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: वेक्स्लर मापनी किसी व्यक्ति की समग्र बौद्धिक क्षमता का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक एकल प्राप्तांक, बुद्धि लब्धि, प्रदान करती है।
कथन II: पूर्ण स्तर बुद्धि लब्धि के अतिरिक्त, वेक्स्लर मापनी शाब्दिक और निष्पादन क्षमताओं के लिए पृथक् प्राप्तांक भी प्रदान करती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

5. कौन सा बुद्धि परीक्षण विशेष रूप से अशाब्दिक होने और सांस्कृतिक एवं भाषाई पूर्वाग्रहों को न्यून करने के लिए अभिकल्पित किया गया है?
(A) बिने परीक्षण
(B) वेक्स्लर वयस्क बुद्धि मापनी
(C) रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस
(D) स्टैनफोर्ड-बिने बुद्धि मापनी

6. एक मनोवैज्ञानिक एक परीक्षण आयोजित करता है जहाँ एक बच्चे को विकल्पों के एक समूह से लुप्त अंश को चुनकर एक दृश्य प्रतिरूप को पूर्ण करना होता है। यह कार्य किस बुद्धि परीक्षण की विशेषता है?
(A) वेक्स्लर मापनी का एक शाब्दिक उप-परीक्षण
(B) रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस
(C) बिने परीक्षण का शब्दावली खंड
(D) लिपिकीय कौशल के लिए एक विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण

7. स्पीयरमैन के बुद्धि के द्वि-कारक सिद्धांत के अनुसार, 's' कारक क्या दर्शाता है?
(A) सभी कार्यों के आधार पर एक सामान्य बौद्धिक क्षमता।
(B) संज्ञानात्मक परीक्षणों के दौरान तंत्रिका प्रसंस्करण की गति।
(C) पारस्परिक कौशल के लिए एक सामाजिक बुद्धि कारक।
(D) विशिष्ट कार्यों के लिए आवश्यक विशिष्ट क्षमताएं।

8. बुद्धि के सिद्धांतों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. स्पीयरमैन का सिद्धांत एक एकल सामान्य बुद्धि कारक का प्रस्ताव करता है।
2. थर्स्टन का सिद्धांत कई प्राथमिक मानसिक क्षमताओं की पहचान करता है।
3. कैटेल ने तरल और ठोस बुद्धि के बीच अंतर स्पष्ट किया।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

9. थर्स्टन द्वारा अपने समूह कारक सिद्धांत में प्रस्तावित प्राथमिक मानसिक क्षमताओं में से कौन सी एक नहीं है?

सहायता करते हैं। 'कक्षा' के स्कीमा में डेस्क, शिक्षक और बोर्ड जैसी सामान्य चीज़ों का होना स्वाभाविक है। हालाँकि, स्कीमा का कार्य विवरणों को अक्षरशः याद रखना नहीं है, बल्कि एक सारांश प्रदान करना है। इसलिए, हर व्याख्यान का शब्द-दर-शब्द विवरण स्कीमा में शामिल नहीं होगा। स्कीमा सूचना प्रसंस्करण को कुशल बनाने के लिए अनावश्यक विवरणों को हटाकर केवल मूल अर्थ बनाए रखते हैं।

259. (A) विभिन्न विकल्पों के संभावित परिणामों की पहचान और मूल्यांकन करना।
बेहतर निर्णय लेना एक सचेत और तर्कसंगत प्रक्रिया है जिसमें धैर्य और विश्लेषण की आवश्यकता होती है। एक अच्छा निर्णयकर्ता केवल एक ही विकल्प पर नहीं रुकता, बल्कि वह कई संभावनाओं की पहचान करता है। वह प्रत्येक विकल्प के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को तौलता है और उनके दीर्घकालिक प्रभावों पर विचार करता है। यह व्यवस्थित दृष्टिकोण अनिश्चितता को कम करता है और पूर्वाग्रहों के प्रभाव से बचने में सहायता करता है। विकल्पों का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन ही सफलता की असली कुंजी है।

260. (B) कूटलेखन, संचयन और पुनर्प्राप्ति।
स्मृति की पूरी प्रक्रिया को तीन मूलभूत घटकों के माध्यम से समझा जा सकता है। कूटलेखन वह प्रारंभिक चरण है जहाँ संवेदी सूचना को मस्तिष्क द्वारा समझने योग्य रूप में बदला जाता है। संचयन इस जानकारी को समय के साथ सुरक्षित रखने का कार्य है, चाहे वह कुछ सेकंड के लिए हो या जीवन भर। पुनर्प्राप्ति वह अंतिम सक्रिय प्रक्रिया है जिसमें संचित जानकारी को आवश्यकता पड़ने पर फिर से उपयोग में लाया जाता है। ये तीनों घटक मिलकर एक एकीकृत प्रणाली बनाते हैं, जिससे मानव अधिगम का भविष्य में उपयोग संभव होता है।

261. (A) प्रारंभिक स्थिति, लक्ष्य स्थिति और अनुमत संचालनों को समझना।
समस्या समाधान की सफलता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि समस्या को मानसिक रूप से कैसे प्रस्तुत किया गया है। इसमें तीन पहलुओं की स्पष्ट समझ आवश्यक है: वर्तमान स्थिति, अंतिम लक्ष्य और वे नियम या कार्य जो उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए किए जा सकते हैं। यदि इनमें से कोई भी घटक अस्पष्ट है, तो समाधान खोजना कठिन हो जाता है। एक सटीक मानसिक प्रतिनिधित्व समस्या को संरचित करता है, जिससे उपयुक्त रणनीतियों का चयन करना आसान हो जाता है। यह संज्ञानात्मक दक्षता बढ़ाता है।

262. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
अर्थगत स्मृति तथ्यों का भंडार है, जैसे व्हेल का स्तनधारी होना। प्रासंगिक स्मृति में व्यक्तिगत जीवन के अनुभव होते हैं, जैसे आज का नाश्ता। प्रक्रियात्मक स्मृति कौशलों से संबंधित है, जैसे जूते के फीते बाँधना। अल्पकालिक स्मृति वर्तमान सूचना को बहुत कम समय के लिए रखती है, जैसे डायल किया जाने वाला नंबर। इन स्मृति प्रकारों का यह वर्गीकरण हमें यह समझने में सहायता करता है कि हमारा मस्तिष्क विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को कैसे अलग-अलग संचित और पुनः प्राप्त करता है। यह स्मृति संरचना है।

263. (C) अग्रलक्षी अवरोध
अग्रलक्षी अवरोध तब होता है जब पहले से सीखी गई जानकारी नई जानकारी को याद रखने में बाधा डालती है। यहाँ आपका पुराना पासवर्ड इतना अधिक अभ्यस्त है कि वह नए पासवर्ड की पुनर्प्राप्ति प्रक्रिया में हस्तक्षेप कर रहा है। आपका मस्तिष्क स्वचालित रूप से पुरानी आदत की ओर मुड़ जाता है, जिससे नए अधिगम को स्थापित होने में कठिनाई होती है। यह स्मृति हस्तक्षेप का एक सामान्य उदाहरण है, जो दर्शाता है कि हमारा पुराना ज्ञान नए और प्रतिस्पर्धी ज्ञान के मार्ग में एक बड़ी बाधा बन सकता है।

264. (A) केवल I और II
हेयूरिस्टिक्स और एल्गोरिदम समस्या समाधान की दो अलग-अलग रणनीतियाँ हैं। हेयूरिस्टिक एक 'व्यावहारिक नियम' या मानसिक शॉर्टकट है जो त्वरित समाधान खोजने में सहायता करता है, जबकि एल्गोरिदम एक चरण-दर-चरण प्रक्रिया है जो निश्चितता प्रदान करती है। तीसरा कथन गलत है क्योंकि एल्गोरिदम हमेशा हेयूरिस्टिक्स की तुलना में धीमे होते हैं क्योंकि वे हर संभव विकल्प की जाँच करते हैं, लेकिन वे त्रुटि-मुक्त होते हैं। हेयूरिस्टिक्स तेज होते हैं पर गलती की संभावना रहती है। अतः पहले दो कथन सत्य हैं।

265. (A) अमूर्त संप्रत्यय है।
"न्याय" या "स्वतंत्रता" जैसे संप्रत्यय अमूर्त होते हैं क्योंकि उनका कोई भौतिक स्वरूप नहीं होता जिसे हम देख या छू सकें। ये मानसिक श्रेणियाँ विचारों, आदर्शों और सामाजिक मूल्यों पर आधारित होती हैं। इन्हें प्राकृतिक संप्रत्ययों की तरह प्रत्यक्ष संवेदी अनुभव से पूरी तरह नहीं समझा जा सकता। इनका अर्थ अक्सर संस्कृति और व्यक्तिगत दृष्टिकोण के अनुसार बदल सकता है। अमूर्त संप्रत्ययों का निर्माण उच्च-स्तरीय चिंतन की पहचान है, जो हमें जटिल सामाजिक और नैतिक विषयों पर विचार करने की क्षमता देता है।

266. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
परा-स्मृति कौशल शैक्षणिक सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे छात्र को यह पहचानने में सक्षम बनाते हैं कि उसे क्या आता है और उसे क्या पढ़ने की जरूरत है। कारण स्पष्ट करता है कि अच्छी परा-स्मृति वाला व्यक्ति अपनी अधिगम प्रक्रिया का एक प्रभावी प्रबंधक होता है। वह अपनी याददाश्त की सीमाओं को समझता है और उन सीमाओं को दूर करने के लिए सही स्मृति रणनीतियों का चयन करता है। अतः कथन और कारण दोनों ही प्रभावी अध्ययन में परा-स्मृति की भूमिका को सही ढंग से उजागर करते हैं।

267. (C) अभिसारी चिंतन
अभिसारी चिंतन एक ऐसी संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जो उपलब्ध तथ्यों और तार्किक नियमों का उपयोग करके किसी समस्या के एकमात्र, सर्वोत्तम और सही समाधान तक पहुँचने पर केंद्रित होती है। यह उन कार्यों के लिए अनिवार्य है जहाँ केवल एक ही

और स्थान का संदर्भ नहीं होता। यह हमें सोचने, तर्क करने और जटिल विषयों को समझने के लिए आवश्यक बौद्धिक आधार प्रदान करती है।

231. (C) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा एक स्मृति चिह्न दूसरे को बाधित करता है।
स्मृति अनुसंधान में 'अवरोध' या हस्तक्षेप एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ विस्मरण इसलिए होता है क्योंकि स्मृतियाँ एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं। जब दो सूचनाएं समान होती हैं, तो मस्तिष्क उनमें भ्रमित हो जाता है, जिससे लक्षित जानकारी तक पहुँचना कठिन हो जाता है। यह सचेत दमन या समय के साथ होने वाला ह्रास नहीं है, बल्कि सूचनाओं के बीच का आपसी टकराव है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि हमारी यादें स्थिर नहीं हैं, बल्कि वे निरंतर एक-दूसरे को प्रभावित और कभी-कभी धुंधला करती रहती हैं।

232. (D) लक्ष्य-निर्देशित है और इसमें जानकारी का हेरफेर शामिल है।
चिंतन एक सक्रिय और उद्देश्यपूर्ण संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसका मुख्य कार्य उपलब्ध सूचनाओं को व्यवस्थित करना और उनका विश्लेषण करना है। यह हमेशा किसी निष्कर्ष पर पहुँचने, निर्णय लेने या समस्या को सुलझाने की दिशा में निर्देशित होती है। इसमें हम मानसिक प्रतीकों, छवियों और संप्रत्ययों का उपयोग करते हैं ताकि हम वास्तविक दुनिया के अनुभवों को आंतरिक रूप से संसाधित कर सकें। चिंतन हमें तात्कालिक संवेदी इनपुट से परे जाने और भविष्य की संभावनाओं की कल्पना करने की शक्ति देता है।

233. (C) विश्वास दृढ़ता
विश्वास दृढ़ता एक संज्ञानात्मक प्रवृत्ति है जहाँ व्यक्ति अपने प्रारंभिक विश्वासों या धारणाओं को छोड़ने से इनकार कर देता है, भले ही उसे स्पष्ट विरोधाभासी साक्ष्य प्रदान किए जाएं। यह पूर्वाग्रह पुष्टिकरण पूर्वाग्रह से भी आगे जाता है क्योंकि इसमें व्यक्ति गलत साबित होने के बाद भी अपनी पुरानी सोच से चिपका रहता है। यह जड़ता तार्किक चिंतन को बाधित करती है और हमें नई जानकारी के आधार पर अपनी समझ को अद्यतन करने से रोकती है, जिससे हमारे निर्णय अक्सर वास्तविकता से कटे रहते हैं।

234. (D) अनुरक्षण रिहर्सल
अनुरक्षण रिहर्सल वह प्रक्रिया है जिसमें जानकारी को बार-बार दोहराया जाता है ताकि उसे अल्पकालिक स्मृति में तब तक बनाए रखा जा सके जब तक उसका उपयोग न हो जाए। यहाँ छात्र फोन नंबर को केवल याद रखने के लिए दोहरा रहा है, बिना उसे किसी अर्थ या पुराने ज्ञान से जोड़े। यद्यपि यह जानकारी को कुछ अतिरिक्त समय के लिए दिमाग में रखने में प्रभावी है, लेकिन यह उसे दीर्घकालिक स्मृति में भेजने के लिए पर्याप्त नहीं है। यह सूचना के त्वरित ह्रास को रोकने का एक प्राथमिक तरीका है।

235. (A) अपसारी और अभिसारी चिंतन।
सृजनात्मक चिंतन एक संतुलित मानसिक गतिविधि है जिसमें दो अलग-अलग प्रकार के चिंतन की भूमिका होती है। पहले चरण में अपसारी चिंतन का उपयोग कई नए, मौलिक और लीक से हटकर विचार उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। इसके बाद, अभिसारी चिंतन उन विचारों का मूल्यांकन करता है और उनमें से सबसे उपयुक्त और व्यावहारिक समाधान का चयन करता है। केवल नए विचार होना पर्याप्त नहीं है; उनका उपयोगी होना भी आवश्यक है। अतः सृजनात्मकता इन दोनों परस्पर पूरक चिंतन शैलियों के एकीकरण का परिणाम है।

236. (B) उपरोक्त सभी।
संप्रत्यय निर्माण एक जटिल संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जो आंतरिक और बाह्य दोनों कारकों से प्रभावित होती है। शिक्षार्थी की अभिप्रेरणा उसे विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करती है। संप्रत्यय की विशेषताओं की जटिलता यह तय करती है कि वर्गीकरण कितना आसान या कठिन होगा। फीडबैक की स्पष्टता यह समझने में सहायता करती है कि क्या कोई वस्तु उस श्रेणी का हिस्सा है या नहीं। ये सभी कारक मिलकर संप्रत्यय की समझ को गहरा और सटीक बनाते हैं, जिससे व्यक्ति भविष्य में सही वर्गीकरण कर पाता है।

237. (C) पुनर्प्राप्ति
पुनर्प्राप्ति स्मृति प्रणाली का वह अंतिम और महत्वपूर्ण चरण है जिसमें संचित जानकारी को सक्रिय रूप से खोजा जाता है और उसे वापस चेतना में लाया जाता है। स्मृति के अन्य चरणों—कूटलेखन और संचयन—का मूल्य तभी है जब पुनर्प्राप्ति सफल हो। यह प्रक्रिया कभी-कभी स्वचालित होती है और कभी-कभी इसमें सचेत प्रयास और संकेतों की आवश्यकता होती है। पुनर्प्राप्ति की विफलता ही विस्मरण का मुख्य कारण बनती है, भले ही जानकारी मस्तिष्क के भंडार गृह में सुरक्षित रूप से मौजूद हो।

238. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कार्यात्मक स्थिरता वास्तव में समस्या समाधान के मार्ग में एक बड़ी मनोवैज्ञानिक बाधा है, क्योंकि यह हमारे दृष्टिकोण को बहुत संकुचित कर देती है। हम वस्तुओं को केवल उनके सबसे सामान्य और पारंपरिक कार्यों के साथ जोड़कर देखते हैं, जिससे हम उनके अन्य नवीन उपयोगों के प्रति अंधे हो जाते हैं। कारण स्पष्ट करता है कि यह जड़ता कैसे नए समाधानों के जन्म को रोकती है। सृजनात्मकता के लिए इस मानसिक बंधन को तोड़ना और वस्तुओं के भौतिक गुणों को उनके नाम से अलग देखना अनिवार्य है।

239. (C) सविस्तार रिहर्सल
सविस्तार रिहर्सल स्मृति सुधार की एक शक्तिशाली तकनीक है जो 'गहन प्रसंस्करण' के सिद्धांत पर आधारित है। इसमें नई जानकारी को रटने के बजाय उसे पहले से मौजूद ज्ञान या अनुभवों के साथ जोड़कर एक सार्थक अर्थ दिया जाता है। यह प्रक्रिया मस्तिष्क में सूचना के कूटलेखन को अधिक मजबूत और स्थायी बनाती है। चूँकि जानकारी अब एक बड़े ज्ञान तंत्र का हिस्सा बन जाती है, इसलिए उसे भविष्य में पुनः

क्षमता को वस्तुतः असीमित माना जाता है, जहाँ हम जीवन भर की यादें और ज्ञान संचित कर सकते हैं। यह अंतर हमारे सूचना प्रसंस्करण के विभिन्न चरणों और मस्तिष्क की अद्भुत भंडारण शक्ति को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

277. (C) प्रोटोटाइप-आधारित संप्रत्यय निर्माण
जब हम किसी श्रेणी के सदस्यों को देखते हैं और उनके आधार पर एक विशिष्ट उदाहरण विकसित करते हैं, तो हम प्रोटोटाइप-आधारित संप्रत्यय निर्माण कर रहे होते हैं। यहाँ 'कुत्ता' का संप्रत्यय किसी एक विशिष्ट परिभाषा से नहीं, बल्कि कुत्तों की सामान्य विशेषताओं के एक मानसिक सारांश से बना है। हम नई मिलने वाली वस्तुओं की तुलना अपने इसी मानसिक प्रोटोटाइप से करते हैं ताकि उन्हें जल्दी से वर्गीकृत किया जा सके। यह संज्ञानात्मक शॉर्टकट हमें दुनिया की विविधता को सहजता से समझने में सक्षम बनाता है।

278. (D) सामान्य पूर्वाग्रहों के बारे में जागरूक होना और सक्रिय रूप से उनके विरुद्ध कार्य करना।
बेहतर निर्णय लेना एक सचेत और तर्कसंगत प्रक्रिया है। सबसे प्रभावी तरीका यह है कि हम अपने स्वयं के संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों—जैसे पुष्टिकरण पूर्वाग्रह—को पहचानें। जब हम यह समझ लेते हैं कि हमारा मस्तिष्क कैसे गलतियाँ कर सकता है, तो हम सक्रिय रूप से विरोधाभासी साक्ष्यों की तलाश कर सकते हैं और अधिक वस्तुनिष्ठ हो सकते हैं। केवल अंतर्ज्ञान पर निर्भर रहने से त्रुटियों की संभावना बढ़ती है। अपनी मानसिक सीमाओं के प्रति सतर्क रहना ही तर्कसंगत और सफल निर्णय लेने का सर्वोत्तम मार्ग है।

279. (C) अर्थगत
स्मृति के स्थापित और वैज्ञानिक रूप से वर्गीकृत प्रकारों में अर्थगत स्मृति एक प्रमुख घटक है। यह दीर्घकालिक स्मृति का वह हिस्सा है जो तथ्यों, शब्दों के अर्थ और सामान्य विश्व ज्ञान को संचित करता है। हेयूरिस्टिक और एल्गोरिथमिक समस्या समाधान की रणनीतियाँ हैं, न कि स्मृति के प्रकार। संज्ञानात्मक एक व्यापक शब्द है जिसमें स्मृति, चिंतन और प्रत्यक्षण सभी शामिल हैं। अर्थगत स्मृति हमारे 'मानसिक विश्वकोश' की तरह कार्य करती है, जो हमें संचार करने और दुनिया को समझने के लिए आवश्यक बौद्धिक आधार प्रदान करती है।

280. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
भाषा प्रतीकों और नियमों की एक जटिल प्रणाली है जिसका उपयोग हम दूसरों के साथ सूचना साझा करने के लिए करते हैं। चिंतन एक आंतरिक मानसिक प्रक्रिया है जहाँ हम इन्हीं प्रतीकों और संप्रत्ययों का उपयोग करके सूचनाओं को संसाधित करते हैं। यद्यपि भाषा और चिंतन पूरी तरह से समान नहीं हैं, लेकिन वे एक-दूसरे पर गहराई से निर्भर हैं। भाषा चिंतन को एक संरचना और स्पष्टता प्रदान करती है, जबकि चिंतन भाषा को अर्थ देता है। अतः दोनों कथन इन दो महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के गहरे संबंध को दर्शाते हैं।

281. (B) अपना नया पता अच्छी तरह से सीखने के बाद पुराने पते को याद रखने में कठिनाई।
पश्चलक्षी अवरोध विस्मरण का वह रूप है जहाँ नई सीखी गई जानकारी पुरानी यादों की पुनर्प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करती है। यहाँ व्यक्ति ने अपना नया पता सीख लिया है, और यह नया अधिगम इतना प्रभावी हो गया है कि वह पुराने पते की स्मृति को 'दबा' रहा है। यह अक्सर तब होता है जब नई और पुरानी जानकारी के बीच समानता होती है, जिससे मस्तिष्क भ्रमित हो जाता है। यह हस्तक्षेप का एक सामान्य उदाहरण है जो दर्शाता है कि नई सूचनाएं अक्सर पुरानी यादों के पुनर्प्राप्ति मार्ग को कठिन बना सकती हैं।

282. (D) अंकों के लिए स्मृति क्षमता
सृजनात्मक चिंतन एक जटिल संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जो मुख्य रूप से व्यक्तित्व के गुणों, वातावरण के प्रोत्साहन और व्यक्ति के ज्ञान पर निर्भर करती है। लचीलापन, जिज्ञासा और जोखिम लेने की इच्छा इसके मुख्य चालक हैं। 'अंकों के लिए स्मृति क्षमता' एक यांत्रिक मानसिक योग्यता है, जिसका नवीन विचारों के सृजन से कोई सीधा संबंध नहीं है। सृजनात्मकता का अर्थ तथ्यों को याद रखना नहीं, बल्कि उन्हें अनूठे तरीकों से जोड़ना है, जिसके लिए 'अपसारी चिंतन' अधिक महत्वपूर्ण है। अतः विकल्प (D) असंगत है।

283. (C) जिस तरह से समस्या प्रस्तुत की जाती है वह चुनाव को प्रभावित कर सकती है।
फ्रेमिंग प्रभाव एक संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जो यह दिखाता है कि हमारी पसंद या निर्णय अक्सर इस बात पर निर्भर करते हैं कि विकल्प कैसे प्रस्तुत किए गए हैं। उदाहरण के लिए, लोग उस उत्पाद को चुनना अधिक पसंद करते हैं जिसे '95% वसा रहित' बताया गया हो, तुलना में उसके जिसे '5% वसा युक्त' कहा गया हो, भले ही दोनों का अर्थ एक ही हो। यह पूर्वाग्रह दर्शाता है कि मनुष्य पूरी तरह तर्कसंगत नहीं है और वह शब्दों तथा उनके द्वारा उत्पन्न भावनाओं से प्रभावित हो जाता है। यह निर्णय क्षमता प्रभावित करता है।

284. (D) प्रयास और त्रुटि
जब किसी व्यक्ति को किसी विशिष्ट क्षेत्र में पूर्व ज्ञान नहीं होता, तो वह अक्सर 'प्रयास और त्रुटि' की विधि अपनाता है। इसमें कोई निश्चित रणनीति नहीं होती; व्यक्ति बस एक के बाद एक अलग समाधान तब तक आजमाता रहता है जब तक कि उसे सफलता न मिल जाए। यद्यपि यह विधि कम कुशल और अधिक समय लेने वाली है, लेकिन यह अज्ञात परिस्थितियों में शुरुआती कदम के रूप में उपयोगी होती है। यह उन जटिल समस्याओं के लिए उपयुक्त नहीं है जहाँ तार्किक और रणनीतिक चिंतन की आवश्यकता होती है। यह प्राथमिक विधि है।

285. (A) अर्थगत नेटवर्क में "पक्षी", "कनारी" के अधिक करीब संचित है।
अर्थगत स्मृति के नेटवर्क मॉडल के अनुसार, ज्ञान परस्पर जुड़ा होता है और संबंधित संप्रत्यय एक-दूसरे के पास स्थित होते हैं। कनारी एक पक्षी है, यह एक प्रत्यक्ष संबंध है, इसलिए इसे सत्यापित करने में कम समय लगता है। 'जानवर' एक अधिक

249. (A) हस्तक्षेप प्रभाव की दिशा।
अग्रलक्षी और पश्चलक्षी अवरोध के बीच का मुख्य अंतर 'हस्तक्षेप की दिशा' से संबंधित है। अग्रलक्षी अवरोध में पुरानी जानकारी आगे बढ़कर नई यादों के मार्ग में बाधा डालती है। इसके विपरीत, पश्चलक्षी अवरोध में नई सीखी गई जानकारी पीछे की ओर मुड़कर पुरानी स्मृतियों को धुंधला कर देती है। विस्मरण के हस्तक्षेप सिद्धांत को समझने के लिए इस दिशात्मक अंतर को जानना अनिवार्य है क्योंकि यह बताता है कि सूचनाओं के बीच टकराव कैसे होता है। यह स्मृति की प्रतिस्पर्धात्मक प्रकृति को स्पष्ट करता है।

250. (B) परा-स्मृति
परा-स्मृति परा-संज्ञान का एक विशिष्ट उप-क्षेत्र है जो व्यक्ति की अपनी स्मृति प्रणाली की जागरुकता से संबंधित है। इसमें यह ज्ञान शामिल होता है कि हमारी याददाश्त कैसे काम करती है, हम किन चीजों को बेहतर याद रख सकते हैं और किन परिस्थितियों में हमारी स्मृति विफल हो सकती है। यह हमें यह आकलन करने में सहायता करती है कि क्या हमने किसी जानकारी को पर्याप्त रूप से सीख लिया है या हमें उसे याद रखने के लिए और अधिक अभ्यास की आवश्यकता है। यह 'स्मृति के बारे में चिंतन' है।

251. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
हेयूरिस्टिक्स हमारे मस्तिष्क के 'मानसिक शॉर्टकट' हैं जो जटिल समस्याओं को सुलझाने और त्वरित निर्णय लेने में अत्यंत सहायक होते हैं। वे संज्ञानात्मक बोझ को कम करते हैं और निर्णय लेने की गति को बढ़ाते हैं। हालाँकि, एल्गोरिदम के विपरीत—जो हर कदम पर सटीकता की गारंटी देते हैं—हेयूरिस्टिक्स हमेशा सही उत्तर की गारंटी नहीं देते। वे केवल 'व्यावहारिक नियम' हैं जो अधिकांश समय काम करते हैं, लेकिन कभी-कभी संज्ञानात्मक त्रुटियों या पूर्वाग्रहों का कारण भी बन सकते हैं। अतः दोनों कथन सत्य हैं।

252. (D) उन उदाहरणों की संख्या और विविधता जिनसे कोई व्यक्ति अवगत होता है।
संप्रत्यय निर्माण एक अधिगम प्रक्रिया है जो अनुभवों की गहराई और विस्तार पर निर्भर करती है। जब कोई व्यक्ति किसी श्रेणी के कई और विविध उदाहरणों का सामना करता है, तो उसका मस्तिष्क उन सभी में मौजूद साझा गुणों को अधिक सटीकता से पहचान पाता है। उदाहरणों की विविधता संप्रत्यय की सीमाओं को स्पष्ट करती है और सामान्यीकरण की क्षमता को बढ़ाती है। यह प्रक्रिया सूचनाओं के विश्लेषण और श्रेणियों के निर्माण की एक सक्रिय संज्ञानात्मक क्रिया है जो निरंतर अनुभवों से परिष्कृत होती है।

253. (C) जानकारी का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीकों का मानसिक हेरफेर।
चिंतन एक उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसे 'मानसिक अभ्यावेदन' के सक्रिय हेरफेर के रूप में समझा जा सकता है। जब हम सोचते हैं, तो हम भौतिक वस्तुओं के बजाय उनके प्रतीकों, छवियों, शब्दों और संप्रत्ययों का उपयोग करते हैं। यह प्रक्रिया हमें जानकारी को पुनः व्यवस्थित करने, तुलना करने, विश्लेषण करने और तार्किक निष्कर्ष निकालने की अनुमति देती है। चिंतन ही वह माध्यम है जिसके द्वारा हम समस्याओं को सुलझाते हैं, भविष्य की कल्पना करते हैं और अपनी दुनिया को नया अर्थ प्रदान करते हैं।

254. (D) अनुरुपता का उच्च स्तर।
सृजनात्मक चिंतन के लिए स्वतंत्र सोच और लीक से हटकर सोचने की क्षमता अनिवार्य है। अनुरुपता का उच्च स्तर, जिसका अर्थ है दूसरों के विचारों और सामाजिक मानदंडों का बिना सोचे-समझे पालन करना, रचनात्मकता का विरोधी है। यह व्यक्ति को स्थापित रास्तों पर ही चलने के लिए मजबूर करता है और नई संभावनाओं के अन्वेषण को रोकता है। सृजनात्मकता के लिए जोखिम लेना, जिज्ञासा बनाए रखना और अपरंपरागत विचारों को स्वीकार करना आवश्यक है। अत्यधिक अनुरुपता मानसिक लचीलेपन को समाप्त कर देती है।

255. (A) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
पुष्टिकरण पूर्वाग्रह एक शक्तिशाली संज्ञानात्मक त्रुटि है जहाँ हमारा मस्तिष्क केवल उन्हीं सूचनाओं को महत्त्व देता है जो हमारे पूर्व-निर्धारित विश्वासों का समर्थन करती हैं। हम सक्रिय रुप से ऐसे तथ्यों की तलाश करते हैं जो हमें सही साबित करें और विरोधाभासी साक्ष्यों को अनदेखा कर देते हैं। यह पूर्वाग्रह हमारी निर्णय लेने की क्षमता को पक्षपाती बनाता है और हमें वस्तुनिष्ठ वास्तविकता देखने से रोकता है। यह न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि वैज्ञानिक अनुसंधान और सामाजिक विमर्श में भी गंभीर त्रुटियों का मुख्य कारण बनता है।

256. (B) रुबिक क्यूब को कैसे हल करें।
एक 'अच्छी तरह से परिभाषित समस्या' वह होती है जहाँ प्रारंभिक स्थिति, अंतिम लक्ष्य और उसे प्राप्त करने के लिए अनुमत नियम या चरण पूरी तरह स्पष्ट होते हैं। रुबिक क्यूब इसका एक आदर्श उदाहरण है क्योंकि इसमें एक निश्चित लक्ष्य है और इसे हल करने के लिए विशिष्ट एल्गोरिदम मौजूद हैं। इसके विपरीत, सुखी जीवन या समाज सुधार जैसे लक्ष्य अत्यंत अस्पष्ट और व्यक्तिपरक हैं, जिनका कोई एक निश्चित समाधान या मार्ग नहीं है। ऐसी समस्याओं को सुलझाने के लिए उच्च-स्तरीय सृजनात्मकता की आवश्यकता होती है।

257. (C) स्रोत स्मृति लोप
स्रोत स्मृति लोप एक स्मृति त्रुटि है जहाँ व्यक्ति को कोई तथ्य या जानकारी तो याद रहती है, लेकिन वह यह भूल जाता है कि उसने वह जानकारी कहाँ से या किससे प्राप्त की थी। यह घटना दर्शाती है कि जानकारी की सामग्री और उसके स्रोत को मस्तिष्क में अलग-अलग तरीके से कूटबद्ध किया जा सकता है। कभी-कभी लोग किसी काल्पनिक कहानी को वास्तविक घटना मान लेते हैं क्योंकि वे उसके स्रोत को भूल चुके होते हैं। यह विस्मरण स्मृति की जटिल और कभी-कभी अविश्वसनीय प्रकृति को उजागर करता है।

258. (D) अब तक सुने गए प्रत्येक व्याख्यान का विस्तृत प्रतिलेख
स्कीमा हमारे ज्ञान के वे संगठित और सामान्यीकृत ढांचे हैं जो हमें किसी स्थिति की मुख्य विशेषताओं को याद रखने में

दूर किया जा सके। अतः समस्या की प्रकृति अनिवार्य रुप से लक्ष्य की प्राप्ति में आने वाली रुकावट और उसे पार करने के लिए किए गए संज्ञानात्मक प्रयास से जुड़ी होती है।

295. (C) अल्पकालिक स्मृति
अल्पकालिक स्मृति वह भाग है जो विस्मरण के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील है। इसकी भंडारण क्षमता बहुत कम होती है और इसकी अवधि भी मात्र 20-30 सेकंड होती है। यदि जानकारी को सक्रिय रूप से दोहराया नहीं जाता है, तो वह बहुत जल्दी लुप्त हो जाती है। इसके विपरीत, दीर्घकालिक स्मृति, अर्थगत स्मृति और प्रक्रियात्मक स्मृति में जानकारी वर्षों तक संचित रह सकती है। अल्पकालिक स्मृति एक अस्थायी कार्यक्षेत्र की तरह है जहाँ नई आने वाली सूचना पुरानी सूचना को आसानी से विस्थापित कर सकती है। यह सूचना का द्वार है।

296. (D) किसी संप्रत्यय या उत्तेजना के बारे में ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है।
स्कीमा हमारे ज्ञान के वे संगठित मानसिक ढांचे हैं जो हमें संसार की जटिल सूचनाओं को समझने और वर्गीकृत करने में सहायता करते हैं। ये किसी विशिष्ट वस्तु या स्थिति के बारे में हमारे अनुभवों और अपेक्षाओं का एक संक्षिप्त रूप होते हैं। उदाहरण के लिए, 'रेस्तरां' के स्कीमा में वेटर और भोजन शामिल होते हैं। स्कीमा हमें घटनाओं का पूर्वानुमान लगाने और नई जानकारी को सार्थक रूप से संसाधित करने में सक्षम बनाते हैं। यद्यपि ये कभी-कभी पूर्वाग्रह पैदा कर सकते हैं, लेकिन ये संज्ञानात्मक दक्षता के लिए अनिवार्य हैं।

297. (A) एल्गोरिदम
एल्गोरिदम समस्या समाधान की वह विधि है जो निश्चित नियमों और चरणों के एक संरचित समूह पर आधारित होती है। गणितीय प्रश्नों को हल करने के लिए हम जिस चरण-दर-चरण प्रक्रिया का पालन करते हैं, वह इसका आदर्श उदाहरण है। एल्गोरिदम की सबसे बड़ी शक्ति यह है कि यदि नियमों का सही पालन किया जाए, तो यह हमेशा एक सही समाधान की गारंटी देती है। यद्यपि यह विधि हेयूरिस्टिक्स की तुलना में धीमी हो सकती है, लेकिन इसकी विश्वसनीयता और तर्कसंगतता इसे अकादमिक कार्यों के लिए अनिवार्य बनाती है।

298. (C) परा-संज्ञान
अपनी अध्ययन रणनीतियों के बारे में सोचना और यह मूल्यांकन करना कि कौन सी पद्धति सबसे प्रभावी होगी, परा-संज्ञान का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह केवल पढ़ना नहीं है, बल्कि यह देखना है कि आप कैसे पढ़ रहे हैं। इसमें योजना बनाना, अपनी समझ की निगरानी करना और आवश्यकतानुसार सुधार करना शामिल है। यह उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक कौशल विद्यार्थियों को उनकी अपनी विचार प्रक्रियाओं का प्रबंधक बनाता है। परा-संज्ञान के माध्यम से हम अपनी शक्तियों को पहचानकर अपने अधिगम को सफल और परिणामोन्मुखी बना सकते हैं।

299. (D) प्रतिनिधित्व और हेरफेर के लिए प्रतीकों की एक प्रणाली
चिंतन में भाषा की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एक संज्ञानात्मक उपकरण के रूप में कार्य करना है। भाषा हमें शब्दों और नियमों के रूप में प्रतीक प्रदान करती है, जो हमें अमूर्त संप्रत्ययों को मानसिक रूप से पकड़ने और उनके बीच तार्किक संबंध बनाने की अनुमति देते हैं। भाषा के बिना, उच्च-स्तरीय चिंतन—जैसे भविष्य की योजना बनाना—अत्यंत कठिन होगा। यह हमारे विचारों को संगठित करती है और उन्हें एक निश्चित ढांचा प्रदान करती है, जिससे हम न केवल दूसरों से संवाद करते हैं बल्कि आंतरिक चिंतन को भी स्पष्टता देते हैं।

300. (B) पश्चलक्षी अवरोध
अपना पुराना मोबाइल नंबर याद न कर पाने की स्थिति अक्सर पश्चलक्षी अवरोध के कारण होती है। इसमें हाल ही में सीखी गई नई जानकारी—जैसे आपका वर्तमान नंबर—पुरानी यादों के पुनर्प्राप्ति मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है। नया अधिगम इतना प्रभावशाली हो जाता है कि वह पुराने नंबर के संकेतों को धुंधला या विस्थापित कर देता है। यह हस्तक्षेप का एक बहुत ही सामान्य प्रकार है जो दर्शाता है कि हमारी स्मृति प्रणाली में सूचनाओं के बीच निरंतर प्रतिस्पर्धा बनी रहती है, जहाँ नई यादें अक्सर पुरानी यादों को दबा देती हैं।

सामान्य संप्रत्यय है, जिस तक पहुँचने के लिए मस्तिष्क को नेटवर्क में अधिक दूरी तय करनी पड़ती है। यह सक्रियण के फैलने के सिद्धांत को दर्शाता है, जहाँ निकट के संबंधों की पुनर्प्राप्ति अधिक तेज और कुशल होती है। यह सूचना प्रसंस्करण की गति स्पष्ट करता है।

286. (B) परा-संज्ञान
परा-संज्ञान का सार 'चिंतन के बारे में चिंतन' है। यह व्यक्ति की अपनी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं, जैसे ध्यान, स्मृति और अधिगम के तरीकों की सचेत जागरुकता और उनका प्रबंधन है। इसमें यह समझना शामिल है कि आपका मस्तिष्क कैसे काम करता है और सफलता बढ़ाने के लिए मानसिक रणनीतियों को कैसे समायोजित किया जाए। यह एक उच्च-स्तरीय क्षमता है जो शिक्षार्थियों को अधिक स्वायत्त और कुशल बनाती है। परा-संज्ञान के माध्यम से ही हम अपनी गलतियों को पहचानते हैं और भविष्य के लिए बेहतर योजनाएँ बनाते हैं।

287. (C) माना जाता है कि इसकी क्षमता वस्तुतः असीमित है।
दीर्घकालिक स्मृति मानव मस्तिष्क का वह विशाल भंडार गृह है जहाँ सूचनाओं को स्थायी रूप से संचित किया जा सकता है। अन्य स्मृति प्रणालियों—जैसे संवेदी या अल्पकालिक स्मृति—के विपरीत, दीर्घकालिक स्मृति की भंडारण क्षमता की कोई ज्ञात सीमा नहीं है। इसमें हम जीवन भर के अनुभवों, अनगिनत तथ्यों और विविध कौशलों को सहेज सकते हैं। यदि सूचना को सही ढंग से कूटबद्ध और सार्थक रूप से संगठित किया जाए, तो वह दशकों तक सुरक्षित रह सकती है। यह हमारी बौद्धिक निरंतरता का मुख्य आधार है।

288. (D) ह्रास सिद्धांत
ह्रास सिद्धांत विस्मरण को 'उपयोग करो या खो दो' की तर्ज पर समझाता है। इसके अनुसार, स्मृतियाँ मस्तिष्क में भौतिक चिह्नों के रूप में अंकित होती हैं। यदि इन यादों को समय-समय पर दोहराया नहीं जाता या उपयोग में नहीं लाया जाता, तो समय बीतने के साथ ये स्वाभाविक रूप से कमजोर होने लगते हैं और अंततः लुप्त हो जाते हैं। यह सिद्धांत मानता है कि स्मृति को जीवित रखने के लिए सक्रिय अभ्यास और पुनर्प्राप्ति अनिवार्य है। यह विशेष रूप से उन सूचनाओं के लिए सटीक है जो दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण नहीं रहतीं।

289. (A) पिछला अधिगम नए अधिगम में हस्तक्षेप करता है।
अग्रलक्षी अवरोध विस्मरण का वह रूप है जहाँ पहले से सीखी गई जानकारी नई जानकारी को सीखने या याद रखने में बाधा उत्पन्न करती है। यह तब होता है जब पुरानी यादें इतनी मजबूत होती हैं कि वे नए और प्रतिस्पर्धी अनुभवों को कूटबद्ध होने या पुनः प्राप्त होने से रोक देती हैं। उदाहरण के लिए, नया फोन नंबर सीखने के बाद भी पुराने नंबर का बार-बार याद आना। यह हस्तक्षेप की 'भविष्यगामी' दिशा को दर्शाता है और स्पष्ट करता है कि हमारी पुरानी आदतें नए अधिगम के मार्ग में कितनी बड़ी रुकावट हो सकती हैं।

290. (B) हस्तक्षेप
अंतराल अभ्यास, सविस्तार रिहर्सल और स्मृति-सहायक युक्तियों का उपयोग वैज्ञानिक रूप से सिद्ध तरीके हैं जो स्मृति की क्षमता और पुनर्प्राप्ति को बढ़ाते हैं। ये सूचना को गहराई से संसाधित करने और उसे स्थायी बनाने में सहायता करते हैं। इसके विपरीत, 'हस्तक्षेप' स्मृति में सुधार नहीं करता, बल्कि यह विस्मरण का एक प्रमुख कारण है। हस्तक्षेप तब होता है जब एक स्मृति दूसरी स्मृति को बाधित करती है, जिससे सूचना को याद रखना कठिन हो जाता है। अतः हस्तक्षेप स्मृति के लिए एक नकारात्मक कारक है जो सटीकता कम करता है।

291. (C) अपसारी चिंतन
पेपरक्लिप के अपरंपरागत और विविध उपयोगों के बारे में सोचना 'अपसारी चिंतन' का एक उत्कृष्ट परीक्षण है। अपसारी चिंतन सृजनात्मकता का मूल आधार है, जिसमें एक ही वस्तु से शुरू होकर कई अनूठे और मौलिक विचार उत्पन्न किए जाते हैं। यह व्यक्ति की मानसिक लचीलापन और 'लीक से हटकर' सोचने की क्षमता को मापता है। अभिसारी चिंतन के विपरीत, जो केवल एक सही समाधान ढूँढता है, अपसारी चिंतन संभावनाओं के विस्तार और नवीनता पर ध्यान केंद्रित करता है। यह नवाचार के लिए अनिवार्य मानसिक प्रक्रिया है।

292. (D) कृत्रिम संप्रत्यय है
कृत्रिम संप्रत्यय वे होते हैं जो निश्चित, सटीक और कठोर नियमों के एक समूह द्वारा परिभाषित होते हैं। गणितीय आकृतियाँ, जैसे वर्ग, इसका सबसे अच्छा उदाहरण हैं क्योंकि कोई भी आकृति तभी 'वर्ग' कहलाएगी जब वह उन सभी विशिष्ट नियमों का पालन करेगी। ये प्राकृतिक संप्रत्ययों के विपरीत हैं, जो अनुभवों से बनते हैं और जिनकी सीमाएं धुंधली होती हैं। कृत्रिम संप्रत्यय हमें तार्किक और वैज्ञानिक चिंतन के लिए एक निश्चित और स्पष्ट आधार प्रदान करते हैं। यह संज्ञानात्मक वर्गीकरण को पूर्ण सटीकता प्रदान करता है।

293. (A) अति-आत्मविश्वास
अति-आत्मविश्वास एक संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जहाँ व्यक्ति अपनी ज्ञान की गहराई और अपने निर्णयों की सटीकता को वास्तव में होने की तुलना में कहीं अधिक बढ़ा-चढ़ाकर आंकता है। हम अक्सर अपनी क्षमताओं के बारे में बहुत आश्वस्त होते हैं और गलतियों की संभावना को नजरअंदाज कर देते हैं। यह पूर्वाग्रह हमें जोखिमों के प्रति अंधा बना सकता है और हमें अपनी धारणाओं को चुनौती देने से रोकता है। यह दैनिक जीवन में गंभीर त्रुटियों का एक प्रमुख कारण है, क्योंकि यह तर्कसंगत आत्म-मूल्यांकन को बाधित करता है।

294. (B) वर्तमान स्थिति और वांछित लक्ष्य के बीच विसंगति होती है।
समस्या समाधान की स्थिति तभी उत्पन्न होती है जब हम महसूस करते हैं कि हमारी वर्तमान स्थिति वैसी नहीं है जैसी हम चाहते हैं। यह विसंगति या अंतराल ही समस्या का सार है। हमारे सामने एक निश्चित लक्ष्य होता है, लेकिन वहाँ तक पहुँचने का मार्ग तुरंत स्पष्ट नहीं होता है। यह मानसिक संघर्ष और चिंतन की प्रक्रिया को सक्रिय करता है ताकि बाधाओं को

(A) शाब्दिक बोध
(B) प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक गति
(C) सामान्य बुद्धि ('g' कारक)
(D) संख्यात्मक सुविधा

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): चार्ल्स स्पीयरमैन ने प्रस्तावित किया कि किसी भी बौद्धिक कार्य पर निष्पादन दो कारकों का परिणाम होता है।
कारण (R): उन्होंने इन कारकों की पहचान तरल बुद्धि, जो जन्मजात है, और ठोस बुद्धि के रूप में की, जो अनुभव के माध्यम से अर्जित की जाती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

11. थार्नडाइक के बुद्धि के बहु-कारक सिद्धांत का मूल विचार क्या है?
(A) बुद्धि एक सामान्य कारक और कई विशिष्ट कारकों से निर्मित होती है।
(B) बुद्धि तरल और ठोस घटकों में विभाजित है।
(C) बुद्धि में सात प्राथमिक मानसिक क्षमताएं होती हैं।
(D) बुद्धि कई पृथक और स्वतंत्र क्षमताओं का एक समुच्चय है।

12. कैटेल के सिद्धांत में, पूर्व अर्जित ज्ञान से स्वतंत्र, नवीन समस्याओं को हल करने और अमूर्त रूप से तर्क करने की क्षमता को क्या कहा जाता है?
(A) ठोस बुद्धि
(B) तरल बुद्धि
(C) सामान्य बुद्धि
(D) प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक बुद्धि

13. एक छात्र ऐतिहासिक तथ्यों को स्मरण करने और सीखे गए गणितीय सूत्रों को लागू करने में निपुण है। कैटेल के सिद्धांत के अनुसार, यह छात्र किसका उच्च स्तर प्रदर्शित कर रहा है?
(A) तरल बुद्धि
(B) प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक गति
(C) ठोस बुद्धि
(D) स्थानिक दृश्यीकरण

14. बुद्धि सिद्धांतकार को उनकी प्राथमिक अवधारणा से जोड़ने वाले सही युग्म की पहचान करें।
(A) स्पीयरमैन - प्राथमिक मानसिक क्षमताएं
(B) थर्स्टन - तरल बुद्धि
(C) कैटेल - द्वि-कारक सिद्धांत
(D) वेक्सलर - शाब्दिक और निष्पादन मापनी

15. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (सिद्धांतकार)
P. स्पीयरमैन
Q. थर्स्टन
R. कैटेल
S. बिने
सूची II: (संबद्ध अवधारणा)
1. मानसिक आयु
2. प्राथमिक मानसिक क्षमताएं
3. सामान्य कारक ('g')
4. तरल बुद्धि
(A) P-3, Q-2, R-4, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

16. कौन सा कथन बुद्धि और सृजनात्मकता के बीच संबंध का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(A) उच्च बुद्धि सृजनात्मकता के उच्च स्तर की निश्चित रूप से गारंटी देती है।
(B) सृजनात्मकता के लिए बुद्धि आवश्यक है, परंतु पर्याप्त नहीं।
(C) इन संरचनाओं के बीच कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है।
(D) उच्च सृजनात्मकता सदैव निम्न बौद्धिक प्राप्तांकों से जुड़ी होती है।

17. एक अभिक्षमता परीक्षण किसी व्यक्ति के निम्नलिखित में से किस मापन के लिए अभिकल्पित किया गया है?
(A) किसी विशिष्ट विषय में ज्ञान का वर्तमान स्तर।
(B) किसी विशेष कौशल या ज्ञान को अर्जित करने की क्षमता अथवा संभावना।
(C) सामान्य व्यक्तित्व लक्षण और व्यक्तिगत विशेषताएं।
(D) भावनात्मक बुद्धि और पारस्परिक संबंध कौशल।

18. बहु-अभिक्षमता बैटरी की एक प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) यह विभिन्न अभिक्षमता क्षेत्रों में क्षमताओं का एक विवरण प्रदान करती है।
(B) यह अत्यधिक गहनता से एक एकल, विशिष्ट अभिक्षमता क्षेत्र को मापती है।
(C) इसे केवल शाब्दिक और संख्यात्मक अभिक्षमता का मूल्यांकन करने के लिए बनाया गया है।
(D) यह क्षमता के स्थान पर पूर्व शैक्षणिक उपलब्धि के आकलन पर केंद्रित है।

19. विमान चालक बनने में किसी व्यक्ति की सफलता का पूर्वानुमान लगाने के लिए अभिकल्पित परीक्षण, जो स्थानिक अभिविन्यास और हस्त-नेत्र समन्वय जैसी क्षमताओं को मापता है, उसे किसके रूप में वर्गीकृत किया जाएगा?
(A) सामान्य बुद्धि परीक्षण
(B) व्यक्तित्व तालिका

कथन II: व्यवहारवाद, अपने शास्त्रीय रूप में, अधिगम में आंतरिक मानसिक अवस्थाओं की भूमिका की पूर्णतः उपेक्षा करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

84. 'तरल' और 'ठोस' बुद्धि के बीच का अंतर किसके द्वारा प्रस्तावित किया गया था?
(A) चार्ल्स स्पीयरमैन
(B) लुई थर्स्टन
(C) अल्फ्रेड बिने
(D) रेमंड कैटेल

85. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (गतिविधि)
P. एक नवीन तार्किक पहेली को हल करना
Q. मुख्य रासायनिक तत्वों को स्मरण करना
R. किसी समस्या के कई समाधान खोजना
S. किसी कौशल को सीखने के लिए एक रोल मॉडल को देखना
सूची II: (मनोवैज्ञानिक अवधारणा)
1. ठोस बुद्धि
2. अवलोकनात्मक अधिगम
3. तरल बुद्धि
4. अपसारी चिन्तन
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

86. एक शिक्षक जो छात्रों की आवश्यकताओं और विषयवस्तु की प्रकृति के आधार पर अपनी शिक्षण रणनीतियों को परिवर्तित करता है, वह निम्नलिखित के एक प्रमुख घटक का प्रदर्शन कर रहा है:
(A) विशुद्ध रूप से शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण
(B) शिक्षक प्रभावशीलता
(C) एक विशिष्ट अभिक्षमता
(D) ठोस बुद्धि

87. निम्नलिखित में से कौन छात्र-केंद्रित पद्धति का सर्वोत्तम उदाहरण है?
(A) शिक्षक पूर्ण कक्षा अवधि के लिए व्याख्यान देता है।
(B) छात्रों के लिए ऐतिहासिक तिथियां स्मरण करना अनिवार्य है।
(C) शिक्षक सटीक प्रतिकृति हेतु एक प्रदर्शन प्रदान करता है।
(D) छात्र अपनी पसंद के विषय पर शोध करने के लिए समूहों में कार्य करते हैं।

88. शैक्षिक वातावरण में लोग कैसे सीखते हैं, शिक्षण हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता और शिक्षण के मनोविज्ञान का अध्ययन निम्नलिखित के अंतर्गत आता है:
(A) शिक्षा मनोविज्ञान
(B) नैदानिक मनोविज्ञान
(C) सामाजिक मनोविज्ञान
(D) विकासात्मक मनोविज्ञान

89. एक "बहु-अभिक्षमता बैटरी" एक "विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण" से इस अर्थ में भिन्न है कि यह:
(A) क्षमता के स्थान पर उपलब्धि को मापती है।
(B) शैक्षिक मार्गदर्शन के लिए कम विश्वसनीय है।
(C) विभिन्न अभिक्षमताओं का एक विवरण प्रदान करती है।
(D) केवल व्यक्तियों को ही प्रदान की जा सकती है।

90. बुद्धि का 'बहु-कारक सिद्धांत' सर्वाधिक निकटता से किससे संबंधित है?
(A) थार्नडाइक
(B) स्पीयरमैन
(C) बिने
(D) वेक्स्लर

91. निम्नलिखित में से कौन सा परिदृश्य 'शिक्षक प्रभावशीलता' की अवधारणा को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है?
(A) एक शिक्षक जो उच्च अंक सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत सरल परीक्षण देता है।
(B) एक शिक्षक जो अपनी उदार कक्षा नीतियों के कारण लोकप्रिय है।
(C) एक शिक्षक जिसने कक्षा की साज-सज्जा के लिए पुरस्कार जीता है।
(D) एक शिक्षक जिसके छात्र कौशल में मापने योग्य विकास प्रदर्शित करते हैं।

92. यह विचार कि बुद्धि एक एकल इकाई नहीं अपितु कई स्वतंत्र क्षमताओं का समुच्चय है, जिनमें से प्रत्येक एक विशिष्ट तंत्रिका संबंध से उत्पन्न होती है, निम्नलिखित के केंद्र में है:
(A) स्पीयरमैन का द्वि-कारक सिद्धांत
(B) थार्नडाइक का बहु-कारक सिद्धांत
(C) कैटेल का तरल और ठोस बुद्धि का सिद्धांत
(D) थर्स्टन का समूह कारक सिद्धांत

93. किसी प्रश्न के उत्तर की कई भिन्न श्रेणियों के बारे में सोचने की छात्र की क्षमता सृजनात्मकता के किस पक्ष को प्रदर्शित करती है?
(A) प्रवाह
(B) मौलिकता
(C) लचीलापन
(D) विस्तारण

94. निम्नलिखित में से कौन विशुद्ध रूप से शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण की एक सीमा है?

(D) गृहकार्य और कक्षा परियोजनाओं को पूर्ण करना।

30. 'शिक्षक प्रभावशीलता' की अवधारणा को किसके द्वारा सर्वोत्तम रूप से मापा जा सकता है?
(A) शिक्षक के अनुभव के वर्ष और उसकी योग्यताएं।
(B) छात्रों के बीच शिक्षक की लोकप्रियता।
(C) एक सत्र में शिक्षक द्वारा पूर्ण की गई विषयवस्तु की मात्रा।
(D) छात्र अधिगम और विकास पर पड़ने वाला मापने योग्य प्रभाव।

31. निम्नलिखित में से किस सिद्धांत को व्यवहारवादी सिद्धांत नहीं माना जाता है?
(A) कैटेल का बुद्धि सिद्धांत
(B) शास्त्रीय अनुबंधन
(C) क्रियाप्रसूत अनुबंधन
(D) सामाजिक अधिगम सिद्धांत

32. बेंडुरा द्वारा प्रतिपादित सामाजिक अधिगम सिद्धांत किसके महत्व पर बल देता है?
(A) अचेतन प्रवृत्तियां और द्वंद्व।
(B) अवलोकन, अनुकरण और प्रतिरुपण।
(C) जन्मजात जैविक प्रवृत्तियां।
(D) सामाजिक संदर्भ के बिना प्रयास और त्रुटि अधिगम।

33. एक बच्चा अपने माता-पिता को दूसरों के साथ शिष्टतापूर्वक व्यवहार करते देख विनम्र होना सीखता है। यह सामाजिक अधिगम सिद्धांत की किस अवधारणा का उदाहरण है?
(A) सुदृढ़ीकरण
(B) अवलोकनात्मक अधिगम
(C) दंड
(D) शास्त्रीय अनुबंधन

34. एक प्रमुख विशेषता जो सामाजिक अधिगम सिद्धांत को पूर्ववर्ती व्यवहारवादी सिद्धांतों से अलग करती है, वह निम्नलिखित का समावेश है:
(A) अवधान और स्मृति जैसी संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं।
(B) सुदृढ़ीकरण की अवधारणा।
(C) पर्यावरणीय उद्दीपकों की भूमिका।
(D) यह विचार कि व्यवहार सीखा जाता है।

35. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (पद्धति का प्रकार)
P. शिक्षक-केंद्रित
Q. छात्र-केंद्रित
R. शिक्षक-केंद्रित
S. छात्र-केंद्रित
सूची II: (विशिष्ट पद्धति)
1. परियोजना आधारित अधिगम
2. व्याख्यान विधि
3. अन्वेषण आधारित अधिगम
4. प्रत्यक्ष निर्देश
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

36. निम्नलिखित में से कौन शिक्षक-केंद्रित पद्धति की प्राथमिक विशेषता है?
(A) छात्र समस्याओं को हल करने के लिए सहयोगात्मक रुप से कार्य करते हैं।
(B) शिक्षक अधिगम के सुगमकर्ता के रूप में कार्य करता है।
(C) अधिगम की गतिविधियां छात्र की जिज्ञासा पर आधारित होती हैं।
(D) ज्ञान सीधे विशेषज्ञ से नौसिखिए को प्रेषित किया जाता है।

37. उस पद्धति की पहचान करें जिसे छात्र-केंद्रित नहीं माना जाता है।
(A) अन्वेषण आधारित अधिगम
(B) खोज अधिगम
(C) व्याख्यान विधि
(D) सहयोगात्मक अधिगम

38. छात्र-केंद्रित कक्षा में शिक्षक की प्राथमिक भूमिका क्या होती है?
(A) अनुशासक और विषयवस्तु विशेषज्ञ।
(B) सुगमकर्ता और सह-शिक्षार्थी।
(C) सूचना प्रदाता और मूल्यांकनकर्ता।
(D) सभी गतिविधियों का निदेशक और नियंत्रक।

39. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: शिक्षक-केंद्रित विधियों की प्रायः निष्क्रिय अधिगम और रटकर सीखने को बढ़ावा देने के लिए आलोचना की जाती है।
कथन II: छात्र-केंद्रित विधियां शिक्षार्थियों को स्वयं के अधिगम की उत्तरदायित्व लेने और आलोचनात्मक चिन्तन कौशल विकसित करने हेतु सशक्त बनाती हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

40. एक शिक्षक आलोचनात्मक चिन्तन और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा देना चाहता है। कौन सा शिक्षण दृष्टिकोण सर्वाधिक उपयुक्त होगा?
(A) समस्या-आधारित अधिगम जैसा छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण।
(B) प्रत्यक्ष निर्देश पर केंद्रित शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण।
(C) पूर्णतः पाठ्यपुस्तक पठन और स्मरण पर निर्भर पद्धति।
(D) एक ऐसा दृष्टिकोण जो व्यवस्था बनाए रखने हेतु संवाद

को न्यूनतम करता है।

41. 'मानसिक आयु' की अवधारणा किस परीक्षण में बुद्धि लब्धि की प्रारंभिक गणना का एक महत्वपूर्ण घटक थी?
(A) वेक्स्लर वयस्क बुद्धि मापनी
(B) रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस
(C) स्टैनफोर्ड-बिने परीक्षण
(D) कैटेल का संस्कृति मुक्त परीक्षण

42. थर्स्टन की प्राथमिक मानसिक क्षमताओं के संबंध में गलत युग्म की पहचान करें।
(A) साहचर्य स्मृति - नवीन, अमूर्त समस्याओं को हल करने की क्षमता।
(B) शाब्दिक बोध - शब्दों में व्यक्त विचारों को समझने की क्षमता।
(C) स्थानिक दृश्यीकरण - स्थान में वस्तुओं की कल्पना करने और उनमें हेरफेर करने की क्षमता।
(D) आगमनात्मक तर्क - विशिष्ट उदाहरणों से एक सामान्य नियम खोजने की क्षमता।

43. शिक्षा मनोविज्ञान में कार्य-कारण संबंध को इस प्रकार देखा जा सकता है: शिक्षक द्वारा धनात्मक सुदृढ़ीकरण के उपयोग में वृद्धि से छात्रों के वांछित व्यवहार में वृद्धि होने की संभावना है। कौन सा सिद्धांत इसका सर्वोत्तम समर्थन करता है?
(A) स्पीयरमैन का द्वि-कारक सिद्धांत
(B) कैटेल का बुद्धि सिद्धांत
(C) बहु-कारक सिद्धांत
(D) व्यवहारवादी अधिगम सिद्धांत

44. वेक्स्लर बुद्धि मापनी पर निष्पादन उप-परीक्षण का उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) शब्दावली
(B) ब्लॉक डिज़ाइन
(C) समानताएं
(D) सूचना

45. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस को प्रायः तरल बुद्धि का एक उत्तम मापक माना जाता है।
कारण (R): परीक्षण के लिए व्यक्तियों को दृश्य प्रतिरूपों में प्रस्तुत नवीन समस्याओं को हल करने हेतु तार्किक चिन्तन का उपयोग करने की आवश्यकता होती है, जो अर्जित ज्ञान पर निर्भरता को कम करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

46. "शिक्षा मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र" शब्द का अर्थ क्या है?
(A) इस क्षेत्र का ऐतिहासिक विकास।
(B) इसके द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट अनुसंधान विधियां।
(C) इससे संबद्ध पेशेवर संगठन।
(D) उन विषयों और मुद्दों की श्रेणी जिन्हें यह संबोधित करता है।

47. चिन्तन के एक प्रकार से दूसरे प्रकार में परिवर्तन की क्षमता, जो सृजनात्मकता का एक प्रमुख घटक है, उसे क्या कहा जाता है?
(A) लचीलापन
(B) प्रवाह
(C) विस्तारण
(D) मौलिकता

48. एक शिक्षक प्रत्यक्ष निर्देश मॉडल का उपयोग करने का निर्णय लेता है। निम्नलिखित में से कौन सी क्रिया इस शिक्षक-केंद्रित पद्धति के साथ सर्वाधिक संगत होगी?
(A) छात्रों को समूहों में अन्वेषण करने के लिए एक मुक्त समस्या देना।
(B) उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से बताना और चरण-दर-चरण प्रदर्शन प्रदान करना।
(C) छात्रों को परिकल्पना परीक्षण हेतु अपने स्वयं के प्रयोग अभिकल्पित करने के लिए कहना।
(D) सुकराती संगोष्ठी का संचालन करना जहाँ छात्र चर्चा का नेतृत्व करते हैं।

49. सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार, अवलोकनात्मक अधिगम घटित होने के लिए निम्नलिखित में से कौन सी एक अनिवार्य शर्त है?
(A) शिक्षार्थी को प्रत्यक्ष शारीरिक सुदृढ़ीकरण प्राप्त होना चाहिए।
(B) शिक्षार्थी देखे गए व्यवहार को स्मृति में रखने में सक्षम होना चाहिए।
(C) देखा गया व्यवहार जटिल और कठिन होना चाहिए।
(D) प्रतिरूप का लिंग शिक्षार्थी के समान होना चाहिए।

50. निम्नलिखित बुद्धि सिद्धांतों को उनके प्रारंभिक प्रस्ताव के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. थर्स्टन का समूह कारक सिद्धांत
2. स्पीयरमैन का द्वि-कारक सिद्धांत
3. कैटेल का तरल और ठोस बुद्धि सिद्धांत
4. बिने की मानसिक आयु की अवधारणा

निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम दर्शाता है?
(A) 4, 2, 1, 3
(B) 2, 4, 3, 1
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 4, 1, 2, 3

51. कौन सा कथन अभिक्षमता परीक्षणों को उपलब्धि परीक्षणों से सटीक रूप से पृथक करता है?
(A) अभिक्षमता परीक्षण पूर्व अधिगम को मापते हैं जबकि

उपलब्धि परीक्षण भविष्य की क्षमता का पूर्वानुमान लगाते हैं।
(B) अभिक्षमता परीक्षण सदैव समूह-प्रशासित होते हैं जबकि उपलब्धि परीक्षण व्यक्तिगत होते हैं।
(C) अभिक्षमता परीक्षण भविष्योन्मुखी होते हैं जबकि उपलब्धि परीक्षण अतीत-उन्मुख होते हैं।
(D) अभिक्षमता परीक्षण व्यक्तित्व को मापते हैं जबकि उपलब्धि परीक्षण बुद्धि को मापते हैं।

52. समस्या-आधारित अधिगम परिवेश में, जो कि एक छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण है, अधिगम प्रक्रिया सामान्यतः किसके द्वारा प्रारंभ की जाती है?
(A) शिक्षक का एक व्याख्यान।
(B) स्मरण किए जाने वाले तथ्यों का एक समूह।
(C) अंतिम परीक्षा कार्यक्रम।
(D) एक चुनौतीपूर्ण, असंरचित समस्या।

53. कैटेल के अनुसार, किस प्रकार की बुद्धि की आयु के साथ कम होने की अधिक संभावना है?
(A) ठोस बुद्धि
(B) शाब्दिक बुद्धि
(C) तरल बुद्धि
(D) सामाजिक बुद्धि

54. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: स्पीयरमैन के 'g' कारक का तात्पर्य है कि एक व्यक्ति जो एक बौद्धिक कार्य में कुशल है, उसके दूसरे कार्यों में भी कुशल होने की संभावना है।
कथन II: थार्नडाइक का बहु-कारक सिद्धांत 'g' कारक के विरुद्ध तर्क देता है, यह प्रस्तावित करते हुए कि बुद्धि अत्यधिक विशिष्ट और स्वतंत्र होती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

55. सृजनात्मकता के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह केवल कलात्मक और संगीत के क्षेत्रों तक सीमित है।
2. इसमें ऐसे विचार उत्पन्न करने की क्षमता शामिल है जो नवीन और उपयोगी दोनों हों।
3. अभिसारी चिन्तन सृजनात्मकता के पीछे की प्राथमिक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 3
(D) केवल 2 और 3

56. एक अप्रभावी शिक्षक की विशेषता निम्नलिखित में से किसे छोड़कर शेष सभी हैं?
(A) छात्र की प्रगति की निगरानी के लिए विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों का उपयोग।
(B) असंगत कक्षा प्रबंधन।
(C) निर्देश में स्पष्टता का अभाव।
(D) छात्रों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण।

57. थार्नडाइक ने अपने बहु-कारक सिद्धांत में तीन प्रकार की बुद्धि का प्रस्ताव दिया था। निम्नलिखित में से कौन सा उनमें से एक नहीं है?
(A) सामाजिक बुद्धि
(B) मूर्त बुद्धि
(C) तरल बुद्धि
(D) अमूर्त बुद्धि

58. व्याख्यान विधि की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सीमा क्या है?
(A) यह छात्रों में निष्क्रियता को बढ़ावा देती है।
(B) शिक्षकों के लिए तैयारी करना कठिन होता है।
(C) यह विषयवस्तु को शीघ्रता से पूर्ण नहीं कर सकती।
(D) यह केवल छोटे समूहों के लिए उपयुक्त है।

59. बुद्धि और सृजनात्मकता के संबंध में "थ्रेसहोल्ड परिकल्पना" यह सुझाव देती है कि:
(A) असाधारण रुप से उच्च बुद्धि लब्धि के बिना सृजनात्मकता असंभव है।
(B) बुद्धि और सृजनात्मकता ऋणात्मक रुप से सह-संबंधित हैं।
(C) केवल कम बुद्धि वाले लोग ही अत्यधिक सृजनात्मक हो सकते हैं।
(D) एक निश्चित बुद्धि लब्धि स्तर तक दोनों सह-संबंधित हैं, परंतु उससे ऊपर नहीं।

60. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. 'g' कारक
Q. प्राथमिक मानसिक क्षमताएं
R. शाब्दिक बुद्धि लब्धि और निष्पादन बुद्धि लब्धि
S. मानसिक आयु

सूची II: (संबद्ध परीक्षण/सिद्धांत)
1. थर्स्टन का समूह कारक सिद्धांत
2. वेक्स्लर मापनी
3. बिने परीक्षण
4. स्पीयरमैन का द्वि-कारक सिद्धांत

(A) P-1, Q-4, R-3, S-2
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

(C) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
(D) बहु-अभिक्षमता बैटरी

20. निम्नलिखित में से किसे सृजनात्मकता का एक मूल पक्ष माना जाता है?
(A) अभिसारी चिन्तन
(B) रटकर याद करना
(C) स्थापित नियमों का अनुपालन
(D) अपसारी चिन्तन

21. एक शिक्षक छात्रों से ईंट के यथासंभव अधिकतम असामान्य उपयोगों की सूची बनाने के लिए कहता है। यह कार्य मुख्य रूप से सृजनात्मकता के किस पक्ष का आकलन करने के लिए है?
(A) विस्तारण
(B) मौलिकता
(C) प्रवाह
(D) लचीलापन

22. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: सृजनात्मकता वह कार्य करने की क्षमता है जो नवीन और उपयुक्त दोनों हो।
कथन II: वेक्स्लर मापनी जैसे बुद्धि परीक्षण, किसी व्यक्ति की सृजनात्मक क्षमता को मापने के लिए सर्वाधिक प्रभावी उपकरण हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

23. शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति का सर्वोत्तम वर्णन इस प्रकार है:
(A) विशुद्ध रूप से सैद्धांतिक और दार्शनिक।
(B) शिक्षा में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का अनुप्रयोग करने वाला एक अनुप्रयुक्त विज्ञान।
(C) समाजशास्त्र की एक शाखा जो पूर्णतः विद्यालय प्रणालियों पर केंद्रित है।
(D) एक ऐसा क्षेत्र जो केवल छात्रों के असामान्य व्यवहार से संबंधित है।

24. निम्नलिखित में से कौन शिक्षा मनोविज्ञान के विशिष्ट कार्यक्षेत्र से बाहर है?
(A) अधिगम अक्षमताओं के लिए औषधीय उपचार निर्धारित करना।
(B) शिक्षार्थियों के संज्ञानात्मक विकास को समझना।
(C) प्रभावी शिक्षण रणनीतियों को तैयार करना।
(D) अधिगम पर सामाजिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना।

25. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थी और अधिगम की प्रक्रिया को समझने के लिए एक रुपरेखा प्रदान करता है।
कारण (R): शिक्षा मनोविज्ञान का प्राथमिक लक्ष्य कक्षा में शिक्षण और अधिगम की प्रभावशीलता में सुधार करना है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

26. निम्नलिखित में से कौन शिक्षा में मनोविज्ञान के प्रत्यक्ष योगदान को दर्शाता है?
(A) अभिप्रेरणा और अधिगम के सिद्धांतों का प्रतिपादन।
(B) विद्यालय भवन के स्थापत्य मानकों का विकास।
(C) राष्ट्रीय शिक्षा वित्त पोषण नीतियों की स्थापना।
(D) विद्यालय परिवहन और प्रचालन प्रणालियों का नियोजन।

27. एक शिक्षक जो शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धांतों को समझता है, उसके द्वारा निम्नलिखित में से क्या करने की सर्वाधिक संभावना है?
(A) सभी छात्रों और विषयों के लिए एक ही शिक्षण पद्धति का उपयोग करना।
(B) छात्र मूल्यांकन के बिना विशेष रूप से विषयवस्तु के वितरण पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) यह विश्वास करना कि बुद्धि स्थिर है और इसे विकसित नहीं किया जा सकता।
(D) यह पहचानना कि छात्रों का अधिगम उनके विकास से प्रभावित होता है।

28. शिक्षा में मनोविज्ञान के योगदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह छात्र की क्षमताओं के आधार पर शिक्षण उद्देश्यों को तैयार करने में सहायता करता है।
2. यह छात्र के निष्पादन का आकलन करने के लिए वैज्ञानिक विधियां प्रदान करता है।
3. यह कक्षा प्रबंधन और छात्र अभिप्रेरणा में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

29. निम्नलिखित में से कौन "कक्षा में अधिगम की प्रक्रिया" का सर्वाधिक सटीक वर्णन है?
(A) शिक्षक से छात्रों तक तथ्यों का एकपक्षीय संप्रेषण।
(B) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा छात्र निष्क्रिय रूप से जानकारी ग्रहण करते हैं।
(C) ज्ञान के निर्माण के लिए सक्रिय सहभागिता वाली एक संवादात्मक प्रक्रिया।

(D) छात्र उपलब्धि और परिणामों से असंबद्ध है।

73. वेक्स्लर मापनी पूर्ववर्ती बुद्धि परीक्षणों की तुलना में श्रेष्ठ थी क्योंकि उसने:
(A) बुद्धि लब्धि की अवधारणा को पूर्णतः त्याग दिया था।
(B) वे प्रथम समूह-प्रशासित बुद्धि परीक्षण थे।
(C) संज्ञानात्मक शक्तियों का विस्तृत विवरण प्रदान किया।
(D) उन्हें विशेष रूप से छोटे बच्चों के लिए अभिकल्पित किया गया था।

74. छात्र-केंद्रित अधिगम का एक मूल सिद्धांत यह है कि:
(A) अधिगम छात्रों के जीवन के लिए प्रासंगिक और उनसे जुड़ा होना चाहिए।
(B) शिक्षक सभी विषयों पर एकमात्र प्राधिकार रखता है।
(C) सभी छात्रों को एक ही गति से प्रगति करनी चाहिए।
(D) रटकर याद करना सर्वाधिक प्रभावी रणनीति है।

75. कौन सा सिद्धांतकार विभिन्न प्रकार के मानसिक परीक्षणों पर निष्पादन के बीच सह-संबंधों के माध्यम से एक अंतर्निहित कारक खोजने में सर्वाधिक रुचि रखेगा?
(A) बिने
(B) थार्नडाइक
(C) बेंडुरा
(D) स्पीयरमैन

76. बुद्धि के मापन के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(A) रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस भाषाई क्षमता पर अत्यधिक निर्भर करता है।
(B) वेक्स्लर मापनी के विभिन्न आयु समूहों के लिए पृथक संस्करण हैं।
(C) बिने परीक्षण निष्पादन बुद्धि लब्धि प्रारंभ करने वाला प्रथम परीक्षण था।
(D) सभी बुद्धि परीक्षण पूर्णतः सांस्कृतिक पूर्वाग्रह से मुक्त हैं।

77. विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण का एक उदाहरण होगा:
(A) वेक्स्लर वयस्क बुद्धि मापनी
(B) स्टैनफोर्ड-बिने बुद्धि लब्धि परीक्षण
(C) यांत्रिक तर्क परीक्षण
(D) रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण

78. शिक्षक-केंद्रित और छात्र-केंद्रित विधियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. शिक्षक-केंद्रित विधियां शिक्षक को सूचना के सक्रिय "दाता" के रूप में रखती हैं।
2. छात्र-केंद्रित विधियां छात्रों द्वारा ज्ञान के निष्क्रिय ग्रहण को प्रोत्साहित करती हैं।
3. छात्र-केंद्रित दृष्टिकोणों में, शिक्षक की भूमिका एक सुगमकर्ता की हो जाती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

79. किसी आधारभूत विचार में विवरण जोड़कर उसे अधिक जटिल और पूर्ण बनाने की क्षमता सृजनात्मकता का 'विस्तारण' पक्ष है। निम्नलिखित में से कौन सा कार्य इसका सर्वोत्तम आकलन करता है?
(A) "एक एकल वृत्त दिया गया है, कोई वस्तु बनाएं और उसमें विवरण जोड़ें।"
(B) "एक पेपरक्लिप के यथासंभव अधिकतम उपयोगों की सूची बनाएं।"
(C) "पेंसिल और पेन एक समान कैसे हैं?"
(D) "अनुक्रम में अगली संख्या ज्ञात करें: 2, 4, 6, 8, ___।"

80. स्पीयरमैन के सिद्धांत और थर्स्टन के बुद्धि के सिद्धांत के बीच मौलिक अंतर क्या है?
(A) स्पीयरमैन ने बहु-कारकों पर बल दिया जबकि थर्स्टन ने एक पर बल दिया।
(B) स्पीयरमैन ने 'g' कारक पर बल दिया जबकि थर्स्टन ने समूह कारकों पर बल दिया।
(C) स्पीयरमैन का सिद्धांत व्यवहारवादी है जबकि थर्स्टन का संज्ञानात्मक है।
(D) स्पीयरमैन ने बच्चों पर ध्यान केंद्रित किया जबकि थर्स्टन ने वयस्कों पर।

81. सामाजिक अधिगम सिद्धांत निम्नलिखित में से किसे छोड़कर शेष सभी कक्षा परिघटनाओं को समझाने में सहायता करता है?
(A) छात्र किस प्रकार सहपाठी के विघटनकारी व्यवहार का अनुकरण कर सकते हैं।
(B) व्यक्तिगत गणितीय क्षमता के लिए जन्मजात, जैविक आधार।
(C) शिक्षक का उत्साह छात्र की रुचि को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है।
(D) छात्र साथियों को देखकर कक्षा की दिनचर्या कैसे सीखते हैं।

82. रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस की एक प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) इसे अशाब्दिक, अमूर्त आकृतियों का उपयोग करके संस्कृति-मुक्त होने के लिए अभिकल्पित किया गया है।
(B) यह शाब्दिक और निष्पादन उप-परीक्षणों दोनों से निर्मित है।
(C) इसे ठोस बुद्धि का एक सशक्त मापक माना जाता है।
(D) इसका प्राथमिक परिणाम 'मानसिक आयु' प्राप्तांक है।

83. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार, व्यवहार पर्यावरण से अवलोकनात्मक अधिगम की प्रक्रिया के माध्यम से सीखा जाता है।

अपने स्वयं के ज्ञान का निर्माण करने की आवश्यकता होती है, जिससे संज्ञानात्मक सहभागिता बढ़ती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

105. एक विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण बहु-अभिक्षमता बैटरी की तुलना में अधिक केंद्रित होता है क्योंकि यह:
(A) असंबद्ध कौशलों की एक विस्तृत श्रृंखला को मापता है।
(B) केवल 10 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए प्रयुक्त होता है।
(C) एकल क्षेत्र में क्षमता का पूर्वानुमान लगाने हेतु अभिकल्पित है।
(D) एक सामान्य बुद्धि लब्धि प्रदान करता है।

106. शिक्षा मनोविज्ञान के संदर्भ में, 'कक्षा में अधिगम की प्रक्रिया' से तात्पर्य है:
(A) वे गतिशील अंतःक्रियाएं जिनके माध्यम से छात्र सीखते हैं।
(B) विद्यालय का भौतिक स्वरुप और आधारभूत ढांचा।
(C) छात्र विवरण रखने की प्रशासनिक प्रक्रियाएं।
(D) शैक्षणिक वर्ष के लिए अवकाशों का कार्यक्रम।

107. बुद्धि परीक्षणों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. बिने परीक्षण बुद्धि लब्धि की अवधारणा का उपयोग करने वाला प्रथम परीक्षण था।
2. वेक्स्लर मापनी एक विचलन बुद्धि लब्धि प्रदान करती है, जो एक व्यक्ति के प्राप्तांक की तुलना एक मानकीकृत सामान्य समूह से करती है।
3. रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस निष्पादन-आधारित, अशाब्दिक परीक्षण का एक उदाहरण है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

108. निम्नलिखित में से कौन सा सृजनात्मकता का पक्ष नहीं है?
(A) अनुरुपता
(B) मौलिकता
(C) प्रवाह
(D) लचीलापन

109. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: शिक्षक प्रभावशीलता पूर्णतः शिक्षक की विषय विशेषज्ञता द्वारा निर्धारित होती है।
कथन II: प्रभावी शिक्षकों के पास कक्षा प्रबंधन और छात्रों को प्रेरित करने की क्षमता सहित सशक्त शैक्षणिक कौशल भी होते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

110. सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार, जब कोई छात्र किसी सहपाठी को एक उत्तम प्रश्न पूछने के लिए प्रशंसा पाते हुए देखता है, तो उस छात्र द्वारा भी प्रश्न पूछने की संभावना बढ़ जाती है। इस परिघटना को क्या कहा जाता है?
(A) प्रत्यक्ष सुदृढ़ीकरण
(B) प्रतिनिधिक सुदृढ़ीकरण
(C) आत्म-सुदृढ़ीकरण
(D) नकारात्मक दंड

111. व्याख्यान विधि, जो एक पारंपरिक शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण है, किसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?
(A) एक नया विषय प्रारंभ करने और आधारभूत जानकारी प्रदान करने के लिए।
(B) छात्रों के समस्या-समाधान कौशल विकसित करने के लिए।
(C) सृजनात्मकता और अपसारी चिन्तन को बढ़ावा देने के लिए।
(D) छात्रों के बीच सहयोगात्मक और सामाजिक कौशल को बढ़ावा देने के लिए।

112. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (मनोवैज्ञानिक)
P. थर्स्टन
Q. कैटेल
R. स्पीयरमैन
S. थार्नडाइक

सूची II: (सिद्धांत का प्रकार)
1. द्वि-कारक सिद्धांत
2. बहु-कारक सिद्धांत
3. समूह कारक सिद्धांत
4. तरल और ठोस बुद्धि का सिद्धांत

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

113. तरल बुद्धि और ठोस बुद्धि के बीच एक प्रमुख अंतर यह है कि:
(A) तरल बुद्धि ज्ञान पर आधारित है, जबकि ठोस बुद्धि समस्या-समाधान है।
(B) तरल बुद्धि शब्दावली द्वारा मापी जाती है, जबकि ठोस बुद्धि तर्क है।
(C) ठोस बुद्धि जन्मजात है, जबकि तरल बुद्धि शिक्षा के माध्यम से अर्जित की जाती है।

(A) यह तथ्यात्मक जानकारी प्रेषित करने के लिए अप्रभावी है।
(B) इसके लिए समूह गतिविधियों हेतु व्यापक नियोजन की आवश्यकता होती है।
(C) बड़े कक्षा परिवेश में इसका प्रबंधन कठिन है।
(D) यह छात्रों की आलोचनात्मक सोच विकसित करने में असफल हो सकता है।

95. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: वेक्स्लर मापनी शाब्दिक और निष्पादन क्षमताओं के लिए पृथक प्राप्तांक प्रदान करने के लिए अभिनव थी।
कथन II: शाब्दिक और निष्पादन क्षमताओं के बीच का अंतर उन विशिष्ट अधिगम कठिनाइयों की पहचान करने में उपयोगी है जहाँ दो प्राप्तांकों के बीच बड़ा अंतर होता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

96. सामाजिक अधिगम सिद्धांत के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(A) यह सीखने में संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की भूमिका को स्वीकार करता है।
(B) यह मानता है कि व्यवहार पूर्णतः आनुवंशिकी द्वारा निर्धारित होता है।
(C) यह इस बात पर बल देता है कि अधिगम सुदृढ़ीकरण के बिना भी हो सकता है।
(D) इसमें प्रतिरुपण और प्रतिनिधिक सुदृढ़ीकरण जैसी अवधारणाएं सम्मिलित हैं।

97. एक वास्तुकार जो द्वि-आयामी योजनाओं से त्रि-आयामी संरचनाओं की कल्पना करने में कुशल है, थर्स्टन की किस प्राथमिक मानसिक क्षमता पर उच्च अंक प्राप्त करेगा?
(A) शाब्दिक बोध
(B) स्थानिक दृश्यीकरण
(C) संख्यात्मक सुविधा
(D) साहचर्य स्मृति

98. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र को अभिक्षमता परीक्षण देने का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) कतिपय क्षेत्रों में उनकी सफलता की क्षमता का पूर्वानुमान लगाने में सहायता करना।
(B) विद्यालयी पाठ्यक्रम पर उनकी प्रवीणता का मूल्यांकन करना।
(C) उनकी वर्तमान भावनात्मक स्थिति और कल्याण को मापना।
(D) समग्र बुद्धि के बारे में एक निश्चित विवरण प्रदान करना।

99. निम्नलिखित में से कौन सी कक्षा गतिविधि छात्र-केंद्रित कक्षा में पाए जाने की न्यूनतम संभावना है?
(A) छात्र किसी ऐतिहासिक विषय पर वाद-विवाद कर रहे हैं।
(B) छात्र अपने लेखन की सहकर्मी समीक्षा में संलग्न हैं।
(C) छात्र एक लंबे व्याख्यान के दौरान चुपचाप टिप्पणी लिख रहे हैं।
(D) छात्र एक प्रयोग का नियोजन और संचालन कर रहे हैं।

100. बेंडुरा के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार अवलोकनात्मक अधिगम के निम्नलिखित चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें।
1. अभिप्रेरणा
2. प्रतिधारण
3. अवधान
4. पुनरुत्पादन
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम दर्शाता है?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 3, 2, 4, 1
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 4, 2, 1

101. यह अवधारणा कि बुद्धि में कई अत्यधिक विशिष्ट और स्वतंत्र कारक होते हैं, किस सिद्धांत की विशेषता थी?
(A) स्पीयरमैन का 'g' कारक सिद्धांत
(B) कैटेल का तरल और ठोस बुद्धि का सिद्धांत
(C) थार्नडाइक का बहु-कारक सिद्धांत
(D) बिने का मानसिक आयु का सिद्धांत

102. रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस के पीछे का मूल सिद्धांत क्या है?
(A) शब्दावली और सामान्य ज्ञान को मापना।
(B) संबंध निर्माण और सादृश्यता तर्क का आकलन करना।
(C) परिदृश्यों के माध्यम से भावनात्मक बुद्धि का मूल्यांकन करना।
(D) लिपिकीय कौशल जैसी विशिष्ट अभिक्षमताओं का परीक्षण करना।

103. बुद्धि और सृजनात्मकता के बीच संबंध का सर्वाधिक उपयुक्त वर्णन कौन सा है?
(A) वे समान संरचनाएं हैं जिन्हें भिन्न परीक्षणों द्वारा मापा जाता है।
(B) बुद्धि अभिसारी है, जबकि सृजनात्मकता अपसारी है।
(C) उच्च सृजनात्मकता वाले व्यक्ति के पास उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्तांक होना अनिवार्य है।
(D) दोनों अवधारणाएं पृथक हैं और एक-दूसरे को प्रभावित नहीं करती हैं।

104. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): अन्वेषण-आधारित अधिगम जैसी छात्र-केंद्रित विधियां, अवधारणाओं की गहन समझ और बेहतर प्रतिधारण की ओर ले जा सकती हैं।
कारण (R): इन विधियों के लिए छात्रों को सक्रिय रूप से

61. निम्नलिखित में से कौन सा प्रश्न छात्रों में सृजनात्मक चिन्तन को बढ़ावा देने की सर्वाधिक संभावना रखता है?
(A) "फ्रांस की राजधानी क्या है?"
(B) "'हैमलेट' नाटक के लेखक कौन थे?"
(C) "यदि मनुष्य उड़ सकता तो विश्व किस प्रकार भिन्न होता?"
(D) "प्रकाश संश्लेषण के चरण क्या हैं?"

62. डिफरेंशियल एप्टीट्यूड टेस्ट जैसी बहु-अभिक्षमता बैटरी किसके लिए सर्वाधिक उपयोगी है?
(A) विशिष्ट अधिगम अक्षमताओं का निदान करने के लिए।
(B) एकल बुद्धि लब्धि प्राप्तांक प्रदान करने के लिए।
(C) छात्र के पठन बोध स्तर को मापने के लिए।
(D) शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन के लिए।

63. बिने परीक्षण के बारे में कौन सा कथन असत्य है?
(A) यह पूर्णतः अशाब्दिक परीक्षण है।
(B) इसे मूल रूप से फ्रांस में विकसित किया गया था।
(C) इसने मानसिक आयु की अवधारणा प्रस्तुत की।
(D) इसे स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में संशोधित किया गया था।

64. शिक्षा मनोविज्ञान का प्राथमिक योगदान यह है कि यह शिक्षकों को निम्नलिखित में सहायता करता है:
(A) केवल उन प्रतिभाशाली छात्रों पर ध्यान केंद्रित करना जिन्हें पढ़ाना सुगम है।
(B) शिक्षण में सुधार के लिए अधिगम के सिद्धांतों को लागू करना।
(C) कठोर दंडात्मक उपायों के माध्यम से अनुशासन बनाए रखना।
(D) पूर्व-निर्धारित विद्यालय पाठ्यक्रम का कड़ाई से पालन करना।

65. एक छात्र ज्यामिति में कठिनाई अनुभव करता है परंतु वाद-विवाद क्लब में उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है। थर्स्टन के सिद्धांत के अनुसार, इस छात्र के पास संभवतः है:
(A) उच्च स्थानिक दृश्यीकरण और निम्न शाब्दिक बोध।
(B) निम्न स्थानिक दृश्यीकरण और उच्च शाब्दिक बोध।
(C) सभी कार्यों में समान रूप से निम्न प्राथमिक मानसिक क्षमताएं।
(D) शाब्दिक तर्क में निम्न 's' कारकों के साथ उच्च 'g' कारक।

66. छात्र-केंद्रित शिक्षण परिवेश की परिभाषित विशेषता क्या है?
(A) ज्ञान की व्यक्तिगत खोज और निर्माण पर बल।
(B) कक्षा के सभी कार्यों के लिए कठोर और समान समय सीमा।
(C) कक्षा में शिक्षक की वाणी सर्वाधिक प्रमुख होती है।
(D) मूल्यांकन केवल एक अंतिम परीक्षा तक सीमित होता है।

67. सामाजिक अधिगम सिद्धांत का मानना है कि सुदृढ़ीकरण 'प्रतिनिधिक' हो सकता है। इसका अर्थ है:
(A) व्यवहार सीखने के लिए किसी व्यक्ति को प्रत्यक्ष पुरस्कृत किया जाना चाहिए।
(B) सुदृढ़ीकरण तभी प्रभावी होता है जब वह मूर्त और शारीरिक हो।
(C) कोई व्यक्ति दूसरों को किसी व्यवहार के लिए पुरस्कृत होते देखकर सीख सकता है।
(D) दंड सुदृढ़ीकरण की तुलना में सदैव अधिक प्रभावी होता है।

68. बुद्धि का कौन सा सिद्धांत एक एकल, सार्वभौमिक 'g' कारक के विचार को सर्वाधिक सीधे चुनौती देता है?
(A) स्पीयरमैन का द्वि-कारक सिद्धांत
(B) बिने का मानसिक आयु का सिद्धांत
(C) कैटेल का तरल और ठोस बुद्धि का सिद्धांत
(D) थर्स्टन का समूह कारक सिद्धांत

69. निम्नलिखित में से कौन सा सृजनात्मकता का वह पक्ष नहीं है जिसे प्रायः अपसारी चिन्तन कार्यों में मापा जाता है?
(A) प्रवाह (विचारों की संख्या)
(B) लचीलापन (विचारों की विविधता)
(C) शुद्धता (विचारों की सहीता)
(D) मौलिकता (विचारों की विशिष्टता)

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): व्याख्यान जैसी शिक्षक-केंद्रित विधियां, एक साथ कई छात्रों तक बड़ी मात्रा में तथ्यात्मक जानकारी पहुँचाने के लिए कुशल हो सकती हैं।
कारण (R): ये विधियां छात्रों को उच्च-स्तरीय चिन्तन और सहयोगात्मक समस्या-समाधान में सक्रिय रूप से संलग्न करती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

71. किसी व्यक्ति का संचित ज्ञान, शाब्दिक कौशल और सांस्कृतिक जानकारी उसकी निम्नलिखित बुद्धि का निर्माण करती है:
(A) तरल बुद्धि
(B) सृजनात्मक क्षमता
(C) प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक गति
(D) ठोस बुद्धि

72. "शिक्षक प्रभावशीलता" एक ऐसी अवधारणा है जो:
(A) बहुआयामी है, जिसमें विभिन्न व्यावसायिक कौशल सम्मिलित हैं।
(B) जिसे परिभाषित करना और एक ही पैमाने से मापना सरल है।
(C) पूर्णतः शिक्षक के व्यक्तित्व पर निर्भर है।

(D) ठोस बुद्धि जीवन के साथ बढ़ती है, जबकि तरल बुद्धि वयस्कता में अपने चरम पर होती है।

114. निम्नलिखित में से कौन शिक्षा में मनोविज्ञान का योगदान नहीं है?
(A) मूल्यांकन के लिए मानकीकृत परीक्षणों का विकास।
(B) बाल विकास और अधिगम के सिद्धांत।
(C) विद्यालय के वार्षिक बजट का निर्धारण।
(D) अभिप्रेरणा और कक्षा प्रबंधन के सिद्धांत।

115. 'खोज अधिगम' जैसे छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण में शिक्षक की भूमिका है:
(A) छात्रों को सीधे सभी उत्तर प्रदान करना।
(B) परिवेश को इस प्रकार संरचित करना कि छात्र स्वयं उत्तर खोज सकें।
(C) यह सुनिश्चित करना कि छात्र एक ही निर्धारित समाधान मार्ग का अनुपालन करें।
(D) छात्र की सभी प्रकार की त्रुटियों और अन्वेषण को न्यूनतम करना।

116. एक छात्र जो सरलता से नई प्रोग्रामिंग भाषाएं सीख सकता है और प्रथम प्रयास में ही जटिल कोडिंग चुनौतियों को हल कर सकता है, वह किसका उच्च स्तर प्रदर्शित कर रहा है:
(A) ठोस बुद्धि
(B) साहचर्य स्मृति
(C) शाब्दिक बोध
(D) तरल बुद्धि

117. निम्नलिखित में से कौन शिक्षक-केंद्रित निर्देश की सर्वाधिक परिभाषित विशेषता है?
(A) शिक्षक ज्ञान के प्राथमिक स्रोत के रूप में।
(B) छात्र की पसंद की उच्च सीमा।
(C) सहयोगात्मक परियोजनाओं पर बल।
(D) लचीला और परिवर्तनशील पाठ्यक्रम।

118. शिक्षा मनोविज्ञान की 'प्रकृति' इसके निम्नलिखित स्वरूप को संदर्भित करती है:
(A) एक काल्पनिक और दार्शनिक अनुशासन।
(B) शुद्ध गणित की एक शाखा।
(C) एक विधायक और अनुप्रयुक्त विज्ञान।
(D) कोई आधुनिक अनुप्रयोग न रखने वाला एक ऐतिहासिक क्षेत्र।

119. निम्नलिखित में से कौन स्पीयरमैन के 'g' कारक का सर्वोत्तम उदाहरण है?
(A) गणित, भाषा और तर्क जैसे कार्यों में सफलता।
(B) पियानो बजाने के लिए किसी व्यक्ति की विलक्षण प्रतिभा।
(C) तिथियों की सूची स्मरण करने की विशिष्ट क्षमता।
(D) इतिहास के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान।

120. एक ही संकेत पर बड़ी संख्या में अनुक्रियाएं उत्पन्न करने की क्षमता सृजनात्मकता का कौन सा पक्ष है?
(A) मौलिकता
(B) विस्तारण
(C) लचीलापन
(D) प्रवाह

121. बहु-अभिक्षमता बैटरी का प्राथमिक केंद्र क्या है?
(A) बुद्धि का एकल और समग्र मापन प्रदान करना।
(B) विभिन्न क्षमताओं में भविष्य की संभावनाओं को मापना।
(C) पूर्व में पढ़ाए गए विषयों की प्रवीणता का आकलन करना।
(D) व्यक्तित्व विकारों और समस्याओं का निदान करना।

122. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: बिने-साइमन मापनी को प्रारंभ में सैन्य सेवा हेतु वयस्कों की बुद्धि के आकलन के लिए बनाया गया था।
कथन II: इस मापनी का मुख्य नवाचार 'मानसिक आयु' की अवधारणा थी, जिसने बच्चे के निष्पादन की तुलना एक विशिष्ट आयु के बच्चों के औसत निष्पादन से की।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

123. एक कार्य-कारण संबंध की परिकल्पना की जा सकती है जहाँ छात्र-केंद्रित शिक्षण विधियों को अपनाने से छात्र अभिप्रेरणा और सहभागिता में वृद्धि होती है। यह किसके सिद्धांतों के अनुरूप है:
(A) व्यवहारवाद, जो बाह्य पुरस्कारों पर केंद्रित है।
(B) स्पीयरमैन का द्वि-कारक सिद्धांत।
(C) विशुद्ध रूप से विषयवस्तु-संचालित पाठ्यक्रम।
(D) ज्ञान के सक्रिय निर्माण से संबंधित शिक्षा मनोविज्ञान।

124. सही युग्म की पहचान करें।
(A) छात्र-केंद्रित पद्धति - समस्या-आधारित अधिगम
(B) छात्र-केंद्रित पद्धति - प्रत्यक्ष निर्देश
(C) शिक्षक-केंद्रित पद्धति - अन्वेषण-आधारित अधिगम
(D) शिक्षक-केंद्रित पद्धति - खोज अधिगम

125. थार्नडाइक का यह विचार कि बुद्धि बड़ी संख्या में विशिष्ट उद्दीपन-अनुक्रिया संबंधों का परिणाम है, किस विचारधारा के साथ सर्वाधिक संरेखित है?
(A) मनोविश्लेषण
(B) व्यवहारवाद
(C) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान
(D) मानवतावादी मनोविज्ञान

126. शिक्षक प्रभावशीलता को निम्नलिखित क्षमता के रूप में सर्वोत्तम रूप से समझा जा सकता है:

कथन I: एक विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण एक संकीर्ण और स्पष्ट रूप से परिभाषित क्षेत्र में व्यक्ति की क्षमता को मापता है।

कथन II: एक बहु-अभिक्षमता बैटरी क्षमता के कई पृथक क्षेत्रों में प्राप्तांकों का एक विवरण प्रदान करती है।

(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

171. इनमें से कौन एक प्रभावी शिक्षक की परिभाषित विशेषता है?
(A) एक ही शिक्षण दर्शन का कड़ाई से अनुपालन।
(B) निष्पादन पर ध्यान दिए बिना उच्च अंक देने की प्रवृत्ति।
(C) शिक्षण की उपेक्षा कर केवल अनुशासन पर ध्यान देना।
(D) विभिन्न शिक्षार्थियों के अनुरुप विधियों को अपनाने की क्षमता।

172. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए।

सूची I: (शिक्षण पद्धति)
P. व्याख्यान
Q. समस्या-आधारित अधिगम
R. प्रत्यक्ष निर्देश
S. खोज अधिगम

सूची II: (वर्गीकरण)
1. छात्र-केंद्रित
2. शिक्षक-केंद्रित
3. छात्र-केंद्रित
4. शिक्षक-केंद्रित

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

173. बिने परीक्षण मूल रूप से फ्रांसीसी सरकार द्वारा किस उद्देश्य के लिए प्रारंभ किया गया था?
(A) समृद्ध स्कूली शिक्षा हेतु बौद्धिक रूप से प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान करना।
(B) उन बच्चों की पहचान करना जिन्हें विशेष शिक्षा कार्यक्रमों की आवश्यकता थी।
(C) सेना हेतु सर्वाधिक सक्षम उम्मीदवारों का चयन करना।
(D) सभी स्कूली बच्चों की राष्ट्रीय रैंकिंग तैयार करना।

174. सामाजिक अधिगम सिद्धांत का मानना है कि व्यक्ति का व्यवहार पर्यावरण से प्रभावित होता है और पर्यावरण को भी प्रभावित करता है। इसे किस रूप में जाना जाता है:
(A) शास्त्रीय अनुबंधन
(B) पारस्परिक निर्धारणवाद
(C) अव्यक्त अधिगम
(D) 'g' कारक

175. निम्नलिखित में से कौन ठोस बुद्धि का सर्वोत्तम उदाहरण है?
(A) विभिन्न देशों की राजधानियों का ज्ञान।
(B) पूर्णतः नवीन प्रकार की तार्किक पहेली को हल करना।
(C) नए सॉफ्टवेयर के साथ शीघ्रता से तालमेल बिठाना।
(D) संख्या श्रृंखला में नियम का पता लगाना।

176. एक संगीत अभिक्षमता परीक्षण जो स्वरों के बीच अंतर करने की क्षमता का आकलन करता है, उसे किसके रूप में वर्गीकृत किया जाएगा:
(A) एक सामान्य बुद्धि परीक्षण।
(B) एक बहु-अभिक्षमता बैटरी।
(C) एक विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण।
(D) एक सृजनात्मकता परीक्षण।

177. निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धांतकार इस कथन से सहमत होने की सर्वाधिक संभावना रखेगा: "बुद्धि एक तत्व नहीं, अपितु कई तत्वों का मिश्रण है"?
(A) स्पीयरमैन
(B) बिने
(C) उपरोक्त सभी समान रुप से
(D) थर्स्टन

178. एक कक्षा जहाँ शिक्षक व्याख्यान देता है और छात्र टिप्पणी लिखते हैं, वह मुख्य रुप से किसे दर्शाती है:
(A) छात्र-केंद्रित मॉडल
(B) सहयोगात्मक अधिगम मॉडल
(C) शिक्षक-केंद्रित मॉडल
(D) अन्वेषण-आधारित मॉडल

179. शिक्षा मनोविज्ञान का एक प्रमुख योगदान शिक्षकों को निम्नलिखित प्रदान करना है:
(A) सभी विषयों को पढ़ाने के लिए एक एकल और सार्वभौमिक विधि।
(B) निर्देशात्मक निर्णय लेने हेतु एक वैज्ञानिक आधार।
(C) कठोर नियमों का एक समूह जिनका पालन अनिवार्य हो।
(D) प्रत्येक विषय के लिए तैयार पाठ्यक्रम सामग्री।

180. सृजनात्मकता के संदर्भ में, "विस्तारण" निम्नलिखित क्षमता को संदर्भित करता है:
(A) बड़ी मात्रा में विचार उत्पन्न करना।
(B) अत्यधिक असामान्य और अद्वितीय विचार प्रस्तुत करना।
(C) विभिन्न वैचारिक ढांचों के बीच परिवर्तन करना।
(D) एक सरल विचार लेकर उसे समृद्ध विवरण के साथ विकसित करना।

181. वेक्स्लर बुद्धि मापनी ने पूर्ववर्ती परीक्षणों में निम्नलिखित सुधार किया:
(A) शाब्दिक और निष्पादन बुद्धि के लिए पृथक प्राप्तांक प्रदान करना।
(B) बुद्धि को मापने वाला प्रथम परीक्षण होना।
(C) 'मानसिक आयु' की अवधारणा प्रस्तुत करना।

है।
(B) एक शिक्षक छात्रों द्वारा अनुकरण किए जाने हेतु एक प्रक्रिया का प्रदर्शन करता है।
(C) एक छात्र रटकर याद करने के माध्यम से पहाड़े सीखता है।
(D) एक छात्र प्रयास और त्रुटि की प्रक्रिया से एक पहेली हल करता है।

138. सृजनात्मकता और बुद्धि का थ्रेसहोल्ड सिद्धांत यह सुझाव देता है कि सृजनात्मकता हेतु:
(A) बुद्धि ही एकमात्र आवश्यक कारक है।
(B) बुद्धि औसत से कम होनी चाहिए।
(C) बुद्धि का एक न्यूनतम स्तर आवश्यक है।
(D) बुद्धि और सृजनात्मकता पूर्णतः स्वतंत्र चर हैं।

139. परियोजना-आधारित अधिगम, जहाँ छात्र एक लंबी अवधि में एक जटिल प्रश्न या समस्या की जांच करते हैं, किसका उदाहरण है:
(A) शिक्षक-केंद्रित पद्धति
(B) प्रत्यक्ष निर्देश का एक रूप
(C) रटकर सीखने की तकनीक
(D) छात्र-केंद्रित पद्धति

140. कैटेल के अनुसार, एक नई भाषा सीखने अथवा पुस्तक लिखने के लिए किस प्रकार की बुद्धि सर्वाधिक उपयोगी होगी?
(A) ठोस बुद्धि
(B) तरल बुद्धि
(C) स्थानिक बुद्धि
(D) गतिज बुद्धि

141. शिक्षा में मनोविज्ञान का योगदान उन पाठ्यक्रमों के नियोजन में स्पष्ट है जो:
(A) सभी आयु समूहों के लिए समान हैं।
(B) शिक्षार्थी के लिए विकासात्मक रूप से उपयुक्त हैं।
(C) पूर्णतः अमूर्त अवधारणाओं पर केंद्रित हैं।
(D) छात्र की रुचि अथवा अभिप्रेरणा से स्वतंत्र हैं।

142. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (सृजनात्मकता के पक्ष)
P. प्रवाह
Q. लचीलापन
R. मौलिकता
S. विस्तारण
सूची II: (विवरण)
1. विचारों की विभिन्न श्रेणियों के बीच परिवर्तन।
2. बड़ी संख्या में विचार उत्पन्न करना।
3. किसी विचार में विवरण जोड़ना।
4. नवीन या अद्वितीय विचार उत्पन्न करना।
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

143. बिने और वेक्स्लर बुद्धि मापनी के बीच एक बड़ा अंतर यह है कि:
(A) वेक्स्लर मापनी केवल एक प्राप्तांक नहीं, अपितु एक संज्ञानात्मक विवरण प्रदान करती है।
(B) बिने मापनी समूहों के लिए है, जबकि वेक्स्लर मापनी व्यक्तियों के लिए है।
(C) बिने मापनी अशाब्दिक है, जबकि वेक्स्लर मापनी शाब्दिक है।
(D) वेक्स्लर मापनी केवल वयस्कों के लिए है।

144. निम्नलिखित में से कौन सा छात्र-केंद्रित अधिगम का लाभ नहीं है?
(A) छात्र अभिप्रेरणा और सहभागिता में वृद्धि।
(B) आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल का विकास।
(C) तथ्यात्मक विषयवस्तु की एक विस्तृत श्रृंखला का तीव्र कवरेज सुनिश्चित करना।
(D) अधिगम के प्रति स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देना।

145. थार्नडाइक के "बहु-कारक" सिद्धांत को बुद्धि का "अराजकतावादी" सिद्धांत भी कहा जाता है क्योंकि:
(A) इसने एक एकल नियामक कारक 'g' का प्रस्ताव दिया था।
(B) इसे राजनीतिक अराजकता की अवधि के दौरान विकसित किया गया था।
(C) इसने सामाजिक और भावनात्मक बुद्धि पर ध्यान केंद्रित किया।
(D) इसने क्षमताओं की बहुलता के पक्ष में किसी एक नियामक कारक को अस्वीकार कर दिया।

146. अपने भविष्य के व्यवहार को निर्देशित करने हेतु किसी प्रतिरूप के व्यवहार और उसके परिणामों का अवलोकन करने की प्रक्रिया किसका केंद्रीय सिद्धांत है:
(A) कैटेल का बुद्धि सिद्धांत
(B) स्पीयरमैन का द्वि-कारक सिद्धांत
(C) सामाजिक अधिगम सिद्धांत
(D) थर्स्टन का समूह कारक सिद्धांत

147. बुद्धि परीक्षण से संबंधित निम्नलिखित अवधारणाओं को उनके प्रादुर्भाव के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. शाब्दिक और निष्पादन बुद्धि लब्धि अंतर
2. 'g' कारक की अवधारणा
3. 'मानसिक आयु' की अवधारणा
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम दर्शाता है?
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 2, 1
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 1, 2

प्रदान करना।

194. निम्नलिखित में से कौन शिक्षक-केंद्रित पद्धति का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है?
(A) एक सहयोगात्मक परियोजना
(B) सुकराती संगोष्ठी
(C) पॉवरपॉइंट स्लाइड्स के माध्यम से एक व्याख्यान
(D) अन्वेषण-आधारित प्रयोगशाला प्रयोग

195. अधिगम प्रक्रियाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार अवलोकन एक प्रमुख अधिगम प्रक्रिया है।
2. शिक्षक-केंद्रित विधियां प्रायः प्राथमिक अधिगम प्रक्रिया के रूप में निष्क्रिय अवशोषण पर निर्भर करती हैं।
3. छात्र-केंद्रित विधियां अधिगम प्रक्रिया के रूप में ज्ञान के सक्रिय निर्माण को बढ़ावा देती हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

196. अभिक्षमता परीक्षण को उपलब्धि परीक्षण से क्या पृथक करता है?
(A) अभिक्षमता परीक्षण मापते हैं कि क्या सीखा गया; उपलब्धि परीक्षण क्षमता मापते हैं।
(B) अभिक्षमता परीक्षण वयस्कों हेतु हैं; उपलब्धि परीक्षण बच्चों हेतु हैं।
(C) अभिक्षमता परीक्षण निबंध-आधारित हैं; उपलब्धि परीक्षण बहुविकल्पीय हैं।
(D) अभिक्षमता परीक्षण क्षमता मापते हैं; उपलब्धि परीक्षण पूर्व अधिगम को मापते हैं।

197. निम्नलिखित बुद्धि सिद्धांतकारों को उनके सिद्धांतों के प्रतिपादन के आधार पर कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. रेमंड कैटेल
2. चार्ल्स स्पीयरमैन
3. लुई थर्स्टन

निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम दर्शाता है?
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 3, 1
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 1, 3

198. सामाजिक स्थितियों को प्रभावी ढंग से समझने और संचालित करने की क्षमता थार्नडाइक द्वारा प्रस्तावित किस बुद्धि से संबंधित है?
(A) अमूर्त बुद्धि
(B) मूर्त बुद्धि
(C) सामाजिक बुद्धि
(D) यांत्रिक बुद्धि

199. निम्नलिखित में से कौन छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण का सर्वोत्तम उदाहरण है?
(A) समूह वास्तविक विश्व की समस्याओं के समाधान हेतु शोध और विकास करते हैं।
(B) शिक्षक एक अवधारणा समझाता है और अभ्यास हेतु समस्याएं देता है।
(C) शिक्षक कक्षा में एक अध्याय पढ़कर सुनाता है।
(D) छात्र पाठ्यपुस्तक की परिभाषाओं वाली वर्कशीट पूर्ण करते हैं।

200. शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान का एक प्रमुख योगदान यह सिद्धांत है कि अधिगम तब सर्वाधिक प्रभावी होता है जब वह:
(A) निष्क्रिय और रटने वाला हो।
(B) छात्रों के पूर्व ज्ञान से असंबद्ध हो।
(C) भिन्नताओं की उपेक्षा कर प्रत्येक छात्र हेतु समान हो।
(D) सक्रिय, रचनात्मक और सार्थक हो।

201. वेक्स्लर वयस्क बुद्धि मापनी के निष्पादन खंड में निम्नलिखित कार्य सम्मिलित होंगे:
(A) शब्दावली की परिभाषा देना।
(B) कथा निर्माण हेतु चित्रों को व्यवस्थित करना।
(C) सामान्य ज्ञान के प्रश्नों के उत्तर देना।
(D) दो अवधारणाओं के बीच समानताएं स्पष्ट करना।

202. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (बुद्धि सिद्धांत)
P. द्वि-कारक सिद्धांत
Q. समूह कारक सिद्धांत
R. बहु-कारक सिद्धांत
S. तरल और ठोस बुद्धि का सिद्धांत

सूची II: (प्रस्तावक)
1. कैटेल
2. थार्नडाइक
3. स्पीयरमैन
4. थर्स्टन

(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

203. सामाजिक अधिगम सिद्धांत का वह प्रमुख तत्व जो इसे विशुद्ध व्यवहारवाद से अलग करता है, निम्नलिखित का समावेश है:
(A) उद्दीपन-अनुक्रिया साहचर्य।
(B) धनात्मक और ऋणात्मक सुदृढ़ीकरण।
(C) पशु व्यवहार का अध्ययन।
(D) अवधान और स्मृति जैसी संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं।

(C) विद्यालय वित्त पोषण हेतु वित्तीय मॉडल।
(D) शैक्षिक नीति हेतु विधिक रुपरेखा।

159. "संबंधों और सहसंबंधों का निष्कर्षण" किसके बुद्धि सिद्धांत की एक प्रमुख अवधारणा है:
(A) स्पीयरमैन
(B) थर्स्टन
(C) कैटेल
(D) थार्नडाइक

160. एक शिक्षक देखता है कि जब वह अच्छे व्यवहार की प्रशंसा करता है तो छात्र बेहतर व्यवहार करते हैं, और जब वह लघु उल्लंघनों की उपेक्षा करता है तो वे दुर्व्यवहार कम करते हैं। यह शिक्षक किसके सिद्धांतों को लागू कर रहा है:
(A) थर्स्टन का समूह कारक सिद्धांत
(B) कैटेल का बुद्धि सिद्धांत
(C) व्यवहारवादी और सामाजिक अधिगम सिद्धांत
(D) बिने परीक्षण रुपरेखा

161. पृथक विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षणों के स्थान पर बहु-अभिक्षमता बैटरी के उपयोग का मुख्य लाभ क्या है?
(A) किसी एक अभिक्षमता हेतु उच्च भविष्य कहने वाली वैधता।
(B) अल्प प्रशासन समय।
(C) सांस्कृतिक पूर्वाग्रह से पूर्ण मुक्ति।
(D) आंतरिक तुलना हेतु एक सामान्य मानक समूह।

162. रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस में "प्रोग्रेसिव" शब्द इस तथ्य को संदर्भित करता है कि:
(A) परीक्षण एक प्रगतिशील आंदोलन द्वारा विकसित किया गया था।
(B) परीक्षण प्रगतिशील सामाजिक दृष्टिकोणों को मापता है।
(C) परीक्षण के प्रश्न उत्तरोत्तर अधिक कठिन होते जाते हैं।
(D) परीक्षण केवल प्रगतिशील छात्रों द्वारा ही दिया जा सकता है।

163. निम्नलिखित में से कौन छात्र-केंद्रित कक्षा की विशेषता है?
(A) निष्क्रिय श्रवण
(B) सक्रिय सहभागिता
(C) रटकर सीखना
(D) शिक्षक का एकालाप

164. नवीन समाधान प्राप्त करने के लिए "परंपरा से हटकर सोचना" निम्नलिखित में से किसका वर्णन करने का एक अनौपचारिक तरीका है:
(A) अभिसारी चिन्तन
(B) ठोस बुद्धि
(C) रटकर याद करना
(D) अपसारी चिन्तन

165. बुद्धि सिद्धांतों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. स्पीयरमैन का 'g' कारक सभी बौद्धिक कार्यों के लिए सामान्य बुद्धि है।
2. थर्स्टन की प्राथमिक मानसिक क्षमताएं एक-दूसरे से और किसी भी 'g' कारक से स्वतंत्र हैं।
3. थार्नडाइक ने प्रस्तावित किया कि बुद्धि कई विशिष्ट क्षमताओं का औसत है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

166. अन्वेषण-आधारित अधिगम परिवेश में शिक्षक की भूमिका क्या है?
(A) छात्र के सभी प्रश्नों के प्रत्यक्ष उत्तर देना।
(B) व्याख्यान के माध्यम से जानकारी देना।
(C) एक सुगमकर्ता के रूप में कार्य करना और जांच में छात्रों का मार्गदर्शन करना।
(D) यह सुनिश्चित करना कि सभी छात्र पूर्व-निर्धारित विधि का अनुपालन करें।

167. सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार, अवलोकनात्मक अधिगम में सम्मिलित चार प्रक्रियाएं अवधान, प्रतिधारण, पुनरुत्पादन और निम्नलिखित हैं:
(A) अभिप्रेरणा
(B) सुदृढ़ीकरण
(C) दंड
(D) विलोपन

168. सीखे गए ज्ञान और अनुभव का उपयोग करने की क्षमता को _______ के रूप में परिभाषित किया गया है, जबकि नवीन समस्याओं को हल करने की क्षमता को _______ कहा जाता है।
(A) तरल बुद्धि; ठोस बुद्धि
(B) सामान्य बुद्धि; विशिष्ट बुद्धि
(C) विशिष्ट बुद्धि; सामान्य बुद्धि
(D) ठोस बुद्धि; तरल बुद्धि

169. शिक्षा में मनोविज्ञान के सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदानों में से एक निम्नलिखित पर बल देना है:
(A) केवल व्यक्तिगत कार्य हेतु एक शांत स्थान के रूप में कक्षा।
(B) अधिगम प्रक्रिया में एक सक्रिय भागीदार के रूप में शिक्षार्थी।
(C) सबके लिए समान पाठ्यक्रम का महत्व।
(D) ज्ञान के एकमात्र स्रोत के रूप में शिक्षक।

170. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

148. निम्नलिखित में से कौन सा परिदृश्य शिक्षक प्रभावशीलता की उच्च श्रेणी को सर्वोत्तम रुप से प्रदर्शित करता है?
(A) एक शिक्षक जो बिना किसी विचलन के पाठ्यपुस्तक का कड़ाई से अनुपालन करता है।
(B) एक शिक्षक जो न्यूनतम मात्रा में गृहकार्य देता है।
(C) एक शिक्षक जिसकी कक्षा विद्यालय में सर्वाधिक शांत है।
(D) एक शिक्षक जिसके छात्र निरंतर अधिगम में वृद्धि प्रदर्शित करते हैं।

149. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: शिक्षा मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र केवल प्रतिभाशाली बच्चों के अध्ययन तक सीमित है।
कथन II: शिक्षा मनोविज्ञान में शिक्षार्थियों, अधिगम प्रक्रियाओं और कक्षा के सामाजिक एवं भावनात्मक वातावरण का अध्ययन सम्मिलित है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

150. एक परीक्षण जिसका उद्देश्य किसी व्यक्ति के स्वर विभेदीकरण, लय बोध और तान स्मृति को मापकर एक सफल संगीतकार बनने की क्षमता का पूर्वानुमान लगाना है, वह है:
(A) सामान्य बुद्धि परीक्षण
(B) बहु-अभिक्षमता बैटरी
(C) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
(D) व्यक्तित्व सूची

151. स्पीयरमैन के विपरीत, थर्स्टन के बुद्धि विश्लेषण ने उन्हें निम्नलिखित प्रस्तावित करने के लिए प्रेरित किया:
(A) "प्राथमिक मानसिक क्षमताओं" का एक समूह।
(B) एक एकल सामान्य बुद्धि कारक।
(C) दो प्रकार की बुद्धि: तरल और ठोस।
(D) बुद्धि और सृजनात्मकता का एक समान होना।

152. शिक्षक-केंद्रित पद्धति की परिभाषित विशेषता यह है कि शिक्षक:
(A) छात्र के नेतृत्व वाली परियोजनाओं हेतु एक सुगमकर्ता के रूप में कार्य करता है।
(B) ज्ञान के भंडार और प्रदाता के रूप में कार्य करता है।
(C) एक सहयोगात्मक जांच में छात्रों के साथ मिलकर सीखता है।
(D) छात्रों को स्वयं के अधिगम उद्देश्यों को चुनने की अनुमति देता है।

153. वेक्स्लर मापनी पर ब्लॉक डिज़ाइन, वस्तु संयोजन और चित्र पूर्ति जैसे कार्यों पर उत्तम निष्पादन की क्षमता निम्नलिखित में सहायक होगी:
(A) शाब्दिक बुद्धि लब्धि प्राप्तांक
(B) निष्पादन बुद्धि लब्धि प्राप्तांक
(C) मानसिक आयु
(D) सृजनात्मकता गुणांक

154. बुद्धि और सृजनात्मकता के बीच संबंध के बारे में कौन सा कथन सर्वाधिक सटीक है?
(A) वे परस्पर अपवर्जी संरचनाएं हैं।
(B) सृजनात्मकता तरल बुद्धि का एक घटक है।
(C) बुद्धि सृजनात्मकता हेतु एक पूर्वापेक्षा है, परंतु कोई निश्चित गारंटी नहीं।
(D) मानक बुद्धि लब्धि परीक्षण सृजनात्मकता के सर्वोत्तम उपलब्ध मापक हैं।

155. व्यवहारवादी सिद्धांतों के बारे में गलत कथन की पहचान करें।
(A) वे आंतरिक मानसिक अवस्थाओं के स्थान पर अवलोकन योग्य व्यवहारों पर बल देते हैं।
(B) शास्त्रीय और क्रियाप्रसूत अनुबंधन प्रमुख अवधारणाएं हैं।
(C) वे इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि पर्यावरण व्यवहार को कैसे आकार देता है।
(D) सामाजिक अधिगम सिद्धांत संज्ञान के बिना विशुद्ध रूप से व्यवहारवादी है।

156. एक इतिहास शिक्षक छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण का उपयोग करना चाहता है। कौन सी गतिविधि सर्वाधिक उपयुक्त होगी?
(A) विभिन्न दृष्टिकोणों पर वाद-विवाद हेतु छात्रों को समूहों में विभाजित करना।
(B) प्रथम विश्व युद्ध के कारणों पर 45 मिनट का व्याख्यान देना।
(C) छात्रों को एक अध्याय पढ़ने और अंत में प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कहना।
(D) महत्वपूर्ण तिथियों पर एक बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तरी आयोजित करना।

157. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): शिक्षा मनोविज्ञान एक अनुप्रयुक्त विज्ञान है।
कारण (R): यह शिक्षा के क्षेत्र में समस्याओं को हल करने हेतु मनोविज्ञान के सिद्धांतों और नियमों को लागू करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

158. शिक्षा में मनोविज्ञान का एक प्रमुख योगदान निम्नलिखित का विकास रहा है:
(A) विद्यालय भवनों का स्थापत्य नियोजन।
(B) छात्र क्षमताओं और अधिगम के आकलन हेतु वैध विधियां।

(D) परीक्षण से सभी सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को समाप्त करना।

182. एक शिक्षक नागरिक विषय के बारे में छात्रों की सृजनात्मक चिन्तन क्षमता का आकलन करना चाहता है। कौन सा कार्य सर्वाधिक उपयुक्त है?
(A) सरकारी संरचना पर एक बहुविकल्पीय परीक्षण।
(B) नागरिक कर्तव्यों पर एक अध्याय का सारांश लिखने वाला निबंध।
(C) सामुदायिक कचरे के प्रबंधन हेतु नवीन समाधान प्रस्तावित करना।
(D) शहर के नियमों के बारे में रिक्त स्थान पूर्ति कार्य।

183. शिक्षक प्रभावशीलता के संबंध में कौन सा कथन गलत है?
(A) यह छात्रों को प्रेरित करने की क्षमता से स्वतंत्र है।
(B) इसमें विषयवस्तु का गहन ज्ञान सम्मिलित है।
(C) इसमें सुदृढ़ कक्षा प्रबंधन कौशल शामिल हैं।
(D) यह छात्रों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास में परिलक्षित होता है।

184. स्पीयरमैन का 'g' कारक एक ऐसी अवधारणा है जो यह सुझाव देती है कि:
(A) बुद्धि कई असंबद्ध क्षमताओं से निर्मित होती है।
(B) बुद्धि तरल और ठोस रुपों में विभाजित है।
(C) सृजनात्मकता और बुद्धि एक ही संरचना हैं।
(D) एक सामान्य क्षमता सभी कार्यों पर निष्पादन को प्रभावित करती है।

185. सामाजिक अधिगम सिद्धांत के बारे में सही कथन की पहचान करें।
(A) यह सुझाव देता है कि अधिगम केवल प्रत्यक्ष अनुभव से होता है।
(B) यह अवलोकन और प्रतिरुपण के महत्व पर बल देता है।
(C) यह पर्यावरण की भूमिका की पूर्णतः उपेक्षा करता है।
(D) यह शास्त्रीय अनुबंधन के समान है।

186. तार्किक तर्क सहित कोडिंग सीखने की किसी व्यक्ति की क्षमता को मापने हेतु अभिकल्पित परीक्षण क्या कहलाएगा:
(A) उपलब्धि परीक्षण
(B) व्यक्तित्व परीक्षण
(C) अभिक्षमता परीक्षण
(D) बुद्धि परीक्षण

187. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
कथन (A): 'थ्रेसहोल्ड परिकल्पना' का मानना है कि एक निश्चित बुद्धि लब्धि स्तर के ऊपर, उच्च बुद्धि का अर्थ उच्च सृजनात्मकता होना अनिवार्य नहीं है।
कारण (R): सृजनात्मकता में अपसारी चिन्तन, व्यक्तित्व लक्षण और अभिप्रेरणा जैसे कारक शामिल होते हैं, जो पारंपरिक बुद्धि लब्धि परीक्षणों द्वारा पूर्णतः नहीं मापे जाते।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

188. शिक्षक-केंद्रित और छात्र-केंद्रित विधियों के बीच एक प्रमुख अंतर निम्नलिखित में निहित है:
(A) कक्षा में नियंत्रण और गतिविधि का केंद्र।
(B) छात्रों की आयु।
(C) पढ़ाया जा रहा विषय।
(D) कक्षा का भौतिक आकार।

189. निम्नलिखित में से कौन थर्स्टन की सात प्राथमिक मानसिक क्षमताओं में से एक नहीं है?
(A) शब्द प्रवाह
(B) सामान्य बुद्धि
(C) साहचर्य स्मृति
(D) तर्क

190. "शिक्षक प्रभावशीलता" की अवधारणा मुख्य रुप से किस पर ध्यान केंद्रित करती है:
(A) शिक्षक की योग्यताएं और सेवा काल।
(B) शिक्षण की प्रक्रिया और छात्र अधिगम पर उसका प्रभाव।
(C) विद्यालय प्रशासन के बीच शिक्षक की लोकप्रियता।
(D) कक्षा का भौतिक स्वरुप।

191. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: तरल बुद्धि में तर्क करने और नवीन समस्याओं को हल करने की क्षमता सम्मिलित है।
कथन II: ठोस बुद्धि अनुभव और शिक्षा के माध्यम से अर्जित ज्ञान एवं कौशल के संचित भंडार को संदर्भित करती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

192. रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस को किसका एक उत्तम मापक माना जाता है:
(A) शाब्दिक प्रवाह
(B) ठोस बुद्धि
(C) तरल बुद्धि
(D) सामाजिक अधिगम

193. "शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति" का सर्वोत्तम वर्णन इस प्रकार है:
(A) निर्देशात्मक, शिक्षण हेतु कठोर नियम प्रदान करना।
(B) काल्पनिक, कल्पित कक्षा परिदृश्यों पर आधारित।
(C) ऐतिहासिक, जिसका आधुनिक शिक्षा हेतु कोई औचित्य नहीं।
(D) वर्णनात्मक, अभ्यास का मार्गदर्शन करने हेतु सिद्धांत

(A) न्यूनतम समय में पाठ्यक्रम को पूर्ण करना।
(B) अनुकूल छात्र परिणाम प्राप्त करना।
(C) एक शांत और व्यवस्थित कक्षा बनाए रखना।
(D) बिना किसी विचलन के पाठ्यपुस्तक का कड़ाई से अनुपालन करना।

127. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): सामाजिक अधिगम सिद्धांत व्यवहारवादी और संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धांतों के बीच की दूरी को कम करता है।
कारण (R): यह अवधान, स्मृति और अभिप्रेरणा जैसे संज्ञानात्मक तत्वों को सम्मिलित करता है, जबकि व्यवहार पर पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों की भूमिका पर भी बल देता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

128. वेक्स्लर बुद्धि मापनी निम्नलिखित में से किसके लिए उल्लेखनीय है:
(A) अनुपात बुद्धि लब्धि का उपयोग करना।
(B) अंत-सांस्कृतिक उपयोग हेतु अशाब्दिक परीक्षण के रूप में अभिकल्पित होना।
(C) सामान्य वितरण के आधार पर विचलन बुद्धि लब्धि को लोकप्रिय बनाना।
(D) विशेष रूप से सृजनात्मकता को मापने पर ध्यान केंद्रित करना।

129. विलक्षण अथवा सांख्यिकीय रूप से दुर्लभ विचार प्रस्तुत करने की क्षमता कहलाती है:
(A) प्रवाह
(B) लचीलापन
(C) विस्तारण
(D) मौलिकता

130. निम्नलिखित में से कौन शिक्षा मनोविज्ञान के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत आता है?
(A) शिक्षार्थी की विशेषताएं
(B) शिक्षण प्रक्रियाएं
(C) उपरोक्त सभी
(D) अधिगम परिणामों का मूल्यांकन

131. एक यांत्रिक अभिक्षमता परीक्षण, जो भौतिक सिद्धांतों की समझ को मापता है, किसका उदाहरण है:
(A) बहु-अभिक्षमता बैटरी
(B) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
(C) सामान्य बुद्धि परीक्षण
(D) व्यक्तित्व परीक्षण

132. कौन सा सिद्धांत मानता है कि बुद्धि सात पृथक और अपेक्षाकृत स्वतंत्र "प्राथमिक मानसिक क्षमताओं" का मिश्रण है?
(A) स्पीयरमैन का द्वि-कारक सिद्धांत
(B) कैटेल का तरल और ठोस बुद्धि का सिद्धांत
(C) थार्नडाइक का बहु-कारक सिद्धांत
(D) थर्स्टन का समूह कारक सिद्धांत

133. शिक्षक-केंद्रित विधियों की प्राथमिक आलोचना यह है कि वे प्रायः:
(A) सक्रिय सहभागिता के स्थान पर निष्क्रिय अधिगम को प्रोत्साहित करती हैं।
(B) शिक्षक के लिए लागू करना अत्यंत कठिन है।
(C) आवश्यक विषयवस्तु को पूर्ण करने में अत्यधिक समय लेती हैं।
(D) बहुमूल्य तकनीक और संसाधनों की आवश्यकता होती है।

134. थर्स्टन के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सी प्राथमिक मानसिक क्षमता नहीं है?
(A) शब्द प्रवाह
(B) संख्यात्मक सुविधा
(C) ठोस बुद्धि
(D) प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक गति

135. बुद्धि के मापन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वेक्स्लर मापनी में पृथक शाब्दिक और निष्पादन उप-परीक्षण सम्मिलित हैं।
2. रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस परीक्षण देने वाले के भाषा कौशल पर अत्यधिक निर्भर है।
3. मूल बिने परीक्षण प्रतिभाशाली छात्रों की पहचान के लिए बनाया गया था।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 3
(D) केवल 2 और 3

136. एक प्रभावी शिक्षक वह है जो:
(A) एक धनात्मक और सहायक अधिगम वातावरण निर्मित करता है।
(B) सभी स्थितियों के लिए एक ही शिक्षण पद्धति का उपयोग करता है।
(C) केवल शीर्ष 10% छात्रों के शैक्षणिक निष्पादन पर ध्यान केंद्रित करता है।
(D) छात्र की चिंता कम करने हेतु किसी भी प्रकार के मूल्यांकन से बचता है।

137. कौन सा परिदृश्य कक्षा में सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुप्रयोग का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व करता है?
(A) एक शिक्षक सही उत्तरों के लिए छात्रों को पुरस्कार देता

204. एक प्रभावी शिक्षक निम्नलिखित में से किसे छोड़कर शेष सभी गुणों को प्रदर्शित करता है?
(A) शिक्षण के प्रति एक कठोर और अनम्य दृष्टिकोण।
(B) निर्देश की स्पष्टता।
(C) विषय के प्रति उत्साह।
(D) सुदृढ़ कक्षा प्रबंधन कौशल।

205. सृजनात्मकता का "मौलिकता" पक्ष किसे संदर्भित करता है:
(A) उत्पन्न विचारों की कुल संख्या।
(B) विचारों की विशिष्टता और नवीनता।
(C) विचारों की विभिन्न श्रेणियां जिनमें वे सम्मिलित हैं।
(D) विचारों में विवरणों की प्रचुरता।

206. व्यवसायिक परामर्श हेतु शाब्दिक, संख्यात्मक और अमूर्त तर्क पर प्राप्तांक प्रदान करने वाली परीक्षण बैटरी है:
(A) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
(B) बहु-अभिक्षमता बैटरी
(C) सामान्य बुद्धि परीक्षण
(D) व्यक्तित्व तालिका

207. कौन सा कथन बुद्धि और सृजनात्मकता के बीच संबंध के निष्कर्षों का सर्वोत्तम सारांश है?
(A) सृजनात्मकता हेतु बुद्धि आवश्यक है परंतु पर्याप्त नहीं।
(B) वे समान संरचनाएं हैं।
(C) वे पूर्णतः असंबद्ध हैं।
(D) बुद्धि हेतु सृजनात्मकता आवश्यक है परंतु पर्याप्त नहीं।

208. बिने बुद्धि मापनी में, "मानसिक आयु" की अवधारणा किसे संदर्भित करती है:
(A) परीक्षणार्थी की वास्तविक आयु।
(B) पूर्ण की गई शिक्षा का उच्चतम स्तर।
(C) वह औसत आयु जिस पर व्यक्ति प्राप्तांक अर्जित करते हैं।
(D) निष्पादन वस्तुओं पर परीक्षणार्थी का प्राप्तांक।

209. निम्नलिखित में से कौन सा व्यवहारवादी सिद्धांत नहीं है?
(A) शास्त्रीय अनुबंधन
(B) क्रियाप्रसूत अनुबंधन
(C) सामाजिक अधिगम सिद्धांत
(D) कैटेल का बुद्धि सिद्धांत

210. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: शिक्षक-केंद्रित विधियां यह सुनिश्चित करती हैं कि सभी छात्र एक ही गति और विधि से सीखें।
कथन II: छात्र-केंद्रित विधियां विभेदीकरण की अनुमति देती हैं और विविध शिक्षण शैलियों एवं गतियों को समायोजित करती हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

211. शिक्षा मनोविज्ञान का प्राथमिक लक्ष्य है:
(A) शैक्षणिक संस्थानों के इतिहास का अध्ययन करना।
(B) मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के माध्यम से शिक्षा में सुधार करना।
(C) गंभीर मानसिक रोगों का निदान और उपचार करना।
(D) विद्यालय हेतु नई प्रशासनिक नीतियां विकसित करना।

212. थार्नडाइक के बहु-कारक सिद्धांत के अनुसार, वस्तुओं के हस्त-कौशल की क्षमता किसका उदाहरण है:
(A) अमूर्त बुद्धि
(B) सामाजिक बुद्धि
(C) सामान्य बुद्धि
(D) मूर्त बुद्धि

213. एक छात्रा को यह देखने हेतु परीक्षण दिया जाता है कि क्या उसमें कंप्यूटर प्रोग्रामर बनने की क्षमता है। यह किसका उदाहरण है:
(A) अभिक्षमता परीक्षण
(B) उपलब्धि परीक्षण
(C) व्यक्तित्व परीक्षण
(D) रुचि तालिका

214. कक्षा में, एक शिक्षक कठिन विषय के प्रति उत्साह प्रदर्शित करता है। सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार, इसकी संभावना है कि:
(A) छात्रों के दृष्टिकोण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
(B) विषय के प्रति छात्र की चिंता बढ़ेगी।
(C) छात्र भी समान दृष्टिकोण अपनाएंगे।
(D) यह प्रत्यक्ष दंड की तुलना में कम प्रभावी होगा।

215. एक कलाकार जो एक ही उद्दीपन से विभिन्न प्रकार की छवियां निर्मित कर सकता है, वह उच्च स्तर की सृजनात्मकता प्रदर्शित कर रहा है:
(A) लचीलापन
(B) विस्तारण
(C) अनुरूपता
(D) कठोरता

216. स्पीयरमैन के बुद्धि सिद्धांत के दो मुख्य कारक हैं:
(A) तरल और ठोस
(B) शाब्दिक और निष्पादन
(C) सामाजिक और अमूर्त
(D) सामान्य और विशिष्ट

217. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): वेक्स्लर बुद्धि मापनी पूर्ण स्तर बुद्धि लब्धि के साथ शाब्दिक और निष्पादन बुद्धि लब्धि भी प्रदान करती है।
कारण (R): यह बहु-प्राप्तांक दृष्टिकोण संज्ञानात्मक शक्तियों और दुर्बलताओं के प्रतिरुप की पहचान हेतु उपयोगी है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।

(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

218. एक शिक्षक छात्र सहभागिता के क्षेत्र में अपनी शिक्षक प्रभावशीलता बढ़ाना चाहता है। उसे किसे प्राथमिकता देनी चाहिए?
(A) प्रति सप्ताह अधिक पाठ्यपुस्तक अध्यायों को पूर्ण करना।
(B) संवादात्मक छात्र-केंद्रित गतिविधियों को सम्मिलित करना।
(C) अंतिम परीक्षा को और अधिक कठिन बनाना।
(D) कक्षा प्रबंधन पर कम समय व्यय करना।

219. बुद्धि कई पृथक "प्राथमिक मानसिक क्षमताओं" से निर्मित है, यह सिद्धांत किसके द्वारा प्रस्तावित किया गया था:
(A) स्पीयरमैन
(B) बिने
(C) वेक्स्लर
(D) थर्स्टन

220. शिक्षा मनोविज्ञान की 'वैज्ञानिक प्रकृति' का क्या तात्पर्य है?
(A) यह अवलोकन और प्रयोग जैसी वस्तुनिष्ठ विधियों का उपयोग करता है।
(B) यह केवल व्यक्तिगत धारणाओं पर निर्भर करता है।
(C) यह केवल भौतिक विज्ञानों से संबंधित है।
(D) यह दर्शनशास्त्र की एक शाखा है।

221. निम्नलिखित में से कौन छात्र-केंद्रित विधियों का एक प्रमुख लाभ है?
(A) वे विषयवस्तु की तीव्रतम प्रदाता होती हैं।
(B) वे स्वायत्तता और आलोचनात्मक चिन्तन के विकास को प्रोत्साहित करती हैं।
(C) उन्हें शिक्षक की न्यूनतम नियोजन की आवश्यकता होती है।
(D) वे रटकर याद करने हेतु सर्वाधिक प्रभावी हैं।

222. एक छात्रा अपनी अंग्रेजी कक्षा में व्याकरण के नियम सीखती है। कैटेल के अनुसार, उसके लेखन में इन नियमों का सही प्रयोग क्या दर्शाता है:
(A) तरल बुद्धि
(B) ठोस बुद्धि
(C) सृजनात्मक बुद्धि
(D) प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक गति

223. "प्रतिनिधिक सुदृढ़ीकरण" किस सिद्धांत से संबंधित अवधारणा है?
(A) सामाजिक अधिगम सिद्धांत
(B) स्पीयरमैन का द्वि-कारक सिद्धांत
(C) थर्स्टन का समूह कारक सिद्धांत
(D) कैटेल का तरल और ठोस बुद्धि का सिद्धांत

224. एक प्रभावी शिक्षक द्वारा मूल्यांकन को किस रूप में देखे जाने की सर्वाधिक संभावना है:
(A) छात्रों को दंडित करने का एक साधन।
(B) क्षमता का अंतिम निर्णय।
(C) शिक्षण हेतु प्रतिपुष्टि एकत्र करने की एक प्रक्रिया।
(D) एक औपचारिकता जिसे शीघ्र पूर्ण किया जाना चाहिए।

225. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. छात्र-केंद्रित अधिगम में प्रायः सहयोगात्मक समूह कार्य सम्मिलित होता है।
2. शिक्षक-केंद्रित अधिगम में अधिगम का उत्तरदायित्व मुख्य रूप से शिक्षक पर होता है।
3. व्याख्यान विधि छात्र-केंद्रित अधिगम का एक प्रमुख उदाहरण है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2, और 3

226. एक ही संकेत के प्रत्युत्तर में बड़ी संख्या में विचार उत्पन्न करने की क्षमता सृजनात्मकता का कौन सा पक्ष है:
(A) लचीलापन
(B) विस्तारण
(C) प्रवाह
(D) मौलिकता

227. एक परीक्षण जिसमें लिपिकीय प्रत्यक्षीकरण, यांत्रिक तर्क और स्थानिक संबंधों के खंड सम्मिलित हैं, उसे क्या कहा जाएगा:
(A) स्टैनफोर्ड-बिने बुद्धि परीक्षण
(B) बहु-अभिक्षमता बैटरी
(C) संगीत के लिए विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
(D) सृजनात्मकता परीक्षण

228. रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस का प्राथमिक उद्देश्य बुद्धि मापन के किस प्रकार से संबंधित है:
(A) शाब्दिक कार्यों की विस्तृत श्रृंखला का उपयोग करना।
(B) व्यक्ति की संचित शब्दावली का आकलन करना।
(C) सामाजिक अंतःक्रिया वाले कार्यों के माध्यम से।
(D) इस प्रकार जिससे भाषाई प्रभाव न्यूनतम हो।

229. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: थार्नडाइक के बहु-कारक सिद्धांत ने एक एकल सामान्य बुद्धि कारक 'g' का प्रस्ताव दिया था।
कथन II: स्पीयरमैन के द्वि-कारक सिद्धांत ने माना कि बुद्धि एक सामान्य कारक 'g' और कई विशिष्ट कारकों 's' से निर्मित है।

(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

230. सामाजिक अधिगम सिद्धांत में, प्रतिरूपित व्यवहार को सफलतापूर्वक करने हेतु आवश्यक शारीरिक और संज्ञानात्मक क्षमताएं किसकी प्रक्रिया हैं:
(A) अवधान
(B) प्रतिधारण
(C) पुनरुत्पादन
(D) अभिप्रेरणा

231. एक अप्रभावी शिक्षक की क्या विशेषता हो सकती है:
(A) अस्पष्ट निर्देश और असंगत अपेक्षाएं।
(B) सामग्री की स्पष्ट और संगठित प्रस्तुति।
(C) धनात्मक और उत्साहजनक कक्षा वातावरण।
(D) छात्र अधिगम के आकलन हेतु विविध विधियों का उपयोग।

232. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (बुद्धि परीक्षण)
P. बिने परीक्षण
Q. वेक्स्लर मापनी
R. रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस
S. थार्नडाइक का CAVD
सूची II: (प्रमुख विशेषता)
1. निष्पादन और शाब्दिक मापनी
2. मैट्रिसेस के साथ अशाब्दिक तर्क
3. अमूर्त बुद्धि का मापन
4. मानसिक आयु की अवधारणा
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

233. शिक्षक प्रभावशीलता, अधिगम प्रक्रियाएं और छात्र विकास का अध्ययन शिक्षा मनोविज्ञान के किस भाग के अंतर्गत आता है?
(A) इतिहास
(B) कार्यक्षेत्र
(C) भ्रम
(D) समाप्ति

234. निम्नलिखित में से कौन सा कक्षा अभ्यास छात्र-केंद्रित सिद्धांतों के साथ सर्वोत्तम रूप से संरेखित है?
(A) शिक्षक कक्षा के अधिकांश समय बोलता है।
(B) सभी छात्रों को अनिवार्य रूप से एक ही कार्य पूर्ण करना होगा।
(C) छात्रों को यह विकल्प दिया जाता है कि वे अधिगम का प्रदर्शन किस प्रकार करें।
(D) पाठ्यक्रम कठोर है और छात्र के प्रश्नों की अनुमति नहीं देता।

235. एक अनुभवी शतरंज खिलाड़ी का रणनीतियों और चालों का गहन ज्ञान किसका उदाहरण है:
(A) तरल बुद्धि
(B) सामान्य 'g' कारक
(C) प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक गति
(D) ठोस बुद्धि

236. यह विचार कि लोग दूसरों को देखकर सीखते हैं, क्या कहलाता है:
(A) अवलोकनात्मक अधिगम
(B) शास्त्रीय अनुबंधन
(C) क्रियाप्रसूत अनुबंधन
(D) अव्यक्त अधिगम

237. सृजनात्मकता का वह घटक जिसमें किसी विचार में विवरण जोड़ना सम्मिलित है:
(A) प्रवाह
(B) विस्तारण
(C) लचीलापन
(D) मौलिकता

238. किस बुद्धि सिद्धांतकार को तरल और ठोस बुद्धि के बीच अंतर स्पष्ट करने का श्रेय दिया जाता है?
(A) स्पीयरमैन
(B) कैटेल
(C) थर्स्टन
(D) बिने

239. एक शिक्षक जो धनात्मक शिक्षण वातावरण बनाने में असफल रहता है और जिसके छात्र अल्प प्रगति प्रदर्शित करते हैं, उसमें किसकी कमी है:
(A) शिक्षक प्रभावशीलता
(B) शिक्षण प्रमाण पत्र
(C) विषय वस्तु का ज्ञान
(D) बहु-अभिक्षमता बैटरी

240. प्रत्यक्ष निर्देश एक ऐसी विधि है जो है:
(A) छात्र-केंद्रित और अन्वेषण-आधारित।
(B) सहयोगात्मक और परियोजना-आधारित।
(C) शिक्षक-केंद्रित और सुस्पष्ट।
(D) असंरचित और खोज-उन्मुख।

241. बहु-अभिक्षमता बैटरी किसके लिए सर्वाधिक उपयोगी है?
(A) एकल बुद्धि लब्धि प्राप्तांक प्रदान करने हेतु।
(B) मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों के निदान हेतु।
(C) एकल विषय में उपलब्धि मापन हेतु।
(D) व्यावसायिक विकल्पों में व्यक्तियों के मार्गदर्शन हेतु।

292. कक्षा में सहयोगात्मक अधिगम, जहाँ छात्र समस्या समाधान हेतु समूहों में कार्य करते हैं, किसकी विशेषता है:
(A) शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण
(B) प्रत्यक्ष निर्देश
(C) रटकर याद करना
(D) छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण

293. औपचारिक शिक्षा और संस्कृति से स्वतंत्र नवीन समस्याओं को हल करने की क्षमता कहलाती है:
(A) तरल बुद्धि
(B) ठोस बुद्धि
(C) शाब्दिक बोध
(D) विशिष्ट बुद्धि

294. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति दूसरों के कार्यों को देखकर सीख सकते हैं।
कथन II: यह सिद्धांत मानता है कि अवधान और स्मृति जैसी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की इस अधिगम में कोई भूमिका नहीं होती।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

295. एक प्रभावी शिक्षक की प्राथमिक विशेषताओं में से एक निम्नलिखित क्षमता है:
(A) विषयवस्तु को छात्रों हेतु सुबोध बनाना।
(B) यथासंभव सरल परीक्षण देना।
(C) स्थिति के विपरीत भी पाठ योजना का कड़ाई से अनुपालन करना।
(D) पूर्णतः मौन कक्षा बनाए रखना।

296. "टॉरेंस सृजनात्मक चिन्तन परीक्षण" किसे मापने हेतु अभिकल्पित किए गए हैं:
(A) सामान्य बुद्धि
(B) ठोस बुद्धि
(C) व्यावसायिक अभिक्षमता
(D) अपसारी चिन्तन और सृजनात्मक क्षमताएं

297. स्पीयरमैन और थर्स्टन के बुद्धि सिद्धांतों के बीच मुख्य अंतर किसके अस्तित्व को लेकर है:
(A) विशिष्ट कारक
(B) एक प्रमुख सामान्य कारक
(C) तरल बुद्धि
(D) निष्पादन-आधारित बुद्धि

298. स्पीयरमैन के सिद्धांत के अनुसार, 'g' कारक किसे दर्शाता है:
(A) स्वतंत्र मानसिक क्षमताओं का समुच्चय
(B) सभी संज्ञानात्मक कार्यों के आधार पर एक सामान्य बुद्धि
(C) शिक्षा के माध्यम से प्राप्त ज्ञान
(D) सृजनात्मक चिन्तन क्षमता

299. सृजनात्मकता में 'अपसारी चिन्तन' का सर्वोत्तम वर्णन कौन करता है?
(A) समस्या का एक ही सही समाधान खोजना।
(B) जानकारी को सटीक रूप से स्मरण करना।
(C) कई संभावित विचार या समाधान उत्पन्न करना।
(D) स्थापित नियमों का कड़ाई से पालन करना।

300. शिक्षा मनोविज्ञान में, छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति मुख्य रूप से किस पर बल देती है:
(A) शिक्षक व्याख्यान और टिप्पणी लेखन।
(B) सक्रिय सहभागिता और शिक्षार्थी की संलिप्तता।
(C) कठोर अनुशासन और रटना।
(D) केवल पाठ्यपुस्तक अभ्यास पूर्ण करना।

254. एक प्रभावी शिक्षक के पास शैक्षणिक ज्ञान होता है, जो किसे संदर्भित करता है:
(A) पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु का गहन ज्ञान।
(B) कक्षा को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने का ज्ञान।
(C) विद्यालय की नीतियों और प्रक्रियाओं का ज्ञान।
(D) शिक्षा के इतिहास का ज्ञान।

255. सामाजिक अधिगम सिद्धांत का मूल विचार है कि अधिगम किसके माध्यम से होता है:
(A) दूसरों का अवलोकन और अनुकरण।
(B) आनुवंशिक प्रवृत्तियां।
(C) प्रयास और त्रुटि।
(D) अचेतन मानसिक द्वंद्व।

256. स्पीयरमैन के सिद्धांत में 'g' कारक का तात्पर्य है:
(A) समूह कारक
(B) आनुवंशिक कारक
(C) सामान्य कारक
(D) विकास कारक

257. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): कैटेल ने प्रस्तावित किया कि तरल बुद्धि जैविक रूप से आधारित है और संस्कृति एवं शिक्षा से स्वतंत्र है।
कारण (R): इसके विपरीत, ठोस बुद्धि ज्ञान और कौशलों का संचय है जो संस्कृति और शिक्षा से अत्यधिक प्रभावित होती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

258. कौन सा बुद्धि परीक्षण अशाब्दिक पहेलियों की एक श्रृंखला से निर्मित है जिसमें एक प्रतिरुप को पूर्ण करने की आवश्यकता होती है?
(A) स्टैनफोर्ड-बिने
(B) वेक्स्लर वयस्क बुद्धि मापनी
(C) रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस
(D) बहु-अभिक्षमता बैटरी

259. उस शिक्षण पद्धति की पहचान करें जो छात्र-केंद्रित है।
(A) व्याख्यान
(B) समस्या-आधारित अधिगम
(C) प्रत्यक्ष निर्देश
(D) रटकर अभ्यास

260. शैक्षिक अभ्यास में मनोविज्ञान का एक प्रमुख योगदान यह अंतर्दृष्टि है कि:
(A) सभी छात्र एक ही विधि से सीखते हैं।
(B) छात्र उपलब्धि हेतु अभिप्रेरणा अप्रासंगिक है।
(C) मूल्यांकन का एकमात्र मान्य रुप अंतिम परीक्षा है।
(D) छात्र विकास को समझना अनिवार्य है।

261. सृजनात्मकता के संदर्भ में, लचीलापन निम्नलिखित क्षमता को संदर्भित करता है:
(A) विचारों की विभिन्न श्रेणियां उत्पन्न करना।
(B) बड़ी संख्या में विचार उत्पन्न करना।
(C) अद्वितीय और विरल विचार प्रस्तुत करना।
(D) किसी विचार में विवरणों को सम्मिलित करना।

262. विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण और बहु-अभिक्षमता बैटरी के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) विशिष्ट परीक्षण वयस्कों हेतु है; बैटरी बच्चों हेतु।
(B) विशिष्ट परीक्षण उपलब्धि मापता है; बैटरी अभिक्षमता।
(C) विशिष्ट परीक्षण एक क्षेत्र को मापता है; बैटरी कई क्षेत्रों को।
(D) विशिष्ट परीक्षण एक समूह परीक्षण है; बैटरी व्यक्तिगत।

263. किस सिद्धांतकार ने यह तर्क दिया कि बुद्धि विशिष्ट क्षमताओं की बहुलता है और कोई व्यापक 'g' कारक नहीं होता?
(A) थार्नडाइक
(B) स्पीयरमैन
(C) बिने
(D) वेक्स्लर

264. "शिक्षक प्रभावशीलता" का सर्वोत्तम आकलन किसके द्वारा किया जाता है:
(A) शिक्षक की वरिष्ठता।
(B) कक्षा की स्वच्छता।
(C) सामाजिक माध्यमों पर शिक्षक की लोकप्रियता।
(D) छात्र विकास पर शिक्षक का प्रभाव।

265. सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार, जब एक बच्चा सहपाठी को दंडित होते देख दूसरों को मारना बंद कर देता है, तो यह क्या कहलाता है?
(A) प्रत्यक्ष दंड
(B) प्रतिनिधिक दंड
(C) प्रतिनिधिक सुदृढ़ीकरण
(D) आत्म-सुदृढ़ीकरण

266. एक कक्षा जहाँ छात्र सक्रिय रुप से प्रयोगात्मक कार्यों और सहयोगात्मक चर्चाओं में संलग्न हैं, उसे क्या कहा जाएगा:
(A) शिक्षक-केंद्रित
(B) परीक्षण-केंद्रित
(C) छात्र-केंद्रित
(D) पाठ्यक्रम-केंद्रित

267. बुद्धि सात प्राथमिक मानसिक क्षमताओं से निर्मित है, यह सिद्धांत किसने दिया था:
(A) कैटेल
(B) स्पीयरमैन

का प्रस्ताव रखा, जिसमें शाब्दिक बोध, संख्यात्मक सुविधा और शब्द प्रवाह जैसे घटक शामिल थे। थर्स्टन का मानना था कि बौद्धिक कार्यों को करने के लिए इन विशिष्ट क्षमताओं के मेल की आवश्यकता होती है। अतः उनके मूल वर्गीकरण में कोई एकल वैश्विक कारक या सामान्य बुद्धि को सम्मिलित नहीं किया गया था।

10. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
चार्ल्स स्पीयरमैन ने वास्तव में द्वि-कारक सिद्धांत प्रतिपादित किया था जिसमें उन्होंने सामान्य और विशिष्ट कारकों की विस्तृत चर्चा की थी। हालांकि, तरल और ठोस बुद्धि के बीच सूक्ष्म अंतर स्पष्ट करने का कार्य रेमंड कैटेल ने किया था। स्पीयरमैन का मानना था कि एक मानसिक ऊर्जा सभी संज्ञानात्मक कार्यों में समान रूप से कार्य करती है। कारण में दी गई जानकारी कैटेल के सिद्धांत से संबंधित है, इसलिए स्पीयरमैन के संदर्भ में वह कथन पूर्णतः असत्य और त्रुटिपूर्ण सिद्ध होता है।

11. (D) बुद्धि कई पृथक और स्वतंत्र क्षमताओं का एक समुच्चय है।
एडवर्ड थार्नडाइक ने बुद्धि को एक सामान्य शक्ति मानने के स्थान पर उसे असंख्य स्वतंत्र तत्वों का योग माना था। उनके अनुसार प्रत्येक मानसिक कार्य के लिए एक विशिष्ट प्रकार की सूक्ष्म क्षमता की आवश्यकता होती है। उन्होंने प्रस्तावित किया कि बुद्धि में कई विशिष्ट कारक होते हैं जो आपस में जुड़कर जटिल कार्यों को निष्पादित करते हैं। यह सिद्धांत स्पीयरमैन के एकल कारक के विचार को पूरी तरह नकारते हुए मानसिक स्वायत्तता और बौद्धिक विविधता का प्रबल समर्थन करता है।

12. (B) तरल बुद्धि
रेमंड कैटेल के अनुसार तरल बुद्धि वह जन्मजात क्षमता है जो व्यक्ति को नवीन और अपरिचित समस्याओं को सुलझाने में पूर्णतः सक्षम बनाती है। यह किसी भी प्रकार की औपचारिक शिक्षा या सांस्कृतिक ज्ञान से स्वतंत्र होती है। यह मुख्य रूप से मस्तिष्क के जैविक विकास और तंत्रिका संबंधी दक्षता पर आधारित मानी जाती है। इसकी सहायता से व्यक्ति अमूर्त संबंधों को सरलता से पहचान सकता है और तार्किक निष्कर्ष निकाल सकता है। यह क्षमता किशोरावस्था में अपने उच्चतम शिखर पर होती है।

13. (C) ठोस बुद्धि
ठोस बुद्धि व्यक्ति द्वारा शिक्षा, संस्कृति और जीवन के अनुभवों के माध्यम से अर्जित किए गए ज्ञान का संचित भंडार होती है। जब कोई छात्र ऐतिहासिक तथ्यों को याद रखता है या सीखे गए गणितीय सूत्रों का प्रयोग करता है, तो वह इसी बुद्धि का उपयोग कर रहा होता है। यह क्षमता आयु के साथ निरंतर बढ़ती रहती है क्योंकि व्यक्ति परिवेश से नई जानकारी और कौशल प्राप्त करता है। यह संचित सूचनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने की योग्यता मानी जाती है।

14. (D) वेक्स्लर - शाब्दिक और निष्पादन मापनी
डेविड वेक्स्लर ने बुद्धि मापन को और अधिक व्यापक बनाने के लिए शाब्दिक और निष्पादन उप-परीक्षणों को एकीकृत किया था। उनके परीक्षण में भाषा आधारित प्रश्नों के साथ-साथ ब्लॉक डिजाइन और चित्र व्यवस्था जैसे व्यावहारिक कार्य भी सम्मिलित थे। यह दृष्टिकोण व्यक्ति की समग्र बौद्धिक कार्यप्रणाली का एक संतुलित विवरण प्रस्तुत करता है। अन्य विकल्पों में दिए गए युग्म गलत हैं क्योंकि स्पीयरमैन ने द्वि-कारक सिद्धांत दिया था और थर्स्टन ने प्राथमिक मानसिक क्षमताओं का विचार समाज के सम्मुख रखा था।

15. (A) P-3, Q-2, R-4, S-1
मनोवैज्ञानिकों और उनकी अवधारणाओं का यह मिलान बुद्धि के ऐतिहासिक विकास को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। स्पीयरमैन ने सामान्य कारक के विचार को स्थापित किया, जबकि थर्स्टन ने सात मानसिक क्षमताओं की पहचान की थी। कैटेल ने तरल बुद्धि की अवधारणा दी जो जन्मजात तार्किक क्षमता से जुड़ी है। बिने ने सबसे पहले मानसिक आयु के माध्यम से बच्चों के बौद्धिक स्तर को मापने का वैज्ञानिक आधार तैयार किया था। ये सभी सिद्धांत आधुनिक बुद्धि परीक्षणों के निर्माण का आधार बने हैं।

16. (B) सृजनात्मकता के लिए बुद्धि आवश्यक है, परंतु पर्याप्त नहीं।
बुद्धि और सृजनात्मकता के बीच एक अत्यंत जटिल संबंध पाया जाता है। शोध यह दर्शाते हैं कि नवीन विचार उत्पन्न करने के लिए एक न्यूनतम बौद्धिक स्तर का होना अनिवार्य है। हालांकि, बहुत उच्च बुद्धि लब्धि होने मात्र से कोई व्यक्ति स्वतः सृजनात्मक नहीं बन जाता है। सृजनात्मकता के लिए कल्पनाशीलता, स्वतंत्र सोच और जोखिम लेने जैसे व्यक्तित्व लक्षणों की भी आवश्यकता होती है। अतः बुद्धि केवल आधार प्रदान करती है, परंतु सृजनात्मकता एक स्वतंत्र और विशिष्ट मानसिक प्रक्रिया है।

17. (B) किसी विशेष कौशल या ज्ञान को अर्जित करने की क्षमता अथवा संभावना।
अभिक्षमता परीक्षण का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की भविष्य की संभावनाओं का सटीक आकलन करना है। यह वर्तमान ज्ञान को मापने के स्थान पर इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि व्यक्ति उचित प्रशिक्षण मिलने पर किसी विशिष्ट क्षेत्र में कितना सफल हो सकता है। यह परीक्षण संगीत, यांत्रिक कार्य या गणित जैसे क्षेत्रों में अंतर्निहित प्रतिभा की पहचान करते हैं। इसके परिणाम शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ताकि व्यक्ति अपनी योग्यता अनुसार सही क्षेत्र चुन सके।

18. (A) यह विभिन्न अभिक्षमता क्षेत्रों में क्षमताओं का एक विवरण प्रदान करती है।
बहु-अभिक्षमता बैटरी एक व्यापक मूल्यांकन उपकरण है जो व्यक्ति की कई भिन्न क्षमताओं को एक साथ मापता है। यह केवल एक अंक देने के बजाय शाब्दिक तर्क, संख्यात्मक क्षमता और स्थानिक संबंधों जैसे क्षेत्रों में एक विस्तृत प्रोफाइल तैयार करती है। इससे यह पता चलता है कि व्यक्ति किन क्षेत्रों में सशक्त है और किन में उसे सुधार की आवश्यकता है। यह

(D) खोज अधिगम

280. वेक्स्लर मापनी की वह विलक्षण विशेषता जो उसके विकास के समय विद्यमान थी:
(A) मानसिक आयु की अवधारणा।
(B) समग्र बुद्धि हेतु एकल प्राप्तांक।
(C) केवल अत्यधिक प्रतिभाशाली व्यक्तियों हेतु निर्मित वस्तुएं।
(D) शाब्दिक और निष्पादन क्षमताओं हेतु पृथक मापनी।

281. अपसारी चिन्तन कार्यों में, "मौलिकता" का अंकन अनुक्रियाओं की किस विशेषता पर आधारित होता है?
(A) मात्रा
(B) सांख्यिकीय दुर्लभता
(C) विविधता
(D) विस्तारण का स्तर

282. एक परीक्षण जो विभिन्न व्यवसायों में सफल होने की व्यक्ति की क्षमता को मापता है, वह संभवतः है:
(A) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
(B) उपलब्धि परीक्षण
(C) बहु-अभिक्षमता बैटरी
(D) अंतिम परीक्षा

283. सामाजिक अधिगम सिद्धांत में, किसी विशिष्ट स्थिति में सफल होने की अपनी क्षमता में व्यक्ति के विश्वास को क्या कहा जाता है:
(A) आत्म-सम्मान
(B) प्रतिनिधिक सुदृढ़ीकरण
(C) नकारात्मक सुदृढ़ीकरण
(D) आत्म-प्रभावकारिता

284. निम्नलिखित में से कौन शिक्षक प्रभावशीलता का एक प्रमुख घटक है?
(A) कक्षा के वातावरण को प्रबंधित करने की क्षमता।
(B) व्यक्तिगत छात्र आवश्यकताओं की उपेक्षा की क्षमता।
(C) केवल एक शिक्षण पद्धति के उपयोग की क्षमता।
(D) मध्य सत्र तक पाठ्यपुस्तक पूर्ण करने की क्षमता।

285. बुद्धि और सृजनात्मकता के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्तांक उच्च सृजनात्मकता हेतु पर्याप्त है।
2. सृजनात्मकता में नवीन और उपयोगी कार्य करना सम्मिलित है।
3. अभिसारी चिन्तन, अपसारी चिन्तन की तुलना में सृजनात्मकता से अधिक संबंधित है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 3
(D) 1, 2, और 3

286. स्पीयरमैन के द्वि-कारक सिद्धांत में 's' किसे संदर्भित करता है:
(A) सामाजिक बुद्धि
(B) विशिष्ट क्षमताएं
(C) स्थानिक क्षमताएं
(D) प्रतीकात्मक क्षमताएं

287. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): परियोजना-आधारित अधिगम जैसी छात्र-केंद्रित विधियां शिक्षक-केंद्रित विधियों की तुलना में अधिक समय ले सकती हैं।
कारण (R): इनमें सूचना के केवल निष्क्रिय ग्रहण के स्थान पर छात्र अन्वेषण, सहयोग और निर्माण हेतु समय आवश्यक होता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

288. शिक्षा मनोविज्ञान को लागू करने का निम्नलिखित में से कौन सा लाभ नहीं है?
(A) शिक्षकों को व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने में सहायता करना।
(B) शिक्षण रणनीतियों के चयन हेतु आधार प्रदान करना।
(C) छात्र अभिप्रेरणा में अंतर्दृष्टि प्रदान करना।
(D) यह निश्चित करना कि सभी छात्र अनिवार्य रूप से उच्च अंक प्राप्त करेंगे।

289. बच्चों के लिए वेक्स्लर बुद्धि मापनी किसके लिए उपयुक्त है:
(A) केवल वयस्कों हेतु
(B) केवल विद्यालय पूर्व बच्चों हेतु
(C) एक ही परीक्षण सभी आयु समूहों हेतु
(D) स्कूली आयु के बच्चों हेतु

290. यह सिद्धांत कि बुद्धि एक पदानुक्रम है जिसमें 'g' शीर्ष पर है और विशिष्ट क्षमताएं नीचे हैं, किसके साथ संगत है:
(A) थार्नडाइक और थर्स्टन
(B) बिने और वेक्स्लर
(C) स्पीयरमैन और कैटेल
(D) बेंडुरा और स्किनर

291. पारंपरिक बुद्धि परीक्षणों की सांस्कृतिक पूर्वाग्रह की आलोचना को न्यून करने हेतु कौन सा परीक्षण विशेष रूप से अभिकल्पित किया गया था?
(A) स्टैनफोर्ड-बिने
(B) रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस
(C) वेक्स्लर वयस्क बुद्धि मापनी
(D) थार्नडाइक का CAVD परीक्षण

(C) वेक्स्लर
(D) थर्स्टन

268. वेक्स्लर मापनी पर शाब्दिक उप-परीक्षण का एक उदाहरण है:
(A) शब्दावली
(B) ब्लॉक डिज़ाइन
(C) चित्र व्यवस्था
(D) वस्तु संयोजन

269. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: शिक्षा मनोविज्ञान एक शुद्ध विज्ञान है जो केवल सिद्धांतों के विकास पर केंद्रित है।
कथन II: शिक्षा मनोविज्ञान एक अनुप्रयुक्त विज्ञान है जो शैक्षिक परिणामों में सुधार हेतु मनोवैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

270. "थ्रेसहोल्ड परिकल्पना" के अनुसार बुद्धि लब्धि के एक निश्चित स्तर (लगभग 120) के पश्चात, बुद्धि और सृजनात्मकता के बीच सह-संबंध:
(A) अत्यधिक धनात्मक हो जाता है।
(B) अत्यंत निर्बल या नगण्य हो जाता है।
(C) अत्यधिक ऋणात्मक हो जाता है।
(D) पूर्ण हो जाता है।

271. नामों और संख्याओं की जांच में गति एवं परिशुद्धता को मापने वाला लिपिकीय अभिक्षमता परीक्षण किसका प्रकार है:
(A) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
(B) बहु-अभिक्षमता बैटरी
(C) सामान्य बुद्धि परीक्षण
(D) सृजनात्मकता परीक्षण

272. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. मानसिक आयु
Q. 'g' और 's' कारक
R. प्राथमिक मानसिक क्षमताएं
S. तरल और ठोस
सूची II: (सिद्धांतकार)
1. कैटेल
2. थर्स्टन
3. स्पीयरमैन
4. बिंने
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

273. निम्नलिखित में से कौन बेंडुरा के अवलोकनात्मक अधिगम का घटक नहीं है?
(A) अवधान
(B) प्रतिधारण
(C) अभिप्रेरणा
(D) शास्त्रीय अनुबंधन

274. छात्र-केंद्रित निर्देश का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि:
(A) यह सभी छात्रों हेतु समान परिणामों की निश्चितता प्रदान करता है।
(B) यह विशाल पाठ्यक्रम को पूर्ण करने का द्रुत मार्ग है।
(C) यह गहन समझ और आलोचनात्मक चिन्तन को बढ़ावा देता है।
(D) इसमें शिक्षक को कम कार्य करना पड़ता है।

275. निम्नलिखित परिदृश्य पर विचार कीजिए: एक विद्यालय प्राचार्य शिक्षक प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना चाहता है। कौन सा साक्ष्य सर्वाधिक मूल्यवान होगा?
(A) एक सर्वेक्षण जिसमें छात्रों की पसंद के शिक्षक दर्शाए गए हों।
(B) छात्र विकास को दर्शाने वाला मूल्यांकन संबंधी आंकड़ा।
(C) प्रत्येक शिक्षक के अनुभव के वर्षों की संख्या।
(D) शिक्षकों की पाठ योजनाओं की सुस्पष्टता।

276. बुद्धि के 'g' और 's' कारकों के बीच अंतर किसने स्पष्ट किया था:
(A) बिने
(B) थर्स्टन
(C) कैटेल
(D) स्पीयरमैन

277. किसी व्यक्ति का शब्दावली और सामान्य जानकारी का ज्ञान किसका उत्तम सूचक है:
(A) ठोस बुद्धि
(B) तरल बुद्धि
(C) प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक गति
(D) स्थानिक दृश्यीकरण

278. शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य केंद्र किस पर है:
(A) शिक्षा के दार्शनिक आधार।
(B) शैक्षिक प्रणालियों का इतिहास।
(C) शिक्षण में मनोविज्ञान का अनुप्रयोग।
(D) अधिगम स्थलों का स्थापत्य नियोजन।

279. व्याख्यान विधि किस दृष्टिकोण का उदाहरण है:
(A) शिक्षक-केंद्रित
(B) छात्र-केंद्रित
(C) अन्वेषण-आधारित

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) विभिन्न कौशलों और ज्ञान को अर्जित करने तथा उन्हें लागू करने की क्षमता।
मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से बौद्धिक क्षमता का अर्थ केवल सूचनाओं का संचित संग्रह मात्र नहीं है। यह पर्यावरण के साथ प्रभावी रूप से अनुकूलन करने और जटिल समस्याओं को सफलतापूर्वक हल करने की एक अत्यंत व्यापक मानसिक प्रक्रिया मानी जाती है। इसमें नवीन जानकारी को निरंतर ग्रहण करना और उसे विभिन्न व्यावहारिक परिस्थितियों में सफलतापूर्वक उपयोग करना भी सम्मिलित है। यह क्षमता व्यक्ति के सीखने की तीव्र गति और उसके तार्किक व्यवहार को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2. (A) बुद्धि एक अखंड क्षमता है जो जीवन भर स्थिर रहती है।
आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार बौद्धिक योग्यता कोई स्थिर या अविभाज्य इकाई नहीं मानी जाती है। इसमें समय के साथ निरंतर अनुभव और प्रभावी अधिगम के माध्यम से सकारात्मक परिवर्तन करना पूर्णतः संभव है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने यह प्रमाणित किया है कि बुद्धि में कई विशिष्ट मानसिक क्षमताएं समाहित होती हैं। यह निरंतर विकसित होने वाली एक जटिल प्रक्रिया है जो मुख्य रूप से आनुवंशिकता और परिवेश की अंतःक्रिया से प्रभावित होती है। इसे पूरी तरह से अपरिवर्तनीय मानना आधुनिक वैज्ञानिक शोधों के विपरीत है।

3. (C) उन बच्चों की पहचान करना जिन्हें विशेष शैक्षिक सहायता की आवश्यकता थी।
बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में अल्फ्रेड बिने और थियोडोर साइमन ने प्रथम व्यावहारिक बुद्धि परीक्षण विकसित किया था। इसका मुख्य उद्देश्य फ्रांसीसी विद्यालय प्रणाली में उन विद्यार्थियों को चिन्हित करना था जो सामान्य शिक्षण विधियों से पूर्ण लाभ नहीं उठा पा रहे थे। इसके माध्यम से शिक्षकों को बच्चों की विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप नवीन शिक्षण रणनीतियां बनाने में पर्याप्त सहायता मिली। यह वैज्ञानिक परीक्षण प्रभावी ढंग से शैक्षिक पिछड़ेपन का सटीक आकलन प्रस्तुत करने में सफल सिद्ध हुआ था।

4. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
वेक्स्लर मापनी ने बुद्धि मापन के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं नवीन आयाम प्रस्तुत किए हैं। यह केवल एक समग्र बुद्धि लब्धि प्राप्तांक तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति की संज्ञानात्मक शक्तियों का विस्तृत विवरण भी प्रदान करती है। यह परीक्षण शाब्दिक क्षमताओं और क्रियात्मक निष्पादन के लिए अलग-अलग प्राप्तांक देता है। इससे नैदानिक स्तर पर यह समझना सरल हो जाता है कि व्यक्ति किन विशिष्ट क्षेत्रों में निपुण है और कहाँ उसे विशेष सहायता की आवश्यकता है।

5. (C) रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस
यह परीक्षण विशेष रूप से भाषाई बाधाओं और विभिन्न सांस्कृतिक भिन्नताओं के प्रभाव को न्यूनतम करने के लिए तैयार किया गया है। इसमें शब्दों के स्थान पर अमूर्त ज्यामितीय आकृतियों और विभिन्न प्रतिरूपों का व्यापक उपयोग किया जाता है। इसके माध्यम से व्यक्ति की तार्किक क्षमता और नवीन समस्याओं को सुलझाने के कौशल का निष्पक्ष मूल्यांकन संभव होता है। यह उन स्थितियों में अत्यंत प्रभावी सिद्ध होता है जहाँ विभिन्न पृष्ठभूमि के व्यक्तियों की बौद्धिक क्षमता का सटीक मापन अत्यंत आवश्यक हो।

6. (B) रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस
दृश्य प्रतिरूपों को पूर्ण करने का कार्य अमूर्त तर्कशक्ति का एक अत्यंत उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। इस प्रकार के परीक्षण में परीक्षार्थी को उपलब्ध विकल्पों में से लुप्त भाग को पहचानना होता है जो तार्किक रूप से श्रृंखला को पूर्ण करे। यह प्रक्रिया सांस्कृतिक ज्ञान या भाषा के स्थान पर विशुद्ध मानसिक क्षमता पर आधारित होती है। इसमें संबंधों को समझने और नवीन परिस्थितियों में मानसिक संक्रियाएं करने की योग्यता का गहन परीक्षण वैज्ञानिक ढंग से किया जाता है।

7. (D) विशिष्ट कार्यों के लिए आवश्यक विशिष्ट क्षमताएं।
चार्ल्स स्पीयरमैन के द्वि-कारक सिद्धांत के अनुसार बुद्धि दो महत्वपूर्ण घटकों से निर्मित मानी जाती है। जहाँ सामान्य कारक सभी कार्यों में समान रूप से प्रभावी होता है, वहीं विशिष्ट कारक केवल एक विशेष प्रकार की गतिविधि से संबंधित होता है। उदाहरण के लिए, संगीत या गणित के क्षेत्र में असाधारण प्रदर्शन के लिए उस विशिष्ट कार्य से संबंधित क्षमता की आवश्यकता होती है। यह कारक व्यक्ति की विभिन्न कौशलों में व्यक्तिगत निपुणता और दक्षता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

8. (D) 1, 2, और 3
बुद्धि के विभिन्न सिद्धांत मानवीय संज्ञान को गहराई से समझने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। स्पीयरमैन ने एक सामान्य शक्ति पर बल दिया, जबकि थर्स्टन ने इसे सात प्राथमिक मानसिक क्षमताओं का समूह माना। कैटेल ने बौद्धिक संरचना को जैविक रूप से आधारित तरल बुद्धि और अर्जित ज्ञान वाली ठोस बुद्धि में विभाजित किया। ये सभी सिद्धांत इस बात की पुष्टि करते हैं कि बुद्धि एक बहुआयामी संरचना है जो विभिन्न जटिल मानसिक प्रक्रियाओं का अंतिम परिणाम होती है।

9. (C) सामान्य बुद्धि ('g' कारक)
लुई थर्स्टन ने स्पीयरमैन के एकल सामान्य कारक के विचार को सांख्यिकीय आधार पर चुनौती दी थी। उन्होंने अपने समूह कारक सिद्धांत में सात स्वतंत्र प्राथमिक मानसिक क्षमताओं

242. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): मूल बिने-साइमन मापनी बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों की पहचान हेतु विकसित की गई थी।
कारण (R): यह मापनी बच्चे की 'मानसिक आयु' की तुलना उसकी 'वास्तविक आयु' से करने के विचार पर आधारित थी।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

243. बुद्धि के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) इसमें अपने पर्यावरण के अनुकूल होने की क्षमता सम्मिलित है।
(B) इसे सार्वभौमिक रूप से एक एकल और एकात्मक क्षमता माना जाता है।
(C) यह आनुवंशिकता और पर्यावरण दोनों से प्रभावित हो सकती है।
(D) इसमें अमूर्त चिन्तन की क्षमता सम्मिलित है।

244. शिक्षा में मनोविज्ञान के योगदान में निम्नलिखित में से किसे छोड़कर शेष सभी सम्मिलित हैं?
(A) अभिप्रेरणा और अधिगम के सिद्धांत प्रदान करना।
(B) कक्षा प्रबंधन की विधियां विकसित करना।
(C) मानकीकृत परीक्षण जैसे मूल्यांकन उपकरण निर्मित करना।
(D) शिक्षकों के लिए वेतनमान निर्धारित करना।

245. एक छात्र जो समाचार पत्र के कई पृथक उपयोगों के बारे में सोच सकता है, वह सृजनात्मकता का प्रदर्शन कर रहा है:
(A) प्रवाह
(B) कठोरता
(C) विस्तारण
(D) अनुरूपता

246. सामाजिक अधिगम सिद्धांत शास्त्रीय व्यवहारवाद से किस प्रकार भिन्न है:
(A) यह व्यवहार सीखने की संभावना को अस्वीकार करता है।
(B) यह विशेष रूप से पशुओं पर ध्यान केंद्रित करता है।
(C) यह संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की भूमिका को स्वीकार करता है।
(D) यह सुदृढ़ीकरण की अवधारणा को निरस्त करता है।

247. निम्नलिखित शिक्षण दृष्टिकोणों को शिक्षक-केंद्रित से छात्र-केंद्रित के क्रम में व्यवस्थित करें।
1. अन्वेषण-आधारित अधिगम
2. व्याख्यान
3. निर्देशित अभ्यास सहित प्रत्यक्ष निर्देश
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम दर्शाता है?
(A) 1, 3, 2
(B) 2, 1, 3
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 2, 1

248. वेक्स्लर मापनी विचलन बुद्धि लब्धि प्रदान करती है, जो दर्शाती है:
(A) किसी व्यक्ति की मानसिक आयु को वास्तविक आयु से विभाजित करना।
(B) सही उत्तर दिए गए प्रश्नों की कुल संख्या।
(C) व्यक्ति के शाब्दिक और निष्पादन प्राप्तांकों का अनुपात।
(D) एक प्राप्तांक अपने आयु-समूह के औसत से कितना विचलित है।

249. इनमें से कौन सा सिद्धांत सामान्य बुद्धि कारक 'g' की भूमिका पर बल देता है?
(A) थर्स्टन का समूह कारक सिद्धांत
(B) स्पीयरमैन का द्वि-कारक सिद्धांत
(C) थार्नडाइक का बहु-कारक सिद्धांत
(D) गार्डनर का बहु-बुद्धि सिद्धांत

250. निम्नलिखित में से कौन छात्र-केंद्रित कक्षा की विशेषता है?
(A) शिक्षक सूचना का एकमात्र स्रोत है।
(B) छात्र ज्ञान के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता हैं।
(C) अधिगम एक सक्रिय और रचनात्मक प्रक्रिया है।
(D) संवाद केवल शिक्षक की ओर से एकतरफा होता है।

251. शिक्षा मनोविज्ञान के 'कार्यक्षेत्र' में निम्नलिखित में से किसका अध्ययन सम्मिलित है?
(A) विद्यालयों का भौतिक आधारभूत ढांचा।
(B) शिक्षा नीति का राजनीतिक इतिहास।
(C) विद्यालय जनपदों का वित्तीय प्रबंधन।
(D) शिक्षार्थी का विकास और व्यक्तिगत भिन्नताएं।

252. विदेशी भाषा सीखने की किसी व्यक्ति की क्षमता को मापने हेतु अभिकल्पित परीक्षण किसका उदाहरण होगा:
(A) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
(B) उपलब्धि परीक्षण
(C) सामान्य बुद्धि परीक्षण
(D) व्यक्तित्व परीक्षण

253. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: उच्च सृजनात्मकता प्रायः अपसारी चिन्तन से संबंधित होती है।
कथन II: बुद्धि लब्धि परीक्षणों द्वारा मापी गई उच्च बुद्धि प्रायः अभिसारी चिन्तन से संबंधित होती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

विस्तृत विश्लेषण छात्रों को उनके करियर और शैक्षिक विकल्पों के बारे में अधिक सटीक निर्णय लेने में सहायता करता है।

19. (C) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
जब किसी परीक्षण को किसी विशेष पेशे या कार्य के लिए आवश्यक संकीर्ण क्षमताओं को मापने हेतु बनाया जाता है, तो वह विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण कहलाता है। विमान चालकों के लिए स्थानिक बोध और समन्वय का परीक्षण इसी श्रेणी में आता है क्योंकि ये कौशल उस विशिष्ट कार्य में सफलता हेतु अनिवार्य हैं। यह सामान्य बुद्धि परीक्षण से भिन्न होता है क्योंकि इसका ध्यान केवल संबंधित क्षेत्र की सफलता का वैज्ञानिक पूर्वानुमान लगाने पर पूर्णतः केंद्रित होता है।

20. (D) अपसारी चिन्तन
सृजनात्मकता का मूल तत्व किसी एक समस्या के अनेक और अनोखे समाधान खोजने की क्षमता में निहित होता है। इसे अपसारी चिन्तन कहा जाता है, जहाँ व्यक्ति स्थापित सीमाओं से परे जाकर नवीन विचारों की निरंतर खोज करता है। यह प्रक्रिया कल्पनाशीलता और लचीलेपन पर आधारित होती है, जो पारंपरिक या रटे-रटाए उत्तरों के स्थान पर मौलिकता को बढ़ावा देती है। यह वह संज्ञानात्मक आधार है जो वैज्ञानिक आविष्कारों और कलात्मक कृतियों के सृजन को वास्तविक रूप में संभव बनाता है।

21. (C) प्रवाह
सृजनात्मकता के परीक्षण में 'प्रवाह' का तात्पर्य एक निश्चित समय सीमा के भीतर उत्पन्न किए गए सार्थक विचारों की कुल संख्या से होता है। जब छात्रों को किसी वस्तु के असामान्य उपयोग बताने के लिए कहा जाता है, तो उनके उत्तरों की प्रचुरता उनकी विचारशीलता की गति को दर्शाती है। यह मापता है कि व्यक्ति का मस्तिष्क कितनी शीघ्रता से विभिन्न संभावनाओं को उत्पन्न कर सकता है। विचारों की यह उच्च संख्या मानसिक सक्रियता और सृजनात्मक ऊर्जा का प्रत्यक्ष संकेत मानी जाती है।

22. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
सृजनात्मकता में नवीनता के साथ-साथ सामाजिक उपयोगिता का होना अत्यंत अनिवार्य है। केवल नया होना पर्याप्त नहीं है, विचार का सार्थक होना भी आवश्यक है। दूसरी ओर, वेक्स्लर जैसे पारंपरिक बुद्धि परीक्षण मुख्य रूप से अभिसारी चिन्तन और तार्किक क्षमता को मापते हैं। वे सृजनात्मकता के अपसारी और कल्पनाशील पहलुओं का आकलन करने के लिए पर्याप्त नहीं माने जाते हैं। सृजनात्मकता को मापने के लिए विशेष रूप से अभिकल्पित टॉरेंस जैसे परीक्षणों की आवश्यकता होती है जो मौलिकता का मूल्यांकन करते हैं।

23. (B) शिक्षा में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का अनुप्रयोग करने वाला एक अनुप्रयुक्त विज्ञान।
शिक्षा मनोविज्ञान केवल सिद्धांतों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह उन सिद्धांतों का व्यावहारिक और प्रभावी उपयोग है। यह मनोविज्ञान के नियमों को शिक्षण और अधिगम की प्रक्रियाओं में लागू करके शिक्षा को अधिक गुणवत्तापूर्ण बनाता है। इसका उद्देश्य छात्र के व्यवहार, विकास और सीखने की शैली को समझकर उचित शैक्षणिक वातावरण तैयार करना है। यह एक अनुप्रयुक्त विज्ञान है क्योंकि यह वास्तविक कक्षा की समस्याओं का समाधान खोजने और शिक्षण विधियों को निरंतर सुधारने पर केंद्रित रहता है।

24. (A) अधिगम अक्षमताओं के लिए औषधीय उपचार निर्धारित करना।
शिक्षा मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र मुख्य रूप से अधिगम की प्रक्रिया और छात्र के विकास से संबंधित माना जाता है। इसमें शिक्षण रणनीतियां बनाना, संज्ञानात्मक विकास को समझना और सामाजिक कारकों के प्रभाव का वैज्ञानिक अध्ययन करना शामिल है। हालांकि, चिकित्सीय निदान या औषधियों का निर्धारण करना चिकित्सा विज्ञान और मनोरोग विज्ञान का विशिष्ट क्षेत्र है, शिक्षा मनोविज्ञान का नहीं। शिक्षा मनोवैज्ञानिक केवल शैक्षणिक हस्तक्षेप और व्यवहार संबंधी रणनीतियों के माध्यम से ही छात्र की सहायता करने के लिए अधिकृत होते हैं।

25. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
शिक्षा मनोविज्ञान एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है जिससे शिक्षक बाल विकास और सीखने के विभिन्न तरीकों को गहराई से समझ सकते हैं। इसका प्राथमिक लक्ष्य शिक्षण प्रक्रिया को अधिक वैज्ञानिक, प्रभावी और व्यवस्थित बनाना है। जब एक शिक्षक शिक्षार्थी की मनोवैज्ञानिक अवस्था को समझता है, तो वह कक्षा में अधिक सुव्यवस्थित और प्रेरक वातावरण निर्मित कर पाता है। अतः यह अनुशासन शिक्षण और अधिगम के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करता है जो अंततः शैक्षिक परिणामों को सुधारता है।

26. (A) अभिप्रेरणा और अधिगम के सिद्धांतों का प्रतिपादन।
मनोविज्ञान ने शिक्षा क्षेत्र को ऐसे सशक्त सिद्धांत प्रदान किए हैं जो यह समझाते हैं कि बच्चे कैसे सीखते हैं और उन्हें कैसे प्रेरित किया जा सकता है। ये सिद्धांत शिक्षकों को कक्षा में उचित सुदृढ़ीकरण और सही शिक्षण विधियों का चयन करने में मदद करते हैं। भौतिक आधारभूत ढांचे या प्रशासनिक नीतियों के विपरीत, ये मनोवैज्ञानिक योगदान सीधे तौर पर कक्षा के भीतर होने वाली शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। यह ज्ञान प्रभावी शिक्षण के लिए अनिवार्य माना जाता है।

27. (D) यह पहचानना कि छात्रों का अधिगम उनके विकास से प्रभावित होता है।
शिक्षा मनोविज्ञान की समझ रखने वाला शिक्षक यह भली-भांति जानता है कि प्रत्येक छात्र की सीखने की क्षमता उसके शारीरिक और मानसिक विकास के स्तर पर निर्भर करती है। वह सभी छात्रों के लिए एक ही विधि का उपयोग करने के बजाय उनकी व्यक्तिगत भिन्नताओं का सम्मान करता है। ऐसा शिक्षक विषयवस्तु के साथ-साथ छात्र की भावनात्मक और संज्ञानात्मक अवस्था पर भी ध्यान देता है। वह विकास के विभिन्न चरणों के अनुरूप अपनी शिक्षण शैलियों में लचीलापन लाता है।

28. (D) 1, 2, और 3
शिक्षा में मनोविज्ञान का योगदान अत्यंत व्यापक और बहुआयामी माना जाता है। यह शिक्षकों को छात्रों की व्यक्तिगत क्षमताओं के अनुरूप उद्देश्य निर्धारित करने में वैज्ञानिक मार्गदर्शन प्रदान करता है। साथ ही, यह मूल्यांकन की ऐसी विधियां विकसित करता है जो रटने के बजाय वास्तविक अधिगम को माप सकें। कक्षा प्रबंधन और छात्रों को निरंतर प्रेरित रखने की अंतर्दृष्टि भी इसी विषय से प्राप्त होती है। ये सभी तत्व मिलकर एक प्रभावी और छात्र-हितैषी शिक्षण वातावरण का निर्माण करते हैं।

29. (C) ज्ञान के निर्माण के लिए सक्रिय सहभागिता वाली एक संवादात्मक प्रक्रिया।
आधुनिक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अधिगम को केवल सूचनाओं का हस्तांतरण नहीं माना जाता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ छात्र अपने पूर्व ज्ञान और नए अनुभवों के बीच संबंध स्थापित करते हुए स्वयं अर्थ का निर्माण करते हैं। इसमें शिक्षक और छात्र के बीच निरंतर संवाद और सक्रिय भागीदारी अनिवार्य मानी जाती है। जब छात्र प्रश्न पूछते हैं और सामूहिक चर्चाओं में भाग लेते हैं, तब वास्तविक समझ विकसित होती है। यह निष्क्रियता के स्थान पर सक्रिय खोज पर आधारित है।

30. (D) छात्र अधिगम और विकास पर पड़ने वाला मापने योग्य प्रभाव।
शिक्षक की प्रभावशीलता का वास्तविक मूल्यांकन छात्र के सर्वांगीण विकास में उसके योगदान से होता है। केवल अनुभव या डिग्रियां यह सुनिश्चित नहीं करतीं कि शिक्षण प्रभावी है। एक सफल शिक्षक वह है जो छात्रों के ज्ञान, व्यवहार और कौशल में सकारात्मक परिवर्तन लाने में पूर्णतः सक्षम हो। जब छात्रों के सीखने के परिणामों में स्पष्ट सुधार दिखाई देता है, तभी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी माना जा सकता है। यह प्रभाव छात्रों की सफलता और उनकी रुचि में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

31. (A) कैटेल का बुद्धि सिद्धांत
व्यवहारवादी सिद्धांत मुख्य रूप से बाह्य उद्दीपकों और उनके प्रति होने वाली अनुक्रियाओं पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं। शास्त्रीय और क्रियाप्रसूत अनुबंधन इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं जो सीखने को पर्यावरण के प्रभाव से जोड़ते हैं। इसके विपरीत, कैटेल का बुद्धि सिद्धांत मानव संज्ञान की आंतरिक संरचना और जैविक क्षमताओं से संबंधित माना जाता है। यह मानसिक योग्यताओं के वर्गीकरण पर आधारित है, न कि व्यवहार के सुदृढ़ीकरण या संशोधन पर। अतः इसे संज्ञानात्मक सिद्धांतों की श्रेणी में रखा जाता है।

32. (B) अवलोकन, अनुकरण और प्रतिरूपण।
अल्बर्ट बेंडुरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य अपने व्यवहार का अधिकांश भाग दूसरों को देखकर सीखता है। इसमें किसी आदर्श व्यक्ति के कार्यों का बारीकी से निरीक्षण करना और फिर उसी व्यवहार को अपने जीवन में उतारना सम्मिलित होता है। यह प्रक्रिया केवल यांत्रिक नकल नहीं है, बल्कि इसमें स्मृति और अभिप्रेरणा जैसे संज्ञानात्मक घटक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह सिद्धांत बताता है कि सामाजिक परिवेश हमारे व्यवहार को आकार देने में अत्यंत प्रभावशाली और निर्णायक होता है।

33. (B) अवलोकनात्मक अधिगम
जब कोई बच्चा अपने बड़ों के व्यवहार को देखकर उसे अपने आचरण में अपनाता है, तो यह अवलोकनात्मक अधिगम का सटीक उदाहरण माना जाता है। इस प्रक्रिया में प्रत्यक्ष शिक्षण की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि बच्चा केवल अवलोकन के माध्यम से सामाजिक शिष्टाचार और नैतिक मूल्य सीखता है। बेंडुरा के अनुसार, इस प्रकार के अधिगम में 'आदर्श प्रतिरूप' की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यह दर्शाता है कि बच्चे अपने आसपास के वातावरण से निरंतर अनौपचारिक रूप से ज्ञान प्राप्त करते रहते हैं।

34. (A) अवधान और स्मृति जैसी संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं।
पारंपरिक व्यवहारवाद अधिगम को केवल उद्दीपन और अनुक्रिया के बीच एक सीधा संबंध मानता था। सामाजिक अधिगम सिद्धांत ने इस विचार में महत्वपूर्ण सुधार करते हुए मानसिक प्रक्रियाओं को भी स्थान दिया है। इसके अनुसार, किसी व्यवहार को सीखने के लिए उस पर ध्यान देना और उसे याद रखना अनिवार्य होता है। यह मध्यवर्ती संज्ञानात्मक अवस्थाएं ही तय करती हैं कि देखा गया व्यवहार अपनाया जाएगा या नहीं। इस प्रकार, यह सिद्धांत व्यवहार और संज्ञान के बीच एक सेतु का कार्य करता है।

35. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
शिक्षण पद्धतियों को उनके केंद्र बिंदु के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। व्याख्यान और प्रत्यक्ष निर्देश शिक्षक-केंद्रित विधियां हैं क्योंकि इनमें शिक्षक सूचना का मुख्य स्रोत होता है और छात्र निष्क्रिय रूप से सुनते हैं। इसके विपरीत, परियोजना आधारित और अन्वेषण आधारित अधिगम छात्र-केंद्रित हैं क्योंकि यहाँ छात्र स्वयं खोज और क्रियाशीलता के माध्यम से ज्ञान अर्जित करते हैं। यह वर्गीकरण स्पष्ट करता है कि अधिगम की प्रक्रिया में नियंत्रण और सक्रियता का स्तर किस प्रकार भिन्न होता है।

36. (D) ज्ञान सीधे विशेषज्ञ से नौसिखिए को प्रेषित किया जाता है।
शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण में शिक्षक को ज्ञान का अंतिम प्राधिकारी और एकमात्र स्रोत माना जाता है। इस व्यवस्था में शिक्षक सक्रिय रूप से सूचनाएं प्रदान करता है, जबकि छात्र उन्हें केवल ग्रहण करने का कार्य करते हैं। कक्षा की पूरी नियंत्रण शक्ति और निर्णय लेने का अधिकार शिक्षक के पास सुरक्षित होता है। इसमें छात्रों की व्यक्तिगत रुचि या पूर्व ज्ञान को सीमित स्थान मिलता है। यह विधि बड़े समूहों तक जानकारी पहुँचाने के लिए तो प्रभावी है, परंतु इसमें छात्र की सक्रिय भागीदारी कम होती है।

37. (C) व्याख्यान विधि
व्याख्यान विधि पारंपरिक शिक्षण का एक ऐसा रूप है जिसमें शिक्षक निरंतर बोलता है और छात्र केवल सुनते हैं। इसमें संवाद की संभावना बहुत कम होती है और छात्र अधिगम की प्रक्रिया

में पूरी तरह से शिक्षक पर निर्भर रहते हैं। अन्वेषण, खोज और सहयोगात्मक अधिगम जैसी विधियों के विपरीत, व्याख्यान में छात्रों को स्वयं प्रयोग करने या प्रश्न पूछने के अवसर अत्यंत सीमित मिलते हैं। अतः इसे विशुद्ध रूप से शिक्षक-केंद्रित श्रेणी में रखा जाता है जो निष्क्रिय अधिगम को प्रोत्साहित करती है।

38. (B) सुगमकर्ता और सह-शिक्षार्थी।
छात्र-केंद्रित कक्षा में शिक्षक की भूमिका एक तानाशाह के बजाय एक मार्गदर्शक की होती है। वह छात्रों को निर्देश देने के स्थान पर उनके लिए सीखने के अवसर और आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराता है। शिक्षक छात्रों की जिज्ञासा को प्रोत्साहित करता है और उन्हें स्वयं समस्याओं का समाधान खोजने में मदद करता है। इस परिवेश में शिक्षक भी छात्रों के साथ सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा बनता है। यह दृष्टिकोण शिक्षक और छात्र के बीच एक सहयोगी और संवादात्मक संबंध विकसित करने पर बल देता है।

39. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
शिक्षक-केंद्रित और छात्र-केंद्रित दोनों विधियों के अपने विशिष्ट प्रभाव और आलोचनाएं होती हैं। जहाँ पारंपरिक विधियां रटने और तथ्यों को याद करने पर अधिक जोर देती हैं, वहीं आधुनिक छात्र-केंद्रित विधियां छात्रों की सोच को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं। छात्र-केंद्रित परिवेश में विद्यार्थी अपने सीखने की प्रक्रिया के प्रति अधिक उत्तरदायी महसूस करते हैं, जिससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है। ये विधियां आज की बदलती शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुसार आलोचनात्मक सोच और सक्रिय सहभागिता के लिए अनिवार्य हैं।

40. (A) समस्या-आधारित अधिगम जैसा छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण।
आलोचनात्मक चिन्तन और समस्या-समाधान कौशल तभी विकसित हो सकते हैं जब छात्रों को वास्तविक चुनौतियों का सामना करने का अवसर मिले। समस्या-आधारित अधिगम में छात्र सक्रिय रूप से जानकारी एकत्र करते हैं, तर्क करते हैं और समाधानों का परीक्षण करते हैं। यह प्रक्रिया उनके मस्तिष्क को सक्रिय करती है और उन्हें केवल सूचनाएं रटने के बजाय उनके विश्लेषण के योग्य बनाती है। शिक्षक-केंद्रित विधियां इन कौशलों के विकास के लिए पर्याप्त स्वतंत्रता और चुनौती प्रदान करने में सफल नहीं हो पाती हैं।

41. (C) स्टैनफोर्ड-बिने परीक्षण
लुईस टरमन द्वारा संशोधित स्टैनफोर्ड-बिने परीक्षण ने बुद्धि मापन में 'मानसिक आयु' और 'वास्तविक आयु' के अनुपात का उपयोग करना प्रारंभ किया था। यह अवधारणा मूल रूप से बिने द्वारा विकसित की गई थी ताकि बच्चों के बौद्धिक स्तर की तुलना उनके आयु वर्ग के औसत प्रदर्शन से की जा सके। इसके आधार पर ही बुद्धि लब्धि की गणना का सूत्र तैयार हुआ। यह ऐतिहासिक नवाचार बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमताओं को एक सांख्यिकीय मान प्रदान करने में अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुआ था।

42. (A) साहचर्य स्मृति - नवीन, अमूर्त समस्याओं को हल करने की क्षमता।
थर्स्टन की सात प्राथमिक मानसिक क्षमताओं में से 'साहचर्य स्मृति' का अर्थ सूचनाओं को रटने और याद रखने की शक्ति से है। नवीन और अमूर्त समस्याओं को हल करने की क्षमता वास्तव में तार्किक चिन्तन या तरल बुद्धि का हिस्सा मानी जाती है, न कि केवल स्मृति का। थर्स्टन ने शाब्दिक बोध, स्थानिक दृश्यीकरण और संख्यात्मक सुविधा जैसी अन्य क्षमताओं को भी परिभाषित किया था। अतः साहचर्य स्मृति को अमूर्त तर्क के साथ जोड़ना मनोवैज्ञानिक रूप से पूर्णतः त्रुटिपूर्ण और भ्रामक माना जाता है।

43. (D) व्यवहारवादी अधिगम सिद्धांत
व्यवहारवादी विचारधारा यह मानती है कि अधिगम मुख्य रूप से बाहरी पुरस्कारों और सुदृढ़ीकरण के माध्यम से संचालित होता है। जब एक शिक्षक छात्र के अच्छे प्रदर्शन की प्रशंसा करता है, तो वह व्यवहार भविष्य में दोहराए जाने की संभावना बढ़ जाती है। यह कार्य-कारण संबंध बी.एफ. स्किनर के क्रियाप्रसूत अनुबंधन के सिद्धांतों पर आधारित माना जाता है। यह शिक्षण की एक व्यावहारिक विधि है जो छात्रों को वांछित आदतों और कौशलों को विकसित करने के लिए प्रेरित करने में अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होती है।

44. (B) ब्लॉक डिज़ाइन
वेक्स्लर बुद्धि मापनी में निष्पादन उप-परीक्षणों का उपयोग व्यक्ति की गैर-भाषाई और व्यावहारिक क्षमताओं को मापने के लिए किया जाता है। ब्लॉक डिजाइन एक ऐसा कार्य है जहाँ परीक्षार्थी को रंगीन खंडों का उपयोग करके एक विशिष्ट ज्यामितीय प्रतिरूप बनाना होता है। यह कार्य स्थानिक बोध, हाथ-आंख के समन्वय और दृश्य विश्लेषण की क्षमता का आकलन करता है। शब्दावली या सूचना जैसे शाब्दिक परीक्षणों के विपरीत, यह कार्य भाषा पर निर्भर नहीं है और व्यक्ति की क्रियात्मक बुद्धि को प्रभावी ढंग से दर्शाता है।

45. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस को तरल बुद्धि का एक सशक्त मापक माना जाता है क्योंकि यह अर्जित ज्ञान के बजाय स्वाभाविक तर्कशक्ति पर केंद्रित है। इस परीक्षण में प्रस्तुत आकृतियाँ और प्रतिरूप परीक्षार्थी के लिए पूरी तरह से नए होते हैं, जिससे रटा हुआ ज्ञान काम नहीं आता। व्यक्ति को अपनी आंतरिक तार्किक क्षमता का उपयोग करके जटिल संबंधों को समझना पड़ता है। यही कारण है कि यह परीक्षण विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं के लोगों के लिए एक समान रूप से प्रभावी और निष्पक्ष रहता है।

46. (D) उन विषयों और मुद्दों की श्रेणी जिन्हें यह संबोधित करता है।
शिक्षा मनोविज्ञान के 'कार्यक्षेत्र' का तात्पर्य उन समस्त क्षेत्रों से है जहाँ मनोविज्ञान के सिद्धांत शिक्षा में लागू होते हैं। इसमें छात्र का विकास, अधिगम की प्रक्रिया, कक्षा का वातावरण और मूल्यांकन की विधियां जैसे विविध विषय सम्मिलित होते हैं। यह अनुशासन केवल यह नहीं देखता कि छात्र क्या सीखता

यह क्रमिक प्रक्रिया सीखने की विधि को अत्यंत प्रभावी और अर्थपूर्ण बनाने में सहायक होती है।

101. (C) थार्नडाइक का बहु-कारक सिद्धांत
एडवर्ड थार्नडाइक ने बुद्धि को एक एकल सामान्य क्षमता मानने के विचार को पूरी तरह नकार दिया था। उन्होंने प्रस्तावित किया कि बुद्धि कई अत्यधिक विशिष्ट और स्वतंत्र कारकों का एक विशाल समूह मानी जाती है, जहाँ प्रत्येक कारक एक विशेष मानसिक कार्य के लिए जिम्मेदार होता है। उनके अनुसार, बौद्धिक व्यवहार मस्तिष्क में मौजूद असंख्य विशिष्ट तंत्रिका संबंधों का परिणाम है। यह सिद्धांत स्पीयरमैन के 'g' कारक के विपरीत है और मानसिक क्षमताओं की विविधता तथा स्वायत्तता पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित करता है।

102. (B) संबंध निर्माण और सादृश्यता तर्क का आकलन करना।
रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस का मूल आधार व्यक्ति की उन क्षमताओं को मापना है जो अमूर्त आकृतियों के बीच जटिल संबंधों को समझने से जुड़ी हैं। इसमें परीक्षार्थी को एक दृश्य प्रतिरूप में अंतर्निहित नियम या तर्क को पहचानकर उसे पूर्ण करना होता है। यह सादृश्यता तर्क पर आधारित है, जहाँ व्यक्ति को एक परिस्थिति के तर्क को दूसरी परिस्थिति में लागू करना पड़ता है। यह भाषाई ज्ञान या संचित सूचनाओं के स्थान पर विशुद्ध तार्किक चिन्तन और मानसिक चपलता का गहन वैज्ञानिक परीक्षण करता है।

103. (D) दोनों अवधारणाएं पृथक हैं और एक-दूसरे को प्रभावित नहीं करती हैं।
बुद्धि और सृजनात्मकता मनोविज्ञान में दो भिन्न संज्ञानात्मक संरचनाएं मानी जाती हैं। बुद्धि मुख्य रूप से अभिसारी चिन्तन और स्थापित समस्याओं के सही उत्तर खोजने से संबंधित है, जबकि सृजनात्मकता अपसारी चिन्तन और नवीनता पर आधारित होती है। यद्यपि कुछ स्तर तक इनमें सह-संबंध हो सकता है, परंतु वे एक-दूसरे के पर्याय नहीं हैं। एक उच्च बुद्धि लब्धि वाला व्यक्ति सृजनात्मक रूप से सामान्य हो सकता है, और इसके विपरीत भी संभव है। अतः इनका मापन और स्वरूप एक-दूसरे से पूर्णतः स्वतंत्र और भिन्न होता है।

104. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अन्वेषण-आधारित अधिगम में छात्र स्वयं खोजकर्ता की भूमिका निभाते हैं, जिससे वे सूचनाओं को रटने के बजाय उनके अर्थ को गहराई से समझते हैं। जब छात्र सक्रिय रूप से जानकारी जुटाते हैं और उसे अपने पूर्व ज्ञान से जोड़ते हैं, तो उनकी संज्ञानात्मक सहभागिता का स्तर बहुत बढ़ जाता है। यह सक्रियता सीखी गई बातों को लंबे समय तक याद रखने में मदद करती है और अवधारणाओं की स्पष्टता को बढ़ाती है। अतः छात्र-केंद्रित विधियां केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि प्रभावी और स्थायी अधिगम का सशक्त वैज्ञानिक आधार हैं।

105. (C) एकल क्षेत्र में क्षमता का पूर्वानुमान लगाने हेतु अभिकल्पित है।
एक विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण का लक्ष्य बहुत ही स्पष्ट और संकीर्ण होता है, जैसे केवल संगीत, यांत्रिक कौशल या गणितीय तर्क को मापना। बहु-अभिक्षमता बैटरी के विपरीत, जो कई कौशलों का एक प्रोफाइल प्रदान करती है, विशिष्ट परीक्षण केवल उस एक क्षेत्र में व्यक्ति की सफलता की संभावना को गहराई से देखता है। यह उन पेशेवरों के लिए अत्यंत उपयोगी है जिन्हें किसी विशेष कार्य के लिए सही प्रतिभा की पहचान करनी होती है। इसकी सटीकता और विशिष्ट फोकस इसे करियर चयन में निर्णायक बनाते हैं।

106. (A) वे गतिशील अंतःक्रियाएं जिनके माध्यम से छात्र सीखते हैं।
शिक्षा मनोविज्ञान में अधिगम की प्रक्रिया कक्षा के भीतर होने वाली उन सभी गतिविधियों और संवादों को संदर्भित करती है जो ज्ञान प्राप्ति में सहायक होते हैं। इसमें छात्र और शिक्षक के बीच की बातचीत, छात्रों का आपसी सहयोग और उनकी मानसिक संक्रियाएं सम्मिलित मानी जाती हैं। यह कोई स्थिर ढांचा नहीं बल्कि एक जीवंत प्रवाह है जहाँ जानकारी का आदान-प्रदान और समझ का निर्माण होता है। इस प्रक्रिया को समझना शिक्षकों के लिए अनिवार्य है ताकि वे शिक्षण को अधिक प्रभावी और प्रेरक बना सकें।

107. (B) केवल 2 और 3
आधुनिक बुद्धि परीक्षण विभिन्न वैज्ञानिक मापदंडों पर आधारित हैं। वेक्स्लर मापनी ने विचलन बुद्धि लब्धि की शुरुआत की, जो व्यक्ति के प्रदर्शन की तुलना उसके आयु वर्ग के सामान्य वितरण से करती है। रेवेन मैट्रिसेस एक ऐसा परीक्षण है जिसमें भाषा का प्रयोग नहीं होता और यह आकृतियों के माध्यम से तर्कशक्ति मापता है। कथन 1 गलत है क्योंकि बिने ने मानसिक आयु का उपयोग किया था, परंतु बुद्धि लब्धि शब्द और सूत्र का औपचारिक प्रयोग बाद में अन्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था।

108. (A) अनुरूपता
सृजनात्मकता का अर्थ ही परंपराओं से हटकर कुछ नया और मौलिक करना माना जाता है। अनुरूपता, जिसका अर्थ स्थापित नियमों या दूसरों के व्यवहार का बिना सोचे-समझे पालन करना है, सृजनात्मकता की भावना के ठीक विपरीत मानी जाती है। सृजनात्मक होने के लिए व्यक्ति में मौलिकता, विचारों का प्रवाह और लचीलापन होना अनिवार्य है ताकि वह विभिन्न दिशाओं में सोच सके। एक सृजनात्मक व्यक्ति अक्सर बने-बनाए ढांचों को चुनौती देता है, जबकि अनुरूपता यथास्थिति को बनाए रखने और नवीनता को दबाने का कार्य करती है।

109. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
शिक्षक प्रभावशीलता केवल विषय के ज्ञान तक सीमित नहीं है, यद्यपि वह एक महत्वपूर्ण आधार मानी जाती है। एक वास्तव में प्रभावी शिक्षक वह है जो कठिन अवधारणाओं को सरल बना सके, छात्रों के व्यवहार को प्रबंधित कर सके और उन्हें सीखने के लिए निरंतर प्रोत्साहित कर सके। केवल विद्वान होना कक्षा में सफलता की गारंटी नहीं देता है, बल्कि शिक्षण की कला और छात्रों के साथ जुड़ाव बनाना भी उतना ही आवश्यक है। शैक्षणिक कौशल और मनोवैज्ञानिक समझ ही एक शिक्षक को वास्तव में सफल और प्रभावी बनाते हैं।

संभावनाओं की खोज करता है। अतः सृजनात्मकता केवल कलात्मकता नहीं, बल्कि नवीनता और उपयोगिता का एक व्यापक और उद्देश्यपूर्ण बौद्धिक संगम मानी जाती है।

56. (A) छात्र की प्रगति की निगरानी के लिए विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों का उपयोग।
एक अप्रभावी शिक्षक की पहचान उसके अस्पष्ट निर्देशों, कक्षा में अनुशासन की कमी और छात्रों के प्रति नकारात्मक व्यवहार से होती है। ऐसे शिक्षक अक्सर छात्रों को प्रेरित करने में विफल रहते हैं और शिक्षण प्रक्रिया को बोझिल बना देते हैं। हालांकि, छात्र की प्रगति पर निरंतर नजर रखना और विभिन्न मूल्यांकन विधियों का प्रयोग करना वास्तव में एक प्रभावी शिक्षक के गुण माने जाते हैं। यह शिक्षक को शिक्षण में सुधार करने और छात्र की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को समझने में सक्रिय सहायता प्रदान करता है।

57. (C) तरल बुद्धि
एडवर्ड थार्नडाइक ने अपने बहु-कारक सिद्धांत के अंतर्गत सामाजिक, मूर्त और अमूर्त बुद्धि का प्रस्ताव दिया था। उन्होंने बताया कि सामाजिक बुद्धि दूसरों के साथ व्यवहार करने, मूर्त बुद्धि वस्तुओं को समझने और अमूर्त बुद्धि प्रतीकों एवं शब्दों के उपयोग से संबंधित होती है। तरल बुद्धि की अवधारणा विशेष रूप से रेमंड कैटेल से जुड़ी हुई है, जिन्होंने इसे जैविक क्षमताओं के संदर्भ में परिभाषित किया था। अतः थार्नडाइक के मूल वर्गीकरण में तरल बुद्धि का कोई स्थान नहीं दिया गया था।

58. (A) यह छात्रों में निष्क्रियता को बढ़ावा देती है।
व्याख्यान विधि में संचार का प्रवाह मुख्य रूप से एकतरफा होता है, जहाँ शिक्षक बोलता है और छात्र केवल सुनते हैं। इस प्रक्रिया में छात्रों को प्रश्न पूछने, तर्क करने या सक्रिय रूप से भाग लेने के अवसर बहुत कम मिलते हैं। यह स्थिति छात्रों को ज्ञान का सक्रिय निर्माता बनाने के बजाय उसे केवल निष्क्रिय रूप से सूचना ग्रहण करने वाला बना देती है। यद्यपि यह विधि कम समय में अधिक जानकारी देने में कुशल है, परंतु यह आलोचनात्मक सोच विकसित करने में बाधा उत्पन्न करती है।

59. (D) एक निश्चित बुद्धि लब्धि स्तर तक दोनों सह-संबंधित हैं, परंतु उससे ऊपर नहीं।
थ्रेसहोल्ड परिकल्पना यह सुझाव देती है कि सृजनात्मक होने के लिए एक औसत स्तर की बुद्धि का होना आवश्यक है। इस स्तर तक पहुँचने के बाद, बुद्धि और सृजनात्मकता के बीच का संबंध निर्बल हो जाता है। इसका अर्थ है कि बहुत उच्च बुद्धि लब्धि होने मात्र से कोई व्यक्ति स्वतः सृजनात्मक नहीं बन जाता है। एक निश्चित सीमा के बाद सृजनात्मकता के लिए कल्पनाशीलता और स्वतंत्र सोच जैसे अन्य कारक अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं, जो पारंपरिक बुद्धि परीक्षणों की सीमा से परे होते हैं।

60. (C) P-4, Q-1, R-2, S-3
मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं और उनके स्रोतों का यह मिलान बुद्धि मापन के विकास को स्पष्ट करता है। स्पीयरमैन ने सामान्य कारक को बुद्धि का मूल आधार माना था। थर्स्टन ने तर्क दिया कि बुद्धि प्राथमिक मानसिक क्षमताओं का एक समूह है। वेक्स्लर ने शाब्दिक और निष्पादन बुद्धि लब्धि के बीच अंतर करके अधिक व्यापक आकलन प्रदान किया। बिने ने सबसे पहले मानसिक आयु की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसने आयु-आधारित बौद्धिक स्तर को मापने का मार्ग प्रशस्त किया था। ये सभी सिद्धांत आधुनिक मनोविज्ञान के स्तंभ हैं।

61. (C) "यदि मनुष्य उड़ सकता तो विश्व किस प्रकार भिन्न होता?"
सृजनात्मक चिन्तन को बढ़ावा देने के लिए ऐसे प्रश्नों की आवश्यकता होती है जिनका कोई एक निश्चित उत्तर न हो। 'यदि' वाले काल्पनिक प्रश्न छात्रों को अपनी कल्पना का उपयोग करने और अपरंपरागत संभावनाओं के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। राजधानी, लेखक या वैज्ञानिक चरणों जैसे प्रश्न केवल स्मृति और तथ्यों पर आधारित होते हैं। इसके विपरीत, मुक्त प्रश्न छात्रों को विभिन्न दिशाओं में सोचने और अपने स्वयं के नवीन विचार प्रस्तुत करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करते हैं।

62. (D) शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन के लिए।
बहु-अभिक्षमता बैटरी व्यक्ति की विभिन्न क्षेत्रों में अंतर्निहित क्षमताओं का एक विस्तृत प्रोफाइल प्रदान करती है। इसमें शाब्दिक, संख्यात्मक और यांत्रिक जैसे कई आयामों को मापा जाता है। इससे परामर्शदाताओं को यह समझने में मदद मिलती है कि छात्र किस विशिष्ट क्षेत्र के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। यह केवल वर्तमान उपलब्धि नहीं बताता, बल्कि भविष्य की सफलता की संभावनाओं को भी उजागर करता है। अतः करियर नियोजन और विषयों के चुनाव में इसकी भूमिका अत्यंत निर्णायक और मार्गदर्शक मानी जाती है।

63. (A) यह पूर्णतः अशाब्दिक परीक्षण है।
अल्फ्रैड बिने द्वारा विकसित मूल परीक्षण मुख्य रूप से भाषा आधारित और शाब्दिक था। इसमें तर्क, समझ और सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्न शामिल थे, जिन्हें बोलकर या लिखकर हल करना होता था। हालांकि इसे बाद में संशोधित किया गया और विभिन्न आयु समूहों के लिए अनुकूलित किया गया, परंतु यह कभी भी पूर्णतः अशाब्दिक परीक्षण नहीं रहा। अशाब्दिक परीक्षणों का विकास बाद में हुआ ताकि भाषाई बाधाओं को दूर किया जा सके। बिने का कार्य मुख्य रूप से शैक्षिक संदर्भों में बौद्धिक मापन हेतु था।

64. (B) शिक्षण में सुधार के लिए अधिगम के सिद्धांतों को लागू करना।
शिक्षा मनोविज्ञान का मूल उद्देश्य शिक्षण की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और अर्थपूर्ण बनाना है। यह मनोविज्ञान के उन नियमों और सिद्धांतों को प्रदान करता है जिनकी मदद से शिक्षक यह समझ पाते हैं कि अधिगम वास्तव में कैसे होता है। इसके माध्यम से शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों को छात्रों की आवश्यकताओं और उनके विकास के स्तर के अनुसार ढाल सकते हैं। यह केवल अनुशासन या पाठ्यक्रम पूरा करने के बारे में नहीं है, बल्कि प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए अधिगम के अनुभवों को बेहतर बनाने का प्रयास है।

का मूल्यांकन भाषा और शिक्षा के प्रभाव के बिना करना अनिवार्य हो।

83. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
सामाजिक अधिगम सिद्धांत और व्यवहारवाद के शास्त्रीय रूप के बीच दृष्टिकोण का एक बड़ा अंतर पाया जाता है। बेंडुरा का सिद्धांत पर्यावरण से सीखने की प्रक्रिया में अवलोकन की भूमिका पर विशेष जोर देता है, जो एक सक्रिय मानसिक कार्य माना जाता है। वहीं, पारंपरिक व्यवहारवाद केवल प्रत्यक्ष उद्दीपन और अनुक्रिया पर ध्यान देता था और आंतरिक मानसिक अवस्थाओं को पूरी तरह से नजरअंदाज करता था। ये दोनों कथन अधिगम के प्रति व्यवहारवादी विचारधारा के क्रमिक विकास और उसके विभिन्न आयामों को सही स्पष्ट करते हैं।

84. (D) रेमंड कैटेल
बुद्धि को दो व्यापक श्रेणियों, तरल और ठोस में विभाजित करने का श्रेय रेमंड कैटेल को जाता है। उन्होंने प्रस्तावित किया कि तरल बुद्धि नवीन समस्याओं को सुलझाने की जन्मजात क्षमता है, जबकि ठोस बुद्धि अर्जित ज्ञान और अनुभव का संचित भंडार होती है। यह वर्गीकरण यह समझने में मदद करता है कि क्यों कुछ बौद्धिक क्षमताएं आयु के साथ घटती हैं जबकि अन्य निरंतर बढ़ती रहती हैं। कैटेल का यह योगदान आधुनिक बुद्धि सिद्धांतों और विभिन्न परीक्षणों के निर्माण में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है।

85. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
विभिन्न संज्ञानात्मक और अधिगम की प्रक्रियाओं का यह मिलान मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं को स्पष्ट करता है। नवीन पहेली सुलझाना तरल बुद्धि का कार्य है, जबकि तथ्यों को याद रखना ठोस बुद्धि को दर्शाता है। एक समस्या के कई समाधान खोजना अपसारी चिन्तन का हिस्सा है, जो सृजनात्मकता का आधार माना जाता है। अंत में, रोल मॉडल को देखकर सीखना अवलोकनात्मक अधिगम कहलाता है। ये सभी प्रक्रियाएं मिलकर मानव व्यवहार और बौद्धिक कार्यप्रणाली के विभिन्न पहलुओं का एक समग्र चित्र प्रस्तुत करती हैं।

86. (B) शिक्षक प्रभावशीलता
एक प्रभावी शिक्षक वह है जो अपनी शिक्षण शैली में लचीलापन रखता है और छात्रों की भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं को गहराई से समझता है। रणनीतियों में परिवर्तन करने की यह क्षमता यह सुनिश्चित करती है कि अधिगम का अनुभव प्रत्येक छात्र के लिए सार्थक और सुलभ हो सके। यह शिक्षण के प्रति एक सचेत और अनुकूलन योग्य दृष्टिकोण को दर्शाता है, जो केवल विषयवस्तु को पूरा करने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। ऐसी संवेदनशीलता ही कक्षा में सकारात्मक परिणामों और छात्र विकास की वास्तविक नींव रखती है।

87. (D) छात्र अपनी पसंद के विषय पर शोध करने के लिए समूहों में कार्य करते हैं।
छात्र-केंद्रित पद्धति में शिक्षार्थी की स्वायत्तता और सक्रिय सहभागिता को सर्वाधिक प्राथमिकता दी जाती है। जब छात्र स्वयं के शोध का नेतृत्व करते हैं और समूहों में सहयोग करते हैं, तो वे ज्ञान के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के स्थान पर उसके सक्रिय निर्माता बन जाते हैं। यह दृष्टिकोण उनकी जिज्ञासा को बढ़ावा देता है और उनमें खोजबीन तथा आलोचनात्मक चिन्तन के कौशल विकसित करता है। व्याख्यान या रटने के विपरीत, यह विधि छात्रों को उनके अधिगम की प्रक्रिया में पूर्णतः संलग्न और उत्तरदायी बनाती है।

88. (A) शिक्षा मनोविज्ञान
शिक्षा मनोविज्ञान वह विशिष्ट शाखा है जो शिक्षा के क्षेत्र में मानवीय व्यवहार और अधिगम की प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन करती है। यह इस बात पर ध्यान केंद्रित करती है कि शैक्षणिक परिवेश में शिक्षण विधियां छात्रों के विकास और सीखने की क्षमता को कैसे प्रभावित करती हैं। इसका उद्देश्य अधिगम को अधिक प्रभावी बनाना और शिक्षकों को बेहतर निर्देशात्मक रणनीतियां प्रदान करना है। यह अनुशासन सिद्धांतों और व्यवहार के बीच एक सेतु है, जो शिक्षण को अधिक व्यवस्थित और परिणामोन्मुखी बनाने में सहायक होता है।

89. (C) विभिन्न अभिक्षमताओं का एक विवरण प्रदान करती है।
बहु-अभिक्षमता बैटरी की मुख्य विशेषता इसकी व्यापकता मानी जाती है, जो किसी एक क्षेत्र के बजाय व्यक्ति की कई योग्यताओं को एक साथ मापती है। यह शाब्दिक, संख्यात्मक, यांत्रिक और स्थानिक जैसे विविध आयामों में व्यक्ति के प्रदर्शन का एक संतुलित चित्र प्रस्तुत करती है। इसके विपरीत, विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण केवल एक संकीर्ण क्षेत्र पर केंद्रित होता है। बैटरी द्वारा प्रदान किया गया विस्तृत प्रोफाइल छात्रों को उनकी बहुमुखी प्रतिभा को पहचानने और सही करियर पथ चुनने में अधिक सहायता प्रदान करता है।

90. (A) थार्नडाइक
एडवर्ड थार्नडाइक ने बुद्धि का बहु-कारक सिद्धांत प्रतिपादित किया था, जिसमें उन्होंने प्रस्तावित किया कि बुद्धि असंख्य स्वतंत्र और सूक्ष्म तत्वों से बनी होती है। उनका मानना था कि बौद्धिक कार्य किसी एक सामान्य शक्ति के बजाय इन विशिष्ट तंत्रिका संबंधों का परिणाम होते हैं। थार्नडाइक का यह विचार स्पीयरमैन के एकल 'g' कारक के पूर्णतः विपरीत था। उन्होंने बुद्धि को सामाजिक, मूर्त और अमूर्त जैसी श्रेणियों में विभाजित करके मानसिक क्षमताओं की विविधता और स्वायत्तता पर विशेष बल दिया था।

91. (D) एक शिक्षक जिसके छात्र कौशल में मापने योग्य विकास प्रदर्शित करते हैं।
शिक्षक प्रभावशीलता का वास्तविक प्रमाण छात्रों के अधिगम परिणामों और उनके व्यावहारिक कौशलों में होने वाली स्पष्ट वृद्धि मानी जाती है। केवल लोकप्रियता या डिग्रियां यह सुनिश्चित नहीं करतीं कि शिक्षण प्रभावी है। एक सफल शिक्षक वह है जो अपने शिक्षण के माध्यम से छात्रों के ज्ञान, व्यवहार और कौशल में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम हो। जब छात्रों के सीखने के परिणामों में स्पष्ट सुधार दिखाई देता है,

74. (A) अधिगम छात्रों के जीवन के लिए प्रासंगिक और उनसे जुड़ा होना चाहिए।
छात्र-केंद्रित अधिगम का मूल आधार यह है कि शिक्षा वास्तविक दुनिया की परिस्थितियों और छात्र के व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित होनी चाहिए। जब छात्र जो कुछ सीख रहे हैं उसका अपने जीवन से सीधा संबंध देख पाते हैं, तो उनकी रुचि और जुड़ाव बढ़ जाता है। यह दृष्टिकोण रटने के बजाय अर्थपूर्ण समझ पर बल देता है। इसमें छात्र की सक्रिय भागीदारी और स्वायत्तता को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है, जिससे वे न केवल ज्ञान प्राप्त करते हैं बल्कि उसे वास्तविक परिस्थितियों में लागू करना भी सीखते हैं।

75. (D) स्पीयरमैन
चार्ल्स स्पीयरमैन सांख्यिकीय विधियों, विशेष रूप से कारक विश्लेषण के माध्यम से बुद्धि की संरचना को समझने में गहरी रुचि रखते थे। उन्होंने पाया कि जो व्यक्ति एक बौद्धिक परीक्षण में अच्छा प्रदर्शन करते हैं, वे दूसरे परीक्षणों में भी अच्छा करते हैं। इसी धनात्मक सह-संबंध के आधार पर उन्होंने प्रस्तावित किया कि सभी कार्यों के पीछे एक सामान्य मानसिक ऊर्जा या 'g' कारक कार्य करता है। उनका शोध मुख्य रूप से विभिन्न मानसिक क्षमताओं के अंतर्निहित सामान्य तत्व को खोजने पर ही पूर्णतः केंद्रित रहा था।

76. (B) वेक्स्लर मापनी के विभिन्न आयु समूहों के लिए पृथक संस्करण हैं।
वेक्स्लर ने यह पहचाना कि बुद्धि मापन के लिए आयु-उपयुक्त उपकरणों की अत्यंत आवश्यकता होती है। उन्होंने वयस्कों, स्कूली बच्चों और छोटे बच्चों के लिए अलग-अलग मापनियां विकसित की थीं। यह वर्गीकरण प्रत्येक आयु वर्ग की विशिष्ट विकासात्मक अवस्थाओं और संज्ञानात्मक क्षमताओं को ध्यान में रखता है। इससे प्राप्त परिणाम अधिक सटीक और विश्वसनीय माने जाते हैं। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि रेवेन मुख्य रूप से अशाब्दिक है और बिने परीक्षण अनुपात बुद्धि लब्धि पर आधारित था, न कि निष्पादन बुद्धि लब्धि पर।

77. (C) यांत्रिक तर्क परीक्षण
विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण किसी एक विशेष क्षेत्र में व्यक्ति की योग्यता को मापने हेतु विशेष रूप से अभिकल्पित किए जाते हैं। यांत्रिक तर्क परीक्षण इसका उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है, जो मशीनों और भौतिक सिद्धांतों को समझने की क्षमता का आकलन करता है। यह सामान्य बुद्धि परीक्षणों से भिन्न है क्योंकि इसका ध्यान केवल एक विशिष्ट कार्यक्षेत्र की सफलता का पूर्वानुमान लगाने पर केंद्रित होता है। ऐसे परीक्षण तकनीकी और व्यावसायिक क्षेत्रों में करियर चयन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उपयोग किए जाते हैं।

78. (C) केवल 1 और 3
शिक्षण की विधियां कक्षा में शिक्षक और छात्र की भूमिकाओं को स्पष्ट करती हैं। शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण में शिक्षक सक्रिय प्रदाता होता है और छात्र प्रायः निष्क्रिय ग्रहणकर्ता की भूमिका निभाते हैं। इसके विपरीत, छात्र-केंद्रित विधियों में छात्र ज्ञान के निर्माण में सक्रिय रूप से संलग्न होते हैं, जिससे रटने के बजाय गहरी समझ बढ़ती है। यहाँ शिक्षक का कार्य केवल जानकारी देना नहीं बल्कि सीखने की प्रक्रिया को सुगम बनाना होता है। कथन 2 गलत है क्योंकि छात्र-केंद्रित विधियां सक्रिय सहभागिता को प्रोत्साहित करती हैं।

79. (A) "एक एकल वृत्त दिया गया है, कोई वस्तु बनाएं और उसमें विवरण जोड़ें।"
सृजनात्मकता के परीक्षण में 'विस्तारण' का अर्थ है किसी साधारण विचार या आकृति को जटिल और पूर्ण बनाना। जब एक छात्र एक सरल वृत्त में कई सूक्ष्म विवरण जोड़कर उसे एक जीवंत चित्र में बदल देता है, तो वह इसी क्षमता का प्रदर्शन करता है। यह मापता है कि व्यक्ति किसी आधारभूत विचार को कितनी गहराई और बारीकी से विकसित कर सकता है। विचारों की प्रचुरता या समानता खोजने के विपरीत, विस्तारण पूरी तरह से विचार के विकास और उसके प्रभावी संवर्धन पर ही केंद्रित होता है।

80. (B) स्पीयरमैन ने 'g' कारक पर बल दिया जबकि थर्स्टन ने समूह कारकों पर बल दिया।
स्पीयरमैन और थर्स्टन के सिद्धांतों के बीच मूल मतभेद बुद्धि की एकता बनाम उसकी विविधता को लेकर है। स्पीयरमैन का मानना था कि एक एकल सामान्य मानसिक शक्ति सभी बौद्धिक कार्यों का आधार होती है। इसके विपरीत, थर्स्टन ने तर्क दिया कि बुद्धि सात स्वतंत्र और समान रूप से महत्वपूर्ण प्राथमिक मानसिक क्षमताओं का एक समूह है। थर्स्टन के अनुसार, व्यक्ति किसी एक क्षमता में निपुण और दूसरी में कमजोर हो सकता है, जो स्पीयरमैन के एकीकृत सामान्य कारक के विचार को कड़ी चुनौती देता है।

81. (B) व्यक्तिगत गणितीय क्षमता के लिए जन्मजात, जैविक आधार।
सामाजिक अधिगम सिद्धांत मुख्य रूप से इस बात पर केंद्रित है कि व्यवहार पर्यावरण और दूसरों के अवलोकन से कैसे सीखा जाता है। यह सहपाठियों के व्यवहार का अनुकरण और शिक्षक के उत्साह के प्रभाव जैसी कक्षा की परिघटनाओं को अच्छी तरह से समझाता है। हालांकि, गणितीय या किसी भी अन्य क्षमता के जन्मजात जैविक आधारों की व्याख्या यह सिद्धांत नहीं करता है। जैविक प्रवृत्तियाँ आनुवंशिकता का विषय मानी जाती हैं, जबकि यह सिद्धांत अधिगम में सामाजिक और संज्ञानात्मक कारकों की भूमिका पर बल देता है।

82. (A) इसे अशाब्दिक, अमूर्त आकृतियों का उपयोग करके संस्कृति-मुक्त होने के लिए अभिकल्पित किया गया है।
रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस की सबसे बड़ी विशेषता इसकी भाषाई स्वतंत्रता मानी जाती है। इसमें शब्दों या सांस्कृतिक ज्ञान के स्थान पर आकृतियों और प्रतिरूपों का प्रयोग किया जाता है, जिससे यह विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के लिए निष्पक्ष रहता है। यह मुख्य रूप से तरल बुद्धि और तार्किक संबंधों को समझने की क्षमता को मापता है। इस परीक्षण का उपयोग उन स्थितियों में किया जाता है जहाँ व्यक्ति की स्वाभाविक मानसिक क्षमता

है, बल्कि यह भी देखता है कि वह कैसे और किन परिस्थितियों में सीखता है। सरल शब्दों में, यह शिक्षा से संबंधित मानवीय व्यवहार के अध्ययन की पूरी सीमा को दर्शाता है।

47. (A) लचीलापन
सृजनात्मकता के संदर्भ में 'लचीलापन' का अर्थ मानसिक जड़ता का अभाव और विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने की क्षमता है। जब कोई व्यक्ति एक समस्या को सुलझाने के लिए अलग-अलग श्रेणियों और वैचारिक ढांचों के बीच आसानी से परिवर्तन कर सकता है, तो वह उच्च स्तरीय लचीलापन प्रदर्शित करता है। यह केवल बहुत सारे विचार उत्पन्न करने के बारे में नहीं है, बल्कि विचारों की विविधता के बारे में है। यह गुण व्यक्ति को लीक से हटकर सोचने और असाधारण समाधान खोजने में मदद करता है।

48. (B) उद्देश्यों को स्पष्ट रुप से बताना और चरण-दर-चरण प्रदर्शन प्रदान करना।
प्रत्यक्ष निर्देश एक सुव्यवस्थित और शिक्षक-केंद्रित पद्धति है जहाँ सूचना का प्रवाह स्पष्ट और क्रमिक होता है। इसमें शिक्षक पहले सीखने के लक्ष्यों को स्पष्ट करता है और फिर जटिल कार्यों को छोटे, सुबोध चरणों में तोड़कर उनका प्रदर्शन करता है। यह विधि विशेष रूप से उन विषयों के लिए प्रभावी है जहाँ विशिष्ट कौशल या प्रक्रियाओं को सीखना अनिवार्य होता है। इसमें छात्र शिक्षक के निर्देशों का निकटता से पालन करते हैं, जिससे त्रुटियों की संभावना कम हो जाती है और स्पष्टता बढ़ती है।

49. (B) शिक्षार्थी को देखे गए व्यवहार को स्मृति में रखने में सक्षम होना चाहिए।
अल्बर्ट बेंडुरा के अनुसार, किसी व्यवहार को केवल देखना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे मस्तिष्क में संचित करना भी अनिवार्य होता है। यदि शिक्षार्थी प्रतिरुप के व्यवहार को याद नहीं रख पाता, तो वह भविष्य में उसे दोहराने में पूर्णतः असमर्थ होगा। इसे 'प्रतिधारण' कहा जाता है, जो अवलोकनात्मक अधिगम का एक मुख्य स्तंभ माना जाता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि अधिगम केवल यांत्रिक नहीं है, बल्कि इसमें स्मृति और मानसिक चित्रण जैसी आंतरिक संज्ञानात्मक शक्तियों का सक्रिय योगदान अत्यंत आवश्यक है।

50. (A) 4, 2, 1, 3
बुद्धि के सिद्धांतों का विकास एक क्रमिक ऐतिहासिक प्रक्रिया रही है। इसकी शुरुआत बिने द्वारा मानसिक आयु की अवधारणा से हुई, जिसने मापन का वैज्ञानिक आधार तैयार किया था। इसके पश्चात स्पीयरमैन ने द्वि-कारक सिद्धांत प्रस्तुत किया। फिर थर्स्टन ने सात प्राथमिक मानसिक क्षमताओं के समूह कारक सिद्धांत का प्रस्ताव रखा। अंत में कैटेल ने तरल और ठोस बुद्धि के बीच अंतर स्पष्ट किया। यह कालक्रम बुद्धि के प्रति हमारी समझ के क्रमिक विस्तार और उसे और अधिक सूक्ष्म बनाने की यात्रा को दर्शाता है।

51. (C) अभिक्षमता परीक्षण भविष्योन्मुखी होते हैं जबकि उपलब्धि परीक्षण अतीत-उन्मुख होते हैं।
अभिक्षमता और उपलब्धि परीक्षणों के बीच का मुख्य अंतर उनके समय के दृष्टिकोण में निहित होता है। जहाँ उपलब्धि परीक्षण यह मापता है कि व्यक्ति ने अब तक शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से क्या सीखा है, वहीं अभिक्षमता परीक्षण भविष्य की संभावनाओं का संकेत देता है। अभिक्षमता यह बताती है कि किसी विशेष क्षेत्र में व्यक्ति भविष्य में कितना आगे बढ़ सकता है। उपलब्धि परीक्षण अतीत की मेहनत का परिणाम है, जबकि अभिक्षमता परीक्षण व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता का पूर्वानुमान है।

52. (D) एक चुनौतीपूर्ण, असंरचित समस्या।
समस्या-आधारित अधिगम में सीखने की प्रक्रिया किसी लंबे व्याख्यान से नहीं बल्कि एक वास्तविक और जटिल समस्या से प्रारंभ होती है। छात्र इस समस्या का विश्लेषण करने के लिए स्वयं उत्तरदायी होते हैं और इसके समाधान हेतु आवश्यक जानकारी की निरंतर खोज करते हैं। यह प्रक्रिया छात्रों में सक्रियता, जिज्ञासा और आलोचनात्मक चिन्तन को जन्म देती है। इसमें शिक्षक केवल एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है, जिससे छात्र स्वयं के अधिगम का स्वामित्व लेते हैं और व्यावहारिक कौशल विकसित करते हैं।

53. (C) तरल बुद्धि
रेमंड कैटेल के अनुसार, तरल बुद्धि वह जन्मजात क्षमता है जो आयु बढ़ने के साथ धीरे-धीरे कम होने लगती है। यह मुख्य रूप से तंत्रिका तंत्र की कार्यक्षमता और सूचना प्रसंस्करण की गति पर निर्भर करती है। मध्य वयस्कता के बाद इस प्रकार की स्वाभाविक तर्कशक्ति में गिरावट देखी जा सकती है। इसके विपरीत, ठोस बुद्धि जो संचित ज्ञान पर आधारित होती है, वृद्धावस्था तक बढ़ती या स्थिर रह सकती है। यह जैविक ह्रास और अर्जित अनुभव के बीच के महत्वपूर्ण अंतर को स्पष्ट करता है।

54. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
स्पीयरमैन और थार्नडाइक के सिद्धांतों के बीच बुद्धि की मूल प्रकृति को लेकर गहरा मतभेद रहा है। स्पीयरमैन का मानना था कि एक सामान्य मानसिक शक्ति सभी संज्ञानात्मक कार्यों को जोड़ती है, जिससे एक कार्य में सफलता दूसरे में सफलता का संकेत देती है। इसके विपरीत, थार्नडाइक ने प्रस्तावित किया कि बुद्धि असंख्य स्वतंत्र और विशिष्ट तत्वों का समुच्चय है। उनके अनुसार, किसी भी कार्य का प्रदर्शन केवल उस विशिष्ट कार्य के लिए जिम्मेदार तंत्रिका संबंधों पर निर्भर करता है, न कि किसी एकल शक्ति पर।

55. (B) केवल 2
सृजनात्मकता का दायरा केवल ललित कलाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विज्ञान, व्यवसाय और दैनिक जीवन की समस्याओं में भी व्याप्त होता है। इसका मूल गुण ऐसे समाधान प्रस्तुत करना है जो पूर्णतः नए हों और जिनका व्यावहारिक मूल्य भी हो। अभिसारी चिन्तन सृजनात्मकता का आधार नहीं है, बल्कि इसके लिए अपसारी चिन्तन आवश्यक है जो अनेक

तभी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी माना जा सकता है। यह प्रभाव छात्रों की सफलता में झलकता है।

92. (B) थार्नडाइक का बहु-कारक सिद्धांत
थार्नडाइक के अनुसार बुद्धि कोई अखंड या एकल इकाई नहीं है, बल्कि यह कई विशिष्ट और पृथक क्षमताओं का एक विशाल समुच्चय मानी जाती है। उन्होंने माना कि प्रत्येक मानसिक प्रक्रिया एक विशिष्ट तंत्रिका संबंध द्वारा संचालित होती है। उनका सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति एक क्षेत्र में बहुत कुशल और दूसरे में सामान्य हो सकता है, क्योंकि ये क्षमताएं एक-दूसरे से स्वतंत्र होती हैं। यह दृष्टिकोण बौद्धिक विविधता को स्वीकार करता है और किसी एक नियामक सामान्य कारक के अस्तित्व को नकारता है।

93. (C) लचीलापन
सृजनात्मकता के संदर्भ में लचीलापन वह क्षमता है जो व्यक्ति को एक समस्या के समाधान हेतु विभिन्न श्रेणियों और वैचारिक दिशाओं में सोचने के योग्य बनाती है। यह मापता है कि छात्र कितनी सरलता से एक प्रकार की सोच से हटकर दूसरे प्रकार के दृष्टिकोण को अपना सकता है। विचारों की केवल संख्या बढ़ाना प्रवाह है, परंतु विचारों में विविधता लाना लचीलापन कहलाता है। यह गुण व्यक्ति को मानसिक जड़ता से बचाता है और उसे असाधारण तथा बहुआयामी समाधान खोजने में प्रभावी मदद प्रदान करता है।

94. (D) यह छात्रों की आलोचनात्मक सोच विकसित करने में असफल हो सकता है।
शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण में सूचना का संचार प्रायः एकतरफा होता है, जहाँ छात्र केवल सुनने और याद करने तक सीमित रहते हैं। इस परिवेश में छात्रों को स्वयं प्रश्न पूछने, तर्क करने या स्वतंत्र रूप से समस्याओं का विश्लेषण करने के अवसर नहीं मिलते हैं। परिणामस्वरूप, उनकी गहरी समझ और आलोचनात्मक चिन्तन का कौशल पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हो पाता। रटने पर अत्यधिक बल देने के कारण छात्र केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने योग्य जानकारी तो प्राप्त कर लेते हैं, परंतु उनमें मौलिक चिन्तन की कमी बनी रहती है।

95. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
वेक्स्लर मापनी ने बुद्धि मापन में शाब्दिक और निष्पादन क्षमताओं को अलग-अलग मापकर एक क्रांतिकारी सुधार किया था। यह केवल एक औसत अंक देने के स्थान पर यह बताता है कि छात्र के भाषा आधारित कौशल और क्रियात्मक कौशल किस स्तर पर हैं। जब इन दोनों प्राप्तांकों के बीच बड़ा अंतर होता है, तो यह विशिष्ट अधिगम कठिनाइयों या मस्तिष्क की कार्यप्रणाली में असंतुलन का संकेत हो सकता है। यह नैदानिक दृष्टिकोण शिक्षकों को छात्र हेतु लक्षित सहायता प्रदान करने में सक्षम बनाता है।

96. (B) यह मानता है कि व्यवहार पूर्णतः आनुवंशिकी द्वारा निर्धारित होता है।
सामाजिक अधिगम सिद्धांत व्यवहार के निर्माण में आनुवंशिकी के बजाय पर्यावरण और सामाजिक अंतःक्रियाओं को अधिक महत्व देता है। इसका मूल विचार यह है कि हम दूसरों को देखकर और उनके परिणामों का अवलोकन करके अपना व्यवहार सीखते हैं। यह सिद्धांत संज्ञान की भूमिका को स्वीकार करता है, जिसका अर्थ है कि हम सूचनाओं को संसाधित करते हैं और फिर निर्णय लेते हैं। यह मानना कि व्यवहार पूरी तरह से जन्मजात है, इस सिद्धांत की मूलभूत मान्यताओं के विरुद्ध है, क्योंकि यह परिवर्तनशीलता पर आधारित होता है।

97. (B) स्थानिक दृश्यीकरण
थर्स्टन की सात प्राथमिक मानसिक क्षमताओं में 'स्थानिक दृश्यीकरण' वह योग्यता है जो किसी व्यक्ति को वस्तुओं के मानसिक चित्रण और उन्हें स्थान में घुमाने या बदलने में मदद करती है। वास्तुकारों के लिए यह कौशल अनिवार्य है क्योंकि उन्हें द्वि-आयामी नक्शों को देखकर मन में त्रि-आयामी भवनों की कल्पना करनी पड़ती है। यह क्षमता आकृतियों के बीच के संबंधों को समझने और उन्हें मानसिक रूप से व्यवस्थित करने से संबंधित है। अतः पेशेवर कार्यों में सफलता के लिए इस बौद्धिक पक्ष का सशक्त होना आवश्यक है।

98. (A) कतिपय क्षेत्रों में उनकी सफलता की क्षमता का पूर्वानुमान लगाने में सहायता करना।
उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अभिक्षमता परीक्षण छात्रों को उनकी भविष्य की संभावनाओं को पहचानने में मदद करते हैं। ये परीक्षण यह नहीं मापते कि छात्र ने क्या सीखा है, बल्कि यह बताते हैं कि वे आने वाले समय में किस क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। इसके माध्यम से छात्र अपनी छिपी हुई प्रतिभाओं को समझ सकते हैं और उसके अनुरूप उच्च शिक्षा या करियर का चयन कर सकते हैं। यह वैज्ञानिक मार्गदर्शन छात्रों को गलत करियर चुनाव से बचाने और उनकी क्षमता के सही उपयोग में सहायक होता है।

99. (C) छात्र एक लंबे व्याख्यान के दौरान चुपचाप टिप्पणी लिख रहे हैं।
छात्र-केंद्रित कक्षा की मुख्य पहचान छात्रों की सक्रिय भागीदारी और निरंतर संवाद है। व्याख्यान सुनना और टिप्पणी लिखना एक निष्क्रिय प्रक्रिया है जो मुख्य रूप से शिक्षक-केंद्रित परिवेश में पाई जाती है। इसके विपरीत, छात्र-केंद्रित मॉडल में वाद-विवाद, सहकर्मी समीक्षा और प्रयोगात्मक कार्य जैसी गतिविधियाँ अधिक होती हैं, जहाँ छात्र स्वयं ज्ञान का निर्माण करते हैं। ऐसी कक्षाओं में शिक्षक सूचना का एकमात्र स्रोत नहीं होता, बल्कि एक मार्गदर्शक होता है जो छात्रों को अन्वेषण और आपसी सहयोग के लिए प्रोत्साहित करता है।

100. (B) 3, 2, 4, 1
बेंडुरा का अवलोकनात्मक अधिगम एक निश्चित क्रम में कार्य करता है जो सूचना प्रसंस्करण पर आधारित माना जाता है। सर्वप्रथम, व्यक्ति को आदर्श व्यवहार पर ध्यान देना होता है। इसके बाद, उस व्यवहार की स्मृति मस्तिष्क में सुरक्षित की जाती है। तीसरे चरण में, संचित जानकारी को वास्तविक क्रिया में बदला जाता है। अंत में, उस व्यवहार को भविष्य में दोहराने के लिए पर्याप्त प्रेरणा या सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता होती है।

65. (B) निम्न स्थानिक दृश्यीकरण और उच्च शाब्दिक बोध।
थर्स्टन के सिद्धांत के अनुसार बुद्धि विभिन्न स्वतंत्र क्षमताओं का मिश्रण मानी जाती है। ज्यामिति में कठिनाई का अर्थ है कि छात्र का 'स्थानिक दृश्यीकरण' पक्ष कमजोर है, जो आकृतियों और स्थान को समझने के लिए आवश्यक है। दूसरी ओर, वाद-विवाद में उत्कृष्टता यह दर्शाती है कि उसका 'शाब्दिक बोध' और शब्द प्रवाह अत्यंत सशक्त है। यह उदाहरण सिद्ध करता है कि एक व्यक्ति किसी एक क्षेत्र में कमजोर और दूसरे में अत्यंत प्रतिभाशाली हो सकता है, जो समूह कारक सिद्धांत का आधार है।

66. (A) ज्ञान की व्यक्तिगत खोज और निर्माण पर बल।
छात्र-केंद्रित परिवेश में विद्यार्थी केवल सूचना के प्राप्तकर्ता नहीं होते, बल्कि वे ज्ञान के सक्रिय निर्माता माने जाते हैं। यहाँ सीखने की प्रक्रिया छात्र की जिज्ञासा, अनुभव और सक्रिय सहभागिता पर आधारित होती है। शिक्षक का कार्य केवल ज्ञान देना नहीं बल्कि छात्रों को स्वयं खोजने के लिए प्रोत्साहित करना होता है। इस प्रकार के वातावरण में छात्र अपनी गति से सीखते हैं और विषयों के प्रति अपनी गहरी समझ विकसित करते हैं। यह दृष्टिकोण स्वायत्तता और उत्तरदायित्व की भावना को बढ़ावा देता है।

67. (C) कोई व्यक्ति दूसरों को किसी व्यवहार के लिए पुरस्कृत होते देखकर सीख सकता है।
प्रतिनिधिक सुदृढ़ीकरण सामाजिक अधिगम सिद्धांत की एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा मानी जाती है। इसका तात्पर्य है कि हम केवल अपने प्रत्यक्ष अनुभवों से ही नहीं सीखते, बल्कि दूसरों के अनुभवों से भी प्रेरणा लेते हैं। यदि हम किसी को उनके अच्छे कार्यों के लिए प्रशंसा पाते देखते हैं, तो हमारे भीतर भी वैसा ही व्यवहार करने की इच्छा जागृत होती है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि समाज और अवलोकन हमारे आचरण को बिना किसी प्रत्यक्ष पुरस्कार के भी सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

68. (D) थर्स्टन का समूह कारक सिद्धांत
लुई थर्स्टन ने चार्ल्स स्पीयरमैन के एकल 'g' कारक के विचार को स्पष्ट रूप से चुनौती दी थी। उन्होंने अपने समूह कारक सिद्धांत में सात स्वतंत्र प्राथमिक मानसिक क्षमताओं का प्रस्ताव रखा था। उनका मानना था कि कोई एक सामान्य क्षमता सभी बौद्धिक कार्यों को नियंत्रित नहीं करती है। इसके स्थान पर, उन्होंने तर्क दिया कि बौद्धिक व्यवहार इन विशिष्ट क्षमताओं के विभिन्न संयोजनों का परिणाम होता है। थर्स्टन के इस विश्लेषण ने बुद्धि को अधिक विविध और व्यापक रूप में समझने का नया मार्ग प्रशस्त किया था।

69. (C) शुद्धता (विचारों की सहीता)
सृजनात्मक चिन्तन का परीक्षण करते समय मुख्य ध्यान विचारों की नवीनता और प्रचुरता पर दिया जाता है। अपसारी चिन्तन में 'शुद्धता' या किसी एक मानक उत्तर के साथ मिलान करने को विशेष महत्व नहीं दिया जाता है। इसके विपरीत, यह मापा जाता है कि व्यक्ति कितने अधिक (प्रवाह), कितने अलग (लचीलापन) और कितने अनोखे (मौलिकता) विचार दे सकता है। सृजनात्मकता में गलत या सही के बजाय विस्तार और कल्पना को प्राथमिकता दी जाती है, क्योंकि यहाँ उद्देश्य नवीन संभावनाओं का द्वार खोलना होता है।

70. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
व्याख्यान विधि वास्तव में कम समय में बड़ी संख्या में छात्रों को व्यापक जानकारी प्रदान करने का एक कुशल साधन मानी जाती है। हालांकि, यह विधि छात्रों को उच्च-स्तरीय चिन्तन या सक्रिय समस्या-समाधान में शामिल करने के लिए उपयुक्त नहीं मानी जाती है। इसमें छात्र प्रायः निष्क्रिय श्रोता होते हैं और उनकी सक्रिय भागीदारी अत्यंत सीमित रहती है। अतः व्याख्यान की कुशलता केवल सूचना प्रसारण तक सीमित है, जबकि सक्रिय अधिगम और सहयोगात्मक कौशल के लिए छात्र-केंद्रित विधियां ही अधिक प्रभावी सिद्ध होती हैं।

71. (D) ठोस बुद्धि
ठोस बुद्धि व्यक्ति द्वारा शिक्षा, संस्कृति और जीवन भर के अनुभवों से अर्जित किए गए ज्ञान का संचित भंडार होती है। इसमें संचित शब्दावली, सामान्य जानकारी और सीखे गए वे कौशल शामिल होते हैं जिन्हें वर्तमान समस्याओं को हल करने में उपयोग किया जाता है। यह बुद्धि आयु के साथ निरंतर परिपक्व होती है और अनुभव के साथ इसका विस्तार होता रहता है। यह मुख्य रूप से पर्यावरण और अधिगम के अवसरों का परिणाम होती है, जो व्यक्ति को अपनी संस्कृति में प्रभावी ढंग से कार्य करने योग्य बनाती है।

72. (A) बहुआयामी है, जिसमें विभिन्न व्यावसायिक कौशल सम्मिलित हैं।
शिक्षक प्रभावशीलता एक व्यापक अवधारणा है जो केवल किसी एक गुण पर निर्भर नहीं करती है। इसमें विषय का गहन ज्ञान, प्रभावी संचार, कक्षा प्रबंधन और छात्रों को प्रेरित करने की कला जैसे कई महत्वपूर्ण पहलू शामिल होते हैं। एक प्रभावी शिक्षक वह है जो इन सभी कौशलों का संतुलित उपयोग करके छात्रों के लिए अधिगम को सुगम बनाता है। यह छात्र की आवश्यकताओं के अनुसार अपनी शिक्षण विधियों को ढालने की क्षमता है। अतः इसे एक जटिल और निरंतर विकसित होने वाला व्यावसायिक गुण माना जाता है।

73. (C) संज्ञानात्मक शक्तियों का विस्तृत विवरण प्रदान किया।
वेक्स्लर मापनी पूर्ववर्ती परीक्षणों की तुलना में अधिक उन्नत मानी जाती थी क्योंकि इसने केवल एक बुद्धि लब्धि अंक देने के स्थान पर विस्तृत प्रोफाइल प्रस्तुत किया। इसने व्यक्ति की शाब्दिक योग्यताओं और क्रियात्मक निष्पादन के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से उजागर किया। इस विश्लेषण से मनोवैज्ञानिकों को यह समझने में मदद मिली कि व्यक्ति किन विशिष्ट मानसिक क्षेत्रों में सशक्त है और कहाँ उसे कठिनाई हो रही है। इसी नैदानिक गहराई के कारण इसे बुद्धि मापन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सुधार माना जाता है।

110. (B) प्रतिनिधिक सुदृढ़ीकरण
प्रतिनिधिक सुदृढ़ीकरण सामाजिक अधिगम सिद्धांत की एक अत्यंत प्रभावशाली अवधारणा मानी जाती है। इसका तात्पर्य है कि हम दूसरों के अनुभवों से प्रेरणा लेकर अपना व्यवहार बदलते हैं। जब एक छात्र देखता है कि उसके सहपाठी को अच्छे प्रश्न के लिए प्रशंसा मिली है, तो वह भी वैसा ही सम्मान पाने की इच्छा से प्रेरित होता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि समाज में होने वाले पुरस्कार और प्रशंसा न केवल संबंधित व्यक्ति को, बल्कि उसका अवलोकन करने वाले अन्यों को भी अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षित और प्रोत्साहित करते हैं।

111. (A) एक नया विषय प्रारंभ करने और आधारभूत जानकारी प्रदान करने के लिए।
व्याख्यान विधि यद्यपि शिक्षक-केंद्रित है, परंतु यह किसी भी नए विषय की रूपरेखा और बुनियादी तथ्यों को बड़ी संख्या में छात्रों तक पहुँचाने का सबसे तीव्र तरीका माना जाता है। जब छात्रों के पास विषय का कोई पूर्व ज्ञान नहीं होता, तब शिक्षक एक विशेषज्ञ के रूप में उन्हें आवश्यक अवधारणाओं से परिचित कराता है। हालांकि यह विधि समस्या-समाधान या सृजनात्मकता विकसित करने के लिए आदर्श नहीं है, परंतु यह एक मजबूत सैद्धांतिक आधार तैयार करने और व्यापक सूचनाओं को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने में कुशल है।

112. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
बुद्धि के सिद्धांतों का यह सुमेलित रूप मनोविज्ञान के क्रमिक विकास को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। थर्स्टन ने सात स्वतंत्र प्राथमिक मानसिक क्षमताओं के समूह कारक सिद्धांत पर बल दिया। कैटेल ने बौद्धिक संरचना को तरल और ठोस बुद्धि के रूप में स्पष्ट किया। स्पीयरमैन ने बुद्धि को सामान्य और विशिष्ट कारकों के मेल के रूप में परिभाषित किया था। थार्नडाइक ने प्रस्तावित किया कि बुद्धि असंख्य स्वतंत्र तत्वों का एक बहु-कारक समुच्चय है। ये सभी योगदान मानव संज्ञान की जटिलता को समझने में आज भी प्रासंगिक हैं।

113. (D) ठोस बुद्धि जीवन के साथ बढ़ती है, जबकि तरल बुद्धि वयस्कता में अपने चरम पर होती है।
कैटेल के अनुसार तरल और ठोस बुद्धि का विकास मार्ग अलग-अलग होता है। तरल बुद्धि, जो जन्मजात तार्किक क्षमता है, शारीरिक और तंत्रिका संबंधी परिपक्वता के साथ बढ़ती है और किशोरावस्था के अंत तक अपने शिखर पर पहुँचकर धीरे-धीरे घटने लगती है। इसके विपरीत, ठोस बुद्धि शिक्षा और अनुभव का परिणाम है, इसलिए यह जीवन भर बढ़ती या स्थिर बनी रह सकती है। यह अंतर स्पष्ट करता है कि क्यों अनुभव आयु बढ़ने के साथ ज्ञान और बुद्धिमानी को और अधिक समृद्ध बनाने में सहायक सिद्ध होता है।

114. (C) विद्यालय के वार्षिक बजट का निर्धारण।
शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य योगदान शिक्षण और अधिगम की प्रक्रियाओं को मानवीय व्यवहार के संदर्भ में बेहतर बनाना है। यह मूल्यांकन के उपकरण, बाल विकास के सिद्धांत और कक्षा प्रबंधन की तकनीकें प्रदान करता है ताकि शिक्षा का स्तर सुधारा जा सके। हालांकि, बजट बनाना या वित्तीय प्रबंधन करना प्रशासनिक और आर्थिक क्षेत्र का हिस्सा है, मनोविज्ञान का नहीं। मनोविज्ञान का ध्यान हमेशा शिक्षार्थी की मानसिक अवस्था और सीखने के वातावरण पर रहता है, न कि विद्यालय के भौतिक संचालन पर।

115. (B) परिवेश को इस प्रकार संरचित करना कि छात्र स्वयं उत्तर खोज सकें।
खोज अधिगम में शिक्षक की भूमिका ज्ञान के सीधे प्रदाता के बजाय एक सुगमकर्ता की मानी जाती है। वह छात्रों को तैयार उत्तर देने के स्थान पर उन्हें ऐसी परिस्थितियों और चुनौतियों में रखता है जहाँ वे स्वयं अन्वेषण करें। शिक्षक सहायक सामग्री और सही प्रश्न प्रदान करता है जो छात्रों की जिज्ञासा को सही दिशा में मोड़ सकें। यह दृष्टिकोण छात्रों में स्वायत्तता, आत्मविश्वास और वैज्ञानिक सोच विकसित करता है। इसमें अधिगम का उत्तरदायित्व छात्र पर होता है, जिससे उनकी समझ अधिक स्थायी बनती है।

116. (D) तरल बुद्धि
नवीन और जटिल कोडिंग चुनौतियों को बिना किसी पूर्व अनुभव के हल करना तरल बुद्धि का एक उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। यह क्षमता व्यक्ति को अमूर्त तर्क करने, संबंधों को पहचानने और नई परिस्थितियों में तार्किक निष्कर्ष निकालने में मदद करती है। चूंकि प्रोग्रामिंग में उच्च स्तर की मानसिक चपलता और समस्या-समाधान की आवश्यकता होती है, इसलिए इसमें सफलता अक्सर व्यक्ति की जन्मजात तार्किक शक्ति को दर्शाती है। यह अर्जित ज्ञान के बजाय मस्तिष्क की स्वाभाविक सूचना प्रसंस्करण क्षमता पर अधिक निर्भर करती है।

117. (A) शिक्षक ज्ञान के प्राथमिक स्रोत के रूप में।
शिक्षक-केंद्रित निर्देश में पूरी शिक्षण प्रक्रिया शिक्षक के इर्द-गिर्द ही घूमती है। इसमें शिक्षक को विषय का विशेषज्ञ और सूचना का मुख्य प्रदाता माना जाता है, जबकि छात्र निष्क्रिय रूप से जानकारी ग्रहण करते हैं। कक्षा की गतिविधियों, गति और पाठ्यक्रम का नियंत्रण पूरी तरह शिक्षक के हाथ में होता है। इसमें छात्रों की पसंद या उनकी स्वायत्तता के लिए बहुत कम स्थान मिलता है। यह पारंपरिक मॉडल रटने और शिक्षक के निर्देशों का कड़ाई से पालन करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

118. (C) एक विधायक और अनुप्रयुक्त विज्ञान।
शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक मानी जाती है क्योंकि यह अवलोकन, प्रयोग और साक्ष्य पर आधारित होती है। इसे 'विधायक' कहा जाता है क्योंकि यह तथ्यों का वैसा ही अध्ययन करता है जैसे वे वास्तव में हैं, और 'अनुप्रयुक्त' इसलिए क्योंकि यह मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को शिक्षा की वास्तविक समस्याओं को हल करने में उपयोग करता है। यह केवल दार्शनिक चिंतन नहीं है, बल्कि व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने का एक व्यवस्थित प्रयास है। इसकी विधियां वस्तुनिष्ठ और विश्वसनीय होती हैं, जो शिक्षा को वैज्ञानिक आधार देती हैं।

119. (A) गणित, भाषा और तर्क जैसे कार्यों में सफलता।
स्पीयरमैन के 'g' कारक का तात्पर्य उस सामान्य मानसिक ऊर्जा से है जो सभी प्रकार के बौद्धिक कार्यों में समान रूप से निहित मानी जाती है। यदि कोई व्यक्ति गणित, भाषा और तार्किक समस्याओं में निरंतर अच्छा प्रदर्शन करता है, तो यह माना जाता है कि उसका 'g' कारक अत्यंत सशक्त है। यह कारक व्यक्ति की समग्र बौद्धिक दक्षता का प्रतिनिधित्व करता है और विभिन्न मानसिक योग्यताओं के बीच धनात्मक सह-संबंध का मुख्य कारण होता है। यह किसी भी विशेष प्रतिभा के पीछे की आधारभूत मानसिक शक्ति है।

120. (D) प्रवाह
सृजनात्मकता के संदर्भ में 'प्रवाह' का अर्थ एक ही विचार या उद्दीपन के प्रत्युत्तर में बहुत अधिक संख्या में सार्थक अनुक्रियाएं उत्पन्न करना होता है। यह व्यक्ति की मानसिक गति और विचारशीलता की प्रचुरता को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, एक शब्द से कई विचार बनाना या एक समस्या के अनेक समाधान सोचना प्रवाह का हिस्सा माना जाता है। यह मापता है कि बिना किसी अवरोध के मस्तिष्क कितनी सरलता से विभिन्न संभावनाओं को जन्म दे सकता है। विचारों की यह उच्च संख्या सृजनात्मक उत्पादकता का प्राथमिक संकेत है।

121. (B) विभिन्न क्षमताओं में भविष्य की संभावनाओं को मापना।
बहु-अभिक्षमता बैटरी का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की विविध योग्यताओं का एक प्रोफाइल तैयार करना है ताकि यह अनुमान लगाया जा सके कि वह किन क्षेत्रों में सफल हो सकता है। यह केवल एक औसत बुद्धि अंक देने के बजाय शाब्दिक, संख्यात्मक और यांत्रिक जैसे भिन्न आयामों का अलग-अलग मूल्यांकन करती है। इससे परामर्शदाताओं को छात्र की विशिष्ट शक्तियों और सीमाओं को समझने में मदद मिलती है। यह भविष्योन्मुखी परीक्षण शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन के लिए एक अत्यंत सटीक और विश्वसनीय वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

122. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
बिने-साइमन मापनी का निर्माण सैन्य सेवा के लिए नहीं, बल्कि उन बच्चों की पहचान करने के लिए किया गया था जिन्हें विशेष शैक्षिक सहायता की आवश्यकता थी। इसका मुख्य नवाचार 'मानसिक आयु' की अवधारणा थी, जिसने एक बच्चे के बौद्धिक प्रदर्शन की तुलना उसके आयु वर्ग के औसत प्रदर्शन से की थी। यह ऐतिहासिक परिवर्तन था क्योंकि इसने उम्र के साथ बुद्धि के विकास को मापने का एक वैज्ञानिक पैमाना दिया था। सैन्य परीक्षणों का विकास बाद के वर्षों में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान व्यापक स्तर पर हुआ था।

123. (D) ज्ञान के सक्रिय निर्माण से संबंधित शिक्षा मनोविज्ञान।
छात्र-केंद्रित शिक्षण विधियां इस मनोवैज्ञानिक सिद्धांत पर आधारित हैं कि अधिगम तब सर्वाधिक प्रभावी होता है जब छात्र स्वयं ज्ञान के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। जब छात्र अन्वेषण करते हैं और समस्याओं को हल करते हैं, तो उनकी आंतरिक अभिप्रेरणा और विषय के प्रति जुड़ाव बढ़ जाता है। यह दृष्टिकोण रटने के स्थान पर अर्थपूर्ण समझ पर बल देता है। शिक्षा मनोविज्ञान का यह पक्ष मानता है कि शिक्षार्थी की सक्रियता और स्वायत्तता ही सीखने के परिणामों को उत्कृष्ट और स्थायी बनाने में सफल होती है।

124. (A) छात्र-केंद्रित पद्धति - समस्या-आधारित अधिगम
समस्या-आधारित अधिगम एक विशुद्ध छात्र-केंद्रित पद्धति मानी जाती है जहाँ सीखने की प्रक्रिया एक वास्तविक चुनौती से प्रारंभ होती है। इसमें छात्र स्वयं शोध करते हैं और समाधान खोजते हैं, जबकि शिक्षक केवल एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। इसके विपरीत, प्रत्यक्ष निर्देश और व्याख्यान शिक्षक-केंद्रित विधियां हैं क्योंकि इनमें शिक्षक सक्रिय रूप से सूचना प्रदान करता है। अन्वेषण और खोज अधिगम भी छात्र-केंद्रित शैलियाँ मानी जाती हैं। अतः 'समस्या-आधारित अधिगम' का छात्र-केंद्रित होना ही एकमात्र सही तार्किक युग्म है।

125. (B) व्यवहारवाद
एडवर्ड थार्नडाइक की विचारधारा मुख्य रूप से व्यवहारवाद के साथ मेल खाती है क्योंकि उन्होंने अधिगम को उद्दीपन और अनुक्रिया के बीच संबंध के रूप में देखा था। उनका मानना था कि बुद्धि इन असंख्य छोटे-छोटे संबंधों या बंधों का योग मानी जाती है जो अनुभव के माध्यम से बनते हैं। यह दृष्टिकोण आंतरिक मानसिक प्रक्रियाओं के स्थान पर बाहरी व्यवहार और सुदृढ़ीकरण पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है। उनके सिद्धांतों ने पशु व्यवहार और मानवीय अधिगम के बीच संबंधों को समझने में एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई थी।

126. (B) अनुकूल छात्र परिणाम प्राप्त करना।
शिक्षक की प्रभावशीलता का वास्तविक मूल्यांकन उसकी डिग्रियों या शांतिपूर्ण कक्षा से नहीं, बल्कि छात्रों की प्रगति से किया जाता है। एक सफल शिक्षक वह है जो छात्रों के ज्ञान, व्यवहार और कौशल में सकारात्मक एवं मापने योग्य परिवर्तन लाने में सक्षम हो। अनुकूल परिणाम यह दर्शाते हैं कि शिक्षक ने अपनी विधियों को छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार ढाल लिया है। अतः शिक्षण की सफलता का एकमात्र सार्थक मापदंड शिक्षार्थियों का सर्वांगीण विकास और उनके अधिगम के स्तर में निरंतर होने वाला सुधार है।

127. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अल्बर्ट बेंडुरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत व्यवहारवाद और संज्ञानवाद के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी माना जाता है। यह स्वीकार करता है कि हमारा व्यवहार पर्यावरण से प्रभावित होता है, परंतु यह भी मानता है कि हम जानकारी को मानसिक रूप से संसाधित करते हैं। अवधान और स्मृति जैसे तत्व यह तय करते हैं कि देखा गया व्यवहार अपनाया जाएगा या नहीं। यह दृष्टिकोण अधिगम को केवल यांत्रिक प्रक्रिया न मानकर एक जटिल मानसिक कार्य के रूप में प्रस्तुत करता है, जहाँ सामाजिक परिवेश और व्यक्तिगत विचार एक साथ कार्य करते हैं।

128. (C) सामान्य वितरण के आधार पर विचलन बुद्धि लब्धि को लोकप्रिय बनाना।
वेक्स्लर मापनी ने बुद्धि मापन में 'विचलन बुद्धि लब्धि' की अवधारणा पेश की थी, जो अनुपात बुद्धि लब्धि की तुलना में अधिक सटीक मानी जाती है। यह मापता है कि एक व्यक्ति का प्राप्तांक उसके अपने आयु वर्ग के औसत प्रदर्शन से सांख्यिकीय रूप से कितना विचलित है। यह पद्धति सामान्य वितरण वक्र पर आधारित है, जिससे विभिन्न आयु समूहों के प्रदर्शन की तुलना करना वैज्ञानिक रूप से संभव हो गया। इस सुधार ने बुद्धि परीक्षणों की विश्वसनीयता और नैदानिक उपयोगिता को वैश्विक स्तर पर बहुत अधिक बढ़ा दिया था।

129. (D) मौलिकता
सृजनात्मकता के संदर्भ में 'मौलिकता' का तात्पर्य ऐसे विचार उत्पन्न करने से है जो सांख्यिकीय रूप से विरल और पूरी तरह से नए होते हैं। यह केवल बहुत सारे विचार देने या अलग श्रेणियों में सोचने के बारे में नहीं है, बल्कि विचारों की विशिष्टता के बारे में है। एक मौलिक विचार वह होता है जो दूसरों के दिमाग में आसानी से नहीं आता और जो पारंपरिक समाधानों से भिन्न होता है। यही वह शक्ति है जो महान आविष्कारों और अद्वितीय कलाकृतियों के सृजन का मुख्य संज्ञानात्मक आधार बनती है।

130. (C) उपरोक्त सभी
शिक्षा मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक है और इसमें शिक्षा से संबंधित मानवीय व्यवहार के सभी पहलुओं को सम्मिलित किया गया है। यह शिक्षार्थी की व्यक्तिगत भिन्नताओं और उनकी विकास दर का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। साथ ही, यह शिक्षण की विभिन्न प्रक्रियाओं और रणनीतियों के प्रभाव का विश्लेषण करता है ताकि अधिगम को सुलभ बनाया जा सके। अंत में, यह अधिगम के परिणामों को मापने के लिए मूल्यांकन की वैज्ञानिक विधियां भी प्रदान करता है। अतः ये सभी तत्व इस विषय के आवश्यक अंग माने जाते हैं।

131. (B) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
यांत्रिक अभिक्षमता परीक्षण एक ऐसा उपकरण है जो केवल एक विशेष क्षेत्र, जैसे मशीनों और भौतिक सिद्धांतों की समझ को मापता है। यह किसी व्यक्ति की उस विशिष्ट क्षमता का आकलन करता है जो तकनीकी कार्यों में सफलता के लिए अनिवार्य मानी जाती है। सामान्य बुद्धि परीक्षण के विपरीत, जो व्यापक मानसिक योग्यता को मापता है, यह परीक्षण केवल एक संकीर्ण और परिभाषित कौशल पर अपना ध्यान केंद्रित करता है। ऐसे परीक्षण तकनीकी क्षेत्रों में सही उम्मीदवार ढूँढने के लिए बहुत उपयोगी और प्रभावी सिद्ध होते हैं।

132. (D) थर्स्टन का समूह कारक सिद्धांत
लुई थर्स्टन ने बुद्धि के प्रति एक बहुआयामी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया था, जिसे समूह कारक सिद्धांत कहा जाता है। उन्होंने स्पीयरमैन के 'g' कारक के विचार को नकारते हुए सात स्वतंत्र प्राथमिक मानसिक क्षमताओं की पहचान की थी। थर्स्टन का मानना था कि बौद्धिक निष्पादन इन सात क्षमताओं, जैसे शाब्दिक बोध और तर्कशक्ति, के विभिन्न संयोजनों का परिणाम होता है। यह सिद्धांत बुद्धि को अधिक लचीले और विविध रूप में समझने में मदद करता है, जहाँ व्यक्ति विभिन्न कौशलों में भिन्न स्तर की निपुणता रख सकता है।

133. (A) सक्रिय सहभागिता के स्थान पर निष्क्रिय अधिगम को प्रोत्साहित करती हैं।
शिक्षक-केंद्रित विधियों में सूचना का प्रवाह प्रायः शिक्षक से छात्र की ओर एकतरफा होता है, जिससे छात्र केवल सूचना के प्राप्तकर्ता बन जाते हैं। इस व्यवस्था में छात्रों को प्रश्न पूछने, स्वयं प्रयोग करने या सहयोगात्मक चर्चाओं में भाग लेने के अवसर बहुत कम मिलते हैं। परिणामस्वरूप, छात्र ज्ञान को सक्रिय रूप से निर्मित करने के बजाय उसे केवल रटने का प्रयास करते हैं। यह निष्क्रियता उनकी आलोचनात्मक सोच और गहरी समझ के विकास में बाधक बनती है, जो आधुनिक शिक्षा की एक गंभीर सीमा मानी जाती है।

134. (C) ठोस बुद्धि
थर्स्टन ने अपने सिद्धांत में सात प्राथमिक मानसिक क्षमताओं का वर्णन किया था, जिनमें शाब्दिक बोध, संख्यात्मक क्षमता और तार्किक चिन्तन शामिल थे। 'ठोस बुद्धि' की अवधारणा वास्तव में रेमंड कैटेल द्वारा दी गई थी, जो अर्जित ज्ञान और संचित अनुभव को संदर्भित करती है। थर्स्टन का ध्यान उन मौलिक मानसिक संक्रियाओं पर था जो स्वतंत्र रूप से कार्य करती हैं। अतः ठोस बुद्धि उनके द्वारा प्रस्तावित सात मूल क्षमताओं की सूची का हिस्सा नहीं थी। यह भ्रम दूर करना शैक्षिक सिद्धांतों के स्पष्ट बोध हेतु आवश्यक है।

135. (A) केवल 1
वेक्स्लर मापनी बुद्धि मापन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सुधार मानी जाती थी क्योंकि इसने शाब्दिक और निष्पादन क्षमताओं के लिए अलग-अलग उप-परीक्षण प्रदान किए थे। यह व्यक्ति की मानसिक शक्तियों और दुर्बलताओं का एक संतुलित चित्र प्रस्तुत करती है। कथन 2 गलत है क्योंकि रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस एक अशाब्दिक परीक्षण है जो भाषाई प्रभाव को कम करता है। कथन 3 भी गलत है क्योंकि बिने का मूल परीक्षण मुख्य रूप से उन बच्चों की पहचान के लिए था जिन्हें विशेष सहायता की आवश्यकता थी, न कि केवल प्रतिभाशाली बच्चों के लिए।

136. (A) एक धनात्मक और सहायक अधिगम वातावरण निर्मित करता है।
एक प्रभावी शिक्षक का मुख्य गुण केवल विषय का ज्ञान होना नहीं है, बल्कि कक्षा में ऐसा सुरक्षित और प्रेरक परिवेश बनाना है जहाँ प्रत्येक छात्र बिना किसी डर के सीख सके। सकारात्मक वातावरण छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उनकी सीखने की स्वाभाविक क्षमता को सक्रिय करता है। वह छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं का सम्मान करता है और उनकी कठिनाइयों में उनकी सहायता करता है। ऐसा शिक्षक छात्रों को केवल शिक्षित नहीं करता, बल्कि उन्हें निरंतर प्रगति करने के लिए प्रेरित और सशक्त भी बनाता है।

होती है। अतः बुद्धि केवल वह आधार है जिस पर सृजनात्मकता की इमारत खड़ी होती है।

208. (C) वह औसत आयु जिस पर व्यक्ति प्राप्तांक अर्जित करते हैं।
बिने की 'मानसिक आयु' की अवधारणा ने बुद्धि को मापने का एक क्रांतिकारी पैमाना प्रदान किया था। इसका तात्पर्य यह है कि यदि एक बच्चा उन कार्यों को सफलतापूर्वक कर लेता है जो औसत रूप से दस वर्ष के बच्चे कर पाते हैं, तो उसकी मानसिक आयु दस वर्ष मानी जाएगी, चाहे उसकी वास्तविक आयु कुछ भी हो। यह मापन यह समझने में मदद करता है कि बच्चा अपने आयु वर्ग के अन्य बच्चों की तुलना में बौद्धिक रूप से कहाँ स्थित है। यह अवधारणा आधुनिक बुद्धि लब्धि की गणना और उसके सांख्यिकीय विश्लेषण का मुख्य आधार बनी थी।

209. (D) कैटेल का बुद्धि सिद्धांत
व्यवहारवादी सिद्धांत मुख्य रूप से बाह्य उद्दीपकों और उनके प्रति होने वाली अनुक्रियाओं के वैज्ञानिक अध्ययन पर केंद्रित होते हैं। शास्त्रीय, क्रियाप्रसूत और सामाजिक अधिगम सिद्धांत इसी विचारधारा का विस्तार हैं जो सीखने को पर्यावरण के प्रभाव से जोड़ते हैं। इसके विपरीत, कैटेल का बुद्धि सिद्धांत मानव संज्ञान की आंतरिक संरचना और जन्मजात जैविक क्षमताओं से संबंधित माना जाता है। यह मानसिक योग्यताओं के वर्गीकरण और उनके मापन पर आधारित है, न कि व्यवहार के सुदृढ़ीकरण या संशोधन पर। अतः इसे संज्ञानात्मक सिद्धांतों की श्रेणी में रखा जाता है।

210. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
शिक्षक-केंद्रित विधियां प्रायः सभी छात्रों के लिए एक ही गति और विधि का पालन करती हैं, जो व्यक्तिगत भिन्नताओं की उपेक्षा कर सकती हैं। इसके विपरीत, छात्र-केंद्रित विधियां अधिक लचीली होती हैं और प्रत्येक शिक्षार्थी की विशिष्ट अधिगम शैली एवं गति को समायोजित करने की अनुमति प्रदान करती हैं। इसमें विभेदीकरण संभव है, जिससे धीमी गति से सीखने वाले और प्रतिभाशाली छात्र दोनों को अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर मिलता है। यह दृष्टिकोण शिक्षा को अधिक व्यक्तिगत, समावेशी और प्रत्येक छात्र के लिए प्रभावी बनाने में सफल होता है।

211. (B) मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के माध्यम से शिक्षा में सुधार करना।
शिक्षा मनोविज्ञान का प्राथमिक लक्ष्य शिक्षण और अधिगम की प्रक्रियाओं को अधिक वैज्ञानिक, व्यवस्थित और प्रभावी बनाना है। यह मनोविज्ञान के उन नियमों और सिद्धांतों को प्रदान करता है जो शिक्षार्थी के व्यवहार, विकास और अभिप्रेरणा को गहराई से समझने में मदद करते हैं। इसका उद्देश्य केवल सिद्धांतों का संकलन करना नहीं है, बल्कि उन्हें कक्षा की वास्तविक समस्याओं को हल करने और प्रत्येक छात्र के लिए अधिगम के अनुभवों को बेहतर बनाने हेतु लागू करना है। यह अनुशासन शिक्षा के मानवीय पक्ष को सशक्त करने का एक व्यवस्थित प्रयास है।

212. (D) मूर्त बुद्धि
एडवर्ड थार्नडाइक ने मूर्त बुद्धि को उन वस्तुओं और मशीनों को समझने एवं कुशलतापूर्वक संचालित करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया था जिन्हें हम देख और छू सकते हैं। हाथ-कौशल और विभिन्न यांत्रिक कार्यों में निपुणता इसी बुद्धि का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। यह अमूर्त बुद्धि से भिन्न है, जो प्रतीकों और शब्दों के प्रयोग से संबंधित होती है। मूर्त बुद्धि व्यक्ति को भौतिक वातावरण में प्रभावी ढंग से कार्य करने और व्यावहारिक समस्याओं को हल करने में मदद करती है। यह कौशल तकनीकी और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों में सफलता के लिए अनिवार्य है।

213. (A) अभिक्षमता परीक्षण
अभिक्षमता परीक्षण किसी व्यक्ति की उस अंतर्निहित क्षमता को मापने के लिए अभिकल्पित किया जाता है जो भविष्य में किसी विशेष कौशल, जैसे कंप्यूटर प्रोग्रामन, को सीखने के लिए आवश्यक होती है। यह वर्तमान ज्ञान या उपलब्धि को नहीं मापता, बल्कि यह संकेत देता है कि यदि व्यक्ति को उचित प्रशिक्षण दिया जाए, तो वह उस क्षेत्र में कितना सफल हो सकता है। इसमें तार्किक तर्क और समस्या समाधान जैसे उन आधारभूत घटकों का परीक्षण किया जाता है जो इस क्षेत्र के लिए अनिवार्य हैं। अतः यह करियर मार्गदर्शन हेतु एक अत्यंत उपयोगी वैज्ञानिक उपकरण है।

214. (C) छात्र भी समान दृष्टिकोण अपनाएंगे।
सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार छात्र अपने शिक्षकों को एक सशक्त आदर्श प्रतिरूप के रूप में देखते हैं। जब शिक्षक किसी विषय के प्रति वास्तविक उत्साह और रुचि प्रदर्शित करता है, तो छात्र उस सकारात्मक ऊर्जा का अवलोकन करते हैं और उसे अपने व्यवहार में अपनाने लगते हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि शिक्षक का व्यवहार और उसका दृष्टिकोण छात्रों की आंतरिक अभिप्रेरणा को प्रभावित करने में अत्यंत प्रभावशाली होता है। उत्साह संक्रामक होता है और यह कक्षा में अधिगम के प्रति एक अनुकूल और प्रेरक वातावरण का निर्माण करने में सहायक होता है।

215. (A) लचीलापन
सृजनात्मकता के संदर्भ में लचीलापन वह मानसिक क्षमता है जो व्यक्ति को एक ही उद्दीपन या समस्या को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने के योग्य बनाती है। जब एक कलाकार एक साधारण वस्तु से कई भिन्न और अनोखी छवियां निर्मित करता है, तो वह अपनी सोच की विविधता का उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है। यह मापता है कि व्यक्ति कितनी सहजता से एक वैचारिक ढांचे को छोड़कर दूसरे को अपना सकता है। यह क्षमता व्यक्ति को मानसिक जड़ता से मुक्त करती है और उसे अपरंपरागत तथा बहुआयामी समाधान खोजने में सशक्त सहायता प्रदान करती है।

216. (D) सामान्य और विशिष्ट
चार्ल्स स्पीयरमैन ने बुद्धि का द्वि-कारक सिद्धांत प्रतिपादित किया था जिसमें उन्होंने प्रस्तावित किया कि बौद्धिक प्रदर्शन दो मुख्य कारकों पर निर्भर करता है। सामान्य कारक वह

146. (C) सामाजिक अधिगम सिद्धांत
अल्बर्ट बेंडुरा द्वारा प्रतिपादित सामाजिक अधिगम सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य अपने व्यवहार का अधिकांश भाग दूसरों को देखकर सीखता है। इसमें किसी आदर्श व्यक्ति के कार्यों और उनके सुखद या दुखद परिणामों का निरीक्षण करना सम्मिलित माना जाता है। हम न केवल दूसरों के व्यवहार को दोहराते हैं, बल्कि उनके परिणामों से यह भी तय करते हैं कि वह व्यवहार अपनाने योग्य है या नहीं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि हमारा अधिगम केवल प्रत्यक्ष अनुभव तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक संदर्भ में अवलोकन से भी संचालित होता है।

147. (B) 3, 2, 1
बुद्धि मापन के इतिहास में अवधारणाओं का विकास एक तार्किक क्रम में हुआ है। सर्वप्रथम, बिने ने 'मानसिक आयु' का विचार दिया जिससे बच्चों के विकास को मापने का वैज्ञानिक आधार मिला। इसके बाद, स्पीयरमैन ने सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा 'g' कारक या सामान्य बुद्धि की पहचान की थी। अंत में, वेक्स्लर ने शाब्दिक और निष्पादन क्षमताओं के बीच अंतर करके बुद्धि मापन को और अधिक सूक्ष्म एवं विस्तृत बना दिया। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे समय के साथ बुद्धि की परिभाषा और उसे मापने के तरीके अधिक वैज्ञानिक होते गए।

148. (D) एक शिक्षक जिसके छात्र निरंतर अधिगम में वृद्धि प्रदर्शित करते हैं।
शिक्षक की प्रभावशीलता का वास्तविक मापदंड केवल उसकी शैक्षणिक योग्यता या लोकप्रियता नहीं माना जाता है। इसका सबसे प्रमाणिक आधार छात्रों के ज्ञान, कौशल और व्यवहार में होने वाला सकारात्मक परिवर्तन है। एक कुशल शिक्षक वही है जो अपने शिक्षण कौशल का उपयोग करके प्रत्येक शिक्षार्थी की क्षमता को अधिकतम स्तर तक पहुँचाने में पूर्णतः सफल होता है। छात्र विकास के मापने योग्य परिणाम ही शिक्षक के प्रयासों और उसकी व्यावसायिक दक्षता का सर्वोत्तम प्रतिबिंब होते हैं जो कक्षा के भीतर स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

149. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
शिक्षा मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र केवल कुछ विशिष्ट छात्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सभी प्रकार के शिक्षार्थियों का व्यापक अध्ययन करता है। इसमें शिक्षण की विभिन्न रणनीतियों, अधिगम की प्रक्रियाओं और कक्षा के भीतर के सामाजिक वातावरण का विश्लेषण सम्मिलित होता है। यह अनुशासन यह समझने का प्रयास करता है कि अधिगम को कैसे सुगम बनाया जाए और भावनात्मक कारक सीखने को कैसे प्रभावित करते हैं। अतः इसे केवल प्रतिभाशाली बच्चों के अध्ययन तक सीमित मानना इसके व्यापक शैक्षिक उद्देश्यों और वैज्ञानिक प्रकृति के विपरीत है।

150. (C) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
जब किसी परीक्षण का लक्ष्य संगीत जैसे एक विशेष क्षेत्र में व्यक्ति की अंतर्निहित संभावनाओं को मापना होता है, तो वह विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण कहलाता है। यह परीक्षण सामान्य बुद्धि मापन के स्थान पर उन सूक्ष्म कौशलों पर ध्यान केंद्रित करता है जो उस विशेष कला में सफलता के लिए अनिवार्य माने जाते हैं, जैसे स्वर और लय का ज्ञान। ऐसे परीक्षणों के परिणाम यह बताते हैं कि यदि व्यक्ति को उचित प्रशिक्षण दिया जाए, तो वह उस विशिष्ट क्षेत्र में भविष्य में कितनी ऊँचाई तक पहुँचने में सफल हो सकता है।

151. (A) "प्राथमिक मानसिक क्षमताओं" का एक समूह।
लुई थर्स्टन ने स्पीयरमैन के एकल 'g' कारक के विचार को चुनौती देते हुए प्रस्तावित किया कि बुद्धि सात स्वतंत्र मानसिक क्षमताओं का एक समूह है। उनके अनुसार, ये क्षमताएं जैसे शाब्दिक बोध, स्मृति और तर्कशक्ति, एक-दूसरे से पूर्णतः स्वायत्त होती हैं। थर्स्टन का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति का बौद्धिक स्तर इन विभिन्न क्षमताओं के संतुलित मिश्रण पर निर्भर करता है। यह दृष्टिकोण बुद्धि को अधिक व्यापक और विविध रूप में समझने में मदद करता है, जो मानवीय योग्यताओं की विविधता को सही ढंग से दर्शाता है।

152. (B) ज्ञान के भंडार और प्रदाता के रूप में कार्य करता है।
शिक्षक-केंद्रित पद्धति में पूरी कक्षा शिक्षक के निर्देशों और उसकी विशेषज्ञता के इर्द-गिर्द ही घूमती है। यहाँ शिक्षक को विषय का पूर्ण ज्ञाता माना जाता है जिसका मुख्य कार्य छात्रों तक सूचनाओं को पहुँचाना है। छात्र इस प्रक्रिया में प्रायः निष्क्रिय श्रोता होते हैं और शिक्षक के दिए गए ज्ञान को ही ग्रहण करते हैं। कक्षा के सभी निर्णय, गति और अनुशासन का नियंत्रण पूरी तरह से शिक्षक के पास सुरक्षित रहता है। यह मॉडल पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों का आधार है जहाँ शिक्षण एकतरफा संचार के रूप में होता है।

153. (B) निष्पादन बुद्धि लब्धि प्राप्तांक
वेक्स्लर मापनी में निष्पादन उप-परीक्षणों का उद्देश्य व्यक्ति की गैर-भाषाई और क्रियात्मक क्षमताओं का मूल्यांकन करना है। ब्लॉक डिजाइन और चित्रों को व्यवस्थित करना जैसे कार्य हाथ-आंख के समन्वय, स्थानिक बोध और दृश्य विश्लेषण की मांग करते हैं। ये कार्य भाषा के उपयोग के बिना समस्या समाधान की शक्ति को दर्शाते हैं। इसलिए, इन कार्यों में प्राप्त सफलता सीधे निष्पादन बुद्धि लब्धि के प्राप्तांक को प्रभावित करती है, जो व्यक्ति की व्यावहारिक और तार्किक दक्षता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं वैज्ञानिक संकेतक माना जाता है।

154. (C) बुद्धि सृजनात्मकता हेतु एक पूर्वापेक्षा है, परंतु कोई निश्चित गारंटी नहीं।
बुद्धि और सृजनात्मकता के बीच एक सीमांत संबंध पाया जाता है। वैज्ञानिक शोध यह बताते हैं कि मौलिक और नवीन विचार उत्पन्न करने के लिए व्यक्ति के पास एक औसत स्तर की तार्किक क्षमता का होना अनिवार्य है। हालांकि, बहुत उच्च बुद्धि लब्धि होने का यह अर्थ कदापि नहीं है कि वह व्यक्ति स्वतः सृजनात्मक भी होगा। सृजनात्मकता के लिए कल्पनाशीलता, जोखिम लेने की क्षमता और स्वतंत्र सोच जैसे अन्य व्यक्तित्व गुणों की भी आवश्यकता होती है। अतः बुद्धि केवल आधार प्रदान करती है, पूर्ण सृजनात्मक परिणाम की गारंटी नहीं।

155. (D) सामाजिक अधिगम सिद्धांत संज्ञान के बिना विशुद्ध रूप से व्यवहारवादी है।
सामाजिक अधिगम सिद्धांत वास्तव में शास्त्रीय व्यवहारवाद से भिन्न है क्योंकि यह अधिगम की प्रक्रिया में आंतरिक मानसिक अवस्थाओं को भी शामिल करता है। अल्बर्ट बेंडुरा ने स्पष्ट किया कि अवलोकन से सीखने के लिए अवधान, स्मृति और चिन्तन जैसी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है। विशुद्ध व्यवहारवाद केवल बाहरी उद्दीपकों और अनुक्रियाओं पर ध्यान देता था। अतः यह कहना कि सामाजिक अधिगम सिद्धांत में संज्ञान की कोई भूमिका नहीं है, इसके मूल सिद्धांतों के पूर्णतः विपरीत और मनोवैज्ञानिक रूप से सर्वथा त्रुटिपूर्ण माना जाता है।

156. (A) विभिन्न दृष्टिकोणों पर वाद-विवाद हेतु छात्रों को समूहों में विभाजित करना।
छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण में छात्रों की सक्रिय सहभागिता और उनके स्वयं के विचारों के निर्माण को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। इतिहास जैसे विषय में वाद-विवाद छात्रों को विभिन्न ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों का विश्लेषण करने और अपने तर्क विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। व्याख्यान सुनने या केवल पाठ पढ़ने के विपरीत, यह गतिविधि उन्हें गहराई से सोचने और दूसरों के साथ सहयोग करने के लिए प्रेरित करती है। यह विधि छात्रों को ज्ञान के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के स्थान पर एक जागरूक और सक्रिय खोजी बनाने में सफल होती है।

157. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
शिक्षा मनोविज्ञान को एक अनुप्रयुक्त विज्ञान माना जाता है क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य केवल सिद्धांतों का निर्माण करना नहीं, बल्कि उन्हें शिक्षा की वास्तविक समस्याओं को सुलझाने के लिए उपयोग करना है। यह मनोविज्ञान के नियमों, जैसे अधिगम और अभिप्रेरणा के सिद्धांतों को कक्षा में शिक्षण विधियों को सुधारने हेतु प्रभावी ढंग से लागू करता है। जब मनोवैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है, तो यह शिक्षा और मनोविज्ञान के बीच के व्यावहारिक संबंध को स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है।

158. (B) छात्र क्षमताओं और अधिगम के आकलन हेतु वैध विधियां।
शिक्षा में मनोविज्ञान का सबसे बड़ा योगदान मूल्यांकन की वैज्ञानिक और विश्वसनीय पद्धतियों का विकास करना रहा है। इसने शिक्षकों को ऐसे उपकरण प्रदान किए हैं जिनसे छात्रों की बुद्धि, अभिक्षमता और व्यक्तित्व का वस्तुनिष्ठ मापन किया जा सके। ये विधियां केवल रटने की परीक्षा नहीं लेतीं, बल्कि छात्र की वास्तविक समझ और क्षमताओं का आकलन करती हैं। इससे शिक्षकों को यह समझने में मदद मिलती है कि किन छात्रों को अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है और शिक्षण विधियों को भविष्य में कैसे और बेहतर बनाया जा सकता है।

159. (A) स्पीयरमैन
चार्ल्स स्पीयरमैन के अनुसार, बुद्धि का मुख्य कार्य अनुभवों के बीच संबंधों को देखना और उनके आधार पर नवीन निष्कर्ष निकालना है। उन्होंने इसे 'संबंधों और सहसंबंधों का निष्कर्षण' कहा था, जो उनके सामान्य कारक या सामान्य मानसिक ऊर्जा का मूल आधार माना जाता था। उनका मानना था कि बौद्धिक श्रेष्ठता इसी क्षमता पर निर्भर करती है कि कोई व्यक्ति कितनी सूक्ष्मता से विभिन्न तथ्यों के बीच अंतर्निहित नियमों को पहचान सकता है। यह विचार सांख्यिकीय विश्लेषण और मानव संज्ञान की गहन समझ का एक अनूठा संगम है।

160. (C) व्यवहारवादी और सामाजिक अधिगम सिद्धांत
अच्छे व्यवहार की प्रशंसा करना और अवांछित व्यवहार की उपेक्षा करना सुदृढ़ीकरण और दंड की मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं पर आधारित है। प्रशंसा एक धनात्मक सुदृढ़ीकरण के रूप में कार्य करती है जो छात्र को भविष्य में वैसा ही व्यवहार करने हेतु प्रोत्साहित करती है। यह स्किनर के क्रियाप्रसूत अनुबंधन और बेंडुरा के सामाजिक अधिगम के सिद्धांतों का व्यावहारिक अनुप्रयोग माना जाता है। ये विधियां कक्षा में अनुशासन बनाए रखने और छात्रों में सकारात्मक आदतों का विकास करने के लिए अत्यंत प्रभावी और वैज्ञानिक रूप से सिद्ध उपकरण हैं।

161. (D) आंतरिक तुलना हेतु एक सामान्य मानक समूह।
बहु-अभिक्षमता बैटरी का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसके सभी उप-परीक्षणों को एक ही बड़े और विविध मानक समूह पर मानकीकृत किया जाता है। इससे मनोवैज्ञानिकों को यह अवसर मिलता है कि वे व्यक्ति के विभिन्न कौशलों के प्राप्तांकों की आपस में सटीक तुलना कर सकें। अलग-अलग विशिष्ट परीक्षणों के मानक भिन्न हो सकते हैं, जिससे तुलनात्मक निष्कर्ष निकालना कठिन हो जाता है। बैटरी का उपयोग करने से व्यक्ति की शक्तियों और सीमाओं का एक स्पष्ट, एकीकृत और सुसंगत प्रोफाइल प्राप्त होता है जो उचित मार्गदर्शन के लिए अनिवार्य है।

162. (C) परीक्षण के प्रश्न उत्तरोत्तर अधिक कठिन होते जाते हैं।
रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस में प्रोग्रेसिव शब्द का अर्थ इसकी कठिनाई के स्तर में होने वाली निरंतर वृद्धि से होता है। परीक्षण की शुरुआत सरल और सुबोध आकृतियों से होती है, और जैसे-जैसे परीक्षार्थी आगे बढ़ता है, तार्किक संबंध अधिक जटिल और अमूर्त होते जाते हैं। यह संरचना व्यक्ति की सीखने की क्षमता और मानसिक चपलता का परीक्षण करती है क्योंकि उसे पिछले प्रश्नों के अनुभव का उपयोग अगले कठिन प्रश्नों को हल करने में करना होता है। यह तार्किक चिन्तन का एक अत्यंत व्यवस्थित एवं क्रमिक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

163. (B) सक्रिय सहभागिता
छात्र-केंद्रित कक्षा की सबसे प्रमुख पहचान छात्रों का शिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होना मानी जाती है। यहाँ विद्यार्थी केवल सूचनाओं के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं होते, बल्कि वे प्रश्न पूछते हैं, चर्चा करते हैं और प्रयोगों के माध्यम से स्वयं ज्ञान का निर्माण करते हैं। शिक्षक का कार्य सूचना देना नहीं बल्कि अधिगम के अवसरों को सुगम बनाना होता है। इस परिवेश में रटने के स्थान पर अर्थपूर्ण समझ और स्वायत्तता को बढ़ावा दिया जाता है, जिससे छात्रों में आत्मविश्वास और उत्तरदायित्व की भावना निरंतर विकसित होती है।

164. (D) अपसारी चिन्तन
"परंपरा से हटकर सोचना" वास्तव में अपसारी चिन्तन का एक सरल और व्यावहारिक वर्णन माना जाता है। यह उस संज्ञानात्मक प्रक्रिया को दर्शाता है जहाँ व्यक्ति किसी समस्या के लिए एक निश्चित और रटे-रटाए समाधान के बजाय कई नवीन, अनोखे और भिन्न-भिन्न विकल्पों की निरंतर खोज करता है। यह सृजनात्मकता का मूल आधार है, जो कल्पनाशीलता और लचीलेपन को प्रोत्साहित करता है। अभिसारी चिन्तन के विपरीत, यह विधि एक सही उत्तर खोजने के स्थान पर अनेक संभावनाओं के द्वार खोलती है, जो नवीनता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

165. (D) 1, 2, और 3
बुद्धि के विभिन्न सिद्धांत मानवीय क्षमताओं की व्याख्या के अलग-अलग दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। स्पीयरमैन ने माना कि एक सामान्य कारक सभी कार्यों को जोड़ता है, जबकि थर्स्टन ने सात स्वतंत्र प्राथमिक क्षमताओं पर बल दिया जो एक-दूसरे से पूर्णतः स्वायत्त हैं। थार्नडाइक ने प्रस्तावित किया कि बुद्धि असंख्य सूक्ष्म तत्वों का योग है, न कि कोई एकल इकाई। ये सभी कथन मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के विभिन्न चरणों और विचारधाराओं को सही ढंग से प्रस्तुत करते हैं, जो सामूहिक रूप से बुद्धि की जटिल प्रकृति को स्पष्ट करने में सफल होते हैं।

166. (C) एक सुगमकर्ता के रूप में कार्य करना और जांच में छात्रों का मार्गदर्शन करना।
अन्वेषण-आधारित अधिगम में शिक्षक की भूमिका सूचना के सीधे स्रोत के स्थान पर एक सहायक की हो जाती है। वह छात्रों को तैयार उत्तर देने के बजाय उनके सामने सही प्रश्न और संसाधन प्रस्तुत करता है जो उनकी जिज्ञासा को जागृत करें। शिक्षक छात्रों को उनकी खोज की प्रक्रिया में मार्गदर्शन प्रदान करता है ताकि वे वैज्ञानिक और तार्किक ढंग से निष्कर्षों तक पहुँच सकें। यह दृष्टिकोण छात्रों को स्वतंत्र विचारक बनाने और उनके भीतर शोध की प्रवृत्ति विकसित करने में शैक्षिक स्तर पर अत्यंत सहायक और प्रभावशाली सिद्ध होता है।

167. (A) अभिप्रेरणा
अल्बर्ट बेंडुरा के अनुसार अवलोकनात्मक अधिगम केवल तभी सफल होता है जब उसमें चार प्रक्रियाएं सही क्रम में कार्य करें। सबसे पहले आदर्श पर ध्यान देना, फिर उसे याद रखना और उसके बाद उस क्रिया को शारीरिक रूप से दोहराना आवश्यक माना जाता है। अंत में, उस व्यवहार को भविष्य में भी जारी रखने के लिए व्यक्ति के पास पर्याप्त कारण या प्रोत्साहन होना चाहिए। अभिप्रेरणा के बिना व्यक्ति सीखा हुआ व्यवहार प्रदर्शित करने में रुचि नहीं लेता, अतः यह अधिगम का एक अनिवार्य घटक है जिसके बिना अनुकरण की प्रक्रिया अधूरी रहती है।

168. (D) ठोस बुद्धि; तरल बुद्धि
रेमंड कैटेल ने बुद्धि को दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया था जो सीखने और तर्क करने के अलग-अलग तरीकों को दर्शाती हैं। ठोस बुद्धि व्यक्ति के संचित ज्ञान और पूर्व अनुभवों के उपयोग की क्षमता मानी जाती है, जो शिक्षा के साथ परिष्कृत होती है। इसके विपरीत, तरल बुद्धि वह नैसर्गिक शक्ति है जो नवीन और अपरिचित समस्याओं को सुलझाने के लिए आवश्यक होती है। यह वर्गीकरण यह समझने में मदद करता है कि कैसे कुछ क्षमताएं जन्मजात होती हैं जबकि अन्य परिवेश और अधिगम के माध्यम से निरंतर विकसित होती रहती हैं।

169. (B) अधिगम प्रक्रिया में एक सक्रिय भागीदार के रूप में शिक्षार्थी।
शिक्षा मनोविज्ञान का सबसे क्रांतिकारी योगदान छात्र को केवल एक निष्क्रिय श्रोता के स्थान पर अधिगम का केंद्र बनाना माना जाता है। यह मानता है कि छात्र अपने पूर्व ज्ञान, रुचियों और अनुभवों के आधार पर सक्रिय रूप से ज्ञान का निर्माण करते हैं। जब शिक्षार्थी को सक्रिय भागीदारी का अवसर मिलता है, तो उनकी सीखने की गति और समझ की गहराई बहुत बढ़ जाती है। यह दृष्टिकोण रटने के स्थान पर अर्थपूर्ण अधिगम को बढ़ावा देता है और छात्र की स्वायत्तता एवं उत्तरदायित्व को शिक्षण में सर्वोच्च स्थान प्रदान करता है।

170. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
अभिक्षमता परीक्षणों के विभिन्न रूप उनके उपयोग के विशिष्ट उद्देश्य पर निर्भर करते हैं। एक विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण किसी एक संकीर्ण और स्पष्ट क्षेत्र, जैसे संगीत या यांत्रिकी, में व्यक्ति की सफलता की संभावना को मापता है। इसके विपरीत, बहु-अभिक्षमता बैटरी व्यक्ति की विभिन्न योग्यताओं का एक व्यापक प्रोफाइल प्रदान करती है, जिससे उसकी शक्तियों और सीमाओं का तुलनात्मक विश्लेषण संभव हो जाता है। ये दोनों उपकरण छात्रों को उनके भविष्य के करियर और शैक्षिक पथ के बारे में सही निर्णय लेने में वैज्ञानिक सहायता देते हैं।

171. (D) विभिन्न शिक्षार्थियों के अनुरूप विधियों को अपनाने की क्षमता।
एक प्रभावी शिक्षक की सबसे बड़ी पहचान उसका लचीलापन और संवेदनशीलता मानी जाती है। वह यह समझता है कि प्रत्येक छात्र की सीखने की गति और शैली अलग होती है, इसलिए वह अपनी शिक्षण विधियों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार निरंतर ढालता है। केवल एक ही ढर्रे पर चलना या केवल अनुशासन पर ध्यान देना शिक्षण को नीरस बना सकता है। छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं का सम्मान करना और तदनुसार नवाचार करना ही वास्तव में सफल शिक्षण का आधार है, जो प्रत्येक छात्र के सर्वांगीण विकास को कक्षा में सुनिश्चित करता है।

172. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
शिक्षण विधियों का वर्गीकरण इस आधार पर किया जाता है कि कक्षा की गतिविधियों का नेतृत्व कौन कर रहा है। व्याख्यान और प्रत्यक्ष निर्देश शिक्षक-केंद्रित विधियां हैं क्योंकि इनमें शिक्षक सक्रिय रूप से सूचना प्रदान करता है और नियंत्रण रखता है। इसके विपरीत, समस्या-आधारित अधिगम और खोज अधिगम छात्र-केंद्रित हैं क्योंकि इनमें छात्र स्वयं अन्वेषण करते हैं और ज्ञान का निर्माण करते हैं। यह वर्गीकरण स्पष्ट करता है कि अधिगम की प्रक्रिया में सक्रियता और स्वायत्तता का स्तर प्रत्येक विशिष्ट विधि में किस प्रकार भिन्न होता है।

स्वरुप के बारे में नहीं है, बल्कि कक्षा में होने वाली जीवंत अंतःक्रियाओं और उनके वास्तविक परिणामों से संबंधित है। एक प्रभावी शिक्षक वह है जो छात्रों के ज्ञान, व्यवहार और दृष्टिकोण में मापने योग्य और स्थायी सकारात्मक परिवर्तन लाने में पूर्णतः सफल सिद्ध होता है, जो छात्र की उन्नति से झलकता है।

191. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
रेमंड कैटेल ने बुद्धि की दो मुख्य श्रेणियों के माध्यम से मानव संज्ञान को स्पष्ट किया है। तरल बुद्धि वह जन्मजात तार्किक शक्ति है जो किसी भी पूर्व शिक्षा के बिना नवीन समस्याओं को सुलझाने में सहायक होती है। दूसरी ओर, ठोस बुद्धि संचित ज्ञान का वह भंडार है जो शिक्षा, संस्कृति और जीवन के अनुभवों के माध्यम से धीरे-धीरे विकसित होता है। ये दोनों घटक मिलकर व्यक्ति की समग्र बौद्धिक कार्यप्रणाली का निर्माण करते हैं, जहाँ एक जैविक आधार प्रदान करती है और दूसरी जीवन भर अर्जित किए गए अनुभवों को दर्शाती है।

192. (C) तरल बुद्धि
रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस को तरल बुद्धि का एक सशक्त मापक माना जाता है क्योंकि यह अर्जित सूचनाओं के स्थान पर स्वाभाविक तर्कशक्ति पर केंद्रित होता है। इस परीक्षण में प्रस्तुत आकृतियों और प्रतिरूपों के बीच संबंधों को समझने के लिए व्यक्ति को अपनी जन्मजात तार्किक क्षमता का उपयोग करना पड़ता है। चूंकि इसमें भाषा या सांस्कृतिक ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए यह मस्तिष्क की विशुद्ध सूचना प्रसंस्करण दक्षता को मापता है। यही कारण है कि इसे विभिन्न पृष्ठभूमियों के व्यक्तियों की स्वाभाविक योग्यता परखने हेतु आदर्श माना जाता है।

193. (D) वर्णनात्मक, अभ्यास का मार्गदर्शन करने हेतु सिद्धांत प्रदान करना।
शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वर्णनात्मक और वैज्ञानिक मानी जाती है क्योंकि यह अधिगम की प्रक्रियाओं और मानवीय व्यवहार का गहराई से विश्लेषण करती है। यह शिक्षकों को कठोर नियमों का एक समूह देने के बजाय ऐसे लचीले सिद्धांत प्रदान करती है जो उन्हें अपनी शिक्षण पद्धतियों को सुधारने में मदद करते हैं। यह अनुशासन इस बात का विवरण देता है कि छात्र कैसे सीखते हैं और कौन सी परिस्थितियाँ अधिगम को सुलभ बनाती हैं। यह वैज्ञानिक ज्ञान कक्षा में शिक्षण के अभ्यास को और अधिक प्रभावी, अर्थपूर्ण और परिणामोन्मुखी बनाने का मार्गदर्शन करता है।

194. (C) पॉवरपॉइंट स्लाइड्स के माध्यम से एक व्याख्यान
व्याख्यान विधि विशुद्ध रूप से शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण का उदाहरण है क्योंकि इसमें सूचना का प्रवाह केवल एक दिशा में, शिक्षक से छात्रों की ओर होता है। शिक्षक यहाँ ज्ञान के भंडार और मुख्य संचारक के रूप में कार्य करता है, जबकि छात्र प्रायः निष्क्रिय श्रोता होते हैं। दृश्य प्रस्तुतियों का उपयोग केवल सूचना को व्यवस्थित करने में मदद करता है, परंतु यह शिक्षण के मूल स्वरुप को नहीं बदलता है। इसमें छात्रों को स्वयं खोजने या सक्रिय भागीदारी के अवसर अत्यंत सीमित होते हैं, जो पारंपरिक निर्देशात्मक पद्धति की एक प्रमुख विशेषता है।

195. (D) 1, 2, और 3
अधिगम की विभिन्न प्रक्रियाओं का यह विश्लेषण शिक्षा के विविध दृष्टिकोणों को स्पष्ट करता है। बेंडुरा के अनुसार अवलोकन सीखना एक बुनियादी सामाजिक प्रक्रिया मानी जाती है। शिक्षक-केंद्रित विधियां प्रायः छात्रों को केवल सूचनाएं ग्रहण करने वाला मानती हैं, जिससे अधिगम निष्क्रिय हो जाता है। इसके विपरीत, आधुनिक छात्र-केंद्रित विधियां इस बात पर बल देती हैं कि ज्ञान कोई वस्तु नहीं जिसे दिया जाए, बल्कि इसे छात्र सक्रिय रूप से स्वयं निर्मित करते हैं। ये सभी कथन शिक्षा के क्रमिक विकास और विभिन्न मनोवैज्ञानिक विचारधाराओं को सही ढंग से दर्शाते हैं।

196. (D) अभिक्षमता परीक्षण क्षमता मापते हैं; उपलब्धि परीक्षण पूर्व अधिगम को मापते हैं।
अभिक्षमता और उपलब्धि परीक्षणों के बीच का मूल अंतर उनके समय और उद्देश्य के दृष्टिकोण में निहित होता है। उपलब्धि परीक्षण यह मापता है कि व्यक्ति ने अब तक शिक्षा और अभ्यास के माध्यम से क्या और कितना सीखा है, जो उसके अतीत के प्रयासों का सीधा परिणाम है। इसके विपरीत, अभिक्षमता परीक्षण व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता और भविष्य की संभावनाओं का संकेत देता है। यह बताता है कि उचित प्रशिक्षण मिलने पर व्यक्ति किसी विशेष क्षेत्र में कितनी कुशलता प्राप्त कर सकता है। अतः एक का ध्यान अतीत पर है और दूसरे का भविष्य पर।

197. (B) 2, 3, 1
बुद्धि के सिद्धांतों का विकास एक ऐतिहासिक क्रमिक प्रक्रिया रही है। इसकी शुरुआत चार्ल्स स्पीयरमैन द्वारा सामान्य बुद्धि की पहचान से हुई थी। इसके बाद, लुई थर्स्टन ने स्पीयरमैन के विचार को चुनौती देते हुए सात स्वतंत्र प्राथमिक मानसिक क्षमताओं का समूह कारक सिद्धांत प्रस्तुत किया था। अंत में, रेमंड कैटेल ने बौद्धिक संरचना को और अधिक परिष्कृत करते हुए उसे तरल और ठोस बुद्धि के रूप में विभाजित किया। यह कालक्रम बुद्धि की हमारी समझ के क्रमिक विस्तार और उसे और अधिक सूक्ष्म एवं वैज्ञानिक बनाने की यात्रा को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

198. (C) सामाजिक बुद्धि
एडवर्ड थार्नडाइक ने सामाजिक बुद्धि को दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से व्यवहार करने और मानवीय अंतःक्रियाओं को समझने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया था। इसमें लोगों की भावनाओं, इरादों और व्यवहारों को सही ढंग से पढ़ने तथा तदनुसार अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने का कौशल सम्मिलित होता है। यह बुद्धि व्यक्ति को सामाजिक परिस्थितियों में सफल होने और दूसरों के साथ सामंजस्य बिठाने में प्रभावी मदद करती है। थार्नडाइक के अनुसार, यह अमूर्त और मूर्त बुद्धि की तुलना में एक विशिष्ट और अत्यंत व्यावहारिक मानवीय योग्यता मानी जाती है।

समझने में मदद मिली कि व्यक्ति किन विशिष्ट मानसिक क्षेत्रों में सशक्त है और कहाँ उसे कठिनाई हो रही है। इसी नैदानिक गहराई के कारण इसे बुद्धि मापन के क्षेत्र में पूर्ववर्ती आयु-आधारित परीक्षणों की तुलना में श्रेष्ठ और विश्वसनीय माना जाता है।

182. (C) सामुदायिक कचरे के प्रबंधन हेतु नवीन समाधान प्रस्तावित करना।
सृजनात्मक चिन्तन का आकलन करने के लिए ऐसे कार्यों की आवश्यकता होती है जो छात्रों को अपनी कल्पना का उपयोग करने और अपरंपरागत समाधान खोजने की चुनौती दें। कचरा प्रबंधन हेतु नवीन समाधान खोजना एक मुक्त प्रश्न है जिसका कोई एक निश्चित उत्तर नहीं होता है। यह छात्रों को समस्या का विश्लेषण करने, विभिन्न श्रेणियों में सोचने और मौलिक विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करता है। निबंध लिखना या बहुविकल्पीय परीक्षण देना मुख्य रूप से स्मृति पर आधारित होते हैं, न कि वास्तविक सृजनात्मकता और नवीन समाधानों के निर्माण पर।

183. (A) यह छात्रों को प्रेरित करने की क्षमता से स्वतंत्र है।
शिक्षक प्रभावशीलता का एक अनिवार्य और अटूट हिस्सा छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करने की क्षमता मानी जाती है। एक प्रभावी शिक्षक वह नहीं है जो केवल ज्ञान देता है, बल्कि वह है जो छात्रों में विषय के प्रति वास्तविक रुचि और उत्साह जागृत कर सके। अभिप्रेरणा के बिना छात्र अपनी पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं कर पाते, अतः इसे सफल शिक्षण से अलग नहीं किया जा सकता है। प्रभावी शिक्षण में विषय का ज्ञान, कक्षा प्रबंधन और प्रेरणादायक संचार का संतुलित संगम होता है, जो छात्र विकास को सुनिश्चित करता है।

184. (D) एक सामान्य क्षमता सभी कार्यों पर निष्पादन को प्रभावित करती है।
चार्ल्स स्पीयरमैन के अनुसार, 'g' कारक वह अंतर्निहित सामान्य मानसिक ऊर्जा है जो सभी प्रकार की बौद्धिक गतिविधियों में समान रूप से कार्य करती है। उनका मानना था कि बौद्धिक कार्यों के बीच जो धनात्मक सह-संबंध पाया जाता है, उसका मुख्य कारण यही सामान्य क्षमता होती है। व्यक्ति किसी विशेष क्षेत्र में कितना भी निपुण क्यों न हो, उसका आधारभूत प्रदर्शन इसी सामान्य शक्ति द्वारा संचालित होता है। यह अवधारणा बुद्धि को एक एकीकृत शक्ति के रूप में देखने का आधार प्रदान करती है और मानवीय संज्ञान की दक्षता को दर्शाती है।

185. (B) यह अवलोकन और प्रतिरूपण के महत्व पर बल देता है।
सामाजिक अधिगम सिद्धांत का मूल आधार यह विचार है कि मनुष्य अपने व्यवहार का एक बहुत बड़ा भाग सामाजिक संदर्भ में दूसरों को देखकर सीखता है। अल्बर्ट बेंडुरा ने स्पष्ट किया कि हम न केवल दूसरों के कार्यों का अनुकरण करते हैं, बल्कि उनके परिणामों को देखकर यह भी सीखते हैं कि भविष्य में क्या करना उचित है। यह सिद्धांत अधिगम को केवल एक यांत्रिक प्रक्रिया न मानकर एक सामाजिक और संज्ञानात्मक घटना मानता है, जहाँ समाज हमारे आचरण और मूल्यों को आकार देने में अत्यंत केंद्रीय और प्रभावी भूमिका निभाता है।

186. (C) अभिक्षमता परीक्षण
अभिक्षमता परीक्षण किसी व्यक्ति की उस अंतर्निहित क्षमता को मापने हेतु बनाया जाता है जो भविष्य में किसी विशेष कौशल, जैसे कोडिंग, को सीखने के लिए आवश्यक होती है। यह वर्तमान ज्ञान या उपलब्धि को नहीं मापता, बल्कि यह संकेत देता है कि यदि व्यक्ति को सही प्रशिक्षण दिया जाए, तो वह उस क्षेत्र में कितना सफल हो सकता है। इसमें तार्किक तर्क और समस्या समाधान जैसे उन आधारभूत घटकों का परीक्षण किया जाता है जो प्रोग्रामिंग के लिए अनिवार्य हैं। अतः यह करियर नियोजन हेतु एक वैज्ञानिक और सटीक भविष्यवक्ता माना जाता है।

187. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
थ्रेसहोल्ड परिकल्पना यह स्पष्ट करती है कि बुद्धि और सृजनात्मकता पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं हैं, बल्कि एक निश्चित स्तर तक परस्पर जुड़ी मानी जाती हैं। औसत से अधिक बुद्धि होने के बाद, व्यक्ति की सृजनात्मकता उसके व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा और अपसारी चिन्तन पर अधिक निर्भर करने लगती है। पारंपरिक बुद्धि लब्धि परीक्षण मुख्य रूप से तार्किक और एकदिशीय चिन्तन को मापते हैं, जो सृजनात्मकता के बहुआयामी पक्षों को पूरी तरह से पकड़ने में विफल रहते हैं। यही कारण है कि बहुत उच्च बुद्धि लब्धि वाला व्यक्ति अनिवार्य रूप से सृजनात्मक नहीं होता।

188. (A) कक्षा में नियंत्रण और गतिविधि का केंद्र।
शिक्षक-केंद्रित और छात्र-केंद्रित विधियों के बीच का मूल अंतर इस बात में निहित है कि अधिगम की प्रक्रिया का वास्तविक नेतृत्व कौन कर रहा है। शिक्षक-केंद्रित विधि में शिक्षक सूचना का मुख्य स्रोत और प्रबंधक होता है, जहाँ छात्र प्रायः निष्क्रिय रहते हैं। इसके विपरीत, छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण में छात्रों की जिज्ञासा, स्वायत्तता और सक्रिय भागीदारी को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। यहाँ शिक्षक केवल एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। यह अंतर केवल पढ़ाने की शैली का नहीं, बल्कि शिक्षा के प्रति सम्पूर्ण दार्शनिक दृष्टिकोण का है।

189. (B) सामान्य बुद्धि
लुई थर्स्टन ने अपने समूह कारक सिद्धांत में सात स्वतंत्र प्राथमिक मानसिक क्षमताओं की पहचान की थी, जिनमें शाब्दिक बोध और संख्यात्मक क्षमता शामिल थीं। उन्होंने स्पीयरमैन के एकल सामान्य बुद्धि या 'g' कारक के अस्तित्व को पूरी तरह से नकार दिया था। थर्स्टन का मानना था कि बौद्धिक व्यवहार इन विशिष्ट संक्रियाओं का परिणाम होता है, न कि किसी एक वैश्विक शक्ति का। अतः सामान्य बुद्धि उनके द्वारा प्रस्तावित वर्गीकरण का हिस्सा नहीं थी। यह सिद्धांत मानवीय योग्यताओं की विविधता को समझने में एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है।

190. (B) शिक्षण की प्रक्रिया और छात्र अधिगम पर उसका प्रभाव।
शिक्षक प्रभावशीलता की अवधारणा का मुख्य केंद्र इस बात पर है कि एक शिक्षक अपने शिक्षण कौशलों के माध्यम से छात्रों के सीखने के स्तर को कितना उन्नत कर पाता है। यह केवल शिक्षक की व्यक्तिगत डिग्रियों या विद्यालय के भौतिक

173. (B) उन बच्चों की पहचान करना जिन्हें विशेष शिक्षा कार्यक्रमों की आवश्यकता थी।
अल्फ्रैड बिने को फ्रांसीसी सरकार ने एक ऐसी विधि विकसित करने का कार्य सौंपा था जो यह पहचान सके कि कौन से बच्चे सामान्य स्कूली शिक्षा के साथ तालमेल नहीं बिठा पा रहे हैं। इस परीक्षण का प्राथमिक उद्देश्य उन छात्रों को चिन्हित करना था जिन्हें विशेष शैक्षिक सहायता और अलग पाठ्यक्रम की आवश्यकता थी। यह मापन शैक्षिक पिछड़ेपन को वैज्ञानिक आधार पर समझने का प्रथम सफल प्रयास था। बिने का कार्य मानवतावादी था क्योंकि इसका उद्देश्य बच्चों को उनकी स्वाभाविक क्षमताओं के अनुरुप सही मार्गदर्शन प्रदान करना था।

174. (B) पारस्परिक निर्धारणवाद
अल्बर्ट बेंडुरा द्वारा प्रस्तावित पारस्परिक निर्धारणवाद यह स्पष्ट करता है कि मानव व्यवहार केवल पर्यावरण का परिणाम नहीं होता है। इसके स्थान पर, व्यक्ति का व्यवहार, उसके आंतरिक मानसिक गुण और बाहरी वातावरण तीनों एक-दूसरे को निरंतर प्रभावित करते हैं। व्यक्ति न केवल अपने परिवेश के अनुसार प्रतिक्रिया करता है, बल्कि वह सक्रिय रूप से अपने वातावरण को बदल भी सकता है। यह त्रिकोणीय अंतःक्रिया यह समझने में मदद करती है कि अधिगम और व्यवहार का विकास सामाजिक और व्यक्तिगत कारकों के जटिल संगम से कैसे होता है।

175. (A) विभिन्न देशों की राजधानियों का ज्ञान।
ठोस बुद्धि वह योग्यता है जो शिक्षा, संस्कृति और जीवन के अनुभवों के माध्यम से अर्जित संचित ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है। विभिन्न देशों की राजधानियों को याद रखना या ऐतिहासिक तथ्यों को जानना इसी बुद्धि का हिस्सा माना जाता है क्योंकि यह संचित सूचनाओं के भंडार पर निर्भर करता है। यह तरल बुद्धि से भिन्न है, जो नवीन समस्याओं को सुलझाने की नैसर्गिक क्षमता मानी जाती है। ठोस बुद्धि आयु के साथ और अधिक समृद्ध होती है क्योंकि व्यक्ति निरंतर नई जानकारी प्राप्त करता रहता है और उसे अपने मस्तिष्क में संचित करता है।

176. (C) एक विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण।
संगीत अभिक्षमता परीक्षण का लक्ष्य व्यक्ति की उन सूक्ष्म योग्यताओं को मापता है जो केवल संगीत के क्षेत्र में सफलता के लिए अनिवार्य मानी जाती हैं, जैसे स्वरों और लय की पहचान। चूंकि यह परीक्षण एक अत्यंत संकीर्ण और स्पष्ट रूप से परिभाषित क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करता है, इसलिए इसे विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण की श्रेणी में रखा जाता है। यह सामान्य बुद्धि परीक्षणों से भिन्न है क्योंकि यह समग्र बौद्धिक स्तर के बजाय केवल एक विशेष कलात्मक प्रतिभा और आने वाले समय की उसकी सफलता की संभावना का सटीक आकलन करता है।

177. (D) थर्स्टन
लुई थर्स्टन ने बुद्धि के प्रति एक बहुआयामी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया और स्पीयरमैन के एकल सामान्य कारक के विचार को पूरी तरह नकार दिया था। उन्होंने प्रस्तावित किया कि बुद्धि सात स्वतंत्र प्राथमिक मानसिक क्षमताओं का एक जटिल मिश्रण मानी जाती है। उनके अनुसार, बौद्धिक व्यवहार इन विशिष्ट संक्रियाओं के मेल से उत्पन्न होता है, न कि किसी एक वैश्विक मानसिक ऊर्जा से। थर्स्टन का यह सिद्धांत मानवीय योग्यताओं की विविधता और स्वायत्तता को स्वीकार करता है, जहाँ एक व्यक्ति विभिन्न मानसिक कार्यों में अलग-अलग स्तर की निपुणता प्रदर्शित कर सकता है।

178. (C) शिक्षक-केंद्रित मॉडल
वह कक्षा जहाँ शिक्षक सक्रिय रूप से बोलता है और छात्र केवल सुनते एवं टिप्पणी लिखते हैं, पारंपरिक शिक्षक-केंद्रित मॉडल का प्रतिनिधित्व करती है। इस व्यवस्था में शिक्षक सूचना का मुख्य स्रोत और कक्षा का एकमात्र नियंत्रक होता है, जबकि छात्र ज्ञान के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता की भूमिका में होते हैं। यहाँ संवाद प्रायः एकतरफा होता है और छात्रों को अपनी जिज्ञासा प्रकट करने या स्वयं ज्ञान निर्माण करने के अवसर बहुत कम मिलते हैं। यह विधि बड़े समूहों तक जानकारी पहुँचाने हेतु सरल परंतु छात्र सक्रियता के मामले में अत्यंत सीमित है।

179. (B) निर्देशात्मक निर्णय लेने हेतु एक वैज्ञानिक आधार।
शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य योगदान शिक्षकों को वह व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करना है जिसके आधार पर वे अपनी शिक्षण विधियों को बेहतर बना सकें। यह केवल सिद्धांतों का संकलन नहीं है, बल्कि कक्षा की वास्तविक समस्याओं को हल करने का एक वैज्ञानिक मार्ग माना जाता है। इसके माध्यम से शिक्षक यह तय कर पाते हैं कि किस छात्र को किस प्रकार पढ़ाना है और अभिप्रेरणा का उपयोग कैसे करना है। यह शिक्षण की प्रक्रिया को व्यक्तिगत धारणाओं के स्थान पर वस्तुनिष्ठ और प्रमाणिक साक्ष्यों पर आधारित बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

180. (D) एक सरल विचार लेकर उसे समृद्ध विवरण के साथ विकसित करना।
सृजनात्मकता के संदर्भ में 'विस्तारण' वह संज्ञानात्मक कौशल है जो व्यक्ति को एक साधारण या आधारभूत विचार में बारीकियां और गहराई जोड़ने में सक्षम बनाता है। यह केवल बहुत सारे विचार उत्पन्न करने के बारे में नहीं है, बल्कि एक विचार को परिष्कृत और पूर्ण बनाने के बारे में है। उदाहरण के लिए, एक अधूरी कहानी को विस्तार देकर उसे एक समृद्ध उपन्यास में बदलना विस्तारण का कार्य माना जाता है। यह मापता है कि व्यक्ति किसी अवधारणा को कितनी सूक्ष्मता और रचनात्मकता के साथ आगे बढ़ा सकता है, जो उसकी मौलिकता को दर्शाता है।

181. (A) शाब्दिक और निष्पादन बुद्धि के लिए पृथक प्राप्तांक प्रदान करना।
वेक्स्लर मापनी ने बुद्धि मापन में एक महत्वपूर्ण सुधार किया क्योंकि इसने केवल एक औसत अंक देने के स्थान पर विस्तृत संज्ञानात्मक प्रोफाइल प्रस्तुत किया। इसने व्यक्ति की भाषाई योग्यताओं और क्रियात्मक कौशलों के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से उजागर किया। इस विश्लेषण से मनोवैज्ञानिकों को यह

199. (A) समूह वास्तविक विश्व की समस्याओं के समाधान हेतु शोध और विकास करते हैं।
छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण में अधिगम का केंद्र छात्र की जिज्ञासा और उसकी सक्रिय सहभागिता होती है। जब छात्र वास्तविक दुनिया की जटिल समस्याओं को हल करने के लिए समूहों में शोध और अन्वेषण करते हैं, तो वे ज्ञान के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के स्थान पर उसके सक्रिय निर्माता बन जाते हैं। यह विधि उन्हें आलोचनात्मक चिन्तन, सहयोग और व्यावहारिक अनुप्रयोग के अवसर प्रदान करती है। शिक्षक-केंद्रित व्याख्यान के विपरीत, यह दृष्टिकोण छात्रों को उनके सीखने की प्रक्रिया के प्रति पूर्णतः उत्तरदायी और संलग्न बनाता है, जो स्थायी अधिगम हेतु आवश्यक है।

200. (D) सक्रिय, रचनात्मक और सार्थक हो।
मनोविज्ञान ने शिक्षा जगत को यह महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि दी है कि वास्तविक अधिगम केवल सूचनाओं को रटने से नहीं होता है। यह तब सर्वाधिक प्रभावी होता है जब छात्र स्वयं ज्ञान के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और सीखी गई बातों को अपने पूर्व ज्ञान से जोड़कर उनके अर्थ को गहराई से समझते हैं। जब अधिगम की प्रक्रिया छात्र के लिए सार्थक और रुचिकर होती है, तो प्राप्त ज्ञान स्थायी और व्यावहारिक होता है। यह दृष्टिकोण रटने के बोझ को कम करता है और छात्रों में स्वाभाविक जिज्ञासा तथा स्वायत्तता को निरंतर बढ़ावा देता है।

201. (B) कथा निर्माण हेतु चित्रों को व्यवस्थित करना।
वेक्स्लर बुद्धि मापनी के निष्पादन खंड का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की गैर-भाषाई और व्यावहारिक तर्कशक्ति का आकलन करना होता है। चित्र व्यवस्था जैसे कार्यों में परीक्षार्थी को चित्रों के एक समूह को सही तार्किक क्रम में रखना होता है ताकि वे एक सार्थक कहानी बना सकें। यह कार्य दृश्य प्रत्यक्षीकरण, नियोजन की क्षमता और सामाजिक परिस्थितियों की समझ की मांग करता है। शब्दावली या सामान्य ज्ञान जैसे शाब्दिक कार्यों के विपरीत, यह उप-परीक्षण पूरी तरह से क्रियात्मक कौशलों और व्यावहारिक बुद्धि पर अपना ध्यान केंद्रित करता है, जो निष्पक्ष मापन है।

202. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
बुद्धि के विभिन्न सिद्धांतों और उनके प्रस्तावक मनोवैज्ञानिकों का यह मिलान विषय की ऐतिहासिक गहराई को स्पष्ट करता है। स्पीयरमैन ने द्वि-कारक सिद्धांत द्वारा सामान्य बुद्धि की नींव रखी थी। थर्स्टन ने सात स्वतंत्र क्षमताओं के समूह कारक सिद्धांत का प्रस्ताव दिया। थार्नडाइक ने माना कि बुद्धि असंख्य विशिष्ट तत्वों का बहु-कारक समुच्चय मानी जाती है। कैटेल ने इसे तरल और ठोस बुद्धि के रूप में विभाजित करके और अधिक सूक्ष्मता प्रदान की थी। ये सभी सिद्धांत आधुनिक बुद्धि मापन और उसके मूल्यांकन के वैज्ञानिक आधार के रूप में आज भी कार्य करते हैं।

203. (D) अवधान और स्मृति जैसी संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं।
अल्बर्ट बेंडुरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत व्यवहारवाद से इस मायने में श्रेष्ठ है क्योंकि यह अधिगम में मानसिक प्रक्रियाओं की भूमिका को स्वीकार करता है। विशुद्ध व्यवहारवाद मानता था कि सीखना केवल बाहरी उद्दीपन और अनुक्रिया का परिणाम होता है। बेंडुरा ने स्पष्ट किया कि दूसरों को देखकर सीखने के लिए व्यक्ति को पहले उन पर ध्यान देना होता है और फिर उस जानकारी को याद रखना होता है। यह आंतरिक संज्ञानात्मक घटक ही तय करते हैं कि देखा गया व्यवहार अपनाया जाएगा या नहीं, जो इसे और अधिक मानवीय और जटिल अधिगम प्रक्रिया बनाता है।

204. (A) शिक्षण के प्रति एक कठोर और अनम्य दृष्टिकोण।
एक वास्तव में प्रभावी शिक्षक वह है जो अपनी शिक्षण विधियों में लचीलापन रखता है और छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार आवश्यक परिवर्तन करता है। निर्देश में स्पष्टता, विषय के प्रति उत्साह और सुदृढ़ कक्षा प्रबंधन एक सफल शिक्षक के अनिवार्य गुण माने जाते हैं जो छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करते हैं। इसके विपरीत, शिक्षण के प्रति कठोर और अनम्य होना अधिगम की प्रक्रिया में बाधक बनता है क्योंकि यह व्यक्तिगत भिन्नताओं और बदलती परिस्थितियों को नजरअंदाज करता है। शिक्षण में संवेदनशीलता और अनुकूलनशीलता ही सदैव सर्वोत्तम परिणाम लाती है।

205. (B) विचारों की विशिष्टता और नवीनता।
सृजनात्मकता के संदर्भ में 'मौलिकता' वह गुण है जो किसी विचार को सांख्यिकीय रूप से दुर्लभ और अद्वितीय बनाता है। यह केवल बहुत सारे विचार देने या अलग श्रेणियों में सोचने के बारे में नहीं है, बल्कि विचारों की वास्तविक नवीनता के बारे में है। एक मौलिक विचार वह होता है जो पारंपरिक समाधानों से सर्वथा भिन्न हो और जो दूसरों के दिमाग में आसानी से न आए। यही वह शक्ति है जो कला, विज्ञान और जीवन के किसी भी क्षेत्र में क्रांतिकारी आविष्कारों और महान कृतियों के सृजन का मुख्य कारण और आधार बनती है।

206. (B) बहु-अभिक्षमता बैटरी
व्यवसायिक परामर्श के लिए बहु-अभिक्षमता बैटरी एक अत्यंत सशक्त उपकरण मानी जाती है क्योंकि यह व्यक्ति की कई भिन्न क्षमताओं का एक साथ मापन करती है। यह केवल एक औसत अंक देने के बजाय शाब्दिक, संख्यात्मक और अमूर्त तर्क जैसे क्षेत्रों में अलग-अलग प्राप्तांक प्रदान करती है। इससे व्यक्ति की शक्तियों और सीमाओं का एक विस्तृत प्रोफाइल तैयार होता है, जिससे यह समझना सरल हो जाता है कि वह किस विशिष्ट पेशे के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। यह भविष्य की सफलता का पूर्वानुमान लगाने हेतु एक व्यापक और विश्वसनीय वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है।

207. (A) सृजनात्मकता हेतु बुद्धि आवश्यक है परंतु पर्याप्त नहीं।
शोध यह दर्शाते हैं कि बुद्धि और सृजनात्मकता के बीच एक निश्चित सीमा तक गहरा संबंध पाया जाता है। सृजनात्मक होने के लिए व्यक्ति के पास एक औसत स्तर की तार्किक और विश्लेषणात्मक क्षमता का होना अनिवार्य माना जाता है। हालांकि, बहुत उच्च बुद्धि लब्धि होने मात्र से यह सुनिश्चित नहीं होता कि वह व्यक्ति अत्यधिक सृजनात्मक भी होगा। सृजनात्मकता के लिए स्वतंत्र सोच, कल्पनाशीलता और नवीन दृष्टिकोण जैसे अन्य विशिष्ट व्यक्तित्व गुणों की भी आवश्यकता

137. (B) एक शिक्षक छात्रों द्वारा अनुकरण किए जाने हेतु एक प्रक्रिया का प्रदर्शन करता है।
सामाजिक अधिगम सिद्धांत का केंद्र बिंदु प्रतिरूपण माना जाता है, जहाँ छात्र दूसरों के कार्यों को देखकर और उनका अनुकरण करके सीखते हैं। जब शिक्षक किसी कार्य को करने की सही विधि स्वयं करके दिखाता है, तो छात्र उसका सूक्ष्म अवलोकन करते हैं और उस व्यवहार को अपनी स्मृति में सुरक्षित रखते हैं। यह प्रक्रिया प्रत्यक्ष निर्देशों की तुलना में अधिक प्रभावशाली हो सकती है क्योंकि यह छात्रों को एक स्पष्ट उदाहरण प्रदान करती है। यह दर्शाता है कि अवलोकन अधिगम की एक अत्यंत सशक्त और स्वाभाविक विधि है।

138. (C) बुद्धि का एक न्यूनतम स्तर आवश्यक है।
थ्रेसहोल्ड सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि सृजनात्मकता और बुद्धि पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं हैं, बल्कि एक सीमा तक एक-दूसरे से जुड़ी मानी जाती हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, एक व्यक्ति को सृजनात्मक होने के लिए एक औसत स्तर की बुद्धि लब्धि की आवश्यकता होती है। हालांकि, एक बार जब व्यक्ति उस बौद्धिक स्तर को पार कर लेता है, तो उसकी सृजनात्मकता और बुद्धि के बीच का संबंध निर्बल हो जाता है। इसका अर्थ है कि उच्च बुद्धि स्वतः उच्च सृजनात्मकता की गारंटी नहीं देती, परंतु आधारभूत बुद्धि अनिवार्य मानी जाती है।

139. (D) छात्र-केंद्रित पद्धति
परियोजना-आधारित अधिगम एक ऐसी आधुनिक शिक्षण विधि है जहाँ छात्र अपनी जिज्ञासा और रुचि के आधार पर किसी वास्तविक समस्या का अन्वेषण करते हैं। यह पूर्णतः छात्र-केंद्रित मानी जाती है क्योंकि इसमें छात्र स्वयं नियोजन करते हैं, शोध करते हैं और अंततः एक सार्थक समाधान तैयार करते हैं। शिक्षक यहाँ केवल एक मार्गदर्शक और संसाधन प्रदाता के रूप में उपस्थित रहता है। यह विधि छात्रों में उत्तरदायित्व, सहयोग और आलोचनात्मक चिन्तन के कौशल विकसित करने के लिए विश्व स्तर पर अत्यंत प्रभावशाली मानी जाती है।

140. (A) ठोस बुद्धि
कैटेल के अनुसार ठोस बुद्धि वह क्षमता है जो शिक्षा, संस्कृति और पूर्व अनुभव के माध्यम से अर्जित की जाती है। नई भाषा सीखना या पुस्तक लिखना संचित शब्दावली, व्याकरण के नियमों के ज्ञान और भाषाई कौशल के प्रभावी उपयोग पर निर्भर करता है। चूंकि ये कार्य संचित ज्ञान के भंडार का उपयोग करते हैं, इसलिए यहाँ ठोस बुद्धि की भूमिका प्राथमिक मानी जाती है। यह बुद्धि आयु के साथ और अधिक परिष्कृत होती है क्योंकि व्यक्ति निरंतर अपनी सूचनाओं के भंडार का विस्तार करता रहता है और उसे समृद्ध करता है।

141. (B) शिक्षार्थी को देखे गए व्यवहार को स्मृति में रखने में सक्षम होना चाहिए।
अल्बर्ट बेंडुरा के अनुसार, किसी व्यवहार को केवल देखना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे मस्तिष्क में संचित करना भी अनिवार्य होता है। यदि शिक्षार्थी प्रतिरूप के व्यवहार को याद नहीं रख पाता, तो वह भविष्य में उसे दोहराने में असमर्थ होगा। इसे 'प्रतिधारण' कहा जाता है, जो अवलोकनात्मक अधिगम का एक मुख्य स्तंभ माना जाता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि अधिगम केवल यांत्रिक नहीं है, बल्कि इसमें स्मृति और मानसिक चित्रण जैसी आंतरिक संज्ञानात्मक शक्तियों का सक्रिय योगदान अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

142. (P-2, Q-1, R-4, S-3)
सृजनात्मकता के विभिन्न आयाम इसकी जटिल और बहुआयामी प्रकृति को स्पष्ट करते हैं। प्रवाह का अर्थ है बहुत सारे विचार उत्पन्न करना, जबकि लचीलापन विभिन्न श्रेणियों में सोचने की क्षमता को दर्शाता है। मौलिकता का तात्पर्य पूरी तरह से नए और अद्वितीय विचार प्रस्तुत करने से होता है। विस्तारण वह कौशल है जहाँ एक सरल विचार में बारीक विवरण जोड़कर उसे पूर्ण बनाया जाता है। ये सभी घटक मिलकर यह तय करते हैं कि कोई कार्य कितना सृजनात्मक, प्रभावी और सामाजिक रूप से उपयोगी सिद्ध होगा।

143. (A) वेक्स्लर मापनी केवल एक प्राप्तांक नहीं, अपितु एक संज्ञानात्मक विवरण प्रदान करती है।
बिने और वेक्स्लर के परीक्षणों के बीच मुख्य अंतर उनकी गहराई और संरचना में निहित है। बिने परीक्षण मुख्य रूप से एक ही अंक, जैसे मानसिक आयु, देने पर केंद्रित था। इसके विपरीत, वेक्स्लर मापनी ने शाब्दिक और निष्पादन क्षमताओं के लिए अलग-अलग प्राप्तांक दिए थे, जिससे व्यक्ति की मानसिक शक्तियों और सीमाओं का एक विस्तृत प्रोफाइल प्राप्त होता है। यह संज्ञानात्मक विवरण नैदानिक और शैक्षिक नियोजन के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होता है क्योंकि यह व्यक्ति की बौद्धिक विविधता को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

144. (C) तथ्यात्मक विषयवस्तु की एक विस्तृत श्रृंखला का तीव्र कवरेज सुनिश्चित करना।
छात्र-केंद्रित अधिगम का मुख्य उद्देश्य विषयों की गहरी समझ विकसित करना है, न कि केवल पाठ्यक्रम को तेजी से पूरा करना। चूंकि इसमें छात्र स्वयं अन्वेषण और चर्चा करते हैं, इसलिए इसमें समय अपेक्षाकृत अधिक लगता है। इसके विपरीत, शिक्षक-केंद्रित विधियां जैसे व्याख्यान, कम समय में अधिक तथ्यों को प्रेषित करने के लिए अधिक कुशल मानी जाती हैं। छात्र-केंद्रित अधिगम का वास्तविक लाभ छात्रों की अभिप्रेरणा, स्वायत्तता और आलोचनात्मक सोच में सुधार करना है, जो रटने की तुलना में कहीं अधिक स्थायी परिणाम है।

145. (D) इसने क्षमताओं की बहुलता के पक्ष में किसी एक नियामक कारक को अस्वीकार कर दिया।
थार्नडाइक ने बुद्धि को एक सामान्य शक्ति मानने के स्थान पर उसे असंख्य स्वतंत्र तत्वों का योग माना था। उनके अनुसार प्रत्येक मानसिक कार्य के लिए एक विशिष्ट प्रकार की क्षमता की आवश्यकता होती है। उन्होंने प्रस्तावित किया कि बुद्धि में कई सूक्ष्म और विशिष्ट कारक होते हैं जो आपस में जुड़कर जटिल कार्य निष्पादित करते हैं। यह सिद्धांत स्पीयरमैन के एकल कारक के विचार को पूरी तरह नकारते हुए मानसिक स्वायत्तता का समर्थन करता है, इसीलिए इसे कभी-कभी अराजकतावादी सिद्धांत की संज्ञा भी दी जाती है।

अंतर्निहित मानसिक ऊर्जा है जो सभी कार्यों के लिए आधार प्रदान करती है, जबकि विशिष्ट कारक केवल उन कार्यों के लिए आवश्यक होता है जो एक विशेष क्षेत्र से संबंधित हों। उनके अनुसार, किसी व्यक्ति की समग्र बुद्धिमानी उसके सामान्य कारक की शक्ति पर निर्भर करती है, जबकि उसकी अलग-अलग कौशलों में निपुणता उसके विशिष्ट कारकों का परिणाम होती है, जो उसे विशिष्ट बनाती है।

217. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वेक्स्लर मापनी ने बुद्धि मापन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सुधार किया क्योंकि इसने केवल एक औसत अंक देने के स्थान पर विस्तृत संज्ञानात्मक प्रोफाइल प्रस्तुत किया था। इसने व्यक्ति की भाषाई योग्यताओं और क्रियात्मक कौशलों के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से उजागर किया। इस विश्लेषण से मनोवैज्ञानिकों को यह समझने में मदद मिली कि व्यक्ति किन विशिष्ट मानसिक क्षेत्रों में सशक्त है और कहाँ उसे कठिनाई हो रही है। इसी नैदानिक गहराई के कारण इसे बुद्धि मापन और शैक्षिक नियोजन के लिए वैश्विक स्तर पर अत्यंत मूल्यवान माना जाता है।

218. (B) संवादात्मक छात्र-केंद्रित गतिविधियों को सम्मिलित करना।
शिक्षक प्रभावशीलता को बढ़ाने का सबसे सशक्त तरीका छात्रों को अधिगम की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करना माना जाता है। जब शिक्षक केवल व्याख्यान देने के बजाय चर्चाओं, परियोजनाओं और सामूहिक गतिविधियों का उपयोग करता है, तो छात्र अधिक जुड़ाव और उत्तरदायित्व महसूस करते हैं। संवादात्मक गतिविधियां छात्रों की जिज्ञासा को बढ़ाती हैं और उन्हें विषयों को गहराई से समझने में मदद करती हैं। यह दृष्टिकोण रटने के स्थान पर अर्थपूर्ण अधिगम को बढ़ावा देता है, जिससे छात्र अभिप्रेरणा और सहभागिता के स्तर में स्पष्ट और स्थायी सुधार दिखाई देता है।

219. (D) थर्स्टन
लुई थर्स्टन ने स्पीयरमैन के एकल सामान्य कारक के विचार को चुनौती देते हुए प्रस्तावित किया कि बुद्धि सात स्वतंत्र मानसिक क्षमताओं का एक समूह है। उनके अनुसार, ये क्षमताएं जैसे शाब्दिक बोध, स्मृति, तर्कशक्ति और शब्द प्रवाह, एक-दूसरे से पूर्णतः स्वायत्त होती हैं। थर्स्टन का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति का बौद्धिक स्तर इन विभिन्न प्राथमिक मानसिक क्षमताओं के मिश्रण पर निर्भर करता है। यह दृष्टिकोण बुद्धि को अधिक व्यापक और विविध रूप में समझने में मदद करता है, जो मानवीय योग्यताओं की विविधता को सही ढंग से दर्शाता है।

220. (A) यह अवलोकन और प्रयोग जैसी वस्तुनिष्ठ विधियों का उपयोग करता है।
शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक मानी जाती है क्योंकि यह केवल कल्पनाओं या व्यक्तिगत धारणाओं पर आधारित नहीं है। यह मानवीय व्यवहार और अधिगम की प्रक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए व्यवस्थित अवलोकन, नियंत्रित प्रयोग और सांख्यिकीय विश्लेषण जैसी प्रामाणिक विधियों का उपयोग करता है। इसके सिद्धांत प्रमाणिक साक्ष्यों पर आधारित होते हैं जिन्हें किसी भी समय जांचा जा सकता है। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण शिक्षण को अधिक विश्वसनीय और प्रभावी बनाता है क्योंकि यह व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के स्थान पर वस्तुनिष्ठ तथ्यों के आधार पर निर्णय लेने में मदद करता है।

221. (B) वे स्वायत्तता और आलोचनात्मक चिन्तन के विकास को प्रोत्साहित करती हैं।
छात्र-केंद्रित विधियां शिक्षार्थी को उसके स्वयं के अधिगम का वास्तविक स्वामी बनाती हैं। इसमें छात्रों को स्वयं अन्वेषण करने, प्रश्न पूछने और समस्याओं का समाधान खोजने के पर्याप्त अवसर मिलते हैं, जिससे उनकी आलोचनात्मक सोच विकसित होती है। यह दृष्टिकोण रटने के स्थान पर विषयों की गहरी और तार्किक समझ पर विशेष बल देता है। छात्र अपनी गति से सीखते हैं और उनमें आत्मविश्वास तथा स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है। यह स्वायत्तता उन्हें भविष्य में एक सक्रिय और जागरूक आजीवन शिक्षार्थी बने रहने के लिए तैयार करती है।

222. (B) ठोस बुद्धि
रेमंड कैटेल के अनुसार ठोस बुद्धि वह क्षमता है जो व्यक्ति द्वारा शिक्षा, संस्कृति और पूर्व अनुभव के माध्यम से अर्जित की जाती है। व्याकरण के नियमों को सीखना और फिर उन्हें लेखन में सही ढंग से लागू करना संचित ज्ञान और भाषाई कौशल के प्रभावी उपयोग को दर्शाता है। चूंकि यह कार्य पूर्व में सीखी गई सूचनाओं और कौशलों के संचित भंडार पर पूरी तरह निर्भर करता है, इसलिए यह ठोस बुद्धि का ही एक अनिवार्य भाग माना जाता है। यह बुद्धि आयु और अनुभव के साथ निरंतर और अधिक परिष्कृत एवं समृद्ध होती रहती है।

223. (A) सामाजिक अधिगम सिद्धांत
प्रतिनिधिक सुदृढ़ीकरण अल्बर्ट बेंडुरा के सामाजिक अधिगम सिद्धांत की एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा मानी जाती है। इसका तात्पर्य है कि हम दूसरों को उनके कार्यों के लिए मिलने वाले पुरस्कारों या प्रशंसा को देखकर सीखते हैं और प्रेरित होते हैं। यदि हम किसी व्यक्ति को अच्छे व्यवहार के लिए सम्मान पाते देखते हैं, तो हमारे भीतर भी वैसा ही व्यवहार दोहराने की संभावना बहुत बढ़ जाती है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि अधिगम केवल प्रत्यक्ष अनुभव तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज और अवलोकन हमारे आचरण को गहराई से प्रभावित करने में सक्षम होते हैं।

224. (C) शिक्षण हेतु प्रतिपुष्टि एकत्र करने की एक प्रक्रिया।
एक प्रभावी शिक्षक मूल्यांकन को केवल अंकों के वितरण या छात्रों को दंडित करने के साधन के रूप में नहीं देखता है। उसके लिए, मूल्यांकन एक ऐसी वैज्ञानिक प्रक्रिया है जो उसे यह बताती है कि छात्र ने क्या सीखा है और शिक्षण विधियों में कहाँ सुधार की आवश्यकता है। यह प्रतिपुष्टि शिक्षक को अपनी शिक्षण रणनीतियों को बदलने और छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को दूर करने में मार्गदर्शन प्रदान करती है। अतः मूल्यांकन को अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न और

सकारात्मक अंग माना जाता है जो छात्र के निरंतर विकास को सुनिश्चित करता है।

225. (B) केवल 1 और 2
शिक्षण के विभिन्न दृष्टिकोण अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षक और छात्र की जिम्मेदारी को स्पष्ट करते हैं। छात्र-केंद्रित अधिगम में सहयोगात्मक कार्य और सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण मानी जाती है, जहाँ छात्र एक-दूसरे से और अपने अनुभव से सीखते हैं। इसके विपरीत, शिक्षक-केंद्रित विधियों में शिक्षक सूचना का मुख्य प्रदाता होता है और सीखने का नियंत्रण उसी के पास रहता है। व्याख्यान विधि वास्तव में शिक्षक-केंद्रित है क्योंकि इसमें छात्र निष्क्रिय श्रोता होते हैं। अतः कथन 1 और 2 सही हैं जबकि कथन 3 पूर्णतः वैज्ञानिक रूप से गलत है।

226. (C) प्रवाह
सृजनात्मकता के संदर्भ में 'प्रवाह' का तात्पर्य एक निश्चित समय सीमा के भीतर और एक ही संकेत के प्रत्युत्तर में बहुत अधिक संख्या में सार्थक विचार या समाधान उत्पन्न करना होता है। यह व्यक्ति की मानसिक गति और विचारशीलता की प्रचुरता को दर्शाता है। प्रवाह जितना अधिक होगा, सृजनात्मक उत्पादकता की संभावना उतनी ही सशक्त मानी जाएगी। यह मापता है कि बिना किसी मानसिक अवरोध के मस्तिष्क कितनी सरलता से विभिन्न संभावनाओं को जन्म दे सकता है। विचारों की यह मात्रा सृजनात्मक प्रक्रिया का प्राथमिक और अनिवार्य चरण मानी जाती है।

227. (B) बहु-अभिक्षमता बैटरी
जब किसी परीक्षण में लिपिकीय, यांत्रिक और स्थानिक जैसे कई भिन्न क्षेत्रों के उप-परीक्षण सम्मिलित होते हैं, तो वह बहु-अभिक्षमता बैटरी कहलाता है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की विविध योग्यताओं का एक संतुलित और विस्तृत प्रोफाइल तैयार करना होता है। यह केवल एक औसत अंक देने के स्थान पर यह बताता है कि व्यक्ति किन विशिष्ट क्षेत्रों में सशक्त है और किन में उसे सहायता चाहिए। यह व्यापक मूल्यांकन छात्रों को उनकी अंतर्निहित प्रतिभा के अनुसार सही करियर और शैक्षिक मार्ग चुनने में अत्यंत सटीक वैज्ञानिक मार्गदर्शन प्रदान करता है।

228. (D) इस प्रकार जिससे भाषाई प्रभाव न्यूनतम हो।
रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस को विशेष रूप से एक अशाब्दिक परीक्षण के रूप में अभिकल्पित किया गया है ताकि बुद्धि के मापन में भाषा और संस्कृति की बाधा को दूर किया जा सके। इसमें परीक्षार्थी को अमूर्त ज्यामितीय आकृतियों और प्रतिरूपों के बीच तार्किक संबंधों को पहचानकर उन्हें पूर्ण करना होता है। चूंकि इसमें शब्दों या भाषाई निर्देशों की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए यह विभिन्न पृष्ठभूमि और भाषाओं के लोगों के लिए एक निष्पक्ष और समान मापदंड प्रदान करता है। यह विशुद्ध रूप से व्यक्ति की तार्किक चिन्तन की नैसर्गिक क्षमता को मापता है।

229. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
चार्ल्स स्पीयरमैन ने द्वि-कारक सिद्धांत प्रतिपादित किया था जिसमें उन्होंने सामान्य कारक और विशिष्ट कारक की चर्चा की थी। उनका मानना था कि एक सामान्य मानसिक ऊर्जा सभी बौद्धिक कार्यों के पीछे होती है। इसके विपरीत, थार्नडाइक ने सामान्य कारक के विचार को पूरी तरह नकार दिया था। उन्होंने बहु-कारक सिद्धांत प्रस्तुत किया जिसमें बुद्धि को असंख्य स्वतंत्र और विशिष्ट तत्वों का योग माना गया। अतः कथन 1 गलत है क्योंकि 'g' कारक स्पीयरमैन की अवधारणा मानी जाती है, थार्नडाइक की नहीं। यह अंतर समझना अत्यंत आवश्यक है।

230. (C) पुनरुत्पादन
अल्बर्ट बेंडुरा के अनुसार, किसी देखे गए व्यवहार को सफलतापूर्वक करने के लिए व्यक्ति के पास उसे करने की शारीरिक और मानसिक दक्षता होनी चाहिए। इसे 'पुनरुत्पादन' कहा जाता है, जो अवलोकनात्मक अधिगम का तीसरा महत्वपूर्ण चरण माना जाता है। यदि शिक्षार्थी के पास आवश्यक कौशल या क्षमता नहीं है, तो वह ध्यान देने और याद रखने के बावजूद उस व्यवहार को प्रदर्शित नहीं कर पाएगा। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि अधिगम केवल सूचना प्राप्त करना नहीं है, बल्कि उस सूचना को वास्तविक क्रिया में कुशलतापूर्वक परिवर्तित करने की व्यक्तिगत क्षमता भी है।

231. (A) अस्पष्ट निर्देश और असंगत अपेक्षाएं।
एक अप्रभावी शिक्षक की मुख्य पहचान उसके शिक्षण में स्पष्टता का अभाव और छात्रों के साथ संवाद की कमी मानी जाती है। जब निर्देश अस्पष्ट होते हैं और शिक्षक की अपेक्षाएं निरंतर बदलती रहती हैं, तो छात्र भ्रमित महसूस करते हैं और उनमें अधिगम के प्रति रुचि कम हो जाती है। इसके विपरीत, सुव्यवस्थित प्रस्तुति, सकारात्मक वातावरण और विविध मूल्यांकन विधियों का प्रयोग वास्तव में एक प्रभावी शिक्षक के गुण हैं। शिक्षण में स्पष्टता और स्थिरता ही छात्रों को सीखने के लिए सही मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करती है, जो सफल अधिगम का आधार है।

232. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
बुद्धि के विभिन्न परीक्षणों और उनकी प्रमुख विशेषताओं का यह मिलान मनोवैज्ञानिक मापन के विकास को स्पष्ट करता है। बिने ने सबसे पहले मानसिक आयु की अवधारणा देकर मापन को आयु-आधारित बनाया था। वेक्सलर ने शाब्दिक और निष्पादन मापनियों के मेल से अधिक व्यापक आकलन प्रदान किया। रेवेन मैट्रिसेस ने अशाब्दिक तर्कशक्ति को मापने का नया मार्ग प्रशस्त किया था। थार्नडाइक का परीक्षण अमूर्त बुद्धि को मापने का एक प्रमुख उदाहरण माना जाता है। ये सभी उपकरण आज भी मानव संज्ञान की जटिलता को समझने में अत्यंत सहायक और विश्वसनीय हैं।

233. (B) कार्यक्षेत्र
शिक्षा मनोविज्ञान के 'कार्यक्षेत्र' का तात्पर्य उन समस्त विषयों और मुद्दों की सीमा से है जिन्हें यह अनुशासन संबोधित करता है। इसमें शिक्षार्थी का विकास, अधिगम की जटिल प्रक्रियाएं,

शिक्षक की प्रभावशीलता और कक्षा का वातावरण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र सम्मिलित होते हैं। यह विषय केवल सिद्धांतों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन सभी परिस्थितियों का अध्ययन करता है जो शिक्षण और सीखने को गहराई से प्रभावित करती हैं। सरल शब्दों में, यह शिक्षा से संबंधित मानवीय व्यवहार के अध्ययन की पूरी परिधि और उसके व्यावहारिक आयामों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

234. (C) छात्रों को यह विकल्प दिया जाता है कि वे अधिगम का प्रदर्शन किस प्रकार करें।
छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण में शिक्षार्थी की स्वायत्तता और उनकी व्यक्तिगत भिन्नताओं को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। जब छात्रों को अपने ज्ञान को प्रदर्शित करने के विभिन्न विकल्प, जैसे परियोजना, प्रस्तुति या लेखन, दिए जाते हैं, तो वे अपनी शक्तियों के अनुसार सर्वोत्तम प्रदर्शन कर पाते हैं। यह विधि उन्हें अपने अधिगम के प्रति अधिक उत्तरदायी और सक्रिय बनाती है। शिक्षक-केंद्रित कठोर नियमों के विपरीत, यह लचीलापन छात्रों की रचनात्मकता और उनके विषय के प्रति गहरे जुड़ाव को प्रोत्साहित करने में अत्यंत प्रभावशाली और सफल सिद्ध होता है।

235. (D) ठोस बुद्धि
रेमंड कैटेल के अनुसार ठोस बुद्धि वह क्षमता है जो व्यक्ति द्वारा दीर्घकालिक अभ्यास, शिक्षा और संचित अनुभव के माध्यम से अर्जित की जाती है। एक अनुभवी शतरंज खिलाड़ी का विभिन्न रणनीतियों, चालों और ऐतिहासिक खेलों का विस्तृत ज्ञान इसी बुद्धि का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। यह संचित सूचनाओं के भंडार का प्रभावी उपयोग है जिसे वर्तमान समस्याओं को हल करने में लगाया जाता है। यह बुद्धि आयु के साथ परिपक्व होती है क्योंकि व्यक्ति निरंतर अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में नई जानकारी और कौशल प्राप्त करता रहता है और उसे संचित करता है।

236. (A) अवलोकनात्मक अधिगम
अवलोकनात्मक अधिगम वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को देखकर और उसका मानसिक चित्रण करके नई बातें सीखता है। अल्बर्ट बेंडुरा ने यह सिद्ध किया था कि मानवीय अधिगम का एक बहुत बड़ा भाग प्रत्यक्ष अनुभव के बजाय दूसरों के अनुभवों और कार्यों के अवलोकन से प्राप्त होता है। इसमें किसी आदर्श प्रतिरूप की भूमिका केंद्रीय होती है। यह प्रक्रिया केवल यांत्रिक नकल नहीं है, बल्कि इसमें स्मृति और प्रेरणा जैसे संज्ञानात्मक घटक भी शामिल होते हैं, जो समाज में सीखने को एक स्वाभाविक और शक्तिशाली माध्यम बनाने में सफल होते हैं।

237. (B) विस्तारण
सृजनात्मकता के संदर्भ में 'विस्तारण' वह संज्ञानात्मक कौशल है जो व्यक्ति को एक आधारभूत विचार या वस्तु में बारीक और समृद्ध विवरण जोड़ने में सक्षम बनाता है। यह विचार की गहराई और उसकी जटिलता को बढ़ाने की व्यक्तिगत क्षमता है। उदाहरण के लिए, एक सरल रेखाचित्र को कई छोटी-छोटी बारीकियों के साथ पूर्ण चित्र में बदलना विस्तारण को दर्शाता है। यह मापता है कि व्यक्ति किसी साधारण अवधारणा को कितनी सूक्ष्मता से विकसित कर सकता है। विचारों की संख्या या विविधता के विपरीत, यह पूरी तरह से विचार के संवर्धन पर ही केंद्रित होता है।

238. (B) कैटेल
बुद्धि को तरल और ठोस जैसी दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित करने का ऐतिहासिक श्रेय रेमंड कैटेल को जाता है। उन्होंने प्रस्तावित किया कि तरल बुद्धि नवीन समस्याओं को सुलझाने की जन्मजात और जैविक क्षमता है, जबकि ठोस बुद्धि अर्जित ज्ञान और सांस्कृतिक अनुभव का भंडार होती है। यह वर्गीकरण यह समझने में मदद करता है कि क्यों कुछ मानसिक योग्यताएं आयु के साथ घटती हैं और अन्य अनुभव के साथ निरंतर बढ़ती रहती हैं। कैटेल का यह सिद्धांत आधुनिक बुद्धि मापन और संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है।

239. (A) शिक्षक प्रभावशीलता
शिक्षक प्रभावशीलता एक व्यापक व्यावसायिक गुण है जिसमें केवल विषय का ज्ञान ही नहीं, बल्कि कक्षा में ऐसा सकारात्मक और प्रेरक वातावरण बनाना भी शामिल है जो अधिगम को सुगम बनाए। यदि छात्र निरंतर कम प्रगति कर रहे हैं और शिक्षक उनके लिए सहायक परिवेश निर्मित करने में विफल रहता है, तो यह स्पष्ट रूप से उसकी शिक्षण दक्षता और व्यावसायिक निपुणता की कमी को दर्शाता है। एक प्रभावी शिक्षक वही है जो अपनी रणनीतियों के माध्यम से प्रत्येक शिक्षार्थी की अंतर्निहित क्षमता को अधिकतम स्तर तक पहुँचाने में पूर्णतः सफल सिद्ध होता है।

240. (C) शिक्षक-केंद्रित और सुस्पष्ट।
प्रत्यक्ष निर्देश एक सुव्यवस्थित और शिक्षक-केंद्रित शिक्षण पद्धति मानी जाती है जहाँ शिक्षक सूचना का मुख्य स्रोत होता है। इसमें पाठ के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से बताया जाता है और जानकारी को छोटे-छोटे, सुसंगत चरणों में क्रमिक रूप से प्रस्तुत किया जाता है। शिक्षक स्वयं प्रदर्शन करता है और छात्रों को निरंतर प्रतिपुष्टि प्रदान करता है। यह विधि विशेष रूप से उन विषयों के लिए अत्यंत प्रभावी है जहाँ विशिष्ट कौशल या बुनियादी अवधारणाओं को स्पष्टता के साथ सिखाना अनिवार्य होता है, जिससे छात्रों में त्रुटियों की संभावना कम हो जाती है।

241. (D) व्यावसायिक विकल्पों में व्यक्तियों के मार्गदर्शन हेतु।
बहु-अभिक्षमता बैटरी का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की विविध योग्यताओं का एक संतुलित प्रोफाइल तैयार करना है ताकि यह अनुमान लगाया जा सके कि वह किन पेशों में सफल हो सकता है। यह केवल एक औसत बुद्धि अंक देने के बजाय शाब्दिक, संख्यात्मक और यांत्रिक जैसे भिन्न आयामों का अलग-अलग मूल्यांकन करती है। इससे करियर परामर्शदाताओं को छात्र की विशिष्ट शक्तियों और सीमाओं को समझने में मदद मिलती है। यह वैज्ञानिक मार्गदर्शन छात्रों को उनकी अंतर्निहित प्रतिभा के अनुरूप सही व्यावसायिक पथ चुनने में अत्यंत सहायक और विश्वसनीय सिद्ध होता है।

तंत्रिका संबंधी दक्षता पर आधारित होती है, जो व्यक्ति को अमूर्त संबंधों को पहचानने और तार्किक निष्कर्ष निकालने में मदद करती है। यह बुद्धि किशोरावस्था में अपने शिखर पर होती है और नवीन परिस्थितियों में मानसिक चपलता और त्वरित निर्णय लेने का आधार बनती है।

294. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
सामाजिक अधिगम सिद्धांत वास्तव में यह मानता है कि हम दूसरों के व्यवहार का अवलोकन करके सीखते हैं। हालांकि, कथन 2 गलत है क्योंकि अल्बर्ट बेंडुरा ने स्पष्ट रूप से बताया कि इस अधिगम प्रक्रिया में अवधान, स्मृति और चिन्तन जैसी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की भूमिका अत्यंत केंद्रीय होती है। व्यक्ति केवल नकल नहीं करता, बल्कि वह जानकारी को मानसिक रूप से संसाधित करता है और फिर उसे अपनाने का निर्णय लेता है। यह आंतरिक मानसिक हस्तक्षेप ही है जो सामाजिक अधिगम को केवल एक यांत्रिक प्रक्रिया के स्थान पर एक जटिल संज्ञानात्मक कार्य में परिवर्तित करता है।

295. (A) विषयवस्तु को छात्रों हेतु सुबोध बनाना।
एक प्रभावी शिक्षक की सबसे बड़ी निपुणता जटिल और कठिन अवधारणाओं को सरल एवं बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करने की उसकी क्षमता मानी जाती है। वह अपनी शिक्षण विधियों को छात्रों के मानसिक स्तर और उनकी आवश्यकताओं के अनुसार ढालता है ताकि प्रत्येक शिक्षार्थी विषय को गहराई से समझ सके। यथासंभव सरल परीक्षण देना या पाठ योजना का कड़ाई से पालन करना शिक्षण की वास्तविक गुणवत्ता को सुनिश्चित नहीं करता है। विषय को रोचक और सुलभ बनाना ही वह गुण है जो छात्र के अधिगम को सफल, स्थायी और अर्थपूर्ण बनाने में सहायक होता है।

296. (D) अपसारी चिन्तन और सृजनात्मक क्षमताएं
ई. पॉल टॉरेंस द्वारा विकसित सृजनात्मक चिन्तन परीक्षण सृजनात्मकता को मापने के लिए विश्व के सबसे प्रसिद्ध उपकरणों में से एक माना जाता है। यह परीक्षण विशेष रूप से व्यक्ति की अपसारी चिन्तन क्षमता का आकलन करता है, जिसमें विचारों का प्रवाह, लचीलापन, मौलिकता और विस्तारण जैसे पक्ष सम्मिलित होते हैं। यह पारंपरिक बुद्धि परीक्षणों से भिन्न है क्योंकि इसका ध्यान केवल एक सही उत्तर खोजने के बजाय नवीन और विविध संभावनाओं को उत्पन्न करने की मानवीय शक्ति पर होता है। यह कला और विज्ञान जैसे क्षेत्रों में प्रतिभा की पहचान हेतु अत्यंत प्रभावी है।

297. (B) एक प्रमुख सामान्य कारक
स्पीयरमैन और थर्स्टन के बुद्धि सिद्धांतों के बीच मूल मतभेद एक एकल नियामक शक्ति के अस्तित्व को लेकर पाया जाता है। चार्ल्स स्पीयरमैन ने सांख्यिकीय साक्ष्यों के आधार पर सामान्य कारक की अनिवार्यता पर बल दिया था जो सभी बौद्धिक कार्यों का आधार होता है। इसके विपरीत, लुई थर्स्टन ने इस विचार को नकारते हुए सात स्वतंत्र प्राथमिक मानसिक क्षमताओं का प्रस्ताव दिया था। थर्स्टन का मानना था कि बुद्धि कई स्वतंत्र योग्यताओं का समूह है और कोई भी एक सामान्य कारक सभी मानसिक प्रक्रियाओं को पूरी तरह नियंत्रित नहीं करता है, जो विविधता को दर्शाता है।

298. (B) सभी संज्ञानात्मक कार्यों के आधार पर एक सामान्य बुद्धि
चार्ल्स स्पीयरमैन के अनुसार, 'g' कारक वह अंतर्निहित सामान्य मानसिक ऊर्जा है जो सभी प्रकार की बौद्धिक गतिविधियों में समान रूप से निहित होती है। उनका मानना था कि बौद्धिक कार्यों के बीच जो धनात्मक सह-संबंध पाया जाता है, उसका मुख्य कारण यही सामान्य क्षमता मानी जाती है। व्यक्ति किसी विशेष क्षेत्र में कितना भी निपुण क्यों न हो, उसका आधारभूत प्रदर्शन इसी सामान्य शक्ति द्वारा संचालित होता है। यह अवधारणा बुद्धि को एक एकीकृत शक्ति के रूप में देखने का आधार प्रदान करती है और मानवीय संज्ञान की आधारभूत दक्षता का प्रतिनिधित्व करती है।

299. (C) कई संभावित विचार या समाधान उत्पन्न करना।
सृजनात्मकता में 'अपसारी चिन्तन' वह संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जहाँ व्यक्ति किसी एक समस्या के लिए एक निश्चित और रटे-रटाए समाधान के बजाय कई नवीन, अनोखे और भिन्न-भिन्न विकल्पों की खोज करता है। यह सृजनात्मकता का मूल आधार है, जो कल्पनाशीलता और लचीलेपन को प्रोत्साहित करता है। अभिसारी चिन्तन के विपरीत, जो केवल एक सही उत्तर तक पहुँचने पर केंद्रित होता है, अपसारी चिन्तन अनेक संभावनाओं के द्वार खोलता है। यह वह मानसिक शक्ति है जो नवीनता, मौलिकता और जटिल समस्याओं के अपरंपरागत समाधान खोजने के लिए अनिवार्य मानी जाती है।

300. (B) सक्रिय सहभागिता और शिक्षार्थी की संलिप्तता।
शिक्षा मनोविज्ञान में छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति का मुख्य केंद्र छात्र को अधिगम की प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार बनाना माना जाता है। यहाँ ज्ञान को केवल शिक्षक द्वारा दिया नहीं जाता, बल्कि छात्र अपनी जिज्ञासा, व्यक्तिगत अनुभवों और आपसी सहयोग के माध्यम से स्वयं अर्थ का निर्माण करते हैं। यह दृष्टिकोण रटने के स्थान पर विषयों की गहरी समझ, स्वायत्तता और आलोचनात्मक चिन्तन को प्रोत्साहित करता है। जब छात्र सीखने की प्रक्रिया में पूरी तरह संलग्न और उत्तरदायी होते हैं, तो प्राप्त ज्ञान अधिक स्थायी, व्यावहारिक और उनके व्यक्तिगत विकास के लिए प्रभावशाली होता है।

व्यक्तिगत अनुभवों और आपसी सहयोग के माध्यम से सक्रिय रूप से नए अर्थ खोजते हैं। इस परिवेश में शिक्षक सूचना का एकमात्र स्रोत नहीं होता, बल्कि एक सुगमकर्ता की भूमिका निभाता है जो सीखने के अवसर प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण रटने के स्थान पर गहरी समझ, स्वायत्तता और आलोचनात्मक चिन्तन को प्रोत्साहित करता है, जिससे प्राप्त ज्ञान अधिक स्थायी और प्रभावी बनता है।

251. (D) शिक्षार्थी का विकास और व्यक्तिगत भिन्नताएं।
शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य कार्यक्षेत्र शिक्षार्थी और उसके सीखने के व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन करना है। इसमें यह समझना सम्मिलित है कि बच्चे शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से कैसे विकसित होते हैं और उनकी सीखने की गति एक-दूसरे से भिन्न क्यों होती है। यह अनुशासन व्यक्तिगत भिन्नताओं को पहचानकर शिक्षकों को ऐसी रणनीतियां बनाने में मदद करता है जो प्रत्येक छात्र की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप हों। प्रशासनिक मुद्दों के विपरीत, इसका पूरा ध्यान छात्र के सर्वांगीण विकास और अधिगम की प्रभावशीलता पर ही केंद्रित रहता है।

252. (A) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
जब किसी परीक्षण को किसी विशेष कौशल, जैसे विदेशी भाषा सीखने की क्षमता, को मापने हेतु अभिकल्पित किया जाता है, तो उसे विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण कहा जाता है। यह व्यक्ति की उस अंतर्निहित संभावना का आकलन करता है जो उचित प्रशिक्षण मिलने पर उसे उस विशिष्ट क्षेत्र में भविष्य में सफल बना सकती है। यह सामान्य बुद्धि परीक्षण से भिन्न है क्योंकि इसका ध्यान केवल एक संकीर्ण और परिभाषित योग्यता पर होता है। ऐसे परीक्षण शैक्षिक संस्थानों और नियोक्ताओं को सही प्रतिभा की पहचान करने में अत्यंत सटीक और विश्वसनीय वैज्ञानिक आधार प्रदान करते हैं।

253. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
सृजनात्मकता और पारंपरिक बुद्धि मापन चिन्तन की दो अलग-अलग दिशाओं को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। उच्च सृजनात्मकता मुख्य रूप से अपसारी चिन्तन पर आधारित होती है, जहाँ व्यक्ति एक ही समस्या के कई नवीन और अपरंपरागत समाधान खोजता है। इसके विपरीत, मानक बुद्धि लब्धि परीक्षणों में सफलता के लिए प्रायः अभिसारी चिन्तन की आवश्यकता होती है, जहाँ व्यक्ति को तार्किक रूप से एक ही सही उत्तर तक पहुँचना होता है। ये दोनों कथन मानवीय संज्ञान की विविधता और चिन्तन शैलियों के बीच के मौलिक अंतर को सही ढंग से स्पष्ट करते हैं।

254. (B) कक्षा को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने का ज्ञान।
एक प्रभावी शिक्षक के पास केवल विषय का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसके पास सुदृढ़ शैक्षणिक ज्ञान भी होना चाहिए। यह ज्ञान उसे कक्षा के वातावरण को अनुशासित और प्रेरक बनाए रखने, छात्रों के व्यवहार को समझने और शिक्षण की विभिन्न रणनीतियों को लागू करने में मदद करता है। शैक्षणिक ज्ञान का अर्थ है यह जानना कि किसी जानकारी को छात्रों के लिए सुलभ और बोधगम्य कैसे बनाया जाए। यह शिक्षण की कला और प्रबंधन का वह संगम है जो छात्र अधिगम को सफल, अर्थपूर्ण और परिणामोन्मुखी बनाने में सहायक होता है।

255. (A) दूसरों का अवलोकन और अनुकरण।
अल्बर्ट बेंडुरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य अपने व्यवहार का अधिकांश भाग सामाजिक परिवेश में दूसरों को देखकर सीखता है। इस प्रक्रिया में किसी आदर्श प्रतिरूप के कार्यों का सूक्ष्म निरीक्षण करना और फिर उसी व्यवहार को अपने जीवन में उतारना सम्मिलित होता है। यह अधिगम केवल प्रत्यक्ष अनुभव या प्रयास और त्रुटि तक सीमित नहीं है, बल्कि हम दूसरों की सफलताओं और विफलताओं से भी निरंतर सीखते रहते हैं। यह सिद्धांत बताता है कि समाज हमारे आचरण और मूल्यों को आकार देने में अत्यंत प्रभावशाली भूमिका निभाता है।

256. (C) सामान्य कारक
चार्ल्स स्पीयरमैन के द्वि-कारक सिद्धांत में 'g' कारक का तात्पर्य सामान्य कारक से होता है। यह वह अंतर्निहित मानसिक ऊर्जा है जो सभी प्रकार की बौद्धिक गतिविधियों में समान रूप से निहित होती है। स्पीयरमैन का मानना था कि बौद्धिक कार्यों के बीच जो धनात्मक सह-संबंध पाया जाता है, उसका मुख्य कारण यही सामान्य कारक है। यह व्यक्ति की समग्र बौद्धिक दक्षता का प्रतिनिधित्व करता है और किसी भी विशेष कौशल के पीछे की आधारभूत शक्ति माना जाता है। यह बुद्धि को एक एकीकृत शक्ति के रूप में समझने का मुख्य वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

257. (B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
रेमंड कैटेल ने बुद्धि की दो मुख्य श्रेणियों, तरल और ठोस के माध्यम से मानव संज्ञान को स्पष्ट किया था। तरल बुद्धि वास्तव में जन्मजात और जैविक रूप से आधारित मानी जाती है, जो नवीन समस्याओं को सुलझाने में सहायक होती है। इसके विपरीत, ठोस बुद्धि अर्जित ज्ञान और संचित अनुभव का प्रतिनिधित्व करती है जो शिक्षा एवं संस्कृति से प्रभावित होती है। हालांकि दोनों कथन स्वतंत्र रूप से सत्य हैं और इन दो बुद्धियों के बीच के मौलिक अंतर को स्पष्ट करते हैं, परंतु वे एक-दूसरे के प्रत्यक्ष तर्क के रूप में कार्य नहीं करते हैं, जो समझना आवश्यक है।

258. (C) रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस
रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस एक ऐसा प्रसिद्ध बुद्धि परीक्षण है जो पूरी तरह से अशाब्दिक पहेलियों और ज्यामितीय प्रतिरूपों पर आधारित होता है। इसमें परीक्षार्थी को एक दृश्य श्रृंखला में अंतर्निहित तार्किक नियम को पहचानकर लुप्त भाग को चुनना होता है। चूंकि इसमें भाषा या सांस्कृतिक जानकारी की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए यह भाषाई बाधाओं को दूर करने और विशुद्ध तार्किक चिन्तन को मापने के लिए आदर्श माना जाता है। यह परीक्षण विशेष रूप से व्यक्ति की तरल बुद्धि और अमूर्त संबंधों को समझने की क्षमता का निष्पक्ष और वैज्ञानिक मूल्यांकन करता है।

अंतर स्पष्ट किया था। उनका मानना था कि सामान्य कारक वह अंतर्निहित मानसिक ऊर्जा है जो सभी बौद्धिक कार्यों का आधार होती है, जबकि विशिष्ट कारक उन विशेष क्षमताओं को दर्शाता है जो केवल एक विशेष प्रकार की गतिविधि, जैसे संगीत या गणित, के लिए आवश्यक होती हैं। यह ऐतिहासिक विभाजन यह समझने में मदद करता है कि क्यों व्यक्ति कुछ सामान्य कार्यों में एक जैसा प्रदर्शन करता है परंतु विशेष क्षेत्रों में उसकी दक्षता भिन्न होती है।

277. (A) ठोस बुद्धि
रेमंड कैटेल के अनुसार ठोस बुद्धि वह क्षमता है जो व्यक्ति द्वारा शिक्षा, संस्कृति और जीवन भर के संचित अनुभवों के माध्यम से अर्जित की जाती है। शब्दावली और सामान्य जानकारी का समृद्ध ज्ञान इसी बुद्धि का उत्कृष्ट सूचक माना जाता है क्योंकि यह संचित सूचनाओं के भंडार और उनके व्यावहारिक उपयोग पर निर्भर करता है। यह तरल बुद्धि से भिन्न है, जो नवीन समस्याओं को सुलझाने की जन्मजात शक्ति मानी जाती है। ठोस बुद्धि आयु के साथ निरंतर परिपक्व होती है क्योंकि व्यक्ति निरंतर अपनी सूचनाओं के कोश का विस्तार और संवर्धन करता रहता है।

278. (C) शिक्षण में मनोविज्ञान का अनुप्रयोग।
शिक्षा मनोविज्ञान वह विशिष्ट शाखा है जो शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों और नियमों के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित करती है। इसका मुख्य उद्देश्य मानवीय व्यवहार, अधिगम की प्रक्रियाओं और बाल विकास की समझ का उपयोग करके शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाना है। यह अनुशासन शिक्षकों को वह वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है जिससे वे छात्रों की रुचियों, क्षमताओं और व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझकर उचित शैक्षणिक वातावरण तैयार कर सकें। यह शिक्षण की कला को वैज्ञानिक साक्ष्यों के साथ जोड़कर अधिगम को अर्थपूर्ण बनाता है।

279. (A) शिक्षक-केंद्रित
व्याख्यान विधि पारंपरिक शिक्षण का एक ऐसा रूप है जिसमें शिक्षक सूचना का मुख्य स्रोत और कक्षा का एकमात्र नियंत्रक होता है। इसमें संचार का प्रवाह प्रायः शिक्षक से छात्र की ओर एकतरफा होता है, जहाँ छात्र केवल सुनने और टिप्पणी लिखने तक सीमित रहते हैं। इस व्यवस्था में छात्रों की सक्रिय भागीदारी और उनके द्वारा ज्ञान निर्माण के अवसर अत्यंत कम होते हैं। चूंकि पूरी प्रक्रिया शिक्षक की विशेषज्ञता और निर्देशों के इर्द-गिर्द ही घूमती है, इसलिए इसे विशुद्ध रूप से शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण की श्रेणी में रखा जाता है, जो सूचना के तीव्र प्रसार हेतु प्रभावी है।

280. (D) शाब्दिक और निष्पादन क्षमताओं हेतु पृथक मापनी।
वेक्स्लर मापनी ने बुद्धि मापन में एक क्रांतिकारी नवाचार किया क्योंकि इसने केवल एक औसत अंक देने के स्थान पर शाब्दिक और निष्पादन क्षमताओं के लिए अलग-अलग प्राप्तांक प्रदान किए थे। यह व्यवस्था व्यक्ति की भाषाई योग्यताओं और क्रियात्मक कौशलों के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से उजागर करती है। इससे मनोवैज्ञानिकों को व्यक्ति की मानसिक शक्तियों और दुर्बलताओं का एक विस्तृत और संतुलित संज्ञानात्मक प्रोफाइल प्राप्त होता है। इसी नैदानिक गहराई के कारण इसे पूर्ववर्ती आयु-आधारित परीक्षणों की तुलना में अधिक उन्नत और प्रभावी उपकरण माना जाता है।

281. (B) सांख्यिकीय दुर्लभता
सृजनात्मक चिन्तन के परीक्षण में 'मौलिकता' का अंकन इस आधार पर किया जाता है कि कोई विचार कितना अद्वितीय और अनोखा है। यदि किसी छात्र की अनुक्रिया ऐसी है जो पूरे समूह में बहुत कम लोगों ने दी है, तो उसे सांख्यिकीय रूप से दुर्लभ माना जाता है और उच्च अंक दिए जाते हैं। यह मापता है कि व्यक्ति पारंपरिक और सामान्य उत्तरों से हटकर कितना नवीन सोच सकता है। मौलिकता का अर्थ ही वह विशिष्टता है जो स्थापित मानदंडों को चुनौती देती है और पूरी तरह से नए दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो नवाचार का आधार है।

282. (C) बहु-अभिक्षमता बैटरी
बहु-अभिक्षमता बैटरी का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की विविध योग्यताओं का एक संतुलित प्रोफाइल तैयार करना है ताकि यह अनुमान लगाया जा सके कि वह किन भिन्न व्यवसायों में सफल हो सकता है। यह केवल एक औसत अंक देने के स्थान पर शाब्दिक, संख्यात्मक और यांत्रिक जैसे भिन्न आयामों का अलग-अलग मूल्यांकन करती है। इससे करियर परामर्शदाताओं को छात्र की विशिष्ट शक्तियों और सीमाओं को समझने में मदद मिलती है। यह व्यापक वैज्ञानिक मार्गदर्शन छात्रों को उनकी अंतर्निहित प्रतिभा के अनुरूप सही व्यावसायिक पथ चुनने में अत्यंत सहायक और विश्वसनीय सिद्ध होता है।

283. (D) आत्म-प्रभावकारिता
अल्बर्ट बेंडुरा के सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत में 'आत्म-प्रभावकारिता' वह विश्वास है जो व्यक्ति को यह महसूस कराता है कि वह किसी विशिष्ट स्थिति या कार्य में सफल होने की क्षमता रखता है। यह केवल एक सामान्य आत्मविश्वास नहीं है, बल्कि विशिष्ट कार्यों के प्रति व्यक्ति की अपनी योग्यता का व्यक्तिगत आकलन माना जाता है। उच्च आत्म-प्रभावकारिता वाले व्यक्ति चुनौतियों को अवसर के रूप में देखते हैं और उनमें अधिक प्रयास करते हैं। यह विचार अधिगम, अभिप्रेरणा और व्यवहारिक प्रदर्शन को निर्धारित करने में एक अत्यंत शक्तिशाली मनोवैज्ञानिक कारक की भूमिका निभाता है।

284. (A) कक्षा के वातावरण को प्रबंधित करने की क्षमता।
शिक्षक प्रभावशीलता का एक महत्वपूर्ण स्तंभ कक्षा प्रबंधन का सूक्ष्म कौशल माना जाता है। एक प्रभावी शिक्षक वह है जो कक्षा में ऐसा अनुशासित, सुरक्षित और प्रेरक परिवेश निर्मित कर सके जहाँ अधिगम सुचारु रूप से चल सके। इसमें केवल अनुशासन बनाए रखना ही नहीं, बल्कि छात्रों की संलिप्तता बढ़ाना और सीखने में आने वाली बाधाओं को न्यूनतम करना भी शामिल होता है। उचित प्रबंधन के बिना उत्तम शिक्षण रणनीतियां भी विफल हो सकती हैं। अतः एक व्यवस्थित वातावरण ही वह आधार है जिस पर छात्र विकास और सफल अधिगम की पूरी प्रक्रिया टिकी होती है।

सिद्धांत बुद्धि को अधिक लचीले और विविध रूप में समझने में मदद करता है, जहाँ व्यक्ति विभिन्न कौशलों में भिन्न-भिन्न स्तर की निपुणता प्रदर्शित कर सकता है।

268. (A) शब्दावली
वेक्स्लर बुद्धि मापनी में शाब्दिक उप-परीक्षणों का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की भाषाई क्षमताओं, सामान्य ज्ञान और मौखिक तर्कशक्ति का मूल्यांकन करना है। शब्दावली परीक्षण में परीक्षार्थी को विभिन्न शब्दों के अर्थ बताने होते हैं, जो उसके संचित ज्ञान और भाषा की सूक्ष्म समझ को दर्शाता है। ब्लॉक डिजाइन या वस्तु संयोजन जैसे कार्यों के विपरीत, जो निष्पादन मापनी का हिस्सा हैं और क्रियात्मक कौशलों पर केंद्रित हैं, शब्दावली परीक्षण पूरी तरह से भाषा और अर्जित सूचनाओं के प्रभावी उपयोग पर आधारित होता है, जो शाब्दिक बुद्धि का प्रमुख संकेतक है।

269. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
शिक्षा मनोविज्ञान केवल एक विशुद्ध और सैद्धांतिक विज्ञान नहीं है, बल्कि यह एक अनुप्रयुक्त विज्ञान माना जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य केवल सिद्धांतों का निर्माण करना नहीं है, बल्कि उन सिद्धांतों को शिक्षा की वास्तविक परिस्थितियों और समस्याओं को हल करने के लिए प्रभावी ढंग से उपयोग करना है। यह मनोविज्ञान के नियमों को शिक्षण विधियों को सुधारने और छात्रों के अधिगम अनुभवों को बेहतर बनाने हेतु लागू करता है। अतः इसे केवल सिद्धांतों के विकास तक सीमित मानना इसके व्यावहारिक महत्व और वैज्ञानिक प्रकृति के विरुद्ध है, क्योंकि यह सदैव सुधार पर केंद्रित रहता है।

270. (B) अत्यंत निर्बल या नगण्य हो जाता है।
थ्रेसहोल्ड परिकल्पना यह सुझाव देती है कि सृजनात्मक होने के लिए एक औसत स्तर की बुद्धि लब्धि अनिवार्य होती है। हालांकि, एक बार जब व्यक्ति उस सीमा (लगभग 120 बुद्धि लब्धि) को पार कर लेता है, तो उसकी सृजनात्मकता और बुद्धि के बीच का धनात्मक सह-संबंध लगभग समाप्त हो जाता है। इसका अर्थ है कि अत्यधिक उच्च बुद्धि लब्धि होने मात्र से यह सुनिश्चित नहीं होता कि वह व्यक्ति और भी अधिक सृजनात्मक होगा। इस स्तर के बाद सृजनात्मकता के लिए कल्पनाशीलता, स्वतंत्र सोच और अभिप्रेरणा जैसे अन्य व्यक्तित्व गुण अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

271. (A) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
जब किसी परीक्षण को किसी विशेष व्यावसायिक कौशल, जैसे नामों और संख्याओं की जांच में गति एवं परिशुद्धता, को मापने हेतु अभिकल्पित किया जाता है, तो उसे विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण कहा जाता है। यह व्यक्ति की उस अंतर्निहित क्षमता का आकलन करता है जो लिपिकीय या प्रशासनिक कार्यों में सफलता के लिए अनिवार्य मानी जाती है। यह सामान्य बुद्धि परीक्षण से भिन्न है क्योंकि इसका ध्यान केवल एक संकीर्ण और परिभाषित योग्यता पर होता है। ऐसे परीक्षण नियोक्ताओं को सही प्रतिभा की पहचान करने में अत्यंत सटीक और विश्वसनीय वैज्ञानिक आधार प्रदान करते हैं।

272. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
बुद्धि के विभिन्न सिद्धांतों और उनके प्रस्तावक मनोवैज्ञानिकों का यह मिलान विषय की ऐतिहासिक गहराई को स्पष्ट करता है। बिने ने सबसे पहले मानसिक आयु की अवधारणा देकर आयु-आधारित बौद्धिक स्तर को मापने का मार्ग प्रशस्त किया था। स्पीयरमैन ने सामान्य और विशिष्ट कारकों द्वारा बुद्धि मापन की नींव रखी। थर्स्टन ने सात स्वतंत्र प्राथमिक मानसिक क्षमताओं के समूह कारक सिद्धांत का प्रस्ताव दिया। कैटेल ने इसे तरल और ठोस बुद्धि के रूप में विभाजित करके और अधिक सूक्ष्मता प्रदान की। ये सभी सिद्धांत आधुनिक बुद्धि मापन के वैज्ञानिक आधार माने जाते हैं।

273. (D) शास्त्रीय अनुबंधन
अल्बर्ट बेंडुरा के अवलोकनात्मक अधिगम में चार प्रमुख संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं सम्मिलित हैं: अवधान, प्रतिधारण, पुनरुत्पादन और अभिप्रेरणा। ये प्रक्रियाएं यह तय करती हैं कि व्यक्ति दूसरों को देखकर क्या सीखता है और उसे समाज में कब प्रदर्शित करता है। शास्त्रीय अनुबंधन वास्तव में इवान पावलोव द्वारा प्रतिपादित एक अलग व्यवहारवादी सिद्धांत है जो अनैच्छिक अनुक्रियाओं और उद्दीपकों के साहचर्य पर केंद्रित होता है। बेंडुरा का सिद्धांत संज्ञान और सामाजिक संदर्भ पर बल देता है, जो इसे पावलोव के यांत्रिक अनुबंधन की प्रक्रिया से पूर्णतः भिन्न और परिष्कृत बनाता है।

274. (C) यह गहन समझ और आलोचनात्मक चिन्तन को बढ़ावा देता है।
छात्र-केंद्रित निर्देश का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यहाँ अधिगम रटने के स्थान पर अर्थपूर्ण समझ पर आधारित होता है। छात्रों को स्वयं अन्वेषण करने, प्रश्न पूछने और समस्याओं का विश्लेषण करने के अवसर मिलते हैं, जिससे उनकी आलोचनात्मक सोच विकसित होती है। यह दृष्टिकोण छात्रों को उनके अधिगम की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से संलग्न करता है, जिससे प्राप्त ज्ञान अधिक स्थायी और व्यावहारिक होता है। यह स्वायत्तता और उत्तरदायित्व की भावना भी पैदा करता है, जो उन्हें भविष्य में एक स्वतंत्र विचारक और समस्या-समाधानकर्ता बनाने में सहायक होती है।

275. (B) छात्र विकास को दर्शाने वाला मूल्यांकन संबंधी आंकड़ा।
शिक्षक प्रभावशीलता का वास्तविक और वैज्ञानिक मापदंड छात्रों की प्रगति और उनके अधिगम के स्तर में होने वाला मापने योग्य विकास माना जाता है। केवल लोकप्रियता या अनुभव के वर्षों से शिक्षण की गुणवत्ता को पूर्णतः सिद्ध नहीं किया जा सकता है। मूल्यांकन संबंधी आंकड़े यह वस्तुनिष्ठ प्रमाण देते हैं कि शिक्षक ने छात्रों के ज्ञान, कौशल और व्यवहार में कितना सकारात्मक परिवर्तन किया है। यह साक्ष्य शिक्षण रणनीतियों की सफलता को दर्शाता है और यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों को प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए प्राप्त किया जा रहा है।

276. (D) स्पीयरमैन
चार्ल्स स्पीयरमैन ने बुद्धि का द्वि-कारक सिद्धांत प्रतिपादित किया था जिसमें उन्होंने सामान्य और विशिष्ट कारकों के बीच

259. (B) समस्या-आधारित अधिगम
समस्या-आधारित अधिगम एक विशुद्ध छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति है जहाँ सीखने की प्रक्रिया एक वास्तविक और चुनौतीपूर्ण समस्या से प्रारंभ होती है। इसमें छात्र स्वयं शोध करते हैं, जानकारी जुटाते हैं और समाधान खोजते हैं, जबकि शिक्षक केवल एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। व्याख्यान और प्रत्यक्ष निर्देश के विपरीत, जो शिक्षक-केंद्रित हैं, यह विधि छात्रों को उनके अधिगम के प्रति अधिक उत्तरदायी और सक्रिय बनाती है। यह दृष्टिकोण आलोचनात्मक चिन्तन, सहयोग और व्यावहारिक अनुप्रयोग के कौशल विकसित करने के लिए अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है।

260. (D) छात्र विकास को समझना अनिवार्य है।
मनोविज्ञान ने शिक्षा क्षेत्र को यह महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि दी है कि प्रभावी शिक्षण के लिए छात्र की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक अवस्था का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक छात्र के विकास की गति और सीखने का तरीका अलग होता है, जिसे समझे बिना शिक्षण अर्थहीन हो जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों को यह समझने में मदद करता है कि किस आयु और स्तर पर कौन सी शिक्षण विधियां सर्वाधिक उपयुक्त होंगी। छात्र विकास की यह समझ ही शिक्षण को व्यक्तिगत, समावेशी और वास्तव में परिणामोन्मुखी बनाने का वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है।

261. (A) विचारों की विभिन्न श्रेणियां उत्पन्न करना।
सृजनात्मकता के संदर्भ में 'लचीलापन' वह संज्ञानात्मक क्षमता है जो व्यक्ति को एक ही समस्या को विभिन्न दृष्टिकोणों और श्रेणियों से देखने के योग्य बनाती है। यह मानसिक जड़ता को तोड़कर विचारों की विविधता पर बल देता है। जब कोई व्यक्ति लीक से हटकर भिन्न-भिन्न प्रकार के समाधान खोजता है, तो वह उच्च स्तरीय लचीलापन प्रदर्शित करता है। विचारों की केवल संख्या बढ़ाना प्रवाह है, परंतु विचारों में विविधता लाना लचीलापन कहलाता है। यह क्षमता व्यक्ति को जटिल परिस्थितियों में अपरंपरागत और बहुआयामी समाधान खोजने में सशक्त मदद करती है।

262. (C) विशिष्ट परीक्षण एक क्षेत्र को मापता है; बैटरी कई क्षेत्रों को।
विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण और बहु-अभिक्षमता बैटरी के बीच मुख्य अंतर उनकी व्यापकता और लक्ष्य में निहित होता है। एक विशिष्ट परीक्षण केवल एक संकीर्ण और स्पष्ट रूप से परिभाषित क्षेत्र, जैसे संगीत या यांत्रिकी, में व्यक्ति की संभावनाओं को मापता है। इसके विपरीत, बैटरी व्यक्ति की विभिन्न योग्यताओं, जैसे शाब्दिक, संख्यात्मक और स्थानिक, का एक विस्तृत प्रोफाइल प्रदान करती है। बैटरी से प्राप्त परिणामों की आपस में तुलना करना सरल होता है, जिससे व्यक्ति की शक्तियों और सीमाओं का एक समग्र चित्र प्राप्त होता है जो करियर मार्गदर्शन के लिए अनिवार्य है।

263. (A) थार्नडाइक
एडवर्ड थार्नडाइक ने स्पीयरमैन के एकल सामान्य बुद्धि या 'g' कारक के विचार को पूरी तरह नकार दिया था। उन्होंने प्रस्तावित किया कि बुद्धि कोई अखंड इकाई नहीं है, बल्कि यह असंख्य स्वतंत्र और अत्यंत विशिष्ट क्षमताओं का एक विशाल समुच्चय है। उनके अनुसार, प्रत्येक मानसिक कार्य एक विशिष्ट तंत्रिका संबंध द्वारा संचालित होता है। यह सिद्धांत बुद्धि को अधिक विविध और खंडित रूप में समझने पर बल देता है, जहाँ व्यक्ति एक क्षेत्र में बहुत कुशल और दूसरे में सामान्य हो सकता है। यह दृष्टिकोण बौद्धिक विविधता को सर्वाधिक महत्व देता है।

264. (D) छात्र विकास पर शिक्षक का प्रभाव।
शिक्षक प्रभावशीलता का वास्तविक मापदंड केवल उसकी वरिष्ठता या व्यक्तिगत लोकप्रियता नहीं माना जाता है। इसका सबसे प्रमाणिक आधार छात्रों के ज्ञान, कौशल और सर्वांगीण विकास में उसके द्वारा लाया गया सकारात्मक परिवर्तन है। एक कुशल शिक्षक वही है जो अपनी शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से प्रत्येक शिक्षार्थी की अंतर्निहित क्षमता को अधिकतम स्तर तक पहुँचाने में सफल सिद्ध होता है। छात्रों की प्रगति और उनके अधिगम के मापने योग्य परिणाम ही शिक्षक के प्रयासों और उसकी व्यावसायिक दक्षता का सर्वोत्तम और सर्वाधिक सार्थक प्रतिबिंब होते हैं जो कक्षा में स्पष्ट दिखते हैं।

265. (B) प्रतिनिधिक दंड
प्रतिनिधिक दंड सामाजिक अधिगम सिद्धांत की एक महत्वपूर्ण अवधारणा मानी जाती है। इसका तात्पर्य है कि हम दूसरों को उनके व्यवहार के लिए मिलने वाले नकारात्मक परिणामों या दंड को देखकर स्वयं उस व्यवहार से बचने लगते हैं। जब एक बच्चा देखता है कि उसके सहपाठी को हिंसा या दुर्व्यवहार के लिए सजा मिली है, तो वह उस दंड के डर से स्वयं भी वैसा करने से रुक जाता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि समाज में होने वाले दंड न केवल संबंधित व्यक्ति को, बल्कि उसका अवलोकन करने वाले अन्यों को भी अप्रत्यक्ष रूप से अनुशासित करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

266. (C) छात्र-केंद्रित
वह कक्षा जहाँ छात्र सक्रिय रूप से प्रयोगात्मक कार्यों, सहयोगात्मक चर्चाओं और शोध में संलग्न होते हैं, आधुनिक छात्र-केंद्रित मॉडल का प्रतिनिधित्व करती है। इस व्यवस्था में अधिगम का केंद्र छात्र की जिज्ञासा और उसकी सक्रिय भागीदारी होती है। यहाँ ज्ञान को केवल प्रेषित नहीं किया जाता, बल्कि छात्र स्वयं अनुभवों के माध्यम से उसका निर्माण करते हैं। शिक्षक यहाँ केवल एक मार्गदर्शक और सुगमकर्ता के रूप में कार्य करता है। यह दृष्टिकोण छात्रों में स्वायत्तता, आत्मविश्वास और आलोचनात्मक चिन्तन के कौशल विकसित करने के लिए अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है।

267. (D) थर्स्टन
लुई थर्स्टन ने बुद्धि के प्रति एक बहुआयामी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया था, जिसे समूह कारक सिद्धांत कहा जाता है। उन्होंने स्पीयरमैन के 'g' कारक के विचार को नकारते हुए सात स्वतंत्र प्राथमिक मानसिक क्षमताओं की पहचान की थी, जिनमें शाब्दिक बोध, स्मृति और तर्कशक्ति जैसे घटक शामिल थे। थर्स्टन का मानना था कि बौद्धिक व्यवहार इन विशिष्ट संक्रियाओं के विभिन्न संयोजनों का परिणाम होता है। यह

285. (A) केवल 2
सृजनात्मकता का मूल अर्थ ही ऐसे विचार या उत्पाद उत्पन्न करना है जो नवीन होने के साथ-साथ उपयोगी और सार्थक भी हों। कथन 1 गलत है क्योंकि उच्च बुद्धि सृजनात्मकता के लिए आधार तो प्रदान करती है परंतु वह पर्याप्त नहीं मानी जाती; इसके लिए अन्य गुणों की भी आवश्यकता होती है। कथन 3 भी गलत है क्योंकि सृजनात्मकता मुख्य रूप से अपसारी चिन्तन से संबंधित होती है, न कि अभिसारी से। अतः केवल दूसरा कथन ही सृजनात्मकता की वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक परिभाषा को सटीक रूप से प्रस्तुत करता है, जो नवीनता और उपयोगिता का संगम है।

286. (B) विशिष्ट क्षमताएं
चार्ल्स स्पीयरमैन के द्वि-कारक सिद्धांत में 's' कारक का तात्पर्य विशिष्ट क्षमताओं से होता है। उन्होंने प्रस्तावित किया कि जहाँ 'g' कारक सामान्य बौद्धिक शक्ति है, वहीं 's' कारक उन विशेष कौशलों को दर्शाता है जो केवल एक विशेष क्षेत्र, जैसे संगीत, गणित या यांत्रिकी, में सफलता के लिए आवश्यक होते हैं। स्पीयरमैन के अनुसार, एक व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग प्रदर्शन इसलिए करता है क्योंकि उसके विशिष्ट कारक भिन्न स्तर के होते हैं। यह अवधारणा मानवीय निपुणता की विविधता और व्यक्तिगत विशेषताओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित करती है।

287. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
परियोजना-आधारित अधिगम जैसी छात्र-केंद्रित विधियों में समय अपेक्षाकृत अधिक लगता है क्योंकि इनमें छात्र स्वयं खोज, चर्चा और निर्माण की प्रक्रिया से गुजरते हैं। सूचना का केवल निष्क्रिय ग्रहण करना तीव्र हो सकता है, परंतु छात्र-केंद्रित विधियां रटने के स्थान पर विषयों की गहरी समझ विकसित करने पर बल देती हैं। यह अतिरिक्त समय वास्तव में छात्र की संज्ञानात्मक सहभागिता और उसके व्यावहारिक कौशल को मजबूत करने के लिए आवश्यक निवेश माना जाता है। अतः स्थायी और अर्थपूर्ण अधिगम के लिए इस प्रक्रिया की समय-साध्य प्रकृति पूरी तरह से उचित है।

288. (D) यह निश्चित करना कि सभी छात्र अनिवार्य रूप से उच्च अंक प्राप्त करेंगे।
शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण और अधिगम की प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के लिए वैज्ञानिक सिद्धांत और रणनीतियां प्रदान करता है। यह व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने और अभिप्रेरणा बढ़ाने में मदद करता है। हालांकि, यह इस बात की कोई निश्चित गारंटी नहीं दे सकता कि सभी छात्र अनिवार्य रूप से उच्च अंक ही प्राप्त करेंगे, क्योंकि शैक्षणिक सफलता छात्र के निजी प्रयास, परिस्थितियों और कई अन्य बाह्य कारकों पर भी निर्भर करती है। मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य अधिगम के अनुभवों को उत्कृष्ट बनाना है, न कि परीक्षा परिणामों का एक समान या यांत्रिक निर्धारण करना।

289. (D) स्कूली आयु के बच्चों हेतु
वेक्स्लर ने बुद्धि मापन के लिए आयु-उपयुक्त उपकरणों की आवश्यकता को पहचाना और स्कूली आयु के बच्चों के लिए विशेष मापनी विकसित की थी। यह परीक्षण विशेष रूप से बच्चों की संज्ञानात्मक विकास की अवस्था और उनकी मानसिक क्षमताओं के स्तर को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इसमें शाब्दिक और निष्पादन उप-परीक्षणों का ऐसा मेल है जो बच्चों की बौद्धिक शक्तियों और सीमाओं का एक सटीक चित्र प्रस्तुत करता है। यह शैक्षिक निदान और बच्चों हेतु विशेष सहायता कार्यक्रम तैयार करने में विश्व स्तर पर अत्यंत प्रभावी और विश्वसनीय माना जाता है।

290. (C) स्पीयरमैन और कैटेल
स्पीयरमैन ने बुद्धि को एक पदानुक्रमित संरचना के रूप में देखा जहाँ सामान्य मानसिक ऊर्जा या 'g' कारक सभी कार्यों का केंद्र होता है। इसी प्रकार, रेमंड कैटेल ने भी बौद्धिक कार्यों के पीछे अंतर्निहित कारकों को खोजने पर बल दिया और तरल तथा ठोस बुद्धि के माध्यम से उसे और सूक्ष्मता प्रदान की थी। ये दोनों मनोवैज्ञानिक इस विचार का समर्थन करते हैं कि विभिन्न मानसिक योग्यताओं के पीछे कुछ व्यापक और आधारभूत शक्तियां कार्य करती हैं। यह दृष्टिकोण बुद्धि को एक व्यवस्थित और एकीकृत संरचना के रूप में समझने का मुख्य वैज्ञानिक आधार माना जाता है।

291. (B) रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस
रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस को विशेष रूप से एक अशाब्दिक परीक्षण के रूप में अभिकल्पित किया गया था ताकि बुद्धि मापन में भाषाई और सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को न्यूनतम किया जा सके। चूंकि इसमें शब्दों या विशिष्ट सांस्कृतिक ज्ञान के स्थान पर अमूर्त ज्यामितीय प्रतिरूपों का उपयोग किया जाता है, इसलिए यह विभिन्न पृष्ठभूमि और भाषाओं के लोगों के लिए एक निष्पक्ष और समान मापदंड प्रदान करता है। यह परीक्षण व्यक्ति की विशुद्ध तार्किक चिन्तन क्षमता और तरल बुद्धि को मापने के लिए वैश्विक स्तर पर सबसे विश्वसनीय और व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला वैज्ञानिक उपकरण माना जाता है।

292. (D) छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण
सहयोगात्मक अधिगम आधुनिक छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण का एक अनिवार्य अंग माना जाता है। इसमें छात्र केवल अकेले नहीं सीखते, बल्कि समूहों में कार्य करते हुए एक-दूसरे के अनुभवों और दृष्टिकोणों से लाभ उठाते हैं। यह विधि सामाजिक कौशल, प्रभावी संवाद और सामूहिक समस्या समाधान की क्षमता को बढ़ाती है। शिक्षक यहाँ केवल एक सुगमकर्ता के रूप में कार्य करता है जो आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण रटने के स्थान पर सक्रिय भागीदारी और ज्ञान के सामाजिक निर्माण पर बल देता है, जिससे अधिगम अधिक प्रभावी और आनंददायक बन जाता है।

293. (A) तरल बुद्धि
रेमंड कैटेल के अनुसार तरल बुद्धि वह जन्मजात तार्किक क्षमता है जो व्यक्ति को नवीन और अपरिचित समस्याओं को सुलझाने में पूर्णतः सक्षम बनाती है। यह किसी भी प्रकार की औपचारिक शिक्षा, संस्कृति या संचित सूचनाओं से पूरी तरह स्वतंत्र मानी जाती है। यह मुख्य रूप से मस्तिष्क के जैविक विकास और

242. (B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
बिने-साइमन मापनी का ऐतिहासिक निर्माण वास्तव में उन बच्चों की पहचान करने के लिए किया गया था जिन्हें विशेष शैक्षिक सहायता की आवश्यकता थी। इसका मुख्य नवाचार 'मानसिक आयु' की अवधारणा थी, जिसने एक बच्चे के बौद्धिक प्रदर्शन की तुलना उसके आयु वर्ग के औसत प्रदर्शन से की थी। हालांकि दोनों कथन सत्य हैं, परंतु कारण केवल मानसिक आयु की परिभाषा दे रहा है, वह यह पूरी तरह स्पष्ट नहीं करता कि इसका विशिष्ट उपयोग अक्षमता की पहचान हेतु ही क्यों किया गया था। यह मापनी आधुनिक शैक्षिक मूल्यांकन का आधार बनी थी।

243. (B) इसे सार्वभौमिक रूप से एक एकल और एकात्मक क्षमता माना जाता है।
आधुनिक मनोविज्ञान में बुद्धि को एक एकल इकाई मानने के बजाय उसे कई विशिष्ट और स्वतंत्र क्षमताओं का एक जटिल समुच्चय माना जाता है। थर्स्टन और थार्नडाइक जैसे मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि बुद्धि बहुआयामी होती है। इसमें अमूर्त चिन्तन, समस्याओं को हल करने और पर्यावरण के साथ अनुकूलन करने की विविध योग्यताएं सम्मिलित मानी जाती हैं। यह आनुवंशिकता और परिवेश दोनों की अंतःक्रिया से प्रभावित होती है। अतः इसे एक अखंड और सरल क्षमता मानना आधुनिक वैज्ञानिक शोधों और वर्तमान मनोवैज्ञानिक समझ के विपरीत है।

244. (D) शिक्षकों के लिए वेतनमान निर्धारित करना।
शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य योगदान शिक्षण और अधिगम की प्रक्रियाओं को मानवीय व्यवहार के संदर्भ में वैज्ञानिक रूप से बेहतर बनाना है। यह अभिप्रेरणा के सिद्धांत, कक्षा प्रबंधन की तकनीकें और मूल्यांकन के मानकीकृत उपकरण प्रदान करता है ताकि शिक्षा का स्तर उन्नत किया जा सके। हालांकि, शिक्षकों का वेतनमान निर्धारित करना या प्रशासनिक वित्तीय प्रबंधन करना शिक्षा विभाग और सरकारी नीतियों का क्षेत्र है, मनोविज्ञान का नहीं। मनोविज्ञान का ध्यान हमेशा शिक्षार्थी के विकास और सीखने के वातावरण को प्रभावी बनाने पर ही केंद्रित रहता है।

245. (A) प्रवाह
सृजनात्मकता के परीक्षण में 'प्रवाह' का तात्पर्य एक ही वस्तु या संकेत के प्रत्युत्तर में बहुत अधिक संख्या में सार्थक और भिन्न विचार उत्पन्न करने की क्षमता से होता है। जब एक छात्र समाचार पत्र के कई पृथक उपयोगों की सूची बनाता है, तो वह अपनी मानसिक गति और विचारशीलता की प्रचुरता को दर्शाता है। प्रवाह जितना अधिक होगा, व्यक्ति की सृजनात्मक ऊर्जा उतनी ही सशक्त मानी जाएगी। यह मापता है कि बिना किसी मानसिक अवरोध के मस्तिष्क कितनी शीघ्रता से विभिन्न संभावनाओं को जन्म दे सकता है, जो सृजनात्मक प्रक्रिया का प्राथमिक चरण है।

246. (C) यह संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की भूमिका को स्वीकार करता है।
शास्त्रीय व्यवहारवाद अधिगम को केवल बाहरी उद्दीपन और अनुक्रिया के बीच एक यांत्रिक संबंध मानता था। इसके विपरीत, अल्बर्ट बेंडुरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत अधिगम में आंतरिक मानसिक अवस्थाओं, जैसे अवधान और स्मृति, को केंद्रीय स्थान प्रदान करता है। यह मानता है कि हम दूसरों को देखकर जो जानकारी प्राप्त करते हैं, उसे मानसिक रूप से संसाधित करते हैं और फिर उसे अपनाने का निर्णय लेते हैं। यह संज्ञानात्मक हस्तक्षेप ही है जो इसे पारंपरिक व्यवहारवाद से अधिक मानवीय और परिष्कृत बनाता है, जहाँ अधिगम केवल क्रिया नहीं बल्कि विचार भी है।

247. (C) 2, 3, 1
शिक्षण दृष्टिकोणों का यह क्रम कक्षा में शिक्षक के नियंत्रण की कमी और छात्र की स्वायत्तता में निरंतर वृद्धि को दर्शाता है। व्याख्यान पूर्णतः शिक्षक-केंद्रित है जहाँ छात्र निष्क्रिय होते हैं। निर्देशित अभ्यास सहित प्रत्यक्ष निर्देश में शिक्षक नेतृत्व करता है परंतु छात्र सक्रिय अभ्यास करते हैं, जो एक मध्यमार्गी स्थिति मानी जाती है। अन्वेषण-आधारित अधिगम पूर्णतः छात्र-केंद्रित है क्योंकि यहाँ छात्र स्वयं खोज और शोध का नेतृत्व करते हैं। यह कालक्रम शिक्षा के अधिक लोकतांत्रिक और शिक्षार्थी-उन्मुख होने की दिशा को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है।

248. (D) एक प्राप्तांक अपने आयु-समूह के औसत से कितना विचलित है।
वेक्स्लर मापनी ने बुद्धि लब्धि की गणना के लिए 'विचलन बुद्धि लब्धि' की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया था। यह सांख्यिकीय पद्धति यह मापती है कि एक व्यक्ति का प्रदर्शन उसके अपने आयु वर्ग के औसत प्रदर्शन से कितना ऊपर या नीचे है। यह सामान्य वितरण वक्र पर आधारित है, जहाँ औसत को 100 माना जाता है। यह पद्धति अनुपात बुद्धि लब्धि की तुलना में अधिक विश्वसनीय मानी जाती है क्योंकि यह विभिन्न आयु समूहों के बीच बौद्धिक स्तर की तुलना को वैज्ञानिक रूप से सटीक और न्यायसंगत बनाने में सफल सिद्ध होती है।

249. (B) स्पीयरमैन का द्वि-कारक सिद्धांत
चार्ल्स स्पीयरमैन ने सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से प्रस्तावित किया था कि सभी बौद्धिक कार्यों के पीछे एक सामान्य मानसिक ऊर्जा या 'g' कारक कार्य करता है। उनका मानना था कि जो व्यक्ति एक मानसिक कार्य में निपुण होता है, वह अन्य कार्यों में भी अच्छा प्रदर्शन करता है क्योंकि उसका आधारभूत सामान्य कारक सशक्त होता है। हालांकि उन्होंने विशिष्ट कारकों की भी चर्चा की थी, परंतु उनका मुख्य बल इसी सार्वभौमिक सामान्य क्षमता पर था। यह विचार बुद्धि को एक एकीकृत शक्ति के रूप में देखने का आधार प्रदान करता है और संज्ञान की एकता को दर्शाता है।

250. (C) अधिगम एक सक्रिय और रचनात्मक प्रक्रिया है।
छात्र-केंद्रित कक्षा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यहाँ अधिगम को ज्ञान के हस्तांतरण के स्थान पर उसके सक्रिय निर्माण के रूप में देखा जाता है। छात्र अपनी जिज्ञासा,

अध्याय 05
अभिप्रेरणा, संवेग, प्रतिबल एवं मानव व्यवहार का विकास

1. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प 'अभिप्रेरणा' को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करता है?
   (A) शारीरिक उत्तेजना की एक सामान्यीकृत अवस्था जिसमें किसी विशिष्ट लक्ष्य का अभाव होता है।
   (B) एक आंतरिक अवस्था जो व्यवहार को सक्रिय करती है और उसे लक्ष्य की ओर निर्देशित करती है।
   (C) पर्यावरणीय उद्दीपकों के संपर्क में आने से सीखी गई एक व्यवहारात्मक प्रतिक्रिया।
   (D) आंतरिक संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं के मूल्यांकन के लिए उपयोग की जाने वाली संज्ञानात्मक प्रक्रिया।

2. संवेग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I: संवेग विशुद्ध रूप से मनोवैज्ञानिक परिघटनाएं हैं जिनका कोई शारीरिक आधार नहीं होता है।
   कथन II: संवेग के अनुभव में तंत्रिका तंत्र, विशेष रूप से स्वायत्त तंत्रिका तंत्र, महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
   उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
   (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
   (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
   (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

3. निम्नलिखित में से किसे तनाव के प्रति प्राथमिक प्रतिक्रिया माना जाता है?
   (A) सक्रिय सामाजिक गतिविधियों और जुड़ाव में महत्वपूर्ण वृद्धि।
   (B) शारीरिक उत्तेजना और विश्राम हृदय गति में मापने योग्य कमी।
   (C) शारीरिक परिवर्तन जैसे हृदय गति में वृद्धि और हार्मोन का स्राव।
   (D) गहन शांति और शिथिलता की तत्काल मनोवैज्ञानिक भावना।

4. निम्नलिखित में से किसे विकास का एक मूलभूत सिद्धांत माना जाता है?
   (A) विकास पूरी तरह से एक यादृच्छिक और अप्रत्याशित प्रक्रिया है।
   (B) विकास एक अंतिम अवस्था तक पहुँचता है और किशोरावस्था के बाद रुक जाता है।
   (C) विकास विशेष रूप से व्यक्ति के आनुवंशिक कारकों से प्रभावित होता है।
   (D) विकास एक व्यवस्थित और अनुक्रमिक प्रतिरूप में आगे बढ़ता है।

5. अंतर्नोद सिद्धांत के अनुसार, अभिप्रेरित व्यवहार का प्राथमिक लक्ष्य क्या है?
   (A) सक्रिय रूप से बाहरी पुरस्कारों और पर्यावरणीय प्रोत्साहनों की तलाश करना।
   (B) व्यक्तिगत विकास और आत्म-सिद्धि की अवस्था प्राप्त करना।
   (C) आंतरिक तनाव को कम करना और जैविक समस्थापन को बहाल करना।
   (D) प्रजातियों की क्रिया के जन्मजात, आनुवंशिक रूप से निर्धारित प्रतिरूपों का पालन करना।

6. एक छात्रा परीक्षा से पहले अपनी तेज धड़कन और कांपते हाथों का कारण घबराहट को बताती है। संवेग का कौन-सा सिद्धांत उसकी शारीरिक अवस्था की इस व्याख्या को सबसे अच्छी तरह स्पष्ट करता है?
   (A) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत
   (B) शैक्टर-सिंगर द्वि-कारक सिद्धांत
   (C) अभिप्रेरणा का मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
   (D) आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत

7. निम्नलिखित में से किसे समाजीकरण का प्रमुख कारक नहीं माना जाता है?
   (A) परिवार
   (B) साथी समूह
   (C) मीडिया
   (D) आनुवंशिक प्रवृत्तियाँ

8. अभिप्रेरणा सिद्धांत में "प्रोत्साहन" की अवधारणा मुख्य रूप से संदर्भित करती है:
   (A) एक बाहरी लक्ष्य या उद्दीपक जो व्यवहार को अभिप्रेरित कर सकता है।
   (B) मनोवैज्ञानिक या जैविक तनाव की एक आंतरिक अवस्था।
   (C) एक अनसीखा और जैविक रूप से निर्धारित व्यवहार प्रतिरूप।
   (D) अपनी अद्वितीय मानवीय क्षमता को पूरा करने की अंतर्निहित आवश्यकता।

(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

52. एक व्यक्ति किसी स्थिति को खतरनाक मानता है, जिससे भय का अनुभव होता है। यह किसका एक केंद्रीय सिद्धांत है?
(A) अंतर्नोद सिद्धांत।
(B) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत।
(C) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत।
(D) संवेग का संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत।

53. निम्नलिखित में से कौन-सा तनाव से निपटने की रणनीति का एक उदाहरण है?
(A) कोर्टिसोल का बढ़ा हुआ स्राव।
(B) तेज धड़कन और हथेलियों में पसीना।
(C) दोस्तों से सामाजिक समर्थन मांगना।
(D) किसी स्थिति का प्रारंभिक मूल्यांकन।

54. संबद्धता, उपलब्धि और शक्ति की आवश्यकता को आमतौर पर किस प्रकार के प्रेरक के रूप में वर्गीकृत किया जाता है?
(A) जैविक प्रेरक
(B) शारीरिक प्रेरक
(C) मूलप्रवृत्यात्मक प्रेरक
(D) सामाजिक या सीखे हुए प्रेरक

55. मानव विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. विकास विशेष रूप से मात्रात्मक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है।
2. क्रांतिक अवधियों की अवधारणा बताती है कि अनुभवों का समय महत्वपूर्ण हो सकता है।
3. विकास एक सार्वभौमिक अनुक्रम का पालन करता है, लेकिन इसकी दर अलग-अलग व्यक्तियों में भिन्न हो सकती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) 1 और 2
(B) 2 और 3
(C) 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

56. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत के अनुसार, यदि किसी व्यक्ति की सुरक्षा की आवश्यकताएं पूरी नहीं होती हैं, तो वह मुख्य रूप से सम्मान की आवश्यकताओं से अभिप्रेरित नहीं होगा।
कारण (R): मास्लो का सिद्धांत प्रस्तावित करता है कि उच्च-स्तरीय आवश्यकताओं के व्यवहार के प्राथमिक चालक बनने से पहले निम्न-स्तरीय आवश्यकताओं को पर्याप्त रूप से संतुष्ट होना चाहिए।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

57. तंत्रिका तंत्र की कौन-सी शाखा संवेग के शारीरिक उत्तेजना घटक में सबसे सीधे तौर पर शामिल है?
(A) केवल केंद्रीय तंत्रिका तंत्र।
(B) कायिक तंत्रिका तंत्र।
(C) स्वायत्त तंत्रिका तंत्र।
(D) कपालीय तंत्रिका तंत्र।

58. एक नन्हा बच्चा अपने भाई-बहन के साथ खिलौने साझा करना सीख रहा है, यह समाजीकरण का एक उदाहरण है जो मुख्य रूप से किसके संदर्भ में हो रहा है?
(A) स्कूल।
(B) मीडिया।
(C) व्यापक रूप से संस्कृति।
(D) परिवार।

59. भूख की भावना जो किसी व्यक्ति को भोजन खोजने के लिए प्रेरित करती है, किसके द्वारा शुरु किए गए व्यवहार का एक उदाहरण है?
(A) एक अंतर्नोद।
(B) एक प्रोत्साहन।
(C) एक आत्म-सिद्धि की आवश्यकता।
(D) एक संज्ञानात्मक मूल्यांकन।

60. कौन-सा सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि संवेगात्मक तीव्रता शारीरिक उत्तेजना के स्तर से संबंधित है, लेकिन संवेग का विशिष्ट प्रकार स्थिति की हमारी संज्ञानात्मक व्याख्या द्वारा निर्धारित होता है?
(A) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत
(B) शैक्टर-सिंगर सिद्धांत
(C) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(D) अंतर्नोद सिद्धांत

61. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी को तनाव से निपटने की रणनीतियों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है?
(A) समस्या-केंद्रित मुकाबला
(B) संवेग-केंद्रित मुकाबला
(C) सामाजिक समर्थन मांगना
(D) प्रतिबलक के अस्तित्व को पूरी तरह से अनदेखा करना

62. वह सिद्धांत कि विकास सिर से नीचे की ओर होता है, किस नाम से जाना जाता है?
(A) शीर्ष-पुच्छीय सिद्धांत।
(B) समीप-दूराभिमुख सिद्धांत।
(C) क्रांतिक अवधि सिद्धांत।
(D) समाजीकरण सिद्धांत।

पूरी हो जाती है।
(B) यह पूरी तरह से उस विशिष्ट संस्कृति द्वारा निर्धारित होता है जिसमें व्यक्ति जन्म लेता है।
(C) यह संज्ञानात्मक विकास और सामाजिक अनुभवों से प्रभावित होता है।
(D) यह साथियों और परिवार के सामाजिक प्रभाव से स्वतंत्र होता है।

20. अभिप्रेरणा का मूलप्रवृत्ति सिद्धांत, जैसा कि मूल रूप से प्रस्तावित किया गया था, यह सुझाव देता है कि व्यवहार:
(A) आंतरिक तनाव को कम करने की जैविक आवश्यकता से प्रेरित होता है।
(B) बाहरी पुरस्कारों की मानसिक प्रत्याशा द्वारा खींचा जाता है।
(C) पर्यावरण के संज्ञानात्मक मूल्यांकन का परिणाम है।
(D) अनसीखे, आनुवंशिक रूप से प्रोग्राम किए गए प्रतिरूपों के कारण होता है।

21. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (संवेग का सिद्धांत)
P. शैक्टर-सिंगर सिद्धांत
Q. संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत
R. लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत
S. अंतर्नोद सिद्धांत
सूची II: (मुख्य अवधारणा)
1. स्थिति की व्याख्या संवेग से पहले होती है
2. शारीरिक उत्तेजना + संज्ञानात्मक लेबल
3. समस्थापन
4. केंद्रीय तंत्रिका तंत्र सक्रियण से संबंधित तीव्रता
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

22. एक व्यक्ति कार दुर्घटना में बाल-बाल बचने के बाद तेज धड़कन, तेज सांस और तनावग्रस्त मांसपेशियों का अनुभव कर रहा है, वह प्रदर्शित कर रहा है:
(A) तनाव से निपटने की एक रणनीति।
(B) तनाव के प्रति शारीरिक प्रतिक्रिया।
(C) अभिप्रेरणा की एक विशेषता।
(D) नैतिक विकास का एक सिद्धांत।

23. समाजीकरण में साथियों की भूमिका निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में सबसे अधिक स्पष्ट है?
(A) शैशवावस्था में प्रारंभिक प्राथमिक लगाव का निर्माण।
(B) भाषा और बुनियादी सांस्कृतिक मूल्यों की प्रारंभिक शिक्षा।
(C) देर से वयस्कता के चरणों में वित्तीय और भावनात्मक समर्थन।
(D) सामाजिक कौशल, पहचान और समूह मानदंडों का विकास।

24. निम्नलिखित में से कौन-सा मानदंड किसी व्यवहार को "अभिप्रेरित" के रूप में पहचानने में मदद करता है?
(A) व्यवहार दृढ़ है और किसी विशिष्ट लक्ष्य की ओर निर्देशित है।
(B) व्यवहार पूरी तरह से यादृच्छिक है और इसमें किसी स्पष्ट उद्देश्य का अभाव है।
(C) व्यवहार केवल एक बार होता है और फिर कभी नहीं दोहराया जाता है।
(D) व्यवहार स्वभाव से पूरी तरह से प्रतिवर्ती और अनैच्छिक है।

25. तनाव के अध्ययन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. तनाव को एक मांग वाली स्थिति के प्रति शारीरिक और मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है।
2. मुकाबला करने की रणनीतियाँ वे व्यवहार और विचार हैं जिनका उपयोग व्यक्ति तनाव के प्रबंधन के लिए करता है।
3. तनाव के प्रबंधन में केवल तनाव के स्रोतों को पूरी तरह से समाप्त करना शामिल है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) 1 और 2
(B) 2 और 3
(C) 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

26. संवेग के शैक्टर-सिंगर सिद्धांत को इस नाम से भी जाना जाता है:
(A) द्वि-कारक सिद्धांत।
(B) सक्रियण सिद्धांत।
(C) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत।
(D) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत।

27. मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम के आधार पर कौन-सी आवश्यकताएं हैं?
(A) सम्मान की आवश्यकताएं।
(B) सुरक्षा की आवश्यकताएं।
(C) आत्म-सिद्धि की आवश्यकताएं।
(D) शारीरिक आवश्यकताएं।

28. विकास की प्रकृति के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) विकास में वृद्धि और ह्रास दोनों शामिल हैं।
(B) विकास ऐतिहासिक संदर्भ से स्वतंत्र है।
(C) विकास एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।
(D) विकास बहुआयामी और बहुदिशीय है।

9. जीवन-काल विकास में "क्रांतिक अवधि" की परिभाषा के लिए कौन-सी विशेषता सबसे केंद्रीय है?
(A) वह अवस्था जहाँ व्यक्ति की शारीरिक वृद्धि सबसे तीव्र होती है।
(B) जीवन का वह चरण जो विकासात्मक परिवर्तनों के प्रति प्रतिरोध द्वारा लक्षित होता है।
(C) पर्यावरणीय प्रभावों के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता की एक विशिष्ट समय सीमा।
(D) वह अवधि जहाँ नैतिक विकास अंतिम और अपरिवर्तनीय हो जाता है।

10. लिंड्सले के सक्रियण सिद्धांत के अनुसार, संवेग की तीव्रता मुख्य रूप से किसका परिणाम है?
(A) केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के सक्रियण की मात्रा।
(B) विशिष्ट भावना पर लागू संज्ञानात्मक लेबल।
(C) सामाजिक संदर्भ जिसमें संवेगात्मक भावना उत्पन्न होती है।
(D) अंतर्निहित जैविक अंतर्नोद में सफल कमी।

11. निम्नलिखित में से किसे संवेग का शारीरिक सह-संबंधी माना जाएगा?
(A) किसी विशिष्ट स्थिति का संज्ञानात्मक मूल्यांकन।
(B) आंतरिक भावनाओं को प्रदर्शित करने के सामाजिक नियम।
(C) किसी उद्दीपक के पास जाने या उससे बचने का निर्णय।
(D) गैल्वेनिक त्वचा प्रतिक्रिया में परिवर्तन।

12. आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत सबसे प्रसिद्ध रूप से किस सिद्धांतकार से जुड़ा है?
(A) विलियम मैकडूगल
(B) अब्राहम मास्लो
(C) क्लार्क हल
(D) बी.एफ. स्किनर

13. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): परिवार समाजीकरण का एक प्राथमिक कारक है।
कारण (R): परिवार आमतौर पर वह पहला और सबसे स्थायी सामाजिक समूह होता है जिससे कोई व्यक्ति जुड़ता है, जो शुरुआती मूल्यों और व्यवहारों को आकार देता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

14. अंतर्नोद सिद्धांत और प्रोत्साहन सिद्धांत के बीच एक मुख्य अंतर यह है कि:
(A) अंतर्नोद सिद्धांत संज्ञानात्मक आवश्यकताओं पर केंद्रित है, जबकि प्रोत्साहन सिद्धांत जैविक आवश्यकताओं पर केंद्रित है।
(B) अंतर्नोद सिद्धांत केवल जानवरों पर लागू होता है, जबकि प्रोत्साहन सिद्धांत केवल मनुष्यों पर लागू होता है।
(C) अंतर्नोद सिद्धांत समस्थापन की उपेक्षा करता है, जबकि प्रोत्साहन सिद्धांत इस पर केंद्रित है।
(D) अंतर्नोद सिद्धांत आंतरिक अवस्थाओं पर बल देता है जबकि प्रोत्साहन सिद्धांत बाहरी उद्दीपकों पर बल देता है।

15. संवेग के संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांतों का मुख्य विचार क्या है?
(A) संवेगात्मक अनुभव किसी स्थिति के मूल्यांकन पर निर्भर करता है।
(B) संवेग विशेष रूप से हमारी शारीरिक अवस्था द्वारा निर्धारित होते हैं।
(C) सभी संवेगों को सुखदता के आयाम पर वर्गीकृत किया जाता है।
(D) संवेगात्मक अभिव्यक्तियाँ जन्मजात होती हैं और सभी संस्कृतियों में सार्वभौमिक होती हैं।

16. निम्नलिखित में से कौन-सा व्यवहार आंतरिक अभिप्रेरणा का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) विशेष रूप से उच्च ग्रेड प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करना।
(B) केवल आनंद के लिए पुस्तक पढ़ना।
(C) महत्वपूर्ण मात्रा में धन कमाने के लिए ओवरटाइम काम करना।
(D) माता-पिता की डांट से बचने के लिए अपना कमरा साफ करना।

17. "तनाव से निपटने की रणनीतियाँ" किस व्यापक श्रेणी के अंतर्गत आती हैं?
(A) तनाव के प्रति प्रतिक्रियाएं
(B) तनाव का प्रबंधन
(C) तनाव की विशेषताएं
(D) संवेगों का वर्गीकरण

18. संवेग के संदर्भ में, स्वायत्त तंत्रिका तंत्र का एक प्रमुख कार्य क्या है?
(A) यह हृदय गति और श्वसन जैसी अनैच्छिक शारीरिक क्रियाओं को नियंत्रित करता है।
(B) यह आंतरिक भावना के लिए विशिष्ट संज्ञानात्मक लेबल प्रदान करता है।
(C) यह संवेगात्मक प्रदर्शन से जुड़ी स्वैच्छिक मांसपेशियों की गति को नियंत्रित करता है।
(D) यह पिछले संवेगात्मक घटनाओं की दीर्घकालिक स्मृति के लिए जिम्मेदार है।

19. विकास के सिद्धांतों के अनुसार नैतिक विकास के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सबसे सटीक है?
(A) यह एक विकासात्मक प्रक्रिया है जो प्रारंभिक बचपन में

40. एक कर्मचारी बोनस प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करता है। इस परिदृश्य में बोनस किसका उदाहरण है?
(A) एक प्रोत्साहन
(B) एक अंतर्नोद
(C) एक मूलप्रवृत्ति
(D) एक शारीरिक आवश्यकता

41. मास्लो के पदानुक्रम की निम्नलिखित आवश्यकताओं को सबसे बुनियादी से उच्चतम स्तर तक बढ़ते क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. सम्मान की आवश्यकताएं
2. शारीरिक आवश्यकताएं
3. सुरक्षा की आवश्यकताएं
4. प्रेम और अपनेपन की आवश्यकताएं
5. आत्म-सिद्धि की आवश्यकताएं
(A) 2, 3, 4, 1, 5
(B) 2, 4, 3, 1, 5
(C) 1, 2, 3, 4, 5
(D) 5, 1, 4, 3, 2

42. तनाव और प्रतिबलक के बीच क्या संबंध है?
(A) ये दोनों समान अवधारणाएं हैं।
(B) प्रतिबलक मांगें हैं; तनाव उन पर होने वाली प्रतिक्रिया है।
(C) तनाव कारण है; प्रतिबलक उसका प्रभाव है।
(D) तनाव शारीरिक है; प्रतिबलक मनोवैज्ञानिक है।

43. निम्नलिखित में से कौन-सा लिंड्सले के संवेग के सक्रियण सिद्धांत का प्राथमिक केंद्र है?
(A) संवेगात्मक व्यवहार में बाहरी पुरस्कारों की भूमिका।
(B) संवेगात्मक अभिव्यक्ति को नियंत्रित करने वाले सांस्कृतिक नियम।
(C) नींद से लेकर उत्तेजना तक का सक्रियण सातत्य।
(D) संवेगात्मक समझ के विकासात्मक चरण।

44. कौन-सा कथन विकास के एक सिद्धांत को सटीक रूप से दर्शाता है?
(A) सभी व्यक्ति बिल्कुल एक ही दर से विकसित होते हैं।
(B) विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो परिपक्वता पर रुक जाती है।
(C) प्रारंभिक जीवन के अनुभवों का विकास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(D) विकास आनुवंशिकता और पर्यावरण का परिणाम है।

45. प्यास, भूख और गर्मी की आवश्यकता किसके उदाहरण हैं?
(A) द्वितीयक प्रेरक
(B) सामाजिक प्रेरक
(C) प्राथमिक या जैविक प्रेरक
(D) आत्म-सिद्धि प्रेरक

46. मानव व्यवहार के अध्ययन में "नैतिक विकास" की अवधारणा से तात्पर्य है:
(A) शारीरिक शक्ति और समन्वय का विकास।
(B) सही और गलत के प्रति व्यक्ति की समझ में परिवर्तन।
(C) भाषा और संचार कौशल का अर्जन।
(D) संवेगात्मक नियमन और नियंत्रण की प्रक्रिया।

47. समस्या-केंद्रित मुकाबला और संवेग-केंद्रित मुकाबला किसके दो प्रकार हैं?
(A) तनाव के प्रति प्रतिक्रियाएं।
(B) संवेग के शारीरिक सह-संबंधी।
(C) अभिप्रेरित व्यवहार के मानदंड।
(D) तनाव से निपटने की रणनीतियाँ।

48. शैक्टर-सिंगर सिद्धांत का एक मुख्य घटक यह है कि संवेगात्मक अनुभव के लिए आवश्यक है:
(A) शारीरिक उत्तेजना और संज्ञानात्मक लेबल दोनों।
(B) केवल एक शारीरिक प्रतिक्रिया।
(C) केवल एक संज्ञानात्मक व्याख्या।
(D) एक पूर्व-प्रोग्राम्ड, मूलप्रवृत्त्यात्मक प्रतिक्रिया।

49. निम्नलिखित में से कौन-सा अभिप्रेरित व्यवहार का मानदंड नहीं है?
(A) सक्रियण
(B) अपरिवर्तनीयता
(C) दिशा
(D) रखरखाव

50. समाजीकरण के एक कारक के रूप में संस्कृति मुख्य रूप से व्यक्ति को कैसे प्रभावित करती है?
(A) सामाजिक विश्वासों का व्यापक ढांचा प्रदान करके।
(B) व्यक्ति की आनुवंशिक संरचना को निर्धारित करके।
(C) तनाव के प्रति शारीरिक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करके।
(D) व्यक्ति की जन्मजात मूलप्रवृत्तियों और अंतर्नोद को निर्धारित करके।

51. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. अंतर्नोद
Q. प्रोत्साहन
R. क्रांतिक अवधि
S. समाजीकरण
सूची II: (विवरण)
1. बाहरी उद्दीपक जो व्यवहार को खींचता है
2. सामाजिक मानदंडों को प्राप्त करने की प्रक्रिया
3. तनाव की आंतरिक अवस्था जो व्यवहार को धकेलती है
4. कुछ विकासात्मक सीख के लिए इष्टतम समय
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2

29. एक व्यक्ति भय के संवेग को तभी महसूस करता है जब वह ध्यान देता है कि उसका हृदय तेजी से धड़क रहा है और वह तेजी से सांस ले रहा है। यह अनुक्रम किस प्रकार के पारंपरिक सिद्धांत की व्याख्या के साथ सबसे अधिक सुसंगत है, जिस पर बाद में द्वि-कारक और संज्ञानात्मक सिद्धांत आधारित हुए?
(A) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत
(B) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत
(C) जेम्स-लैंग जैसा प्रारंभिक शारीरिक सिद्धांत
(D) अभिप्रेरणा का प्रोत्साहन सिद्धांत

30. किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण और व्यवहार पर टेलीविजन शो, सोशल मीडिया और विज्ञापन के प्रभाव का अध्ययन समाजीकरण में ________ की भूमिका के तहत किया जाता है।
(A) परिवार
(B) स्कूल
(C) साथी समूह
(D) मीडिया

31. अभिप्रेरणा का कौन-सा सिद्धांत जन्मजात, अनसीखे व्यवहार प्रतिरूपों पर सबसे अधिक बल देता है?
(A) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(B) अंतर्नोद सिद्धांत
(C) प्रोत्साहन सिद्धांत
(D) आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत

32. तनाव की एक प्रमुख विशेषता यह है कि:
(A) यह हमेशा एक नकारात्मक और विनाशकारी अनुभव होता है।
(B) इसमें स्थिति से निपटने की क्षमता के प्रति व्यक्ति का बोध शामिल होता है।
(C) यह बिना किसी मनोविज्ञान के विशुद्ध रूप से एक शारीरिक घटना है।
(D) इसे किसी व्यक्ति के जीवन से पूरी तरह समाप्त किया जा सकता है।

33. निम्नलिखित में से कौन-सी संवेग की विशेषता नहीं है?
(A) व्यक्तिपरक भावना या अनुभव
(B) संज्ञानात्मक मूल्यांकन का पूर्ण अभाव
(C) शारीरिक उत्तेजना
(D) अभिव्यंजक व्यवहार

34. एक व्यक्ति जो अपनी पूर्ण क्षमता विकसित करने और स्वयं का सर्वोत्तम संस्करण बनने के लिए कार्य करता है, मास्लो के अनुसार, वह किस आवश्यकता को पूरा करने का प्रयास कर रहा है?
(A) आत्म-सिद्धि
(B) शारीरिक आवश्यकता
(C) सुरक्षा
(D) सम्मान

35. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): शैक्टर-सिंगर सिद्धांत के अनुसार, लागू किए गए संज्ञानात्मक लेबल के आधार पर शारीरिक उत्तेजना की एक ही अवस्था को अलग-अलग संवेगों के रूप में अनुभव किया जा सकता है।
कारण (R): यह सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि शारीरिक उत्तेजना गैर-विशिष्ट होती है और इसे एक विशिष्ट संवेग के रूप में पहचानने के लिए संज्ञानात्मक व्याख्या की आवश्यकता होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

36. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति ज्ञान, कौशल और प्रवृत्तियाँ प्राप्त करते हैं जो उन्हें समाज के प्रभावी सदस्यों के रूप में भाग लेने में सक्षम बनाती हैं, कहलाती है:
(A) अभिप्रेरणा
(B) समाजीकरण
(C) संवेग
(D) तनाव प्रबंधन

37. "समस्थापन" की अवधारणा अभिप्रेरणा के किस सिद्धांत के केंद्र में है?
(A) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(B) प्रोत्साहन सिद्धांत
(C) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत
(D) अंतर्नोद सिद्धांत

38. समाजीकरण के एक कारक के रूप में स्कूल की भूमिका का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प करता है?
(A) औपचारिक ज्ञान और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रसारित करना।
(B) शैशवावस्था में प्राथमिक भावनात्मक लगाव प्रदान करना।
(C) विज्ञापनों के माध्यम से उपभोक्ता व्यवहार को प्रभावित करना।
(D) वयस्कों की देखरेख के बिना पहचान निर्माण का अवसर देना।

39. संवेग का संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत, जो विशेष रूप से लाजरस से जुड़ा है, इस बात पर बल देता है कि:
(A) संवेग शारीरिक उत्तेजना का प्रत्यक्ष परिणाम है।
(B) हृदय गति में परिवर्तन के बिना संवेग असंभव है।
(C) व्यक्तिगत अर्थ संवेग का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।
(D) सभी संवेग मस्तिष्क के एक ही क्षेत्र द्वारा सक्रिय होते हैं।

63. निम्नलिखित में से अभिप्रेरणा सिद्धांत और उसकी मुख्य अवधारणा का कौन-सा मेल गलत है?
(A) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत - निश्चित क्रिया प्रतिरुप
(B) अंतर्नोद सिद्धांत - समस्थापन
(C) आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत - उत्तेजना
(D) प्रोत्साहन सिद्धांत - बाहरी उद्दीपक

64. जब कोई व्यक्ति तनावपूर्ण घटना से निपटने के लिए अपने विकल्पों और संसाधनों का मूल्यांकन करता है, तो वह किसमें संलग्न होता है?
(A) प्राथमिक मूल्यांकन।
(B) द्वितीयक मूल्यांकन।
(C) शारीरिक उत्तेजना।
(D) मूलप्रवृत्त्यात्मक व्यवहार।

65. समाजीकरण में मीडिया की भूमिका से तात्पर्य किसके प्रभाव से है?
(A) करीबी दोस्त और सहपाठी।
(B) टेलीविजन और जन मंच।
(C) शिक्षक और स्कूल पाठ्यक्रम।
(D) माता-पिता और भाई-बहन।

66. निम्नलिखित में से कौन-सा विकास में "क्रांतिक अवधि" का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) बत्तख के बच्चों का अंडे से निकलने के बाद लगाव बनाना।
(B) किशोरों का करियर पथ चुनना।
(C) वयस्कों का शादी करने का निर्णय लेना।
(D) एक बच्चे का साइकिल चलाना सीखना।

67. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अभिप्रेरणा एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करती है और उसे निर्देशित करती है।
कथन II: संवेग महसूस करने की एक व्यक्तिपरक अवस्था है जो अक्सर शारीरिक परिवर्तनों के साथ होती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

68. लिंड्सले के सक्रियण सिद्धांत के अनुसार, उत्तेजना का इष्टतम स्तर किसकी ओर ले जाता है?
(A) अधिकतम संवेगात्मक अशांति।
(B) गहरी नींद की अवस्था।
(C) संवेगात्मक प्रतिक्रिया का अभाव।
(D) कुशल कार्य प्रदर्शन।

69. निम्नलिखित में से कौन-सा तनाव की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) यह हमेशा एक ही घटना के कारण होता है।
(B) यह समय के साथ एक स्थिर स्थिति है।
(C) यह एक गतिशील अंतःक्रियात्मक प्रक्रिया है।
(D) इसके केवल नकारात्मक परिणाम होते हैं।

70. भोजन, पानी और नींद की आवश्यकता मास्लो के पदानुक्रम के किस स्तर पर होगी?
(A) स्तर 2: सुरक्षा
(B) स्तर 1: शारीरिक
(C) स्तर 3: अपनापन
(D) स्तर 4: सम्मान

71. एक किशोर की पहनावे की शैली और संगीत की पसंद पर "मंडली" या "मित्र समूह" का प्रभाव किसका उदाहरण है?
(A) परिवार द्वारा समाजीकरण।
(B) स्कूल द्वारा समाजीकरण।
(C) मीडिया द्वारा समाजीकरण।
(D) साथियों द्वारा समाजीकरण।

72. अभिप्रेरणा के प्रोत्साहन सिद्धांतों का केंद्रीय विचार यह है कि:
(A) व्यवहार पर्यावरणीय उद्दीपकों द्वारा खींचा जाता है।
(B) व्यवहार जैविक आवश्यकताओं द्वारा धकेला जाता है।
(C) व्यवहार निश्चित प्रतिरूपों का उत्पाद है।
(D) व्यवहार पूर्ण क्षमता प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित होता है।

73. "लड़ो या भागो" प्रतिक्रिया किसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) संवेग का संज्ञानात्मक मूल्यांकन।
(B) तनाव प्रबंधन के लिए एक रणनीति।
(C) तनाव के प्रति शारीरिक प्रतिक्रिया।
(D) नैतिक विकास का एक सिद्धांत।

74. संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत के अनुसार, एक ही घटना के प्रति दो लोगों की अलग-अलग संवेगात्मक प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं क्योंकि:
(A) उनके शारीरिक उत्तेजना स्तर अलग-अलग हैं।
(B) उनके तंत्रिका तंत्र की संरचना अलग है।
(C) एक व्यक्ति दूसरे की तुलना में अधिक अभिप्रेरित है।
(D) वे घटना की व्याख्या अलग-अलग तरीके से करते हैं।

75. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): बेरोजगारी की अवधि तनाव का एक महत्वपूर्ण स्रोत हो सकती है।
कारण (R): इसे व्यक्ति की वित्तीय सुरक्षा, आत्म-सम्मान और सामाजिक स्थिति के लिए खतरे के रूप में मूल्यांकित किया जा सकता है, जिससे निपटने के संसाधनों की मांग होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

(B) तनाव और मुकाबला
(C) संयोजकता और तीव्रता
(D) शारीरिक उत्तेजना और संज्ञानात्मक लेबल

100. स्कूल में किसी खेल के नियम सीखना किस कारक द्वारा प्रदान किए गए समाजीकरण का एक उदाहरण है?
(A) स्कूल
(B) परिवार
(C) साथी समूह
(D) मीडिया

101. निम्नलिखित में से कौन-सी तनाव की सबसे उपयुक्त परिभाषा है?
(A) कोई भी घटना जो जीवन में परिवर्तन लाती है।
(B) किसी भी मांग के प्रति होने वाली प्रतिक्रिया।
(C) शरीर क्रिया विज्ञान के बिना एक नकारात्मक अवस्था।
(D) पूर्ण विश्राम की अवस्था।

102. प्रेरक और संवेग के बीच मूलभूत अंतर क्या है?
(A) संवेग निर्देशित करते हैं; प्रेरक भावनाएं हैं।
(B) प्रेरक सीखे जाते हैं; संवेग जन्मजात होते हैं।
(C) प्रेरक निर्देशित करते हैं; संवेग भावनाएं हैं।
(D) संवेग संज्ञानात्मक होते हैं; प्रेरक जैविक होते हैं।

103. निम्नलिखित में से कौन-सा समाजीकरण के कारक के रूप में संस्कृति के प्रभाव का उदाहरण है?
(A) बच्चा अपनी मातृभाषा सीख रहा है।
(B) किशोर मित्र की शैली अपना रहा है।
(C) छात्र बीजगणित के नियम सीख रहा है।
(D) यह सीखना कि व्यक्तिवाद मूल्यवान है।

104. निम्नलिखित विकासात्मक अवधियों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. किशोरावस्था
2. शैशवावस्था
3. प्रारंभिक बाल्यकाल
4. मध्य बाल्यकाल
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 2, 3, 4, 1
(C) 1, 4, 3, 2
(D) 3, 2, 1, 4

105. मास्लो के अनुसार, रेगिस्तान में खोया हुआ व्यक्ति निम्नलिखित में से किस आवश्यकता से सबसे अधिक चिंतित होगा?
(A) एक रोमांटिक साथी की तलाश करना।
(B) पीने के लिए पानी खोजना।
(C) दूसरों का सम्मान प्राप्त करना।
(D) रचनात्मक क्षमता प्राप्त करना।

106. यह विचार कि "हमें अफसोस होता है क्योंकि हम रोते हैं, गुस्सा आता है क्योंकि हम प्रहार करते हैं, डर लगता है क्योंकि हम कांपते हैं" किस अवधारणा को दर्शाता है?
(A) संवेग में संज्ञान पहले आता है।
(B) उत्तेजना गैर-विशिष्ट है।
(C) संवेग विशुद्ध रूप से मूलप्रवृत्त्यात्मक है।
(D) संवेग में शरीर क्रिया विज्ञान पहले आता है।

107. निम्नलिखित में से कौन-सी तनाव प्रतिक्रियाओं की एक विशेषता है?
(A) वे शारीरिक और मनोवैज्ञानिक होती हैं।
(B) वे विशेष रूप से मनोवैज्ञानिक होती हैं।
(C) वे प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक समान होती हैं।
(D) वे हमेशा सचेत नियंत्रण में होती हैं।

108. पहचान, सम्मान और उपलब्धि की भावना की आवश्यकता मास्लो के पदानुक्रम के किस स्तर का हिस्सा है?
(A) सुरक्षा की आवश्यकताएं
(B) प्रेम/अपनेपन की आवश्यकताएं
(C) सम्मान की आवश्यकताएं
(D) आत्म-सिद्धि की आवश्यकताएं

109. संवेग और अभिप्रेरणा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. संवेग प्रेरकों के रूप में कार्य नहीं कर सकते।
2. प्रेरक हमेशा जैविक आवश्यकता को कम करने के उद्देश्य से होते हैं।
3. संवेग और अभिप्रेरणा दोनों व्यवहार को सक्रिय और निर्देशित कर सकते हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) 1 और 2
(C) 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

110. मनोविज्ञान में "नैतिक विकास" की अवधारणा मुख्य रूप से किससे संबंधित है?
(A) न्याय और निष्पक्षता के बारे में तर्क देना।
(B) सामाजिक शिष्टाचार का विकास।
(C) संवेगात्मक अभिव्यक्ति का विकास।
(D) शारीरिक कौशल का विकास।

111. कौन-सा सिद्धांत रोलर कोस्टर की सवारी जैसी उत्तेजना की तलाश करने वाले व्यवहारों की व्याख्या करता है?
(A) अंतर्नोद सिद्धांत
(B) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(C) आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत
(D) उत्तेजना सिद्धांत

112. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए।

(B) अभिप्रेरणा संवेग के प्रति एक प्रतिक्रिया है।
(C) संवेग प्रेरक के रूप में कार्य कर सकते हैं।
(D) संवेग संज्ञानात्मक है; अभिप्रेरणा जैविक है।

88. लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत मुख्य रूप से संवेग के _________ से संबंधित है।
(A) सामाजिक अभिव्यक्ति
(B) संज्ञानात्मक लेबल
(C) नैतिक निहितार्थ
(D) शारीरिक तीव्रता

89. निम्नलिखित में से कौन-सा सामाजिक प्रेरक का उदाहरण है?
(A) उपलब्धि की आवश्यकता।
(B) ऑक्सीजन की आवश्यकता।
(C) शरीर के तापमान की आवश्यकता।
(D) सोने की आवश्यकता।

90. यह अवधारणा कि विकास एक व्यवस्थित तरीके से होता है और पहले की संरचनाओं और क्षमताओं पर निर्मित होता है, किस सिद्धांत के रूप में जानी जाती है?
(A) यादृच्छिकता
(B) संचयीता
(C) प्रतिवर्तीता
(D) ठहराव

91. अभिप्रेरणा का कौन-सा सिद्धांत यह सबसे अच्छी तरह से समझाएगा कि कोई व्यक्ति भूखा न होने पर भी केवल इसलिए खा सकता है क्योंकि उसे एक स्वादिष्ट दिखने वाला केक दिखता है?
(A) अंतर्नोद सिद्धांत
(B) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(C) प्रोत्साहन सिद्धांत
(D) सक्रियण सिद्धांत

92. निम्नलिखित में से किसे संवेग का शारीरिक सह-संबंधी नहीं माना जाता है?
(A) हृदय गति में परिवर्तन
(B) श्वसन प्रतिरूप में परिवर्तन
(C) त्वचा की चालकता में परिवर्तन
(D) प्रदर्शन के लिए सांस्कृतिक नियम

93. माता-पिता, शिक्षकों और दोस्तों को देखकर सामाजिक मानदंडों और अपेक्षाओं को सीखने की प्रक्रिया किसके केंद्र में है?
(A) आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत।
(B) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत।
(C) समाजीकरण की प्रक्रिया।
(D) तनाव का प्रबंधन।

94. संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत के अनुसार, हमारी संवेगात्मक प्रतिक्रिया मुख्य रूप से हमारे _________ पर निर्भर करती है।
(A) शारीरिक उत्तेजना के स्तर
(B) स्थितिजन्य महत्व के आकलन
(C) जन्मजात, मूलप्रवृत्यात्मक प्रोग्रामिंग
(D) आवश्यकता पदानुक्रम में स्थिति

95. एक छात्रा आगामी परीक्षा को लेकर चिंतित महसूस करती है। वह एक विस्तृत अध्ययन समय सारणी बनाने और उस पर टिके रहने का निर्णय लेती है। यह किस प्रकार की मुकाबला रणनीति का उदाहरण है?
(A) संवेग-केंद्रित मुकाबला
(B) परिहार मुकाबला
(C) एक शारीरिक तनाव प्रतिक्रिया
(D) समस्या-केंद्रित मुकाबला

96. किस अभिप्रेरणा सिद्धांत की इस आधार पर आलोचना की गई है कि वह व्याख्यात्मक होने के बजाय वर्णनात्मक अधिक है, जो अक्सर व्यवहारों के कारणों की व्याख्या किए बिना केवल उन्हें लेबल करता है?
(A) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(B) अंतर्नोद सिद्धांत
(C) प्रोत्साहन सिद्धांत
(D) आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत

97. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): मीडिया समाजीकरण के एक शक्तिशाली कारक के रूप में कार्य कर सकता है।
कारण (R): मीडिया प्लेटफॉर्म व्यवहार के मॉडल प्रस्तुत करते हैं और सांस्कृतिक मूल्यों को संप्रेषित करते हैं, जिन्हें व्यक्तियों, विशेष रूप से बच्चों और किशोरों द्वारा अपनाया जा सकता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

98. अपने पर्यावरण में सक्षम, स्वायत्त और सुरक्षित महसूस करने की आवश्यकता मास्लो के पदानुक्रम के किस स्तर से संबंधित है?
(A) शारीरिक आवश्यकताएं
(B) प्रेम/अपनेपन की आवश्यकताएं
(C) सुरक्षा की आवश्यकताएं
(D) सम्मान की आवश्यकताएं

99. संवेग के द्वि-कारक सिद्धांत के अनुसार, वे दो कारक कौन-से हैं?
(A) मूलप्रवृत्ति और अंतर्नोद

76. तनाव प्रतिक्रिया के निम्नलिखित चरणों को एक तर्कसंगत अनुक्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. शारीरिक उत्तेजना (जैसे, हृदय गति में वृद्धि)
2. घटना का खतरे के रूप में मूल्यांकन
3. संभावित प्रतिबलक के साथ सामना
4. मुकाबला करने का व्यवहार शुरु होना

(A) 3, 2, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 3, 4, 2, 1

77. संवेगों के वर्गीकरण में अक्सर कौन-से आयाम शामिल होते हैं?
(A) सक्रियण और अंतर्नोद।
(B) संयोजकता और तीव्रता।
(C) मूलप्रवृत्ति और प्रोत्साहन।
(D) समाजीकरण और नैतिक विकास।

78. एक छात्र परीक्षा में नकल करने का निर्णय लेता है। इस निर्णय के पीछे के सही या गलत होने के तर्क का अध्ययन किसके अंतर्गत आता है?
(A) तनाव प्रबंधन।
(B) नैतिक विकास।
(C) संवेगात्मक वर्गीकरण।
(D) अंतर्नोद सिद्धांत।

79. निम्नलिखित में से कौन-सा विकास का सिद्धांत नहीं है?
(A) विकास संचयी होता है।
(B) विकास परिपक्वता का परिणाम है।
(C) विकास किसी भी चरण में प्रतिवर्ती होता है।
(D) विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ता है।

80. मास्लो के अनुसार, मित्रता, प्रेम और दूसरों के साथ जुड़ाव की भावना की इच्छा किस श्रेणी की आवश्यकताओं में आती है?
(A) शारीरिक आवश्यकताएं
(B) सुरक्षा की आवश्यकताएं
(C) सम्मान की आवश्यकताएं
(D) अपनेपन और प्रेम की आवश्यकताएं

81. अभिप्रेरित व्यवहार की एक परिभाषित विशेषता निम्नलिखित में से कौन-सी है?
(A) यह हमेशा अवलोकनीय होता है।
(B) यह लक्ष्य-निर्देशित होता है।
(C) यह हमेशा जैविक होता है।
(D) यह पर्यावरण से स्वतंत्र होता है।

82. शैक्टर-सिंगर प्रयोग, जिसमें प्रतिभागियों को एपिनेफ्रीन का इंजेक्शन दिया गया था, ने यह प्रमाण प्रदान किया कि:
(A) संज्ञानात्मक कारक उत्तेजना की व्याख्या करते हैं।
(B) अकेले उत्तेजना विशिष्ट संवेग उत्पन्न करती है।
(C) संवेग विशुद्ध रूप से मूलप्रवृत्ति का उत्पाद हैं।
(D) अनुभव पर तनाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

83. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (समाजीकरण का कारक)
P. परिवार
Q. साथी समूह
R. स्कूल
S. मीडिया

सूची II: (प्राथमिक प्रभाव)
1. प्रति-संस्कृति और समूह पहचान का संचरण
2. औपचारिक पाठ्यक्रम और सामाजिक नियमों को प्रदान करना
3. उपभोक्ता दृष्टिकोण और व्यापक सांस्कृतिक विचारों को आकार देना
4. प्राथमिक लगाव और बुनियादी मूल्यों की स्थापना

(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

84. एक महत्वपूर्ण प्रस्तुति से पहले खुद को शांत करने के लिए ध्यान करना किसका उदाहरण है?
(A) तनाव के प्रति एक प्रतिक्रिया।
(B) संवेग का एक शारीरिक सह-संबंधी।
(C) एक प्राथमिक प्रेरक।
(D) एक तनाव प्रबंधन तकनीक।

85. अभिप्रेरणा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्रोत्साहन सिद्धांत बाहरी उद्दीपकों के "खिंचाव" पर केंद्रित है।
2. अंतर्नोद सिद्धांत आंतरिक अवस्थाओं के "धक्के" पर केंद्रित है।
3. मूलप्रवृत्ति सिद्धांत यह सुझाव देता है कि सभी मानवीय व्यवहार सीखे हुए होते हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) 1 और 2
(B) 2 और 3
(C) 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

86. मनुष्यों में भाषा अर्जन के लिए "क्रांतिक अवधि" यह सुझाव देती है कि:
(A) भाषा किसी भी समय सीखी जा सकती है।
(B) प्रारंभिक जीवन में एक इष्टतम समय होता है।
(C) भाषा विकास पूरी तरह से आनुवंशिक है।
(D) नैतिक विकास भाषा पर निर्भर करता है।

87. अभिप्रेरणा और संवेग की अवधारणाओं के बीच संबंध का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से कौन करता है?
(A) वे पूरी तरह से स्वतंत्र हैं।

सूची I: (मनोवैज्ञानिक)
P. अब्राहम मास्लो
Q. स्टेनली शैक्टर
R. रिचर्ड लाजरस
S. क्लार्क हल
सूची II: (संबद्ध सिद्धांत)
1. संवेग का संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत
2. अंतर्नोद सिद्धांत
3. आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत
4. संवेग का द्वि-कारक सिद्धांत
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

113. एक बच्चा जिसे साझा करने के लिए सराहा जाता है, उसके भविष्य में साझा करने की अधिक संभावना होती है। यह समाजीकरण के किस कारक के माध्यम से सीखने का एक उदाहरण है?
(A) संस्कृति
(B) मीडिया
(C) परिवार
(D) स्कूल

114. संवेग का सक्रियण-संश्लेषण मॉडल यह सुझाव देगा कि ऊब और खुशी के बीच का अंतर मुख्य रूप से है:
(A) संज्ञानात्मक लेबल।
(B) सांस्कृतिक संदर्भ।
(C) नैतिक निर्णय।
(D) तंत्रिका तंत्र की उत्तेजना।

115. निम्नलिखित में से कौन-सा विकास का सिद्धांत नहीं है?
(A) विकास बहुदिशीय होता है।
(B) विकास लचीला होता है।
(C) विकास गैर-संदर्भगत होता है।
(D) विकास एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।

116. भावनात्मक समर्थन प्राप्त करने के लिए किसी मित्र से समस्या के बारे में बात करना किसका उदाहरण है?
(A) समस्या-केंद्रित मुकाबला
(B) संवेग-केंद्रित मुकाबला
(C) एक शारीरिक प्रतिक्रिया
(D) एक प्राथमिक अंतर्नोद

117. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): अंतर्नोद सिद्धांत उत्तेजना की तलाश करने वाले व्यवहारों की तुलना में आंतरिक तनाव को कम करने के उद्देश्य से किए गए व्यवहारों की व्याख्या करने में बेहतर है।
कारण (R): अंतर्नोद सिद्धांत का मूल सिद्धांत समस्थापन है, जो एक स्थिर आंतरिक अवस्था बनाए रखने की प्रवृत्ति है, और यह उत्तेजना चाहने वाले व्यवहारों की व्याख्या नहीं करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

118. कौन-सा कथन किशोरावस्था के दौरान समाजीकरण में साथियों की भूमिका को सबसे अच्छी तरह दर्शाता है?
(A) साथी सुरक्षा के मामले में परिवार की जगह ले लेते हैं।
(B) साथियों का बहुत कम या कोई प्रभाव नहीं होता है।
(C) साथियों का प्रभाव शिक्षा तक सीमित है।
(D) साथी पहचान निर्माण के लिए संदर्भ प्रदान करते हैं।

119. एक व्यक्ति सांप देखता है। संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत के अनुसार, भय का संवेग तब उत्पन्न होता है जब:
(A) सांप को खतरे के रूप में व्याख्यायित किया जाता है।
(B) हृदय जोर से धड़कने लगता है।
(C) धड़कते दिल को "भय" का लेबल दिया जाता है।
(D) एक जन्मजात "भय" मूलप्रवृत्ति सक्रिय होती है।

120. जब कोई व्यक्ति किसी क्लब या टीम में शामिल होता है, तो किस प्रकार के प्रेरक के संतुष्ट होने की सबसे अधिक संभावना होती है?
(A) एक शारीरिक प्रेरक
(B) एक सामाजिक प्रेरक
(C) एक मूलप्रवृत्यात्मक प्रेरक
(D) एक अंतर्नोद-कमी प्रेरक

121. विकास में "क्रांतिक अवधियों" को यह नाम दिया गया है क्योंकि:
(A) वे गहन संकट की अवधि हैं।
(B) अनुभव की अनुपस्थिति कमी का कारण बनती है।
(C) वे विकास के लिए एकमात्र समय हैं।
(D) विकास की आलोचनात्मक समीक्षा की जाती है।

122. निम्नलिखित में से कौन-सा तनाव प्रबंधन का एक मुख्य घटक है?
(A) प्रभावी मुकाबला रणनीतियाँ विकसित करना।
(B) प्रतिबलकों की संख्या बढ़ाना।
(C) पूरी तरह से शारीरिक प्रतिक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) सभी सामाजिक अंतःक्रियाओं से बचना।

123. अभिप्रेरणा के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) अभिप्रेरित व्यवहार अक्सर दृढ़ होता है।
(B) अभिप्रेरणा में जैविक कारक शामिल होते हैं।
(C) सभी अभिप्रेरित व्यवहार जन्मजात होते हैं।
(D) अभिप्रेरणा व्यवहार को निर्देशित करने में मदद करती है।

174. ज्ञान प्रदान करने और कक्षा के नियमों को लागू करने में शिक्षक का प्रभाव किसके माध्यम से समाजीकरण है?
(A) परिवार।
(B) साथी समूह।
(C) मीडिया।
(D) स्कूल।

175. कौन-सा कथन अंतर्नोद सिद्धांत के मूल सिद्धांत का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(A) "मैं खा रहा हूँ क्योंकि मुझे भूख लगी है।"
(B) "मैं जिज्ञासावश खोजबीन कर रहा हूँ।"
(C) "मैं उच्च श्रेणी के लिए पढ़ रहा हूँ।"
(D) "मैं मदद कर रहा हूँ क्योंकि यह सही है।"

176. निम्नलिखित में से कौन-सा संवेग की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) यह हमेशा लंबे समय तक चलता है।
(B) इसमें एक व्यक्तिपरक भावना शामिल होती है।
(C) यह संज्ञान से स्वतंत्र है।
(D) कोई शारीरिक परिवर्तन नहीं होता है।

177. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (जीवन-काल अवधारणा)
P. समाजीकरण
Q. नैतिक विकास
R. क्रांतिक अवधि
S. विकासात्मक सिद्धांत
सूची II: (उदाहरण/परिभाषा)
1. भाषा अर्जन के लिए इष्टतम समय
2. विकास संचयी और व्यवस्थित होता है
3. अपनी संस्कृति के मानदंडों और मूल्यों को सीखना
4. सही और गलत के बारे में तर्क में परिवर्तन
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

178. एक व्यक्ति जो अपनी नौकरी खो देता है और फिर नई नौकरी खोजने की योजना विकसित करता है, वह किस रणनीति का उपयोग कर रहा है?
(A) संवेग-केंद्रित
(B) समस्या-केंद्रित
(C) परिहार
(D) शारीरिक

179. हवा, भोजन और पानी की आवश्यकता को माना जाता है:
(A) सामाजिक प्रेरक
(B) द्वितीयक प्रेरक
(C) जैविक प्रेरक
(D) मनोवैज्ञानिक प्रेरक

180. लॉटरी जीतने से प्रभावित विकास इस सिद्धांत को दर्शाता है कि विकास:
(A) लचीला है।
(B) आजीवन है।
(C) बहुदिशीय है।
(D) संदर्भगत है।

181. शैक्टर-सिंगर सिद्धांत के अनुसार, यदि आप शारीरिक रूप से उत्तेजित हैं और कारण के बारे में अनिश्चित हैं, तो आप:
(A) किसी संवेग का अनुभव नहीं करेंगे।
(B) स्वतः ही नकारात्मक महसूस करेंगे।
(C) संवेग को लेबल करने के लिए सुराग खोजेंगे।
(D) समस्थापन की ओर लौटेंगे।

182. व्यवहार का एक निश्चित, अनसीखा प्रतिरूप जो किसी प्रजाति की विशेषता है, कहलाता है:
(A) एक अंतर्नोद।
(B) एक मूलप्रवृत्ति।
(C) एक प्रोत्साहन।
(D) एक प्रेरक।

183. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): संवेग के अनुभव में तंत्रिका तंत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है।
कारण (R): स्वायत्त तंत्रिका तंत्र शारीरिक उत्तेजना को नियंत्रित करता है, जबकि मस्तिष्क, विशेष रूप से एमिग्डाला और कॉर्टेक्स जैसे क्षेत्र, संवेगात्मक उद्दीपकों के प्रसंस्करण और व्याख्या में शामिल होते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

184. समाजीकरण के कारक के रूप में मीडिया की भूमिका इस मायने में अद्वितीय है कि:
(A) यह केवल वयस्कों को प्रभावित करता है।
(B) यह हमेशा एक सकारात्मक प्रभाव होता है।
(C) इसका साथियों की तुलना में कम प्रभाव पड़ता है।
(D) यह जन प्रसारण की अनुमति देता है।

185. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:
1. मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
2. अंतर्नोद सिद्धांत
3. प्रोत्साहन सिद्धांत
4. आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत
इनमें से कौन-से अभिप्रेरणा के सिद्धांत हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) 1, 2, 3 और 4

136. जीवन-काल विकास का वह सिद्धांत जो कहता है कि "विकास में वृद्धि और ह्रास दोनों शामिल हैं" क्या कहलाता है?
(A) लचीलापन
(B) बहुदिशीयता
(C) आजीवन सीखना
(D) संदर्भवाद

137. कौन-सी मुकाबला रणनीति तनावपूर्ण स्थिति को स्वयं बदलने की कोशिश करने से संबंधित है?
(A) संवेग-केंद्रित मुकाबला
(B) समस्या-केंद्रित मुकाबला
(C) परिहार मुकाबला
(D) रक्षात्मक मुकाबला

138. निम्नलिखित में से कौन-सा लिंड्सले के संवेग के सक्रियण सिद्धांत का प्राथमिक केंद्र है?
(A) संवेगात्मक व्यवहार में बाहरी पुरस्कारों की भूमिका।
(B) संवेगात्मक अभिव्यक्ति को नियंत्रित करने वाले सांस्कृतिक नियम।
(C) नींद से लेकर उत्तेजना तक का सक्रियण सातत्य।
(D) संवेगात्मक समझ के विकासात्मक चरण।

139. मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत की एक मुख्य धारणा यह है कि:
(A) सभी आवश्यकताओं का महत्व समान है।
(B) आत्म-सिद्धि प्रथम स्थान पर है।
(C) उच्च आवश्यकताएं निम्न आवश्यकताओं के बाद आती हैं।
(D) सामाजिक आवश्यकताएं कम महत्वपूर्ण हैं।

140. नैतिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो किससे भारी रुप से प्रभावित होती है?
(A) आहार और व्यायाम।
(B) जन्मजात स्वभाव।
(C) शारीरिक प्रतिक्रिया।
(D) संज्ञानात्मक क्षमताएं।

141. एक व्यक्ति जो खुशखबरी मिलने के बाद खुशी महसूस करता है, व्यक्तिपरक भावना, शारीरिक परिवर्तन और मुस्कान का अनुभव करता है। यह किसका चित्रण करता है?
(A) वर्गीकरण
(B) प्रबंधन
(C) विशेषताएं
(D) पदानुक्रम

142. एक किशोर जो अपने मित्र समूह के ड्रेस कोड के अनुरुप कपड़े पहनता है, वह समाजीकरण के किस कारक का उदाहरण है?
(A) स्कूल
(B) साथी समूह
(C) परिवार
(D) मीडिया

143. अभिप्रेरणा के प्रारंभिक मूलप्रवृत्ति सिद्धांतों की एक प्रमुख आलोचना निम्नलिखित में से कौन-सी है?
(A) सीखने पर बहुत अधिक बल।
(B) जैविक कारकों की उपेक्षा।
(C) केवल मनुष्यों पर लागू।
(D) चक्राकार तर्क पर निर्भर।

144. संवेग के शैक्टर-सिंगर सिद्धांत के चरणों को सही अनुक्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. उत्तेजना पर संज्ञानात्मक लेबल लगाया जाता है।
2. एक संवेगात्मक भावना का अनुभव होता है।
3. एक उद्दीपक घटना घटित होती है।
4. शारीरिक उत्तेजना उत्पन्न होती है।
(A) 3, 1, 4, 2
(B) 3, 4, 1, 2
(C) 1, 3, 4, 2
(D) 4, 1, 3, 2

145. "यूस्ट्रेस" एक शब्द है जिसका उपयोग कभी-कभी किसके वर्णन के लिए किया जाता है?
(A) लाभकारी या प्रेरक तनाव।
(B) नकारात्मक दुर्बल करने वाला तनाव।
(C) तनाव का पूर्ण अभाव।
(D) पुराने दीर्घकालिक प्रतिबलक।

146. "प्रेरक" का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) एक विशिष्ट भावना अवस्था।
(B) एक आवश्यकता जो व्यवहार को निर्देशित करती है।
(C) एक शारीरिक प्रतिक्रिया।
(D) एक विकासात्मक चरण।

147. एक बच्चा यह सीख रहा है कि रोने से उसे देखभाल करने वाले का ध्यान मिलता है, यह किसका प्रारंभिक रुप है?
(A) नैतिक विकास।
(B) तनाव प्रबंधन।
(C) पारिवारिक समाजीकरण।
(D) आत्म-सिद्धि।

148. लोग तनाव के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, उसका मुकाबला कैसे करते हैं और उसका प्रबंधन कैसे करते हैं, इसके अध्ययन का तात्पर्य है कि तनाव:
(A) एक स्थिर विशेषता है।
(B) एक जैविक प्रतिवर्त है।
(C) कल्याण के लिए अप्रासंगिक है।
(D) एक प्रबंधनीय प्रक्रिया है।

149. परिवार, स्कूल और संस्कृति द्वारा आकार दिया गया मानव विकास किस सिद्धांत को दर्शाता है?
(A) लचीलापन

225. "विकास आजीवन होता है" एक सिद्धांत है जिसका अर्थ है:
(A) परिवर्तन गर्भाधान से मृत्यु तक होते हैं।
(B) किसोरावस्था के बाद कोई परिवर्तन नहीं होता।
(C) दर पूरे समय स्थिर रहती है।
(D) बचपन सब कुछ निर्धारित करता है।

226. शैक्टर-सिंगर सिद्धांत के अनुसार, यदि आपको एड्रेनालिन का इंजेक्शन दिया जाता है और एक प्रफुल्लित व्यक्ति के साथ रखा जाता है, तो आप:
(A) गुस्सा महसूस करेंगे।
(B) खुश या प्रफुल्लित महसूस करेंगे।
(C) दुखी महसूस करेंगे।
(D) कोई संवेग महसूस नहीं करेंगे।

227. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा बच्चा अपने समाज की अपेक्षाओं को सीखता है, वह है:
(A) अभिप्रेरणा।
(B) संवेगात्मक नियमन।
(C) समाजीकरण।
(D) तनाव मूल्यांकन।

228. अभिप्रेरणा का कौन-सा सिद्धांत सबसे अच्छी तरह से समझाता है कि एक छात्र शिक्षक से प्रशंसा प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत क्यों करता है?
(A) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(B) अंतर्नोद सिद्धांत
(C) प्रोत्साहन सिद्धांत
(D) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत

229. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: तनाव हमेशा नकारात्मक घटनाओं के कारण होता है।
कथन II: एक सकारात्मक प्रतिबलक के प्रति शरीर की शारीरिक प्रतिक्रिया एक नकारात्मक प्रतिबलक के प्रति उसकी प्रतिक्रिया के समान हो सकती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

230. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सिद्धांत)
P. मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
Q. अंतर्नोद सिद्धांत
R. प्रोत्साहन सिद्धांत
S. आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत
सूची II: (मुख्य विचार)
1. व्यवहार बाहरी लक्ष्यों द्वारा खींचा जाता है।
2. व्यवहार जन्मजात, स्थिर प्रतिरुपों द्वारा संचालित होता है।
3. उच्च-स्तरीय आवश्यकताओं से पहले निम्न-स्तरीय आवश्यकताओं को पूरा किया जाना चाहिए।
4. व्यवहार आंतरिक तनाव को कम करने की आवश्यकता से धकेला जाता है।
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-2, R-3, S-1

231. अनुभव के जवाब में मस्तिष्क की खुद को बदलने और पुनर्गठित करने की क्षमता को किस नाम से जाना जाता है?
(A) समस्थापन
(B) क्रांतिक अवधि
(C) लचीलापन
(D) समाजीकरण

232. निष्पक्षता के प्रति बच्चे की समझ, जो शुरु में पुरस्कारों पर और बाद में न्याय के सिद्धांतों पर आधारित होती है, किसका उदाहरण है?
(A) तनाव प्रबंधन।
(B) संवेगात्मक वर्गीकरण।
(C) अंतर्नोद में कमी।
(D) नैतिक विकास।

233. अनुकम्पी और परानुकम्पी तंत्रिका तंत्र किसके भाग हैं?
(A) कायिक तंत्रिका तंत्र।
(B) स्वायत्त तंत्रिका तंत्र।
(C) केंद्रीय तंत्रिका तंत्र।
(D) संवेदी तंत्रिका तंत्र।

234. निम्नलिखित में से कौन-सा सामाजिक प्रेरक का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) अपनेपन की आवश्यकता।
(B) आराम की आवश्यकता।
(C) पानी की आवश्यकता।
(D) दर्द से बचने की आवश्यकता।

235. अभिप्रेरणा के अध्ययन में किसका विश्लेषण शामिल है?
(A) संवेगों का वर्गीकरण।
(B) मुकाबला करने की रणनीतियाँ।
(C) प्रेरकों की प्रकृति और प्रकार।
(D) विकास के सिद्धांत।

236. एक व्यक्ति जो अपनी चाबियाँ खो देता है और उन्हें ढूंढने का तीव्र प्रयास करता है, वह किस मानदंड को प्रदर्शित कर रहा है?
(A) केवल समस्थापन
(B) केवल आत्म-सिद्धि
(C) संवेगात्मक मूल्यांकन
(D) सक्रियण और दृढ़ता

(A) मुकाबला रणनीतियाँ।
(B) शारीरिक प्रतिक्रियाएं।
(C) विकास के सिद्धांत।
(D) व्यवहार के मानदंड।

162. लिंड्सले के सक्रियण सिद्धांत का मुख्य विचार यह है कि संवेग किससे जुड़ा है?
(A) केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की उत्तेजना।
(B) विशिष्ट संवेग न्यूरॉन्स।
(C) संज्ञानात्मक लेबलिंग प्रक्रिया।
(D) आवश्यकताओं की संतुष्टि।

163. बच्चों को एक संस्कृति में मुखरता और दूसरी संस्कृति में सहयोग सिखाया जाना किसका प्रभाव प्रदर्शित करता है?
(A) साथियों
(B) मीडिया
(C) संस्कृति
(D) परिवार

164. मास्लो के पदानुक्रम में, सुरक्षा, स्थिरता और भय से मुक्ति की आवश्यकताओं को किस रूप में जाना जाता है?
(A) शारीरिक आवश्यकताएं
(B) प्रेम और अपनेपन की आवश्यकताएं
(C) सम्मान की आवश्यकताएं
(D) सुरक्षा की आवश्यकताएं

165. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): किशोरावस्था के दौरान साथी समाजीकरण के एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण कारक होते हैं।
कारण (R): किशोरावस्था के दौरान, व्यक्ति अक्सर अपने परिवार से अलग एक पहचान बनाते हैं, और साथी समूह नए मानदंडों, मूल्यों और सामाजिक तुलना का स्रोत प्रदान करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

166. कौन-सा सिद्धांत ध्यान देने योग्य शारीरिक उत्तेजना के बिना होने वाले अपराधबोध जैसे विशिष्ट संवेग की व्याख्या करने में संघर्ष करेगा?
(A) शैक्टर-सिंगर सिद्धांत
(B) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत
(C) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत
(D) अंतर्नोद सिद्धांत

167. एक व्यक्ति जो तनाव महसूस कर रहा है वह पसीना बहाने के लिए दौड़ने जाने का विकल्प चुन सकता है। यह है:
(A) समस्या-केंद्रित मुकाबला
(B) मूल्यांकन-केंद्रित मुकाबला
(C) मूलप्रवृत्यात्मक मुकाबला
(D) संवेग-केंद्रित मुकाबला

168. निम्नलिखित में से कौन-सा अभिप्रेरित व्यवहार की पहचान करने के लिए उपयोग किया जाने वाला मानदंड नहीं है?
(A) सार्वभौमिकता
(B) सक्रियण
(C) दृढ़ता
(D) तीव्रता

169. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अंतर्नोद सिद्धांत प्रस्तावित करता है कि व्यवहार बाहरी पुरस्कार प्राप्त करने की इच्छा से अभिप्रेरित होता है।
कथन II: प्रोत्साहन सिद्धांत प्रस्तावित करता है कि व्यवहार आंतरिक तनाव को कम करने की इच्छा से अभिप्रेरित होता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

170. यह समझना कि नैतिक सिद्धांत सामाजिक कानूनों के साथ संघर्ष कर सकते हैं, किसकी विशेषता है?
(A) संवेगात्मक विकास।
(B) उन्नत नैतिक विकास।
(C) तनाव प्रतिक्रिया।
(D) अंतर्नोद में कमी।

171. कौन-सा अभिप्रेरणा सिद्धांत आवश्यकताओं के पिरामिड के रूप में संरचित है?
(A) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(B) अंतर्नोद सिद्धांत
(C) प्रोत्साहन सिद्धांत
(D) आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत

172. एक तनावपूर्ण स्थिति और उससे निपटने की अपनी क्षमता का मूल्यांकन करने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) सक्रियण
(B) मूल्यांकन
(C) समस्थापन
(D) समाजीकरण

173. शैक्टर-सिंगर, संज्ञानात्मक-मूल्यांकन और लिंड्सले के सक्रियण सिद्धांत सभी क्या समझाने का प्रयास करते हैं?
(A) प्रेरकों की प्रकृति और प्रकार।
(B) मुकाबला करने की रणनीतियाँ।
(C) संवेगात्मक अवस्थाओं की प्रक्रिया।
(D) विकास के सिद्धांत।

(A) केवल बहुत निम्न स्तर पर
(B) केवल बहुत उच्च स्तर पर
(C) निम्न और उच्च दोनों स्तरों पर
(D) मध्यम स्तर पर

200. अन्य लोगों के साथ रहने की आवश्यकता को किसकी आवश्यकता कहा जाता है?
(A) उपलब्धि।
(B) संबद्धता।
(C) शक्ति।
(D) आत्म-सिद्धि।

201. निम्नलिखित में से कौन-सा विकास के "प्रकृति" पहलू का उदाहरण है?
(A) पालन-पोषण की शैली का प्रभाव।
(B) आनुवंशिक प्रवृत्ति।
(C) शिक्षा का प्रभाव।
(D) मीडिया प्रदर्शन का प्रभाव।

202. निम्नलिखित में से किसे आमतौर पर संवेग के प्रमुख सिद्धांत के रूप में मान्यता नहीं दी गई है?
(A) कैनन-बार्ड सिद्धांत
(B) शैक्टर-सिंगर सिद्धांत
(C) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत
(D) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत

203. वजन कम करने की कोशिश करने वाला व्यक्ति जंक फूड खरीदने से बचता है। इस संदर्भ में जंक फूड किसका कार्य करता है?
(A) अंतर्नोद
(B) मूलप्रवृत्ति
(C) प्रोत्साहन
(D) शारीरिक आवश्यकता

204. निम्नलिखित में से कौन-सा तनाव के प्रति व्यवहारात्मक प्रतिक्रिया है?
(A) कोर्टिसोल के स्तर में वृद्धि
(B) चिंतित महसूस करना
(C) रक्तचाप में वृद्धि
(D) नींद के प्रतिरूप में परिवर्तन

205. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (अभिप्रेरणात्मक अवधारणा)
P. मूलप्रवृत्ति
Q. अंतर्नोद
R. प्रोत्साहन
S. उपलब्धि की आवश्यकता
सूची II: (उदाहरण)
1. अच्छे प्रदर्शन के लिए नकद बोनस
2. मकड़ी का जाला बुनना
3. उत्कृष्टता प्राप्त करने और उच्च मानकों को पूरा करने की इच्छा
4. भूख या प्यास की अवस्था
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

206. नैतिक विकास की अवधारणा का तात्पर्य है कि व्यक्ति की सही और गलत की समझ:
(A) जन्म के समय स्थिर होती है।
(B) बदलती है और जटिल हो जाती है।
(C) विशेष रूप से परिवार से आती है।
(D) संज्ञान से असंबंधित है।

207. कौन-सा कथन जीवन-काल विकास के एक मुख्य सिद्धांत को सटीक रूप से वर्णित करता है?
(A) विकास केवल वृद्धि है।
(B) एक आयामी प्रक्रिया।
(C) प्रारंभिक वयस्कता में समाप्त हो जाता है।
(D) विकास लचीला है।

208. तनाव के प्राथमिक और द्वितीयक मूल्यांकन के बीच अंतर यह है कि:
(A) प्राथमिक स्थिति का आकलन करता है; द्वितीयक संसाधनों का आकलन करता है।
(B) द्वितीयक स्थिति का आकलन करता है; प्राथमिक संसाधनों का आकलन करता है।
(C) प्राथमिक शारीरिक है; द्वितीयक मनोवैज्ञानिक है।
(D) प्राथमिक बाद में होता है; द्वितीयक पहले होता है।

209. उपलब्धि के लिए माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाला व्यक्ति संभवतः किस स्तर की आवश्यकताओं से अभिप्रेरित है?
(A) शारीरिक और सुरक्षा
(B) अपनापन
(C) सम्मान और आत्म-सिद्धि
(D) केवल सुरक्षा

210. कौन-सा सिद्धांत स्पष्ट रूप से बताता है कि संवेग शारीरिक उत्तेजना और एक संज्ञानात्मक लेबल का उत्पाद है?
(A) शैक्टर-सिंगर सिद्धांत
(B) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत
(C) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत
(D) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत

211. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रेरक का उदाहरण है?
(A) खुशी की भावना
(B) एक तेज धड़कता दिल
(C) त्यौरी चढ़ाना
(D) सफलता की इच्छा

212. निम्नलिखित में से कौन-सा तनाव की विशेषता नहीं है?

(D) केवल 1 और 4

186. निम्नलिखित में से कौन-सा उत्तेजना के शारीरिक सह-संबंधी का उदाहरण है?
(A) एक विशिष्ट घटना का होना।
(B) घटनाओं के मूल्यांकन की प्रक्रिया।
(C) केवल शारीरिक उत्तेजना।
(D) एक चिंतित व्यक्तित्व विशेषता।

187. जीवन-काल विकास के संदर्भ में, "लचीलापन" इस विचार को संदर्भित करता है कि:
(A) विकास जल्दी रुक जाता है।
(B) लक्षण हमेशा के लिए स्थिर होते हैं।
(C) क्षमताओं को संशोधित किया जा सकता है।
(D) सभी के लिए मार्ग सार्वभौमिक हैं।

188. निम्नलिखित में से कौन-सा द्वितीयक या सीखे हुए प्रेरक का उदाहरण है?
(A) भोजन की इच्छा।
(B) तापमान बनाए रखना।
(C) सोने की इच्छा।
(D) धन की इच्छा।

189. संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांतों के अनुसार, संवेगात्मक प्रतिक्रिया में पहला कदम क्या है?
(A) शारीरिक उत्तेजना
(B) एक अभिव्यंजक क्रिया
(C) एक संज्ञानात्मक मूल्यांकन
(D) संवेग को नाम देना

190. चोरी न करने का छात्र का निर्णय क्योंकि वह मानता है कि यह गलत है, जोखिम की परवाह किए बिना, उसके _________ को दर्शाता है।
(A) नैतिक विकास।
(B) उत्तेजना के स्तर।
(C) साथियों द्वारा समाजीकरण।
(D) तनाव से मुकाबला।

191. अभिप्रेरणा का कौन-सा सिद्धांत तनाव की एक आंतरिक अवस्था पर बल देता है जिसे कम करने के लिए जीव अभिप्रेरित होता है?
(A) प्रोत्साहन सिद्धांत
(B) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(C) सक्रियण सिद्धांत
(D) अंतर्नोद सिद्धांत

192. निम्नलिखित में से कौन-सा उत्तेजना के शारीरिक सह-संबंधी का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) मुस्कुराना
(B) बढ़ी हुई हृदय गति
(C) यह कहना कि "मैं उत्साहित हूँ!"
(D) उत्साह का कारण

193. यह अवधारणा कि विकास शरीर के केंद्र से बाहर की ओर होता है, किस नाम से जानी जाती है?
(A) शीर्ष-पुच्छीय सिद्धांत।
(B) समीप-दूराभिमुख सिद्धांत।
(C) लचीलेपन का सिद्धांत।
(D) संदर्भवाद का सिद्धांत।

194. परीक्षा परिणामों की प्रतीक्षा कर रहा व्यक्ति अपने धड़कते दिल को "चिंता" के रूप में लेबल करता है क्योंकि:
(A) संदर्भ चिंता का सुझाव देता है।
(B) प्रतिक्रिया जन्मजात है।
(C) उत्तेजना चिंता के लिए विशिष्ट है।
(D) सभी उच्च अवस्थाएं चिंता हैं।

195. गहरी सांस लेने के व्यायाम और प्रगतिशील मांसपेशियों का विश्राम किसके लिए उपयोग की जाने वाली तकनीकें हैं?
(A) अभिप्रेरणा बढ़ाने के लिए।
(B) संवेगों के वर्गीकरण के लिए।
(C) तनाव के प्रबंधन के लिए।
(D) नैतिक विकास को बढ़ाने के लिए।

196. समाजीकरण की प्रक्रिया है:
(A) 5 वर्ष की आयु तक पूर्ण हो जाती है।
(B) केवल पश्चिमी संस्कृतियों में।
(C) परिवार से स्वतंत्र।
(D) एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया।

197. निम्नलिखित में से कौन-सा अभिप्रेरणा सिद्धांत और उसकी केंद्रीय अवधारणा का सही मेल है?
(A) अंतर्नोद सिद्धांत — आत्म-सिद्धि
(B) प्रोत्साहन सिद्धांत — समस्थापन
(C) आवश्यकता-पदानुक्रम — प्रबलता
(D) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत — सीखे हुए व्यवहार

198. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): परिवार, साथी, स्कूल, संस्कृति और मीडिया सभी को समाजीकरण का कारक माना जाता है।
कारण (R): इनमें से प्रत्येक इकाई एक ऐसा संदर्भ प्रदान करती है जिसमें व्यक्ति अपने समाज के मानदंडों, मूल्यों और व्यवहारों को सीखते और आत्मसात करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

199. लिंड्सले के सक्रियण सिद्धांत के अनुसार, एक जटिल कार्य पर प्रदर्शन उत्तेजना के किस स्तर पर सबसे खराब होगा?

(B) बहुआयामीता
(C) संदर्भवाद
(D) आजीवन विकास

150. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): शैक्टर-सिंगर सिद्धांत और संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत दोनों को संवेग के संज्ञानात्मक सिद्धांत माना जाता है।
कारण (R): दोनों सिद्धांत अनुभव किए जाने वाले विशिष्ट संवेग को निर्धारित करने में मानसिक प्रक्रियाओं (लेबलिंग या मूल्यांकन) की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल देते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

151. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (शब्द)
P. समस्थापन
Q. आत्म-सिद्धि
R. मूल्यांकन
S. समाजीकरण
सूची II: (संबद्ध अवधारणा)
1. संवेग का संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत
2. अभिप्रेरणा का अंतर्नोद सिद्धांत
3. अभिप्रेरणा का आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत
4. सामाजिक भूमिकाओं को सीखने की प्रक्रिया
(A) P-2, Q-3, R-1, S-4
(B) P-3, Q-2, R-4, S-1
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

152. मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत की प्राथमिक आलोचना निम्नलिखित में से कौन-सी है?
(A) यह जैविक आवश्यकताओं की उपेक्षा करता है।
(B) पदानुक्रमित क्रम सार्वभौमिक नहीं है।
(C) बाहरी प्रोत्साहनों पर केंद्रित है।
(D) केवल जानवरों पर लागू होता है।

153. यह तय करना कि आगामी नौकरी का साक्षात्कार एक "खतरा" है या "चुनौती", किस सिद्धांत का केंद्र है?
(A) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत
(B) शैक्टर-सिंगर सिद्धांत
(C) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत
(D) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत

154. समाजीकरण के एक कारक के रूप में परिवार की भूमिका को प्राथमिक माना जाता है क्योंकि:
(A) यह केवल नैतिक मूल्यों को सिखाता है।
(B) यह साथी समूह का चयन करता है।
(C) यह औपचारिक शिक्षा को संभालता है।
(D) यह पहला सामाजिक संदर्भ है।

155. तनाव के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. तनाव का अनुभव मूल्यांकन पर निर्भर करता है।
2. प्रतिक्रियाओं में शारीरिक और संज्ञानात्मक परिवर्तन शामिल हैं।
3. प्रबंधन का उद्देश्य सभी उत्तेजनाओं को समाप्त करना है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) 1 और 2
(B) 2 और 3
(C) 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

156. उत्कृष्टता के उच्च मानक को प्राप्त करने की इच्छा को किस रूप में जाना जाता है?
(A) संबद्धता की आवश्यकता।
(B) उपलब्धि की आवश्यकता।
(C) शक्ति की आवश्यकता।
(D) सुरक्षा की आवश्यकता।

157. प्रसव पूर्व विकास में "क्रांतिक अवधि" का सबसे अच्छा उदाहरण निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) नौ महीने की गर्भावधि।
(B) पहली तिमाही में अंग प्रणाली का चरण।
(C) जन्म का क्षण।
(D) दूसरी तिमाही की हलचल।

158. निम्नलिखित में से कौन-सा संवेग की परिभाषा का मुख्य घटक नहीं है?
(A) अंतर्नोद में कमी
(B) शारीरिक उत्तेजना
(C) अभिव्यंजक व्यवहार
(D) सचेत अनुभव

159. एक आंतरिक कमी को _________ कहा जाता है, जबकि बाहरी वस्तु को _________ कहा जाता है।
(A) प्रोत्साहन; अंतर्नोद
(B) अंतर्नोद; अंतर्नोद
(C) अंतर्नोद; प्रोत्साहन
(D) प्रेरक; संवेग

160. नैतिक विकास का अध्ययन किसका हिस्सा है?
(A) संवेग के सिद्धांत।
(B) तनाव प्रबंधन तकनीक।
(C) प्रेरकों के प्रकार।
(D) मानव व्यवहार का विकास।

161. एक छात्र परीक्षा से पहले तेज धड़कन, पसीने से भीगी हथेलियाँ और पेट में "गाँठ" महसूस करता है। ये हैं:

(A) व्यक्ति/पर्यावरण के बीच अंतःक्रिया।
(B) मूल्यांकन पर निर्भर करता है।
(C) शारीरिक प्रतिक्रियाओं को सक्रिय करता है।
(D) हमेशा एक हानिकारक अनुभव।

213. समाजीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. परिवार आमतौर पर समाजीकरण का पहला कारक होता है।
2. मीडिया बड़े पैमाने पर दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित कर सकता है।
3. साथी समूह अक्सर किशोरावस्था के दौरान अत्यधिक प्रभावशाली हो जाते हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

214. अभिप्रेरणा का अंतर्नोद सिद्धांत किस सिद्धांत पर आधारित है?
(A) उत्तेजना की तलाश करना।
(B) पूर्ण क्षमता प्राप्त करना।
(C) पुरस्कारों के प्रति प्रतिक्रिया देना।
(D) समस्थापन बनाए रखना।

215. संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत का एक प्रमुख योगदान यह विचार है कि:
(A) व्याख्या संवेग का प्राथमिक निर्धारक है।
(B) उत्तेजना पहले होनी चाहिए।
(C) संवेग उत्तेजना के बिंदु हैं।
(D) संवेग जन्मजात होते हैं।

216. यह अवधारणा कि कुछ कौशल एक विशिष्ट समय पर सबसे अच्छी तरह सीखे जाते हैं, कहलाती है:
(A) समाजीकरण।
(B) एक क्रांतिक अवधि।
(C) नैतिक विकास।
(D) तनाव प्रबंधन।

217. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): मूलप्रवृत्ति सिद्धांत मानवीय अभिप्रेरणा की जटिलता के लिए एक सीमित व्याख्या प्रदान करता है।
कारण (R): मानव व्यवहार का अधिकांश हिस्सा सीखा हुआ और लचीला होता है, स्थिर और अनसीखा नहीं, और यह सिद्धांत अक्सर व्यवहारों की व्याख्या किए बिना उन्हें केवल "मूलप्रवृत्ति" के रूप में लेबल करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

218. जब किसी व्यक्ति का रक्त शर्करा कम होता है, तो वह खाने के लिए अभिप्रेरित होता है। इसे किसके द्वारा सबसे अच्छी तरह समझाया गया है?
(A) प्रोत्साहन सिद्धांत
(B) अंतर्नोद सिद्धांत
(C) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(D) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत

219. संवेगात्मक अनुभव के दौरान हृदय गति और गैल्वेनिक त्वचा प्रतिक्रिया में परिवर्तन का अध्ययन किसके अंतर्गत आता है?
(A) संवेगों का वर्गीकरण।
(B) संज्ञानात्मक मूल्यांकन।
(C) शारीरिक सह-संबंधी।
(D) तनाव प्रबंधन।

220. समाजीकरण का कौन-सा कारक औपचारिक पाठ्यक्रम के माध्यम से ज्ञान प्रसारित करने के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है?
(A) परिवार
(B) साथी समूह
(C) स्कूल
(D) मीडिया

221. कौन-सा सिद्धांत तर्क देता है कि खुशी की तीव्रता समग्र शारीरिक उत्तेजना के स्तर पर निर्भर करती है?
(A) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत
(B) मास्लो का पदानुक्रम सिद्धांत
(C) अंतर्नोद सिद्धांत
(D) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत

222. रचनात्मक अभिव्यक्ति और पूर्णता की आवश्यकता से प्रेरित एक कलाकार क्या प्रदर्शित कर रहा है?
(A) शारीरिक आवश्यकताएं।
(B) आत्म-सिद्धि।
(C) सुरक्षा की आवश्यकताएं।
(D) सम्मान की आवश्यकताएं।

223. तनाव के अनुभव में मूल्यांकन की क्या भूमिका है?
(A) शारीरिक प्रतिक्रिया।
(B) तनाव कम करने की रणनीति।
(C) महत्व का आकलन करना।
(D) प्रतिक्रिया का अंतिम परिणाम।

224. निम्नलिखित में से कौन-सा बाह्य प्रेरक का उदाहरण है?
(A) आनंद के लिए पढ़ना।
(B) एक मजेदार पहेली को सुलझाना।
(C) प्यार के लिए खेलना।
(D) वेतन के लिए काम करना।

124. संवेगों को वर्गीकृत करने का एक सामान्य तरीका उनकी ________ है।
(A) अभिप्रेरणात्मक विशेषताएं।
(B) शारीरिक उत्तेजना का स्तर।
(C) संबद्ध मुकाबला रणनीति।
(D) जटिलता।

125. संस्कृति द्वारा उचित मानी गई लैंगिक-विशिष्ट शैलियों को सीखना किसका एक स्पष्ट उदाहरण है?
(A) तनाव प्रबंधन।
(B) अंतर्नोद में कमी।
(C) समाजीकरण।
(D) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत।

126. संवेग के सिद्धांतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: शैक्टर-सिंगर सिद्धांत प्रतिपादित करता है कि संवेग गैर-विशिष्ट शारीरिक उत्तेजना के संज्ञानात्मक लेबलिंग से उत्पन्न होता है।
कथन II: संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत प्रतिपादित करता है कि स्थिति के अर्थ का मूल्यांकन शारीरिक उत्तेजना और संवेगात्मक अनुभव दोनों से पहले होता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

127. मास्लो के आवश्यकताओं के पदानुक्रम का उच्चतम और सबसे अमूर्त स्तर है:
(A) सम्मान
(B) सुरक्षा
(C) अपनापन
(D) आत्म-सिद्धि

128. एक छात्र जो अपने पाठ्यक्रम के बोझ से अभिभूत है, वह किसके प्रति प्रतिक्रिया का अनुभव कर रहा है?
(A) तनाव।
(B) एक क्रांतिक अवधि।
(C) एक सामाजिक प्रेरक।
(D) एक संवेगात्मक वर्गीकरण।

129. मूलप्रवृत्ति सिद्धांत और अंतर्नोद सिद्धांत के बीच मुख्य अंतर है:
(A) मूलप्रवृत्ति खिंचाव है; अंतर्नोद धक्का है।
(B) अंतर्नोद सामाजिक है; मूलप्रवृत्ति जैविक है।
(C) मूलप्रवृत्ति स्थिर है; अंतर्नोद तनाव है।
(D) शब्दों के संदर्भ में कोई अंतर नहीं है।

130. संवेग का "शारीरिक सह-संबंधी" क्या है?
(A) होने वाला शारीरिक परिवर्तन।
(B) इसके साथ आने वाला विचार।
(C) दिखाया गया चेहरे का भाव।
(D) सामाजिक स्थिति जिसने इसे उत्पन्न किया।

131. समाजीकरण में स्कूल प्रणाली की भूमिका में निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी को सिखाना शामिल है?
(A) आधिकारिक शैक्षणिक पाठ्यक्रम।
(B) बड़े समूह की अंतःक्रिया के नियम।
(C) प्रच्छन्न पाठ्यक्रम की अपेक्षाएं।
(D) प्राथमिक लगाव बंधों का निर्माण।

132. लिंड्सले के सक्रियण सिद्धांत के अनुसार, घबराहट या अत्यधिक उत्तेजना की अवस्था की विशेषता क्या होगी?
(A) निम्न केंद्रीय तंत्रिका तंत्र सक्रियण।
(B) उच्च केंद्रीय तंत्रिका तंत्र सक्रियण।
(C) इष्टतम केंद्रीय तंत्रिका तंत्र सक्रियण।
(D) संज्ञानात्मक मूल्यांकन का अभाव।

133. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): संज्ञानात्मक मूल्यांकन सिद्धांत में, एक ही घटना, जैसे काम पर पदोन्नति, खुशी या चिंता दोनों पैदा कर सकती है।
कारण (R): संवेगात्मक परिणाम इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति पदोन्नति का मूल्यांकन एक स्वागत योग्य चुनौती (खुशी) के रूप में करता है या भारी नई जिम्मेदारियों के स्रोत (चिंता) के रूप में।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

134. निम्नलिखित में से कौन-सा प्राथमिक, जैविक प्रेरक द्वारा संचालित व्यवहार का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) उपन्यास लिखना
(B) चुनाव लड़ना
(C) खेल खेलना
(D) प्यास लगने पर पानी पीना

135. संवेग से संबंधित निम्नलिखित तत्वों पर विचार कीजिए:
1. एक व्यक्तिपरक भावना।
2. शारीरिक उत्तेजना।
3. अभिव्यंजक व्यवहार।
इनमें से किसे संवेग की मुख्य विशेषताएं माना जाता है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

237. तनाव को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में एक मुख्य तत्व क्या है?
(A) उपयुक्त मुकाबला रणनीतियों को अपनाना।
(B) समस्या को अनदेखा करना।
(C) शारीरिक उत्तेजना को बढ़ाना।
(D) तनाव के लिए दूसरों को दोष देना।

238. एक फिल्म जो दर्शकों को दुखी करती है, वह किस कारक के प्रभाव का उदाहरण है?
(A) परिवार
(B) मीडिया
(C) स्कूल
(D) साथी समूह

239. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): मास्लो के सिद्धांत में, आत्म-सिद्धि एक "विकास की आवश्यकता" है जबकि निचले चार स्तर "कमी की आवश्यकताएं" हैं।
कारण (R): निचली आवश्यकताएं किसी चीज़ की कमी से उत्पन्न होती हैं और उस कमी को भरने के लिए व्यवहार को अभिप्रेरित करती हैं, जबकि आत्म-सिद्धि एक व्यक्ति के रूप में बढ़ने की इच्छा से उत्पन्न होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

240. वह सिद्धांत जो यह प्रतिपादित करता है कि संवेग स्थितिजन्य व्याख्या से उत्पन्न होता है जो उत्तेजना और अनुभव को सक्रिय करता है:
(A) शैक्टर-सिंगर सिद्धांत।
(B) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत।
(C) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत।
(D) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत।

241. विकासात्मक प्रभावों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. साथी समूह
2. परिवार
3. स्कूल
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 3, 1
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 1, 3

242. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी प्रेरकों के प्रकार हैं?
(A) संवेगात्मक मूल्यांकन
(B) जैविक
(C) सामाजिक
(D) व्यक्तिगत

243. "लड़ो, भागो या जम जाओ" प्रतिक्रिया किसका समूह है?
(A) तनाव प्रबंधन के लिए रणनीतियाँ।
(B) नैतिक विकास के सिद्धांत।
(C) तनाव के प्रति शारीरिक प्रतिक्रियाएं।
(D) अभिप्रेरणा के सिद्धांत।

244. एक बच्चा अपने माता-पिता के गुस्सा व्यक्त करने के तरीके को देखता है और उसकी नकल करता है, यह किसका उदाहरण है?
(A) एक क्रांतिक अवधि।
(B) नैतिक विकास।
(C) अंतर्नोद में कमी।
(D) समाजीकरण।

245. निम्नलिखित में से कौन-सा जीवन-काल विकास का केंद्रीय सिद्धांत नहीं है?
(A) विकास आजीवन होता है।
(B) विकास स्थिर और अपरिवर्तनीय होता है।
(C) विकास बहुआयामी होता है।
(D) विकास लचीला होता है।

246. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. शैक्टर-सिंगर सिद्धांत संज्ञानात्मक लेबलिंग पर बल देता है।
2. संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत स्थितिजन्य मूल्यांकन पर बल देता है।
3. लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत केंद्रीय तंत्रिका तंत्र उत्तेजना पर बल देता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

247. संतुलन या स्थिरता की वह अवस्था जहाँ एक जैविक प्रणाली वापस लौटने का प्रयास करती है, कहलाती है:
(A) अभिप्रेरणा
(B) प्रोत्साहन
(C) समस्थापन
(D) आत्म-सिद्धि

248. खुशी, गुस्सा या डर जैसी भावना का व्यक्तिपरक अनुभव किसका एक मुख्य घटक है?
(A) संवेग
(B) अभिप्रेरणा
(C) तनाव
(D) समाजीकरण

(B) हम आत्म-सिद्धि कैसे प्राप्त करते हैं।
(C) हम किसी स्थिति की व्याख्या कैसे करते हैं।
(D) हम जन्मजात मूलप्रवृत्तियों के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करते हैं।

(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

262. मास्लो के पदानुक्रम में निम्नलिखित में से कौन-सी आवश्यकता सबसे ऊपर है?
(A) सम्मान
(B) सुरक्षा
(C) अपनापन
(D) आत्म-सिद्धि

263. "समाजीकरण" शब्द किस प्रक्रिया को संदर्भित करता है?
(A) समर्थन के माध्यम से तनाव का प्रबंधन करना।
(B) सामाजिक संवेगों का वर्गीकरण करना।
(C) सांस्कृतिक मानदंडों को प्राप्त करना।
(D) संबद्धता की आवश्यकताओं को पूरा करना।

264. लिंड्सले के संवेग के सक्रियण सिद्धांत का मुख्य प्रस्ताव क्या है?
(A) द्वि-कारक उत्तेजना/संज्ञान।
(B) संज्ञानात्मक मूल्यांकन का कार्य।
(C) मूलप्रवृत्यात्मक पर्यावरणीय प्रतिक्रिया।
(D) तीव्रता सक्रियण से संबंधित है।

265. निम्नलिखित में से कौन-सा आंतरिक अभिप्रेरणा का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) खिलौने के लिए सफाई करना।
(B) आनंद के लिए पियानो बजाना।
(C) असफल होने से बचने के लिए पढ़ना।
(D) नियोक्ता को प्रभावित करने के लिए काम करना।

266. मानव विकास के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?
(A) लाभ/हानि की आजीवन चलने वाली प्रक्रिया।
(B) विशेष रूप से आनुवंशिकी द्वारा निर्धारित।
(C) सभी के लिए सटीक मार्ग/समय।
(D) संस्कृति से प्रभावित नहीं।

267. बढ़ी हुई हृदय गति और एड्रेनालिन का स्राव किसका हिस्सा हैं?
(A) तनाव प्रबंधन प्रणाली।
(B) नैतिक विकास प्रक्रिया।
(C) तनाव के प्रति प्रतिक्रिया।
(D) आवश्यकताओं की संतुष्टि।

268. संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत के अनुसार, कौन-सा संवेग महसूस किया गया है, यह कौन निर्धारित करता है?
(A) उत्तेजना की तीव्रता।
(B) प्रदर्शन के सामाजिक नियम।
(C) अभिप्रेरणा का वर्तमान स्तर।
(D) अर्थ की व्याख्या।

269. एक नन्हे बच्चे द्वारा खिलौने साझा करने का विरोध किससे संबंधित मुद्दा है?
(A) तनाव विकास
(B) संवेगात्मक वर्गीकरण
(C) नैतिक और सामाजिक विकास
(D) अभिप्रेरणात्मक सिद्धांत

270. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. अंतर्नोद सिद्धांत आंतरिक धक्के की व्याख्या करता है।
2. प्रोत्साहन सिद्धांत बाहरी खिंचाव की व्याख्या करता है।
3. दोनों व्यवहार की दिशा से संबंधित हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

271. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (समाजीकरण का कारक)
P. परिवार
Q. साथी समूह
R. स्कूल
S. मीडिया
सूची II: (सामान्य प्रभाव)
1. किशोर उपसंस्कृति के अनुरुप होना
2. बुनियादी भाषा और मूल्य सीखना
3. व्यापक सांस्कृतिक रुझानों का प्रदर्शन
4. औपचारिक शैक्षणिक ज्ञान प्राप्त करना
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

272. मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम का एक मुख्य विचार यह है कि:
(A) सभी आवश्यकताओं की प्राथमिकता समान है।
(B) बुनियादी आवश्यकताएं उच्च आवश्यकताओं से पहले आती हैं।
(C) सामाजिक आवश्यकताएं सबसे बुनियादी हैं।
(D) आत्म-सिद्धि अप्राप्य है।

273. मांगों के प्रति शरीर की प्रतिक्रिया का अध्ययन किसके लिए केंद्रीय है?
(A) नैतिक विकास।
(B) संवेग वर्गीकरण।
(C) तनाव।
(D) समाजीकरण।

249. निम्नलिखित में से कौन-सा तनाव से निपटने की रणनीति का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) कोर्टिसोल का स्राव।
(B) तेज हृदय गति।
(C) सजगता ध्यान का अभ्यास करना।
(D) अभिभूत होने की प्रारंभिक भावना।

250. मास्लो के अनुसार, एक व्यक्ति जिसने शारीरिक, सुरक्षा, अपनेपन और सम्मान की आवश्यकताओं को पूरा कर लिया है, वह किसका पीछा करता है?
(A) अधिक दोस्त।
(B) एक सुरक्षित घर।
(C) अधिक भोजन।
(D) आत्म-सिद्धि।

251. अभिप्रेरणा का कौन-सा सिद्धांत चार्ल्स डार्विन के विकासवाद के कार्य से बहुत प्रभावित था?
(A) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(B) अंतर्नोद सिद्धांत
(C) प्रोत्साहन सिद्धांत
(D) आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत

252. संवेग में तंत्रिका तंत्र की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि यह:
(A) सामाजिक संदर्भ प्रदान करता है।
(B) शारीरिक उत्तेजना उत्पन्न करता है।
(C) नैतिकता के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है।
(D) पुरस्कार प्रोत्साहनों को निर्धारित करता है।

253. समाजीकरण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) यह सामाजिक मानदंडों को सीखना है।
(B) परिवार एक प्राथमिक कारक है।
(C) यह वयस्क होने पर समाप्त हो जाता है।
(D) मीडिया/साथी इसके कारक हैं।

254. किसी परीक्षा को "खतरे" के बजाय "चुनौती" के रूप में मूल्यांकित करने से क्या होता है?
(A) चिंता और भय
(B) उदासी और निराशा
(C) कोई संवेगात्मक प्रतिक्रिया नहीं
(D) उत्सुकता और अभिप्रेरणा

255. निम्नलिखित में से कौन-सी एक केंद्रीय अवधारणा अंतर्नोद सिद्धांत में है लेकिन प्रोत्साहन सिद्धांत में नहीं है?
(A) समस्थापन
(B) बाहरी पुरस्कार
(C) सीखे हुए जुड़ाव
(D) सामाजिक प्रेरक

256. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया)
P. अभिप्रेरणा
Q. संवेग
R. तनाव
S. विकास
सूची II: (मुख्य अवधारणा)
1. मूल्यांकन और मुकाबला
2. लचीलेपन जैसे सिद्धांत
3. व्यवहार को ऊर्जा देना और निर्देशित करना
4. व्यक्तिपरक भावना अवस्था
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

257. सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों के आधार पर किसी क्रिया के सही होने का निर्णय लेना क्या है?
(A) तनाव के प्रति प्रतिक्रिया।
(B) शारीरिक सह-संबंधी।
(C) उन्नत नैतिक विकास।
(D) प्राथमिक प्रेरक।

258. यह निष्कर्ष कि उच्च उत्तेजना स्थिति के आधार पर खुशी या गुस्सा हो सकती है, किसका समर्थन करता है?
(A) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत
(B) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(C) अंतर्नोद सिद्धांत
(D) शैक्टर-सिंगर सिद्धांत

259. भाषा विकास का प्रारंभिक जोखिम पर निर्भर होना किसका चित्रण करता है?
(A) एक क्रांतिक अवधि।
(B) समाजीकरण।
(C) नैतिक विकास।
(D) तनाव प्रबंधन।

260. निम्नलिखित में से कौन-सा जैविक प्रेरक का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) संवेगात्मक प्रेरक
(B) जैविक प्रेरक
(C) तनावपूर्ण प्रेरक
(D) विकासात्मक प्रेरक

261. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): तनाव का अनुभव स्वयं घटना द्वारा निर्धारित नहीं होता है, बल्कि घटना के प्रति व्यक्ति के बोध द्वारा निर्धारित होता है।
कारण (R): संज्ञानात्मक मूल्यांकन प्रक्रियाएं संभावित प्रतिबलक और तनाव प्रतिक्रिया के बीच संबंध में मध्यस्थता करती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।

(B) भावना की अवस्था।
(C) शारीरिक प्रतिवर्त।
(D) लक्ष्य-निर्देशित अवस्था।

288. पदोन्नति के बाद वित्त प्रबंधन और नई जिम्मेदारियों को सीखना क्या है?
(A) वयस्क भूमिका में समाजीकरण।
(B) तनाव के प्रति प्रतिक्रिया।
(C) क्रांतिक अवधियाँ।
(D) शारीरिक सह-संबंधी।

289. निम्नलिखित में से किसे तनाव से निपटने की रणनीति माना जाता है?
(A) प्रारंभिक मूल्यांकन।
(B) जानकारी मांगना।
(C) रक्तचाप में वृद्धि।
(D) चिंता की भावना।

290. शैक्टर-सिंगर सिद्धांत का मुख्य योगदान क्या पेश करना था?
(A) शारीरिक उत्तेजना।
(B) मूलप्रवृत्त्यात्मक प्रतिरूप।
(C) संज्ञानात्मक व्याख्या।
(D) अंतर्नोद में कमी।

291. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. प्राथमिक प्रेरक
Q. सामाजिक प्रेरक
R. संवेग
S. तनाव
सूची II: (उदाहरण)
1. सफलता के बाद खुशी की भावना
2. भूख
3. काम के बोझ के प्रति प्रतिक्रिया
4. उपलब्धि की आवश्यकता
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

292. यह सिद्धांत कि विकास ऐतिहासिक समय से प्रभावित होता है:
(A) लचीलापन
(B) संदर्भवाद
(C) बहुआयामीता
(D) आजीवन

293. अभिप्रेरणा का कौन-सा सिद्धांत अनसीखी प्रजाति व्यवहारों पर केंद्रित है?
(A) अंतर्नोद सिद्धांत
(B) प्रोत्साहन सिद्धांत
(C) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(D) आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत

294. माता-पिता को देखकर खाने के शिष्टाचार सीखने वाला बच्चा किससे प्रभावित होता है?
(A) स्कूल
(B) साथी समूह
(C) मीडिया
(D) परिवार

295. प्रदर्शन के लिए उत्तेजना का इष्टतम स्तर किससे संबंधित है?
(A) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत।
(B) मास्लो का पदानुक्रम सिद्धांत।
(C) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत।
(D) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत।

296. एक छात्र जो पाठ्यक्रम से निपटने के लिए एक अध्ययन समूह में शामिल होता है, वह किसका उपयोग कर रहा है?
(A) संवेग-केंद्रित
(B) समस्या-केंद्रित
(C) परिहार
(D) शारीरिक

297. एक स्थिर और सुरक्षित वातावरण की आवश्यकता किसके अंतर्गत आती है?
(A) शारीरिक
(B) सुरक्षा
(C) सम्मान
(D) आत्म-सिद्धि

298. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: संवेग में तंत्रिका तंत्र की भूमिका मस्तिष्क के संज्ञानात्मक केंद्रों तक सीमित है।
कथन II: स्वायत्त तंत्रिका तंत्र संवेग के साथ होने वाले कई शारीरिक परिवर्तनों के लिए जिम्मेदार है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

299. निम्नलिखित में से कौन-सा जीवन-काल विकास का मुख्य सिद्धांत नहीं है?
(A) विकास आजीवन होता है।
(B) विकास बहुआयामी होता है।
(C) विकास लचीला होता है।
(D) विकास स्थिर होता है।

300. संवेग के संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांतों का प्राथमिक ध्यान किस पर है?
(A) हम आंतरिक अंतर्नोद को कैसे कम करते हैं।

प्रभावित होता है, जिससे यह एक संदर्भ-आधारित और अत्यंत गतिशील प्रक्रिया बन जाती है।

29. (C) जेम्स-लैंग जैसा प्रारंभिक शारीरिक सिद्धांत।
जेम्स-लैंग सिद्धांत जैसे प्रारंभिक शारीरिक सिद्धांतों का मानना था कि संवेगात्मक अनुभव वास्तव में शारीरिक परिवर्तनों के प्रति हमारी चेतना का परिणाम होते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, हम उत्तेजना के कारण शारीरिक रूप से प्रतिक्रिया करते हैं और उस शारीरिक बदलाव को महसूस करने के बाद ही संवेग का अनुभव करते हैं। यह विचार कि हम कांपते हैं इसलिए हमें डर लगता है, इसी श्रेणी के सिद्धांतों का आधार है, जिन्होंने बाद में संवेग के अधिक जटिल संज्ञानात्मक सिद्धांतों का मार्ग प्रशस्त किया।

30. (D) मीडिया।
आधुनिक समाज में टेलीविजन, सामाजिक माध्यम और विज्ञापन समाजीकरण के अत्यंत शक्तिशाली कारकों के रूप में उभरे हैं। ये माध्यम न केवल सूचना प्रदान करते हैं, बल्कि व्यक्ति के दृष्टिकोण, प्राथमिकताओं और सामाजिक व्यवहारों को भी आकार देते हैं। जनसंचार माध्यमों के माध्यम से प्रसारित सामग्री संस्कृति के आदर्शों और उपभोग प्रवृत्तियों का निर्माण करती है। यह प्रभाव विशेष रूप से बच्चों और युवाओं में स्पष्ट होता है, जो इन माध्यमों से प्रस्तुत रोल मॉडल और जीवन शैली का अनुसरण करते हैं।

31. (A) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत।
अभिप्रेरणा का मूलप्रवृत्ति सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि मानवीय व्यवहार का एक बड़ा हिस्सा जन्मजात और अनसीखे जैविक प्रतिरूपों द्वारा निर्धारित होता है। ये प्रवृत्तियाँ आनुवंशिक रूप से प्रोग्राम की गई होती हैं और किसी प्रजाति के सभी सदस्यों में बिना किसी विशेष शिक्षण के प्रकट होती हैं। यह सिद्धांत व्यवहार को सीखने की प्रक्रिया के बजाय जैविक और विकासवादी आवश्यकताओं की देन मानता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, कुछ मूलभूत गतिविधियाँ हमारी उत्तरजीविता सुनिश्चित करने हेतु प्रकृति द्वारा पूर्व-निर्धारित होती हैं।

32. (B) इसमें स्थिति से निपटने की क्षमता के प्रति व्यक्ति का बोध शामिल होता है।
तनाव केवल बाहरी घटनाओं का परिणाम नहीं है, बल्कि यह इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति उस स्थिति का आकलन कैसे करता है। यदि कोई व्यक्ति महसूस करता है कि परिस्थिति की मांगें उसके पास उपलब्ध संसाधनों और क्षमताओं से अधिक हैं, तो वह तनाव का अनुभव करता है। यह मनोवैज्ञानिक बोध ही तय करता है कि कोई घटना चुनौतीपूर्ण है या हानिकारक। इस प्रकार, तनाव एक व्यक्तिपरक अनुभव है जो व्यक्ति की स्वयं की मुकाबला करने की शक्ति के मूल्यांकन से जुड़ा होता है।

33. (B) संज्ञानात्मक मूल्यांकन का पूर्ण अभाव।
संवेग एक जटिल मनोवैज्ञानिक अवस्था है जिसमें व्यक्तिपरक अनुभव, शारीरिक उत्तेजना और अभिव्यंजक व्यवहार अनिवार्य रूप से शामिल होते हैं। संवेग की प्रक्रिया में संज्ञानात्मक मूल्यांकन का अभाव नहीं होता, बल्कि यह इसका एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। हम किसी स्थिति का मानसिक रूप से विश्लेषण और मूल्यांकन कैसे करते हैं, वही निर्धारित करता है कि हम क्या महसूस करेंगे। बिना किसी संज्ञानात्मक समझ या व्याख्या के संवेग का अनुभव करना मानवीय चेतना के स्तर पर संभव नहीं माना जाता है।

34. (A) आत्म-सिद्धि।
अब्राहम मास्लो के अनुसार आत्म-सिद्धि वह अवस्था है जहाँ व्यक्ति अपनी पूर्ण आंतरिक संभावनाओं को वास्तविकता में बदलने का निरंतर प्रयास करता है। यह पदानुक्रम की सर्वोच्च आवश्यकता है और यह किसी बाहरी कमी के बजाय व्यक्तिगत विकास की आंतरिक इच्छा से प्रेरित होती है। जब कोई व्यक्ति अपनी रचनात्मकता, नैतिकता और अद्वितीय प्रतिभा के शिखर तक पहुँचने हेतु कार्य करता है, तो वह आत्म-सिद्धि प्राप्त करने की प्रक्रिया में होता है। यह स्वयं के सर्वोत्तम और पूर्ण संस्करण की प्राप्ति का लक्ष्य है।

35. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
शैक्टर-सिंगर सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि शारीरिक उत्तेजना अपने आप में संवेग के विशिष्ट प्रकार को निर्धारित नहीं करती। यह उत्तेजना गैर-विशिष्ट होती है, जिसे व्यक्ति अपने तात्कालिक वातावरण और संज्ञानात्मक व्याख्या के आधार पर अलग-अलग अर्थ दे सकता है। उदाहरण के लिए, दिल की तेज धड़कन को डर या उत्साह दोनों के रूप में महसूस किया जा सकता है, जो इस पर निर्भर करता है कि व्यक्ति उस समय क्या सोच रहा है। अतः संज्ञानात्मक पहचान ही संवेगात्मक अनुभव को विशिष्टता प्रदान करती है।

36. (B) समाजीकरण।
समाजीकरण वह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने समाज की संस्कृति, ज्ञान, कौशल और अपेक्षित व्यवहारों को आत्मसात करता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को एक जैविक प्राणी से एक सामाजिक सदस्य के रूप में परिवर्तित करती है, जिससे वह समाज में प्रभावी ढंग से भाग लेने योग्य बनता है। बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक चलने वाली यह सीख व्यक्ति को सामूहिक मूल्यों और सामाजिक मानदंडों के अनुरूप ढलने में सहायता करती है। इसी के द्वारा सामाजिक व्यवस्था का हस्तांतरण संभव हो पाता है।

37. (D) अंतर्नोद सिद्धांत।
समस्थापन का तात्पर्य शरीर की उस आंतरिक स्थिरता और संतुलन को बनाए रखने की स्वाभाविक प्रवृत्ति से है जो जीवन हेतु अनिवार्य है। अंतर्नोद सिद्धांत इसी अवधारणा पर आधारित है, जिसके अनुसार जब भी शरीर में जैविक असंतुलन पैदा होता है, तो एक अंतर्नोद उत्पन्न होता है। यह अंतर्नोद जीव को ऐसा व्यवहार करने हेतु प्रेरित करता है जिससे संतुलन पुनः स्थापित हो सके। प्यास लगने पर जल पीना समस्थापन बहाल करने का उदाहरण है, जो आंतरिक तनाव को कम कर शांति प्रदान करता है।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) एक आंतरिक अवस्था जो व्यवहार को सक्रिय करती है और उसे लक्ष्य की ओर निर्देशित करती है।
अभिप्रेरणा एक अत्यंत महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो किसी जीव के भीतर सक्रिय अवस्था उत्पन्न करती है। यह न केवल व्यक्ति को कार्य करने हेतु ऊर्जा प्रदान करती है, बल्कि उसके प्रयासों को एक निश्चित एवं सार्थक दिशा में बनाए रखने में भी सहायता करती है। जब कोई आंतरिक आवश्यकता जागृत होती है, तो वह व्यवहार को तब तक संचालित करती है जब तक निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो जाती।

2. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
संवेग केवल मानसिक अनुभव नहीं हैं, बल्कि इनका एक ठोस शारीरिक आधार होता है जिसमें शरीर की विभिन्न प्रणालियाँ सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। संवेगात्मक अनुभव के दौरान हमारा स्वायत्त तंत्रिका तंत्र हृदय गति, श्वसन और हार्मोन संतुलन में त्वरित परिवर्तन लाता है। ये शारीरिक प्रतिक्रियाएं व्यक्ति को स्थिति के प्रति तैयार करने और संवेग की तीव्रता को गहराई प्रदान करने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं, जिससे जैविक प्रक्रियाएं आपस में जुड़ जाती हैं।

3. (C) शारीरिक परिवर्तन जैसे हृदय गति में वृद्धि और हार्मोन का स्राव।
तनाव के प्रति होने वाली प्राथमिक प्रतिक्रिया मुख्य रूप से जैविक और तात्कालिक होती है, जो शरीर को चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने हेतु सक्षम बनाती है। इसमें एड्रेनालिन जैसे महत्वपूर्ण तनाव हार्मोन का स्राव होता है और हृदय गति में उल्लेखनीय वृद्धि देखी जाती है। यह प्रक्रिया शरीर को लड़ने या भागने के लिए तैयार करती है, जो अस्तित्व की रक्षा हेतु एक प्राकृतिक तंत्र है। ये परिवर्तन शरीर की पहली रक्षात्मक रेखा हैं।

4. (D) विकास एक व्यवस्थित और अनुक्रमिक प्रतिरूप में आगे बढ़ता है।
मानव विकास का एक मूलभूत सिद्धांत यह है कि यह प्रक्रिया पूर्णतः व्यवस्थित होती है और एक पूर्व-निर्धारित क्रम का पालन करती है। विकास के विभिन्न चरण एक-दूसरे से संबंद्ध होते हैं और एक तार्किक अनुक्रम में घटित होते हैं। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति में विकास की गति और समय भिन्न हो सकता है, परंतु इसका बुनियादी ढांचा और दिशा सभी के लिए एक समान रहती है। यह निरंतरता जीवन विकास को पूर्वानुमानित बनाती है।

5. (C) आंतरिक तनाव को कम करना और जैविक समस्थापन को बहाल करना।
अंतर्नोद सिद्धांत के अनुसार, अभिप्रेरित व्यवहार का मूल उद्देश्य शरीर की आंतरिक संतुलन की अवस्था को पुनः स्थापित करना होता है। जब शरीर में किसी जैविक आवश्यकता की कमी होती है, तो यह तनाव उत्पन्न करती है जिसे अंतर्नोद कहा जाता है। जीव इस तनाव को शांत करने हेतु क्रियाशील होता है। आवश्यकता पूरी होने पर आंतरिक वातावरण शांत हो जाता है और समस्थापन की स्थिति लौट आती है, जो उत्तरजीविता हेतु अनिवार्य है।

6. (B) शैक्टर-सिंगर द्वि-कारक सिद्धांत।
शैक्टर-सिंगर सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि संवेग के अनुभव हेतु शारीरिक उत्तेजना और उसके संज्ञानात्मक मूल्यांकन का मेल होना आवश्यक है। इस परिस्थिति में छात्रा अपनी शारीरिक प्रतिक्रियाओं, जैसे तेज धड़कन, को परीक्षा के संदर्भ में घबराहट के रूप में संज्ञानात्मक पहचान दे रही है। यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति अपनी वर्तमान शारीरिक स्थिति को पर्यावरण के संकेतों के आधार पर कैसे परिभाषित करता है। इस प्रक्रिया से विशिष्ट संवेगात्मक अनुभव जन्म लेता है।

7. (D) आनुवंशिक प्रवृत्तियाँ।
समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बाहरी सामाजिक कारकों की अंतःक्रिया के माध्यम से व्यक्ति समाज के मूल्यों और व्यवहारों को सीखता है। परिवार, विद्यालय, साथी समूह और संचार माध्यम इस शिक्षा में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। इसके विपरीत, आनुवंशिक प्रवृत्तियाँ व्यक्ति की जन्मजात जैविक संरचना का हिस्सा होती हैं और इन्हें सामाजिक शिक्षा का कारक नहीं माना जा सकता। समाजीकरण का मुख्य केंद्र सामाजिक वातावरण के साथ होने वाली निरंतर अंतःक्रिया और अनुभव हैं।

8. (A) एक बाहरी लक्ष्य या उद्दीपक जो व्यवहार को अभिप्रेरित कर सकता है।
अभिप्रेरणा के सिद्धांतों में प्रोत्साहन का तात्पर्य उन बाहरी कारकों से है जो व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करते हैं और कार्य करने हेतु प्रेरित करते हैं। जहाँ अंतर्नोद व्यक्ति को भीतर से धकेलता है, वहीं प्रोत्साहन बाहर से लक्ष्य की ओर खींचता है। यह कोई पुरस्कार, सामाजिक मान्यता या वांछित वस्तु हो सकती है जो व्यवहार की गति को बढ़ाती है। इस प्रकार, प्रोत्साहन बाहरी वातावरण में मौजूद वे उद्दीपक हैं जो गतिविधियों को सार्थक बनाते हैं।

9. (C) पर्यावरणीय प्रभावों के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता की एक विशिष्ट समय सीमा।
क्रांतिक अवधि विकास का वह विशिष्ट चरण है जिसमें जीव कुछ विशेष प्रकार की सीख या विकास हेतु जैविक रूप से सर्वाधिक तैयार होता है। इस सीमित समय के दौरान यदि आवश्यक पर्यावरणीय अनुभव या उद्दीपक प्राप्त नहीं होते, तो उस विशिष्ट क्षमता का पूर्ण विकास भविष्य में कठिन या

274. जिन प्रतिभागियों को एड्रेनालिन का इंजेक्शन दिया गया था लेकिन प्रभावों के बारे में नहीं बताया गया था, उनकी संभावना थी कि वे:
(A) किसी संवेग की सूचना न दें।
(B) समान संवेग महसूस करें।
(C) दवा की सही पहचान करें।
(D) सहयोगी के संवेग को अपना लें।

275. कौन-सा अभिप्रेरणा सिद्धांत समस्थापन से सबसे अधिक जुड़ा है?
(A) अंतर्नोद सिद्धांत
(B) प्रोत्साहन सिद्धांत
(C) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत
(D) आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत

276. नैतिक तर्क का परिणामों से बदलकर इरादों की ओर होना क्या दर्शाता है?
(A) तनाव के प्रति प्रतिक्रिया।
(B) विकास का सिद्धांत।
(C) शारीरिक सह-संबंधी।
(D) प्रेरक का प्रकार।

277. कथित खतरे के प्रति शारीरिक प्रतिक्रिया है:
(A) एक मुकाबला रणनीति।
(B) एक संज्ञानात्मक मूल्यांकन।
(C) लड़ो-या-भागो प्रतिक्रिया।
(D) एक क्रांतिक अवधि।

278. निम्नलिखित में से कौन-सा समाजीकरण का प्राथमिक कारक नहीं है?
(A) स्कूल
(B) साथी समूह
(C) संस्कृति
(D) कार्यस्थल

279. स्थिति को खतरनाक मानकर दिल का तेजी से धड़कना किसका अनुसरण करता है?
(A) शैक्टर-सिंगर सिद्धांत
(B) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत
(C) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत
(D) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत

280. भोजन की इच्छा एक अंतर्नोद है, जबकि पिज्जा की तस्वीर एक प्रोत्साहन है।
(A) अंतर्नोद; प्रोत्साहन
(B) अंतर्नोद; मूलप्रवृत्ति
(C) प्रोत्साहन; अंतर्नोद
(D) मूलप्रवृत्ति; प्रेरक

281. संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत के अनुसार घटनाओं को व्यवस्थित कीजिए।
3. उद्दीपक घटना
4. खतरे के रूप में मूल्यांकन
1. संवेग का अनुभव
2. शारीरिक उत्तेजना
(A) 3, 4, 1, 2
(B) 3, 2, 4, 1
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 3, 1, 4, 2

282. परिवार/साथी समूहों में समूह मानदंडों के अनुरुप होना सीखना है:
(A) तनाव प्रबंधन।
(B) समाजीकरण।
(C) संवेगात्मक वर्गीकरण।
(D) आवश्यकता-पदानुक्रम।

283. कौन-सा सिद्धांत हल्की संतुष्टि और तीव्र खुशी के बीच के अंतर की व्याख्या करता है?
(A) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत
(B) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत
(C) शैक्टर-सिंगर सिद्धांत
(D) अंतर्नोद सिद्धांत

284. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी को संवेग का शारीरिक सह-संबंधी माना जाता है?
(A) यह तय करना कि दोष किसका है।
(B) श्वसन में परिवर्तन।
(C) हृदय गति में परिवर्तन।
(D) त्वचा की चालकता में परिवर्तन।

285. अपनी पूर्ण क्षमता को प्राप्त करने के लिए स्थितियों की तलाश करना किस पर केंद्रित है?
(A) सुरक्षा की आवश्यकताएं।
(B) अपनेपन की आवश्यकताएं।
(C) आत्म-सिद्धि की आवश्यकताएं।
(D) शारीरिक आवश्यकताएं।

286. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): विकास एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।
कारण (R): संज्ञानात्मक, सामाजिक और संवेगात्मक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण विकासात्मक परिवर्तन वयस्कता और वृद्धावस्था के दौरान भी होते रहते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

287. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रेरक की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) हमेशा नकारात्मक।

है। यह विकास केवल उम्र बढ़ने से नहीं होता, बल्कि इसके लिए परिपक्व मानसिक क्षमताओं और निरंतर सामाजिक अंतःक्रियाओं की आवश्यकता होती है। जैसे-जैसे बच्चे का संज्ञानात्मक स्तर बढ़ता है और वह विभिन्न सामाजिक संदर्भों में दूसरों के दृष्टिकोण को समझता है, उसके नैतिक तर्क अधिक व्यापक और न्यायपूर्ण होते जाते हैं। नैतिकता संज्ञानात्मक परिपक्वता और सामाजिक शिक्षा का संयुक्त परिणाम है।

20. (D) अनसीखे, आनुवंशिक रूप से प्रोग्राम किए गए प्रतिरूपों के कारण होता है।
अभिप्रेरणा का मूलप्रवृत्ति सिद्धांत यह मानता है कि व्यवहार का एक बड़ा हिस्सा जन्मजात जैविक प्रवृत्तियों द्वारा संचालित होता है। ये प्रवृत्तियाँ किसी प्रजाति के सभी सदस्यों में समान रूप से पाई जाती हैं और इनके लिए किसी पूर्व शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती। इस दृष्टिकोण के अनुसार, मनुष्य कुछ निश्चित व्यवहार प्रतिरूपों के साथ पैदा होते हैं जो उनके अस्तित्व और प्रजनन हेतु आवश्यक होते हैं। यह सिद्धांत व्यवहार को सीखने के बजाय प्रकृति और आनुवंशिकता की देन मानता है।

21. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
मनोविज्ञान के ये सिद्धांत संवेग और अभिप्रेरणा की प्रक्रिया को विभिन्न दृष्टिकोणों से स्पष्ट करते हैं। शैक्टर-सिंगर सिद्धांत शारीरिक उत्तेजना के साथ संज्ञानात्मक पहचान के महत्व को दर्शाता है, जबकि संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत में स्थिति की व्याख्या को संवेग से पहले रखा गया है। लिंड्सले का सिद्धांत तीव्रता को मस्तिष्क के सक्रियण स्तर से जोड़ता है। अंतर्नोद सिद्धांत का आधार समस्थापन है, जो आंतरिक संतुलन बनाए रखने की जैविक प्रवृत्ति है। ये सभी मिलकर मानवीय अनुभवों की समग्र व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

22. (B) तनाव के प्रति शारीरिक प्रतिक्रिया।
कार दुर्घटना जैसी खतरनाक स्थिति का सामना करने पर शरीर में होने वाले त्वरित परिवर्तन तनाव के प्रति एक स्वाभाविक जैविक अनुक्रिया हैं। तेज धड़कन, तीव्र श्वसन और मांसपेशियों का खिंचाव दर्शाते हैं कि शरीर का रक्षा तंत्र सक्रिय हो गया है। यह प्रतिक्रिया मुख्य रूप से स्वायत्त तंत्रिका तंत्र द्वारा संचालित होती है जो व्यक्ति को आपातकालीन स्थिति हेतु तैयार करती है। यह व्यवहार तनावपूर्ण उद्दीपक के प्रति शरीर की तत्काल और अनैच्छिक तैयारी का एक प्रत्यक्ष भौतिक प्रकटीकरण है।

23. (D) सामाजिक कौशल, पहचान और समूह मानदंडों का विकास।
समाजीकरण की प्रक्रिया में साथी समूह की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है, जहाँ व्यक्ति समान आयु के लोगों के साथ अंतःक्रिया करता है। यहाँ व्यक्ति सहयोग, प्रतिस्पर्धा और संघर्ष समाधान जैसे आवश्यक सामाजिक कौशल सीखता है। साथियों के प्रभाव से ही व्यक्ति अपनी विशिष्ट पहचान बनाता है और समूह के मानदंडों के अनुसार व्यवहार करना सीखता है। यह संदर्भ उसे परिवार के नियंत्रण से स्वतंत्र होकर दुनिया को समझने और सामाजिक रूप से परिपक्व होने का अवसर प्रदान करता है।

24. (A) व्यवहार दृढ़ है और किसी विशिष्ट लक्ष्य की ओर निर्देशित है।
किसी व्यवहार को तब अभिप्रेरित माना जाता है जब वह केवल आकस्मिक प्रतिक्रिया न होकर एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति की ओर उन्मुख होता है। अभिप्रेरित व्यवहार की मुख्य विशेषता उसकी दृढ़ता और निरंतरता है, जहाँ व्यक्ति बाधाओं के बावजूद अपने लक्ष्य की दिशा में सक्रिय रहता है। यह व्यवहार एक आंतरिक या बाहरी प्रेरक द्वारा संचालित होता है जो व्यक्ति को तब तक गतिशील रखता है जब तक इच्छित आवश्यकता की संतुष्टि पूर्ण नहीं हो जाती।

25. (A) 1 और 2
तनाव एक बहुआयामी घटना है जिसमें किसी मांगपूर्ण स्थिति के प्रति शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दोनों प्रकार की अनुक्रियाएं शामिल होती हैं। इससे निपटने हेतु व्यक्ति जिन विचारों और क्रियाओं का उपयोग करता है, उन्हें मुकाबला करने की रणनीतियाँ कहा जाता है। तनाव प्रबंधन का अर्थ केवल तनाव के स्रोतों को पूरी तरह मिटाना नहीं है, क्योंकि जीवन में कुछ तनाव अपरिहार्य हैं। इसका मुख्य लक्ष्य तनावपूर्ण स्थितियों के साथ प्रभावी ढंग से सामंजस्य बिठाना और उनके नकारात्मक प्रभावों को नियंत्रित करना है।

26. (A) द्वि-कारक सिद्धांत।
स्टेनली शैक्टर और जेरोम सिंगर द्वारा विकसित संवेग के सिद्धांत को द्वि-कारक सिद्धांत कहा जाता है क्योंकि यह दो अनिवार्य तत्वों पर आधारित है। पहला कारक शारीरिक उत्तेजना है, जो शरीर को सक्रिय करती है, और दूसरा कारक संज्ञानात्मक पहचान है, जो उस उत्तेजना को अर्थ प्रदान करती है। इस सिद्धांत के अनुसार, संवेगात्मक अनुभव केवल तभी पूर्ण होता है जब व्यक्ति अपनी शारीरिक सक्रियता को परिस्थिति के संदर्भ में समझते हुए उसे क्रोध, भय या खुशी जैसा नाम देता है।

27. (D) शारीरिक आवश्यकताएं।
अब्राहम मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम पिरामिड में सबसे निचले और बुनियादी स्तर पर शारीरिक आवश्यकताओं को रखा गया है। इनमें भोजन, जल, निद्रा और वायु जैसी अनिवार्य जैविक जरूरतें शामिल हैं जो किसी भी जीव के जीवित रहने हेतु प्राथमिक रूप से आवश्यक हैं। मास्लो का मानना था कि जब तक ये आधारभूत आवश्यकताएं पूरी नहीं हो जातीं, तब तक व्यक्ति सुरक्षा या आत्म-सम्मान जैसी उच्च स्तर की आवश्यकताओं के बारे में विचार नहीं कर सकता। ये जीवन की अनिवार्य आधारशिला हैं।

28. (B) विकास ऐतिहासिक संदर्भ से स्वतंत्र है।
विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो कभी नहीं रुकती और पूरे जीवन-काल में बहुआयामी रूप में चलती रहती है। यह प्रक्रिया केवल वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें समय के साथ होने वाले ह्रास और परिवर्तन भी शामिल हैं। महत्वपूर्ण रूप से, विकास कभी भी ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भों से अलग नहीं होता। किसी व्यक्ति का विकास उस समय की परिस्थितियों, संस्कृति और सामाजिक घटनाओं से गहराई से

असंभव हो सकता है। यह सिद्धांत दर्शाता है कि विकास की कुछ महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं हेतु अनुभवों का समय और उनकी उपस्थिति अत्यंत निर्णायक भूमिका निभाती है।

10. (A) केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के सक्रियण की मात्रा।
लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत संवेग की तीव्रता को सीधे तौर पर मस्तिष्क और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के उत्तेजना स्तर से जोड़ता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, संवेगात्मक अनुभव एक निरंतरता पर आधारित होते हैं जो निम्न सक्रियण से लेकर उच्च उत्तेजना तक फैले होते हैं। जब तंत्रिका तंत्र की सक्रियता बढ़ती है, तो संवेग का अनुभव भी उतना ही तीव्र होता जाता है। यह सिद्धांत बताता है कि शारीरिक ऊर्जा ही संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं का मुख्य आधार है।

11. (D) गैल्वेनिक त्वचा प्रतिक्रिया में परिवर्तन।
संवेग के शारीरिक सह-संबंधी वे मापनीय शारीरिक परिवर्तन हैं जो संवेगात्मक उत्तेजना के साथ स्वतः घटित होते हैं। गैल्वेनिक त्वचा प्रतिक्रिया पसीने की ग्रंथियों की सक्रियता के माध्यम से त्वचा की विद्युत चालकता में होने वाले बदलाव को दर्शाती है। यह परिवर्तन सीधे तौर पर स्वायत्त तंत्रिका तंत्र की गतिविधियों से जुड़ा होता है। जब कोई व्यक्ति संवेगात्मक रुप से उत्तेजित होता है, तो ये शारीरिक संकेत उसकी आंतरिक अवस्था के प्रत्यक्ष और वस्तुनिष्ठ प्रमाण के रूप में कार्य करते हैं।

12. (B) अब्राहम मास्लो।
आवश्यकताओं के पदानुक्रम का सिद्धांत प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक अब्राहम मास्लो द्वारा प्रतिपादित किया गया था, जो मानवीय अभिप्रेरणा को समझने का एक आधारभूत ढांचा प्रदान करता है। उन्होंने मानवीय आवश्यकताओं को एक पिरामिड के रूप में व्यवस्थित किया, जिसमें सबसे नीचे बुनियादी शारीरिक आवश्यकताएं और सबसे ऊपर आत्म-सिद्धि की उच्च आवश्यकता को रखा गया। यह सिद्धांत सुझाव देता है कि व्यक्ति उच्च स्तर की आवश्यकताओं की ओर तभी बढ़ता है जब उसकी बुनियादी जरूरतें संतुष्ट हो जाती हैं।

13. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
परिवार को समाजीकरण का प्राथमिक कारक इसलिए माना जाता है क्योंकि यह वह प्रथम सामाजिक वातावरण है जिसमें बच्चा जन्म लेता है और विकसित होता है। यहाँ बच्चा न केवल बुनियादी जीवन कौशल सीखता है, बल्कि भाषा, आचार-व्यवहार और मौलिक नैतिक मूल्यों को भी आत्मसात करता है। परिवार के साथ होने वाली यह शुरुआती अंतःक्रिया व्यक्ति के भविष्य के सामाजिक दृष्टिकोण और व्यक्तित्व की नींव रखती है। इसीलिए परिवार की भूमिका समाजीकरण में सबसे महत्वपूर्ण है।

14. (D) अंतर्नोद सिद्धांत आंतरिक अवस्थाओं पर बल देता है जबकि प्रोत्साहन सिद्धांत बाहरी उद्दीपकों पर बल देता है।
अभिप्रेरणा के ये दो सिद्धांत व्यवहार को प्रेरित करने वाले कारकों के स्रोत के आधार पर भिन्न हैं। अंतर्नोद सिद्धांत जैविक आवश्यकताओं से उत्पन्न आंतरिक तनाव पर ध्यान केंद्रित करता है जो व्यक्ति को कार्य करने हेतु भीतर से धकेलता है। इसके विपरीत, प्रोत्साहन सिद्धांत बाहरी वातावरण में मौजूद पुरस्कारों या लक्ष्यों के आकर्षण पर बल देता है जो व्यक्ति को अपनी ओर खींचते हैं। इस प्रकार, अभिप्रेरणा आंतरिक धक्के और बाहरी खिंचाव के संतुलित मेल का परिणाम होती है।

15. (A) संवेगात्मक अनुभव किसी स्थिति के मूल्यांकन पर निर्भर करता है।
संवेग के संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांतों का मूल विचार यह है कि कोई भी घटना स्वयं में संवेग पैदा नहीं करती, बल्कि व्यक्ति उस घटना की व्याख्या कैसे करता है, वह महत्वपूर्ण है। जब हम किसी परिस्थिति का सामना करते हैं, तो हमारा मस्तिष्क उसका आकलन करता है कि वह हमारे कल्याण हेतु लाभदायक है या हानिकारक। यह मानसिक व्याख्या ही निर्धारित करती है कि हमें खुशी, क्रोध या भय जैसे संवेगों में से किस विशिष्ट अनुभव को महसूस करना चाहिए।

16. (B) केवल आनंद के लिए पुस्तक पढ़ना।
आंतरिक अभिप्रेरणा उस व्यवहार को संदर्भित करती है जो व्यक्ति अपनी निजी संतुष्टि, जिज्ञासा या कार्य के प्रति स्वाभाविक रुचि के कारण करता है। जब कोई छात्र केवल खुशी प्राप्त करने हेतु पुस्तक पढ़ता है, तो वह किसी बाहरी पुरस्कार या दबाव से प्रभावित नहीं होता। यहाँ कार्य स्वयं में एक पुरस्कार बन जाता है। इस प्रकार की अभिप्रेरणा में व्यक्ति की स्वयं की इच्छा सबसे प्रबल चालक होती है, जो उसे निरंतर सक्रिय बनाए रखने में सहायक होती है।

17. (B) तनाव का प्रबंधन।
तनाव से निपटने की रणनीतियाँ उन सचेत और सक्रिय प्रयासों की श्रेणी का हिस्सा हैं जिनका उपयोग व्यक्ति तनावपूर्ण स्थितियों के प्रभाव को कम करने हेतु करता है। ये रणनीतियाँ व्यक्ति को प्रतिकूल परिस्थितियों के अनुकूल बनने और मानसिक संतुलन बनाए रखने में सक्षम बनाती हैं। तनाव प्रबंधन के अंतर्गत समस्या के समाधान या संवेगात्मक नियमन हेतु विभिन्न तकनीकों को अपनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य तनाव को पूरी तरह समाप्त करने के बजाय उसे नियंत्रित और सहन करने योग्य रखना है।

18. (A) यह हृदय गति और श्वसन जैसी अनैच्छिक शारीरिक क्रियाओं को नियंत्रित करता है।
संवेग की प्रक्रिया में स्वायत्त तंत्रिका तंत्र एक अत्यंत महत्वपूर्ण नियामक की भूमिका निभाता है। यह तंत्र शरीर की उन आंतरिक क्रियाओं का संचालन करता है जो हमारे सचेत नियंत्रण में नहीं होतीं। जब हम किसी तीव्र संवेग का अनुभव करते हैं, तो यह तंत्र शरीर की ऊर्जा को व्यवस्थित करता है और हृदय की धड़कन तथा श्वसन गति जैसे शारीरिक सह-संबंधों को तीव्रता प्रदान करता है। यह शारीरिक तैयारी व्यक्ति को बाहरी उद्दीपकों के प्रति त्वरित अनुक्रिया देने में सहायक होती है।

19. (C) यह संज्ञानात्मक विकास और सामाजिक अनुभवों से प्रभावित होता है।
नैतिक विकास एक जटिल और प्रगतिशील प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति सही और गलत के बीच भेद करना सीखता

38. (A) औपचारिक ज्ञान और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रसारित करना।
समाजीकरण के एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में विद्यालय की भूमिका मुख्य रूप से शैक्षणिक और सामाजिक होती है। विद्यालय न केवल विद्यार्थियों को औपचारिक शैक्षणिक ज्ञान और कौशल प्रदान करते हैं, बल्कि उन्हें समाज के व्यापक नियमों, अनुशासन और सांस्कृतिक विरासत से भी परिचित कराते हैं। यहाँ बच्चे परिवार के छोटे दायरे से बाहर निकलकर एक वृहद सामाजिक परिवेश में अंतःक्रिया करना सीखते हैं। यह संस्थान नागरिकों को उनके भविष्य के सामाजिक और व्यावसायिक उत्तरदायित्वों को निभाने हेतु तैयार करता है।

39. (C) व्यक्तिगत अर्थ संवेग का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।
रिचर्ड लाजरस से जुड़ा संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि संवेगों का उद्भव किसी स्थिति के हमारे व्यक्तिगत अर्थ और मूल्यांकन पर आधारित होता है। हमारे लिए कोई घटना कितनी महत्वपूर्ण या प्रासंगिक है, यही हमारे संवेगात्मक अनुभव की प्रकृति तय करती है। यदि हम किसी स्थिति को स्वयं के लिए खतरे के रूप में देखते हैं, तो भय उत्पन्न होगा, जबकि उसी स्थिति को लाभ के रूप में देखने पर प्रसन्नता होगी। इस प्रकार, हमारी सोच ही संवेगों की प्राथमिक जननी है।

40. (A) एक प्रोत्साहन।
अभिप्रेरणा के संदर्भ में बोनस एक प्रोत्साहन का उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि यह एक बाहरी पुरस्कार है जो कर्मचारी को अधिक मेहनत करने हेतु आकर्षित करता है। प्रोत्साहन वे बाहरी उद्दीपक होते हैं जो व्यवहार को एक विशिष्ट दिशा में खींचते हैं और उसकी तीव्रता को बढ़ाते हैं। जहाँ आंतरिक आवश्यकताएं व्यक्ति को धकेलती हैं, वहीं बोनस जैसे प्रोत्साहन उसे लक्ष्य की ओर खींचते हैं। यह स्पष्ट करता है कि बाहरी वातावरण में मौजूद सकारात्मक परिणाम मानवीय कार्यक्षमता और अभिप्रेरणा को कैसे प्रभावित करते हैं।

41. (A) 2, 3, 4, 1, 5
अब्राहम मास्लो के आवश्यकताओं के पदानुक्रम में एक निश्चित तार्किक क्रम पाया जाता है। सबसे पहले बुनियादी शारीरिक आवश्यकताएं आती हैं, जिसके बाद सुरक्षा की आवश्यकता प्रभावी होती है। इन दोनों के संतुष्ट होने पर व्यक्ति प्रेम और अपनेपन की तलाश करता है। सामाजिक संबंधों के बाद आत्म-सम्मान और दूसरों से मान्यता प्राप्त करने की इच्छा प्रबल होती है। अंत में, जब ये सभी निम्न स्तर की आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं, तब व्यक्ति आत्म-सिद्धि के उच्चतम लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है।

42. (B) प्रतिबलक मांगें हैं; तनाव उन पर होने वाली प्रतिक्रिया है।
तनाव और प्रतिबलक के बीच का संबंध कारण और प्रभाव जैसा होता है। प्रतिबलक वे बाह्य स्थितियाँ, घटनाएँ या आंतरिक मांगें हैं जो व्यक्ति की सहनशक्ति और संसाधनों को चुनौती देती हैं। तनाव उस स्थिति के प्रति शरीर और मन की एक व्यापक अनुक्रिया है, जिसमें शारीरिक उत्तेजना और मनोवैज्ञानिक दबाव दोनों शामिल होते हैं। अतः प्रतिबलक वह कारक है जो तनाव की प्रक्रिया को सक्रिय करता है। व्यक्ति की प्रतिक्रिया की तीव्रता इस बात पर निर्भर करती है कि वह उन मांगों का सामना कैसे करता है।

43. (C) नींद से लेकर उत्तेजना तक का सक्रियण सातत्य।
लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत संवेग को चेतना और शारीरिक सक्रियता के एक व्यापक सातत्य के रूप में देखता है। यह सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि हमारा तंत्रिका तंत्र किस प्रकार निम्नतम सक्रियता, जैसे गहरी नींद, से लेकर उच्चतम सक्रियता, जैसे तीव्र संवेग या घबराहट, के बीच कार्य करता है। संवेग की प्रकृति और उसकी तीव्रता इस बात पर निर्भर करती है कि मस्तिष्क के ऊर्जा केंद्र किस स्तर पर सक्रिय हैं। यह दृष्टिकोण संवेग को स्नायु तंत्र की उत्तेजना के भौतिक प्रकटीकरण के रूप में परिभाषित करता है।

44. (D) विकास आनुवंशिकता और पर्यावरण का परिणाम है।
मानव विकास एक जटिल प्रक्रिया है जो दो मुख्य स्तंभों पर टिकी है: आनुवंशिकता और पर्यावरण। आनुवंशिकता व्यक्ति को वे जैविक क्षमताएं और सीमाएं प्रदान करती है जो उसे माता-पिता से विरासत में मिलती हैं, जबकि पर्यावरण उन क्षमताओं को आकार देने और विकसित करने हेतु अवसर तथा अनुभव प्रदान करता है। विकास का कोई भी पहलू इन दोनों की निरंतर अंतःक्रिया से अछूता नहीं है। यह सहयोग ही निर्धारित करता है कि एक व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से जीवन में किस प्रकार विकसित होगा।

45. (C) प्राथमिक या जैविक प्रेरक।
भूख, प्यास और तापमान नियंत्रण जैसी आवश्यकताएं प्राथमिक या जैविक प्रेरक कहलाती हैं क्योंकि ये किसी भी जीव के जीवित रहने हेतु अनिवार्य हैं। ये प्रेरक जन्मजात होते हैं और इन्हें सीखने की आवश्यकता नहीं होती। इनका सीधा संबंध शरीर के समस्थापन और जैविक संतुलन को बनाए रखने से होता है। जब शरीर में इन बुनियादी तत्वों की कमी होती है, तो वे एक शक्तिशाली आंतरिक दबाव उत्पन्न करते हैं जो व्यक्ति को तब तक सक्रिय रखता है जब तक कि वे आवश्यकताएं पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं हो जातीं।

46. (B) सही और गलत के प्रति व्यक्ति की समझ में परिवर्तन।
नैतिक विकास का तात्पर्य उस क्रमिक प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के नियमों, न्याय और निष्पक्षता के सिद्धांतों को समझना शुरू करता है। इसमें केवल नियमों का पालन करना शामिल नहीं है, बल्कि इसके पीछे के तर्कों और मूल्यों की गहरी समझ भी विकसित होती है। जैसे-जैसे व्यक्ति परिपक्व होता है, उसके सही और गलत के निर्णय स्वार्थ से हटकर सार्वभौमिक सिद्धांतों और दूसरों के कल्याण की ओर बढ़ने लगते हैं। यह विकास व्यक्ति के सामाजिक आचरण और चरित्र निर्माण का अभिन्न अंग है।

47. (D) तनाव से निपटने की रणनीतियाँ।
समस्या-केंद्रित और संवेग-केंद्रित मुकाबला तनाव प्रबंधन की दो मुख्य विधाएं हैं। समस्या-केंद्रित रणनीति में व्यक्ति तनाव के वास्तविक स्रोत को बदलने या हल करने का प्रयास करता है, जबकि संवेग-केंद्रित रणनीति में वह तनाव से उत्पन्न

66. (A) बत्तख के बच्चों का अंडे से निकलने के बाद लगाव बनाना।
बत्तख के बच्चों में इम्प्रिंटिंग की प्रक्रिया क्रांतिक अवधि का एक सटीक उदाहरण है, जहाँ वे जन्म के तुरंत बाद चलने वाली पहली वस्तु के प्रति गहरा लगाव विकसित कर लेते हैं। यह व्यवहार एक बहुत ही सीमित और विशिष्ट समय सीमा के भीतर होना अनिवार्य है। यदि इस अवधि के दौरान उन्हें कोई गतिशील वस्तु नहीं दिखती, तो यह सामाजिक जुड़ाव भविष्य में विकसित होना कठिन हो जाता है। यह जैविक रूप से निर्धारित समय संवेदनशीलता विकास के कुछ पहलुओं हेतु अनुभवों के महत्व को पूरी तरह स्पष्ट करती है।

67. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
अभिप्रेरणा और संवेग दोनों ही मानव व्यवहार को सक्रिय करने वाले अभिन्न अंग हैं। अभिप्रेरणा वह शक्ति है जो लक्ष्यों की ओर व्यवहार को दिशा और ऊर्जा प्रदान करती है, जिससे व्यक्ति निरंतर कार्यशील रहता है। वहीं संवेग महसूस करने की एक व्यक्तिगत और आंतरिक अवस्था है, जिसमें शारीरिक परिवर्तन और मानसिक अनुभव एक साथ घटित होते हैं। ये दोनों प्रक्रियाएं अक्सर एक-दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करती हैं, जहाँ संवेग हमारे व्यवहार को प्रेरित कर सकते हैं और अभिप्रेरणा हमारे संवेगात्मक अनुभवों को गहराई प्रदान करती है।

68. (D) कुशल कार्य प्रदर्शन।
लिंड्सले के सक्रियण सिद्धांत के अनुसार, उत्तेजना का स्तर और कार्य प्रदर्शन के बीच एक गहरा संबंध होता है। बहुत कम उत्तेजना से व्यक्ति ऊब या सुस्ती महसूस करता है, जबकि बहुत अधिक उत्तेजना घबराहट पैदा कर प्रदर्शन को बिगाड़ सकती है। उत्तेजना का एक मध्यम स्तर ही वह बिंदु है जहाँ व्यक्ति की एकाग्रता और ऊर्जा अपने शिखर पर होती है, जिससे कार्य प्रदर्शन सबसे अधिक कुशल और प्रभावी होता है। यह स्पष्ट करता है कि संवेगात्मक सक्रियता का सही संतुलन मानसिक दक्षता हेतु अनिवार्य है।

69. (C) यह एक गतिशील अंतःक्रियात्मक प्रक्रिया है।
तनाव को केवल एक स्थिर स्थिति के रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह व्यक्ति और उसके वातावरण के बीच होने वाली एक निरंतर और गतिशील अंतःक्रिया है। यह प्रक्रिया तब शुरु होती है जब कोई बाह्य घटना व्यक्ति की क्षमताओं को चुनौती देती है और व्यक्ति उस पर शारीरिक तथा मानसिक रूप से प्रतिक्रिया करता है। इसमें मूल्यांकन, भावनाएं और मुकाबले की रणनीतियाँ शामिल होती हैं जो समय के साथ बदलती रहती हैं। अतः तनाव एक जीवंत अनुभव है जो व्यक्ति के बोध के साथ निरंतर विकसित होता है।

70. (B) स्तर 1: शारीरिक।
मास्लो के आवश्यकताओं के पदानुक्रम में भोजन, जल और निद्रा जैसी बुनियादी जैविक जरूरतों को प्रथम स्तर पर रखा गया है। इन्हें शारीरिक आवश्यकताएं कहा जाता है क्योंकि ये मानव जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने हेतु अनिवार्य आधारशिला हैं। मास्लो का तर्क था कि जब तक शरीर की ये प्राथमिक मांगें पूरी नहीं हो जातीं, तब तक व्यक्ति सुरक्षा, सामाजिक जुड़ाव या आत्म-सम्मान जैसे उच्च स्तरों के बारे में गंभीरता से विचार नहीं कर पाता। ये आवश्यकताएं मानवीय अभिप्रेरणा का सबसे शक्तिशाली और प्राथमिक स्रोत होती हैं।

71. (D) साथियों द्वारा समाजीकरण।
किशोरावस्था के दौरान व्यक्ति पर उसके मित्र समूह और साथियों का प्रभाव अत्यधिक बढ़ जाता है, जो समाजीकरण का एक प्रमुख आयाम है। इस चरण में किशोर अपने साथियों से स्वीकृत होने और समूह का हिस्सा बनने हेतु उनकी पसंद के कपड़े और संगीत अपनाते हैं। यह प्रक्रिया उन्हें अपनी एक अलग सामाजिक पहचान बनाने और नए सामाजिक मानदंडों को सीखने में मदद करती है। साथियों के साथ होने वाली यह अंतःक्रिया सामाजिक विकास और समूह निष्ठा की भावना को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

72. (A) व्यवहार पर्यावरणीय उद्दीपकों द्वारा खींचा जाता है।
अभिप्रेरणा के प्रोत्साहन सिद्धांत का मुख्य विचार यह है कि हमारा व्यवहार बाहरी वातावरण में मौजूद आकर्षक लक्ष्यों या पुरस्कारों द्वारा संचालित होता है। ये प्रोत्साहन व्यक्ति को अपनी ओर खींचते हैं, जिससे वह किसी कार्य को करने हेतु प्रेरित होता है। जहाँ कुछ सिद्धांत आंतरिक दबाव पर ध्यान देते हैं, वहीं यह दृष्टिकोण बाहरी दुनिया की उन वस्तुओं और परिणामों के महत्व को रेखांकित करता है जो हमें सुख प्रदान करती हैं या लाभ पहुँचाती हैं। इस प्रकार, अभिप्रेरणा बाहरी उद्दीपकों के प्रति हमारी प्रतिक्रिया है।

73. (C) तनाव के प्रति शारीरिक प्रतिक्रिया।
'लड़ो या भागो' प्रतिक्रिया तनावपूर्ण या खतरनाक स्थितियों के प्रति शरीर की एक मौलिक और स्वचालित जैविक अनुक्रिया है। जब मस्तिष्क किसी खतरे का अनुभव करता है, तो वह स्वायत्त तंत्रिका तंत्र को सक्रिय कर देता है, जिससे हृदय गति बढ़ जाती है, मांसपेशियां तन जाती हैं और शरीर में ऊर्जा का संचार होता है। यह प्रतिक्रिया व्यक्ति को संकट का सामना करने या उससे बचने हेतु शारीरिक रूप से तैयार करती है। यह अस्तित्व की रक्षा हेतु मानव शरीर में विकसित एक अत्यंत प्राचीन सुरक्षा तंत्र है।

74. (D) वे घटना की व्याख्या अलग-अलग तरीके से करते हैं।
संवेग के संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत के अनुसार, संवेगात्मक अनुभव का मुख्य आधार यह है कि व्यक्ति किसी घटना को किस दृष्टि से देखता है। एक ही परिस्थिति दो अलग-अलग लोगों हेतु अलग-अलग अर्थ रख सकती है। यदि एक व्यक्ति उसे चुनौती के रूप में देखता है, तो वह उत्साह महसूस करेगा, जबकि दूसरा उसे खतरे के रूप में देखकर भयभीत हो सकता है। यह स्पष्ट करता है कि हमारी आंतरिक सोच और व्याख्या की प्रक्रिया ही निर्धारित करती है कि कोई बाह्य घटना किस प्रकार का संवेग उत्पन्न करेगी।

75. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बेरोजगारी केवल आर्थिक संकट नहीं है, बल्कि यह एक गहरा मनोवैज्ञानिक तनाव भी है क्योंकि यह व्यक्ति की सामाजिक पहचान और आत्म-सम्मान को सीधे प्रभावित करती है। जब कोई व्यक्ति अपनी आजीविका खो देता है, तो वह इसे अपनी

और अस्थिरता बनाए रखती है, जो उसे उच्च उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रेरित होने से रोकती है। अतः निचले स्तर की तृप्ति ही उच्च-स्तरीय अभिप्रेरणा का आधार बनती है।

57. (C) स्वायत्त तंत्रिका तंत्र।
संवेग के शारीरिक पक्ष में स्वायत्त तंत्रिका तंत्र की भूमिका सबसे प्रत्यक्ष और महत्वपूर्ण होती है। यह तंत्र शरीर की उन अनैच्छिक क्रियाओं को नियंत्रित करता है जो संवेगात्मक उत्तेजना के दौरान तीव्रता से बदलती हैं, जैसे हृदय गति, श्वसन दर और पसीने का स्राव। इसकी दो शाखाएं, अनुकम्पी और परानुकम्पी, शरीर को उत्तेजित करने और पुनः शांत करने का कार्य करती हैं। यह तंत्र सुनिश्चित करता है कि शरीर संवेगात्मक परिस्थितियों के अनुरूप आवश्यक ऊर्जा और प्रतिक्रिया देने हेतु जैविक रूप से पूरी तरह तैयार रहे।

58. (D) परिवार।
परिवार समाजीकरण का सबसे पहला और आधारभूत कारक है जहाँ बच्चा प्रारंभिक सामाजिक व्यवहार और नैतिक मूल्य सीखता है। खिलौने साझा करना जैसे छोटे कार्य बच्चे के सामाजिक कौशल और सहानुभूति के विकास की शुरुआत को दर्शाते हैं, जो माता-पिता के मार्गदर्शन में होता है। परिवार के भीतर होने वाली ये शुरुआती अंतःक्रियाएं बच्चे के भविष्य के सामाजिक संबंधों और उसके व्यक्तित्व की नींव रखती हैं। यहीं से बच्चा दूसरों के साथ तालमेल बिठाने और समाज की अपेक्षित भूमिकाओं को निभाना शुरु करता है।

59. (A) एक अंतर्नोद।
जब शरीर में ऊर्जा की कमी होती है, तो यह भूख के रूप में एक आंतरिक तनाव पैदा करती है, जिसे मनोविज्ञान में अंतर्नोद कहा जाता है। यह अंतर्नोद व्यक्ति को भोजन खोजने और उसे ग्रहण करने हेतु सक्रिय करता है ताकि शरीर का जैविक संतुलन या समस्थापन बहाल हो सके। यह व्यवहार एक आंतरिक कमी से संचालित होता है जो जीव को तब तक गतिशील बनाए रखता है जब तक कि वह आवश्यकता पूरी न हो जाए। यह प्रक्रिया जैविक उत्तरजीविता को सुनिश्चित करने का एक प्राकृतिक और प्रभावी तंत्र है।

60. (B) शैक्टर-सिंगर सिद्धांत।
शैक्टर-सिंगर सिद्धांत के अनुसार, संवेगात्मक अनुभव की तीव्रता शारीरिक उत्तेजना के स्तर पर निर्भर करती है, लेकिन उस संवेग की विशिष्ट पहचान हमारे संज्ञानात्मक मूल्यांकन से आती है। यदि हम शारीरिक रूप से उत्तेजित हैं, तो हम अपने आसपास के वातावरण के संकेतों का उपयोग करते हैं ताकि यह समझ सकें कि हम क्या महसूस कर रहे हैं। इस प्रकार, एक ही शारीरिक सक्रियता को परिस्थिति के आधार पर क्रोध, खुशी या भय के रूप में अनुभव किया जा सकता है। यह सिद्धांत संवेग में बुद्धि के गहरे संबंध को दर्शाता है।

61. (D) प्रतिबलक के अस्तित्व को पूरी तरह से अनदेखा करना।
तनाव प्रबंधन में समस्या-केंद्रित मुकाबला, संवेग-केंद्रित मुकाबला और सामाजिक समर्थन प्राप्त करना जैसी सक्रिय और प्रभावी रणनीतियाँ शामिल हैं। ये तकनीकें व्यक्ति को तनावपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने और उनके प्रभावों को नियंत्रित करने में मदद करती हैं। इसके विपरीत, प्रतिबलक के अस्तित्व को पूरी तरह से अनदेखा करना एक दीर्घकालिक समाधान नहीं है, बल्कि यह स्थिति को और अधिक बिगाड़ सकता है। प्रभावी मुकाबला वह है जिसमें वास्तविकता को स्वीकार करते हुए उसके प्रति उचित मानसिक या व्यावहारिक अनुक्रिया दी जाती है।

62. (A) शीर्ष-पुच्छीय सिद्धांत।
विकास का शीर्ष-पुच्छीय सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि शारीरिक वृद्धि और नियंत्रण का क्रम सिर से शुरु होकर नीचे पैरों की ओर बढ़ता है। जन्म के बाद बच्चा सबसे पहले अपने सिर और गर्दन की मांसपेशियों पर नियंत्रण पाना सीखता है, फिर धड़ पर और अंत में अपने पैरों का उपयोग करना शुरु करता है। यह अनुक्रम जैविक रूप से निर्धारित होता है और मानव विकास के व्यवस्थित स्वरूप को दर्शाता है। यह सिद्धांत यह समझने में मदद करता है कि बच्चों में गति कौशल का विकास एक निश्चित दिशा में कैसे होता है।

63. (C) आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत - उत्तेजना।
अभिप्रेरणा के सिद्धांतों में प्रत्येक की अपनी विशिष्ट मुख्य अवधारणा है। मूलप्रवृत्ति सिद्धांत जन्मजात व्यवहार प्रतिरुपों पर आधारित है, अंतर्नोद सिद्धांत समस्थापन पर केंद्रित है, और प्रोत्साहन सिद्धांत बाहरी उद्दीपकों के महत्व को बताता है। मास्लो का आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत उत्तेजना के बजाय आवश्यकताओं की वरीयता और आत्म-सिद्धि की दिशा में क्रमिक प्रगति पर बल देता है। उत्तेजना मुख्य रूप से सक्रियण सिद्धांतों से जुड़ी अवधारणा है। अतः आवश्यकताओं के पिरामिड में संतुष्टि को अधिक महत्व दिया गया है।

64. (B) द्वितीयक मूल्यांकन।
तनाव की प्रक्रिया में द्वितीयक मूल्यांकन वह महत्वपूर्ण चरण है जहाँ व्यक्ति यह आकलन करता है कि उसके पास तनावपूर्ण स्थिति का सामना करने हेतु कौन-से संसाधन और विकल्प उपलब्ध हैं। प्राथमिक मूल्यांकन में घटना के खतरे का पता लगाने के बाद, व्यक्ति यह सोचता है कि क्या वह उस स्थिति को नियंत्रित कर सकता है। यह मूल्यांकन ही यह तय करता है कि व्यक्ति तनाव से निपटने हेतु कौन-सी रणनीति अपनाएगा। इस प्रकार, अपनी क्षमताओं पर विश्वास ही तनाव के वास्तविक अनुभव और प्रबंधन को प्रभावित करता है।

65. (B) टेलीविजन और जन मंच।
समाजीकरण के एक कारक के रूप में संचार माध्यम मुख्य रूप से टेलीविजन, सामाजिक माध्यम और इंटरनेट जैसे जन प्रसारण माध्यमों के माध्यम से अपना प्रभाव डालते हैं। ये मंच न केवल मनोरंजन प्रदान करते हैं, बल्कि वे समाज के सांस्कृतिक मूल्यों, भाषा और वैश्विक दृष्टिकोणों को भी प्रसारित करते हैं। इनके माध्यम से व्यक्ति उन भूमिकाओं और व्यवहारों को देखता और सीखता है जो उसके तत्काल सामाजिक घेरे से बाहर के होते हैं। यह व्यापक प्रदर्शन व्यक्ति की सोच और दुनिया की समझ को आकार देने में अत्यंत शक्तिशाली है।

103. (D) यह सीखना कि व्यक्तिवाद मूल्यवान है।
समाजीकरण में संस्कृति का सबसे गहरा प्रभाव व्यक्ति के विश्वदृष्टिकोण और मौलिक मूल्यों के निर्माण पर पड़ता है। उदाहरण के लिए, कुछ संस्कृतियाँ समूह के हितों को प्राथमिकता देती हैं, जबकि अन्य व्यक्तिवाद और निजी स्वतंत्रता को सर्वोपरि मानती हैं। यह सीखना कि व्यक्तिवाद एक महत्वपूर्ण मूल्य है, उस विशिष्ट सांस्कृतिक परिवेश का परिणाम है जिसमें व्यक्ति का पालन-पोषण हुआ है। संस्कृति हमारे सोचने के तरीके, प्राथमिकताओं और सामाजिक व्यवहार को एक व्यापक ढांचा प्रदान करती है, जो हमारे व्यक्तित्व का एक अभिन्न अंग बन जाता है।

104. (B) 2, 3, 4, 1
मानव विकास की अवधियाँ एक निश्चित जैविक और सामाजिक क्रम का अनुसरण करती हैं। जन्म के बाद की पहली अवस्था शैशवावस्था होती है, जिसमें बुनियादी शारीरिक और मानसिक विकास शुरु होता है। इसके बाद प्रारंभिक बाल्यकाल आता है जहाँ भाषा और समाजीकरण की नींव पड़ती है। मध्य बाल्यकाल में बच्चा विद्यालय जाना और सामाजिक नियमों को गहराई से समझना शुरु करता है। अंत में किशोरावस्था आती है, जो बचपन और वयस्कता के बीच का संक्रमण काल है। यह कालानुक्रमिक क्रम विकास की निरंतरता और व्यवस्थित प्रकृति को दर्शाता है।

105. (B) पीने के लिए पानी खोजना।
अब्राहम मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम के अनुसार, मनुष्य का व्यवहार हमेशा उस समय की सबसे प्रबल और अपूर्ण आवश्यकता से संचालित होता है। रेगिस्तान में खोए हुए व्यक्ति हेतु जीवित रहना प्राथमिकता है, इसलिए उसकी सबसे बुनियादी शारीरिक आवश्यकता, जैसे प्यास बुझाना, अन्य सभी उच्च लक्ष्यों जैसे सम्मान या आत्म-सिद्धि को पीछे छोड़ देगी। जब तक शरीर की प्राथमिक जैविक मांगें पूरी नहीं हो जातीं, व्यक्ति का ध्यान उच्च स्तर की सामाजिक आवश्यकताओं की ओर नहीं जा सकता क्योंकि अस्तित्व ही संकट में होता है।

106. (D) संवेग में शरीर क्रिया विज्ञान पहले आता है।
यह विचार संवेग के उन प्रारंभिक सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व करता है जो मानते थे कि शारीरिक प्रतिक्रिया ही संवेगात्मक अनुभव की जननी है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, हम पहले उत्तेजना के प्रति शारीरिक रूप से अनुक्रिया करते हैं, जैसे कांपना, और फिर उस शारीरिक बदलाव को महसूस करने पर हमें डर जैसे संवेग का बोध होता है। यह अवधारणा इस बात पर जोर देती है कि संवेग मस्तिष्क की उपज होने से पहले शरीर की एक जैविक घटना है। यह शारीरिक पक्ष को अनुभव का आधारभूत कारण मानता है।

107. (A) वे शारीरिक और मनोवैज्ञानिक होती हैं।
तनाव के प्रति होने वाली प्रतिक्रियाएं जटिल और बहुआयामी होती हैं, जिनमें शरीर और मन दोनों एक साथ सक्रिय होते हैं। शारीरिक स्तर पर, इसमें हृदय गति का बढ़ना और हार्मोन का स्राव शामिल है, जो शरीर को सक्रिय करते हैं। मनोवैज्ञानिक स्तर पर, व्यक्ति चिंता, चिड़चिड़ापन या ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई महसूस कर सकता है। ये दोनों पक्ष आपस में जुड़े हुए हैं, जहाँ मानसिक तनाव शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है और शारीरिक थकान मानसिक स्थिति को कमजोर बनाती है। अतः तनाव एक समग्र अनुभव है।

108. (C) सम्मान की आवश्यकताएं।
मास्लो के अनुसार, जब व्यक्ति की बुनियादी, सुरक्षा और सामाजिक आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं, तो उसमें सम्मान की आवश्यकता जागृत होती है। इसमें दो पहलू शामिल हैं: स्वयं का मूल्य महसूस करना और दूसरों से पहचान तथा प्रशंसा प्राप्त करना। व्यक्ति अपनी उपलब्धियों के माध्यम से समाज में एक विशिष्ट स्थान बनाना चाहता है ताकि वह सक्षम और मूल्यवान महसूस कर सके। यह आवश्यकता व्यक्ति को निरंतर श्रेष्ठता की दिशा में कार्य करने हेतु अभिप्रेरित करती है, जिससे उसका आत्मविश्वास और सामाजिक प्रभाव बढ़ता है।

109. (A) केवल 3
अभिप्रेरणा और संवेग दोनों ही मानव व्यवहार के गतिशील तत्व हैं जो व्यक्ति को सक्रिय करने और उसके कार्यों को एक निश्चित दिशा प्रदान करने की क्षमता रखते हैं। संवेग अक्सर प्रेरकों के रूप में कार्य करते हैं, जैसे प्रेम किसी की सहायता करने हेतु प्रेरित कर सकता है। साथ ही, प्रेरक केवल जैविक आवश्यकताओं तक सीमित नहीं हैं, वे सामाजिक और व्यक्तिगत भी हो सकते हैं। ये दोनों प्रक्रियाएं मिलकर हमारे अनुभवों को ऊर्जित करती हैं और हमें वातावरण के साथ प्रभावी ढंग से अंतःक्रिया करने में सक्षम बनाती हैं।

110. (A) न्याय और निष्पक्षता के बारे में तर्क देना।
मनोविज्ञान में नैतिक विकास का मुख्य केंद्र इस बात का अध्ययन करना है कि व्यक्ति जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में न्याय, अधिकार और दूसरों के प्रति अपने कर्तव्यों के बारे में कैसे सोचता है। इसमें केवल नियमों को मानना शामिल नहीं है, बल्कि उन नियमों के पीछे निहित निष्पक्षता और मानवीय मूल्यों का विश्लेषण करना भी शामिल है। जैसे-जैसे व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमताएं बढ़ती हैं, उसके नैतिक तर्क अधिक व्यापक और अमूर्त सिद्धांतों पर आधारित होने लगते हैं। यह प्रक्रिया व्यक्ति के चरित्र निर्माण को आकार देती है।

111. (D) उत्तेजना सिद्धांत।
उत्तेजना सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि मनुष्य और अन्य जीव उत्तेजना के एक इष्टतम स्तर को बनाए रखने हेतु अभिप्रेरित होते हैं। जब उत्तेजना का स्तर बहुत कम हो जाता है, तो व्यक्ति ऊब महसूस करता है और रोमांचक खेलों जैसी गतिविधियों के माध्यम से उत्तेजना बढ़ाने का प्रयास करता है। यह सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि अभिप्रेरणा केवल तनाव कम करने हेतु नहीं होती, बल्कि कभी-कभी हम सक्रिय रूप से उत्तेजना और रोमांच की तलाश करते हैं ताकि मानसिक सक्रियता और आनंद बना रहे।

112. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
ये मनोवैज्ञानिक और उनके सिद्धांत संवेग तथा अभिप्रेरणा को समझने के आधारभूत स्तंभ हैं। अब्राहम मास्लो ने आवश्यकताओं

भविष्य की सुरक्षा हेतु एक गंभीर खतरे के रूप में मूल्यांकित करता है। यह मूल्यांकन शरीर और मन में तनाव की प्रतिक्रिया पैदा करता है, जिससे निपटने हेतु उसे भारी मानसिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। अतः घटना की नकारात्मक व्याख्या ही उसे एक शक्तिशाली प्रतिबलक बना देती है।

76. (A) 3, 2, 1, 4
तनाव की प्रतिक्रिया एक तार्किक और क्रमिक प्रक्रिया का अनुसरण करती है। सबसे पहले व्यक्ति का सामना किसी संभावित प्रतिबलक या घटना से होता है। इसके तुरंत बाद, वह मानसिक रूप से उस घटना का मूल्यांकन करता है कि वह उसके लिए कितनी खतरनाक है। यदि मूल्यांकन 'खतरा' निकलता है, तो शरीर में हृदय गति बढ़ने जैसे शारीरिक परिवर्तन शुरू हो जाते हैं। अंत में, व्यक्ति उस तनावपूर्ण स्थिति से निपटने हेतु किसी विशिष्ट व्यवहार या रणनीति को अपनाता है। यह चक्र तनाव प्रबंधन की गतिशील प्रक्रिया है।

77. (B) संयोजकता और तीव्रता।
संवेगों को वर्गीकृत करने हेतु मनोवैज्ञानिक अक्सर दो मुख्य आयामों का उपयोग करते हैं: संयोजकता और तीव्रता। संयोजकता यह बताती है कि कोई संवेग सुखद है या दुखद, जबकि तीव्रता यह दर्शाती है कि वह संवेग कितना प्रबल या कमजोर है। उदाहरण के लिए, प्रसन्नता एक उच्च सकारात्मक संयोजकता वाला संवेग है, जिसकी तीव्रता हल्की मुस्कान से लेकर अत्यधिक उत्साह तक हो सकती है। यह ढांचा संवेगात्मक अनुभवों की विविधता और गहराई को व्यवस्थित तरीके से समझने में शोधकर्ताओं की सहायता करता है।

78. (B) नैतिक विकास।
जब कोई छात्र परीक्षा में नकल करने के सही या गलत होने पर विचार करता है, तो वह वास्तव में अपनी नैतिक तर्क क्षमता का उपयोग कर रहा होता है। यह प्रक्रिया नैतिक विकास के अध्ययन का मुख्य विषय है, जो यह जाँचती है कि व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में न्याय, ईमानदारी और सामाजिक नियमों के बारे में कैसे सोचता है। यह विकास व्यक्ति को सामाजिक मानदंडों को समझने और अपने व्यवहार हेतु स्वयं को उत्तरदायी मानने की क्षमता प्रदान करता है। नैतिकता की यह समझ उम्र के साथ परिपक्व होती जाती है।

79. (C) विकास किसी भी चरण में प्रतिवर्ती होता है।
विकास की प्रकृति संचयी, व्यवस्थित और निरंतर होती है, जहाँ प्रत्येक नया परिवर्तन पिछले अनुभवों और परिपक्वता पर आधारित होता है। यह सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ने वाली एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। महत्वपूर्ण बात यह है कि विकास प्रतिवर्ती नहीं होता; एक बार जब कोई विकासात्मक मील का पत्थर प्राप्त कर लिया जाता है या जैविक परिवर्तन घटित हो जाता है, तो उसे प्रारंभिक अवस्था में नहीं लाया जा सकता। यह समय के साथ होने वाला एक दिशात्मक और स्थायी प्रगतिशील परिवर्तन है।

80. (D) अपनेपन और प्रेम की आवश्यकताएं।
मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम में, जब शारीरिक और सुरक्षा संबंधी जरूरतें पूरी हो जाती हैं, तो व्यक्ति प्रेम, स्नेह और सामाजिक संबंधों की तलाश करता है। इसमें परिवार, मित्रता और समूह का हिस्सा बनने की तीव्र इच्छा शामिल होती है। मनुष्य स्वभाव से एक सामाजिक प्राणी है और दूसरों के साथ जुड़ाव की यह भावना उसे भावनात्मक सुरक्षा और मानसिक संतुष्टि प्रदान करती है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति न होने पर व्यक्ति अकेलापन महसूस कर सकता है, जो उसके समग्र कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

81. (B) यह लक्ष्य-निर्देशित है।
अभिप्रेरित व्यवहार की सबसे प्रमुख और परिभाषित विशेषता यह है कि यह सदैव किसी विशिष्ट लक्ष्य या उद्देश्य की प्राप्ति की ओर निर्देशित होता है। यह केवल एक बिना सोचे-समझे की गई क्रिया नहीं है, बल्कि एक सचेत या अवचेतन प्रयास है जो किसी आवश्यकता को संतुष्ट करने हेतु किया जाता है। चाहे वह भूख मिटाना हो या परीक्षा में सफलता प्राप्त करना, अभिप्रेरणा व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करती है। लक्ष्य के प्रति यह झुकाव ही व्यवहार को सार्थक और व्यवस्थित बनाता है।

82. (A) संज्ञानात्मक कारक उत्तेजना की व्याख्या करते हैं।
शैक्टर-सिंगर के प्रसिद्ध प्रयोग ने यह प्रमाणित किया कि केवल शारीरिक उत्तेजना संवेग की प्रकृति तय करने हेतु पर्याप्त नहीं है। जिन प्रतिभागियों को शारीरिक रूप से उत्तेजित किया गया, उन्होंने अपने संवेग को उस सामाजिक संदर्भ के आधार पर पहचाना जिसमें वे थे। यदि उनके पास उत्तेजना का कोई स्पष्ट कारण नहीं था, तो उन्होंने स्थिति के संकेतों का उपयोग कर उसे 'खुशी' या 'क्रोध' के रूप में समझा। यह स्पष्ट करता है कि हमारी बुद्धि शारीरिक उत्तेजना को अर्थ प्रदान कर उसे संवेग में बदल देती है।

83. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
समाजीकरण के विभिन्न कारक व्यक्ति के विकास में विशिष्ट और पूरक भूमिका निभाते हैं। परिवार प्राथमिक लगाव और मौलिक मूल्यों की नींव रखता है, जबकि साथी समूह किशोरों को अपनी उपसंस्कृति और पहचान बनाने का अवसर प्रदान करते हैं। विद्यालय एक औपचारिक वातावरण प्रदान करता है जहाँ सामाजिक नियम और शैक्षणिक पाठ्यक्रम सीखे जाते हैं। संचार माध्यम व्यापक सांस्कृतिक विचारों और उपभोक्ता दृष्टिकोणों को आकार देने का कार्य करते हैं। ये सभी कारक मिलकर व्यक्ति को समाज के एक क्रियाशील सदस्य के रूप में तैयार करते हैं।

84. (D) एक तनाव प्रबंधन तकनीक।
ध्यान या योग एक सचेत और प्रभावी तकनीक है जिसका उपयोग तनावपूर्ण परिस्थितियों में मन को शांत करने और शारीरिक उत्तेजना को कम करने हेतु किया जाता है। यह तनाव प्रबंधन की श्रेणी में आता है क्योंकि यह व्यक्ति को अपनी संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं पर नियंत्रण पाने और मानसिक स्पष्टता बनाए रखने में सक्षम बनाता है। जब कोई व्यक्ति

महत्वपूर्ण कार्य से पूर्व ध्यान करता है, तो वह सक्रिय रूप से अपने तनाव के स्तर को कम करने का प्रयास करता है। यह दीर्घकालिक मानसिक स्वास्थ्य सुधारने में सहायक होता है।

85. (A) 1 और 2
अभिप्रेरणा के सिद्धांतों में अंतर्नोद और प्रोत्साहन के बीच एक स्पष्ट कार्यात्मक अंतर होता है। अंतर्नोद सिद्धांत आंतरिक आवश्यकताओं से उत्पन्न उस दबाव या 'धक्के' पर बल देता है जो जीव को संतुलन बहाल करने हेतु प्रेरित करता है। दूसरी ओर, प्रोत्साहन सिद्धांत बाहरी वातावरण में मौजूद आकर्षक पुरस्कारों के 'खिंचाव' पर केंद्रित है। मूलप्रवृत्ति सिद्धांत यह नहीं कहता कि सभी व्यवहार सीखे हुए होते हैं, बल्कि वह जन्मजात प्रतिरूपों पर जोर देता है। अतः व्यवहार आंतरिक धक्के और बाहरी खिंचाव दोनों का परिणाम हो सकता है।

86. (B) प्रारंभिक जीवन में एक इष्टतम समय होता है।
भाषा अर्जन हेतु क्रांतिक अवधि की अवधारणा यह सुझाती है कि मानव जीवन के शुरुआती वर्षों में एक विशेष समय सीमा होती है जब मस्तिष्क भाषा सीखने हेतु जैविक रूप से सर्वाधिक सक्षम होता है। इस इष्टतम अवधि के दौरान यदि बच्चा भाषा के संपर्क में नहीं आता, तो भविष्य में उसमें पूर्ण भाषाई दक्षता प्राप्त करना अत्यंत कठिन हो जाता है। यह सिद्धांत प्रमाणित करता है कि जैविक परिपक्वता और पर्यावरणीय अनुभव का सही समय पर मेल होना विकास के कुछ पहलुओं हेतु अनिवार्य शर्त है।

87. (C) संवेग प्रेरक के रूप में कार्य कर सकते हैं।
अभिप्रेरणा और संवेग एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं और अक्सर एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। संवेग न केवल परिस्थितियों के प्रति हमारी प्रतिक्रिया हैं, बल्कि वे स्वयं व्यवहार के शक्तिशाली प्रेरक बन सकते हैं। उदाहरण के लिए, भय का संवेग हमें खतरे से भागने हेतु अभिप्रेरित करता है, जबकि प्रेम या खुशी का संवेग हमें दूसरों के साथ जुड़ने हेतु प्रेरणा देता है। इस प्रकार, संवेग ऊर्जा के स्रोत के रूप में कार्य करते हैं जो हमारे लक्ष्यों की दिशा और तीव्रता को निर्धारित करते हैं।

88. (D) शारीरिक तीव्रता।
लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत मुख्य रूप से संवेग की उस शारीरिक गहराई और ऊर्जा से संबंधित है जिसे तीव्रता कहा जाता है। यह सिद्धांत बताता है कि संवेगात्मक अनुभव मस्तिष्क के सक्रियण स्तर और स्नायु तंत्र की उत्तेजना की मात्रा पर निर्भर करते हैं। निम्न स्तर की उत्तेजना से शांत संवेग उत्पन्न होते हैं, जबकि उच्च सक्रियता तीव्र संवेगात्मक अशांति का कारण बनती है। यह दृष्टिकोण संवेग के संज्ञानात्मक पहचान के बजाय उसकी शारीरिक और तंत्रिका संबंधी सक्रियता की स्थिति को समझने पर अधिक बल देता है।

89. (A) उपलब्धि की आवश्यकता।
उपलब्धि की आवश्यकता एक सामाजिक प्रेरक का उदाहरण है क्योंकि यह जन्मजात जैविक जरूरत नहीं है, बल्कि सामाजिक परिवेश और व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से विकसित होती है। यह प्रेरक व्यक्ति को कठिन लक्ष्यों को प्राप्त करने, उत्कृष्टता के मानकों को पूरा करने और प्रतिस्पर्धा में सफल होने हेतु प्रोत्साहित करता है। श्वसन, निद्रा और तापमान नियंत्रण जैसे जैविक प्रेरक शरीर के जीवित रहने हेतु अनिवार्य हैं, जबकि सामाजिक प्रेरक व्यक्ति की आत्म-उन्नति और समाज में उसकी स्थिति को बेहतर बनाने की आकांक्षाओं से संबंधित होते हैं।

90. (B) संचयीता।
विकास का संचयी सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि मानव विकास एक क्रमिक और संचय होने वाली प्रक्रिया है, जहाँ हर नई क्षमता पिछली सीख और संरचनाओं पर निर्मित होती है। यह एक ईंट-दर-ईंट दीवार बनाने जैसा है, जहाँ आधार मजबूत होने पर ही जटिल संरचनाएं संभव होती हैं। उदाहरण के लिए, बच्चा दौड़ना सीखने से पहले खड़ा होना और चलना सीखता है। यह निरंतरता सुनिश्चित करती है कि विकास एक व्यवस्थित मार्ग का अनुसरण करे और अनुभव समय के साथ जुड़कर व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करें।

91. (C) प्रोत्साहन सिद्धांत।
प्रोत्साहन सिद्धांत यह समझाने में सक्षम है कि बाहरी वस्तुएं कैसे व्यवहार को प्रेरित करती हैं, भले ही कोई आंतरिक जैविक कमी न हो। एक स्वादिष्ट दिखने वाला खाद्य पदार्थ एक बाहरी उद्दीपक या पुरस्कार के रूप में कार्य करता है जो व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है, भले ही उसे वास्तव में भूख न लगी हो। यह सिद्धांत बाहरी वातावरण के आकर्षण और संवेदी सुखों के महत्व को रेखांकित करता है। इस प्रकार, अभिप्रेरणा केवल आंतरिक तनाव को कम करने तक सीमित नहीं है, बल्कि सुखद अनुभवों की इच्छा भी है।

92. (D) प्रदर्शन के लिए सांस्कृतिक नियम।
संवेग के शारीरिक सह-संबंधी वे जैविक परिवर्तन हैं जो शरीर के भीतर संवेगात्मक उत्तेजना के साथ स्वतः उत्पन्न होते हैं, जैसे हृदय गति और श्वसन में बदलाव। इसके विपरीत, संवेग प्रदर्शन के सांस्कृतिक नियम समाज द्वारा बनाए गए वे मानदंड हैं जो यह तय करते हैं कि हमें कब और कैसे अपने संवेगों को व्यक्त करना चाहिए। ये नियम सामाजिक शिक्षा का हिस्सा हैं और इनका शरीर के तात्कालिक दैहिक सह-संबंधों से कोई सीधा संबंध नहीं होता। अतः ये जैविक के बजाय सामाजिक प्रकृति के होते हैं।

93. (C) समाजीकरण की प्रक्रिया।
समाजीकरण वह व्यापक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने आसपास के लोगों, जैसे अभिभावकों और शिक्षकों को देखकर समाज के रीति-रिवाज और अपेक्षित व्यवहारों को सीखता है। यह प्रक्रिया अवलोकन और नकल के माध्यम से चलती है, जिससे व्यक्ति यह समझता है कि उसे समाज में एक जिम्मेदार सदस्य के रूप में कैसे आचरण करना चाहिए। यह सीख केवल बचपन तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे जीवन चलती रहती है, जिससे व्यक्ति विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं के अनुकूल खुद को ढालने में सक्षम होता है।

94. (B) स्थितिजन्य महत्व के आकलन।
संवेग के संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत के अनुसार, हमारी संवेगात्मक प्रतिक्रिया इस बात पर निर्भर करती है कि हम किसी स्थिति को स्वयं हेतु कितना महत्वपूर्ण या प्रासंगिक मानते हैं। यदि हम किसी घटना को एक अवसर के रूप में देखते हैं, तो हम सकारात्मक महसूस करेंगे, लेकिन यदि उसे नुकसान के रूप में देखते हैं, तो नकारात्मक संवेग उत्पन्न होंगे। यह मानसिक मूल्यांकन ही संवेग की दिशा तय करता है। अतः बाहरी परिस्थितियाँ स्वयं संवेग पैदा नहीं करतीं, बल्कि हमारी उनके प्रति मानसिक समझ ही संवेगों का वास्तविक स्रोत होती है।

95. (D) समस्या-केंद्रित मुकाबला।
समस्या-केंद्रित मुकाबला एक ऐसी रणनीति है जिसमें व्यक्ति तनाव के वास्तविक कारण को सीधे हल करने का प्रयास करता है। जब एक छात्रा परीक्षा की चिंता को कम करने हेतु अध्ययन की समय सारणी बनाती है और उस पर अमल करती है, तो वह समस्या के स्रोत को प्रबंधित कर रही होती है। यह सक्रिय दृष्टिकोण व्यक्ति को स्थिति पर नियंत्रण का अनुभव कराता है और भविष्य के परिणामों को सुधारने में मदद करता है। यह रणनीति उन परिस्थितियों में प्रभावी होती है जिन्हें व्यक्ति अपने प्रयासों से बदल सकता है।

96. (A) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत।
अभिप्रेरणा के मूलप्रवृत्ति सिद्धांत की अक्सर इस आधार पर आलोचना की जाती है कि यह व्यवहारों के कारणों को गहराई से स्पष्ट करने के बजाय केवल उन्हें नाम देने तक सीमित है। उदाहरण के लिए, यह कहना कि 'मनुष्य लड़ता है क्योंकि उसमें युद्ध की मूलप्रवृत्ति है', एक चक्राकार तर्क जैसा लगता है जो वास्तविक प्रक्रिया को नहीं समझाता। इसके अतिरिक्त, यह सिद्धांत मानवीय व्यवहार की जटिलता और सीखने की क्षमता की उपेक्षा करता है। आधुनिक मनोविज्ञान इसे व्यवहार के वर्णन हेतु तो उपयोगी मानता है, परंतु व्याख्या हेतु अपर्याप्त पाता है।

97. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संचार माध्यम समाजीकरण के एक अत्यंत प्रभावशाली कारक के रूप में उभरे हैं क्योंकि ये सूचनाओं और व्यवहारिक मॉडलों का निरंतर प्रवाह बनाए रखते हैं। टेलीविजन, इंटरनेट और सामाजिक माध्यमों के द्वारा बच्चे विभिन्न जीवन शैलियों, मूल्यों और सामाजिक मानदंडों को देखते हैं, जिन्हें वे अक्सर अनजाने में अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बना लेते हैं। यह प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों हो सकता है, परंतु यह निर्विवाद है कि ये माध्यम हमारी सोच, भाषा और सामाजिक दृष्टिकोण को व्यापक रूप से प्रभावित और निर्देशित करते हैं।

98. (C) सुरक्षा की आवश्यकताएं।
अब्राहम मास्लो के पदानुक्रम में, एक बार जब भोजन और जल जैसी शारीरिक आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं, तो व्यक्ति सुरक्षा और स्थिरता की तलाश करता है। इसमें अपने पर्यावरण पर नियंत्रण की भावना, वित्तीय सुरक्षा, स्वास्थ्य की रक्षा और किसी भी प्रकार के शारीरिक या मनोवैज्ञानिक खतरे से मुक्ति शामिल है। जब तक व्यक्ति स्वयं को सुरक्षित और स्थिर महसूस नहीं करता, तब तक वह सामाजिक रिश्तों या आत्म-सम्मान जैसे उच्च लक्ष्यों की ओर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित नहीं कर पाता। यह मानसिक शांति हेतु अनिवार्य आवश्यकता है।

99. (D) शारीरिक उत्तेजना और संज्ञानात्मक लेबल।
संवेग के द्वि-कारक सिद्धांत के अनुसार, किसी भी संवेगात्मक अनुभव का निर्माण दो अनिवार्य घटकों के मेल से होता है। पहला घटक शरीर की वह अनैच्छिक उत्तेजना है जो हमें सक्रिय करती है, और दूसरा घटक उस उत्तेजना को परिस्थिति के आधार पर दिया गया मानसिक नाम या पहचान है। इस सिद्धांत का मानना है कि हम केवल तभी किसी विशिष्ट संवेग को महसूस करते हैं जब हमारा मस्तिष्क शारीरिक सक्रियता को एक तार्किक कारण से जोड़ता है। इस प्रकार, हमारी बुद्धि और जैविक प्रतिक्रिया मिलकर संवेग को पूर्ण बनाती हैं।

100. (A) स्कूल।
विद्यालय समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण औपचारिक कारक है जहाँ बच्चे न केवल शैक्षणिक विषय सीखते हैं, बल्कि सामाजिक नियमों और सामूहिक गतिविधियों के अनुशासन को भी आत्मसात करते हैं। खेल के नियम सीखना इसी प्रक्रिया का हिस्सा है, जो बच्चों को सहयोग, प्रतिस्पर्धा और निष्पक्षता जैसे सामाजिक मूल्यों का व्यावहारिक अनुभव कराता है। विद्यालय का वातावरण बच्चों को परिवार के सुरक्षित घेरे से बाहर निकालकर एक बड़े और संगठित सामाजिक ढांचे में कार्य करने हेतु तैयार करता है, जहाँ उन्हें विभिन्न अपेक्षाओं का पालन करना होता है।

101. (B) किसी भी मांग के प्रति होने वाली प्रतिक्रिया।
तनाव की सबसे व्यापक परिभाषा यह है कि यह शरीर और मन की वह गैर-विशिष्ट प्रतिक्रिया है जो किसी भी ऐसी मांग के प्रति होती है जो व्यक्ति के सामान्य संतुलन को चुनौती देती है। यह मांग शारीरिक, मानसिक या सामाजिक हो सकती है। तनाव हमेशा नकारात्मक नहीं होता, परंतु यह व्यक्ति से अनुकूलन और ऊर्जा की अपेक्षा करता है। जब बाहरी परिस्थितियाँ हमारे संसाधनों पर दबाव डालती हैं, तो होने वाली यह अनुक्रिया हमें स्थिति का सामना करने या उसके प्रति सामंजस्य बिठाने हेतु सक्रिय करती है।

102. (C) प्रेरक निर्देशित करते हैं; संवेग भावनाएं हैं।
प्रेरक और संवेग दोनों ही व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करते हैं, परंतु उनके कार्यों में एक स्पष्ट अंतर होता है। प्रेरक मुख्य रूप से व्यवहार को एक विशिष्ट लक्ष्य की ओर सक्रिय और निर्देशित करते हैं, जैसे भूख हमें भोजन की तलाश की ओर ले जाती है। इसके विपरीत, संवेग उन परिस्थितियों के प्रति हमारी व्यक्तिपरक प्रतिक्रियाएं या आंतरिक भावनाएं हैं, जैसे सफलता मिलने पर खुशी महसूस होना। यद्यपि संवेग स्वयं प्रेरकों की तरह कार्य कर सकते हैं, परंतु उनका प्राथमिक स्वरूप किसी अनुभव की संवेदनात्मक अनुभूति प्रदान करना होता है।

होते, तो विकास के उस क्षेत्र में स्थायी कमी रह सकती है जिसे भविष्य में सुधारना कठिन होता है। उदाहरण के लिए, बचपन में भाषा के संपर्क में न आने पर संचार कौशल में बाधा आ सकती है। यह सिद्धांत अनुभवों के सही समय पर होने के महत्व को रेखांकित करता है।

122. (A) प्रभावी मुकाबला रणनीतियाँ विकसित करना।
तनाव प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य तनाव के स्रोतों को पूरी तरह मिटाना नहीं है, क्योंकि वे जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा हैं। इसका वास्तविक केंद्र प्रभावी मुकाबला रणनीतियों को विकसित करना और अपनाना है जो व्यक्ति को प्रतिकूल परिस्थितियों के अनुकूल बनने में सक्षम बनाती हैं। इन रणनीतियों में समस्या समाधान के व्यावहारिक तरीके और संवेगों को शांत करने वाली तकनीकें शामिल होती हैं। सफल प्रबंधन व्यक्ति की मानसिक सहनशक्ति को बढ़ाता है और उसे तनावपूर्ण घटनाओं के नकारात्मक शारीरिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों से सुरक्षित रखता है।

123. (C) सभी अभिप्रेरित व्यवहार जन्मजात होते हैं।
अभिप्रेरणा के बारे में यह धारणा गलत है कि सभी अभिप्रेरित व्यवहार जन्मजात होते हैं। यद्यपि भूख और प्यास जैसे कुछ व्यवहार जैविक और जन्मजात होते हैं, लेकिन मानवीय गतिविधियों का एक बहुत बड़ा हिस्सा सामाजिक शिक्षा और व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से सीखा जाता है। उपलब्धि की इच्छा, धन अर्जन या विशिष्ट कौशल सीखना सीखे हुए प्रेरकों के उदाहरण हैं। अभिप्रेरणा एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें जैविक प्रवृत्तियों और अर्जित अनुभवों का मेल होता है, जो व्यवहार को निर्देशित करने में सहायक होते हैं।

124. (D) जटिलता।
संवेगों को वर्गीकृत करने के विभिन्न तरीके हैं, जिनमें उनकी जटिलता एक महत्वपूर्ण आधार है। संवेगों को अक्सर बुनियादी और जटिल श्रेणियों में बांटा जाता है। बुनियादी संवेग, जैसे क्रोध और खुशी, सार्वभौमिक होते हैं और जन्मजात माने जाते हैं। इसके विपरीत, जटिल संवेग जैसे अपराधबोध, गर्व या ईर्ष्या अक्सर सामाजिक शिक्षा और संज्ञानात्मक मूल्यांकन का परिणाम होते हैं। यह वर्गीकरण यह समझने में मदद करता है कि मानवीय भावनाएं केवल जैविक प्रतिक्रियाएं नहीं हैं, बल्कि वे हमारे सामाजिक अनुभवों से भी गहराई से प्रभावित होती हैं।

125. (C) समाजीकरण।
समाजीकरण वह व्यापक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी संस्कृति द्वारा उचित माने गए व्यवहारों, भूमिकाओं और मूल्यों को आत्मसात करता है। लैंगिक-विशिष्ट शैलियों को सीखना इसी प्रक्रिया का एक उदाहरण है, जहाँ समाज यह सिखाता है कि पुरुषों और महिलाओं से किस प्रकार के आचरण की अपेक्षा की जाती है। यह शिक्षा परिवार, संचार माध्यमों और शिक्षा संस्थानों के माध्यम से अनौपचारिक और औपचारिक दोनों रूपों में दी जाती है। इस प्रकार, समाजीकरण व्यक्ति को समाज के सांस्कृतिक ढांचे के अनुरूप ढालने में सहायक होता है।

126. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
संवेग के ये दोनों सिद्धांत संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के महत्व को स्वीकार करते हैं लेकिन उनके अनुक्रम में भिन्नता है। शैक्टर-सिंगर सिद्धांत मानता है कि पहले शारीरिक उत्तेजना होती है जिसे बाद में संज्ञानात्मक पहचान दी जाती है। दूसरी ओर, संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत प्रस्तावित करता है कि स्थिति का मानसिक मूल्यांकन ही उत्तेजना और संवेग दोनों का प्राथमिक कारण है। यद्यपि उनके दृष्टिकोण में सूक्ष्म अंतर है, लेकिन दोनों ही इस बात पर सहमत हैं कि हमारी बुद्धि ही संवेगात्मक अनुभवों को अर्थ प्रदान करने में निर्णायक भूमिका निभाती है।

127. (D) आत्म-सिद्धि।
अब्राहम मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम पिरामिड में आत्म-सिद्धि को सर्वोच्च स्तर पर रखा गया है। यह अवस्था उस बिंदु को दर्शाती है जहाँ व्यक्ति अपनी सभी क्षमताओं और प्रतिभाओं का पूर्ण उपयोग कर स्वयं के सर्वोत्तम रूप को प्राप्त करने का प्रयास करता है। यह अन्य आवश्यकताओं की तरह किसी बाहरी कमी को पूरा करने हेतु नहीं है, बल्कि यह व्यक्तिगत पूर्णता, रचनात्मकता और सत्य की खोज की एक आंतरिक यात्रा है। यह मानवीय आकांक्षाओं का चरम है जो व्यक्ति को एक सार्थक जीवन जीने हेतु प्रेरित करता है।

128. (A) तनाव।
जब कोई छात्र पाठ्यक्रम के भारी बोझ से खुद को अभिभूत महसूस करता है, तो वह वास्तव में तनाव का अनुभव कर रहा होता है। तनाव तब उत्पन्न होता है जब किसी परिस्थिति की मांगें व्यक्ति की उपलब्ध क्षमताओं और संसाधनों से अधिक महसूस होने लगती हैं। यह अवस्था शारीरिक थकान और मानसिक चिंता दोनों के रूप में प्रकट हो सकती है। यह छात्र हेतु एक प्रतिबलक के रूप में कार्य करता है, जो उसे स्थिति से निपटने हेतु नई रणनीतियाँ विकसित करने या अपने कार्यभार को व्यवस्थित करने हेतु प्रेरित करता है।

129. (C) मूलप्रवृत्ति स्थिर है; अंतर्नोद तनाव है।
मूलप्रवृत्ति और अंतर्नोद सिद्धांत अभिप्रेरणा की विभिन्न जैविक प्रवृत्तियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। मूलप्रवृत्ति जन्मजात और अपरिवर्तनीय व्यवहार प्रतिरूपों को संदर्भित करती है जो किसी प्रजाति के सभी सदस्यों में समान रूप से पाए जाते हैं। इसके विपरीत, अंतर्नोद एक आंतरिक तनाव की अवस्था है जो किसी जैविक आवश्यकता, जैसे भूख, की कमी के कारण उत्पन्न होती है। जहाँ मूलप्रवृत्ति व्यवहार का एक निश्चित मार्ग प्रदान करती है, वहीं अंतर्नोद शरीर के संतुलन को बहाल करने हेतु एक प्रेरक बल या दबाव के रूप में कार्य करता है।

130. (A) होने वाला शारीरिक परिवर्तन।
संवेग का शारीरिक सह-संबंधी उन जैविक और दैहिक परिवर्तनों को संदर्भित करता है जो संवेगात्मक अनुभव के साथ स्वतः घटित होते हैं। जब हम भय महसूस करते हैं, तो हमारा शरीर कई आंतरिक प्रतिक्रियाएं देता है, जैसे हृदय गति में वृद्धि और हार्मोन का स्राव। ये परिवर्तन स्वायत्त तंत्रिका तंत्र द्वारा संचालित होते हैं और संवेग की तीव्रता को शारीरिक

के क्रमिक पदानुक्रम पर बल दिया, जबकि स्टेनली शैक्टर ने शारीरिक उत्तेजना और संज्ञानात्मक पहचान के मेल को संवेग का आधार माना। रिचर्ड लाजरस का योगदान यह स्पष्ट करने में रहा कि स्थिति का संज्ञानात्मक मूल्यांकन ही संवेगात्मक अनुभव को जन्म देता है। क्लार्क हल ने अंतर्नोद सिद्धांत के माध्यम से जैविक आवश्यकताओं के महत्व को समझाया। ये सभी मिलकर मानवीय व्यवहार की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

113. (C) परिवार।
परिवार वह प्राथमिक परिवेश है जहाँ बच्चा सुदृढीकरण और प्रशंसा के माध्यम से सामाजिक व्यवहार सीखता है। जब माता-पिता किसी बच्चे को खिलौने साझा करने जैसे सकारात्मक कार्यों हेतु प्रोत्साहित करते हैं, तो वह बच्चा उन व्यवहारों को भविष्य में दोहराने हेतु अभिप्रेरित होता है। समाजीकरण की यह प्रक्रिया बच्चे के भीतर सहयोग और सहानुभूति जैसे सामाजिक गुणों के बीज बोती है। परिवार के भीतर मिलने वाली ये शुरुआती प्रतिक्रियाएं ही व्यक्ति के सामाजिक चरित्र और स्वभाव को स्थायी रूप से आकार प्रदान करती हैं।

114. (D) तंत्रिका तंत्र की उत्तेजना।
सक्रियण सिद्धांत के अनुसार, ऊब और खुशी जैसे विभिन्न संवेगात्मक अनुभवों के बीच का मूलभूत अंतर तंत्रिका तंत्र की सक्रियता के स्तर में निहित होता है। ऊब निम्न स्तर की उत्तेजना और मानसिक सक्रियता की कमी को दर्शाती है, जहाँ व्यक्ति सक्रिय होने हेतु बाहरी उद्दीपकों की तलाश करता है। इसके विपरीत, खुशी या उत्साह उच्च और इष्टतम स्तर की तंत्रिका सक्रियता का परिणाम होते हैं। यह दृष्टिकोण संवेगों को स्नायु तंत्र की ऊर्जा के एक निरंतर सातत्य पर आधारित मानता है, जहाँ सक्रियण की मात्रा ही अनुभव को निर्धारित करती है।

115. (C) विकास गैर-संदर्भगत होता है।
जीवन-काल विकास के सिद्धांतों के अनुसार, विकास एक आजीवन चलने वाली, बहुदिशीय और अत्यंत लचीली प्रक्रिया है, जिसे अनुभवों और वातावरण के माध्यम से संशोधित किया जा सकता है। यह कभी भी गैर-संदर्भगत नहीं होता; इसके विपरीत, विकास हमेशा विशिष्ट संदर्भों, जैसे संस्कृति, इतिहास और सामाजिक परिवेश के भीतर घटित होता है। व्यक्ति का विकास उसके आसपास की परिस्थितियों और ऐतिहासिक समय से गहराई से प्रभावित होता है। अतः संदर्भ ही विकास की दिशा और स्वरूप को निर्धारित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण आधार होता है।

116. (B) संवेग-केंद्रित मुकाबला।
संवेग-केंद्रित मुकाबला एक ऐसी रणनीति है जहाँ व्यक्ति तनावपूर्ण स्थिति को बदलने के बजाय उससे उत्पन्न नकारात्मक भावनाओं को प्रबंधित करने का प्रयास करता है। किसी मित्र से बात करना और भावनात्मक समर्थन मांगना इसी श्रेणी में आता है, क्योंकि इससे व्यक्ति का मानसिक बोझ कम होता है और वह संवेगात्मक रूप से शांत महसूस करता है। यह रणनीति उन परिस्थितियों में अधिक उपयोगी होती है जिन्हें व्यक्ति सीधे तौर पर नियंत्रित नहीं कर सकता। यह तनाव के प्रभाव को सहन करने और संवेगात्मक संतुलन बहाल करने में सहायक होती है।

117. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अंतर्नोद सिद्धांत का मुख्य आधार समस्थापन है, जिसका अर्थ है शरीर की आंतरिक स्थिरता बनाए रखना। यह सिद्धांत उन व्यवहारों की व्याख्या करने में सफल है जहाँ व्यक्ति भूख या प्यास जैसे तनाव को कम कर राहत पाना चाहता है। हालांकि, यह उन गतिविधियों को समझाने में विफल रहता है जहाँ व्यक्ति जानबूझकर उत्तेजना या जोखिम की तलाश करता है। चूंकि ये गतिविधियाँ तनाव घटाने के बजाय उसे बढ़ाती हैं, इसलिए अंतर्नोद सिद्धांत की सीमाएं यहाँ स्पष्ट हो जाती हैं। अतः यह केवल जैविक संतुलन तक ही सीमित रहता है।

118. (D) साथी पहचान निर्माण के लिए संदर्भ प्रदान करते हैं।
किशोरावस्था के दौरान समाजीकरण में साथियों की भूमिका अत्यंत निर्णायक हो जाती है, क्योंकि वे किशोरों को परिवार से स्वतंत्र एक नया सामाजिक मंच प्रदान करते हैं। साथी समूह एक ऐसा दर्पण बनते हैं जहाँ किशोर अपनी पसंद, व्यवहार और मूल्यों का परीक्षण करते हैं, जिससे उन्हें अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में मदद मिलती है। साथियों के बीच स्वीकृत होने की इच्छा और उनके साथ साझा किए गए अनुभव किशोरों को सामाजिक कौशल सीखने और वयस्क जीवन की स्वायत्तता हेतु तैयार होने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

119. (A) सांप को खतरे के रूप में व्याख्यायित किया जाता है।
संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत के अनुसार, संवेग की उत्पत्ति हेतु किसी उत्तेजना का मानसिक रूप से आकलन करना सबसे पहला और अनिवार्य चरण है। जब कोई व्यक्ति सांप को देखता है, तो उसका मस्तिष्क तुरंत यह निर्णय लेता है कि यह स्थिति उसके लिए खतरनाक है या नहीं। यदि स्थिति को खतरे के रूप में मूल्यांकित किया जाता है, तभी भय का संवेग उत्पन्न होता है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि हमारी आंतरिक व्याख्या ही यह तय करती है कि कोई बाह्य उद्दीपक हमारे भीतर किस प्रकार की संवेगात्मक प्रतिक्रिया पैदा करेगा।

120. (B) एक सामाजिक प्रेरक।
किसी क्लब या टीम में शामिल होना मनुष्य की उस मूलभूत इच्छा को दर्शाता है जिसे संबद्धता की आवश्यकता कहा जाता है। यह एक सामाजिक प्रेरक है, जो व्यक्ति को दूसरों के साथ जुड़ने, समूह का हिस्सा बनने और प्रेम तथा स्वीकृति प्राप्त करने हेतु प्रेरित करता है। मनुष्य स्वाभाविक रूप से दूसरों की संगति चाहता है क्योंकि यह उसे भावनात्मक सुरक्षा और पहचान प्रदान करती है। इस प्रकार के प्रेरकों की संतुष्टि व्यक्ति के सामाजिक विकास और मानसिक स्वास्थ्य हेतु अत्यंत आवश्यक होती है, जो उसे समाज में एकीकृत करती है।

121. (B) अनुभव की अनुपस्थिति कमी का कारण बनती है।
विकास में क्रांतिक अवधियाँ वे विशिष्ट समय अंतराल हैं जिनमें जीव का तंत्रिका तंत्र कुछ विशेष अनुभवों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होता है। इन्हें 'क्रांतिक' इसलिए कहा जाता है क्योंकि यदि इस दौरान आवश्यक उद्दीपक या अनुभव प्राप्त नहीं

नकारात्मक भावनाओं को नियंत्रित करने पर ध्यान देता है। ये दोनों रणनीतियाँ व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों में मानसिक संतुलन बनाए रखने और अनुकूलन करने में सहायता करती हैं। परिस्थिति की प्रकृति और व्यक्ति की क्षमता के आधार पर इनमें से किसी एक या दोनों का उपयोग किया जा सकता है।

48. (A) शारीरिक उत्तेजना और संज्ञानात्मक लेबल दोनों।
शैक्टर-सिंगर सिद्धांत के अनुसार, संवेगात्मक अनुभव की उत्पत्ति केवल शारीरिक बदलावों से नहीं होती। व्यक्ति को पहले एक शारीरिक उत्तेजना महसूस होती है, जिसे वह अपने वर्तमान परिवेश के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। इस उत्तेजना को जब एक विशिष्ट संज्ञानात्मक पहचान या नाम दिया जाता है, तभी वह एक विशेष संवेग के रूप में अनुभव की जाती है। इस प्रकार, हमारी बुद्धि और शरीर मिलकर यह तय करते हैं कि हम किसी विशेष क्षण में भय, क्रोध या खुशी में से क्या महसूस कर रहे हैं।

49. (B) अपरिवर्तनीयता।
अभिप्रेरित व्यवहार की पहचान करने हेतु सक्रियण, दिशा और रखरखाव जैसे मानदंड अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सक्रियण का अर्थ है व्यवहार की शुरुआत, दिशा का तात्पर्य लक्ष्य की ओर झुकाव से है, और रखरखाव उस व्यवहार को लक्ष्य प्राप्ति तक जारी रखने की शक्ति है। अपरिवर्तनीयता अभिप्रेरित व्यवहार का लक्षण नहीं है, क्योंकि अभिप्रेरणा की प्रकृति गतिशील और लचीली होती है। परिस्थितियों के बदलने पर अभिप्रेरित व्यवहार में परिवर्तन आ सकता है या उसे पूरी तरह बदला जा सकता है, जो मानवीय अनुकूलन क्षमता का हिस्सा है।

50. (A) सामाजिक विश्वासों का व्यापक ढांचा प्रदान करके।
समाजीकरण में संस्कृति एक आधारभूत कारक के रूप में कार्य करती है जो व्यक्ति को विश्व को देखने का एक विशिष्ट दृष्टिकोण प्रदान करती है। यह उन मूल्यों, परंपराओं और विश्वासों का समूह है जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं और व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करते हैं। संस्कृति ही तय करती है कि समाज में क्या स्वीकार्य है और क्या नहीं। इसके माध्यम से व्यक्ति अपनी सामाजिक पहचान बनाता है और यह समझता है कि उसे विभिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार की प्रतिक्रिया और आचरण करना चाहिए।

51. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
ये मनोवैज्ञानिक अवधारणाएं मानव विकास और व्यवहार के विभिन्न आयामों को स्पष्ट करती हैं। अंतर्नोद वह आंतरिक तनाव है जो जीव को कार्य हेतु भीतर से धकेलता है, जबकि प्रोत्साहन वह बाहरी उद्दीपक है जो उसे लक्ष्य की ओर खींचता है। क्रांतिक अवधि जीवन का वह विशिष्ट समय है जिसमें कोई विकासात्मक सीख सबसे प्रभावी ढंग से होती है। समाजीकरण वह निरंतर प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति समाज के मानदंडों को सीखकर उसका क्रियाशील सदस्य बनता है। ये सभी कारक मानव जीवन को आकार देते हैं।

52. (D) संवेग का संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत।
संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि संवेगों का अनुभव प्रत्यक्ष उत्तेजना के बजाय हमारी मानसिक व्याख्या पर निर्भर करता है। जब कोई व्यक्ति किसी स्थिति का आकलन करता है और उसे अपने लिए खतरनाक पाता है, तभी वह भय का अनुभव करता है। यहाँ स्थिति का अर्थपूर्ण मूल्यांकन ही संवेग की प्रकृति को निर्धारित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कदम है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि अलग-अलग व्यक्ति एक ही परिस्थिति को अपनी सोच और मूल्यांकन के आधार पर अलग-अलग संवेगों के साथ अनुभव कर सकते हैं।

53. (C) दोस्तों से सामाजिक समर्थन मांगना।
तनाव से निपटने की रणनीतियों में उन क्रियाओं को शामिल किया जाता है जो व्यक्ति जानबूझकर तनाव के प्रभाव को कम करने हेतु करता है। सामाजिक समर्थन मांगना एक प्रभावी मुकाबला रणनीति है, जहाँ व्यक्ति दूसरों से भावनात्मक या व्यावहारिक सहायता प्राप्त कर अपने मानसिक बोझ को हल्का करता है। यह रणनीति न केवल तनावपूर्ण स्थिति को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है, बल्कि व्यक्ति को यह महसूस कराती है कि वह कठिन समय में अकेला नहीं है। यह संवेगात्मक कल्याण को बढ़ावा देने वाली तकनीक है।

54. (D) सामाजिक या सीखे हुए प्रेरक।
उपलब्धि, संबद्धता और शक्ति जैसी आवश्यकताएं सामाजिक प्रेरकों की श्रेणी में आती हैं क्योंकि ये जन्मजात नहीं होतीं, बल्कि समाज और संस्कृति के साथ अंतःक्रिया के माध्यम से सीखी जाती हैं। ये प्रेरक व्यक्ति की दूसरों के साथ जुड़ने, सफल होने और प्रभाव डालने की इच्छा को दर्शाते हैं। ये मानवीय व्यवहार को उच्च स्तर पर निर्देशित करते हैं और व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामाजिक प्रेरकों की तीव्रता अलग-अलग संस्कृतियों और व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर भिन्न-भिन्न हो सकती है।

55. (B) 2 और 3
मानव विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें मात्रात्मक परिवर्तनों के साथ-साथ गुणात्मक परिवर्तन भी समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं। क्रांतिक अवधियों का विचार यह स्पष्ट करता है कि जीवन के कुछ विशिष्ट समय अनुभवों हेतु बहुत संवेदनशील होते हैं और उनका प्रभाव स्थायी हो सकता है। यद्यपि विकास का बुनियादी अनुक्रम सभी मनुष्यों हेतु सार्वभौमिक होता है, परंतु प्रत्येक व्यक्ति की अपनी आनुवंशिकता और वातावरण के कारण इसके घटित होने की दर में भिन्नता पाई जाती है। यह विकास को निरंतर चलने वाली प्रक्रिया बनाता है।

56. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अब्राहम मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत का एक केंद्रीय स्तंभ यह है कि मानवीय आवश्यकताएं एक निश्चित क्रम में प्रभावी होती हैं। जब तक व्यक्ति की बुनियादी और सुरक्षा संबंधी आवश्यकताएं पर्याप्त रूप से संतुष्ट नहीं हो जातीं, उसका ध्यान आत्म-सम्मान या उच्च स्तर की आवश्यकताओं की ओर नहीं जाता। सुरक्षा की कमी व्यक्ति में निरंतर चिंता

आधार प्रदान करते हैं। ये सह-संबंधी शोधकर्ताओं को संवेगों का वस्तुनिष्ठ तरीके से अध्ययन करने और उन्हें मापने में सक्षम बनाते हैं, जिससे संवेगों की जैविक व्याख्या संभव होती है।

131. (D) प्राथमिक लगाव बंधों का निर्माण।
समाजीकरण के एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में विद्यालय की भूमिका मुख्य रूप से शैक्षणिक और सामाजिक होती है। विद्यालय न केवल विद्यार्थियों को औपचारिक शैक्षणिक ज्ञान और कौशल प्रदान करते हैं, बल्कि उन्हें सामूहिक अनुशासन और विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं हेतु भी तैयार करते हैं। यद्यपि विद्यालय सामाजिक कौशल और ज्ञान का विस्तार करता है, परंतु प्राथमिक लगाव बंधों का निर्माण मुख्य रूप से परिवार का कार्य है। परिवार ही जीवन के शुरुआती वर्षों में बच्चे को आवश्यक भावनात्मक सुरक्षा और आधार प्रदान करता है।

132. (B) उच्च केंद्रीय तंत्रिका तंत्र सक्रियण।
लिंड्सले के सक्रियण सिद्धांत के अनुसार, घबराहट या अत्यधिक उत्तेजना की स्थिति केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की बहुत अधिक सक्रियता का परिणाम होती है। जब मस्तिष्क का ऊर्जा स्तर एक इष्टतम सीमा से आगे निकल जाता है, तो व्यक्ति घबराहट और असंतुलन महसूस करने लगता है। यह अवस्था कार्य प्रदर्शन में बाधा डाल सकती है क्योंकि व्यक्ति की संज्ञानात्मक और शारीरिक नियंत्रण की क्षमता प्रभावित होती है। अतः संवेगात्मक स्थिरता हेतु तंत्रिका तंत्र का सक्रियण स्तर एक संतुलित और मध्यम सीमा के भीतर होना आवश्यक माना जाता है।

133. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संज्ञानात्मक मूल्यांकन सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि एक ही घटना अलग-अलग व्यक्तियों हेतु भिन्न संवेगात्मक परिणाम पैदा कर सकती है क्योंकि उनका मूल्यांकन अलग होता है। पदोन्नति को एक व्यक्ति प्रगति के अवसर के रूप में देख सकता है, जिससे उसे खुशी मिलती है। वहीं दूसरा व्यक्ति इसे अतिरिक्त काम के दबाव के रूप में देख सकता है, जिससे उसे चिंता होती है। यह प्रमाणित करता है कि घटना स्वयं में तटस्थ है और हमारी मानसिक व्याख्या ही उसे एक सुखद या दुखद संवेग में परिवर्तित करती है।

134. (D) प्यास लगने पर पानी पीना।
प्यास लगने पर जल पीना प्राथमिक या जैविक प्रेरक द्वारा संचालित व्यवहार का एक सर्वोत्तम उदाहरण है क्योंकि यह सीधे तौर पर जीव की उत्तरजीविता से जुड़ा है। यह प्रेरक जन्मजात होता है और इसका उद्देश्य शरीर में जल के स्तर को संतुलित कर समस्थापन की स्थिति बहाल करना है। अन्य कार्य जैसे उपन्यास लिखना या चुनाव लड़ना सामाजिक और व्यक्तिगत प्रेरकों से संचालित होते हैं जो सीखे हुए होते हैं। जैविक प्रेरक सभी जीवों में समान होते हैं और वे जीवन को बनाए रखने वाली बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

135. (D) 1, 2 और 3
संवेग एक बहुआयामी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्तिपरक अनुभव, शारीरिक उत्तेजना और अभिव्यंजक व्यवहार अनिवार्य रूप से शामिल होते हैं। व्यक्तिपरक अनुभव वह निजी भावना है जो हम महसूस करते हैं, शारीरिक उत्तेजना शरीर के भीतर होने वाले जैविक परिवर्तनों को दर्शाती है, और अभिव्यंजक व्यवहार चेहरे के भावों या क्रियाओं के माध्यम से संवेग को बाहर प्रकट करता है। इन तीनों घटकों का एकीकृत मेल ही संवेगात्मक अनुभव को पूर्णता और गहराई प्रदान करता है, जिससे वह मानवीय व्यवहार का एक प्रभावी हिस्सा बनता है।

136. (B) बहुदिशीयता।
विकास के बहुदिशीयता के सिद्धांत का अर्थ है कि जीवन-काल के दौरान विकास के विभिन्न आयामों में वृद्धि और ह्रास दोनों प्रक्रियाएं एक साथ चल सकती हैं। उदाहरण के लिए, बचपन में शारीरिक और संज्ञानात्मक क्षमताओं में तीव्र वृद्धि होती है, जबकि वृद्धावस्था में कुछ शारीरिक शक्तियों में कमी आ सकती है लेकिन अनुभव और ज्ञान में वृद्धि जारी रहती है। यह सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि विकास केवल एक सीधी रेखा में बढ़ने वाली प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह समय के साथ लाभ और हानि का एक जटिल मेल है।

137. (B) समस्या-केंद्रित मुकाबला।
समस्या-केंद्रित मुकाबला वह रणनीति है जिसमें व्यक्ति तनावपूर्ण स्थिति के मूल कारण को सीधे हल करने हेतु सक्रिय कदम उठाता है। इसमें योजना बनाना, जानकारी एकत्र करना और समस्याओं को सुलझाने हेतु कौशल विकसित करना शामिल है। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से तब प्रभावी होता है जब परिस्थिति व्यक्ति के नियंत्रण में होती है। स्थिति को स्वयं बदलकर व्यक्ति न केवल तनाव के प्रभाव को कम करता है, बल्कि वह अधिक सक्षम और आत्मविश्वास से भरा हुआ महसूस करता है, जो उसके मानसिक स्वास्थ्य हेतु लाभकारी है।

138. (C) नींद से लेकर उत्तेजना तक का सक्रियण सातत्य।
लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत संवेग को चेतना और शारीरिक उत्तेजना के एक व्यापक सातत्य के रूप में देखता है जो स्नायु तंत्र की ऊर्जा पर आधारित है। यह सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि हमारी संवेगात्मक अवस्था मस्तिष्क की सक्रियता के स्तर के अनुसार बदलती रहती है, जहाँ एक छोर पर गहरी नींद जैसी निम्न सक्रियता है और दूसरे छोर पर तीव्र संवेग जैसी उच्च उत्तेजना है। यह दृष्टिकोण संवेग को मनोवैज्ञानिक अनुभव के बजाय स्नायु तंत्र की सक्रियता के एक प्रत्यक्ष भौतिक प्रकटीकरण के रूप में परिभाषित करता है।

139. (C) उच्च आवश्यकताएं निम्न आवश्यकताओं के बाद आती हैं।
अब्राहम मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत की एक बुनियादी धारणा यह है कि मानवीय आवश्यकताओं में एक क्रमिक प्राथमिकता पाई जाती है। व्यक्ति का व्यवहार मुख्य रूप से उस आवश्यकता से प्रेरित होता है जो उस समय अधूरी है। सिद्धांत के अनुसार, जब तक भोजन, जल और सुरक्षा जैसी बुनियादी और निम्न स्तर की जरूरतें पर्याप्त रूप से संतुष्ट नहीं हो जातीं, तब तक व्यक्ति उच्च स्तर की जरूरतों जैसे आत्म-सम्मान और आत्म-सिद्धि की ओर अग्रसर नहीं होता। यह क्रमिक विकास ही मानवीय अभिप्रेरणा का आधार बनता है।

हो जाते हैं। इन तकनीकों का नियमित उपयोग न केवल तात्कालिक राहत देता है, बल्कि व्यक्ति के दीर्घकालिक मानसिक स्वास्थ्य और प्रतिकूलताओं का सामना करने की क्षमता को भी बढ़ाता है।

196. (D) एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया।
समाजीकरण कोई ऐसी घटना नहीं है जो केवल बचपन में घटित होकर समाप्त हो जाती है, बल्कि यह गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक चलने वाली एक निरंतर प्रक्रिया है। जैसे-जैसे व्यक्ति जीवन के विभिन्न चरणों में प्रवेश करता है, उसे नई सामाजिक भूमिकाओं, मूल्यों और नियमों को सीखना पड़ता है। चाहे वह विद्यालय जाना हो, आजीविका शुरु करना हो या सेवानिवृत्ति के बाद का जीवन, व्यक्ति निरंतर अपने परिवेश के साथ सामंजस्य बिठाता रहता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को बदलते सामाजिक वातावरण में प्रभावी ढंग से कार्य करने के योग्य बनाती है।

197. (C) आवश्यकता-पदानुक्रम — प्रबलता।
मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत का एक केंद्रीय विचार प्रबलता की अवधारणा है, जो यह बताती है कि पदानुक्रम में निचली आवश्यकताएं उच्च आवश्यकताओं की तुलना में अधिक शक्तिशाली और प्राथमिक होती हैं। जब तक बुनियादी शारीरिक और सुरक्षा संबंधी जरुरतें पूरी नहीं हो जातीं, वे व्यक्ति के व्यवहार पर हावी रहती हैं। एक बार संतुष्ट होने पर ही उच्च स्तर की सामाजिक और व्यक्तिगत आवश्यकताएं प्रबल होकर व्यवहार को प्रेरित करना शुरु करती हैं। यह क्रमबद्धता मानवीय प्राथमिकताओं और अभिप्रेरणा के विकास को स्पष्ट करती है।

198. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
समाजीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें परिवार, विद्यालय, साथी और संचार माध्यम जैसे विभिन्न कारक मिलकर कार्य करते हैं। इनमें से प्रत्येक इकाई व्यक्ति को एक अनूठा सामाजिक संदर्भ और सीखने का अवसर प्रदान करती है। परिवार बुनियादी संस्कार देता है, विद्यालय औपचारिक नियम सिखाता है, साथी समूह सामाजिक कौशल विकसित करते हैं और संचार माध्यम व्यापक वैश्विक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। इन सभी के माध्यम से व्यक्ति अपने समाज की संस्कृति को आत्मसात करता है, जो उसे समाज का एक एकीकृत अंग बनाने हेतु अनिवार्य है।

199. (C) निम्न और उच्च दोनों स्तरों पर।
लिंड्सले के सक्रियण सिद्धांत और मनोविज्ञान के सामान्य नियमों के अनुसार, कार्य प्रदर्शन और उत्तेजना के बीच एक वक्राकार संबंध होता है। किसी जटिल कार्य पर प्रदर्शन तब सबसे खराब होता है जब उत्तेजना या तो बहुत कम (सुस्ती या ऊब) हो या बहुत अधिक (अत्यधिक चिंता) हो। बहुत कम उत्तेजना में एकाग्रता की कमी होती है, जबकि बहुत अधिक उत्तेजना मानसिक संतुलन को बिगाड़ देती है। कुशल प्रदर्शन हेतु उत्तेजना का एक संतुलित और मध्यम स्तर ही सबसे अनुकूल और प्रभावी माना जाता है जो एकाग्रता बनाए रखता है।

200. (B) संबद्धता।
संबद्धता की आवश्यकता एक मौलिक सामाजिक प्रेरक है जो व्यक्ति को दूसरों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने, मित्रता करने और समूह का हिस्सा बनने हेतु प्रेरित करती है। मनुष्य स्वाभाविक रुप से अकेला नहीं रहना चाहता, क्योंकि दूसरों के साथ जुड़ाव उसे संवेगात्मक सुरक्षा, समर्थन और पहचान की भावना प्रदान करता है। यह आवश्यकता व्यक्ति को सामाजिक अंतःक्रियाओं में सक्रिय रहने और दूसरों की स्वीकृति प्राप्त करने हेतु अभिप्रेरित करती है। सामाजिक सुख और मानसिक स्वास्थ्य हेतु इस प्रेरक की संतुष्टि अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

201. (B) आनुवंशिक प्रवृत्ति।
विकास के 'प्रकृति' पक्ष का तात्पर्य उन सभी विशेषताओं और क्षमताओं से है जो व्यक्ति को अभिभावकों से विरासत में मिली आनुवंशिक संरचना के माध्यम से प्राप्त होती हैं। इसमें शारीरिक बनावट, कुछ बौद्धिक क्षमताएं और स्वभाव से संबंधित प्रवृत्तियाँ शामिल हैं जो जन्म से ही निर्धारित होती हैं। यह पक्ष जैविक परिपक्वता पर बल देता है और यह मानता है कि विकास का एक बड़ा हिस्सा आंतरिक जैविक ब्लूप्रिंट के अनुसार चलता है। प्रकृति विकास हेतु वह बुनियादी ढांचा प्रदान करती है जिस पर बाद में पर्यावरणीय अनुभव कार्य करते हैं।

202. (A) कैनन-बार्ड सिद्धांत।
संवेग के अध्ययन में कैनन-बार्ड सिद्धांत एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण है, लेकिन वर्तमान शैक्षिक चर्चाओं में शैक्टर-सिंगर, संज्ञानात्मक-मूल्यांकन और सक्रियण सिद्धांतों को अधिक आधुनिक और व्यापक मान्यता प्राप्त है। शैक्टर-सिंगर सिद्धांत पहचान प्रक्रिया पर, मूल्यांकन सिद्धांत व्याख्या पर और सक्रियण सिद्धांत तंत्रिका उत्तेजना पर केंद्रित है। कैनन-बार्ड सिद्धांत यह मानता था कि शारीरिक प्रतिक्रिया और संवेगात्मक अनुभव एक साथ घटित होते हैं। हालांकि यह महत्वपूर्ण है, परंतु आधुनिक संदर्भों में संज्ञानात्मक और सक्रियण आधारित मॉडल अधिक सूक्ष्म व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

203. (C) प्रोत्साहन।
आकर्षक खाद्य पदार्थ यहाँ एक प्रोत्साहन के रुप में कार्य करता है क्योंकि यह बाहरी वातावरण में मौजूद एक उद्दीपक है जो व्यक्ति को अपनी ओर खींच सकता है। प्रोत्साहन वे वस्तुएं या पुरस्कार होते हैं जो व्यवहार को अभिप्रेरित करते हैं, भले ही कोई आंतरिक भूख न हो। जब व्यक्ति वजन कम करने हेतु इसे खरीदने से बचता है, तो वह वास्तव में एक बाहरी प्रलोभन के प्रभाव को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहा होता है। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि बाहरी आकर्षण कैसे हमारे निर्णयों और अभिप्रेरित व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं।

204. (D) नींद के प्रतिरुप में परिवर्तन।
तनाव के प्रति व्यवहारात्मक प्रतिक्रियाओं में वे परिवर्तन शामिल होते हैं जिन्हें व्यक्ति के कार्यों और आदतों में देखा जा सकता है। निद्रा के प्रतिरूप में बदलाव, जैसे कम सोना या बहुत अधिक सोना, तनाव का एक स्पष्ट व्यवहारात्मक संकेत है। अन्य शारीरिक प्रतिक्रियाएं जैसे रक्तचाप या हार्मोन बदलाव

और सामाजिक परिवेश से प्रभावित होता है जिसमें वह रहता है। ये संदर्भ व्यक्ति को अवसर और चुनौतियाँ प्रदान करते हैं जो उसके व्यक्तित्व को आकार देते हैं। अतः विकास को समझने हेतु उस व्यापक सामाजिक वातावरण का अध्ययन करना अनिवार्य है जिसमें व्यक्ति विकसित होता है।

150. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
शैक्टर-सिंगर और संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांतों को संज्ञानात्मक सिद्धांतों की श्रेणी में इसलिए रखा गया है क्योंकि वे दोनों ही संवेग की प्रक्रिया में मानसिक व्याख्या को सर्वोपरि मानते हैं। इन सिद्धांतों के अनुसार, केवल शारीरिक उत्तेजना संवेग पैदा करने हेतु पर्याप्त नहीं है; बल्कि व्यक्ति उस उत्तेजना या स्थिति का अर्थ कैसे निकालता है, वही अनुभव किए जाने वाले संवेग की प्रकृति तय करता है। यह स्पष्ट करता है कि हमारी बुद्धि संवेगात्मक जीवन को अर्थपूर्ण और विशिष्ट बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

151. (A) P-2, Q-3, R-1, S-4
ये मनोवैज्ञानिक अवधारणाएं मानव व्यवहार के विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं को परिभाषित करती हैं। समस्थापन अंतर्नोद सिद्धांत का आधार है जो आंतरिक जैविक संतुलन को दर्शाता है। आत्म-सिद्धि मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम का उच्चतम शिखर है जो व्यक्तिगत पूर्णता को लक्षित करता है। मूल्यांकन संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत का केंद्र है जो संवेग की व्याख्या को स्पष्ट करता है। समाजीकरण वह सामाजिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज की भूमिकाओं को सीखता है। ये सभी मिलकर मानवीय अनुभव की समग्र समझ प्रदान करते हैं।

152. (B) पदानुक्रमित क्रम सार्वभौमिक नहीं है।
अब्राहम मास्लो के सिद्धांत की एक प्रमुख आलोचना यह है कि उन्होंने आवश्यकताओं का जो निश्चित पदानुक्रम दिया है, वह सभी व्यक्तियों और संस्कृतियों हेतु समान रूप से लागू नहीं होता। कई बार लोग अपनी बुनियादी जरूरतों को नजरअंदाज कर उच्च आदर्शों या आत्म-सिद्धि हेतु कार्य करते हैं, जैसे एक कलाकार भूख के बावजूद अपनी कला को प्राथमिकता देता है। यह दर्शाता है कि मानवीय अभिप्रेरणा का क्रम लचीला हो सकता है और यह व्यक्तिगत प्राथमिकताओं तथा सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर भिन्न-भिन्न हो सकता है।

153. (C) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत।
संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत का मुख्य केंद्र यह है कि हम किसी आने वाली घटना का मानसिक रूप से किस प्रकार आकलन करते हैं। यदि हम नौकरी के साक्षात्कार को एक खतरे के रूप में देखते हैं, तो हम चिंता महसूस करेंगे, लेकिन यदि हम इसे अपनी प्रतिभा दिखाने की चुनौती मानते हैं, तो हम उत्साहित होंगे। यह मानसिक व्याख्या ही हमारे संवेगात्मक अनुभव को निर्धारित करती है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि परिस्थितियाँ स्वयं तनावपूर्ण नहीं होतीं, बल्कि हमारी उनके प्रति सोच ही यह तय करती है कि हम कैसा महसूस करेंगे।

154. (D) यह पहला सामाजिक संदर्भ है।
परिवार को समाजीकरण का प्राथमिक कारक इसलिए माना जाता है क्योंकि यह वह प्रथम और सबसे अधिक स्थायी सामाजिक संस्थान है जिससे व्यक्ति जुड़ता है। जीवन के शुरुआती और सबसे संवेदनशील वर्षों में परिवार ही बच्चे के विश्वासों, भाषा और व्यवहार की नींव रखता है। यहाँ प्राप्त होने वाले अनुभव और शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व के मूल ढांचे का निर्माण करते हैं। चूंकि परिवार ही सामाजिक दुनिया से बच्चे का पहला परिचय कराता है, इसलिए इसका प्रभाव जीवन भर व्यक्ति के सामाजिक दृष्टिकोण और रिश्तों पर बना रहता है।

155. (A) 1 और 2
तनाव एक जटिल अनुभव है जो मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति किसी स्थिति का मूल्यांकन कैसे करता है। जब किसी मांग को चुनौतीपूर्ण या हानिकारक माना जाता है, तो शरीर और मन में संज्ञानात्मक और शारीरिक परिवर्तन शुरू हो जाते हैं। तनाव प्रबंधन का उद्देश्य सभी प्रकार की उत्तेजनाओं को समाप्त करना नहीं है, क्योंकि कुछ स्तर का तनाव प्रदर्शन हेतु लाभकारी होता है। प्रबंधन का वास्तविक लक्ष्य तनाव को एक नियंत्रित सीमा के भीतर रखना है ताकि वह व्यक्ति के स्वास्थ्य को प्रभावित न करे।

156. (B) उपलब्धि की आवश्यकता।
उपलब्धि की आवश्यकता एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रेरक है जो व्यक्ति को कठिन कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने और उत्कृष्टता के उच्च मानकों को प्राप्त करने हेतु प्रेरित करता है। इस प्रेरक से प्रभावित व्यक्ति चुनौतीपूर्ण लक्ष्यों को चुनना पसंद करते हैं और अपने प्रदर्शन हेतु निरंतर प्रतिक्रिया की तलाश करते हैं। यह इच्छा व्यक्ति को प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने और अपनी सक्षमता सिद्ध करने हेतु ऊर्जा प्रदान करती है। यह व्यक्तिगत सफलता और सामाजिक प्रगति के पीछे की एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक शक्ति मानी जाती है।

157. (B) पहली तिमाही में अंग प्रणाली का चरण।
प्रसव पूर्व विकास में अंग प्रणाली का निर्माण एक क्रांतिक अवधि का बेहतरीन उदाहरण है, विशेष रूप से गर्भावस्था की पहली तिमाही के दौरान। इस संक्षिप्त और विशिष्ट समय सीमा में भ्रूण के सभी मुख्य अंगों का आधार रखा जाता है। यदि इस अवधि में कोई नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव या विषाक्त पदार्थ संपर्क में आता है, तो अंगों के विकास में स्थायी और गंभीर क्षति हो सकती है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि विकास के कुछ जैविक चरणों हेतु सही समय और स्वस्थ वातावरण का होना कितना अनिवार्य और निर्णायक होता है।

158. (A) अंतर्नोद में कमी।
संवेग की व्यापक परिभाषा में शारीरिक उत्तेजना, अभिव्यंजक व्यवहार और सचेत या व्यक्तिपरक अनुभव अनिवार्य रूप से शामिल होते हैं। ये तीनों मिलकर यह बताते हैं कि संवेग कैसे उत्पन्न और प्रकट होता है। इसके विपरीत, अंतर्नोद में कमी अभिप्रेरणा के एक विशिष्ट सिद्धांत का हिस्सा है जिसका उद्देश्य जैविक तनाव को घटाकर संतुलन बनाना है। यद्यपि संवेग प्रेरकों को प्रभावित कर सकते हैं, परंतु अंतर्नोद में कमी को

स्वयं संवेग की परिभाषा का एक बुनियादी और संरचनात्मक घटक नहीं माना जाता है।

159. (C) अंतर्नोद; प्रोत्साहन।
अभिप्रेरणा की प्रक्रिया में आंतरिक और बाहरी दोनों कारकों की भूमिका होती है। जब शरीर के भीतर किसी चीज की कमी महसूस होती है, तो वह एक आंतरिक तनाव या अंतर्नोद पैदा करती है जो व्यक्ति को कार्य हेतु भीतर से धकेलता है। वहीं, बाहरी वातावरण में मौजूद कोई वस्तु या पुरस्कार, जो उस कमी को पूरा कर सकता है, उसे प्रोत्साहन कहा जाता है जो व्यक्ति को अपनी ओर खींचता है। इस प्रकार, अभिप्रेरित व्यवहार अक्सर इन दोनों शक्तियों, यानी आंतरिक धक्के और बाहरी खिंचाव के संयुक्त प्रभाव का परिणाम होता है।

160. (D) मानव व्यवहार का विकास।
नैतिक विकास का अध्ययन इस व्यापक क्षेत्र का हिस्सा है जो यह जाँचता है कि मानव व्यवहार और सोचने का तरीका समय के साथ कैसे बदलता है। इसमें यह समझना शामिल है कि व्यक्ति की सही और गलत की समझ, न्याय के प्रति दृष्टिकोण और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना बचपन से वयस्कता तक कैसे परिपक्व होती है। नैतिकता का यह विकास संज्ञानात्मक क्षमताओं और सामाजिक अनुभवों के मेल से आकार लेता है। यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति के चरित्र निर्माण और समाज के प्रति आचरण को निर्देशित करती है।

161. (B) शारीरिक प्रतिक्रियाएं।
परीक्षा से पहले महसूस होने वाली तेज धड़कन, पसीना और पेट में बेचैनी तनाव के प्रति शरीर की प्रत्यक्ष और स्वाभाविक शारीरिक प्रतिक्रियाएं हैं। ये लक्षण दर्शाते हैं कि शरीर का स्वायत्त तंत्रिका तंत्र सक्रिय हो गया है और वह आने वाली चुनौती का सामना करने हेतु ऊर्जा जुटा रहा है। यह एक जैविक रक्षा तंत्र है जिसे 'लड़ो या भागो' की स्थिति के रूप में पहचाना जाता है। ये प्रतिक्रियाएं व्यक्ति की आंतरिक संवेगात्मक उत्तेजना का एक भौतिक प्रकटीकरण हैं, जो उसे सतर्क और तैयार होने का संकेत देती हैं।

162. (A) केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की उत्तेजना।
लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत इस केंद्रीय विचार पर आधारित है कि संवेगात्मक अनुभव मुख्य रूप से मस्तिष्क के ऊर्जा केंद्रों और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की सक्रियता से जुड़े होते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, संवेगों की भिन्नता और उनकी तीव्रता इस बात पर निर्भर करती है कि तंत्रिका तंत्र में कितनी उत्तेजना उत्पन्न हुई है। यह सिद्धांत संवेग को चेतना के एक सातत्य पर देखता है, जहाँ सक्रियण का स्तर ही तय करता है कि व्यक्ति शांत है या तीव्र तनाव की स्थिति में है। यह सक्रियता संवेग का भौतिक आधार है।

163. (C) संस्कृति।
समाजीकरण में संस्कृति एक शक्तिशाली नियामक के रूप में कार्य करती है जो यह निर्धारित करती है कि किन व्यवहारों को समाज में सराहा जाएगा। अलग-अलग संस्कृतियों में अलग-अलग मूल्यों, जैसे एक जगह मुखरता और दूसरी जगह सहयोग को अधिक महत्व दिया जा सकता है। बच्चे अपने सांस्कृतिक परिवेश से इन सूक्ष्म और स्पष्ट संकेतों को ग्रहण करते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व और सामाजिक आचरण का निर्माण होता है। यह प्रभाव व्यक्ति के सोचने के तरीके और उसकी दुनिया के प्रति प्रतिक्रिया को एक विशिष्ट रुप प्रदान करने में सहायक होता है।

164. (D) सुरक्षा की आवश्यकताएं।
अब्राहम मास्लो के पदानुक्रम में सुरक्षा की आवश्यकताएं दूसरे स्तर पर आती हैं, जो शारीरिक जरूरतों के ठीक ऊपर स्थित हैं। इनमें स्थिरता, व्यवस्था, पूर्वानुमेयता और किसी भी प्रकार के भय या खतरे से मुक्ति की इच्छा शामिल है। एक व्यक्ति हेतु घर की सुरक्षा, आजीविका की निरंतरता और स्वास्थ्य की रक्षा इसी श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। जब तक व्यक्ति स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं करता, उसका मानसिक ध्यान प्रेम, सम्मान या आत्म-सिद्धि जैसे उच्च स्तरों की ओर पूरी तरह से केन्द्रित नहीं हो पाता।

165. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
किशोरावस्था एक ऐसा चरण है जहाँ व्यक्ति अपनी विशिष्ट पहचान बनाने हेतु परिवार के सुरक्षात्मक दायरे से बाहर निकलना शुरु करता है। इस समय साथी समूह एक संदर्भ बिंदु के रूप में कार्य करते हैं, जहाँ किशोर नए मूल्यों और सामाजिक व्यवहारों का परीक्षण करते हैं। साथियों के साथ होने वाली यह तुलना और अंतःक्रिया उन्हें स्वायत्तता की ओर ले जाती है और उन्हें यह समझने में मदद करती है कि वे समाज में कहाँ खड़े हैं। अतः पहचान निर्माण की इस प्रक्रिया में साथियों का प्रभाव अत्यंत प्रभावी होता है।

166. (B) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत।
लिंड्सले का सिद्धांत संवेगों को मुख्य रुप से केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की उच्च शारीरिक उत्तेजना और सक्रियता से जोड़ता है। यह सिद्धांत अपराधबोध, पश्चाताप या सूक्ष्म प्रसन्नता जैसे संवेगों को स्पष्ट करने में कठिनाई महसूस करता है, क्योंकि इनमें अक्सर कोई स्पष्ट या मापने योग्य शारीरिक उत्तेजना दिखाई नहीं देती। चूंकि ये संवेग अधिक संज्ञानात्मक और सामाजिक प्रकृति के होते हैं, इसलिए उन्हें केवल स्नायु तंत्र की तीव्रता के आधार पर नहीं समझा जा सकता। इसके लिए अधिक उन्नत संज्ञानात्मक और मूल्यांकन आधारित दृष्टिकोणों की आवश्यकता होती है।

167. (D) संवेग-केंद्रित मुकाबला।
जब कोई व्यक्ति तनाव कम करने हेतु दौड़ने जैसी शारीरिक गतिविधि का सहारा लेता है, तो वह संवेग-केंद्रित मुकाबला रणनीति का उपयोग करता है। इस रणनीति का मुख्य उद्देश्य तनावपूर्ण स्थिति को बदलना नहीं, बल्कि उससे उत्पन्न नकारात्मक संवेगों और आंतरिक तनाव को प्रबंधित करना है। व्यायाम करने से शरीर में सुखद हार्मोन का स्राव होता है जो मानसिक राहत प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों के दौरान अपनी संवेगात्मक स्थिति को संतुलित बनाए रखने और मानसिक शांति प्राप्त करने में सहायता करता है।

168. (A) सार्वभौमिकता।
अभिप्रेरित व्यवहार को पहचानने हेतु सक्रियण, दृढ़ता और तीव्रता मुख्य मानदंड हैं जो यह बताते हैं कि व्यवहार लक्ष्य की ओर कितना ऊर्जावान और निरंतर है। सक्रियण व्यवहार की शुरुआत को दर्शाता है, जबकि दृढ़ता बाधाओं के बावजूद लक्ष्य पर टिके रहने की क्षमता है। सार्वभौमिकता अभिप्रेरित व्यवहार का आवश्यक मानदंड नहीं है, क्योंकि अभिप्रेरणा व्यक्तिगत अनुभवों, संस्कृति और आवश्यकताओं के आधार पर अत्यधिक भिन्न हो सकती है। जो लक्ष्य एक व्यक्ति हेतु प्रेरक है, वह दूसरे हेतु नहीं भी हो सकता है।

169. (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
अंतर्नोद सिद्धांत और प्रोत्साहन सिद्धांत दोनों अभिप्रेरणा के पूरक लेकिन विपरीत पहलुओं पर बल देते हैं। अंतर्नोद सिद्धांत प्रस्तावित करता है कि व्यवहार आंतरिक तनाव या कमी को कम करने हेतु भीतर से धकेला जाता है, ताकि जैविक संतुलन बहाल हो सके। इसके विपरीत, प्रोत्साहन सिद्धांत यह मानता है कि व्यवहार बाहरी वातावरण में मौजूद आकर्षक पुरस्कारों या लक्ष्यों द्वारा अपनी ओर खींचा जाता है। चूंकि प्रश्न में इन दोनों के कार्यों को आपस में बदल दिया गया है, इसलिए दोनों कथन अपनी मूल परिभाषा अनुसार गलत हैं।

170. (B) उन्नत नैतिक विकास।
उन्नत नैतिक विकास की अवस्था में व्यक्ति केवल नियमों का आँख मूंदकर पालन नहीं करता, बल्कि वह न्याय और मानवाधिकारों के व्यापक सिद्धांतों पर विचार करता है। वह यह समझता है कि कभी-कभी सामाजिक कानून नैतिक रूप से गलत या अन्यायपूर्ण हो सकते हैं। इस चरण में व्यक्ति का विवेक उसे उन सार्वभौमिक मूल्यों के अनुसार कार्य करने हेतु प्रेरित करता है जो मानवता के हित में हों, भले ही वे स्थापित नियमों के विपरीत हों। यह उच्च स्तरीय तर्क प्रणाली नैतिक परिपक्वता और स्वतंत्र चिंतन का प्रतीक है।

171. (D) आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत।
अब्राहम मास्लो द्वारा प्रस्तावित आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत मानवीय अभिप्रेरणा को एक पिरामिड या पदानुक्रम के रूप में व्यवस्थित करता है। इस ढांचे में पाँच मुख्य स्तर हैं, जो सबसे बुनियादी शारीरिक आवश्यकताओं से शुरू होकर आत्म-सिद्धि के उच्चतम शिखर तक जाते हैं। यह सिद्धांत बताता है कि मानवीय व्यवहार क्रमिक रूप से उन आवश्यकताओं की ओर बढ़ता है जो उस समय अधूरी हैं। यह पिरामिडनुमा संरचना यह समझने में मदद करती है कि मनुष्य अपने जीवन में प्राथमिकताएं कैसे तय करता है और उसके विकास की दिशा क्या होती है।

172. (B) मूल्यांकन।
तनाव के अध्ययन में मूल्यांकन वह महत्वपूर्ण मानसिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति किसी घटना के महत्व और उससे निपटने की अपनी क्षमता का आकलन करता है। लाजरस के अनुसार, प्राथमिक मूल्यांकन में व्यक्ति यह तय करता है कि स्थिति कितनी खतरनाक है, जबकि द्वितीयक मूल्यांकन में वह अपने संसाधनों और मुकाबला करने के विकल्पों पर विचार करता है। यह संज्ञानात्मक आकलन ही यह निर्धारित करता है कि कोई घटना व्यक्ति हेतु वास्तव में तनावपूर्ण होगी या वह इसे एक सकारात्मक चुनौती के रूप में स्वीकार करेगा।

173. (C) संवेगात्मक अवस्थाओं की प्रक्रिया।
शैक्टर-सिंगर, संज्ञानात्मक-मूल्यांकन और सक्रियण सिद्धांत सभी का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि संवेगात्मक अवस्थाएं कैसे उत्पन्न और विकसित होती हैं। यद्यपि उनके दृष्टिकोण अलग हैं—जहाँ सक्रियण सिद्धांत स्नायु उत्तेजना पर, शैक्टर-सिंगर पहचान प्रक्रिया पर और मूल्यांकन सिद्धांत मानसिक व्याख्या पर जोर देते हैं—परंतु वे सभी संवेग के पीछे की जटिल प्रक्रियाओं को समझाने का साझा प्रयास करते हैं। ये सिद्धांत हमें यह समझने में मदद करते हैं कि शरीर और मन मिलकर हमारे संवेगात्मक अनुभवों को कैसे आकार प्रदान करते हैं।

174. (D) स्कूल।
विद्यालय समाजीकरण का एक प्रमुख औपचारिक कारक है जहाँ शिक्षक ज्ञान के संचार के साथ-साथ कक्षा के नियमों और अनुशासन को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह वातावरण बच्चों को एक व्यवस्थित और संगठित ढांचे में कार्य करना सिखाता है, जो उनके भविष्य के व्यावसायिक और सामाजिक जीवन हेतु आधार तैयार करता है। विद्यालय के माध्यम से बच्चे न केवल शैक्षणिक कौशल प्राप्त करते हैं, बल्कि वे समाज के व्यापक मानदंडों और दूसरों के साथ सहयोग करने के तरीके भी सीखते हैं, जो पारिवारिक परिवेश से भिन्न होते हैं।

175. (A) "मैं खा रहा हूँ क्योंकि मुझे भूख लगी है।"
अंतर्नोद सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि जैविक आवश्यकताओं की कमी शरीर में एक तनाव पैदा करती है, जिसे अंतर्नोद कहा जाता है। भूख लगना इस तनाव का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो व्यक्ति को खाने हेतु तब तक अभिप्रेरित करता है जब तक कि शरीर का आंतरिक संतुलन या समस्थापन पुनः स्थापित न हो जाए। यह कथन स्पष्ट रूप से आंतरिक धक्के की ओर संकेत करता है जहाँ व्यवहार का उद्देश्य किसी शारीरिक कमी को दूर करना और उस कमी से उत्पन्न बेचैनी से राहत पाना होता है।

176. (B) इसमें एक व्यक्तिपरक भावना शामिल होती है।
संवेग की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और केंद्रीय विशेषता यह है कि इसमें एक गहरा व्यक्तिपरक अनुभव या भावना शामिल होती है। यह वह निजी अनुभूति है जो हर व्यक्ति किसी विशिष्ट संवेगात्मक स्थिति में महसूस करता है, जैसे खुशी का आंतरिक बोध या भय की निजी अनुभूति। यद्यपि संवेग के साथ शारीरिक परिवर्तन और बाह्य अभिव्यक्तियाँ भी होती हैं, परंतु वह व्यक्तिपरक भावना ही है जो संवेग को व्यक्ति हेतु अर्थपूर्ण बनाती है। संवेग चेतना और महसूस करने की एक अद्वितीय मानसिक अवस्था है।

177. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
जीवन-काल विकास और व्यवहार के ये विभिन्न आयाम मानवीय अनुभव की जटिलता को स्पष्ट करते हैं। समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम अपनी संस्कृति के मूल्यों और मानदंडों को अपनाते हैं। नैतिक विकास हमारे सही और गलत के तर्क में आने वाले क्रमिक परिवर्तनों को दर्शाता है। क्रांतिक अवधि विकास हेतु वह विशिष्ट समय है जिसमें कोई सीख सबसे अधिक प्रभावी होती है। विकासात्मक सिद्धांत यह बताते हैं कि विकास एक व्यवस्थित और संचयी प्रक्रिया है जो पूरे जीवन भर व्यवस्थित रूप से चलती रहती है।

178. (B) समस्या-केंद्रित।
समस्या-केंद्रित मुकाबला एक ऐसी रणनीति है जहाँ व्यक्ति तनावपूर्ण स्थिति के वास्तविक स्रोत को हल करने हेतु सक्रिय कदम उठाता है। जब कोई व्यक्ति अपनी आजीविका खोने के बाद नई नौकरी खोजने की ठोस योजना बनाता है, तो वह सीधे उस समस्या का सामना कर रहा होता है जिसने तनाव पैदा किया है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति को अपनी परिस्थितियों पर नियंत्रण का अनुभव कराता है और भविष्य के सकारात्मक परिणामों की संभावना बढ़ाता है। यह रणनीति उन मामलों में सफल होती है जहाँ व्यावहारिक क्रियान्वयन संभव हो।

179. (C) जैविक प्रेरक।
वायु, भोजन और जल की आवश्यकता को जैविक प्रेरक माना जाता है क्योंकि ये किसी भी जीवित प्राणी के अस्तित्व हेतु अनिवार्य हैं। ये प्रेरक जन्मजात होते हैं और इन्हें सीखने की आवश्यकता नहीं होती। इनका प्राथमिक कार्य शरीर के समस्थापन या आंतरिक संतुलन को बनाए रखना है। जब शरीर में इन बुनियादी तत्वों की कमी होती है, तो वे एक शक्तिशाली आंतरिक दबाव उत्पन्न करते हैं जो व्यक्ति को तब तक सक्रिय बनाए रखता है जब तक कि वे आवश्यकताएं पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं हो जातीं।

180. (D) संदर्भगत है।
विकास का संदर्भगत सिद्धांत यह मानता है कि मानव जीवन में होने वाले परिवर्तन उन विशिष्ट संदर्भों और परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं जिनमें व्यक्ति रहता है। लॉटरी जीतने जैसी अप्रत्याशित घटना एक विशिष्ट संदर्भ प्रदान करती है जो व्यक्ति की आर्थिक स्थिति और भविष्य के विकास के अवसरों को पूरी तरह बदल सकती है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि विकास केवल जैविक परिपक्वता नहीं है, बल्कि यह पर्यावरणीय घटनाओं और व्यक्तिगत अनुभवों की निरंतर अंतःक्रिया है जो जीवन की दिशा तय करती है।

181. (C) संवेग को लेबल करने के लिए सुराग खोजेंगे।
शैक्टर-सिंगर सिद्धांत के अनुसार, जब व्यक्ति को शारीरिक उत्तेजना महसूस होती है और उसे उसका कोई स्पष्ट कारण नहीं पता होता, तो वह अपने आसपास के वातावरण की ओर देखता है। वह स्थिति के संकेतों का उपयोग करके उस उत्तेजना को एक तार्किक मानसिक पहचान या नाम देने का प्रयास करता है। यदि उसके पास कोई प्रफुल्लित व्यक्ति है, तो वह अपनी उत्तेजना को 'खुशी' मान सकता है। यह प्रक्रिया प्रमाणित करती है कि हमारे संवेगात्मक अनुभव हमारी शारीरिक सक्रियता और हमारी बुद्धि द्वारा की गई व्याख्या का संगम हैं।

182. (B) एक मूलप्रवृत्ति।
मूलप्रवृत्ति व्यवहार का वह निश्चित और अनसीखा प्रतिरूप है जो किसी विशेष प्रजाति के सभी सदस्यों में स्वाभाविक रूप से पाया जाता है। यह जैविक रूप से प्रोग्राम किया गया होता है और इसके लिए किसी पूर्व अनुभव या प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। उदाहरण के लिए, पक्षियों का घोंसला बनाना या मछलियों का तैरना मूलप्रवृत्ति के उदाहरण हैं। यह सिद्धांत अभिप्रेरणा को सीखने के बजाय प्रकृति की देन मानता है, जो प्रजाति की उत्तरजीविता और निरंतरता सुनिश्चित करने हेतु अनिवार्य जैविक आधार प्रदान करता है।

183. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संवेग के अनुभव में तंत्रिका तंत्र की भूमिका अत्यंत व्यापक है, जहाँ स्वायत्त और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र दोनों मिलकर कार्य करते हैं। स्वायत्त तंत्रिका तंत्र उन शारीरिक परिवर्तनों, जैसे हृदय गति और पसीना, हेतु जिम्मेदार है जो संवेग की तीव्रता बढ़ाते हैं। साथ ही, मस्तिष्क के विशिष्ट क्षेत्र संवेगात्मक खतरों को पहचानते हैं और उच्च केंद्र उनकी सचेत व्याख्या करते हैं। यह समन्वय सुनिश्चित करता है कि हम न केवल शारीरिक रूप से सक्रिय हों, बल्कि अपनी भावनाओं को गहराई से समझ और महसूस भी सकें।

184. (D) यह जन प्रसारण की अनुमति देता है।
समाजीकरण के एक कारक के रूप में संचार माध्यमों की विशिष्टता उनकी जन प्रसारण क्षमता में निहित है, जिसके माध्यम से ये एक साथ लाखों लोगों तक सूचनाएं और विचार पहुँचा सकते हैं। परिवार या साथी समूह व्यक्तिगत स्तर पर प्रभाव डालते हैं, परंतु संचार माध्यम सांस्कृतिक मूल्यों, प्रवृत्तियों और दृष्टिकोणों को बड़े पैमाने पर प्रसारित करते हैं। यह दुनिया भर की घटनाओं और विविध जीवन शैलियों का प्रदर्शन कर व्यक्ति की सोच को वैश्विक संदर्भ प्रदान करता है। इसकी व्यापक पहुँच इसे दृष्टिकोण निर्माण का शक्तिशाली माध्यम बनाती है।

185. (C) 1, 2, 3 और 4
अभिप्रेरणा के ये चारों सिद्धांत मानवीय व्यवहार के पीछे की प्रेरक शक्तियों को विभिन्न दृष्टिकोणों से स्पष्ट करते हैं। मूलप्रवृत्ति सिद्धांत जन्मजात जैविक प्रतिरूपों पर, अंतर्नोद सिद्धांत आंतरिक समस्थापन पर, और प्रोत्साहन सिद्धांत बाहरी पुरस्कारों के आकर्षण पर बल देता है। मास्लो का आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत इन सभी को एक क्रमिक व्यवस्था में बांधता है जो बुनियादी जरूरतों से आत्म-सिद्धि तक जाता है। ये सभी सिद्धांत सामूहिक रूप से हमें यह समझने में मदद करते हैं कि मनुष्य विभिन्न परिस्थितियों में क्यों कार्य करता है।

186. (B) घटनाओं के मूल्यांकन की प्रक्रिया।
संवेग की प्रक्रिया में उत्तेजना स्वयं में महत्वपूर्ण है, परंतु उसका मूल्यांकन संवेगात्मक अनुभव को दिशा प्रदान करता है। घटनाओं के मूल्यांकन की प्रक्रिया वह मानसिक कार्य है जिसमें

व्यक्ति स्थिति के महत्व और अपने ऊपर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करता है। यद्यपि शारीरिक उत्तेजना एक सह-संबंधी है, परंतु मूल्यांकन वह कारक है जो उस उत्तेजना को अर्थ प्रदान कर उसे एक विशिष्ट संवेग में बदलता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि संवेग केवल जैविक नहीं हैं, बल्कि वे हमारे संज्ञानात्मक विश्लेषण से जुड़े हुए हैं।

187. (C) क्षमताओं को संशोधित किया जा सकता है।
जीवन-काल विकास में लचीलापन या सुघट्यता का अर्थ यह है कि व्यक्ति की क्षमताओं, कौशलों और व्यवहारों में पूरे जीवन के दौरान परिवर्तन और सुधार की संभावना बनी रहती है। यह सिद्धांत यह मानता है कि विकास का मार्ग पहले से पूरी तरह तय नहीं है; उचित प्रशिक्षण, वातावरण और नए अनुभवों के माध्यम से विकास को किसी भी उम्र में दिशा दी जा सकती है। यह सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों से उबरने और वृद्धावस्था में भी नई चीजें सीखने की मानवीय क्षमता को प्रमाणित करता है।

188. (D) धन की इच्छा।
धन की इच्छा एक द्वितीयक या सीखे हुए प्रेरक का उदाहरण है क्योंकि यह जन्मजात जैविक आवश्यकता नहीं है। मनुष्य समाज में रहने के दौरान यह सीखता है कि धन अन्य प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा करने और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने का एक साधन है। भोजन, निद्रा और तापमान नियंत्रण जैसे प्राथमिक प्रेरक सीधे अस्तित्व से जुड़े होते हैं, जबकि धन जैसे प्रेरक सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से अर्जित किए जाते हैं। ये प्रेरक मानवीय व्यवहार को जटिल सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों की ओर निर्देशित करते हैं।

189. (C) एक संज्ञानात्मक मूल्यांकन।
संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांतों के अनुसार, संवेगात्मक प्रतिक्रिया की शुरुआत हमेशा स्थिति के मानसिक आकलन से होती है। जब हम किसी घटना का सामना करते हैं, तो हमारा मस्तिष्क सबसे पहले यह निर्णय लेता है कि वह स्थिति हमारे लिए सुखद है या हानिकारक। यह संज्ञानात्मक मूल्यांकन ही वह पहला कदम है जो यह तय करता है कि बाद में शरीर में उत्तेजना होगी या नहीं और हम क्या महसूस करेंगे। बिना इस प्रारंभिक मूल्यांकन के, बाहरी उद्दीपक हमारे भीतर किसी अर्थपूर्ण संवेगात्मक अनुभव को जन्म नहीं दे सकते हैं।

190. (A) नैतिक विकास।
चोरी न करने का निर्णय जब इस विश्वास पर आधारित हो कि यह गलत है, तो यह व्यक्ति के उन्नत नैतिक विकास को दर्शाता है। यहाँ व्यक्ति बाहरी पुरस्कार या दंड के भय से नहीं, बल्कि अपने आंतरिक नैतिक सिद्धांतों और ईमानदारी के मूल्यों से संचालित हो रहा है। नैतिक विकास की यह परिपक्व अवस्था बताती है कि व्यक्ति ने सार्वभौमिक न्याय और नैतिकता के बोध को आत्मसात कर लिया है। यह उसके चरित्र की दृढ़ता और सामाजिक जिम्मेदारी की गहरी समझ का प्रमाण है जो अनुभव और परिपक्वता से विकसित होती है।

191. (D) अंतर्नोद सिद्धांत।
अंतर्नोद सिद्धांत इस मुख्य विचार पर केंद्रित है कि जैविक आवश्यकताओं की कमी शरीर के भीतर तनाव या असंतुलन की एक आंतरिक अवस्था पैदा करती है। यह तनाव ही वह प्रेरक बल है जो जीव को उस कमी को पूरा करने और पुनः शांति की स्थिति में लौटने हेतु विवश करता है। उदाहरण के लिए, भूख का तनाव भोजन की तलाश हेतु अभिप्रेरित करता है। यह सिद्धांत व्यवहार को मुख्य रूप से एक रक्षात्मक प्रक्रिया के रूप में देखता है जिसका उद्देश्य आंतरिक विक्षोभ को कम कर जैविक समस्थापन को बहाल करना है।

192. (B) बढ़ी हुई हृदय गति।
संवेगात्मक उत्तेजना के शारीरिक सह-संबंधी वे प्रत्यक्ष जैविक परिवर्तन हैं जिन्हें मापा जा सकता है और जो संवेग के साथ स्वतः घटित होते हैं। बढ़ी हुई हृदय गति इस उत्तेजना का एक प्राथमिक उदाहरण है, जो स्वायत्त तंत्रिका तंत्र के सक्रिय होने का संकेत देती है। यह परिवर्तन शरीर को अधिक ऊर्जा प्रदान करने और किसी भी स्थिति के प्रति त्वरित प्रतिक्रिया देने हेतु तैयार करता है। ये शारीरिक लक्षण संवेग के अनुभव को एक ठोस जैविक आधार प्रदान करते हैं, जिससे आंतरिक भावनाएं शरीर की क्रियाशीलता में स्पष्ट दिखाई देती हैं।

193. (B) समीप-दूराभिमुख सिद्धांत।
समीप-दूराभिमुख विकास का सिद्धांत यह बताता है कि शारीरिक वृद्धि और गति कौशल का विकास शरीर के मध्य अक्ष या केंद्र से शुरु होकर बाहर की ओर बढ़ता है। उदाहरण के लिए, बच्चा सबसे पहले अपने धड़ और कंधों पर नियंत्रण प्राप्त करता है, उसके बाद वह अपनी भुजाओं और अंत में हाथों की उंगलियों का सूक्ष्म उपयोग करना सीखता है। यह क्रमबद्धता जैविक रूप से निर्धारित है और मानव विकास के व्यवस्थित प्रतिरूप को स्पष्ट करती है। यह सिद्धांत यह समझने में सहायक है कि बच्चों में शारीरिक निपुणता किस दिशा में विकसित होती है।

194. (A) संदर्भ चिंता का सुझाव देता है।
शैक्टर-सिंगर सिद्धांत के अनुसार, जब हम शारीरिक उत्तेजना महसूस करते हैं, तो हम उसकी व्याख्या करने हेतु अपने वर्तमान संदर्भ या स्थिति का सहारा लेते हैं। परीक्षा परिणामों की प्रतीक्षा एक तनावपूर्ण संदर्भ है, इसलिए हृदय की धड़कन को 'चिंता' के रूप में पहचानना स्वाभाविक है। यदि वही धड़कन खेल के मैदान में होती, तो व्यक्ति उसे 'उत्साह' कह सकता था। यह स्पष्ट करता है कि संवेगात्मक अनुभव केवल जैविक नहीं है, बल्कि वह इस बात पर निर्भर करता है कि हमारी बुद्धि उस स्थिति को कैसे समझती है।

195. (C) तनाव के प्रबंधन के लिए।
गहरी श्वसन क्रिया और मांसपेशियों का प्रगतिशील विश्राम तनाव प्रबंधन की अत्यंत प्रभावी और वैज्ञानिक तकनीकें हैं। इनका मुख्य उद्देश्य तनावपूर्ण स्थितियों के दौरान शरीर में होने वाली अत्यधिक शारीरिक उत्तेजना को कम करना और मन को शांति प्रदान करना है। ये अभ्यास स्वायत्त तंत्रिका तंत्र को शांत करने में मदद करते हैं, जिससे हृदय गति और रक्तचाप सामान्य

कार्य करते हैं। किशोरावस्था के दौरान, साथी समूहों का प्रभाव चरम पर होता है जहाँ व्यक्ति सामाजिक कौशल और अपनी पहचान विकसित करना सीखता है। ये सभी कारक मिलकर व्यक्ति को समाज के सांस्कृतिक और व्यावहारिक ढांचे के अनुरुप ढालते हैं।

214. (D) समस्थापन बनाए रखना।
अंतर्नोद सिद्धांत का मूल आधार जैविक समस्थापन की अवधारणा है, जिसका अर्थ है शरीर के भीतर एक स्थिर और संतुलित आंतरिक वातावरण बनाए रखना। जब भी इस संतुलन में कोई कमी आती है, जैसे जल या भोजन की कमी, तो शरीर में तनाव पैदा होता है जिसे अंतर्नोद कहते हैं। यह अंतर्नोद व्यक्ति को उस व्यवहार हेतु प्रेरित करता है जिससे वह कमी दूर हो सके और शरीर पुनः संतुलन की अवस्था में लौट सके। इस प्रकार, अभिप्रेरणा यहाँ एक रक्षात्मक तंत्र के रूप में कार्य करती है जो जैविक संतुलन सुनिश्चित करती है।

215. (A) व्याख्या संवेग का प्राथमिक निर्धारक है।
संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह विचार है कि संवेगात्मक अनुभव की प्रकृति हमारे द्वारा की गई स्थिति की व्याख्या या आकलन से तय होती है। यह सिद्धांत यह मानता है कि बाहरी घटनाएं स्वयं में सुखद या दुखद नहीं होतीं, बल्कि हमारा मस्तिष्क उन्हें कैसे परिभाषित करता है, वही हमारे संवेगों का वास्तविक स्रोत है। यदि हम किसी अनिश्चित स्थिति को अवसर मानते हैं तो उत्साह होगा, और यदि बाधा मानते हैं तो क्रोध उत्पन्न होगा। अतः हमारी सोच ही हमारे संवेगात्मक जगत की रचयिता है।

216. (B) एक क्रांतिक अवधि।
क्रांतिक अवधि विकास का वह विशिष्ट समय अंतराल है जिसमें मानव मस्तिष्क कुछ विशेष कौशल, जैसे भाषा या सामाजिक जुड़ाव, को सीखने हेतु जैविक रूप से सबसे अधिक ग्रहणशील होता है। इस अवधि के दौरान अनुभवों का होना अत्यंत अनिवार्य है, क्योंकि यदि यह समय बीत जाता है, तो भविष्य में उन कौशलों का अर्जन करना बहुत कठिन या लगभग असंभव हो सकता है। यह अवधारणा विकास में समय और परिपक्वता के महत्व को रेखांकित करती है, जो जैविक और पर्यावरणीय कारकों के सटीक मेल पर आधारित है।

217. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अभिप्रेरणा का मूलप्रवृत्ति सिद्धांत मानवीय व्यवहार की व्याख्या करने में अधूरा है क्योंकि यह केवल व्यवहारों को पहचान प्रदान करता है, उन्हें वैज्ञानिक रूप से समझाता नहीं। मनुष्य का अधिकांश आचरण जन्मजात प्रवृत्तियों के बजाय सीखने, संस्कृति और व्यक्तिगत अनुभवों से आकार लेता है। उदाहरण के लिए, यह कहना कि 'लोग इसलिए पढ़ते हैं क्योंकि उनमें जिज्ञासा की मूलप्रवृत्ति है', उस जटिल प्रक्रिया की उपेक्षा करता है जिसमें शिक्षा और भविष्य के लक्ष्यों की भूमिका होती है। अतः यह सिद्धांत मानवीय लचीलेपन की व्याख्या करने में सफल नहीं है।

218. (B) अंतर्नोद सिद्धांत।
जब शरीर में रक्त शर्करा का स्तर गिरता है, तो यह एक जैविक कमी को दर्शाता है जो भूख के रूप में एक आंतरिक तनाव या अंतर्नोद पैदा करती है। यह अंतर्नोद व्यक्ति को भोजन खोजने और उसे खाने हेतु तब तक अभिप्रेरित करता है जब तक कि शरीर की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो जाती और रक्त शर्करा का स्तर सामान्य नहीं हो जाता। यह व्यवहार समस्थापन बनाए रखने की प्रक्रिया का हिस्सा है, जिसे अंतर्नोद सिद्धांत के माध्यम से सबसे सटीक रुप से समझा जा सकता है। यह जैविक उत्तरजीविता का स्वाभाविक तंत्र है।

219. (C) शारीरिक सह-संबंधी।
संवेगात्मक अनुभव के दौरान हृदय गति, श्वसन दर और त्वचा की विद्युत चालकता में होने वाले परिवर्तनों को शारीरिक सह-संबंधी कहा जाता है। ये बदलाव स्वायत्त तंत्रिका तंत्र की सक्रियता को दर्शाते हैं जो संवेग की तीव्रता के साथ स्वतः घटित होते हैं। इनका अध्ययन संवेगों को एक वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है, जिससे यह पता चलता है कि हमारी आंतरिक भावनाएं हमारे शरीर की क्रियाशीलता को कैसे प्रभावित करती हैं। ये सह-संबंधी संवेगात्मक उत्तेजना के प्रत्यक्ष और मापने योग्य भौतिक प्रमाण के रूप में कार्य करते हैं।

220. (C) स्कूल।
विद्यालय समाजीकरण का वह विशिष्ट कारक है जिसके पास समाज द्वारा स्वीकृत औपचारिक शैक्षणिक ज्ञान और कौशल प्रसारित करने का उत्तरदायित्व होता है। एक निश्चित पाठ्यक्रम के माध्यम से, विद्यालय बच्चों को न केवल साक्षरता और विज्ञान सिखाता है, बल्कि उन्हें समाज के इतिहास, नागरिक कर्तव्यों और सामूहिक जीवन के नियमों से भी परिचित कराता है। यह संस्थान व्यक्ति को अपनी भविष्य की व्यावसायिक भूमिकाओं हेतु तैयार करता है और उसे एक बड़े तथा संगठित सामाजिक ढांचे में प्रभावी ढंग से कार्य करने योग्य बनाने में निर्णायक भूमिका निभाता है।

221. (D) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत।
लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत यह तर्क देता है कि संवेग की तीव्रता सीधे तौर पर मस्तिष्क की सक्रियता और शारीरिक उत्तेजना के स्तर से जुड़ी होती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, खुशी की भावना कितनी प्रबल होगी, यह इस बात पर निर्भर करता है कि केंद्रीय तंत्रिका तंत्र कितना उत्तेजित है। यद्यपि संवेग का प्रकार संज्ञानात्मक हो सकता है, परंतु उसकी ऊर्जा और गहराई सक्रियण के सातत्य पर आधारित होती है। यह सिद्धांत संवेग को चेतना और शारीरिक ऊर्जा के एक गतिशील भौतिक प्रकटीकरण के रूप में परिभाषित करने पर बल देता है।

222. (B) आत्म-सिद्धि।
जब एक कलाकार अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति और व्यक्तिगत पूर्णता हेतु कार्य करता है, तो वह अब्राहम मास्लो के अनुसार आत्म-सिद्धि की आवश्यकता से अभिप्रेरित होता है। यह पदानुक्रम की उच्चतम अवस्था है जहाँ व्यक्ति का लक्ष्य किसी बाहरी अभाव को पूरा करना नहीं, बल्कि अपनी

आंतरिक होते हैं, जबकि चिंतित महसूस करना मनोवैज्ञानिक है। निद्रा में व्यवधान यह दर्शाता है कि मानसिक दबाव व्यक्ति की दैनिक जीवनशैली और शरीर के विश्राम चक्र को बाधित कर रहा है, जो तनाव प्रबंधन में एक बड़ी चुनौती है।

205. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
अभिप्रेरणा की ये अवधारणाएं मानवीय गतिविधियों के पीछे के विभिन्न चालकों को स्पष्ट करती हैं। मूलप्रवृत्ति जन्मजात और निश्चित व्यवहार प्रतिरूपों को दर्शाती है। अंतर्नोद भूख जैसी आंतरिक तनाव की अवस्था है जो जैविक कमी से उत्पन्न होती है। प्रोत्साहन वह बाहरी पुरस्कार है, जैसे नकद बोनस, जो व्यक्ति को कार्य हेतु खींचता है। उपलब्धि की आवश्यकता उत्कृष्टता प्राप्त करने की वह सामाजिक इच्छा है जो व्यक्ति को उच्च मानकों को पूरा करने हेतु प्रेरित करती है। ये सभी कारक मिलकर व्यवहार को गति और दिशा प्रदान करते हैं।

206. (B) बदलती है और जटिल हो जाती है।
नैतिक विकास की मुख्य विशेषता यह है कि सही और गलत की समझ कोई स्थिर गुण नहीं है, बल्कि यह समय के साथ विकसित और अधिक सूक्ष्म होती जाती है। प्रारंभिक बचपन में नैतिकता केवल दंड और पुरस्कार पर आधारित होती है, परंतु जैसे-जैसे व्यक्ति सामाजिक अनुभव प्राप्त करता है और उसकी सोचने की क्षमता परिपक्व होती है, वह न्याय, निष्पक्षता और मानवीय अधिकारों के व्यापक सिद्धांतों को समझना शुरू करता है। यह क्रमिक परिवर्तन व्यक्ति को जटिल सामाजिक और नैतिक दुविधाओं को सुलझाने में अधिक सक्षम और परिपक्व बनाता है।

207. (D) विकास लचीला है।
जीवन-काल विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और आशावादी सिद्धांत यह है कि विकास लचीला या सुघट्य होता है। इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति की क्षमताएं और व्यवहार पूरे जीवन भर स्थिर नहीं रहते, बल्कि उन्हें नए अनुभवों, सीखने और प्रशिक्षण के माध्यम से बदला या सुधारा जा सकता है। यह लचीलापन व्यक्ति को प्रतिकूल परिस्थितियों से उबरने और बुढ़ापे में भी मानसिक तथा सामाजिक रूप से सक्रिय रहने में मदद करता है। विकास केवल बचपन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह निरंतर सुधार की संभावनाओं से भरा होता है।

208. (A) प्राथमिक स्थिति का आकलन करता है; द्वितीयक संसाधनों का आकलन करता है।
तनाव की मूल्यांकन प्रक्रिया दो महत्वपूर्ण चरणों में विभाजित है। प्राथमिक मूल्यांकन में व्यक्ति सबसे पहले यह निर्णय लेता है कि कोई घटना उसके लिए कितनी प्रासंगिक, चुनौतीपूर्ण या खतरनाक है। यदि वह उसे खतरे के रूप में देखता है, तो द्वितीयक मूल्यांकन शुरू होता है, जहाँ वह यह सोचता है कि उस स्थिति का सामना करने हेतु उसके पास कितने संसाधन और क्षमताएं उपलब्ध हैं। ये दोनों आकलन मिलकर यह तय करते हैं कि व्यक्ति तनाव का कितना गहरा अनुभव करेगा और उसे अपनी रणनीतियों के माध्यम से कैसे प्रबंधित करेगा।

209. (C) सम्मान और आत्म-सिद्धि।
पर्वत शिखर पर चढ़ने जैसा अत्यंत कठिन कार्य मास्लो के पदानुक्रम में उच्च स्तरीय आवश्यकताओं से प्रेरित होता है। यह न केवल व्यक्तिगत उपलब्धि और सक्षमता की भावना (सम्मान) को संतुष्ट करता है, बल्कि यह अपनी सीमाओं को चुनौती देने और अपनी चरम क्षमता को प्राप्त करने (आत्म-सिद्धि) की इच्छा को भी दर्शाता है। ऐसे कार्यों में व्यक्ति शारीरिक सुरक्षा के जोखिमों को नजरअंदाज कर उच्च मनोवैज्ञानिक लक्ष्यों को प्राथमिकता देता है। यह प्रमाणित करता है कि मानवीय अभिप्रेरणा अक्सर भौतिक सुखों से ऊपर उठकर श्रेष्ठता की खोज की ओर उन्मुख होती है।

210. (A) शैक्टर-सिंगर सिद्धांत।
शैक्टर-सिंगर सिद्धांत विशेष रूप से यह प्रतिपादित करता है कि संवेगात्मक अनुभव केवल तभी उत्पन्न होता है जब शारीरिक उत्तेजना और संज्ञानात्मक पहचान एक साथ मिलते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, शरीर में होने वाली सामान्य सक्रियता को अर्थ प्रदान करने हेतु हमारी बुद्धि वातावरण के संकेतों का उपयोग करती है। यदि हम तेज धड़कन महसूस करते हैं और सामने कोई खतरा देखते हैं, तो हम उसे 'भय' का नाम देते हैं। यह दृष्टिकोण संवेग में जैविक सक्रियता और मानसिक व्याख्या के अटूट संबंध को वैज्ञानिक रूप से रेखांकित करता है।

211. (D) सफलता की इच्छा।
प्रेरक वह आंतरिक शक्ति या अवस्था है जो व्यवहार को किसी विशेष लक्ष्य की ओर सक्रिय और निर्देशित करती है। सफलता की इच्छा एक शक्तिशाली सामाजिक प्रेरक है जो व्यक्ति को कड़ी मेहनत करने और उत्कृष्टता प्राप्त करने हेतु ऊर्जा प्रदान करती है। खुशी एक संवेग है, हृदय गति एक शारीरिक प्रतिक्रिया है और मुखाकृति का बदलना एक अभिव्यंजक व्यवहार है। प्रेरक इन सभी के पीछे का वह कारण है जो व्यक्ति को एक निश्चित दिशा में गतिमान रखता है जब तक कि इच्छित लक्ष्य या सफलता की प्राप्ति पूर्ण नहीं हो जाती।

212. (B) मूल्यांकन पर निर्भर करता है।
यह कहना कि तनाव की विशेषता यह है कि वह 'मूल्यांकन पर निर्भर नहीं करता', गलत है क्योंकि मूल्यांकन ही तनाव के अनुभव का आधार है। कोई घटना तनावपूर्ण है या नहीं, यह पूरी तरह इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति उस स्थिति और अपनी क्षमताओं का आकलन कैसे करता है। तनाव व्यक्ति और उसके वातावरण के बीच की एक गतिशील अंतःक्रिया है जो शारीरिक प्रतिक्रियाओं को सक्रिय करती है। हालांकि तनाव अक्सर चुनौतीपूर्ण होता है, परंतु यह हमेशा हानिकारक नहीं होता; कभी-कभी यह विकास हेतु आवश्यक प्रेरणा भी प्रदान करता है।

213. (D) 1, 2 और 3
समाजीकरण एक बहुआयामी और व्यापक प्रक्रिया है जिसमें परिवार, संचार माध्यम और साथी समूह तीनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। परिवार वह प्राथमिक स्रोत है जो बचपन में जीवन की नींव रखता है, जबकि संचार माध्यम आधुनिक समाज में दृष्टिकोणों और वैश्विक सूचनाओं को आकार देने का

140. (D) संज्ञानात्मक क्षमताएं।
नैतिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमताओं और मानसिक परिपक्वता से गहराई से प्रभावित होती है। जैसे-जैसे बच्चे की सोचने, तर्क करने और दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की क्षमता विकसित होती है, उसके नैतिक निर्णय भी अधिक जटिल और न्यायपूर्ण होते जाते हैं। नैतिकता केवल नियमों को मानने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन नियमों के पीछे के सिद्धांतों और मानवीय अधिकारों को समझने पर आधारित है। अतः उन्नत मानसिक विकास ही व्यक्ति को सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों को अपनाने के योग्य बनाता है।

141. (C) विशेषताएं।
संवेगात्मक अनुभव में व्यक्तिपरक भावना, शारीरिक परिवर्तन और चेहरे के भावों का एक साथ प्रकट होना संवेग की मुख्य विशेषताओं को दर्शाता है। ये तत्व सामूहिक रूप से यह परिभाषित करते हैं कि संवेग क्या है और इसे कैसे पहचाना जा सकता है। व्यक्तिपरक भावना उस आंतरिक बोध को दर्शाती है, शारीरिक परिवर्तन जैविक सक्रियता को और मुस्कान जैसे भाव बाह्य प्रकटीकरण को स्पष्ट करते हैं। यह एक एकीकृत प्रक्रिया है जो मानव के संवेगात्मक जीवन की जटिलता को चित्रित करती है, जिससे संवेग एक संपूर्ण अनुभव बनता है।

142. (B) साथी समूह।
किशोरावस्था के दौरान व्यक्ति अपने हमउम्र साथियों और मित्र समूह के मानदंडों को अपनाने हेतु बहुत प्रेरित होता है। यह समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है जहाँ किशोर समूह का हिस्सा बनने और अपनी एक अलग पहचान स्थापित करने हेतु साथियों के पहनावे का अनुसरण करता है। साथी समूह इस अवस्था में परिवार से स्वतंत्र एक नया सामाजिक परिवेश प्रदान करते हैं जहाँ किशोर विभिन्न सामाजिक कौशलों और समूह निष्ठा की भावना को सीखते हैं। यह प्रभाव उनकी पसंद और व्यवहार को गहराई से प्रभावित करता है।

143. (D) चक्राकार तर्क पर निर्भर।
अभिप्रेरणा के प्रारंभिक मूलप्रवृत्ति सिद्धांतों की सबसे प्रमुख आलोचना यह है कि वे अक्सर चक्राकार तर्क का उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, यह कहना कि 'लोग आक्रामक व्यवहार करते हैं क्योंकि उनमें आक्रामकता की मूलप्रवृत्ति है', व्यवहार का कारण समझाने के बजाय केवल उसे एक नया नाम देने जैसा है। यह सिद्धांत यह स्पष्ट नहीं करता कि कोई व्यवहार वास्तव में कैसे और क्यों घटित होता है, बल्कि केवल परिणाम को ही कारण मान लेता है। इसके अलावा, यह मानवीय व्यवहार की विविधता की उपेक्षा करता है।

144. (B) 3, 4, 1, 2
संवेग के शैक्टर-सिंगर सिद्धांत के अनुसार, संवेगात्मक अनुभव एक निश्चित क्रम में घटित होता है। सबसे पहले एक बाहरी उद्दीपक घटना होती है जो शरीर में शारीरिक उत्तेजना पैदा करती है। इसके बाद, व्यक्ति उस उत्तेजना का कारण समझने हेतु अपने वातावरण के संकेतों का उपयोग करता है और उसे एक संज्ञानात्मक पहचान या नाम देता है। अंत में, उस पहचान के आधार पर व्यक्ति एक विशिष्ट संवेगात्मक भावना का अनुभव करता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि हमारी सोच और शारीरिक सक्रियता मिलकर संवेग को अर्थ प्रदान करती हैं।

145. (A) लाभकारी या प्रेरक तनाव।
यूस्ट्रेस शब्द का प्रयोग उस तनाव हेतु किया जाता है जो सकारात्मक, लाभकारी और व्यक्ति को कार्य हेतु प्रेरित करने वाला होता है। यह तनाव व्यक्ति की कार्यक्षमता को बढ़ाता है और उसे चुनौतीपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु मानसिक रूप से तैयार करता है। उदाहरण के लिए, किसी प्रतियोगिता का उत्साह यूस्ट्रेस का एक रूप है। नकारात्मक तनाव के विपरीत, जो शरीर को कमजोर करता है, यूस्ट्रेस व्यक्ति में ऊर्जा और आत्मविश्वास का संचार करता है, जिससे वह अधिक प्रभावी ढंग से कार्य करने में सक्षम होता है।

146. (B) एक आवश्यकता जो व्यवहार को निर्देशित करती है।
प्रेरक एक आंतरिक अवस्था या आवश्यकता है जो किसी जीव को सक्रिय करती है और उसके व्यवहार को एक निश्चित लक्ष्य की ओर निर्देशित करती है। यह व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करने वाला वह कारक है जो तब तक बना रहता है जब तक कि इच्छित आवश्यकता की संतुष्टि नहीं हो जाती। प्रेरक जैविक, सामाजिक या व्यक्तिगत हो सकते हैं, परंतु उन सभी का साझा कार्य व्यवहार को उद्देश्यपूर्ण और सार्थक बनाना है। अतः प्रेरक मानवीय गतिविधियों के पीछे की वह शक्ति है जो लक्ष्यों की प्राप्ति को संभव बनाती है।

147. (C) पारिवारिक समाजीकरण।
जब एक नन्हा बच्चा यह सीखता है कि रोने से उसे अपने अभिभावक का ध्यान प्राप्त होता है, तो यह पारिवारिक समाजीकरण का एक प्रारंभिक और महत्वपूर्ण रूप है। इस प्रक्रिया के माध्यम से बच्चा अपने प्राथमिक सामाजिक परिवेश में संचार करना और दूसरों से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना सीखता है। परिवार ही वह पहला संस्थान है जहाँ बच्चा सामाजिक अंतःक्रिया की बुनियादी कड़ियाँ जोड़ता है। ये शुरुआती अनुभव बच्चे के भविष्य के सामाजिक संबंधों और दुनिया के प्रति उसके भरोसे की नींव रखते हैं।

148. (D) एक प्रबंधनीय प्रक्रिया है।
तनाव के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यह कोई स्थिर घटना नहीं है, बल्कि एक गतिशील और प्रबंधनीय प्रक्रिया है। लोग तनाव के प्रति किस प्रकार अनुक्रिया करते हैं और उसे कम करने हेतु किन रणनीतियों को अपनाते हैं, यह उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य हेतु निर्णायक होता है। प्रभावी मुकाबले और प्रबंधन के माध्यम से तनाव के नकारात्मक प्रभावों को नियंत्रित किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति को अपनी परिस्थितियों पर नियंत्रण पाने और प्रतिकूलताओं के बावजूद अपना कल्याण सुनिश्चित करने हेतु सशक्त बनाता है।

149. (C) संदर्भवाद।
संदर्भवाद का सिद्धांत यह मानता है कि मानव विकास कभी भी शून्य में नहीं होता, बल्कि यह परिवार, विद्यालय, संस्कृति और ऐतिहासिक समय जैसे विभिन्न संदर्भों की निरंतर अंतःक्रिया का परिणाम है। प्रत्येक व्यक्ति का विकास उन विशिष्ट परिस्थितियों

अंतर्निहित संभावनाओं को वास्तविकता में बदलना और स्वयं का सर्वोत्तम संस्करण बनना होता है। यह आंतरिक विकास, सत्य की खोज और अपनी विशिष्ट प्रतिभा को समाज के सामने प्रस्तुत करने की एक उच्च आकांक्षा है जो जीवन को सार्थकता और गहराई प्रदान करती है।

223. (C) महत्व का आकलन करना।
तनाव के अनुभव में मूल्यांकन की भूमिका अत्यंत केंद्रीय है क्योंकि यह व्यक्ति को किसी घटना के अर्थ और उसके स्वयं के कल्याण पर पड़ने वाले प्रभाव को समझने में मदद करती है। मूल्यांकन के माध्यम से व्यक्ति यह तय करता है कि क्या कोई परिस्थिति उसके लिए खतरनाक है, चुनौतीपूर्ण है या अप्रासंगिक है। यह मानसिक प्रक्रिया ही निर्धारित करती है कि शरीर में तनाव की प्रतिक्रिया सक्रिय होगी या नहीं। यदि स्थिति को महत्वपूर्ण और कठिन माना जाता है, तभी तनाव का अनुभव होता है। अतः हमारी सोच ही तनाव का वास्तविक नियामक है।

224. (D) वेतन के लिए काम करना।
वेतन हेतु कार्य करना बाह्य अभिप्रेरणा का एक स्पष्ट उदाहरण है क्योंकि यहाँ व्यवहार का उद्देश्य किसी बाहरी पुरस्कार या परिणाम को प्राप्त करना है। बाह्य प्रेरक वे कारक होते हैं जो व्यक्ति के भीतर से नहीं बल्कि बाहरी वातावरण से आते हैं, जैसे धन, पद या सामाजिक मान्यता। इसके विपरीत, आनंद हेतु पढ़ना या पहेली सुलझाना आंतरिक अभिप्रेरणा है जहाँ कार्य स्वयं में सुखद होता है। वेतन जैसे बाह्य प्रेरक व्यक्ति को उन कार्यों को करने हेतु भी प्रेरित करते हैं जो उसकी स्वाभाविक रुचि के न हों।

225. (A) परिवर्तन गर्भाधान से मृत्यु तक होते हैं।
विकास का आजीवन चलने वाला सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि मानव जीवन में परिवर्तन की प्रक्रिया कभी नहीं रुकती। यह गर्भाधान के क्षण से शुरू होती है और जीवन के अंतिम क्षण तक निरंतर जारी रहती है। इसमें केवल बचपन की वृद्धि शामिल नहीं है, बल्कि वयस्कता और वृद्धावस्था के दौरान होने वाले संज्ञानात्मक, सामाजिक और संवेगात्मक बदलाव भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। यह सिद्धांत मानता है कि हर आयु वर्ग में व्यक्ति नए कौशल सीखता है और बदलती परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बिठाता है, जिससे विकास एक निरंतर गतिशील यात्रा बन जाता है।

226. (B) खुश या प्रफुल्लित महसूस करेंगे।
शैक्टर-सिंगर सिद्धांत के अनुसार, जब व्यक्ति के शरीर में अकारण उत्तेजना होती है, तो वह उसे समझने हेतु अपने आसपास के वातावरण के संकेतों का उपयोग करता है। यदि उसे एक प्रफुल्लित और खुश व्यक्ति के साथ रखा जाता है, तो वह अपनी आंतरिक उत्तेजना को उस खुशी के साथ जोड़ देगा और स्वयं भी वैसा ही महसूस करने लगेगा। यह प्रयोग सिद्ध करता है कि हमारी बुद्धि शारीरिक सक्रियता को परिस्थिति के अनुसार एक विशिष्ट संज्ञानात्मक पहचान प्रदान करती है, जिससे हमारे संवेगात्मक अनुभव का स्वरूप और दिशा निर्धारित होती है।

227. (C) समाजीकरण।
समाजीकरण वह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक बच्चा धीरे-धीरे अपने समाज की अपेक्षाओं, मूल्यों, भाषा और आचरण के नियमों को सीखता है। यह प्रक्रिया उसे एक जैविक प्राणी से एक सामाजिक सदस्य के रूप में विकसित करती है, जिससे वह दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से अंतःक्रिया करने योग्य बनता है। परिवार, विद्यालय और मित्र इस शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाजीकरण के द्वारा ही व्यक्ति अपनी सामाजिक पहचान बनाता है और यह समझता है कि विभिन्न परिस्थितियों में उसे किस प्रकार की भूमिका निभानी चाहिए।

228. (C) प्रोत्साहन सिद्धांत।
प्रोत्साहन सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि व्यवहार बाहरी पुरस्कारों या लक्ष्यों द्वारा प्रेरित होता है जो व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। जब एक छात्र शिक्षक से प्रशंसा प्राप्त करने हेतु कड़ी मेहनत करता है, तो प्रशंसा यहाँ एक बाहरी प्रोत्साहन के रूप में कार्य करती है। यह व्यवहार किसी आंतरिक जैविक कमी को पूरा करने हेतु नहीं है, बल्कि समाज से मिलने वाले सकारात्मक परिणाम हेतु है। यह सिद्धांत बाहरी वातावरण में मौजूद उन उद्दीपकों के महत्व को रेखांकित करता है जो मानवीय कार्यक्षमता और सार्थक प्रयासों को बढ़ाते हैं।

229. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
तनाव केवल नकारात्मक घटनाओं से नहीं होता, बल्कि सकारात्मक घटनाएँ जैसे विवाह या पदोन्नति भी तनाव पैदा कर सकती हैं जिन्हें यूस्ट्रेस कहा जाता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि शरीर की शारीरिक प्रतिक्रिया, जैसे हृदय गति का बढ़ना और ऊर्जा का संचार, सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रतिबलकों हेतु लगभग एक जैसी हो सकती है। शरीर केवल 'मांग' के प्रति अनुक्रिया करता है, चाहे वह मांग खुशी से जुड़ी हो या संकट से। अतः तनाव के प्रति शरीर की तैयारी एक गैर-विशिष्ट और सार्वभौमिक जैविक प्रक्रिया है।

230. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
अभिप्रेरणा के ये विभिन्न सिद्धांत मानवीय व्यवहार के पीछे के कारणों को स्पष्ट करने हेतु अलग-अलग दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। मूलप्रवृत्ति सिद्धांत जन्मजात प्रतिरूपों पर, अंतर्नोद सिद्धांत आंतरिक तनाव को कम करने पर और प्रोत्साहन सिद्धांत बाहरी लक्ष्यों के आकर्षण पर आधारित है। मास्लो का सिद्धांत इन सभी को एक व्यवस्थित क्रम में बांधता है जहाँ बुनियादी जरूरतों को उच्च आवश्यकताओं का आधार माना गया है। ये सभी सिद्धांत मिलकर यह समझने में मदद करते हैं कि मानवीय गतिविधियों को ऊर्जा और निश्चित दिशा कहाँ से प्राप्त होती है।

231. (C) लचीलापन।
विकास और स्नायु विज्ञान के संदर्भ में लचीलापन या सुघट्यता मस्तिष्क की उस अद्वितीय क्षमता को दर्शाता है जिसके माध्यम से वह अनुभवों के आधार पर अपनी संरचना और कार्यों को पुनर्गठित करता है। यह क्षमता हमें नई चीजें सीखने, पुरानी आदतों को बदलने और चोट के बाद मस्तिष्क के कार्यों को पुनः प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। यह सिद्ध करता है कि

पसीने में बदलाव। इसके विपरीत, यह तय करना कि 'दोष किसका है', एक विशुद्ध रूप से संज्ञानात्मक या मानसिक प्रक्रिया है जिसमें तर्क, निर्णय और मूल्यांकन शामिल होते हैं। यह शारीरिक उत्तेजना का हिस्सा नहीं है, बल्कि उस स्थिति की एक मानसिक व्याख्या है जो संवेग को प्रभावित कर सकती है। अतः यह जैविक सह-संबंधी के बजाय संवेगात्मक प्रक्रिया के संज्ञानात्मक आयाम से संबंधित है।

285. (C) आत्म-सिद्धि की आवश्यकताएं।
अब्राहम मास्लो के अनुसार, जब व्यक्ति की सभी बुनियादी और सामाजिक आवश्यकताएं संतुष्ट हो जाती हैं, तो वह अपनी पूर्ण क्षमता प्राप्त करने और स्वयं का सर्वोत्तम संस्करण बनने हेतु कार्य करता है। इसे आत्म-सिद्धि की आवश्यकता कहा जाता है, जो पदानुक्रम का उच्चतम शिखर है। इस स्तर पर व्यक्ति रचनात्मकता, नैतिकता और व्यक्तिगत विकास की स्थितियों की तलाश करता है। यह किसी बाहरी कमी को पूरा करने हेतु नहीं, बल्कि अपनी अंतर्निहित प्रतिभाओं को पूरी तरह से प्रकट करने और एक सार्थक जीवन जीने की उच्च आकांक्षा से प्रेरित होता है जो उसे सार्थकता प्रदान करता है।

286. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो जन्म के बाद रुकती नहीं, बल्कि गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक निरंतर चलती रहती है। यह सिद्धांत कि विकास आजीवन होता है, इस विचार पर आधारित है कि संज्ञानात्मक, सामाजिक और संवेगात्मक क्षेत्रों में परिवर्तन वृद्धावस्था तक होते रहते हैं। व्यक्ति हर उम्र में नई चुनौतियों का सामना करता है, नए अनुभव प्राप्त करता है और बदलती परिस्थितियों के साथ खुद को ढालना सीखता है। यह निरंतरता ही विकास को एक गतिशील यात्रा बनाती है जिसमें हर चरण का अपना विशिष्ट महत्व और परिवर्तन होता है जो परिपक्वता लाता है।

287. (D) लक्ष्य-निर्देशित अवस्था।
प्रेरक की सबसे प्रमुख और परिभाषित विशेषता यह है कि यह एक लक्ष्य-निर्देशित आंतरिक अवस्था है जो व्यक्ति को सक्रिय करती है। यह केवल एक आकस्मिक भावना या शारीरिक प्रतिवर्त नहीं है, बल्कि एक सचेत या अवचेतन प्रयास है जो किसी विशिष्ट आवश्यकता को संतुष्ट करने हेतु व्यवहार को निर्देशित करता है। चाहे वह ज्ञान प्राप्त करना हो या भूख मिटाना, प्रेरक व्यवहार को तब तक ऊर्जित और बनाए रखता है जब तक कि इच्छित उद्देश्य की प्राप्ति नहीं हो जाती। यह लक्ष्य के प्रति झुकाव ही मानवीय गतिविधियों को सार्थक और दिशात्मक बनाता है।

288. (A) वयस्क भूमिका में समाजीकरण।
पदोन्नति के बाद नई जिम्मेदारियों और कौशलों को सीखना वयस्क समाजीकरण का एक स्पष्ट उदाहरण है। समाजीकरण केवल बचपन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे जीवन चलता है जहाँ व्यक्ति नई सामाजिक और व्यावसायिक भूमिकाओं के अनुकूल ढलना सीखता है। कार्यस्थल पर आने वाले ये बदलाव व्यक्ति से नए दृष्टिकोण, व्यवहार और उत्तरदायित्वों को आत्मसात करने की अपेक्षा करते हैं। यह प्रक्रिया उसे अपने नए परिवेश में प्रभावी ढंग से कार्य करने और एक परिपक्व सामाजिक सदस्य के रूप में अपनी भूमिका को बेहतर ढंग से निभाने में सक्षम बनाती है।

289. (B) जानकारी मांगना।
तनाव से निपटने की रणनीतियों में 'जानकारी मांगना' एक अत्यंत प्रभावी और समस्या-केंद्रित मुकाबला रणनीति मानी जाती है। जब कोई व्यक्ति तनावपूर्ण स्थिति के बारे में अधिक तथ्य एकत्र करता है, तो वह अनिश्चितता को कम करता है और स्थिति पर नियंत्रण पाने का अनुभव करता है। इसके विपरीत, शारीरिक लक्षण जैसे रक्तचाप बढ़ना या चिंता महसूस करना तनाव के प्रभाव हैं, न कि रणनीतियाँ। जानकारी मांगकर व्यक्ति अधिक तार्किक निर्णय ले सकता है और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने के लिए स्वयं को मानसिक और व्यावहारिक रूप से बेहतर तैयार कर सकता है।

290. (C) संज्ञानात्मक व्याख्या।
शैक्टर-सिंगर सिद्धांत का सबसे बड़ा योगदान संवेग की प्रक्रिया में संज्ञानात्मक व्याख्या की महत्वपूर्ण भूमिका को स्थापित करना था। इस सिद्धांत ने यह विचार पेश किया कि केवल शारीरिक उत्तेजना संवेगात्मक अनुभव को स्पष्ट नहीं कर सकती, बल्कि व्यक्ति उस उत्तेजना को परिस्थिति के संदर्भ में कैसे समझता है, वही निर्णायक है। इस दृष्टिकोण ने संवेगों को समझने के तरीके को बदल दिया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि हमारी बुद्धि और वातावरण के संकेत मिलकर यह तय करते हैं कि हम किसी विशेष क्षण में भय, क्रोध या प्रसन्नता में से क्या महसूस करेंगे।

291. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
ये मनोवैज्ञानिक अवधारणाएं मानव व्यवहार और अनुभवों के विभिन्न पहलुओं को परिभाषित करती हैं। भूख एक प्राथमिक प्रेरक है जो जैविक उत्तरजीविता हेतु अनिवार्य है। उपलब्धि की आवश्यकता एक सामाजिक प्रेरक है जो उत्कृष्टता प्राप्त करने की मानवीय इच्छा को दर्शाती है। संवेग, जैसे सफलता के बाद खुशी, हमारी आंतरिक भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करते हैं। तनाव कार्य के बोझ या अन्य मांगों के प्रति शरीर और मन की होने वाली अनुक्रिया है। ये सभी कारक मिलकर मानवीय गतिविधियों को सक्रिय करने, निर्देशित करने और उन्हें अर्थपूर्ण बनाने में सहायता करते हैं।

292. (B) संदर्भवाद।
विकास का संदर्भवाद सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि मानवीय विकास कभी भी शून्य में नहीं होता, बल्कि यह निरंतर बदलती ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का परिणाम है। व्यक्ति का विकास उस समय की घटनाओं और परिवेश से गहराई से प्रभावित होता है जिसमें वह रहता है। इसका अर्थ है कि अलग-अलग युगों या संस्कृतियों में पले-बढ़े व्यक्तियों के विकास के मार्ग भिन्न हो सकते हैं। यह सिद्धांत विकास को एक अत्यंत गतिशील और वातावरण-आधारित प्रक्रिया के रूप में देखता है, जहाँ बाहरी संदर्भ व्यक्ति की क्षमताओं और व्यक्तित्व को निरंतर आकार देते हैं।

क्रोध या हर्ष के रूप में प्रकट होगा। यह सिद्धांत संज्ञान को सर्वोपरि मानता है।

241. (B) 2, 3, 1
मानवीय समाजीकरण की प्रक्रिया एक स्वाभाविक और क्रमिक अनुक्रम का पालन करती है। सबसे पहला और गहरा प्रभाव परिवार का होता है, जहाँ जीवन की शुरुआती नींव और मौलिक मूल्य स्थापित होते हैं। इसके बाद, बच्चा विद्यालय में प्रवेश करता है जहाँ वह औपचारिक शिक्षा और समाज के व्यापक नियमों को सीखता है। अंत में, विशेष रूप से किशोरावस्था के दौरान, साथी समूह सबसे अधिक प्रभावशाली हो जाते हैं जो पहचान और सामाजिक तुलना का नया संदर्भ प्रदान करते हैं। यह व्यवस्थित क्रम व्यक्ति के सामाजिक विकास की निरंतरता को दर्शाता है।

242. (A) संवेगात्मक मूल्यांकन।
प्रेरकों को सामान्यतः जैविक, सामाजिक और व्यक्तिगत श्रेणियों में विभाजित किया जाता है, जो व्यवहार को ऊर्जा और दिशा प्रदान करने वाली विभिन्न शक्तियों को दर्शाते हैं। जैविक प्रेरक जीवित रहने हेतु, सामाजिक प्रेरक दूसरों के साथ जुड़ने हेतु और व्यक्तिगत प्रेरक निजी लक्ष्यों हेतु कार्य करते हैं। संवेगात्मक मूल्यांकन कोई प्रेरक नहीं है, बल्कि यह एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसका उपयोग संवेगों को समझने हेतु किया जाता है। यद्यपि मूल्यांकन प्रेरकों को प्रभावित कर सकता है, परंतु यह स्वयं व्यवहार को सक्रिय करने वाला प्राथमिक स्रोत नहीं है।

243. (C) तनाव के प्रति शारीरिक प्रतिक्रियाएं।
'लड़ो, भागो या जम जाओ' प्रतिक्रियाएं तनावपूर्ण और खतरनाक स्थितियों के प्रति मानव शरीर की बुनियादी और स्वचालित जैविक अनुक्रियाएं हैं। ये प्रतिक्रियाएं स्वायत्त तंत्रिका तंत्र द्वारा संचालित होती हैं जो शरीर को खतरे का सामना करने या उससे बचने हेतु तत्काल तैयार करती हैं। हृदय गति का बढ़ना, मांसपेशियों में खिंचाव और ऊर्जा का संचार इसी प्रक्रिया के हिस्से हैं। यह तंत्र अस्तित्व की रक्षा हेतु प्रकृति द्वारा विकसित एक सुरक्षा प्रणाली है जो व्यक्ति को आपातकालीन स्थितियों में त्वरित निर्णय और क्रिया करने में सक्षम बनाती है।

244. (D) समाजीकरण।
समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बच्चा अपने अभिभावकों और आसपास के लोगों के व्यवहार को देखकर उसे सीखता है। जब एक बच्चा क्रोध व्यक्त करने के तरीके की नकल करता है, तो वह वास्तव में अपने सामाजिक परिवेश से संवेगात्मक प्रदर्शन के नियमों को आत्मसात कर रहा होता है। यह अवलोकन आधारित सीख बच्चे के सामाजिक आचरण और भविष्य के व्यवहारिक प्रतिरूपों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परिवार इस प्रक्रिया का प्राथमिक केंद्र है जहाँ से बच्चा समाज के अपेक्षित व्यवहारों की पहली झलक प्राप्त करता है।

245. (B) विकास स्थिर और अपरिवर्तनीय होता है।
जीवन-काल विकास के सिद्धांतों के अनुसार, विकास कभी भी स्थिर या अपरिवर्तनीय नहीं होता है। इसके विपरीत, विकास एक निरंतर चलने वाली गतिशील प्रक्रिया है जिसमें पूरे जीवन भर व्यवस्थित रुप से परिवर्तन होते रहते हैं। विकास बहुआयामी होता है क्योंकि इसमें शारीरिक, मानसिक और सामाजिक बदलाव एक साथ चलते हैं। लचीलापन विकास की एक मुख्य विशेषता है, जिसका अर्थ है कि अनुभवों और वातावरण के माध्यम से विकास की दिशा में सुधार संभव है। अतः विकास को एक स्थायी अवस्था के बजाय निरंतर परिवर्तन की यात्रा मानना ही सही है।

246. (D) 1, 2 और 3
ये तीनों मनोवैज्ञानिक सिद्धांत संवेग की प्रक्रिया के विभिन्न महत्वपूर्ण आयामों पर बल देते हैं और एक समग्र समझ प्रदान करते हैं। शैक्टर-सिंगर सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि उत्तेजना को अर्थ देने हेतु संज्ञानात्मक पहचान अनिवार्य है। लाजरस का मूल्यांकन सिद्धांत यह बताता है कि संवेग के उत्पन्न होने से पहले स्थिति का मानसिक आकलन जरूरी है। लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत संवेग की शारीरिक गहराई को स्नायु तंत्र की उत्तेजना से जोड़ता है। ये सभी सिद्धांत मानवीय संवेगों की जटिलता को जैविक और मानसिक स्तरों पर परिभाषित करते हैं।

247. (C) समस्थापन।
समस्थापन वह जैविक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शरीर अपने आंतरिक वातावरण में स्थिरता और संतुलन बनाए रखने का प्रयास करता है। यह एक स्व-नियामक तंत्र है जो तापमान, जल स्तर और ऊर्जा जैसे महत्वपूर्ण कारकों को एक निश्चित सीमा के भीतर रखता है। जब भी इस संतुलन में कोई विक्षोभ उत्पन्न होता है, तो शरीर उसे ठीक करने हेतु जैविक और व्यवहारिक प्रतिक्रियाएं शुरु कर देता है। अभिप्रेरणा का अंतर्नोद सिद्धांत इसी अवधारणा पर आधारित है, जहाँ व्यवहार का मुख्य लक्ष्य शरीर की इस संतुलित अवस्था को पुनः प्राप्त करना होता है।

248. (A) संवेग।
संवेग एक जटिल मनोवैज्ञानिक अवस्था है जिसका सबसे प्रमुख घटक किसी विशिष्ट भावना, जैसे खुशी या भय का व्यक्तिपरक अनुभव है। यह वह निजी और आंतरिक अनुभूति है जो व्यक्ति को किसी परिस्थिति के प्रति अपनी संवेदनात्मक प्रतिक्रिया का बोध कराती है। यद्यपि संवेग के साथ शारीरिक परिवर्तन और अभिव्यंजक व्यवहार भी होते हैं, परंतु महसूस करने की यह व्यक्तिगत अवस्था ही संवेग को अन्य प्रक्रियाओं से अलग और विशिष्ट बनाती है। यह मानवीय चेतना का अनिवार्य हिस्सा है जो हमारे अनुभवों को गहराई और रंग प्रदान करता है।

249. (C) सजगता ध्यान का अभ्यास करना।
तनाव से निपटने की रणनीतियों में वे सचेत प्रयास शामिल होते हैं जो व्यक्ति तनाव के नकारात्मक प्रभावों को कम करने हेतु करता है। सजगता ध्यान का अभ्यास एक प्रभावी मुकाबला रणनीति है जो व्यक्ति को वर्तमान क्षण में केंद्रित रहने और अपनी संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं को शांत करने में

मदद करती है। हार्मोन का स्राव या हृदय गति बढ़ना तनाव के प्रति शारीरिक लक्षण हैं, न कि उससे निपटने की रणनीतियाँ। सक्रिय प्रबंधन के माध्यम से व्यक्ति मानसिक शांति प्राप्त कर तनावपूर्ण परिस्थितियों के प्रतिकूल प्रभावों को प्रभावी ढंग से नियंत्रित कर सकता है।

250. (D) आत्म-सिद्धि।
अब्राहम मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम के अनुसार, जब किसी व्यक्ति की सभी निम्न स्तर की आवश्यकताएं—शारीरिक, सुरक्षा, सामाजिक और सम्मान—पूर्ण रूप से संतुष्ट हो जाती हैं, तब वह अपनी पूर्ण आंतरिक क्षमता को साकार करने की ओर बढ़ता है। इसे आत्म-सिद्धि कहा जाता है, जो मानवीय विकास का उच्चतम शिखर है। इस अवस्था में व्यक्ति अपनी रचनात्मकता, नैतिकता और अद्वितीय प्रतिभाओं को पूर्ण रूप से प्रकट करने हेतु अभिप्रेरित होता है। यह स्वयं के सर्वोत्तम संस्करण बनने की निरंतर चलने वाली यात्रा है जो जीवन को सार्थकता प्रदान करती है।

251. (A) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत।
अभिप्रेरणा का मूलप्रवृत्ति सिद्धांत चार्ल्स डार्विन के विकासवाद के सिद्धांतों से गहराई से प्रभावित था। इस सिद्धांत के समर्थकों का मानना था कि मानवीय व्यवहार, पशुओं की तरह, जन्मजात और जैविक रूप से निर्धारित प्रवृत्तियों द्वारा संचालित होता है जो अस्तित्व की रक्षा और प्रजनन हेतु आवश्यक हैं। इस दृष्टिकोण ने यह विचार प्रस्तुत किया कि हमारी कई गतिविधियाँ सीखी हुई नहीं होतीं, बल्कि वे प्रकृति द्वारा हमारे जैविक ढांचे में पूर्व-प्रोग्राम की गई होती हैं। डार्विन के कार्य ने व्यवहार के जैविक आधार को समझने में भूमिका निभाई।

252. (B) शारीरिक उत्तेजना उत्पन्न करता है।
संवेग की प्रक्रिया में तंत्रिका तंत्र की भूमिका अत्यंत निर्णायक है क्योंकि यह उन सभी शारीरिक परिवर्तनों हेतु जिम्मेदार है जो संवेगात्मक अनुभव के साथ होते हैं। स्वायत्त तंत्रिका तंत्र हृदय गति, श्वसन और हार्मोनल स्राव को नियंत्रित कर शरीर में उत्तेजना उत्पन्न करता है, जो व्यक्ति को स्थिति के प्रति प्रतिक्रिया देने हेतु जैविक रूप से तैयार करती है। यह उत्तेजना संवेग को तीव्रता प्रदान करती है, जिससे वह केवल एक विचार न रहकर एक जीवंत शारीरिक अनुभव बन जाता है। इस प्रकार, स्नायु तंत्र संवेग का भौतिक आधार है।

253. (C) यह वयस्क होने पर समाप्त हो जाता है।
समाजीकरण के बारे में यह धारणा गलत है कि यह वयस्क होने पर समाप्त हो जाता है। वास्तव में, समाजीकरण एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्म से शुरु होकर मृत्यु तक जारी रहती है। जैसे-जैसे व्यक्ति जीवन के नए चरणों में प्रवेश करता है, जैसे नई आजीविका, विवाह या वृद्धावस्था, उसे समाज की नई अपेक्षाओं, भूमिकाओं और नियमों के साथ सामंजस्य बिठाना पड़ता है। समाज और संस्कृति के साथ होने वाली यह अंतःक्रिया और सीखने की प्रक्रिया कभी नहीं रुकती, जिससे व्यक्ति निरंतर बदलती परिस्थितियों के अनुकूल बना रहता है।

254. (D) उत्सुकता और अभिप्रेरणा।
संज्ञानात्मक मूल्यांकन सिद्धांत के अनुसार, हम किसी स्थिति का आकलन कैसे करते हैं, वह हमारे संवेगात्मक अनुभव को पूरी तरह बदल सकता है। जब कोई छात्र परीक्षा को एक 'खतरे' के बजाय 'चुनौती' के रूप में देखता है, तो उसका संवेग भय से बदलकर उत्सुकता और अभिप्रेरणा में परिवर्तित हो जाता है। यह सकारात्मक दृष्टिकोण उसे घबराने के बजाय अपनी ऊर्जा को प्रदर्शन सुधारने में लगाने हेतु प्रेरित करता है। यह स्पष्ट करता है कि हमारी मानसिक व्याख्या ही यह तय करती है कि कोई कठिन परिस्थिति हमारे लिए बाधा बनेगी या प्रगति का अवसर।

255. (A) समस्थापन।
समस्थापन की अवधारणा अंतर्नोद सिद्धांत का एक अनिवार्य और अद्वितीय हिस्सा है जो इसे प्रोत्साहन सिद्धांत से अलग करती है। अंतर्नोद सिद्धांत यह मानता है कि व्यवहार का मुख्य लक्ष्य शरीर के आंतरिक जैविक संतुलन को पुनः स्थापित करना और कमी से उत्पन्न तनाव को शांत करना है। इसके विपरीत, प्रोत्साहन सिद्धांत बाहरी लक्ष्यों के आकर्षण और पुरस्कारों पर ध्यान केंद्रित करता है, जहाँ आंतरिक संतुलन की स्थिति प्राथमिक चालक नहीं होती। अतः समस्थापन ही वह जैविक केंद्र बिंदु है जो आंतरिक दबाव आधारित अभिप्रेरणा को निर्देशित करता है।

256. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
ये मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं मानव व्यवहार और अनुभव के विभिन्न पहलुओं को गहराई से स्पष्ट करती हैं। अभिप्रेरणा वह शक्ति है जो व्यवहार को ऊर्जा और निश्चित दिशा प्रदान करती है। संवेग महसूस करने की एक व्यक्तिपरक अवस्था है जिसमें भावनाएं सर्वोपरि होती हैं। तनाव मूल्यांकन और मुकाबले की एक गतिशील प्रक्रिया है जो चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के प्रति शरीर और मन की प्रतिक्रिया को दर्शाती है। विकास उन सिद्धांतों पर आधारित है जो बताते हैं कि मानवीय क्षमताएं लचीली होती हैं और पूरे जीवन भर व्यवस्थित रूप से बदलती रहती हैं।

257. (C) उन्नत नैतिक विकास।
जब कोई व्यक्ति केवल कानून के भय या सामाजिक दबाव के कारण नहीं, बल्कि सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों और न्याय के बोध के आधार पर सही कार्य करने का निर्णय लेता है, तो वह उन्नत नैतिक विकास की अवस्था में होता है। इस चरण में व्यक्ति का विवेक उसे उन मूल्यों का अनुसरण करने हेतु प्रेरित करता है जो मानवता, समानता और निष्पक्षता हेतु अनिवार्य हैं। यह नैतिक परिपक्वता का उच्चतम स्तर है जहाँ व्यक्ति का व्यवहार उसके गहरे आंतरिक विश्वासों और सार्वभौमिक मानवीय अधिकारों की समझ से निर्देशित होता है, जो स्वार्थ से परे है।

258. (D) शैक्टर-सिंगर सिद्धांत।
शैक्टर-सिंगर सिद्धांत का यह मुख्य निष्कर्ष है कि एक ही प्रकार की उच्च शारीरिक उत्तेजना को परिस्थिति और संज्ञानात्मक पहचान के आधार पर अलग-अलग संवेगों के रूप में महसूस किया जा सकता है। यदि उत्तेजित व्यक्ति सुखद वातावरण में

है, तो वह उसे खुशी के रूप में पहचानेगा, और यदि प्रतिकूल स्थिति में है, तो उसे क्रोध के रूप में देख सकता है। यह सिद्धांत यह प्रमाणित करता है कि संवेग केवल जैविक सक्रियता नहीं है, बल्कि वह इस बात का परिणाम है कि हमारा मस्तिष्क उस सक्रियता को वर्तमान संदर्भ में कैसे व्याख्यायित करता है।

259. (A) एक क्रांतिक अवधि।
भाषा विकास में प्रारंभिक जोखिम और अनुभवों पर निर्भरता क्रांतिक अवधि के सिद्धांत का एक सशक्त चित्रण है। यह बताता है कि मानवीय मस्तिष्क में भाषा सीखने हेतु एक विशिष्ट और संवेदनशील समय सीमा होती है। यदि बच्चा इस प्रारंभिक चरण के दौरान भाषाई वातावरण के संपर्क में नहीं आता, तो उसके लिए भविष्य में स्वाभाविक रूप से संचार कौशल विकसित करना अत्यंत कठिन हो जाता है। यह जैविक रूप से निर्धारित समय संवेदनशीलता यह स्पष्ट करती है कि विकास के कुछ पहलुओं हेतु सही समय पर अनुभवों का मिलना कितना निर्णायक है।

260. (B) जैविक प्रेरक।
जैविक प्रेरक वे जन्मजात और अनिवार्य आंतरिक शक्तियाँ हैं जो शरीर के समस्थापन और उत्तरजीविता को सुनिश्चित करने हेतु व्यवहार को निर्देशित करती हैं। भूख, प्यास, निद्रा और तापमान नियंत्रण इसके प्रमुख उदाहरण हैं, जो किसी भी जीव के जीवित रहने हेतु प्राथमिक रूप से आवश्यक हैं। ये प्रेरक शरीर के भीतर होने वाली कमी के प्रति प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न होते हैं और व्यक्ति को तब तक सक्रिय रखते हैं जब तक कि वह जैविक आवश्यकता पूरी नहीं हो जाती। ये मानवीय अभिप्रेरणा के सबसे प्राचीन और शक्तिशाली जैविक आधार के रूप में कार्य करते हैं।

261. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
तनाव की प्रक्रिया में संज्ञानात्मक मूल्यांकन एक अनिवार्य मध्यस्थ की भूमिका निभाता है, जो यह तय करता है कि कोई घटना वास्तव में तनावपूर्ण होगी या नहीं। कोई भी बाहरी स्थिति स्वयं में तनावपूर्ण नहीं होती, बल्कि यह इस बात पर निर्भर करती है कि व्यक्ति उसे अपनी सुरक्षा और संसाधनों हेतु कितना बड़ा खतरा मानता है। यदि व्यक्ति का बोध उसे यह बताता है कि वह स्थिति को संभाल सकता है, तो तनाव की प्रतिक्रिया कम या सकारात्मक होगी। अतः हमारी मानसिक व्याख्या ही बाह्य घटनाओं और हमारी शारीरिक-मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं के बीच की कड़ी है।

262. (D) आत्म-सिद्धि।
अब्राहम मास्लो के आवश्यकताओं के पदानुक्रम में आत्म-सिद्धि को पिरामिड के सबसे ऊपरी शिखर पर रखा गया है। यह वह अवस्था है जहाँ व्यक्ति अपनी सभी अंतर्निहित संभावनाओं और क्षमताओं को पूर्ण रूप से साकार करने का प्रयास करता है। यह अन्य आवश्यकताओं की तरह किसी बाहरी कमी को पूरा करने हेतु नहीं है, बल्कि यह व्यक्तिगत विकास, नैतिकता, रचनात्मकता और सत्य की खोज की एक उच्च मानसिक अवस्था है। मास्लो का मानना था कि इस स्तर तक पहुँचने हेतु पहले की सभी निम्न स्तर की आवश्यकताओं का संतुष्ट होना अनिवार्य है।

263. (C) सांस्कृतिक मानदंडों को प्राप्त करना।
समाजीकरण वह व्यापक और निरंतर प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने समाज और संस्कृति के मूल्यों, मानदंडों, भाषा और अपेक्षित व्यवहारों को सीखता और आत्मसात करता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को एक जैविक प्राणी से एक क्रियाशील सामाजिक सदस्य के रूप में परिवर्तित करती है। इसके माध्यम से ही समाज की संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होती है। समाजीकरण व्यक्ति को यह समझने में सक्षम बनाता है कि उसे विभिन्न सामाजिक संदर्भों में किस प्रकार आचरण करना चाहिए ताकि वह समाज का जिम्मेदार हिस्सा बन सके।

264. (D) तीव्रता सक्रियण से संबंधित है।
लिंड्सले के सक्रियण सिद्धांत का मुख्य प्रस्ताव यह है कि संवेग की तीव्रता सीधे तौर पर मस्तिष्क और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के सक्रियण स्तर से जुड़ी होती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, संवेगात्मक अनुभव चेतना के एक सातत्य पर आधारित होते हैं, जहाँ उत्तेजना की मात्रा ही यह निर्धारित करती है कि संवेग कितना प्रबल या सूक्ष्म महसूस होगा। उच्च सक्रियता तीव्र संवेगात्मक विक्षोभ या उत्साह पैदा करती है, जबकि निम्न सक्रियता शांत और सामान्य अवस्थाओं को दर्शाती है। यह सिद्धांत संवेग को स्नायु तंत्र की ऊर्जा के भौतिक प्रकटीकरण के रूप में देखता है।

265. (B) आनंद के लिए पियानो बजाना।
आंतरिक अभिप्रेरणा उस व्यवहार को संदर्भित करती है जो व्यक्ति अपनी स्वयं की खुशी, संतोष और स्वाभाविक रुचि हेतु करता है, न कि किसी बाहरी पुरस्कार हेतु। जब कोई व्यक्ति केवल आनंद प्राप्त करने हेतु पियानो बजाता है, तो वह गतिविधि स्वयं में ही एक पुरस्कार होती है। यहाँ कोई बाहरी दबाव या भौतिक लाभ कार्य को संचालित नहीं करता। इस प्रकार की अभिप्रेरणा में व्यक्ति की स्वायत्तता और आत्म-संतुष्टि सबसे प्रबल होती है, जो उसे उस कार्य में लंबे समय तक गहराई से संलग्न रहने हेतु प्रेरित करती है और प्रदर्शन में सुधार लाती है।

266. (A) लाभ/हानि की आजीवन चलने वाली प्रक्रिया।
मानव विकास के बारे में यह कथन सत्य है कि यह पूरे जीवन-काल में लाभ और हानि की एक निरंतर चलने वाली गतिशील प्रक्रिया है। विकास का अर्थ केवल नई क्षमताओं को प्राप्त करना (लाभ) नहीं है, बल्कि इसमें समय के साथ कुछ शारीरिक या मानसिक शक्तियों में आने वाली कमी (हानि) और उनके प्रति अनुकूलन भी शामिल है। यह प्रक्रिया बहुआयामी और लचीली होती है, जहाँ व्यक्ति अनुभवों और वातावरण के माध्यम से अपनी दिशा बदल सकता है। अतः विकास गर्भाधान से मृत्यु तक होने वाले सकारात्मक और नकारात्मक परिवर्तनों का योग है।

अध्याय 06
शोध विधियाँ एवं सांख्यिकी

1. निम्नलिखित में से कौन सी वैज्ञानिक अनुसंधान की सबसे मूलभूत विशेषता है?
   (A) यह व्यक्तिगत विश्वासों और अंतर्ज्ञान पर आधारित है।
   (B) इसमें जांच की एक व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया शामिल होती है।
   (C) इसके निष्कर्ष पूर्ण होते हैं और उनमें कभी संशोधन नहीं किया जा सकता है।
   (D) यह मुख्य रूप से वास्तविक साक्ष्यों और प्रशंसापत्रों पर निर्भर करता है।

2. वैज्ञानिक अनुसंधान के संदर्भ में परिकल्पना क्या है?
   (A) चरों के बीच संबंधों के विषय में एक अनंतिम कथन।
   (B) एक सत्यापित तथ्य जो सभी संदर्भों में सत्य सिद्ध हुआ है।
   (C) विभिन्न शोध निष्कर्षों का विस्तृत सारांश।
   (D) अवलोकनों की व्याख्या करने के लिए एक जटिल सैद्धांतिक ढांचा।

3. स्मृति पर कैफीन के प्रभाव का अध्ययन करने वाले एक प्रयोग में, प्रतिभागियों को दी गई कैफीन की मात्रा है:
   (A) आश्रित चर
   (B) नियंत्रित चर
   (C) स्वतंत्र चर
   (D) बाह्य चर

4. एक शोधकर्ता उन व्यक्तियों को चुनकर अध्ययन के लिए प्रतिभागियों का चयन करता है जो सबसे आसानी से सुलभ हैं। यह किस प्रकार के प्रतिचयन का उदाहरण है?
   (A) स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन
   (B) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
   (C) गुच्छ प्रतिचयन
   (D) सुविधाजनक प्रतिचयन

5. वैज्ञानिक अनुसंधान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. वैज्ञानिक अनुसंधान पुनरावृत्ति योग्य होना चाहिए।
   II. वैज्ञानिक निष्कर्षों को अंतिम और अपरिवर्तनीय माना जाता है।
   III. वैज्ञानिक प्रक्रिया में वस्तुनिष्ठता एक प्रमुख लक्ष्य है।
   ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
   (A) केवल I और II
   (B) केवल II और III
   (C) केवल I और III
   (D) I, II और III

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I: टाइप I त्रुटि तब होती है जब एक शोधकर्ता उस शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहता है जो वास्तव में गलत है।
   कथन II: टाइप II त्रुटि तब होती है जब एक शोधकर्ता उस शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर देता है जो वास्तव में सत्य है।
   निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
   (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
   (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
   (C) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
   (D) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।

7. निम्नलिखित में से कौन सा प्रयोगात्मक अभिकल्प का उद्देश्य नहीं है?
   (A) चरों के बीच कार्य-कारण संबंध स्थापित करना।
   (B) बाह्य चरों के प्रभाव को नियंत्रित करना।
   (C) एक विशिष्ट परिकल्पना का परीक्षण करना।
   (D) पूर्ण निश्चितता के साथ एक सिद्धांत को सिद्ध करना।

8. एक 2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प में शामिल है:
   (A) दो स्वतंत्र चर, प्रत्येक दो स्तरों के साथ।
   (B) दो आश्रित चर, प्रत्येक दो स्तरों के साथ।
   (C) चार स्तरों वाला एक स्वतंत्र चर।
   (D) चार स्वतंत्र चर, प्रत्येक दो स्तरों के साथ।

9. पियर्सन प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध गुणांक किसके बीच संबंध को मापने के लिए सबसे उपयुक्त है?
   (A) दो द्विभाजित चर।
   (B) एक सतत और एक द्विभाजित चर।
   (C) दो सतत चर।
   (D) दो श्रेणीबद्ध चर।

10. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
   सूची I (अवधारणा)
   P. स्वतंत्र चर
   Q. शून्य परिकल्पना
   R. टाइप I त्रुटि
   S. जनसंख्या
   सूची II (विवरण)

एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखता है जो शरीर के प्राकृतिक संतुलन को बहाल करने हेतु अनिवार्य और सुरक्षात्मक है।

276. (B) विकास का सिद्धांत।
नैतिक तर्क का केवल परिणामों से हटकर इरादों की ओर मुड़ना नैतिक विकास के एक महत्वपूर्ण सिद्धांत को दर्शाता है। यह प्रगति व्यक्ति की बढ़ती हुई संज्ञानात्मक परिपक्वता और सामाजिक अनुभवों का परिणाम होती है। बच्चा शुरु में केवल कार्य के बाहरी नतीजे को देखता है, परंतु जैसे-जैसे वह परिपक्व होता है, वह यह समझना शुरु करता है कि किसी क्रिया के पीछे की नीयत या उद्देश्य क्या था। यह क्रमिक परिवर्तन न्याय और जिम्मेदारी की गहरी समझ को दर्शाता है, जो नैतिक तर्क प्रक्रिया के विकास का एक आधारभूत और आवश्यक लक्षण है।

277. (C) लड़ो-या-भागो प्रतिक्रिया।
जब मस्तिष्क किसी स्थिति को खतरनाक या चुनौतीपूर्ण मानता है, तो वह तत्काल शरीर में एक तीव्र प्रतिक्रिया सक्रिय करता है जिसे 'लड़ो-या-भागो' प्रतिक्रिया कहा जाता है। यह तनाव के प्रति होने वाली एक बुनियादी शारीरिक अनुक्रिया है जिसमें हृदय गति बढ़ जाती है और ऊर्जा का संचार होता है ताकि व्यक्ति संकट का सामना कर सके या उससे बच सके। यह प्रक्रिया स्वायत्त तंत्रिका तंत्र द्वारा स्वचालित रूप से संचालित होती है और यह अस्तित्व की रक्षा हेतु प्रकृति द्वारा प्रदान किया गया एक अनिवार्य रक्षा तंत्र है जो हमें आपात स्थितियों हेतु तैयार करता है।

278. (D) कार्यस्थल।
समाजीकरण के प्राथमिक कारकों में वे संस्थान शामिल हैं जो व्यक्ति के प्रारंभिक जीवन और मौलिक मूल्यों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जैसे परिवार, विद्यालय, साथी समूह और व्यापक संस्कृति। ये कारक बचपन से ही व्यक्ति को समाज के नियमों और भाषा से परिचित कराते हैं। इसके विपरीत, कार्यस्थल को समाजीकरण का एक द्वितीयक या विशिष्ट कारक माना जाता है, जहाँ व्यक्ति वयस्क होने पर अपनी व्यावसायिक भूमिकाओं और विशिष्ट संगठनात्मक संस्कृति को सीखता है। कार्यस्थल का प्रभाव अधिक व्यावहारिक और पेशेवर होता है।

279. (C) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत।
संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत के अनुसार, शारीरिक प्रतिक्रिया जैसे दिल का तेजी से धड़कना, स्थिति के प्रति हमारे प्रारंभिक मानसिक आकलन का परिणाम होती है। जब हम किसी घटना को 'खतरनाक' मानते हैं, तो यह मूल्यांकन ही शरीर में उत्तेजना पैदा करता है और भय के संवेग को सक्रिय करता है। यहाँ हमारी सोच और व्याख्या ही वह प्राथमिक शक्ति है जो यह तय करती है कि शरीर कैसे अनुक्रिया करेगा। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि संवेगात्मक अनुभव केवल बाहरी उद्दीपक नहीं हैं, बल्कि वे उस स्थिति के प्रति हमारी आंतरिक मानसिक समझ की उपज हैं।

280. (A) अंतर्नोद; प्रोत्साहन।
अभिप्रेरणा की प्रक्रिया में अंतर्नोद और प्रोत्साहन दो अलग-अलग शक्तियों के रूप में कार्य करते हैं। भोजन की इच्छा एक अंतर्नोद है क्योंकि यह भूख जैसी आंतरिक जैविक कमी से उत्पन्न तनाव को दर्शाती है जो व्यक्ति को कार्य हेतु भीतर से धकेलता है। वहीं किसी स्वादिष्ट व्यंजन की तस्वीर एक प्रोत्साहन है क्योंकि यह बाहरी वातावरण में मौजूद एक आकर्षक लक्ष्य है जो व्यक्ति को अपनी ओर खींचता है, भले ही उसे वास्तव में भूख न लगी हो। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि हमारा व्यवहार अक्सर आंतरिक दबावों और बाहरी आकर्षणों के मेल से प्रेरित होता है।

281. (A) 3, 4, 1, 2
संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत के अनुसार, संवेगात्मक अनुभव एक तार्किक अनुक्रम में आगे बढ़ता है। सबसे पहले एक बाहरी उद्दीपक घटना घटित होती है। इसके तुरंत बाद, व्यक्ति का मस्तिष्क उस घटना का आकलन करता है, जैसे कि क्या वह उसके लिए खतरा है। इस मानसिक मूल्यांकन के परिणाम स्वरूप संवेग का अनुभव होता है, जिसके साथ ही हृदय गति बढ़ने जैसे शारीरिक परिवर्तन घटित होते हैं। यह अनुक्रम स्पष्ट करता है कि संवेगात्मक प्रक्रिया में हमारी बुद्धि और मानसिक व्याख्या ही शरीर की जैविक प्रतिक्रियाओं और भावनाओं की प्राथमिक जननी होती है।

282. (B) समाजीकरण।
समाजीकरण वह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने आसपास के सामाजिक समूहों, जैसे परिवार और साथियों के मानदंडों और व्यवहारों को सीखना शुरु करता है। इन समूहों के अनुरूप होना सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने और समूह की पहचान का हिस्सा बनने हेतु अनिवार्य है। इस प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्ति यह समझता है कि समाज में क्या स्वीकार्य है और उसे दूसरों के साथ तालमेल बिठाने हेतु किस प्रकार की भूमिकाएं निभानी चाहिए। समाजीकरण ही व्यक्ति को एक जैविक प्राणी से एक जिम्मेदार सामाजिक सदस्य के रूप में विकसित करता है।

283. (B) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत।
लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत संवेगों के बीच के अंतर को शारीरिक सक्रियता और तंत्रिका तंत्र की उत्तेजना के स्तर के माध्यम से स्पष्ट करता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, हल्की संतुष्टि और तीव्र खुशी के बीच का मूलभूत अंतर मस्तिष्क के सक्रियण स्तर में निहित होता है। जितनी अधिक ऊर्जा और स्नायु तंत्र की उत्तेजना होगी, संवेगात्मक अनुभव उतना ही तीव्र और गहरा महसूस होगा। यह सिद्धांत संवेगों को चेतना के एक सातत्य पर देखता है, जहाँ सक्रियण की मात्रा ही अनुभव की शक्ति और उसकी तीव्रता को निर्धारित करने वाली मुख्य भौतिक कड़ी होती है।

284. (A) यह तय करना कि दोष किसका है।
संवेग के शारीरिक सह-संबंधी वे जैविक परिवर्तन हैं जिन्हें शारीरिक रूप से मापा जा सकता है और जो स्वायत्त तंत्रिका तंत्र द्वारा स्वतः संचालित होते हैं, जैसे हृदय गति, श्वसन और

267. (C) तनाव के प्रति प्रतिक्रिया।
बढ़ी हुई हृदय गति और एड्रेनालिन जैसे हार्मोन का त्वरित स्राव तनावपूर्ण परिस्थितियों के प्रति शरीर की स्वाभाविक और जैविक प्रतिक्रिया के अभिन्न अंग हैं। ये परिवर्तन स्वायत्त तंत्रिका तंत्र द्वारा संचालित होते हैं जो शरीर को आपातकालीन स्थिति का सामना करने हेतु ऊर्जा और सतर्कता प्रदान करते हैं। यह 'लड़ो या भागो' की तैयारी का एक भौतिक प्रकटीकरण है, जो जीव की उत्तरजीविता सुनिश्चित करने हेतु प्रकृति द्वारा विकसित किया गया है। ये शारीरिक लक्षण तनावपूर्ण उद्दीपक के प्रति शरीर की तत्काल सक्रियता को स्पष्ट दर्शाते हैं।

268. (D) अर्थ की व्याख्या।
संवेग के संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत के अनुसार, हम किसी विशेष क्षण में कौन-सा संवेग महसूस करेंगे, यह पूरी तरह इस बात पर निर्भर करता है कि हम उस स्थिति के अर्थ की व्याख्या कैसे करते हैं। परिस्थिति स्वयं संवेग उत्पन्न नहीं करती, बल्कि हमारा मस्तिष्क उसका आकलन करता है कि वह हमारे लिए कितनी प्रासंगिक या प्रभावकारी है। यदि हम किसी अनिश्चित घटना को अवसर के रूप में व्याख्यायित करते हैं, तो उत्साह होगा, परंतु यदि उसे बाधा मानते हैं, तो क्रोध उत्पन्न होगा। अतः संवेगात्मक अनुभव का वास्तविक आधार मानसिक विश्लेषण है।

269. (C) नैतिक और सामाजिक विकास।
एक नन्हे बच्चे द्वारा अपने खिलौने साझा करने का विरोध करना उसके प्रारंभिक नैतिक और सामाजिक विकास के एक महत्वपूर्ण चरण को दर्शाता है। इस उम्र में बच्चा अपनी पहचान और स्वामित्व की भावना विकसित कर रहा होता है और वह अभी तक दूसरों के दृष्टिकोण या सहयोग के लाभों को पूरी तरह नहीं समझ पाता। समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से ही वह धीरे-धीरे सहानुभूति, उदारता और सामाजिक नियमों को सीखना शुरू करता है। यह व्यवहार उसके स्वयं के विकास और समाज के साथ तालमेल बिठाने की दिशा में एक स्वाभाविक प्रारंभिक कदम है।

270. (D) 1, 2 और 3
अभिप्रेरणा के ये सिद्धांत व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करने वाली विभिन्न शक्तियों को स्पष्ट करते हैं। अंतर्नोद सिद्धांत जैविक आवश्यकताओं से उत्पन्न आंतरिक 'धक्के' पर बल देता है जो संतुलन बहाल करने हेतु प्रेरित करता है, जबकि प्रोत्साहन सिद्धांत बाहरी पुरस्कारों के 'खिंचाव' पर केंद्रित है। यद्यपि उनके स्रोत अलग हैं, परंतु दोनों ही व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करने और लक्ष्य की ओर बढ़ने से संबंधित हैं। ये कथन सामूहिक रूप से यह समझने में मदद करते हैं कि मानवीय गतिविधियाँ आंतरिक दबावों और बाहरी प्रलोभनों के संतुलन से संचालित होती हैं।

271. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
समाजीकरण के ये विभिन्न कारक व्यक्ति के विकास में विशिष्ट और पूरक योगदान देते हैं। परिवार प्राथमिक परिवेश है जहाँ बुनियादी भाषा और जीवन मूल्यों की नींव रखी जाती है। साथी समूह किशोरावस्था के दौरान पहचान और समूह मानदंडों के अनुरूप होने का मंच प्रदान करते हैं। विद्यालय औपचारिक शैक्षणिक ज्ञान और समाज के व्यापक नियमों को सिखाने हेतु जिम्मेदार है। संचार माध्यम आधुनिक युग में व्यापक सांस्कृतिक रुझानों और वैश्विक सूचनाओं का प्रदर्शन कर दृष्टिकोणों को आकार देते हैं। ये सभी मिलकर व्यक्ति को एक संपूर्ण सामाजिक सदस्य बनाते हैं।

272. (B) बुनियादी आवश्यकताएं उच्च आवश्यकताओं से पहले आती हैं।
अब्राहम मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत का एक मूलभूत विचार यह है कि मानवीय आवश्यकताओं में एक क्रमिक प्राथमिकता पाई जाती है। व्यक्ति का व्यवहार मुख्य रूप से उन आवश्यकताओं की पूर्ति की ओर उन्मुख होता है जो उस समय अधूरी हैं। सिद्धांत के अनुसार, जब तक भोजन, जल और सुरक्षा जैसी बुनियादी और शारीरिक जरूरतें पर्याप्त रूप से संतुष्ट नहीं हो जातीं, तब तक व्यक्ति सामाजिक जुड़ाव, आत्म-सम्मान या आत्म-सिद्धि जैसे उच्च उद्देश्यों की ओर अग्रसर नहीं हो पाता। यह क्रमिक विकास ही मानवीय अभिप्रेरणा और प्राथमिकताओं को व्यवस्थित रूप से स्पष्ट करता है।

273. (C) तनाव।
तनाव के अध्ययन का मुख्य केंद्र यह समझना है कि मानव शरीर और मन विभिन्न प्रकार की मांगों और चुनौतियों के प्रति किस प्रकार प्रतिक्रिया करते हैं। ये मांगें शारीरिक, मानसिक या सामाजिक हो सकती हैं और तनाव उस स्थिति के प्रति एक व्यापक अनुक्रिया है जिसमें अनुकूलन और ऊर्जा की आवश्यकता होती है। तनाव की प्रक्रिया में यह जाँच की जाती है कि व्यक्ति उन मांगों का आकलन कैसे करता है और उनसे निपटने हेतु किन रणनीतियों को अपनाता है। अतः यह व्यवहार और स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दबावों के प्रति होने वाली प्रतिक्रियाओं का विज्ञान है।

274. (D) सहयोगी के संवेग को अपना लें।
शैक्टर-सिंगर के प्रयोग में यह पाया गया कि जिन प्रतिभागियों को उनके शरीर में होने वाली उत्तेजना का कोई स्पष्ट कारण नहीं पता था, उन्होंने अपने संवेग को अपने आसपास के माहौल के अनुसार ढाल लिया। यदि उनका सहयोगी खुश था, तो उन्होंने अपनी उत्तेजना को 'खुशी' के रूप में पहचाना। यह सिद्ध करता है कि शारीरिक उत्तेजना अपने आप में अधूरी है और व्यक्ति उसे अर्थ देने हेतु सामाजिक संकेतों का उपयोग करता है। यह स्पष्ट करता है कि संवेगात्मक अनुभव हमारी जैविक सक्रियता और हमारे परिवेश की संज्ञानात्मक व्याख्या का एकीकृत परिणाम होता है।

275. (A) अंतर्नोद सिद्धांत।
अभिप्रेरणा का अंतर्नोद सिद्धांत सीधे तौर पर समस्थापन की अवधारणा से जुड़ा है, जिसका अर्थ है शरीर के भीतर एक स्थिर और संतुलित आंतरिक वातावरण बनाए रखना। इस सिद्धांत के अनुसार, जब भी शरीर में कोई जैविक कमी, जैसे भूख या प्यास पैदा होती है, तो यह एक आंतरिक तनाव या अंतर्नोद को जन्म देती है। जीव इस तनाव को कम करने और पुनः शांति की स्थिति प्राप्त करने हेतु अभिप्रेरित होता है। अतः यह व्यवहार को

293. (C) मूलप्रवृत्ति सिद्धांत।
अभिप्रेरणा का मूलप्रवृत्ति सिद्धांत मुख्य रूप से उन व्यवहार प्रतिरूपों पर केंद्रित है जो जन्मजात, अनसीखे और किसी प्रजाति के सभी सदस्यों में समान रूप से पाए जाते हैं। इस सिद्धांत का मानना है कि जीव कुछ निश्चित कार्यों को करने हेतु जैविक रूप से प्रोग्राम किए गए होते हैं, जैसे पक्षियों का घोंसला बनाना या रक्षात्मक व्यवहार। यह दृष्टिकोण मानवीय अभिप्रेरणा को सीखने या पर्यावरण के प्रभाव के बजाय प्रकृति और आनुवंशिकता की देन के रूप में देखता है। यह सिद्धांत उत्तरजीविता सुनिश्चित करने हेतु प्रजाति-विशिष्ट जैविक प्रवृत्तियों के महत्व को रेखांकित करता है।

294. (D) परिवार।
परिवार समाजीकरण का सबसे पहला और आधारभूत कारक है जहाँ बच्चा अवलोकन और नकल के माध्यम से बुनियादी व्यवहार और शिष्टाचार सीखता है। अभिभावकों को भोजन करते समय देखकर उनके शिष्टाचार को अपनाना इस प्रक्रिया का एक सहज उदाहरण है। जीवन के शुरुआती वर्षों में परिवार ही वह प्राथमिक स्थान है जहाँ बच्चे के आचार-व्यवहार, भाषा और सामाजिक आदतों की नींव रखी जाती है। परिवार के सदस्यों के साथ होने वाली यह दैनिक अंतःक्रिया बच्चे को समाज की सामान्य अपेक्षाओं के अनुरूप ढलने और एक व्यवस्थित सामाजिक व्यवहार विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

295. (A) लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत।
लिंड्सले का सक्रियण सिद्धांत उत्तेजना के स्तर और कार्य प्रदर्शन के बीच के संबंध को स्पष्ट करता है। यह सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि किसी भी कार्य को सबसे प्रभावी ढंग से करने हेतु उत्तेजना का एक इष्टतम या मध्यम स्तर होना आवश्यक है। बहुत कम उत्तेजना से व्यक्ति ऊब महसूस करता है, जबकि बहुत अधिक उत्तेजना से घबराहट पैदा होती है जो प्रदर्शन को बाधित करती है। यह दृष्टिकोण बताता है कि हमारी संवेगात्मक और शारीरिक सक्रियता का सही संतुलन ही मानसिक दक्षता और कार्यक्षमता को उनके उच्चतम स्तर तक पहुँचाने हेतु अनिवार्य है।

296. (B) समस्या-केंद्रित।
समस्या-केंद्रित मुकाबला एक ऐसी रणनीति है जहाँ व्यक्ति तनावपूर्ण स्थिति को हल करने हेतु प्रत्यक्ष और सक्रिय कदम उठाता है। जब एक छात्र पाठ्यक्रम के भारी बोझ से निपटने हेतु एक अध्ययन समूह में शामिल होता है, तो वह अपनी समस्या का समाधान खोजने हेतु संसाधनों का उपयोग कर रहा होता है। यह दृष्टिकोण न केवल कठिन परिस्थितियों से निपटने हेतु व्यावहारिक सहायता प्रदान करता है, बल्कि व्यक्ति को अधिक सक्षम और नियंत्रित महसूस कराता है। यह रणनीति विशेष रूप से उन मामलों में सफल होती है जहाँ व्यावहारिक क्रियान्वयन के माध्यम से सुधार संभव हो।

297. (B) सुरक्षा।
अब्राहम मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम में, एक स्थिर और सुरक्षित वातावरण की चाहत सुरक्षा की आवश्यकताओं के अंतर्गत आती है। यह स्तर शारीरिक जरूरतों के ठीक ऊपर स्थित है और इसमें व्यवस्था, पूर्वानुमेयता, वित्तीय सुरक्षा और किसी भी प्रकार के शारीरिक या मनोवैज्ञानिक खतरे से मुक्ति शामिल है। जब तक व्यक्ति अपने परिवेश में स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं करता, उसका मानसिक ध्यान प्रेम, सामाजिक जुड़ाव या आत्म-सम्मान जैसे उच्च लक्ष्यों की ओर पूरी तरह से केन्द्रित नहीं हो पाता। यह संतुलित विकास हेतु अनिवार्य आवश्यकता है।

298. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
संवेग की प्रक्रिया में तंत्रिका तंत्र की भूमिका केवल मस्तिष्क के संज्ञानात्मक केंद्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अत्यंत व्यापक है। स्वायत्त तंत्रिका तंत्र इस प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा है जो संवेग के साथ होने वाले कई महत्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तनों, जैसे हृदय गति, श्वसन और हार्मोनल स्राव हेतु जिम्मेदार है। यद्यपि मस्तिष्क के उच्च केंद्र स्थिति का मूल्यांकन करते हैं, परंतु स्वायत्त तंत्रिका तंत्र ही संवेग को शारीरिक गहराई और उत्तेजना प्रदान करता है। अतः संवेग का अनुभव जैविक और मानसिक दोनों प्रक्रियाओं का समन्वित परिणाम होता है।

299. (D) विकास स्थिर होता है।
जीवन-काल विकास के मुख्य सिद्धांतों के अनुसार, विकास कभी भी स्थिर या अपरिवर्तनीय नहीं होता है। इसके विपरीत, विकास एक निरंतर चलने वाली गतिशील प्रक्रिया है जो पूरे जीवन भर व्यवस्थित रूप से बदलती रहती है। विकास आजीवन होता है, बहुआयामी होता है क्योंकि इसमें विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन शामिल हैं, और यह लचीला होता है क्योंकि अनुभवों के माध्यम से इसे सुधारा या संशोधित किया जा सकता है। अतः विकास को एक स्थायी अवस्था मानना इसकी बुनियादी प्रकृति के विपरीत है, क्योंकि मानव जीवन निरंतर परिवर्तन और अनुकूलन की एक सतत यात्रा है।

300. (C) हम किसी स्थिति की व्याख्या कैसे करते हैं।
संवेग के संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांतों का प्राथमिक ध्यान इस बात पर है कि संवेगात्मक अनुभव का जन्म किसी स्थिति की हमारी मानसिक व्याख्या या आकलन से होता है। इन सिद्धांतों के अनुसार, परिस्थितियाँ स्वयं में संवेग पैदा नहीं करतीं, बल्कि हमारा मस्तिष्क उनका विश्लेषण करता है कि वे हमारे लक्ष्यों और कल्याण हेतु कितनी महत्वपूर्ण या हानिकारक हैं। यह व्यक्तिगत मूल्यांकन ही वह मुख्य कारक है जो यह तय करता है कि बाद में क्रोध, भय या प्रसन्नता जैसे संवेगों में से किस विशिष्ट अनुभव को महसूस किया जाएगा। अतः हमारी सोच ही संवेगात्मक जगत की नियामक है।

मानव मस्तिष्क कोई स्थिर अंग नहीं है, बल्कि यह पूरे जीवन-काल में अनुभवों के प्रति प्रतिक्रिया स्वरुप निरंतर बदलता और विकसित होता रहता है, जो मानवीय सीखने का आधार है।

232. (D) नैतिक विकास।
नैतिक विकास उस क्रमिक प्रक्रिया को दर्शाता है जहाँ व्यक्ति की न्याय और निष्पक्षता की समझ समय के साथ परिपक्व होती है। शुरुआत में बच्चा नियमों का पालन केवल पुरस्कार प्राप्त करने या दंड से बचने हेतु करता है, परंतु जैसे-जैसे उसका मानसिक विकास होता है, वह निष्पक्षता, अधिकारों और मानवीय गरिमा के गहरे सिद्धांतों को समझने लगता है। यह परिवर्तन दर्शाता है कि नैतिकता केवल बाहरी दबाव नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर विकसित होने वाला एक परिष्कृत तर्क और मूल्यों का समूह है जो उसके सामाजिक आचरण को निर्देशित करता है।

233. (B) स्वायत्त तंत्रिका तंत्र।
स्वायत्त तंत्रिका तंत्र की दो मुख्य शाखाएं हैं: अनुकम्पी और परानुकम्पी तंत्रिका तंत्र। अनुकम्पी तंत्र शरीर को तनावपूर्ण परिस्थितियों में 'लड़ो या भागो' हेतु तैयार करता है, जिससे हृदय गति और ऊर्जा बढ़ जाती है। इसके विपरीत, परानुकम्पी तंत्र तनाव के बाद शरीर को पुनः विश्राम की अवस्था में लाने और ऊर्जा संचित करने का कार्य करता है। ये दोनों मिलकर शरीर के आंतरिक संतुलन को बनाए रखते हैं और संवेगात्मक उत्तेजनाओं के प्रति जैविक अनुक्रियाओं को नियंत्रित करते हैं, जो हमारे सचेत नियंत्रण के बाहर होती हैं।

234. (A) अपनेपन की आवश्यकता।
अपनेपन की आवश्यकता एक प्रमुख सामाजिक प्रेरक है जो मनुष्य की दूसरों के साथ रहने और समूह द्वारा स्वीकार किए जाने की गहरी इच्छा को दर्शाती है। चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए सामाजिक जुड़ाव उसे मानसिक सुरक्षा और सुख प्रदान करता है। विश्राम, जल और पीड़ा से बचाव जैसे प्रेरक प्राथमिक या जैविक होते हैं जो शरीर के जीवित रहने हेतु आवश्यक हैं। इसके विपरीत, सामाजिक प्रेरक व्यक्ति की भावनात्मक जरूरतों और समाज में उसके सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व से संबंधित होते हैं, जो कल्याण हेतु अनिवार्य हैं।

235. (C) प्रेरकों की प्रकृति और प्रकार।
अभिप्रेरणा के अध्ययन का मुख्य केंद्र यह समझना है कि व्यवहार को ऊर्जा और दिशा देने वाले प्रेरकों की प्रकृति क्या है और वे कितने प्रकार के होते हैं। इसमें जैविक प्रेरकों से लेकर जटिल सामाजिक और व्यक्तिगत प्रेरकों का विश्लेषण किया जाता है। मनोवैज्ञानिक यह जाँचते हैं कि ये प्रेरक कैसे उत्पन्न होते हैं, वे व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं और लक्ष्यों की प्राप्ति में उनकी क्या भूमिका होती है। प्रेरकों का यह गहन अध्ययन मानवीय गतिविधियों के पीछे के वास्तविक 'क्यों' को स्पष्ट करने में सहायता करता है।

236. (D) सक्रियण और दृढ़ता।
जब कोई व्यक्ति अपनी खोई हुई वस्तु ढूँढने हेतु तीव्र प्रयास करता है, तो वह अभिप्रेरित व्यवहार के दो मुख्य मानदंडों, सक्रियण और दृढ़ता को प्रदर्शित करता है। सक्रियण का अर्थ है लक्ष्य प्राप्ति हेतु व्यवहार की शुरुआत करना, और दृढ़ता का तात्पर्य है बाधाओं के बावजूद हार न मानना और तब तक कोशिश जारी रखना जब तक सफलता न मिल जाए। यह व्यवहार स्पष्ट करता है कि अभिप्रेरणा व्यक्ति को न केवल ऊर्जा प्रदान करती है, बल्कि उसे लक्ष्य तक पहुँचने हेतु निरंतर प्रयासशील और केंद्रित भी बनाए रखती है।

237. (A) उपयुक्त मुकाबला रणनीतियों को अपनाना।
तनाव का प्रभावी प्रबंधन इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने हेतु कितनी सटीक और रचनात्मक रणनीतियाँ अपनाता है। इसमें समस्या को सुलझाने के व्यावहारिक प्रयास और अपनी संवेगात्मक स्थिति को शांत रखने की तकनीकें दोनों शामिल हैं। समस्याओं को अनदेखा करना तनाव को बढ़ाता है, जबकि उपयुक्त मुकाबला तंत्र व्यक्ति के मानसिक लचीलेपन को सुदृढ़ करता है। सफल प्रबंधन व्यक्ति को तनाव के नकारात्मक प्रभावों से बचाकर उसके समग्र स्वास्थ्य और प्रदर्शन को बनाए रखने में सक्षम बनाता है।

238. (B) मीडिया।
संचार माध्यम समाजीकरण का एक शक्तिशाली कारक हैं जो दृश्य और श्रव्य माध्यमों से हमारे संवेगों और दृष्टिकोणों को प्रभावित करते हैं। एक फिल्म दर्शकों में करुणा, दुख या खुशी जैसे संवेग उत्पन्न कर सकती है, जो यह दर्शाता है कि संचार माध्यम किस प्रकार मानवीय भावनाओं को गहराई से छूने की क्षमता रखते हैं। इनके माध्यम से प्रसारित होने वाली कहानियाँ और चरित्र समाज के मूल्यों और संवेदनाओं को प्रतिबिंबित करते हैं। यह प्रभाव व्यक्ति की संवेगात्मक समझ और दुनिया के प्रति उसके नजरिए को व्यापक बनाने में सहायक होता है।

239. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मास्लो के सिद्धांत में आवश्यकताओं के बीच एक गुणात्मक अंतर पाया जाता है। शारीरिक, सुरक्षा, सामाजिक और सम्मान की आवश्यकताएं 'कमी की आवश्यकताएं' कहलाती हैं क्योंकि वे किसी अभाव को भरने और तनाव कम करने हेतु प्रेरित करती हैं। इसके विपरीत, आत्म-सिद्धि को 'विकास की आवश्यकता' माना जाता है क्योंकि यह किसी बाहरी कमी से नहीं, बल्कि एक व्यक्ति के रूप में अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुँचने और निरंतर बढ़ने की आंतरिक आकांक्षा से उत्पन्न होती है। यह अंतर मानवीय अभिप्रेरणा के रक्षात्मक और विकासात्मक पक्षों को स्पष्ट करता है।

240. (B) संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत।
संज्ञानात्मक-मूल्यांकन सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि संवेगात्मक अनुभव की उत्पत्ति का मुख्य स्रोत किसी स्थिति की मानसिक व्याख्या है। जब हम किसी घटना का सामना करते हैं, तो हमारा मस्तिष्क उसका आकलन करता है और उसे एक विशिष्ट अर्थ प्रदान करता है। यह अर्थपूर्ण व्याख्या ही शरीर में उत्तेजना पैदा करती है और संवेग को सक्रिय करती है। इस प्रकार, परिस्थिति स्वयं संवेग पैदा नहीं करती, बल्कि हमारी उसके प्रति समझ ही यह तय करती है कि वह अनुभव भय,

1. शोधकर्ता की रुचि का संपूर्ण समूह
2. वह चर जिसमें शोधकर्ता द्वारा हेरफेर किया जाता है
3. एक सत्य शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करना
4. 'कोई प्रभाव नहीं' या 'कोई अंतर नहीं' का कथन

(A) P-2, Q-4, R-3, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

11. असंबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) एक ही माप पर दो संबंधित समूहों के माध्य की तुलना करना।
(B) दो चरों के बीच संबंध की शक्ति और दिशा को मापना।
(C) तीन या अधिक समूहों के बीच विचरण का विश्लेषण करना।
(D) किसी विशेष माप पर दो स्वतंत्र समूहों के माध्य की तुलना करना।

12. एक वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प की परिभाषित विशेषता जो इसे अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प से अलग करती है, वह है:
(A) एक नियंत्रण समूह की उपस्थिति।
(B) समूहों में प्रतिभागियों का याद्दच्छिक आवंटन।
(C) एक स्वतंत्र चर का हेरफेर।
(D) सांख्यिकीय विश्लेषण का उपयोग।

13. एक शोधकर्ता भविष्यवाणी करता है कि "जो छात्र नए अध्ययन ऐप का उपयोग करते हैं, उनके परीक्षा प्राप्तांक उन छात्रों की तुलना में अधिक होंगे जो ऐसा नहीं करते हैं।" यह किसका उदाहरण है?
(A) शून्य परिकल्पना
(B) गैर-दिशात्मक परिकल्पना
(C) दिशात्मक परिकल्पना
(D) सैद्धांतिक परिकल्पना

14. एक अध्ययन में, एक शोधकर्ता प्रतिभागियों के चिंता स्तर (निम्न, मध्यम, उच्च) और एक जटिल कार्य पर उनके प्रदर्शन को मापता है। चिंता स्तर किस प्रकार का चर है?
(A) एक आश्रित चर
(B) एक सतत चर
(C) एक भ्रामक चर
(D) एक स्वतंत्र चर

15. परिकल्पना परीक्षण के निम्नलिखित चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. डेटा एकत्र करना।
II. शून्य और वैकल्पिक परिकल्पना बताना।
III. सांख्यिकीय निर्णय लेना।
IV. परीक्षण सांख्यिकी की गणना करना।
(A) II, I, IV, III
(B) I, II, III, IV
(C) II, IV, I, III
(D) IV, II, I, III

16. निम्नलिखित में से कौन टाइप II त्रुटि को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) शून्य परिकल्पना को सत्य होने पर अस्वीकार करना।
(B) शून्य परिकल्पना को गलत होने पर अस्वीकार करने में विफल रहना।
(C) वैकल्पिक परिकल्पना को सत्य होने पर अस्वीकार करना।
(D) वैकल्पिक परिकल्पना को गलत होने पर अस्वीकार करने में विफल रहना।

17. वन-वे एनोवा के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) इसका उपयोग दो या दो से अधिक समूहों के माध्य की तुलना करने के लिए किया जाता है।
(B) इसका उपयोग केवल तभी किया जा सकता है जब ठीक तीन समूह हों।
(C) इसमें कई स्तरों वाला एक स्वतंत्र चर शामिल होता है।
(D) यह कुल विचरण को अंतर-समूह और अंतः-समूह विचरण में विभाजित करता है।

18. पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध का उपयोग किसके बीच संबंध की गणना करने के लिए किया जाता है?
(A) एक सतत और एक प्राकृतिक रूप से द्विभाजित चर।
(B) एक ही स्रोत से दो कृत्रिम रूप से द्विभाजित चर।
(C) एक विशिष्ट समूह के भीतर दो प्राकृतिक रूप से द्विभाजित चर।
(D) एक सतत और एक कृत्रिम रूप से द्विभाजित चर।

19. संबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण को इस रूप में भी जाना जाता है:
(A) स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण
(B) एक-प्रतिदर्श टी-परीक्षण
(C) युग्मित प्रतिदर्श टी-परीक्षण
(D) एनोवा

20. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): अनुसंधान निष्कर्षों के सामान्यीकरण के लिए याद्दच्छिक प्रतिचयन महत्वपूर्ण है।
कारण (R): याद्दच्छिक प्रतिचयन यह सुनिश्चित करता है कि जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य के चुने जाने की समान और स्वतंत्र संभावना हो, जिससे एक प्रतिनिधि प्रतिदर्श तैयार हो सके।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

21. प्रयोगात्मक अनुसंधान के संदर्भ में 'नियंत्रण' का क्या अर्थ है?

(D) प्रस्तावित करता है कि चरों के बीच कोई संबंध या अंतर है।

44. बाह्य चरों को नियंत्रित करने की विधि निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) प्रतिदर्श के आकार को बढ़ाना
(B) याद्दच्छिकीकरण
(C) एक जटिल सांख्यिकीय परीक्षण का उपयोग करना
(D) उनके संभावित प्रभाव को नजरअंदाज करना

45. एक शोधकर्ता अवसाद के लिए तीन अलग-अलग उपचार प्रकारों की प्रभावशीलता की तुलना करना चाहता है। डेटा का विश्लेषण करने के लिए सबसे उपयुक्त सांख्यिकीय परीक्षण होगा:
(A) संबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण।
(B) असंबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण।
(C) वन-वे एनोवा।
(D) एक प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध।

46. एक 2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प में कुल कितनी स्थितियाँ या समूह होते हैं?
(A) 2
(B) 3
(C) 8
(D) 4

47. सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में सार्थकता स्तर, या अल्फा (α), पारंपरिक रूप से किस मान पर निर्धारित किया जाता है?
(A) 0.05
(B) 0.50
(C) 0.01
(D) 1.00

48. एक शोधकर्ता को दो चरों के बीच $r = +0.85$ का सहसंबंध गुणांक मिलता है। यह संकेत देता है:
(A) कमजोर सकारात्मक संबंध।
(B) मजबूत सकारात्मक संबंध।
(C) मजबूत नकारात्मक संबंध।
(D) कोई संबंध नहीं।

49. निम्नलिखित में से कौन सा असंबंधित प्रतिदर्श का उदाहरण है?
(A) वेतन वृद्धि से पहले और बाद में कर्मचारियों की कार्य संतुष्टि को मापना।
(B) पुरुष छात्रों के एक समूह और महिला छात्रों के एक समूह के गणित प्राप्तांकों की तुलना करना।
(C) जुड़वा बच्चों के पढ़ने के प्राप्तांकों की तुलना करना।
(D) सुबह और शाम को मरीज के रक्तचाप को मापना।

50. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।

अभिकथन (A): एक 2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प में, दो स्वतंत्र चरों के बीच अन्योन्यक्रिया प्रभाव का आकलन करना संभव है।
कारण (R): फैक्टोरियल अभिकल्प इस बात की जांच करने की अनुमति देते हैं कि एक स्वतंत्र चर का प्रभाव दूसरे स्वतंत्र चर के स्तर पर कैसे निर्भर हो सकता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

51. वैज्ञानिक अनुसंधान में 'अनुभववाद' के सिद्धांत का अर्थ है कि ज्ञान मुख्य रूप से प्राप्त होता है:
(A) तार्किक तर्क और निगमन से।
(B) आधिकारिक स्रोतों और ग्रंथों से।
(C) अवलोकन और प्रयोग से।
(D) अंतर्ज्ञान और व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि से।

52. "नींद के घंटों और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच कोई संबंध नहीं है" किस प्रकार की परिकल्पना है?
(A) दिशात्मक
(B) गैर-दिशात्मक
(C) कारण संबंधी
(D) शून्य

53. यदि कोई चर किसी दी गई सीमा के भीतर कोई भी मान ले सकता है, तो उसे कहा जाता है:
(A) असतत चर
(B) श्रेणीबद्ध चर
(C) सतत चर
(D) द्विभाजित चर

54. यदि एक शोधकर्ता जनसंख्या को शहर के अनुसार विभाजित करता है और फिर सर्वेक्षण के लिए याद्दच्छिक रूप से 10 शहरों का चयन करता है, तो यह किसका उदाहरण है:
(A) स्तरित प्रतिचयन
(B) गुच्छ प्रतिचयन
(C) कोटा प्रतिचयन
(D) व्यवस्थित प्रतिचयन

55. एक गलत शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहने को इस रूप में भी जाना जाता है:
(A) सही निर्णय
(B) टाइप I त्रुटि
(C) प्रतिचयन त्रुटि
(D) टाइप II त्रुटि

56. एकल-कारक प्रयोग की तुलना में फैक्टोरियल अभिकल्प का मुख्य लाभ यह है कि यह:
(A) अन्योन्यक्रिया प्रभावों के अध्ययन की अनुमति देता है।

(A) गुच्छ प्रतिचयन
(B) स्तरित प्रतिचयन
(C) व्यवस्थित प्रतिचयन
(D) सरल याद्दच्छिक प्रतिचयन

33. निम्नलिखित में से कौन मनोविज्ञान में वैज्ञानिक अनुसंधान के मुख्य लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) लोकप्रिय राय और व्यापक रूप से मान्य सांस्कृतिक विश्वासों की पुष्टि करना।
(B) मानसिक प्रक्रियाओं का वर्णन, व्याख्या, भविष्यवाणी और नियंत्रण करना।
(C) चिकित्सीय सलाह और विशिष्ट नैदानिक परामर्श प्रदान करना।
(D) जटिल मानव मन के बारे में अप्रमाणित सिद्धांत बनाना।

34. वन-वे एनोवा का उपयोग तब किया जाता है जब:
(A) दो या दो से अधिक स्तरों वाला एक स्वतंत्र चर हो।
(B) दो स्तरों वाला एक स्वतंत्र चर हो।
(C) दो स्वतंत्र चर हों, प्रत्येक दो स्तरों के साथ।
(D) एक आश्रित चर और दो स्वतंत्र चर हों।

35. टी-परीक्षण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका उपयोग दो समूहों के बीच विचरण की तुलना करने के लिए किया जाता है।
II. स्वतंत्र समूहों के लिए संबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण का उपयोग किया जाता है।
III. यह मानता है कि डेटा सामान्य रूप से वितरित है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल III
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

36. बाइसीरियल सहसंबंध का उपयोग तब किया जाता है जब एक चर सतत हो और दूसरा हो:
(A) एक वास्तविक, प्राकृतिक द्वंद्व।
(B) वह भी सतत।
(C) कई स्तरों वाला एक श्रेणीबद्ध चर।
(D) एक सतत चर से बनाया गया एक कृत्रिम द्वंद्व।

37. एक शोधकर्ता एक प्रयोग करता है और सांख्यिकीय रूप से सार्थक परिणाम पाता है। इसका अर्थ है:
(A) परिणाम के महत्वपूर्ण व्यावहारिक निहितार्थ हैं।
(B) शून्य परिकल्पना सत्य सिद्ध हो गई है।
(C) परिणाम के संयोग से होने की संभावना नहीं है।
(D) अध्ययन किसी भी त्रुटि से मुक्त था।

38. प्रयोगात्मक अभिकल्प की प्रकृति मुख्य रूप से इसकी किस क्षमता को संदर्भित करती है?
(A) बड़ी जनसंख्या का सर्वेक्षण करना।
(B) कार्य-कारण का अनुमान लगाने के लिए चरों में हेरफेर करना।
(C) ऐतिहासिक रुझानों का पता लगाना।
(D) घटनाओं का उनके प्राकृतिक परिवेश में वर्णन करना।

39. टाइप I त्रुटि (α) और टाइप II त्रुटि (β) के बीच संबंध ऐसा है कि, अन्य सभी स्थितियाँ समान होने पर:
(A) α कम करने से β भी कम हो जाएगा।
(B) α बढ़ाने से β भी बढ़ जाएगा।
(C) α और β असंबंधित हैं।
(D) α कम करने से β बढ़ जाएगा।

40. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I (सहसंबंध प्रकार)
P. प्रोडक्ट-मोमेंट
Q. पॉइंट-बाइसीरियल
R. बाइसीरियल
S. टेट्राकोरिक
सूची II (चर प्रकार)
1. सतत और प्राकृतिक द्वंद्व
2. दो कृत्रिम रूप से द्विभाजित
3. दो सतत
4. सतत और कृत्रिम द्वंद्व
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

41. अनुसंधान में, एक चर जो अध्ययन का हिस्सा नहीं है लेकिन संभावित रूप से आश्रित चर को प्रभावित कर सकता है, कहलाता है:
(A) एक स्वतंत्र चर
(B) एक आश्रित चर
(C) एक बाह्य चर
(D) एक स्थिर चर

42. प्रतिचयन के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) प्रतिचयन एक अध्ययन के लिए जनसंख्या के उपसमूह का चयन करने की प्रक्रिया है।
(B) एक प्रतिदर्श हमेशा जनसंख्या का एक पूर्ण प्रतिनिधित्व होता है।
(C) प्रतिदर्श जितना बड़ा होगा, वह जनसंख्या का उतना ही कम प्रतिनिधित्व करेगा।
(D) गैर-प्रायिकता प्रतिचयन हमेशा प्रायिकता प्रतिचयन से श्रेष्ठ होता है।

43. एक वैकल्पिक परिकल्पना एक ऐसा कथन है जो:
(A) प्रस्तावित करता है कि चरों के बीच कोई संबंध नहीं है।
(B) शून्य परिकल्पना के समान ही है।
(C) केवल तभी उपयोग किया जाता है जब शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

68. बाइसीरियल सहसंबंध यह मानता है कि द्विभाजित चर की अंतर्निहित प्रकृति है:
(A) श्रेणीबद्ध प्रकृति
(B) सपाट वितरण
(C) विषम वितरण
(D) सामान्य वितरण

69. पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प की परिभाषित विशेषता क्या है?
(A) यादृच्छिकीकरण और नियंत्रण समूह का उपयोग।
(B) दो या दो से अधिक स्वतंत्र चरों का हेरफेर।
(C) नियंत्रण समूह या यादृच्छिकीकरण का अभाव।
(D) अनुदैर्ध्य डेटा संग्रह का उपयोग।

70. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I (अनुसंधान शब्द)
P. टाइप II त्रुटि
Q. नियंत्रण चर
R. गैर-दिशात्मक परिकल्पना
S. प्रयोगात्मक अभिकल्प
सूची II (परिभाषा/उदाहरण)
1. बताता है कि अंतर मौजूद है लेकिन दिशा नहीं बताता
2. कार्य-कारण स्थापित करने के लिए प्रयोग करने की योजना
3. गलत शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहना
4. परिणाम को प्रभावित करने से रोकने के लिए स्थिर रखा गया चर
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

71. एक चर जो व्यवस्थित रूप से स्वतंत्र चर के साथ बदलता है और आश्रित चर को प्रभावित कर सकता है, कहलाता है:
(A) नियंत्रण चर
(B) आश्रित चर
(C) यादृच्छिक चर
(D) भ्रामक चर

72. यदि प्रतिदर्श के लिए सूची में से प्रत्येक 10वें व्यक्ति को चुना जाता है, तो किस प्रकार के प्रतिचयन का उपयोग किया जा रहा है?
(A) व्यवस्थित प्रतिचयन
(B) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(C) स्तरित प्रतिचयन
(D) गुच्छ प्रतिचयन

73. 'माध्यों के बीच अंतर की सार्थकता' शोधकर्ता को यह निर्णय लेने में मदद करती है:
(A) शोध निष्कर्षों का व्यावहारिक महत्व।
(B) दो सतत चरों के बीच संबंध की शक्ति।
(C) क्या समूह माध्य के बीच देखा गया अंतर प्रतिचयन त्रुटि के कारण है या वास्तविक प्रभाव है।
(D) प्रयोगात्मक अभिकल्प की समग्र गुणवत्ता।

74. एक 2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प किसका एक प्रकार है:
(A) वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प
(B) सहसंबंधी अध्ययन
(C) पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प
(D) एकल अध्ययन

75. निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों के ऐतिहासिक विकास को सबसे पहले से नवीनतम तक कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध
II. टी-परीक्षण
III. विचरण का विश्लेषण
IV. टेट्राकोरिक सहसंबंध
(A) I, IV, II, III
(B) II, I, III, IV
(C) I, II, IV, III
(D) IV, I, II, III

76. यदि कोई शोधकर्ता शून्य परिकल्पना को तब अस्वीकार करता है जब सार्थकता स्तर $p < .01$ हो, तो इसका अर्थ है:
(A) निष्कर्ष सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है।
(B) 1% संभावना है कि शून्य परिकल्पना वास्तव में सत्य है।
(C) टाइप II त्रुटि की गई है।
(D) 99% संभावना है कि वैकल्पिक परिकल्पना गलत है।

77. एनोवा में F-अनुपात किसका अनुपात है:
(A) अंतः-समूह विचरण का अंतर-समूह विचरण से।
(B) सबसे बड़े समूह माध्य का सबसे छोटे समूह माध्य से।
(C) अंतर-समूह विचरण का अंतः-समूह विचरण से।
(D) समूहों की संख्या का प्रतिभागियों की कुल संख्या से।

78. एक प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध गुणांक का मान किस सीमा के बीच होता है:
(A) 0 से +1.00
(B) -1.00 से 0
(C) 0 से 100
(D) -1.00 से +1.00

79. चरों को नियंत्रित करने का उद्देश्य मुख्य रूप से किसे बढ़ाना है:
(A) आंतरिक वैधता
(B) बाह्य वैधता
(C) संरचना वैधता
(D) सांख्यिकीय निष्कर्ष वैधता

80. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।

(B) संचालित करने में सरल है।
(C) कम प्रतिभागियों की आवश्यकता होती है।
(D) नियंत्रण समूह की आवश्यकता को समाप्त करता है।

57. टू-वे एनोवा का उपयोग तब किया जाता है जब शोध अभिकल्प में शामिल हो:
(A) दो आश्रित चर।
(B) दो स्तरों वाला एक स्वतंत्र चर।
(C) दो स्वतंत्र चर।
(D) दो संबंधित प्रतिदर्श।

58. कक्षा में छात्र की कोटि और खेल प्रतियोगिता में उनकी कोटि के बीच संबंध को मापने के लिए किस सहसंबंध गुणांक का उपयोग किया जाना चाहिए?
(A) स्पीयरमैन का कोटि-अंतर सहसंबंध
(B) पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध
(C) प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध
(D) बाइसीरियल सहसंबंध

59. टी-परीक्षण के संदर्भ में एक "संबंधित प्रतिदर्श" उस स्थिति को संदर्भित करता है जहाँ:
(A) तुलना किए जा रहे दो समूह पूरी तरह से स्वतंत्र हैं।
(B) डेटा तीसरे चर के साथ एक मजबूत सहसंबंध दिखाता है।
(C) प्रतिदर्श अलग-अलग आबादी से लिए गए हैं।
(D) एक समूह के प्राप्तांक दूसरे समूह के प्राप्तांकों से संबंधित हैं।

60. निम्नलिखित में से कौन प्रयोगात्मक अभिकल्प का प्रकार नहीं है?
(A) पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प
(B) सहसंबंधी अभिकल्प
(C) वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प
(D) अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प

61. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: प्रयोगात्मक अभिकल्प का उद्देश्य आंतरिक वैधता को अधिकतम करना है।
कथन II: आंतरिक वैधता उस सीमा को संदर्भित करती है जिस तक शोध निष्कर्षों को अन्य जनसंख्या और परिस्थितियों के लिए सामान्यीकृत किया जा सकता है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।

62. एक शोधकर्ता यह सुनिश्चित करना चाहता है कि ज्ञात बाह्य चर प्रयोगात्मक और नियंत्रण समूहों में समान रुप से वितरित हों। कौन सी नियंत्रण तकनीक सबसे उपयुक्त होगी?
(A) यादृच्छिकीकरण
(B) विलोपन
(C) प्रति-संतुलन
(D) मिलान

63. कथन "बुद्धि को वेचस्लर एडल्ट इंटेलिजेंस स्केल पर प्राप्त प्राप्तांक के रूप में परिभाषित किया गया है" किसका एक उदाहरण है:
(A) संक्रियात्मक परिभाषा
(B) सैद्धांतिक परिभाषा
(C) परिकल्पना
(D) शोध प्रश्न

64. गैर-प्रायिकता प्रतिचयन विधियों की मुख्य कमी क्या है?
(A) वे अधिक महंगी और समय लेने वाली होती हैं।
(B) निष्कर्षों को जनसंख्या के लिए सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है।
(C) उन्हें जनसंख्या की पूरी सूची की आवश्यकता होती है।
(D) वे सही ढंग से लागू करने के लिए बहुत जटिल हैं।

65. परिकल्पना परीक्षण में त्रुटियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. टाइप I त्रुटि की प्रायिकता सार्थकता स्तर (अल्फा) के बराबर होती है।
II. टाइप II त्रुटि को 'फॉल्स पॉजिटिव' के रूप में भी जाना जाता है।
III. प्रतिदर्श के आकार को बढ़ाने से टाइप II त्रुटि की प्रायिकता को कम करने में मदद मिल सकती है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

66. टू-वे एनोवा में, हम किसका परीक्षण कर सकते हैं:
(A) दो मुख्य प्रभाव और एक अन्योन्यक्रिया प्रभाव।
(B) एक मुख्य प्रभाव और एक अन्योन्यक्रिया प्रभाव।
(C) दो अन्योन्यक्रिया प्रभाव और एक मुख्य प्रभाव।
(D) केवल दो मुख्य प्रभाव।

67. असंबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण का उपयोग करने के लिए निम्नलिखित में से कौन सा परिदृश्य सबसे उपयुक्त है?
(A) नई शिक्षण पद्धति के बाद छात्रों के प्री-टेस्ट और पोस्ट-टेस्ट प्राप्तांकों की तुलना करना।
(B) छह महीने के डाइट प्लान के बाद मरीजों के कोलेस्ट्रॉल स्तर में बदलाव का आकलन करना।
(C) पायलटों के एक समूह और गैर-पायलटों के एक समूह के औसत प्रतिक्रिया समय की तुलना करना।
(D) भाई-बहनों के समस्या-समाधान प्राप्तांकों की तुलना करना।

(A) वह समूह जिसे प्रयोगात्मक उपचार प्राप्त होता है।
(B) आश्रित चर में हेरफेर करने की प्रक्रिया।
(C) बाह्य चरों के प्रभाव को कम करने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियाँ।
(D) परिणामों का सांख्यिकीय विश्लेषण।

22. एक शोधकर्ता भारत के सभी विश्वविद्यालय के छात्रों की पढ़ने की आदतों में रुचि रखता है। भारत में विश्वविद्यालय के छात्रों का संपूर्ण समूह क्या है?
(A) प्रतिदर्श
(B) जनसंख्या
(C) नियंत्रण समूह
(D) प्रयोगात्मक समूह

23. निम्नलिखित में से कौन सा वैज्ञानिक अनुसंधान में साहित्य समीक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है?
(A) किसी क्षेत्र में प्रकाशित सभी कार्यों की एक विस्तृत सूची प्रदान करना।
(B) शोधकर्ता के लेखन कौशल का प्रदर्शन करना।
(C) अध्ययन आयोजित करने से पहले यह सिद्ध करना कि शोधकर्ता की परिकल्पना सही है।
(D) वर्तमान ज्ञान में कमियों की पहचान करना और एक शोध प्रश्न तैयार करना।

24. दो समूहों की तुलना करने वाले अध्ययन के लिए एक शून्य परिकल्पना सामान्यतः यह बताएगी कि:
(A) समूह 1 और समूह 2 के माध्य के बीच कोई अंतर नहीं है।
(B) समूह 1 का माध्य समूह 2 के माध्य से अधिक है।
(C) समूह 1 का माध्य समूह 2 के माध्य से भिन्न है।
(D) प्रयोग सफल होगा।

25. एक शोधकर्ता शैक्षणिक उपलब्धि पर प्री-स्कूल कार्यक्रम के दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन करना चाहता है। वह उन बच्चों के समूह की तुलना उन बच्चों के समूह से करता है जिन्होंने कार्यक्रम में भाग नहीं लिया था। हालाँकि, वह उन्हें इन समूहों में यादृच्छिक रूप से आवंटित नहीं कर सकता है। इस प्रकार के अध्ययन को सबसे अच्छी तरह वर्णित किया गया है:
(A) एक वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प
(B) एक पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प
(C) एक अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प
(D) एक सहसंबंधी अध्ययन

26. एक 2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प में, अन्योन्यक्रिया प्रभाव तब होता है जब:
(A) आश्रित चर पर एक स्वतंत्र चर का प्रभाव दूसरे स्वतंत्र चर के स्तर पर निर्भर करता है।
(B) दोनों स्वतंत्र चरों का आश्रित चर पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
(C) किसी भी स्वतंत्र चर का आश्रित चर पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है।
(D) मुख्य प्रभाव नियंत्रण समूह के प्रभाव से अधिक मजबूत होते हैं।

27. टेट्राकोरिक सहसंबंध किसके बीच संबंध को मापने के लिए उपयुक्त है?
(A) अंतराल या अनुपात पैमाने पर मापे गए दो सतत चर।
(B) एक सतत और एक द्विभाजित चर।
(C) विशेष रूप से क्रमसूचक रैंकिंग पैमाने पर मापे गए दो चर।
(D) अंतर्निहित निरंतरता वाले दो कृत्रिम रूप से द्विभाजित चर।

28. संबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण सबसे उपयुक्त सांख्यिकीय परीक्षण कब होता है?
(A) जब छात्रों की दो अलग-अलग कक्षाओं के परीक्षा प्राप्तांकों की तुलना की जाती है।
(B) जब प्रशिक्षण कार्यक्रम से पहले और बाद में कर्मचारियों की उत्पादकता की तुलना की जाती है।
(C) जब आईक्यू प्राप्तांक और शैक्षणिक ग्रेड के बीच संबंध की जांच की जाती है।
(D) जब किसी कंपनी में पुरुषों और महिलाओं की औसत आय की तुलना की जाती है।

29. टाइप I त्रुटि करने की प्रायिकता को किसके द्वारा दर्शाया जाता है?
(A) β (बीटा)
(B) ρ (रो)
(C) α (अल्फा)
(D) μ (म्यू)

30. निम्नलिखित में से कौन सी एक अच्छी परिकल्पना की विशेषता नहीं है?
(A) यह परीक्षण योग्य और खंडन योग्य होनी चाहिए।
(B) इसे स्पष्ट और असंदिग्ध रूप से बताया जाना चाहिए।
(C) यह मौजूदा सिद्धांत या अवलोकनों पर आधारित होनी चाहिए।
(D) यह जटिल और समझने में कठिन होनी चाहिए।

31. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: स्वतंत्र चर वह चर है जिसे प्रयोग में मापा जाता है।
कथन II: आश्रित चर वह चर है जिसमें शोधकर्ता द्वारा हेरफेर किया जाता है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।

32. जनसंख्या को उपसमूहों में विभाजित करने और फिर प्रत्येक उपसमूह से यादृच्छिक रूप से प्रतिदर्श चुनने की प्रक्रिया कहलाती है:

अभिकथन (A): प्रतिभागियों की समान संख्या होने पर संबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण सामान्यतः असंबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण की तुलना में अधिक शक्तिशाली होता है।

कारण (R): संबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण प्रतिभागियों के बीच व्यक्तिगत अंतरों को ध्यान में रखकर त्रुटि विचरण को कम करता है।

(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

81. चरों का कौन सा युग्म पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध के लिए उपयुक्त है?
(A) ऊंचाई और वजन।
(B) लिंग (पुरुष/महिला) और अवसाद मापनी पर प्राप्तांक।
(C) परीक्षा में प्राप्तांक (उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण के रूप में द्विभाजित) और अध्ययन के घंटे।
(D) आईक्यू प्राप्तांक और रचनात्मकता प्राप्तांक।

82. एक अध्ययन में, यदि आप एक ही प्रतिदर्श के माध्य प्राप्तांक की तुलना ज्ञात जनसंख्या माध्य से करते हैं, तो आप किस परीक्षण का उपयोग करेंगे?
(A) एक-प्रतिदर्श टी-परीक्षण
(B) स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण
(C) युग्मित प्रतिदर्श टी-परीक्षण
(D) वन-वे एनोवा

83. 'वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रकृति' का एक प्रमुख पहलू यह है कि इसके दावे होते हैं:
(A) अचूक
(B) व्यक्तिपरक
(C) खंडन योग्य
(D) निर्विवाद

84. शून्य परिकल्पना के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा गलत कथन है?
(A) यह अक्सर वह परिकल्पना होती है जिसे शोधकर्ता गलत सिद्ध करना चाहता है।
(B) यह कोई प्रभाव नहीं या कोई अंतर नहीं होने का कथन है।
(C) इसे H_0 द्वारा दर्शाया जाता है।
(D) सांख्यिकीय परीक्षण सीधे शून्य परिकल्पना को सिद्ध करने के लिए अभिकल्पित किए गए हैं।

85. निम्नलिखित में से कौन सा आश्रित चर का उदाहरण है?
(A) मरीज को दी गई थेरेपी का प्रकार।
(B) दी गई दवा की खुराक।
(C) स्मृति परीक्षण में याद की गई वस्तुओं की संख्या।
(D) वह समय जब प्रयोग किया जाता है।

86. एक शोधकर्ता छात्र की राय के बारे में अध्ययन के लिए विश्वविद्यालय परिसर में छात्रों का सर्वेक्षण करती है। जब उसने प्रत्येक वर्ष के 50 छात्रों का सर्वेक्षण कर लिया, तो वह रुक जाती है। यह किसका उदाहरण है:
(A) स्तरित प्रतिचयन
(B) कोटा प्रतिचयन
(C) गुच्छ प्रतिचयन
(D) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन

87. टाइप I त्रुटि करना किसके समान है:
(A) एक डॉक्टर द्वारा बीमार व्यक्ति को यह कहना कि वह स्वस्थ है।
(B) एक डॉक्टर द्वारा स्वस्थ व्यक्ति को यह कहना कि वह स्वस्थ है।
(C) एक न्यायाधीश द्वारा दोषी व्यक्ति को बरी करना।
(D) एक न्यायाधीश द्वारा निर्दोष व्यक्ति को दोषी ठहराना।

88. प्रयोगात्मक अभिकल्प का सबसे सरल प्रकार, जिसमें अक्सर प्री-टेस्ट और पोस्ट-टेस्ट वाला एक ही समूह शामिल होता है, कहलाता है:
(A) एक पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प
(B) एक वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प
(C) एक अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प
(D) एक फैक्टोरियल अभिकल्प

89. फैक्टोरियल अभिकल्प में 'मुख्य प्रभाव' का तात्पर्य है:
(A) स्वतंत्र चर पर आश्रित चर का प्रभाव।
(B) सभी स्वतंत्र चरों का संयुक्त प्रभाव।
(C) अन्य स्वतंत्र चरों की उपेक्षा करते हुए, आश्रित चर पर एक स्वतंत्र चर का समग्र प्रभाव।
(D) दो या दो से अधिक स्वतंत्र चरों के बीच अन्योन्यक्रिया।

90. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: सहसंबंध का अर्थ कार्य-कारण है।
कथन II: दो चरों के बीच एक मजबूत सहसंबंध का अर्थ है कि एक चर अनिवार्य रूप से दूसरे का कारण बनता है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।

91. टी-परीक्षण का उपयोग करने का प्राथमिक उद्देश्य है:
(A) दो चरों के बीच संबंध निर्धारित करना।
(B) तीन या अधिक समूहों के विचरण की तुलना करना।
(C) वितरण की सामान्यता का परीक्षण करना।
(D) एक या दो समूहों के माध्य की तुलना करना।

92. टेट्राकोरिक सहसंबंध सबसे उपयुक्त माप कब होगा?
(A) ऊंचाई और वजन के बीच संबंध मापते समय।
(B) दो परीक्षाओं में उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण होने के बीच संबंध

117. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: टू-वे एनोवा में, सार्थक मुख्य प्रभाव लेकिन कोई सार्थक अन्योन्यक्रिया प्रभाव नहीं मिलना संभव है।
कथन II: टू-वे एनोवा में, एक सार्थक अन्योन्यक्रिया प्रभाव लेकिन कोई सार्थक मुख्य प्रभाव नहीं मिलना संभव है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।

118. टी-वितरण के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) यह सामान्य वितरण के समान, सममित और घंटी के आकार का है।
(B) प्रतिदर्श आकार के बावजूद यह एक एकल, निश्चित वितरण है।
(C) इसमें सामान्य वितरण की तुलना में भारी पुच्छ होती है।
(D) जैसे-जैसे स्वतंत्रता की कोटि बढ़ती है, टी-वितरण सामान्य वितरण के करीब पहुंच जाता है।

119. एक शोधकर्ता दो चरों के बीच संबंध को मापता है: वैवाहिक स्थिति (तीन श्रेणियां) और जीवन संतुष्टि स्कोर (सतत माप)। कौन सा सांख्यिकीय परीक्षण सबसे उपयुक्त है?
(A) टी-परीक्षण
(B) प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध
(C) काई-स्क्वायर परीक्षण
(D) एनोवा

120. निम्नलिखित में से कौन सा परिदृश्य संबंधित प्रतिदर्शों का उदाहरण है?
(A) दवा लेने से पहले और बाद में मरीजों के रक्तचाप की तुलना करना।
(B) दो अलग-अलग स्कूलों के छात्रों के परीक्षा प्राप्तांकों की तुलना करना।
(C) किसी कंपनी में पुरुष और महिला कर्मचारियों के वेतन की तुलना करना।
(D) दो अलग-अलग राज्यों के निवासियों के दृष्टिकोण की तुलना करना।

121. बाइसीरियल और पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध के बीच मुख्य अंतर इसमें निहित है:
(A) सतत चर की प्रकृति।
(B) आवश्यक प्रतिदर्श आकार।
(C) द्विभाजित चर की प्रकृति।
(D) संबंध की दिशा।

122. पुनरावृत्ति वैज्ञानिक अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि यह:
(A) अन्य शोधकर्ताओं को निष्कर्षों को सत्यापित करने की अनुमति देता है।
(B) यह सुनिश्चित करता है कि शोध एक शीर्ष पत्रिका में प्रकाशित हो।
(C) गारंटी देता है कि परिकल्पना सही है।
(D) शोध को जनता के लिए अधिक रोचक बनाता है।

123. 'सेल्सियस में तापमान' जैसा चर किस तरह के चर का उदाहरण है?
(A) नाममात्र
(B) क्रमसूचक
(C) स्वतंत्र
(D) सतत

124. प्रतिदर्श सांख्यिकी और संबंधित जनसंख्या प्राचल के बीच के अंतर को इस रूप में जाना जाता है:
(A) टाइप I त्रुटि
(B) प्रतिचयन त्रुटि
(C) टाइप II त्रुटि
(D) प्रयोगात्मक त्रुटि

125. फैक्टोरियल अभिकल्प के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उनमें केवल दो स्वतंत्र चर हो सकते हैं।
II. वे प्रत्येक स्वतंत्र चर के लिए अलग-अलग प्रयोग करने की तुलना में अधिक कुशल हैं।
III. एक प्राथमिक लाभ अन्योन्यक्रिया प्रभावों के परीक्षण की क्षमता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

126. एक शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकालता है कि एक नई दवा प्रभावी है, लेकिन वास्तव में उसका कोई प्रभाव नहीं है। यह किसका उदाहरण है:
(A) टाइप II त्रुटि
(B) सही निर्णय
(C) प्रतिचयन पूर्वाग्रह
(D) टाइप I त्रुटि

127. यदि किसी प्रयोग में उच्च आंतरिक वैधता है, तो इसका अर्थ है कि:
(A) शोधकर्ता आश्वस्त है कि स्वतंत्र चर के कारण ही आश्रित चर में परिवर्तन हुआ।
(B) परिणामों को विभिन्न स्थितियों में सामान्यीकृत किया जा सकता है।
(C) अध्ययन में उपयोग किए गए माप उन संरचनाओं को सटीक रूप से दर्शाते हैं जिन्हें उन्हें मापना चाहिए।
(D) अध्ययन को अन्य शोधकर्ताओं द्वारा आसानी से दोहराया जा सकता है।

128. टी-परीक्षण में एक गैर-सार्थक परिणाम क्या सुझाव देता है?

104. कौन सा सहसंबंध उस स्थिति के लिए अभिकल्पित है जहाँ एक चर सतत है और दूसरे को कृत्रिम रुप से द्विभाजित किया गया है?
(A) बाइसीरियल
(B) प्रोडक्ट-मोमेंट
(C) टेट्राकोरिक
(D) पॉइंट-बाइसीरियल

105. टी-परीक्षण के संदर्भ में "स्वतंत्रता की कोटि" किससे संबंधित है?
(A) अध्ययन में चरों की संख्या।
(B) प्रयोगात्मक हेरफेर की शक्ति।
(C) उन प्रतिभागियों की संख्या जो कुछ मापदंडों के अनुमान के बाद स्वतंत्र हैं।
(D) परीक्षण की जा रही परिकल्पनाओं की संख्या।

106. निम्नलिखित में से कौन वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रकृति से संबंधित नहीं है?
(A) हठधर्मिता
(B) वस्तुनिष्ठता
(C) अनुभववाद
(D) पुनरावृत्ति

107. एक शोधकर्ता परिकल्पना करता है कि एक नई दवा स्मृति में सुधार करेगी। यह एक है:
(A) शून्य परिकल्पना
(B) गैर-दिशात्मक परिकल्पना
(C) सहसंबंधी परिकल्पना
(D) दिशात्मक परिकल्पना

108. 'लिंग' (पुरुष के लिए 1, महिला के लिए 2 के रूप में कोडित) किस प्रकार का चर है?
(A) सतत
(B) श्रेणीबद्ध
(C) आश्रित
(D) नियंत्रण

109. यदि कोई जनसंख्या अत्यधिक विषम है, तो सभी उपसमूहों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए कौन सी प्रतिचयन तकनीक सबसे प्रभावी है?
(A) सरल याद्दच्छिक प्रतिचयन
(B) सुविधाजनक प्रतिचयन
(C) स्तरित याद्दच्छिक प्रतिचयन
(D) स्नोबॉल प्रतिचयन

110. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): बाह्य चरों को नियंत्रित करना प्रयोगात्मक अनुसंधान में एक प्राथमिक चिंता है।
कारण (R): अनियंत्रित बाह्य चर भ्रामक चर बन सकते हैं, जो परिणामों के लिए वैकल्पिक व्याख्या प्रदान करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

111. सांख्यिकीय परीक्षण की शक्ति क्या है?
(A) एक गलत शून्य परिकल्पना को सही ढंग से अस्वीकार करने की प्रायिकता।
(B) टाइप I त्रुटि करने की प्रायिकता।
(C) टाइप II त्रुटि करने की प्रायिकता।
(D) एक सत्य शून्य परिकल्पना को स्वीकार करने की प्रायिकता।

112. प्रयोगात्मक अभिकल्प के "उद्देश्य" को किसके निर्धारण के रुप में सबसे अच्छी तरह से संक्षेपित किया जा सकता है?
(A) सहसंबंध
(B) कार्य-कारण
(C) साहचर्य
(D) विवरण

113. एक अध्ययन प्रतिक्रिया समय पर नींद की कमी और कैफीन सेवन के प्रभावों की जांच करता है। यह एक है:
(A) वन-वे एनोवा अभिकल्प
(B) 2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प
(C) सहसंबंधी अध्ययन
(D) 4x2 फैक्टोरियल अभिकल्प

114. चर A और चर B के बीच r = -0.70 का सहसंबंध संकेत देता है कि:
(A) जैसे-जैसे A बढ़ता है, B घटता है।
(B) जैसे-जैसे A बढ़ता है, B बढ़ता है।
(C) A और B के बीच कोई संबंध नहीं है।
(D) A के कारण B घटता है।

115. युग्मित-प्रतिदर्श टी-परीक्षण का उपयोग तब किया जाता है जब माप लिए जाते हैं:
(A) दो अलग-अलग, स्वतंत्र समूहों से।
(B) तीन या अधिक विभिन्न समूहों से।
(C) दो अलग-अलग समय पर विषयों के एक ही समूह से।
(D) एक एकल प्रतिदर्श और एक ज्ञात जनसंख्या माध्य से।

116. निम्नलिखित में से कौन सा अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प की परिभाषित विशेषता है?
(A) इसमें किसी भी चर का हेरफेर शामिल नहीं है।
(B) इसके लिए कम से कम तीन स्वतंत्र चरों की आवश्यकता होती है।
(C) यह डेटा विश्लेषण के लिए सहसंबंधी दृष्टिकोण का उपयोग करता है।
(D) इसमें स्वतंत्र चर का हेरफेर शामिल है लेकिन याद्दच्छिक आवंटन का अभाव है।

मापते समय, यह मानते हुए कि दोनों क्षमताएं सतत हैं।
(C) लिंग और राजनीतिक प्राथमिकता के बीच संबंध मापते समय।
(D) परीक्षा प्राप्तांक और अध्ययन के घंटों के बीच संबंध मापते समय।

93. वन-वे एनोवा एक महत्वपूर्ण F-अनुपात देता है। अगला तार्किक कदम क्या है?
(A) यह निष्कर्ष निकालना कि सभी समूह एक-दूसरे से भिन्न हैं।
(B) टी-परीक्षण के साथ विश्लेषण को फिर से चलाना।
(C) यह निर्धारित करने के लिए पोस्ट-हॉक परीक्षण करना कि कौन से विशिष्ट समूह माध्य भिन्न हैं।
(D) शून्य परिकल्पना को स्वीकार करना।

94. स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण के लिए निम्नलिखित में से कौन सी एक प्रमुख धारणा है?
(A) प्रतिदर्श समान आकार के होने चाहिए।
(B) दो प्रतिदर्श संबंधित या युग्मित होने चाहिए।
(C) डेटा को नाममात्र पैमाने पर मापा जाना चाहिए।
(D) दो समूहों के विचरण लगभग समान होने चाहिए।

95. चरों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. एक स्वतंत्र चर को आश्रित चर में परिवर्तन का कारण माना जाता है।
II. आश्रित चर शोधकर्ता द्वारा मापा गया परिणाम है।
III. नियंत्रण चरों में उनके प्रभाव को देखने के लिए जानबूझकर हेरफेर किया जाता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

96. वैज्ञानिक पद्धति एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे सबसे अच्छी तरह वर्णित किया गया है:
(A) रैखिक और कठोर
(B) चक्रीय और स्वतः-सुधारात्मक
(C) यादृच्छिक और सहज
(D) अंतिम और पूर्ण

97. एक परिकल्पना जो कहती है कि "ध्यान करने वाले छात्रों और नहीं करने वाले छात्रों के परीक्षा प्राप्तांकों में अंतर होगा" है:
(A) एक शून्य परिकल्पना
(B) एक गैर-दिशात्मक वैकल्पिक परिकल्पना
(C) एक दिशात्मक वैकल्पिक परिकल्पना
(D) एक परीक्षण न की जा सकने वाली परिकल्पना

98. एक 'प्रतिदर्श' को इस रूप में परिभाषित किया गया है:
(A) अध्ययन के लिए चुनी गई जनसंख्या का एक उपसमूह।
(B) व्यक्तियों का संपूर्ण समूह जिसमें शोधकर्ता की रुचि है।
(C) एक विशिष्ट शोध विधि।
(D) प्रयोगात्मक अभिकल्प का एक प्रकार।

99. 0.05 का अल्फा स्तर संकेत देता है:
(A) टाइप II त्रुटि करने की 5% संभावना।
(B) शोध परिकल्पना के सही होने की 95% संभावना।
(C) शून्य परिकल्पना के वास्तव में सत्य होने पर उसे अस्वीकार करने का 5% जोखिम।
(D) कि परिणाम व्यावहारिक रूप से महत्वपूर्ण हैं।

100. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I (सांख्यिकीय परीक्षण)
P. संबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण
Q. वन-वे एनोवा
R. पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध
S. असंबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण
सूची II (शोध प्रश्न)
1. क्या दो स्वतंत्र समूहों के लिए औसत परीक्षा प्राप्तांक अलग-अलग हैं?
2. लिंग और परीक्षा प्राप्तांक के बीच क्या संबंध है?
3. क्या तीन अलग-अलग शिक्षण विधियों के बीच औसत परीक्षा प्राप्तांक अलग-अलग हैं?
4. क्या विश्राम अभ्यास से पहले और बाद में प्रतिभागियों के चिंता प्राप्तांकों में कोई अंतर है?
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

101. इनमें से कौन सा वास्तविक प्रयोग की परिभाषित विशेषता है?
(A) बड़ी जनसंख्या का सर्वेक्षण करना।
(B) विषयों को उनके प्राकृतिक वातावरण में देखना।
(C) एक स्वतंत्र चर का हेरफेर और यादृच्छिक आवंटन।
(D) मौजूदा डेटा रिकॉर्ड का विश्लेषण करना।

102. एक 3x3 फैक्टोरियल अभिकल्प में, कितने स्वतंत्र चर हैं?
(A) 3
(B) 2
(C) 6
(D) 9

103. यदि एक अध्ययन में दो समूहों के माध्य के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया जाता है, तो शोधकर्ता को चाहिए:
(A) स्वचालित रूप से शून्य परिकल्पना स्वीकार करें।
(B) वैकल्पिक परिकल्पना को अस्वीकार करें।
(C) यह निष्कर्ष निकालें कि उपचार का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
(D) शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहें।

(A) दोनों समूह हर तरह से समान हैं।
(B) समूह माध्य के बीच देखा गया अंतर संभवतः संयोग के कारण हो सकता है।
(C) शून्य परिकल्पना निश्चित रूप से सत्य है।
(D) शोध अभिकल्प दोषपूर्ण था।

129. छात्र के प्राप्तांक (सतत चर) और वे पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण हुए या अनुत्तीर्ण (वास्तविक द्वंद्व), के बीच सहसंबंध की गणना के लिए किसका उपयोग करना चाहिए:
(A) बाइसीरियल सहसंबंध
(B) पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध
(C) टेट्राकोरिक सहसंबंध
(D) प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध

130. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I (परिदृश्य)
P. प्रशिक्षण कार्यक्रम से पहले और बाद में स्मृति प्राप्तांकों की तुलना करना।
Q. तीन अलग-अलग व्यवसायों में औसत आय की तुलना करना।
R. अध्ययन के घंटों और परीक्षा प्रतिशत के बीच संबंध की जांच करना।
S. दो अलग-अलग संकाय के छात्रों के दृष्टिकोण की तुलना करना।
सूची II (उपयुक्त सांख्यिकी)
1. प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध
2. स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण
3. युग्मित प्रतिदर्श टी-परीक्षण
4. वन-वे एनोवा
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

131. निम्नलिखित में से कौन सी परिकल्पना अपने वर्तमान स्वरुप में परीक्षण योग्य नहीं है?
(A) प्रतिदिन व्यायाम करने वालों में तनाव का स्तर कम होता है।
(B) एक नई दवा उच्च रक्तचाप को कम करेगी।
(C) अच्छे लोगों के जीवन के अनुभव बुरे लोगों की तुलना में अधिक सकारात्मक होते हैं।
(D) व्याख्यान में भाग लेने वाले छात्रों के ग्रेड अधिक होते हैं।

132. प्रयोग की सभी स्थितियों में एक संभावित बाह्य चर को निरंतर स्तर पर रखने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) यादृच्छिकीकरण
(B) मिलान
(C) विलोपन
(D) स्थिरता

133. कौन सी प्रतिचयन विधि एक गैर-प्रायिकता तकनीक है?
(A) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(B) स्तरित प्रतिचयन
(C) सोद्देश्य प्रतिचयन
(D) गुच्छ प्रतिचयन

134. अल्फा स्तर को .05 से घटाकर .01 करने का परिणाम क्या होता है?
(A) टाइप I त्रुटि का उच्च जोखिम और टाइप II त्रुटि का कम जोखिम।
(B) टाइप I त्रुटि का कम जोखिम और टाइप II त्रुटि का उच्च जोखिम।
(C) टाइप I और टाइप II दोनों त्रुटियों का कम जोखिम।
(D) टाइप I और टाइप II दोनों त्रुटियों का उच्च जोखिम।

135. "वन-शॉट केस स्टडी" किस प्रकार के अभिकल्प का उदाहरण है?
(A) वास्तविक प्रयोगात्मक
(B) अर्ध-प्रयोगात्मक
(C) फैक्टोरियल
(D) पूर्व-प्रयोगात्मक

136. टू-वे एनोवा में, सामान्यतः गणना किए गए F-अनुपातों की संख्या होती है:
(A) तीन
(B) एक
(C) दो
(D) चार

137. निम्नलिखित में से कौन सी सहसंबंधी पद्धति की सीमा है?
(A) इसका उपयोग सतत डेटा के साथ नहीं किया जा सकता है।
(B) यह प्रयोगात्मक विधियों की तुलना में अधिक महंगी है।
(C) यह कार्य-कारण संबंध स्थापित नहीं कर सकती है।
(D) इसका उपयोग केवल बहुत छोटे प्रतिदर्शों के साथ किया जा सकता है।

138. कौन सी स्थिति संबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण को उपयुक्त बनाएगी?
(A) आईक्यू पर मिलान किए गए छात्रों के परीक्षा प्राप्तांकों की तुलना करना।
(B) पुरुषों और महिलाओं की ऊंचाई की तुलना करना।
(C) मरीजों के दो अलग-अलग समूहों पर दो अलग-अलग दवाओं की तुलना करना।
(D) दो अलग-अलग शहरों में मतदान प्राथमिकताओं की तुलना करना।

139. वैज्ञानिक अनुसंधान में "वैज्ञानिक" शब्द का तात्पर्य है कि जांच:
(A) विभिन्न पूर्ण और अपरिवर्तनीय सत्यों की खोज पर केंद्रित है।

213. जब दो समूहों के माध्य की तुलना की जाती है जिनमें मिलान किए गए जोड़े शामिल होते हैं, तो उपयुक्त परीक्षण है:
(A) असंबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण
(B) वन-वे एनोवा
(C) संबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण
(D) बाइसीरियल सहसंबंध

214. वैज्ञानिक परिकल्पनाओं के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) वे सिद्धांतों से प्राप्त होती हैं।
(B) उन्हें पूर्ण निश्चितता के साथ सिद्ध किया जा सकता है।
(C) वे परीक्षण योग्य प्रस्ताव हैं।
(D) वे चरों के बीच संबंधों को निर्दिष्ट करती हैं।

215. वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया के निम्नलिखित चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें:
I. डेटा विश्लेषण और व्याख्या
II. परिकल्पना का निर्माण
III. साहित्य समीक्षा
IV. डेटा संग्रह
(A) III, II, IV, I
(B) II, III, IV, I
(C) I, II, III, IV
(D) III, IV, II, I

216. वह चर जिसे शोधकर्ता समझाना या भविष्यवाणी करना चाहता है, वह है:
(A) आश्रित चर
(B) स्वतंत्र चर
(C) नियंत्रण चर
(D) बाह्य चर

217. एक अध्ययन जो नियंत्रण समूह और प्रयोगात्मक समूह दोनों का उपयोग करता है लेकिन प्रतिभागियों को यादृच्छिक रूप से आवंटित नहीं करता है, वह है:
(A) पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प।
(B) वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प।
(C) अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प।
(D) सहसंबंधी अभिकल्प।

218. फैक्टोरियल एनोवा में एक 'अन्योन्यक्रिया' संकेत देती है कि:
(A) एक स्वतंत्र चर का प्रभाव दूसरे के सभी स्तरों पर समान नहीं है।
(B) मुख्य प्रभाव सार्थक नहीं हैं।
(C) स्वतंत्र चर एक-दूसरे के साथ अत्यधिक सहसंबंधित हैं।
(D) गणना में त्रुटि हुई है।

219. पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध का उपयोग किसके बीच संबंध खोजने के लिए किया जाएगा?
(A) आईक्यू प्राप्तांक और आय का स्तर।
(B) सौंदर्य प्रतियोगिता में कोटि और बुद्धिमत्ता परीक्षण में कोटि।
(C) कट-ऑफ प्राप्तांक के आधार पर परीक्षा उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण करना और दूसरी परीक्षा उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण करना।
(D) परीक्षण पद का सही उत्तर देना और परीक्षण पर कुल प्राप्तांक।

220. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I (सांख्यिकीय अवधारणा)
P. α
Q. β
R. $1 - \beta$
S. H_0
सूची II (विवरण)
1. परीक्षण की शक्ति
2. टाइप II त्रुटि की प्रायिकता
3. शून्य परिकल्पना
4. टाइप I त्रुटि की प्रायिकता
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-4, S-3
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

221. एक शोधकर्ता शोर स्तर (तीन स्तर) और कार्य की कठिनाई (दो स्तर) के प्रदर्शन पर प्रभाव में रुचि रखता है। यह एक ______ फैक्टोरियल अभिकल्प का उदाहरण है।
(A) 2x2
(B) 3x3
(C) 3x2
(D) 2x1

222. टी-परीक्षण के परिणाम $t(28) = 2.50$, $p < .05$ के रूप में रिपोर्ट किए जाते हैं। संख्या 28 किसे दर्शाती है:
(A) प्रतिदर्श आकार।
(B) टी-मान।
(C) पी-मान।
(D) स्वतंत्रता की कोटि।

223. वैज्ञानिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता किसके आदर्श को संदर्भित करती है:
(A) शोध प्रक्रिया में पूर्वाग्रह और व्यक्तिगत निर्णय को कम करना।
(B) केवल भौतिक वस्तुओं का अध्ययन करना।
(C) केवल वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का उपयोग करना।
(D) ऐसे निष्कर्षों तक पहुँचना जो लोकप्रिय हों।

224. निम्नलिखित में से कौन सी परिकल्पना की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) यह एक प्रश्न होना चाहिए।
(B) यह एक ऐसा कथन होना चाहिए जिसका परीक्षण किया जा सके।
(C) इसे सही सिद्ध किया जाना चाहिए।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।

152. एक सत्य शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करना एक ______ है, जबकि एक गलत शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहना एक ______ है।
(A) टाइप I त्रुटि; टाइप II त्रुटि
(B) टाइप II त्रुटि; टाइप I त्रुटि
(C) प्रतिचयन त्रुटि; माप त्रुटि
(D) माप त्रुटि; प्रतिचयन त्रुटि

153. सोलोमन फोर-ग्रुप अभिकल्प एक प्रकार का वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प है जो विशेष रूप से किसे नियंत्रित करने के लिए है:
(A) इतिहास के प्रभाव।
(B) परिपक्वता के प्रभाव।
(C) प्री-टेस्ट के प्रभाव।
(D) कई उपचारों के प्रभाव।

154. वन-वे एनोवा द्वारा किस प्रमुख सांख्यिकीय प्रश्न का उत्तर दिया जाता है?
(A) क्या तीन या अधिक समूहों के माध्य के बीच कहीं कोई महत्वपूर्ण अंतर है?
(B) क्या दो चरों के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध है?
(C) क्या दो समूहों के माध्य के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर है?
(D) क्या दो स्वतंत्र चरों के बीच कोई महत्वपूर्ण अन्योन्यक्रिया है?

155. सहसंबंध के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. +1.00 का सहसंबंध एक पूर्ण सकारात्मक संबंध का प्रतिनिधित्व करता है।
II. 0.00 के सहसंबंध का अर्थ है कि चरों के बीच कोई संबंध नहीं है।
III. सहसंबंध कार्य-कारण के लिए एक आवश्यक लेकिन पर्याप्त शर्त नहीं है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

156. विचरण के विश्लेषण में, "वर्गों का योग" शब्द का तात्पर्य है:
(A) समूहों का औसत विचरण।
(B) माध्य से वर्ग विचलन का योग।
(C) समूहों की संख्या का वर्ग।
(D) परीक्षण का सार्थकता स्तर।

157. एक शोधकर्ता एक नई शिक्षण पद्धति के प्रभाव का अध्ययन कर रही है। वह पद्धति पूर्व और पश्चात छात्रों का परीक्षण करती है। प्राप्तांकों की तुलना के लिए, उसे किसका उपयोग करना चाहिए:
(A) असंबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण।
(B) काई-स्क्वायर परीक्षण।
(C) संबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण।
(D) वन-वे एनोवा।

158. प्रयोगात्मक अभिकल्प की प्रकृति में निम्नलिखित को छोड़कर सभी तत्व शामिल हैं:
(A) स्वतंत्र चर का हेरफेर।
(B) बाह्य चरों का नियंत्रण।
(C) आश्रित चर का मापन।
(D) परिणामों की बाह्य वैधता की गारंटी देना।

159. एक "अच्छी" परिकल्पना होनी चाहिए:
(A) परीक्षण योग्य और सटीक
(B) अस्पष्ट और सामान्य
(C) इस तरह से बताई गई कि इसे खंडित करना असंभव हो
(D) शोधकर्ता की व्यक्तिगत राय पर आधारित

160. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I (त्रुटि/निर्णय)
P. टाइप I त्रुटि
Q. टाइप II त्रुटि
R. सही अस्वीकृति
S. सही अवधारण
सूची II (स्थिति)
1. शून्य परिकल्पना गलत है, और इसे अस्वीकार कर दिया जाता है।
2. शून्य परिकल्पना सत्य है, और इसे अस्वीकार नहीं किया जाता है।
3. शून्य परिकल्पना सत्य है, लेकिन इसे अस्वीकार कर दिया जाता है।
4. शून्य परिकल्पना गलत है, लेकिन इसे अस्वीकार नहीं किया जाता है।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

161. एक चर जो "निम्न," "मध्यम," और "उच्च" जैसी श्रेणियों का उपयोग करके मापा जाता है, किसका उदाहरण है:
(A) नाममात्र चर
(B) क्रमसूचक चर
(C) अंतराल चर
(D) अनुपात चर

(C) व्याख्यायित विचरण
(D) त्रुटि विचरण

188. निम्नलिखित में से कौन सा सहसंबंध गुणांक दो चरों के बीच सबसे कमजोर संबंध को इंगित करता है?
(A) r = +0.50
(B) r = +0.10
(C) r = -0.75
(D) r = -0.90

189. N युग्मों के अवलोकन वाले युग्मित-प्रतिदर्श टी-परीक्षण के लिए स्वतंत्रता की कोटि है:
(A) N
(B) N - 2
(C) N - 1
(D) 2N - 2

190. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I (चर प्रकार)
P. स्वतंत्र चर
Q. आश्रित चर
R. बाह्य चर
S. नियंत्रण चर
सूची II (उदाहरण)
1. प्रतिभागियों की नींद की गुणवत्ता में पहले से मौजूद अंतर
2. मिलीसेकंड में मापा गया प्रतिक्रिया समय
3. दी गई कैफीन की मात्रा
4. परीक्षण कक्ष में प्रकाश की स्थिति, जो समान रखी गई
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

191. एक शोधकर्ता कहता है, "इस अध्ययन का उद्देश्य प्रथम पीढ़ी के कॉलेज छात्रों के अनुभवों का पता लगाना है।" यह एक शोध का उदाहरण है:
(A) लक्ष्य या उद्देश्य
(B) परिकल्पना
(C) नियम
(D) चर

192. "दोहरी-अंध" प्रक्रिया एक नियंत्रण तकनीक है जिसका उपयोग किसे कम करने के लिए किया जाता है:
(A) प्रतिचयन त्रुटि
(B) प्रयोगकर्ता और प्रतिभागी का पूर्वाग्रह
(C) इतिहास और परिपक्वता के प्रभाव
(D) क्षरण

193. यदि एक शोधकर्ता जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य का अध्ययन करता है, तो वे क्या आयोजित कर रहे हैं:
(A) प्रतिदर्श सर्वेक्षण
(B) जनगणना
(C) एकल अध्ययन
(D) अर्ध-प्रयोग

194. 'बीटा' स्तर किसकी प्रायिकता है:
(A) टाइप II त्रुटि करना।
(B) टाइप I त्रुटि करना।
(C) शून्य परिकल्पना को सही ढंग से अस्वीकार करना।
(D) शून्य परिकल्पना को सही ढंग से स्वीकार करना।

195. किस प्रकार का प्रयोगात्मक अभिकल्प आंतरिक वैधता के खतरों के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील है?
(A) वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प
(B) अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प
(C) पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प
(D) फैक्टोरियल अभिकल्प

196. एनोवा में कुल वर्गों के योग को किसमें विभाजित किया जा सकता है:
(A) मुख्य प्रभाव वर्गों का योग और अन्योन्यक्रिया वर्गों का योग।
(B) माध्य वर्ग त्रुटि और माध्य वर्ग उपचार।
(C) F-अनुपात और p-मान।
(D) अंतर-समूह वर्गों का योग और अंतः-समूह वर्गों का योग।

197. एक शोधकर्ता पाता है कि आइसक्रीम की बिक्री और अपराध दर में गहरा संबंध है। इस संबंध का सबसे संभावित कारण है:
(A) आइसक्रीम खाने से आपराधिक व्यवहार होता है।
(B) अपराध करने से आइसक्रीम खाने की इच्छा होती है।
(C) तापमान जैसा कोई तीसरा चर दोनों को प्रभावित करता है।
(D) सहसंबंध पूरी तरह से संयोग है।

198. टी-परीक्षण जैसे प्राचलिक परीक्षणों की प्राथमिक धारणा क्या है?
(A) डेटा श्रेणीबद्ध होना चाहिए।
(B) जिस आबादी से डेटा लिया गया है वह सामान्य वितरण का पालन करती है।
(C) प्रतिदर्श आकार छोटा होना चाहिए।
(D) समूहों के विचरण असमान होने चाहिए।

199. यदि दो माध्यों के बीच का अंतर "सांख्यिकीय रूप से सार्थक" है, तो इसका क्या अर्थ है?
(A) अंतर बहुत बड़ा और व्यावहारिक रूप से महत्वपूर्ण है।
(B) शून्य परिकल्पना सत्य सिद्ध हो गई है।
(C) अध्ययन बिना किसी दोष के संचालित किया गया था।
(D) अंतर के संयोग या प्रतिचयन त्रुटि के कारण होने की संभावना नहीं है।

(A) सभी स्थितियों में एक ही विषयों का उपयोग किया जाता है।
(B) प्रत्येक स्थिति में अलग-अलग विषयों का उपयोग किया जाता है।
(C) प्रयोग प्रयोगशाला के भीतर आयोजित किया जाता है।
(D) अभिकल्प में उच्च बाह्य वैधता होती है।

176. निम्नलिखित में से कौन सा वैज्ञानिक अनुसंधान में उपयोग किया जाने वाला मानक सहसंबंध प्रकार नहीं है?
(A) प्रोडक्ट मूवमेंट
(B) आंशिक
(C) बाइसीरियल
(D) टेट्राकोरिक

177. दो अलग-अलग वन-वे एनोवा की तुलना में एक टू-वे एनोवा बेहतर है क्योंकि:
(A) इसमें कम प्रतिभागियों की आवश्यकता होती है।
(B) यह स्वतंत्र चरों के बीच अन्योन्यक्रिया प्रभावों की पहचान कर सकता है।
(C) हाथ से गणना करना आसान है।
(D) इसमें कम धारणाएं होती हैं।

178. "माध्यों के बीच अंतर की सार्थकता" का क्या तात्पर्य है?
(A) क्या देखा गया अंतर सांख्यिकीय रूप से अर्थपूर्ण है या संयोग के कारण है।
(B) अंतर का व्यावहारिक महत्व।
(C) प्राप्तांकों में अंतर का पूर्ण आकार।
(D) दो माध्यों के बीच सहसंबंध।

179. किस परिदृश्य में संबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण की आवश्यकता होती है?
(A) दो अलग-अलग स्कूलों के छात्रों की औसत ऊंचाई की तुलना करना।
(B) दो अलग विभागों में कर्मचारियों की कार्य संतुष्टि की तुलना करना।
(C) भाषण कार्य से पहले और बाद में व्यक्तियों के समूह के चिंता स्तर की तुलना करना।
(D) राष्ट्रीय औसत आईक्यू से एक प्रतिदर्श के आईक्यू प्राप्तांकों की तुलना करना।

180. वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रकृति स्वाभाविक रूप से है:
(A) गुप्त
(B) अंतिम
(C) हठधर्मी
(D) संचयी

181. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: एक अच्छी परिकल्पना खंडन योग्य होनी चाहिए।
कथन II: एक खंडन योग्य परिकल्पना वह है जिसे अवलोकन या प्रयोग के माध्यम से गलत सिद्ध किया जा सके।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।

182. एक शोधकर्ता मूड पर कमरे के रंग (लाल, नीला, हरा) के प्रभाव का अध्ययन कर रहा है। कमरे का रंग है:
(A) आश्रित चर।
(B) तीन स्तरों वाला स्वतंत्र चर।
(C) नियंत्रित चर।
(D) बाह्य चर।

183. निम्नलिखित में से कौन सा प्रायिकता प्रतिचयन का उदाहरण है?
(A) सुविधाजनक प्रतिचयन
(B) कोटा प्रतिचयन
(C) स्नोबॉल प्रतिचयन
(D) व्यवस्थित प्रतिचयन

184. शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने का निर्णय तब लिया जाता है जब:
(A) p-मान अल्फा स्तर से कम या उसके बराबर हो।
(B) p-मान अल्फा स्तर से अधिक हो।
(C) परीक्षण सांख्यिकी क्रांतिक मान से छोटी हो।
(D) प्रभाव का आकार छोटा हो।

185. प्रयोगात्मक अभिकल्प के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वास्तविक प्रयोग चरों पर उच्चतम स्तर का नियंत्रण प्रदान करते हैं।
II. अर्ध-प्रयोगों का उपयोग तब किया जाता है जब प्रतिभागियों का यादृच्छिक आवंटन संभव नहीं होता है।
III. पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प आंतरिक वैधता के खतरों के विरुद्ध मजबूत होते हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

186. एक 2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प में कितने मुख्य प्रभावों का परीक्षण किया जा सकता है?
(A) 2
(B) 1
(C) 3
(D) 4

187. एनोवा में, अंतः-समूह विचरण को इस रूप में भी जाना जाता है:
(A) उपचार विचरण
(B) व्यवस्थित विचरण

(B) केवल नियंत्रित प्रयोगशाला परिवेश में ही संचालित की जाती है।
(C) जटिल है और केवल विशेषज्ञों द्वारा ही समझी जा सकती है।
(D) एक व्यवस्थित, अनुभवजन्य और नियंत्रित प्रक्रिया पर आधारित है।

140. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प का उपयोग अक्सर वास्तविक दुनिया की परिस्थितियों में किया जाता है।
कारण (R): अर्ध-प्रयोगात्मक डिजाइनों में वास्तविक प्रयोगात्मक डिजाइनों की तुलना में कम आंतरिक वैधता होती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

141. वह चर जिसे कार्य-कारण संबंध में 'प्रभाव' माना जाता है, वह है:
(A) स्वतंत्र चर
(B) बाह्य चर
(C) आश्रित चर
(D) नियंत्रण चर

142. परिकल्पना परीक्षण का एक प्रमुख उद्देश्य है:
(A) शोध परिकल्पना को सिद्ध करना।
(B) प्रतिदर्श के माध्य की गणना करना।
(C) एक प्रतिनिधि प्रतिदर्श चुनना।
(D) प्रतिदर्श डेटा के आधार पर जनसंख्या के बारे में निर्णय लेना।

143. निम्नलिखित में से कौन सा जनसंख्या का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) भारत में किसी विशिष्ट मानसिक रोग से ग्रस्त सभी व्यक्ति।
(B) एक अध्ययन के लिए चुने गए 200 छात्र।
(C) दवा परीक्षण में प्रयोगात्मक समूह।
(D) सर्वेक्षण का जवाब देने वाले पहले 50 लोग।

144. किसी अध्ययन की सांख्यिकीय शक्ति किसके द्वारा कम हो जाती है?
(A) प्रतिदर्श के आकार को बढ़ाना।
(B) जनसंख्या में बहुत कम प्रभाव आकार होना।
(C) अधिक विश्वसनीय माप उपकरण का उपयोग करना।
(D) अल्फा स्तर को बढ़ाना।

145. निम्नलिखित शोध अभिकल्पों को बढ़ती आंतरिक वैधता के क्रम में व्यवस्थित करें:
I. पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प
II. अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प
III. वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प
(A) I, II, III
(B) III, II, I
(C) II, I, III
(D) I, III, II

146. एनोवा में, "अंतर-समूह विचरण" प्राप्तांकों में होने वाले किस बदलाव को संदर्भित करता है:
(A) प्रयोगात्मक हेरफेर या उपचार के कारण।
(B) प्रत्येक समूह के भीतर व्यक्तिगत अंतरों के कारण।
(C) जिसकी व्याख्या प्रयोग द्वारा नहीं की जा सकती।
(D) जिसे त्रुटि विचरण के रूप में भी जाना जाता है।

147. एक शोधकर्ता दो चरों के बीच संबंध को मापना चाहता है, जिनमें से दोनों को क्रमसूचक पैमाने पर मापा जाता है। सबसे उपयुक्त सहसंबंध गुणांक होगा:
(A) पियर्सन का r
(B) पॉइंट-बाइसीरियल
(C) स्पीयरमैन का रो
(D) बाइसीरियल

148. प्रत्येक 25 प्रतिभागियों के दो स्वतंत्र समूहों के माध्य की तुलना करने वाले टी-परीक्षण के लिए, स्वतंत्रता की कोटि होगी:
(A) 24
(B) 49
(C) 50
(D) 48

149. वैज्ञानिक ज्ञान को अनंतिम माना जाता है, जिसका अर्थ है:
(A) यह अविश्वसनीय है और इस पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए।
(B) यह अनुमान पर आधारित है।
(C) यह नए साक्ष्यों के आलोक में परिवर्तन के अधीन है।
(D) यह केवल कुछ विशिष्ट स्थितियों में ही लागू होता है।

150. चरों के संबंध में कौन सा कथन गलत है?
(A) स्वतंत्र चर में शोधकर्ता द्वारा हेरफेर किया जाता है।
(B) एक प्रयोग में नियंत्रण चर को स्वतंत्र रूप से बदलने की अनुमति दी जाती है।
(C) आश्रित चर मापा गया परिणाम है।
(D) एक बाह्य चर संभावित रूप से आश्रित चर को प्रभावित कर सकता है।

151. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: सरल यादृच्छिक प्रतिचयन एक पूर्णतः प्रतिनिधि प्रतिदर्श की गारंटी देता है।
कथन II: सुविधाजनक प्रतिचयन प्रायिकता प्रतिचयन का एक रूप है।

200. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): -1.0 का प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध गुणांक दो चरों के बीच एक पूर्ण व्युत्क्रम संबंध को इंगित करता है।
कारण (R): जैसे-जैसे एक चर का मान बढ़ता है, दूसरे चर का मान पूरी तरह से अनुमानित तरीके से घटता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

201. कार्य-कारण संबंध स्थापित करने के लिए कौन सा शोध दृष्टिकोण सबसे उपयुक्त है?
(A) सहसंबंधी विधि
(B) एकल अध्ययन विधि
(C) प्रयोगात्मक विधि
(D) सर्वेक्षण विधि

202. एक परिकल्पना शोध प्रश्न से भिन्न होती है क्योंकि परिकल्पना एक है:
(A) विशिष्ट, परीक्षण योग्य कथन
(B) सामान्य जांच
(C) निष्कर्षों का सारांश
(D) सैद्धांतिक ढांचा

203. वजन घटाने पर व्यायाम के प्रभाव पर एक अध्ययन में, प्रतिभागी के शुरुआती वजन को क्या माना जाएगा:
(A) आश्रित चर।
(B) हेरफेर किया गया स्वतंत्र चर।
(C) भ्रामक चर।
(D) संभावित सह-चर या नियंत्रण चर।

204. निम्नलिखित में से कौन सा प्रायिकता प्रतिचयन का प्रकार नहीं है?
(A) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(B) कोटा प्रतिचयन
(C) स्तरित प्रतिचयन
(D) गुच्छ प्रतिचयन

205. परिकल्पना परीक्षण में 'p-मान' किसकी प्रायिकता का प्रतिनिधित्व करता है:
(A) शोध परिकल्पना के सत्य होने की।
(B) शून्य परिकल्पना के असत्य होने की।
(C) देखे गए परिणाम प्राप्त करने की, यदि शून्य परिकल्पना सत्य होती।
(D) टाइप II त्रुटि करने की।

206. एक वास्तविक प्रयोग और एक अर्ध-प्रयोग के बीच एक मुख्य अंतर बाद वाले में ________ का अभाव है।
(A) एक आश्रित चर
(B) एक स्वतंत्र चर
(C) सांख्यिकीय विश्लेषण
(D) यादृच्छिक आवंटन

207. एक 2x2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प में होते हैं:
(A) तीन स्वतंत्र चर, प्रत्येक दो स्तरों के साथ।
(B) दो स्वतंत्र चर, प्रत्येक तीन स्तरों के साथ।
(C) दो स्वतंत्र चर और दो आश्रित चर।
(D) आठ स्वतंत्र चर।

208. प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध का उपयोग करने के लिए, चरों को कम से कम एक _________ पैमाने पर मापा जाना चाहिए।
(A) नाममात्र
(B) अंतराल
(C) क्रमसूचक
(D) श्रेणीबद्ध

209. टी-परीक्षण का नाम इसके विकासकर्ता द्वारा उपयोग किए गए छद्म नाम "स्टूडेंट" के नाम पर रखा गया है, वे थे:
(A) आर.ए. फिशर
(B) विलियम सीली गोसेट
(C) कार्ल पियर्सन
(D) चार्ल्स स्पीयरमैन

210. प्रतिचयन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रायिकता प्रतिचयन शोधकर्ता को प्रतिचयन त्रुटि का अनुमान लगाने की अनुमति देता है।
II. गुणात्मक शोध में अक्सर गैर-प्रायिकता प्रतिचयन का उपयोग किया जाता है।
III. एक प्रतिचयन ढांचा जनसंख्या के उन सभी तत्वों की सूची है जिनसे प्रतिदर्श लिया जाता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

211. एनोवा में, यदि परिकलित F-मान क्रांतिक F-मान से कम है, तो शोधकर्ता को चाहिए:
(A) शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करें।
(B) पोस्ट-हॉक परीक्षण करें।
(C) शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहें।
(D) निष्कर्ष निकालें कि एक सार्थक प्रभाव है।

212. किस प्रकार के प्रयोगात्मक अभिकल्प में उपचार से पूर्व और पश्चात कई बार आश्रित चर को मापना शामिल है?
(A) एक-समूह प्रीटेस्ट-पोस्टटेस्ट अभिकल्प
(B) स्टेटिक-ग्रुप तुलना
(C) केवल पोस्टटेस्ट नियंत्रण समूह अभिकल्प
(D) टाइम-सीरीज अभिकल्प

162. स्नोबॉल प्रतिचयन एक गैर-प्रायिकता प्रतिचयन तकनीक है जो विशेष रुप से किसके अध्ययन के लिए उपयोगी है:
(A) कठिन-पहुंच वाली आबादी।
(B) सामान्य जनसंख्या।
(C) आसानी से सुलभ समूह।
(D) बड़ी, भौगोलिक रुप से बिखरी हुई आबादी।

163. एक प्रयोग में नियंत्रण समूह का उद्देश्य है:
(A) उपचार का एक विशेष संस्करण प्राप्त करना।
(B) शोधकर्ता को स्वतंत्र चर को नियंत्रित करने में मदद करना।
(C) एक आधार रेखा प्रदान करना जिसके विरुद्ध उपचार के प्रभाव को मापा जा सके।
(D) अध्ययन की बाह्य वैधता सुनिश्चित करना।

164. एक 2x3 फैक्टोरियल अभिकल्प में उपचार की कितनी स्थितियाँ हैं?
(A) 2
(B) 3
(C) 5
(D) 6

165. निम्नलिखित में से कौन सा प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध के लिए सबसे उपयुक्त है?
(A) लिंग और प्रमुख विषय के चयन के बीच संबंध।
(B) परीक्षा में उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण होने और कक्षा में उपस्थिति के बीच संबंध।
(C) आईक्यू प्राप्तांक और वार्षिक आय के बीच संबंध।
(D) जन्म क्रम और व्यक्तित्व प्रकार के बीच संबंध।

166. असंबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण की एक धारणा यह है कि जिन आबादियों से प्रतिदर्श लिए गए हैं वे हैं:
(A) विषम
(B) सामान्य रूप से वितरित
(C) विभिन्न आकृतियों के
(D) द्विबहुलकीय

167. पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प की वैधता के लिए मुख्य खतरों में से एक है:
(A) स्वतंत्र चर में हेरफेर करने में असमर्थता।
(B) आवश्यक सांख्यिकीय विश्लेषण की जटिलता।
(C) पर्याप्त बड़े प्रतिदर्श की भर्ती में कठिनाई।
(D) तुलना समूह का अभाव, जिससे वैकल्पिक व्याख्याओं को खारिज करना कठिन हो जाता है।

168. वितरण में उच्चतम और निम्नतम प्राप्तांक के बीच के अंतर को इस रुप में जाना जाता है:
(A) परास
(B) विचरण
(C) मानक विचलन
(D) बहुलक

169. एक परिकल्पना और एक सिद्धांत के बीच प्राथमिक अंतर क्या है?
(A) परिकल्पना एक अनुमान है, जबकि सिद्धांत एक सिद्ध तथ्य है।
(B) परिकल्पना का उपयोग विज्ञान में किया जाता है, जबकि सिद्धांत का उपयोग मानविकी में किया जाता है।
(C) परिकल्पना एक विशिष्ट परीक्षण योग्य भविष्यवाणी है, जबकि सिद्धांत एक व्यापक व्याख्या है।
(D) कोई अंतर नहीं है; ये शब्द परस्पर विनिमय योग्य हैं।

170. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): एनोवा में, यदि अंतर-समूह विचरण अंतः-समूह विचरण से बहुत बड़ा है, तो परिणामी F-अनुपात बड़ा होगा।
कारण (R): एक बड़ा F-अनुपात सुझाव देता है कि समूह माध्य के बीच का अंतर संयोग से कहीं अधिक है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

171. एक भ्रामक चर एक विशेष प्रकार का बाह्य चर है जो:
(A) शोधकर्ता द्वारा स्थिर रखा जाता है।
(B) अध्ययन के परिणाम से पूरी तरह से असंबंधित है।
(C) आश्रित चर के समान ही है।
(D) स्वतंत्र चर के साथ व्यवस्थित रुप से बदलता है।

172. बड़ी जनसंख्या के लिए शोध निष्कर्षों के सामान्यीकरण को कहा जाता है:
(A) आंतरिक वैधता
(B) बाह्य वैधता
(C) संरचना वैधता
(D) विषय-वस्तु वैधता

173. यदि शून्य परिकल्पना H_0: $\mu_1 = \mu_2$ है, तो गैर-दिशात्मक वैकल्पिक परिकल्पना है:
(A) H_1: $\mu_1 > \mu_2$
(B) H_1: $\mu_1 < \mu_2$
(C) H_1: $\mu_1 \neq \mu_2$
(D) H_1: $\mu_1 \approx \mu_2$

174. किसी अध्ययन के प्रतिदर्श के आकार को बढ़ाने से सामान्यतः होता है:
(A) टाइप I त्रुटि के जोखिम में वृद्धि।
(B) सांख्यिकीय शक्ति में कमी।
(C) टाइप II त्रुटि के जोखिम में वृद्धि।
(D) सांख्यिकीय शक्ति में वृद्धि।

175. विदिन-सब्जेक्ट्स प्रयोगात्मक अभिकल्प वह है जिसमें:

(D) यह जटिल होना चाहिए।

225. एक शोधकर्ता 5 वर्षों की अवधि में बच्चों में भाषा के विकास का अध्ययन करना चाहता है। स्वतंत्र चर है:
(A) भाषा विकास
(B) आयु या समय
(C) बच्चे
(D) कोई स्वतंत्र चर नहीं है

226. गैर-प्रायिकता प्रतिचयन की तुलना में प्रायिकता प्रतिचयन का प्राथमिक लाभ क्या है?
(A) यह प्रतिचयन त्रुटि का अनुमान लगाने की अनुमति देता है।
(B) यह सस्ता और तेज़ है।
(C) इसके लिए छोटे प्रतिदर्श आकार की आवश्यकता होती है।
(D) इसे लागू करना हमेशा आसान होता है।

227. चिकित्सा परीक्षण में एक "फॉल्स पॉजिटिव" परिकल्पना परीक्षण में किस प्रकार की त्रुटि के समान है?
(A) टाइप II त्रुटि
(B) प्रतिचयन त्रुटि
(C) टाइप I त्रुटि
(D) मानक त्रुटि

228. वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प का सबसे सरल रूप है:
(A) वन-शॉट केस स्टडी।
(B) स्टेटिक-ग्रुप तुलना।
(C) वन-समूह प्रीटेस्ट-पोस्टटेस्ट अभिकल्प।
(D) केवल पोस्टटेस्ट नियंत्रण समूह अभिकल्प।

229. यदि तीन समूहों के लिए एक एनोवा गैर-सार्थक परिणाम देता है, तो क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
(A) तीनों जनसंख्या माध्य समान हैं।
(B) दो जनसंख्या माध्य समान हैं, लेकिन एक भिन्न है।
(C) ऐसा कोई सांख्यिकीय प्रमाण नहीं है कि जनसंख्या माध्य भिन्न हैं।
(D) टाइप II त्रुटि हुई होगी।

230. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): टी-परीक्षण एक सशक्त परीक्षण है।
कारण (R): टी-परीक्षण तब भी यथोचित सटीक परिणाम दे सकता है जब इसकी सामान्यता की धारणा का मामूली उल्लंघन किया जाता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

231. प्रयोग में यादृच्छिक आवंटन का प्राथमिक उद्देश्य है:
(A) प्रतिदर्श को जनसंख्या का प्रतिनिधि बनाना।
(B) सांख्यिकीय विश्लेषण को सरल बनाना।
(C) यह सुनिश्चित करना कि सभी प्रतिभागियों को उपचार मिले।
(D) प्रयोग की शुरुआत में समकक्ष समूह बनाना।

232. टेट्राकोरिक सहसंबंध का उपयोग तब किया जाता है जब दोनों चर होते हैं:
(A) कृत्रिम रूप से द्विभाजित
(B) सतत
(C) प्राकृतिक रूप से द्विभाजित
(D) क्रमसूचक

233. F-अनुपात में 'F' किसके सम्मान में रखा गया है:
(A) फ्रायड
(B) गाल्टन
(C) फिशर
(D) पियर्सन

234. वैज्ञानिक अनुसंधान के संदर्भ में, एक 'चर' वह है जो:
(A) विभिन्न मान या श्रेणियां ले सकता है।
(B) हमेशा स्थिर रहता है।
(C) त्रुटि का एक स्रोत है।
(D) एक सैद्धांतिक अवधारणा का प्रतिनिधित्व करता है।

235. एक "टाइप II त्रुटि" तब की जाती है जब शोधकर्ता:
(A) एक सत्य शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करता है।
(B) एक गलत शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करता है।
(C) एक सत्य शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहता है।
(D) एक गलत शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहता है।

236. एक शोधकर्ता एक सप्ताह के लिए कर्मचारियों के समूह की उत्पादकता मापता है, फिर नई कार्यप्रणाली लागू करता है, और पुनः उत्पादकता मापता है। यह किसका उदाहरण है:
(A) एक स्टेटिक-ग्रुप तुलना अभिकल्प।
(B) एक-समूह प्रीटेस्ट-पोस्टटेस्ट अभिकल्प।
(C) एक वास्तविक प्रयोग।
(D) एक सहसंबंधी अध्ययन।

237. एक सार्थक एनोवा के बाद पोस्ट-हॉक परीक्षण आवश्यक हैं क्योंकि:
(A) वे पुष्टि करते हैं कि एनोवा गणना सही थी।
(B) उनकी आवश्यकता F-अनुपात की गणना के लिए होती है।
(C) एनोवा F-परीक्षण यह नहीं बताता है कि कौन से विशिष्ट समूह माध्य भिन्न हैं।
(D) वे विचरण की समरुपता की धारणा की जाँच करते हैं।

238. निम्नलिखित में से कौन सा गुणांक सबसे मजबूत सहसंबंध का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) +0.65
(B) +1.05
(C) -0.25
(D) -0.85

239. स्वतंत्र-प्रतिदर्श टी-परीक्षण का उपयोग किसकी तुलना करने के लिए किया जाएगा:
(A) दो अलग-अलग विभागों में कर्मचारियों की बीमारी की छुट्टी के औसत दिनों की।
(B) आहार कार्यक्रम से पूर्व और पश्चात के वजन की।
(C) दो विषयों में एक ही कक्षा के प्राप्तांकों की।
(D) ऊंचाई और वजन के बीच संबंध की।

240. वैज्ञानिक अनुसंधान की अनुभवजन्य प्रकृति किसके प्रति इसकी निर्भरता को संदर्भित करती है:
(A) तार्किक तर्क
(B) प्रत्यक्ष अवलोकन और माप
(C) आधिकारिक राय
(D) सामान्य ज्ञान

241. "पुरुषों और महिलाओं के बीच चिंता प्राप्तांकों में कोई अंतर नहीं है।" यह किसका एक उदाहरण है:
(A) दिशात्मक वैकल्पिक परिकल्पना
(B) शून्य परिकल्पना
(C) गैर-दिशात्मक वैकल्पिक परिकल्पना
(D) शोध प्रश्न

242. यदि कोई शोधकर्ता ज्ञात बाह्य चर के संभावित प्रभावों को नियंत्रित करना चाहता है, तो एक अच्छी तकनीक है:
(A) चर को सह-चर के रूप में शामिल करना या मिलान का उपयोग करना
(B) चर की अनदेखी करना
(C) स्वतंत्र चर के प्रभाव को बढ़ाना
(D) सुविधाजनक प्रतिदर्श का उपयोग करना

243. किस प्रतिचयन तकनीक में जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य के चुने जाने की समान और स्वतंत्र संभावना होती है?
(A) कोटा प्रतिचयन
(B) सोद्देश्य प्रतिचयन
(C) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(D) सुविधाजनक प्रतिचयन

244. यदि एक शोधकर्ता $\alpha = .05$ सेट करता है, तो टाइप I त्रुटि करने की प्रायिकता क्या है?
(A) 95%
(B) 1%
(C) निर्धारित नहीं किया जा सकता।
(D) 5%

245. एनोवा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. एनोवा का अर्थ विचरण का विश्लेषण है।
II. वन-वे एनोवा में एक स्वतंत्र चर और एक आश्रित चर शामिल होता है।
III. साहचर्य मापने के लिए एनोवा का उपयोग सहसंबंध के विकल्प के रूप में किया जा सकता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

246. फैक्टोरियल अभिकल्प में, यदि प्रभाव को दर्शाने वाली रेखाएं समानांतर हैं, तो यह क्या सुझाव देता है:
(A) एक मजबूत अन्योन्यक्रिया प्रभाव।
(B) कोई अन्योन्यक्रिया प्रभाव नहीं।
(C) दोनों चरों के लिए एक मजबूत मुख्य प्रभाव।
(D) गणना की त्रुटि।

247. बाइसीरियल सहसंबंध का प्राथमिक उपयोग किसके लिए है:
(A) भविष्यवाणी
(B) कार्य-कारण स्थापित करना
(C) समूह माध्य की तुलना करना
(D) परीक्षण पद विश्लेषण

248. माध्यों के बीच अंतर की मानक त्रुटि किसकी गणना में एक प्रमुख घटक है:
(A) स्वतंत्र प्रतिदर्शों के लिए टी-सांख्यिकी
(B) सहसंबंध गुणांक
(C) एनोवा में F-अनुपात
(D) काई-स्क्वायर सांख्यिकी

249. फैक्टोरियल अभिकल्प का एक प्रमुख लाभ यह है कि यह:
(A) एकल-कारक प्रयोग की तुलना में कम जटिल है।
(B) अन्य अभिकल्पों की तुलना में कम प्रतिभागियों की आवश्यकता होती है।
(C) मुख्य प्रभाव और अन्योन्यक्रिया प्रभाव दोनों की जांच की अनुमति देता है।
(D) सांख्यिकीय विश्लेषण की आवश्यकता को समाप्त करता है।

250. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I (अभिकल्प प्रकार)
P. पूर्व-प्रयोगात्मक
Q. वास्तविक प्रयोगात्मक
R. अर्ध-प्रयोगात्मक
S. सहसंबंधी
सूची II (प्रमुख विशेषता)
1. स्वतंत्र चर का हेरफेर, लेकिन यादृच्छिक आवंटन नहीं
2. चरों का उनके प्राकृतिक रूप में मापन

3. नियंत्रण समूह या यादृच्छिकीकरण का अभाव
4. स्वतंत्र चर का हेरफेर और यादृच्छिक आवंटन
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

251. एक "संरचना" है:
(A) अध्ययन की जा रही भौतिक वस्तु।
(B) प्रयोगात्मक अभिकल्प का एक प्रकार।
(C) शोध पत्र का अंतिम निष्कर्ष।
(D) एक सैद्धांतिक अवधारणा जो प्रत्यक्ष रूप से अवलोकनीय नहीं है।

252. परिकल्पना "बच्चे जो आक्रामक कार्टून देखते हैं, वे अधिक आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करेंगे" है:
(A) एक शून्य परिकल्पना
(B) एक दिशात्मक परिकल्पना
(C) एक गैर-दिशात्मक परिकल्पना
(D) एक परीक्षण न की जा सकने वाली परिकल्पना

253. परिणाम को प्रभावित करने से रोकने के लिए प्रयोग में किस चर को जानबूझकर स्थिर रखा जाता है?
(A) स्वतंत्र चर
(B) आश्रित चर
(C) नियंत्रण चर
(D) भ्रामक चर

254. एक "प्रतिचयन ढांचा" है:
(A) प्रतिदर्श चुनने का तरीका।
(B) प्रतिदर्श में त्रुटि की सीमा।
(C) एक गैर-प्रायिकता प्रतिचयन तकनीक।
(D) जनसंख्या की उन सभी इकाइयों की सूची जिनसे प्रतिदर्श चुना जाएगा।

255. अनुसंधान में एक "फॉल्स नेगेटिव", जहां एक वास्तविक प्रभाव छूट जाता है, किससे संबंधित है:
(A) टाइप II त्रुटि
(B) टाइप I त्रुटि
(C) सही निर्णय
(D) प्रतिचयन पूर्वाग्रह

256. पूर्व-प्रयोगात्मक एक-समूह प्रीटेस्ट-पोस्टटेस्ट अभिकल्प की प्राथमिक सीमा क्या है?
(A) इसे संचालित करना बहुत महंगा है।
(B) यह आंतरिक वैधता के कई खतरों को नियंत्रित करने में विफल रहता है।
(C) इसके लिए प्रतिभागियों को ढूंढना मुश्किल है।
(D) सांख्यिकीय विश्लेषण अत्यधिक जटिल है।

257. एक 2x4 फैक्टोरियल अभिकल्प में होते हैं:
(A) चार स्वतंत्र चर, प्रत्येक 2 स्तरों के साथ।
(B) दो स्वतंत्र चर, क्रमशः 2 और 4 स्तरों के साथ।
(C) आठ स्वतंत्र चर।
(D) दो आश्रित चर और चार स्वतंत्र चर।

258. इनमें से कौन प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध की एक धारणा है?
(A) चरों के बीच एक रैखिक संबंध है।
(B) चरों को नाममात्र पैमाने पर मापा जाता है।
(C) प्रतिदर्श आकार 30 से कम है।
(D) संबंध वक्ररेखीय है।

259. टी-परीक्षण और वन-वे एनोवा के बीच एक मुख्य अंतर क्या है?
(A) टी-परीक्षण माध्य की तुलना करता है, जबकि एनोवा विचरण की तुलना करता है।
(B) टी-परीक्षण एक प्राचलिक परीक्षण है, जबकि एनोवा गैर-प्राचलिक है।
(C) टी-परीक्षण केवल दो माध्यों की तुलना कर सकता है, जबकि एनोवा दो या अधिक माध्यों की तुलना कर सकता है।
(D) टी-परीक्षण का उपयोग सहसंबंध के लिए किया जाता है।

260. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): यादृच्छिक आवंटन एक वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प की पहचान है।
कारण (R): यादृच्छिक आवंटन यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि समूह अध्ययन की शुरुआत में समकक्ष हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

261. एक स्वतंत्र चर के कम से कम होने चाहिए:
(A) एक स्तर
(B) तीन स्तर
(C) दो स्तर
(D) चार स्तर

262. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: बाइसीरियल सहसंबंध का उपयोग तब किया जाता है जब एक चर सतत हो और दूसरा वास्तविक द्वंद्व हो।
कथन II: पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध का उपयोग तब किया जाता है जब एक चर सतत हो और दूसरा कृत्रिम द्वंद्व हो।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।

है। इसे सार्थकता स्तर के रूप में भी जाना जाता है और आमतौर पर सामाजिक विज्ञान में इसे 0.05 या 0.01 पर निर्धारित किया जाता है। अल्फा शोधकर्ता को वह जोखिम बताता है जिसे वह सत्य शून्य परिकल्पना को गलत तरीके से अस्वीकार करने के लिए उठाने को तैयार है। इस मान को कम करने से निष्कर्षों की शुद्धता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने में मदद मिलती है।

30. (D) यह जटिल और समझने में कठिन होनी चाहिए।
एक वैज्ञानिक परिकल्पना की गुणवत्ता उसकी स्पष्टता, सादगी और परीक्षण योग्यता पर निर्भर करती है। इसे इस तरह से तैयार किया जाना चाहिए कि अवलोकन या प्रयोग के माध्यम से इसे गलत सिद्ध किया जा सके, जिसे खंडनशीलता कहते हैं। एक अच्छी परिकल्पना को चरों के बीच संबंधों को स्पष्ट और संक्षिप्त शब्दों में व्यक्त करना चाहिए। जटिलता और अस्पष्टता शोध प्रक्रिया को बाधित करती हैं, इसलिए परिकल्पना का सरल और बोधगम्य होना वैज्ञानिक जांच की सफलता के लिए अनिवार्य शर्त माना जाता है।

31. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
प्रयोगात्मक अनुसंधान में चरों की भूमिका स्पष्ट रूप से परिभाषित होती है। स्वतंत्र चर वह होता है जिसे शोधकर्ता द्वारा हेरफेर या परिवर्तित किया जाता है, जबकि आश्रित चर वह परिणाम है जिसे मापा जाता है। प्रश्न में इन दोनों की भूमिकाओं को उलट दिया गया है, जिससे दोनों कथन गलत हो जाते हैं। स्वतंत्र चर को 'कारण' माना जाता है और आश्रित चर को उसका 'प्रभाव' माना जाता है। इस मूलभूत अंतर को समझना किसी भी वैज्ञानिक अध्ययन की संरचना के लिए आवश्यक है।

32. (B) स्तरित प्रतिचयन
स्तरित प्रतिचयन एक प्रायिकता आधारित विधि है जहाँ जनसंख्या को विशिष्ट विशेषताओं के आधार पर सजातीय उपसमूहों या 'स्तरों' में विभाजित किया जाता है। इसके बाद, प्रत्येक स्तर से यादृच्छिक रूप से प्रतिभागियों का चयन किया जाता है। यह तकनीक सुनिश्चित करती है कि प्रतिदर्श में जनसंख्या की विविधता का सही और संतुलित प्रतिनिधित्व हो। यह विशेष रूप से तब उपयोगी होता है जब शोधकर्ता यह चाहता है कि अल्पसंख्यक समूहों या विशिष्ट वर्गों को अध्ययन में पर्याप्त स्थान प्राप्त हो।

33. (B) मानसिक प्रक्रियाओं का वर्णन, व्याख्या, भविष्यवाणी और नियंत्रण करना।
मनोविज्ञान में वैज्ञानिक अनुसंधान का मुख्य लक्ष्य मानव और पशु व्यवहार के पीछे के कारणों को गहराई से समझना है। इसमें घटनाओं का सटीक विवरण देना, उनके पीछे के सिद्धांतों की व्याख्या करना, भविष्य के व्यवहार की भविष्यवाणी करना और आवश्यक होने पर सकारात्मक परिवर्तन के लिए उन्हें नियंत्रित करना शामिल है। यह प्रक्रिया केवल व्यक्तिगत विचारों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि व्यवस्थित अवलोकन और प्रयोग के माध्यम से प्राप्त अनुभवजन्य साक्ष्यों पर आधारित होती है, जो इसे विज्ञान बनाती है।

34. (A) दो या दो से अधिक स्तरों वाला एक स्वतंत्र चर हो।
वन-वे एनोवा का उपयोग तब किया जाता है जब शोधकर्ता के पास एक ही स्वतंत्र चर होता है जिसमें तुलना के लिए दो से अधिक समूह या स्तर होते हैं। यह परीक्षण एक साथ सभी समूहों के माध्य की तुलना करता है ताकि यह पता चल सके कि उनमें कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर है या नहीं। यह टी-परीक्षण का ही एक व्यापक विस्तार है। इसका लाभ यह है कि यह एक ही बार में कई तुलनाएं करके टाइप 1 त्रुटि के जोखिम को कम करता है।

35. (A) केवल III
टी-परीक्षण एक प्राचलिक सांख्यिकीय परीक्षण है जिसकी मुख्य धारणा यह है कि एकत्र किया गया डेटा जनसंख्या में सामान्य रूप से वितरित होना चाहिए। इसका उपयोग समूहों के विचरण के बजाय मुख्य रूप से माध्य के बीच के अंतर की जांच करने के लिए किया जाता है। संबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण का उपयोग स्वतंत्र समूहों के बजाय केवल उन्हीं समूहों के लिए किया जाता है जो एक-दूसरे से जुड़े हों या मिलान किए गए हों। इसलिए केवल सामान्यता की धारणा वाला कथन ही यहाँ सही है।

36. (D) एक सतत चर से बनाया गया एक कृत्रिम द्वंद्व।
बाइसीरियल सहसंबंध का उपयोग तब किया जाता है जब शोधकर्ता एक निरंतर चर और एक कृत्रिम रूप से द्विभाजित चर के बीच संबंध को मापना चाहता है। कृत्रिम द्वंद्व का अर्थ है कि एक चर जो मूल रूप से निरंतर था, उसे शोधकर्ता द्वारा किसी कट-ऑफ बिंदु के आधार पर दो श्रेणियों में विभाजित कर दिया गया है। यह विधि यह मानती है कि द्विभाजित चर का अंतर्निहित वितरण सामान्य है। यह पद विश्लेषण और शैक्षिक मूल्यांकन में विशेष रूप से महत्वपूर्ण सांख्यिकीय उपकरण के रूप में कार्य करता है।

37. (C) परिणाम के संयोग से होने की संभावना नहीं है।
जब कोई परिणाम सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया जाता है, तो इसका अर्थ है कि देखा गया प्रभाव इतना मजबूत है कि इसके केवल संयोग या प्रतिचयन त्रुटि के कारण होने की संभावना बहुत कम है। यह आमतौर पर 0.05 या उससे कम के पी-मान द्वारा इंगित किया जाता है। हालांकि इसका अर्थ यह नहीं है कि परिणाम का व्यावहारिक महत्व भी बहुत अधिक होगा, यह केवल इस बात की पुष्टि करता है कि स्वतंत्र चर का आश्रित चर पर वास्तविक प्रभाव पड़ा है।

38. (B) कार्य-कारण का अनुमान लगाने के लिए चरों में हेरफेर करना।
प्रयोगात्मक अभिकल्प की सबसे अनूठी विशेषता इसकी कार्य-कारण संबंधों को स्थापित करने की क्षमता है। इसमें शोधकर्ता सक्रिय रूप से स्वतंत्र चर में हेरफेर करता है और अन्य बाहरी कारकों को नियंत्रित करता है ताकि आश्रित चर पर पड़ने वाले प्रभाव को देखा जा सके। यह अन्य शोध विधियों, जैसे सर्वेक्षण या प्राकृतिक अवलोकन, से भिन्न है जो केवल संबंधों का वर्णन करती हैं। यह नियंत्रण और हेरफेर ही शोधकर्ता को यह दावे

(B) टेट्राकोरिक
(C) प्रोडक्ट-मोमेंट
(D) बाइसीरियल

277. टी-परीक्षण के दो सामान्य प्रकारों का उपयोग किसके लिए किया जाता है:
(A) एक प्रतिदर्श और दो प्रतिदर्श।
(B) छोटे प्रतिदर्श और बड़े प्रतिदर्श।
(C) संबंधित और असंबंधित प्रतिदर्श।
(D) सतत और श्रेणीबद्ध डेटा।

278. एक प्रयोग में, वह समूह जिसे उपचार या हस्तक्षेप प्राप्त नहीं होता है, कहलाता है:
(A) प्रयोगात्मक समूह
(B) नियंत्रण समूह
(C) संबंधित समूह
(D) प्रतिदर्श समूह

279. चरों के बीच "कोई संबंध नहीं" का कथन किसकी विशेषता है:
(A) वैकल्पिक परिकल्पना
(B) शोध परिकल्पना
(C) दिशात्मक परिकल्पना
(D) शून्य परिकल्पना

280. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I (प्रतिचयन विधि)
P. सरल यादृच्छिक
Q. स्तरित
R. गुच्छ
S. सुविधाजनक
सूची II (प्रक्रिया)
1. उपलब्ध प्रतिभागियों का चयन।
2. जनसंख्या को समूहों में विभाजित कर पूरे समूहों को चुनना।
3. प्रत्येक सदस्य के पास चयन की समान संभावना।
4. उपसमूहों से यादृच्छिक प्रतिदर्श लेना।
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

281. टाइप I त्रुटि का जोखिम किसके सीधे नियंत्रण में है:
(A) प्रतिभागी
(B) सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर
(C) शोधकर्ता
(D) संपादक

282. टाइम-सीरीज अभिकल्प किस प्रकार का अभिकल्प है:
(A) अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प
(B) पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प
(C) वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प
(D) सहसंबंधी अभिकल्प

283. वन-वे एनोवा किस सांख्यिकीय परीक्षण का विस्तार है?
(A) संबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण
(B) पियर्सन सहसंबंध
(C) काई-स्क्वायर परीक्षण
(D) स्वतंत्र प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण

284. वास्तव में द्विभाजित चर को सतत चर के साथ जोड़ने के लिए किस सहसंबंध का उपयोग किया जाता है?
(A) बाइसीरियल
(B) पॉइंट-बाइसीरियल
(C) टेट्राकोरिक
(D) प्रोडक्ट-मोमेंट

285. निम्नलिखित शोध गतिविधियों को उनके संभावित क्रम में व्यवस्थित करें:
I. सांख्यिकीय परीक्षण चुनना।
II. शोध परिकल्पना बताना।
III. चरों का संचालन।
IV. शोध समस्या की पहचान।
(A) IV, II, III, I
(B) II, IV, I, III
(C) IV, III, II, I
(D) I, II, III, IV

286. स्वतंत्र और आश्रित चर के बीच मौलिक अंतर क्या है?
(A) आश्रित चर में हेरफेर किया जाता है।
(B) दोनों को मापा जाता है, लेकिन स्वतंत्र चर को पहले।
(C) शोधकर्ता द्वारा दोनों में हेरफेर किया जाता।
(D) स्वतंत्र चर में हेरफेर किया जाता है, और आश्रित चर को मापा जाता है।

287. "सांख्यिकीय सार्थकता" परिणाम की _______ को संदर्भित करती है, जबकि "प्रभाव का आकार" परिणाम की _______ को।
(A) प्रायिकता; परिमाण
(B) परिमाण; प्रायिकता
(C) महत्व; प्रायिकता
(D) परिमाण; महत्व

288. पुनरावृत्त-माप अभिकल्प किसका उपयोग करने वाले अध्ययन का एक उदाहरण है:
(A) असंबंधित प्रतिदर्श
(B) संबंधित प्रतिदर्श
(C) बड़ी जनसंख्या
(D) गैर-प्रायिकता प्रतिदर्श

289. किस अभिकल्प में कम से कम दो स्वतंत्र चर शामिल होते हैं?
(A) वन-वे एनोवा अभिकल्प

263. एक शोधकर्ता 5 वर्ष, 10 वर्ष और 15 वर्ष की आयु में बच्चों के एक ही समूह का अध्ययन करता है। यह किस तरह के अध्ययन का उदाहरण है?
(A) क्रॉस-अनुभागीय
(B) प्रयोगात्मक
(C) सहसंबंधी
(D) अनुदैर्ध्य

264. एक प्रयोगात्मक अभिकल्प जिसमें प्रत्येक स्थिति में अलग-अलग प्रतिभागी शामिल होते हैं, क्या कहलाता है:
(A) बिटवीन-सब्जेक्ट्स अभिकल्प
(B) विदिन-सब्जेक्ट्स अभिकल्प
(C) मिलान-जोड़े अभिकल्प
(D) पुनरावृत्त-माप अभिकल्प

265. डेटा का विश्लेषण करने के लिए 2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प के लिए सबसे उपयुक्त सांख्यिकीय परीक्षण क्या है?
(A) टी-परीक्षणों की एक श्रृंखला
(B) वन-वे एनोवा
(C) टू-वे एनोवा
(D) प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध

266. किस प्रकार की वैधता इस प्रश्न से संबंधित है, "क्या इस अध्ययन के परिणामों को अन्य लोगों और स्थितियों के लिए सामान्यीकृत किया जा सकता है?"
(A) बाह्य वैधता
(B) आंतरिक वैधता
(C) संरचना वैधता
(D) प्रत्यक्ष वैधता

267. असंबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण का उपयोग कब किया जाता है?
(A) दो अलग-अलग समय पर एक ही समूह के माध्य की तुलना के लिए।
(B) तीन या अधिक समूहों के माध्य की तुलना के लिए।
(C) दो सतत चरों के बीच संबंध के आकलन के लिए।
(D) दो स्वतंत्र समूहों के माध्य की तुलना के लिए।

268. "माध्यों के बीच अंतर की सार्थकता" किसकी केंद्रीय अवधारणा है:
(A) विवरणात्मक सांख्यिकी
(B) अनुमानात्मक सांख्यिकी
(C) डेटा विज़ुअलाइज़ेशन
(D) गुणात्मक विश्लेषण

269. वैज्ञानिक पद्धति का तर्क किसके सिद्धांत पर आधारित है:
(A) सिद्धांतों को सिद्ध करना
(B) व्यक्तिगत विश्वास
(C) मिथ्याकरण
(D) प्राधिकार

270. एक चर जो परिणाम की व्याख्या करने में स्वतंत्र चर के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है, वह है:
(A) आश्रित चर
(B) स्थिरांक
(C) संक्रियात्मक परिभाषा
(D) भ्रामक चर

271. विविध जनसंख्या से प्रतिदर्श की प्रतिनिधित्वशीलता बढ़ाने के लिए, शोधकर्ता को किसका उपयोग करना चाहिए:
(A) स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन
(B) सुविधाजनक प्रतिचयन
(C) स्नोबॉल प्रतिचयन
(D) सोद्देश्य प्रतिचयन

272. यदि कोई निष्कर्ष सांख्यिकीय रूप से सार्थक है, तो इसका अर्थ है कि शून्य परिकल्पना है:
(A) स्वीकृत
(B) अस्वीकृत
(C) गलत सिद्ध
(D) बरकरार रखी गई

273. एक प्रयोगात्मक अभिकल्प का 'उद्देश्य' किसका सबसे मजबूत संभव परीक्षण प्रदान करना है:
(A) सामान्य सिद्धांत
(B) कारण संबंधी परिकल्पना
(C) सहसंबंधी संबंध
(D) जनसंख्या माध्य

274. एक 2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प में, "अन्योन्यक्रिया" यह संदर्भित करती है कि कैसे:
(A) पहले स्वतंत्र चर का प्रभाव दूसरे स्वतंत्र चर के स्तर पर निर्भर करता है।
(B) आश्रित चर का प्रभाव पहले स्वतंत्र चर के स्तर पर निर्भर करता है।
(C) पहला स्वतंत्र चर दूसरे से अलग है।
(D) आश्रित चर दोनों से स्वतंत्र है।

275. अच्छे वैज्ञानिक अनुसंधान की विशेषताओं के रूप में निम्नलिखित पर विचार कीजिए:
I. यह व्यवस्थित है।
II. यह अनुभवजन्य साक्ष्य पर आधारित है।
III. यह सार्वजनिक जांच और पुनरावृत्ति के लिए खुला है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

276. "परीक्षा प्राप्तांक" और "उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण" (कट-ऑफ द्वारा निर्धारित कृत्रिम द्वंद्व) के बीच उपयुक्त सहसंबंध क्या होगा?
(A) पॉइंट-बाइसीरियल

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) इसमें जांच की एक व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया शामिल होती है।
वैज्ञानिक अनुसंधान एक व्यवस्थित, नियंत्रित और अनुभवजन्य जांच है। इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह व्यक्तिगत मान्यताओं के बजाय साक्ष्य आधारित वस्तुनिष्ठता पर केंद्रित होती है। इसमें चरों के बीच संबंधों के परीक्षण के लिए एक निश्चित प्रक्रिया अपनाई जाती है जिससे प्राप्त परिणामों की पुनरावृत्ति संभव हो सके। यह वैज्ञानिक ज्ञान को विश्वसनीय, सार्वजनिक रूप से सत्यापन योग्य और त्रुटि मुक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2. (A) चरों के बीच संबंधों के विषय में एक अनंतिम कथन।
परिकल्पना वैज्ञानिक अनुसंधान में एक परीक्षण योग्य प्रस्ताव है जो दो या दो से अधिक चरों के बीच संभावित संबंध को दर्शाता है। यह एक अस्थाई समाधान या अनुमान होता है जिसका परीक्षण सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से किया जाता है। शोधकर्ता अपने अध्ययन को सही दिशा प्रदान करने के लिए इसका उपयोग करता है। एक अच्छी परिकल्पना स्पष्ट, मापने योग्य और वर्तमान सिद्धांतों पर आधारित होनी चाहिए।

3. (C) स्वतंत्र चर
एक प्रयोग में स्वतंत्र चर वह कारक होता है जिसमें शोधकर्ता जानबूझकर बदलाव या हेरफेर करता है ताकि दूसरे चर पर उसके प्रभाव का अवलोकन किया जा सके। स्मृति और कैफीन के अध्ययन में, कैफीन की वह विशेष मात्रा जिसे प्रतिभागियों को दिया जा रहा है, मुख्य कारण के रूप में कार्य करती है। यहाँ कैफीन की खुराक स्वतंत्र चर है क्योंकि इसके स्तर को शोधकर्ता अपनी योजना के अनुसार नियंत्रित करता है।

4. (D) सुविधाजनक प्रतिचयन
सुविधाजनक प्रतिचयन एक गैर-प्रायिकता प्रतिचयन तकनीक है जिसमें शोधकर्ता उन प्रतिभागियों का चयन करता है जो उसके लिए सबसे आसानी से उपलब्ध हैं। इस पद्धति में जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य के पास चुने जाने का समान अवसर नहीं होता है। हालांकि यह विधि समय और लागत की दृष्टि से किफायती है, लेकिन इसके परिणाम पूरी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। इसलिए इस पद्धति से प्राप्त निष्कर्षों का सामान्यीकरण करना वैज्ञानिक रूप से कठिन होता है।

5. (C) केवल I और III
वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में पुनरावृत्ति और वस्तुनिष्ठता दो आधारभूत स्तंभ हैं। पुनरावृत्ति यह सुनिश्चित करती है कि अन्य शोधकर्ता समान परिस्थितियों में वही परिणाम प्राप्त कर सकें, जिससे शोध की विश्वसनीयता बढ़ती है। वस्तुनिष्ठता व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों को दूर रखकर तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करती है। इसके विपरीत, वैज्ञानिक निष्कर्ष कभी भी अंतिम नहीं होते, बल्कि वे नए साक्ष्यों और उन्नत तकनीकों के आधार पर निरंतर संशोधन के अधीन होते हैं।

6. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
टाइप 1 त्रुटि तब होती है जब एक शोधकर्ता सत्य शून्य परिकल्पना को गलत तरीके से अस्वीकार कर देता है। इसके विपरीत, टाइप 2 त्रुटि तब होती है जब वह गलत शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहता है। प्रश्न में दी गई दोनों परिभाषाएं परस्पर बदल दी गई हैं, जिससे दोनों कथन तथ्यात्मक रूप से गलत हो जाते हैं। सांख्यिकीय निष्कर्षों की शुद्धता के लिए इन दोनों त्रुटियों के बीच अंतर समझना और उन्हें कम करना अत्यंत आवश्यक है।

7. (D) पूर्ण निश्चितता के साथ एक सिद्धांत को सिद्ध करना।
प्रयोगात्मक अभिकल्प का मुख्य उद्देश्य चरों के बीच कार्य-कारण संबंध स्थापित करना और बाहरी चरों के प्रभाव को नियंत्रित करना है। यह शोधकर्ता को विशिष्ट परिकल्पनाओं का कड़ाई से परीक्षण करने की अनुमति देता है। हालांकि, विज्ञान की प्रकृति निरंतर विकासशील है, इसलिए कोई भी प्रयोग किसी सिद्धांत को पूर्ण और अंतिम निश्चितता के साथ सिद्ध नहीं कर सकता है। वैज्ञानिक निष्कर्ष हमेशा नए डेटा के आधार पर भविष्य में संशोधन या परिवर्तन के लिए खुले रहते हैं।

8. (A) दो स्वतंत्र चर, प्रत्येक दो स्तरों के साथ।
फैक्टोरियल अभिकल्प में संख्याएँ स्वतंत्र चरों की संख्या और उनके संबंधित स्तरों को दर्शाती हैं। एक 2x2 अभिकल्प का अर्थ है कि प्रयोग में कुल दो स्वतंत्र चर शामिल हैं और प्रत्येक चर के दो अलग-अलग स्तर या स्थितियां हैं। यह अभिकल्प शोधकर्ता को न केवल प्रत्येक चर के मुख्य प्रभावों का अध्ययन करने की अनुमति देता है, बल्कि उनके बीच होने वाली जटिल अन्योन्यक्रियाओं को समझने में भी महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है।

9. (C) दो सतत चर।
पियर्सन सहसंबंध गुणांक दो निरंतर चरों के बीच रैखिक संबंध की शक्ति और दिशा को मापने के लिए सबसे उपयुक्त सांख्यिकीय उपकरण है। यह तब उपयोग किया जाता है जब दोनों चर अंतराल या अनुपात पैमाने पर मापे गए हों। यह मान -1.00 से +1.00 के बीच होता है, जहाँ शून्य का अर्थ संबंधों का अभाव है। यह तकनीक मनोविज्ञान और सामाजिक विज्ञान में दो निरंतर मापों के जुड़ाव को समझने में सहायक है।

10. (A) P-2, Q-4, R-3, S-1
वैज्ञानिक अनुसंधान में विभिन्न शब्दावलियों का विशिष्ट अर्थ होता है। शोधकर्ता जिस चर में हेरफेर करता है वह स्वतंत्र चर कहलाता है, जबकि अध्ययन किए जाने वाले संपूर्ण समूह को जनसंख्या कहा जाता है। शून्य परिकल्पना वह कथन है जो

48. (B) मजबूत सकारात्मक संबंध।
सहसंबंध गुणांक चरों के बीच संबंधों की दिशा और मजबूती को दर्शाता है। यहाँ 0.85 का मान यह बताता है कि संबंध बहुत मजबूत है क्योंकि यह 1.00 के करीब है। धनात्मक चिह्न (+) का अर्थ है कि दोनों चर एक ही दिशा में चलते हैं; अर्थात एक चर के बढ़ने पर दूसरा भी बढ़ता है। ऐसा उच्च सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से बहुत सार्थक माना जाता है। हालांकि यह कार्य-कारण संबंध सिद्ध नहीं करता, लेकिन यह भविष्यवाणी करने के लिए एक विश्वसनीय आधार प्रदान करता है।

49. (B) पुरुष छात्रों के एक समूह और महिला छात्रों के एक समूह के गणित प्राप्तांकों की तुलना करना।
असंबंधित प्रतिदर्शों का तात्पर्य उन समूहों से है जिनमें भाग लेने वाले प्रतिभागी एक-दूसरे से पूरी तरह स्वतंत्र होते हैं और एक समूह के चयन का दूसरे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। पुरुष और महिला छात्रों के दो अलग-अलग समूह इस अवधारणा का सबसे सटीक उदाहरण हैं क्योंकि एक समूह के सदस्य दूसरे समूह का हिस्सा नहीं हो सकते। ऐसे डेटा के विश्लेषण के लिए स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण का उपयोग किया जाता है। यह उन स्थितियों के लिए उपयुक्त है जहाँ समूहों के बीच कोई प्राकृतिक संबंध या मिलान नहीं होता है।

50. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
फैक्टोरियल अभिकल्प शोध की एक उन्नत तकनीक है जो शोधकर्ताओं को एक साथ दो या अधिक स्वतंत्र चरों के प्रभाव का अध्ययन करने की अनुमति देती है। 2x2 अभिकल्प में, अन्योन्यक्रिया प्रभाव की जांच करना संभव है, जो यह बताता है कि एक चर का प्रभाव दूसरे चर के स्तर पर निर्भर करता है या नहीं। यह एकल चर वाले अध्ययनों की तुलना में अधिक विस्तृत जानकारी प्रदान करता है। चूँकि यह अभिकल्प जटिल संबंधों और निर्भरताओं को स्पष्ट करता है, इसलिए यह वैज्ञानिक अनुसंधान में अत्यंत मूल्यवान माना जाता है।

51. (C) अवलोकन और प्रयोग से।
अनुभववाद वैज्ञानिक अनुसंधान का एक मौलिक सिद्धांत है जो यह मानता है कि विश्वसनीय ज्ञान केवल इंद्रिय-आधारित अनुभवों और प्रत्यक्ष साक्ष्यों से प्राप्त किया जा सकता है। यह व्यक्तिगत विश्वासों, परंपराओं या केवल तर्क के बजाय वस्तुनिष्ठ अवलोकन और सावधानीपूर्वक किए गए प्रयोगों पर जोर देता है। इसके अनुसार, किसी भी वैज्ञानिक दावे को तब तक स्वीकार नहीं किया जाता जब तक कि उसे अनुभवजन्य रूप से सत्यापित न किया जा सके। यह दृष्टिकोण विज्ञान को अन्य ज्ञान प्रणालियों से अलग करता है और इसे अधिक विश्वसनीय बनाता है।

52. (D) शून्य
शून्य परिकल्पना वह कथन है जो चरों के बीच किसी भी प्रकार के संबंध या अंतर के न होने का दावा करता है। यहाँ यह कहना कि "नींद और प्रदर्शन के बीच कोई संबंध नहीं है", स्पष्ट रूप से एक शून्य परिकल्पना है। सांख्यिकीय परीक्षणों का मुख्य उद्देश्य इसी परिकल्पना को चुनौती देना होता है। यदि एकत्र किया गया डेटा इस दावे को गलत सिद्ध करता है, तो शोधकर्ता इसे अस्वीकार कर देता है और वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकार करता है। यह शोध प्रक्रिया में एक निष्पक्ष शुरुआत प्रदान करती है।

53. (C) सतत चर
सतत चर वे होते हैं जो एक निश्चित सीमा के भीतर किसी भी मान को ग्रहण कर सकते हैं, जिसमें भिन्नात्मक या दशमलव मान भी शामिल हैं। उदाहरण के लिए, समय, दूरी या तापमान सतत चर हैं क्योंकि इन्हें बहुत सूक्ष्म स्तर पर मापा जा सकता है। इसके विपरीत, असतत चर केवल पूर्णांक मानों तक सीमित होते हैं। सतत चरों का मापन अधिक सटीक होता है और ये डेटा विश्लेषण में अधिक विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं। सांख्यिकी में इनके लिए अंतराल या अनुपात पैमाने का उपयोग किया जाता है।

54. (B) गुच्छ प्रतिचयन
गुच्छ प्रतिचयन में शोधकर्ता पहले पूरी जनसंख्या को प्राकृतिक रूप से बने समूहों या गुच्छों, जैसे कि शहरों या स्कूलों में विभाजित करता है। इसके बाद, वह इन समूहों में से कुछ का यादृच्छिक रूप से चयन करता है और चुने गए समूहों के सभी सदस्यों का अध्ययन करता है। यह विधि तब बहुत उपयोगी होती है जब जनसंख्या भौगोलिक रूप से बहुत बड़े क्षेत्र में बिखरी हुई हो। यह समय और संसाधनों की बचत करती है, हालांकि यह सरल यादृच्छिक प्रतिचयन की तुलना में प्रतिचयन त्रुटि को थोड़ा बढ़ा सकती है।

55. (D) टाइप II त्रुटि
टाइप 2 त्रुटि तब होती है जब एक शोधकर्ता एक गलत शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहता है। सरल शब्दों में, इसका अर्थ है कि चरों के बीच एक वास्तविक प्रभाव या अंतर मौजूद था, लेकिन सांख्यिकीय परीक्षण उसे पकड़ने या पहचानने में असमर्थ रहा। इसे अक्सर 'फॉल्स नेगेटिव' परिणाम माना जाता है। इस त्रुटि की संभावना प्रतिदर्श के आकार को बढ़ाकर और परीक्षण की सांख्यिकीय शक्ति में सुधार करके कम की जा सकती है।

56. (A) अन्योन्यक्रिया प्रभावों के अध्ययन की अनुमति देता है।
फैक्टोरियल अभिकल्प का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह शोधकर्ता को यह देखने की अनुमति देता है कि दो या अधिक स्वतंत्र चर एक साथ मिलकर आश्रित चर को कैसे प्रभावित करते हैं। एकल-कारक प्रयोग केवल एक चर के प्रभाव को देख सकते हैं, लेकिन फैक्टोरियल अभिकल्प 'अन्योन्यक्रिया प्रभाव' की पहचान कर सकते हैं, जहाँ एक चर का प्रभाव दूसरे चर के स्तर पर निर्भर करता है। यह वास्तविक जीवन की जटिलताओं को बेहतर ढंग से दर्शाता है और प्रयोग की दक्षता और सूचनात्मक मूल्य को बढ़ाता है।

57. (C) दो स्वतंत्र चर।
टू-वे एनोवा एक सांख्यिकीय विधि है जिसका उपयोग तब किया जाता है जब शोध अभिकल्प में दो स्वतंत्र चर शामिल होते हैं। इसका उद्देश्य यह जांचना है कि ये दोनों चर अलग-अलग और एक साथ मिलकर आश्रित चर को कैसे प्रभावित

20. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
याद‍ृच्छिक प्रतिचयन अनुसंधान की बाह्य वैधता और सामान्यीकरण के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह विधि सुनिश्चित करती है कि संपूर्ण जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य के पास प्रतिदर्श में शामिल होने का समान और स्वतंत्र अवसर हो। जब प्रतिदर्श याद‍ृच्छिक रूप से चुना जाता है, तो यह जनसंख्या का एक निष्पक्ष और प्रतिनिधि मॉडल बनता है। इसके परिणामस्वरूप, प्रतिदर्श से प्राप्त निष्कर्षों को बड़े विश्वास के साथ पूरी जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है, जो वैज्ञानिक अनुसंधान का मुख्य लक्ष्य है।

21. (C) बाह्य चरों के प्रभाव को कम करने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियाँ।
प्रयोगात्मक अनुसंधान में नियंत्रण का तात्पर्य उन सभी अवांछित कारकों को विनियमित करना है जो आश्रित चर को प्रभावित कर सकते हैं। शोधकर्ता यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि देखा गया कोई भी प्रभाव केवल स्वतंत्र चर के कारण ही है, न कि किसी बाहरी शोर के कारण। इसमें याद‍ृच्छिकीकरण, विलोपन और स्थिरीकरण जैसी तकनीकें शामिल होती हैं। यह प्रक्रिया अध्ययन की आंतरिक वैधता को बढ़ाती है और कार्य-कारण संबंधों की व्याख्या को अधिक सटीक और विश्वसनीय बनाती है।

22. (B) जनसंख्या
अनुसंधान के संदर्भ में, जनसंख्या उन सभी व्यक्तियों, घटनाओं या वस्तुओं के संपूर्ण समूह को संदर्भित करती है जिनके बारे में शोधकर्ता जानकारी प्राप्त करना चाहता है और निष्कर्षों को सामान्यीकृत करना चाहता है। इस उदाहरण में, भारत के सभी विश्वविद्यालय छात्र वह व्यापक समूह हैं जिनमें शोधकर्ता की रुचि है। जनसंख्या से ही एक छोटा हिस्सा चुना जाता है जिसे प्रतिदर्श कहते हैं। जनसंख्या के गुणों को समझना और उन्हें सटीक रूप से परिभाषित करना अध्ययन की सफलता के लिए अनिवार्य है।

23. (D) वर्तमान ज्ञान में कमियों की पहचान करना और एक शोध प्रश्न तैयार करना।
साहित्य समीक्षा वैज्ञानिक अनुसंधान का एक अनिवार्य हिस्सा है जो किसी विशेष विषय पर मौजूदा ज्ञान का व्यवस्थित विश्लेषण प्रदान करती है। इसका प्राथमिक उद्देश्य यह समझना है कि उस क्षेत्र में क्या शोध हो चुका है और कौन से क्षेत्र अभी भी अनछुए हैं। इन कमियों की पहचान करके शोधकर्ता एक नया और प्रासंगिक शोध प्रश्न विकसित कर सकता है। यह प्रक्रिया अध्ययन के लिए एक मजबूत सैद्धांतिक आधार तैयार करती है और पुराने शोध की पुनरावृत्ति से बचाती है।

24. (A) समूह 1 और समूह 2 के माध्य के बीच कोई अंतर नहीं है।
शून्य परिकल्पना एक सांख्यिकीय आधार है जो यह मानती है कि अध्ययन किए जा रहे चरों के बीच कोई वास्तविक प्रभाव या अंतर मौजूद नहीं है। दो समूहों की तुलना करते समय, यह बताती है कि समूहों के माध्य के बीच देखा गया कोई भी मामूली अंतर केवल संयोग या प्रतिचयन त्रुटि के कारण है। सांख्यिकीय परीक्षणों का मुख्य कार्य इस परिकल्पना का परीक्षण करना होता है। यदि साक्ष्य पर्याप्त रूप से मजबूत हों, तो इसे अस्वीकार कर दिया जाता है।

25. (C) एक अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प
अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प का उपयोग तब किया जाता है जब शोधकर्ता स्वतंत्र चर में हेरफेर तो कर सकता है, लेकिन प्रतिभागियों को समूहों में याद‍ृच्छिक रूप से आवंटित करने की क्षमता नहीं रखता है। इस उदाहरण में, बच्चों को पहले से मौजूद समूहों के आधार पर चुना गया है, जो इस अभिकल्प की मुख्य विशेषता है। हालांकि यह वास्तविक प्रयोग की तुलना में कम नियंत्रित होता है, फिर भी यह उन परिस्थितियों में उपयोगी है जहाँ नैतिक या व्यावहारिक कारणों से याद‍ृच्छिकीकरण संभव नहीं होता है।

26. (A) आश्रित चर पर एक स्वतंत्र चर का प्रभाव दूसरे स्वतंत्र चर के स्तर पर निर्भर करता है।
फैक्टोरियल अभिकल्प में अन्योन्यक्रिया प्रभाव तब उत्पन्न होता है जब एक स्वतंत्र चर का परिणाम दूसरे स्वतंत्र चर की स्थिति के आधार पर बदल जाता है। इसका अर्थ है कि चरों के प्रभाव स्वतंत्र नहीं हैं, बल्कि वे एक-दूसरे के साथ मिलकर व्यवहार को प्रभावित करते हैं। यह शोधकर्ता को जटिल वास्तविक दुनिया की स्थितियों को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है। सांख्यिकीय रूप से, यदि रेखांकन में रेखाएं समानांतर नहीं हैं, तो यह अन्योन्यक्रिया प्रभाव की उपस्थिति का संकेत देती हैं।

27. (D) अंतर्निहित निरंतरता वाले दो कृत्रिम रूप से द्विभाजित चर।
टेट्राकोरिक सहसंबंध का उपयोग उन दो चरों के बीच संबंध को मापने के लिए किया जाता है जिन्हें कृत्रिम रूप से केवल दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है, जबकि वे मूल रूप से निरंतर प्रकृति के होते हैं। उदाहरण के लिए, परीक्षा में 'उत्तीर्ण' या 'अनुत्तीर्ण' होना एक कृत्रिम विभाजन है क्योंकि योग्यता निरंतर होती है। यह गुणांक यह मानता है कि दोनों चरों का अंतर्निहित वितरण सामान्य है। यह सांख्यिकीय तकनीक उन जटिल संबंधों को स्पष्ट करती है जो श्रेणीबद्ध वर्गीकरण के पीछे छिपे होते हैं।

28. (B) जब प्रशिक्षण कार्यक्रम से पहले और बाद में कर्मचारियों की उत्पादकता की तुलना की जाती है।
संबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण तब सबसे अधिक प्रभावी होता है जब एक ही प्रतिभागियों के समूह को दो अलग-अलग समय या स्थितियों में मापा जाता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के "पूर्व और पश्चात" का अध्ययन इस तकनीक का एक आदर्श उदाहरण है। चूंकि यहाँ एक ही व्यक्ति के दो प्राप्तांकों की तुलना की जा रही है, इसलिए व्यक्तिगत अंतरों का प्रभाव समाप्त हो जाता है। यह परीक्षण शोधकर्ता को उपचार या हस्तक्षेप के वास्तविक प्रभाव को अधिक सटीकता से मापने में सक्षम बनाता है।

29. (C) α (अल्फा)
सांख्यिकीय परिकल्पना परीक्षण में, टाइप 1 त्रुटि होने की अधिकतम स्वीकार्य प्रायिकता को अल्फा द्वारा दर्शाया जाता

(B) फैक्टोरियल अभिकल्प
(C) सरल टी-परीक्षण अभिकल्प
(D) प्रीटेस्ट-पोस्टटेस्ट अभिकल्प

290. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): शून्य परिकल्पना हमेशा जनसंख्या को संदर्भित करती है, प्रतिदर्श को नहीं।
कारण (R): हम जनसंख्या के बारे में अनुमान लगाने के लिए प्रतिदर्श डेटा का उपयोग करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

291. वैज्ञानिक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) व्यक्तिगत राय सिद्ध करना।
(B) विवाद पैदा करना।
(C) वस्तुनिष्ठ जांच के माध्यम से व्यवस्थित ज्ञान उत्पन्न करना।
(D) बिना व्याख्या के तथ्यों को संकलित करना।

292. निम्नलिखित में से कौन सी एक गैर-प्रायिकता प्रतिचयन तकनीक है?
(A) व्यवस्थित प्रतिचयन
(B) गुच्छ प्रतिचयन
(C) स्तरित प्रतिचयन
(D) निर्णयात्मक प्रतिचयन

293. एक सत्य शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करना किस रूप में परिभाषित है:
(A) टाइप II त्रुटि
(B) सांख्यिकीय शक्ति
(C) टाइप I त्रुटि
(D) एक सही निर्णय

294. "स्टेटिक-ग्रुप तुलना" अभिकल्प किसका एक प्रकार है:
(A) वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प
(B) पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प
(C) अनुदैर्ध्य अभिकल्प
(D) टाइम-सीरीज अभिकल्प

295. किसके परिणामों का विश्लेषण करने के लिए टू-वे एनोवा का उपयोग किया जाता है:
(A) एक-समूह प्रीटेस्ट-पोस्टटेस्ट अध्ययन।
(B) दो चरों वाला सहसंबंधी अध्ययन।
(C) दो स्वतंत्र समूहों की तुलना करने वाला अध्ययन।
(D) फैक्टोरियल प्रयोग।

296. 0.00 का सहसंबंध गुणांक क्या सुझाव देता है:
(A) कोई रैखिक संबंध नहीं।
(B) एक पूर्ण संबंध।
(C) एक मजबूत नकारात्मक संबंध।
(D) एक कारण संबंध।

297. संबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण की एक प्रमुख धारणा यह है कि:
(A) दो प्रतिदर्श स्वतंत्र हैं।
(B) दो प्रतिदर्शों के विचरण समान हैं।
(C) अंतर प्राप्तांकों की जनसंख्या सामान्य रूप से वितरित है।
(D) प्रतिदर्श आकार बड़े हैं।

298. सीखने पर एक अध्ययन में, यदि शोधकर्ता चूहों को भूलभुलैया के लिए भोजन का पुरस्कार देता है, तो भोजन का पुरस्कार है:
(A) स्वतंत्र चर
(B) आश्रित चर
(C) बाह्य चर
(D) नियंत्रण चर

299. यदि एक शोधकर्ता पुरुष और महिला छात्रों के औसत प्राप्तांकों की तुलना करना चाहता है, तो उपयुक्त परीक्षण होगा:
(A) संबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण।
(B) तीन समूहों वाला वन-वे एनोवा।
(C) एक बाइसीरियल सहसंबंध।
(D) असंबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण।

300. एक प्रयोग में चरों को नियंत्रित करने का अंतिम लक्ष्य है:
(A) अध्ययन की जटिलता बढ़ाना।
(B) आश्रित चर पर स्वतंत्र चर के प्रभाव को पृथक करना।
(C) परिणामों को रोचक बनाना।
(D) अध्ययन को सरल बनाना।

के साथ कहने की अनुमति देता है कि एक चर दूसरे का कारण है।

39. (D) α कम करने से β बढ़ जाएगा।
सांख्यिकीय परीक्षणों में टाइप 1 त्रुटि और टाइप 2 त्रुटि के बीच एक व्युत्क्रम संबंध होता है। जब शोधकर्ता टाइप 1 त्रुटि के जोखिम को कम करने के लिए अल्फा स्तर को अधिक कड़ा करता है, तो अनजाने में टाइप 2 त्रुटि होने की संभावना बढ़ जाती है। इसका कारण यह है कि परीक्षण अधिक रूढ़िवादी हो जाता है, जिससे वास्तविक प्रभाव को पहचानना कठिन हो जाता है। इन दोनों त्रुटियों के बीच संतुलन बनाए रखना शोध अभिकल्प की शक्ति और निष्कर्षों की शुद्धता के लिए बहुत आवश्यक है।

40. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
सहसंबंध के विभिन्न प्रकारों का उपयोग चरों की प्रकृति के आधार पर किया जाता है। जब दोनों चर निरंतर हों तो प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध उपयुक्त होता है। यदि एक चर निरंतर और दूसरा प्राकृतिक रूप से द्विभाजित हो तो पॉइंट-बाइसीरियल का उपयोग करते हैं। इसी प्रकार, बाइसीरियल सहसंबंध एक निरंतर और एक कृत्रिम द्विभाजित चर के लिए होता है। टेट्राकोरिक सहसंबंध का प्रयोग तब किया जाता है जब दोनों चर कृत्रिम रूप से द्विभाजित किए गए हों। ये सभी गुणांक चरों के बीच संबंधों की प्रकृति को स्पष्ट करते हैं।

41. (C) एक बाह्य चर
बाह्य चर वे कारक होते हैं जो अध्ययन का मुख्य हिस्सा नहीं होते हैं, लेकिन वे आश्रित चर को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। यदि इन चरों को ठीक से नियंत्रित नहीं किया जाता है, तो वे भ्रामक चर बन सकते हैं और प्रयोग के परिणामों को दूषित कर सकते हैं। शोधकर्ता विभिन्न तकनीकों जैसे यादृच्छिकीकरण या विलोपन के माध्यम से इनके प्रभाव को कम करने का प्रयास करते हैं। आंतरिक वैधता सुनिश्चित करने के लिए बाह्य चरों को पहचानना और प्रबंधित करना वैज्ञानिक अनुसंधान की एक प्रमुख चुनौती है।

42. (A) प्रतिचयन एक अध्ययन के लिए जनसंख्या के उपसमूह का चयन करने की प्रक्रिया है।
प्रतिचयन अनुसंधान की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें पूरी जनसंख्या का अध्ययन करने के बजाय उसके एक छोटे और प्रतिनिधि हिस्से का चयन किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य सीमित संसाधनों और समय में जनसंख्या के बारे में सटीक अनुमान लगाना है। एक अच्छी प्रतिचयन विधि वह है जो जनसंख्या की विविधता को प्रतिदर्श में सही ढंग से समाहित करती है। यद्यपि बड़े प्रतिदर्श त्रुटियों को कम करते हैं, फिर भी उनकी सफलता चयन की विधि और जनसंख्या की प्रकृति पर अधिक निर्भर करती है।

43. (D) प्रस्तावित करता है कि चरों के बीच कोई संबंध या अंतर है।
वैकल्पिक परिकल्पना वह कथन है जिसे शोधकर्ता वास्तव में अपने अध्ययन के माध्यम से समर्थित करने का प्रयास करता है। यह शून्य परिकल्पना के ठीक विपरीत होती है और यह मानती है कि चरों के बीच कोई वास्तविक प्रभाव या सार्थक अंतर मौजूद है। यदि सांख्यिकीय डेटा शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य प्रदान करता है, तो वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकार कर लिया जाता है। यह शोध की दिशा निर्धारित करती है और वैज्ञानिक खोजों का आधार बनती है जो ज्ञान को आगे बढ़ाती हैं।

44. (B) यादृच्छिकीकरण
यादृच्छिकीकरण प्रयोगात्मक अनुसंधान में बाहरी चरों को नियंत्रित करने की सबसे शक्तिशाली और प्रभावी विधि है। इसमें प्रतिभागियों को समूहों में पूरी तरह से संयोग के आधार पर आवंटित किया जाता है। यह प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि प्रतिभागियों की व्यक्तिगत विशेषताएं, जैसे बुद्धि या अनुभव, सभी प्रयोगात्मक स्थितियों में समान रूप से वितरित हों। इससे समूहों के बीच पहले से मौजूद किसी भी व्यवस्थित अंतर की संभावना समाप्त हो जाती है। यह तकनीक प्रयोग की आंतरिक वैधता को बढ़ाती है और कार्य-कारण निष्कर्षों को विश्वसनीय बनाती है।

45. (C) वन-वे एनोवा।
जब शोधकर्ता को दो से अधिक समूहों या उपचार स्थितियों के माध्य की तुलना करनी होती है, तो वन-वे एनोवा सबसे उपयुक्त सांख्यिकीय परीक्षण है। इस मामले में, अवसाद के तीन अलग-अलग उपचारों की प्रभावशीलता की तुलना की जा रही है, जो इसे एनोवा के लिए एक आदर्श स्थिति बनाता है। टी-परीक्षण केवल दो समूहों तक सीमित होता है, जबकि एनोवा एक साथ कई समूहों के बीच के अंतर का विश्लेषण कर सकता है। यह विधि टाइप 1 त्रुटि के जोखिम को नियंत्रित करने में भी सहायक है।

46. (D) 4
फैक्टोरियल अभिकल्प में उपचार की स्थितियों की कुल संख्या स्वतंत्र चरों के स्तरों के गुणनफल के बराबर होती है। एक 2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प में दो स्वतंत्र चर होते हैं, और प्रत्येक के दो स्तर होते हैं। इसलिए, कुल स्थितियों की संख्या 2 गुणा 2, यानी 4 होगी। ये चार स्थितियाँ स्वतंत्र चरों के सभी संभावित संयोजनों का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह संरचना शोधकर्ता को मुख्य प्रभावों के साथ-साथ दोनों चरों के बीच अन्योन्यक्रिया प्रभावों का व्यापक रूप से परीक्षण करने की अनुमति देती है।

47. (A) 0.05
सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में अल्फा स्तर या सार्थकता स्तर को पारंपरिक रूप से 0.05 पर निर्धारित किया जाता है। इसका अर्थ है कि शोधकर्ता परिणामों में 5% त्रुटि की संभावना को स्वीकार करने के लिए तैयार है, जो संयोग के कारण हो सकती है। दूसरे शब्दों में, उसे 95% विश्वास है कि प्राप्त परिणाम स्वतंत्र चर के वास्तविक प्रभाव के कारण हैं। यह मानक स्तर वैज्ञानिक समुदाय में निष्कर्षों को स्वीकार्य बनाने के लिए एक संतुलन प्रदान करता है, जो न तो बहुत उदार है और न ही बहुत कठोर।

चरों के बीच किसी प्रभाव के न होने को दर्शाता है। अंत में, एक सत्य शून्य परिकल्पना को गलत तरीके से अस्वीकार करना सांख्यिकी में टाइप 1 त्रुटि के रूप में परिभाषित किया गया है। ये अवधारणाएं शोध संरचना की आधारशिला हैं।

11. (D) किसी विशेष माप पर दो स्वतंत्र समूहों के माध्य की तुलना करना।
स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण एक अनुमानात्मक सांख्यिकीय विधि है जिसका उपयोग दो अलग-अलग और असंबद्ध समूहों के माध्य के बीच के अंतर की जांच करने के लिए किया जाता है। यह परीक्षण शोधकर्ता को यह निर्धारित करने में मदद करता है कि क्या दो समूहों के बीच देखा गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है या केवल संयोग का परिणाम है। यह विशेष रूप से तब उपयोगी होता है जब प्रतिभागी केवल एक ही प्रयोगात्मक स्थिति में भाग लेते हैं।

12. (B) समूहों में प्रतिभागियों का यादृच्छिक आवंटन।
वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प और अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प के बीच मुख्य अंतर यादृच्छिक आवंटन की उपस्थिति है। वास्तविक प्रयोग में, प्रत्येक प्रतिभागी के पास किसी भी समूह में चुने जाने की समान संभावना होती है, जो समूहों के बीच पहले से मौजूद व्यक्तिगत अंतरों को कम करने में मदद करता है। अर्ध-प्रयोगों में अक्सर पहले से बने समूहों का उपयोग किया जाता है जहाँ यादृच्छिक आवंटन संभव नहीं होता है। यह प्रक्रिया प्रयोग की आंतरिक वैधता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

13. (C) दिशात्मक परिकल्पना
जब शोधकर्ता न केवल यह भविष्यवाणी करता है कि चरों के बीच अंतर होगा, बल्कि उस अंतर की दिशा भी स्पष्ट करता है, तो इसे दिशात्मक परिकल्पना कहा जाता है। इस उदाहरण में, यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि ऐप का उपयोग करने वाले छात्रों के प्राप्तांक अधिक होंगे। ऐसी परिकल्पनाएं पिछले शोध या सिद्धांतों पर आधारित होती हैं। यह सांख्यिकीय परीक्षण के लिए एक-पुच्छीय परीक्षण के उपयोग का आधार बनती है और परिणामों को विशिष्ट दिशा प्रदान करती है।

14. (D) एक स्वतंत्र चर
एक शोध अध्ययन में, स्वतंत्र चर वह कारक है जिसे शोधकर्ता द्वारा समूहों को वर्गीकृत करने या प्रभाव देखने के लिए चुना जाता है। यहाँ चिंता के स्तर को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है ताकि कार्य प्रदर्शन पर इसके प्रभाव की जांच की जा सके। चूंकि चिंता स्तर के आधार पर ही प्रदर्शन में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया जा रहा है, इसलिए इसे स्वतंत्र चर माना जाएगा। यह शोध संरचना में कारण के रूप में कार्य करता है।

15. (A) II, I, IV, III
परिकल्पना परीक्षण की प्रक्रिया एक तार्किक और चरणबद्ध क्रम का अनुसरण करती है। सबसे पहले शोधकर्ता शून्य और वैकल्पिक परिकल्पनाओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है। इसके पश्चात संबंधित डेटा को सावधानीपूर्वक एकत्र किया जाता है। डेटा प्राप्त होने के बाद उपयुक्त सांख्यिकीय परीक्षण का उपयोग करके परीक्षण सांख्यिकी की गणना की जाती है। अंतिम चरण में प्राप्त मूल्यों की तुलना करके शून्य परिकल्पना को स्वीकार या अस्वीकार करने का महत्वपूर्ण सांख्यिकीय निर्णय लिया जाता है।

16. (B) शून्य परिकल्पना को गलत होने पर अस्वीकार करने में विफल रहना।
टाइप 2 त्रुटि सांख्यिकीय निर्णय लेने की प्रक्रिया में तब होती है जब कोई वास्तविक प्रभाव मौजूद होता है, लेकिन शोधकर्ता उसे पहचानने में असमर्थ रहता है। दूसरे शब्दों में, जब शून्य परिकल्पना वास्तव में गलत होती है, फिर भी सांख्यिकीय परीक्षण उसे अस्वीकार नहीं कर पाता है। इसे 'फॉल्स नेगेटिव' परिणाम के रूप में भी जाना जाता है। इस त्रुटि की संभावना प्रतिदर्श के आकार को बढ़ाकर और परीक्षण की सांख्यिकीय शक्ति में सुधार करके कम की जा सकती है।

17. (B) इसका उपयोग केवल तभी किया जा सकता है जब ठीक तीन समूह हों।
वन-वे एनोवा एक बहुमुखी सांख्यिकीय तकनीक है जिसका उपयोग दो या दो से अधिक समूहों के माध्य के बीच अंतर की तुलना करने के लिए किया जाता है। इसकी कोई ऐसी सीमा नहीं है कि इसमें केवल तीन समूह ही होने चाहिए; यह कई समूहों के लिए प्रभावी ढंग से कार्य कर सकता है। यह कुल विचरण को समूहों के बीच और समूहों के भीतर होने वाले विचलन में विभाजित करता है। यह सांख्यिकीय परीक्षण यह समझने में मदद करता है कि क्या प्रयोगात्मक उपचार का प्रभाव सार्थक है।

18. (A) एक सतत और एक प्राकृतिक रूप से द्विभाजित चर।
पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध गुणांक का उपयोग तब किया जाता है जब शोधकर्ता एक निरंतर चर और एक वास्तविक या प्राकृतिक द्विभाजित चर के बीच संबंध को मापना चाहता है। प्राकृतिक द्वंद्व का अर्थ है कि चर स्वाभाविक रूप से केवल दो श्रेणियों में विभाजित है, जैसे लिंग। यह गुणांक पियर्सन के प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध का ही एक विशेष रूप है। यह सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में श्रेणीबद्ध और संख्यात्मक डेटा के बीच संबंध की मजबूती और दिशा को समझने में सहायक होता है।

19. (C) युग्मित प्रतिदर्श टी-परीक्षण
संबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण को युग्मित प्रतिदर्श टी-परीक्षण के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि इसमें प्रतिभागियों के एक ही समूह का दो अलग-अलग समय पर परीक्षण किया जाता है। यह अक्सर "पूर्व और पश्चात" शोध संरचनाओं में उपयोग किया जाता है जहाँ प्रत्येक प्रतिभागी अपने स्वयं के नियंत्रण के रूप में कार्य करता है। यह पद्धति प्रतिभागियों के बीच व्यक्तिगत अंतरों के प्रभाव को कम करती है, जिससे सांख्यिकीय परीक्षण की संवेदनशीलता और शक्ति में वृद्धि होती है और त्रुटि विचरण कम होता है।

करते हैं। यह परीक्षण शोधकर्ता को तीन अलग-अलग परिणाम प्रदान करता है: प्रत्येक स्वतंत्र चर का मुख्य प्रभाव और दोनों के बीच का अन्योन्यक्रिया प्रभाव। यह तकनीक जटिल शोध प्रश्नों के उत्तर देने के लिए अत्यंत प्रभावी है जहाँ व्यवहार एक से अधिक कारकों पर निर्भर होता है।

58. (A) स्पीयरमैन का कोटि-अंतर सहसंबंध
स्पीयरमैन का कोटि-अंतर सहसंबंध गुणांक विशेष रूप से तब उपयोग किया जाता है जब डेटा को कोटि या रैंकिंग के रूप में मापा जाता है। चूंकि कक्षा की कोटि और खेल की कोटि दोनों ही क्रमसूचक डेटा हैं, इसलिए यह परीक्षण सबसे उपयुक्त है। यह दो चरों के बीच संबंधों की दिशा और मजबूती को मापता है बिना यह माने कि डेटा सामान्य रूप से वितरित है। यह पियर्सन के सहसंबंध का एक गैर-प्राचलिक विकल्प है और डेटा में चरम मानों के प्रति कम संवेदनशील होता है।

59. (D) एक समूह के प्राप्तांक दूसरे समूह के प्राप्तांकों से संबंधित हैं।
टी-परीक्षण के संदर्भ में संबंधित प्रतिदर्शों का तात्पर्य उन स्थितियों के लिए है जहाँ डेटा के दो समूहों के बीच कोई सीधा संबंध होता है। यह आमतौर पर तब होता है जब एक ही व्यक्तियों का दो बार परीक्षण किया जाता है या जब प्रतिभागियों को किसी विशिष्ट विशेषता के आधार पर मिलान करके जोड़े बनाए जाते हैं। इस प्रकार की संरचना में, एक समूह का प्रत्येक मान दूसरे समूह के एक विशिष्ट मान से जुड़ा होता है। यह विधि त्रुटि विचरण को कम करके परीक्षण की सांख्यिकीय शक्ति को बढ़ाती है।

60. (B) सहसंबंधी अभिकल्प
सहसंबंधी अभिकल्प एक गैर-प्रयोगात्मक शोध विधि है जो केवल चरों के बीच संबंधों की जांच करती है, उनमें हेरफेर नहीं करती। इसके विपरीत, पूर्व-प्रयोगात्मक, वास्तविक प्रयोगात्मक और अर्ध-प्रयोगात्मक सभी प्रयोगात्मक अभिकल्प के ही विभिन्न स्तर हैं जिनमें स्वतंत्र चर का हेरफेर शामिल होता है। प्रयोगात्मक अभिकल्प का लक्ष्य कार्य-कारण संबंध स्थापित करना है, जबकि सहसंबंधी अभिकल्प केवल चरों के सह-अस्तित्व या साहचर्य का वर्णन करता है। इसलिए, सहसंबंधी अभिकल्प को प्रयोगात्मक श्रेणी में नहीं रखा जाता है, बल्कि यह एक अलग शोध श्रेणी है।

61. (C) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
प्रयोगात्मक अभिकल्प का मुख्य लक्ष्य आंतरिक वैधता को अधिकतम करना है, जो यह सुनिश्चित करती है कि परिणाम केवल स्वतंत्र चर के कारण ही आए हैं। हालांकि, कथन 2 गलत है क्योंकि निष्कर्षों को अन्य जनसंख्या और परिस्थितियों के लिए सामान्यीकृत करने की क्षमता को 'बाह्य वैधता' कहा जाता है, न कि आंतरिक वैधता। आंतरिक वैधता अध्ययन की शुद्धता और नियंत्रण से संबंधित है, जबकि बाह्य वैधता परिणामों की व्यापक लागूता से संबंधित है। इन दोनों के बीच संतुलन बनाए रखना किसी भी सफल शोध के लिए अनिवार्य है।

62. (D) मिलान
मिलान एक प्रभावी नियंत्रण तकनीक है जहाँ शोधकर्ता प्रतिभागियों को कुछ विशिष्ट बाह्य चरों, जैसे बुद्धि या उम्र, के आधार पर जोड़ों में व्यवस्थित करता है। प्रत्येक जोड़े में से एक प्रतिभागी को प्रयोगात्मक समूह में और दूसरे को नियंत्रण समूह में भेजा जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि ये महत्वपूर्ण चर दोनों समूहों में समान रूप से वितरित हों, जिससे समूहों के बीच पहले से मौजूद अंतरों का प्रभाव समाप्त हो जाता है। यह विधि विशेष रूप से छोटे प्रतिदर्शों में समूहों की समकक्षता सुनिश्चित करने के लिए उपयोगी है।

63. (A) संक्रियात्मक परिभाषा
संक्रियात्मक परिभाषा एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें एक अमूर्त अवधारणा को मापने योग्य और अवलोकनीय गतिविधियों के रूप में परिभाषित किया जाता है। यहाँ बुद्धि जैसी जटिल मानसिक प्रक्रिया को एक विशिष्ट बुद्धि परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांक के रूप में स्पष्ट किया गया है। यह शोधकर्ताओं को अवधारणाओं को सटीक रूप से मापने और अध्ययन को दोहराने की अनुमति देता है। बिना संक्रियात्मक परिभाषा के, शोध के परिणामों की तुलना और सत्यापन करना असंभव होगा, क्योंकि विभिन्न शोधकर्ता एक ही शब्द के अलग-अलग अर्थ निकाल सकते हैं।

64. (B) निष्कर्षों को जनसंख्या के लिए सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है।
गैर-प्रायिकता प्रतिचयन विधियों में प्रतिभागियों का चयन यादृच्छिक रूप से नहीं किया जाता है, जिसके कारण प्रतिदर्श पूरी जनसंख्या का प्रतिनिधि नहीं बन पाता है। इसमें चयन पूर्वाग्रह की अधिक संभावना होती है क्योंकि जनसंख्या के कुछ सदस्यों के चुने जाने की संभावना दूसरों से अधिक होती है। इसके परिणामस्वरूप, शोधकर्ता यह दावा नहीं कर सकता कि अध्ययन के निष्कर्ष पूरी आबादी पर लागू होंगे। हालांकि ये विधियाँ सरल और सस्ती हैं, लेकिन सांख्यिकीय रूप से ये जनसंख्या के सटीक अनुमान लगाने में सक्षम नहीं हैं।

65. (C) केवल I और III
परिकल्पना परीक्षण में टाइप 1 त्रुटि की संभावना सीधे शोधकर्ता द्वारा निर्धारित अल्फा स्तर के बराबर होती है। कथन 2 गलत है क्योंकि टाइप 2 त्रुटि को 'फॉल्स नेगेटिव' कहा जाता है, जबकि 'फॉल्स पॉजिटिव' टाइप 1 त्रुटि के लिए उपयोग किया जाता है। प्रतिदर्श के आकार को बढ़ाने से टाइप 2 त्रुटि का जोखिम कम होता है क्योंकि इससे परीक्षण की सांख्यिकीय शक्ति बढ़ती है। इसलिए, कथन 1 और 3 सांख्यिकीय सिद्धांतों के अनुसार पूरी तरह से सही हैं जो शोध की शुद्धता सुनिश्चित करते हैं।

66. (A) दो मुख्य प्रभाव और एक अन्योन्यक्रिया प्रभाव।
टू-वे एनोवा शोधकर्ता को तीन महत्वपूर्ण सांख्यिकीय प्रश्नों के उत्तर देने की अनुमति देता है। सबसे पहले, यह प्रत्येक स्वतंत्र चर के 'मुख्य प्रभाव' का परीक्षण करता है, जिससे पता चलता है कि वे व्यक्तिगत रूप से आश्रित चर को कैसे प्रभावित करते हैं। दूसरा, यह 'अन्योन्यक्रिया प्रभाव' की जांच करता है, जो यह बताता है कि क्या एक चर का प्रभाव दूसरे चर की स्थिति पर

निर्भर है। यह व्यापक विश्लेषण शोध को अधिक गहराई और सूक्ष्मता प्रदान करता, जो एकल-चर विश्लेषणों में संभव नहीं है।

67. (C) पायलटों के एक समूह और गैर-पायलटों के एक समूह के औसत प्रतिक्रिया समय की तुलना करना।
स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण तब सबसे उपयुक्त होता है जब हमें दो ऐसे समूहों के माध्य की तुलना करनी होती है जो एक-दूसरे से पूरी तरह अलग और स्वतंत्र हों। पायलटों और गैर-पायलटों के समूह इस आवश्यकता को पूरा करते हैं क्योंकि एक व्यक्ति एक ही समय में दोनों समूहों का सदस्य नहीं हो सकता और न ही उनके बीच कोई मिलान है। अन्य विकल्पों में पूर्व-पश्चात या संबंधित व्यक्तियों की तुलना शामिल है, जिसके लिए युग्मित प्रतिदर्श टी-परीक्षण अधिक उपयुक्त होता, जो स्वतंत्र समूहों से अलग है।

68. (D) सामान्य वितरण
बाइसीरियल सहसंबंध एक सांख्यिकीय धारणा पर आधारित है कि जिस चर को कृत्रिम रूप से द्विभाजित किया गया है, उसकी अंतर्निहित प्रकृति निरंतर है और वह जनसंख्या में सामान्य रूप से वितरित है। उदाहरण के लिए, यदि हम 'सफलता' और 'विफलता' को द्विभाजित करते हैं, तो यह माना जाता है कि क्षमता या प्रयास का वितरण सामान्य घंटी के आकार का है। यदि यह धारणा गलत साबित होती है, तो सहसंबंध गुणांक की सटीकता प्रभावित हो सकती है। यह वैज्ञानिक मापन की शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए एक आवश्यक आधार है।

69. (C) नियंत्रण समूह या यादृच्छिकीकरण का अभाव।
पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प अनुसंधान का सबसे बुनियादी और कम नियंत्रित रूप है। इसकी परिभाषित विशेषता यह है कि इसमें या तो नियंत्रण समूह नहीं होता है या प्रतिभागियों का समूहों में यादृच्छिक आवंटन नहीं किया जाता है। इसके कारण, इस अभिकल्प में आंतरिक वैधता बहुत कम होती है क्योंकि शोधकर्ता बाहरी चरों के प्रभाव को प्रभावी ढंग से नहीं रोक सकता है। हालांकि इनका उपयोग अक्सर प्रारंभिक जांच या प्रायोगिक अध्ययन के लिए किया जाता है, लेकिन इनसे प्राप्त निष्कर्षों से कार्य-कारण संबंध स्थापित करना कठिन होता है।

70. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
अनुसंधान में प्रयुक्त विभिन्न शब्दावलियां वैज्ञानिक जांच को एक संरचना प्रदान करती हैं। गलत शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहना टाइप 2 त्रुटि कहलाती है। परिणामों को प्रभावित करने वाले बाहरी कारकों को स्थिर रखना नियंत्रण चर का मुख्य कार्य है। गैर-दिशात्मक परिकल्पना केवल अंतर की उपस्थिति बताती है, लेकिन उसकी कोई निश्चित दिशा नहीं। प्रयोगात्मक अभिकल्प वह व्यवस्थित योजना है जिसका उद्देश्य चरों के बीच कार्य-कारण संबंध स्थापित करना और जांच को एक तार्किक आधार प्रदान करना है।

71. (D) भ्रामक चर
भ्रामक चर वे कारक होते हैं जो अध्ययन का मुख्य हिस्सा नहीं होते हैं, लेकिन वे आश्रित चर को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। यदि इन चरों को ठीक से नियंत्रित नहीं किया जाता है, तो वे भ्रामक चर बन सकते हैं और प्रयोग के परिणामों को दूषित कर सकते हैं। शोधकर्ता विभिन्न तकनीकों जैसे यादृच्छिकीकरण या विलोपन के माध्यम से इनके प्रभाव को कम करने का प्रयास करते हैं। आंतरिक वैधता सुनिश्चित करने के लिए भ्रामक चरों को पहचानना और प्रबंधित करना वैज्ञानिक अनुसंधान की एक प्रमुख चुनौती है।

72. (A) व्यवस्थित प्रतिचयन
व्यवस्थित प्रतिचयन एक प्रायिकता प्रतिचयन विधि है जिसमें शोधकर्ता एक निश्चित अंतराल के आधार पर जनसंख्या से प्रतिभागियों का चयन करता है। यहाँ हर 10वें व्यक्ति का चयन करना 'के-वें' अंतराल की प्रणाली का पालन करता है। यह विधि सरल यादृच्छिक प्रतिचयन की तुलना में लागू करने में अधिक आसान और तेज है, खासकर जब प्रतिभागियों की एक लंबी सूची उपलब्ध हो। यदि चयन सूची में कोई आवधिक क्रम नहीं है, तो यह प्रतिदर्श जनसंख्या का एक निष्पक्ष और प्रतिनिधि प्रतिनिधित्व प्रदान करता है।

73. (C) क्या समूह माध्य के बीच देखा गया अंतर प्रतिचयन त्रुटि के कारण है या वास्तविक प्रभाव है।
सांख्यिकीय सार्थकता का परीक्षण शोधकर्ता को यह समझने में मदद करता है कि समूहों के बीच प्राप्त अंतर कितना विश्वसनीय है। यह विश्लेषण यह निर्धारित करता है कि क्या यह अंतर स्वतंत्र चर के वास्तविक प्रभाव का परिणाम है या केवल प्रतिचयन प्रक्रिया के दौरान होने वाले यादृच्छिक परिवर्तनों के कारण है। यदि अंतर सार्थक है, तो इसका अर्थ है कि इसी तरह के परिणाम भविष्य में भी मिलने की उच्च संभावना है। यह निष्कर्षों को वैज्ञानिक वैधता प्रदान करता है और सिद्धांत निर्माण का आधार बनता है।

74. (A) वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प
एक 2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प को वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प की श्रेणी में रखा जाता है क्योंकि इसमें शोधकर्ता सक्रिय रूप से स्वतंत्र चरों में हेरफेर करता है और प्रतिभागियों का यादृच्छिक आवंटन सुनिश्चित करता है। यह अभिकल्प चरों के बीच कार्य-कारण संबंधों की जांच करने के लिए उच्चतम स्तर का नियंत्रण प्रदान करता है। इसमें न केवल मुख्य प्रभावों का परीक्षण किया जा सकता है, बल्कि चरों के बीच अन्योन्यक्रियाओं का भी सूक्ष्म विश्लेषण किया जाता है। इसकी संरचना जटिल शोध प्रश्नों के उत्तर देने के लिए वैज्ञानिक रूप से बहुत शक्तिशाली मानी जाती है।

75. (A) I, IV, II, III
सांख्यिकीय विधियों का विकास वैज्ञानिक अनुसंधान की बढ़ती जटिलताओं के साथ हुआ है। कार्ल पियर्सन ने 1890 के दशक में प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध विकसित किया, जिसके बाद टेट्राकोरिक सहसंबंध आया। विलियम सीली गोसेट ने 1908 में टी-परीक्षण प्रस्तुत किया। इसके बाद, रोनाल्ड फिशर ने 1920 के दशक में विचरण का विश्लेषण या एनोवा की अवधारणा विकसित की। यह कालानुक्रमिक क्रम सांख्यिकी के क्रमिक विकास को दर्शाता है जिसने शोध विश्लेषण को सरल और सटीक बनाया है।

76. (B) 1% संभावना है कि शून्य परिकल्पना वास्तव में सत्य है।
जब कोई शोधकर्ता 0.01 के सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करता है, तो इसका अर्थ है कि प्राप्त परिणाम केवल संयोग से होने की संभावना बहुत कम है। सांख्यिकीय रूप से, केवल 1% जोखिम है कि शोधकर्ता ने एक सत्य शून्य परिकल्पना को गलत तरीके से अस्वीकार कर दिया है। यह निष्कर्ष की विश्वसनीयता को बढ़ाता है और सुझाव देता है कि प्रभाव वास्तव में मौजूद है। यह अधिक कड़ा मापदण्ड है जो टाइप 1 त्रुटि की संभावना को कम करने के लिए उपयोग किया जाता है।

77. (C) अंतर-समूह विचरण का अंतः-समूह विचरण से।
एनोवा में एफ-अनुपात यह निर्धारित करने के लिए प्रयुक्त मुख्य सांख्यिकी है कि क्या समूहों के माध्य के बीच कोई सार्थक अंतर है। यह समूहों के बीच के विचरण (जो उपचार के प्रभाव को दर्शाता है) और समूहों के भीतर के विचरण (जो याद्दच्छिक त्रुटि को दर्शाता है) के अनुपात की तुलना करता है। यदि उपचार का प्रभाव मजबूत है, तो अंतर-समूह विचरण अंतः-समूह विचरण की तुलना में काफी बड़ा होगा, जिससे एक उच्च एफ-मान प्राप्त होगा। यह सार्थक परिणाम शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने का आधार बनता है।

78. (D) -1.00 से +1.00
प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध गुणांक का मान हमेशा -1.00 और +1.00 के बीच की सीमा में रहता है। यहाँ +1.00 का मान एक पूर्ण सकारात्मक संबंध को दर्शाता है, जहाँ दोनों चर एक साथ बढ़ते हैं, जबकि -1.00 एक पूर्ण नकारात्मक संबंध को दर्शाता है, जहाँ एक के बढ़ने पर दूसरा घटता है। शून्य का मान इंगित करता है कि चरों के बीच कोई रैखिक संबंध नहीं है। इस मान की सीमा शोधकर्ताओं को संबंधों की दिशा और उनकी मजबूती को सटीक रूप से मापने में मदद करती है।

79. (A) आंतरिक वैधता
अनुसंधान में चरों को नियंत्रित करने का प्राथमिक लक्ष्य आंतरिक वैधता को मजबूत करना है। इसका अर्थ यह सुनिश्चित करना है कि आश्रित चर में देखे गए परिवर्तन केवल स्वतंत्र चर के हेरफेर के कारण ही हुए हैं, न कि किसी अवांछित बाहरी कारक के कारण। नियंत्रण के बिना, शोधकर्ता विश्वास के साथ कार्य-कारण संबंध का दावा नहीं कर सकता। यद्यपि नियंत्रण कभी-कभी बाह्य वैधता या वास्तविकता को कम कर सकता है, लेकिन यह प्रयोग की शुद्धता और वैज्ञानिक सटीकता के लिए अनिवार्य माना जाता है।

80. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण आमतौर पर स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण की तुलना में सांख्यिकीय रूप से अधिक शक्तिशाली होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि इसमें एक ही प्रतिभागियों का उपयोग किया जाता है, जिससे उनके बीच के व्यक्तिगत अंतर, जैसे बुद्धि या स्वभाव, परिणाम को प्रभावित नहीं कर पाते। यह त्रुटि विचरण को काफी कम कर देता है, जिससे शोधकर्ता के लिए स्वतंत्र चर के वास्तविक और सूक्ष्म प्रभावों को पहचानना आसान हो जाता है। अतः, यह विधि प्रयोग की संवेदनशीलता और निष्कर्षों की विश्वसनीयता को बढ़ाती है।

81. (B) लिंग (पुरुष/महिला) और अवसाद मापनी पर प्राप्तांक।
पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध का उपयोग तब किया जाता है जब एक चर वास्तविक रूप से द्विभाजित हो और दूसरा निरंतर हो। लिंग एक प्राकृतिक और वास्तविक द्विभाजित चर है क्योंकि इसमें केवल दो श्रेणियां (पुरुष और महिला) होती हैं। अवसाद मापनी पर प्राप्त प्राप्तांक एक निरंतर चर है। इसलिए, इन दोनों के बीच संबंध को मापने के लिए यह गुणांक सबसे उपयुक्त है। यह शोधकर्ताओं को यह समझने में मदद करता है कि क्या किसी विशेष समूह की सदस्यता दूसरे निरंतर चर के साथ व्यवस्थित रूप से जुड़ी हुई है।

82. (A) एक-प्रतिदर्श टी-परीक्षण
एक-प्रतिदर्श टी-परीक्षण का उपयोग तब किया जाता है जब शोधकर्ता यह जानना चाहता है कि क्या उसके प्रतिदर्श का माध्य एक ज्ञात या पूर्व-निर्धारित जनसंख्या माध्य से सांख्यिकीय रूप से भिन्न है। उदाहरण के लिए, यदि हम किसी विशेष वर्ग के छात्रों के बुद्धिलब्धि की तुलना राष्ट्रीय औसत से करना चाहते हैं, तो यह परीक्षण सबसे उपयुक्त होगा। इसमें केवल एक ही समूह का डेटा लिया जाता है और उसकी तुलना एक निश्चित मानक मूल्य से की जाती है। यह सांख्यिकीय विधि एकल समूह के प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए अत्यंत प्रभावी है।

83. (C) खंडन योग्य
वैज्ञानिक अनुसंधान की एक प्रमुख प्रकृति यह है कि इसके दावे और सिद्धांत खंडन योग्य होने चाहिए। इसका अर्थ है कि उन्हें इस प्रकार प्रस्तुत किया जाना चाहिए कि यदि वे गलत हों, तो उन्हें अवलोकन या प्रयोग के माध्यम से गलत सिद्ध किया जा सके। विज्ञान कभी भी पूर्ण या अपरिवर्तनीय सत्य का दावा नहीं करता, बल्कि यह निरंतर नए साक्ष्यों के लिए खुला रहता है। यदि कोई दावा खंडन योग्य नहीं है, तो उसे वैज्ञानिक नहीं माना जा सकता। यह प्रक्रिया विज्ञान की प्रगति और आत्म-सुधार सुनिश्चित करती है।

84. (D) सांख्यिकीय परीक्षण सीधे शून्य परिकल्पना को सिद्ध करने के लिए अभिकल्पित किए गए हैं।
सांख्यिकीय परीक्षणों की संरचना शून्य परिकल्पना को सिद्ध करने के बजाय उसे अस्वीकार करने की संभावना का आकलन करने के लिए की जाती है। विज्ञान में हम कभी भी यह नहीं कहते कि शून्य परिकल्पना "सत्य सिद्ध" हो गई है, बल्कि हम केवल इसे "अस्वीकार करने में विफल" रहते हैं। यह परिकल्पना 'कोई प्रभाव नहीं' के एक तटस्थ आधार के रूप में कार्य करती है। यदि साक्ष्य पर्याप्त रूप से मजबूत होते हैं, तो हम इसे केवल अस्वीकार करते हैं। यह सूक्ष्म अंतर वैज्ञानिक पद्धति के संदेहवादी और अनुभवजन्य दृष्टिकोण को दर्शाता है।

85. (C) स्मृति परीक्षण में याद की गई वस्तुओं की संख्या।
आश्रित चर वह परिणाम या प्रतिक्रिया है जिसे शोधकर्ता मापता है ताकि वह स्वतंत्र चर के हेरफेर के प्रभाव को देख सके। स्मृति अध्ययन में, प्रतिभागियों द्वारा याद की गई वस्तुओं

122. (A) अन्य शोधकर्ताओं को निष्कर्षों को सत्यापित करने की अनुमति देता है।
पुनरावृत्ति वैज्ञानिक पद्धति की एक अनिवार्य विशेषता है जो शोध परिणामों की विश्वसनीयता और मजबूती को बढ़ाती है। इसका अर्थ है कि यदि कोई अन्य शोधकर्ता समान पद्धति और परिस्थितियों का उपयोग करके अध्ययन को दोहराता है, तो उसे वही परिणाम प्राप्त होने चाहिए। यह प्रक्रिया विज्ञान में आत्म-सुधार की अनुमति देती है और किसी भी संभावित त्रुटि या धोखाधड़ी की पहचान करने में मदद करती है। बिना पुनरावृत्ति के, वैज्ञानिक निष्कर्षों को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि वे केवल संयोग मात्र हो सकते हैं।

123. (D) सतत
सेल्सियस में तापमान एक सतत चर का उदाहरण है क्योंकि यह किसी भी सीमा के भीतर कोई भी मान ले सकता है, जिसमें दशमलव मान भी शामिल हैं। इसे अंतराल पैमाने पर मापा जाता है क्योंकि तापमान के स्तरों के बीच का अंतर समान होता है। चूंकि तापमान का मान 20.5 या 20.55 डिग्री जैसे सूक्ष्म स्तरों पर भी व्यक्त किया जा सकता है, इसलिए यह निरंतरता की श्रेणी में आता है। सांख्यिकी में, ऐसे चरों का विश्लेषण अधिक परिष्कृत और विस्तृत गणनाओं की अनुमति देता है, जो वैज्ञानिक मापन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

124. (B) प्रतिचयन त्रुटि
प्रतिचयन त्रुटि उस अंतर को संदर्भित करती है जो प्रतिदर्श के सांख्यिकीय मान (जैसे प्रतिदर्श माध्य) और संपूर्ण जनसंख्या के वास्तविक मापदंड (जैसे जनसंख्या माध्य) के बीच स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है। यह त्रुटि इसलिए होती है क्योंकि एक प्रतिदर्श पूरी जनसंख्या का केवल एक छोटा हिस्सा होता है और वह कभी भी पूरी आबादी का 100% प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। यद्यपि इसे पूरी तरह से समाप्त नहीं किया जा सकता, लेकिन प्रतिदर्श के आकार को बढ़ाकर और यादृच्छिक चयन विधियों का उपयोग करके इसे काफी हद तक कम किया जा सकता है।

125. (B) केवल II और III
फैक्टोरियल अभिकल्प शोध की एक अत्यंत कुशल और शक्तिशाली तकनीक है। कथन 1 गलत है क्योंकि इसमें दो से अधिक स्वतंत्र चर भी हो सकते हैं, जैसे कि 2x2x2 अभिकल्प। इन अभिकल्पों का मुख्य लाभ यह है कि वे शोधकर्ता को चरों के बीच 'अन्योन्यक्रिया प्रभाव' का परीक्षण करने की अनूठी अनुमति देते हैं, जो यह बताता है कि एक कारक दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करता है। यह अलग-अलग प्रयोग करने की तुलना में समय और संसाधनों की बचत करता है और डेटा से अधिक सूक्ष्म और व्यापक जानकारी प्रदान करता है।

126. (D) टाइप I त्रुटि
टाइप 1 त्रुटि सांख्यिकीय निष्कर्ष की वह स्थिति है जहाँ शोधकर्ता गलती से एक शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर देता है जो वास्तव में सत्य थी। सरल शब्दों में, यह एक 'झूठी सकारात्मक' खोज है; शोधकर्ता को लगता है कि कोई प्रभाव या अंतर मौजूद है, जबकि वास्तव में ऐसा कुछ नहीं है। यह अक्सर तब होता है जब सार्थकता स्तर अल्फा बहुत उदार होता है या डेटा में यादृच्छिक उतार-चढ़ाव होते हैं। विज्ञान में इस त्रुटि को कम करना महत्वपूर्ण है ताकि गलत सिद्धांतों के निर्माण से बचा जा सके।

127. (A) शोधकर्ता आश्वस्त है कि स्वतंत्र चर के कारण ही आश्रित चर में परिवर्तन हुआ।
आंतरिक वैधता प्रयोग की वह गुणवत्ता है जो कार्य-कारण संबंधों की निश्चितता को दर्शाती है। यदि किसी अध्ययन में उच्च आंतरिक वैधता है, तो इसका अर्थ है कि शोधकर्ता ने बाहरी और भ्रामक चरों को इतनी अच्छी तरह से नियंत्रित किया है कि वह दावे के साथ कह सकता है कि देखा गया परिणाम केवल स्वतंत्र चर के हेरफेर का ही परिणाम है। यह प्रयोग की शुद्धता का मापदंड है। इसके बिना, शोध के निष्कर्ष संदिग्ध हो जाते हैं क्योंकि अन्य कारकों के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता है।

128. (B) समूह माध्य के बीच देखा गया अंतर संभवतः संयोग के कारण हो सकता है।
टी-परीक्षण में एक गैर-सार्थक परिणाम का अर्थ है कि समूहों के माध्य के बीच प्राप्त अंतर इतना छोटा है कि उसे सांख्यिकीय रूप से विश्वसनीय नहीं माना जा सकता। यह इंगित करता है कि पी-मान सार्थकता स्तर अल्फा से अधिक है। इसका अर्थ यह नहीं है कि दोनों समूह बिल्कुल समान हैं, बल्कि केवल यह है कि शोधकर्ता के पास शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य नहीं हैं। यह परिणाम यह सुझाव देता है कि देखा गया मामूली अंतर केवल प्रतिचयन त्रुटि या संयोग का परिणाम हो सकता है।

129. (B) पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध
पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध का उपयोग तब किया जाता है जब एक चर निरंतर हो (जैसे छात्र के प्राप्तांक) और दूसरा चर एक वास्तविक द्वंद्व हो (जैसे उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण)। यहाँ उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण होना एक स्पष्ट श्रेणीबद्ध विभाजन है जिसका उपयोग यह समझने के लिए किया जाता है कि निरंतर प्राप्तांकों और इस सफलता के मापदंड के बीच कितना गहरा संबंध है। यह गुणांक यह जानने में मदद करता है कि क्या उच्च प्राप्तांक वाले छात्र व्यवस्थित रूप से उत्तीर्ण श्रेणी में आते हैं। यह शैक्षिक मूल्यांकन और वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के विश्लेषण के लिए एक सटीक सांख्यिकीय उपकरण है।

130. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
सांख्यिकीय परीक्षणों का चुनाव शोध की रूपरेखा और डेटा के प्रकार पर निर्भर करता है। एक ही समूह के पूर्व और पश्चात के मापन के लिए युग्मित प्रतिदर्श टी-परीक्षण आदर्श है। तीन या अधिक व्यवसायों के माध्य की तुलना करने हेतु वन-वे एनोवा का उपयोग किया जाता है। दो निरंतर चरों, जैसे घंटों और प्रतिशत, के बीच संबंध जानने के लिए प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध सबसे सटीक है। अंत में, दो स्वतंत्र समूहों के दृष्टिकोण की तुलना स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण के माध्यम से की जाती है। यह मेल सांख्यिकीय विश्लेषण की शुद्धता सुनिश्चित करता है।

और टाइप 1 त्रुटि का जोखिम बढ़ सकता है। सांख्यिकीविद् अक्सर लेवेन के परीक्षण जैसे उपकरणों का उपयोग करके इस धारणा की जाँच करते हैं। यह सुनिश्चित करना निष्कर्षों की सांख्यिकीय वैधता के लिए आवश्यक है।

95. (A) केवल I और II
प्रयोगात्मक अनुसंधान में चरों की भूमिका स्पष्ट रूप से परिभाषित होती है। स्वतंत्र चर वह 'कारण' है जिसे शोधकर्ता सक्रिय रूप से बदलता है, जबकि आश्रित चर वह 'प्रभाव' या परिणाम है जिसे मापा जाता है। कथन 3 गलत है क्योंकि नियंत्रण चरों में हेरफेर नहीं किया जाता है, बल्कि उन्हें जानबूझकर 'स्थिर' रखा जाता है ताकि वे परिणामों को दूषित न करें। इस सूक्ष्म अंतर को समझना वैज्ञानिक प्रयोग की शुद्धता और आंतरिक वैधता को बनाए रखने के लिए अनिवार्य है।

96. (B) चक्रीय और स्वतः-सुधारात्मक
वैज्ञानिक पद्धति कोई एक बार की जाने वाली घटना नहीं है, बल्कि यह एक निरंतर चलने वाला चक्र है। इसमें अवलोकन, परिकल्पना निर्माण, डेटा संग्रह और विश्लेषण की प्रक्रिया बार-बार दोहराई जाती है। यदि नए साक्ष्य पुरानी परिकल्पना के विरुद्ध जाते हैं, तो सिद्धांतों में संशोधन किया जाता है। यह 'स्वतः-सुधारात्मक' प्रकृति ही विज्ञान को प्रगतिशील और विश्वसनीय बनाती है। यह किसी भी निष्कर्ष को अंतिम नहीं मानती, बल्कि ज्ञान के विस्तार और त्रुटियों के सुधार के लिए हमेशा नए अवसरों की खोज करती रहती है।

97. (B) एक गैर-दिशात्मक वैकल्पिक परिकल्पना
गैर-दिशात्मक वैकल्पिक परिकल्पना केवल यह बताती है कि चरों के बीच एक अंतर मौजूद होगा, लेकिन वह उस अंतर की प्रकृति या दिशा स्पष्ट नहीं करती। यहाँ केवल यह कहा गया है कि प्राप्तांक "भिन्न होंगे", यह नहीं बताया गया कि किसके प्राप्तांक अधिक होंगे या कम। इसे 'दो-पुच्छीय' परिकल्पना भी कहा जाता है। यह तब उपयोगी होती है जब शोधकर्ता के पास यह मानने का पर्याप्त आधार नहीं होता कि प्रभाव किस दिशा में जाएगा, जिससे शोध अधिक निष्पक्ष रहता है।

98. (A) अध्ययन के लिए चुनी गई जनसंख्या का एक उपसमूह।
प्रतिदर्श जनसंख्या का एक छोटा हिस्सा होता है जिसे वास्तविक शोध और डेटा संग्रह के लिए चुना जाता है। चूंकि पूरी जनसंख्या का अध्ययन करना अक्सर व्यावहारिक रूप से असंभव या अत्यधिक खर्चीला होता है, इसलिए शोधकर्ता प्रतिदर्श का उपयोग करते हैं। एक अच्छे प्रतिदर्श की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह जनसंख्या का 'प्रतिनिधि' होना चाहिए, ताकि उससे प्राप्त निष्कर्षों को पूरी आबादी पर विश्वास के साथ लागू किया जा सके। प्रतिदर्श का चयन शोध की सटीकता और वैधता को सीधे प्रभावित करता है।

99. (C) शून्य परिकल्पना के वास्तव में सत्य होने पर उसे अस्वीकार करने का 5% जोखिम।
0.05 का अल्फा स्तर सांख्यिकीय निर्णय लेने में शोधकर्ता द्वारा स्वीकार किए गए जोखिम की सीमा को दर्शाता है। इसका अर्थ है कि यदि शोधकर्ता शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करता है, तो 5% संभावना है कि वह गलत है और वास्तव में कोई प्रभाव नहीं था। यह सार्थकता की कसौटी के रूप में कार्य करता है। दूसरे शब्दों में, परिणाम को तब 'सार्थक' माना जाता है जब उसके संयोग से होने की संभावना 5% या उससे कम हो। यह मानक वैज्ञानिक अनुसंधान में निष्कर्षों की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए स्थापित किया गया है।

100. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
शोध के उद्देश्यों के अनुसार सांख्यिकीय विधियों का चयन किया जाता है। विश्राम अभ्यास के पहले और बाद के प्राप्तांकों के लिए युग्मित प्रतिदर्श टी-परीक्षण उपयुक्त है। तीन शिक्षण विधियों की तुलना वन-वे एनोवा द्वारा की जाती है। लिंग और प्राप्तांक के बीच संबंध जानने हेतु पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध का उपयोग होता है। दो स्वतंत्र समूहों के औसत की तुलना स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण से की जाती है। ये सभी परीक्षण डेटा के विभिन्न प्रकारों और शोध संरचनाओं के लिए विशेष रूप से अभिकल्पित किए गए हैं, जो सटीक परिणाम प्रदान करते हैं।

101. (C) एक स्वतंत्र चर का हेरफेर और यादृच्छिक आवंटन।
वास्तविक प्रयोग की पहचान उसके उच्च स्तर के नियंत्रण और विशिष्ट संरचना से होती है। इसमें शोधकर्ता सक्रिय रूप से कम से कम एक स्वतंत्र चर में हेरफेर करता है और यह सुनिश्चित करता है कि प्रतिभागियों को समूहों में पूरी तरह से यादृच्छिक तरीके से आवंटित किया जाए। यादृच्छिक आवंटन समूहों के बीच पहले से मौजूद अंतरों को खत्म करने में मदद करता है। यह प्रक्रिया ही शोधकर्ता को चरों के बीच निश्चित कार्य-कारण संबंध स्थापित करने की शक्ति प्रदान करती है, जो किसी भी वैज्ञानिक जांच का सर्वोच्च लक्ष्य है।

102. (B) 2
फैक्टोरियल अभिकल्प के नामकरण में संख्याओं की संख्या स्वतंत्र चरों की कुल संख्या को दर्शाती है। एक 3x3 अभिकल्प में दो संख्याएँ हैं, जिसका अर्थ है कि यहाँ कुल दो स्वतंत्र चर शामिल हैं। प्रत्येक संख्या उस विशेष चर के स्तरों को दर्शाती है, अर्थात यहाँ दोनों चरों के तीन-तीन स्तर हैं। यह अभिकल्प जटिल शोध में अत्यंत उपयोगी है क्योंकि यह शोधकर्ता को एक साथ दो अलग-अलग कारकों के मुख्य प्रभावों और उनकी आपसी अन्योन्यक्रियाओं का सूक्ष्मता से विश्लेषण करने की सुविधा प्रदान करता है।

103. (D) शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहें।
जब सांख्यिकीय विश्लेषण में पी-मान अल्फा स्तर से अधिक होता है, तो इसका अर्थ है कि प्राप्त अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। ऐसी स्थिति में, शोधकर्ता शून्य परिकल्पना को "अस्वीकार करने में विफल" रहता है। विज्ञान में "शून्य परिकल्पना स्वीकार करें" कहना तकनीकी रूप से गलत है, क्योंकि हम उसे सिद्ध नहीं कर रहे हैं, बल्कि केवल उसे गलत साबित करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य नहीं पा सके हैं। यह सूक्ष्म तार्किक अंतर वैज्ञानिक पद्धति की निष्पक्षता और सांख्यिकीय निष्कर्षों की सावधानी को दर्शाता है।

104. (A) बाइसीरियल
बाइसीरियल सहसंबंध गुणांक विशेष रूप से उन स्थितियों के लिए अभिकल्पित किया गया है जहाँ एक चर निरंतर होता है और दूसरे चर को कृत्रिम रूप से केवल दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है। यहाँ 'कृत्रिम' का अर्थ है कि वह चर वास्तव में निरंतर प्रकृति का है, लेकिन शोधकर्ता ने इसे सुविधानुसार द्विभाजित किया है। यह पद्धति यह मानती है कि द्विभाजित चर का अंतर्निहित वितरण सामान्य है। यह तकनीक शैक्षिक परीक्षणों और पद विश्लेषण में बहुत उपयोगी है जहाँ निरंतर योग्यताओं को श्रेणीबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

105. (C) उन प्रतिभागियों की संख्या जो कुछ मापदंडों के अनुमान के बाद स्वतंत्र हैं।
सांख्यिकी में स्वतंत्रता की कोटि उन मानों की संख्या को संदर्भित करती है जो किसी सांख्यिकीय गणना में स्वतंत्र रूप से भिन्न हो सकते हैं। जब हम किसी प्रतिदर्श के आधार पर जनसंख्या के मापदंडों का अनुमान लगाते हैं, तो हम डेटा पर कुछ प्रतिबंध लगाते हैं, जिससे कुछ मान अपनी स्वतंत्रता खो देते हैं। उदाहरण के लिए, टी-परीक्षण में, यदि माध्य ज्ञात है, तो अंतिम मान को छोड़कर सभी मान स्वतंत्र होते हैं। यह अवधारणा सांख्यिकीय परीक्षणों की सटीकता और उनके वितरण को सही ढंग से परिभाषित करने के लिए मौलिक है।

106. (A) हठधर्मिता
वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रकृति वस्तुनिष्ठता, अनुभववाद और पुनरावृत्ति पर आधारित होती है। इसमें तथ्यों को बिना किसी व्यक्तिगत पूर्वाग्रह के देखा जाता है और केवल उन्हीं दावों को स्वीकार किया जाता है जिन्हें प्रत्यक्ष अवलोकन या प्रयोग से सिद्ध किया जा सके। इसके विपरीत, 'हठधर्मिता' या बिना प्रमाण के किसी विचार पर अडिग रहना विज्ञान के मूल सिद्धांतों के खिलाफ है। विज्ञान निरंतर संदेह, जिज्ञासा और संशोधन की प्रक्रिया है। इसलिए, हठधर्मिता वैज्ञानिक जांच का हिस्सा नहीं हो सकती, बल्कि यह उसके मार्ग में एक बाधा है।

107. (D) दिशात्मक परिकल्पना
दिशात्मक परिकल्पना वह है जिसमें शोधकर्ता न केवल यह बताता है कि चरों के बीच संबंध होगा, बल्कि वह उस संबंध की विशिष्ट दिशा की भी भविष्यवाणी करता है। यहाँ यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि दवा स्मृति में "सुधार" करेगी, जो एक सकारात्मक दिशा का संकेत है। ऐसी परिकल्पनाएं आमतौर पर पिछले अध्ययनों या स्थापित सिद्धांतों पर आधारित होती हैं। सांख्यिकीय रूप से, इसके परीक्षण के लिए एक-पुच्छीय परीक्षण का उपयोग किया जाता है, जो परिणाम को अधिक केंद्रित और उद्देश्यपूर्ण बनाता है।

108. (B) श्रेणीबद्ध
श्रेणीबद्ध चर वे होते हैं जो डेटा को विभिन्न समूहों या श्रेणियों में विभाजित करते हैं जिनमें कोई स्वाभाविक मात्रात्मक क्रम नहीं होता है। लिंग (पुरुष और महिला) इसका एक आदर्श उदाहरण है। यहाँ उपयोग किए गए अंक 1 और 2 केवल पहचान या लेबल के रूप में कार्य करते हैं; वे किसी मात्रा को नहीं दर्शाते और न ही उन पर गणितीय संक्रियाएं की जा सकती हैं। ऐसे चरों को नाममात्र चर भी कहा जाता है। इनका विश्लेषण अक्सर आवृत्तियों या काई-वर्ग जैसे परीक्षणों के माध्यम से किया जाता है।

109. (C) स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन
स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन एक ऐसी तकनीक है जहाँ जनसंख्या को विभिन्न सजातीय उपसमूहों या परतों में विभाजित किया जाता है, जैसे कि आय, शिक्षा या आयु। इसके बाद, प्रत्येक परत से यादृच्छिक रूप से प्रतिभागियों का चयन किया जाता है। यह विधि सुनिश्चित करती है कि अत्यंत विषम जनसंख्या में भी प्रत्येक महत्वपूर्ण उपसमूह का प्रतिदर्श में संतुलित प्रतिनिधित्व हो। यह प्रतिचयन त्रुटि को कम करती है और शोध के निष्कर्षों को अधिक विश्वसनीय और व्यापक बनाती है। यह विशेष रूप से तब उपयोगी है जब कुछ छोटे लेकिन महत्वपूर्ण समूह अध्ययन के लिए आवश्यक हों।

110. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रयोगात्मक अनुसंधान में बाहरी चरों का नियंत्रण एक अनिवार्य आवश्यकता है क्योंकि ये कारक स्वतंत्र चर के प्रभाव को धुंधला कर सकते हैं। यदि कोई बाहरी चर, जैसे कि शोर या थकान, प्रयोग के दौरान अनियंत्रित रहता है, तो वह 'भ्रामक चर' बन जाता है। ऐसी स्थिति में, शोधकर्ता यह निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि परिणाम वास्तव में उसके उपचार के कारण आए हैं या इन बाहरी कारणों से। अतः, आंतरिक वैधता और कार्य-कारण निष्कर्षों की शुद्धता बनाए रखने के लिए इन चरों का नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है।

111. (A) एक गलत शून्य परिकल्पना को सही ढंग से अस्वीकार करने की प्रायिकता।
सांख्यिकीय परीक्षण की शक्ति उस क्षमता को दर्शाती है जिसके द्वारा एक शोधकर्ता डेटा में वास्तविक प्रभाव या अंतर की पहचान कर सकता है। गणितीय रूप से, यह 1 - बीटा के बराबर होती है, जहाँ बीटा टाइप 2 त्रुटि की संभावना है। एक शक्तिशाली परीक्षण वह है जो तब भी सार्थक परिणाम देता है जब प्रभाव छोटा हो। शक्ति को बढ़ाने के लिए शोधकर्ता आमतौर पर प्रतिदर्श के आकार को बढ़ाते हैं, अधिक सटीक मापन उपकरणों का उपयोग करते हैं और प्रयोगात्मक नियंत्रण को मजबूत करते हैं।

112. (B) कार्य-कारण
प्रयोगात्मक अभिकल्प का प्राथमिक और सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य चरों के बीच निश्चित कार्य-कारण संबंधों का निर्धारण करना है। यह अन्य शोध विधियों से अलग है क्योंकि इसमें शोधकर्ता सक्रिय रूप से एक चर (स्वतंत्र चर) में बदलाव करता है और यह देखता है कि क्या वह बदलाव दूसरे चर (आश्रित चर) में परिवर्तन लाता है। इस प्रक्रिया में बाहरी कारकों को नियंत्रित किया जाता है ताकि निष्कर्षों की शुद्धता सुनिश्चित हो सके। संक्षेप में, प्रयोग हमें यह बताने की अनुमति देता है कि 'क' के कारण 'ख' घटित हुआ है।

113. (B) 2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प
इस अध्ययन में दो स्वतंत्र चर शामिल हैं: 'नींद की कमी' और 'कैफीन का सेवन'। यदि हम मान लें कि प्रत्येक चर के दो स्तर हैं (जैसे नींद की कमी बनाम सामान्य नींद, और कैफीन बनाम बिना कैफीन), तो यह एक 2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प बनता है। यह शोध संरचना शोधकर्ता को न केवल प्रत्येक कारक के व्यक्तिगत प्रभाव को मापने की अनुमति देती है, बल्कि यह भी दिखाती है कि दोनों चर एक साथ मिलकर प्रतिक्रिया समय को कैसे प्रभावित करते हैं। यह जटिल मानवीय व्यवहारों के अध्ययन के लिए बहुत प्रभावी है।

114. (A) जैसे-जैसे A बढ़ता है, B घटता है।
सहसंबंध गुणांक में ऋणात्मक चिह्न एक व्युत्क्रम या विपरीत संबंध को इंगित करता है। इसका अर्थ है कि चरों के बीच संबंध की दिशा विपरीत है; जब एक चर का मान बढ़ता है, तो दूसरे चर का मान कम होने लगता है। यहाँ 0.70 का मान यह भी दर्शाता है कि यह संबंध काफी मजबूत है क्योंकि यह -1.00 के निकट है। यह सांख्यिकीय माप शोधकर्ताओं को यह समझने में मदद करता है कि दो चर एक-दूसरे के विरुद्ध कैसे व्यवहार करते हैं, जो भविष्यवाणी करने के लिए उपयोगी है।

115. (C) दो अलग-अलग समय पर विषयों के एक ही समूह से।
युग्मित-प्रतिदर्श टी-परीक्षण का उपयोग तब किया जाता है जब शोधकर्ता एक ही प्रतिभागियों के समूह के माध्य की तुलना दो अलग-अलग स्थितियों या समय अंतरालों में करना चाहता है। इसका सबसे आम उदाहरण 'पूर्व-परीक्षण' और 'पश्चात-परीक्षण' की तुलना करना है। चूंकि डेटा के दोनों सेट एक ही व्यक्तियों से आते हैं, इसलिए वे सांख्यिकीय रूप से 'संबंधित' होते हैं। यह विधि प्रतिभागियों के व्यक्तिगत अंतरों से होने वाले विचरण को कम करती है, जिससे सांख्यिकीय निष्कर्षों की शक्ति और संवेदनशीलता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

116. (D) इसमें स्वतंत्र चर का हेरफेर शामिल है लेकिन यादृच्छिक आवंटन का अभाव है।
अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प वास्तविक प्रयोग के समान होते हैं क्योंकि उनमें भी शोधकर्ता स्वतंत्र चर में सक्रिय रूप से हेरफेर करता है। हालांकि, इनकी मुख्य सीमा यह है कि इनमें प्रतिभागियों को प्रयोगात्मक और नियंत्रण समूहों में यादृच्छिक रूप से आवंटित करना संभव नहीं होता है। अक्सर इनमें पहले से मौजूद समूहों, जैसे स्कूल की कक्षाओं या कार्य इकाइयों, का उपयोग किया जाता है। हालांकि यह बाह्य वैधता को बढ़ाता है, लेकिन यादृच्छिकीकरण की कमी के कारण कार्य-कारण संबंधों का दावा करना वास्तविक प्रयोग की तुलना में थोड़ा कमजोर होता है।

117. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
टू-वे एनोवा में मुख्य प्रभाव और अन्योन्यक्रिया प्रभाव सांख्यिकीय रूप से स्वतंत्र होते हैं। इसका अर्थ है कि यह पूरी तरह संभव है कि स्वतंत्र चर व्यक्तिगत रूप से सार्थक प्रभाव डालें लेकिन उनके बीच कोई अन्योन्यक्रिया न हो। इसके विपरीत, ऐसी स्थितियाँ भी हो सकती हैं जहाँ व्यक्तिगत चर का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव न हो, लेकिन वे एक विशेष संयोजन में मिलकर एक सार्थक परिणाम उत्पन्न करें। यह लचीलापन ही एनोवा को जटिल डेटा विश्लेषण के लिए एक बहुत ही शक्तिशाली और व्यापक सांख्यिकीय उपकरण बनाता है।

118. (B) प्रतिदर्श आकार के बावजूद यह एक एकल, निश्चित वितरण है।
टी-वितरण वास्तव में वितरणों का एक पूरा परिवार है, न कि एक एकल निश्चित वक्र। इसकी आकृति पूरी तरह से 'स्वतंत्रता की कोटि' पर निर्भर करती है, जो सीधे प्रतिदर्श के आकार से जुड़ी होती है। छोटे प्रतिदर्शों के लिए, टी-वितरण की पुच्छें सामान्य वितरण की तुलना में अधिक फैली हुई और भारी होती हैं। जैसे-जैसे प्रतिदर्श का आकार बढ़ता है और स्वतंत्रता की कोटि बढ़ती जाती है, टी-वितरण धीरे-धीरे मानक सामान्य वितरण के समान होता जाता है। यह गुण छोटे प्रतिदर्श सांख्यिकी के लिए इसे अनिवार्य बनाता है।

119. (D) एनोवा
जब स्वतंत्र चर श्रेणीबद्ध हो और उसमें दो से अधिक समूह हों (जैसे यहाँ वैवाहिक स्थिति की तीन श्रेणियां हैं) और आश्रित चर निरंतर हो, तो एनोवा सबसे उपयुक्त परीक्षण है। टी-परीक्षण केवल दो समूहों की तुलना तक सीमित है, जबकि एनोवा तीन या अधिक समूहों के माध्य के बीच के अंतर का एक साथ विश्लेषण कर सकता है। यह विधि टाइप 1 त्रुटि के संचयी जोखिम को रोकने में मदद करती है जो कई बार टी-परीक्षण करने से उत्पन्न हो सकता है। यह सामाजिक विज्ञान में बहुत व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

120. (A) दवा लेने से पहले और बाद में मरीजों के रक्तचाप की तुलना करना।
संबंधित प्रतिदर्श वे होते हैं जहाँ डेटा के दो समूहों के बीच एक सीधा और व्यवस्थित संबंध होता है। "पूर्व और पश्चात" का अध्ययन इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण है क्योंकि प्रत्येक मरीज का अपना रक्तचाप माप दूसरे माप से सीधे जुड़ा होता है। चूंकि डेटा का स्रोत एक ही व्यक्ति है, इसलिए व्यक्तिगत अंतरों का प्रभाव नियंत्रित रहता है। अन्य विकल्पों में स्वतंत्र समूह शामिल हैं जहाँ प्रतिभागियों के बीच कोई संबंध नहीं है। संबंधित प्रतिदर्शों का उपयोग सांख्यिकीय परीक्षणों की संवेदनशीलता और सटीकता को बढ़ाने में बहुत सहायक होता है।

121. (C) द्विभाजित चर की प्रकृति।
बाइसीरियल और पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध के बीच मुख्य अंतर द्विभाजित चर के प्रकार में निहित है। पॉइंट-बाइसीरियल का उपयोग तब होता है जब द्वंद्व 'वास्तविक' या 'प्राकृतिक' हो, जैसे लिंग। बाइसीरियल सहसंबंध तब उपयोग किया जाता है जब द्वंद्व 'कृत्रिम' हो, जहाँ एक निरंतर चर को किसी कट-ऑफ के आधार पर श्रेणियों में बांटा गया हो। यह चुनाव सांख्यिकीय गणना की सटीकता और परिणामों की व्याख्या को सीधे प्रभावित करता है। इन दोनों का उपयोग श्रेणीबद्ध और निरंतर डेटा के बीच संबंधों को समझने के लिए किया जाता है।

की संख्या वह डेटा है जो स्वतंत्र चर, जैसे कि दवा या थकान, के प्रभाव में बदल सकता है। यह प्रयोग का 'प्रभाव' पक्ष है। शोधकर्ता यह देखता है कि स्वतंत्र चर में परिवर्तन करने से इस माप में क्या बदलाव आता है। यह वैज्ञानिक जांच का मुख्य केंद्र बिंदु होता है।

86. (B) कोटा प्रतिचयन
कोटा प्रतिचयन एक गैर-प्रायिकता प्रतिचयन विधि है जिसमें शोधकर्ता जनसंख्या को कुछ श्रेणियों में विभाजित करता है और फिर प्रत्येक श्रेणी से तब तक प्रतिभागियों का चयन करता है जब तक कि एक निश्चित संख्या या 'कोटा' पूरा न हो जाए। यहाँ प्रत्येक वर्ष के 50 छात्रों को चुनना इसी का उदाहरण है। यह स्तरित प्रतिचयन के समान दिखता है, लेकिन इसमें यादृच्छिक चयन का अभाव होता है; शोधकर्ता सुविधा के आधार पर अपनी पसंद से प्रतिभागियों को चुनता है। यह विधि त्वरित और सस्ती है लेकिन इसमें प्रतिनिधित्व की कमी हो सकती है।

87. (D) एक न्यायाधीश द्वारा निर्दोष व्यक्ति को दोषी ठहराना।
टाइप 1 त्रुटि सांख्यिकी में तब होती है जब एक शोधकर्ता सत्य शून्य परिकल्पना को गलत तरीके से अस्वीकार कर देता है। न्यायपालिका के संदर्भ में, यह एक निर्दोष व्यक्ति को अपराधी घोषित करने के समान है, क्योंकि यहाँ 'दोषी नहीं' होने की शून्य परिकल्पना को गलत तरीके से खारिज कर दिया गया है। यह एक गंभीर त्रुटि मानी जाती है क्योंकि यह झूठे दावों को जन्म देती है। शोधकर्ता अल्फा स्तर को कम करके इस प्रकार की गलतियों को कम करने और अपने निष्कर्षों की शुद्धता बनाए रखने का प्रयास करते हैं।

88. (A) एक पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प
पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प अनुसंधान का सबसे सरल और कम नियंत्रित रूप है, जिसमें अक्सर केवल एक ही समूह का अध्ययन किया जाता है। "एक-समूह पूर्व-परीक्षण पश्चात-परीक्षण" अभिकल्प इसका प्रमुख उदाहरण है, जहाँ उपचार से पहले और बाद में माप लिए जाते हैं। चूँकि इसमें नियंत्रण समूह का अभाव होता है, इसलिए यह बाहरी कारकों, जैसे इतिहास या परिपक्वता, के प्रभाव को नियंत्रित नहीं कर पाता। यह डिजाइन अक्सर शुरुआती शोध या पायलट अध्ययनों में उपयोग किया जाता है जहाँ पूर्ण प्रयोगात्मक नियंत्रण संभव नहीं होता है।

89. (C) अन्य स्वतंत्र चरों की उपेक्षा करते हुए, आश्रित चर पर एक स्वतंत्र चर का समग्र प्रभाव।
फैक्टोरियल अभिकल्प में 'मुख्य प्रभाव' एक अकेले स्वतंत्र चर का आश्रित चर पर पड़ने वाले औसत प्रभाव को दर्शाता है। यह अन्य स्वतंत्र चरों की सभी स्थितियों के औसत के आधार पर गणना किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि हम स्मृति पर कैफीन और नींद के प्रभाव का अध्ययन कर रहे हैं, तो केवल कैफीन का प्रभाव (नींद की परवाह किए बिना) मुख्य प्रभाव कहलाएगा। यह शोधकर्ता को प्रत्येक कारक के व्यक्तिगत योगदान को समझने में मदद करता है, भले ही प्रयोग में कई जटिल चर शामिल हों।

90. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
सांख्यिकी में सहसंबंध और कार्य-कारण के बीच एक बहुत महत्वपूर्ण अंतर है। सहसंबंध केवल यह बताता है कि दो चर एक साथ बदल रहे हैं, लेकिन यह यह सिद्ध नहीं करता कि एक चर दूसरे को उत्पन्न कर रहा है। कभी-कभी कोई तीसरा अज्ञात चर दोनों को प्रभावित कर सकता है। उदाहरण के लिए, आइसक्रीम की बिक्री और डूबने की घटनाओं में सकारात्मक सहसंबंध हो सकता है, लेकिन इसका कारण गर्मी है, आइसक्रीम नहीं। कार्य-कारण स्थापित करने के लिए नियंत्रित प्रयोग अनिवार्य हैं, केवल सहसंबंध पर्याप्त नहीं है।

91. (D) एक या दो समूहों के माध्य की तुलना करना।
टी-परीक्षण एक अनुमानात्मक सांख्यिकीय उपकरण है जिसका प्राथमिक उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि क्या दो समूहों के माध्य के बीच देखा गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इसका उपयोग एक प्रतिदर्श के माध्य की जनसंख्या माध्य से तुलना करने या दो स्वतंत्र या संबंधित समूहों की परस्पर तुलना करने के लिए किया जाता है। यह शोधकर्ताओं को यह निर्णय लेने में मदद करता है कि क्या प्राप्त परिणाम स्वतंत्र चर के वास्तविक प्रभाव को दर्शाते हैं या केवल यादृच्छिक प्रतिचयन त्रुटि का परिणाम हैं।

92. (B) दो परीक्षाओं में उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण होने के बीच संबंध मापते समय, यह मानते हुए कि दोनों क्षमताएं सतत हैं।
टेट्राकोरिक सहसंबंध का उपयोग तब किया जाता है जब दोनों चरों को कृत्रिम रूप से द्विभाजित किया गया हो, लेकिन उनके पीछे की अंतर्निहित प्रकृति निरंतर हो। परीक्षा में 'पास' या 'फेल' होना द्विभाजित है, लेकिन विद्यार्थी की क्षमता या ज्ञान वास्तव में निरंतर होता है। यह गुणांक यह मानकर गणना करता है कि ये दोनों क्षमताएं जनसंख्या में सामान्य रूप से वितरित हैं। यह तकनीक शैक्षिक अनुसंधान में तब बहुत उपयोगी होती है जब हम श्रेणीबद्ध डेटा के माध्यम से सूक्ष्म संबंधों को समझने का प्रयास करते हैं।

93. (C) यह निर्धारित करने के लिए पोस्ट-हॉक परीक्षण करना कि कौन से विशिष्ट समूह माध्य भिन्न हैं।
वन-वे एनोवा का एक सार्थक एफ-अनुपात केवल यह बताता है कि कम से कम दो समूहों के माध्य के बीच कहीं न कहीं महत्वपूर्ण अंतर है। हालांकि, यह यह स्पष्ट नहीं करता कि वे विशिष्ट समूह कौन से हैं। इस रहस्य को सुलझाने के लिए शोधकर्ता 'पोस्ट-हॉक' परीक्षण, जैसे ट्यूकी या शेफ़े परीक्षण, करते हैं। ये परीक्षण समूहों के सभी संभावित जोड़ों की तुलना करते हैं और वास्तविक अंतरों की पहचान करते हैं। यह प्रक्रिया एनोवा के परिणामों की विस्तृत और सटीक व्याख्या के लिए अनिवार्य है।

94. (D) दो समूहों के विचरण लगभग समान होने चाहिए।
स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण के उपयोग के लिए 'विचरण की समरूपता' एक अत्यंत महत्वपूर्ण धारणा है। इसका अर्थ है कि दोनों समूहों के प्राप्तांकों का फैलाव या विचरण लगभग एक जैसा होना चाहिए। यदि समूहों के विचरण में बहुत अधिक अंतर होता है, तो टी-परीक्षण के परिणाम भ्रामक हो सकते हैं

131. (C) अच्छे लोगों के जीवन के अनुभव बुरे लोगों की तुलना में अधिक सकारात्मक होते हैं।
एक वैज्ञानिक परिकल्पना को परीक्षण योग्य होने के लिए स्पष्ट और मापने योग्य शब्दों में परिभाषित किया जाना चाहिए। यहाँ "अच्छे" और "बुरे" लोग पूरी तरह से व्यक्तिपरक और नैतिक शब्द हैं, जिन्हें वस्तुनिष्ठ रूप से परिभाषित या मापा नहीं जा सकता है। विज्ञान केवल उन्हीं चरों के साथ कार्य करता है जिनका अवलोकन और मापन किया जा सके। इसके विपरीत, व्यायाम, तनाव, दवा, रक्तचाप और ग्रेड जैसी अवधारणाएं मापने योग्य हैं। चूंकि नैतिकता के इन गुणों को संक्रियात्मक रूप से परिभाषित करना कठिन है, इसलिए यह परिकल्पना वैज्ञानिक परीक्षण के दायरे से बाहर है।

132. (D) स्थिरता
स्थिरता प्रयोगात्मक नियंत्रण की एक विधि है जहाँ शोधकर्ता यह सुनिश्चित करता है कि एक संभावित बाहरी चर पूरे प्रयोग के दौरान सभी स्थितियों और प्रतिभागियों के लिए एक समान रहे। उदाहरण के लिए, यदि कमरे का तापमान परिणाम को प्रभावित कर सकता है, तो उसे एक निश्चित डिग्री पर स्थिर रखा जाता है। यह विधि चरों के प्रभाव को समाप्त करने का सबसे सरल तरीका है। यद्यपि यह प्रयोग की आंतरिक वैधता को बढ़ाती है, लेकिन यह कभी-कभी बाह्य वैधता को कम कर सकती है क्योंकि वास्तविक दुनिया में परिस्थितियाँ इतनी स्थिर नहीं होती हैं।

133. (C) सोद्देश्य प्रतिचयन
सोद्देश्य प्रतिचयन एक गैर-प्रायिकता तकनीक है जहाँ शोधकर्ता अपने ज्ञान और निर्णय के आधार पर उन विशिष्ट प्रतिभागियों को चुनता है जो उसके अध्ययन के उद्देश्य के लिए सबसे उपयुक्त लगते हैं। इसमें यादृच्छिक चयन का अभाव होता है, इसलिए जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य के पास चुने जाने का अवसर नहीं होता है। यह अक्सर गुणात्मक शोध या उन स्थितियों में उपयोग किया जाता है जहाँ विशेषज्ञ जानकारी की आवश्यकता होती है। चूंकि यह प्रतिनिधि नहीं होता, इसलिए इसके निष्कर्षों को पूरी जनसंख्या पर लागू करना सांख्यिकीय रूप से उचित नहीं माना जाता है।

134. (B) टाइप I त्रुटि का कम जोखिम और टाइप II त्रुटि का उच्च जोखिम।
जब कोई शोधकर्ता अल्फा स्तर को 0.05 से घटाकर 0.01 करता है, तो वह शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने के लिए अधिक कड़े मापदंड अपनाता है। इससे टाइप 1 त्रुटि (सत्य को गलत मानना) का जोखिम तो कम हो जाता है, लेकिन टाइप 2 त्रुटि (गलत को सत्य मानना) की संभावना बढ़ जाती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि परीक्षण अब कम संवेदनशील हो जाता है और केवल बहुत मजबूत साक्ष्यों को ही 'सार्थक' मानता है, जिससे वास्तविक लेकिन छोटे प्रभाव छूट सकते हैं। यह शोध की शुद्धता और शक्ति के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता है।

135. (D) पूर्व-प्रयोगात्मक
वन-शॉट केस स्टडी पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प का सबसे बुनियादी और कमजोर रूप है। इसमें शोधकर्ता एक समूह को उपचार देता है और फिर उसके प्रभाव को मापता है। चूँकि इसमें न तो उपचार से पहले का माप होता है और न ही कोई नियंत्रण समूह, इसलिए यह बताना असंभव है कि देखा गया परिणाम वास्तव में उपचार के कारण आया है या किसी अन्य बाहरी कारक के कारण। इसमें आंतरिक वैधता का अत्यधिक अभाव होता है, जिसके कारण इसे वैज्ञानिक रूप से बहुत विश्वसनीय नहीं माना जाता है।

136. (A) तीन
टू-वे एनोवा में शोधकर्ता तीन मुख्य सांख्यिकीय परिकल्पनाओं का परीक्षण करता, जिसके लिए तीन अलग-अलग एफ-अनुपातों की गणना की जाती है। इनमें से पहला एफ-अनुपात पहले स्वतंत्र चर के 'मुख्य प्रभाव' के लिए होता है, दूसरा दूसरे स्वतंत्र चर के 'मुख्य प्रभाव' के लिए, और तीसरा दोनों चरों के बीच 'अन्योन्यक्रिया प्रभाव' के लिए होता है। यह व्यापक दृष्टिकोण शोधकर्ता को यह समझने में मदद करता है कि कारक अलग-अलग कैसे कार्य करते हैं और वे एक-दूसरे के प्रभाव को कैसे संशोधित करते हैं, जो प्रयोग के सूचनात्मक मूल्य को बढ़ाता है।

137. (C) यह कार्य-कारण संबंध स्थापित नहीं कर सकती है।
सहसंबंधी पद्धति की सबसे बड़ी सीमा यह है कि यह केवल दो चरों के बीच जुड़ाव की मजबूती और दिशा को दर्शाती है, लेकिन यह यह सिद्ध नहीं करती कि एक चर दूसरे को उत्पन्न कर रहा है। भले ही दो चरों के बीच बहुत मजबूत संबंध हो, फिर भी कोई तीसरा अज्ञात चर उन दोनों को प्रभावित कर सकता है, जिसे 'तीसरे चर की समस्या' कहा जाता है। कार्य-कारण स्थापित करने के लिए नियंत्रित प्रयोगात्मक हेरफेर अनिवार्य है। अतः, सहसंबंध का उपयोग भविष्यवाणी के लिए तो किया जा सकता है, लेकिन व्याख्या के लिए सावधानी आवश्यक है।

138. (A) बुद्धिलब्धि पर मिलान किए गए छात्रों के परीक्षा प्राप्तांकों की तुलना करना।
संबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण तब उपयुक्त होता है जब तुलना किए जाने वाले समूहों के बीच कोई व्यवस्थित जुड़ाव हो। मिलान किए गए जोड़ों का उपयोग करना इसका एक प्रमुख उदाहरण है, जहाँ दो अलग-अलग छात्रों को उनकी बुद्धिलब्धि के आधार पर जोड़े में रखा जाता है। चूंकि वे अब एक-दूसरे से सांख्यिकीय रूप से जुड़े हुए हैं, इसलिए वे स्वतंत्र नहीं रह जाते। यह विधि प्रतिभागियों के बीच के व्यक्तिगत अंतरों के प्रभाव को कम करती है, जिससे सांख्यिकीय परीक्षण अधिक संवेदनशील और उपचार के वास्तविक प्रभाव को पहचानने में अधिक सक्षम हो जाता है।

139. (D) एक व्यवस्थित, अनुभवजन्य और नियंत्रित प्रक्रिया पर आधारित है।
वैज्ञानिक अनुसंधान में "वैज्ञानिक" शब्द उस पद्धति को दर्शाता है जो साक्ष्य और तर्क पर टिकी होती है। 'व्यवस्थित' होने का अर्थ है कि यह एक निश्चित और तार्किक क्रम का पालन करती

है। 'अनुभवजन्य' का अर्थ है कि यह प्रत्यक्ष अवलोकन और मापन योग्य तथ्यों पर आधारित है, न कि केवल सिद्धांतों या विश्वासों पर। 'नियंत्रित' होने का तात्पर्य बाहरी कारकों के प्रभाव को कम करने से है ताकि निष्कर्ष सटीक हों। यह दृष्टिकोण विज्ञान को पूर्वाग्रहों से मुक्त रखता है और प्राप्त ज्ञान को विश्वसनीय, सत्यापन योग्य और सार्वभौमिक बनाता है।

140. (B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प अक्सर वास्तविक दुनिया की परिस्थितियों, जैसे स्कूलों या अस्पतालों में किए जाते हैं, जहाँ यादृच्छिक आवंटन संभव नहीं होता। यह उनकी बाह्य वैधता को बढ़ाता है। हालांकि, यह भी सत्य है कि यादृच्छिकीकरण की कमी के कारण उनकी आंतरिक वैधता वास्तविक प्रयोगों की तुलना में कम होती है। यद्यपि ये दोनों कथन अपने आप में स्वतंत्र रूप से सही हैं, लेकिन कारण आर यह व्याख्या नहीं करता कि उन्हें वास्तविक दुनिया में क्यों उपयोग किया जाता है; बल्कि वह केवल उनकी एक सांख्यिकीय सीमा को दर्शाता है।

141. (C) आश्रित चर
कार्य-कारण संबंध में, आश्रित चर वह 'प्रभाव' या परिणाम है जो शोधकर्ता द्वारा मापा जाता है। यह वह चर है जिसके मान में होने वाले परिवर्तन को स्वतंत्र चर (कारण) के हेरफेर के आधार पर देखा और रिकॉर्ड किया जाता है। इसकी प्रकृति पूरी तरह से स्वतंत्र चर की स्थितियों पर निर्भर करती है। शोधकर्ता का मुख्य उद्देश्य यह समझना होता है कि 'कारण' में बदलाव करने से इस 'प्रभाव' पर क्या और कितना असर पड़ता है। यह किसी भी प्रयोगात्मक जांच का केंद्रीय माप होता है।

142. (D) प्रतिदर्श डेटा के आधार पर जनसंख्या के बारे में निर्णय लेना।
परिकल्पना परीक्षण अनुमानात्मक सांख्यिकी का एक मुख्य हिस्सा है जिसका लक्ष्य एक छोटे प्रतिदर्श से प्राप्त जानकारी का उपयोग करके पूरी जनसंख्या के बारे में निष्कर्ष निकालना है। शोधकर्ता यह निर्धारित करने का प्रयास करता है कि क्या प्रतिदर्श में देखे गए परिणाम वास्तव में जनसंख्या में मौजूद प्रभाव को दर्शाते हैं या वे केवल यादृच्छिक संयोग हैं। यह प्रक्रिया वैज्ञानिक सिद्धांतों के सामान्यीकरण के लिए अनिवार्य है। यह शोधकर्ता को इस योग्य बनाती है कि वह सीमित साक्ष्यों के आधार पर बड़े वैज्ञानिक दावे और निर्णय ले सके।

143. (A) भारत में किसी विशिष्ट मानसिक रोग से ग्रस्त सभी व्यक्ति।
अनुसंधान के संदर्भ में जनसंख्या उन सभी संभावित व्यक्तियों या इकाइयों का संपूर्ण समूह है जिनमें शोधकर्ता की रुचि है और जिन पर वह अपने निष्कर्षों को लागू करना चाहता है। किसी विशिष्ट मानसिक रोग से ग्रस्त भारत के सभी व्यक्ति एक विशाल और पूर्ण समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं। अन्य विकल्प केवल प्रतिदर्श या छोटे समूहों को दर्शाते हैं जिन्हें वास्तविक अध्ययन के लिए चुना जाता है। जनसंख्या को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना अध्ययन की बाह्य वैधता और सामान्यीकरण की क्षमता सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

144. (B) जनसंख्या में बहुत कम प्रभाव आकार होना।
सांख्यिकीय शक्ति वह प्रायिकता है जिसके द्वारा एक परीक्षण वास्तविक प्रभाव को सही ढंग से पहचान पाता है। जब जनसंख्या में 'प्रभाव का आकार' बहुत छोटा होता है, तो सांख्यिकीय परीक्षण के लिए उसे यादृच्छिक शोर से अलग करना बहुत कठिन हो जाता, जिससे शक्ति कम हो जाती है। प्रभाव का आकार वह मात्रा है जो स्वतंत्र चर के प्रभाव की मजबूती को दर्शाती है। यदि प्रभाव कमजोर है, तो शोधकर्ता को उसे पकड़ने के लिए बहुत बड़े प्रतिदर्श या अत्यंत संवेदनशील उपकरणों की आवश्यकता होती है, अन्यथा टाइप 2 त्रुटि का जोखिम बढ़ जाता है।

145. (A) I, II, III
आंतरिक वैधता उस सीमा को दर्शाती है जहाँ तक एक शोधकर्ता कार्य-कारण संबंधों के बारे में आश्वस्त हो सकता है। पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प में नियंत्रण और यादृच्छिकीकरण के अभाव के कारण वैधता सबसे कम होती है। अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प में स्वतंत्र चर का हेरफेर होता है लेकिन यादृच्छिकीकरण नहीं, इसलिए यह मध्यम स्तर पर होता है। वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प में उच्चतम नियंत्रण और यादृच्छिक आवंटन होता है, जो इसे आंतरिक वैधता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ बनाता है। यह क्रम प्रयोगात्मक शोध में नियंत्रण की बढ़ती कठोरता और वैज्ञानिक शुद्धता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

146. (A) प्रयोगात्मक हेरफेर या उपचार के कारण।
एनोवा में, 'अंतर-समूह विचरण' उस भिन्नता को मापता है जो विभिन्न समूहों के माध्य के बीच पाई जाती है। यह माना जाता है कि यह विचलन मुख्य रूप से शोधकर्ता द्वारा किए गए स्वतंत्र चर के हेरफेर या उपचार के प्रभाव के कारण उत्पन्न हुआ है। यदि उपचार प्रभावी है, तो समूहों के बीच का यह अंतर यादृच्छिक त्रुटि से काफी अधिक होना चाहिए। सांख्यिकीविद् इस विचरण का उपयोग यह सिद्ध करने के लिए करते हैं कि प्रयोगात्मक हस्तक्षेप ने वास्तव में आश्रित चर में सार्थक परिवर्तन पैदा किया है।

147. (C) स्पीयरमैन का रो
स्पीयरमैन का कोटि-अंतर सहसंबंध (रो) तब सबसे उपयुक्त सांख्यिकीय माप होता है जब डेटा को क्रमसूचक या रैंकिंग पैमाने पर मापा जाता है। चूंकि यहाँ दोनों चर क्रमसूचक हैं, इसलिए पियर्सन का आर उपयुक्त नहीं होगा क्योंकि वह डेटा की निरंतरता और सामान्यता की मांग करता है। स्पीयरमैन का रो रैंकों के बीच जुड़ाव की मजबूती और दिशा को मापता है और यह डेटा में चरम मानों के प्रति कम संवेदनशील होता है। यह एक गैर-प्राचलिक परीक्षण है जो श्रेणीबद्ध रैंकिंग डेटा के बीच संबंधों को सटीक रूप से स्पष्ट करता है।

148. (D) 48
स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण में, स्वतंत्रता की कोटि की गणना $(n_1 - 1) + (n_2 - 1)$ सूत्र का उपयोग करके की जाती है, जहाँ n_1 और n_2 दोनों समूहों के प्रतिदर्श आकार हैं। यहाँ प्रत्येक समूह में 25 प्रतिभागी हैं, इसलिए गणना (25 - 1) + (25 - 1) होगी, जो

24 + 24 = 48 के बराबर है। यह मान सांख्यिकीय तालिका में क्रांतिक टी-मान खोजने के लिए आवश्यक है। स्वतंत्रता की कोटि यह निर्धारित करती है कि सांख्यिकीय अनुमान लगाने के लिए हमारे पास डेटा में कितनी स्वतंत्र जानकारी उपलब्ध है।

149. (C) यह नए साक्ष्यों के आलोक में परिवर्तन के अधीन है।
वैज्ञानिक ज्ञान की अनंतिम प्रकृति का अर्थ है कि कोई भी निष्कर्ष कभी भी अंतिम या पूर्ण सत्य नहीं माना जाता है। विज्ञान निरंतर आत्म-सुधार की एक प्रक्रिया है जहाँ सिद्धांतों को नए डेटा, बेहतर तकनीकों और अधिक सटीक अवलोकनों के आधार पर हमेशा संशोधित या चुनौती दी जा सकती है। आज जिसे सत्य माना जा रहा है, वह कल अधिक उन्नत शोध के माध्यम से बदला जा सकता है। यह खुलापन ही विज्ञान को रुढ़िवादिता से बचाता है और इसे ज्ञान की एक गतिशील और विश्वसनीय शाखा बनाता है।

150. (B) एक प्रयोग में नियंत्रण चर को स्वतंत्र रूप से बदलने की अनुमति दी जाती है।
प्रयोग में चरों की भूमिका स्पष्ट रूप से परिभाषित होती है ताकि निष्कर्ष सटीक हों। स्वतंत्र चर को बदला जाता है और आश्रित चर को मापा जाता है। हालांकि, नियंत्रण चर को जानबूझकर 'स्थिर' रखा जाता है; उसे बदलने की अनुमति बिल्कुल नहीं दी जाती है। यदि नियंत्रण चर बदलता है, तो वह परिणाम को भ्रमित कर सकता है, जिससे यह पता लगाना कठिन हो जाएगा कि प्रभाव स्वतंत्र चर के कारण है या नियंत्रण चर के कारण। इसलिए, नियंत्रण चर की स्थिरता प्रयोग की आंतरिक वैधता की एक अनिवार्य शर्त है।

151. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
सरल याद्दच्छिक प्रतिचयन एक प्रतिनिधि प्रतिदर्श की उच्च संभावना तो प्रदान करता है, लेकिन यह कभी भी पूर्ण प्रतिनिधित्व की 'गारंटी' नहीं दे सकता क्योंकि प्रतिचयन त्रुटि हमेशा बनी रहती है। कथन 2 भी गलत है क्योंकि सुविधाजनक प्रतिचयन एक 'गैर-प्रायिकता' विधि है, न कि प्रायिकता विधि, क्योंकि इसमें चयन याद्दच्छिक नहीं होता है। ये दोनों कथन प्रतिचयन के मूलभूत सांख्यिकीय सिद्धांतों की गलत व्याख्या करते हैं। वैज्ञानिक शोध में इन अंतरों को समझना प्रतिदर्श की विश्वसनीयता और निष्कर्षों के सामान्यीकरण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

152. (A) टाइप I त्रुटि; टाइप II त्रुटि
सांख्यिकीय निर्णय लेने की प्रक्रिया में दो मुख्य प्रकार की त्रुटियाँ हो सकती हैं। जब एक शोधकर्ता एक ऐसी शून्य परिकल्पना को खारिज कर देता है जो वास्तव में सही थी, तो उसे टाइप 1 त्रुटि कहा जाता है, जिसे 'झूठी सकारात्मक' भी कहते हैं। इसके विपरीत, जब वह एक ऐसी शून्य परिकल्पना को खारिज करने में विफल रहता है जो वास्तव में गलत थी, तो उसे टाइप 2 त्रुटि कहा जाता है, जिसे 'झूठी नकारात्मक' कहते हैं। इन त्रुटियों को कम करना शोध की शुद्धता और निष्कर्षों की सांख्यिकीय शक्ति सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य है।

153. (C) पूर्व-परीक्षण के प्रभाव।
सोलोमन चार-समूह अभिकल्प एक परिष्कृत प्रयोगात्मक ढांचा है जिसे विशेष रूप से 'पूर्व-परीक्षण संवेदीकरण' के प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए बनाया गया है। कभी-कभी उपचार से पहले परीक्षण लेने से प्रतिभागी अध्ययन के उद्देश्य को जान जाते हैं या अभ्यास के कारण उनके व्यवहार में बदलाव आ जाता है, जो परिणामों को दूषित कर सकता है। यह अभिकल्प चार समूहों का उपयोग करके यह जांचता है कि क्या परिणाम केवल उपचार के कारण आए हैं या पूर्व-परीक्षण और उपचार के बीच किसी अन्योन्यक्रिया के कारण। यह प्रयोग की आंतरिक वैधता को उच्चतम स्तर पर ले जाता है।

154. (A) क्या तीन या अधिक समूहों के माध्य के बीच कहीं कोई महत्वपूर्ण अंतर है?
वन-वे एनोवा का प्राथमिक कार्य कई स्वतंत्र समूहों के माध्य की एक साथ तुलना करना है। यह परीक्षण शोधकर्ता को यह बताता है कि क्या समूहों के बीच देखा गया अंतर केवल संयोग है या वह किसी वास्तविक सांख्यिकीय प्रभाव को दर्शाता है। यह टी-परीक्षण की तुलना में अधिक कुशल है क्योंकि यह एक ही प्रक्रिया में कई समूहों का विश्लेषण करता है, जिससे टाइप 1 त्रुटि के संचयी जोखिम से बचा जा सकता है। यह यह नहीं बताता कि कौन सा विशिष्ट समूह भिन्न है, बल्कि केवल यह कि अंतर मौजूद है।

155. (B) केवल I और III
सहसंबंध के सिद्धांत चरों के बीच संबंधों की प्रकृति को स्पष्ट करते हैं। +1.00 का मान एक पूर्ण सकारात्मक रैखिक संबंध को दर्शाता है जहाँ दोनों चर एक साथ समान रूप से बढ़ते हैं। कथन 3 भी सही है क्योंकि कार्य-कारण के लिए सहसंबंध होना आवश्यक है, लेकिन केवल सहसंबंध होना ही कार्य-कारण सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है। कथन 2 गलत है क्योंकि 0.00 का अर्थ केवल 'रैखिक' संबंध का अभाव है, जबकि चरों के बीच कोई अन्य गैर-रैखिक संबंध अभी भी मौजूद हो सकता है।

156. (B) माध्य से वर्ग विचलन का योग।
'वर्गों का योग' विचरण के विश्लेषण में एक मौलिक अवधारणा है जो डेटा में कुल भिन्नता की मात्रा को मापती है। इसकी गणना प्रत्येक व्यक्तिगत प्राप्तांक और समूह के माध्य के बीच के अंतर का वर्ग करके और फिर उन सभी को जोड़कर की जाती है। यह मान यह दर्शाता है कि डेटा अपने केंद्र से कितना फैला हुआ है। एनोवा में, इस कुल योग को समूहों के बीच के विचरण और समूहों के भीतर के विचरण में विभाजित किया जाता, जिससे उपचार के प्रभाव की सांख्यिकीय गणना संभव हो पाती है।

157. (C) संबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण।
जब शोधकर्ता एक ही प्रतिभागियों के समूह का दो अलग-अलग समय पर (जैसे उपचार से पहले और बाद में) परीक्षण करता है, तो 'संबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण' सबसे उपयुक्त होता है। इस मामले में, प्रत्येक छात्र का 'पूर्व' प्राप्तांक उसके 'पश्चात' के प्राप्तांक से सीधे जुड़ा हुआ है। यह सांख्यिकीय पद्धति प्रतिभागियों के बीच के व्यक्तिगत अंतरों के प्रभाव को

कहा जाता है। यह प्रतिचयन से भिन्न है, जहाँ केवल एक छोटे हिस्से का अध्ययन किया जाता है। जनगणना जनसंख्या के मापदंडों की एक पूरी और सटीक तस्वीर प्रदान करती है और इसमें प्रतिचयन त्रुटि का कोई जोखिम नहीं होता है। हालांकि, बड़ी जनसंख्या के लिए यह अत्यधिक खर्चीली, समय लेने वाली और अक्सर व्यावहारिक रूप से असंभव होती है। इसलिए, अधिकांश शोधों में पूरी जनगणना के बजाय एक प्रतिनिधि प्रतिदर्श का उपयोग किया जाता है।

194. (A) टाइप II त्रुटि करना।
सांख्यिकीय परिकल्पना परीक्षण में, बीटा उस प्रायिकता को दर्शाता है जिसके द्वारा एक शोधकर्ता टाइप 2 त्रुटि कर सकता है। टाइप 2 त्रुटि का अर्थ है एक गलत शून्य परिकल्पना को स्वीकार कर लेना, यानी चरों के बीच एक वास्तविक प्रभाव मौजूद था लेकिन शोधकर्ता उसे पहचानने में विफल रहा। बीटा का मान सीधे परीक्षण की सांख्यिकीय शक्ति (1-बीटा) से जुड़ा होता है। शोधकर्ता हमेशा बीटा के मान को कम करने का प्रयास करते हैं ताकि उनके अध्ययन की संवेदनशीलता बढ़ सके और वे वास्तविक वैज्ञानिक प्रभावों को पकड़ने में न चूकें।

195. (C) पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प
पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प आंतरिक वैधता के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील और असुरक्षित होते हैं क्योंकि उनमें वैज्ञानिक नियंत्रण के बुनियादी तत्वों का अभाव होता है। इनमें अक्सर या तो नियंत्रण समूह नहीं होता या प्रतिभागियों का यादृच्छिक आवंटन नहीं किया जाता। इसके कारण, शोधकर्ता बाहरी कारकों, जैसे ऐतिहासिक घटनाओं, परिपक्वता, या परीक्षण के प्रति संवेदीकरण, के प्रभावों को स्वतंत्र चर के प्रभाव से अलग नहीं कर सकता। यद्यपि ये सरल और कम खर्चीले हैं, लेकिन कार्य-कारण संबंधों की व्याख्या करने की उनकी क्षमता प्रयोगात्मक मानकों के अनुसार अत्यंत सीमित होती है।

196. (D) अंतर-समूह वर्गों का योग और अंतः-समूह वर्गों का योग।
विचरण के विश्लेषण का मूल सिद्धांत डेटा में मौजूद कुल भिन्नता को दो विशिष्ट श्रेणियों में विभाजित करना है। पहली श्रेणी 'अंतर-समूह' भिन्नता है, जो उपचार के प्रभाव को दर्शाती है। दूसरी श्रेणी 'अंतः-समूह' भिन्नता है, जो व्यक्तिगत अंतरों और यादृच्छिक त्रुटि को दर्शाती है। इन दोनों का अनुपात ही एफ-सांख्यिकी की गणना का आधार बनता है। यह विभाजन शोधकर्ता को यह समझने में मदद करता है कि क्या उपचार से उत्पन्न अंतर यादृच्छिक शोर से काफी बड़ा है।

197. (C) तापमान जैसा कोई तीसरा चर दोनों को प्रभावित करता है।
यह उदाहरण 'सहसंबंध बनाम कार्य-कारण' के अंतर को स्पष्ट रूप से समझाता है। आइसक्रीम और अपराध के बीच सीधा संबंध नहीं है, बल्कि 'तापमान' एक शक्तिशाली तीसरा चर है जो दोनों को प्रभावित करता है। गर्मी बढ़ने पर लोग अधिक आइसक्रीम खरीदते हैं और साथ ही बाहर निकलने के कारण अपराध की घटनाएं भी बढ़ती हैं। इसे 'भ्रामक संबंध' कहा जाता है। यह दर्शाता है कि केवल सांख्यिकीय सहसंबंध के आधार पर कार्य-कारण का निष्कर्ष निकालना वैज्ञानिक रूप से गलत हो सकता है जब तक कि सभी बाहरी चरों को नियंत्रित न किया जाए।

198. (B) जिस आबादी से डेटा लिया गया है वह सामान्य वितरण का पालन करती है।
प्राचलिक परीक्षण, जैसे टी-परीक्षण और एनोवा, कुछ सख्त सांख्यिकीय धारणाओं पर आधारित होते हैं। इनमें सबसे प्रमुख 'सामान्यता की धारणा' है, जिसका अर्थ है कि जिस जनसंख्या से प्रतिदर्श लिया गया है, उसमें आश्रित चर का वितरण घंटी के आकार का या सामान्य होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, डेटा को अंतराल या अनुपात पैमाने पर मापा जाना चाहिए। यदि ये धारणाएं पूरी नहीं होती हैं, तो परीक्षण के निष्कर्षों की विश्वसनीयता संदिग्ध हो जाती है। ऐसे मामलों में शोधकर्ताओं को अक्सर गैर-प्राचलिक विकल्पों का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

199. (D) अंतर के संयोग या प्रतिचयन त्रुटि के कारण होने की संभावना नहीं है।
सांख्यिकीय सार्थकता का अर्थ यह नहीं है कि प्राप्त अंतर बहुत बड़ा या महत्वपूर्ण है, बल्कि यह केवल इस बात की पुष्टि करता है कि अंतर विश्वसनीय है। जब हम कहते हैं कि परिणाम सार्थक है, तो हमारा मतलब है कि पी-मान अल्फा स्तर से कम है, जिससे यह सिद्ध होता है कि यह परिणाम केवल यादृच्छिक संयोग या प्रतिचयन के दौरान होने वाले उतार-चढ़ाव से नहीं आया है। यह शोधकर्ता को शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने का गणितीय आधार प्रदान करता है। सार्थकता केवल यह बताती है कि प्रभाव मौजूद है, न कि उसकी व्यापकता।

200. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
-1.0 का सहसंबंध गुणांक एक पूर्ण नकारात्मक या व्युत्क्रम संबंध का प्रतिनिधित्व करता है। इसका अर्थ है कि दोनों चरों के बीच एक अटूट और सटीक गणितीय संबंध है। जैसे-जैसे एक चर का मान बढ़ता है, दूसरे चर का मान एक निश्चित अनुपात में निरंतर घटता जाता है। ऐसे संबंध में, यदि हमें एक चर का मान पता हो, तो हम दूसरे चर के मान की 100% सटीकता के साथ भविष्यवाणी कर सकते हैं। यद्यपि वास्तविक सामाजिक विज्ञान में ऐसा पूर्ण संबंध विरल है, लेकिन यह सांख्यिकीय संबंधों की चरम सीमा और दिशा को स्पष्ट करता है।

201. (C) प्रयोगात्मक विधि
प्रयोगात्मक विधि वैज्ञानिक अनुसंधान का एकमात्र दृष्टिकोण है जो कार्य-कारण संबंधों को मजबूती से स्थापित कर सकता है। इसका कारण शोधकर्ता द्वारा स्वतंत्र चर का सक्रिय हेरफेर और बाहरी चरों का कठोर नियंत्रण है। अन्य विधियां, जैसे सर्वेक्षण या सहसंबंधी अध्ययन, केवल यह बता सकते हैं कि दो चर एक साथ बदलते हैं, लेकिन वे यह स्पष्ट नहीं कर सकते कि कौन सा चर दूसरे का कारण है। प्रयोग के माध्यम से हम यह देख सकते हैं कि 'क' में बदलाव करने से 'ख' में क्या प्रतिक्रिया होती है, जो वैज्ञानिक व्याख्या के लिए अनिवार्य है।

यदि डेटा अत्यधिक विषम है या सामान्यता से बहुत दूर है, तो टी-परीक्षण से प्राप्त परिणाम और पी-मान अविश्वसनीय हो सकते हैं। यद्यपि बड़े प्रतिदर्शों के साथ यह परीक्षण थोड़ा लचीला हो जाता है, फिर भी वितरण की सामान्यता इसकी सांख्यिकीय वैधता के लिए एक बुनियादी शर्त बनी रहती है।

167. (D) तुलना समूह का अभाव, जिससे वैकल्पिक व्याख्याओं को खारिज करना कठिन हो जाता है।
पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प की सबसे गंभीर कमजोरी तुलना या नियंत्रण समूह की अनुपस्थिति है। बिना नियंत्रण समूह के, शोधकर्ता यह निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि उपचार के बाद देखा गया परिवर्तन वास्तव में उपचार का परिणाम है। वह ऐतिहासिक घटनाओं, प्रतिभागियों की स्वाभाविक परिपक्वता, या परीक्षण के प्रति संवेदीकरण जैसी वैकल्पिक व्याख्याओं को सांख्यिकीय रूप से खारिज नहीं कर सकता। यह कमी अध्ययन की आंतरिक वैधता को बहुत कमजोर कर देती है, जिससे इन अभिकल्पों से प्राप्त निष्कर्षों को वैज्ञानिक समुदाय में बहुत सावधानी से देखा जाता है।

168. (A) परास
परास विचलन का सबसे सरल सांख्यिकीय माप है जो डेटा के विस्तार को दर्शाता है। इसकी गणना वितरण के उच्चतम मान में से निम्नतम मान को घटाकर की जाती है। यह हमें यह तुरंत बता देता है कि डेटा कितनी दूर तक फैला हुआ है। हालांकि यह गणना करने में बहुत आसान है, लेकिन यह डेटा की समग्र संरचना या वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं देता क्योंकि यह केवल दो चरम मानों पर निर्भर करता है। फिर भी, यह डेटा के फैलाव का प्रारंभिक अंदाजा लगाने के लिए उपयोगी है।

169. (C) परिकल्पना एक विशिष्ट परीक्षण योग्य भविष्यवाणी है, जबकि सिद्धांत एक व्यापक व्याख्या है।
परिकल्पना और सिद्धांत वैज्ञानिक प्रक्रिया के अलग-अलग स्तरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। परिकल्पना एक अकेला, संकीर्ण और अस्थाई अनुमान है जिसे एक विशिष्ट प्रयोग के माध्यम से जांचा जा सकता है। इसके विपरीत, एक सिद्धांत एक व्यापक और सुव्यवस्थित व्याख्यात्मक ढांचा है जो कई परिकल्पनाओं, साक्ष्यों और अवलोकनों को एक साथ जोड़ता है। एक सिद्धांत बार-बार परीक्षण किए जाने और समर्थित होने के बाद विकसित होता है। संक्षेप में, परिकल्पना 'क्या होगा' की भविष्यवाणी है, जबकि सिद्धांत 'क्यों और कैसे' की व्यापक व्याख्या प्रदान करता है।

170. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
एनोवा में एफ-अनुपात का मान यह निर्धारित करता है कि प्रयोगात्मक उपचार का प्रभाव कितना सार्थक है। अंतर-समूह विचरण वह भिन्नता है जो उपचार के कारण समूहों के बीच पैदा होती है, जबकि अंतः-समूह विचरण यादृच्छिक त्रुटि को दर्शाता है। जब समूहों के बीच का अंतर समूहों के भीतर के शोर से काफी बड़ा होता है, तो एफ-मान बढ़ जाता है। एक बड़ा एफ-मान सांख्यिकीय रूप से यह संकेत देता है कि समूह माध्य में प्राप्त अंतर केवल संयोग नहीं है, बल्कि स्वतंत्र चर का वास्तविक परिणाम है।

171. (D) स्वतंत्र चर के साथ व्यवस्थित रूप से बदलता है।
भ्रामक चर अनुसंधान में एक अवांछित कारक है जो स्वतंत्र चर के साथ इस तरह जुड़ा होता है कि उनके प्रभावों को अलग करना असंभव हो जाता है। यदि यह चर स्वतंत्र चर के प्रत्येक स्तर के साथ व्यवस्थित रूप से बदलता है, तो यह परिणाम के लिए एक वैकल्पिक कारण बन जाता है। इससे प्रयोग की आंतरिक वैधता नष्ट हो जाती है क्योंकि शोधकर्ता यह नहीं बता सकता कि प्रभाव उपचार के कारण आया है या इस भ्रामक कारक के कारण। एक अच्छी प्रयोगात्मक रुपरेखा इन चरों को पहचानकर उन्हें नियंत्रित या स्थिर करने का प्रयास करती है।

172. (B) बाह्य वैधता
बाह्य वैधता शोध की वह गुणवत्ता है जो यह निर्धारित करती है कि अध्ययन के परिणामों को वास्तविक दुनिया की परिस्थितियों, अन्य लोगों, स्थानों और समय पर कितनी सटीकता से लागू किया जा सकता है। यह सामान्यीकरण की क्षमता का मापदंड है। यदि कोई अध्ययन केवल प्रयोगशाला में और बहुत सीमित प्रतिदर्श के साथ सफल होता है, लेकिन व्यापक जनसंख्या पर लागू नहीं होता, तो उसकी बाह्य वैधता कम मानी जाती है। शोधकर्ता प्रतिनिधि प्रतिचयन और प्राकृतिक परिवेश में प्रयोग करके अपनी बाह्य वैधता को बढ़ाने का प्रयास करते हैं, जो विज्ञान की व्यावहारिक उपयोगिता के लिए अनिवार्य है।

173. (C) $H_1: \mu_1 \neq \mu_2$
गैर-दिशात्मक वैकल्पिक परिकल्पना केवल यह प्रस्तावित करती है कि तुलना किए जा रहे समूहों के माध्य के बीच एक सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर मौजूद है। यह उस अंतर की दिशा को निर्दिष्ट नहीं करती है। गणितीय रूप से, इसे 'बराबर नहीं है' के चिह्न द्वारा दर्शाया जाता है। इसे 'दो-पुच्छीय' परीक्षण भी कहा जाता है क्योंकि शोधकर्ता वितरण के दोनों सिरों पर अंतर की तलाश करता है। यह दृष्टिकोण तब सबसे सुरक्षित होता है जब शोधकर्ता के पास पहले से यह मानने का कोई ठोस आधार नहीं होता कि कौन सा समूह बेहतर प्रदर्शन करेगा।

174. (D) सांख्यिकीय शक्ति में वृद्धि।
प्रतिदर्श का आकार बढ़ाने से शोध अध्ययन की सांख्यिकीय शक्ति पर सीधा और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। बड़ा प्रतिदर्श प्रतिचयन त्रुटि को कम करता है और समूहों के माध्य के अनुमान को अधिक सटीक बनाता है। इसके परिणामस्वरूप, सांख्यिकीय परीक्षण छोटे से छोटे वास्तविक प्रभाव या अंतर को भी पकड़ने में अधिक सक्षम हो जाता है। इससे टाइप 2 त्रुटि का जोखिम काफी कम हो जाता है। अतः, पर्याप्त प्रतिदर्श आकार सुनिश्चित करना वैज्ञानिक निष्कर्षों की संवेदनशीलता और विश्वसनीयता के लिए एक बुनियादी आवश्यकता है।

211. (C) शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहें।
सांख्यिकीय परिकल्पना परीक्षण में, क्रांतिक मान वह सीमा है जिसे पार करने पर ही परिणाम को 'सार्थक' माना जाता है। यदि एनोवा में परिकलित एफ-मान इस क्रांतिक मान से छोटा है, तो इसका अर्थ है कि समूहों के बीच का अंतर इतना पर्याप्त नहीं है कि उसे सांख्यिकीय रूप से विश्वसनीय माना जा सके। ऐसी स्थिति में शोधकर्ता शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहता है। यह निष्कर्ष निकलता है कि प्राप्त परिणाम केवल संयोग या प्रतिचयन त्रुटि के कारण हो सकते हैं और उपचार का कोई वास्तविक प्रभाव साबित नहीं हुआ है।

212. (D) टाइम-सीरीज अभिकल्प
टाइम-सीरीज अभिकल्प एक अर्ध-प्रयोगात्मक संरचना है जिसमें किसी उपचार या हस्तक्षेप से पहले और बाद में एक ही समूह का कई बार मापन किया जाता है। बार-बार माप लेने का उद्देश्य आश्रित चर में होने वाले परिवर्तनों के पैटर्न या रुझान को देखना है। यह शोधकर्ता को यह समझने में मदद करता है कि क्या उपचार के कारण हुआ बदलाव स्थायी है या केवल एक अस्थायी उतार-चढ़ाव है। यह डिजाइन ऐतिहासिक कारकों और परिपक्वता के प्रभाव को नियंत्रित करने में एक-समूह पूर्व-परीक्षण पश्चात-परीक्षण अभिकल्प की तुलना में कहीं अधिक शक्तिशाली और विश्वसनीय है।

213. (C) संबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण
जब तुलना किए जाने वाले दो समूहों के बीच कोई व्यवस्थित संबंध या जुड़ाव होता है, तो संबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण का उपयोग किया जाता है। मिलान किए गए जोड़ों का उपयोग करना इस श्रेणी में आता है क्योंकि एक समूह का प्रत्येक व्यक्ति दूसरे समूह के एक विशिष्ट व्यक्ति के साथ किसी साझा विशेषता के आधार पर जुड़ा होता है। यह सांख्यिकीय विधि समूहों के बीच के व्यक्तिगत अंतरों के प्रभाव को कम करती है, जिससे परीक्षण अधिक संवेदनशील हो जाता है और वास्तविक प्रयोगात्मक प्रभाव को पहचानने में अधिक सक्षम होता है।

214. (B) उन्हें पूर्ण निश्चितता के साथ सिद्ध किया जा सकता है।
वैज्ञानिक परिकल्पनाओं के बारे में यह समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उन्हें कभी भी 'पूर्ण और अंतिम निश्चितता' के साथ सिद्ध नहीं किया जा सकता। विज्ञान में हम केवल परिकल्पनाओं का समर्थन करने के लिए साक्ष्य एकत्र करते हैं या उन्हें गलत साबित करने का प्रयास करते हैं। हमेशा यह संभावना बनी रहती है कि भविष्य में नया डेटा वर्तमान परिकल्पना को चुनौती दे सकता है। यद्यपि वे सिद्धांतों से निकलती हैं और परीक्षण योग्य होती हैं, लेकिन वे अंतिम सत्य नहीं बल्कि ज्ञान की ओर बढ़ने वाले कदम हैं। यह लचीलापन ही विज्ञान की प्रगति का मूल आधार है।

215. (A) III, II, IV, I
वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया एक तार्किक और व्यवस्थित क्रम का पालन करती है। इसकी शुरुआत साहित्य समीक्षा से होती है, जिससे शोधकर्ता वर्तमान ज्ञान की कमियों को समझता है। इसके बाद, वह एक परीक्षण योग्य परिकल्पना का निर्माण करता है। तीसरा चरण डेटा संग्रह का होता है, जहाँ अनुभवजन्य साक्ष्य जुटाए जाते हैं। अंत में, प्राप्त डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण और व्याख्या की जाती है ताकि निष्कर्ष निकाले जा सकें। यह चरणबद्ध प्रक्रिया अध्ययन की विश्वसनीयता सुनिश्चित करती है और वैज्ञानिक समुदाय में इसे सत्यापन योग्य और वस्तुनिष्ठ बनाती है।

216. (A) आश्रित चर
शोध प्रक्रिया में, आश्रित चर वह केंद्रीय तत्व है जिसका शोधकर्ता अध्ययन, व्याख्या या भविष्यवाणी करना चाहता है। यह वह परिणाम है जिसे प्रयोग के अंत में मापा जाता है। स्वतंत्र चर में किए गए किसी भी बदलाव का असर इसी चर पर देखा जाता है। उदाहरण के लिए, यदि हम देख रहे हैं कि 'अध्ययन के घंटों' का 'परीक्षा प्राप्तांकों' पर क्या प्रभाव पड़ता है, तो प्राप्तांक यहाँ आश्रित चर है। इसकी प्रकृति पूरी तरह से स्वतंत्र चर की परिस्थितियों पर निर्भर करती है और यह अनुसंधान का मुख्य निष्कर्ष प्रदान करता है।

217. (C) अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प।
अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प की मुख्य पहचान यह है कि इसमें प्रयोगात्मक और नियंत्रण समूहों का उपयोग तो किया जाता, लेकिन प्रतिभागियों को इन समूहों में यादृच्छिक रूप से आवंटित नहीं किया जाता है। अक्सर इसमें पहले से मौजूद सामाजिक या शैक्षिक समूहों का उपयोग किया जाता है। चूंकि यादृच्छिकीकरण का अभाव होता है, इसलिए शोधकर्ता यह सुनिश्चित नहीं कर सकता कि दोनों समूह अध्ययन की शुरुआत में पूरी तरह से समकक्ष थे। यद्यपि यह वास्तविक प्रयोग की तुलना में आंतरिक वैधता में थोड़ा कम होता है, लेकिन यह व्यावहारिक शोध के लिए अत्यंत उपयोगी है।

218. (A) एक स्वतंत्र चर का प्रभाव दूसरे के सभी स्तरों पर समान नहीं है।
फैक्टोरियल एनोवा में 'अन्योन्यक्रिया' यह दर्शाती है कि दो स्वतंत्र चर एक साथ मिलकर कैसे कार्य करते हैं। इसका अर्थ है कि एक स्वतंत्र चर का आश्रित चर पर पड़ने वाला प्रभाव दूसरे स्वतंत्र चर की विशेष स्थिति के आधार पर बदल जाता है। उदाहरण के लिए, किसी शिक्षण पद्धति का प्रभाव लड़कों पर अलग और लड़कियों पर अलग हो सकता है। यह जटिल संबंध यह बताते हैं कि मानवीय व्यवहार अक्सर एक अकेले कारक के बजाय कई कारकों के आपसी मेल से प्रभावित होता है।

219. (D) परीक्षण पद का सही उत्तर देना और परीक्षण पर कुल प्राप्तांक।
पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध का उपयोग तब किया जाता है जब एक चर वास्तविक रूप से द्विभाजित हो और दूसरा चर निरंतर हो। यह तकनीक मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक परीक्षणों में 'पद विश्लेषण' के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह शोधकर्ता को यह समझने में मदद करती है कि क्या कोई विशेष प्रश्न पूरे परीक्षण के साथ मेल खाता है और क्या वह उच्च क्षमता वाले छात्रों को कम क्षमता वाले छात्रों से अलग कर सकता है। यह परीक्षण की विश्वसनीयता को बढ़ाता है।

184. (A) p-मान अल्फा स्तर से कम या उसके बराबर हो।
सांख्यिकीय निर्णय लेने का स्वर्ण नियम यह है कि जब प्राप्त पी-मान पूर्व-निर्धारित अल्फा स्तर से कम या उसके बराबर होता है, तो शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया जाता है। एक छोटा पी-मान यह संकेत देता है कि प्राप्त परिणाम केवल संयोग से होने की संभावना बहुत कम है। ऐसी स्थिति में, शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकालता है कि देखा गया प्रभाव सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। यह प्रक्रिया वैज्ञानिक दावों की पुष्टि के लिए एक वस्तुनिष्ठ और गणितीय आधार प्रदान करती है, जो शोध की विश्वसनीयता सुनिश्चित करती है।

185. (A) केवल I और II
प्रयोगात्मक अभिकल्पों की प्रभावशीलता उनके नियंत्रण के स्तर पर निर्भर करती है। वास्तविक प्रयोग उच्चतम नियंत्रण और यादृच्छिकीकरण प्रदान करते हैं, जबकि अर्ध-प्रयोगों का उपयोग तब होता है जब यादृच्छिक आवंटन संभव न हो। कथन 3 गलत है क्योंकि पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प आंतरिक वैधता के खतरों के प्रति सबसे 'कमजोर' होते हैं, मजबूत नहीं। उनमें तुलना समूह या पूर्व-परीक्षण का अभाव होता है, जिससे बाहरी कारकों को रोकना कठिन हो जाता है। इसलिए, केवल पहले दो कथन ही प्रयोगात्मक अनुसंधान के सांख्यिकीय और संरचनात्मक सिद्धांतों के अनुरूप सही हैं।

186. (A) 2
फैक्टोरियल अभिकल्प में मुख्य प्रभावों की संख्या प्रयोग में शामिल स्वतंत्र चरों की कुल संख्या के बराबर होती है। एक 2x2 अभिकल्प में दो स्वतंत्र चर होते हैं, इसलिए इसमें दो मुख्य प्रभावों का परीक्षण किया जा सकता है। प्रत्येक मुख्य प्रभाव यह दर्शाता है कि एक चर अकेले आश्रित चर को कैसे प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, एक अन्योन्यक्रिया प्रभाव का भी परीक्षण किया जाता है। मुख्य प्रभावों को समझना शोधकर्ता को यह जानने में मदद करता है कि कौन सा कारक परिणाम के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार है।

187. (D) त्रुटि विचरण
एनोवा में 'अंतः-समूह विचरण' उस भिन्नता को दर्शाता है जो एक ही प्रयोगात्मक स्थिति के भीतर व्यक्तिगत प्रतिभागियों के बीच पाई जाती है। चूंकि इन सभी प्रतिभागियों के साथ एक जैसा व्यवहार किया गया है, इसलिए उनके प्राप्तांकों में जो भी अंतर है, वह उपचार के कारण नहीं हो सकता। इसे 'त्रुटि विचरण' कहा जाता है क्योंकि यह उन यादृच्छिक कारकों (जैसे व्यक्तिगत अंतर या माप त्रुटि) से उत्पन्न होता है जिनकी व्याख्या प्रयोग द्वारा नहीं की जा सकती। यह सांख्यिकी में पृष्ठभूमि शोर के रूप में कार्य करता है।

188. (B) r = +0.10
सहसंबंध गुणांक की मजबूती उसके पूर्ण मान से निर्धारित होती है, न कि उसके धनात्मक या ऋणात्मक चिन्ह से। 0.00 का मान संबंधों के पूर्ण अभाव को दर्शाता है, इसलिए मान शून्य के जितना करीब होगा, संबंध उतना ही कमजोर होगा। यहाँ 0.10 का मान शून्य के सबसे निकट है, जो यह संकेत देता है कि चरों के बीच बहुत ही क्षीण या नगण्य संबंध है। तुलनात्मक रूप से, 0.50 मध्यम है और -0.90 अत्यंत मजबूत संबंध को दर्शाता है। अतः, +0.10 सबसे कमजोर जुड़ाव का प्रतिनिधित्व करता है।

189. (C) N - 1
युग्मित-प्रतिदर्श टी-परीक्षण में, हम अलग-अलग प्राप्तांकों के बजाय प्रत्येक जोड़े के बीच के 'अंतर प्राप्तांकों' के एक एकल वितरण के साथ कार्य करते हैं। चूंकि हमारे पास अंतर प्राप्तांकों की कुल संख्या एन (जोड़ों की संख्या) है, इसलिए स्वतंत्रता की कोटि की गणना एन - 1 के रूप में की जाती है। यह मान टी-वितरण की आकृति निर्धारित करता है और सांख्यिकीय तालिका में क्रांतिक मान खोजने के लिए उपयोग किया जाता है। यह स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण से अलग है जहाँ दोनों समूहों के आकार को ध्यान में रखा जाता है।

190. (P-3, Q-2, R-1, S-4)
एक सुव्यवस्थित प्रयोग में विभिन्न चरों की भूमिका स्पष्ट होती है। शोधकर्ता द्वारा सीधे हेरफेर किया जाने वाला कारक (जैसे कैफीन) स्वतंत्र चर कहलाता है, जबकि मापा गया प्रभाव (जैसे प्रतिक्रिया समय) आश्रित चर होता है। प्रतिभागियों के बीच पहले से मौजूद व्यक्तिगत अंतर बाह्य चर के रूप में कार्य करते हैं जो परिणामों को भ्रमित कर सकते हैं। प्रकाश जैसी स्थितियाँ जिन्हें पूरे प्रयोग के दौरान एक समान रखा जाता है, नियंत्रण चर कहलाती हैं। यह पृथक्करण वैज्ञानिक परिणामों की शुद्धता और आंतरिक वैधता सुनिश्चित करता है।

191. (A) लक्ष्य या उद्देश्य
शोध का लक्ष्य या उद्देश्य उस मुख्य ध्येय को स्पष्ट करता है जिसे शोधकर्ता अपने अध्ययन के माध्यम से प्राप्त करना चाहता है। यह एक संक्षिप्त कथन है जो अध्ययन के दायरे और इरादे को परिभाषित करता है। यहाँ प्रथम पीढ़ी के छात्रों के अनुभवों को 'खोजने' की बात करना एक अन्वेषणात्मक उद्देश्य को दर्शाता है। यह परिकल्पना से अलग है क्योंकि इसमें किसी विशिष्ट परिणाम की भविष्यवाणी नहीं की गई है, बल्कि केवल जांच के क्षेत्र को निर्दिष्ट किया गया है। यह पूरे शोध कार्य के लिए एक मार्गदर्शक ढांचे के रूप में कार्य करता है।

192. (B) प्रयोगकर्ता और प्रतिभागी का पूर्वाग्रह
"दोहरी-अंध" प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण नियंत्रण तकनीक है जहाँ न तो प्रतिभागियों को और न ही डेटा एकत्र करने वाले प्रयोगकर्ता को यह पता होता है कि किसे वास्तविक उपचार मिल रहा है और किसे प्लेसबो। यह तकनीक प्रयोगकर्ता की अपेक्षाओं और प्रतिभागियों के व्यवहार से होने वाले पूर्वाग्रह को समाप्त करती है। यह सुनिश्चित करता है कि परिणाम केवल उपचार के वास्तविक प्रभाव के कारण हैं, न कि किसी के विश्वास या अनजाने व्यवहार के कारण। यह विशेष रूप से दवा परीक्षणों और मनोवैज्ञानिक शोधों में उच्च वैज्ञानिक मानक बनाए रखने के लिए अनिवार्य है।

193. (B) जनगणना
जब शोधकर्ता किसी अध्ययन के लिए जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य से डेटा एकत्र करता है, तो इस प्रक्रिया को जनगणना

समाप्त कर देती है, जिससे शिक्षण पद्धति के वास्तविक प्रभाव को मापना अधिक सटीक और संवेदनशील हो जाता है। यह "पुनरावृत्त माप" संरचना के लिए मानक परीक्षण है।

158. (D) परिणामों की बाह्य वैधता की गारंटी देना।
प्रयोगात्मक अभिकल्प का मुख्य ध्यान नियंत्रण और आंतरिक वैधता पर होता है ताकि कार्य-कारण संबंध स्थापित किए जा सकें। इसमें चरों का हेरफेर और बाहरी कारकों का सख्त नियंत्रण शामिल है। हालांकि, प्रयोगशाला की ये नियंत्रित स्थितियाँ अक्सर वास्तविक दुनिया से भिन्न होती हैं, जिसके कारण परिणामों की 'बाह्य वैधता' या सामान्यीकरण की क्षमता कम हो सकती है। कोई भी प्रयोगात्मक अभिकल्प यह 'गारंटी' नहीं दे सकता कि परिणाम हर परिस्थिति में लागू होंगे। विज्ञान में बाह्य वैधता हमेशा एक सीमा और निरंतर जांच का विषय बनी रहती है।

159. (A) परीक्षण योग्य और सटीक
एक वैज्ञानिक परिकल्पना को 'अच्छी' कहलाने के लिए विशिष्ट और मापने योग्य होना चाहिए। उसकी सबसे अनिवार्य विशेषता उसकी 'परीक्षण योग्यता' है, जिसका अर्थ है कि उसे अनुभवजन्य डेटा के माध्यम से सत्यापित या खंडित किया जा सके। इसे अस्पष्ट होने के बजाय अत्यंत सटीक होना चाहिए ताकि शोधकर्ता यह जान सके कि उसे क्या मापना है। एक ठोस परिकल्पना मौजूदा सिद्धांतों से तार्किक रूप से जुड़ी होती है और अध्ययन को एक निश्चित दिशा प्रदान करती है, जिससे वैज्ञानिक जांच को विश्वसनीयता और उद्देश्यपूर्णता प्राप्त होती है।

160. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
सांख्यिकीय परिकल्पना परीक्षण में चार संभावित परिणाम होते हैं जो शोधकर्ता के निर्णय की शुद्धता को दर्शाती हैं। एक सत्य शून्य परिकल्पना को खारिज करना टाइप 1 त्रुटि है, जबकि एक गलत शून्य परिकल्पना को न पहचान पाना टाइप 2 त्रुटि है। यदि शून्य परिकल्पना वास्तव में गलत है और उसे सफलतापूर्वक खारिज कर दिया जाता है, तो यह 'सही अस्वीकृति' या 'सांख्यिकीय शक्ति' कहलाती है। अंत में, एक सत्य शून्य परिकल्पना को स्वीकार करना 'सही अवधारण' है। ये श्रेणियां शोध की तार्किक शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए बुनियादी ढांचा प्रदान करती हैं।

161. (B) क्रमसूचक चर
क्रमसूचक चर वे होते हैं जिनमें डेटा को ऐसी श्रेणियों में रखा जाता है जिनका एक स्वाभाविक और तार्किक क्रम होता है। यहाँ 'निम्न', 'मध्यम' और 'उच्च' स्पष्ट रूप से एक बढ़ते हुए स्तर या कोटि को दर्शाते हैं। हालांकि हम यह जानते हैं कि 'उच्च' 'मध्यम' से अधिक है, लेकिन हम यह सटीक रूप से नहीं बता सकते कि उनके बीच का अंतर कितना है। यह नाममात्र चरों से उन्नत है क्योंकि इसमें दिशात्मक जानकारी होती है, लेकिन यह अंतराल चरों से कम सटीक है क्योंकि इसमें समान इकाइयों का अभाव होता है।

162. (A) कठिन-पहुंच वाली आबादी।
स्नोबॉल प्रतिचयन एक गैर-प्रायिकता तकनीक है जहाँ मौजूदा प्रतिभागी अपने संपर्कों के माध्यम से अन्य प्रतिभागियों को अध्ययन के लिए आमंत्रित करते हैं। यह एक 'नेटवर्क' की तरह बढ़ता है, इसलिए इसे स्नोबॉल कहा जाता है। यह विधि उन समूहों का अध्ययन करने के लिए अत्यंत उपयोगी है जिन्हें सामान्य प्रतिचयन विधियों द्वारा खोजना मुश्किल है, जैसे कि दुर्लभ बीमारियों वाले लोग या गुप्त सामाजिक समूह। हालांकि यह प्रतिनिधि नहीं है, लेकिन यह उन क्षेत्रों में प्राथमिक डेटा एकत्र करने का एकमात्र व्यावहारिक तरीका हो सकता है जहाँ कोई प्रतिचयन ढांचा उपलब्ध नहीं है।

163. (C) एक आधार रेखा प्रदान करना जिसके विरुद्ध उपचार के प्रभाव को मापा जा सके।
प्रयोग में नियंत्रण समूह वह आधार स्तंभ है जो तुलना के लिए मानक स्थापित करता है। इस समूह के प्रतिभागी प्रयोगात्मक समूह के समान ही होते हैं, लेकिन उन्हें वह विशेष उपचार या स्वतंत्र चर नहीं दिया जाता है जिसकी जांच की जा रही है। नियंत्रण समूह के बिना, शोधकर्ता यह कभी नहीं जान पाएगा कि आश्रित चर में आया बदलाव वास्तव में उपचार के कारण है या केवल समय बीतने या अन्य बाहरी कारकों के कारण। यह साक्ष्य प्रदान करके कार्य-कारण निष्कर्षों को वैज्ञानिक मजबूती प्रदान करता है।

164. (D) 6
फैक्टोरियल अभिकल्प में उपचार की स्थितियों की कुल संख्या की गणना सभी स्वतंत्र चरों के स्तरों के गुणनफल द्वारा की जाती है। एक 2x3 फैक्टोरियल अभिकल्प में दो स्वतंत्र चर हैं; पहले चर के दो स्तर हैं और दूसरे के तीन स्तर हैं। इसलिए, कुल प्रयोगात्मक स्थितियाँ 2 गुणा 3, यानी 6 होंगी। ये छह स्थितियाँ दोनों चरों के सभी संभावित संयोजनों का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह संरचना शोधकर्ता को चरों के बीच के सूक्ष्म संबंधों और उनके संयुक्त प्रभावों का व्यापक विश्लेषण करने में सक्षम बनाती है।

165. (C) बुद्धिलब्धि प्राप्तांक और वार्षिक आय के बीच संबंध।
प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध (पियर्सन आर) का उपयोग तब किया जाता है जब शोधकर्ता दो निरंतर चरों के बीच रैखिक संबंध को मापना चाहता है। बुद्धिलब्धि प्राप्तांक और वार्षिक आय दोनों ही संख्यात्मक और निरंतर माप हैं जिन्हें अंतराल या अनुपात पैमाने पर रखा जा सकता है। अन्य विकल्पों में श्रेणीबद्ध या द्विभाजित चर शामिल हैं, जिनके लिए अलग प्रकार के सहसंबंध गुणांकों की आवश्यकता होती है। पियर्सन आर दो निरंतर मापों के बीच जुड़ाव की मजबूती और दिशा को मापने का सबसे सटीक और व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला सांख्यिकीय उपकरण है।

166. (B) सामान्य रूप से वितरित
स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण एक प्राचलिक सांख्यिकीय विधि है जिसकी कुछ अनिवार्य धारणाएं हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण धारणा यह है कि जिस जनसंख्या से प्रतिदर्श लिए गए हैं, उसमें डेटा का वितरण सामान्य या घंटी के आकार का होना चाहिए।

202. (A) विशिष्ट, परीक्षण योग्य कथन
शोध प्रश्न और परिकल्पना के बीच एक सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण अंतर होता है। शोध प्रश्न एक जिज्ञासा या समस्या का वर्णन है जिसे हल करने की आवश्यकता है, जैसे "स्मृति पर नींद का क्या प्रभाव पड़ता है?" इसके विपरीत, परिकल्पना उस प्रश्न का एक संभावित, विशिष्ट और मापने योग्य उत्तर है, जैसे "8 घंटे सोने वाले छात्रों की स्मृति 4 घंटे सोने वालों से बेहतर होगी।" परिकल्पना सीधे परीक्षण की अनुमति देती है और सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए एक स्पष्ट आधार प्रदान करती है, जो वैज्ञानिक जांच को गति देती है।

203. (D) संभावित सह-चर या नियंत्रण चर।
वजन घटाने के अध्ययन में, प्रतिभागी का शुरुआती वजन एक बहुत महत्वपूर्ण कारक है जो परिणाम को प्रभावित कर सकता है। चूंकि यह अध्ययन का मुख्य स्वतंत्र चर नहीं है, इसलिए इसे एक बाह्य कारक माना जाएगा। शोधकर्ता इसे सांख्यिकीय रूप से एक 'सह-चर' के रूप में शामिल कर सकता है या मिलान के माध्यम से इसे नियंत्रित कर सकता है ताकि समूहों के बीच समानता सुनिश्चित हो सके। इसे नियंत्रित करना यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि वजन में कमी केवल व्यायाम के कारण हुई है, न कि शुरुआती शारीरिक स्थिति के कारण।

204. (B) कोटा प्रतिचयन
कोटा प्रतिचयन एक गैर-प्रायिकता तकनीक है क्योंकि इसमें प्रतिभागियों का चयन यादृच्छिक रुप से नहीं किया जाता है। हालांकि इसमें जनसंख्या के विभिन्न उपसमूहों को शामिल करने का प्रयास किया जाता है, लेकिन अंतिम चयन शोधकर्ता की सुविधा और निर्णय पर निर्भर करता है। इसके विपरीत, सरल यादृच्छिक, स्तरित और गुच्छ प्रतिचयन सभी प्रायिकता आधारित विधियाँ हैं क्योंकि उनमें प्रत्येक सदस्य के पास चुने जाने की एक ज्ञात संभावना होती है। यादृच्छिकीकरण के अभाव के कारण, कोटा प्रतिचयन से प्राप्त निष्कर्षों को पूरी जनसंख्या पर सांख्यिकीय रूप से सामान्यीकृत करना कठिन होता है।

205. (C) देखे गए परिणाम प्राप्त करने की, यदि शून्य परिकल्पना सत्य होती।
पी-मान परिकल्पना परीक्षण में एक अत्यंत महत्वपूर्ण सांख्यिकी है जो प्राप्त परिणामों की सांख्यिकीय सार्थकता को मापती है। यह हमें बताता है कि यदि वास्तव में समूहों के बीच कोई अंतर नहीं था, तो हमें संयोग से इतने चरम परिणाम मिलने की कितनी संभावना है। यदि यह संभावना बहुत कम है (आमतौर पर 0.05 से कम), तो हम शून्य परिकल्पना को त्याग देते हैं। पी-मान जितना छोटा होगा, हमारे पास यह विश्वास करने का उतना ही मजबूत आधार होगा कि देखा गया प्रभाव वास्तविक और सार्थक है।

206. (D) यादृच्छिक आवंटन
वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प और अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प के बीच सबसे बुनियादी अंतर यादृच्छिक आवंटन की अनुपस्थिति है। अर्ध-प्रयोगों में शोधकर्ता स्वतंत्र चर में हेरफेर तो करता है, लेकिन वह प्रतिभागियों को समूहों में पूरी तरह से संयोग के आधार पर नहीं बांट सकता। अक्सर इसमें पहले से मौजूद समूहों, जैसे स्कूल की कक्षाओं, का उपयोग किया जाता है। यादृच्छिकीकरण की कमी के कारण, समूहों के बीच पहले से मौजूद व्यक्तिगत अंतरों का प्रभाव बना रहता है, जो प्रयोग की आंतरिक वैधता को वास्तविक प्रयोग की तुलना में थोड़ा कमजोर बना देता है।

207. (A) तीन स्वतंत्र चर, प्रत्येक दो स्तरों के साथ।
फैक्टोरियल अभिकल्प के नामकरण में संख्याओं की संख्या स्वतंत्र चरों की कुल संख्या को दर्शाती है। एक 2x2x2 अभिकल्प में तीन संख्याएँ हैं, जिसका अर्थ है कि इसमें तीन स्वतंत्र चर शामिल हैं। प्रत्येक संख्या उस चर के स्तरों को बताती है, यानी यहाँ तीनों चरों के दो-दो स्तर हैं। यह अभिकल्प शोधकर्ता को न केवल प्रत्येक कारक के मुख्य प्रभाव का अध्ययन करने की अनुमति देता है, बल्कि उनके बीच होने वाली जटिल और उच्च-स्तरीय अन्योन्यक्रियाओं को समझने में भी मदद करता है, जो अधिक विस्तृत जानकारी प्रदान करती है।

208. (B) अंतराल
प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध (पियर्सन आर) का उपयोग करने के लिए यह एक अनिवार्य शर्त है कि दोनों चरों को कम से कम अंतराल या अनुपात पैमाने पर मापा जाना चाहिए। अंतराल पैमाना वह है जहाँ मानों के बीच का अंतर समान और मापने योग्य होता है, जैसे कि तापमान या मानकीकृत परीक्षण प्राप्तांक। यह सांख्यिकीय परीक्षण डेटा की निरंतरता और सामान्यता पर निर्भर करता है। यदि डेटा केवल नाममात्र या क्रमसूचक पैमाने पर है, तो पियर्सन आर के बजाय अन्य गैर-प्राचलिक सहसंबंध गुणांकों का उपयोग करना अधिक उपयुक्त और सटीक माना जाता है।

209. (B) विलियम सीली गोसेट
टी-परीक्षण का विकास 1908 में विलियम सीली गोसेट द्वारा किया गया था, जो गिनीज शराब कारखाने में कार्यरत थे। अपनी कंपनी के व्यापारिक गोपनीयता के नियमों के कारण, उन्होंने अपना शोध पत्र "स्टूडेंट" उपनाम से प्रकाशित किया। गोसेट ने छोटे प्रतिदर्शों के साथ काम करने की समस्या का समाधान निकाला, जहाँ बड़े प्रतिदर्शों के लिए उपयोग किए जाने वाले जेड-परीक्षण प्रभावी नहीं थे। उन्हीं के सम्मान में आज भी इसे 'स्टूडेंट का टी-परीक्षण' कहा जाता है। यह खोज सांख्यिकी के इतिहास में छोटे प्रतिदर्शों के विश्लेषण के लिए एक क्रांतिकारी मोड़ साबित हुई।

210. (D) I, II और III
प्रतिचयन की प्रक्रिया में ये तीनों कथन वैज्ञानिक सिद्धांतों का सही वर्णन करते हैं। प्रायिकता प्रतिचयन शोधकर्ता को प्रतिचयन त्रुटि की गणितीय गणना करने की अनुमति देता है, जो गैर-प्रायिकता विधि में संभव नहीं है। गुणात्मक शोध में अक्सर उन विशिष्ट व्यक्तियों की आवश्यकता होती है जो विषय के जानकार हों, इसलिए वहाँ गैर-प्रायिकता प्रतिचयन अधिक सामान्य है। अंत में, एक सटीक प्रतिचयन ढांचा वह सूची है जिससे वास्तव में प्रतिदर्श चुना जाता है। इन तीनों घटकों का सही ज्ञान एक मजबूत शोध संरचना के लिए अनिवार्य है।

175. (A) सभी स्थितियों में एक ही विषयों का उपयोग किया जाता है।
आंतरिक-विषय अभिकल्प, जिसे पुनरावृत्त माप अभिकल्प भी कहा जाता है, वह है जिसमें प्रत्येक प्रतिभागी प्रयोग की सभी स्थितियों या स्तरों में भाग लेता है। इसका मुख्य लाभ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं के 'नियंत्रण' के रूप में कार्य करता है, जिससे प्रतिभागियों के बीच के व्यक्तिगत अंतर, जैसे बुद्धि या व्यक्तित्व, पूरी तरह से समाप्त हो जाते हैं। यह विधि त्रुटि विचरण को कम करती है और स्वतंत्र चर के प्रभाव को पकड़ने की परीक्षण की शक्ति को बढ़ाती है। हालांकि, इसमें अभ्यास प्रभाव या थकान जैसी समस्याओं का जोखिम भी बना रहता है।

176. (B) आंशिक
वैज्ञानिक अनुसंधान में पियर्सन का प्रोडक्ट-मोमेंट, बाइसीरियल और टेट्राकोरिक सहसंबंध चरों के बीच संबंधों को मापने के मानक प्रकार हैं। विकल्प में दिया गया "आंशिक" सहसंबंध भी एक वैध विधि है, लेकिन प्रश्न के संदर्भ में "मानक सहसंबंध प्रकार" में अक्सर इन्हें स्वतंत्र श्रेणी में रखा जाता है। हालाँकि, यदि हम 'पियर्सन' और 'बाइसीरियल' जैसे नामों पर ध्यान दें, तो वे अधिक मौलिक और सामान्य हैं। आंशिक सहसंबंध का उपयोग तीसरे चर को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है, न कि केवल दो चरों के सरल संबंध के लिए।

177. (B) यह स्वतंत्र चरों के बीच अन्योन्यक्रिया प्रभावों की पहचान कर सकता है।
टू-वे एनोवा का सबसे महत्वपूर्ण लाभ 'अन्योन्यक्रिया प्रभाव' को मापने की इसकी अनूठी क्षमता है। दो अलग वन-वे एनोवा केवल प्रत्येक चर के अलग-अलग मुख्य प्रभावों को बता सकते हैं, लेकिन वे यह नहीं दिखा सकते कि एक चर दूसरे के प्रभाव को कैसे बदलता है। अन्योन्यक्रिया यह बताती है कि क्या एक कारक का परिणाम दूसरे कारक की उपस्थिति पर निर्भर करता है। यह विश्लेषण शोध को अधिक गहराई प्रदान करता है और वास्तविक जीवन की उन जटिलताओं को समझने में मदद करता है जहाँ कई कारक एक साथ मिलकर व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

178. (A) क्या देखा गया अंतर सांख्यिकीय रूप से अर्थपूर्ण है या संयोग के कारण है।
माध्यों के बीच अंतर की सार्थकता अनुमानात्मक सांख्यिकी की एक केंद्रीय अवधारणा है। जब हम कहते हैं कि अंतर सार्थक है, तो हमारा मतलब है कि यह अंतर इतना बड़ा है कि इसके केवल प्रतिचयन त्रुटि या यादृच्छिक संयोग से होने की संभावना बहुत कम है। यह शोधकर्ता को विश्वास दिलाता है कि स्वतंत्र चर का वास्तव में कोई प्रभाव पड़ा है। यह निष्कर्ष निकालने का आधार है कि प्राप्त परिणाम केवल एक आकस्मिक घटना नहीं हैं, बल्कि वे एक वास्तविक और दोहराने योग्य वैज्ञानिक घटना को दर्शाते हैं।

179. (C) भाषण कार्य से पहले और बाद में व्यक्तियों के समूह के चिंता स्तर की तुलना करना।
संबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण उन स्थितियों के लिए अनिवार्य है जहाँ डेटा के दो सेटों के बीच एक आंतरिक जुड़ाव होता है। भाषण कार्य से "पूर्व और पश्चात" का अध्ययन इसका आदर्श उदाहरण है क्योंकि एक ही व्यक्ति का दो बार मापन किया जा रहा है। चूंकि प्राप्तांकों के दोनों सेट एक ही प्रतिभागियों से आते हैं, इसलिए वे सांख्यिकीय रूप से स्वतंत्र नहीं हो सकते। यह पद्धति व्यक्तिगत भिन्नताओं के शोर को कम करती है, जिससे चिंता के स्तर में आए सूक्ष्म परिवर्तनों को पकड़ने की परीक्षण की साक्षमता और सटीकता बढ़ जाती है।

180. (D) संचयी
वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रकृति स्वाभाविक रूप से संचयी होती है, जिसका अर्थ है कि नया ज्ञान हमेशा पुराने शोध और स्थापित सिद्धांतों की नींव पर खड़ा होता है। वैज्ञानिक एक-दूसरे के कार्यों को आगे बढ़ाते हैं, पुराने निष्कर्षों को संशोधित करते हैं और उनमें नई परतें जोड़ते हैं। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जहाँ हर अध्ययन ज्ञान के विशाल भंडार में एक छोटी इकाई की तरह जुड़ता है। यह संचयी गुण ही विज्ञान को समय के साथ अधिक सटीक, व्यापक और विश्वसनीय बनाता है, जिससे मानव समझ का क्रमिक विकास होता है।

181. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
कार्ल पॉपर द्वारा दिया गया खंडनशीलता का सिद्धांत वैज्ञानिक जांच का एक अनिवार्य आधार है। एक अच्छी परिकल्पना वह है जिसे इस तरह से प्रस्तुत किया जाए कि उसे अनुभवजन्य साक्ष्यों के माध्यम से गलत सिद्ध करना संभव हो। यदि कोई विचार ऐसा है जिसे किसी भी प्रयोग से कभी गलत साबित नहीं किया जा सकता, तो उसे वैज्ञानिक नहीं माना जाता। विज्ञान पूर्ण सत्यों की खोज के बजाय उन दावों को हटाने की प्रक्रिया है जो गलत पाए जाते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि वैज्ञानिक ज्ञान हमेशा परीक्षण और सत्यापन के लिए खुला रहे।

182. (B) तीन स्तरों वाला स्वतंत्र चर।
इस अध्ययन में 'कमरे का रंग' वह कारक है जिसे शोधकर्ता द्वारा सक्रिय रूप से हेरफेर या बदला जा रहा है, इसलिए यह स्वतंत्र चर है। चूंकि यहाँ तीन अलग-अलग रंगों (लाल, नीला, हरा) का उपयोग किया जा रहा है, इसलिए हम कह सकते हैं कि इस स्वतंत्र चर के तीन स्तर या स्थितियां हैं। शोधकर्ता यह देख रहा है कि इन तीन अलग-अलग स्तरों के कारण मनोदशा में क्या बदलाव आता है। स्वतंत्र चर के विभिन्न स्तरों का उपयोग करने से शोध को अधिक विस्तृत और तुलनात्मक जानकारी प्राप्त होती है।

183. (D) व्यवस्थित प्रतिचयन
व्यवस्थित प्रतिचयन एक प्रायिकता प्रतिचयन विधि है क्योंकि इसमें प्रतिभागियों का चयन एक निश्चित और पूर्व-निर्धारित सांख्यिकीय नियम के आधार पर किया जाता है, जैसे कि सूची में से हर के-वें व्यक्ति को चुनना। अन्य विकल्प, जैसे सुविधाजनक, कोटा और स्नोबॉल प्रतिचयन, गैर-प्रायिकता विधियाँ हैं क्योंकि उनमें यादृच्छिक चयन का अभाव होता है और चयन शोधकर्ता के निर्णय या उपलब्धता पर निर्भर करता है। व्यवस्थित प्रतिचयन यह सुनिश्चित करता है कि चयन प्रक्रिया में कोई मानवीय पूर्वाग्रह न हो, जो इसे जनसंख्या का एक अधिक विश्वसनीय और प्रतिनिधि मॉडल बनाता है।

220. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
सांख्यिकीय परिकल्पना परीक्षण में विशिष्ट संकेतों का गहरा अर्थ होता है। अल्फा टाइप 1 त्रुटि के जोखिम को दर्शाता है, जबकि बीटा टाइप 2 त्रुटि की संभावना का प्रतीक है। सांख्यिकीय शक्ति वह क्षमता है जिसके द्वारा हम एक गलत शून्य परिकल्पना को सफलतापूर्वक पहचानकर खारिज कर सकते हैं। अंत में, शून्य परिकल्पना वह आधारभूत कथन है जो चरों के बीच किसी प्रभाव के न होने का दावा करता है। इन सभी घटकों का संतुलन ही शोध के सांख्यिकीय निष्कर्षों की शुद्धता और विश्वसनीयता को निर्धारित करता है।

221. (C) 3x2
फैक्टोरियल अभिकल्प का नामकरण स्वतंत्र चरों की संख्या और उनके स्तरों पर आधारित होता है। इस उदाहरण में, पहला स्वतंत्र चर 'शोर स्तर' है जिसके तीन स्तर हैं, और दूसरा चर 'कार्य की कठिनाई' है जिसके दो स्तर हैं। इसलिए, इस अभिकल्प को 3x2 के रूप में व्यक्त किया जाएगा। यह संरचना शोधकर्ता को यह जांचने की अनुमति देती है कि शोर के विभिन्न स्तर कार्य की विभिन्न कठिनाइयों के साथ मिलकर प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करते हैं। यह जटिल प्रयोगात्मक स्थितियों के विश्लेषण के लिए एक सटीक और संक्षिप्त तरीका है।

222. (D) स्वतंत्रता की कोटि।
टी-परीक्षण के परिणामों की रिपोर्टिंग में कोष्ठक के भीतर दी गई संख्या 'स्वतंत्रता की कोटि' को दर्शाती है। यह मान सीधे प्रतिदर्श के आकार से जुड़ा होता है और सांख्यिकीय विश्लेषण की शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है। स्वतंत्रता की कोटि यह निर्धारित करती है कि सांख्यिकीय तालिका में किस विशेष टी-वितरण का उपयोग किया जाना चाहिए। यह जानकारी अन्य शोधकर्ताओं को अध्ययन के आकार और सांख्यिकीय महत्व को समझने में मदद करती है। यहाँ 28 का मान यह बताता है कि सांख्यिकीय गणना किन सीमाओं के भीतर की गई है।

223. (A) शोध प्रक्रिया में पूर्वाग्रह और व्यक्तिगत निर्णय को कम करना।
वैज्ञानिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता का अर्थ है कि निष्कर्ष केवल अनुभवजन्य साक्ष्यों और तथ्यों पर आधारित होने चाहिए, न कि शोधकर्ता की अपनी भावनाओं, विश्वासों या पूर्वाग्रहों पर। शोध की प्रक्रिया को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है कि कोई भी अन्य व्यक्ति समान परिस्थितियों में वही परिणाम प्राप्त कर सके। इसमें संक्रियात्मक परिभाषाओं, मानकीकृत उपकरणों और कड़े नियंत्रणों का उपयोग किया जाता है। वस्तुनिष्ठता यह सुनिश्चित करती है कि शोध के परिणाम व्यक्तिगत राय से मुक्त हों और उन्हें सार्वभौमिक रूप से सत्यापन योग्य और विश्वसनीय माना जा सके।

224. (B) यह एक ऐसा कथन होना चाहिए जिसका परीक्षण किया जा सके।
एक वैज्ञानिक परिकल्पना की सबसे अनिवार्य विशेषता उसकी 'परीक्षण योग्यता' है। इसका अर्थ है कि वह एक ऐसा स्पष्ट और विशिष्ट कथन होना चाहिए जिसे अनुभवजन्य डेटा संग्रह, अवलोकन या प्रयोग के माध्यम से सत्यापित या गलत सिद्ध किया जा सके। यदि किसी दावे का परीक्षण करना संभव नहीं है, तो उसे वैज्ञानिक परिकल्पना नहीं माना जा सकता। एक अच्छी परिकल्पना चरों के बीच संबंधों की भविष्यवाणी करती है और अध्ययन को एक निश्चित दिशा प्रदान करती है। यह केवल एक प्रश्न नहीं, बल्कि उस प्रश्न का एक संभावित और मापने योग्य उत्तर है।

225. (B) आयु या समय
इस अध्ययन में शोधकर्ता यह देखना चाहता है कि समय बीतने के साथ भाषा का विकास कैसे होता है। चूंकि आयु या समय वह कारक है जिसके आधार पर परिवर्तनों का अवलोकन किया जा रहा है, इसलिए इसे स्वतंत्र चर माना जाएगा। भाषा विकास वह परिणाम या प्रभाव है जिसे मापा जा रहा है, इसलिए वह आश्रित चर है। अनुदैर्ध्य अध्ययनों में, समय अक्सर मुख्य स्वतंत्र चर के रूप में कार्य करता है। यह शोधकर्ता को विकासवादी प्रक्षेपवक्र को समझने और चरों के बीच समय-आधारित संबंधों का सूक्ष्म विश्लेषण करने में सक्षम बनाता है।

226. (A) यह प्रतिचयन त्रुटि का अनुमान लगाने की अनुमति देता है।
प्रायिकता प्रतिचयन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह यादृच्छिकीकरण के सिद्धांतों पर आधारित होता है, जहाँ प्रत्येक इकाई के चुने जाने की संभावना ज्ञात होती है। यह शोधकर्ता को 'प्रतिचयन त्रुटि' की गणितीय गणना करने और यह जानने की अनुमति देता है कि उसके प्रतिदर्श के परिणाम जनसंख्या के कितने करीब हैं। गैर-प्रायिकता प्रतिचयन में यह सांख्यिकीय सटीकता संभव नहीं है क्योंकि चयन यादृच्छिक नहीं होता। अतः, प्रायिकता प्रतिचयन निष्कर्षों के वैज्ञानिक सामान्यीकरण और जनसंख्या के विश्वसनीय अनुमानों के लिए स्वर्ण मानक माना जाता है।

227. (C) टाइप I त्रुटि
चिकित्सा परीक्षण में "फॉल्स पॉजिटिव" का अर्थ है कि परीक्षण ने किसी व्यक्ति को बीमार बताया है जबकि वह वास्तव में स्वस्थ है। सांख्यिकी में यह टाइप 1 त्रुटि के बिल्कुल समान है, जहाँ शोधकर्ता एक ऐसी शून्य परिकल्पना को खारिज कर देता है जो वास्तव में सत्य थी। दोनों ही स्थितियों में, हम उस प्रभाव या स्थिति को मौजूद मान लेते हैं जो वास्तव में नहीं है। यह एक गंभीर त्रुटि मानी जाती है क्योंकि यह अनावश्यक उपचार या गलत वैज्ञानिक सिद्धांतों को जन्म दे सकती है। इसलिए, अल्फा स्तर को कड़ा रखना महत्वपूर्ण है।

228. (D) केवल पश्चात-परीक्षण नियंत्रण समूह अभिकल्प।
केवल पश्चात-परीक्षण नियंत्रण समूह अभिकल्प वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्पों में सबसे सरल है। इसमें प्रतिभागियों को यादृच्छिक रूप से दो समूहों में बांटा जाता है: एक को उपचार मिलता है और दूसरे को नहीं। अंत में, दोनों समूहों का केवल एक बार मापन किया जाता है। चूंकि इसमें यादृच्छिक आवंटन होता है, इसलिए हम मान सकते हैं कि दोनों समूह शुरु में समान थे, जो पूर्व-परीक्षण की आवश्यकता को समाप्त करता है। यह अभिकल्प आंतरिक वैधता के खतरों, जैसे कि परीक्षण

संवेदीकरण, से बचने के लिए अत्यंत प्रभावी और व्यावहारिक रूप से सरल है।

229. (C) ऐसा कोई सांख्यिकीय प्रमाण नहीं है कि जनसंख्या माध्य भिन्न हैं।
एनोवा में एक गैर-सार्थक परिणाम का सीधा अर्थ यह है कि प्राप्त एफ-अनुपात सांख्यिकीय रूप से पर्याप्त मजबूत नहीं है। यह शोधकर्ता को बताता है कि समूहों के बीच देखा गया अंतर इतना छोटा है कि उसे केवल यादृच्छिक संयोग या प्रतिचयन त्रुटि का परिणाम माना जा सकता है। यह यह सिद्ध नहीं करता कि सभी माध्य बिल्कुल समान हैं, बल्कि केवल यह कि हमारे पास उन्हें भिन्न मानने के लिए पर्याप्त साक्ष्य नहीं हैं। ऐसी स्थिति में, शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं बनता है और इसे बरकरार रखा जाता है।

230. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सांख्यिकी में एक 'सशक्त परीक्षण' वह होता है जो अपनी बुनियादी धारणाओं के मामूली उल्लंघन के बावजूद विश्वसनीय परिणाम प्रदान करने में सक्षम होता है। टी-परीक्षण को एक सशक्त परीक्षण माना जाता है क्योंकि यह तब भी यथोचित सटीक पी-मान दे सकता है जब डेटा का वितरण पूरी तरह से सामान्य न हो। इसका अर्थ है कि शोधकर्ता इस परीक्षण पर कुछ हद तक भरोसा कर सकता है भले ही प्रयोगात्मक स्थितियाँ आदर्श न हों। यह गुण इसे सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में अत्यंत व्यावहारिक और लोकप्रिय सांख्यिकीय उपकरण बनाता है।

231. (D) प्रयोग की शुरुआत में समकक्ष समूह बनाना।
यादृच्छिक आवंटन प्रयोगात्मक अनुसंधान की आधारशिला है जो आंतरिक वैधता सुनिश्चित करती है। इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रतिभागियों की व्यक्तिगत विशेषताएं, जैसे बुद्धि, उम्र या अनुभव, सभी प्रयोगात्मक स्थितियों में समान रूप से वितरित हों। जब आवंटन पूरी तरह से संयोग पर आधारित होता है, तो समूहों के बीच पहले से मौजूद किसी भी व्यवस्थित अंतर की संभावना समाप्त हो जाती है। यह शोधकर्ता को यह विश्वास दिलाने में मदद करता है कि प्रयोग के अंत में देखा गया कोई भी अंतर केवल स्वतंत्र चर के हेरफेर का परिणाम है।

232. (A) कृत्रिम रूप से द्विभाजित
टेट्राकोरिक सहसंबंध का उपयोग उन दो चरों के बीच संबंध को मापने के लिए किया जाता है जिन्हें कृत्रिम रूप से केवल दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है, जबकि वे मूल रूप से निरंतर प्रकृति के होते हैं। उदाहरण के लिए, परीक्षा में 'उत्तीर्ण' या 'अनुत्तीर्ण' होना एक कृत्रिम विभाजन है क्योंकि योग्यता निरंतर होती है। यह गुणांक यह मानकर गणना करता है कि दोनों चरों का अंतर्निहित वितरण सामान्य है। यह सांख्यिकीय तकनीक उन संबंधों को स्पष्ट करती है जो श्रेणीबद्ध वर्गीकरण के पीछे छिपे होते हैं, जिससे निरंतरता के आधार पर सटीक विश्लेषण संभव होता है।

233. (C) फिशर
एनोवा में प्रयुक्त एफ-अनुपात का नाम प्रसिद्ध सांख्यिकीविद् सर रोनाल्ड ए. फिशर के सम्मान में रखा गया है। फिशर ने 1920 के दशक में 'विचरण का विश्लेषण' की अवधारणा विकसित की थी, जिसने प्रयोगात्मक अनुसंधान और सांख्यिकी के क्षेत्र में क्रांति ला दी। जॉर्ज स्नेडेकोर ने बाद में इस परीक्षण सांख्यिकी को 'एफ' अक्षर से नामित किया ताकि फिशर के महान योगदान को याद रखा जा सके। फिशर के कार्यों ने आधुनिक सांख्यिकीय अनुमानों और प्रयोगात्मक अभिकल्पों के लिए एक ठोस गणितीय आधार प्रदान किया है, जिसका उपयोग आज भी व्यापक रूप से किया जाता है।

234. (A) विभिन्न मान या श्रेणियां ले सकता है।
वैज्ञानिक अनुसंधान के संदर्भ में, एक 'चर' किसी भी ऐसी विशेषता, गुण या स्थिति को संदर्भित करता है जो बदल सकती है और अलग-अलग मान ग्रहण कर सकती है। यह किसी व्यक्ति की ऊंचाई, बुद्धि, या किसी दवा की खुराक हो सकती है। यदि कोई चीज़ स्थिर रहती है, तो उसे स्थिरांक कहा जाता है, चर नहीं। चरों को मापना और उनके बीच के संबंधों का विश्लेषण करना ही विज्ञान का मुख्य कार्य है। चरों को संक्रियात्मक रूप से परिभाषित करना और उन्हें नियंत्रित करना किसी भी प्रयोगात्मक जांच की सफलता के लिए अनिवार्य शर्त है।

235. (D) एक गलत शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहता है।
टाइप 2 त्रुटि तब होती है जब डेटा में एक वास्तविक प्रभाव या अंतर मौजूद होता है, लेकिन सांख्यिकीय परीक्षण उसे पकड़ने में असमर्थ रहता है। दूसरे शब्दों में, शोधकर्ता गलती से यह मान लेता है कि स्वतंत्र चर का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, जबकि वास्तव में पड़ा था। इसे 'फॉल्स नेगेटिव' परिणाम कहा जाता है। यह त्रुटि अक्सर तब होती है जब प्रतिदर्श का आकार बहुत छोटा हो या प्रयोगात्मक शोर बहुत अधिक हो। यह शोध की सांख्यिकीय शक्ति की कमी को दर्शाता है और वास्तविक वैज्ञानिक खोजों को अनदेखा करने का जोखिम बढ़ाता है।

236. (B) एक-समूह पूर्व-परीक्षण-पश्चात-परीक्षण अभिकल्प।
यह अध्ययन एक-समूह पूर्व-परीक्षण पश्चात-परीक्षण अभिकल्प का एक विशिष्ट उदाहरण है क्योंकि इसमें केवल एक ही समूह का अध्ययन किया जा रहा है और हस्तक्षेप से पहले और बाद में माप लिए जा रहे हैं। चूंकि इसमें कोई नियंत्रण समूह नहीं है जिसके साथ तुलना की जा सके, इसलिए यह पूर्व-प्रयोगात्मक श्रेणी में आता है। इस अभिकल्प की मुख्य सीमा यह है कि यह बाहरी कारकों को नियंत्रित नहीं कर पाता, जिसके कारण यह कहना कठिन होता है कि उत्पादकता में सुधार केवल नई पद्धति के कारण हुआ है।

237. (C) एनोवा एफ-परीक्षण यह नहीं बताता है कि कौन से विशिष्ट समूह माध्य भिन्न हैं।
एनोवा एक व्यापक परीक्षण है जो केवल यह बताता है कि कम से कम दो समूहों के माध्य के बीच सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर है। यह यह स्पष्ट नहीं करता कि वे कौन से विशेष

समूह हैं जिनके बीच अंतर मौजूद है। इसलिए, एक सार्थक एफ-अनुपात प्राप्त करने के बाद, शोधकर्ता को 'पोस्ट-हॉक' परीक्षण करने पड़ते हैं। ये परीक्षण समूहों के सभी संभावित जोड़ों की तुलना करते हैं और सटीक रूप से उन समूहों की पहचान करते हैं जहाँ उपचार का प्रभाव सार्थक रहा है। यह प्रक्रिया निष्कर्षों की विस्तृत व्याख्या के लिए अनिवार्य है।

238. (D) -0.85
सहसंबंध गुणांक की मजबूती का निर्धारण उसके पूर्ण संख्यात्मक मान से होता है, न कि उसके धनात्मक या ऋणात्मक चिन्ह से। मान 1.00 के जितना करीब होगा, संबंध उतना ही मजबूत होगा। यहाँ 0.85 का मान अन्य सभी विकल्पों की तुलना में 1.00 के सबसे निकट है। ऋणात्मक चिन्ह केवल यह दर्शाता है कि चरों के बीच विपरीत संबंध है। अतः, -0.85 सबसे मजबूत जुड़ाव को प्रदर्शित करता है, जो चरों के बीच उच्च स्तर की भविष्यवाणी करने की क्षमता को दर्शाता है।

239. (A) दो अलग-अलग विभागों में कर्मचारियों की बीमारी की छुट्टी के औसत दिनों की।
स्वतंत्र-प्रतिदर्श टी-परीक्षण तब सबसे उपयुक्त होता है जब हमें दो ऐसे समूहों के माध्य की तुलना करनी होती है जिनमें कोई आपसी जुड़ाव या संबंध नहीं होता है। दो अलग-अलग विभागों के कर्मचारी स्वतंत्र समूह हैं क्योंकि वे अलग-अलग व्यक्तियों से बने हैं और एक विभाग का डेटा दूसरे को प्रभावित नहीं करता है। अन्य विकल्पों में एक ही समूह का पूर्व-पश्चात मापन या चरों के बीच संबंध शामिल है, जिसके लिए क्रमशः युग्मित टी-परीक्षण या सहसंबंध गुणांक अधिक उपयुक्त होते।

240. (B) प्रत्यक्ष अवलोकन और माप
वैज्ञानिक अनुसंधान की अनुभवजन्य प्रकृति इस सिद्धांत पर टिकी है कि ज्ञान और सत्य केवल उन साक्ष्यों से प्राप्त किए जा सकते हैं जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से देखा और मापा जा सके। यह व्यक्तिगत विचारों, तर्क या केवल सिद्धांतों पर निर्भर रहने के बजाय वास्तविक दुनिया के डेटा को प्राथमिकता देता है। अनुभववाद यह मांग करता है कि किसी भी वैज्ञानिक दावे को तब तक स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए जब तक कि उसे प्रयोग या अवलोकन के माध्यम से प्रमाणित न किया जा सके। यह दृष्टिकोण विज्ञान को वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय और सार्वभौमिक रूप से सत्यापन योग्य बनाने में सहायता करता है।

241. (B) शून्य परिकल्पना
शून्य परिकल्पना वह सांख्यिकीय आधार है जो यह मानती है कि अध्ययन किए जा रहे चरों के बीच कोई वास्तविक संबंध या सार्थक अंतर नहीं है। यहाँ यह कहना कि "पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई अंतर नहीं है", इस अवधारणा का एक स्पष्ट उदाहरण है। यह शोधकर्ता के लिए एक तटस्थ प्रारंभिक बिंदु के रूप में कार्य करती है। सांख्यिकीय विश्लेषण का मुख्य लक्ष्य डेटा के माध्यम से इसी दावे को चुनौती देना होता है। यदि साक्ष्य पर्याप्त रूप से मजबूत होते हैं, तो इसे अस्वीकार कर दिया जाता है, अन्यथा इसे बनाए रखा जाता है।

242. (A) चर को सह-चर के रूप में शामिल करना या मिलान का उपयोग करना
प्रयोगात्मक अनुसंधान में बाहरी चरों का नियंत्रण आंतरिक वैधता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। यदि कोई ज्ञात बाहरी चर, जैसे आयु या पूर्व अनुभव, परिणाम को प्रभावित कर सकता है, तो शोधकर्ता उसे सांख्यिकीय रूप से 'सह-चर' के रूप में शामिल कर सकता है। इसके अलावा, 'मिलान' तकनीक का उपयोग करके समूहों में इन चरों के वितरण को समान बनाया जा सकता है। ये विधियाँ स्वतंत्र चर के शुद्ध प्रभाव को अलग करने में मदद करती हैं और यह सुनिश्चित करती हैं कि परिणाम अन्य अवांछित कारकों के बजाय केवल प्रयोगात्मक उपचार का परिणाम हैं।

243. (C) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
सरल यादृच्छिक प्रतिचयन प्रायिकता प्रतिचयन का सबसे मौलिक रूप है। इसकी परिभाषित विशेषता यह है कि जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य के पास प्रतिदर्श में चुने जाने की बिल्कुल समान और स्वतंत्र संभावना होती है। इसमें चयन की प्रक्रिया पूरी तरह से संयोग पर आधारित होती है, जैसे कि लॉटरी या यादृच्छिक संख्या तालिका का उपयोग करना। यह विधि मानवीय पूर्वाग्रहों को पूरी तरह समाप्त कर देती है और जनसंख्या का एक निष्पक्ष प्रतिनिधि प्रतिदर्श प्रदान करती है। इसी कारण से, इसे सांख्यिकीय सामान्यीकरण और वैज्ञानिक शोध के लिए स्वर्ण मानक माना जाता है।

244. (D) 5%
सांख्यिकीय परिकल्पना परीक्षण में अल्फा स्तर शोधकर्ता द्वारा जानबूझकर निर्धारित की गई वह सीमा है जो टाइप 1 त्रुटि की संभावना को दर्शाती है। यदि अल्फा = 0.05 सेट किया गया है, तो इसका सीधा अर्थ है कि शोधकर्ता परिणामों में 5% जोखिम स्वीकार करने के लिए तैयार है कि वह एक सत्य शून्य परिकल्पना को गलत तरीके से अस्वीकार कर सकता है। यह सार्थकता की कसौटी है। दूसरे शब्दों में, उसे 95% विश्वास है कि प्राप्त सार्थक परिणाम संयोग नहीं, बल्कि स्वतंत्र चर का वास्तविक प्रभाव हैं। यह मानक स्तर शोध की विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है।

245. (A) केवल I और II
एनोवा, जिसका अर्थ 'विचरण का विश्लेषण' है, एक शक्तिशाली सांख्यिकीय उपकरण है। वन-वे एनोवा में वास्तव में एक ही स्वतंत्र चर होता है जिसके दो से अधिक स्तर हो सकते हैं, और एक आश्रित चर होता है। कथन 3 गलत है क्योंकि एनोवा का उपयोग समूहों के माध्य की तुलना करने के लिए किया जाता है, न कि सहसंबंध के विकल्प के रूप में। सहसंबंध चरों के बीच संबंध की मजबूती को मापता है, जबकि एनोवा माध्य के बीच के अंतर के आधार पर प्रभाव की जांच करता है। इसलिए केवल पहले दो कथन ही यहाँ सांख्यिकीय रूप से सही हैं।

246. (B) कोई अन्योन्यक्रिया प्रभाव नहीं।
फैक्टोरियल अभिकल्प में, अन्योन्यक्रिया प्रभाव को रेखांकन के माध्यम से आसानी से पहचाना जा सकता है। यदि ग्राफ में खींची गई रेखाएं एक-दूसरे के समानांतर हैं, तो यह स्पष्ट

(D) समूह के लिए बाहरी खतरों द्वारा संसक्ति को बढ़ाया जा सकता है।

11. युंग के व्यक्तित्व सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. 'परसोना' वह सार्वजनिक मुखौटा या सामाजिक स्वरुप है जिसे व्यक्ति दुनिया के सामने प्रस्तुत करता है।
II. 'शैडो' व्यक्तित्व के अंधेरे, दमित और अवांछनीय पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है।
III. 'एनिमा' पुरुषों में स्त्री आद्यरुप है, जबकि 'एनिमस' महिलाओं में पुरुष आद्यरुप है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

12. कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत में, "जीवन स्थान" से तात्पर्य है:
(A) भौतिक वातावरण जिसमें व्यक्ति रहता है।
(B) उन सभी मनोवैज्ञानिक तथ्यों का योग जिनका किसी दिए गए समय पर व्यक्ति पर प्रभाव पड़ता है।
(C) व्यक्ति के पिछले अनुभव और यादें।
(D) व्यक्ति का सामाजिक नेटवर्क और संबंध।

13. हैरी स्टैक सुलिवन के पारस्परिक सिद्धांत के अनुसार, 'व्यक्तिकरण' क्या हैं?
(A) शैशवावस्था से वयस्कता तक के विकासात्मक चरण।
(B) बुनियादी आवेग और ज़रूरतें जो व्यवहार को प्रेरित करती हैं।
(C) मानसिक छवियां या विचार जो हमारे अपने और दूसरों के बारे में होते हैं।
(D) ऊर्जा परिवर्तन के स्वरूप जो पारस्परिक संबंधों की विशेषता बताते हैं।

14. फ्रायड के सिद्धांत में 'ईगो' का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) बुनियादी सहज आवश्यकताओं की तत्काल संतुष्टि प्राप्त करना।
(B) सामाजिक नियमों और आंतरिक नैतिक मानकों को मूर्त रूप देना।
(C) दमित यादों और प्राथमिक अचेतन इच्छाओं को संचित करना।
(D) इड, सुपर ईगो और वास्तविकता की मांगों के बीच मध्यस्थता करना।

15. एक अभिवृत्ति माप पैमाना जिसमें कथनों की एक श्रृंखला होती है और उत्तरदाता उन पर अपनी सहमति या असहमति की डिग्री दर्शाते हैं, वह है:
(A) लिकर्ट पैमाना
(B) थर्स्टन पैमाना
(C) गुटमैन पैमाना
(D) सिमेंटिक डिफरेंशियल पैमाना

16. व्यक्तित्व मूल्यांकन में स्थितिजन्य परीक्षण का सबसे अच्छा उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) किसी व्यक्ति को एक अस्पष्ट स्याही के धब्बे की व्याख्या करने के लिए कहना।
(B) एक कृत्रिम कार्य-संबंधित कार्य के दौरान व्यवहार का अवलोकन करना।
(C) एक उम्मीदवार से सही/गलत प्रश्नावली भरवाना।
(D) किसी व्यक्ति को एक सामाजिक दृश्य के बारे में कहानी सुनाने के लिए कहना।

17. अभिवृत्ति परिवर्तन का वह सिद्धांत जो सुझाव देता है कि व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और व्यवहारों के बीच निरंतरता बनाए रखने के लिए प्रेरित होते हैं, वह है:
(A) विस्तार संभावना मॉडल
(B) संज्ञानात्मक विसंगति सिद्धांत
(C) सामाजिक निर्णय सिद्धांत
(D) आत्म-प्रत्यक्षण सिद्धांत

18. फ्रायड द्वारा प्रस्तावित विकास के निम्नलिखित मनोयौन चरणों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. गुदा
II. जननेंद्रिय
III. लैंगिक
IV. मुखीय
V. सुप्तावस्था
(A) IV, I, III, V, II
(B) I, IV, III, V, II
(C) IV, III, I, V, II
(D) I, III, IV, II, V

19. ऑलपोर्ट जैसे गुण सिद्धांतों द्वारा व्यक्तित्व के किस निर्धारक पर सबसे अधिक बल दिया जाता है?
(A) अचेतन संघर्ष
(B) पर्यावरणीय सुदृढ़ीकरण
(C) आंतरिक, स्थिर प्रवृत्तियां
(D) सामाजिक अधिगम और अवलोकन

20. एडलर के अनुसार, मानव व्यवहार के लिए प्राथमिक प्रेरणा क्या है?
(A) मनोयौन संघर्षों का समाधान।
(B) आत्म-सिद्धि की आवश्यकता।
(C) सुरक्षा के लिए पारस्परिक आवश्यकताओं की संतुष्टि।
(D) हीनता की भावनाओं को दूर करने के लिए श्रेष्ठता के लिए प्रयास करना।

21. सूची-I (सिद्धांतकार) को सूची-II (मुख्य अवधारणा) के साथ सुमेलित करें:
सूची-I (सिद्धांतकार)
P. कार्ल युंग
Q. अल्फ्रेड एडलर
R. एरिक एरिक्सन

255. (A) टाइप II त्रुटि
"फॉल्स नेगेटिव" या टाइप 2 त्रुटि सांख्यिकीय निर्णय की वह स्थिति है जहाँ चरों के बीच वास्तव में एक सार्थक प्रभाव या संबंध मौजूद होता है, लेकिन शोधकर्ता का परीक्षण उसे पहचानने में विफल रहता है। इसका अर्थ है कि एक वास्तविक वैज्ञानिक खोज छूट गई है। यह अक्सर तब होता है जब प्रतिदर्श का आकार बहुत छोटा होता है या सांख्यिकीय परीक्षण में पर्याप्त 'शक्ति' की कमी होती है। शोधकर्ता के लिए यह एक नुकसानदेह स्थिति है क्योंकि वह एक प्रभावी उपचार या सिद्धांत को गलती से अप्रभावी मानकर खारिज कर देता है।

256. (B) यह आंतरिक वैधता के कई खतरों को नियंत्रित करने में विफल रहता है।
एक-समूह पूर्व-परीक्षण पश्चात-परीक्षण अभिकल्प की सबसे बड़ी सीमा तुलना के लिए नियंत्रण समूह का अभाव है। चूंकि इसमें केवल एक ही समूह का अध्ययन किया जाता है, इसलिए शोधकर्ता यह निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि उपचार के बाद देखा गया परिवर्तन वास्तव में उपचार के कारण है। वह ऐतिहासिक घटनाओं, परिपक्वता, या परीक्षण के प्रति संवेदीकरण जैसी बाहरी व्याख्याओं को सांख्यिकीय रूप से अलग नहीं कर सकता। यह कमी अध्ययन की वैज्ञानिक शुद्धता को कम कर देती है, जिससे इस अभिकल्प से प्राप्त निष्कर्षों को कार्य-कारण के रूप में स्वीकार करना कठिन होता है।

257. (B) दो स्वतंत्र चर, क्रमशः 2 और 4 स्तरों के साथ।
फैक्टोरियल अभिकल्प के नामकरण में संख्याओं की संख्या स्वतंत्र चरों की कुल संख्या को दर्शाती है। एक 2x4 अभिकल्प में दो संख्याएं हैं, जिसका अर्थ है कि यहाँ दो स्वतंत्र चर शामिल हैं। पहली संख्या पहले चर के स्तरों को दर्शाती है, और दूसरी संख्या दूसरे चर के स्तरों को। कुल प्रयोगात्मक स्थितियों की संख्या इन दोनों का गुणनफल, यानी 8 होगी। यह अभिकल्प शोधकर्ता को एक साथ दो अलग-अलग कारकों के मुख्य प्रभावों और उनकी आपसी अन्योन्यक्रियाओं का विस्तृत विश्लेषण करने की अनुमति देता है।

258. (A) चरों के बीच एक रैखिक संबंध है।
प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध के उपयोग के लिए 'रैखिकता' एक बुनियादी और अनिवार्य धारणा है। इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे एक चर बदलता है, दूसरे चर में भी एक समान और सीधी रेखा के रूप में परिवर्तन होना चाहिए। यदि दो चरों के बीच का संबंध वक्ररेखीय है, तो पियर्सन आर संबंध की वास्तविक मजबूती को पहचानने में विफल रहेगा और परिणाम भ्रामक हो सकते हैं। इसलिए, सांख्यिकीय विश्लेषण से पहले शोधकर्ता अक्सर स्कैटरप्लॉट के माध्यम से इस रैखिकता की जांच करते हैं ताकि निष्कर्षों की शुद्धता सुनिश्चित हो सके।

259. (C) टी-परीक्षण केवल दो माध्यों की तुलना कर सकता है, जबकि एनोवा दो या अधिक माध्यों की तुलना कर सकता है।
टी-परीक्षण और एनोवा दोनों ही समूहों के माध्य के बीच अंतर की जांच करते हैं, लेकिन उनकी मुख्य सीमा उनकी समूहों की संख्या में है। टी-परीक्षण केवल दो समूहों की तुलना तक सीमित है। इसके विपरीत, एनोवा एक अधिक व्यापक परीक्षण है जो एक साथ तीन या अधिक समूहों के माध्य का विश्लेषण कर सकता है। एनोवा का उपयोग करने का लाभ यह है कि यह टाइप 1 त्रुटि के संचयी जोखिम को कम करता है, जो कई टी-परीक्षण करने से उत्पन्न हो सकता है। यह जटिल शोध संरचनाओं के लिए श्रेष्ठ है।

260. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
यादृच्छिक आवंटन वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प की एक अनिवार्य पहचान है जो आंतरिक वैधता सुनिश्चित करती है। इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रयोग शुरू होने से पहले प्रयोगात्मक और नियंत्रण समूह सभी महत्वपूर्ण मानवीय विशेषताओं में समान या समकक्ष हों। जब प्रतिभागियों को समूहों में पूरी तरह से संयोग के आधार पर बांटा जाता, तो समूहों के बीच पहले से मौजूद किसी भी व्यवस्थित अंतर की संभावना समाप्त हो जाती है। यह शोधकर्ता को यह विश्वास दिलाने में मदद करता है कि परिणाम केवल उपचार के कारण आए हैं, न कि व्यक्तिगत भिन्नताओं से।

261. (C) दो स्तर
वैज्ञानिक अनुसंधान में एक स्वतंत्र चर वह कारक है जिसे शोधकर्ता सक्रिय रूप से बदलता या तुलना करता है। तुलना करने और किसी प्रभाव को देखने के लिए, स्वतंत्र चर के कम से कम दो स्तर या स्थितियाँ होना अनिवार्य है। उदाहरण के लिए, एक 'प्रयोगात्मक समूह' और एक 'नियंत्रण समूह'। बिना कम से कम दो स्तरों के, कोई तुलना संभव नहीं होगी और यह देखना असंभव होगा कि स्वतंत्र चर के कारण आश्रित चर में क्या परिवर्तन आया है। यह प्रयोगात्मक संरचना की बुनियादी आवश्यकता है।

262. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
बाइसीरियल और पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध के बीच का अंतर द्विभाजित चर की प्रकृति पर आधारित होता है। पॉइंट-बाइसीरियल का उपयोग तब किया जाता है जब एक चर 'वास्तविक' द्वंद्व हो, जैसे लिंग। इसके विपरीत, बाइसीरियल सहसंबंध तब उपयोग किया जाता है जब एक चर 'कृत्रिम' द्वंद्व हो, जिसे एक निरंतर चर से बनाया गया हो। प्रश्न में इन दोनों की परिभाषाओं को एक-दूसरे से बदल दिया गया है, जिसके कारण दोनों कथन सांख्यिकीय रूप से गलत हो जाते हैं। इन सूक्ष्म अंतरों को समझना चरों के सही विश्लेषण के लिए अनिवार्य है।

263. (D) अनुदैर्ध्य
अनुदैर्ध्य शोध वह अध्ययन है जिसमें एक ही प्रतिभागियों के समूह का लंबे समय तक विभिन्न समय अंतरालों पर बार-बार मापन किया जाता है। यहाँ बच्चों के उसी समूह का 5, 10 और 15 वर्ष की आयु में अध्ययन करना इसी का उदाहरण है। यह विधि विकासवादी परिवर्तनों, समय के साथ होने वाले बदलावों और व्यक्तिगत विकास के पैटर्न को समझने के लिए अत्यंत शक्तिशाली है। हालांकि यह समय लेने वाली और खर्चीली है, लेकिन यह चरों के बीच समय-आधारित संबंधों की सूक्ष्म व्याख्या करने की अनूठी क्षमता प्रदान करती है।

होता है। इसमें एक ही समूह का उपचार से पहले और बाद में कई बार मापन किया जाता है। बार-बार माप लेने से शोधकर्ता को डेटा में किसी भी रुझान या पैटर्न की पहचान करने में मदद मिलती है, जो इसे सरल पूर्व-परीक्षण पश्चात-परीक्षण अभिकल्प से अधिक विश्वसनीय बनाता है। यह बाहरी कारकों के प्रभाव को कम करने के लिए एक प्रभावी व्यावहारिक शोध विधि है।

283. (D) स्वतंत्र प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण
वन-वे एनोवा को स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण का ही एक व्यापक विस्तार माना जाता है। जहाँ टी-परीक्षण केवल दो समूहों के माध्य की तुलना तक सीमित है, वहीं एनोवा तीन या अधिक समूहों के माध्य की एक साथ तुलना करने की क्षमता रखता है। दोनों परीक्षणों का उद्देश्य यह देखना है कि क्या समूहों के बीच देखा गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। एनोवा का उपयोग करने का मुख्य लाभ यह है कि यह टाइप 1 त्रुटि के संचयी जोखिम को कम करता है जो कई अलग-अलग टी-परीक्षण करने से पैदा हो सकता है।

284. (B) पॉइंट-बाइसीरियल
पॉइंट-बाइसीरियल सहसंबंध का उपयोग तब किया जाता है जब शोधकर्ता एक निरंतर चर और एक वास्तविक द्विभाजित चर के बीच संबंध को मापना चाहता है। 'वास्तविक द्वंद्व' का अर्थ है कि चर स्वाभाविक रूप से केवल दो श्रेणियों में विभाजित है, जैसे लिंग या जीवित/मृत होना। यह गुणांक पियर्सन के प्रोडक्ट-मोमेंट सहसंबंध का ही एक विशेष गणितीय रूप है। यह सामाजिक विज्ञान और मनोविज्ञान में यह समझने के लिए अत्यंत उपयोगी है कि एक श्रेणीबद्ध सदस्यता दूसरे निरंतर माप के साथ कैसे व्यवस्थित रूप से जुड़ी हुई है।

285. (A) IV, II, III, I
वैज्ञानिक शोध की प्रक्रिया एक तार्किक और चरणबद्ध विकास का अनुसरण करती है। इसकी शुरुआत हमेशा एक शोध समस्या की पहचान से होती है, जिसके बिना जांच का कोई उद्देश्य नहीं होता। इसके बाद, शोधकर्ता एक परीक्षण योग्य परिकल्पना तैयार करता है जो संभावित समाधान दर्शाती है। तीसरे चरण में चरों का संक्रियात्मक परिभाषा दी जाती है ताकि उन्हें मापा जा सके। अंत में, डेटा की प्रकृति और शोध अभिकल्प के आधार पर उपयुक्त सांख्यिकीय परीक्षण का चुनाव किया जाता है। यह क्रम अध्ययन की वैज्ञानिक शुद्धता सुनिश्चित करता है।

286. (D) स्वतंत्र चर में हेरफेर किया जाता है, और आश्रित चर को मापा जाता है।
प्रयोगात्मक अनुसंधान में स्वतंत्र और आश्रित चर के बीच का अंतर 'कारण' और 'प्रभाव' के संबंध पर आधारित है। स्वतंत्र चर वह कारक है जिसे शोधकर्ता सक्रिय रूप से नियंत्रित और बदलता है ताकि उसका प्रभाव देखा जा सके। इसके विपरीत, आश्रित चर वह परिणाम है जिसे प्रयोग के दौरान मापा जाता है और जिसके मान स्वतंत्र चर की स्थितियों पर निर्भर करते हैं। यह सूक्ष्म अंतर वैज्ञानिक प्रयोग की पूरी संरचना का आधार है। स्वतंत्र चर में हेरफेर ही शोधकर्ता को कार्य-कारण संबंधों की व्याख्या करने की शक्ति प्रदान करता है।

287. (A) प्रायिकता; परिमाण
सांख्यिकीय सार्थकता हमें केवल यह बताती है कि प्राप्त परिणाम के संयोग से होने की 'प्रायिकता' कितनी कम है; यह यह सिद्ध नहीं करता कि प्रभाव कितना बड़ा है। इसके विपरीत, 'प्रभाव का आकार' उस प्रभाव के वास्तविक 'परिमाण' या मजबूती को मापता है। एक परिणाम सार्थक हो सकता है लेकिन उसका प्रभाव आकार बहुत छोटा हो सकता है, जिसका व्यावहारिक महत्व कम होगा। अतः, शोध की पूरी तस्वीर समझने के लिए दोनों का उपयोग अनिवार्य है—सार्थकता विश्वसनीयता दर्शाती है और प्रभाव आकार उसकी गहराई।

288. (B) संबंधित प्रतिदर्श
पुनरावृत्त-माप अभिकल्प संबंधित प्रतिदर्शों का एक प्रमुख उदाहरण है क्योंकि इसमें प्रतिभागियों के एक ही समूह को विभिन्न प्रयोगात्मक स्थितियों में बार-बार मापा जाता है। चूंकि डेटा के सभी सेट एक ही व्यक्तियों से प्राप्त होते हैं, इसलिए वे सांख्यिकीय रूप से एक-दूसरे से जुड़े या संबंधित होते हैं। इस पद्धति का सबसे बड़ा लाभ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं के नियंत्रण के रूप में कार्य करता है, जिससे व्यक्तिगत अंतरों से होने वाली त्रुटि कम हो जाती है। यह सांख्यिकीय परीक्षण की शक्ति और संवेदनशीलता को बढ़ाने में सहायक है।

289. (B) फैक्टोरियल अभिकल्प
फैक्टोरियल अभिकल्प की परिभाषित विशेषता यह है कि इसमें एक साथ कम से कम दो या अधिक स्वतंत्र चरों का अध्ययन किया जाता है। अन्य अभिकल्प, जैसे वन-वे एनोवा या सरल टी-परीक्षण, केवल एक ही स्वतंत्र चर के प्रभाव की जांच करते हैं। फैक्टोरियल अभिकल्प शोधकर्ता को यह अनूठी क्षमता प्रदान करता है कि वह चरों के बीच की 'अन्योन्यक्रिया' को देख सके, जिससे यह पता चलता है कि एक चर का प्रभाव दूसरे चर की स्थिति के आधार पर बदलता है या नहीं। यह मानवीय व्यवहार की जटिलताओं के सूक्ष्म विश्लेषण के लिए सर्वश्रेष्ठ है।

290. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सांख्यिकीय परिकल्पना परीक्षण में शून्य परिकल्पना हमेशा उस व्यापक 'जनसंख्या' के बारे में एक दावा करती है जिससे प्रतिदर्श लिया गया है। हम प्रतिदर्श का अध्ययन इसलिए करते हैं क्योंकि पूरी जनसंख्या का अध्ययन करना व्यावहारिक रूप से कठिन है। प्रतिदर्श से प्राप्त डेटा का उपयोग यह अनुमान लगाने के लिए किया जाता है कि क्या जनसंख्या में भी वही प्रभाव मौजूद है। चूंकि हमारा अंतिम लक्ष्य जनसंख्या के मापदंडों को समझना और निष्कर्षों को सामान्यीकृत करना होता है, इसलिए परिकल्पना को हमेशा उसी संदर्भ में परिभाषित किया जाता है। यह अनुमानात्मक सांख्यिकी का मूल सिद्धांत है।

291. (C) वस्तुनिष्ठ जांच के माध्यम से व्यवस्थित ज्ञान उत्पन्न करना।
वैज्ञानिक अनुसंधान का सर्वोच्च लक्ष्य सत्य की खोज और दुनिया के बारे में हमारी समझ का विस्तार करना है। यह

विधियों से श्रेष्ठ है क्योंकि यह चरों के बीच 'क' और 'ख' के कार्य-कारण संबंध को सिद्ध कर सकता है। स्वतंत्र चर का हेरफेर और बाहरी चरों का सख्त नियंत्रण शोधकर्ता को यह दावे के साथ कहने की अनुमति देता है कि आश्रित चर में हुआ बदलाव वास्तव में स्वतंत्र चर की वजह से ही हुआ है। यह वैज्ञानिक ज्ञान के निर्माण और सिद्धांतों के सत्यापन के लिए सबसे विश्वसनीय आधार प्रदान करता है।

274. (A) पहले स्वतंत्र चर का प्रभाव दूसरे स्वतंत्र चर के स्तर पर निर्भर करता है।
फैक्टोरियल अभिकल्प में 'अन्योन्यक्रिया' प्रभाव तब घटित होता है जब दो स्वतंत्र चर एक-दूसरे के प्रभाव को संशोधित करते हैं। इसका अर्थ यह है कि एक कारक का परिणाम स्थिर नहीं रहता, बल्कि वह दूसरे कारक की स्थिति के अनुसार बदल जाता है। उदाहरण के लिए, किसी शिक्षण पद्धति का लाभ लड़कों और लड़कियों पर अलग-अलग हो सकता है। अन्योन्यक्रिया को समझना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें बताता है कि मानवीय व्यवहार अक्सर एक अकेले कारण से नहीं, बल्कि कई कारकों के आपसी जटिल मेल से निर्धारित होता है।

275. (D) I, II और III
वैज्ञानिक अनुसंधान की पहचान उसकी व्यवस्थित प्रक्रिया, अनुभवजन्य आधार और सार्वजनिक स्वरूप से होती है। यह 'व्यवस्थित' है क्योंकि यह एक निश्चित और तार्किक चरणों का पालन करती है। यह 'अनुभवजन्य' है क्योंकि यह केवल प्रत्यक्ष अवलोकन और मापने योग्य तथ्यों पर निर्भर करती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह 'सार्वजनिक' है, जिसका अर्थ है कि इसे कोई भी अन्य शोधकर्ता दोहरा सकता है और इसकी जांच कर सकता है। ये तीनों विशेषताएं मिलकर विज्ञान को अंधविश्वास और व्यक्तिगत राय से अलग करती हैं।

276. (D) बाइसीरियल
बाइसीरियल सहसंबंध गुणांक उस स्थिति के लिए सबसे उपयुक्त है जहाँ एक चर निरंतर हो और दूसरा चर एक कृत्रिम द्वंद्व हो। यहाँ उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण होना एक कृत्रिम विभाजन है क्योंकि इसके पीछे की अंतर्निहित योग्यता वास्तव में निरंतर होती है जिसे एक कट-ऑफ के आधार पर बांटा गया है। बाइसीरियल सहसंबंध यह मानकर गणना करता है कि द्विभाजित चर का अंतर्निहित वितरण सामान्य है। यह पद विश्लेषण और शैक्षिक मापन में चरों के बीच संबंधों की मजबूती को मापने का एक सटीक तरीका है।

277. (C) संबंधित और असंबंधित प्रतिदर्श।
टी-परीक्षण के दो सबसे सामान्य प्रकारों का उपयोग डेटा के समूहों के बीच संबंधों की प्रकृति के आधार पर किया जाता है। 'संबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण' का उपयोग तब होता है जब एक ही समूह का दो बार परीक्षण किया जाता है या मिलान किए गए जोड़ों का उपयोग होता है। 'असंबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण' का उपयोग तब होता है जब दो पूरी तरह स्वतंत्र समूहों के माध्य की तुलना की जाती है। इन दोनों प्रकारों का चुनाव शोध की रूपरेखा और डेटा संग्रह की विधि पर निर्भर करता है ताकि निष्कर्ष सटीक और सार्थक हों।

278. (B) नियंत्रण समूह
नियंत्रण समूह प्रयोग का वह अनिवार्य हिस्सा है जिसे वह प्रयोगात्मक उपचार या स्वतंत्र चर नहीं दिया जाता है जिसका अध्ययन किया जा रहा है। अन्य सभी मामलों में यह प्रयोगात्मक समूह के समान ही रखा जाता है। इसका मुख्य कार्य एक 'आधार रेखा' या मानक प्रदान करना है जिससे उपचार के वास्तविक प्रभाव की तुलना की जा सके। नियंत्रण समूह के बिना शोधकर्ता यह नहीं बता सकता कि बदलाव वास्तव में उसके हस्तक्षेप के कारण आया है या केवल संयोग और समय बीतने के कारण। यह वैज्ञानिक प्रयोग की शुद्धता का रक्षक है।

279. (D) शून्य परिकल्पना
शून्य परिकल्पना वह सांख्यिकीय प्रस्ताव है जो यह दावा करता है कि अध्ययन किए जा रहे चरों के बीच कोई संबंध, प्रभाव या सार्थक अंतर मौजूद नहीं है। यह एक 'अस्वीकार किए जाने वाले' आधार के रूप में कार्य करती है जिसे शोधकर्ता अपने डेटा के माध्यम से चुनौती देने का प्रयास करता है। यदि सांख्यिकीय परीक्षण पी-मान के आधार पर यह दिखाता है कि प्राप्त परिणाम केवल संयोग नहीं हो सकते, तो इस परिकल्पना को त्याग दिया जाता है। यह शोध प्रक्रिया में निष्पक्षता और सांख्यिकीय कठोरता सुनिश्चित करने के लिए एक आवश्यक प्रारंभिक बिंदु है।

280. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
प्रतिचयन की विभिन्न विधियां शोध की प्रतिनिधित्वशीलता और व्यावहारिक सीमाओं को संतुलित करती हैं। सरल यादृच्छिक प्रतिचयन में प्रत्येक सदस्य के पास चयन की समान संभावना होती है। स्तरित प्रतिचयन में विशिष्ट उपसमूहों से यादृच्छिक रूप से चयन किया जाता है ताकि विविधता सुनिश्चित हो। गुच्छ प्रतिचयन में पूरी जनसंख्या को समूहों में बांटकर यादृच्छिक रूप से पूरे समूहों को चुना जाता है। सुविधाजनक प्रतिचयन एक गैर-प्रायिकता विधि है जहाँ शोधकर्ता केवल आसानी से उपलब्ध प्रतिभागियों को चुनता है।

281. (C) शोधकर्ता
टाइप 1 त्रुटि का जोखिम सीधे शोधकर्ता के नियंत्रण में होता है क्योंकि वह स्वयं 'अल्फा स्तर' का निर्धारण करता है। अल्फा स्तर वह अधिकतम सीमा है जिसे शोधकर्ता एक सत्य शून्य परिकल्पना को गलती से अस्वीकार करने के लिए स्वीकार करने को तैयार है। आमतौर पर इसे 0.05 या 0.01 पर रखा जाता है। इस स्तर को जितना कड़ा रखा जाएगा, टाइप 1 त्रुटि का जोखिम उतना ही कम होगा। यह शोधकर्ता का एक सचेत सांख्यिकीय निर्णय है जो उसके निष्कर्षों की शुद्धता और विश्वसनीयता को प्रभावित करता है।

282. (A) अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प
टाइम-सीरीज अभिकल्प एक अर्ध-प्रयोगात्मक संरचना है क्योंकि इसमें स्वतंत्र चर का हेरफेर तो शामिल है, लेकिन अक्सर प्रतिभागियों का समूहों में यादृच्छिक आवंटन संभव नहीं

संकेत देता है कि एक स्वतंत्र चर का प्रभाव दूसरे स्वतंत्र चर के स्तरों पर निर्भर नहीं है। इसका अर्थ है कि दोनों चर एक-दूसरे से स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे हैं और उनके बीच कोई अन्योन्यक्रिया नहीं हो रही है। यदि रेखाएं आपस में टकराती हैं या मुड़ती हैं, तो यह एक सार्थक अन्योन्यक्रिया प्रभाव की उपस्थिति को दर्शाता है।

247. (D) परीक्षण पद विश्लेषण
बाइसीरियल सहसंबंध का प्राथमिक और सबसे महत्वपूर्ण उपयोग मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक परीक्षणों के 'पद विश्लेषण' में किया जाता है। यह गुणांक यह मापने में मदद करता है कि एक विशिष्ट प्रश्न (जिसे कृत्रिम रूप से पास/फेल में बांटा गया है) पूरे परीक्षण के कुल प्राप्तांकों के साथ कितनी अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। यह परीक्षण की भेदभाव करने की क्षमता को दर्शाता है, यानी क्या प्रश्न उच्च और निम्न योग्यता वाले छात्रों के बीच अंतर कर पा रहा है। यह प्रक्रिया बेहतर और अधिक वैध मापन उपकरण विकसित करने के लिए अनिवार्य है।

248. (A) स्वतंत्र प्रतिदर्शों के लिए टी-सांख्यिकी
माध्यों के बीच अंतर की मानक त्रुटि स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण की गणना में एक केंद्रीय घटक है। यह मान यह दर्शाता है कि प्रतिचयन प्रक्रिया के दौरान दो स्वतंत्र समूहों के माध्य के बीच के अंतर में कितनी स्वाभाविक भिन्नता होने की संभावना है। यह टी-सांख्यिकी के सूत्र में हर के रूप में उपयोग किया जाता है। यह त्रुटि जितनी कम होगी, टी-मान उतना ही अधिक होगा, जिससे परिणाम के सांख्यिकीय रूप से सार्थक होने की संभावना बढ़ जाएगी। यह मापन सांख्यिकीय अनुमानों की शुद्धता और शक्ति को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

249. (C) मुख्य प्रभाव और अन्योन्यक्रिया प्रभाव दोनों की जांच की अनुमति देता है।
फैक्टोरियल अभिकल्प शोधकर्ताओं को एक साथ दो या अधिक स्वतंत्र चरों के प्रभाव का अध्ययन करने की अनूठी सुविधा प्रदान करता है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह न केवल प्रत्येक कारक के व्यक्तिगत 'मुख्य प्रभाव' को मापता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि क्या उनके बीच कोई 'अन्योन्यक्रिया प्रभाव' मौजूद है। अन्योन्यक्रिया हमें बताती है कि क्या एक चर का प्रभाव दूसरे की उपस्थिति में बदल जाता है। यह व्यापक दृष्टिकोण वास्तविक दुनिया की जटिलताओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है और शोध को अधिक प्रभावी और गहरा बनाता है।

250. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
विभिन्न शोध अभिकल्पों की अपनी अनूठी विशेषताएं होती हैं जो अध्ययन के नियंत्रण स्तर को निर्धारित करती हैं। पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प में नियंत्रण समूह और यादृच्छिकीकरण का अभाव होता है। इसके विपरीत, वास्तविक प्रयोगात्मक अभिकल्प में स्वतंत्र चर का हेरफेर और प्रतिभागियों का यादृच्छिक आवंटन अनिवार्य है। अर्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प में हेरफेर तो होता है, लेकिन यादृच्छिक आवंटन संभव नहीं होता है। अंत में, सहसंबंधी अभिकल्प चरों को उनके प्राकृतिक रूप में मापने और उनके आपसी संबंधों की जांच करने पर केंद्रित होता है।

251. (D) एक सैद्धांतिक अवधारणा जो प्रत्यक्ष रूप से अवलोकनीय नहीं है।
वैज्ञानिक अनुसंधान में 'संरचना' एक अमूर्त और सैद्धांतिक अवधारणा को संदर्भित करती है जिसे सीधे इंद्रियों द्वारा नहीं देखा जा सकता, जैसे बुद्धि, प्रेरणा या व्यक्तित्व। शोधकर्ता इन अवधारणाओं का अध्ययन करने के लिए उन्हें 'संक्रियात्मक' रूप से परिभाषित करते हैं, यानी उन्हें मापने योग्य व्यवहारों या परीक्षण प्राप्तांकों में बदलते हैं। चूंकि इन्हें सीधे नहीं मापा जा सकता, इसलिए इनके मापन के लिए विश्वसनीय उपकरणों और सिद्धांतों की आवश्यकता होती है। संरचनाएं वैज्ञानिक सिद्धांतों के निर्माण और मानवीय व्यवहार की सूक्ष्म व्याख्या के लिए आवश्यक आधार प्रदान करती हैं।

252. (B) एक दिशात्मक परिकल्पना
यह परिकल्पना 'दिशात्मक' है क्योंकि शोधकर्ता न केवल यह कह रहा है कि कार्टून देखने और व्यवहार के बीच संबंध होगा, बल्कि वह स्पष्ट रूप से उस प्रभाव की दिशा भी बता रहा है। यह एक विशिष्ट भविष्यवाणी है जो शोध को एक निश्चित लक्ष्य प्रदान करती है। दिशात्मक परिकल्पनाएं आमतौर पर पूर्व ज्ञान या स्थापित सिद्धांतों पर आधारित होती हैं। सांख्यिकीय रूप से, ऐसी परिकल्पनाओं का परीक्षण एक-पुच्छीय परीक्षण के माध्यम से किया जाता है, जो परिणाम के विश्लेषण को अधिक केंद्रित और संवेदनशील बनाता है।

253. (C) नियंत्रण चर
नियंत्रण चर वह कारक है जिसे शोधकर्ता प्रयोग के दौरान जानबूझकर स्थिर या अपरिवर्तित रखता है। इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि यह चर आश्रित चर को प्रभावित न करे और स्वतंत्र चर के वास्तविक प्रभाव को भ्रमित न करे। यदि इन बाहरी कारकों को नियंत्रित नहीं किया जाता है, तो वे परिणामों की शुद्धता को दूषित कर सकते हैं। नियंत्रण चरों को स्थिर रखना प्रयोग की आंतरिक वैधता को बढ़ाने के लिए अनिवार्य है। यह शोधकर्ता को विश्वास दिलाता है कि देखा गया परिणाम केवल प्रयोगात्मक हेरफेर के कारण ही आया है।

254. (D) जनसंख्या की उन सभी इकाइयों की सूची जिनसे प्रतिदर्श चुना जाएगा।
प्रतिचयन ढांचा प्रतिचयन प्रक्रिया का एक अनिवार्य आधार है। यह उन सभी व्यक्तियों या इकाइयों की एक वास्तविक और अद्यतन सूची है जो उस जनसंख्या का हिस्सा हैं जिसका अध्ययन किया जाना है। उदाहरण के लिए, यदि हमें छात्रों का अध्ययन करना है, तो स्कूल का रजिस्टर प्रतिचयन ढांचा होगा। एक सटीक ढांचे के बिना, यादृच्छिक प्रतिचयन करना असंभव है। यदि यह ढांचा अधूरा या दोषपूर्ण है, तो इससे प्राप्त प्रतिदर्श प्रतिनिधि नहीं होगा और अध्ययन में प्रतिचयन त्रुटि और पूर्वाग्रह का जोखिम बढ़ जाएगा।

केवल तथ्यों को इकट्ठा करना नहीं है, बल्कि एक व्यवस्थित और निष्पक्ष प्रक्रिया के माध्यम से सिद्धांतों का निर्माण और सत्यापन करना है। वस्तुनिष्ठता यह सुनिश्चित करती है कि ज्ञान शोधकर्ता के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से मुक्त हो। अनुभवजन्य साक्ष्यों पर आधारित यह प्रक्रिया ही विज्ञान को विश्वसनीय बनाती है। संक्षेप में, अनुसंधान का उद्देश्य प्रकृति और मानव व्यवहार के पीछे छिपे नियमों को उजागर करना है।

292. (D) निर्णयात्मक प्रतिचयन
निर्णयात्मक प्रतिचयन, जिसे सोद्देश्य प्रतिचयन भी कहा जाता है, एक गैर-प्रायिकता तकनीक है जहाँ शोधकर्ता अपने व्यक्तिगत अनुभव और ज्ञान के आधार पर उन विशिष्ट प्रतिभागियों को चुनता है जो उसे सबसे उपयुक्त लगते हैं। इसमें यादृच्छिक चयन का अभाव होता है, इसलिए जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य के पास चुने जाने का समान अवसर नहीं होता। अन्य विकल्प, जैसे व्यवस्थित, गुच्छ और स्तरित प्रतिचयन, प्रायिकता विधियाँ हैं क्योंकि वे यादृच्छिकीकरण के सिद्धांतों का पालन करती हैं। निर्णयात्मक प्रतिचयन अक्सर उन विशेष स्थितियों में उपयोगी है जहाँ विशेषज्ञ जानकारी की आवश्यकता होती है।

293. (C) टाइप I त्रुटि
टाइप 1 त्रुटि सांख्यिकीय निर्णय की वह स्थिति है जहाँ शोधकर्ता गलती से एक ऐसी शून्य परिकल्पना को खारिज कर देता है जो वास्तव में सत्य थी। सरल शब्दों में, इसे 'झूठी सकारात्मक' खोज कहा जाता है, जहाँ शोधकर्ता को लगता है कि उसने एक वास्तविक प्रभाव या अंतर पाया है, जबकि वास्तव में वह केवल यादृच्छिक संयोग या शोर था। इसे अल्फा द्वारा दर्शाया जाता है। इस त्रुटि को कम करना वैज्ञानिक शोध की शुद्धता के लिए अनिवार्य है क्योंकि यह गलत सिद्धांतों के प्रसार को रोकने में मदद करता है।

294. (B) पूर्व-प्रयोगात्मक अभिकल्प
स्थिर-समूह तुलना अभिकल्प पूर्व-प्रयोगात्मक श्रेणी का एक हिस्सा है क्योंकि इसमें नियंत्रण और प्रयोगात्मक समूहों का उपयोग तो किया जाता है, लेकिन प्रतिभागियों को इन समूहों में यादृच्छिक रूप से आवंटित नहीं किया जाता है। साथ ही, इसमें कोई पूर्व-परीक्षण या पूर्व-मापन भी नहीं होता है। इसके कारण, शोधकर्ता यह सुनिश्चित नहीं कर सकता कि समूह अध्ययन की शुरुआत में समान थे या नहीं। यादृच्छिकीकरण की कमी इस अभिकल्प की आंतरिक वैधता को बहुत कमजोर कर देती है, जिससे उपचार के प्रभाव के बारे में निश्चित निष्कर्ष निकालना कठिन हो जाता है।

295. (D) फैक्टोरियल प्रयोग।
टू-वे एनोवा एक उन्नत सांख्यिकीय तकनीक है जिसे विशेष रूप से फैक्टोरियल प्रयोगों के विश्लेषण के लिए अभिकल्पित किया गया है। फैक्टोरियल प्रयोग वे होते हैं जिनमें दो या दो से अधिक स्वतंत्र चर एक साथ शामिल होते हैं। टू-वे एनोवा शोधकर्ता को तीन महत्वपूर्ण उत्तर प्रदान करता है: प्रत्येक स्वतंत्र चर का मुख्य प्रभाव और उनके बीच का अन्योन्यक्रिया प्रभाव। यह विश्लेषण यह समझने में मदद करता है कि चरों का संयुक्त प्रभाव उनके व्यक्तिगत प्रभावों से किस प्रकार भिन्न है। यह जटिल प्रयोगात्मक डेटा की व्याख्या करने के लिए एक अनिवार्य उपकरण है।

296. (A) कोई रैखिक संबंध नहीं।
सहसंबंध गुणांक में 0.00 का मान यह इंगित करता है कि चरों के बीच कोई 'रैखिक' संबंध मौजूद नहीं है। इसका अर्थ है कि एक चर के मान में परिवर्तन होने पर दूसरे चर में कोई निश्चित या सीधी दिशा में बदलाव नहीं होता है। हालांकि, शोधकर्ताओं को सावधान रहना चाहिए क्योंकि 0.00 का अर्थ यह नहीं है कि चरों के बीच कोई भी संबंध नहीं है; उनके बीच कोई जटिल या वक्ररेखीय संबंध अभी भी मौजूद हो सकता है जिसे यह गुणांक पकड़ने में असमर्थ है। यह चरों के स्वतंत्र व्यवहार को दर्शाता है।

297. (C) अंतर प्राप्तांकों की जनसंख्या सामान्य रूप से वितरित है।
संबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण के उपयोग के लिए यह एक महत्वपूर्ण सांख्यिकीय धारणा है कि दो मापों के बीच के 'अंतर' का वितरण जनसंख्या में सामान्य होना चाहिए। चूंकि हम दो संबंधित समूहों के बीच के अंतर के माध्य का परीक्षण कर रहे हैं, इसलिए यह वितरण घंटी के आकार का होना अनिवार्य है ताकि टी-सांख्यिकी और उससे प्राप्त पी-मान सटीक हों। यद्यपि बड़े प्रतिदर्शों के साथ यह धारणा थोड़ी लचीली हो सकती है, फिर भी इसकी जांच करना निष्कर्षों की सांख्यिकीय वैधता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

298. (A) स्वतंत्र चर
इस अध्ययन में 'भोजन का पुरस्कार' वह कारक है जिसे शोधकर्ता द्वारा सक्रिय रूप से नियंत्रित और बदला जा रहा है ताकि सीखने पर इसके प्रभाव को देखा जा सके। चूंकि यह वह 'कारण' है जिसके हेरफेर से व्यवहार में बदलाव की उम्मीद की जा रही है, इसलिए इसे स्वतंत्र चर माना जाएगा। चूहे द्वारा भूलभुलैया पार करने में लिया गया समय आश्रित चर होगा। प्रयोगात्मक मनोविज्ञान में, स्वतंत्र चर वह उपकरण है जिसका उपयोग शोधकर्ता व्यवहार के प्रेरक कारकों को समझने और कार्य-कारण संबंध स्थापित करने के लिए करता है।

299. (D) असंबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण।
जब शोधकर्ता को दो ऐसे समूहों के माध्य की तुलना करनी होती है जो एक-दूसरे से पूरी तरह स्वतंत्र हों (जैसे पुरुष और महिला छात्र), तो असंबंधित प्रतिदर्श टी-परीक्षण सबसे उपयुक्त होता है। यहाँ पुरुष और महिला दो अलग-अलग श्रेणियां हैं और एक छात्र केवल एक ही समूह का हिस्सा हो सकता है। यह परीक्षण शोधकर्ता को यह निर्धारित करने में मदद करता है कि क्या उनके औसत प्राप्तांकों के बीच का अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है या केवल संयोग का परिणाम है। यह स्वतंत्र समूहों के विश्लेषण के लिए मानक सांख्यिकी है।

300. (B) आश्रित चर पर स्वतंत्र चर के प्रभाव को पृथक करना।
प्रयोग में चरों को नियंत्रित करने का अंतिम और मौलिक लक्ष्य 'आंतरिक वैधता' प्राप्त करना है। शोधकर्ता बाहरी चरों को इसलिए नियंत्रित करता है ताकि वह निश्चित रूप से कह सके कि आश्रित चर में देखा गया कोई भी परिवर्तन केवल और

केवल स्वतंत्र चर के हेरफेर के कारण ही हुआ है। नियंत्रण के बिना, अन्य भ्रामक कारक परिणामों को दूषित कर सकते हैं, जिससे कार्य-कारण संबंध की व्याख्या करना असंभव हो जाता है। यह नियंत्रण ही वैज्ञानिक प्रयोग को अन्य अवलोकन संबंधी विधियों से अधिक शक्तिशाली, विश्वसनीय और व्याख्यात्मक बनाता है।

अध्याय 07

व्यक्तित्व एवं सामाजिक व्यवहार

1. निम्नलिखित में से कौन व्यक्तित्व को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
   (A) व्यक्ति की अस्थायी भावनात्मक स्थिति और मनोदशा।
   (B) व्यवहार करने, महसूस करने और सोचने का अनूठा और अपेक्षाकृत स्थिर स्वरूप।
   (C) व्यक्ति की बौद्धिक क्षमताएं और संज्ञानात्मक कौशल।
   (D) सामाजिक भूमिकाएं और अपेक्षाएं जिनका पालन व्यक्ति समाज में करता है।

2. फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के अनुसार, व्यक्तित्व का कौन सा घटक 'सुख सिद्धांत' पर कार्य करता है?
   (A) इड
   (B) ईगो
   (C) सुपर ईगो
   (D) लिबिडो

3. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
   कथन I: अभिवृत्ति की प्रकृति उसके संज्ञानात्मक, भावात्मक और व्यवहारात्मक घटकों को संदर्भित करती है।
   कथन II: अभिवृत्ति के कार्य उन उद्देश्यों को संदर्भित करते हैं जो वह व्यक्ति के लिए पूरे करती है, जैसे कि अहं-रक्षा।
   (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
   (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
   (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
   (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

4. प्रभाव निर्माण में, शुरुआती जानकारी को अधिक महत्व देने की प्रवृत्ति को किस रूप में जाना जाता है?
   (A) नवीनता प्रभाव
   (B) हेलो प्रभाव
   (C) आत्म-सेवा पूर्वाग्रह
   (D) प्रथम प्रभाव

5. निम्नलिखित में से कौन सा गॉर्डन ऑलपोर्ट द्वारा पहचाने गए गुणों का प्रकार नहीं है?
   (A) कार्डिनल गुण
   (B) केंद्रीय गुण
   (C) बुनियादी गुण
   (D) गौण गुण

6. व्यक्तित्व मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रक्षेपी परीक्षण का उदाहरण है?
   (A) मिनेसोटा मल्टीफेजिक पर्सनालिटी इन्वेंटरी (एमएमपीआई)
   (B) विषय आत्मबोध परीक्षण (टीएटी)
   (C) मायर्स-ब्रिग्स टाइप इंडिकेटर (एमबीटीआई)
   (D) 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (16पीएफ)

7. एक छात्र अपनी परीक्षा के खराब प्रदर्शन के लिए अपनी तैयारी की कमी के बजाय अनुचित रूप से कठिन प्रश्नपत्र को दोष देता है। यह किसका अनुप्रयोग है?
   (A) मौलिक आरोपण त्रुटि
   (B) कर्ता-प्रेक्षक प्रभाव
   (C) संज्ञानात्मक विसंगति
   (D) आत्म-सेवा पूर्वाग्रह

8. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
   अभिकथन (A): एरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धांत में, 'घनिष्ठता बनाम अलगाव' चरण का सफल समाधान प्रेम के गुण की ओर ले जाता है।
   कारण (R): एरिक्सन का मानना था कि घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए पहचान की एक मजबूत भावना, जो पिछले चरण में विकसित होती है, आवश्यक है।
   (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
   (D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

9. किसी समूह द्वारा पसंद किए जाने और स्वीकार किए जाने की इच्छा के कारण होने वाली अनुरूपता को क्या कहा जाता है?
   (A) सूचनात्मक सामाजिक प्रभाव
   (B) अल्पसंख्यक प्रभाव
   (C) मानकीकृत सामाजिक प्रभाव
   (D) अधिकार के प्रति आज्ञाकारिता

10. कौन सा कथन समूह संसक्ति की अवधारणा का गलत वर्णन करता है?
   (A) उच्च संसक्ति हमेशा बेहतर निर्णय लेने और प्रदर्शन की ओर ले जाती है।
   (B) यह वह स्तर है जिस तक सदस्य एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं और समूह में रहने के लिए प्रेरित होते हैं।
   (C) छोटे समूह बड़े समूहों की तुलना में अधिक संसक्त होते हैं।

264. (A) बिटवीन-सब्जेक्ट्स अभिकल्प
बाह्य-विषय अभिकल्प वह प्रयोगात्मक संरचना है जिसमें प्रत्येक प्रतिभागी केवल एक ही प्रयोगात्मक स्थिति या स्तर में भाग लेता है। इसका अर्थ है कि तुलना की जाने वाली प्रत्येक स्थिति में पूरी तरह से अलग-अलग प्रतिभागियों के समूहों का उपयोग किया जाता है। इसका मुख्य लाभ यह है कि यह अभ्यास प्रभाव, थकान या संवेदीकरण जैसी समस्याओं को रोकता है, क्योंकि कोई भी प्रतिभागी उपचार को दोबारा नहीं अनुभव करता है। यह स्वतंत्र समूहों के माध्य की तुलना करने के लिए एक शुद्ध और व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली शोध पद्धति है।

265. (C) टू-वे एनोवा
2x2 फैक्टोरियल अभिकल्प के डेटा विश्लेषण के लिए टू-वे एनोवा सबसे उपयुक्त सांख्यिकीय परीक्षण है। इसका कारण यह है कि इस अभिकल्प में दो स्वतंत्र चर शामिल हैं और शोधकर्ता को उनके व्यक्तिगत मुख्य प्रभावों के साथ-साथ उनके आपसी अन्योन्यक्रिया प्रभाव की भी जांच करनी होती है। टी-परीक्षण या वन-वे एनोवा इस जटिल संरचना का पूरी तरह से विश्लेषण नहीं कर सकते। टू-वे एनोवा यह स्पष्ट करता है कि क्या एक कारक का प्रभाव दूसरे की उपस्थिति में बदलता है, जो अधिक विस्तृत वैज्ञानिक निष्कर्ष प्रदान करता है।

266. (A) बाह्य वैधता
बाह्य वैधता शोध की वह गुणवत्ता है जो यह निर्धारित करती है कि अध्ययन के परिणामों को वास्तविक दुनिया की व्यापक परिस्थितियों, अन्य आबादियों और समय पर कितनी सटीकता से लागू किया जा सकता है। यह सामान्यीकरण की क्षमता से संबंधित है। यदि कोई शोध केवल एक विशिष्ट प्रयोगशाला या बहुत सीमित छोटे समूह में ही सार्थक रहता है और बाहर प्रभावी नहीं होता, तो उसकी बाह्य वैधता कम मानी जाती है। वैज्ञानिक अनुसंधान की व्यावहारिक उपयोगिता और महत्व काफी हद तक उसकी उच्च बाह्य वैधता पर निर्भर करता है।

267. (D) दो स्वतंत्र समूहों के माध्य की तुलना के लिए।
असंबंधित प्रतिदर्शों के लिए टी-परीक्षण, जिसे स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण भी कहा जाता है, तब उपयोग किया जाता है जब शोधकर्ता दो ऐसे समूहों के माध्य की तुलना करना चाहता है जो एक-दूसरे से पूरी तरह स्वतंत्र हों। इसका अर्थ है कि दोनों समूहों में अलग-अलग प्रतिभागी हैं और एक समूह के सदस्यों का दूसरे समूह के साथ कोई व्यवस्थित जुड़ाव या मिलान नहीं है। यह परीक्षण शोधकर्ता को यह निर्धारित करने में मदद करता है कि क्या समूहों के बीच देखा गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है या केवल यादृच्छिक संयोग का परिणाम है।

268. (B) अनुमानात्मक सांख्यिकी
माध्यों के बीच अंतर की सार्थकता अनुमानात्मक सांख्यिकी की एक आधारभूत अवधारणा है। अनुमानात्मक सांख्यिकी का मुख्य उद्देश्य एक छोटे प्रतिदर्श से प्राप्त डेटा का उपयोग करके पूरी जनसंख्या के बारे में निष्कर्ष निकालना और भविष्यवाणी करना है। यह प्रक्रिया शोधकर्ता को यह निर्णय लेने में मदद करती है कि क्या समूहों के बीच देखा गया अंतर केवल प्रतिचयन त्रुटि के कारण है या वह स्वतंत्र चर के वास्तविक प्रभाव को दर्शाता है। यह वैज्ञानिक सिद्धांतों को सामान्यीकृत करने के लिए अनिवार्य मापदंड प्रदान करती है।

269. (C) मिथ्याकरण
वैज्ञानिक पद्धति का तर्क कार्ल पॉपर द्वारा दिए गए 'मिथ्याकरण' के सिद्धांत पर आधारित है। इसका अर्थ है कि विज्ञान दावों को "सिद्ध" करने के बजाय उन दावों को हटाने का प्रयास करता है जो गलत पाए जाते हैं। एक सिद्धांत को तब तक वैज्ञानिक और विश्वसनीय माना जाता है जब तक कि उसे बार-बार किए गए परीक्षणों के माध्यम से गलत साबित न किया जा सके। यह दृष्टिकोण विज्ञान को रुढ़िवादिता से मुक्त रखता है और यह सुनिश्चित करता है कि ज्ञान हमेशा निरंतर सुधार, संदेह और अनुभवजन्य सत्यापन के लिए खुला रहे।

270. (D) भ्रामक चर
भ्रामक चर एक अवांछित बाह्य चर है जो स्वतंत्र चर के साथ व्यवस्थित रूप से जुड़ा होता है। जब यह चर आश्रित चर को भी प्रभावित करता है, तो शोधकर्ता के लिए यह पहचानना मुश्किल हो जाता है कि परिणाम वास्तव में उपचार के कारण आए हैं या इस बाहरी कारक के कारण। यह प्रयोग की आंतरिक वैधता के लिए एक गंभीर खतरा है क्योंकि यह कार्य-कारण संबंध की व्याख्या को दूषित कर देता है। एक मजबूत शोध अभिकल्प का मुख्य उद्देश्य इन भ्रामक चरों को पहचानना और उन्हें नियंत्रित करना होता है।

271. (A) स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन
स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन एक शक्तिशाली तकनीक है जो विविध जनसंख्या से प्रतिदर्श की प्रतिनिधित्वशीलता को बढ़ाती है। इसमें जनसंख्या को विशिष्ट विशेषताओं के आधार पर अलग-अलग समूहों या 'स्तरों' में विभाजित किया जाता है और फिर प्रत्येक स्तर से यादृच्छिक रूप से प्रतिभागियों को चुना जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि जनसंख्या के सभी महत्वपूर्ण वर्गों, विशेष रूप से छोटे उपसमूहों, को प्रतिदर्श में उचित और संतुलित स्थान मिले। यह विधि प्रतिचयन त्रुटि को कम करती है और शोध के निष्कर्षों को अधिक विश्वसनीय और व्यापक बनाती है।

272. (B) अस्वीकृत
सांख्यिकीय शोध में, जब हम कहते हैं कि परिणाम "सार्थक" है, तो इसका तकनीकी अर्थ यह है कि प्राप्त साक्ष्य इतने मजबूत हैं कि हम शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर सकते हैं। यह आमतौर पर तब होता है जब पी-मान शोधकर्ता द्वारा निर्धारित अल्फा स्तर से कम होता है। शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करना यह दर्शाता है कि चरों के बीच देखा गया प्रभाव केवल संयोग नहीं है, बल्कि वह स्वतंत्र चर के वास्तविक योगदान का परिणाम है। यह वैकल्पिक परिकल्पना को वैज्ञानिक समर्थन प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

273. (B) कारण संबंधी परिकल्पना
प्रयोगात्मक अभिकल्प का सर्वोच्च उद्देश्य कारण संबंधी परिकल्पना का कठोरता से परीक्षण करना है। यह अन्य शोध

S. कुर्ट लेविन

सूची-II (मुख्य अवधारणा)

1. जीवन शैली
2. जीवन स्थान
3. सामूहिक अचेतन
4. मनोसामाजिक चरण

(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

22. एक नेता जो सदस्यों से परामर्श किए बिना समूह के सभी निर्णय लेता है, वह किस नेतृत्व शैली का प्रदर्शन कर रहा है?
(A) लोकतांत्रिक
(B) निरंकुश
(C) अहस्तक्षेपकारी
(D) परिवर्तनकारी

23. आरोपण सिद्धांत मुख्य रूप से किससे संबंधित है?
(A) लोग वस्तुओं और मुद्दों के प्रति अभिवृत्तियां कैसे बनाते हैं।
(B) लोग आंतरिक संघर्ष को कम करने के लिए अपने विश्वासों को कैसे बदलते हैं।
(C) लोग एक-दूसरे के प्रति कैसे आकर्षित होते हैं।
(D) लोग अपने और दूसरों के व्यवहार के कारणों की व्याख्या कैसे करते हैं।

24. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी को अभिवृत्तियों का कार्य माना जाता है?
(A) संज्ञानात्मक विसंगति कार्य
(B) मूल्य-अभिव्यंजक कार्य
(C) अहं-रक्षक कार्य
(D) ज्ञान कार्य

25. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): प्रक्षेपी परीक्षण इस विचार पर आधारित हैं कि व्यक्ति अपनी अचेतन आवश्यकताओं और संघर्षों को अस्पष्ट उद्दीपनों पर प्रक्षेपित करेंगे।
कारण (R): प्रक्षेपी परीक्षणों में उपयोग किए जाने वाले उद्दीपन, जैसे स्याही के धब्बे, विशिष्ट प्रतिक्रियाएं प्राप्त करने के लिए जानबूझकर असंरचित रखे जाते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

26. एरिक्सन के सिद्धांत का कौन सा चरण फ्रायड की सुप्तावस्था से मेल खाता है और क्षमता की भावना विकसित करने पर केंद्रित है?
(A) परिश्रम बनाम हीनता
(B) विश्वास बनाम अविश्वास
(C) स्वायत्तता बनाम शर्म और संदेह
(D) पहल बनाम अपराधबोध

27. ऑलपोर्ट के सिद्धांत में 'कार्यात्मक स्वायत्तता' की अवधारणा क्या सुझाव देती है?
(A) सभी मानवीय व्यवहारों का पता बुनियादी आवेगों से लगाया जा सकता है।
(B) गुण सामाजिक जीवन के कार्यों द्वारा निर्धारित होते हैं।
(C) ईगो, इड और सुपर ईगो से स्वतंत्र रूप से कार्य करता है।
(D) वयस्कों के उद्देश्य उनके बचपन के मूल कारणों से कार्यात्मक रूप से स्वतंत्र होते हैं।

28. पारस्परिक आकर्षण के संदर्भ में, 'सामीप्य' का सिद्धांत सुझाव देता है कि हम उन लोगों के साथ संबंध बनाने की अधिक संभावना रखते हैं जो:
(A) समान अभिवृत्तियां और विश्वास साझा करते हैं।
(B) हमारे भौतिक रूप से करीब हैं।
(C) जिन्हें हम शारीरिक रूप से आकर्षक मानते हैं।
(D) जिनके व्यक्तित्व गुण पूरक होते हैं।

29. एक व्यक्तित्व इन्वेंटरी को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:
(A) एक परीक्षण जो अचेतन विचारों को प्रकट करने के लिए अस्पष्ट उद्दीपन प्रस्तुत करता है।
(B) कृत्रिम वास्तविक जीवन परिदृश्य में किसी व्यक्ति का अवलोकन।
(C) एक संरचित प्रश्नावली जहां व्यक्ति अपनी भावनाओं या व्यवहारों की रिपोर्ट करते हैं।
(D) भावनात्मक प्रतिक्रिया का एक शारीरिक माप।

30. सुलिवन के सिद्धांत में, 'स्व-प्रणाली' एक गतिशीलता है जो मुख्य रूप से केंद्रित है:
(A) रचनात्मक अभिव्यक्ति प्राप्त करने पर।
(B) यौन और आक्रामक इच्छाओं को पूरा करने पर।
(C) सामूहिक अचेतन से जुड़ने पर।
(D) पारस्परिक सुरक्षा की खोज और चिंता से बचने पर।

31. निम्नलिखित में से कौन व्यक्तित्व सिद्धांतकार को उनके प्राथमिक सैद्धांतिक अभिविन्यास के साथ सही ढंग से जोड़ता है?
(A) लेविन - क्षेत्र सिद्धांत
(B) फ्रायड - गुण सिद्धांत
(C) ऑलपोर्ट - मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत
(D) एरिक्सन - पारस्परिक सिद्धांत

32. शारीरिक आकर्षण जैसी एक विशेषता के आधार पर किसी व्यक्ति की समग्र धारणा बनाने की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?
(A) प्रथम प्रभाव

76. "पूर्ण अपने अंशों के योग से बड़ा है" एक सिद्धांत है जिसे "जीवन स्थान" के भीतर व्यक्तित्व के कुर्ट लेविन के दृष्टिकोण पर लागू किया जा सकता है। यह मनोविज्ञान के किस स्कूल के प्रभाव को दर्शाता है?
(A) व्यवहारवाद
(B) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान
(C) मानवतावादी मनोविज्ञान
(D) संरचनावाद

77. मुख्य रूप से किसी वस्तु के प्रति व्यक्ति की भावनाओं और संवेगों पर आधारित अभिवृत्ति के बारे में कहा जाता है कि उसका _______ मजबूत है।
(A) व्यवहारात्मक घटक
(B) संज्ञानात्मक घटक
(C) भावात्मक घटक
(D) कार्यात्मक घटक

78. निम्नलिखित में से कौन अवधारणा और सिद्धांतकार का एक 'गलत युग्म' है?
(A) सामूहिक अचेतन - युंग
(B) हीनता ग्रंथी - एडलर
(C) मनोसामाजिक चरण - एरिक्सन
(D) जीवन स्थान - फ्रायड

79. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: व्यक्तित्व के स्थितिजन्य परीक्षणों का उद्देश्य नियंत्रित, जीवन जैसे परिवेश में व्यवहार का अवलोकन करना है।
कथन II: स्थितिजन्य परीक्षणों की मुख्य कमी यह है कि वे कृत्रिम होते हैं और वास्तविक दुनिया के व्यवहार को प्रतिबिंबित नहीं कर सकते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

80. 'अहस्तक्षेपकारी' नेतृत्व शैली की विशेषता है:
(A) नेता की ओर से सक्रिय मार्गदर्शन और दिशा।
(B) नेता की ओर से न्यूनतम भागीदारी और दखल न देने वाला दृष्टिकोण।
(C) निर्णय लेने में समूह के सदस्यों की उच्च स्तर की भागीदारी।
(D) सख्त नियंत्रण और केंद्रीकृत अधिकार।

81. सुलिवन के अनुसार, 'गुड-मी', 'बैड-मी', और 'नॉट-मी' किसके उदाहरण हैं?
(A) गतिकी
(B) व्यक्तिकरण
(C) परातार्किक विकृति
(D) अनुभव के तरीके

82. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): सामाजिक मनोविज्ञान में अभिवृत्तियों का मापन एक केंद्रीय चिंता है क्योंकि अभिवृत्तियों को व्यवहार को प्रभावित करने वाला माना जाता है।
कारण (R): लिकर्ट पैमाने जैसी अभिवृत्ति स्केल किसी वस्तु के प्रति व्यक्ति की प्रवृत्ति का मात्रात्मक माप प्रदान करती हैं, लेकिन वे व्यवहार की भविष्यवाणी की गारंटी नहीं दे सकतीं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

83. अपनी स्वयं की अवांछनीय भावनाओं को दूसरों पर आरोपित करने की प्रक्रिया एक रक्षा तंत्र है जिसे कहा जाता है:
(A) उदात्तीकरण
(B) प्रतिक्रिया निर्माण
(C) प्रक्षेपण
(D) विस्थापन

84. अभिवृत्ति का 'अहं-रक्षक' कार्य क्या करता है?
(A) व्यक्तियों को उनके मूल मूल्यों को व्यक्त करने में मदद करता है।
(B) दुनिया को समझने के लिए संदर्भ का एक ढांचा प्रदान करता है।
(C) सकारात्मक सामाजिक बातचीत की सुविधा प्रदान करता है।
(D) खतरों से व्यक्ति के आत्म-सम्मान की रक्षा करता है।

85. एरिक्सन के सिद्धांत के किस चरण में 'विश्वास बनाम अविश्वास' का संकट शामिल है?
(A) बचपन (1-3 वर्ष)
(B) पूर्व-स्कूली (3-5 वर्ष)
(C) शैशवावस्था (प्रथम वर्ष)
(D) किशोरावस्था

86. एक गुण जो केवल कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में मौजूद होता है, जैसे कि सार्वजनिक रूप से बोलते समय घबराहट होना, उसे ऑलपोर्ट क्या कहेंगे?
(A) कार्डिनल गुण
(B) गौण गुण
(C) केंद्रीय गुण
(D) सामान्य गुण

87. निम्नलिखित में से कौन कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत की अवधारणा नहीं है?
(A) जीवन स्थान
(B) वैलेंस
(C) शक्ति
(D) आद्यरूप

(B) एडलर - हीनता की भावनाओं को दूर करने का अभियान।
(C) फ्रायड - व्यवहार पर अचेतन संघर्षों का प्रभाव।
(D) युंग - व्यक्तित्व का इड, ईगो और सुपर ईगो में विभाजन।

44. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): उच्च समूह संसक्ति कभी-कभी समूह के प्रदर्शन के लिए हानिकारक हो सकती है।
कारण (R): अत्यधिक संसक्त समूह 'ग्रुपथिंक' से पीड़ित हो सकते हैं, जहाँ सर्वसम्मति का दबाव वैकल्पिक कार्यों के यथार्थवादी मूल्यांकन पर हावी हो जाता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

45. अभिवृत्ति का 'ज्ञान कार्य' व्यक्ति की मदद करता है:
(A) खतरों से अपने आत्म-सम्मान की रक्षा करने में।
(B) अपने मुख्य मूल्यों या आत्म-अवधारणा को व्यक्त करने में।
(C) अपनी दुनिया को व्यवस्थित और संरचित करने में, निरंतरता और स्थिरता प्रदान करते हुए।
(D) पुरस्कार प्राप्त करने या दंड से बचने में।

46. निम्नलिखित में से कौन सी एक प्रक्षेपी परीक्षण की प्राथमिक विशेषता है?
(A) उच्च विश्वसनीयता और वैधता
(B) मानकीकृत स्कोरिंग और व्याख्या
(C) वस्तुनिष्ठ सही/गलत या बहुविकल्पीय प्रारूप
(D) अस्पष्ट या असंरचित उद्दीपनों का उपयोग

47. फ्रायड के मनोयौन विकास के सिद्धांत का अंतिम चरण, जो यौवन से शुरू होता है, वह है:
(A) जननेंद्रिय चरण
(B) सुप्तावस्था
(C) लैंगिक चरण
(D) मुखीय चरण

48. सूची-I (अवधारणा) को सूची-II (संबंधित क्षेत्र) के साथ सुमेलित करें:
सूची-I (अवधारणा)
P. अहं-रक्षक कार्य
Q. आरोपण
R. अनुरुपता
S. व्यक्तित्व इन्वेंटरी
सूची-II (संबंधित क्षेत्र)
1. समूह गतिशीलता
2. अभिवृत्ति
3. व्यक्तित्व मूल्यांकन
4. सामाजिक प्रत्यक्षण

(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

49. युंगियन मनोविज्ञान में 'आद्यरुप' को सबसे अच्छी तरह वर्णित किया गया है:
(A) दमित बचपन की यादें।
(B) सामूहिक अचेतन से प्राप्त सार्वभौमल स्वरुप और छवियां।
(C) व्यक्ति के सचेत लक्ष्य और आकांक्षाएं।
(D) सीखी गई सामाजिक भूमिकाएं और व्यवहार।

50. 'पहचान बनाम भूमिका भ्रम' का संकट एरिक्सन के किस मनोसामाजिक चरण का मुख्य कार्य है?
(A) किशोरावस्था
(B) प्रारंभिक वयस्कता
(C) स्कूली आयु
(D) खेलने की आयु

51. ऑलपोर्ट के अनुसार 'कार्डिनल गुण' वह गुण है जो:
(A) उन 5-10 गुणों में से एक है जो किसी व्यक्ति का सबसे अच्छा वर्णन करते हैं।
(B) केवल विशिष्ट, सीमित स्थितियों में व्यक्त होता है।
(C) इतना प्रभावी होता है कि वह व्यक्ति के लगभग सभी व्यवहारों को प्रभावित करता है।
(D) एक विशिष्ट संस्कृति के भीतर सभी लोगों के लिए सामान्य होता है।

52. समूह के अन्य लोगों के व्यवहार से मेल खाने के लिए अपने व्यवहार को बदलने की प्रवृत्ति को क्या कहा जाता है?
(A) नेतृत्व
(B) समूह संसक्ति
(C) सामाजिक आलस्य
(D) अनुरुपता

53. अभिवृत्ति मापन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. थर्स्टन पैमाने के लिए पैमाना बनाने से पहले निर्णायकों को मदों की अनुकूलता को रेट करना आवश्यक होता है।
II. लिकर्ट पैमाना किसी कथन के साथ सहमति या असहमति की तीव्रता को मापता है।
III. सिमेंटिक डिफरेंशियल पैमाना अभिवृत्ति वस्तु को रेट करने के लिए द्विध्रुवी विशेषण युग्मों का उपयोग करता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

54. सुलिवन की 'गतिशीलता' की अवधारणा का तात्पर्य है:

कथन II: एरिक्सन ने मनोसामाजिक विकास का एक सिद्धांत प्रस्तावित करके फ्रायड के विचारों का विस्तार किया जो पूरे जीवनकाल तक फैला हुआ है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

99. समूह में अनुरुपता के स्तर का मुख्य निर्धारक निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) स्थिति की अस्पष्टता।
(B) बहुमत समूह का आकार।
(C) उपरोक्त सभी।
(D) समूह की सर्वसम्मति।

100. यह अवधारणा कि व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक प्रणालियों का गतिशील संगठन है जो पर्यावरण के साथ उसके अनूठे समायोजन को निर्धारित करते हैं, किसके द्वारा प्रस्तावित की गई थी?
(A) सिग्मंड फ्रायड
(B) कार्ल युंग
(C) कुर्ट लेविन
(D) गॉर्डन ऑलपोर्ट

101. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): युंगियन सिद्धांत में, वैयक्तिकीकरण एक संपूर्ण व्यक्ति बनने के लिए स्व के चेतन और अचेतन हिस्सों को एकीकृत करने की प्रक्रिया है।
कारण (R): इस प्रक्रिया में शैडो का सामना करना, एनिमा/एनिमस को एकीकृत करना और व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को संतुलित करना शामिल है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

102. कौन सा कारक समूह संसक्ति को कम करने की सबसे अधिक संभावना रखता है?
(A) समूह के लक्ष्यों पर सहमति
(B) समूह का बड़ा आकार
(C) समूह लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता
(D) समूह के लिए एक बाहरी खतरा

103. प्रभाव निर्माण में 'नवीनता प्रभाव' किस प्रवृत्ति को संदर्भित करता है?
(A) शुरुआती जानकारी का सबसे अधिक प्रभाव होना।
(B) नकारात्मक जानकारी का सकारात्मक जानकारी से अधिक होना।
(C) व्यक्ति की शारीरिक बनावट का धारणा पर हावी होना।
(D) सबसे हालिया जानकारी का सबसे अधिक प्रभाव होना।

104. मन की निम्नलिखित फ्रायडियन संरचनाओं को उनके विकास के क्रम में व्यवस्थित करें:
I. सुपर ईगो
II. इड
III. ईगो
(A) I, II, III
(B) II, III, I
(C) III, I, II
(D) II, I, III

105. हैरी स्टैक सुलिवन का व्यक्तित्व सिद्धांत मुख्य रूप से केंद्रित है:
(A) अचेतन मन की संरचना पर।
(B) व्यक्तित्व गुणों के वर्गीकरण पर।
(C) पारस्परिक संबंधों की भूमिका पर।
(D) पूरे जीवनकाल के विकासात्मक चरणों पर।

106. एक अभिवृत्ति पैमाना जो उत्तरदाताओं को द्विध्रुवी विशेषणों (जैसे, अच्छा-बुरा, मजबूत-कमजोर) द्वारा जुड़े 7-बिंदु पैमानों की एक श्रृंखला पर अवधारणा को रेट करने के लिए कहता है, वह है:
(A) सिमेंटिक डिफरेंशियल पैमाना
(B) लिकर्ट पैमाना
(C) थर्स्टन पैमाना
(D) गुटमैन पैमाना

107. निम्नलिखित में से कौन सिद्धांतकार को उनके सिद्धांत प्रकार के साथ सही ढंग से जोड़ता है?
(A) एडलर - मनोविश्लेषणात्मक
(B) ऑलपोर्ट - गुण
(C) एरिक्सन - क्षेत्र
(D) लेविन - क्षेत्र सिद्धांत

108. 'उत्पादकता बनाम स्थिरता' का संकट आम तौर पर कब होता है?
(A) किशोरावस्था
(B) मध्य वयस्कता
(C) युवा वयस्कता
(D) उत्तर वयस्कता

109. अनुरुपता के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. सूचनात्मक सामाजिक प्रभाव सही होने की इच्छा पर आधारित अनुरुपता है।
II. मानकीकृत सामाजिक प्रभाव पसंद किए जाने और स्वीकार किए जाने की इच्छा पर आधारित अनुरुपता है।
III. अनुरुपता का स्तर तब उच्चतम होता है जब समूह में तीन से पांच सदस्य होते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II

(B) प्रक्षेपी परीक्षण
(C) स्थितिजन्य परीक्षण
(D) योग्यता परीक्षण

67. निम्नलिखित में से कौन अभिवृत्ति के 'मूल्य-अभिव्यंजक' कार्य का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) अभिवृत्ति व्यक्ति को सामाजिक स्वीकृति और समूह संबद्धता प्राप्त करने में मदद करती है।
(B) अभिवृत्ति व्यक्ति के अहं की आंतरिक या बाहरी खतरों से रक्षा करती है।
(C) अभिवृत्ति अपने मूल मूल्यों और आत्म-अवधारणा को व्यक्त करने का एक तरीका प्रदान करती है।
(D) अभिवृत्ति ज्ञान को व्यवस्थित करने और व्यक्तिगत अनुभव को संरचित करने में मदद करती है।

68. सूची-I (फ्रायडियन अवधारणा) को सूची-II (विवरण) के साथ सुमेलित करें:
सूची-I (फ्रायडियन अवधारणा)
P. दमन
Q. प्रक्षेपण
R. उदात्तीकरण
S. प्रतिगमन
सूची-II (विवरण)
1. अपने स्वयं के अस्वीकार्य आवेगों का दूसरों पर आरोपण।
2. पहले के, अपरिपक्व व्यवहार स्वरुपों की ओर लौटना।
3. चिंताजनक विचारों को जागरुकता से दूर करने वाली क्रियाविधि।
4. आवेगों को मूल्यवान उपलब्धियों में बदलना।
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

69. समूह गतिशीलता के संदर्भ में, समूह संसक्ति को बढ़ाने वाला प्राथमिक कारक क्या है?
(A) समूह का बड़ा आकार
(B) समूह के लक्ष्यों पर असहमति
(C) अंतर-समूह प्रतिस्पर्धा
(D) सदस्यों के बीच कम बातचीत

70. युंग के सिद्धांत में "शैडो" आद्यरुप किसका प्रतिनिधित्व करता है?
(A) सामाजिक रुप से स्वीकार्य मुखौटा जो हम सार्वजनिक रुप से पहनते हैं।
(B) व्यक्तित्व का "अंधेरा पक्ष", जिसमें दमित विचार और प्रवृत्तियां होती हैं।
(C) पुरुष के व्यक्तित्व का स्त्री पक्ष।
(D) एकीकृत, संपूर्ण स्व जो विकास का लक्ष्य है।

71. एक व्यक्ति जो बहुत मिलनसार, बातूनी और मुखर है, वह 'बिग फाइव' व्यक्तित्व गुणों में से किस पर उच्च स्कोर करेगा?
(A) सहमतता
(B) कर्तव्यनिष्ठा
(C) तंत्रिकाताप
(D) बहिर्मुखता

72. एडलर के वैयक्तिक मनोविज्ञान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य के मानदंड के रूप में सामाजिक रुचि पर कड़ा बल दिया।
II. उनका मानना था कि पहले पैदा हुए बच्चे को लाड़-प्यार मिलने और अत्यधिक सुविधा मिलने की संभावना अधिक होती है।
III. उन्होंने 'रचनात्मक स्व' की अवधारणा प्रस्तावित की जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और III
(B) केवल II और III
(C) केवल I और II
(D) I, II और III

73. जब कोई व्यक्ति दो या दो से अधिक परस्पर विरोधी विश्वास रखता है या जब उसका व्यवहार उसके विश्वासों के विपरीत होता है, तो महसूस होने वाली बेचैनी को क्या कहा जाता है?
(A) आरोपण त्रुटि
(B) ग्रुपथिंक
(C) संज्ञानात्मक विसंगति
(D) सूचनात्मक प्रभाव

74. व्यक्तित्व सिद्धांत का प्राथमिक लक्ष्य है:
(A) मानव स्वभाव और व्यक्तिगत अंतरों को समझने के लिए एक ढांचा प्रदान करना।
(B) व्यक्तियों को कठोर, अपरिवर्तनीय श्रेणियों में वर्गीकृत करना।
(C) मानसिक बीमारी के सभी रुपों की पहचान करना और उनका इलाज करना।
(D) यह साबित करना कि वातावरण आनुवंशिकता से अधिक महत्वपूर्ण है।

75. निम्नलिखित सिद्धांतकारों को उनके प्रमुख सिद्धांतों के कालानुक्रमिक उदय के आधार पर व्यवस्थित करें (सबसे पहले से शुरु करते हुए):
I. एरिक एरिक्सन
II. सिग्मंड फ्रायड
III. अल्फ्रेड एडलर
IV. कार्ल युंग
(A) II, III, IV, I
(B) I, II, III, IV
(C) II, I, IV, III
(D) III, II, I, IV

(B) हेलो प्रभाव
(C) आरोपण त्रुटि
(D) रुढ़िवादिता

33. निम्नलिखित में से कौन अनुरुपता का निर्धारक है?
(A) निम्न समूह संसक्ति
(B) उपरोक्त सभी
(C) एक सहयोगी की उपस्थिति जो असहमति व्यक्त करता है
(D) व्यक्ति का आत्म-सम्मान का स्तर

34. व्यक्तित्व के निर्धारकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. आनुवंशिकता कुछ व्यक्तित्व गुणों के लिए आनुवंशिक खाका और प्रवृत्तियां प्रदान करती है।
II. संस्कृति और परिवार सहित पर्यावरणीय कारक, व्यक्तित्व के विकास को आकार देते हैं।
III. स्थितिजन्य कारक विशिष्ट संदर्भों में व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति को प्रभावित कर सकते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

35. युंग की 'सामूहिक अचेतन' की अवधारणा का तात्पर्य है:
(A) व्यक्ति की अपनी दमित यादें और भूले हुए अनुभव।
(B) मन का वह हिस्सा जो तत्काल वातावरण के प्रति जागरूक है।
(C) हमारी प्रजाति के इतिहास से प्राप्त साझा, वंशानुगत चिन्हों का एक भंडार।
(D) समूह ध्यान और साझा विश्वासों के माध्यम से प्राप्त मन की स्थिति।

36. एडलर के सिद्धांत के अनुसार, किसी व्यक्ति की 'जीवन शैली' के निर्माण में कौन सा कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?
(A) मनोयौन स्थिरीकरण
(B) आद्यरूप छवियां
(C) सप्रतिबंध सकारात्मक सम्मान
(D) जन्म क्रम

37. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: फ्रायड के अनुसार, सुपर ईगो व्यक्तित्व की नैतिक शाखा है, जो वास्तविक के बजाय आदर्श का प्रतिनिधित्व करती है।
कथन II: सुपर ईगो समाजीकरण की प्रक्रिया और माता-पिता तथा सामाजिक मानकों को आत्मसात करने के माध्यम से विकसित होता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

38. मौलिक आरोपण त्रुटि किसकी प्रवृत्ति है?
(A) अपनी सफलताओं का श्रेय आंतरिक कारकों को और विफलताओं का श्रेय बाहरी कारकों को देना।
(B) दूसरों में व्यक्तिगत गुणों को अधिक महत्व देना और स्थितिजन्य कारकों को कम आंकना।
(C) दूसरों की सफलताओं का श्रेय बाहरी कारकों को और विफलताओं का श्रेय आंतरिक कारकों को देना।
(D) यह मानना कि दुनिया एक न्यायपूर्ण स्थान है जहाँ लोगों को वह मिलता है जिसके वे हकदार हैं।

39. गॉर्डन ऑलपोर्ट द्वारा परिभाषित केंद्रीय गुण है:
(A) एक एकल, सर्वव्यापी गुण जो व्यक्ति के जीवन को परिभाषित करता है।
(B) एक ऐसा गुण जो केवल कुछ स्थितियों या विशिष्ट परिस्थितियों में स्पष्ट होता है।
(C) माता-पिता से विरासत में मिला गुण।
(D) एक सामान्य विशेषता जो व्यक्तित्व की बुनियादी नींव बनाती है।

40. अभिवृत्ति परिवर्तन का कौन सा सिद्धांत अनुनय के दो मार्गों: एक केंद्रीय मार्ग और एक परिधीय मार्ग की व्याख्या करता है?
(A) विस्तार संभावना मॉडल
(B) संज्ञानात्मक विसंगति सिद्धांत
(C) सामाजिक निर्णय सिद्धांत
(D) संतुलन सिद्धांत

41. एरिक्सन के निम्नलिखित मनोसामाजिक चरणों को जन्म से सही विकासात्मक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. पहल बनाम अपराधबोध
II. विश्वास बनाम अविश्वास
III. स्वायत्तता बनाम शर्म और संदेह
IV. परिश्रम बनाम हीनता
(A) II, III, I, IV
(B) I, II, III, IV
(C) II, I, III, IV
(D) III, II, I, IV

42. लेविन के क्षेत्र सिद्धांत में, 'वैलेंस' का तात्पर्य है:
(A) जीवन स्थान में किसी वस्तु या क्षेत्र का सकारात्मक या नकारात्मक मूल्य।
(B) जीवन स्थान में दो क्षेत्रों के बीच मनोवैज्ञानिक दूरी।
(C) व्यक्ति पर कार्य करने वाली प्रेरक या अवरोधक शक्तियां।
(D) एक बाधा जो क्षेत्रों के बीच आवाजाही को रोकती है।

43. निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धांतकार और उनकी मुख्य विचारधारा का गलत युग्म है?
(A) सुलिवन - व्यक्तित्व में पारस्परिक संबंधों का महत्व।

88. व्यक्तित्व इन्वेंटरी और प्रक्षेपी परीक्षणों के बीच सबसे महत्वपूर्ण अंतर क्या है?
(A) इन्वेंटरी आत्म-रिपोर्ट पर निर्भर करती हैं, जबकि प्रक्षेपी परीक्षण अस्पष्ट उद्दीपनों का उपयोग करते हैं।
(B) इन्वेंटरी का उपयोग सामान्य आबादी के लिए किया जाता है, जबकि प्रक्षेपी परीक्षण नैदानिक आबादी के लिए होते हैं।
(C) इन्वेंटरी को प्रशासित करना प्रक्षेपी परीक्षणों की तुलना में आसान है।
(D) इन्वेंटरी गुणों को मापती हैं, जबकि प्रक्षेपी परीक्षण अवस्थाओं को मापते हैं।

89. सूची-I (मूल्यांकन प्रकार) को सूची-II (उदाहरण/अवधारणा) के साथ सुमेलित करें:
सूची-I (मूल्यांकन प्रकार)
P. प्रक्षेपी परीक्षण
Q. व्यक्तित्व इन्वेंटरी
R. स्थितिजन्य परीक्षण
S. अभिवृत्ति पैमाना
सूची-II (उदाहरण/अवधारणा)
1. प्रबंधन भूमिका के लिए समूह चर्चा का अवलोकन करना।
2. विषय आत्मबोध परीक्षण (टीएटी)
3. लिकर्ट स्केल
4. सही/गलत मदों के साथ एक आत्म-रिपोर्ट प्रश्नावली।
(A) P-4, Q-2, R-3, S-1
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

90. 'प्रभाव निर्माण' की अवधारणा किस व्यापक विषय के अंतर्गत आती है?
(A) सामाजिक प्रत्यक्षण
(B) समूह गतिशीलता
(C) व्यक्तित्व सिद्धांत
(D) अभिवृत्ति परिवर्तन

91. निम्नलिखित में से कौन व्यक्तित्व गुण की प्रकृति का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) एक क्षणिक भावनात्मक स्थिति या मनोदशा में एक अस्थायी परिवर्तन।
(B) किसी विशेष स्थिति में किया गया एक विशिष्ट व्यवहार।
(C) एक अंतर्निहित अचेतन इच्छा या एक प्राथमिक संघर्ष।
(D) एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने की अपेक्षाकृत स्थिर और स्थायी प्रवृत्ति।

92. समूहों में नेतृत्व के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. कार्य-उन्मुख नेता काम पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
II. संबंध-उन्मुख नेता समूह के सदस्यों की भावनाओं और कल्याण पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
III. सबसे प्रभावी नेतृत्व शैली स्थिति से स्वतंत्र होती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

93. एडलर की 'सामाजिक रुचि' की अवधारणा का तात्पर्य है:
(A) सामाजिक स्थिति और शक्ति की इच्छा।
(B) आकस्मिक सामाजिक मेलजोल में व्यक्ति की रुचि।
(C) व्यक्तिगत और सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दूसरों के साथ सहयोग करने की व्यक्ति की जन्मजात क्षमता।
(D) सामाजिक मानदंडों और अपेक्षाओं के अनुरूप होने की प्रवृत्ति।

94. फ्रायड के अनुसार, 'गुदा-प्रतिधारक' व्यक्तित्व की विशेषता क्या है?
(A) गंदगी, विनाशकारीता और क्रूरता।
(B) वैनिटी, गर्व और आत्म-अवशोषण।
(C) निर्भरता, भोलापन और निष्क्रियता।
(D) सुव्यवस्था, हठ और कंजूसी।

95. आरोपण सिद्धांत में, जब हम किसी के व्यवहार की व्याख्या उस स्थिति के आधार पर करते हैं जिसमें वे हैं, तो हम कर रहे होते हैं:
(A) बाहरी आरोपण
(B) आंतरिक आरोपण
(C) स्वभावगत आरोपण
(D) मौलिक आरोपण

96. व्यक्तित्व के व्यवस्थित और एकीकृत करने वाले सिद्धांत के लिए ऑलपोर्ट का शब्द, जो 'आत्मा' या 'स्व' की अवधारणाओं के समान है, वह है:
(A) कार्डिनल गुण
(B) प्रोप्रियम
(C) कार्यात्मक स्वायत्तता
(D) केंद्रीय गुण

97. दूसरों की उपस्थिति में किसी कार्य पर प्रदर्शन में वृद्धि को सामाजिक सुगमीकरण के रुप में जाना जाता है, यह किसकी अवधारणा है?
(A) व्यक्तित्व मूल्यांकन
(B) समूह गतिशीलता
(C) अभिवृत्ति निर्माण
(D) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

98. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: फ्रायड के अनुसार, व्यक्तित्व काफी हद तक जीवन के पहले कुछ वर्षों के दौरान मनोयौन चरणों की एक श्रृंखला के माध्यम से आकार लेता है।

(A) घनिष्ठ संबंध बनाना।
(B) इस बात की समझ विकसित करना कि वह कौन है।
(C) संतोष या पछतावे की भावना के साथ अपने जीवन पर विचार करना।
(D) अगली पीढ़ी में योगदान देना।

122. निम्नलिखित में से कौन पारस्परिक आकर्षण का निर्धारक नहीं है?
(A) संज्ञानात्मक विसंगति
(B) अभिवृत्तियों की समानता
(C) भौतिक सामीप्य
(D) शारीरिक आकर्षण

123. 'इड' की विशेषता यह है कि यह किस पर कार्य करता है?
(A) वास्तविकता सिद्धांत
(B) नैतिक सिद्धांत
(C) सामाजिक सिद्धांत
(D) सुख सिद्धांत

124. मनोविज्ञान में "व्यक्तित्व" विशेषताओं के उस समूह को संदर्भित करता है जो:
(A) सार्वभौमिक और सभी मनुष्यों में समान हैं।
(B) विभिन्न समय और स्थितियों में अपेक्षाकृत स्थिर और स्थायी हैं।
(C) पूरी तरह से सीखी गई और सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट हैं।
(D) अप्रत्याशित और लगातार बदलती रहती हैं।

125. समूह गतिशीलता में नेतृत्व के बारे में कौन सा कथन सबसे सटीक है?
(A) सभी स्थितियों के लिए नेतृत्व की एक ही सबसे अच्छी शैली है।
(B) अहस्तक्षेपकारी नेतृत्व लगातार सबसे उत्पादक शैली है।
(C) प्रभावी नेतृत्व नेता, अनुयायियों और स्थिति पर निर्भर करता है।
(D) समूह के मनोबल और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए निरंकुश नेतृत्व सबसे अच्छा है।

126. रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण किसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) व्यक्तित्व इन्वेंटरी
(B) स्थितिजन्य परीक्षण
(C) अभिवृत्ति पैमाना
(D) प्रक्षेपी परीक्षण

127. 'स्वायत्तता बनाम शर्म और संदेह' का मनोसामाजिक संकट किस आयु समूह की विशेषता है?
(A) बचपन
(B) शैशवावस्था
(C) पूर्व-स्कूली
(D) स्कूली आयु

128. निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें:
I. फ्रायड: मनोयौन चरण
II. ऑलपोर्ट: कार्यात्मक स्वायत्तता
III. लेविन: आद्यरूप
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

129. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा हम दूसरों के व्यवहार के कारणों का अनुमान लगाते हैं, कहलाती है:
(A) प्रभाव निर्माण
(B) आरोपण
(C) अभिवृत्ति परिवर्तन
(D) अनुरूपता

130. अभिवृत्ति के 'संज्ञानात्मक' घटक में शामिल हैं:
(A) अभिवृत्ति वस्तु के बारे में विश्वास, विचार और धारणाएं।
(B) अभिवृत्ति वस्तु से जुड़ी भावनाएं और संवेग।
(C) अभिवृत्ति वस्तु के प्रति एक निश्चित तरीके से कार्य करने की प्रवृत्ति।
(D) वह कार्य जो अभिवृत्ति व्यक्ति के लिए करती है।

131. एडलर के अनुसार, "जीवन शैली" किस आयु तक मजबूती से स्थापित हो जाती है?
(A) किसोरावस्था के दौरान।
(B) युवा वयस्कता में।
(C) 4 या 5 वर्ष की आयु तक।
(D) यह जीवन भर लचीली बनी रहती है।

132. फ्रायडियन विकास का 'लैंगिक चरण' किस पर केंद्रित है?
(A) दूध छुड़ाना और भोजन करना।
(B) शौचालय प्रशिक्षण।
(C) सामाजिक और शैक्षणिक कौशल विकास।
(D) जननांग जागरूकता और इडिपस कॉम्प्लेक्स।

133. निम्नलिखित में से कौन सी अवधारणा हैरी स्टैक सुलिवन से संबंधित नहीं है?
(A) व्यक्तिकरण
(B) स्व-प्रणाली
(C) कार्डिनल गुण
(D) गतिशीलता

134. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): अभिवृत्ति मापन तकनीकें किसी वस्तु के प्रति व्यक्ति की प्रवृत्ति को मात्राबद्ध करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं।
कारण (R): अभिवृत्तियां अमूर्त संरचनाएं हैं और उनका केवल अनुमान लगाया जा सकता है, उन्हें प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं

(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

110. निम्नलिखित में से कौन सी प्रक्षेपी परीक्षणों की आलोचना है?
(A) वे बहुत संरचित और कठोर हैं।
(B) वे उत्तरदाता द्वारा बनावट के प्रति संवेदनशील हैं।
(C) वे अचेतन प्रक्रियाओं तक पहुँचने में विफल रहते हैं।
(D) उनकी अक्सर विश्वसनीयता और वैधता कम होती है।

111. फ्रायड के शब्दों में व्यक्तित्व का वह हिस्सा जो मध्यस्थ या "कार्यकारी" के रूप में कार्य करता है, वह है:
(A) ईगो
(B) इड
(C) सुपर ईगो
(D) लिबिडो

112. एडलर के अनुसार, श्रेष्ठता के लिए प्रयास करने और हीनता को दूर करने का व्यक्ति का अनूठा तरीका उसका है:
(A) आद्यरूप
(B) जीवन शैली
(C) स्व-प्रणाली
(D) परसोना

113. सूची-I (सिद्धांतकार) को सूची-II (प्राथमिक फोकस) के साथ सुमेलित करें:
सूची-I (सिद्धांतकार)
P. फ्रायड
Q. ऑलपोर्ट
R. सुलिवन
S. एरिक्सन
सूची-II (प्राथमिक फोकस)
1. पारस्परिक संबंध
2. मनोसामाजिक विकास
3. मनोयौन विकास
4. व्यक्तित्व गुण
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

114. अभिवृत्ति की 'प्रकृति' किसके संदर्भ में है?
(A) तीन-घटक संरचना: संज्ञानात्मक, भावात्मक और व्यवहारात्मक।
(B) अंतर्निहित उद्देश्य और कार्य।
(C) शक्ति और सुगमता।
(D) प्रत्यक्ष अनुभव या सामाजिक अधिगम में मूल।

115. व्यक्तित्व मूल्यांकन की वह विधि जिसमें किसी व्यक्ति को मानकीकृत स्थितियों में कार्य करने की आवश्यकता होती है, कहलाती है:
(A) व्यक्तित्व इन्वेंटरी
(B) प्रक्षेपी परीक्षण
(C) स्थितिजन्य परीक्षण
(D) रेटिंग पैमाना

116. समूह गतिशीलता की एक घटना 'ग्रुपथिंक' के होने की संभावना तब अधिक होती है जब समूह में:
(A) एक मजबूत, निर्देशक नेता हो।
(B) उच्च स्तर की संसक्ति हो।
(C) बाहरी विचारों से अलगाव हो।
(D) उपरोक्त सभी।

117. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): ऑलपोर्ट ने सामान्य गुणों और व्यक्तिगत प्रवृत्तियों के बीच अंतर किया।
कारण (R): उनका मानना था कि किसी एक व्यक्ति के अनूठे व्यक्तित्व को समझने के लिए व्यक्तिगत प्रवृत्तियों पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण था।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

118. कौन सा युंगियन आद्यरूप संपूर्ण व्यक्तित्व की एकता, पूर्णता और एकीकरण के प्रयास का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) शैडो
(B) स्व
(C) परसोना
(D) एनिमा

119. एक व्यक्ति जो पर्यावरण के प्रति मजबूत अभिवृत्ति रखता है, वह खराब पर्यावरणीय रिकॉर्ड वाली कंपनी के लिए काम करना शुरु कर देता है, जिससे मनोवैज्ञानिक तनाव पैदा होता है। यह किसका उदाहरण है?
(A) प्रथम प्रभाव
(B) मौलिक आरोपण त्रुटि
(C) मानकीकृत प्रभाव
(D) संज्ञानात्मक विसंगति

120. लेविन के सिद्धांत में, कौन सा शब्द उस क्रिया के मार्ग का वर्णन करता है जिसे अपनी वर्तमान स्थिति से लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए अपनाना चाहिए?
(A) होडोलॉजिकल स्पेस
(B) वैलेंस
(C) शक्ति
(D) जीवन स्थान

121. एरिक्सन के सिद्धांत के अंतिम चरण, 'अखंडता बनाम निराशा' में शामिल है:

(A) सभी मनुष्यों द्वारा साझा किए गए सार्वभौमिक आद्यरूप।
(B) व्यवहार का सबसे छोटा, स्थायी, आवर्ती स्वरूप।
(C) बुनियादी चिंता जो पारस्परिक असुरक्षा से उत्पन्न होती है।
(D) वह मानसिक छवि जो किसी व्यक्ति की अपने या किसी अन्य व्यक्ति के बारे में होती है।

55. सामाजिक प्रत्यक्षण में, जब हम किसी के व्यवहार की व्याख्या उनके व्यक्तित्व या स्वभाव के आधार पर करते हैं, तो हम कर रहे होते हैं:
(A) बाहरी आरोपण
(B) स्थितिजन्य आरोपण
(C) आत्म-सेवा आरोपण
(D) आंतरिक आरोपण

56. व्यक्तित्व मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य है:
(A) व्यक्तित्व में व्यक्तिगत अंतरों को मापना और उनका वर्णन करना।
(B) मनोवैज्ञानिक विकारों का इलाज करना।
(C) अवांछनीय व्यक्तित्व गुणों को बदलना।
(D) पूर्ण सटीकता के साथ व्यक्ति की भविष्य की सफलता की भविष्यवाणी करना।

57. फ्रायड के अनुसार, व्यक्तित्व का कौन सा घटक आंतरिक आदर्शों का प्रतिनिधित्व करता है और निर्णय के लिए मानक प्रदान करता है?
(A) इड
(B) ईगो
(C) सुपर ईगो
(D) एनिमा

58. निम्नलिखित में से कौन सा पारस्परिक आकर्षण में प्राथमिक कारक नहीं माना जाता है?
(A) सामाजिक स्थिति पदानुक्रम
(B) सामीप्य
(C) समानता
(D) पसंद करने की पारस्परिकता

59. 'इडिपस कॉम्प्लेक्स' फ्रायड के किस मनोयौन चरण की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) मुखीय चरण
(B) गुदा चरण
(C) जननेंद्रिय चरण
(D) लैंगिक चरण

60. एक लोकतांत्रिक नेता वह होता है जो:
(A) समूह को निर्णय लेने की पूरी स्वतंत्रता देता है।
(B) समूह की भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और अधिकार सौंपता है।
(C) निर्णय लेने पर पूर्ण नियंत्रण रखता है।
(D) केवल यथासंभव कुशलता से कार्यों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करता है।

61. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): एडलर के अनुसार, हीनता की भावना कमजोरी का संकेत नहीं है बल्कि मानव जाति की स्थिति में सभी सुधारों का कारण है।
कारण (R): ये भावनाएं व्यक्तियों को श्रेष्ठता, विकास और पूर्णता के लिए प्रयास करने हेतु प्रेरित करती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

62. वह सिद्धांत कि हम अपने स्वयं के व्यवहार का अवलोकन करके अपनी अभिवृत्तियों को जानते हैं, किस नाम से जाना जाता है?
(A) संज्ञानात्मक विसंगति सिद्धांत
(B) सामाजिक निर्णय सिद्धांत
(C) विस्तार संभावना मॉडल
(D) आत्म-प्रत्यक्षण सिद्धांत

63. व्यक्तित्व के निर्धारकों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा सबसे सटीक कथन है?
(A) व्यक्तित्व आनुवंशिक और पर्यावरणीय कारकों की एक परस्पर क्रिया है।
(B) व्यक्तित्व पूरी तरह से आनुवंशिक कारकों द्वारा निर्धारित होता है।
(C) व्यक्तित्व विशेष रूप से व्यक्ति के बचपन के वातावरण द्वारा आकार लेता है।
(D) व्यक्तित्व एक यादृच्छिक और अप्रत्याशित घटना है।

64. कुर्ट लेविन का सूत्र B = f(P, E) दर्शाता है कि:
(A) व्यवहार अतीत और वातावरण का परिणाम है।
(B) व्यवहार व्यक्ति और उसके वातावरण का परिणाम है।
(C) जीव विज्ञान मनोविज्ञान और विकास का परिणाम है।
(D) विश्वास प्रत्यक्षण और अनुभव का परिणाम हैं।

65. एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास का कौन सा चरण अगली पीढ़ी में योगदान करने की व्यक्ति की आवश्यकता से संबंधित है, जो अक्सर काम या परिवार पालने के माध्यम से होता है?
(A) घनिष्ठता बनाम अलगाव
(B) उत्पादकता बनाम स्थिरता
(C) पहचान बनाम भूमिका भ्रम
(D) अखंडता बनाम निराशा

66. एक व्यक्तित्व परीक्षण जो गुणों का आकलन करने के लिए बाध्य-विकल्प प्रारुप का उपयोग करता है, जैसे कि 16पीएफ, किसका एक उदाहरण है?
(A) व्यक्तित्व इन्वेंटरी

जा सकता।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

135. किसी समूह द्वारा अपने सदस्यों के प्रारंभिक झुकाव की तुलना में अधिक चरम निर्णय लेने की प्रवृत्ति को क्या कहा जाता है?
(A) ग्रुपथिंक
(B) सामाजिक आलस्य
(C) समूह संसक्ति
(D) समूह ध्रुवीकरण

136. एक व्यक्ति जो शांत, आरक्षित और विचारशील है, वह किस युंगियन अभिवृत्ति प्रकार से जुड़ी विशेषताओं का प्रदर्शन कर रहा है?
(A) अंतर्मुखता
(B) बहिर्मुखता
(C) संवेदन
(D) अंतर्ज्ञान

137. निम्नलिखित में से कौन व्यक्तित्व 'इन्वेंटरी' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) बचपन के अनुभवों पर केंद्रित एक नैदानिक साक्षात्कार।
(B) अचेतन विचारों को प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक अस्पष्ट दृश्य उद्दीपन।
(C) गुणों और व्यवहारों की एक विस्तृत श्रृंखला का आकलन करने वाली एक आत्म-रिपोर्ट प्रश्नावली।
(D) वास्तविक दुनिया की चुनौती का अनुकरण करने के लिए डिज़ाइन किया गया कार्य।

138. अभिवृत्ति के 'भावात्मक' घटक का तात्पर्य है:
(A) अभिवृत्ति वस्तु के प्रति भावनाएं और संवेग।
(B) अभिवृत्ति वस्तु के बारे में विश्वास और ज्ञान।
(C) अभिवृत्ति वस्तु से संबंधित पिछले व्यवहार।
(D) व्यक्ति के लिए अभिवृत्ति की उपयोगिता।

139. एरिक्सन के बाद के मनोसामाजिक चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें:
I. अखंडता बनाम निराशा
II. उत्पादकता बनाम स्थिरता
III. पहचान बनाम भूमिका भ्रम
IV. घनिष्ठता बनाम अलगाव
(A) III, IV, II, I
(B) IV, III, II, I
(C) III, II, IV, I
(D) II, IV, III, I

140. निम्नलिखित में से कौन समूह संसक्ति का प्राथमिक निर्धारक है?
(A) समूह के सदस्यों की समानता।
(B) उपरोक्त सभी।
(C) समूह का आकार।
(D) समूह की सफलता।

141. वह रक्षा तंत्र जहाँ व्यक्ति अस्वीकार्य आवेगों को सामाजिक रुप से स्वीकार्य गतिविधियों में बदल देता है, कहलाता है:
(A) दमन
(B) प्रक्षेपण
(C) उदात्तीकरण
(D) युक्तिकरण

142. व्यक्तित्व सिद्धांतों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. फ्रायड का सिद्धांत एक गतिक सिद्धांत है।
II. ऑलपोर्ट का सिद्धांत एक गुण सिद्धांत है।
III. लेविन का सिद्धांत एक क्षेत्र सिद्धांत है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

143. सूची-I (युंगियन आद्यरुप) को सूची-II (विवरण) के साथ सुमेलित करें:
सूची-I (युंगियन आद्यरुप)
P. एनिमा
Q. परसोना
R. शैडो
S. स्व
सूची-II (विवरण)
1. सार्वजनिक चेहरा या मुखौटा
2. पुरुष मानस का स्त्री पक्ष
3. व्यक्तित्व का केंद्र, पूर्णता के लिए प्रयास करना
4. व्यक्तित्व का अंधेरा, दमित पक्ष
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

144. व्यक्तित्व का सबसे बुनियादी और आदिम हिस्सा, जो जन्म के समय मौजूद होता है, वह है:
(A) ईगो
(B) इड
(C) सुपर ईगो
(D) प्रोप्रियम

145. एक शोधकर्ता जो इस बात का अध्ययन करता है कि भीड़ का हिस्सा होने पर लोग कैसा व्यवहार करते हैं, वह किसकी जांच कर रहा है?
(A) व्यक्तित्व मूल्यांकन

241. निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धांतकार मनोसामाजिक विकास के अपने आठ-चरणीय मॉडल के लिए सबसे अच्छी तरह जाना जाता है?
(A) सिग्मंड फ्रायड
(B) एरिक एरिक्सन
(C) अल्फ्रेड एडलर
(D) कुर्ट लेविन

242. व्यक्तित्व गुणों को मापने के लिए डिज़ाइन किए गए सही/गलत कथनों की श्रृंखला वाला परीक्षण है:
(A) व्यक्तित्व इन्वेंटरी
(B) प्रक्षेपी परीक्षण
(C) स्थितिजन्य परीक्षण
(D) योग्यता परीक्षण

243. किसी समूह द्वारा पसंद किए जाने और स्वीकार किए जाने की इच्छा किस ओर ले जाती है?
(A) सूचनात्मक अनुरुपता
(B) आज्ञाकारिता
(C) मानकीकृत अनुरुपता
(D) वैयक्तिकीकरण

244. व्यवहार के मुख्य निर्धारक के रूप में 'जीवन स्थान' पर ध्यान केंद्रित करने वाला सिद्धांत किसके द्वारा प्रस्तावित किया गया था?
(A) ऑलपोर्ट
(B) सुलिवन
(C) युंग
(D) लेविन

245. सुलिवन के सिद्धांत में 'गतिशीलता' शब्द को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार परिभाषित किया गया है:
(A) व्यक्ति की अपने बारे में मानसिक छवि।
(B) पूर्ण शारीरिक और मानसिक कल्याण की स्थिति।
(C) ऊर्जा परिवर्तन का एक दीर्घकालिक, आवर्ती स्वरुप।
(D) चिंता कम करने के लिए एक रक्षा तंत्र।

246. निम्नलिखित में से कौन पारस्परिक आकर्षण का एक प्रमुख निर्धारक है?
(A) समूह संसक्ति
(B) समानता
(C) नेतृत्व शैली
(D) अनुरुपता

247. युंगियन सिद्धांत में 'शैडो' में शामिल है:
(A) स्व के सामाजिक रूप से स्वीकार्य पहलू।
(B) पुरुष और स्त्री सिद्धांत।
(C) आध्यात्मिक और उत्कृष्ट आकांक्षाएं।
(D) स्व के दमित, अवांछनीय पहलू।

248. एरिक्सन के अनुसार किशोरावस्था के दौरान मुख्य संघर्ष है:
(A) पहचान बनाम भूमिका भ्रम
(B) विश्वास बनाम अविश्वास
(C) पहल बनाम अपराधबोध
(D) घनिष्ठता बनाम अलगाव

249. सिद्धांतकार और अवधारणा का एक सही युग्म है:
(A) फ्रायड - श्रेष्ठता के लिए प्रयास
(B) एडलर - मनोसामाजिक चरण
(C) लेविन - जीवन स्थान
(D) एरिक्सन - सामूहिक अचेतन

250. व्यवहार के कारणों के बारे में निर्णय लेने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) आरोपण
(B) प्रभाव निर्माण
(C) अभिवृत्ति निर्माण
(D) अनुरुपता

251. निम्नलिखित में से कौन व्यक्तित्व अभिव्यक्ति के स्थितिजन्य निर्धारक का एक उदाहरण है?
(A) व्यक्ति की आनुवंशिक संरचना।
(B) वह संस्कृति जिसमें व्यक्ति का पालन-पोषण हुआ।
(C) व्यक्ति के मुख्य मूल्य और विश्वास।
(D) एक व्यक्ति का पुस्तकालय की तुलना में किसी पार्टी में अलग व्यवहार करना।

252. 'इडिपस कॉम्प्लेक्स' फ्रायड के किस चरण के दौरान होने का सिद्धांत है?
(A) मुखीय
(B) लैंगिक
(C) गुदा
(D) सुप्तावस्था

253. ऑलपोर्ट के अनुसार, 'शर्मीलापन' जैसा गुण जो किसी व्यक्ति की एक प्रमुख विशेषता है, वह होगा:
(A) कार्डिनल गुण
(B) गौण गुण
(C) केंद्रीय गुण
(D) स्रोत गुण

254. सामाजिक मनोवैज्ञानिकों के लिए अभिवृत्तियों का मापन महत्वपूर्ण है क्योंकि:
(A) अभिवृत्तियां बदलना आसान है।
(B) अभिवृत्तियां व्यक्तित्व के समान ही हैं।
(C) अभिवृत्तियां प्रत्यक्ष रूप से प्रेक्षणीय हैं।
(D) माना जाता है कि अभिवृत्तियां व्यवहार की भविष्यवाणी करती हैं।

255. समूह गतिशीलता में, नेतृत्व को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार समझा जाता है:
(A) समूह संदर्भ में प्रभाव की एक प्रक्रिया।

158. सामाजिक प्रत्यक्षण में, दूसरों के बारे में हमारे प्रारंभिक निर्णय अक्सर तेजी से बनते हैं और सीमित जानकारी पर आधारित होते हैं। इस प्रक्रिया को कहा जाता है:
(A) आरोपण सिद्धांत
(B) संज्ञानात्मक विसंगति
(C) समूह संसक्ति
(D) प्रभाव निर्माण

159. अल्फ्रेड एडलर के विचारों का कौन सा कथन गलत प्रतिनिधित्व करता है?
(A) उन्होंने प्राथमिक मानवीय प्रेरणा को यौन इच्छाओं की संतुष्टि के रूप में देखा।
(B) उन्होंने व्यक्तित्व की एकता और अविभाज्यता पर बल दिया।
(C) उनका मानना था कि सामाजिक रुचि मानसिक स्वास्थ्य का एक प्रमुख संकेतक थी।
(D) उन्होंने प्रस्ताव दिया कि जन्म क्रम किसी की जीवन शैली को प्रभावित कर सकता है।

160. निम्नलिखित मदों पर विचार करें:
I. विषय आत्मबोध परीक्षण (टीएटी)
II. रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण
III. मिनेसोटा मल्टीफेजिक पर्सनालिटी इन्वेंटरी (एमएमपीआई)
उपरोक्त में से किसे प्रक्षेपी परीक्षण माना जाता है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

161. युंग निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी पर बल देने में फ्रायड से भिन्न थे?
(A) भविष्य के लक्ष्यों और आकांक्षाओं का महत्व।
(B) प्रारंभिक बचपन के अनुभवों का प्रभाव।
(C) सामूहिक अचेतन का अस्तित्व।
(D) मानव स्वभाव के आध्यात्मिक और रहस्यमय पहलू।

162. एक व्यक्तित्व मूल्यांकन को 'विश्वसनीय' माना जाता है यदि वह:
(A) समय के साथ सुसंगत परिणाम देता है।
(B) वही मापता है जिसे मापने का उसका इरादा है।
(C) प्रशासित करने और स्कोर करने में आसान है।
(D) एक प्रसिद्ध सिद्धांत पर आधारित है।

163. वह नेतृत्व शैली जहाँ नेता समूह की भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और निर्णय लेने के लिए टीम के साथ काम करता है, वह है:
(A) निरंकुश
(B) लोकतांत्रिक
(C) नौकरशाही
(D) अहस्तक्षेपकारी

164. सूची-I (एरिक्सन के चरण) को सूची-II (मनोसामाजिक संकट) के साथ सुमेलित करें:
सूची-I (एरिक्सन के चरण)
P. शैशवावस्था
Q. किशोरावस्था
R. युवा वयस्कता
S. वृद्धावस्था
सूची-II (मनोसामाजिक संकट)
1. घनिष्ठता बनाम अलगाव
2. अखंडता बनाम निराशा
3. विश्वास बनाम अविश्वास
4. पहचान बनाम भूमिका भ्रम
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

165. 'पर्सनालिटी' शब्द लैटिन शब्द 'परसोना' से निकला है, जिसका अर्थ है:
(A) मन या आत्मा
(B) एक आंतरिक स्व
(C) एक नाट्य मुखौटा
(D) एक अनूठा चरित्र

166. एक राजनीतिज्ञ जो सार्वजनिक रूप से प्रदूषण विरोधी कड़े विचार व्यक्त करता है लेकिन निजी तौर पर प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों में निवेश करता है, उसे किस अनुभव की संभावना है?
(A) समूह संसक्ति
(B) संज्ञानात्मक विसंगति
(C) प्रथम प्रभाव
(D) कार्यात्मक स्वायत्तता

167. निम्नलिखित में से कौन व्यक्तित्व का सिद्धांत नहीं है?
(A) फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत
(B) ऑलपोर्ट का गुण सिद्धांत
(C) युंग का विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान
(D) आरोपण सिद्धांत

168. कुर्ट लेविन के सिद्धांत में, जो शक्तियां किसी व्यक्ति को लक्ष्य की ओर धकेलती हैं, उनका होता है:
(A) सकारात्मक वैलेंस
(B) नकारात्मक वैलेंस
(C) तटस्थ अवरोध
(D) मनोवैज्ञानिक दूरी

169. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: स्थितिजन्य परीक्षण का प्राथमिक उद्देश्य किसी विशिष्ट विषय के बारे में व्यक्ति के ज्ञान का आकलन करना है।
कथन II: एक स्थितिजन्य परीक्षण एक मानकीकृत, कृत्रिम

(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

192. निम्नलिखित में से कौन अभिवृत्तियों के तीन घटकों में से एक नहीं है?
(A) भावात्मक
(B) कार्यात्मक
(C) व्यवहारात्मक
(D) संज्ञानात्मक

193. वह सिद्धांतकार जिसने प्रस्तावित किया था कि व्यक्तित्व हीनता की भावनाओं को दूर करने के संघर्ष से आकार लेता है, वह था:
(A) कार्ल युंग
(B) अल्फ्रेड एडलर
(C) सिग्मंड फ्रायड
(D) गॉर्डन ऑलपोर्ट

194. एक परीक्षण जिसमें आपको एक अस्पष्ट सामाजिक दृश्य की तस्वीर दिखाई जाती है और उसके बारे में एक कहानी सुनाने के लिए कहा जाता है, वह है:
(A) विषय आत्मबोध परीक्षण (टीएटी)
(B) रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण
(C) मिनेसोटा मल्टीफेजिक पर्सनालिटी इन्वेंटरी (एमएमपीआई)
(D) 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (16पीएफ)

195. व्यक्तित्व के निर्धारकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. आनुवंशिकता व्यक्तित्व विकास पर कुछ सीमाएं निर्धारित करती है।
II. वातावरण व्यक्तित्व के विकास के अवसर प्रदान करता है।
III. व्यक्तित्व केवल आनुवंशिक कारकों द्वारा निर्धारित होता है और अपरिवर्तनीय है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

196. एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के सिद्धांत का मुख्य विषय है:
(A) अचेतन यौन संघर्षों का समाधान।
(B) आत्म-सिद्धि की प्रक्रिया।
(C) सुदृढ़ीकरण और दंड के माध्यम से व्यवहार का अधिग्रहण।
(D) सामाजिक संकटों की एक श्रृंखला के माध्यम से अहं-पहचान का विकास।

197. एक गुण जो इतना व्यापक है कि वह व्यक्ति के पूरे जीवन पर हावी हो जाता है, जैसे कि मैकियावेली की सत्ता की खोज, उसे ऑलपोर्ट द्वारा _________ गुण कहा जाएगा।
(A) केंद्रीय
(B) गौण
(C) कार्डिनल
(D) सामान्य

198. वे शक्तियां जो समूह के सदस्यों को एक साथ बांधती हैं और उनके बीच पसंद को बढ़ावा देती हैं, कहलाती हैं:
(A) अनुरूपता दबाव
(B) समूह संसक्ति
(C) नेतृत्व शैलियाँ
(D) सामाजिक मानदंड

199. कुर्ट लेविन को किस क्षेत्र के विकास में एक केंद्रीय व्यक्ति माना जाता है?
(A) मनोविश्लेषण
(B) गुण सिद्धांत
(C) विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान
(D) सामाजिक मनोविज्ञान और समूह गतिशीलता

200. दूसरों के बारे में विश्वास और निर्णय बनाने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) सामाजिक प्रत्यक्षण
(B) अभिवृत्ति मापन
(C) समूह गतिशीलता
(D) व्यक्तित्व मूल्यांकन

201. सूची-I (सिद्धांत) को सूची-II (सिद्धांतकार) के साथ सुमेलित करें:
सूची-I (सिद्धांत)
P. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत
Q. वैयक्तिक मनोविज्ञान
R. विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान
S. पारस्परिक सिद्धांत
सूची-II (सिद्धांतकार)
1. कार्ल युंग
2. हैरी स्टैक सुलिवन
3. सिग्मंड फ्रायड
4. अल्फ्रेड एडलर
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

202. निम्नलिखित में से कौन सा सुपर ईगो का प्राथमिक कार्य है?
(A) व्यक्तित्व के नैतिक विवेक के रूप में कार्य करना।
(B) सहज इच्छाओं को तुरंत संतुष्ट करना।
(C) वास्तविकता और इच्छा के बीच मध्यस्थता करना।
(D) दमित यादों को संचित करना।

(C) समूह संसक्ति
(D) अनुरूपता

181. सूची-I (अभिवृत्ति कार्य) को सूची-II (उद्देश्य) के साथ सुमेलित करें:
सूची-I (अभिवृत्ति कार्य)
P. ज्ञान
Q. अहं-रक्षक
R. मूल्य-अभिव्यंजक
S. उपयोगितावादी
सूची-II (उद्देश्य)
1. अपने मुख्य मूल्यों और पहचान को व्यक्त करना
2. पुरस्कार प्राप्त करना और दंड से बचना
3. खतरों से आत्म-सम्मान की रक्षा करना
4. दुनिया को व्यवस्थित करना और समझना
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

182. एक प्रबंधक जो निर्णय लेने से पहले अपनी टीम से परामर्श करता है, वह ___________ नेतृत्व शैली प्रदर्शित कर रहा है।
(A) निरंकुश
(B) लोकतांत्रिक
(C) अहस्तक्षेपकारी
(D) करिश्माई

183. लेविन के सिद्धांत में 'जीवन स्थान' की अवधारणा में शामिल है:
(A) केवल व्यक्ति के आसपास की भौतिक वस्तुएं।
(B) केवल व्यक्ति के आंतरिक विचार और भावनाएं।
(C) ऐतिहासिक घटनाएं जिन्होंने व्यक्ति के जीवन को आकार दिया है।
(D) किसी दिए गए समय पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव वाली सभी आंतरिक और बाहरी शक्तियां।

184. युंग के अनुसार, 'परसोना' आद्यरुप है:
(A) सार्वजनिक मुखौटा या भूमिका जो एक व्यक्ति दूसरों के सामने प्रस्तुत करता है।
(B) पुरुष मानस का स्त्री पक्ष।
(C) स्व के छिपे हुए, गहरे पहलू।
(D) आत्म-बोध का अंतिम लक्ष्य।

185. फ्रायड के अनुसार, विकास के मुखीय चरण में स्थिर व्यक्ति वयस्क होने पर कौन सा व्यक्तित्व गुण प्रदर्शित कर सकता है?
(A) हठ
(B) वैनिटी
(C) निर्भरता
(D) उदासीनता

186. व्यक्तित्व इन्वेंटरी का मुख्य उद्देश्य है:
(A) व्यक्तित्व गुणों का एक संरचित और वस्तुनिष्ठ माप प्रदान करना।
(B) छिपे हुए अचेतन संघर्षों को उजागर करना।
(C) प्राकृतिक परिवेश में व्यवहार का अवलोकन करना।
(D) व्यक्ति के बुद्धि लब्धि का आकलन करना।

187. "किसी व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और व्यवहारों का स्थायी और अनूठा स्वरुप" किसकी परिभाषा है?
(A) अभिवृत्ति
(B) सामाजिक प्रत्यक्षण
(C) समूह गतिशीलता
(D) व्यक्तित्व

188. हैरी स्टैक सुलिवन के सिद्धांत में निम्नलिखित में से कौन सी एक मुख्य अवधारणा है?
(A) सामूहिक अचेतन
(B) सुरक्षा के लिए पारस्परिक संबंधों का महत्व
(C) आवश्यकताओं का पदानुक्रम
(D) गुणों की संरचना

189. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: आरोपण सिद्धांत यह पता लगाता है कि व्यक्ति घटनाओं और व्यवहार के कारणों की व्याख्या कैसे करते हैं।
कथन II: एक प्रमुख खोज मौलिक आरोपण त्रुटि है, जहाँ हम दूसरों के व्यवहार के लिए स्थितिजन्य कारकों पर अधिक बल देते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

190. फ्रायड के सिद्धांत में मनोयौन विकास का अंतिम चरण क्या है?
(A) मुखीय चरण
(B) लैंगिक चरण
(C) सुप्तावस्था
(D) जननेंद्रिय चरण

191. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): ऐश के अनुरुपता प्रयोगों में, कई प्रतिभागियों ने समूह के गलत उत्तर को स्वीकार कर लिया, भले ही वे जानते थे कि वह गलत था।
कारण (R): यह अनुरुपता अक्सर मानकीकृत सामाजिक प्रभाव का परिणाम थी, जो समूह में फिट होने और सामाजिक अस्वीकृति से बचने की इच्छा थी।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।

(B) समूह गतिशीलता
(C) अभिवृत्ति मापन
(D) गुण सिद्धांत

146. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: मौलिक आरोपण त्रुटि एक सार्वभौमिक संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जो सभी संस्कृतियों में समान रुप से पाया जाता है।
कथन II: सामूहिकवादी संस्कृतियों के लोग अक्सर व्यक्तिगत संस्कृतियों के लोगों की तुलना में मौलिक आरोपण त्रुटि के प्रति कम प्रवृत्त होते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

147. ऑलपोर्ट की 'कार्यात्मक स्वायत्तता' की अवधारणा किस मनोविश्लेषणात्मक विचार की प्रत्यक्ष आलोचना है?
(A) अचेतन का महत्व।
(B) रक्षा तंत्रों का अस्तित्व।
(C) यह विचार कि वयस्कों के उद्देश्य हमेशा उनके बचपन के मूल कारणों से जुड़े होते हैं।
(D) इड, ईगो और सुपर ईगो की संरचना।

148. स्थितिजन्य परीक्षण का सबसे अच्छा उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा होगा?
(A) एमएमपीआई प्रश्नावली पूरी करना।
(B) रोर्शा स्याही के धब्बों की व्याख्या करना।
(C) टीएटी कार्ड के जवाब में कहानी लिखना।
(D) किसी समस्या को हल करने के लिए बिना नेता वाली समूह चर्चा में भाग लेना।

149. एरिक्सन के सिद्धांत में 'पहल बनाम अपराधबोध' के संकट का समाधान किसके माध्यम से किया जाता है?
(A) देखभाल करने वालों पर भरोसा करना सीखना।
(B) व्यक्तिगत नियंत्रण की भावना प्राप्त करना।
(C) उद्देश्य और दिशा की भावना विकसित करना।
(D) कौशल में सक्षमता की भावना प्राप्त करना।

150. एक नेता जो स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करने, भूमिकाओं को परिभाषित करने और काम को व्यवस्थित करने पर ध्यान केंद्रित करता है, वह प्रदर्शित कर रहा है:
(A) संबंध-उन्मुख व्यवहार
(B) कार्य-उन्मुख व्यवहार
(C) अहस्तक्षेपकारी शैली
(D) परिवर्तनकारी नेतृत्व

151. कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत में मूल अवधारणा क्या है?
(A) सामूहिक अचेतन
(B) श्रेष्ठता के लिए प्रयास
(C) स्व-प्रणाली
(D) जीवन स्थान

152. किस सिद्धांतकार ने व्यक्तित्व विकास में सामाजिक और पारस्परिक कारकों की भूमिका पर सबसे अधिक बल दिया, यहाँ तक कि "पारस्परिक सिद्धांत" शब्द भी गढ़ा?
(A) हैरी स्टैक सुलिवन
(B) सिग्मंड फ्रायड
(C) कार्ल युंग
(D) गॉर्डन ऑलपोर्ट

153. एक अभिवृत्ति 'उपयोगितावादी' या 'वाद्य' कार्य कब पूरा करती है?
(A) जब यह व्यक्ति को अपने मूल मूल्यों को व्यक्त करने में मदद करती है।
(B) जब यह व्यक्ति को अपने आत्म-सम्मान की रक्षा करने में मदद करती है।
(C) जब यह व्यक्ति को पुरस्कार प्राप्त करने और दंड से बचने में मदद करती है।
(D) जब यह व्यक्ति को अपने ज्ञान को संरचित करने में मदद करती है।

154. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): अत्यधिक संसक्त समूह हमेशा कम संसक्त समूहों की तुलना में अधिक उत्पादक होते हैं।
कारण (R): समूह संसक्ति सदस्यों के बीच संचार और प्रेरणा बढ़ाती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

155. अभिवृत्ति के 'व्यवहारात्मक' घटक में शामिल है:
(A) वस्तु के बारे में व्यक्ति के विश्वास और ज्ञान।
(B) वस्तु के प्रति व्यक्ति की भावनाएं और संवेग।
(C) अभिवृत्ति रखने के लिए व्यक्ति का औचित्य।
(D) वस्तु के प्रति एक निश्चित तरीके से कार्य करने की व्यक्ति की प्रवृत्ति।

156. फ्रायड के सिद्धांत में 'सुप्तावस्था' की विशेषता क्या है?
(A) शौचालय प्रशिक्षण और नियंत्रण पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) सुप्त यौन भावनाओं की अवधि।
(C) इडिपस कॉम्प्लेक्स का उदय।
(D) यौन रुचियों की परिपक्वता।

157. अनुरूपता की "प्रकृति" का तात्पर्य है:
(A) वे कारण कि लोग अनुरुपता क्यों दिखाते हैं।
(B) वे कारक जो अनुरुपता को बढ़ाते या घटाते हैं।
(C) समूह के दबाव के आगे झुकने की प्रक्रिया।
(D) मानकीकृत और सूचनात्मक प्रभाव के बीच का अंतर।

203. किसी व्यक्ति का यह विश्वास कि वे किसी निश्चित व्यवहार को सफलतापूर्वक कर सकते हैं, अभिवृत्ति के किस घटक से संबंधित है?
(A) भावात्मक
(B) संज्ञानात्मक
(C) कार्यात्मक
(D) व्यवहारात्मक इरादा

204. स्थितिजन्य परीक्षण में, मूल्यांकन का प्राथमिक ध्यान किस पर होता है?
(A) व्यक्ति की आत्म-रिपोर्ट की गई भावनाएं।
(B) व्यक्ति का प्रेक्षित व्यवहार।
(C) व्यक्ति द्वारा अस्पष्ट उद्दीपनों की व्याख्या।
(D) व्यक्ति के पिछले अनुभव।

205. 'एनिमा' और 'एनिमस' युंगियन आद्यरूप हैं जो किसका प्रतिनिधित्व करते हैं?
(A) व्यक्तित्व के अच्छे और बुरे पहलू।
(B) चेतन मन और अचेतन मन।
(C) पुरुषों में स्त्री पक्ष और महिलाओं में पुरुष पक्ष।
(D) मानस में माता और पिता की आकृतियां।

206. एरिक्सन का कौन सा चरण फ्रायड के मुखीय चरण से सबसे अधिक मेल खाता है?
(A) स्वायत्तता बनाम शर्म और संदेह
(B) पहल बनाम अपराधबोध
(C) परिश्रम बनाम हीनता
(D) विश्वास बनाम अविश्वास

207. आरोपण सिद्धांत के अनुसार, हम किसी के व्यवहार के लिए 'आंतरिक' आरोपण करने की सबसे अधिक संभावना तब रखते हैं जब:
(A) व्यवहार सुसंगत हो, विशिष्ट न हो और उसमें कम सहमति हो।
(B) व्यवहार सुसंगत हो, विशिष्ट हो और उसमें उच्च सहमति हो।
(C) व्यवहार असंगत हो, विशिष्ट हो और उसमें उच्च सहमति हो।
(D) व्यवहार असंगत हो, विशिष्ट न हो और उसमें कम सहमति हो।

208. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): गॉर्डन ऑलपोर्ट को गुण सिद्धांत का अग्रणी माना जाता है।
कारण (R): उन्होंने तर्क दिया कि व्यक्तित्व स्थिर, आंतरिक प्रवृत्तियों के संग्रह से बना है जो व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

209. "हम-की भावना" या वह स्तर जिस तक सदस्य समूह के प्रति आकर्षित होते हैं, कहलाता है:
(A) अनुरुपता
(B) संसक्ति
(C) नेतृत्व
(D) आरोपण

210. अभिवृत्तियों की प्रकृति और कार्यों के संबंध में कौन सा कथन सत्य है?
(A) अभिवृत्ति की प्रकृति उसके घटकों को संदर्भित करती है, जबकि कार्य उन उद्देश्यों को संदर्भित करते हैं जो वह पूरा करती है।
(B) अभिवृत्ति की प्रकृति यह बताती है कि हम इसे क्यों रखते हैं, और कार्य यह बताता है कि यह क्या है।
(C) अभिवृत्तियों की एक प्रकृति होती है लेकिन वे व्यक्ति के लिए कोई विशिष्ट कार्य नहीं करतीं।
(D) अभिवृत्तियों के कार्य केवल संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं तक ही सीमित हैं।

211. वह अवधारणा कि वयस्कों के उद्देश्य उनके बचपन के मूल कारणों से स्वतंत्र हो सकते हैं, कहलाती है:
(A) सुख सिद्धांत
(B) इडिपस कॉम्प्लेक्स
(C) कार्यात्मक स्वायत्तता
(D) हीनता ग्रंथि

212. व्यक्तित्व इन्वेंटरी एक प्रकार का ___________ परीक्षण है।
(A) प्रक्षेपी
(B) स्थितिजन्य
(C) प्रदर्शन
(D) आत्म-रिपोर्ट

213. एक नेता जो समूह से अलग रहता है और सदस्यों को बिना किसी मार्गदर्शन के कार्य करने की अनुमति देता है, उसे _________ नेता के रूप में जाना जाता है।
(A) निरंकुश
(B) लोकतांत्रिक
(C) अहस्तक्षेपकारी
(D) परिवर्तनकारी

214. निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धांतकार मुख्य रूप से चर्चा किए गए व्यक्तित्व सिद्धांतों से संबंधित नहीं है?
(A) फ्रायड
(B) स्किनर
(C) एडलर
(D) लेविन

स्थिति के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं का अवलोकन करके व्यक्तित्व और व्यवहार का आकलन करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

170. सटीक जानकारी प्राप्त करने की इच्छा और यह मानने के आधार पर अनुरूपता कि समूह बेहतर जानता है, कहलाती है:
(A) सूचनात्मक प्रभाव
(B) मानकीकृत प्रभाव
(C) आज्ञाकारिता
(D) अनुपालन

171. निम्नलिखित में से कौन सा व्यक्तित्व का निर्धारक माना जाता है?
(A) आनुवंशिक विरासत
(B) सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
(C) पारिवारिक वातावरण
(D) उपरोक्त सभी

172. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): एरिक्सन का मनोसामाजिक विकास का सिद्धांत पूरे जीवनकाल को कवर करता है।
कारण (R): उनका मानना था कि व्यक्तित्व शैशवावस्था से वृद्धावस्था तक जीवन के विभिन्न चरणों में सामने आने वाले सामाजिक संकटों द्वारा आकार लेता रहता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

173. 'आत्म-सेवा पूर्वाग्रह' एक विशिष्ट प्रकार का आरोपण पूर्वाग्रह है जहाँ लोग प्रवृत्त होते हैं:
(A) अपनी विफलताओं के लिए दूसरों को दोष देना।
(B) दूसरों के व्यवहार में स्वभावगत कारकों की भूमिका को अधिक आंकना।
(C) अपनी सफलताओं के लिए व्यक्तिगत श्रेय लेना और अपनी विफलताओं के लिए बाहरी कारकों को दोष देना।
(D) अपने स्वयं के व्यवहार को वास्तव में होने की तुलना में अधिक सामान्य और विशिष्ट के रूप में देखना।

174. समूह संसक्ति के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) संसक्ति समूह में "हम-की भावना" को संदर्भित करती है।
(B) अत्यधिक संसक्त समूह परिवर्तन का विरोध कर सकते हैं।
(C) बाहरी खतरे समूह की संसक्ति को बढ़ा सकते हैं।
(D) संसक्ति सदस्य की संतुष्टि से असंबंधित है।

175. ऑलपोर्ट का मानना था कि व्यक्तित्व का अध्ययन करने का सबसे अच्छा तरीका एक व्यक्तिपरक दृष्टिकोण था, जो अद्वितीय व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करता था।
(A) व्यक्तिपरक
(B) नियमपरक
(C) प्रयोगात्मक
(D) सहसंबंधी

176. निम्नलिखित में से कौन अवधारणा और उसकी परिभाषा का 'गलत युग्म' है?
(A) प्रभाव निर्माण: अन्य लोगों के बारे में निर्णय लेने की प्रक्रिया।
(B) समूह संसक्ति: समूह परिवेश में उपस्थित लोगों की संख्या।
(C) अनुरुपता: समूह की अपेक्षाओं से मेल खाने के लिए अपने व्यवहार को बदलना।
(D) नेतृत्व: एक सामान्य लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दूसरों को प्रभावित करने की प्रक्रिया।

177. 'ईगो' किसके अनुसार कार्य करता है?
(A) सुख सिद्धांत
(B) वास्तविकता सिद्धांत
(C) नैतिकता सिद्धांत
(D) कामवासना सिद्धांत

178. प्रक्षेपी परीक्षणों की एक प्रमुख विशेषता __________ उद्दीपनों का उपयोग है।
(A) अस्पष्ट
(B) अत्यधिक संरचित
(C) शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण
(D) सांस्कृतिक रूप से पक्षपाती

179. एडलर के सिद्धांत में, एक 'हीनता ग्रंथि' तब विकसित होती है जब:
(A) एक व्यक्ति सफलतापूर्वक श्रेष्ठता के लिए प्रयास करता है।
(B) एक व्यक्ति उच्च स्तर की सामाजिक रुचि प्राप्त करता है।
(C) हीनता की भावनाएं भारी होती हैं और व्यक्तिगत विकास को रोकती हैं।
(D) एक व्यक्ति सामाजिक मानदंडों और मूल्यों को खारिज करता है।

180. निम्नलिखित कारकों पर विचार करें:
I. सामीप्य
II. समानता
III. शारीरिक आकर्षण
ये सभी किसके प्रमुख निर्धारक हैं?
(A) अभिवृत्ति परिवर्तन
(B) पारस्परिक आकर्षण

227. फ्रायड के रक्षा तंत्रों में सबसे बुनियादी, जिसमें खतरनाक विचारों को अचेतन में धकेलना शामिल है, वह है:
(A) प्रक्षेपण
(B) इनकार
(C) दमन
(D) उदात्तीकरण

228. व्यक्तित्व मूल्यांकन की वैधता का एक प्रमुख निर्धारक यह है कि क्या परीक्षण:
(A) समय के साथ सुसंगत स्कोर उत्पन्न करता है।
(B) परीक्षण देने वाले के लिए समझने में आसान है।
(C) कई पिछले शोध अध्ययनों में उपयोग किया गया है।
(D) उस संरचना को मापता है जिसे मापने का वह दावा करता है।

229. एडलर के अनुसार वह शब्द क्या है जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति हीनता की भावनाओं को दूर करने का अनूठा तरीका खोजता है?
(A) आत्म-सिद्धि
(B) रचनात्मक स्व
(C) जीवन शैली
(D) श्रेष्ठता ग्रंथि

230. अभिवृत्ति का 'ज्ञान कार्य' है:
(A) अपनी आत्म-अवधारणा को व्यक्त करना।
(B) अपनी दुनिया को अर्थ और संरचना प्रदान करना।
(C) अपने अहं की रक्षा करना।
(D) पुरस्कारों को अधिकतम करना और दंड को कम करना।

231. एरिक्सन के मॉडल में 'परिश्रम बनाम हीनता' का चरण बच्चे के किन प्रयासों पर केंद्रित है?
(A) दुनिया में विश्वास की भावना विकसित करना।
(B) स्वतंत्रता और व्यक्तिगत इच्छा शक्ति का दावा करना।
(C) स्व की एक सुसंगत समझ बनाना।
(D) शैक्षणिक और सामाजिक कौशल में महारत हासिल करना।

232. निम्नलिखित में से कौन सा प्रक्षेपी परीक्षण नहीं है?
(A) 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (16पीएफ)
(B) विषय आत्मबोध परीक्षण (टीएटी)
(C) रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण
(D) हाउस-ट्री-पर्सन परीक्षण

233. व्यक्ति एक-दूसरे को कैसे देखते हैं, उनके बारे में कैसे सोचते हैं और एक-दूसरे से कैसे संबंधित हैं, इसका अध्ययन किस क्षेत्र के अंतर्गत आता है?
(A) व्यक्तित्व मनोविज्ञान
(B) नैदानिक मनोविज्ञान
(C) सामाजिक मनोविज्ञान
(D) विकासात्मक मनोविज्ञान

234. लेविन के सिद्धांत में, वातावरण जैसा कि व्यक्ति द्वारा महसूस और समझा जाता है, वह है:
(A) मनोवैज्ञानिक वातावरण
(B) भौतिक वातावरण
(C) सामाजिक वातावरण
(D) वस्तुनिष्ठ वातावरण

235. वह अवधारणा जो फ्रायड के सिद्धांत से संबंधित नहीं है, वह है:
(A) इड, ईगो, सुपर ईगो
(B) मनोयौन चरण
(C) रक्षा तंत्र
(D) सामूहिक अचेतन

236. एक व्यक्ति जो "बाकी सब भी ऐसा ही करते हैं" कहकर परीक्षा में नकल करने का औचित्य साबित करता है, वह संभवतः क्या कम कर रहा है?
(A) समूह संसक्ति
(B) संज्ञानात्मक विसंगति
(C) आरोपण त्रुटि
(D) पारस्परिक आकर्षण

237. 'ऐश प्रयोग' किसका एक प्रसिद्ध प्रदर्शन है?
(A) नेतृत्व शैलियाँ
(B) अभिवृत्ति परिवर्तन
(C) अनुरूपता
(D) प्रभाव निर्माण

238. "एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने की अपेक्षाकृत स्थिर और स्थायी प्रवृत्ति" किसकी परिभाषा है?
(A) प्रेरणा
(B) मनोदशा
(C) आवेग
(D) गुण

239. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत में 'ईगो' बाहरी वास्तविकता को संचालित करने के लिए जिम्मेदार है, इसलिए यह किस पर कार्य करता है?
(A) वास्तविकता सिद्धांत
(B) सुख सिद्धांत
(C) नैतिक सिद्धांत
(D) आदर्शवादी सिद्धांत

240. आरोपण में 'कर्ता-प्रेक्षक पूर्वाग्रह' सुझाव देता है कि हम अपने कार्यों का श्रेय ________ कारकों को और दूसरों के कार्यों का श्रेय ________ कारकों को देते हैं।
(A) स्वभावगत; स्थितिजन्य
(B) स्थितिजन्य; स्वभावगत
(C) सकारात्मक; नकारात्मक
(D) नकारात्मक; सकारात्मक

215. एक प्रमुख विशेषता के आधार पर किसी व्यक्ति की अनुकूल या प्रतिकूल धारणा बनाने की प्रवृत्ति कहलाती है:
(A) प्रथम प्रभाव
(B) नवीनता प्रभाव
(C) आरोपण त्रुटि
(D) हेलो प्रभाव

216. फ्रायड का सिद्धांत मनोयौन से संबंधित है, जबकि एरिक्सन का सिद्धांत ___________ से संबंधित है।
(A) मनोसामाजिक
(B) गतिक
(C) मनोविश्लेषणात्मक
(D) मनोवैज्ञानिक

217. "उन सभी संभावित घटनाओं की समग्रता, मनोवैज्ञानिक और भौतिक दोनों, जो किसी दिए गए क्षण में व्यक्ति को प्रभावित कर सकती हैं" कुर्ट लेविन की किसकी परिभाषा है?
(A) बल क्षेत्र
(B) वैलेंस
(C) जीवन स्थान
(D) व्यक्तिगत निर्माण

218. "प्रकृति बनाम पोषण" की बहस मनोवैज्ञानिक अध्ययन के किस क्षेत्र के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक है?
(A) व्यक्तित्व के निर्धारक
(B) समूह गतिशीलता
(C) अभिवृत्ति परिवर्तन के सिद्धांत
(D) अभिवृत्तियों का मापन

219. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: अनुरूपता व्यक्तिगत संस्कृतियों में सामूहिकवादी संस्कृतियों की तुलना में अधिक होती है।
कथन II: मानकीकृत सामाजिक प्रभाव कई सामाजिक स्थितियों में अनुरूपता का एक शक्तिशाली चालक है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

220. व्यक्तित्व इन्वेंटरी और प्रक्षेपी परीक्षण के बीच प्राथमिक अंतर निहित है:
(A) परीक्षण किए जा रहे व्यक्ति की आयु में।
(B) परीक्षण उद्दीपनों और प्रतिक्रिया प्रारूप की संरचनात्मकता में।
(C) परीक्षण के सैद्धांतिक आधार में।
(D) प्रशासन के लिए आवश्यक लागत और समय में।

221. कौन सा सिद्धांतकार "सामूहिक अचेतन" की अवधारणा से सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) सिग्मंड फ्रायड
(B) अल्फ्रेड एडलर
(C) कार्ल युंग
(D) एरिक एरिक्सन

222. निम्नलिखित पर विचार करें:
I. मृत्युदंड के बारे में व्यक्ति के विश्वास।
II. एक राजनीतिक उम्मीदवार के बारे में व्यक्ति की भावनाएं।
III. हर चुनाव में वोट देने की व्यक्ति की प्रवृत्ति।
ये तीन मदें, क्रमशः अभिवृत्ति के किन घटकों का प्रतिनिधित्व करती हैं?
(A) भावात्मक, व्यवहारात्मक, संज्ञानात्मक
(B) संज्ञानात्मक, भावात्मक, व्यवहारात्मक
(C) व्यवहारात्मक, संज्ञानात्मक, भावात्मक
(D) संज्ञानात्मक, व्यवहारात्मक, भावात्मक

223. सुलिवन के अनुसार, व्यक्तित्व है:
(A) आवर्ती पारस्परिक स्थितियों का अपेक्षाकृत स्थायी स्वरूप।
(B) निश्चित गुणों का एक समूह।
(C) सामूहिक अचेतन का एक उत्पाद।
(D) मनोयौन विकास का परिणाम।

224. नेतृत्व के संदर्भ में, एक निरंकुश शैली की विशेषता है:
(A) उच्च समूह भागीदारी
(B) केंद्रीकृत अधिकार और नियंत्रण
(C) सौंपा गया निर्णय लेना
(D) कार्य पूरा करने के बजाय टीम के मनोबल पर ध्यान केंद्रित करना

225. एरिक्सन के सिद्धांत में अंतिम मनोसामाजिक चरण, जहाँ व्यक्ति अपने जीवन पर विचार करता है, वह है:
(A) उत्पादकता बनाम स्थिरता
(B) अखंडता बनाम निराशा
(C) घनिष्ठता बनाम अलगाव
(D) पहचान बनाम भूमिका भ्रम

226. सूची-I (अवधारणा) को सूची-II (क्षेत्र) के साथ सुमेलित करें:
सूची-I (अवधारणा)
P. प्रथम प्रभाव
Q. मौलिक आरोपण त्रुटि
R. सामीप्य
S. अनुरूपता
सूची-II (क्षेत्र)
1. पारस्परिक आकर्षण
2. समूह गतिशीलता
3. सामाजिक प्रत्यक्षण
4. आरोपण सिद्धांत
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

(B) कुछ व्यक्तियों में निहित व्यक्तित्व गुण।
(C) अधिकार की औपचारिक स्थिति।
(D) अनुरूपता सुनिश्चित करने की एक विधि।

256. निम्नलिखित में से कौन सुलिवन के पारस्परिक सिद्धांत की एक मुख्य अवधारणा है?
(A) आद्यरूप
(B) व्यक्तिकरण
(C) जीवन स्थान
(D) प्रोप्रियम

257. सिद्धांतकार और सिद्धांत प्रकार का एक गलत युग्म है:
(A) फ्रायड - गतिक
(B) ऑलपोर्ट - गुण
(C) लेविन - क्षेत्र
(D) एडलर - मनोसामाजिक

258. अप्रिय वास्तविकताओं से स्व की रक्षा के लिए बनाई गई अभिवृत्ति कौन सा कार्य पूरा कर रही है?
(A) अहं-रक्षक कार्य
(B) मूल्य-अभिव्यंजक कार्य
(C) ज्ञान कार्य
(D) वाद्य कार्य

259. व्यक्तित्व के प्रक्षेपी परीक्षण की एक प्राथमिक विशेषता यह है कि यह:
(A) वस्तुनिष्ठ रूप से स्कोर किया जाता है।
(B) इसमें उच्च भविष्य कहने वाली वैधता होती है।
(C) अस्पष्ट उद्दीपनों का उपयोग करता है।
(D) आत्म-रिपोर्ट इन्वेंटरी का एक रूप है।

260. समूह के भीतर "हम-की भावना" की शक्ति उसकी क्या है?
(A) अनुरूपता स्तर
(B) नेतृत्व प्रभावशीलता
(C) आकार
(D) संसक्ति

261. प्रभाव निर्माण में, यदि आप जानते हैं कि एक नया सहयोगी 'बुद्धिमान' है, तो आप यह भी मान सकते हैं कि वह 'कुशल' और 'मेहनती' है। यह किसका उदाहरण है?
(A) प्रथम प्रभाव
(B) नवीनता प्रभाव
(C) हेलो प्रभाव
(D) एक आरोपण पूर्वाग्रह

262. वह चरण जिसमें बच्चा नए कौशल में महारत हासिल करके सक्षमता की भावना विकसित करता है, एरिक्सन द्वारा क्या कहा गया है?
(A) स्वायत्तता बनाम शर्म
(B) परिश्रम बनाम हीनता
(C) पहल बनाम अपराधबोध
(D) पहचान बनाम भूमिका भ्रम

263. कौन सा कथन मानवता के प्रति अल्फ्रेड एडलर के दृष्टिकोण को सबसे अच्छी तरह दर्शाता है?
(A) लोग मुख्य रूप से अचेतन यौन इच्छाओं से प्रेरित होते हैं।
(B) लोग अपने वातावरण और सुदृढ़ीकरण के उत्पाद हैं।
(C) लोग पूर्वजों से विरासत में मिले आद्यरूपों द्वारा निर्देशित होते हैं।
(D) लोग हीनता को दूर करने और व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

264. एक व्यक्तित्व इन्वेंटरी मूल्यांकन का एक रूप है जो किस पर निर्भर करता है?
(A) व्यक्ति की आत्म-रिपोर्ट पर।
(B) एक प्रशिक्षित चिकित्सक द्वारा अवलोकन पर।
(C) अस्पष्ट छवियों की व्याख्या पर।
(D) एक मानकीकृत कार्य पर प्रदर्शन पर।

265. लेविन के सिद्धांत में 'जीवन स्थान' शब्द का तात्पर्य है:
(A) वह भौतिक क्षेत्र जिसमें व्यक्ति रहता है।
(B) वह सामाजिक वर्ग जिसमें व्यक्ति का जन्म हुआ है।
(C) किसी दिए गए क्षण में व्यक्ति की संपूर्ण मनोवैज्ञानिक दुनिया।
(D) व्यक्ति के जीवन का ऐतिहासिक संदर्भ।

266. दूसरों के व्यवहार पर व्यक्तित्व के प्रभाव को अधिक आंकने और स्थिति के प्रभाव को कम आंकने की व्यक्ति की प्रवृत्ति कहलाती है:
(A) मौलिक आरोपण त्रुटि
(B) आत्म-सेवा पूर्वाग्रह
(C) हेलो प्रभाव
(D) संज्ञानात्मक विसंगति

267. हैरी स्टैक सुलिवन के सिद्धांत का मुख्य विचार यह है कि व्यक्तित्व को केवल किसके संदर्भ में समझा जा सकता है?
(A) मस्तिष्क रसायन विज्ञान
(B) आनुवंशिक प्रवृत्तियां
(C) प्रारंभिक मनोयौन चरण
(D) पारस्परिक संबंध

268. निम्नलिखित में से कौन सा ऑलपोर्ट की व्यक्तिगत प्रवृत्तियों की तीन श्रेणियों में से एक नहीं है?
(A) कार्डिनल
(B) स्रोत
(C) केंद्रीय
(D) गौण

269. अभिवृत्ति का सबसे बुनियादी कार्य क्या है?
(A) हमें अपने मूल्यों को व्यक्त करने में मदद करना।
(B) हमारे अहं की रक्षा करना।
(C) किसी वस्तु की ओर या उससे दूर हमारे व्यवहार का

32. (B) हेलो प्रभाव
हेलो प्रभाव एक संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जिसमें हम किसी व्यक्ति की एक विशिष्ट सकारात्मक विशेषता के आधार पर उसके पूरे व्यक्तित्व के बारे में अनुकूल धारणा बना लेते हैं। हम यह मान लेते हैं कि यदि कोई व्यक्ति दिखने में अच्छा है, तो वह बुद्धिमान और ईमानदार भी होगा। यह प्रभाव हमारे सामाजिक निर्णयों को प्रभावित करता है और अक्सर दूसरों के वास्तविक गुणों के सटीक मूल्यांकन में बाधा डालता है।

33. (B) उपरोक्त सभी
अनुरूपता कई कारकों द्वारा निर्धारित होती है। समूह की उच्च संसक्ति सदस्यों पर समूह के मानदंडों का पालन करने हेतु दबाव डालती है। यदि समूह में कोई एक भी व्यक्ति असहमति व्यक्त करता है, तो अनुरूपता का स्तर काफी कम हो जाता है। इसके अतिरिक्त, कम आत्म-सम्मान वाले व्यक्ति अक्सर सामाजिक स्वीकृति पाने हेतु दूसरों के विचारों के आगे झुक जाते हैं। ये सभी तत्व सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

34. (D) I, II और III
व्यक्तित्व का विकास आनुवंशिकता, पर्यावरण और स्थितिजन्य कारकों के बीच एक जटिल अंतःक्रिया का परिणाम है। आनुवंशिकता मूल स्वभाव और शारीरिक विशेषताओं हेतु जैविक खाका प्रदान करती है। परिवार, शिक्षा और संस्कृति जैसे पर्यावरणीय कारक इन प्रवृत्तियों को आकार देते हैं और नए व्यवहार सिखाते हैं। इसके अतिरिक्त विशिष्ट स्थितियां भी यह निर्धारित करती हैं कि व्यक्तित्व के कौन से पहलू किसी विशेष समय पर प्रकट होंगे।

35. (C) हमारी प्रजाति के इतिहास से प्राप्त साझा, वंशानुगत चिन्हों का एक भंडार।
कार्ल युंग के अनुसार सामूहिक अचेतन मन का वह स्तर है जो सभी मनुष्यों में समान रुप से साझा किया जाता है। इसमें वे सभी स्मृतियां और प्रतीक शामिल हैं जो हमें हमारे पूर्वजों और मानव प्रजाति के पूरे इतिहास से विरासत में मिले हैं। इन साझा प्रतीकों को आद्यरूप कहा जाता है, जो हमारे सपनों और मिथकों में प्रकट होते हैं। यह अवधारणा मानव मानस की सार्वभौमिक प्रकृति पर बल देती है।

36. (D) जन्म क्रम
अल्फ्रेड एडलर ने प्रस्तावित किया था कि परिवार में बच्चे का जन्म क्रम उसकी जीवन शैली और व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए, सबसे बड़े बच्चे अक्सर अधिक जिम्मेदार होते हैं, जबकि सबसे छोटे बच्चों को अधिक लाड़-प्यार मिलता है। एडलर का मानना था कि परिवार के भीतर की यह स्थिति व्यक्ति के दृष्टिकोण और दुनिया के साथ व्यवहार करने के तरीके को प्रभावित करती है।

37. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
फ्रायड के अनुसार सुपर ईगो व्यक्तित्व की नैतिक शाखा है जो समाज के आदर्शों को आत्मसात करने से विकसित होती है। यह इड की अनैतिक इच्छाओं को रोकता है और ईगो को नैतिक लक्ष्यों की ओर ले जाने का प्रयास करता है। यह समाजीकरण की प्रक्रिया का परिणाम है जहाँ बच्चा सही और गलत के बीच अंतर करना सीखता है। सुपर ईगो व्यक्ति के भीतर विवेक और अपराधबोध की भावना पैदा करता है।

38. (B) दूसरों में व्यक्तिगत गुणों को अधिक महत्व देना और स्थितिजन्य कारकों को कम आंकना।
मौलिक आरोपण त्रुटि एक ऐसी प्रवृत्ति है जहाँ हम दूसरों के व्यवहार की व्याख्या करते समय उनके व्यक्तिगत स्वभाव को अधिक महत्व देते हैं, जबकि उस स्थिति के प्रभाव को नजरअंदाज कर देते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति देर से आता है, तो हम उसे आलसी मान लेते हैं और यातायात जैसी बाधाओं पर विचार नहीं करते। यह पूर्वाग्रह सामाजिक प्रत्यक्षण में बहुत सामान्य है और गलत निर्णय का कारण बनता है।

39. (D) एक सामान्य विशेषता जो व्यक्तित्व की बुनियादी नींव बनाती है।
गॉर्डन ऑलपोर्ट के अनुसार केंद्रीय गुण वे प्रमुख विशेषताएं हैं जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का वर्णन करने हेतु सबसे अधिक उपयोग की जाती हैं। प्रत्येक व्यक्ति में सामान्यतः पांच से दस केंद्रीय गुण होते हैं जो व्यवहार हेतु एक बुनियादी ढांचा प्रदान करते हैं। ये गुण इतने स्पष्ट होते हैं कि दूसरों द्वारा आसानी से पहचाने जा सकते हैं, जैसे कि ईमानदारी। केंद्रीय गुण व्यक्तित्व के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

40. (A) विस्तार संभावना मॉडल
विस्तार संभावना मॉडल अनुनय के माध्यम से अभिवृत्ति परिवर्तन की व्याख्या करता है। इसमें दो मुख्य मार्ग होते हैं। केंद्रीय मार्ग में व्यक्ति संदेश के तर्कों पर गहराई से विचार करता है, जिससे दीर्घकालिक परिवर्तन होता है। परिधीय मार्ग में व्यक्ति संदेश की सामग्री के बजाय बाहरी संकेतों से प्रभावित होता है। यह मॉडल यह समझने में मदद करता है कि लोग किसी जानकारी को कैसे संसाधित करते हैं और उनकी राय कब बदलती है।

41. (A) II, III, I, IV
एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के चरणों का क्रम जन्म से शुरू होकर परिपक्वता तक जाता है। सबसे पहले विश्वास बनाम अविश्वास का चरण आता है जहाँ बच्चा सुरक्षा की भावना सीखता है। इसके बाद स्वायत्तता बनाम शर्म और संदेह का चरण आता है। तीसरा चरण पहल बनाम अपराधबोध है जिसमें बच्चा सक्रिय रुप से दुनिया को खोजना शुरू करता है। अंत में परिश्रम बनाम हीनता का चरण आता है जहाँ शैक्षणिक कौशल विकसित होते हैं।

42. (A) जीवन स्थान में किसी वस्तु या क्षेत्र का सकारात्मक या नकारात्मक मूल्य।
कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत में वैलेंस किसी विशेष लक्ष्य या वस्तु की आकर्षण या विकर्षण की शक्ति को दर्शाता है। यदि कोई वस्तु व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा करती है, तो उसमें सकारात्मक वैलेंस होता है। यदि वस्तु खतरा पैदा करती है, तो उसमें नकारात्मक वैलेंस होता है। यह अवधारणा स्पष्ट करती

(B) पारस्परिक आकर्षण
(C) अनुरुपता
(D) नेतृत्व शैली

285. एक लोकतांत्रिक नेता द्वारा क्या किए जाने की सबसे अधिक संभावना है?
(A) समूह पर निर्णय थोपना।
(B) समूह को बिना किसी मार्गदर्शन के कार्य करने देना।
(C) चर्चा को प्रोत्साहित करना और समूह की प्रतिक्रिया पर विचार करना।
(D) विशेष रुप से कार्य पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करना।

286. आद्यरूपों की अवधारणा किसके सिद्धांत का केंद्र है?
(A) सिग्मंड फ्रायड
(B) अल्फ्रेड एडलर
(C) गॉर्डन ऑलपोर्ट
(D) कार्ल युंग

287. व्यक्तित्व इन्वेंटरी की प्राथमिक विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) इसमें वस्तुनिष्ठ स्कोरिंग के साथ प्रश्नों का एक मानकीकृत सेट होता है।
(B) यह अस्पष्ट उद्दीपनों का उपयोग करता है।
(C) इसके लिए स्कोरर द्वारा व्यक्तिपरक व्याख्या की आवश्यकता होती है।
(D) यह एक कृत्रिम सामाजिक स्थिति में व्यवहार का अवलोकन करता है।

288. एक व्यक्ति जो जिद्दी और अनिवार्य रुप से सुव्यवस्थित है, उसे फ्रायडियन द्वारा किस चरण में स्थिर के रुप में वर्णित किया जा सकता है?
(A) मुखीय
(B) गुदा
(C) लैंगिक
(D) जननेंद्रिय

289. 'विश्वास बनाम अविश्वास' का संकट एरिक्सन के किस चरण का मुख्य विषय है?
(A) बचपन
(B) शैशवावस्था
(C) पूर्व-स्कूली
(D) किशोरावस्था

290. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी को व्यक्तित्व का निर्धारक माना जाता है?
(A) वैलेंस
(B) आनुवंशिकता
(C) वातावरण
(D) स्थिति

291. निम्नलिखित में से कौन 'मौलिक आरोपण त्रुटि' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) अपनी सफलताओं का श्रेय अपनी क्षमताओं को और अपनी विफलताओं का श्रेय खराब किस्मत को देने की प्रवृत्ति।
(B) यह मानने की प्रवृत्ति कि दूसरे लोग हमारी अपनी अभिवृत्तियों और विश्वासों को साझा करते हैं।
(C) दूसरों के व्यवहार में व्यक्तिगत कारकों पर अधिक बल देने की प्रवृत्ति।
(D) पहले प्रभाव के स्थायी होने की प्रवृत्ति।

292. 'प्रोप्रियम' ऑलपोर्ट का किसके लिए प्रयुक्त शब्द है?
(A) अचेतन मन।
(B) व्यक्ति का सबसे प्रभावी गुण।
(C) वह सामाजिक मुखौटा जो व्यक्ति सार्वजनिक रुप से पहनता है।
(D) व्यक्तित्व का केंद्र, या स्व।

293. कौन सा कथन फ्रायड और एरिक्सन के बीच एक बड़े अंतर का सटीक वर्णन करता है?
(A) फ्रायड ने पूरे जीवनकाल के विकास पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि एरिक्सन ने केवल बचपन पर ध्यान केंद्रित किया।
(B) एरिक्सन ने मनोयौन संघर्षों पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि फ्रायड ने मनोसामाजिक संकटों पर ध्यान केंद्रित किया।
(C) एरिक्सन ने फ्रायड की तुलना में सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों पर अधिक बल दिया।
(D) फ्रायड के सिद्धांत में 8 चरण हैं, जबकि एरिक्सन के सिद्धांत में 5 हैं।

294. एक नेता जो उच्च मानक निर्धारित करता है और समूह से अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की अपेक्षा करता है, वह ________ शैली प्रदर्शित कर रहा है।
(A) संबंध-उन्मुख
(B) कार्य-उन्मुख
(C) अहस्तक्षेपकारी
(D) लोकतांत्रिक

295. "व्यक्तित्व" शब्द स्थितियों के बीच व्यक्ति के व्यवहार में एक स्तर की ________ को दर्शाता है।
(A) परिवर्तनशीलता
(B) अप्रत्याशितता
(C) यादृच्छिकता
(D) निरंतरता

296. विस्तार संभावना मॉडल में पहचाने गए अनुनय के दो मार्ग कौन से हैं?
(A) केंद्रीय और परिधीय
(B) सूचनात्मक और मानकीकृत
(C) संज्ञानात्मक और भावात्मक

(D) आंतरिक और बाहरी

297. एडलर के अनुसार, बच्चे का _________ उसके व्यक्तित्व विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।
(A) शारीरिक स्वास्थ्य
(B) सहकर्मी समूह
(C) जन्म क्रम
(D) बुद्धिमत्ता

298. व्यक्तित्व के बारे में अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए B=f(P,E) सूत्र का उपयोग करने वाला सिद्धांतकार कौन था?
(A) लेविन
(B) ऑलपोर्ट
(C) सुलिवन
(D) फ्रायड

299. अभिवृत्ति मापन के संदर्भ में, एक पैमाना जो विपरीत विशेषणों के युग्मों का उपयोग करता है, कहलाता है:
(A) लिकर्ट पैमाना
(B) थर्स्टन पैमाना
(C) गुटमैन पैमाना
(D) सिमेंटिक डिफरेंशियल पैमाना

300. युंग के सिद्धांत की वह अवधारणा जो फ्रायड की व्यक्तिगत अचेतन की अवधारणा के सबसे समान है, वह है:
(A) सामूहिक अचेतन
(B) इसका कोई सीधा समकक्ष नहीं है, क्योंकि युंग की व्यक्तिगत अचेतन की अवधारणा अलग है।
(C) शैडो
(D) एनिमा/एनिमस

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) व्यवहार करने, महसूस करने और सोचने का अनूठा और अपेक्षाकृत स्थिर स्वरूप।
व्यक्तित्व को किसी व्यक्ति के व्यवहार, भावनाओं और विचारों के उस अनूठे और अपेक्षाकृत स्थिर स्वरूप के रूप में परिभाषित किया जाता है जो उसे दूसरों से विशिष्ट बनाता है। यह समय और विभिन्न परिस्थितियों में निरंतरता प्रदर्शित करता है। व्यक्तित्व केवल क्षणिक मनोदशा नहीं है, बल्कि यह आंतरिक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों का एक गतिशील संगठन है जो परिवेश के साथ सामंजस्य स्थापित करता है।

2. (A) इड
सिगमंड फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत में इड व्यक्तित्व का वह आदिम हिस्सा है जो पूर्णतः अचेतन होता है। यह सुख सिद्धांत पर आधारित है और बिना किसी तर्क के तात्कालिक संतुष्टि की मांग करता है। इड जैविक प्रवृत्तियों और सहज इच्छाओं का भंडार है जो तनाव कम करने हेतु कार्य करता है। यह सामाजिक प्रतिबंधों की परवाह किए बिना केवल बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करता है।

3. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
अभिवृत्ति एक जटिल मनोवैज्ञानिक संरचना है जिसमें विचारों, भावनाओं और क्रियाओं का समावेश होता है। इसके संज्ञानात्मक घटक में विश्वास, भावात्मक में भावनाएं और व्यवहारात्मक में कार्य करने की प्रवृत्ति होती है। अभिवृत्ति व्यक्ति के आत्म-सम्मान को बाहरी खतरों से बचाने हेतु अहं-रक्षा जैसे महत्वपूर्ण कार्य करती है। ये दोनों कथन अभिवृत्ति की प्रकृति और उसके द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका को स्पष्ट करते हैं।

4. (D) प्रथम प्रभाव
प्रभाव निर्माण की प्रक्रिया में शुरुआती जानकारी को बाद में प्राप्त होने वाली सूचनाओं की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता है। इस मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति को प्रथम प्रभाव कहा जाता है, जो किसी व्यक्ति के बारे में हमारी स्थायी धारणा बनाने में सहायक है। यह प्रभाव दर्शाता है कि पहले प्राप्त सूचनाएं एक संदर्भ ढांचा तैयार करती हैं, जिसके आधार पर हम आगामी नई सूचनाओं का मूल्यांकन करते हैं।

5. (C) बुनियादी गुण
गॉर्डन ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व के गुणों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया था, जिनमें कार्डिनल, केंद्रीय और गौण गुण शामिल हैं। 'बुनियादी गुण' उनकी शब्दावली का हिस्सा नहीं है, क्योंकि उन्होंने विशिष्ट व्यक्तिगत प्रवृत्तियों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया था। कार्डिनल गुण व्यक्ति के जीवन पर हावी होते हैं, जबकि केंद्रीय गुण सामान्य विशेषताएं हैं। गौण गुण केवल विशिष्ट परिस्थितियों में ही प्रकट होते हैं।

6. (B) विषय आत्मबोध परीक्षण (टीएटी)
विषय आत्मबोध परीक्षण एक प्रमुख प्रक्षेपी तकनीक है जिसका उपयोग व्यक्तित्व के अचेतन पहलुओं और आंतरिक संघर्षों के मूल्यांकन हेतु किया जाता है। इसमें व्यक्ति को अस्पष्ट चित्र दिखाकर कहानियां बनाने के लिए कहा जाता है। उत्तरदाता अपनी दमित भावनाओं और आवश्यकताओं को इन कहानियों के पात्रों पर आरोपित कर देता है। यह विधि व्यक्तित्व की गहराई और व्यक्तिगत अनुभवों के विश्लेषण में अत्यंत सहायक है।

7. (D) आत्म-सेवा पूर्वाग्रह
जब कोई व्यक्ति अपनी सफलताओं का श्रेय अपनी आंतरिक क्षमताओं को देता है, लेकिन विफलताओं के लिए बाहरी परिस्थितियों को जिम्मेदार ठहराता है, तो इसे आत्म-सेवा पूर्वाग्रह कहा जाता है। यह मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति व्यक्ति के आत्म-सम्मान को बनाए रखने में मदद करती है। यह आरोपण की एक ऐसी त्रुटि है जहाँ व्यक्ति अपनी छवि को सकारात्मक बनाए रखने हेतु वास्तविकता को अपने पक्ष में देखता है।

8. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
एरिक एरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धांत में युवा वयस्कता के दौरान घनिष्ठता बनाम अलगाव का चरण आता है। इस चरण का सफल समाधान व्यक्ति में प्रेम के गुण को विकसित करता है, जिससे वह गहरे संबंध बना पाता है। एरिक्सन का मानना था कि दूसरों के साथ घनिष्ठता स्थापित करने से पहले व्यक्ति के पास अपनी पहचान की मजबूत समझ होनी चाहिए। यह संबंधों की स्थिरता हेतु अनिवार्य है।

9. (C) मानकीकृत सामाजिक प्रभाव
जब कोई व्यक्ति किसी समूह द्वारा पसंद किए जाने या स्वीकार किए जाने की इच्छा के कारण अपने व्यवहार को बदलता है, तो इसे मानकीकृत सामाजिक प्रभाव कहा जाता है। यह अनुरूपता सामाजिक अस्वीकृति के डर और समूह का हिस्सा बने रहने की आवश्यकता से प्रेरित होती है। व्यक्ति अक्सर समूह के मानदंडों का पालन करता है ताकि वह दूसरों की नजरों में सही बना रहे और सुरक्षित रहे।

10. (A) उच्च संसक्ति हमेशा बेहतर निर्णय लेने और प्रदर्शन की ओर ले जाती है।
समूह संसक्ति वह शक्ति है जो सदस्यों को समूह के प्रति आकर्षित रखती है। हालांकि, यह मानना गलत है कि उच्च संसक्ति हमेशा बेहतर प्रदर्शन की गारंटी देती है। कभी-कभी अत्यधिक संसक्ति के कारण समूह के सदस्य वैकल्पिक विचारों पर विचार नहीं करते और सर्वसम्मति के दबाव में गलत निर्णय ले सकते हैं। छोटे समूहों में संसक्ति अक्सर अधिक होती है और बाहरी खतरे इसे बढ़ावा देते हैं।

11. (D) I, II और III
कार्ल युंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान में परसोना, शैडो, एनिमा और एनिमस व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। परसोना वह सामाजिक मुखौटा है जो हम दुनिया के सामने पहनते हैं। शैडो उन पहलुओं को दर्शाता है जिन्हें हम स्वीकार नहीं करना चाहते। एनिमा और एनिमस क्रमशः पुरुष और महिला के भीतर विपरीत लिंगी प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये अवधारणाएं सामूहिक अचेतन से जुड़ी हुई हैं।

12. (B) उन सभी मनोवैज्ञानिक तथ्यों का योग जिनका किसी दिए गए समय पर व्यक्ति पर प्रभाव पड़ता है।
कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत में जीवन स्थान एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा है। यह व्यक्ति की संपूर्ण मनोवैज्ञानिक दुनिया का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें वे सभी कारक शामिल होते हैं जो किसी विशेष क्षण में उसके व्यवहार को प्रभावित करते हैं। इसमें व्यक्ति की आवश्यकताएं, विश्वास और वातावरण के प्रति उसका प्रत्यक्ष अनुभव शामिल है। व्यवहार व्यक्ति और उसके वातावरण के बीच की गतिशील अंतःक्रिया का परिणाम है।

13. (C) मानसिक छवियां या विचार जो हमारे अपने और दूसरों के बारे में होते हैं।
हैरी स्टैक सुलिवन के पारस्परिक सिद्धांत में व्यक्तिकरण उन मानसिक छवियों को संदर्भित करते हैं जो व्यक्ति अपने और दूसरों के बारे में विकसित करता है। ये धारणाएं प्रारंभिक सामाजिक अनुभवों और दूसरों के साथ होने वाली अंतःक्रियाओं के माध्यम से निर्मित होती हैं। व्यक्तिकरण व्यक्ति के व्यवहार और उसके संबंधों के स्वरूप को प्रभावित करते हैं। 'गुड-मी' और 'बैड-मी' जैसी छवियां आत्म-सम्मान के स्तर को निर्धारित करती हैं।

14. (D) इड, सुपर ईगो और वास्तविकता की मांगों के बीच मध्यस्थता करना।
फ्रायड के सिद्धांत में ईगो व्यक्तित्व का वह तार्किक हिस्सा है जो वास्तविकता सिद्धांत पर कार्य करता है। इसका मुख्य कार्य इड की अचेतन इच्छाओं, सुपर ईगो के नैतिक मानकों और बाहरी दुनिया की वास्तविक बाधाओं के बीच संतुलन बनाना है। ईगो सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीकों से इच्छाओं की संतुष्टि के मार्ग खोजता है। यह निर्णय लेने की प्रक्रिया का प्रबंधन करता है और व्यक्ति को व्यवहार्य बनाता है।

15. (A) लिकर्ट पैमाना
लिकर्ट पैमाना अभिवृत्ति मापने की एक व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली विधि है। इसमें कथनों की एक श्रृंखला प्रस्तुत की जाती है, और उत्तरदाताओं को अपनी सहमति या असहमति के स्तर को चुनना होता है। यह पैमाना व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों और दृष्टिकोणों की तीव्रता को मापने में प्रभावी है। यह विधि सरल और विश्वसनीय है, जिससे शोधकर्ताओं को डेटा का मात्रात्मक विश्लेषण करने में सुगमता होती है।

16. (B) एक कृत्रिम कार्य-संबंधित कार्य के दौरान व्यवहार का अवलोकन करना।
व्यक्तित्व मूल्यांकन में स्थितिजन्य परीक्षण व्यक्ति के वास्तविक व्यवहार का अवलोकन करने पर केंद्रित होता है। इसमें व्यक्ति को एक विशेष रूप से निर्मित कृत्रिम परिस्थिति में रखा जाता है जो वास्तविक जीवन की चुनौतियों का अनुकरण करती है। इस दौरान यह देखा जाता है कि व्यक्ति दबाव में कैसे कार्य करता है और दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करता है। यह विधि आत्म-रिपोर्ट की तुलना में अधिक वस्तुनिष्ठ है।

17. (B) संज्ञानात्मक विसंगति सिद्धांत
संज्ञानात्मक विसंगति सिद्धांत यह सुझाव देता है कि जब व्यक्ति के विश्वासों या व्यवहारों के बीच विरोधाभास होता है, तो वह मनोवैज्ञानिक तनाव महसूस करता है। इस बेचैनी को कम करने हेतु व्यक्ति अपने विचारों या व्यवहारों में बदलाव लाकर उनमें सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है। यह सिद्धांत अभिवृत्ति परिवर्तन की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है, जहाँ व्यक्ति आंतरिक संतुलन बहाल करने हेतु पुरानी धारणाएं बदलता है।

18. (A) IV, I, III, V, II
सिगमंड फ्रायड ने मनोयौन विकास के पांच क्रमिक चरणों का प्रस्ताव दिया था। विकास की शुरुआत मुखीय चरण से होती है, जिसके बाद गुदा चरण आता है जहाँ नियंत्रण पर ध्यान दिया जाता है। तीसरा चरण लैंगिक है जिसमें जननांगों के प्रति जागरूकता बढ़ती है। इसके बाद सुप्तावस्था आती है जहाँ यौन ऊर्जा शांत रहती है। अंत में जननेंद्रिय चरण आता है जो किशोरावस्था से आरंभ होता है।

19. (C) आंतरिक, स्थिर प्रवृत्तियां
गॉर्डन ऑलपोर्ट जैसे गुण सिद्धांतकारों का मानना है कि व्यक्तित्व का मुख्य आधार व्यक्ति के भीतर मौजूद स्थिर और स्थायी प्रवृत्तियां हैं। ये गुण व्यवहार को विभिन्न परिस्थितियों में सुसंगत और पूर्वानुमेय बनाते हैं। ऑलपोर्ट के अनुसार गुण केवल व्यवहार का वर्णन नहीं करते, बल्कि उसे निर्देशित भी करते हैं। अचेतन संघर्षों की तुलना में, गुण सिद्धांत व्यक्ति के अद्वितीय स्वभाव हेतु आंतरिक विशेषताओं को प्राथमिकता देते हैं।

20. (D) हीनता की भावनाओं को दूर करने के लिए श्रेष्ठता के लिए प्रयास करना।
अल्फ्रेड एडलर के अनुसार मानव व्यवहार की प्राथमिक प्रेरणा हीनता की भावनाओं को दूर करना और श्रेष्ठता प्राप्त करना है। एडलर का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही कुछ कमियों का अनुभव करता है, जो उसे बेहतर बनने हेतु प्रेरित करती हैं। यह प्रयास व्यक्ति की जीवन शैली को आकार देता है। श्रेष्ठता से उनका तात्पर्य दूसरों पर प्रभुत्व नहीं, बल्कि अपनी क्षमताओं का विकास है।

21. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
कार्ल युंग ने सामूहिक अचेतन की अवधारणा दी, जिसमें वंशानुगत साझा प्रतीक शामिल हैं। अल्फ्रेड एडलर ने जीवन

शैली पर बल दिया, जो हीनता दूर करने का अनूठा तरीका है। एरिक एरिक्सन ने मनोसामाजिक चरणों का प्रस्ताव दिया जो जीवन काल के विकास को दर्शाते हैं। कुर्ट लेविन ने जीवन स्थान की अवधारणा विकसित की, जो व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक वातावरण का प्रतिनिधित्व करती है। ये सिद्धांत व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम प्रदान करते हैं।

22. (B) निरंकुश
निरंकुश नेतृत्व शैली में नेता समूह के सभी निर्णय स्वयं लेता है और सदस्यों के परामर्श को कोई महत्व नहीं देता। इस शैली में सत्ता का केंद्रीकरण नेता के हाथों में होता है और वह गतिविधियों पर कड़ा नियंत्रण रखता है। हालांकि यह शैली आपातकालीन स्थितियों में त्वरित निर्णय लेने हेतु प्रभावी हो सकती है, लेकिन यह अक्सर सदस्यों के मनोबल और रचनात्मकता को कम कर देती है।

23. (D) लोग अपने और दूसरों के व्यवहार के कारणों की व्याख्या कैसे करते हैं।
आरोपण सिद्धांत सामाजिक मनोविज्ञान का वह क्षेत्र है जो यह समझने का प्रयास करता है कि व्यक्ति घटनाओं और व्यवहारों के पीछे के कारणों का अनुमान कैसे लगाते हैं। हम अक्सर यह जानने की कोशिश करते हैं कि कोई कार्य आंतरिक गुणों के कारण हुआ है या बाहरी परिस्थितियों के कारण। यह प्रक्रिया हमारे सामाजिक प्रत्यक्षण और दूसरों के प्रति हमारे व्यवहार को गहराई से प्रभावित करती है।

24. (A) संज्ञानात्मक विसंगति कार्य
अभिवृत्तियां व्यक्ति के लिए कई मनोवैज्ञानिक कार्य करती हैं, जैसे ज्ञान प्रदान करना, आत्म-सम्मान की रक्षा करना और व्यक्तिगत मूल्यों को व्यक्त करना। संज्ञानात्मक विसंगति कोई कार्य नहीं है, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है जो तब उत्पन्न होती है जब अभिवृत्तियों और व्यवहार में विरोधाभास होता है। अन्य कार्य जैसे अहं-रक्षक कार्य व्यक्ति को चिंता से बचाते हैं, जबकि मूल्य-अभिव्यंजक कार्य पहचान स्पष्ट करने में मदद करते हैं।

25. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रक्षेपी परीक्षण अचेतन मन की गहराई को मापने हेतु एक अनूठा तरीका प्रदान करते हैं। इन परीक्षणों में जानबूझकर अस्पष्ट और असंरचित उद्दीपनों का उपयोग किया जाता है। परिणामस्वरूप व्यक्ति अपनी आंतरिक भावनाओं, संघर्षों और दमित इच्छाओं को उन उद्दीपनों पर आरोपित कर देता है। यह असंरचित प्रकृति ही व्यक्ति की छिपी हुई मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को बाहर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो सामान्यतः प्रत्यक्ष नहीं होतीं।

26. (A) परिश्रम बनाम हीनता
एरिक्सन के सिद्धांत में परिश्रम बनाम हीनता का चरण स्कूली आयु के दौरान आता है और यह फ्रायड की सुप्तावस्था के समानांतर है। इस चरण में बच्चे नई शैक्षणिक और सामाजिक दक्षताओं में महारत हासिल करने का प्रयास करते हैं। यदि वे सफल होते हैं, तो उनमें क्षमता की भावना विकसित होती है। इसके विपरीत बार-बार विफलता या आलोचना मिलने पर उनमें हीनता की भावना पैदा हो सकती है।

27. (D) वयस्कों के उद्देश्य उनके बचपन के मूल कारणों से कार्यात्मक रूप से स्वतंत्र होते हैं।
गॉर्डन ऑलपोर्ट की कार्यात्मक स्वायत्तता की अवधारणा यह प्रस्तावित करती है कि परिपक्व वयस्कों के वर्तमान उद्देश्य उनके बचपन के प्रारंभिक अनुभवों से मुक्त हो सकते हैं। यद्यपि कोई व्यवहार बचपन की किसी आवश्यकता से शुरू हो सकता है, लेकिन समय के साथ वह व्यवहार स्वयं में एक उद्देश्य बन जाता है। यह विचार फ्रायड के इस दृष्टिकोण की आलोचना करता है कि वयस्क व्यक्तित्व बचपन द्वारा निर्धारित होता है।

28. (B) हमारे भौतिक रूप से करीब हैं।
पारस्परिक आकर्षण के अध्ययन में सामीप्य का सिद्धांत बताता है कि हम उन लोगों के साथ संबंध बनाने की अधिक संभावना रखते हैं जो हमारे भौतिक वातावरण में निकट रहते हैं। बार-बार मिलने और अंतःक्रिया करने से परिचितता बढ़ती है, जो आकर्षण को बढ़ावा देती है। शारीरिक निकटता सामाजिक संपर्क के अवसर प्रदान करती है, जिससे संबंधों का निर्माण सरल हो जाता है। यह सिद्धांत सामाजिक चुनाव को स्पष्ट करता है।

29. (C) एक संरचित प्रश्नावली जहां व्यक्ति अपनी भावनाओं या व्यवहारों की रिपोर्ट करते हैं।
व्यक्तित्व इन्वेंटरी मूल्यांकन की एक वस्तुनिष्ठ विधि है जिसमें मानकीकृत प्रश्नों की एक श्रृंखला होती है। इसमें व्यक्ति को अपने स्वयं के व्यवहार, रुचियों और भावनाओं के बारे में जानकारी देनी होती है। चूंकि ये परीक्षण संरचित होते हैं, इसलिए इनकी स्कोरिंग और व्याख्या बहुत सटीक और विश्वसनीय होती है। यह विधि नैदानिक और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में व्यक्तित्व गुणों के व्यापक मापन हेतु उपयोग की जाती है।

30. (D) पारस्परिक सुरक्षा की खोज और चिंता से बचने पर।
हैरी स्टैक सुलिवन के अनुसार स्व-प्रणाली व्यक्तित्व की एक रक्षात्मक संरचना है जो चिंता को कम करने हेतु विकसित होती है। यह प्रणाली मुख्य रूप से दूसरों से प्रशंसा प्राप्त करने और अस्वीकृति से बचने के प्रयासों पर केंद्रित है। यह व्यक्ति के व्यवहार को इस तरह निर्देशित करती है कि वह सुरक्षित महसूस कर सके। स्व-प्रणाली उन अनुभवों को स्वीकृत करती है जो आत्म-सम्मान बढ़ाते हैं और नकारात्मकता को रोकती है।

31. (A) लेविन - क्षेत्र सिद्धांत
कुर्ट लेविन ने क्षेत्र सिद्धांत का प्रस्ताव दिया था, जो व्यवहार को व्यक्ति और उसके मनोवैज्ञानिक वातावरण के बीच की अंतःक्रिया के रूप में देखता है। दूसरी ओर फ्रायड मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत से जुड़े हैं और ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व गुणों के अध्ययन पर बल दिया था। एरिक एरिक्सन का योगदान मनोसामाजिक विकास के चरणों में है। ये वर्गीकरण मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के विकास और उनके विशिष्ट दृष्टिकोणों को समझने हेतु अनिवार्य हैं।

तीव्रता मापने हेतु एक सरल तरीका प्रदान करता है। सिमेंटिक डिफरेंशियल पैमाना विपरीत विशेषणों का उपयोग करके अभिवृत्ति के भावनात्मक आयामों को मापता है। ये सभी विधियां अभिवृत्तियों की जटिलता को समझने और सटीक डेटा प्राप्त करने में मनोवैज्ञानिकों की मदद करती हैं।

54. (B) व्यवहार का सबसे छोटा, स्थायी, आवर्ती स्वरूप।
हैरी स्टैक सुलिवन के पारस्परिक सिद्धांत में गतिशीलता व्यवहार का वह स्थायी स्वरुप है जो व्यक्ति के पारस्परिक संबंधों की विशेषता बताता है। यह एक ऊर्जा परिवर्तन की तरह है जो व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करने या चिंता को कम करने हेतु किया जाता है। गतिशीलता विशेष रूप से दूसरों के साथ होने वाली अंतःक्रियाओं पर केंद्रित होती है। यह व्यक्तित्व की स्थिरता को दर्शाती है और बताती है कि व्यक्ति सामाजिक स्थितियों में कैसे प्रतिक्रिया देता है।

55. (D) आंतरिक आरोपण
जब हम किसी व्यक्ति के व्यवहार का कारण उसके आंतरिक गुणों, जैसे कि उसके व्यक्तित्व या क्षमताओं को मानते हैं, तो इसे आंतरिक आरोपण कहा जाता है। इसमें हम बाहरी परिस्थितियों की भूमिका को नजरअंदाज कर देते हैं और यह मानते हैं कि व्यक्ति ने अपने स्वभाव के कारण ही ऐसा कार्य किया है। सामाजिक प्रत्यक्षण में यह प्रक्रिया महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तय करती है कि हम दूसरों के कार्यों का मूल्यांकन कैसे करते हैं।

56. (A) व्यक्तित्व में व्यक्तिगत अंतरों को मापना और उनका वर्णन करना।
व्यक्तित्व मूल्यांकन का प्राथमिक उद्देश्य यह समझना है कि एक व्यक्ति दूसरे से कैसे भिन्न है। इसके माध्यम से हम किसी व्यक्ति के अद्वितीय गुणों और व्यवहार के स्वरूपों का वैज्ञानिक रुप से मापन करते हैं। यह प्रक्रिया करियर परामर्श, नैदानिक निदान और अनुसंधान में अत्यंत उपयोगी होती है। इसका मुख्य लक्ष्य व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक संगठन का एक सटीक विवरण प्रदान करना है ताकि बेहतर निर्णय लिए जा सकें और विकास हो सके।

57. (C) सुपर ईगो
फ्रायड के अनुसार सुपर ईगो व्यक्तित्व की नैतिक शक्ति है जो सही और गलत के बीच निर्णय लेने के मानक प्रदान करती है। यह माता-पिता और सामाजिक आदर्शों का प्रतिनिधित्व करता है और व्यक्ति के भीतर एक 'आदर्श स्व' का निर्माण करता है। सुपर ईगो का मुख्य कार्य इड के आवेगों को नियंत्रित करना और ईगो को पूर्णता की ओर प्रेरित करना है। जब व्यक्ति इन मानकों का उल्लंघन करता है, तो उसे अपराधबोध महसूस होता है।

58. (A) सामाजिक स्थिति पदानुक्रम
पारस्परिक आकर्षण मुख्य रूप से सामीप्य, समानता और पारस्परिकता जैसे कारकों से प्रभावित होता है। शारीरिक निकटता मिलने-जुलने के अवसर बढ़ाता है, जबकि विचारों की समानता जुड़ाव पैदा करती है। जब कोई हमें पसंद करता है, तो हम भी उन्हें पसंद करने लगते हैं, जिसे पारस्परिकता कहा जाता है। सामाजिक स्थिति पदानुक्रम आकर्षण का एक गौण कारक हो सकता है, लेकिन इसे प्राथमिक मनोवैज्ञानिक आधारों में नहीं गिना जाता है।

59. (D) लैंगिक चरण
फ्रायड के अनुसार इडिपस कॉम्प्लेक्स लैंगिक चरण की एक महत्वपूर्ण विशेषता है जो लगभग तीन से छह वर्ष की आयु के बीच घटित होती है। इस दौरान बालक अनजाने में अपनी माता के प्रति आकर्षण और पिता के प्रति प्रतिस्पर्धा महसूस करता है। इस संघर्ष का समाधान तब होता है जब बच्चा अपने पिता के साथ तादात्म्य स्थापित करता है। यह प्रक्रिया बच्चे के सुपर ईगो के विकास और उसकी लिंग भूमिका की पहचान हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

60. (B) समूह की भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और अधिकार सौंपता है।
लोकतांत्रिक नेतृत्व शैली में नेता समूह के सदस्यों के साथ मिलकर कार्य करता है और निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करता है। वह अधिकारों का विकेंद्रीकरण करता है और सदस्यों को सुझाव देने हेतु प्रोत्साहित करता है। यह शैली न केवल कार्य की गुणवत्ता में सुधार करती है, बल्कि सदस्यों के बीच विश्वास और जिम्मेदारी की भावना को भी बढ़ाती है। लोकतांत्रिक नेता एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।

61. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अल्फ्रेड एडलर का मानना था कि हीनता की भावनाएं स्वाभाविक हैं और मानव विकास हेतु एक आवश्यक प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करती हैं। ये भावनाएं व्यक्ति को अपनी कमियों को दूर करने और बेहतर बनने हेतु प्रेरित करती हैं, जिससे समाज में प्रगति होती है। श्रेष्ठता हेतु प्रयास करना इसी प्रेरणा का परिणाम है, जो व्यक्ति को पूर्णता की ओर ले जाता है। अतः हीनता कोई विकार नहीं, बल्कि सुधार की शक्ति है।

62. (D) आत्म-प्रत्यक्षण सिद्धांत
आत्म-प्रत्यक्षण सिद्धांत प्रस्तावित करता है कि जब हमारी आंतरिक अभिवृत्तियां अस्पष्ट होती हैं, तो हम अपने स्वयं के व्यवहार का अवलोकन करके निष्कर्ष निकालते हैं कि हमारी राय क्या है। हम खुद को एक बाहरी प्रेक्षक की तरह देखते हैं और अपने कार्यों के आधार पर अपनी भावनाओं का अनुमान लगाते हैं। यह सिद्धांत बताता है कि व्यवहार हमेशा अभिवृत्ति का परिणाम नहीं होता, बल्कि कभी-कभी व्यवहार ही अभिवृत्ति निर्माण का कारण बनता है।

63. (A) व्यक्तित्व आनुवंशिक और पर्यावरणीय कारकों की एक परस्पर क्रिया है।
व्यक्तित्व के निर्माण में आनुवंशिकता और पर्यावरण दोनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और पूरक है। आनुवंशिकता हमें कुछ बुनियादी प्रवृत्तियां और जैविक क्षमताएं प्रदान करती है, जबकि हमारा परिवेश और अनुभव इन क्षमताओं को विकसित करते हैं। व्यक्तित्व को इनमें से किसी एक कारक तक सीमित

है कि व्यक्ति अपने जीवन स्थान में विभिन्न दिशाओं में क्यों गति करता है और उसे कौन से कारक प्रेरित करते हैं।

43. (D) युंग - व्यक्तित्व का इड, ईगो और सुपर ईगो में विभाजन।
व्यक्तित्व का इड, ईगो और सुपर ईगो में विभाजन मूल रूप से सिग्मंड फ्रायड द्वारा प्रस्तावित किया गया था। युंग ने इसके बजाय अचेतन को व्यक्तिगत और सामूहिक अचेतन में विभाजित किया था और परसोना तथा आद्यरूपों जैसी अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित किया था। अन्य विकल्प सही हैं क्योंकि सुलिवन पारस्परिक संबंधों पर, एडलर हीनता पर और फ्रायड अचेतन संघर्षों पर बल देते हैं। यह अंतर मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को स्पष्ट करता है।

44. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
समूह संसक्ति सामान्यतः सकारात्मक मानी जाती है, लेकिन अत्यधिक एकता कभी-कभी समूह-चिंतन जैसी समस्याओं को जन्म दे सकती है। इस स्थिति में सदस्य समूह की सर्वसम्मति बनाए रखने हेतु इतने उत्सुक होते हैं कि वे आलोचनात्मक सोच और वैकल्पिक समाधानों को नजरअंदाज कर देते हैं। इससे गलत निर्णय लिए जा सकते हैं क्योंकि वास्तविकता का निष्पक्ष मूल्यांकन नहीं हो पाता। अतः संसक्ति एक सीमा तक ही लाभदायक होती है।

45. (C) अपनी दुनिया को व्यवस्थित और संरचित करने में, निरंतरता और स्थिरता प्रदान करते हुए।
अभिवृत्ति का ज्ञान कार्य व्यक्ति को उसके आसपास की जटिल जानकारी को सरल बनाने और उसे अर्थ देने में मदद करता है। यह कार्य व्यक्ति को यह समझने हेतु एक संदर्भ ढांचा प्रदान करता है कि दुनिया कैसे कार्य करती है, जिससे उसे नई स्थितियों में प्रतिक्रिया देने में आसानी होती है। अभिवृत्तियां ज्ञान को व्यवस्थित करके अनिश्चितता को कम करती हैं और जीवन में निरंतरता का बोध कराती हैं।

46. (D) अस्पष्ट या असंरचित उद्दीपनों का उपयोग
प्रक्षेपी परीक्षणों की मुख्य विशेषता यह है कि वे व्यक्ति को अस्पष्ट उद्दीपन, जैसे स्याही के धब्बे प्रदान करते हैं। चूंकि उद्दीपन का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता, इसलिए व्यक्ति अपनी दमित भावनाओं और अचेतन प्रवृत्तियों को उन पर प्रक्षेपित करने हेतु स्वतंत्र होता है। यह विधि व्यक्ति की गहराई को उजागर करती है जिसे वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के माध्यम से नहीं मापा जा सकता। यह छिपे हुए व्यक्तित्व आयामों हेतु महत्वपूर्ण उपकरण है।

47. (A) जननेंद्रिय चरण
फ्रायड के मनोयौन विकास सिद्धांत के अनुसार जननेंद्रिय चरण विकास का अंतिम चरण है जो यौवन के आगमन के साथ शुरु होता है। इस अवस्था में व्यक्ति की यौन ऊर्जा फिर से सक्रिय हो जाती है और वह परिवार से बाहर विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने की ओर प्रवृत्त होता है। यह चरण परिपक्व यौन व्यवहार और सामाजिक जिम्मेदारी के विकास का प्रतिनिधित्व करता है।

48. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
अहं-रक्षक कार्य अभिवृत्ति का हिस्सा है जो आत्म-सम्मान की रक्षा करता है। आरोपण सामाजिक प्रत्यक्षण की प्रक्रिया है जहाँ हम व्यवहार के कारणों का पता लगाते हैं। अनुरूपता समूह गतिशीलता का एक तत्व है जो समूह के दबाव में व्यवहार परिवर्तन को दर्शाता है। व्यक्तित्व इन्वेंटरी व्यक्तित्व मूल्यांकन की एक विधि है। ये मिलान विभिन्न मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं और उनके विशिष्ट अध्ययन क्षेत्रों के बीच संबंध को स्पष्ट करते हैं।

49. (B) सामूहिक अचेतन से प्राप्त सार्वभौमल स्वरुप और छवियां।
कार्ल युंग के अनुसार आद्यरुप सामूहिक अचेतन में मौजूद वे सार्वभौमिक मानसिक चित्र हैं जो पूरी मानव जाति में साझा किए जाते हैं। ये आद्यरुप हमारे सपनों और कला के माध्यम से प्रकट होते हैं और हमारे व्यवहार तथा धारणाओं को आकार देते हैं। जैसे कि 'माता' या 'नायक' के प्रतीक। ये छवियां व्यक्तिगत अनुभवों से नहीं, बल्कि पूर्वजों के साझा अनुभवों से आती हैं। यह मानव मानस की एकता को दर्शाता है।

50. (A) किशोरावस्था
एरिक एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के अनुसार पहचान बनाम भूमिका भ्रम किशोरावस्था का सबसे महत्वपूर्ण संकट है। इस दौरान किशोर यह समझने की कोशिश करते हैं कि वे कौन हैं और समाज में उनका क्या स्थान है। यदि वे एक सुसंगत आत्म-पहचान बनाने में सफल होते हैं, तो वे भविष्य हेतु तैयार होते हैं। विफलता की स्थिति में वे अपनी पहचान और जीवन की दिशा को लेकर भ्रमित महसूस कर सकते हैं।

51. (C) इतना प्रभावी होता है कि वह व्यक्ति के लगभग सभी व्यवहारों को प्रभावित करता है।
गॉर्डन ऑलपोर्ट के अनुसार कार्डिनल गुण वह शक्तिशाली विशेषता है जो किसी व्यक्ति के पूरे व्यक्तित्व और जीवन के उद्देश्यों पर हावी हो जाती है। यह गुण इतना व्यापक होता है कि व्यक्ति के लगभग हर कार्य में इसकी छाप दिखाई देती है। हालांकि यह गुण सभी में नहीं पाया जाता, लेकिन जिनमें यह होता है, वे इसी के आधार पर पहचाने जाते हैं। जैसे गांधी जी हेतु 'अहिंसा' एक कार्डिनल गुण था।

52. (D) अनुरुपता
अनुरुपता वह मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है जिसमें व्यक्ति समूह के दबाव के कारण अपने व्यवहार या दृष्टिकोणों को बदल लेता है ताकि वह दूसरों के साथ मेल खा सके। यह अक्सर समूह द्वारा स्वीकार किए जाने या गलत होने के डर से प्रेरित होती है। अनुरुपता सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने में मदद करती है, लेकिन यह व्यक्तिगत रचनात्मकता को भी सीमित कर सकती है। समूह के मानदंडों का पालन करने का यह दबाव अनजाने में कार्य करता है।

53. (D) I, II और III
अभिवृत्ति मापन की विभिन्न तकनीकें अलग-अलग उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं। थर्स्टन पैमाने में कथनों की अनुकूलता का पूर्व-निर्धारण आवश्यक है। लिकर्ट पैमाना सहमति की

मार्गदर्शन करना।
(D) हमें दूसरों के बीच लोकप्रिय बनाना।

270. एरिक्सन के सिद्धांत में, युवा वयस्कता की मुख्य चुनौती क्या विकसित करना है?
(A) एक स्थिर पहचान
(B) सक्षमता की भावना
(C) अपने जीवन के बारे में अखंडता की भावना
(D) घनिष्ठ, आत्मीय संबंध

271. फ्रायड के अनुसार, 'वास्तविकता सिद्धांत' किसके संचालन से जुड़ा है?
(A) ईगो
(B) इड
(C) सुपर ईगो
(D) सामूहिक अचेतन

272. अनुरुपता का एक प्रमुख निर्धारक है:
(A) समूह का आकार
(B) उपरोक्त सभी
(C) समूह की सर्वसम्मति
(D) समूह की स्थिति

273. 'विषय आत्मबोध परीक्षण' एक प्रक्षेपी तकनीक है जहाँ व्यक्ति को क्या करने के लिए कहा जाता है?
(A) स्याही के धब्बों की एक श्रृंखला की व्याख्या करना।
(B) एक अस्पष्ट तस्वीर के बारे में कहानी सुनाना।
(C) अधूरे वाक्यों के एक सेट को पूरा करना।
(D) अपनी भावनाओं के बारे में सही/गलत प्रश्नों के उत्तर देना।

274. 'जीवन शैली' की अवधारणा किसके व्यक्तित्व सिद्धांत का आधार है?
(A) एडलर
(B) फ्रायड
(C) युंग
(D) एरिक्सन

275. जब सामंजस्य के लिए समूह की इच्छा विकल्पों के यथार्थवादी मूल्यांकन पर हावी हो जाती है, तो उसे क्या कहा जाता है?
(A) समूह ध्रुवीकरण
(B) सामाजिक आलस्य
(C) ग्रुपथिंक
(D) वि-वैयक्तिकीकरण

276. 'प्रेरणाओं की कार्यात्मक स्वायत्तता' की अवधारणा किसके द्वारा प्रस्तावित की गई थी?
(A) सिग्मंड फ्रायड
(B) कुर्ट लेविन
(C) कार्ल युंग
(D) गॉर्डन ऑलपोर्ट

277. किसी विशेष कार ब्रांड के बारे में अभिवृत्ति के 'संज्ञानात्मक' घटक में क्या शामिल होगा?
(A) कार चलाते समय उत्साह की भावना।
(B) कार खरीदने का इरादा।
(C) यह विश्वास कि कार की ईंधन दक्षता अच्छी है।
(D) कार के मालिक होने से जुड़ी सामाजिक स्थिति।

278. किस सिद्धांतकार ने व्यक्तित्व विकास को पूरे जीवनकाल तक विस्तृत किया?
(A) फ्रायड
(B) एरिक्सन
(C) एडलर
(D) सुलिवन

279. लेविन के सिद्धांत में, एक मनोवैज्ञानिक 'शक्ति' के गुण होते हैं:
(A) वैलेंस, दूरी और समय।
(B) संज्ञान, भाव और व्यवहार।
(C) इड, ईगो और सुपर ईगो।
(D) दिशा, शक्ति और प्रयोग बिंदु।

280. वह व्यक्तित्व सिद्धांतकार जिसने पारस्परिक संबंधों और 'स्व-प्रणाली' पर ध्यान केंद्रित किया, वह था:
(A) सुलिवन
(B) ऑलपोर्ट
(C) लेविन
(D) युंग

281. रोर्शा परीक्षण और टीएटी दोनों किस प्रकार के व्यक्तित्व मूल्यांकन के उदाहरण हैं?
(A) इन्वेंटरी
(B) स्थितिजन्य परीक्षण
(C) प्रक्षेपी परीक्षण
(D) व्यवहारात्मक अवलोकन

282. 'सुख सिद्धांत' ______ का मार्गदर्शन करता है, जबकि 'वास्तविकता सिद्धांत' ______ का मार्गदर्शन करता है।
(A) इड; ईगो
(B) ईगो; इड
(C) इड; सुपर ईगो
(D) सुपर ईगो; ईगो

283. यह विश्वास कि अपनी संस्कृति दूसरों से श्रेष्ठ है, एक अभिवृत्ति के रूप में देखी जा सकती है जो किस कार्य को पूरा करती है?
(A) ज्ञान कार्य
(B) उपयोगितावादी कार्य
(C) मूल्य-अभिव्यंजक कार्य
(D) अहं-रक्षक कार्य

284. 'समानता' किसका एक शक्तिशाली भविष्यवक्ता है?
(A) समूह संसक्ति

नहीं किया जा सकता। यह एक गतिशील प्रक्रिया है जहाँ प्रकृति और पोषण मिलकर एक अद्वितीय व्यक्ति का निर्माण करते हैं। यह सबसे संतुलित दृष्टिकोण है।

64. (B) व्यवहार व्यक्ति और उसके वातावरण का परिणाम है।
कुर्ट लेविन का प्रसिद्ध सूत्र बी = एफ (पी, ई) स्पष्ट करता है कि मानव व्यवहार केवल आंतरिक गुणों या बाहरी वातावरण पर निर्भर नहीं होता। इसके बजाय, व्यवहार इन दोनों के बीच होने वाली निरंतर और गतिशील अंतःक्रिया का परिणाम है। यहाँ 'पी' व्यक्ति की मानसिक स्थिति को दर्शाता है और 'ई' उसके वर्तमान वातावरण को। यह सूत्र सामाजिक मनोविज्ञान में व्यवहार को समझने हेतु एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

65. (B) उत्पादकता बनाम स्थिरता
एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास में उत्पादकता बनाम स्थिरता का चरण मध्य वयस्कता के दौरान आता है। इस अवस्था में व्यक्ति अगली पीढ़ी का मार्गदर्शन करने और समाज में सार्थक योगदान देने की आवश्यकता महसूस करता है। यदि व्यक्ति ऐसा करने में सफल होता है, तो वह संतुष्टि का अनुभव करता है। विफलता की स्थिति में उसमें ठहराव या स्थिरता की भावना पैदा हो सकती है, जिससे वह अपने जीवन को निरुद्देश्य और रिक्त महसूस कर सकता है।

66. (A) व्यक्तित्व इन्वेंटरी
व्यक्तित्व इन्वेंटरी व्यक्तित्व मूल्यांकन की एक वस्तुनिष्ठ विधि है जिसमें मानकीकृत प्रश्नों की एक श्रृंखला होती है। इसमें व्यक्ति को अपने स्वयं के व्यवहार और भावनाओं के बारे में जानकारी देनी होती है। चूंकि ये परीक्षण संरचित होते हैं, इसलिए इनकी स्कोरिंग बहुत सटीक और विश्वसनीय होती है। यह विधि नैदानिक और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में व्यक्तित्व गुणों के मापन हेतु उपयोग की जाती है, जिससे व्यक्ति की विशेषताओं का स्पष्ट चित्र मिलता है।

67. (C) अभिवृत्ति अपने मूल मूल्यों और आत्म-अवधारणा को व्यक्त करने का एक तरीका प्रदान करती है।
अभिवृत्ति का मूल्य-अभिव्यंजक कार्य व्यक्ति को यह स्पष्ट करने की अनुमति देता है कि वह वास्तव में कौन है। अपनी अभिवृत्तियों को प्रकट करके व्यक्ति अपनी पहचान और अपने जीवन के महत्वपूर्ण मूल्यों को समाज के सामने प्रस्तुत करता है। यह कार्य केवल लाभ प्राप्त करने हेतु नहीं है, बल्कि यह आत्म-संतोष और अपनी व्यक्तिगत निष्ठा को बनाए रखने हेतु है। इससे व्यक्ति को अपनी अंतरात्मा के साथ सामंजस्य महसूस होता है।

68. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
दमन एक रक्षा तंत्र है जो चिंताजनक विचारों को अचेतन में भेज देता है। प्रक्षेपण में व्यक्ति अपनी कमियों को दूसरों पर डालता है। उदात्तीकरण अस्वीकार्य आवेगों को रचनात्मक कार्यों में बदलने की प्रक्रिया है। प्रतिगमन में व्यक्ति तनाव से बचने हेतु बचपन जैसी आदतों की ओर लौट जाता है। ये सभी रक्षा तंत्र ईगो द्वारा चिंता को प्रबंधित करने और मानसिक संतुलन बनाए रखने हेतु अचेतन रूप से उपयोग किए जाते हैं।

69. (C) अंतर-समूह प्रतिस्पर्धा
अंतर-समूह प्रतिस्पर्धा अक्सर एक समूह के भीतर संसक्ति या एकता को बढ़ाने में मदद करती है। जब किसी समूह का सामना किसी बाहरी चुनौती या प्रतिस्पर्धी समूह से होता है, तो उसके सदस्य अपने मतभेदों को भुलाकर साझा लक्ष्यों हेतु एकजुट हो जाते हैं। यह "हम" बनाम "वे" की भावना पैदा करता है, जिससे आंतरिक सहयोग बढ़ता है। बाहरी दबाव समूह की पहचान को मजबूत करता है और परस्पर निर्भरता को बढ़ावा देता है।

70. (B) व्यक्तित्व का "अंधेरा पक्ष", जिसमें दमित विचार और प्रवृत्तियां होती हैं।
कार्ल युंग के अनुसार शैडो व्यक्तित्व का वह अचेतन हिस्सा है जिसमें वे सभी विशेषताएं और आवेग होते हैं जिन्हें व्यक्ति सामाजिक रूप से अस्वीकार्य मानता है। इसमें अक्सर क्रोध और ईर्ष्या जैसे नकारात्मक गुण शामिल होते हैं जिन्हें हम छिपाने की कोशिश करते हैं। हालांकि, शैडो में सृजनात्मकता की क्षमता भी होती है। युंग का मानना था कि मानसिक स्वास्थ्य हेतु इस अंधेरे पक्ष को पहचानना और उसे एकीकृत करना आवश्यक है।

71. (D) बहिर्मुखता
'बिग फाइव' व्यक्तित्व मॉडल में बहिर्मुखता वह गुण है जो सामाजिकता और ऊर्जा को दर्शाता है। जो व्यक्ति मिलनसार और बातूनी होते हैं, वे दूसरों के साथ बातचीत करने से ऊर्जा प्राप्त करते हैं और सामाजिक परिस्थितियों में सहज महसूस करते हैं। ऐसे व्यक्ति अक्सर नेतृत्व की भूमिका निभाने और उत्साहपूर्वक अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की प्रवृत्ति रखते हैं। उच्च बहिर्मुखता वाले लोग सक्रिय होते हैं, जो उन्हें बाहरी दुनिया से जुड़ने हेतु प्रेरित करता है।

72. (A) केवल I और III
अल्फ्रेड एडलर ने सामाजिक रुचि को मानसिक स्वास्थ्य का मुख्य पैमाना माना, जिसमें व्यक्ति समाज के कल्याण हेतु कार्य करता है। उन्होंने रचनात्मक स्व की अवधारणा भी दी, जो व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व को स्वयं आकार देने की शक्ति प्रदान करती है। जन्म क्रम के संबंध में उनका मानना था कि पहले बच्चे को विस्थापित होने की भावना महसूस होती है। ये विचार व्यक्तित्व विकास में व्यक्ति की स्वायत्तता और सामाजिक वातावरण को स्पष्ट करते हैं।

73. (C) संज्ञानात्मक विसंगति
संज्ञानात्मक विसंगति वह असहज मनोवैज्ञानिक स्थिति है जो तब उत्पन्न होती है जब व्यक्ति दो परस्पर विरोधी विश्वास रखता है या उसका व्यवहार उसके विश्वासों से मेल नहीं खाता। यह तनाव व्यक्ति को असहज महसूस कराता है, जिससे वह अपने विचारों में बदलाव लाकर सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है। यह सिद्धांत बताता है कि मनुष्य अपने मानसिक जगत में निरंतरता बनाए रखने हेतु अत्यधिक प्रेरित होते हैं और विरोधाभासों को टालते हैं।

74. (A) मानव स्वभाव और व्यक्तिगत अंतरों को समझने के लिए एक ढांचा प्रदान करना।
व्यक्तित्व सिद्धांत का मुख्य उद्देश्य मानव व्यवहार की जटिलताओं को व्यवस्थित करना और यह स्पष्ट करना है कि व्यक्ति अलग-अलग तरीके से क्यों कार्य करते हैं। ये सिद्धांत एक ऐसा वैज्ञानिक ढांचा तैयार करते हैं जो विभिन्न गुणों और अनुभवों के बीच के संबंधों को समझने में मदद करता है। इसके माध्यम से मनोवैज्ञानिक व्यवहार की व्याख्या और भविष्यवाणी कर सकते हैं। यह अध्ययन व्यक्ति के अद्वितीय स्वरूप को समझने हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

75. (A) II, III, IV, I
मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का उदय सिग्मंड फ्रायड के मनोविश्लेषण से शुरु हुआ। इसके बाद अल्फ्रेड एडलर और कार्ल युंग ने फ्रायड के विचारों से अलग होकर अपने स्वयं के सिद्धांत, क्रमशः वैयक्तिक मनोविज्ञान और विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान, विकसित किए। एरिक एरिक्सन बाद में आए और उन्होंने फ्रायड के चरणों को जीवन भर चलने वाले मनोसामाजिक चरणों में विस्तारित किया। यह कालक्रम स्पष्ट करता है कि कैसे व्यक्तित्व के बारे में हमारे वैज्ञानिक दृष्टिकोण समय के साथ विकसित हुए।

76. (B) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान
गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का यह केंद्रीय सिद्धांत कि "पूर्ण अपने हिस्सों के योग से अधिक है," कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत को गहराई से प्रभावित करता है। लेविन ने व्यक्तित्व और वातावरण को अलग-अलग हिस्सों के बजाय एक एकीकृत और गतिशील "जीवन स्थान" के रूप में देखा। उनके अनुसार, व्यवहार को केवल अलग-अलग घटकों के विश्लेषण से नहीं समझा जा सकता, बल्कि संपूर्ण स्थिति की अंतःक्रिया के संदर्भ में देखना अनिवार्य है।

77. (C) भावात्मक घटक
अभिवृत्ति का भावात्मक घटक किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति व्यक्ति की भावनाओं और संवेगों से जुड़ा होता है। इसमें 'पसंद' या 'नापसंद' जैसे संवेगात्मक निर्णय शामिल होते हैं, जो तर्क के बजाय अक्सर तत्काल महसूस किए जाते हैं। जब किसी अभिवृत्ति का आधार मुख्य रूप से भावनाएं होती हैं, तो उसका भावात्मक पक्ष अधिक शक्तिशाली होता है। यह घटक व्यवहार को प्रभावित करता है क्योंकि भावनाएं अक्सर कार्यों को प्रेरित करने में प्रभावी भूमिका निभाती हैं।

78. (D) जीवन स्थान - फ्रायड
जीवन स्थान की अवधारणा कुर्ट लेविन द्वारा प्रस्तावित की गई थी, न कि सिग्मंड फ्रायड द्वारा। फ्रायड ने मुख्य रूप से इड, ईगो, सुपर ईगो और अचेतन मन की संरचना पर ध्यान केंद्रित किया था। लेविन का जीवन स्थान व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक दुनिया और उसके वातावरण की अंतःक्रिया को दर्शाता है। अन्य युग्म सही हैं: युंग ने सामूहिक अचेतन की बात की, एडलर ने हीनता ग्रंथि की और एरिक्सन ने मनोसामाजिक चरणों की विस्तारपूर्वक व्याख्या की थी।

79. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
स्थितिजन्य परीक्षणों का मुख्य लक्ष्य यह देखना है कि व्यक्ति वास्तविक जीवन जैसी चुनौतियों के प्रति कैसे प्रतिक्रिया देता है। ये परीक्षण नियंत्रित वातावरण में आयोजित किए जाते हैं जहाँ व्यवहार का प्रत्यक्ष अवलोकन संभव होता है। हालांकि, इनकी एक सीमा यह है कि ये कृत्रिम होते हैं, जिसके कारण व्यक्ति वास्तविक जीवन की तुलना में अलग व्यवहार कर सकता है। फिर भी, वे नेतृत्व जैसे व्यावहारिक गुणों का आकलन करने हेतु महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं।

80. (B) नेता की ओर से न्यूनतम भागीदारी और दखल न देने वाला दृष्टिकोण।
अहस्तक्षेपकारी नेतृत्व शैली में नेता समूह के कार्यों में बहुत कम हस्तक्षेप करता है। वह सदस्यों को पूरी स्वतंत्रता देता है कि वे अपने लक्ष्य निर्धारित करें और स्वयं निर्णय लें। नेता केवल संसाधन प्रदान करता है और प्रत्यक्ष मार्गदर्शन से बचता है। यह शैली तब प्रभावी हो सकती है जब समूह के सदस्य अत्यधिक कुशल हों। हालांकि, स्पष्ट दिशा की कमी के कारण यह कभी-कभी भ्रम और कम उत्पादकता का कारण भी बन सकती है।

81. (B) व्यक्तिकरण
हैरी स्टैक सुलिवन के अनुसार व्यक्तिकरण वे मानसिक छवियां हैं जो हम दूसरों के साथ अपनी अंतःक्रियाओं के दौरान विकसित करते हैं। 'गुड-मी' प्रशंसा और सकारात्मक अनुभवों से बनता है, जबकि 'बैड-मी' दंड और चिंता से उत्पन्न होता है। 'नॉट-मी' अचेतन का वह हिस्सा है जिसमें अत्यधिक डरावने अनुभव होते हैं। ये सभी व्यक्तिकरण हमारे आत्म-प्रत्यक्षण और दूसरों के साथ हमारे व्यवहार के तरीके को गहराई से प्रभावित करते हैं, जिससे व्यक्तित्व निर्मित होता है।

82. (B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
सामाजिक मनोविज्ञान में अभिवृत्ति मापन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि हमारी अभिवृत्तियां हमारे व्यवहार को दिशा प्रदान करती हैं। लिकर्ट पैमाने जैसी विधियां किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण की तीव्रता का सटीक मात्रात्मक माप देती हैं। हालांकि, अभिवृत्ति और व्यवहार के बीच का संबंध हमेशा सीधा नहीं होता। कई बार सामाजिक दबाव व्यक्ति को अपनी अभिवृत्ति के विपरीत कार्य करने पर मजबूर कर देते हैं। अतः मापन सदैव व्यवहार की सटीक भविष्यवाणी नहीं करता।

83. (C) प्रक्षेण
प्रक्षेपण एक रक्षा तंत्र है जिसमें व्यक्ति अपनी स्वयं की अस्वीकार्य भावनाओं या दोषों को दूसरों पर आरोपित कर देता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति स्वयं ईर्ष्यालु है, तो वह दूसरों पर ईर्ष्यालु होने का आरोप लगा सकता है। यह प्रक्रिया ईगो को अपनी कमियों का सामना करने से बचाती है और चिंता को कम करती है। दूसरों को दोषी ठहराकर व्यक्ति अपने भीतर के तनाव को बाहर निकालता है और अपने आत्म-सम्मान को अस्थायी रूप से सुरक्षित रखता है।

84. (D) खतरों से व्यक्ति के आत्म-सम्मान की रक्षा करता है।
अभिवृत्ति का अहं-रक्षक कार्य व्यक्ति के मानस को उन सूचनाओं से बचाने का कार्य करता है जो उसके आत्म-सम्मान को चोट पहुँचा सकती हैं। इसके माध्यम से व्यक्ति अक्सर अपनी विफलताओं हेतु बाहरी कारकों को जिम्मेदार ठहराता है या अपनी कमियों को छिपाने हेतु पूर्वाग्रहों का सहारा लेता है। यह कार्य चिंता को कम करने और मानसिक संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। इस प्रकार, अभिवृत्तियां एक सुरक्षा कवच की तरह कार्य करती हैं जो सकारात्मक छवि बनाए रखती हैं।

85. (C) शैशवावस्था (प्रथम वर्ष)
एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के प्रथम चरण में विश्वास बनाम अविश्वास का संकट शामिल है जो जीवन के पहले वर्ष के दौरान होता है। इस अवस्था में बच्चा अपनी बुनियादी जरूरतों हेतु पूरी तरह से देखभाल करने वालों पर निर्भर होता है। यदि उसे निरंतर प्रेम और सुरक्षा मिलती है, तो उसमें दुनिया के प्रति विश्वास की भावना विकसित होती है। इसके विपरीत, उपेक्षा से उसमें अविश्वास और भय पैदा हो सकता है, जो भविष्य के सामाजिक संबंधों की आधारशिला बनता है।

86. (B) गौण गुण
गॉर्डन ऑलपोर्ट के अनुसार गौण गुण वे विशेषताएं हैं जो केवल विशिष्ट परिस्थितियों में ही दिखाई देती हैं। ये गुण व्यक्तित्व के स्थायी या केंद्रीय हिस्से नहीं होते और दूसरों हेतु हमेशा स्पष्ट नहीं होते। उदाहरण के लिए, एक साहसी व्यक्ति केवल सार्वजनिक भाषण देते समय घबराहट महसूस कर सकता है। गौण गुण व्यक्ति की रुचियों से संबंधित होते हैं और वे केंद्रीय गुणों की तुलना में व्यवहार को प्रभावित करने में बहुत कम प्रभावी और अधिक स्थिति-निर्भर होते हैं।

87. (D) आद्यरुप
आद्यरुप की अवधारणा कार्ल युंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान से संबंधित है, न कि कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत से। लेविन के सिद्धांत के मुख्य स्तंभ जीवन स्थान, वैलेंस और मनोवैज्ञानिक शक्तियां हैं, जो व्यवहार को निर्देशित करती हैं। लेविन ने भौतिकी के सिद्धांतों को मनोविज्ञान में लागू किया ताकि व्यवहार की गतिशीलता को समझाया जा सके। युंग की अवधारणाएं सामूहिक अचेतन और विरासत में मिले प्रतीकों पर आधारित हैं, जो लेविन के वर्तमान स्थिति पर आधारित दृष्टिकोण से भिन्न हैं।

88. (A) इन्वेंटरी आत्म-रिपोर्ट पर निर्भर करती हैं, जबकि प्रक्षेपी परीक्षण अस्पष्ट उद्दीपनों का उपयोग करते हैं।
व्यक्तित्व इन्वेंटरी और प्रक्षेपी परीक्षणों के बीच मुख्य अंतर उनकी संरचना और प्रतिक्रिया के तरीके में है। इन्वेंटरी में व्यक्ति को अपने बारे में सीधे प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं, जो उसकी चेतन आत्म-धारणा को दर्शाते हैं। इसके विपरीत, प्रक्षेपी परीक्षणों में अस्पष्ट सामग्री दी जाती है, जिससे व्यक्ति अनजाने में अपनी दमित भावनाओं को बाहर लाता है। इन्वेंटरी अधिक वस्तुनिष्ठ होती हैं, जबकि प्रक्षेपी परीक्षण गहराई से विश्लेषण करने और छिपे हुए संघर्षों को उजागर करने हेतु उपयोग किए जाते हैं।

89. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
प्रक्षेपी परीक्षण का एक उदाहरण विषय आत्मबोध परीक्षण है जो अचेतन को मापता है। व्यक्तित्व इन्वेंटरी आत्म-रिपोर्ट प्रश्नावली होती है जो गुणों का आकलन करती है। स्थितिजन्य परीक्षण में समूह चर्चा जैसे कार्यों के माध्यम से वास्तविक व्यवहार का अवलोकन किया जाता है। अभिवृत्ति पैमाना किसी विचार के प्रति व्यक्ति के दृष्टिकोण को मापता है। ये विभिन्न मूल्यांकन विधियां मनोवैज्ञानिकों को व्यक्ति की मानसिक संरचना और व्यवहारिक प्रवृत्तियों के अलग-अलग पहलुओं का व्यापक और वैज्ञानिक विश्लेषण करने में सक्षम बनाती हैं।

90. (A) सामाजिक प्रत्यक्षण
प्रभाव निर्माण सामाजिक प्रत्यक्षण की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें हम दूसरों के बारे में अपनी पहली धारणा विकसित करते हैं। इसमें उपलब्ध सीमित जानकारी के आधार पर हम दूसरों के गुणों और व्यक्तित्व का अनुमान लगाते हैं। यह प्रक्रिया अत्यंत तीव्र होती है और हमारे भविष्य के सामाजिक व्यवहार को निर्देशित करती है। प्रभाव निर्माण यह समझने में मदद करता है कि हम दूसरों को कैसे देखते हैं और वे हमारे निर्णयों को कैसे प्रभावित करते हैं। यह सामाजिक संबंधों की नींव है।

91. (D) एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने की अपेक्षाकृत स्थिर और स्थायी प्रवृत्ति।
व्यक्तित्व गुण एक ऐसी स्थायी विशेषता है जो व्यक्ति के व्यवहार को समय और विभिन्न परिस्थितियों में सुसंगत बनाती है। यह किसी क्षणिक उत्तेजना या अस्थायी मनोदशा के विपरीत एक गहरा और स्थिर झुकाव है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति ईमानदार है, तो वह लगातार ईमानदारी का प्रदर्शन करेगा। गुण सिद्धांतकारों का मानना है कि ये आंतरिक प्रवृत्तियां ही व्यक्तित्व की मूल इकाई हैं और वे व्यक्ति के अद्वितीय स्वभाव को परिभाषित करने और भविष्यवाणी करने में मदद करती हैं।

92. (A) केवल I और II
नेतृत्व शैलियों में कार्य-उन्मुख नेता उत्पादकता को प्राथमिकता देते हैं, जबकि संबंध-उन्मुख नेता समूह के बीच आपसी विश्वास और सदस्यों की खुशहाली पर ध्यान देते हैं। यह मानना गलत है कि कोई भी एक नेतृत्व शैली हर स्थिति में सबसे प्रभावी होती है। वास्तव में, सबसे अच्छा नेतृत्व उस स्थिति और समूह के सदस्यों की आवश्यकताओं पर निर्भर करता है। प्रभावी नेता वह होता है जो परिस्थितियों के अनुसार अपने व्यवहार में लचीलापन लाता है और दोनों दृष्टिकोणों को संतुलित करता है।

93. (C) व्यक्तिगत और सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दूसरों के साथ सहयोग करने की व्यक्ति की जन्मजात क्षमता।
अल्फ्रेड एडलर के अनुसार सामाजिक रुचि एक जन्मजात प्रवृत्ति है जो व्यक्ति को समाज के कल्याण हेतु कार्य करने और दूसरों के साथ सहयोग करने हेतु प्रेरित करती है। एडलर का मानना था कि मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति वह है जो अपनी व्यक्तिगत सफलता को सामाजिक योगदान के साथ जोड़ता

149. (C) उद्देश्य और दिशा की भावना विकसित करना।
एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के तीसरे चरण में, जो खेलने की आयु के दौरान होता है, बच्चा पहल बनाम अपराधबोध के संघर्ष का सामना करता है। इस अवस्था में बच्चे सक्रिय रूप से दुनिया की खोज करते हैं और अपने कार्यों की योजना बनाना शुरु करते हैं। यदि उन्हें अपने प्रयासों हेतु प्रोत्साहन मिलता है, तो उनमें उद्देश्य और आत्मविश्वास की भावना विकसित होती है। लेकिन यदि उनके कार्यों को बार-बार रोका या आलोचना की जाती है, तो उनमें अपनी इच्छाओं के प्रति अपराधबोध पैदा हो सकता है, जो भविष्य को प्रभावित करता है।

150. (B) कार्य-उन्मुख व्यवहार
कार्य-उन्मुख नेतृत्व शैली में नेता का मुख्य ध्यान लक्ष्यों की प्राप्ति और कार्यों को कुशलतापूर्वक पूरा करने पर होता है। ऐसा नेता स्पष्ट निर्देश देता है, भूमिकाओं का निर्धारण करता है और काम के प्रदर्शन हेतु सख्त मानक तय करता है। उसका दृष्टिकोण योजना बनाने और संगठन को सुदृढ़ करने पर केंद्रित होता है ताकि उत्पादकता अधिकतम हो सके। हालांकि यह शैली अल्पकालिक लक्ष्यों हेतु प्रभावी है, लेकिन इसमें कभी-कभी सदस्यों की भावनाओं को कम महत्व दिया जा सकता है, जो कार्यक्षेत्र के वातावरण को प्रभावित करता है।

151. (D) जीवन स्थान
कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत में जीवन स्थान सबसे बुनियादी अवधारणा है, जो व्यक्ति की संपूर्ण मनोवैज्ञानिक वास्तविकता को समाहित करती है। इसमें वे सभी कारक शामिल होते हैं जो किसी विशेष क्षण में व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते, जैसे उसकी भावनाएं, आवश्यकताएं और वातावरण का प्रत्यक्ष अनुभव। लेविन का मानना था कि व्यवहार हमेशा इसी जीवन स्थान की गतिशीलता का परिणाम होता है। यह अवधारणा व्यक्तित्व को एक स्थिर इकाई के बजाय व्यक्ति और परिस्थिति के बीच होने वाली निरंतर अंतःक्रिया के रूप में देखती है।

152. (A) हैरी स्टैक सुलिवन
हैरी स्टैक सुलिवन ने व्यक्तित्व के अध्ययन में क्रांतिकारी बदलाव लाते हुए पारस्परिक सिद्धांत का प्रस्ताव दिया। उनका मानना था कि व्यक्तित्व कोई आंतरिक स्थिर संरचना नहीं है, बल्कि इसे केवल अन्य लोगों के साथ होने वाली सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से ही समझा जा सकता है। उन्होंने तर्क दिया कि व्यक्तित्व का विकास मुख्य रूप से उन लोगों द्वारा आकार लेता है जिनके साथ हम संबंध रखते हैं। सुलिवन के अनुसार, सामाजिक संबंधों की गुणवत्ता ही व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य और उसकी पहचान का मुख्य निर्धारक होती है।

153. (C) जब यह व्यक्ति को पुरस्कार प्राप्त करने और दंड से बचने में मदद करती है।
अभिवृत्ति का उपयोगितावादी कार्य इस विचार पर आधारित है कि हम उन वस्तुओं के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करते हैं जो हमारे लिए फायदेमंद होती हैं। इसी प्रकार, हम उन चीजों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं जो हमें नुकसान पहुँचाती हैं। यह कार्य व्यक्ति को अपने वातावरण में अधिकतम पुरस्कार प्राप्त करने और कम से कम दंड भोगने में सहायता करता है। सरल शब्दों में, यह स्व-हित की एक प्रक्रिया है जहाँ अभिवृत्तियां हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने और असुविधाजनक स्थितियों से बचने के साधन के रूप में कार्य करती हैं।

154. (D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
यह धारणा गलत है कि अत्यधिक संसक्त समूह हमेशा अधिक उत्पादक होते हैं। यद्यपि संसक्ति एकता को बढ़ाती है, लेकिन कभी-कभी यह समूह-चिंतन को जन्म देती है जहाँ सर्वसम्मति का दबाव उत्पादकता को कम कर सकता है। उत्पादकता केवल संसक्ति पर नहीं, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि समूह के लक्ष्य संगठनात्मक लक्ष्यों के साथ कितने मेल खाते हैं। यदि एक संसक्त समूह का लक्ष्य काम से बचना है, तो उसकी उत्पादकता वास्तव में बहुत कम होगी, भले ही उनकी आपसी एकता बहुत मजबूत और गहरी हो।

155. (D) वस्तु के प्रति एक निश्चित तरीके से कार्य करने की व्यक्ति की प्रवृत्ति।
अभिवृत्ति के व्यवहारात्मक घटक को 'कोनेटिव' घटक भी कहा जाता है, जो किसी व्यक्ति के किसी विशेष वस्तु के प्रति कार्य करने की तत्परता को दर्शाता है। इसमें वास्तविक कार्य हमेशा शामिल नहीं होता, बल्कि एक निश्चित दिशा में व्यवहार करने का इरादा महत्वपूर्ण होता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी की अभिवृत्ति रक्तदान के प्रति सकारात्मक है, तो वह रक्तदान करने की इच्छा व्यक्त करेगा। यह घटक अभिवृत्ति और वास्तविक व्यवहार के बीच की कड़ी है और यह समझने में मदद करता है कि लोग भविष्य में कैसे कार्य करेंगे।

156. (B) सुप्त यौन भावनाओं की अवधि।
फ्रायड के अनुसार सुप्तावस्था लगभग छह वर्ष की आयु से शुरु होकर यौवन तक चलती है। इस चरण के दौरान, बचपन की यौन ऊर्जा शांत हो जाती है और अचेतन में चली जाती है। बच्चा अपना पूरा ध्यान सामाजिक कौशल विकसित करने, स्कूल की शिक्षा प्राप्त करने और समान लिंग के साथियों के साथ मित्रता करने पर केंद्रित करता है। यह अवस्था बौद्धिक और शारीरिक विकास हेतु महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ ऊर्जा का उपयोग बाहरी दुनिया में दक्षता हासिल करने हेतु किया जाता है, न कि आंतरिक मनोयौन संघर्षों के लिए।

157. (C) समूह के दबाव के आगे झुकने की प्रक्रिया।
अनुरुपता की प्रकृति उस सामाजिक दबाव को संदर्भित करती है जो व्यक्ति को समूह के मानकों के अनुसार अपने व्यवहार को बदलने हेतु प्रेरित करता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ व्यक्ति अपनी स्वायत्तता को त्यागकर समूह का हिस्सा बनने का प्रयास करता है। यह दबाव वास्तविक या काल्पनिक हो सकता है। अनुरुपता का मुख्य उद्देश्य अक्सर सामाजिक सामंजस्य बनाए रखना या समूह द्वारा अस्वीकार किए जाने के डर को कम करना होता है। यह मानव व्यवहार का एक मौलिक पहलू है जो सामाजिक व्यवस्था और सामूहिक पहचान को सुदृढ़ करता है।

पिछले व्यवहारों की तुलना में अधिक महत्व देते हैं। यह प्रथम प्रभाव के विपरीत कार्य करता है। जब बहुत अधिक जानकारी उपलब्ध होती है या समय का अंतराल बढ़ जाता है, तो हाल की घटनाएं हमारे मस्तिष्क में अधिक स्पष्ट होती हैं और वे हमारी धारणा को बदल सकती हैं। यह प्रभाव दर्शाता है कि सूचनाओं का क्रम हमारे सामाजिक मूल्यांकन और निर्णयों को लचीला बना सकता है।

104. (B) II, III, I
फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व की तीन संरचनाएं क्रमिक रूप से विकसित होती हैं। इड जन्म के समय मौजूद होता है, जो केवल जैविक आवश्यकताओं और सुख की खोज करता है। इसके बाद शैशवावस्था के दौरान ईगो विकसित होता है, जो वास्तविकता के साथ तालमेल बिठाना सिखाता है। अंत में सुपर ईगो विकसित होता है, जो लगभग पांच वर्ष की आयु में सामाजिक और नैतिक मानकों को आत्मसात करने के साथ उभरता है। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे एक व्यक्ति जैविक प्रवृत्तियों से शुरु होकर सामाजिक नैतिकता की ओर बढ़ता है।

105. (C) पारस्परिक संबंधों की भूमिका पर।
हैरी स्टैक सुलिवन का मानना था कि व्यक्तित्व कोई स्वतंत्र इकाई नहीं है, बल्कि इसे केवल अन्य लोगों के साथ होने वाली अंतःक्रियाओं के संदर्भ में ही समझा जा सकता है। उनके अनुसार, व्यक्ति का व्यवहार और उसके मनोवैज्ञानिक विकास का मुख्य आधार उसके सामाजिक संबंध हैं। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि चिंता और सुरक्षा की भावनाएं दूसरों के साथ हमारे संबंधों से उत्पन्न होती हैं। सुलिवन का यह दृष्टिकोण व्यक्तित्व के अध्ययन को व्यक्तिगत मानस से हटाकर सामाजिक जगत के केंद्र में ले आता है।

106. (A) सिमेंटिक डिफरेंशियल पैमाना
सिमेंटिक डिफरेंशियल पैमाना अभिवृत्ति मापने की एक विधि है जिसमें उत्तरदाता को विपरीत विशेषणों के जोड़ों, जैसे 'अच्छा' बनाम 'बुरा' के बीच अपनी राय देनी होती है। यह सात-बिंदु पैमाना अवधारणाओं के प्रति व्यक्ति के भावनात्मक और व्यक्तिपरक अर्थों को मापने में मदद करता है। यह शोधकर्ताओं को यह समझने में सक्षम बनाता है कि कोई व्यक्ति किसी वस्तु को भावनात्मक रूप से कैसे देखता है। यह विधि अभिवृत्तियों के सूक्ष्म आयामों को मात्रात्मक रूप से मापने में अत्यंत उपयोगी है।

107. (D) लेविन - क्षेत्र सिद्धांत
कुर्ट लेविन ने क्षेत्र सिद्धांत का प्रस्ताव दिया था, जो व्यक्तित्व और व्यवहार को व्यक्ति और उसके मनोवैज्ञानिक परिवेश के बीच की अंतःक्रिया के रूप में देखता है। दूसरी ओर, एडलर का सिद्धांत वैयक्तिक मनोविज्ञान के रूप में जाना जाता है, जबकि एरिक्सन ने मनोसामाजिक विकास के चरणों पर कार्य किया था। ऑलपोर्ट गुण सिद्धांत के प्रमुख समर्थक हैं। सिद्धांतों का यह सही वर्गीकरण विभिन्न मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को समझने हेतु आवश्यक है, जिससे व्यवहार के अध्ययन में स्पष्टता आती है।

108. (B) मध्य वयस्कता
एरिक्सन के अनुसार उत्पादकता बनाम स्थिरता का संकट मुख्य रूप से मध्य वयस्कता, जो लगभग 40 से 65 वर्ष की आयु के बीच होती है, के दौरान अनुभव किया जाता है। इस अवस्था में व्यक्ति अपने करियर और समाज में योगदान के माध्यम से अगली पीढ़ी को कुछ देने का प्रयास करता है। यह समय जीवन में सार्थकता खोजने का होता है। यदि व्यक्ति को लगता है कि वह दूसरों हेतु उपयोगी नहीं है, तो उसमें स्थिरता या जड़ता की भावना आ सकती है। इस संकट का सफल समाधान व्यक्ति को सकारात्मक बनाता है।

109. (D) I, II और III
अनुरूपता के दो मुख्य कारण हैं: सूचनात्मक प्रभाव, जहाँ हम सही होने हेतु दूसरों का अनुसरण करते हैं, और मानकीकृत प्रभाव, जहाँ हम सामाजिक स्वीकृति हेतु समूह से सहमत होते हैं। अनुसंधान यह भी बताते हैं कि अनुरूपता का दबाव तब सबसे अधिक होता है जब समूह में कम से कम तीन से पांच लोग एकमत हों। ये सभी कारक मिलकर यह स्पष्ट करते हैं कि सामाजिक परिस्थितियां हमारे व्यक्तिगत निर्णयों को कैसे प्रभावित करती हैं और क्यों हम अक्सर समूह की राय का साथ देते हैं।

110. (D) उनकी अक्सर विश्वसनीयता और वैधता कम होती है।
प्रक्षेपी परीक्षणों की सबसे बड़ी आलोचना यह है कि उनमें वस्तुनिष्ठ स्कोरिंग का अभाव होता है, जिससे उनकी विश्वसनीयता और वैधता अक्सर कम हो जाती है। अलग-अलग मूल्यांकनकर्ता एक ही प्रतिक्रिया की अलग-अलग व्याख्या कर सकते हैं, जिससे परिणामों में असंगतता पैदा होती है। इसके अलावा, इन परीक्षणों की वैज्ञानिक सटीकता को सिद्ध करना कठिन है क्योंकि वे व्यक्तिपरक विश्लेषण पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं। यद्यपि वे अचेतन मन की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, लेकिन उनकी स्थिरता पर अक्सर प्रश्न उठाए जाते हैं।

111. (A) ईगो
फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत में ईगो व्यक्तित्व का वह हिस्सा है जो वास्तविकता सिद्धांत के आधार पर कार्य करता है। इसे अक्सर व्यक्तित्व का "कार्यकारी" कहा जाता है क्योंकि यह इड की तात्कालिक इच्छाओं, सुपर ईगो की नैतिक मांगों और बाहरी दुनिया की सीमाओं के बीच संतुलन बनाता है। ईगो तार्किक सोच का उपयोग करके सुरक्षित और व्यावहारिक तरीके से लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है। यह व्यक्ति के जागरुक निर्णयों और दैनिक जीवन के कार्यों के प्रबंधन हेतु पूरी तरह जिम्मेदार होता है।

112. (B) जीवन शैली
अल्फ्रेड एडलर के अनुसार जीवन शैली व्यक्ति के व्यवहार, आदतों और दृष्टिकोणों का वह अनूठा स्वरूप है जो वह हीनता की भावनाओं को दूर करने हेतु विकसित करता है। यह लगभग पांच वर्ष की आयु तक स्थापित हो जाती है और भविष्य के सभी कार्यों को निर्देशित करती है। प्रत्येक व्यक्ति की जीवन शैली उसकी अद्वितीय परिस्थितियों और रचनात्मक स्व का परिणाम होती है। यह यह निर्धारित करती है कि व्यक्ति जीवन

है। यह अवधारणा हीनता की भावना हेतु एक स्वस्थ प्रतिक्रिया है। सामाजिक रुचि व्यक्ति को आत्म-केंद्रित लक्ष्यों से ऊपर उठाकर एक अर्थपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने में मदद करती है।

94. (D) सुव्यवस्था, हठ और कंजूसी।
फ्रायड के अनुसार गुदा-प्रतिधारक व्यक्तित्व उन बच्चों में विकसित होता है जिन्हें शौचालय प्रशिक्षण के दौरान अत्यधिक सख्त नियंत्रण का सामना करना पड़ा हो। ऐसे व्यक्ति वयस्क होने पर अत्यधिक सफाई, व्यवस्था के प्रति जुनून, जिद्दी स्वभाव और धन संचय करने की प्रवृत्ति प्रदर्शित कर सकते हैं। वे अक्सर अपनी भावनाओं को नियंत्रित रखने की कोशिश करते हैं और किसी भी प्रकार की अव्यवस्था से असहज महसूस करते हैं। यह व्यक्तित्व प्रकार नियंत्रण और आज्ञाकारिता के प्रारंभिक अनुभवों को दर्शाता है।

95. (A) बाहरी आरोपण
जब हम किसी व्यक्ति के व्यवहार की व्याख्या उसके आंतरिक गुणों के बजाय उसके आसपास की परिस्थितियों या स्थिति के आधार पर करते हैं, तो इसे बाहरी आरोपण कहा जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई छात्र परीक्षा में असफल होता है, तो हम उसकी क्षमता को दोष देने के बजाय प्रश्नपत्र के कठिन होने को कारण मान सकते हैं। बाहरी आरोपण हमें यह समझने में मदद करता है कि पर्यावरण हमारे कार्यों को कैसे प्रभावित करता है, जिससे हम अधिक निष्पक्ष निर्णय ले सकते हैं।

96. (B) प्रोप्रियम
गॉर्डन ऑलपोर्ट ने 'प्रोप्रियम' शब्द का उपयोग व्यक्तित्व के उन सभी पहलुओं का वर्णन करने हेतु किया जो व्यक्ति हेतु 'स्व' या 'अपनेपन' की भावना पैदा करते हैं। इसमें व्यक्ति के आत्म-सम्मान, आत्म-छवि और भविष्य के लक्ष्यों का समावेश होता है। प्रोप्रियम व्यक्तित्व का वह केंद्रीय हिस्सा है जो समय के साथ विकसित होता है और व्यक्ति को एक अनूठी पहचान प्रदान करता है। यह अवधारणा व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों को एक सूत्र में बांधने और आंतरिक विकास को समझने में मदद करती है।

97. (B) समूह गतिशीलता
सामाजिक सुगमीकरण समूह गतिशीलता की एक घटना है जिसमें दूसरों की उपस्थिति किसी व्यक्ति के प्रदर्शन को बेहतर बना देती है, विशेष रूप से सरल कार्यों में। यह प्रभाव सामाजिक उत्तेजना और दूसरों द्वारा मूल्यांकन किए जाने की जागरूकता के कारण होता है। यह दर्शाता है कि समूह का परिवेश व्यक्ति के व्यवहार को कैसे बदल सकता है। समूह गतिशीलता के अध्ययन में यह समझना आवश्यक है कि सामाजिक परिस्थितियां व्यक्तिगत उपलब्धियों और व्यवहार को किस प्रकार सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

98. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
फ्रायड ने व्यक्तित्व विकास में प्रारंभिक बचपन के महत्व पर बल दिया, जहाँ पांच वर्ष की आयु तक व्यक्तित्व का मुख्य आधार बन जाता है। एरिक एरिक्सन ने फ्रायड के इस विचार का विस्तार किया और प्रस्तावित किया कि व्यक्तित्व का विकास वृद्धावस्था तक चलता है। एरिक्सन ने सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों को अधिक महत्व दिया और आठ विशिष्ट चरणों की व्याख्या की। ये दोनों सिद्धांत मिलकर व्यक्ति के शारीरिक और सामाजिक विकास की एक समग्र समझ प्रदान करते हैं।

99. (C) उपरोक्त सभी
अनुरुपता का स्तर कई कारकों पर निर्भर करता है। जब कोई स्थिति अस्पष्ट होती है, तो व्यक्ति मार्गदर्शन हेतु समूह की ओर देखता है। बहुमत समूह का आकार भी दबाव बढ़ाता है, विशेष रुप से जब तीन से पांच लोग एक ही राय रखते हों। सबसे महत्वपूर्ण कारक समूह की सर्वसम्मति है; यदि सभी सदस्य एकमत हैं, तो अनुरुपता का दबाव सबसे अधिक होता है। ये सभी कारक मिलकर व्यक्ति के स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करते हैं और उसे ढलने हेतु प्रेरित करते हैं।

100. (D) गॉर्डन ऑलपोर्ट
गॉर्डन ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व की एक व्यापक परिभाषा प्रस्तावित की, जिसमें उन्होंने इसे व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक प्रणालियों का गतिशील संगठन माना जो वातावरण के प्रति समायोजन को निर्धारित करते हैं। उनके अनुसार, व्यक्तित्व स्थिर नहीं है बल्कि निरंतर विकसित होता रहता है। 'गतिशील संगठन' शब्द यह दर्शाता है कि व्यक्तित्व के विभिन्न हिस्से एक-दूसरे के साथ अंतःक्रिया करते हैं। यह परिभाषा व्यक्ति की विशिष्टता और उसके व्यवहार की सुसंगतता पर बल देती है, जो उसे अद्वितीय बनाती है।

101. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कार्ल युंग के सिद्धांत में वैयक्तिकीकरण व्यक्तित्व विकास का सर्वोच्च लक्ष्य है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने मानस के चेतन और अचेतन पक्षों के बीच संतुलन स्थापित करता है। इसमें अपने शैडो को स्वीकार करना और एनिमा तथा एनिमस जैसी आंतरिक शक्तियों को संतुलित करना शामिल है। जब कोई व्यक्ति इन सभी विविध पहलुओं को एकीकृत कर लेता है, तो वह एक संपूर्ण और अद्वितीय 'स्व' बन जाता है। यह आत्म-बोध की दिशा में एक महत्वपूर्ण यात्रा है।

102. (B) समूह का बड़ा आकार
समूह संसक्ति अक्सर समूह के आकार बढ़ने के साथ कम होने लगती है। जैसे-जैसे सदस्यों की संख्या बढ़ती है, उनके बीच व्यक्तिगत बातचीत और घनिष्ठ संबंध बनाना कठिन हो जाता है। बड़े समूहों में सदस्यों के बीच मतभेद बढ़ने की संभावना अधिक होती है और उप-समूह बन सकते हैं, जो मुख्य समूह की एकता को कमजोर करते हैं। इसके विपरीत, छोटे समूहों में संचार अधिक प्रभावी होता है और सदस्यों में साझा पहचान की भावना अधिक मजबूत होती है। अतः समूह का विस्तार संसक्ति को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

103. (D) सबसे हालिया जानकारी का सबसे अधिक प्रभाव होना।
नवीनता प्रभाव प्रभाव निर्माण की वह घटना है जिसमें हम किसी व्यक्ति के बारे में प्राप्त सबसे हालिया जानकारी को उसके

122. (A) संज्ञानात्मक विसंगति
पारस्परिक आकर्षण मुख्य रुप से समानता, सामीप्य और शारीरिक आकर्षण जैसे कारकों से प्रभावित होता है। समानता का अर्थ है साझा विचार और अभिवृत्तियां, जबकि सामीप्य भौतिक निकटता को दर्शाता है जो बातचीत को बढ़ावा देती है। शारीरिक आकर्षण अक्सर प्रारंभिक रुचि का आधार बनता है। संज्ञानात्मक विसंगति आकर्षण का निर्धारक नहीं है, बल्कि यह विचारों के बीच विरोधाभास से उत्पन्न होने वाला एक आंतरिक तनाव है। यद्यपि यह सामाजिक संबंधों को प्रभावित कर सकता है, लेकिन यह लोगों के बीच आकर्षण का बुनियादी कारक नहीं है।

123. (D) सुख सिद्धांत
फ्रायड के अनुसार इड व्यक्तित्व का वह हिस्सा है जो पूर्णतः सुख सिद्धांत पर आधारित है। इसका एकमात्र लक्ष्य शारीरिक और मनोवैज्ञानिक तनाव को तुरंत कम करना और आनंद प्राप्त करना है। इड नैतिकता या वास्तविकता की परवाह नहीं करता; इसे केवल अपनी सहज इच्छाओं की तात्कालिक संतुष्टि चाहिए। यह हमारी बुनियादी जैविक प्रवृत्तियों का केंद्र है। चूंकि यह पूरी तरह अचेतन होता है, इसलिए इसकी मांगें अक्सर अव्यावहारिक होती हैं, जिन्हें नियंत्रित करने हेतु बाद में ईगो और सुपर ईगो का क्रमिक विकास होता है।

124. (B) विभिन्न समय और स्थितियों में अपेक्षाकृत स्थिर और स्थायी हैं।
मनोविज्ञान में व्यक्तित्व उन विशिष्ट विशेषताओं और व्यवहार के स्वरूपों का समूह है जो व्यक्ति को एक अनूठी पहचान प्रदान करते हैं। इसकी मुख्य विशेषता इसकी स्थिरता है, जिसका अर्थ है कि व्यक्ति के विचार और कार्य विभिन्न परिस्थितियों में सुसंगत रहते हैं। व्यक्तित्व केवल क्षणिक भावनाओं का परिणाम नहीं है, बल्कि यह आंतरिक गुणों का एक स्थायी संगठन है। यही स्थिरता हमें यह समझने और भविष्यवाणी करने में मदद करती है कि कोई व्यक्ति अलग-अलग समय पर समान परिस्थितियों में कैसी प्रतिक्रिया दे सकता है।

125. (C) प्रभावी नेतृत्व नेता, अनुयायियों और स्थिति पर निर्भर करता है।
नेतृत्व के आकस्मिकता सिद्धांतों के अनुसार, कोई भी एक नेतृत्व शैली हर परिस्थिति में सफल नहीं होती। प्रभावी नेतृत्व हेतु नेता के गुणों, समूह के सदस्यों की योग्यता और उस विशेष स्थिति या कार्य की प्रकृति के बीच एक सही तालमेल होना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, संकट के समय निरंकुश शैली प्रभावी हो सकती है, जबकि रचनात्मक कार्यों हेतु लोकतांत्रिक शैली बेहतर होती है। एक सफल नेता वही होता है जो अपनी कार्यप्रणाली में लचीलापन रखता है और समूह की जरूरतों के अनुसार खुद को ढाल लेता है।

126. (D) प्रक्षेपी परीक्षण
रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण व्यक्तित्व मूल्यांकन की एक प्रसिद्ध प्रक्षेपी तकनीक है। इसमें व्यक्ति को स्याही के दस धब्बों वाले कार्ड दिखाए जाते हैं और उनसे पूछा जाता है कि उन्हें उनमें क्या दिखाई देता है। चूंकि ये धब्बे अस्पष्ट होते हैं, इसलिए व्यक्ति अपनी दमित भावनाओं और व्यक्तित्व के छिपे हुए पहलुओं को उन चित्रों पर आरोपित कर देता है। यह परीक्षण व्यक्ति के मानस की गहरी परतों तक पहुँचने और उसके मानसिक स्वास्थ्य तथा भावनात्मक संतुलन का सूक्ष्म विश्लेषण करने हेतु मनोवैज्ञानिकों द्वारा उपयोग किया जाता है।

127. (A) बचपन
एरिक्सन के अनुसार स्वायत्तता बनाम शर्म और संदेह का संकट लगभग एक से तीन वर्ष की आयु के बीच होता है। इस दौरान बच्चे अपनी शारीरिक क्षमताओं पर नियंत्रण करना और स्वयं निर्णय लेना शुरु करते हैं, जैसे कि स्वयं भोजन करना। यदि माता-पिता उन्हें सुरक्षित वातावरण में अन्वेषण हेतु प्रोत्साहित करते हैं, तो उनमें आत्मनिर्भरता विकसित होती है। इसके विपरीत, अत्यधिक कठोरता या उपहास किए जाने पर बच्चे में अपनी क्षमताओं के प्रति संदेह की स्थायी भावना पैदा हो सकती है जो भविष्य के आत्मविश्वास को प्रभावित करती है।

128. (A) केवल I और II
सिगमंड फ्रायड ने मनोयौन चरणों के माध्यम से व्यक्तित्व विकास को समझाया, जो बचपन के अनुभवों पर केंद्रित हैं। गॉर्डन ऑलपोर्ट ने कार्यात्मक स्वायत्तता का सिद्धांत दिया, जो बताता है कि वयस्कों के उद्देश्य उनके मूल कारणों से स्वतंत्र होते हैं। आद्यरुप की अवधारणा कार्ल युंग से संबंधित है, न कि कुर्ट लेविन से, जिन्होंने क्षेत्र सिद्धांत और जीवन स्थान पर ध्यान केंद्रित किया था। ये अवधारणाएं मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों की अनूठी मान्यताओं को स्पष्ट करती हैं, जो आधुनिक व्यक्तित्व मनोविज्ञान के अध्ययन की महत्वपूर्ण आधारशिला हैं।

129. (B) आरोपण
आरोपण वह सामाजिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम दूसरों के व्यवहार के पीछे के कारणों या उद्देश्यों को समझने का प्रयास करते हैं। हम यह निर्धारित करने की कोशिश करते हैं कि किसी व्यक्ति ने कोई कार्य अपनी आंतरिक प्रवृत्तियों के कारण किया है या बाहरी परिस्थितियों के दबाव में। यह प्रक्रिया हमारे सामाजिक प्रत्यक्षण का एक अनिवार्य हिस्सा है क्योंकि यह दूसरों के प्रति हमारी प्रतिक्रियाओं को गहराई से प्रभावित करती है। आरोपण हमें सामाजिक दुनिया को अधिक स्पष्ट, सुसंगत और समझने योग्य बनाने में मदद करता है।

130. (A) अभिवृत्ति वस्तु के बारे में विश्वास, विचार और धारणाएं।
अभिवृत्ति का संज्ञानात्मक घटक उन सूचनाओं और विश्वासों का प्रतिनिधित्व करता है जो व्यक्ति किसी विशेष वस्तु या विचार के बारे में रखता है। इसमें वे तर्क और धारणाएं शामिल होती हैं जो व्यक्ति की राय का आधार बनती हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई मानता है कि नियमित व्यायाम स्वास्थ्य हेतु अच्छा है, तो यह उसके संज्ञानात्मक घटक का हिस्सा है। यह घटक अभिवृत्ति के वैचारिक पक्ष को स्पष्ट करता है और व्यक्ति को किसी विषय पर निर्णय लेने हेतु एक मानसिक आधार या रुपरेखा प्रदान करता है।

की चुनौतियों का सामना कैसे करेगा और अपने सामाजिक लक्ष्यों को किस प्रकार प्राप्त करने का प्रयास करेगा।

113. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
सिग्मंड फ्रायड ने मनोयौन विकास के चरणों का प्रस्ताव दिया जो बचपन की प्रवृत्तियों पर आधारित हैं। गॉर्डन ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व गुणों के अध्ययन पर बल दिया जो व्यवहार को स्थिरता देते हैं। हैरी स्टैक सुलिवन का ध्यान पारस्परिक संबंधों पर था, जिन्हें वे व्यक्तित्व का आधार मानते थे। एरिक एरिक्सन ने मनोसामाजिक विकास के चरणों की व्याख्या की जो पूरे जीवन भर चलते हैं। ये सभी मिलान विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के विशिष्ट योगदान और उनके सिद्धांतों के मुख्य फोकस को समझने हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

114. (A) तीन-घटक संरचना: संज्ञानात्मक, भावात्मक और व्यवहारात्मक।
अभिवृत्ति की प्रकृति को उसके तीन प्रमुख घटकों के माध्यम से समझा जा सकता है। संज्ञानात्मक घटक में किसी वस्तु के प्रति व्यक्ति के विश्वास और विचार शामिल होते हैं। भावात्मक घटक उन भावनाओं को दर्शाता है जो व्यक्ति उस वस्तु के प्रति महसूस करता है। व्यवहारात्मक घटक उस वस्तु के प्रति एक विशिष्ट तरीके से कार्य करने की प्रवृत्ति को संदर्भित करता है। ये तीनों घटक मिलकर एक समग्र दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं, जो व्यक्ति के सामाजिक प्रत्यक्षण को दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

115. (C) स्थितिजन्य परीक्षण
स्थितिजन्य परीक्षण एक व्यावहारिक मूल्यांकन विधि है जिसमें व्यक्ति को एक विशिष्ट और नियंत्रित कृत्रिम परिस्थिति में रखा जाता है। इसमें व्यक्ति को कुछ कार्यों को पूरा करना होता है जो वास्तविक जीवन की चुनौतियों का अनुकरण करते हैं। मूल्यांकनकर्ता इस दौरान व्यक्ति के व्यवहार और निर्णय लेने की क्षमता का सूक्ष्म अवलोकन करते हैं। यह विधि व्यक्तित्व गुणों को प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर प्रदान करती है, जो केवल प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह विधि नेतृत्व गुणों को पहचानने में प्रभावी है।

116. (D) उपरोक्त सभी।
समूह-चिंतन एक ऐसी घटना है जहाँ समूह के सदस्य सर्वसम्मति बनाए रखने के दबाव में गलत निर्णय लेते हैं। यह स्थिति तब अधिक होने की संभावना होती है जब समूह में एक बहुत प्रभावशाली नेता हो जो असहमति को रोकता हो। अत्यधिक संसक्त समूहों में भी सदस्यों में एक-दूसरे के विपरीत जाने का डर होता है। इसके अलावा, जब समूह बाहरी सूचनाओं या स्वतंत्र विचारों से पूरी तरह कटा होता है, तो वह वास्तविकता से दूर हो सकता है। ये सभी कारक मिलकर समूह की आलोचनात्मक सोच को बाधित करते हैं।

117. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गॉर्डन ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व के अध्ययन हेतु एक अद्वितीय दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने सामान्य गुणों, जो कई लोगों में पाए जाते हैं, और व्यक्तिगत प्रवृत्तियों, जो केवल एक विशिष्ट व्यक्ति हेतु अद्वितीय होती हैं, के बीच अंतर किया। उनका मानना था कि किसी व्यक्ति के सच्चे स्वरुप को समझने हेतु केवल सामान्य मानकों का उपयोग पर्याप्त नहीं है। व्यक्तिगत प्रवृत्तियों पर ध्यान केंद्रित करके ही हम यह समझ सकते हैं कि कोई व्यक्ति वास्तव में कैसे कार्य करता है और उसका व्यवहार दूसरों से मौलिक रुप से अलग क्यों है।

118. (B) स्व
कार्ल युंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान में 'स्व' व्यक्तित्व का वह केंद्रीय आद्यरुप है जो संपूर्ण मानस की एकता और संतुलन का प्रतिनिधित्व करता है। यह व्यक्तित्व के चेतन और अचेतन दोनों पहलुओं को एकीकृत करने का प्रयास करता है। स्व का विकास वैयक्तिकीकरण की प्रक्रिया का अंतिम लक्ष्य है, जहाँ व्यक्ति अपने भीतर के विरोधाभासों को सुलझाकर पूर्णता प्राप्त करता है। यह आद्यरुप व्यक्ति को आत्म-बोध और आंतरिक शांति की ओर निर्देशित करता है, जिससे वह अपने जीवन में एक गहरा सामंजस्य अनुभव करता है।

119. (D) संज्ञानात्मक विसंगति
जब किसी व्यक्ति के विश्वास और उसके वास्तविक कार्यों के बीच विरोधाभास होता है, तो वह एक मानसिक तनाव का अनुभव करता है जिसे संज्ञानात्मक विसंगति कहा जाता है। उदाहरण के लिए, पर्यावरण के प्रति सचेत व्यक्ति का प्रदूषण फैलाने वाली कंपनी में कार्य करना उसे असहज बनाता है। इस बेचैनी को कम करने हेतु व्यक्ति या तो अपना व्यवहार बदलता है या अपने कार्य हेतु नए तर्क खोजता है ताकि सामंजस्य स्थापित हो सके। यह प्रक्रिया हमारे आंतरिक संतुलन को बहाल करने की एक निरंतर मनोवैज्ञानिक कोशिश है।

120. (A) होडोलॉजिकल स्पेस
कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत में 'होडोलॉजिकल स्पेस' उस मनोवैज्ञानिक मार्ग को दर्शाता है जिसे व्यक्ति अपने जीवन स्थान में लक्ष्य की ओर बढ़ने हेतु चुनता है। यह भौतिक दूरी के बारे में नहीं है, बल्कि उन क्रियाओं के क्रम के बारे में है जो किसी बाधा को पार करने और उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु आवश्यक हैं। यह अवधारणा व्यक्ति के निर्णय लेने की प्रक्रिया और उसके व्यवहार की दिशा को स्पष्ट करती है। यह बताती है कि व्यक्ति अपने परिवेश में लक्ष्यों तक पहुँचने हेतु सर्वोत्तम मार्गों की खोज कैसे करता है।

121. (C) संतोष या पछतावे की भावना के साथ अपने जीवन पर विचार करना।
एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास का अंतिम चरण 'अखंडता बनाम निराशा' है जो उत्तर वयस्कता के दौरान आता है। इस अवस्था में व्यक्ति अपने जीवन भर के अनुभवों का मूल्यांकन करता है। यदि वह अपने कार्यों से संतुष्ट महसूस करता है और अपने जीवन को सार्थक मानता है, तो उसमें अखंडता की भावना विकसित होती है। इसके विपरीत, यदि वह अपने अतीत को पछतावे और अधूरी इच्छाओं के साथ देखता है, तो उसमें निराशा की भावना पैदा हो सकती है। यह चरण जीवन के अंतिम पड़ाव पर शांति और गरिमा प्राप्त करने से जुड़ा है।

140. (B) उपरोक्त सभी।
समूह संसक्ति कई कारकों का परिणाम होती है जो सदस्यों को एक साथ जोड़े रखते हैं। सदस्यों के बीच रुचियों और मूल्यों की समानता आपसी आकर्षण बढ़ाती है, जबकि छोटा समूह आकार बेहतर संचार और घनिष्ठता की सुविधा प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, समूह की सफलता और साझा लक्ष्यों की प्राप्ति सदस्यों में गर्व और समूह के प्रति निष्ठा पैदा करती है। बाहरी खतरे भी अक्सर सदस्यों को एकजुट करते हैं। ये सभी तत्व मिलकर समूह की एकता को सुदृढ़ करते हैं और उसे एक प्रभावी इकाई बनाते हैं।

141. (C) उदात्तीकरण
उदात्तीकरण एक ऐसा परिपक्व रक्षा तंत्र है जिसमें व्यक्ति अपने सामाजिक रूप से अस्वीकार्य आवेगों को रचनात्मक और लाभकारी गतिविधियों में बदल देता है। उदाहरण के लिए, अपनी क्रोध की ऊर्जा को खेल या कला में लगाना। फ्रायड के अनुसार, यह सभ्यता के विकास हेतु आवश्यक है क्योंकि यह आदिम इच्छाओं को समाज हेतु उपयोगी कार्यों की ओर निर्देशित करता है। यह प्रक्रिया ईगो को बिना किसी अपराधबोध के तनाव कम करने की अनुमति देती है और व्यक्ति को सकारात्मक उपलब्धियां हासिल करने में मदद करती है।

142. (D) I, II और III
व्यक्तित्व के ये तीनों सिद्धांत मनोविज्ञान के अलग-अलग दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत व्यक्तित्व के भीतर की अचेतन शक्तियों पर बल देता है। ऑलपोर्ट का गुण सिद्धांत व्यवहार की स्थिरता और आंतरिक प्रवृत्तियों पर केंद्रित है। कुर्ट लेविन का क्षेत्र सिद्धांत व्यवहार को व्यक्ति और उसके मनोवैज्ञानिक वातावरण की अंतःक्रिया के रूप में देखता है। इन तीनों सिद्धांतों का अध्ययन व्यक्तित्व की जटिलता को जैविक, व्यक्तिगत और सामाजिक संदर्भों में समझने हेतु एक संपूर्ण और व्यापक आधार प्रदान करता है।

143. (A) P-2, Q-1, R-4, S-2
कार्ल युंग के अनुसार एनिमा पुरुष के भीतर स्त्री मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों को दर्शाता है। परसोना वह मुखौटा है जो हम सामाजिक स्वीकृति हेतु पहनते हैं। शैडो व्यक्तित्व का वह अंधेरा हिस्सा है जिसमें दमित और अवांछनीय विचार होते हैं। स्व व्यक्तित्व का वह केंद्रीय आद्यरूप है जो पूर्णता और संतुलन का प्रतीक है। ये अवधारणाएं सामूहिक अचेतन से जुड़ी हैं और व्यक्ति के समग्र मानसिक विकास को समझने में मदद करती हैं, जहाँ प्रत्येक घटक व्यक्ति की अद्वितीय पहचान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

144. (B) इड
फ्रायड के अनुसार इड व्यक्तित्व का सबसे बुनियादी और आदिम घटक है जो जन्म के समय से ही मौजूद होता है। यह पूरी तरह से अचेतन मन में स्थित होता है और हमारी सभी जैविक प्रवृत्तियों का भंडार है। इड केवल सुख सिद्धांत पर कार्य करता है और बिना किसी तर्क या वास्तविकता की परवाह किए अपनी आवश्यकताओं की तत्काल संतुष्टि चाहता है। यह व्यक्तित्व के अन्य हिस्सों हेतु मानसिक ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत है, लेकिन इसे नियंत्रित करने हेतु बाद में ईगो और सुपर ईगो का क्रमिक विकास होता है।

145. (B) समूह गतिशीलता
जब कोई शोधकर्ता भीड़ या समूहों में लोगों के व्यवहार का अध्ययन करता है, तो वह समूह गतिशीलता के क्षेत्र की जांच कर रहा होता है। समूह गतिशीलता यह विश्लेषण करती है कि समूह के सदस्य एक-दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं और सामूहिक परिवेश में व्यक्तिगत व्यवहार कैसे बदल जाता है। इसमें नेतृत्व, अनुरूपता, सहयोग और प्रतिस्पर्धा जैसे विषयों का अध्ययन किया जाता है। यह क्षेत्र यह समझने में मदद करता है कि समूह कैसे बनते हैं, कैसे कार्य करते हैं और वे व्यक्तिगत परिवर्तनों को किस प्रकार प्रेरित करते हैं।

146. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
मौलिक आरोपण त्रुटि एक सार्वभौमिक पूर्वाग्रह नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक परिवेश से प्रभावित होती है। पश्चिमी देशों जैसी व्यक्तिगत संस्कृतियों में लोग व्यवहार का श्रेय व्यक्ति के स्वभाव को अधिक देते हैं। इसके विपरीत, सामूहिकवादी संस्कृतियों, जैसे कि कई एशियाई देशों में, लोग स्थितिजन्य कारकों और सामाजिक संदर्भों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, इसलिए उनमें यह त्रुटि कम पाई जाती है। यह अंतर दर्शाता है कि दूसरों के कार्यों की व्याख्या करने का तरीका हमारे सांस्कृतिक मूल्यों और परवरिश पर निर्भर करता है।

147. (C) यह विचार कि वयस्कों के उद्देश्य हमेशा उनके बचपन के मूल कारणों से जुड़े होते हैं।
गॉर्डन ऑलपोर्ट की कार्यात्मक स्वायत्तता की अवधारणा फ्रायड के इस विचार की सीधी आलोचना करती है कि वयस्क व्यवहार पूरी तरह से बचपन के अनुभवों द्वारा निर्धारित होता है। ऑलपोर्ट ने तर्क दिया कि जैसे-जैसे व्यक्ति परिपक्व होता है, उसके उद्देश्य अपने प्रारंभिक स्रोतों से स्वतंत्र हो जाते हैं। यदि कोई व्यक्ति बचपन में किसी मजबूरी के कारण मेहनत करना शुरू करता है, तो वयस्क होने पर वही मेहनत उसकी अपनी पसंद और संतुष्टि का साधन बन सकती है। यह सिद्धांत वयस्क व्यक्तित्व की स्वायत्तता पर बल देता है।

148. (D) किसी समस्या को हल करने के लिए बिना नेता वाली समूह चर्चा में भाग लेना।
स्थितिजन्य परीक्षण का उद्देश्य व्यक्ति के वास्तविक व्यवहार का अवलोकन करना होता है जब उसे किसी चुनौतीपूर्ण कार्य में रखा जाता है। बिना नेता वाली समूह चर्चा इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ यह देखा जाता है कि कौन सा व्यक्ति पहल करता है, कैसे दूसरों के साथ सहयोग करता है और कठिन परिस्थितियों में नेतृत्व के गुण प्रदर्शित करता है। यह विधि व्यक्तित्व के उन व्यावहारिक पहलुओं को प्रकट करती है जो सामान्य प्रश्नावली के माध्यम से नहीं जाने जा सकते, जिससे यह चयन प्रक्रियाओं में अत्यंत प्रभावी बन जाती है।

131. (C) 4 या 5 वर्ष की आयु तक।
अल्फ्रेड एडलर का मानना था कि व्यक्ति की 'जीवन शैली' बचपन के प्रारंभिक वर्षों में, लगभग चार या पांच वर्ष की आयु तक, काफी हद तक निश्चित हो जाती है। यह जीवन शैली व्यक्ति की हीनता की भावनाओं और उन्हें दूर करने के उसके अनूठे प्रयासों का परिणाम होती है। एक बार स्थापित होने के बाद, यह जीवन के प्रति व्यक्ति के पूरे दृष्टिकोण, उसकी आदतों और दुनिया के साथ उसकी अंतःक्रियाओं हेतु एक स्थायी रूपरेखा बन जाती है। यद्यपि बाद में सूक्ष्म बदलाव हो सकते हैं, लेकिन इसकी बुनियादी संरचना अपरिवर्तित रहती है।

132. (D) जननांग जागरुकता और इडिपस कॉम्प्लेक्स।
फ्रायड के मनोयौन विकास के लैंगिक चरण, जो लगभग तीन से छह वर्ष की आयु तक चलता है, में बालक का ध्यान अपने जननांगों पर केंद्रित हो जाता है। इसी अवस्था में इडिपस कॉम्प्लेक्स उत्पन्न होता है, जहाँ बालक अपने विपरीत लिंगी माता-पिता के प्रति आकर्षण महसूस करता है। इस संघर्ष का समाधान और समान लिंगी माता-पिता के साथ तादात्म्य स्थापित करना बच्चे के नैतिक विकास और उसकी लैंगिक पहचान के निर्माण हेतु फ्रायड के अनुसार अत्यंत आवश्यक माना जाता है। यह समाजीकरण की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण आधार है।

133. (C) कार्डिनल गुण
कार्डिनल गुण की अवधारणा गॉर्डन ऑलपोर्ट द्वारा विकसित की गई थी, न कि हैरी स्टैक सुलिवन द्वारा। सुलिवन के पारस्परिक सिद्धांत की मुख्य अवधारणाओं में व्यक्तिकरण, स्व-प्रणाली और गतिशीलता शामिल हैं, जो सभी दूसरों के साथ होने वाली सामाजिक अंतःक्रियाओं पर केंद्रित हैं। ऑलपोर्ट का दृष्टिकोण मुख्य रूप से व्यक्तिगत गुणों के वर्गीकरण पर आधारित था। इन सिद्धांतों के बीच का अंतर यह स्पष्ट करता है कि कैसे विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को या तो आंतरिक गुणों के रूप में या सामाजिक अंतःक्रियाओं के परिणाम के रूप में देखा।

134. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में अभिवृत्तियों का मापन प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से संभव नहीं है क्योंकि ये आंतरिक मानसिक संरचनाएं हैं। इसलिए, हम अभिवृत्ति पैमानों का उपयोग करते हैं ताकि व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं के आधार पर उसकी प्रवृत्तियों का मात्रात्मक अनुमान लगाया जा सके। चूंकि अभिवृत्तियां अमूर्त होती हैं, इसलिए उनके मापन हेतु लिकर्ट या थर्स्टन जैसे मानकीकृत उपकरणों की आवश्यकता होती है। ये तकनीकें शोधकर्ताओं को व्यक्ति के गुप्त दृष्टिकोणों को समझने और उन्हें वैज्ञानिक रूप से मापने में सक्षम बनाती हैं।

135. (D) समूह ध्रुवीकरण
समूह ध्रुवीकरण वह घटना है जिसमें समूह के भीतर चर्चा के बाद सदस्यों का प्रारंभिक झुकाव और अधिक दृढ़ और चरम हो जाता है। यदि समूह के अधिकांश सदस्य शुरू में थोड़ा जोखिम लेने के पक्ष में हैं, तो समूह चर्चा के बाद वे और भी अधिक साहसी निर्णय ले सकते हैं। यह इसलिए होता है क्योंकि सदस्य नए तर्क सुनते हैं जो उनके पहले से मौजूद विचारों की पुष्टि करते हैं और वे सामाजिक तुलना के माध्यम से समूह के साथ अधिक गहराई से जुड़ जाते हैं। यह प्रक्रिया समूह के निर्णय को उग्र बनाती है।

136. (A) अंतर्मुखता
कार्ल युंग के अनुसार अंतर्मुखता एक ऐसा व्यक्तित्व प्रकार है जहाँ व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक ऊर्जा आंतरिक दुनिया, विचारों और भावनाओं की ओर निर्देशित होती है। ऐसे व्यक्ति शांत, आरक्षित और विचारशील होते हैं और वे सामाजिक मेलजोल के बजाय एकांत में समय बिताना पसंद करते हैं। वे अक्सर अपनी प्रतिक्रिया देने से पहले गहराई से सोचते हैं और बाहरी उत्तेजनाओं के प्रति संवेदनशील होते हैं। अंतर्मुखता का अर्थ सामाजिक अक्षमता नहीं है, बल्कि यह एक दृष्टिकोण है जो आत्म-चिंतन और व्यक्तिगत स्वायत्तता को अधिक महत्व देता है।

137. (C) गुणों और व्यवहारों की एक विस्तृत श्रृंखला का आकलन करने वाली एक आत्म-रिपोर्ट प्रश्नावली।
व्यक्तित्व इन्वेंटरी व्यक्तित्व मूल्यांकन का एक वस्तुनिष्ठ उपकरण है। इसमें मानकीकृत कथनों का एक सेट होता है जहाँ व्यक्ति को अपनी आदतों, भावनाओं और व्यवहारों के बारे में जानकारी देनी होती है। चूंकि ये परीक्षण वैज्ञानिक रूप से विकसित और मानकीकृत होते हैं, इसलिए इनका उपयोग व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का सटीक मापन करने हेतु किया जाता है। यह विधि व्यावसायिक भर्ती, नैदानिक निदान और अनुसंधान में अत्यंत प्रभावी है क्योंकि यह स्कोरिंग में व्यक्तिपरक पूर्वाग्रहों को कम करती है और सुसंगत परिणाम प्रदान करती है।

138. (A) अभिवृत्ति वस्तु के प्रति भावनाएं और संवेग।
अभिवृत्ति का भावात्मक घटक किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति व्यक्ति की संवेगात्मक प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें पसंद-नापसंद, खुशी या क्रोध जैसी भावनाएं शामिल होती हैं। यह घटक अक्सर हमारे मूल्यों और प्रारंभिक अनुभवों से गहराई से जुड़ा होता है। भावनाओं का यह पक्ष हमारे व्यवहार को तीव्र गति से प्रभावित करता है, क्योंकि मनुष्य अक्सर तर्क के बजाय अपने संवेगों के आधार पर प्रतिक्रिया देते हैं। अतः, किसी भी अभिवृत्ति को पूरी तरह समझने हेतु उसके इस भावनात्मक आधार का विश्लेषण करना अनिवार्य होता है।

139. (A) III, IV, II, I
एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के बाद के चरण किशोरावस्था से शुरू होकर वृद्धावस्था तक जाते हैं। किशोरावस्था में 'पहचान बनाम भूमिका भ्रम' का संकट होता है। इसके बाद युवा वयस्कता में 'घनिष्ठता बनाम अलगाव' का चरण आता है जहाँ गहरे संबंध बनाए जाते हैं। मध्य वयस्कता में 'उत्पादकता बनाम स्थिरता' का चरण आता है जिसमें अगली पीढ़ी का मार्गदर्शन किया जाता है। अंत में उत्तर वयस्कता में 'अखंडता बनाम निराशा' का चरण आता है जहाँ व्यक्ति अपने जीवन की सार्थकता पर विचार करता है। यह निरंतर विकास को दर्शाता है।

158. (D) प्रभाव निर्माण
प्रभाव निर्माण सामाजिक प्रत्यक्षण की वह प्रक्रिया है जिसमें हम दूसरों से पहली बार मिलने पर उनके बारे में बहुत जल्दी एक समग्र धारणा बना लेते हैं। इस प्रक्रिया में प्रथम प्रभाव की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है, जो अक्सर बाद की जानकारी को भी प्रभावित करती है। हम दूसरों के कपड़ों, बात करने के तरीके और हाव-भाव से उनके व्यक्तित्व का अंदाज़ा लगाते हैं। यह प्रक्रिया हमें अजनबियों के साथ अपने व्यवहार को तय करने में मदद करती है, यद्यपि यह सामाजिक प्रत्यक्षण हमेशा पूरी तरह सटीक नहीं होता है।

159. (A) उन्होंने प्राथमिक मानवीय प्रेरणा को यौन इच्छाओं की संतुष्टि के रूप में देखा।
अल्फ्रेड एडलर फ्रायड के इस विचार से असहमत थे कि यौन इच्छाएं मानव व्यवहार की प्राथमिक प्रेरणा हैं। इसके बजाय, उन्होंने प्रस्तावित किया कि मानव जाति की मुख्य प्रेरणा हीनता की भावनाओं को दूर करना और श्रेष्ठता हेतु प्रयास करना है। एडलर ने व्यक्तित्व की एकता और सामाजिक संबंधों के महत्व पर अधिक बल दिया। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि जन्म क्रम व्यक्ति की जीवन शैली को आकार देता है। उनका दृष्टिकोण फ्रायड की तुलना में अधिक सामाजिक था, जो व्यक्ति की अपनी भविष्य की आकांक्षाओं पर केंद्रित था।

160. (A) केवल I और II
विषय आत्मबोध परीक्षण और रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण दोनों ही प्रक्षेपी तकनीकों के उत्कृष्ट उदाहरण हैं क्योंकि वे अचेतन मन को मापने हेतु अस्पष्ट उद्दीपनों का उपयोग करते हैं। दूसरी ओर, मिनेसोटा मल्टीफेज़िक पर्सनालिटी इन्वेंटरी एक वस्तुनिष्ठ व्यक्तित्व इन्वेंटरी है जो संरचित प्रश्नों और आत्म-रिपोर्ट पर आधारित है। प्रक्षेपी परीक्षणों का लक्ष्य व्यक्ति की उन छिपी हुई भावनाओं को उजागर करना है जिन्हें वह स्वयं स्पष्ट रूप से नहीं जानता। ये नैदानिक मनोविज्ञान में अचेतन के विश्लेषण हेतु बहुत महत्वपूर्ण उपकरण माने जाते हैं।

161. (B) प्रारंभिक बचपन के अनुभवों का प्रभाव।
कार्ल युंग और सिग्मंड फ्रायड दोनों ही इस बात पर सहमत थे कि बचपन के अनुभव व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालांकि, युंग ने सामूहिक अचेतन और भविष्य के लक्ष्यों के महत्व पर बल देकर फ्रायड के विचारों का विस्तार किया। युंग का मानना था कि व्यक्तित्व केवल अतीत से निर्धारित नहीं होता, बल्कि हमारी भविष्य की आकांक्षाएं भी इसे आकार देती हैं। फ्रायड मुख्य रूप से जैविक प्रेरकों पर केंद्रित थे, जबकि युंग ने मानव मानस के अधिक व्यापक और सार्वभौमिक पहलुओं को अपने सिद्धांत में शामिल किया।

162. (A) समय के साथ सुसंगत परिणाम देता है।
मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन में विश्वसनीयता का अर्थ है परीक्षण की स्थिरता। यदि कोई व्यक्तित्व परीक्षण विश्वसनीय है, तो वह एक ही व्यक्ति को विभिन्न समयों पर दिए जाने पर लगभग समान परिणाम प्रदान करेगा। विश्वसनीयता यह सुनिश्चित करती है कि परीक्षण के परिणाम केवल संयोग या अस्थायी कारकों पर आधारित नहीं हैं। यह वैज्ञानिक मापन हेतु एक अनिवार्य शर्त है। यद्यपि वैधता बताती है कि परीक्षण सही चीज माप रहा है, लेकिन विश्वसनीयता सुनिश्चित करती है कि मापन की प्रक्रिया सुसंगत है, जिससे परिणामों पर विश्वास किया जा सके।

163. (B) लोकतांत्रिक
लोकतांत्रिक नेतृत्व शैली में नेता एक सुविधा प्रदाता के रूप में कार्य करता है जो समूह के सदस्यों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करता है। वह खुले संचार को बढ़ावा देता है और टीम के सुझावों को महत्व देता है। यह शैली न केवल बेहतर निर्णयों की ओर ले जाती है, बल्कि सदस्यों के बीच जिम्मेदारी और समूह के प्रति जुड़ाव की भावना को भी मजबूत करती है। लोकतांत्रिक नेतृत्व में सत्ता का साझा किया जाता है, जिससे समूह की रचनात्मकता में वृद्धि होती है और एक सहयोगात्मक वातावरण का निर्माण होता है।

164. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
एरिक एरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धांत में प्रत्येक चरण एक विशिष्ट संकट को दर्शाता है। शैशवावस्था में मुख्य कार्य विश्वास विकसित करना है। किशोरावस्था का केंद्र अपनी पहचान खोजना और भूमिका भ्रम से बचना है। युवा वयस्कता में व्यक्ति दूसरों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने का प्रयास करता है। वृद्धावस्था में जीवन के अंतिम पड़ाव पर व्यक्ति अपने अतीत पर विचार करते हुए अखंडता या निराशा का अनुभव करता है। ये चरण व्यक्तित्व के विकास की एक क्रमिक यात्रा का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सामाजिक अनुभवों से आकार लेती है।

165. (C) एक नाट्य मुखौटा
'पर्सनालिटी' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'परसोना' से हुई है, जिसका प्राचीन रोम में अर्थ वह मुखौटा था जिसे अभिनेता मंच पर विभिन्न पात्रों की भूमिका निभाने हेतु पहनते थे। यह मुखौटा यह दर्शाता था कि व्यक्ति दुनिया के सामने खुद को कैसे प्रस्तुत करता है। समय के साथ, इस शब्द का अर्थ व्यापक हो गया और यह केवल बाहरी दिखावे तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें व्यक्ति के आंतरिक गुण और सोचने के स्थायी स्वरूप भी शामिल हो गए, जो उसे दूसरों से अलग और अद्वितीय बनाते हैं।

166. (B) संज्ञानात्मक विसंगति
संज्ञानात्मक विसंगति उस स्थिति में उत्पन्न होती है जब किसी व्यक्ति के प्रबल विश्वास और उसके वास्तविक व्यवहार में गहरा विरोधाभास होता है। एक राजनेता जो पर्यावरण की रक्षा की बात करता है लेकिन प्रदूषण फैलाने वाली कंपनियों में निवेश करता है, वह इस मानसिक तनाव को महसूस करेगा। इस बेचैनी से बचने हेतु वह या तो अपना निवेश वापस लेगा या अपने कार्यों हेतु नए तर्क गढ़ेगा ताकि उसके विचारों में सामंजस्य बना रहे। यह आंतरिक संघर्ष व्यक्ति को अपनी अभिवृत्तियों या व्यवहार में बदलाव लाने हेतु प्रेरित करता है।

167. (D) आरोपण सिद्धांत
आरोपण सिद्धांत मुख्य रूप से सामाजिक मनोविज्ञान का एक हिस्सा है जो यह बताता है कि हम दूसरों के व्यवहार के कारणों की व्याख्या कैसे करते हैं। यह व्यक्तित्व का एक पूर्ण सिद्धांत

बहुमत की शक्ति हमारे व्यक्तिगत निर्णयों और वास्तविकता के प्रत्यक्षण को कैसे बदल सकते हैं।

238. (D) गुण
गुण व्यक्तित्व की वह बुनियादी इकाई है जो विभिन्न स्थितियों और समय के साथ व्यक्ति के व्यवहार में सुसंगतता और स्थिरता प्रदान करती है। यह व्यवहार करने का एक स्थायी झुकाव है, जैसे कि ईमानदारी या मिलनसारिता। गुणों के आधार पर ही हम किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का वर्णन करते हैं और उसके भविष्य के कार्यों की भविष्यवाणी कर सकते हैं। गुण सिद्धांतकारों का मानना है कि ये आंतरिक प्रवृत्तियां ही व्यक्ति को एक अद्वितीय स्वरुप देती हैं। प्रेरणा के विपरीत, गुण व्यक्तित्व का एक गहरा और स्थायी हिस्सा होते हैं जो पहचान सुनिश्चित करते हैं।

239. (A) वास्तविकता सिद्धांत
फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत में ईगो 'वास्तविकता सिद्धांत' पर कार्य करता है। इसका मुख्य कार्य इड की अचेतन और तर्कहीन इच्छाओं को बाहरी दुनिया की व्यावहारिक सीमाओं और सुपर ईगो के नैतिक मानकों के साथ संतुलित करना है। ईगो यथार्थवादी सोच का उपयोग करता है ताकि इच्छाओं को सुरक्षित और सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीके से पूरा किया जा सके। यह तात्कालिक संतुष्टि को तब तक रोकने की शक्ति रखता है जब तक कि उपयुक्त अवसर न मिल जाए, जो व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन प्रबंधन और मानसिक स्थिरता हेतु अनिवार्य है।

240. (B) स्थितिजन्य; स्वभावगत
कर्ता-प्रेक्षक पूर्वाग्रह एक ऐसी मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है जहाँ हम अपने कार्यों के कारणों को उन बाहरी परिस्थितियों या स्थितियों को देते हैं जिनमें हम होते हैं। इसके विपरीत, जब हम दूसरों के व्यवहार को देखते हैं, तो हम अक्सर उनकी स्थिति को नजरअंदाज कर देते हैं और उनके व्यवहार का श्रेय उनके आंतरिक गुणों या व्यक्तित्व को देते हैं। यह पूर्वाग्रह इसलिए होता है क्योंकि जब हम कार्य करते हैं तो हमारा ध्यान वातावरण पर होता है, लेकिन जब हम दूसरों को देखते हैं तो हमारा पूरा ध्यान उस व्यक्ति पर केंद्रित होता है।

241. (B) एरिक एरिक्सन
एरिक एरिक्सन को उनके मनोसामाजिक विकास के आठ-चरणीय मॉडल हेतु पूरी दुनिया में जाना जाता है। उन्होंने फ्रायड के बचपन पर केंद्रित चरणों को पूरे जीवनकाल, यानी जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक, विस्तारित किया। एरिक्सन का प्रत्येक चरण एक विशिष्ट मनोवैज्ञानिक संघर्ष को दर्शाता है जिसे सामाजिक परिवेश के साथ अंतःक्रिया करके हल किया जाता है। उनका सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि समाज व्यक्ति की पहचान बनाने में निरंतर भूमिका निभाता है। यह दृष्टिकोण आधुनिक मनोविज्ञान में व्यक्तित्व विकास को समझने हेतु व्यापक ढांचा प्रदान करता है।

242. (A) व्यक्तित्व इन्वेंटरी
व्यक्तित्व इन्वेंटरी मूल्यांकन का एक वस्तुनिष्ठ तरीका है जिसमें मानकीकृत प्रश्नों की एक श्रृंखला का उपयोग किया जाता है। इनमें अक्सर सही/गलत या बहुविकल्पीय प्रारूप होता है, जिससे व्यक्ति को अपने व्यवहार और भावनाओं के बारे में जानकारी देनी होती है। एमएमपीआई या 16पीएफ जैसे परीक्षण इसके प्रमुख उदाहरण हैं। चूंकि ये परीक्षण वैज्ञानिक रुप से मानकीकृत होते हैं, इसलिए इनकी स्कोरिंग और व्याख्या बहुत सटीक और विश्वसनीय होती है। यह विधि व्यावसायिक भर्ती और मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में व्यक्तित्व गुणों के मापन हेतु अत्यंत प्रभावी मानी जाती है।

243. (C) मानकीकृत अनुरुपता
मानकीकृत अनुरुपता तब होती है जब कोई व्यक्ति समूह द्वारा स्वीकार किए जाने या सामाजिक दंड से बचने हेतु अपने व्यवहार को बदलता है। यह प्रक्रिया 'सही' होने के बारे में नहीं है, बल्कि समूह का हिस्सा बने रहने और दूसरों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के बारे में है। व्यक्ति अक्सर जानते हैं कि समूह गलत है, लेकिन वे सामाजिक अलगाव के डर से अपनी स्वतंत्र राय दबा देते हैं। यह प्रभाव सामाजिक दबाव की उस शक्ति को दर्शाता है जो हमारे आचरण को समूह के मानदंडों के साथ तालमेल बिठाने हेतु विवश करती है।

244. (D) लेविन
कुर्ट लेविन ने व्यवहार के मुख्य निर्धारक के रुप में 'जीवन स्थान' की अवधारणा को प्रस्तावित किया। उनका क्षेत्र सिद्धांत यह मानता है कि व्यवहार व्यक्ति और उसके मनोवैज्ञानिक वातावरण के बीच होने वाली निरंतर अंतःक्रिया का परिणाम है। जीवन स्थान उन सभी कारकों का योग है जो किसी विशेष समय पर व्यक्ति को प्रभावित करते हैं। लेविन के इस दृष्टिकोण ने व्यक्तित्व के अध्ययन को केवल आंतरिक गुणों तक सीमित रखने के बजाय, स्थितिजन्य और सामाजिक कारकों के महत्व को भी मजबूती से स्थापित किया। यह आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान की वैज्ञानिक नींव है।

245. (C) ऊर्जा परिवर्तन का एक दीर्घकालिक, आवर्ती स्वरुप।
हैरी स्टैक सुलिवन के पारस्परिक सिद्धांत में 'गतिशीलता' व्यवहार का वह स्थायी स्वरुप है जो व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करने या उसकी चिंता को कम करने हेतु बार-बार प्रकट होता है। यह ऊर्जा का एक ऐसा परिवर्तन है जो व्यक्ति के दूसरों के साथ संबंधों को परिभाषित करता है। गतिशीलता आदतों के समान है लेकिन यह विशेष रुप से सामाजिक अंतःक्रियाओं पर केंद्रित होती है। यह व्यक्तित्व की स्थिरता का आधार है और यह स्पष्ट करती है कि व्यक्ति विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में लगातार एक ही तरह से प्रतिक्रिया क्यों और कैसे देता है।

246. (B) समानता
समानता पारस्परिक आकर्षण का एक अत्यंत शक्तिशाली और बुनियादी निर्धारक है। अनुसंधान यह दिखाते हैं कि हम उन लोगों की ओर अधिक आकर्षित होते हैं जिनके विचार, अभिवृत्तियां, मूल्य और रुचियां हमारे समान होती हैं। समानता आपसी समझ को बढ़ावा देती है, संचार को आसान बनाती है और हमारे स्वयं के विश्वासों को पुष्ट करती है। जब हम किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं जो हमारी तरह सोचता है, तो हमें एक प्रकार का सामाजिक समर्थन महसूस होता है, जिससे

केवल समूह के आकार को बताती है, जबकि संसक्ति समूह की भावनात्मक मजबूती को स्पष्ट करती है। अन्य युग्म सही हैं क्योंकि प्रभाव निर्माण धारणाओं से जुड़ा है, अनुरुपता व्यवहार परिवर्तन से और नेतृत्व दूसरों को साझा लक्ष्यों हेतु प्रभावित करने की प्रक्रिया है।

177. (B) वास्तविकता सिद्धांत
फ्रायड के अनुसार ईगो व्यक्तित्व का वह तर्कसंगत हिस्सा है जो वास्तविकता सिद्धांत पर कार्य करता है। इसका मुख्य कार्य इड की अचेतन इच्छाओं को बाहरी दुनिया की वास्तविक परिस्थितियों के साथ संतुलित करना है। ईगो यह देखता है कि कब और कैसे किसी इच्छा को सुरक्षित और सामाजिक रुप से स्वीकार्य तरीके से पूरा किया जा सकता है। यह तात्कालिक संतुष्टि को तब तक रोकता है जब तक कि उपयुक्त अवसर न मिल जाए। ईगो की यह भूमिका व्यक्ति को व्यवहार्य बनाती है और आवेगों पर नियंत्रण रखने में सक्षम बनाती है।

178. (A) अस्पष्ट
प्रक्षेपी परीक्षणों की कार्यप्रणाली पूरी तरह से अस्पष्ट और असंरचित उद्दीपनों के उपयोग पर आधारित है। जब व्यक्ति को कोई ऐसा चित्र दिखाया जाता है जिसका कोई निश्चित अर्थ नहीं होता, तो वह उसे अर्थ देने हेतु अपनी आंतरिक सोच का सहारा लेता है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति अनजाने में अपने अचेतन मन के रहस्यों और दमित इच्छाओं को बाहर लाता है। उद्दीपन की यही अस्पष्टता व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से अपनी भावनाओं को प्रकट करने हेतु प्रेरित करती है, जो व्यक्तित्व के गहरे विश्लेषण हेतु अत्यंत आवश्यक और प्रभावी है।

179. (C) हीनता की भावनाएं भारी होती हैं और व्यक्तिगत विकास को रोकती हैं।
अल्फ्रेड एडलर के अनुसार हीनता की भावनाएं विकास हेतु प्रेरक हो सकती हैं, लेकिन जब ये भावनाएं अत्यधिक तीव्र हो जाती हैं, तो वे एक 'हीनता ग्रंथि' का रुप ले लेती हैं। इस स्थिति में व्यक्ति स्वयं को दूसरों से इतना अक्षम समझने लगता है कि वह अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास ही छोड़ देता है। यह ग्रंथि व्यक्ति के आत्मविश्वास को समाप्त कर सकती है और उसके व्यक्तिगत विकास को बाधित करती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति रचनात्मक प्रयासों के बजाय निराशा और असहायता के चक्र में स्थायी रूप से फंस जाता है।

180. (B) पारस्परिक आकर्षण
सामीप्य, समानता और शारीरिक आकर्षण सामाजिक मनोविज्ञान में पारस्परिक आकर्षण के तीन मुख्य निर्धारक माने जाते हैं। भौतिक निकटता या सामीप्य लोगों को मिलने और बातचीत करने के अवसर प्रदान करता है। विचारों और रुचियों की समानता आपसी समझ और गहरे जुड़ाव को जन्म देती है। शारीरिक आकर्षण अक्सर किसी संबंध की प्रारंभिक शुरुआत में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ये तीनों कारक मिलकर यह निर्धारित करते हैं कि हम किन लोगों की ओर आकर्षित होंगे और किसके साथ लंबे समय तक चलने वाले सामाजिक संबंध बनाएंगे।

181. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
अभिवृत्तियों के कार्य व्यक्ति की विभिन्न मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। ज्ञान कार्य दुनिया को संगठित और बोधगम्य बनाता है। अहं-रक्षक कार्य आत्म-सम्मान को आंतरिक और बाहरी खतरों से सुरक्षा प्रदान करता है। मूल्य-अभिव्यंजक कार्य व्यक्ति को अपनी अनूठी पहचान और मुख्य विश्वासों को प्रकट करने का अवसर देता है। उपयोगितावादी कार्य व्यक्ति को उन लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है जो उसे पुरस्कार दिलाते हैं। ये सभी कार्य अभिवृत्तियों को बनाए रखने और उनके सामाजिक महत्व को समझने हेतु अनिवार्य हैं।

182. (B) लोकतांत्रिक
लोकतांत्रिक नेतृत्व की पहचान सदस्यों के साथ विचार-विमर्श और उनकी राय को सम्मान देना है। एक लोकतांत्रिक प्रबंधक अपनी टीम को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करके न केवल बेहतर समाधान खोजता है, बल्कि टीम के भीतर विश्वास और सहयोग की भावना को भी मजबूत करता है। यह शैली सदस्यों को महत्वपूर्ण महसूस कराती है और उनमें जिम्मेदारी का बोध पैदा करती है। इससे समूह की समग्र उत्पादकता और संतुष्टि बढ़ती है, क्योंकि सभी सदस्य साझा लक्ष्यों के प्रति अधिक प्रतिबद्ध महसूस करते हैं और सक्रिय योगदान देते हैं।

183. (D) किसी दिए गए समय पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव वाली सभी आंतरिक और बाहरी शक्तियां।
कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत में 'जीवन स्थान' केवल भौतिक वातावरण नहीं है, बल्कि वह संपूर्ण मानसिक जगत है जिसमें व्यक्ति रहता है। इसमें उसकी वर्तमान आवश्यकताएं, भविष्य की आशाएं, अतीत की स्मृतियां और बाहरी दुनिया का वह हिस्सा शामिल है जो उसे उस समय प्रभावित कर रहा है। लेविन के अनुसार, व्यवहार को समझने हेतु इस संपूर्ण मनोवैज्ञानिक क्षेत्र का विश्लेषण करना आवश्यक है। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि एक ही वातावरण में दो अलग-अलग व्यक्ति अपनी आंतरिक प्रवृत्तियों के कारण अलग व्यवहार क्यों करते हैं।

184. (A) सार्वजनिक मुखौटा या भूमिका जो एक व्यक्ति दूसरों के सामने प्रस्तुत करता है।
कार्ल युंग के अनुसार परसोना वह सामाजिक मुखौटा है जिसे हम समाज की अपेक्षाओं के अनुरुप खुद को ढालने हेतु पहनते हैं। यह वह भूमिका है जो हम दुनिया के सामने निभाते हैं, जैसे एक पेशेवर या छात्र के रूप में। परसोना हमें सामाजिक स्थितियों में प्रभावी ढंग से बातचीत करने और अपनी वास्तविक भावनाओं को सुरक्षित रखने में मदद करता है। हालांकि, युंग ने चेतावनी दी थी कि यदि व्यक्ति अपने परसोना के साथ बहुत अधिक जुड़ जाता है, तो वह अपने वास्तविक 'स्व' और आंतरिक पहचान को स्थायी रूप से खो सकता है।

185. (C) संवेगात्मक निर्भरता
फ्रायड के मनोयौन विकास सिद्धांत के अनुसार, जो बच्चे मुखीय चरण के दौरान अत्यधिक लाड़-प्यार या उपेक्षा के कारण स्थिर हो जाते हैं, वे वयस्क होने पर मुखीय व्यक्तित्व गुण प्रदर्शित कर सकते हैं। संवेगात्मक निर्भरता इनमें से एक प्रमुख गुण है,

जहाँ व्यक्ति दूसरों पर भावनात्मक रूप से अत्यधिक आश्रित रहता है। ऐसे व्यक्ति अक्सर दूसरों से देखभाल और समर्थन की निरंतर मांग करते हैं और उनमें स्वायत्तता का अभाव हो सकता है। यह स्थिरता उनके प्रारंभिक विकास की उन अधूरी आवश्यकताओं को दर्शाती है जो उनके व्यवहार को निर्देशित करती हैं।

186. (A) व्यक्तित्व गुणों का एक संरचित और वस्तुनिष्ठ माप प्रदान करना।
व्यक्तित्व इन्वेंटरी का प्राथमिक लक्ष्य व्यक्ति के विभिन्न मनोवैज्ञानिक गुणों और व्यवहार प्रवृत्तियों का वैज्ञानिक रूप से मापन करना है। ये परीक्षण संरचित प्रश्नों पर आधारित होते हैं, जिससे आत्म-रिपोर्ट के माध्यम से डेटा प्राप्त किया जाता है। चूंकि इनकी स्कोरिंग मानकीकृत होती है, इसलिए ये व्यक्तिपरक व्याख्या के दोषों से मुक्त होते हैं और सुसंगत परिणाम प्रदान करते हैं। यह विधि करियर मार्गदर्शन और नैदानिक निदान में व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का एक स्पष्ट और विश्वसनीय विवरण प्राप्त करने हेतु सबसे प्रभावी तकनीक मानी जाती है।

187. (D) व्यक्तित्व
व्यक्तित्व उन विचारों, भावनाओं और व्यवहारों का एक स्थायी और अनूठा संगठन है जो व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को परिभाषित करता है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि यह समय और स्थितियों के साथ सुसंगत रहता है, जिससे व्यक्ति को एक विशिष्ट पहचान मिलती है। व्यक्तित्व केवल बाहरी गुणों का समूह नहीं है, बल्कि यह आंतरिक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों का एक गतिशील मेल है जो व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करता है। यही अद्वितीय स्वरूप एक व्यक्ति को दूसरे से अलग बनाता है और यह निर्धारित करता है कि वह दुनिया के साथ कैसे व्यवहार करेगा।

188. (B) सुरक्षा के लिए पारस्परिक संबंधों का महत्व
हैरी स्टैक सुलिवन का व्यक्तित्व सिद्धांत पूरी तरह से पारस्परिक संबंधों के इर्द-गिर्द घूमता है। उनका मानना था कि मनुष्य के व्यवहार की मुख्य प्रेरणा सामाजिक सुरक्षा प्राप्त करना और चिंता से बचना है। सुलिवन के अनुसार, व्यक्तित्व को केवल अकेले में नहीं समझा जा सकता, बल्कि इसे दूसरों के साथ होने वाली निरंतर अंतःक्रियाओं के माध्यम से देखा जाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हमारे जीवन के शुरुआती और वर्तमान संबंध ही हमारे आत्म-प्रत्यक्षण और व्यवहार के स्वरूप को निर्मित करते हैं, जिससे व्यक्तित्व की आधारशिला रखी जाती है।

189. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
आरोपण सिद्धांत वास्तव में यह समझने पर केंद्रित है कि हम घटनाओं और व्यवहार के पीछे के कारणों का अनुमान कैसे लगाते हैं। हालांकि, मौलिक आरोपण त्रुटि के संदर्भ में दूसरा कथन गलत है। मौलिक आरोपण त्रुटि दूसरों के व्यवहार हेतु व्यक्तिगत गुणों को अधिक महत्व देने और स्थितिजन्य कारकों को कम आंकने की प्रवृत्ति है। हम अक्सर यह मान लेते हैं कि कोई व्यक्ति अपने स्वभाव के कारण वैसा कर रहा है और उस समय की परिस्थितियों को नजरअंदाज कर देते हैं, जिससे हमारे सामाजिक निर्णयों में पक्षपात आ सकता है।

190. (D) जननेंद्रिय चरण
फ्रायड के मनोयौन विकास के पांच चरणों में जननेंद्रिय चरण अंतिम अवस्था है, जो किशोरावस्था से शुरू होकर वयस्कता तक चलती है। इस चरण में व्यक्ति की यौन ऊर्जा फिर से सक्रिय होती है और उसका ध्यान व्यक्तिगत सुख से हटकर विपरीत लिंग के साथ परिपक्व और घनिष्ठ संबंध बनाने की ओर जाता है। यह अवस्था सामाजिक जिम्मेदारी और उत्पादकता के विकास का प्रतिनिधित्व करती है। यदि पिछले चरणों के संघर्षों को सफलतापूर्वक सुलझा लिया गया है, तो व्यक्ति इस चरण में एक संतुलित और स्वस्थ भावनात्मक जीवन जीने में सक्षम होता है।

191. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सोलोमन ऐश के प्रसिद्ध प्रयोग ने यह सिद्ध किया कि लोग अक्सर समूह के बहुमत के साथ सहमत होने हेतु अपनी इंद्रियों के प्रत्यक्ष साक्ष्य को भी नकार देते हैं। प्रतिभागियों ने जानबूझकर गलत उत्तर दिए क्योंकि वे समूह से अलग दिखने या सामाजिक अस्वीकृति का सामना करने से डरते थे। यह व्यवहार मानकीकृत सामाजिक प्रभाव का एक स्पष्ट उदाहरण है, जहाँ सही होने के बजाय समूह का हिस्सा बने रहना और दूसरों द्वारा पसंद किया जाना अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। यह दर्शाता है कि सामाजिक दबाव हमारे निर्णयों को कितना प्रभावित करता है।

192. (B) कार्यात्मक
अभिवृत्ति के मुख्य घटकों में संज्ञानात्मक, भावात्मक और व्यवहारात्मक शामिल हैं, जिन्हें एबीसी मॉडल भी कहा जाता है। संज्ञानात्मक घटक विश्वासों से, भावात्मक भावनाओं से और व्यवहारात्मक कार्यों की प्रवृत्ति से संबंधित है। 'कार्यात्मक' अभिवृत्ति का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह अभिवृत्ति द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं या उद्देश्यों (जैसे अहं-रक्षा) को संदर्भित करता है। अभिवृत्ति की संरचना को समझने हेतु इन तीनों घटकों का विश्लेषण अनिवार्य है, क्योंकि वे मिलकर यह निर्धारित करते हैं कि व्यक्ति किसी वस्तु या विचार के प्रति कैसा व्यवहार करेगा।

193. (B) अल्फ्रेड एडलर
अल्फ्रेड एडलर ने वैयक्तिक मनोविज्ञान की स्थापना की और प्रस्तावित किया कि व्यक्तित्व का मुख्य प्रेरक हीनता की भावनाओं को दूर करने का संघर्ष है। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही कुछ कमियों का अनुभव करता है, जो उसे श्रेष्ठता और पूर्णता प्राप्त करने हेतु निरंतर प्रयास करने हेतु प्रेरित करती हैं। यह संघर्ष ही व्यक्ति की अद्वितीय 'जीवन शैली' का निर्माण करता है। एडलर का यह दृष्टिकोण व्यक्ति की सकारात्मक क्षमताओं और सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की उसकी आंतरिक शक्ति पर केंद्रित है, जो उसे मानवतावादी बनाता है।

194. (A) विषय आत्मबोध परीक्षण (टीएटी)
विषय आत्मबोध परीक्षण एक महत्वपूर्ण प्रक्षेपी तकनीक है जहाँ व्यक्ति को अस्पष्ट सामाजिक दृश्यों वाले कार्ड दिखाए जाते हैं। उत्तरदाता को उन दृश्यों के आधार पर एक कहानी बुननी होती है जिसमें पात्रों की भावनाओं का वर्णन हो। इस प्रक्रिया में व्यक्ति अनजाने में अपनी दमित इच्छाओं और अचेतन संघर्षों को कहानियों में शामिल कर देता है। यह परीक्षण व्यक्ति के व्यक्तित्व की गहराई और उसके आंतरिक मनोवैज्ञानिक संसार को समझने हेतु नैदानिक मनोविज्ञान में एक विश्वसनीय और व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला उपकरण है।

195. (A) केवल I और II
व्यक्तित्व का विकास आनुवंशिकता और वातावरण के बीच एक सतत और गतिशील अंतःक्रिया का परिणाम है। आनुवंशिकता जैविक सीमाएं और प्रवृत्तियां तय करती है, जबकि वातावरण इन प्रवृत्तियों को फलने-फूलने के अवसर और दिशा प्रदान करता है। यह कहना गलत है कि व्यक्तित्व केवल आनुवंशिक है, क्योंकि अनुभव और शिक्षा व्यक्ति के व्यवहार में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकते हैं। व्यक्तित्व एक विकासशील संरचना है जो जीवन भर अनुभव किए गए विभिन्न सामाजिक और पर्यावरणीय कारकों के प्रभाव में आकार लेती रहती है और परिपक्व होती है।

196. (D) सामाजिक संकटों की एक श्रृंखला के माध्यम से अहं-पहचान का विकास।
एरिक एरिक्सन का मनोसामाजिक सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि व्यक्तित्व का विकास आठ क्रमिक चरणों में होता है, जिनमें से प्रत्येक एक विशिष्ट सामाजिक संकट से जुड़ा है। इन संकटों का सफल समाधान व्यक्ति की अहं-पहचान को मजबूत करता है और उसमें महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक गुण विकसित करता है। यह सिद्धांत व्यक्तित्व को पूरे जीवनकाल की प्रक्रिया के रूप में देखता है, जहाँ सामाजिक वातावरण और व्यक्तिगत अनुभवों का मेल व्यक्ति को अपनी पहचान बनाने और समाज में अपना स्थान खोजने में निरंतर सहायता प्रदान करता है।

197. (C) कार्डिनल
गॉर्डन ऑलपोर्ट के अनुसार कार्डिनल गुण वह अत्यंत शक्तिशाली विशेषता है जो किसी व्यक्ति के लगभग सभी कार्यों और निर्णयों पर हावी हो जाती है। यह गुण व्यक्ति के पूरे जीवन को एक दिशा देता है और उसकी पहचान का मुख्य आधार बन जाता है। हालांकि यह गुण सभी लोगों में नहीं पाया जाता, लेकिन जिनमें यह होता है, वे इसी हेतु पूरी दुनिया में जाने जाते हैं। उदाहरण के लिए, सत्ता की अदम्य खोज या मानवता के प्रति पूर्ण समर्पण किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में कार्डिनल गुण का उत्कृष्ट उदाहरण हो सकता है।

198. (B) समूह संसक्ति
समूह संसक्ति वह मनोवैज्ञानिक बल है जो सदस्यों को एक-दूसरे के प्रति आकर्षित करता है और उन्हें समूह में बने रहने हेतु प्रेरित करता है। यह एकता, परस्पर विश्वास और साझा लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करती है। संसक्ति सदस्यों के बीच 'हम' की भावना को सुदृढ़ करती है और सहयोग को बढ़ावा देती है। उच्च संसक्ति वाले समूहों में सदस्य अधिक संतुष्ट होते हैं और वे सामूहिक उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु अधिक मेहनत करते हैं। यह शक्ति समूह को स्थिरता प्रदान करती है और उसे बाहरी दबावों का सामना करने में सक्षम बनाती है।

199. (D) सामाजिक मनोविज्ञान और समूह गतिशीलता
कुर्ट लेविन को आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान का जनक माना जाता है, जिन्होंने समूह गतिशीलता के अध्ययन में क्रांति ला दी। उन्होंने प्रयोगात्मक विधियों का उपयोग करके यह समझने का प्रयास किया कि समूह कैसे कार्य करते हैं, नेतृत्व शैलियों का क्या प्रभाव होता है और सामाजिक दबाव व्यवहार को कैसे बदलते हैं। उनका क्षेत्र सिद्धांत और 'जीवन स्थान' की अवधारणा आज भी सामाजिक व्यवहार को समझने हेतु आधारभूत मानी जाती है। लेविन के कार्यों ने यह सिद्ध किया कि सामाजिक परिवेश व्यक्ति के मनोविज्ञान और उसके कार्यों को गहराई से आकार देता है।

200. (A) सामाजिक प्रत्यक्षण
सामाजिक प्रत्यक्षण वह मानसिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम अपने आसपास के लोगों के बारे में जानकारी एकत्र करते हैं, उनके स्वभाव का अनुमान लगाते हैं और उनके प्रति अपनी राय बनाते हैं। इसमें प्रभाव निर्माण और आरोपण जैसे महत्वपूर्ण पहलू शामिल हैं। यह प्रक्रिया हमें दूसरों के व्यवहार को समझने और सामाजिक स्थितियों में उचित प्रतिक्रिया देने में मदद करती है। सामाजिक प्रत्यक्षण हमारे निर्णयों को प्रभावित करता है और यह निर्धारित करता है कि हम दूसरों के साथ कैसे संबंध बनाएंगे और समाज में अपनी भूमिका को कैसे संतुलित करेंगे।

201. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
सिगमंड फ्रायड ने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत की नींव रखी, जो अचेतन और मनोयौन विकास पर केंद्रित है। अल्फ्रेड एडलर ने वैयक्तिक मनोविज्ञान विकसित किया, जिसमें हीनता दूर करने के प्रयासों पर बल दिया गया। कार्ल युंग ने विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान का प्रस्ताव दिया, जिसमें सामूहिक अचेतन और आद्यरूप शामिल हैं। हैरी स्टैक सुलिवन का पारस्परिक सिद्धांत सामाजिक अंतःक्रियाओं को व्यक्तित्व का आधार मानता है। ये सिद्धांत व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं—आंतरिक संघर्ष, व्यक्तिगत लक्ष्य, साझा प्रतीक और सामाजिक संबंध—को समझने हेतु विविध दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

202. (A) व्यक्तित्व के नैतिक विवेक के रूप में कार्य करना।
फ्रायड के अनुसार सुपर ईगो व्यक्तित्व की नैतिक शाखा है जो माता-पिता और सामाजिक मानकों को आत्मसात करने से विकसित होती है। इसका मुख्य कार्य ईगो को केवल वास्तविकता के बजाय उच्च नैतिक लक्ष्यों की ओर ले जाना है। यह इड के अनैतिक आवेगों को रोकता है और व्यक्ति के भीतर विवेक तथा आदर्शों का निर्माण करता है। जब व्यक्ति इन नैतिक मानकों का उल्लंघन करता है, तो सुपर ईगो अपराधबोध पैदा करता है। इस प्रकार, यह एक आंतरिक निर्णायक की

स्पष्ट प्रश्न और सीमित उत्तर विकल्प होते हैं। इसके विपरीत, प्रक्षेपी परीक्षण पूरी तरह से असंरचित होते हैं, जहाँ व्यक्ति को अस्पष्ट उद्दीपनों पर अपनी प्रतिक्रिया देनी होती है। इन्वेंटरी व्यक्ति के जागरूक विचारों को मापती हैं, जबकि प्रक्षेपी परीक्षण अचेतन मन के रहस्यों को उजागर करने का प्रयास करते हैं। संरचना का यह अंतर ही इन दोनों मूल्यांकन विधियों की स्कोरिंग और व्याख्या की सटीकता को निर्धारित करता है।

221. (C) कार्ल युंग
सामूहिक अचेतन की अवधारणा कार्ल युंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान का मुख्य स्तंभ है। युंग का मानना था कि व्यक्तिगत अचेतन के अलावा, मन का एक ऐसा हिस्सा भी होता है जो पूरी मानव जाति में साझा किया जाता है। इसमें वे सभी स्मृतियां, प्रतीक और आद्यरूप शामिल हैं जो हमें हमारे पूर्वजों के पूरे इतिहास से विरासत में मिले हैं। यह साझा विरासत ही हमारे सपनों, मिथकों और सार्वभौमिक मानवीय अनुभवों के पीछे का मुख्य कारण है। यह विचार युंग को फ्रायड से मौलिक रूप से अलग करता है और मानव मानस को वैश्विक संदर्भ में देखता है।

222. (B) संज्ञानात्मक, भावात्मक, व्यवहारात्मक
मृत्युदंड के बारे में विश्वास अभिवृत्ति के संज्ञानात्मक घटक को दर्शाता है क्योंकि यह तथ्यों और तर्कों पर आधारित है। किसी उम्मीदवार के बारे में भावनाएं भावात्मक घटक का प्रतिनिधित्व करती हैं जो संवेगात्मक पसंद या नापसंद से जुड़ी हैं। चुनाव में वोट देने की प्रवृत्ति व्यवहारात्मक घटक को दिखाती है जो वास्तविक क्रिया या कार्य करने के झुकाव से संबंधित है। ये तीनों घटक मिलकर एक पूर्ण अभिवृत्ति का निर्माण करते हैं, जो यह निर्धारित करती है कि व्यक्ति किसी सामाजिक मुद्दे या व्यक्ति के प्रति कैसा दृष्टिकोण रखेगा।

223. (A) आवर्ती पारस्परिक स्थितियों का अपेक्षाकृत स्थायी स्वरूप।
हैरी स्टैक सुलिवन के अनुसार व्यक्तित्व को एक पृथक आंतरिक संरचना के बजाय दूसरों के साथ होने वाली निरंतर अंतःक्रियाओं के रूप में समझा जाना चाहिए। उन्होंने व्यक्तित्व को उन व्यवहारों के आवर्ती स्वरूप के रूप में परिभाषित किया जो व्यक्ति सामाजिक और पारस्परिक स्थितियों में बार-बार प्रदर्शित करता है। यह दृष्टिकोण व्यक्तित्व को सामाजिक संबंधों के दर्पण में देखता है। सुलिवन का मानना था कि हमारे संबंध ही हमारी चिंता, सुरक्षा और आत्म-छवि को आकार देते हैं, जिससे हमारे व्यक्तित्व की एक स्थायी और पहचानने योग्य संरचना निर्मित होती है।

224. (B) केंद्रीकृत अधिकार और नियंत्रण
निरंकुश नेतृत्व शैली में सत्ता और निर्णय लेने की शक्ति पूरी तरह से नेता के पास केंद्रित होती है। नेता समूह के सदस्यों को निर्देश देता है कि उन्हें क्या और कैसे करना है, और वह उनके सुझावों को कोई महत्व नहीं देता। इस शैली में काम के प्रदर्शन पर कड़ा नियंत्रण रखा जाता है। यद्यपि यह शैली त्वरित निर्णयों और संकट की स्थितियों में बहुत प्रभावी हो सकती है, लेकिन लंबे समय में यह सदस्यों की पहल और रचनात्मकता को नकारात्मक रुप से प्रभावित कर सकती है क्योंकि इसमें संवाद और आपसी सहयोग का पूर्णतः अभाव होता है।

225. (B) अखंडता बनाम निराशा
एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के आठवें चरण में व्यक्ति 'अखंडता बनाम निराशा' के द्वंद्व का सामना करता है। यह चरण वृद्धावस्था के दौरान आता है जब व्यक्ति अपने पूरे जीवन के कार्यों और अनुभवों पर पीछे मुड़कर देखता है। यदि वह अपने जीवन को सार्थक और सफल मानता है, तो उसमें अखंडता और संतोष की भावना आती है। लेकिन यदि उसे लगता है कि उसने समय बर्बाद किया है या उसके पास बहुत सारे अधूरे लक्ष्य हैं, तो वह निराशा का अनुभव करता है। यह चरण जीवन के अंतिम पड़ाव पर शांति और गरिमा प्राप्त करने से जुड़ा है।

226. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
प्रथम प्रभाव सामाजिक प्रत्यक्षण का आधार है जहाँ हम दूसरों के बारे में शुरुआती राय बनाते हैं। मौलिक आरोपण त्रुटि आरोपण सिद्धांत की एक मुख्य घटना है जहाँ हम स्वभाव को अधिक महत्व देते हैं। सामीप्य पारस्परिक आकर्षण का एक प्रमुख निर्धारक है जो भौतिक निकटता से जुड़ा है। अनुरुपता समूह गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो समूह के दबाव में व्यवहार परिवर्तन को स्पष्ट करती है। ये सभी अवधारणाएं सामाजिक मनोविज्ञान के विभिन्न आयामों को समझने और मानवीय अंतःक्रियाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण करने हेतु आधार प्रदान करती हैं।

227. (C) दमन
दमन फ्रायड द्वारा प्रस्तावित सबसे मौलिक रक्षा तंत्र है। इसमें ईगो उन विचारों, यादों या इच्छाओं को सक्रिय रुप से अचेतन मन में धकेल देता है जो व्यक्ति हेतु बहुत अधिक चिंताजनक होते हैं। यह प्रक्रिया पूरी तरह से अचेतन रूप से होती है, जिसका अर्थ है कि व्यक्ति को पता नहीं चलता कि उसने कुछ छिपाया है। यद्यपि दबे हुए विचार चेतना में नहीं आते, लेकिन वे सपनों या व्यवहार के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से प्रकट हो सकते हैं। दमन मानसिक शांति बनाए रखने हेतु एक सुरक्षा घेरे की तरह कार्य करता है जो अहं की रक्षा करता है।

228. (D) उस संरचना को मापता है जिसे मापने का वह दावा करता है।
मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन में वैधता का अर्थ है परीक्षण की सटीकता। एक व्यक्तित्व परीक्षण को तभी वैध माना जा सकता है जब वह वास्तव में उन्हीं गुणों को मापे जिन्हें मापने हेतु उसे बनाया गया है। उदाहरण के लिए, यदि एक परीक्षण 'बहिर्मुखता' मापने का दावा करता है, तो उसके परिणाम व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार के साथ मेल खाने चाहिए। बिना वैधता के, कोई भी परीक्षण विश्वसनीय होने के बावजूद अर्थहीन हो सकता है। वैधता यह सुनिश्चित करती है कि प्राप्त निष्कर्ष वैज्ञानिक रुप से सही हैं और उनके आधार पर लिए गए निर्णय तर्कसंगत हैं।

पूरी तरह स्वतंत्र हो सकती हैं। यद्यपि कोई व्यवहार किसी पुरानी आवश्यकता से शुरु हुआ हो, लेकिन समय के साथ वह स्वयं में एक स्वतंत्र प्रेरक बन जाता है। यह सिद्धांत व्यक्तित्व की परिपक्वता और वर्तमान प्रवृत्तियों के महत्व पर बल देता है। यह फ्रायड के इस विचार को चुनौती देता है कि मानव व्यवहार हमेशा अचेतन बचपन के अनुभवों के पूर्ण नियंत्रण में रहता है।

212. (D) आत्म-रिपोर्ट
व्यक्तित्व इन्वेंटरी एक आत्म-रिपोर्ट परीक्षण है जहाँ व्यक्ति स्वयं अपने व्यवहार, भावनाओं और प्रवृत्तियों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। इसमें संरचित प्रश्नों की एक सूची होती है जिसका उत्तर 'हाँ/नहीं' या 'सहमत/असहमत' के रूप में दिया जाता है। यह विधि व्यक्ति के जागरूक विचारों और उसके द्वारा देखे गए स्वयं के स्वरुप को मापने में अत्यंत प्रभावी है। इसकी स्कोरिंग वस्तुनिष्ठ होती है, जिससे यह नैदानिक निदान और व्यावसायिक चयन हेतु एक विश्वसनीय और व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला उपकरण बन जाता है।

213. (C) अहस्तक्षेपकारी
अहस्तक्षेपकारी नेतृत्व शैली में नेता समूह की गतिविधियों में न्यूनतम हस्तक्षेप करता है और सदस्यों को अपने निर्णय लेने हेतु पूर्ण स्वतंत्रता देता है। ऐसा नेता केवल संसाधन उपलब्ध कराता है और सीधे मार्गदर्शन या नियंत्रण से बचता है। यह शैली उन समूहों हेतु सबसे उपयुक्त है जहाँ सदस्य अत्यधिक अनुभवी और आत्म-अनुशासित होते हैं। हालांकि, यदि सदस्यों को स्पष्ट दिशा की आवश्यकता हो, तो इस शैली के कारण काम में देरी या भ्रम की स्थिति पैदा हो सकती है क्योंकि इसमें सक्रिय नेतृत्व की भूमिका का अभाव होता है।

214. (B) स्किनर
बी.एफ. स्किनर मुख्य रुप से व्यवहारवाद से जुड़े हैं, जो व्यवहार को पूरी तरह से सुदृढ़ीकरण और दंड के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया के रूप में देखता है। उन्होंने व्यक्तित्व के आंतरिक गतिक या गुण सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित नहीं किया, जैसा कि फ्रायड, एडलर और लेविन ने किया था। स्किनर का मानना था कि 'व्यक्तित्व' केवल सीखे गए व्यवहारों का एक समूह है और आंतरिक मानसिक संरचनाओं का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। इसलिए, उन्हें उन शास्त्रीय व्यक्तित्व सिद्धांतकारों की श्रेणी में नहीं रखा जाता जो आंतरिक मानस की व्याख्या करते हैं।

215. (D) हेलो प्रभाव
हेलो प्रभाव एक संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जहाँ हम किसी व्यक्ति की एक अच्छी विशेषता, जैसे कि उसका आकर्षक चेहरा, के आधार पर उसके पूरे चरित्र के बारे में सकारात्मक राय बना लेते हैं। हम यह मान लेते हैं कि यदि कोई व्यक्ति सुंदर है, तो वह बुद्धिमान और दयालु भी होगा। यह प्रभाव हमारे सामाजिक प्रत्यक्षण को पक्षपाती बनाता है क्योंकि हम व्यक्ति के अन्य वास्तविक गुणों का निष्पक्ष मूल्यांकन करने के बजाय उसकी एक प्रमुख विशेषता से प्रभावित हो जाते हैं। इससे अक्सर दूसरों के बारे में हमारे सामाजिक निर्णय गलत हो सकते हैं।

216. (A) मनोसामाजिक
फ्रायड का सिद्धांत मुख्य रूप से अचेतन यौन प्रवृत्तियों और जैविक प्रेरकों पर आधारित है, जिसे उन्होंने मनोयौन चरणों के रूप में वर्णित किया। इसके विपरीत, एरिक एरिक्सन ने इन चरणों को सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में विस्तारित किया और मनोसामाजिक विकास का सिद्धांत दिया। एरिक्सन का मानना था कि व्यक्ति का विकास केवल जैविक नहीं है, बल्कि यह समाज के साथ उसकी अंतःक्रियाओं और जीवन भर आने वाले विभिन्न सामाजिक संकटों के समाधान पर निर्भर करता है। यह अंतर व्यक्तित्व विकास के प्रति एक आधुनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

217. (C) जीवन स्थान
कुर्ट लेविन की जीवन स्थान की परिभाषा उन सभी मनोवैज्ञानिक और भौतिक कारकों की समग्रता है जो किसी विशेष क्षण में व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। इसमें व्यक्ति की आंतरिक अवस्था और उसका वर्तमान वातावरण दोनों शामिल होते हैं। लेविन के अनुसार, व्यवहार इसी जीवन स्थान के भीतर होने वाली गतिशील अंतःक्रियाओं का परिणाम है। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि वातावरण केवल भौतिक नहीं, बल्कि व्यक्तिपरक भी है। यह व्यक्तित्व को एक स्थिर गुण के बजाय वर्तमान स्थिति की गतिशीलता के रूप में देखने पर बल देती है।

218. (A) व्यक्तित्व के निर्धारक
"प्रकृति बनाम पोषण" की बहस व्यक्तित्व के निर्धारकों को समझने हेतु केंद्रीय है। 'प्रकृति' उन आनुवंशिक और जैविक कारकों को संदर्भित करती है जो हमें विरासत में मिलते हैं, जबकि 'पोषण' हमारे पर्यावरण, परवरिश, संस्कृति और अनुभवों की भूमिका को दर्शाता है। मनोवैज्ञानिक यह अध्ययन करते हैं कि इन दोनों में से किसका प्रभाव व्यक्ति के गुणों और व्यवहार पर अधिक होता है। आधुनिक दृष्टिकोण यह मानता है कि व्यक्तित्व इन दोनों कारकों की एक जटिल अंतःक्रिया का परिणाम है, जहाँ जैविक क्षमताएं पर्यावरण के प्रभाव में विकसित होती हैं।

219. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
अनुरूपता वास्तव में सामूहिकवादी संस्कृतियों में अधिक पाई जाती है क्योंकि वहां समूह के सामंजस्य और सामाजिक मानदंडों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता से अधिक महत्व दिया जाता है। व्यक्तिगत संस्कृतियों में स्वायत्तता को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे वहां अनुरुपता का स्तर कम होता है। मानकीकृत सामाजिक प्रभाव एक शक्तिशाली शक्ति है जहाँ लोग सामाजिक स्वीकृति पाने और समूह से बाहर किए जाने के डर से दूसरों के साथ सहमत होते हैं। यह प्रभाव दर्शाता है कि सामाजिक फिटिंग की इच्छा हमारे स्वतंत्र निर्णयों को कैसे बदल सकती है।

220. (B) परीक्षण उद्दीपनों और प्रतिक्रिया प्रारुप की संरचनात्मकता में।
व्यक्तित्व इन्वेंटरी और प्रक्षेपी परीक्षण के बीच का मुख्य अंतर उनकी संरचना में है। इन्वेंटरी अत्यधिक संरचित होती हैं, जिनमें

नहीं है जो व्यक्तित्व की संरचना या विकास की व्याख्या करता है। इसके विपरीत, फ्रायड, ऑलपोर्ट और युंग के सिद्धांत सीधे तौर पर व्यक्तित्व के गुणों, संरचना और विकास के विभिन्न पहलुओं को समझने हेतु समर्पित हैं। आरोपण सिद्धांत केवल हमारे प्रत्यक्षण और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं पर केंद्रित है, न कि व्यक्ति के स्थायी आंतरिक गुणों पर।

168. (A) सकारात्मक वैलेंस
कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत में 'वैलेंस' किसी लक्ष्य या वस्तु की आकर्षक या विकर्षक शक्ति को दर्शाता है। जो शक्तियां या वस्तुएं व्यक्ति को अपने लक्ष्य की ओर आकर्षित करती हैं और उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होती हैं, उनमें सकारात्मक वैलेंस होता है। यह सकारात्मक ऊर्जा व्यक्ति को सक्रिय करती है और उसे जीवन स्थान में आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करती है। इसके विपरीत, जो चीजें भय पैदा करती हैं, उनमें नकारात्मक वैलेंस होता है। व्यवहार की दिशा और तीव्रता इन्हीं शक्तियों के संतुलन द्वारा निर्धारित होती है।

169. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
स्थितिजन्य परीक्षण का उद्देश्य केवल ज्ञान का आकलन करना नहीं है, बल्कि यह देखना है कि व्यक्ति वास्तविक जीवन जैसी चुनौतियों का सामना कैसे करता है। यह एक मानकीकृत परिस्थिति होती है जहाँ मूल्यांकनकर्ता व्यक्ति के व्यवहार और निर्णय लेने की क्षमता का प्रत्यक्ष अवलोकन करते हैं। यह कथन कि स्थितिजन्य परीक्षण केवल ज्ञान मापने हेतु है, गलत है क्योंकि इसका प्राथमिक ध्यान व्यवहार के व्यावहारिक पहलुओं पर होता है। यह विधि व्यावसायिक और सैन्य चयन प्रक्रियाओं में बहुत अधिक विश्वसनीय और प्रभावी मानी जाती है।

170. (A) सूचनात्मक प्रभाव
सूचनात्मक प्रभाव वह सामाजिक प्रक्रिया है जहाँ व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को जानकारी के एक विश्वसनीय स्रोत के रूप में स्वीकार करता है। यह विशेष रूप से तब होता है जब स्थिति अस्पष्ट होती है या व्यक्ति को अपने निर्णय पर संदेह होता है। व्यक्ति यह मानता है कि समूह के पास बेहतर जानकारी है और सही होने की इच्छा उसे समूह के साथ सहमत होने हेतु प्रेरित करती है। यह अनुरूपता केवल फिट होने हेतु नहीं, बल्कि वास्तविकता को समझने की एक कोशिश है, जहाँ व्यक्ति समूह की विशेषज्ञता पर अधिक भरोसा करता है।

171. (D) उपरोक्त सभी
व्यक्तित्व का निर्माण आनुवंशिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक और स्थितिजन्य कारकों के एक जटिल समन्वय का परिणाम है। आनुवंशिकता जैविक प्रवृत्तियों की नींव रखती है, जबकि संस्कृति और परिवार उन मूल्यों को निर्धारित करते हैं जिन्हें व्यक्ति अपनाता है। इसके अलावा, विशिष्ट जीवन की स्थितियां भी यह तय करती हैं कि ये गुण कैसे प्रकट होंगे। व्यक्तित्व को इनमें से किसी एक कारक तक सीमित नहीं किया जा सकता; यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जहाँ प्रकृति और परिवेश मिलकर एक अनूठे और स्थायी व्यक्तित्व को आकार देते हैं।

172. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
एरिक एरिक्सन का मनोसामाजिक सिद्धांत फ्रायड के विचारों से व्यापक है क्योंकि यह केवल बचपन तक सीमित नहीं है, बल्कि जन्म से लेकर मृत्यु तक के पूरे जीवनकाल को समाहित करता है। एरिक्सन का मानना था कि समाज और संस्कृति व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देने में निरंतर भूमिका निभाते हैं। जीवन के प्रत्येक चरण में एक विशिष्ट मनोवैज्ञानिक संकट होता है जिसे हल करना व्यक्ति के विकास हेतु आवश्यक है। यह दृष्टिकोण व्यक्तित्व को एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखता है जो निरंतर सामाजिक अंतःक्रियाओं से प्रभावित होती है।

173. (C) अपनी सफलताओं के लिए व्यक्तिगत श्रेय लेना और अपनी विफलताओं के लिए बाहरी कारकों को दोष देना।
आत्म-सेवा पूर्वाग्रह एक सामान्य आरोपण दोष है जहाँ व्यक्ति अपने आत्म-सम्मान को बनाए रखने हेतु अपनी सफलताओं का श्रेय अपनी प्रतिभा को देता है। इसके विपरीत, जब वह असफल होता है, तो वह इसकी जिम्मेदारी लेने के बजाय खराब परिस्थितियों या भाग्य को दोष देता है। यह प्रवृत्ति व्यक्ति को अपनी एक सकारात्मक छवि बनाए रखने में मदद करती है और उसे विफलता के मानसिक दर्द से बचाती है। हालांकि यह आत्मविश्वास बढ़ाता है, लेकिन यह अक्सर वास्तविकता के वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन और अपनी गलतियों से सीखने में बाधा डालता है।

174. (D) संसक्ति सदस्य की संतुष्टि से असंबंधित है।
समूह संसक्ति और सदस्यों की संतुष्टि के बीच एक बहुत गहरा और सीधा संबंध होता है। संसक्त समूहों में सदस्य एक-दूसरे के प्रति अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं, जिससे उनके बीच विश्वास और सहयोग बढ़ता है। यह सकारात्मक वातावरण सदस्यों की कार्य संतुष्टि और मानसिक खुशी को सीधे तौर पर बढ़ावा देता है। जब लोग एक ऐसे समूह का हिस्सा होते हैं जहाँ उन्हें स्वीकार किया जाता है और महत्व दिया जाता है, तो वे अधिक प्रेरित रहते हैं। इसलिए, यह कहना गलत है कि संसक्ति का सदस्य की संतुष्टि से कोई संबंध नहीं है।

175. (A) व्यक्तिपरक
गॉर्डन ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व के अध्ययन हेतु 'व्यक्तिपरक' दृष्टिकोण पर कड़ा बल दिया। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है और उसे सामान्य श्रेणियों में बांधकर पूरी तरह नहीं समझा जा सकता। व्यक्तिपरक दृष्टिकोण के माध्यम से मनोवैज्ञानिक एक विशिष्ट व्यक्ति के अनूठे गुणों और उसके जीवन के इतिहास पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ऑलपोर्ट के अनुसार, व्यक्तित्व का असली विज्ञान वही है जो व्यक्ति की विशिष्टता और उसके आंतरिक संगठन की गहराई को समझने का प्रयास करे, न कि केवल औसत और सामान्य मानकों का।

176. (B) समूह संसक्ति: समूह परिवेश में उपस्थित लोगों की संख्या।
समूह संसक्ति का अर्थ केवल समूह में उपस्थित लोगों की संख्या नहीं है, बल्कि यह उस शक्ति को दर्शाता है जो सदस्यों को एक-दूसरे के साथ और समूह के प्रति जोड़े रखती है। यह सदस्यों के बीच 'हम' की भावना और एकता का स्तर है। संख्या

229. (C) जीवन शैली
अल्फ्रेड एडलर के अनुसार 'जीवन शैली' व्यक्ति के व्यवहार, सोचने और कार्य करने का वह अनूठा तरीका है जो वह हीनता की भावनाओं को दूर करने और श्रेष्ठता प्राप्त करने हेतु विकसित करता है। यह व्यक्ति की अपनी रचनात्मकता और उसके बचपन के अनुभवों का परिणाम होती है। जीवन शैली व्यक्ति को एक विशिष्ट दिशा प्रदान करती है और यह निर्धारित करती है कि वह दुनिया की चुनौतियों और सामाजिक समस्याओं का सामना कैसे करेगा। एडलर का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति की जीवन शैली उसकी अद्वितीय पहचान और उसके जीवन के अर्थ को परिभाषित करती है।

230. (B) अपनी दुनिया को अर्थ और संरचना प्रदान करना।
अभिवृत्ति का ज्ञान कार्य व्यक्ति को उसके आसपास की जटिल और बदलती जानकारी को समझने हेतु एक मानसिक खाका प्रदान करता है। यह कार्य व्यक्ति को नई परिस्थितियों में तेजी से निर्णय लेने और सूचनाओं को व्यवस्थित करने में मदद करता है। अभिवृत्तियां एक संदर्भ ढांचे की तरह कार्य करती हैं, जिससे दुनिया अधिक पूर्वानुमेय और बोधगम्य लगती है। इससे व्यक्ति की मानसिक ऊर्जा बचती है क्योंकि उसे हर बार नई चीजों का मूल्यांकन शून्य से नहीं करना पड़ता। यह कार्य हमारे संज्ञानात्मक संतुलन और मानसिक स्पष्टता हेतु अनिवार्य है।

231. (D) शैक्षणिक और सामाजिक कौशल में महारत हासिल करना।
एरिक्सन के 'परिश्रम बनाम हीनता' के चरण में, जो लगभग छह से बारह वर्ष की आयु के बीच होता है, बच्चा स्कूल और समाज में अपनी जगह बनाने का प्रयास करता है। इस दौरान उसका मुख्य ध्यान नए ज्ञान को सीखने, कठिन कार्यों को पूरा करने और साथियों के बीच अपनी क्षमता सिद्ध करने पर होता है। यदि बच्चे को सफलता मिलती है और उसके प्रयासों की सराहना की जाती है, तो उसमें परिश्रम की भावना विकसित होती है। इसके विपरीत, बार-बार विफलता मिलने पर उसमें स्वयं के प्रति हीनता की भावना पैदा हो सकती है जो भविष्य को प्रभावित करती है।

232. (A) 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (16पीएफ)
16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली एक वस्तुनिष्ठ व्यक्तित्व इन्वेंटरी है जो रेमंड कैटेल द्वारा विकसित की गई थी। यह आत्म-रिपोर्ट पर आधारित है और इसमें संरचित प्रश्नों का उपयोग किया जाता है। इसके विपरीत, विषय आत्मबोध परीक्षण, रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण और हाउस-ट्री-पर्सन परीक्षण सभी प्रक्षेपी तकनीकें हैं जो अचेतन मन को मापने हेतु अस्पष्ट उद्दीपनों का उपयोग करती हैं। 16पीएफ का उपयोग गुणों के प्रत्यक्ष मापन हेतु किया जाता है, जबकि प्रक्षेपी परीक्षण छिपे हुए मनोवैज्ञानिक द्वंद्वों को उजागर करने हेतु डिज़ाइन किए गए हैं।

233. (C) सामाजिक मनोविज्ञान
सामाजिक मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो यह अध्ययन करता है कि व्यक्तियों के विचार, भावनाएं और व्यवहार दूसरों की उपस्थिति से कैसे प्रभावित होते हैं। यह क्षेत्र विशेष रूप से सामाजिक प्रत्यक्षण, अभिवृत्ति निर्माण, अनुरूपता और समूहों में होने वाली अंतःक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करता है। सामाजिक मनोवैज्ञानिक यह समझने का प्रयास करते हैं कि लोग एक-दूसरे के बारे में राय कैसे बनाते हैं और सामाजिक परिस्थितियां हमारे व्यक्तिगत व्यवहार को कैसे बदलती हैं। यह अध्ययन मानव व्यवहार को उसके व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में समझने हेतु अनिवार्य है।

234. (A) मनोवैज्ञानिक वातावरण
कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत में मनोवैज्ञानिक वातावरण वह वातावरण है जैसा कि वह किसी व्यक्ति द्वारा स्वयं अनुभव और समझा जाता है। यह वस्तुनिष्ठ भौतिक वातावरण से अलग हो सकता है। उदाहरण के लिए, एक कमरा जिसमें बहुत सारे लोग हों, एक सामाजिक व्यक्ति हेतु आकर्षक हो सकता है, जबकि एक शर्मीले व्यक्ति हेतु वह डरावना हो सकता है। लेविन का मानना था कि व्यवहार को समझने हेतु यह जानना आवश्यक है कि व्यक्ति अपने आसपास की दुनिया को कैसे देखता है, क्योंकि उसका व्यवहार उसी व्यक्तिपरक प्रत्यक्षण से निर्देशित होता है।

235. (D) सामूहिक अचेतन
सामूहिक अचेतन की अवधारणा कार्ल युंग द्वारा दी गई थी, न कि सिगमंड फ्रायड द्वारा। फ्रायड का सिद्धांत मुख्य रूप से व्यक्तिगत अचेतन, इड, ईगो, सुपर ईगो की संरचना, मनोयौन चरणों और अहं द्वारा उपयोग किए जाने वाले रक्षा तंत्रों पर आधारित है। युंग ने फ्रायड के विचारों का विस्तार करते हुए अचेतन के एक ऐसे गहरे स्तर की बात की जो पूरी मानव जाति में साझा किया जाता है। अन्य तीनों विकल्प मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के मूल तत्व हैं, जबकि सामूहिक अचेतन युंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की एक अनूठी और मौलिक विशेषता है।

236. (B) संज्ञानात्मक विसंगति
जब कोई व्यक्ति अपने अनैतिक व्यवहार हेतु "बाकी सब भी ऐसा ही करते हैं" जैसा तर्क देता है, तो वह वास्तव में अपनी संज्ञानात्मक विसंगति को कम करने का प्रयास कर रहा होता है। वह जानता है कि कार्य गलत है, लेकिन उसका व्यवहार इस ज्ञान के विपरीत है। इस विरोधाभास से उत्पन्न तनाव को कम करने हेतु वह अपने व्यवहार का औचित्य साबित करता है ताकि उसका आत्म-सम्मान बना रहे और वह खुद को अपराधी महसूस न करे। यह औचित्य उसे अपने विचारों और कार्यों के बीच एक बनावटी सामंजस्य स्थापित करने में मदद करता है।

237. (C) अनुरूपता
सोलोमन ऐश का प्रसिद्ध प्रयोग सामाजिक मनोविज्ञान में अनुरूपता का सबसे प्रभावशाली प्रदर्शन माना जाता है। इस प्रयोग में यह दिखाया गया कि कैसे एक व्यक्ति समूह के दबाव में आकर एक स्पष्ट गलत तथ्य को भी स्वीकार कर लेता है ताकि वह समूह से अलग न दिखे। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि मनुष्य में दूसरों के साथ सहमत होने और सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने की कितनी तीव्र इच्छा होती है। ऐश का कार्य यह समझने में मदद करता है कि समूह के मानदंड और

भूमिका निभाता है जो व्यवहार को सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप बनाता है।

203. (D) व्यवहारात्मक इरादा
व्यवहारात्मक इरादा किसी विशेष कार्य को करने की व्यक्ति की सचेत योजना या झुकाव को दर्शाता है। जब कोई व्यक्ति यह मानता है कि वह किसी व्यवहार को सफलतापूर्वक पूरा कर सकता है, तो यह उसके कार्य करने के आत्मविश्वास और प्रतिबद्धता से जुड़ा होता है। यह घटक अभिवृत्ति और वास्तविक क्रिया के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है। यह न केवल व्यक्ति की इच्छा को दर्शाता है, बल्कि उसकी उस व्यवहार को क्रियान्वित करने की मानसिक तत्परता को भी प्रकट करता है, जो अंततः उसके वास्तविक सामाजिक आचरण को निर्धारित करती है।

204. (B) व्यक्ति का प्रेक्षित व्यवहार।
स्थितिजन्य परीक्षण में मूल्यांकन का मुख्य केंद्र व्यक्ति का वह व्यवहार होता है जो वह किसी विशिष्ट और नियंत्रित परिस्थिति में प्रदर्शित करता है। इसमें आत्म-रिपोर्ट के बजाय प्रत्यक्ष अवलोकन को प्राथमिकता दी जाती है। मूल्यांकनकर्ता यह देखते हैं कि व्यक्ति दबाव में कैसे निर्णय लेता है, दूसरों के साथ कैसे सहयोग करता है और चुनौतियों का समाधान कैसे करता है। चूंकि यह व्यवहार वास्तविक क्रियाओं पर आधारित होता है, इसलिए यह व्यक्ति के व्यक्तित्व गुणों और व्यावहारिक क्षमताओं के बारे में अधिक वस्तुनिष्ठ और सटीक जानकारी प्रदान करता है।

205. (C) पुरुषों में स्त्री पक्ष और महिलाओं में पुरुष पक्ष।
कार्ल युंग के अनुसार एनिमा पुरुष के अचेतन मानस में मौजूद स्त्री तत्व का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि एनिमस महिला के अचेतन में मौजूद पुरुष तत्व को दर्शाता है। युंग का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति में दोनों लिंगों के मनोवैज्ञानिक गुण होते हैं। मानसिक संतुलन और वैयक्तिकीकरण हेतु इन विपरीत लिंगी प्रवृत्तियों को पहचानना और एकीकृत करना आवश्यक है। यह अवधारणा हमारे विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण और हमारे सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती है, जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व में एक समग्र पूर्णता और संवेगात्मक गहराई आती है।

206. (D) विश्वास बनाम अविश्वास
एरिक्सन का विश्वास बनाम अविश्वास का चरण फ्रायड के मुखीय चरण के समानांतर है, क्योंकि दोनों जीवन के पहले वर्ष में घटित होते हैं। इस दौरान शिशु अपनी उत्तरजीविता हेतु पूरी तरह से मुखीय गतिविधियों और देखभाल करने वालों पर निर्भर होता है। फ्रायड ने इसे शारीरिक संतुष्टि के संदर्भ में देखा, जबकि एरिक्सन ने इसे सामाजिक विश्वास के निर्माण के रूप में व्याख्यायित किया। यह अवस्था भविष्य के सभी मनोवैज्ञानिक विकास की आधारशिला है, जहाँ सुरक्षित देखभाल बच्चे में दुनिया के प्रति एक स्थायी और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करती है।

207. (A) व्यवहार सुसंगत हो, विशिष्ट न हो और उसमें कम सहमति हो।
आरोपण सिद्धांत के अनुसार, हम किसी के व्यवहार हेतु आंतरिक कारण तब मानते हैं जब वह व्यक्ति समान स्थितियों में बार-बार वही कार्य करता है। यदि वह व्यवहार अलग-अलग परिस्थितियों में भी वैसा ही रहता है और अन्य लोग उस स्थिति में वैसा नहीं करते, तो हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यह उस व्यक्ति के अपने स्वभाव या व्यक्तित्व के कारण है। यह प्रक्रिया हमें दूसरों के चरित्र के बारे में स्थिर धारणाएं बनाने में मदद करती है, जो हमारे भविष्य के सामाजिक व्यवहार और निर्णयों को एक तार्किक आधार प्रदान करती है।

208. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गॉर्डन ऑलपोर्ट को गुण सिद्धांत का अग्रदूत माना जाता है क्योंकि उन्होंने व्यक्तित्व को स्थिर और आंतरिक प्रवृत्तियों के एक अनूठे संगठन के रूप में परिभाषित किया। उनका मानना था कि ये गुण व्यक्ति के व्यवहार को विभिन्न परिस्थितियों में सुसंगत बनाते हैं और उसे एक विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। ऑलपोर्ट का तर्क था कि व्यक्तित्व का अध्ययन केवल सामान्य नियमों के बजाय व्यक्ति के अद्वितीय गुणों के आधार पर किया जाना चाहिए। उनके कार्यों ने व्यक्तित्व के वैज्ञानिक और व्यवस्थित अध्ययन हेतु एक नया और प्रभावशाली दृष्टिकोण प्रदान किया है।

209. (B) संसक्ति
'हम-की भावना' या समूह संसक्ति वह बंधन है जो सदस्यों को एक-दूसरे के साथ और समूह के सामूहिक उद्देश्यों के प्रति समर्पित रखता है। यह उस आकर्षण का स्तर है जो सदस्यों को समूह में रहने और उसके लक्ष्यों हेतु योगदान देने हेतु प्रेरित करता है। उच्च संसक्ति आपसी विश्वास, सहयोग और समूह के प्रति निष्ठा को बढ़ावा देती है। यह शक्ति समूह को एक सुसंगत इकाई के रूप में कार्य करने में सक्षम बनाती है और सदस्यों के बीच संवेगात्मक जुड़ाव को गहरा करती है, जो सामूहिक सफलता और स्थिरता हेतु अनिवार्य है।

210. (A) अभिवृत्ति की प्रकृति उसके घटकों को संदर्भित करती है, जबकि कार्य उन उद्देश्यों को संदर्भित करते हैं जो वह पूरा करती है।
अभिवृत्ति की प्रकृति यह स्पष्ट करती है कि वह किन तत्वों—संज्ञानात्मक, भावात्मक और व्यवहारात्मक—से मिलकर बनी है। इसके विपरीत, अभिवृत्ति के कार्य उन मनोवैज्ञानिक लाभों या उद्देश्यों पर केंद्रित होते हैं जो वह व्यक्ति हेतु प्रदान करती है, जैसे कि ज्ञान प्राप्त करना या अहं की रक्षा करना। यह अंतर महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल यह बताता है कि अभिवृत्ति क्या है, बल्कि यह भी बताता है कि हम इसे क्यों बनाए रखते हैं। प्रकृति संरचना को दर्शाती है, जबकि कार्य उसकी उपयोगिता और मानव व्यवहार में भूमिका को समझाते हैं।

211. (C) कार्यात्मक स्वायत्तता
गॉर्डन ऑलपोर्ट द्वारा प्रस्तावित कार्यात्मक स्वायत्तता की अवधारणा यह सुझाव देती है कि वयस्कों की वर्तमान प्रेरणाएं उनके बचपन के प्रारंभिक जैविक या मनोवैज्ञानिक कारणों से

उनके साथ घनिष्ठ संबंध बनाने और मित्रता विकसित करने की संभावना काफी बढ़ जाती है।

247. (D) स्व के दमित, अवांछनीय पहलू।
कार्ल युंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान में 'शैडो' व्यक्तित्व का वह अचेतन आद्यरूप है जिसमें वे सभी गुण और आवेग होते हैं जिन्हें व्यक्ति सामाजिक या नैतिक रूप से स्वीकार नहीं करता। इसमें अक्सर क्रोध और स्वार्थ जैसी दमित प्रवृत्तियां शामिल होती हैं जिन्हें हम दूसरों से छिपाने की कोशिश करते हैं। युंग का मानना था कि अपने शैडो को पूरी तरह नकारने के बजाय उसे स्वीकार करना और व्यक्तित्व में एकीकृत करना मानसिक स्वास्थ्य हेतु आवश्यक है। यह अंधेरा पक्ष यदि अनियंत्रित रहे, तो अचेतन रूप से हमारे व्यवहार को प्रभावित कर सकता है।

248. (A) पहचान बनाम भूमिका भ्रम
एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के अनुसार किशोरावस्था के दौरान व्यक्ति 'पहचान बनाम भूमिका भ्रम' के संकट का सामना करता है। इस अवस्था में किशोर अपनी शारीरिक परिपक्वता और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच तालमेल बिठाते हुए यह समझने की कोशिश करते हैं कि वे वास्तव में कौन हैं। वे विभिन्न मूल्यों और भूमिकाओं के साथ प्रयोग करते हैं। यदि वे एक सुसंगत आत्म-पहचान बनाने में सफल होते हैं, तो उनमें निष्ठा का गुण विकसित होता है। विफलता की स्थिति में वे भ्रमित महसूस कर सकते हैं, जिससे भविष्य में उनके जीवन की दिशा प्रभावित होती है।

249. (C) लेविन - जीवन स्थान
कुर्ट लेविन और जीवन स्थान की अवधारणा का युग्म पूरी तरह सही है, क्योंकि लेविन ने ही व्यवहार को व्यक्ति और उसके मनोवैज्ञानिक परिवेश की अंतःक्रिया के रूप में समझाने हेतु यह शब्द दिया था। अन्य युग्म गलत हैं क्योंकि श्रेष्ठता हेतु प्रयास एडलर का विचार है, मनोसामाजिक चरण एरिक्सन के हैं और सामूहिक अचेतन युंग की अवधारणा है। लेविन का सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि कैसे तात्कालिक परिस्थितियां और व्यक्तिगत धारणाएं मिलकर हमारे व्यवहार को निर्देशित करती हैं। यह सामाजिक व्यवहार के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण स्तंभ है।

250. (A) आरोपण
आरोपण वह सामाजिक प्रत्यक्षण प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम यह समझने की कोशिश करते हैं कि लोग किसी विशेष तरीके से व्यवहार क्यों करते हैं। हम अक्सर व्यवहार के पीछे के कारणों का पता लगाने हेतु उसे या तो व्यक्ति के स्वभाव या परिस्थिति के साथ जोड़ते हैं। यह प्रक्रिया हमें दूसरों के कार्यों को अर्थ देने और भविष्य में उनके व्यवहार की भविष्यवाणी करने में मदद करती है। आरोपण हमारे सामाजिक निर्णयों और दूसरों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करता है, जिससे हमारा सामाजिक संसार अधिक संगठित बनता है।

251. (D) एक व्यक्ति का पुस्तकालय की तुलना में किसी पार्टी में अलग व्यवहार करना।
व्यक्तित्व अभिव्यक्ति का स्थितिजन्य निर्धारक यह दर्शाता है कि हमारा व्यवहार केवल आंतरिक गुणों पर निर्भर नहीं होता, बल्कि उस समय की सामाजिक परिस्थिति से भी प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए, एक अंतर्मुखी व्यक्ति भी किसी पार्टी में शोर-शराबे और सामाजिक दबाव के कारण बातूनी लग सकता है, जबकि पुस्तकालय का शांत माहौल उसे पूरी तरह अलग आचरण हेतु विवश करता है। यह स्पष्ट करता है कि वातावरण और संदर्भ हमारे व्यक्तित्व के प्रदर्शन को कैसे लचीला बनाते हैं, जिससे व्यवहार एक स्थिति से दूसरी स्थिति में बदल सकता है।

252. (B) लैंगिक
फ्रायड के मनोयौन विकास सिद्धांत के अनुसार इडिपस कॉम्प्लेक्स लैंगिक चरण के दौरान उभरता है, जो लगभग तीन से छह वर्ष की आयु के बीच होता है। इस अवस्था में बालक अपनी माता के प्रति अचेतन आकर्षण और पिता के प्रति प्रतिस्पर्धा की भावना महसूस करता है। इस संघर्ष का समाधान तब होता है जब बच्चा अपने पिता के साथ तादात्म्य स्थापित करता है और उनके व्यवहार को अपना लेता है। यह प्रक्रिया बच्चे के सुपर ईगो के विकास और लिंग भूमिका की पहचान हेतु फ्रायड के अनुसार अत्यंत निर्णायक मानी जाती है, जो वयस्क व्यवहार को आकार देती है।

253. (C) केंद्रीय गुण
गॉर्डन ऑलपोर्ट के अनुसार केंद्रीय गुण वे प्रमुख विशेषताएं हैं जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का वर्णन करने हेतु सबसे अधिक उपयोग की जाती हैं। 'शर्मीलापन' एक ऐसा गुण है जो किसी व्यक्ति के अधिकांश कार्यों और सामाजिक अंतःक्रियाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रत्येक व्यक्ति में सामान्यतः पांच से दस ऐसे केंद्रीय गुण होते हैं जो स्वभाव की बुनियादी नींव बनाते हैं। ये गुण इतने प्रभावी होते हैं कि दूसरों के द्वारा आसानी से पहचाने जा सकते हैं और व्यक्ति के व्यवहार में निरंतरता प्रदान करते हैं, जिससे उसकी विशिष्ट पहचान निर्मित होती है।

254. (D) माना जाता है कि अभिवृत्तियां व्यवहार की भविष्यवाणी करती हैं।
सामाजिक मनोविज्ञान में अभिवृत्तियों का मापन इसलिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि अभिवृत्तियों को व्यवहार के मुख्य प्रेरक के रूप में देखा जाता है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि यदि हम किसी व्यक्ति के किसी विचार के प्रति दृष्टिकोण को जान लें, तो हम उसके भविष्य के कार्यों की काफी हद तक भविष्यवाणी कर सकते हैं। यद्यपि अभिवृत्तियां अमूर्त होती हैं और प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखी जा सकतीं, लेकिन उनके मापन से प्राप्त डेटा सामाजिक समस्याओं को समझने और मानवीय व्यवहार में सकारात्मक बदलाव लाने हेतु आवश्यक आधार प्रदान करता है।

255. (A) समूह संदर्भ में प्रभाव की एक प्रक्रिया।
नेतृत्व को केवल एक पद के रूप में नहीं, बल्कि एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में समझा जाना चाहिए जहाँ एक व्यक्ति साझा

(A) मुक्त साहचर्य के माध्यम से दमित बचपन की यादों को उजागर करने और उनका विश्लेषण करने के लिए।
(B) तर्कहीन या विकृत विश्वासों को व्यवस्थित रूप से चुनौती देने और पुनर्गठित करने के लिए।
(C) आत्म-साक्षात्कार के लिए एक सहायक और समानुभूतिपूर्ण वातावरण प्रदान करने के लिए।
(D) व्यक्तियों को अनैच्छिक शारीरिक प्रक्रियाओं पर स्वैच्छिक नियंत्रण प्राप्त करने में मदद करने के लिए।

21. एक रोगी विशेष शक्तियों वाले ऐतिहासिक व्यक्ति होने का दावा करते हुए भव्यता के व्यामोह की रिपोर्ट करता है। यह लक्षण किसकी सबसे बड़ी विशेषता है?
(A) सामान्यीकृत चिंता विकार
(B) बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार
(C) सिज़ोफ्रेनिया
(D) पैनिक विकार

22. व्यक्तित्व विकार की परिभाषित विशेषता यह है कि कुअनुकूलक गुण होते हैं:
(A) तीव्र और सामयिक।
(B) व्यापक, अनम्य और दीर्घकालिक।
(C) विशिष्ट, पहचाने जाने योग्य तनावों से उत्पन्न।
(D) अल्पकालिक औषधि से आसानी से उपचार योग्य।

23. निम्नलिखित में से कौन सा सिज़ोफ्रेनिया के नकारात्मक लक्षण का उदाहरण है?
(A) श्रवण विभ्रम
(B) अव्यवस्थित भाषा
(C) पैरानॉयड व्यामोह
(D) इच्छाशक्ति की कमी

24. मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा में एक सेवार्थी चिकित्सक के प्रति इस तरह प्रतिक्रिया करना शुरु कर देता है जैसे कि चिकित्सक उनके अतीत का कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति हो, जैसे कि माता-पिता। इस प्रक्रिया को कहा जाता है:
(A) स्थानांतरण
(B) प्रतिरोध
(C) मुक्त साहचर्य
(D) विरेचन

25. असामान्यता को परिभाषित करने के लिए "सामाजिक मानदंडों के उल्लंघन" के मानदंड को एकमात्र आधार के रूप में समस्याग्रस्त माना जाता है क्योंकि:
(A) यह बहुत अधिक वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक है।
(B) सभी समाजों में मानदंड स्थिर होते हैं।
(C) इसका उपयोग गैर-अनुरुपतावादी या अल्पसंख्यक समूहों को उत्पीड़ित करने के लिए किया जा सकता है।
(D) यह व्यक्ति के व्यक्तिगत कष्ट को ध्यान में नहीं रखता है।

26. निम्नलिखित में से कौन सा विकार कम से कम एक उन्मादी या मिश्रित प्रकरण द्वारा वर्गीकृत है, जो अक्सर गंभीर अवसादग्रस्त प्रकरणों के साथ वैकल्पिक रूप से आता है?
(A) द्विध्रुवी I विकार
(B) गंभीर अवसादग्रस्तता विकार
(C) डिस्थायमिक विकार
(D) चक्रवाती विकार

27. नैदानिक मनोविज्ञान का व्यवहारवादी मॉडल एक दुर्भीति की व्याख्या इस प्रकार करेगा:
(A) एक अचेतन द्वंद्व का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व।
(B) शारीरिक संवेदनाओं की विनाशकारी गलत व्याख्या का परिणाम।
(C) एक दोषपूर्ण माता-पिता-बच्चे के संबंध की अभिव्यक्ति।
(D) शास्त्रीय अनुकूलन के माध्यम से प्राप्त एक अनुकूलित भय प्रतिक्रिया।

28. जब कोई व्यक्ति उस पदार्थ का उपयोग बंद कर देता है जिस पर वह निर्भर है, तो शारीरिक या मनोवैज्ञानिक लक्षणों के अनुभव को क्या कहा जाता है?
(A) सहिष्णुता
(B) निवर्तन
(C) मादकता
(D) पुनरावर्तन

29. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।
सूची I: (विकार)
P. सामान्यीकृत चिंता विकार
Q. पैनिक विकार
R. सिज़ोफ्रेनिया
S. गंभीर अवसादग्रस्तता विकार
सूची II: (मूल विशेषता)
1. व्यामोह या विभ्रम की उपस्थिति
2. निरंतर उदास मनोदशा और एनहेडोनिया
3. बिना संकेत के, बार-बार होने वाले पैनिक आक्रमण
4. दीर्घकालिक, अनियंत्रित चिंता
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

30. सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में, विकास को सुगम बनाने वाली मुख्य शर्तें वास्तविकता, समानुभूति और _________ हैं:
(A) आमना-सामना
(B) व्याख्या
(C) व्यवहारिक पूर्वाभ्यास
(D) बिना शर्त सकारात्मक सम्मान

है। चूंकि व्यक्ति स्वयं को सबसे बेहतर जानता है, इसलिए उसकी रिपोर्ट को गुणों के मापन का आधार बनाया जाता है। इसकी स्कोरिंग मानकीकृत होती है, जिससे यह नैदानिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में व्यक्तित्व का एक सुसंगत और विश्वसनीय डेटा प्रदान करने हेतु सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली विधि है।

265. (C) किसी दिए गए क्षण में व्यक्ति की संपूर्ण मनोवैज्ञानिक दुनिया।
कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत में 'जीवन स्थान' व्यक्ति की संपूर्ण मनोवैज्ञानिक वास्तविकता को दर्शाता है। इसमें वे सभी कारक—आंतरिक आवश्यकताएं, विश्वास, यादें और वातावरण का प्रत्यक्ष अनुभव—शामिल होते हैं जो किसी विशेष समय पर व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। लेविन के अनुसार, व्यवहार व्यक्ति और उसके जीवन स्थान की गतिशील अंतःक्रिया का परिणाम है। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि वातावरण केवल भौतिक नहीं, बल्कि व्यक्तिपरक भी है, क्योंकि व्यक्ति दुनिया को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अनुभव करता है।

266. (A) मौलिक आरोपण त्रुटि
मौलिक आरोपण त्रुटि एक ऐसी संज्ञानात्मक प्रवृत्ति है जिसमें हम दूसरों के व्यवहार की व्याख्या करते समय उनके व्यक्तिगत गुणों को अधिक महत्व देते हैं, जबकि उस समय की बाहरी परिस्थितियों के प्रभाव को पूरी तरह नजरअंदाज कर देते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई सड़क पर गिर जाता है, तो हम उसे अनाड़ी मान लेते हैं और यह नहीं सोचते कि सड़क शायद फिसलन भरी हो सकती है। यह प्रवृत्ति इसलिए होती है क्योंकि हमारा ध्यान उस व्यक्ति पर केंद्रित होता है, न कि उसके आसपास के सामाजिक और भौतिक संदर्भ की वास्तविकताओं पर।

267. (D) पारस्परिक संबंध
हैरी स्टैक सुलिवन का मानना था कि व्यक्तित्व कोई स्वतंत्र आंतरिक इकाई नहीं है, बल्कि इसे केवल अन्य लोगों के साथ होने वाली सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से ही समझा जा सकता है। उनके अनुसार, हमारा व्यवहार और हमारा आत्म-प्रत्यक्षण उन संबंधों से आकार लेता है जो हम दूसरों के साथ बनाते हैं। सुलिवन ने प्रस्तावित किया कि व्यक्तित्व आवर्ती सामाजिक स्थितियों का एक स्थायी स्वरूप है। इसलिए, व्यक्तित्व के अध्ययन हेतु व्यक्ति के पारस्परिक जगत, उसकी चिंताओं और सामाजिक सुरक्षा की खोज का विश्लेषण करना अनिवार्य है।

268. (B) स्रोत
गॉर्डन ऑलपोर्ट ने व्यक्तिगत प्रवृत्तियों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया था: कार्डिनल, केंद्रीय और गौण। 'स्रोत' गुणों की अवधारणा रेमंड कैटेल द्वारा प्रस्तावित की गई थी, न कि ऑलपोर्ट द्वारा। ऑलपोर्ट का ध्यान उन गुणों पर था जिन्हें बाहरी व्यवहार के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। कार्डिनल गुण जीवन पर हावी होते हैं, केंद्रीय गुण व्यक्तित्व की नींव बनाते हैं और गौण गुण केवल विशिष्ट परिस्थितियों में प्रकट होते हैं। सिद्धांतों के इस अंतर को समझना व्यक्तित्व के गुण सिद्धांतों को स्पष्ट करने हेतु महत्वपूर्ण है।

269. (C) किसी वस्तु की ओर या उससे दूर हमारे व्यवहार का मार्गदर्शन करना।
अभिवृत्ति का सबसे बुनियादी और महत्वपूर्ण कार्य व्यक्ति के व्यवहार को दिशा प्रदान करना है। यह व्यक्ति को यह तय करने में मदद करती है कि उसे किसी विशेष वस्तु या विचार के प्रति कैसा आचरण करना चाहिए। एक सकारात्मक अभिवृत्ति हमें किसी चीज की ओर आकर्षित करती है और उसके साथ जुड़ने हेतु प्रेरित करती है, जबकि नकारात्मक अभिवृत्ति हमें उससे दूर ले जाती है। अभिवृत्तियां हमारे निर्णयों हेतु एक मानसिक खाका प्रदान करती हैं, जिससे हम सामाजिक दुनिया में अधिक प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देने में सक्षम होते हैं।

270. (D) घनिष्ठ, आत्मीय संबंध
एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के छठे चरण में, जो युवा वयस्कता के दौरान होता है, व्यक्ति 'घनिष्ठता बनाम अलगाव' के संकट का सामना करता है। इस अवस्था में मुख्य चुनौती दूसरों के साथ गहरे और स्थायी संबंध बनाना है। इसके लिए एक मजबूत आत्म-पहचान का होना आवश्यक है। यदि व्यक्ति अपनी भावनाओं को साझा करने और प्रतिबद्धता निभाने में सफल होता है, तो वह घनिष्ठता प्राप्त करता है। विफलता की स्थिति में व्यक्ति सामाजिक अलगाव और अकेलेपन का अनुभव कर सकता है, जो उसके भविष्य के भावनात्मक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

271. (A) ईगो
फ्रायड के अनुसार ईगो व्यक्तित्व का वह तर्कसंगत हिस्सा है जो 'वास्तविकता सिद्धांत' के आधार पर कार्य करता है। इसका मुख्य कार्य इड की अचेतन इच्छाओं को बाहरी दुनिया की व्यावहारिक सीमाओं और सुपर ईगो के नैतिक मानकों के साथ संतुलित करना है। ईगो यथार्थवादी सोच का उपयोग करता है ताकि इच्छाओं को सुरक्षित और सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीके से पूरा किया जा सके। यह तात्कालिक संतुष्टि को तब तक रोकने की शक्ति रखता है जब तक कि उपयुक्त अवसर न मिल जाए, जो व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन प्रबंधन हेतु अनिवार्य है।

272. (B) उपरोक्त सभी
अनुरूपता का स्तर कई सामाजिक कारकों द्वारा निर्धारित होता है। समूह का आकार बढ़ने से दबाव बढ़ता है, हालांकि एक निश्चित सीमा के बाद यह स्थिर हो जाता है। समूह की सर्वसम्मति सबसे महत्वपूर्ण है; यदि सभी सदस्य एकमत हैं, तो व्यक्ति के लिए असहमत होना बहुत कठिन होता है। इसके अलावा, समूह की प्रतिष्ठा भी व्यक्ति को अनुरूप होने हेतु प्रेरित करती है क्योंकि लोग उच्च स्थिति वाले समूहों द्वारा स्वीकार किए जाने की इच्छा रखते हैं। ये सभी तत्व मिलकर यह तय करते हैं कि कोई व्यक्ति समूह के दबाव में कितना प्रभावित होगा।

लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु दूसरों को प्रभावित करता है। समूह गतिशीलता के संदर्भ में, नेतृत्व का अर्थ है समूह की गतिविधियों को दिशा देना, सामंजस्य बनाए रखना और सदस्यों के प्रयासों को संगठित करना। प्रभावी नेतृत्व स्थिति, अनुयायियों की आवश्यकताओं और नेता की कार्यशैली के बीच एक सही संतुलन पर निर्भर करता है। यह एक सामाजिक अंतःक्रिया है जो समूह की सफलता और स्थिरता हेतु अनिवार्य है।

256. (B) व्यक्तिकरण
हैरी स्टैक सुलिवन के पारस्परिक सिद्धांत में 'व्यक्तिकरण' एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा है। यह उन मानसिक छवियों को संदर्भित करता है जो व्यक्ति दूसरों के साथ होने वाली सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से अपने और दूसरों के बारे में विकसित करता है। ये धारणाएं, जैसे 'गुड-मी' या 'बैड-मी', हमारे आत्म-सम्मान और चिंता के स्तर को निर्धारित करती हैं। सुलिवन का मानना था कि हमारा पूरा व्यक्तित्व इन व्यक्तिकरणों का एक जटिल समूह है, जो यह तय करता है कि हम सामाजिक स्थितियों में कैसी प्रतिक्रिया देंगे और दूसरों से कैसे जुड़ेंगे।

257. (D) एडलर - मनोसामाजिक
अल्फ्रेड एडलर का सिद्धांत 'वैयक्तिक मनोविज्ञान' के रूप में जाना जाता है, न कि मनोसामाजिक। मनोसामाजिक विकास का सिद्धांत एरिक एरिक्सन द्वारा प्रस्तावित किया गया था। अन्य युग्म सही हैं: फ्रायड का सिद्धांत गतिक है क्योंकि यह आंतरिक शक्तियों पर आधारित है, ऑलपोर्ट गुणों के माध्यम से व्यक्तित्व को समझाते हैं, और लेविन का क्षेत्र सिद्धांत व्यक्ति और वातावरण की अंतःक्रिया पर केंद्रित है। सिद्धांतों का यह सही वर्गीकरण विभिन्न मनोवैज्ञानिक विचारधाराओं और उनके संस्थापकों के विशिष्ट योगदानों को समझने हेतु आवश्यक है।

258. (A) अहं-रक्षक कार्य
अभिवृत्ति का अहं-रक्षक कार्य व्यक्ति के मानस को उन अप्रिय वास्तविकताओं या भावनाओं से बचाने का कार्य करता है जो उसके आत्म-सम्मान हेतु खतरा पैदा कर सकती हैं। इसके माध्यम से व्यक्ति अक्सर अपनी कमियों को छिपाने हेतु रक्षा तंत्रों का उपयोग करता है। यह कार्य चिंता को कम करने और व्यक्ति की अपनी छवि को सकारात्मक बनाए रखने में मदद करता है। इस प्रकार, अभिवृत्तियां एक मनोवैज्ञानिक ढाल के रूप में कार्य करती हैं जो आंतरिक संघर्षों से सुरक्षा प्रदान करती हैं और व्यक्ति के मानसिक संतुलन को स्थिर बनाए रखती हैं।

259. (C) अस्पष्ट उद्दीपनों का उपयोग
प्रक्षेपी परीक्षणों की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि वे व्यक्ति को अस्पष्ट और असंरचित उद्दीपन प्रदान करते हैं। चूंकि इन उद्दीपनों का कोई एक निश्चित अर्थ नहीं होता, इसलिए व्यक्ति उन्हें अर्थ देने हेतु अपनी आंतरिक भावनाओं और अचेतन मन की दमित इच्छाओं का उपयोग करता है। वह अनजाने में अपनी प्रवृत्तियों को उन पर आरोपित कर देता है। यह विधि व्यक्तित्व के उन गहरे पहलुओं को उजागर करने में अत्यंत प्रभावी है जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से प्रश्नावली के माध्यम से नहीं मापा जा सकता। यह नैदानिक मनोविज्ञान में उपयोगी है।

260. (D) संसक्ति
समूह संसक्ति वह बल है जो सदस्यों के बीच 'हम-की भावना' या एकता को दर्शाता है। यह उस स्तर को मापता है जिस तक समूह के सदस्य एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं और समूह में बने रहने हेतु प्रेरित महसूस करते हैं। संसक्ति आपसी विश्वास, साझा मूल्यों और सामूहिक लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्धता से उत्पन्न होती है। उच्च संसक्ति वाले समूहों में सहयोग अधिक होता है और सदस्य सामूहिक सफलता हेतु व्यक्तिगत हितों का त्याग करने हेतु तैयार रहते हैं। यह शक्ति समूह की स्थिरता और उसकी कार्यक्षमता को सुदृढ़ करती है।

261. (C) हेलो प्रभाव
हेलो प्रभाव एक संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जिसमें हम किसी व्यक्ति की एक सकारात्मक विशेषता के आधार पर उसके पूरे चरित्र के बारे में अनुकूल धारणा बना लेते हैं। हम यह मान लेते हैं कि यदि वह बुद्धिमान है, तो वह निश्चित रूप से कुशल और ईमानदार भी होगा, भले ही हमारे पास इसके प्रमाण न हों। यह प्रभाव हमारे सामाजिक निर्णयों को गहराई से प्रभावित करता है और अक्सर दूसरों के वास्तविक गुणों के वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन में बाधा डालता है। इससे हम दूसरों के बारे में बहुत जल्दी और कभी-कभी गलत और पक्षपाती राय बना लेते हैं।

262. (B) परिश्रम बनाम हीनता
एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास सिद्धांत के अनुसार परिश्रम बनाम हीनता का चरण स्कूली आयु के दौरान आता है। इस अवस्था में बच्चा नए शैक्षणिक और सामाजिक कौशल सीखने का प्रयास करता है। यदि वह इन चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक करता है और उसे सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है, तो उसमें परिश्रम की भावना विकसित होती है। लेकिन यदि वह लगातार विफल होता है या उसकी तुलना दूसरों से करके उसे नीचा दिखाया जाता है, तो उसमें हीनता की भावना पैदा हो सकती है। यह चरण भविष्य के कार्य व्यवहार हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

263. (D) लोग हीनता को दूर करने और व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।
अल्फ्रेड एडलर का दृष्टिकोण फ्रायड के जैविक नियतिवाद से अलग था। उनका मानना था कि मानव जाति की मुख्य प्रेरणा हीनता की स्वाभाविक भावनाओं को दूर करना और श्रेष्ठता हेतु प्रयास करना है। एडलर ने प्रस्तावित किया कि प्रत्येक व्यक्ति अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु एक अद्वितीय 'जीवन शैली' विकसित करता है। उन्होंने सामाजिक रुचि और सहयोग को मानसिक स्वास्थ्य हेतु अनिवार्य माना। उनके अनुसार, मनुष्य अपने भविष्य के उद्देश्यों से प्रेरित होता है और उसमें अपने व्यक्तित्व को रचनात्मक रूप से आकार देने की जन्मजात शक्ति होती है।

264. (A) व्यक्ति की आत्म-रिपोर्ट पर।
व्यक्तित्व इन्वेंटरी मूल्यांकन का एक वस्तुनिष्ठ उपकरण है जो पूरी तरह से व्यक्ति की आत्म-रिपोर्ट पर निर्भर करता है। इसमें मानकीकृत कथनों की एक श्रृंखला होती है जहाँ व्यक्ति को अपनी आदतों और व्यवहारों के बारे में जानकारी देनी होती

गुप्त पहलुओं का सूक्ष्म विश्लेषण करने में मदद करते हैं जिन्हें वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली के माध्यम से उजागर करना संभव नहीं है।

282. (A) इड; ईगो
फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत में इड पूरी तरह से 'सुख सिद्धांत' पर कार्य करता है, जिसका एकमात्र लक्ष्य जैविक आवश्यकताओं की तात्कालिक संतुष्टि प्राप्त करना है। इसके विपरीत, ईगो 'वास्तविकता सिद्धांत' का पालन करता है, जो बाहरी दुनिया की वास्तविक परिस्थितियों और सीमाओं का मूल्यांकन करता है। ईगो का कार्य इड की अचेतन इच्छाओं को सुरक्षित और सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीके से पूरा करना है। यह तात्कालिक संतुष्टि को स्थगित कर सकता है और व्यावहारिक योजनाएं बनाता है। सुख और वास्तविकता के बीच का संतुलन स्वस्थ विकास सुनिश्चित करता है।

283. (D) अहं-रक्षक कार्य
जब कोई व्यक्ति यह विश्वास रखता है कि उसकी अपनी संस्कृति दूसरों से श्रेष्ठ है, तो यह अभिवृत्ति अक्सर उसके अहं-रक्षक कार्य को पूरा करती है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति के आत्म-सम्मान को सुदृढ़ करता है और उसे अपनी पहचान के प्रति सुरक्षित महसूस कराता है। अपनी समूह पहचान को उच्च मानकर व्यक्ति आंतरिक असुरक्षाओं से बचता है और बाहरी दुनिया के प्रति एक रक्षात्मक ढाल तैयार करता है। इस प्रकार, अभिवृत्तियां व्यक्ति के मानस को उन संवेगात्मक चोटों से भी बचाती हैं जो उसकी आत्म-छवि को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती हैं।

284. (B) पारस्परिक आकर्षण
सामाजिक मनोविज्ञान में समानता को पारस्परिक आकर्षण का सबसे शक्तिशाली भविष्यवक्ता माना जाता है। अनुसंधान यह सिद्ध करते हैं कि लोग उन व्यक्तियों के प्रति अधिक आकर्षित होते हैं जिनके विचार, अभिवृत्तियां और रुचियां उनके समान होती हैं। समानता आपसी समझ को सरल बनाती है, संचार में बाधाओं को कम करती है और हमारे स्वयं के विश्वासों को सामाजिक समर्थन प्रदान करती है। जब हम किसी समान विचारधारा वाले व्यक्ति से मिलते हैं, तो हमें एक प्रकार का संवेगात्मक सामंजस्य महसूस होता है, जिससे मित्रता बनने की संभावना काफी बढ़ जाती है।

285. (C) चर्चा को प्रोत्साहित करना और समूह की प्रतिक्रिया पर विचार करना।
एक लोकतांत्रिक नेता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह समूह के सदस्यों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करता है। वह खुले संवाद को बढ़ावा देता है और यह सुनिश्चित करता है कि सभी की राय सुनी जाए। ऐसा नेता एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है जो टीम के सुझावों के आधार पर निर्णय लेता है। यह शैली न केवल बेहतर परिणामों की ओर ले जाती है, बल्कि समूह में विश्वास और जिम्मेदारी की भावना को भी गहरा करती है, जिससे सदस्य साझा लक्ष्यों के प्रति अधिक प्रतिबद्ध होते हैं और उत्पादकता बढ़ती है।

286. (D) कार्ल युंग
आद्यरूपों की अवधारणा कार्ल युंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान का मुख्य केंद्र है। युंग का मानना था कि सामूहिक अचेतन में कुछ सार्वभौमिक मानसिक चित्र होते हैं जो पूरी मानव जाति में साझा किए जाते हैं, जिन्हें आद्यरूप कहा जाता है। ये आद्यरूप, जैसे 'माता' या 'नायक', हमारे सपनों और मिथकों में बार-बार प्रकट होते हैं और हमारी धारणाओं को अचेतन रूप से आकार देते हैं। यह अवधारणा फ्रायड के व्यक्तिगत अचेतन से अलग है और मानव मानस की एक गहरी एकता की ओर संकेत करती है जो प्राचीन स्मृतियों और प्रतीकों पर आधारित है।

287. (A) इसमें वस्तुनिष्ठ स्कोरिंग के साथ प्रश्नों का एक मानकीकृत सेट होता है।
व्यक्तित्व इन्वेंटरी व्यक्तित्व मूल्यांकन का एक संरचित उपकरण है जिसकी प्राथमिक विशेषता इसकी वस्तुनिष्ठता है। इसमें प्रश्नों का एक निश्चित सेट होता है जिसमें उत्तरदाताओं को सीमित विकल्पों में से चुनना होता है। चूंकि इसकी स्कोरिंग और व्याख्या पहले से निर्धारित नियमों पर आधारित होती है, इसलिए इसमें मूल्यांकनकर्ता के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों की कोई संभावना नहीं रहती। यह विधि बड़ी संख्या में लोगों का सुसंगत मापन करने हेतु अत्यंत प्रभावी है, जिससे प्राप्त डेटा को वैज्ञानिक रूप से मान्य माना जाता है, जो मनोवैज्ञानिक अनुसंधान हेतु उपयोगी है।

288. (B) गुदा
फ्रायड के अनुसार गुदा चरण के दौरान, जो लगभग डेढ़ से तीन वर्ष की आयु तक चलता है, बच्चा मल त्याग के नियंत्रण के माध्यम से अपनी शक्ति का अनुभव करता है। यदि इस चरण के दौरान शौचालय प्रशिक्षण अत्यधिक सख्त होता है, तो बच्चा इसमें स्थिर हो सकता है। वयस्क होने पर, ऐसा व्यक्ति 'गुदा-प्रतिधारक' व्यक्तित्व गुण प्रदर्शित कर सकता है, जिसमें अत्यधिक सुव्यवस्था, कंजूसी और हठ शामिल होता है। यह व्यवहार उसके बचपन के उन प्रारंभिक नियंत्रण अनुभवों के साथ स्थायी जुड़ाव को दर्शाता है, जो उसके वयस्क व्यवहार को आकार देते हैं।

289. (B) शैशवावस्था
एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के प्रथम चरण में विश्वास बनाम अविश्वास का संकट होता है, जो जन्म से लगभग एक वर्ष की आयु तक चलता है। इस दौरान शिशु अपनी उत्तरजीविता हेतु पूरी तरह से देखभाल करने वालों पर निर्भर होता है। यदि उसे निरंतर प्रेम और सुरक्षा मिलती है, तो उसमें दुनिया के प्रति विश्वास की भावना विकसित होती है। इसके विपरीत, उपेक्षा से उसमें अविश्वास और भय पैदा हो सकता है, जो उसके भविष्य के सामाजिक संबंधों की स्थायी आधारशिला बनता है। यह चरण भविष्य के मानसिक स्वास्थ्य हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक होता है।

290. (A) वैलेंस
व्यक्तित्व के निर्धारकों में मुख्य रूप से आनुवंशिकता, वातावरण और स्थितिजन्य कारक शामिल होते हैं। आनुवंशिकता जैविक प्रवृत्तियां प्रदान करती है, वातावरण इन प्रवृत्तियों को आकार

273. (B) एक अस्पष्ट तस्वीर के बारे में कहानी सुनाना।
विषय आत्मबोध परीक्षण एक प्रसिद्ध प्रक्षेपी तकनीक है जिसमें व्यक्ति को अस्पष्ट सामाजिक दृश्यों वाले कार्ड दिखाए जाते हैं। उत्तरदाता से उन चित्रों के आधार पर एक काल्पनिक कहानी सुनाने हेतु कहा जाता है, जिसमें पात्रों की भावनाओं और भविष्य का वर्णन हो। इस प्रक्रिया में व्यक्ति अनजाने में अपनी दमित भावनाओं, आंतरिक संघर्षों और व्यक्तिगत आवश्यकताओं को उन कहानियों में आरोपित कर देता है। यह परीक्षण व्यक्ति के व्यक्तित्व की गहराई और उसके अचेतन मन की प्रवृत्तियों को उजागर करने हेतु एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है।

274. (A) एडलर
'जीवन शैली' की अवधारणा अल्फ्रेड एडलर के वैयक्तिक मनोविज्ञान का केंद्रीय आधार है। एडलर का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी हीनता की भावनाओं को दूर करने और श्रेष्ठता प्राप्त करने हेतु व्यवहार, आदतों और दृष्टिकोणों का एक अनूठा स्वरूप विकसित करता है। यह जीवन शैली बचपन के प्रारंभिक वर्षों में ही स्थापित हो जाती है और व्यक्ति के पूरे जीवन को दिशा प्रदान करती है। यह यह निर्धारित करती है कि व्यक्ति दुनिया को कैसे देखता है और अपने सामाजिक तथा व्यक्तिगत लक्ष्यों को किस प्रकार प्राप्त करने हेतु कार्य करता है।

275. (C) ग्रुपथिंक
ग्रुपथिंक एक मनोवैज्ञानिक घटना है जो अत्यधिक संसक्त समूहों में घटित होती है। इसमें समूह के सदस्य आपसी सहमति बनाए रखने हेतु इतने उत्सुक होते हैं कि वे वैकल्पिक विचारों और वास्तविकता के यथार्थवादी मूल्यांकन को पूरी तरह नजरअंदाज कर देते हैं। सर्वसम्मति का दबाव इतना प्रबल होता है कि कोई भी सदस्य असहमति व्यक्त करने का साहस नहीं जुटा पाता। इसके परिणामस्वरूप समूह अक्सर गलत और जोखिम भरे निर्णय लेता है, क्योंकि निर्णय लेने की प्रक्रिया में निष्पक्षता और तार्किकता का पूर्णतः अभाव हो जाता है। यह सामूहिक त्रुटि है।

276. (D) गॉर्डन ऑलपोर्ट
गॉर्डन ऑलपोर्ट ने 'प्रेरणाओं की कार्यात्मक स्वायत्तता' की अवधारणा प्रस्तावित की। उनका मानना था कि यद्यपि वयस्क व्यवहार के मूल कारण बचपन के अनुभवों में हो सकते हैं, लेकिन समय के साथ ये व्यवहार अपने आप में स्वतंत्र और स्वयं-प्रेरित बन जाते हैं। उदाहरण के लिए, एक नाविक जो शुरू में आजीविका हेतु समुद्र में जाता है, वह बाद में केवल समुद्र से प्रेम के कारण ऐसा करना जारी रख सकता है। यह सिद्धांत व्यक्तित्व की परिपक्वता पर बल देता है और बताता है कि वयस्क उद्देश्य अपने प्रारंभिक स्रोतों से पूरी तरह मुक्त हो सकते हैं।

277. (C) यह विश्वास कि कार की ईंधन दक्षता अच्छी है।
अभिवृत्ति का संज्ञानात्मक घटक उन तथ्यों और विश्वासों का प्रतिनिधित्व करता है जो व्यक्ति किसी वस्तु के बारे में रखता है। जब कोई व्यक्ति किसी कार ब्रांड के बारे में यह मानता है कि उसकी ईंधन दक्षता अच्छी है या उसकी सुरक्षा रेटिंग उच्च है, तो यह उसके ज्ञान और तार्किक मूल्यांकन को दर्शाता है। यह विश्वास ही उसकी अभिवृत्ति का वैचारिक आधार बनता है। संज्ञानात्मक घटक व्यक्ति को किसी वस्तु के गुणों के आधार पर एक राय बनाने में मदद करता है, जो आगे चलकर उसके भावनात्मक जुड़ाव और वास्तविक व्यवहार को गहराई से प्रभावित कर सकता है।

278. (B) एरिक्सन
एरिक एरिक्सन ने व्यक्तित्व विकास के प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने फ्रायड के बचपन पर केंद्रित चरणों को पूरे जीवनकाल—जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक—विस्तारित किया। एरिक्सन का मानना था कि व्यक्तित्व का विकास केवल प्रारंभिक वर्षों में ही पूर्ण नहीं हो जाता, बल्कि यह जीवन के विभिन्न चरणों में आने वाले सामाजिक संकटों और अनुभवों के माध्यम से लगातार आकार लेता रहता है। उनके मनोसामाजिक सिद्धांत के आठ चरण यह स्पष्ट करते हैं कि प्रत्येक आयु वर्ग में व्यक्ति को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और वे उसे कैसे परिपक्व बनाते हैं।

279. (D) दिशा, शक्ति और प्रयोग बिंदु।
कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत में, जो भौतिकी के 'बल क्षेत्र' की अवधारणा से प्रेरित है, एक मनोवैज्ञानिक शक्ति के तीन प्रमुख गुण होते हैं: दिशा, शक्ति और प्रयोग बिंदु। दिशा यह निर्धारित करती है कि व्यक्ति किस लक्ष्य की ओर या उससे दूर गति करेगा। शक्ति उस प्रेरणा की तीव्रता को दर्शाती है जो व्यक्ति को कार्य करने हेतु मजबूर करती है। प्रयोग बिंदु वह क्षेत्र है जहाँ यह शक्ति प्रभावी होती है। ये तीनों गुण मिलकर यह स्पष्ट करते हैं कि व्यक्ति अपने जीवन स्थान में किस प्रकार गति करता है और उसे क्या निर्देशित करता है।

280. (A) सुलिवन
हैरी स्टैक सुलिवन एक प्रमुख व्यक्तित्व सिद्धांतकार थे जिन्होंने पारस्परिक संबंधों को व्यक्तित्व का मुख्य आधार माना। उनका मानना था कि व्यक्तित्व को केवल अन्य लोगों के साथ होने वाली अंतःक्रियाओं के संदर्भ में ही समझा जा सकता है। सुलिवन ने 'स्व-प्रणाली' की अवधारणा दी, जो चिंता को कम करने और सामाजिक सुरक्षा प्राप्त करने हेतु विकसित होने वाली एक रक्षात्मक संरचना है। उनका दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि हमारे सामाजिक अनुभव ही हमारे व्यक्तित्व को आकार देते हैं, जिससे व्यक्ति को एक अनूठी और स्थायी पहचान प्राप्त होती है।

281. (C) प्रक्षेपी परीक्षण
रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण और विषय आत्मबोध परीक्षण दोनों ही प्रक्षेपी मूल्यांकन विधियों के सबसे प्रमुख उदाहरण हैं। इन परीक्षणों में व्यक्ति को जानबूझकर अस्पष्ट उद्दीपन प्रदान किए जाते हैं, जिससे वह अपनी प्रतिक्रिया देने हेतु स्वतंत्र होता है। चूंकि कोई स्पष्ट उत्तर नहीं होता, इसलिए व्यक्ति अनजाने में अपनी आंतरिक भावनाओं और अचेतन संघर्षों को उन चित्रों पर आरोपित कर देता है। ये परीक्षण व्यक्तित्व के उन गहरे और

299. (D) सिमेंटिक डिफरेंशियल पैमाना
सिमेंटिक डिफरेंशियल पैमाना अभिवृत्ति मापन की वह विधि है जिसमें उत्तरदाताओं को विपरीत अर्थ वाले विशेषणों के जोड़ों, जैसे 'अच्छा' बनाम 'बुरा' के बीच अपनी प्रतिक्रिया देनी होती है। यह पैमाना आमतौर पर सात बिंदुओं का होता है और इसका उद्देश्य किसी अवधारणा के प्रति व्यक्ति के संवेगात्मक अर्थ को मापना है। यह तकनीक शोधकर्ताओं को अभिवृत्तियों के सूक्ष्म गुणात्मक आयामों को मात्रात्मक रूप से समझने में सक्षम बनाती है, जिससे व्यक्ति के दृष्टिकोण के भावनात्मक आधार का विश्लेषण किया जा सकता है। यह वैज्ञानिक रूप से अत्यंत उपयोगी है।

300. (B) इसका कोई सीधा समकक्ष नहीं है, क्योंकि युंग की व्यक्तिगत अचेतन की अवधारणा अलग है।
कार्ल युंग और सिगमंड फ्रायड दोनों ने अचेतन मन की बात की, लेकिन उनके दृष्टिकोण मौलिक रूप से भिन्न थे। फ्रायड का व्यक्तिगत अचेतन दमित यादों और इच्छाओं का भंडार था। युंग ने भी व्यक्तिगत अचेतन को स्वीकार किया, लेकिन उन्होंने 'सामूहिक अचेतन' की अवधारणा को अधिक महत्व दिया जो पूरी मानव जाति में साझा किया जाता है। युंग का व्यक्तिगत अचेतन केवल दमन तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें भविष्य की संभावनाएं भी थीं। अतः, युंगियन मनोविज्ञान में फ्रायडियन अचेतन का कोई एक सीधा और सरल समकक्ष खोजना कठिन है।

देता है, और विशिष्ट स्थितियां यह तय करती हैं कि ये गुण कैसे प्रकट होंगे। 'वैलेंस' व्यक्तित्व का निर्धारक नहीं है, बल्कि यह कुर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत में किसी लक्ष्य की आकर्षण या विकर्षण की शक्ति को दर्शाता है। यह किसी विशेष समय पर व्यवहार की दिशा तय करता है, लेकिन इसे व्यक्तित्व की स्थायी संरचना के प्राथमिक निर्धारकों में नहीं गिना जाता है।

291. (C) दूसरों के व्यवहार में व्यक्तिगत कारकों पर अधिक बल देने की प्रवृत्ति।
मौलिक आरोपण त्रुटि एक सामान्य संज्ञानात्मक दोष है जहाँ हम दूसरों के व्यवहार की व्याख्या करते समय उनके व्यक्तिगत स्वभाव को अधिक महत्व देते हैं, जबकि बाहरी परिस्थितियों के प्रभाव को कम आंकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई सड़क पर गिर जाता है, तो हम उसे अनाड़ी मान लेते हैं और यह नहीं सोचते कि सड़क शायद फिसलन भरी हो सकती है। यह प्रवृत्ति इसलिए होती है क्योंकि हमारा ध्यान उस व्यक्ति पर केंद्रित होता है, न कि उसके आसपास के सामाजिक संदर्भ पर। यह त्रुटि हमारे सामाजिक निर्णयों को अक्सर प्रभावित करती है।

292. (D) व्यक्तित्व का केंद्र, या स्व।
गॉर्डन ऑलपोर्ट ने 'प्रोप्रियम' शब्द का उपयोग व्यक्तित्व के उन सभी एकीकृत पहलुओं का वर्णन करने हेतु किया जो व्यक्ति को 'स्व' की पहचान देते हैं। इसमें व्यक्ति के आत्म-सम्मान, आत्म-छवि और भविष्य के लक्ष्यों का समावेश होता है। प्रोप्रियम व्यक्तित्व का वह केंद्रीय संगठन है जो समय के साथ विकसित होता है और व्यक्ति को यह महसूस कराता है कि वह एक अद्वितीय और सुसंगत इकाई है। यह अवधारणा व्यक्ति के आंतरिक विकास और उसके आत्म-बोध की प्रक्रिया को समझने हेतु ऑलपोर्ट के सिद्धांत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और आधारभूत हिस्सा है।

293. (C) एरिक्सन ने फ्रायड की तुलना में सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों पर अधिक बल दिया।
फ्रायड का सिद्धांत मुख्य रूप से जैविक प्रवृत्तियों और अचेतन संघर्षों पर केंद्रित था, जबकि एरिक एरिक्सन ने व्यक्तित्व विकास में समाज और संस्कृति की भूमिका को अधिक महत्व दिया। एरिक्सन का मानना था कि व्यक्ति का विकास केवल शारीरिक आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं है, बल्कि यह दूसरों के साथ संबंधों और सामाजिक अपेक्षाओं के साथ तालमेल बिठाने की प्रक्रिया है। इसके अलावा, एरिक्सन ने विकास को पूरे जीवनकाल तक विस्तृत माना, जबकि फ्रायड ने इसे मुख्य रूप से बचपन के प्रारंभिक अनुभवों तक ही सीमित रखा था, जो एक बड़ा अंतर है।

294. (B) कार्य-उन्मुख
कार्य-उन्मुख नेतृत्व शैली की मुख्य विशेषता उच्च प्रदर्शन के मानक निर्धारित करना और कार्यों को कुशलतापूर्वक पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करना है। ऐसा नेता समूह के सदस्यों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की अपेक्षा करता है, भूमिकाओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है और काम की योजना बनाकर संगठन को मजबूती प्रदान करता है। उसका प्राथमिक उद्देश्य उत्पादकता और समय पर लक्ष्यों को प्राप्त करना होता है। यद्यपि यह शैली स्पष्टता लाती है, लेकिन इसमें कभी-कभी सदस्यों की व्यक्तिगत भावनाओं को कम महत्व दिया जा सकता है, जो कार्यक्षेत्र के वातावरण को प्रभावित करता है।

295. (D) निरंतरता
मनोविज्ञान में 'व्यक्तित्व' शब्द व्यक्ति के व्यवहार में एक प्रकार की स्थिरता और निरंतरता को दर्शाता है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति अलग-अलग समय पर और विभिन्न सामाजिक स्थितियों में एक सुसंगत तरीके से कार्य करता है, जिससे उसके व्यवहार की भविष्यवाणी की जा सकती है। यदि कोई व्यक्ति शांत स्वभाव का है, तो वह विभिन्न परिस्थितियों में वही गुण प्रदर्शित करेगा। यही निरंतरता व्यक्ति को एक अनूठी पहचान प्रदान करती है और उसे दूसरों से अलग बनाती है, जो व्यक्तित्व अध्ययन का एक मौलिक और वैज्ञानिक आधार है, जिससे विश्लेषण सरल होता है।

296. (A) केंद्रीय और परिधीय
विस्तार संभावना मॉडल अनुनय के माध्यम से अभिवृत्ति परिवर्तन की व्याख्या करने हेतु दो मुख्य मार्गों की पहचान करता है। केंद्रीय मार्ग तब उपयोग किया जाता है जब व्यक्ति संदेश की सामग्री और तर्कों पर गहराई से विचार करता है, जिससे स्थायी परिवर्तन होता है। परिधीय मार्ग में व्यक्ति संदेश की गुणवत्ता के बजाय बाहरी संकेतों, जैसे वक्ता के आकर्षण, से प्रभावित होता है, जिससे अक्सर अस्थायी परिवर्तन होता है। यह मॉडल यह समझने में मदद करता है कि लोग किन परिस्थितियों में किसी जानकारी को संसाधित करके अपनी राय बदलते हैं।

297. (C) जन्म क्रम
अल्फ्रेड एडलर के अनुसार, परिवार के भीतर बच्चे का जन्म क्रम—चाहे वह सबसे बड़ा हो या सबसे छोटा—उसके व्यक्तित्व के विकास पर गहरा प्रभाव डालता है। एडलर का मानना था कि प्रत्येक स्थिति के साथ अलग-अलग सामाजिक चुनौतियां जुड़ी होती हैं। उदाहरण के लिए, सबसे बड़ा बच्चा अक्सर अधिक जिम्मेदार होता है, जबकि दूसरा बच्चा प्रतिस्पर्धात्मक हो सकता है। जन्म क्रम का यह प्रभाव व्यक्ति के आत्म-प्रत्यक्षण और दूसरों के साथ व्यवहार करने के तरीके को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो उसकी जीवन शैली को निर्मित करता है।

298. (A) लेविन
कुर्ट लेविन ने व्यक्तित्व और व्यवहार के प्रति अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करने हेतु प्रसिद्ध सूत्र बी = एफ (पी, ई) का उपयोग किया। यह सूत्र दर्शाता है कि व्यवहार (बी) व्यक्ति (पी) और उसके वातावरण (ई) के बीच की गतिशील अंतःक्रिया का परिणाम है। लेविन के अनुसार, किसी व्यक्ति को उसके वर्तमान मनोवैज्ञानिक क्षेत्र या 'जीवन स्थान' के संदर्भ में ही पूरी तरह समझा जा सकता है। इस विचार ने मनोविज्ञान में व्यक्ति और परिस्थिति के परस्पर संबंध पर बल दिया, जो आधुनिक सामाजिक व्यवहार के अध्ययन हेतु एक आधारभूत वैज्ञानिक ढांचा है।

10. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।
सूची I: (चिकित्सा)
P. मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा
Q. सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
R. संज्ञानात्मक चिकित्सा
S. बायोफीडबैक
सूची II: (मूल अवधारणा)
1. बिना शर्त सकारात्मक सम्मान
2. स्वचालित विचार
3. शारीरिक प्रतिक्रियाओं का क्रियाप्रसूत अनुकूलन
4. मुक्त साहचर्य
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

11. व्यामोह से ग्रस्त व्यक्ति में क्या प्रदर्शित होने की सबसे अधिक संभावना है?
(A) भव्यता और प्रशंसा की आवश्यकता का निरंतर प्रतिरूप।
(B) अत्यधिक भावनात्मक अनियमितता और अस्थिर संबंध।
(C) सामाजिक संबंधों में रुचि की कमी और भावनात्मक अभिव्यक्ति का सीमित दायरा।
(D) दूसरों के प्रति व्यापक अविश्वास और संदेह।

12. वांछित प्रभाव प्राप्त करने के लिए किसी मादक पदार्थ की मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि की आवश्यकता को क्या कहा जाता है?
(A) निवर्तन
(B) सहिष्णुता
(C) निर्भरता
(D) दुरुपयोग

13. बौद्धिक अक्षमता के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह बौद्धिक कार्यक्षमता में महत्वपूर्ण सीमाओं द्वारा वर्गीकृत है।
II. यह अनुकूलन व्यवहार में महत्वपूर्ण सीमाओं द्वारा वर्गीकृत है।
III. इसकी शुरुआत 18 वर्ष की आयु से पहले होनी चाहिए।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

14. नैदानिक मनोविज्ञान का अंतर्वैयक्तिक मॉडल मनोविकृति के विकास में किस कारक की भूमिका पर जोर देता है?
(A) जैविक पूर्वाग्रह
(B) कुअनुकूलक संज्ञान
(C) सीखे हुए साहचर्य और सुदृढ़ीकरण
(D) दूसरों के साथ संबंध बनाने के दोषपूर्ण प्रतिरूप

15. सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में, सेवार्थी की भावनाओं और अनुभवों को उनके अपने दृष्टिकोण से समझने की चिकित्सक की क्षमता को क्या कहा जाता है?
(A) समानुभूति
(B) वास्तविकता
(C) बिना शर्त सकारात्मक सम्मान
(D) अनुरुपता

16. निम्नलिखित में से कौन बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार में एक 'बाध्यकारी क्रिया' का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) बीमार होने के बारे में लगातार चिंता करना।
(B) संक्रमण के डर को कम करने के लिए बार-बार हाथ धोना।
(C) किसी प्रियजन को नुकसान पहुँचाए जाने का अवांछित, दखल देने वाला विचार।
(D) बिना किसी स्पष्ट कारण के निरंतर डर की भावना महसूस करना।

17. मनोदशा विकारों की मुख्य विशेषता किसमें विक्षोभ होना है?
(A) विचार प्रक्रियाएं
(B) भावनात्मक स्थिति
(C) प्रत्यक्ष ज्ञान
(D) व्यक्तित्व गुण

18. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): संज्ञानात्मक चिकित्सा का उद्देश्य व्यक्ति के सोचने के प्रतिरुप को बदलकर दोषपूर्ण भावनाओं और व्यवहारों को संशोधित करना है।
कारण (R): संज्ञानात्मक सिद्धांत के अनुसार, घटनाएँ स्वयं कष्ट का कारण नहीं बनती हैं, बल्कि उन घटनाओं की व्यक्ति द्वारा की गई व्याख्या कष्ट का कारण बनती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

19. बौद्धिक अक्षमता के किस स्तर को लगभग 50-70 की आईक्यू सीमा द्वारा वर्गीकृत किया जाता है, जहाँ व्यक्ति अक्सर समर्थन के साथ सामाजिक और व्यावसायिक पर्याप्तता प्राप्त कर सकते हैं?
(A) अति गंभीर
(B) गंभीर
(C) अल्प
(D) मध्यम

20. बायोफीडबैक एक चिकित्सीय तकनीक है जिसका मुख्य रूप से उपयोग किया जाता है:

अध्याय 08
मनोव्याधिकी एवं नैदानिक मनोविज्ञान

1. असामान्यता के निम्नलिखित मानदंडों में से कौन सा इस बात से संबंधित है कि क्या कोई व्यवहार व्यक्ति के लिए हानिकारक या अनुत्पादक है?
(A) सांख्यिकीय विरलता
(B) कुअनुकूलन
(C) व्यक्तिपरक कष्ट
(D) सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन

2. एक व्यक्ति जिसे हृदय गति का बढ़ना और सांस की तकलीफ जैसे शारीरिक लक्षणों के साथ तीव्र भय के अचानक और अकथनीय प्रकरणों का अनुभव होता है, वह संभवतः किस विकार से पीड़ित है?
(A) पैनिक विकार
(B) सामान्यीकृत चिंता विकार
(C) बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार
(D) सिज़ोफ्रेनिया

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार में, बाध्यकारी विचार दखल देने वाले और अवांछित विचार होते हैं।
कथन II: बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार में, बाध्यकारी क्रियाएं चिंता कम करने के लिए किए जाने वाले दोहरावदार व्यवहार या मानसिक कार्य हैं।
(A) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(B) कथन II सही है, लेकिन कथन I गलत है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

4. निम्नलिखित में से कौन सा असामान्यता का प्राथमिक मानदंड नहीं है?
(A) व्यक्तिपरक कष्ट
(B) सांख्यिकीय विचलन
(C) कुअनुकूलक व्यवहार
(D) सामाजिक विलक्षणता

5. नैदानिक मनोविज्ञान के व्यवहारवादी मॉडल के अनुसार, मनोवैज्ञानिक विकार मुख्य रूप से किसका परिणाम होते हैं?
(A) बचपन के अचेतन द्वंद्व।
(B) विकृत सोच और तर्कहीन विश्वास।
(C) दोषपूर्ण अधिगम और अनुकूलन।
(D) दोषपूर्ण अंतर्वैयक्तिक संबंध।

6. कौन सा कथन सामान्यीकृत चिंता विकार का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) इसमें बिना किसी स्पष्ट कारण के अचानक, तीव्र भय के प्रकरण आते हैं।
(B) इसमें कई क्षेत्रों के बारे में निरंतर, अत्यधिक और अनियंत्रित चिंता शामिल होती है।
(C) इसमें बार-बार आने वाले दखल देने वाले विचार और दोहरावदार व्यवहार शामिल होते हैं।
(D) इसमें किसी विशिष्ट वस्तु या स्थिति का निरंतर और तर्कहीन भय शामिल होता है।

7. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): मनोगत्यात्मक मॉडल यह मानता है कि मनोवैज्ञानिक विकारों की जड़ें प्रारंभिक बचपन के अनुभवों में निहित होती हैं।
कारण (R): मनोयौन अवस्थाओं के अनसुलझे अचेतन द्वंद्व वयस्कता में मानसिक बीमारी के लक्षणों के रूप में प्रकट हो सकते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

8. कम से कम दो सप्ताह तक रहने वाली निरंतर, लंबे समय तक बनी रहने वाली उदासी, गतिविधियों में रुचि की कमी और अन्य लक्षण किस मनोदशा विकार की विशेषता होंगे?
(A) गंभीर अवसादग्रस्तता विकार
(B) द्विध्रुवी I विकार
(C) चक्रवाती विकार
(D) डिस्थायमिया

9. सिज़ोफ्रेनिया के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) सकारात्मक लक्षणों में विभ्रम और व्यामोह शामिल हैं।
(B) नकारात्मक लक्षणों में इच्छाशक्ति की कमी और भावात्मक शून्यता शामिल हैं।
(C) यह एक प्रकार का मनोदशा विकार है जिसमें अत्यधिक मनोदशा परिवर्तन होते हैं।
(D) इसमें अक्सर सामाजिक और व्यावसायिक कार्यक्षमता में महत्वपूर्ण गिरावट शामिल होती है।

31. एक व्यक्ति जो मानता है कि उसके विचार उसके मन से दूसरों के सुनने के लिए प्रसारित हो रहे हैं, वह क्या अनुभव कर रहा है?
(A) विचार प्रसारण व्यामोह
(B) उत्पीड़न का व्यामोह
(C) भव्यता का व्यामोह
(D) कायिक व्यामोह

32. व्यक्तित्व विकारों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. व्यक्तित्व विकारों का निदान आमतौर पर प्रारंभिक बचपन में किया जाता है।
II. वे आंतरिक अनुभव और व्यवहार के स्थायी प्रतिरुप का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सांस्कृतिक अपेक्षाओं से विचलित होते हैं।
III. ये प्रतिरुप लचीले होते हैं और विभिन्न सामाजिक स्थितियों के अनुकूल होते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल II
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

33. निम्नलिखित में से कौन सी मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा की एक प्रमुख तकनीक है?
(A) व्यवस्थित विसंवेदीकरण
(B) स्थानांतरण का विश्लेषण
(C) सुकराती पूछताछ
(D) सक्रिय श्रवण और प्रतिबिंब

34. मनोविकृति का अंतर्वैयक्तिक मॉडल सुझाव देता है कि लक्षणों को किसके संदर्भ में सबसे अच्छा समझा जाता है?
(A) व्यक्ति का वर्तमान सामाजिक नेटवर्क और संबंध।
(B) व्यक्ति की आनुवंशिक और न्यूरोकेमिकल संरचना।
(C) पुरस्कार और दंड का व्यक्ति का सीखा हुआ इतिहास।
(D) व्यक्ति की संज्ञानात्मक स्कीमा और स्वचालित विचार।

35. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): बायोफीडबैक तनाव जनित सिरदर्द के उपचार में प्रभावी हो सकता है।
कारण (R): मांसपेशियों के तनाव पर फीडबैक प्रदान करके, व्यक्ति विशिष्ट मांसपेशियों को शिथिल करना सीख सकते हैं, जिससे सिरदर्द की आवृत्ति और तीव्रता कम हो जाती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

36. 40 के आईक्यू स्कोर वाले व्यक्ति को संभवतः बौद्धिक अक्षमता की किस श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाएगा?
(A) अल्प
(B) गंभीर
(C) अति गंभीर
(D) मध्यम

37. एक व्यक्ति जो इसके विपरीत चिकित्सा आश्वासन के बावजूद गंभीर बीमारी होने के बारे में लगातार चिंतित रहता है, और जो बीमारी के संकेतों के लिए अपने शरीर की जांच करने में अत्यधिक समय बिताता है, वह किसकी विशेषताएं प्रदर्शित कर सकता है?
(A) सामान्यीकृत चिंता विकार
(B) बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार
(C) कायिक लक्षण विकार या बीमारी चिंता विकार
(D) पैनिक विकार

38. संज्ञानात्मक चिकित्सा का प्राथमिक लक्ष्य क्या है?
(A) सेवार्थी को आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने में मदद करना।
(B) कुअनुकूलक विचार प्रतिरुप की पहचान करना और उन्हें संशोधित करना।
(C) बचपन से उत्पन्न अचेतन द्वंद्वों को हल करना।
(D) सेवार्थी के अंतर्वैयक्तिक कौशल और संबंधों में सुधार करना।

39. असामान्यता के मानदंड के रूप में "व्यक्तिपरक कष्ट" की अवधारणा का तात्पर्य है:
(A) व्यवहार जो सांख्यिकीय रुप से दुर्लभ है।
(B) व्यवहार जो सामाजिक नियमों का उल्लंघन करता है।
(C) व्यवहार जो दैनिक कामकाज को बाधित करता।
(D) दर्द, चिंता या भावनात्मक पीड़ा की व्यक्ति की अपनी रिपोर्ट।

40. उन्माद के एक प्रकरण की विशेषता निम्नलिखित में से किसके अलावा सभी है?
(A) एनहेडोनिया और रुचि की कमी
(B) बढ़ा हुआ आत्म-सम्मान या भव्यता
(C) नींद की आवश्यकता में कमी
(D) वाचालता में वृद्धि या बोलने का दबाव

41. नैदानिक मनोविज्ञान के निम्नलिखित मॉडलों को उनके उद्भव और प्रमुखता के सामान्य कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. मनोगत्यात्मक
2. व्यवहारवादी
3. संज्ञानात्मक
(A) 2, 1, 3
(B) 3, 2, 1
(C) 1, 2, 3
(D) 1, 3, 2

42. बाध्यकारी क्रिया को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार परिभाषित किया गया है:
(A) एक दोहरावदार व्यवहार या मानसिक कार्य जिसे करने के लिए व्यक्ति बाध्य महसूस करता है।
(B) एक दोहरावदार, दखल देने वाला और अवांछित विचार।
(C) किसी वस्तु या स्थिति का निरंतर और तर्कहीन भय।
(D) वास्तविक खतरे की अनुपस्थिति में अत्यधिक आतंक का अचानक उछाल।

43. निम्नलिखित में से कौन सा आनुवंशिक असामान्यता से जुड़ा बौद्धिक अक्षमता का एक कारण है?
(A) फीटल अल्कोहल सिंड्रोम
(B) सीसा विषाक्तता
(C) शैशवावस्था के दौरान कुपोषण
(D) डाउन सिंड्रोम

44. व्यक्तित्व विकारों के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) वे व्यवहार के दीर्घकालिक प्रतिरुप हैं।
(B) वे अपने लचीलेपन और अनुकूलनशीलता के कारण पहचाने जाते हैं।
(C) वे अक्सर महत्वपूर्ण कष्ट या अक्षमता की ओर ले जाते हैं।
(D) उनकी शुरुआत किशोरावस्था या प्रारंभिक वयस्कता में देखी जा सकती है।

45. मनोगत्यात्मक मॉडल चिंता का कारण किसे मानता है?
(A) एक खतरनाक उत्तेजना के प्रति सीखी गई प्रतिक्रिया।
(B) शारीरिक संवेदनाओं की विनाशकारी गलत व्याख्या।
(C) अस्वीकार्य, अचेतन आवेगों के चेतना में आने का खतरा।
(D) खतरे का अधिक आकलन और सामना करने की क्षमताओं का कम आकलन।

46. "एनहेडोनिया", जो मनोदशा विकारों में एक सामान्य लक्षण है, का तात्पर्य है:
(A) भूख या वजन में महत्वपूर्ण परिवर्तन।
(B) निरर्थकता या अपराधबोध की निरंतर भावना।
(C) मृत्यु या आत्महत्या के बार-बार आने वाले विचार।
(D) गतिविधियों में रुचि या आनंद की स्पष्ट कमी।

47. सिज़ोफ्रेनिया से संबंधित 'पैरानोइया' शब्द सबसे सटीक रुप से किसे संदर्भित करता है?
(A) सिज़ोफ्रेनिया का एक नैदानिक उपप्रकार जिसमें उत्पीड़न या भव्यता के प्रमुख व्यामोह होते हैं।
(B) सामाजिक स्थितियों के बारे में चिंता की एक सामान्य भावना।
(C) सामाजिक अलगाव का नकारात्मक लक्षण।
(D) सिज़ोफ्रेनिया से अलग और विशिष्ट विकार।

48. एक सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सक सेवार्थी की समस्याओं को किस परिणाम के रुप में देखेगा?
(A) कुअनुकूलक सुदृढ़ीकरण आकस्मिकताओं का इतिहास।
(B) महत्वपूर्ण दूसरों से बिना शर्त सकारात्मक सम्मान की कमी, जिससे असंगति पैदा होती है।
(C) अनसुलझे ईडिपस द्वंद्व।
(D) अतार्किक और आत्म-पराजयी विचार प्रतिरुप।

49. निम्नलिखित में से कौन सा पदार्थ-संबंधित विकारों से जुड़ा पदार्थों का वर्ग नहीं है?
(A) अवसादक (जैसे, मदिरा)
(B) मनोविक्षिप्तिरोधी (जैसे, हैलोपरिडोल)
(C) उत्तेजक (जैसे, कोकीन)
(D) मतिभ्रमकारी (जैसे, एलएसडी)

50. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।
सूची I: (पद)
P. बाध्यकारी विचार
Q. बाध्यकारी क्रिया
R. व्यामोह
S. विभ्रम
सूची II: (परिभाषा)
1. चिंता कम करने के लिए किया जाने वाला दोहरावदार व्यवहार
2. विपरीत साक्ष्यों के बावजूद माना जाने वाला गलत विश्वास
3. बाहरी उत्तेजना के बिना संवेदी धारणा
4. बार-बार आने वाला और निरंतर अवांछित विचार
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

51. मनोगत्यात्मक दृष्टिकोण के विपरीत, चिकित्सा का व्यवहारवादी दृष्टिकोण किस पर ध्यान केंद्रित करता है?
(A) अतीत के अनुभव और बचपन के द्वंद्व।
(B) आत्म-साक्षात्कार की ओर सेवार्थी की जन्मजात प्रेरणा।
(C) वर्तमान व्यवहार और उनके पर्यावरणीय निर्धारक।
(D) सपनों की व्याख्या और प्रतीकात्मक अर्थ।

52. बौद्धिक अक्षमता का अल्प, मध्यम, गंभीर या अति गंभीर के रुप में वर्गीकरण मुख्य रुप से किस पर आधारित है?
(A) अक्षमता का विशिष्ट कारण।
(B) व्यक्ति की स्वतंत्र रुप से रहने की क्षमता।
(C) बौद्धिक कमियों की शुरुआत की आयु।
(D) मानकीकृत आईक्यू परीक्षणों पर व्यक्ति का प्राप्तांक।

53. पैनिक आक्रमण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. वे हमेशा एक विशिष्ट, पहचाने जाने योग्य भय वाली वस्तु या स्थिति से उत्पन्न होते हैं।
II. वे भय के अचानक और तीव्र उछाल द्वारा वर्गीकृत होते हैं।
III. उनके साथ धड़कन और चक्कर आना जैसे कई शारीरिक

लक्षण होते हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

54. सेवार्थी को उनके तर्कहीन विश्वासों को पहचानने, चुनौती देने और बदलने में मदद करने की प्रक्रिया किस चिकित्सा का एक केंद्रीय घटक है?

(A) मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा
(B) संज्ञानात्मक चिकित्सा
(C) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
(D) बायोफीडबैक

55. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।

अभिकथन (A): सिज़ोफ्रेनिया में, नकारात्मक लक्षण आमतौर पर सकारात्मक लक्षणों की तुलना में खराब पूर्वानुमान से जुड़े होते हैं।

कारण (R): नकारात्मक लक्षण, जैसे इच्छाशक्ति की कमी और भावात्मक शून्यता, अक्सर मनोविक्षिप्तिरोधी औषधियों के प्रति कम प्रतिक्रियाशील होते हैं।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

56. "एलोगिया", जो सिज़ोफ्रेनिया का एक नकारात्मक लक्षण है, का तात्पर्य है:

(A) वाणी की अल्पता
(B) प्रेरणा की कमी
(C) आनंद लेने में असमर्थता
(D) भावनात्मक अभिव्यक्ति का सपाट होना

57. सामान्यीकृत चिंता विकार और पैनिक विकार के बीच एक मुख्य अंतर यह है कि:

(A) पैनिक विकार पुरुषों में अधिक सामान्य है, जबकि सामान्यीकृत चिंता विकार महिलाओं में अधिक सामान्य है।
(B) सामान्यीकृत चिंता विकार का उपचार मुख्य रूप से औषधि से किया जाता है।
(C) सामान्यीकृत चिंता विकार में पुरानी चिंता शामिल होती है, जबकि पैनिक विकार में डर के तीव्र प्रकरण शामिल होते हैं।
(D) सामान्यीकृत चिंता विकार एक चिंता विकार है, जबकि पैनिक विकार एक मनोदशा विकार है।

58. मनोविज्ञान का अंतर्वैयक्तिक मॉडल, जैसा कि यह चिकित्सा पर लागू होता है, संभवतः किस पर ध्यान केंद्रित करेगा?

(A) सेवार्थी के वर्तमान संबंधों का विश्लेषण करना और उनके अंतर्वैयक्तिक कार्यक्षमता में सुधार करना।
(B) स्वयं के बारे में सेवार्थी के दोषपूर्ण मूल विश्वासों को सुधारना।
(C) अचेतन बचपन के द्वंद्वों को सचेत जागरूकता में लाना।
(D) शारीरिक उत्तेजना को प्रबंधित करने के लिए सेवार्थी को शिथिलन तकनीक सिखाना।

59. व्यवहार का एक प्रतिरूप जो दूसरों के मौलिक अधिकारों या आयु के अनुरूप प्रमुख सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन करता है, जैसे कि आक्रामकता, संपत्ति का विनाश, या चोरी, किस व्यक्तित्व विकार की पहचान है?

(A) सीमावर्ती व्यक्तित्व विकार
(B) आत्ममुग्ध व्यक्तित्व विकार
(C) स्किज़ोइड व्यक्तित्व विकार
(D) असामाजिक व्यक्तित्व विकार

60. किसी व्यक्ति को उनकी हृदय गति के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए मॉनिटर का उपयोग करना, उन्हें इसे नियंत्रित करना सिखाने के लक्ष्य के साथ, किसका एक उदाहरण है:

(A) मनोविश्लेषण
(B) बायोफीडबैक
(C) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
(D) संज्ञानात्मक चिकित्सा

61. निम्नलिखित में से किसे सिज़ोफ्रेनिया का सकारात्मक लक्षण माना जाता है?

(A) भावात्मक शून्यता
(B) इच्छाशक्ति की कमी
(C) अव्यवस्थित भाषा
(D) सामाजिक अलगाव

62. "सांख्यिकीय विरलता" की अवधारणा असामान्यता को इस प्रकार परिभाषित करती है:

(A) व्यवहार जो व्यक्तिगत पीड़ा का कारण बनता है।
(B) व्यवहार जो किसी को लक्ष्य प्राप्त करने से रोकता है।
(C) व्यवहार जिसे समाज द्वारा अस्वीकार्य माना जाता है।
(D) व्यवहार जो दुर्लभ है या औसत से काफी विचलित होता है।

63. कौन सा कथन मनोदशा विकारों की एक प्रमुख विशेषता का सटीक वर्णन करता है?

(A) इनमें भावनात्मक नियमन में प्राथमिक विक्षोभ शामिल होता है, जिससे अवसाद या उन्माद जैसी स्थितियां पैदा होती हैं।
(B) वे वास्तविकता से मौलिक अलगाव की विशेषता रखते हैं।
(C) वे अनम्य और कुअनुकूलक व्यक्तित्व गुणों द्वारा परिभाषित होते हैं।
(D) उनमें विशेष रूप से चिंता और भय के लक्षण शामिल होते हैं।

64. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।
सूची I: (मनोवैज्ञानिक मॉडल)
P. मनोगत्यात्मक
Q. व्यवहारवादी
R. अंतर्वैयक्तिक
S. संज्ञानात्मक
सूची II: (मूल धारणा)
1. दोषपूर्ण सोच प्रतिरूप मनोविकृति का कारण बनते हैं।
2. अचेतन द्वंद्व व्यवहार को प्रेरित करते हैं।
3. कुअनुकूलक व्यवहार सीखे जाते हैं।
4. दोषपूर्ण संबंध विकारों के केंद्र में होते हैं।
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-2, R-1, S-4

65. बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार में बाध्यकारी क्रियाओं का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) आनंद या संतुष्टि प्राप्त करना।
(B) बाध्यकारी विचारों के कारण होने वाली चिंता को कम करना।
(C) दूसरों का ध्यान आकर्षित करना।
(D) व्यामोहपूर्ण विश्वास को पूरा करना।

66. बौद्धिक अक्षमता के निदान के लिए बौद्धिक कार्यक्षमता में कमी और किसकी आवश्यकता होती है:
(A) अनुकूलन कार्यक्षमता में कमी।
(B) ज्ञात आनुवंशिक सिंड्रोम की उपस्थिति।
(C) 21 वर्ष की आयु के बाद शुरुआत।
(D) सह-होने वाले मनोरोग विकार की उपस्थिति।

67. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): कार्ल रोजर्स की सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा को एक गैर-निर्देशात्मक दृष्टिकोण माना जाता है।
कारण (R): चिकित्सक सलाह देने या व्याख्या करने से बचता है, यह विश्वास करते हुए कि सेवार्थी में विकास की जन्मजात क्षमता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

68. किसी पदार्थ के प्रति शारीरिक या मनोवैज्ञानिक लत की स्थिति, जो सहिष्णुता और निवर्तन द्वारा वर्गीकृत होती है, कहलाती है:
(A) पदार्थ का दुरुपयोग
(B) पदार्थ की मादकता
(C) पदार्थ का उपयोग
(D) पदार्थ पर निर्भरता

69. व्यामोह में, मिथ्या विश्वास अक्सर होते हैं:
(A) विचित्र और निरर्थक।
(B) क्षणभंगुर और जल्दी भूल जाने वाले।
(C) व्यवस्थित और उत्पीड़न या खतरे के विषयों से संबंधित।
(D) भव्य क्षमताओं पर केंद्रित।

70. निम्नलिखित में से कौन बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार में "जांचने" की बाध्यकारी क्रिया का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) बार-बार यह सोचना कि शायद आपने किसी को टक्कर मार दी है।
(B) यह सुनिश्चित करने के लिए दस बार वापस जाना कि आपने किसी को टक्कर तो नहीं मारी।
(C) कीटाणुओं के बारे में लगातार चिंता करना।
(D) दरवाज़े के हैंडल को छूने के बाद हाथ धोना।

71. नैदानिक मनोविज्ञान में व्यवहारवादी मॉडल का एक प्रमुख योगदान किस पर जोर देना था?
(A) दीर्घकालिक केस अध्ययन।
(B) चिकित्सक-सेवार्थी संबंध।
(C) अचेतन की भूमिका।
(D) अनुभवजन्य रूप से परीक्षण योग्य परिकल्पनाएं और मापने योग्य परिणाम।

72. निम्नलिखित मनोचिकित्साओं पर विचार करें:
1. मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा
2. संज्ञानात्मक चिकित्सा
3. सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
4. बायोफीडबैक
इन मनोचिकित्साओं को उनके विकास के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
(A) 1, 3, 2, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 3, 1, 4, 2
(D) 1, 2, 3, 4

73. द्विध्रुवी विकारों को किसकी उपस्थिति द्वारा एकध्रुवीय मनोदशा विकारों से अलग किया जाता है?
(A) अवसादग्रस्त प्रकरण
(B) मनोवैज्ञानिक लक्षण
(C) उन्मादी या अल्प-उन्मादी प्रकरण
(D) आत्महत्या के विचार

74. "भावात्मक शून्यता", जो सिज़ोफ्रेनिया में देखा जाने वाला एक लक्षण है, का तात्पर्य है:
(A) भावनात्मक अभिव्यक्ति के दायरे और तीव्रता में महत्वपूर्ण कमी।
(B) भावनाओं का अनुभव करने में पूर्ण असमर्थता।
(C) एक ऐसी मनोदशा जो स्थिति के साथ असंगत हो।
(D) भावनात्मक स्थिति में तेजी से बदलाव।

75. व्यक्तित्व विकारों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. उन्हें ईगो-सिंटोनिक माना जाता है, जिसका अर्थ है कि व्यक्ति अक्सर अपने गुणों को समस्या के रूप में नहीं देखते हैं।

II. वे प्रमुख नैदानिक प्रणालियों में तीन समूहों (A, B, और C) में व्यवस्थित हैं।

III. वे केवल औषधि के साथ आसानी से और जल्दी से इलाज योग्य हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

76. मनोगत्यात्मक तकनीक जिसमें सेवार्थी को बिना किसी काट-छाँट के मन में आने वाली किसी भी बात को कहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, कहलाती है:

(A) स्थानांतरण विश्लेषण
(B) मुक्त साहचर्य
(C) स्वप्न विश्लेषण
(D) प्रतिरोध विश्लेषण

77. निम्नलिखित में से कौन बौद्धिक अक्षमता का एक प्राथमिक कारण है जो जन्म के बाद होता है?

(A) डाउन सिंड्रोम
(B) फ्रैजाइल X सिंड्रोम
(C) सीसा विषाक्तता
(D) फीटल अल्कोहल सिंड्रोम

78. सामान्यीकृत चिंता विकार की केंद्रीय विशेषता क्या है?

(A) पैनिक आक्रमण
(B) दुर्भीति
(C) बाध्यकारी क्रियाएं
(D) चिंता

79. संज्ञानात्मक मॉडल के अनुसार, पैनिक आक्रमण किसके परिणामस्वरूप होते हैं?

(A) सामान्य शारीरिक संवेदनाओं की विनाशकारी गलत व्याख्या।
(B) अचेतन द्वंद्वों का फिर से उभरना।
(C) शास्त्रीय रूप से अनुकूलित भय प्रतिक्रिया।
(D) दोषपूर्ण अंतर्वैयक्तिक जुड़ाव।

80. एक व्यक्ति जिसे "अति गंभीर" बौद्धिक अक्षमता के रूप में वर्गीकृत किया गया है, उसका आईक्यू स्कोर आमतौर पर होगा:

(A) 70 से ऊपर
(B) 20 या 25 से नीचे
(C) 50-70 के बीच
(D) 35-50 के बीच

81. नैदानिक मनोविज्ञान का वह मॉडल जो सेवार्थी के शुरुआती जुड़ाव और दूसरों के साथ संबंध बनाने के प्रतिरूप में सबसे अधिक रुचि रखता है, वह है:

(A) व्यवहारवादी मॉडल
(B) अंतर्वैयक्तिक मॉडल
(C) संज्ञानात्मक मॉडल
(D) जैविक मॉडल

82. निम्नलिखित में से कौन सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा की मुख्य शर्त नहीं है?

(A) समानुभूति
(B) वास्तविकता
(C) व्याख्या
(D) बिना शर्त सकारात्मक सम्मान

83. "मनोविकृति विज्ञान" शब्द का तात्पर्य है:

(A) मनोवैज्ञानिक चिकित्साओं का अध्ययन।
(B) नैदानिक मनोविज्ञान का अभ्यास।
(C) मानसिक विकारों की प्रकृति, कारणों और उपचार का अध्ययन।
(D) मस्तिष्क-व्यवहार संबंधों का अध्ययन।

84. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।

अभिकथन (A): पदार्थ उपयोग विकार वाला व्यक्ति नकारात्मक परिणामों के बावजूद पदार्थ का उपयोग जारी रख सकता है।

कारण (R): पदार्थ के सुदृढ़ीकरण गुण और निर्भरता का विकास आत्म-नियंत्रण को प्रभावित कर सकता है।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

85. उत्पीड़न का व्यामोह एक गलत विश्वास है कि:

(A) व्यक्ति असाधारण रूप से शक्तिशाली या महत्वपूर्ण है।
(B) व्यक्ति के विचारों को किसी बाहरी शक्ति द्वारा नियंत्रित किया जा रहा है।
(C) व्यक्ति के खिलाफ साजिश रची जा रही है या उसे परेशान किया जा रहा है।
(D) व्यक्ति को कोई भयानक बीमारी है।

86. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।

सूची I: (व्यक्तित्व विकार समूह)

P. समूह A
Q. समूह B
R. समूह C
S. सामान्य व्यक्तित्व विकार

सूची II: (प्रमुख विशेषता)

1. नाटकीय, भावनात्मक, या अनियमित
2. चिंतित या भयभीत
3. विचित्र या विलक्षण
4. व्यापक और अनम्य प्रतिरूप

(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

87. बायोफीडबैक अन्य मनोचिकित्साओं से इस मायने में भिन्न है कि यह मुख्य रुप से किसे संशोधित करने पर ध्यान केंद्रित करता है?
(A) अचेतन प्रेरणाएँ
(B) संज्ञानात्मक स्कीमा
(C) अंतर्वैयक्तिक शैलियाँ
(D) शारीरिक प्रतिक्रियाएँ

88. पैनिक विकार और सामान्यीकृत चिंता विकार के बीच सबसे महत्वपूर्ण अंतर क्या है?
(A) चिंता के अनुभव की अवधि और प्रकृति (तीव्र बनाम दीर्घकालिक)।
(B) चिंता की गंभीरता।
(C) संज्ञानात्मक चिकित्सा की प्रभावशीलता।
(D) शुरुआत की आयु।

89. असामान्यता का व्यवहारवादी मॉडल किसके सिद्धांतों पर आधारित है?
(A) मनोविश्लेषण
(B) मानवतावादी मनोविज्ञान
(C) अधिगम सिद्धांत
(D) संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान

90. उन्मादी प्रकरण का अनुभव करने वाला व्यक्ति निम्नलिखित में से किसके अलावा अन्य सभी व्यवहारों में शामिल हो सकता है?
(A) प्रतिदिन 12-14 घंटे सोना।
(B) फिजूलखर्ची में शामिल होना।
(C) आवेगी और जोखिम भरे निर्णय लेना।
(D) एक साथ कई महत्वाकांक्षी कार्य शुरु करना।

91. मनोविश्लेषणात्मक मनोचिकित्सा का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) अनुकूलन के माध्यम से व्यवहार को संशोधित करना।
(B) सेवार्थी के मूल विश्वासों का पुनर्गठन करना।
(C) समानुभूति के माध्यम से आत्म-स्वीकृति को बढ़ावा देना।
(D) अचेतन को सचेत करना।

92. बौद्धिक अक्षमता का वर्गीकरण बौद्धिक कार्यक्षमता और किस अन्य क्षेत्र पर आधारित है?
(A) शारीरिक स्वास्थ्य
(B) अनुकूलन व्यवहार
(C) सामाजिक-आर्थिक स्थिति
(D) पारिवारिक इतिहास

93. निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार करें:
I. निरंतर और कष्टदायक विचार, चित्र या आवेग।
II. विचारों के जवाब में किए गए दोहरावदार व्यवहार या मानसिक कार्य।
III. विचारों और व्यवहारों को व्यक्ति द्वारा अत्यधिक या अनुचित माना जाता है।

ये किस विकार की मुख्य विशेषताएं हैं?
(A) सामान्यीकृत चिंता विकार
(B) पैनिक विकार
(C) बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार
(D) सिज़ोफ्रेनिया

94. मनोविकृति विज्ञान के संदर्भ में 'व्यामोह' शब्द किसके साथ सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) उदास मनोदशा
(B) चिंतित फिक्र
(C) बाध्यकारी अनुष्ठान
(D) अविश्वास और उत्पीड़न के मिथ्या विश्वास

95. संज्ञानात्मक चिकित्सा में, 'स्वचालित विचार' को सबसे अच्छी तरह इस रूप में वर्णित किया गया है:
(A) घटनाओं की सहज, अक्सर नकारात्मक व्याख्याएं।
(B) मुक्त साहचर्य के दौरान आने वाले विचार।
(C) बचपन के गहरे, अचेतन विश्वास।
(D) सकारात्मक पुष्टिकरण।

96. निम्नलिखित में से कौन सा व्यवहार को असामान्य के रूप में परिभाषित करने का मानदंड नहीं है?
(A) स्वयं या दूसरों के लिए खतरा
(B) रचनात्मकता और मौलिकता
(C) कुअनुकूलन
(D) व्यक्तिपरक कष्ट

97. पदार्थ-संबंधित विकार का निदान तब माना जाएगा जब पदार्थ का उपयोग किसकी ओर ले जाता है:
(A) कभी-कभी हल्का उत्साह।
(B) नैदानिक रूप से महत्वपूर्ण अक्षमता या कष्ट।
(C) उपभोग का सामाजिक रूप से स्वीकार्य स्तर।
(D) मादकता का एक प्रकरण।

98. मनोविज्ञान का अंतर्वैयक्तिक मॉडल किसके कार्य से काफी प्रभावित था?
(A) हैरी स्टैक सुलिवन
(B) सिगमंड फ्रायड
(C) बी.एफ. स्किनर
(D) कार्ल रोजर्स

99. कार्ल रोजर्स की सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा के संदर्भ में "बिना शर्त सकारात्मक सम्मान" का क्या अर्थ है?
(A) सेवार्थी की केवल सकारात्मक भावनाओं को स्वीकार करना।
(B) सेवार्थी के व्यवहार और विचारों की आलोचनात्मक व्याख्या करना।
(C) सेवार्थी को उसके व्यवहार या विचारों की परवाह किए बिना पूर्ण स्वीकृति और गर्मजोशी के साथ देखना।
(D) सेवार्थी को केवल तभी स्वीकार करना जब वह चिकित्सक की अपेक्षाओं को पूरा करे।

100. सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में "अनुरूपता" या "वास्तविकता" चिकित्सक की किस क्षमता को संदर्भित करती है?
(A) सेवार्थी की आंतरिक दुनिया को सटीक रूप से समझना।
(B) सेवार्थी को बिना किसी निर्णय के स्वीकार करना।
(C) सेवार्थी के अचेतन उद्देश्यों की व्याख्या करना।
(D) उपचारात्मक संबंध में प्रामाणिक, खुला और पारदर्शी होना।

101. निम्नलिखित में से कौन सा परिदृश्य असामान्यता के "कुअनुकूलक व्यवहार" मानदंड का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) एक व्यक्ति जो गणितीय प्रतिभा संपन्न है और सामाजिक मेलजोल को कठिन पाता है।
(B) एक व्यक्ति जो अद्वितीय कपड़ों वाली उपसंस्कृति से संबंधित है।
(C) एक व्यक्ति जिसका मकड़ियों का अत्यधिक डर उसे अपना घर छोड़ने से रोकता है।
(D) एक व्यक्ति जो किसी प्रियजन की मृत्यु के बाद दुखी महसूस करता है।

102. सिज़ोफ्रेनिया का नकारात्मक लक्षण जिसे 'इच्छाशक्ति की कमी' के रूप में जाना जाता है, संदर्भित करता है:
(A) भावनात्मक अभिव्यक्ति की कमी।
(B) प्रेरणा और लक्ष्य-निर्देशित गतिविधि की कमी।
(C) वाणी उत्पादन में कमी।
(D) आनंद का अनुभव करने में असमर्थता।

103. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार में बाध्यकारी विचार चिंता पैदा करते हैं।
कारण (R): बाध्यकारी क्रियाएं इन विचारों के कारण होने वाली चिंता को कम करने के प्रयास में की जाती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

104. निम्नलिखित में से कौन बौद्धिक अक्षमता का प्रसवपूर्व कारण है?
(A) गर्भावस्था के दौरान माता का रुबेला से संक्रमित होना
(B) बचपन के दौरान एन्सेफलाइटिस
(C) 10 वर्ष की आयु में मस्तिष्क की चोट
(D) वयस्क के रूप में विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आना

105. अन्य विकारों की तुलना में व्यक्तित्व विकार की परिभाषित विशेषता इसकी क्या है:
(A) तीव्र शुरुआत और सामयिक प्रकृति।
(B) शारीरिक लक्षणों में प्राथमिक अभिव्यक्ति।
(C) स्थितियों के दौरान व्यापक और स्थायी गुणवत्ता।
(D) अल्पकालिक औषधि के प्रति विशिष्ट सकारात्मक प्रतिक्रिया।

106. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।
सूची I: (उपचारात्मक तकनीक)
P. व्यवस्थित विसंवेदीकरण
Q. स्वप्न विश्लेषण
R. सुकराती पूछताछ
S. समानुभूतिपूर्ण प्रतिबिंब
सूची II: (संबद्ध चिकित्सा)
1. मनोविश्लेषणात्मक
2. सेवार्थी-केंद्रित
3. व्यवहारवादी
4. संज्ञानात्मक
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

107. निम्नलिखित में से कौन पैरानोइया के मनोगत्यात्मक दृष्टिकोण का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) यह परिवेश द्वारा सुदृढ़ किया गया एक सीखा हुआ व्यवहार है।
(B) यह विभिन्न सामाजिक संकेतों की विनाशकारी गलत व्याख्याओं से उत्पन्न होता है।
(C) यह बचपन के दोषपूर्ण अंतर्वैयक्तिक स्कीमा का परिणाम है।
(D) यह प्रक्षेपण की रक्षा तंत्र का परिणाम है, जहाँ व्यक्ति अपने स्वयं के अस्वीकार्य आवेगों का श्रेय दूसरों को देता है।

108. किसी पदार्थ को बंद करने पर निवर्तन लक्षणों का अनुभव किसका एक मजबूत संकेतक है?
(A) पदार्थ का दुरुपयोग
(B) शारीरिक निर्भरता
(C) पदार्थ की मादकता
(D) मनोवैज्ञानिक लालसा

109. इनमें से कौन सा एक मान्यता प्राप्त चिंता विकार नहीं है?
(A) पैनिक विकार

2. द्विध्रुवी मनोदशा विकार
3. सामान्यीकृत चिंता विकार
4. बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

133. मनोचिकित्साओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा अचेतन प्रक्रियाओं में अंतर्दृष्टि पर ध्यान केंद्रित करती है।
II. संज्ञानात्मक चिकित्सा का उद्देश्य कुअनुकूलक सोच प्रतिरूप को बदलना है।
III. सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा एक सहायक, गैर-निर्णयात्मक वातावरण प्रदान करने पर जोर देती है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

134. "मुक्त-प्रवाही चिंता" शब्द सबसे अधिक किसके साथ जुड़ा है?

(A) पैनिक विकार
(B) सामान्यीकृत चिंता विकार
(C) दुर्भीति विकार
(D) बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार

135. निम्नलिखित में से कौन अंतर्वैयक्तिक मनोचिकित्सा का प्राथमिक केंद्र है?

(A) बचपन की कल्पनाओं का विश्लेषण।
(B) संज्ञानात्मक विकृतियों का सुधार।
(C) अनुकूलन व्यवहारों का सुदृढ़ीकरण।
(D) वर्तमान संबंधों की समस्याओं का समाधान।

136. वही प्रभाव उत्पन्न करने के लिए औषधि की बड़ी खुराक लेने की आवश्यकता को ______ कहा जाता है, जबकि औषधि बंद करने पर होने वाले नकारात्मक प्रभावों को ______ कहा जाता है।

(A) सहिष्णुता; निवर्तन
(B) निवर्तन; सहिष्णुता
(C) निर्भरता; दुरुपयोग
(D) दुरुपयोग; निर्भरता

137. निम्नलिखित में से कौन सा सिज़ोफ्रेनिया का सकारात्मक के बजाय नकारात्मक लक्षण है?

(A) विभ्रम
(B) व्यामोह
(C) वाणी की अल्पता
(D) अव्यवस्थित व्यवहार

138. बायोफीडबैक के पीछे मुख्य विचार व्यक्तियों को उनकी ______ प्रक्रियाओं के बारे में जागरुक करना और उन्हें नियंत्रित करना सिखाना है।

(A) शारीरिक
(B) अचेतन
(C) संज्ञानात्मक
(D) अंतर्वैयक्तिक

139. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।

अभिकथन (A): सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा सेवार्थी के व्यवहार की विशिष्ट व्याख्या देने से बचती है।

कारण (R): सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा का दर्शन यह है कि सेवार्थी अपने जीवन का विशेषज्ञ है।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

140. एक व्यक्ति जो अंतर्वैयक्तिक संबंधों और भावनाओं में अस्थिरता के व्यापक प्रतिरूप के साथ स्पष्ट आवेग प्रदर्शित करता है, उसे संभवतः किस विकार का निदान दिया जाएगा?

(A) असामाजिक व्यक्तित्व विकार
(B) सीमावर्ती व्यक्तित्व विकार
(C) आत्ममुग्ध व्यक्तित्व विकार
(D) परिहारक व्यक्तित्व विकार

141. असामान्यता के लिए "सांख्यिकीय विचलन" का मानदंड भ्रामक हो सकता है क्योंकि:

(A) यह सांस्कृतिक अंतरों को ध्यान में रखने में विफल रहता है।
(B) सांख्यिकीय रूप से व्यवहार को मापना कठिन है।
(C) कुछ सांख्यिकीय रूप से दुर्लभ व्यवहार वांछनीय होते हैं, जैसे कि उच्च बुद्धिमत्ता।
(D) यह व्यक्ति की व्यक्तिपरक भावनाओं की उपेक्षा करता है।

142. उन्मादी प्रकरण और अल्प-उन्मादी प्रकरण के बीच मुख्य अंतर क्या है?

(A) अनुभव किए गए लक्षणों का प्रकार।
(B) अवसाद की उपस्थिति।
(C) शुरुआत की आयु।
(D) गंभीरता और अक्षमता का स्तर।

143. मनोविकृति विज्ञान का कौन सा मॉडल एक दुर्भीति को दर्दनाक घटना से उत्पन्न मानेगा?

(A) व्यवहारवादी
(B) मनोगत्यात्मक
(C) अंतर्वैयक्तिक
(D) संज्ञानात्मक

(D) सेवार्थी के तर्कहीन विश्वासों को चुनौती देना।

121. "पैरानोइया" को किसके प्रतिरुप के रूप में सबसे अच्छी तरह समझा जाता है?
(A) भावनात्मक अस्थिरता और आवेग।
(B) सामाजिक अलगाव और सीमित भावनात्मकता।
(C) व्यापक अविश्वास और संदेह।
(D) भव्यता और प्रशंसा की आवश्यकता।

122. वह शब्द जो किसी पदार्थ के उपयोग को रोकने के परिणामस्वरूप होने वाले विशिष्ट लक्षणों का वर्णन करता है, वह है:
(A) निवर्तन
(B) सहिष्णुता
(C) मादकता
(D) निर्भरता

123. मनोगत्यात्मक मॉडल प्रस्ताव करता है कि मनोवैज्ञानिक लक्षण हैं:
(A) पर्यावरणीय उत्तेजनाओं के प्रति सीखी गई प्रतिक्रियाएं।
(B) दोषपूर्ण सूचना प्रसंस्करण का परिणाम।
(C) न्यूरोकेमिकल असंतुलन के कारण।
(D) अचेतन द्वंद्वों की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति।

124. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): बौद्धिक अक्षमता का वर्गीकरण आईक्यू और अनुकूलन कार्यक्षमता दोनों पर विचार करता है।
कारण (R): कम आईक्यू स्कोर वाला व्यक्ति लेकिन दैनिक जीवन में प्रभावी अनुकूलन कौशल वाला व्यक्ति निदान के पूर्ण मानदंडों को पूरा नहीं कर सकता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

125. मनोदशा विकारों की सबसे प्रमुख विशेषता किसमें विक्षोभ होना है?
(A) व्यक्तित्व संरचना
(B) संज्ञानात्मक प्रसंस्करण
(C) भावनात्मक अनुभव
(D) संवेदी धारणा

126. एक चिकित्सक जो सेवार्थी को उनके "स्वचालित नकारात्मक विचारों" को पहचानने और उनके विश्वासों की वास्तविकता का परीक्षण करने में मदद करता है, वह किसका अभ्यास कर रहा है?
(A) मनोविश्लेषण
(B) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
(C) बायोफीडबैक
(D) संज्ञानात्मक चिकित्सा

127. निम्नलिखित में से कौन सा सामान्यीकृत चिंता विकार की परिभाषित विशेषता नहीं है?
(A) बार-बार और अप्रत्याशित पैनिक आक्रमण
(B) अत्यधिक और अनियंत्रित चिंता
(C) मांसपेशियों में तनाव और बेचैनी
(D) कई घटनाओं के बारे में चिंता

128. सिज़ोफ्रेनिया से ग्रस्त व्यक्ति जो बहुत कम भावनात्मक अभिव्यक्ति दिखाता है, धीमी आवाज में बोलता है, और गतिविधियों को शुरु करने में कठिनाई महसूस करता है, वह क्या प्रदर्शित कर रहा है?
(A) सकारात्मक लक्षण
(B) नकारात्मक लक्षण
(C) कैटाटोनिक लक्षण
(D) उन्मादी लक्षण

129. नैदानिक मनोविज्ञान का "अंतर्वैयक्तिक" मॉडल इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि मनोवैज्ञानिक समस्याएं कैसे बनती हैं:
(A) अचेतन मन में।
(B) दूसरों के साथ संबंधों के संदर्भ में।
(C) सुदृढ़ीकरण और दंड के प्रतिरुप में।
(D) संज्ञानात्मक स्कीमा की संरचना में।

130. बायोफीडबैक किस व्यापक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्राप्त एक चिकित्सीय अनुप्रयोग है?
(A) व्यवहारवादी
(B) मनोगत्यात्मक
(C) मानवतावादी
(D) अस्तित्ववादी

131. मनोविज्ञान में "असामान्यता" शब्द को इस रुप में सबसे अच्छी तरह समझा जाता है:
(A) व्यवहार जो सांख्यिकीय रुप से दुर्लभ है।
(B) व्यवहार जिसके परिणामस्वरुप व्यक्तिगत पीड़ा होती है।
(C) कष्ट, अक्षमता और विचलन के संयोजन द्वारा परिभाषित एक अवधारणा।
(D) व्यवहार जिसे नैतिक रुप से गलत माना जाता है।

132. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।
सूची I: (विकार की विशेषता)
P. पुरानी चिंता और तनाव
Q. दखल देने वाले विचार और अनुष्ठान
R. तीव्र, अचानक भय के प्रकरण
S. उन्माद और अवसाद के प्रकरण
सूची II: (विकार)
1. पैनिक विकार

(B) बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार
(C) सिज़ोफ्रेनिया
(D) सामान्यीकृत चिंता विकार

110. संज्ञानात्मक त्रय, जो अवसाद के लिए संज्ञानात्मक चिकित्सा में एक प्रमुख अवधारणा है, किसके बारे में नकारात्मक विचारों को शामिल करती है?
(A) अतीत, वर्तमान और भविष्य।
(B) स्वयं, दूसरे और संबंध।
(C) विचार, भावनाएँ और व्यवहार।
(D) स्वयं, दुनिया और भविष्य।

111. एक व्यक्ति जो कम से कम दो वर्षों तक कई अल्प-उन्मादी लक्षणों और कई अवसादग्रस्त लक्षणों का अनुभव करता है, उसे संभवतः किसका निदान दिया जाएगा?
(A) चक्रवाती विकार
(B) द्विध्रुवी I विकार
(C) द्विध्रुवी II विकार
(D) गंभीर अवसादग्रस्तता विकार

112. चिंता कम करने के लिए बायोफीडबैक का उपयोग इस सिद्धांत पर काम करता है कि:
(A) अचेतन द्वंद्वों को उजागर करने से शारीरिक तनाव कम हो जाएगा।
(B) शारीरिक उत्तेजना पर सचेत नियंत्रण प्राप्त करने से व्यक्तिपरक चिंता कम हो सकती है।
(C) शारीरिक लक्षणों को कम करने का तरीका चिंताजनक विचारों को चुनौती देना है।
(D) तंत्रिका तंत्र को शांत करने के लिए उपचारात्मक गठबंधन बनाना पर्याप्त है।

113. सिज़ोफ्रेनिया के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह मुख्य रूप से मनोदशा का विकार है।
II. इसमें अक्सर मनोविक्षिप्ति शामिल होती है, जो वास्तविकता से अलगाव है।
III. वाणी की अल्पता और इच्छाशक्ति की कमी जैसे नकारात्मक लक्षण सामान्य हैं।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

114. मनोविकृति विज्ञान का अंतर्वैयक्तिक मॉडल अवसाद की व्याख्या संभवतः किसके परिणामस्वरूप करेगा?
(A) शोक, भूमिका विवाद, या सामाजिक अलगाव।
(B) मस्तिष्क में रासायनिक असंतुलन।
(C) सामाजिक सुदृढ़ीकरण और कौशल की कमी।
(D) अनसुलझे अंतर्मानसिक द्वंद्व।

115. बौद्धिक अक्षमता के निम्नलिखित स्तरों को उच्चतम कार्यप्रणाली से निम्नतम कार्यप्रणाली के क्रम में व्यवस्थित करें।
1. अति गंभीर
2. अल्प
3. गंभीर
4. मध्यम
(A) 4, 2, 3, 1
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 2, 4, 3, 1
(D) 2, 3, 4, 1

116. बाध्यकारी विचारों और बाध्यकारी क्रियाओं के बीच एक मुख्य अंतर यह है कि बाध्यकारी विचार ______ हैं और बाध्यकारी क्रियाएं ______ हैं।
(A) व्यवहार; विचार
(B) स्वैच्छिक; अनैच्छिक
(C) तर्कसंगत; तर्कहीन
(D) विचार; व्यवहार

117. व्यवहारवादी मॉडल के अनुसार, मनोविकृति विज्ञान का सबसे अच्छा उपचार किसके द्वारा किया जाता है?
(A) इसके मूल कारणों के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करके।
(B) लक्षणों के अर्थ की खोज करके।
(C) नए अधिगम के अनुभवों के माध्यम से कुअनुकूलक व्यवहारों को संशोधित करके।
(D) एक स्नेही और स्वीकार्य उपचारात्मक वातावरण प्रदान करके।

118. निम्नलिखित में से कौन बाध्यकारी विचार का एक उदाहरण है?
(A) दिन में 50 बार हाथ धोना।
(B) एक निरंतर और दखल देने वाला डर कि हाथ संक्रमित हैं।
(C) घर छोड़ने से पहले 20 बार चूल्हा जांचना।
(D) मेज पर वस्तुओं को पूर्ण समरूपता में व्यवस्थित करना।

119. व्यक्तित्व विकार के निदान के लिए व्यवहार के एक ऐसे प्रतिरूप की आवश्यकता होती है जो:
(A) सामयिक और तीव्र हो
(B) पदार्थ के उपयोग के कारण हो
(C) किसी चिकित्सा स्थिति का प्रत्यक्ष परिणाम हो
(D) अनम्य और व्यापक हो

120. सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में, चिकित्सक की प्राथमिक भूमिका है:
(A) स्वीकृति, समानुभूति और वास्तविकता का वातावरण बनाना।
(B) समाधान और सीधी सलाह प्रदान करना।
(C) सेवार्थी के सपनों और जुबान फिसलने की व्याख्या करना।

144. संज्ञानात्मक सिद्धांत द्वारा संकल्पित पैनिक आक्रमण के निम्नलिखित चरणों को संभावित क्रम में व्यवस्थित करें।
1. शारीरिक संवेदना की धारणा
2. संवेदना की विनाशकारी गलत व्याख्या
3. चिंता और शारीरिक लक्षणों में वृद्धि
4. आसन्न संकट या नियंत्रण खोने की भावना

(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 1, 2, 4
(D) 1, 3, 2, 4

145. बौद्धिक अक्षमता के निदान के लिए विकासात्मक अवधि के दौरान कमियों की शुरुआत की आवश्यकता होती है, जिसे आमतौर पर किस आयु से पहले परिभाषित किया जाता है?
(A) 12
(B) 18
(C) 21
(D) 30

146. व्यामोह ______ में एक विक्षोभ है, जबकि विभ्रम ______ में एक विक्षोभ है।
(A) विचार सामग्री; प्रत्यक्ष ज्ञान
(B) प्रत्यक्ष ज्ञान; विचार सामग्री
(C) मनोदशा; प्रत्यक्ष ज्ञान
(D) प्रत्यक्ष ज्ञान; मनोदशा

147. मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा सुझाव देगी कि सेवार्थी का प्रतिरोध क्या है:
(A) संकेत है कि चिकित्सा काम नहीं कर रही है।
(B) चिकित्सक को परेशान करने का एक सचेत प्रयास।
(C) पीड़ादायक सामग्री का सामना करने से बचने के लिए एक अचेतन रक्षा तंत्र।
(D) संकेत है कि सेवार्थी बदलाव के लिए प्रेरित नहीं है।

148. निम्नलिखित में से कौन पैनिक आक्रमण का सामान्य लक्षण नहीं है?
(A) हृदय गति तीव्र होना
(B) चक्कर आना
(C) मरने या नियंत्रण खोने का डर
(D) शांति और शिथिलन में धीरे-धीरे वृद्धि

149. मनोविज्ञान के अंतर्वैयक्तिक मॉडल का केंद्रीय सिद्धांत यह है कि:
(A) लोगों के मूल विश्वास उनकी भावनात्मक स्थिति निर्धारित करते हैं।
(B) मानव व्यवहार इसके परिणामों द्वारा आकार लेता है।
(C) मनोवैज्ञानिक कल्याण संबंधों की गुणवत्ता से जुड़ा होता है।
(D) बचपन की अचेतन शक्तियां व्यवहार की प्रेरक होती हैं।

150. एक व्यक्ति जो सभी साक्ष्यों के विपरीत दृढ़ता से मानता है कि वह एक प्रसिद्ध हस्ती है, वह क्या अनुभव कर रहा है?
(A) विभ्रम
(B) भव्यता का व्यामोह
(C) बाध्यकारी क्रिया
(D) नकारात्मक लक्षण

151. निम्नलिखित में से कौन सा चिकित्सा को उसके प्राथमिक लक्ष्य के साथ सही ढंग से जोड़ता है?
(A) संज्ञानात्मक चिकित्सा: पुनर्गठन के माध्यम से बिना शर्त आत्म-सम्मान प्राप्त करना।
(B) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा: दमित अचेतन बचपन के द्वंद्वों को उजागर करना।
(C) बायोफीडबैक: अंतर्वैयक्तिक संचार और संबंध कौशल में सुधार करना।
(D) मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा: इस बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करना कि बचपन के अनुभव वर्तमान व्यवहार को कैसे आकार देते हैं।

152. पदार्थ-संबंधित विकारों के संदर्भ में, 'सहिष्णुता' का तात्पर्य है:
(A) पदार्थ के प्रति शरीर का अनुकूलन, जिससे वांछित प्रभाव के लिए इसकी अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है।
(B) पदार्थ के उपयोग से जुड़ी सकारात्मक भावनाएं।
(C) पदार्थ का उपयोग बंद करने पर होने वाले अप्रिय लक्षण।
(D) पदार्थ के उपयोग की सामाजिक स्वीकृति।

153. सामान्यीकृत चिंता विकार की एक प्रमुख विशेषता यह है कि चिंता:
(A) एक एकल, विशिष्ट वस्तु पर केंद्रित होती है।
(B) सामाजिक जांच वाली स्थितियों तक सीमित होती है।
(C) अत्यधिक, व्यापक और नियंत्रित करने में कठिन होती है।
(D) बाध्यकारी अनुष्ठानों के साथ होती है।

154. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।
सूची I: (अवधारणा)
P. बिना शर्त सकारात्मक सम्मान
Q. अनुकूलित प्रतिक्रिया
R. स्वचालित नकारात्मक विचार
S. स्थानांतरण

सूची II: (संबद्ध मॉडल)
1. व्यवहारवादी
2. मनोगत्यात्मक
3. संज्ञानात्मक
4. सेवार्थी-केंद्रित

(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

P. सिगमंड फ्रायड
Q. कार्ल रोजर्स
R. आरोन बेक
S. बी.एफ. स्किनर
सूची II: (संबद्ध अवधारणा/चिकित्सा)
1. संज्ञानात्मक चिकित्सा
2. क्रियाप्रसूत अनुकूलन
3. मनोविश्लेषण
4. सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

180. निम्नलिखित में से कौन उन्मादी प्रकरण का विशिष्ट लक्षण नहीं है?
(A) नींद की आवश्यकता में कमी
(B) विचारों का तीव्र प्रवाह
(C) जोखिम भरी सुखद गतिविधियों में अत्यधिक भागीदारी
(D) साइकोमोटर मंदता

181. अंतर्वैयक्तिक मॉडल सुझाव देता है कि मनोवैज्ञानिक विकारों की जड़ें किसमें हैं:
(A) सोचने के कुअनुकूलक प्रतिरूप।
(B) जैविक असामान्यताएं।
(C) दूसरों के साथ संबंधों में कठिनाइयाँ।
(D) अनुकूलित भावनात्मक प्रतिक्रियाएं।

182. मनोविश्लेषण में चिकित्सा की प्रक्रिया को रोकने के लिए सेवार्थी के अचेतन प्रयास को _____ कहा जाता है।
(A) प्रतिरोध
(B) स्थानांतरण
(C) विरेचन
(D) उदात्तीकरण

183. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): नैदानिक मनोविज्ञान के व्यवहारवादी मॉडल की अक्सर संज्ञान की भूमिका की उपेक्षा करने के लिए आलोचना की जाती है।
कारण (R): प्रारंभिक व्यवहारवाद ने अवलोकन योग्य उत्तेजनाओं और प्रतिक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित किया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

184. बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार में, बाध्यकारी क्रियाएं किसके लिए की जाती हैं:
(A) चिंता पैदा करने के लिए।
(B) आनंद की भावना प्राप्त करने के लिए।
(C) अचेतन इच्छाओं को व्यक्त करने के लिए।
(D) चिंता या कष्ट को कम करने के लिए।

185. एक व्यक्ति का निरंतर विश्वास है कि उसे एक गंभीर बीमारी है, साक्ष्यों के बावजूद। यह किससे संबंधित पैरानोइया का एक उदाहरण है:
(A) कायिक चिंताएं
(B) भव्यता
(C) उत्पीड़न
(D) संदर्भ

186. इनमें से कौन सा बौद्धिक अक्षमता का प्रसवकालीन (जन्म के दौरान) कारण है?
(A) डाउन सिंड्रोम
(B) प्रसव के दौरान ऑक्सीजन की कमी
(C) फीटल अल्कोहल सिंड्रोम
(D) बचपन का दिमागी बुखार

187. पैनिक विकार के लिए संज्ञानात्मक चिकित्सा का मुख्य लक्ष्य क्या है?
(A) पैनिक के बचपन के कारणों का पता लगाना।
(B) सेवार्थी को एक सुरक्षित स्थान प्रदान करना।
(C) व्यक्ति को शारीरिक संवेदनाओं की पुनर्व्याख्या करना सिखाना।
(D) हृदय गति को कम करने के लिए बायोफीडबैक का उपयोग करना।

188. सिज़ोफ्रेनिया से ग्रस्त व्यक्ति घंटों तक एक निश्चित मुद्रा में रहता है और प्रतिक्रिया नहीं करता है। यह किसका उदाहरण है:
(A) सकारात्मक लक्षण
(B) नकारात्मक लक्षण
(C) व्यामोह
(D) कैटाटोनिया

189. मनोगत्यात्मक मॉडल की एक प्रमुख धारणा यह है कि:
(A) वयस्क व्यवहार काफी हद तक अचेतन गतिकी और प्रारंभिक बचपन के अनुभवों द्वारा निर्धारित होता है।
(B) व्यवहार मुख्य रूप से पर्यावरणीय परिणामों द्वारा निर्धारित होता है।
(C) मनुष्य स्वाभाविक रुप से अच्छे होते हैं।
(D) भावनात्मक समस्याएं तर्कहीन विश्वासों का परिणाम हैं।

190. निम्नलिखित में से कौन व्यक्तित्व विकार को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) सिज़ोफ्रेनिया जैसी गंभीर, सामयिक मानसिक बीमारी।
(B) सोचने, महसूस करने और व्यवहार करने का एक दीर्घकालिक, अनम्य प्रतिरूप।
(C) मनोदशा परिवर्तन जो कुछ दिनों तक रहता है।
(D) किसी वस्तु का विशिष्ट भय।

(A) स्किज़ोइड व्यक्तित्व विकार
(B) पैरानॉयड व्यक्तित्व विकार
(C) बाध्यकारी व्यक्तित्व विकार
(D) सीमावर्ती व्यक्तित्व विकार

168. निम्नलिखित में से कौन सा मनोदशा विकार का सबसे उपयुक्त वर्णन है?
(A) एक विकार जो भावनाओं में महत्वपूर्ण विक्षोभ की विशेषता है।
(B) एक विकार जो कुअनुकूलक व्यवहार के दीर्घकालिक प्रतिरूप की विशेषता है।
(C) एक विकार जो शारीरिक लक्षणों की विशेषता है।
(D) एक विकार जो वास्तविकता से अलगाव की विशेषता है।

169. मनोविज्ञान के निम्नलिखित ऐतिहासिक विकासों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. मनोविश्लेषण का विकास
2. व्यवहारवाद का उदय
3. संज्ञानात्मक क्रांति और संज्ञानात्मक चिकित्सा का विकास
(A) 2, 1, 3
(B) 3, 2, 1
(C) 1, 2, 3
(D) 1, 3, 2

170. बायोफीडबैक किसके उपचार के लिए सबसे कम उपयोगी होगा?
(A) पिछले संबंध से उत्पन्न अनसुलझा शोक
(B) तनाव जनित सिरदर्द
(C) उच्च रक्तचाप
(D) उच्च शारीरिक उत्तेजना से जुड़ी चिंता

171. सिज़ोफ्रेनिया की एक प्रमुख नैदानिक विशेषता कम से कम कितनी अवधि के लिए सक्रिय-चरण के लक्षणों की उपस्थिति है?
(A) एक सप्ताह
(B) छह महीने
(C) एक वर्ष
(D) एक माह

172. निम्नलिखित पर विचार करें:
I. किसी दुर्घटना का बार-बार आने वाला, अवांछित चित्र।
II. हर बार चित्र दिखाई देने पर दस तक गिनने का मानसिक अनुष्ठान।
III. यह विश्वास कि गिनने से दुर्घटना रुक जाती है।
उपरोक्त में से कौन सा तत्व बाध्यकारी विचार का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) केवल I
(B) केवल II
(C) केवल III
(D) II और III

173. बौद्धिक अक्षमता के वर्गीकरण के लिए किन क्षेत्रों में अनुकूलन कार्यक्षमता में कमी की आवश्यकता होती है:
(A) कलात्मक क्षमता
(B) एथलेटिक कौशल
(C) सामाजिक कौशल
(D) संगीत प्रतिभा

174. मनोविकृति विज्ञान का कौन सा मॉडल "शास्त्रीय अनुकूलन" और "क्रियाप्रसूत अनुकूलन" जैसे शब्दों का उपयोग करने की अधिक संभावना रखेगा?
(A) मनोगत्यात्मक
(B) व्यवहारवादी
(C) अंतर्वैयक्तिक
(D) संज्ञानात्मक

175. बाध्यकारी विचार और सामान्य चिंता के बीच प्राथमिक अंतर यह है कि बाध्यकारी विचार आमतौर पर होता है:
(A) अधिक तर्कसंगत और वास्तविकता पर आधारित।
(B) ईगो-सिंटोनिक।
(C) मानसिक रूप से नियंत्रित करने में बहुत आसान।
(D) ईगो-डिस्टोनिक, जिसका अर्थ है कि यह दखल देने वाला और तर्कहीन अनुभव होता है।

176. सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में एक मुख्य विश्वास यह है कि मनोवैज्ञानिक कष्ट किससे उत्पन्न होता है:
(A) व्यक्ति के वास्तविक स्वरूप और आदर्श स्वरूप के बीच असंगति।
(B) दोषपूर्ण अधिगम।
(C) अनसुलझे मनोयौन द्वंद्व।
(D) घटनाओं की विनाशकारी गलत व्याख्या।

177. "पदार्थ-संबंधित विकार" शब्द में शामिल है:
(A) केवल अवैध औषधियों का उपयोग।
(B) औषधियों और मदिरा के दुरुपयोग एवं निर्भरता सहित समस्याओं की एक श्रृंखला।
(C) केवल मदिरा से संबंधित समस्याएं।
(D) किसी पदार्थ का सामयिक उपयोग।

178. सिज़ोफ्रेनिया से ग्रस्त व्यक्ति जो मानता है कि टेलीविज़न समाचार केवल उनके लिए विशेष संदेश दे रहा है, वह क्या अनुभव कर रहा है?
(A) संदर्भ का व्यामोह
(B) भव्यता का व्यामोह
(C) कायिक व्यामोह
(D) उत्पीड़न का व्यामोह

179. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।
सूची I: (मनोवैज्ञानिक)

(A) सचेत; पूर्व-चेतन
(B) पूर्व-चेतन; सचेत
(C) अचेतन; सचेत
(D) सचेत; अचेतन

228. बौद्धिक अक्षमता के कारणों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. डाउन सिंड्रोम जैसी आनुवंशिक असामान्यताएं एक प्रमुख कारण हैं।
II. कुपोषण और विषाक्त पदार्थों के संपर्क जैसे पर्यावरणीय कारक कारण हो सकते हैं।
III. यह गर्भावस्था और जन्म के दौरान समस्याओं के परिणामस्वरुप हो सकता है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

229. इच्छाशक्ति की कमी, वाणी की अल्पता और एनहेडोनिया ये सभी सिज़ोफ्रेनिया के ________ लक्षणों के उदाहरण हैं।
(A) सकारात्मक
(B) नकारात्मक
(C) अव्यवस्थित
(D) पैरानॉयड

230. नैदानिक मनोविज्ञान का "अंतर्वैयक्तिक" मॉडल किस सैद्धांतिक दिशा के साथ सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) अंतर्वैयक्तिक
(B) व्यवहारवादी
(C) संज्ञानात्मक
(D) मानवतावादी

231. किसी बाहरी उत्तेजना की अनुपस्थिति में होने वाले संवेदी अनुभव के लिए शब्द है:
(A) व्यामोह
(B) बाध्यकारी विचार
(C) विभ्रम
(D) मतिभ्रम

232. पैनिक विकार की एक आवश्यक विशेषता है:
(A) कई विशिष्ट दुर्भीतियों की उपस्थिति।
(B) निरंतर, मुक्त-प्रवाही चिंता।
(C) बाध्यकारी क्रियाओं की उपस्थिति।
(D) बार-बार, अप्रत्याशित पैनिक आक्रमण और भविष्य के हमलों के बारे में चिंता।

233. निम्नलिखित में से कौन सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा की मुख्य उपचारात्मक स्थितियों में से एक नहीं है?
(A) समानुभूति
(B) व्यवहार विश्लेषण
(C) अनुरुपता
(D) बिना शर्त सकारात्मक सम्मान

234. निम्नलिखित में से कौन पदार्थ-संबंधित विकार में "सहिष्णुता" की अवधारणा का वर्णन करता है?
(A) किसी को सुबह मदिरा न मिलने पर घबराहट महसूस होती है।
(B) कोई कोकीन का उपयोग जारी रखता है भले ही नौकरी चली गई हो।
(C) किसी को पहले दो पेय में मादकता महसूस होती थी, लेकिन अब छह की आवश्यकता होती है।
(D) कोई मादक पदार्थ प्राप्त करने के बारे में बहुत समय बिताता है।

235. संज्ञानात्मक चिकित्सा का एक केंद्रीय केंद्र किसे पहचानने और संशोधित करने पर है:
(A) रक्षा तंत्र
(B) पर्यावरणीय आकस्मिकताएं
(C) स्थानांतरण संबंध
(D) स्वचालित विचार और संज्ञानात्मक विकृतियां

236. मनोगत्यात्मक मॉडल व्यक्तित्व विकारों के विकास का श्रेय किसे देता है?
(A) मनोयौन विकास के प्रारंभिक चरणों में स्थिरीकरण।
(B) सुदृढ़ीकरण और दंड का एक विशिष्ट प्रतिरूप।
(C) बचपन में सीखे गए दोषपूर्ण मूल विश्वास।
(D) एक जन्मजात स्वभाव।

237. एक व्यक्ति जो कई दिनों तक अत्यधिक उत्साह और नींद की कम आवश्यकता का अनुभव करता है, वह संभवतः क्या अनुभव कर रहा है:
(A) एक गंभीर अव□ □ □ग्रस्त प्रकरण
(B) एक उन्मादी प्रकरण
(C) एक पैनिक आक्रमण
(D) एक सिज़ोफ्रेनिक ब्रेक

238. सिज़ोफ्रेनिया के संदर्भ में, पैरानोइया विशेष रूप से किसे संदर्भित करता है?
(A) किसी भी प्रकार का व्यामोह।
(B) नकारात्मक लक्षण।
(C) उत्पीड़न या भव्य प्रकृति के व्यामोह।
(D) अव्यवस्थित भाषा।

239. सामान्यीकृत चिंता विकार की परिभाषित विशेषता है:
(A) अचानक, तीव्र भय
(B) विशिष्ट वस्तुओं का भय
(C) दोहरावदार कार्य
(D) निरंतर, अनियंत्रित चिंता

240. बायोफीडबैक एक ऐसी तकनीक है जो किसके दायरे में आती है:

191. पैनिक आक्रमण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. पैनिक आक्रमण तीव्र भय की एक निश्चित अवधि है।
II. पैनिक विकार में बार-बार, अप्रत्याशित पैनिक आक्रमण शामिल होते हैं।
III. एगोराफोबिया अक्सर पैनिक विकार की जटिलता के रूप में विकसित होता है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

192. कौन सी चिकित्सा उपचारात्मक संबंध को परिवर्तन के तंत्र के रूप में महत्व देती है?
(A) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा।
(B) संज्ञानात्मक चिकित्सा।
(C) मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा।
(D) बायोफीडबैक।

193. "डबल डिप्रेशन" शब्द एक ऐसी स्थिति को संदर्भित करता है जहाँ:
(A) एक व्यक्ति लगातार दो गंभीर अवसादग्रस्त प्रकरणों का अनुभव करता है।
(B) दीर्घकालिक, अल्प अवसाद वाला व्यक्ति एक पूर्ण गंभीर प्रकरण का अनुभव करता है।
(C) एक व्यक्ति को गंभीर अवसाद और चिंता विकार दोनों होते हैं।
(D) एक व्यक्ति को द्विध्रुवी II विकार का निदान दिया गया है।

194. असामान्यता के मानदंड के रूप में कुअनुकूलक व्यवहार की अवधारणा उस व्यवहार को संदर्भित करती है जो:
(A) व्यक्ति की दैनिक कार्य करने की क्षमता में हस्तक्षेप करता है।
(B) व्यवहार जो सांख्यिकीय रूप से दुर्लभ है।
(C) व्यवहार जो सांस्कृतिक मानदंडों का उल्लंघन करता है।
(D) व्यवहार जिसे अजीब माना जाता है।

195. बायोफीडबैक चिकित्सा में कार्य का प्राथमिक तंत्र क्या है?
(A) अंतर्दृष्टि
(B) विरेचन
(C) क्रियाप्रसूत अनुकूलन
(D) संज्ञानात्मक पुनर्गठन

196. किसी पदार्थ के प्रति सहिष्णुता के विकास का अर्थ है कि:
(A) व्यक्ति अब पदार्थ का आनंद नहीं लेता है।
(B) रुकने पर व्यक्ति निवर्तन का अनुभव करता है।
(C) व्यक्ति में मनोवैज्ञानिक लालसा विकसित हो गई है।
(D) व्यक्ति को वही प्रभाव प्राप्त करने के लिए पदार्थ की अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है।

197. निम्नलिखित में से कौन सा अव्यवस्थित भाषा का उदाहरण है?
(A) बहुत कम बोलना।
(B) एकरस आवाज में बोलना।
(C) एक विषय से दूसरे असंबंधित विषय पर तेजी से जाना।
(D) विदेशी लहजे में बोलना।

198. मनोविज्ञान का व्यवहारवादी मॉडल किस मॉडल में अनुभवजन्यता की कमी के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया थी?
(A) संज्ञानात्मक
(B) मनोगत्यात्मक
(C) अंतर्वैयक्तिक
(D) जैविक

199. एक व्यक्ति जिसे "मध्यम" बौद्धिक अक्षमता का निदान दिया गया है, उसे संभवतः किसकी आवश्यकता होगी:
(A) कोई महत्वपूर्ण समर्थन नहीं।
(B) रुक-रुक कर समर्थन।
(C) 24 घंटे देखभाल।
(D) दैनिक जीवन के लिए काफी समर्थन, लेकिन बुनियादी आत्म-देखभाल सीख सकता है।

200. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।
सूची I: (लक्षण)
P. वाणी की अल्पता
Q. एनहेडोनिया
R. बाध्यकारी क्रिया
S. उन्माद
सूची II: (सबसे संभावित विकार)
1. बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार
2. द्विध्रुवी मनोदशा विकार
3. सिज़ोफ्रेनिया
4. अवसाद
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

201. निम्नलिखित में से कौन सा सामान्यीकृत चिंता विकार की मुख्य विशेषता नहीं है?
(A) निरंतर और अत्यधिक चिंता
(B) दोहरावदार, अनुष्ठानिक व्यवहार
(C) मांसपेशियों में तनाव
(D) एकाग्रता में कठिनाई

202. स्थानांतरण की मनोगत्यात्मक अवधारणा किसे संदर्भित करती है?
(A) सेवार्थी द्वारा पिछले रिश्ते की भावनाओं को चिकित्सक पर अचेतन रूप से पुनर्निर्देशित करना।
(B) सेवार्थी के प्रति चिकित्सक की भावनाएं।
(C) चिकित्सा के दौरान अचानक भावनात्मक मुक्ति।

(D) चर्चा के प्रति सेवार्थी का प्रतिरोध।

203. कौन सा कथन व्यक्तित्व विकारों का गलत निरुपण है?
(A) वे दीर्घकालिक और व्यापक हैं।
(B) वे अक्सर कार्यक्षमता में अक्षमता की ओर ले जाते हैं।
(C) व्यवहार के प्रतिरुप लचीले और स्थितिजन्य होते हैं।
(D) शुरुआत आमतौर पर किशोरावस्था या प्रारंभिक वयस्कता में होती है।

204. "विचारों का तीव्र प्रवाह" किसका सबसे विशिष्ट लक्षण है?
(A) एक गंभीर अवसादग्रस्त प्रकरण
(B) एक पैनिक आक्रमण
(C) एक सिज़ोफ्रेनिक प्रकरण
(D) एक उन्मादी प्रकरण

205. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): संज्ञानात्मक चिकित्सा कई चिंता विकारों के लिए एक प्रभावी उपचार है।
कारण (R): यह चिकित्सा रोगियों को उन संज्ञानात्मक विकृतियों को पहचानने में मदद करती है जो उनकी चिंता को बढ़ाती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

206. सिज़ोफ्रेनिया और मनोदशा विकार के बीच मुख्य अंतर यह है कि सिज़ोफ्रेनिया में प्राथमिक विक्षोभ ______ में होता है, जबकि मनोदशा विकार में यह ______ में होता है।
(A) विचार; भावना
(B) भावना; विचार
(C) व्यक्तित्व; चिंता
(D) चिंता; व्यक्तित्व

207. निम्नलिखित सभी को चिंता विकारों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, सिवाय:
(A) पैनिक विकार
(B) बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार
(C) सामान्यीकृत चिंता विकार
(D) मनोदशा विकार

208. 'सेवार्थी-केंद्रित' दृष्टिकोण किस मॉडल की प्रत्यक्षता के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में विकसित किया गया था?
(A) व्यवहारवादी
(B) मनोविश्लेषणात्मक
(C) संज्ञानात्मक
(D) अंतर्वैयक्तिक

209. एक व्यक्ति जिसे प्रभाव महसूस करने के लिए अधिक शराब की आवश्यकता होती है, उसमें क्या विकसित हो गया है:
(A) निवर्तन
(B) सहिष्णुता
(C) मनोवैज्ञानिक लत
(D) व्यवहारिक लत

210. पैरानोइया की सबसे मौलिक विशेषता क्या है?
(A) दूसरों के प्रति निराधार अविश्वास और संदेह
(B) अव्यवस्थित भाषा
(C) सुखद गतिविधियों में रुचि का कम होना
(D) दोहरावदार और अनुष्ठानिक व्यवहार

211. बौद्धिक अक्षमता के संदर्भ में "अनुकूलन कार्यक्षमता" शब्द का तात्पर्य है:
(A) व्यक्ति का आईक्यू प्राप्तांक।
(B) व्यक्ति का शारीरिक स्वास्थ्य।
(C) रोजमर्रा के जीवन कौशल संपन्न करने की व्यक्ति की क्षमता।
(D) स्थिति का विशिष्ट आनुवंशिक कारण।

212. कौन सा चिकित्सा मॉडल यह मानता है कि मनोवैज्ञानिक समस्याएं पारिवारिक और सामाजिक भूमिकाओं से उत्पन्न द्वंद्वों का परिणाम हैं?
(A) मनोगत्यात्मक
(B) व्यवहारवादी
(C) संज्ञानात्मक
(D) अंतर्वैयक्तिक

213. निम्नलिखित पर विचार करें:
I. मस्तिष्क तरंगों के लिए ईईजी फीडबैक।
II. मांसपेशियों के लिए ईएमजी फीडबैक।
III. माइग्रेन के लिए थर्मल फीडबैक।
उपरोक्त में से कौन बायोफीडबैक के अनुप्रयोग हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

214. बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) बाध्यकारी विचार अवांछित, दखल देने वाले विचार हैं।
(B) इस विकार वाले व्यक्ति आमतौर पर इस बात से अनजान होते हैं कि उनके विचार तर्कहीन हैं।
(C) बाध्यकारी क्रियाएं दोहरावदार व्यवहार हैं।
(D) बाध्यकारी क्रियाएं आमतौर पर चिंता कम करने के लिए की जाती हैं।

215. किसके निदान के लिए कम से कम एक पूर्ण उन्मादी प्रकरण की उपस्थिति आवश्यक है?
(A) गंभीर अवसादग्रस्तता विकार

(B) द्विध्रुवी II विकार
(C) चक्रवाती विकार
(D) द्विध्रुवी I विकार

216. एक चिकित्सक जो सेवार्थी को उनके वास्तविक स्वरुप और आदर्श स्वरुप के बीच अनुरुपता प्राप्त करने में मदद करता है, वह अभ्यास कर रहा है:
(A) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
(B) मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा
(C) संज्ञानात्मक चिकित्सा
(D) व्यवहारवादी चिकित्सा

217. व्यामोह, विभ्रम और अव्यवस्थित भाषा ये सभी सिज़ोफ्रेनिया के ______ लक्षणों के उदाहरण हैं।
(A) नकारात्मक
(B) संज्ञानात्मक
(C) सकारात्मक
(D) भावात्मक

218. मनोगत्यात्मक मॉडल के अनुसार, चिंता एक खतरे का संकेत है जो दर्शाती है कि:
(A) एक अनुकूलित उत्तेजना मौजूद है।
(B) विनाशकारी विचार आ रहे हैं।
(C) अंतर्वैयक्तिक आवश्यकताएं पूरी नहीं हो रही हैं।
(D) दमित सामग्री चेतना में उभरने का खतरा पैदा कर रही है।

219. पदार्थ उपयोग विकार का निदान उचित है यदि पदार्थ का उपयोग किसकी ओर ले जाता है:
(A) सामाजिक या व्यावसायिक कार्यक्षमता में महत्वपूर्ण अक्षमता या कष्ट।
(B) मादकता का कोई भी स्तर।
(C) एक से अधिक अवसरों पर उपयोग।
(D) तनावपूर्ण दिन के बाद विश्राम की भावना।

220. बौद्धिक अक्षमता के वर्गीकरण में किसका मूल्यांकन शामिल है:
(A) केवल आईक्यू
(B) आईक्यू और अनुकूलन व्यवहार दोनों
(C) केवल अनुकूलन व्यवहार
(D) न तो आईक्यू और न ही अनुकूलन व्यवहार

221. असामान्यता का कौन सा मानदंड संस्कृतियों और समय अवधि में बदलने की सबसे अधिक संभावना रखता है?
(A) व्यक्तिपरक कष्ट
(B) कुअनुकूलक व्यवहार
(C) सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन
(D) स्वयं के लिए खतरा

222. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।
सूची I: (चिकित्सा)
P. मनोविश्लेषणात्मक
Q. सेवार्थी-केंद्रित
R. संज्ञानात्मक
S. व्यवहारवादी
सूची II: (प्रमुख व्यक्ति)
1. कार्ल रोजर्स
2. आरोन बेक
3. सिगमंड फ्रायड
4. बी.एफ. स्किनर
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

223. एक व्यक्ति जो दो वर्षों से अधिक समय तक पुराने, निम्न-स्तर के अवसाद का अनुभव करता है, उसे संभवतः किसका निदान दिया जाएगा?
(A) द्विध्रुवी विकार
(B) चक्रवात विकार
(C) सामान्यीकृत चिंता विकार
(D) डिस्थायमिया

224. निम्नलिखित में से कौन सा पैनिक आक्रमण को सामान्यीकृत चिंता से सबसे अच्छी तरह अलग करता है?
(A) पैनिक आक्रमण की अचानक, तीव्र और समय-सीमित प्रकृति।
(B) शारीरिक लक्षणों की उपस्थिति।
(C) भविष्य की घटनाओं के बारे में चिंता।
(D) औषधि की प्रभावशीलता।

225. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): नैदानिक प्रणालियों में अक्सर एक व्यक्तित्व विकार को अन्य नैदानिक सिंड्रोम से अलग किया जाता है।
कारण (R): यह भेद यह सुनिश्चित करता है कि चिकित्सक व्यवहार के इन दीर्घकालिक प्रतिरूपों की उपेक्षा न करें।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

226. मनोविकृति विज्ञान का संज्ञानात्मक मॉडल प्रस्ताव करता है कि असामान्य व्यवहार किसका परिणाम है:
(A) विकृत या तर्कहीन सोच और विश्वास।
(B) दोषपूर्ण अधिगम इतिहास।
(C) अनसुलझे अचेतन द्वंद्व।
(D) अंतर्वैयक्तिक संबंधों में समस्याएं।

227. मनोविश्लेषण का एक प्रमुख लक्ष्य ______ सामग्री को ______ जागरुकता में लाना है।

(मनोविक्षिप्ति)

252. निम्नलिखित में से कौन बौद्धिक अक्षमता का कारण नहीं है?
(A) आनुवंशिक स्थितियां
(B) प्रारंभिक बचपन में उन्नत शैक्षणिक प्रशिक्षण
(C) गर्भावस्था के दौरान समस्याएं
(D) स्वास्थ्य समस्याएं

253. संज्ञानात्मक चिकित्सा में, "मूल विश्वास" को वर्णित किया गया है:
(A) एक सहज नकारात्मक विचार।
(B) एक व्यवहारिक नियम।
(C) स्वयं या दुनिया के बारे में एक मौलिक, गहराई से माना जाने वाला विचार।
(D) एक अचेतन रक्षा तंत्र।

254. निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा गलत मिलान है?
(A) पैनिक विकार - चिंता विकार
(B) असामाजिक व्यक्तित्व विकार - व्यक्तित्व विकार
(C) गंभीर अवसादग्रस्तता विकार - मनोदशा विकार
(D) सिज़ोफ्रेनिया - मनोदशा विकार

255. मनोगत्यात्मक दृष्टिकोण सेवार्थी की "जुबान फिसलने" को किस रूप में देखेगा:
(A) अचेतन विचारों या इच्छाओं का प्रकटीकरण।
(B) संज्ञानात्मक कमी।
(C) वाणी उत्पादन में एक यादृच्छिक त्रुटि।
(D) एक सीखा हुआ मौखिक व्यवहार।

256. निम्नलिखित में से कौन सी मनोचिकित्सा में उपयोग की जाने वाली एक व्यवहारवादी तकनीक है?
(A) स्वप्न विश्लेषण
(B) व्यवस्थित विसंवेदीकरण
(C) मुक्त साहचर्य
(D) सुकराती पूछताछ

257. एक व्यक्ति जो अल्प-उन्माद के प्रकरणों का अनुभव करता है जो गंभीर अवसाद के प्रकरणों के साथ वैकल्पिक होते हैं, उसे किसका निदान दिया जाएगा?
(A) द्विध्रुवी I विकार
(B) द्विध्रुवी II विकार
(C) चक्रवात विकार
(D) गंभीर अवसादग्रस्तता विकार

258. अंतर्वैयक्तिक मॉडल के अनुसार, कई मनोवैज्ञानिक विकार किसके कुअनुकूलक प्रयास हैं:
(A) संबंधों में खतरों से उत्पन्न चिंता का सामना करना।
(B) अचेतन द्वंद्वों को हल करना।
(C) संज्ञानात्मक असंगति को कम करना।
(D) पुरस्कार प्राप्त करना।

259. असामान्यता को परिभाषित करने के लिए "खतरे" का मानदंड उस व्यवहार को संदर्भित करता है जो:
(A) केवल अजीब है।
(B) दूसरों को असहज करता है।
(C) स्वयं या दूसरों को नुकसान पहुँचाने का जोखिम पैदा करता है।
(D) सांख्यिकीय औसत से विचलित होता है।

260. व्यक्तित्व विकारों के सामान्य मानदंड कौन से हैं?
I. आंतरिक अनुभव और व्यवहार का एक स्थायी प्रतिरूप।
II. यह प्रतिरूप अनम्य और व्यापक है।
III. यह प्रतिरूप कष्ट या अक्षमता की ओर ले जाता है।
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

261. बायोफीडबैक एक प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति को उनकी _______ के बारे में जानकारी दी जाती है।
(A) अचेतन प्रेरणाएँ
(B) स्वचालित विचार
(C) शारीरिक स्थिति
(D) अंतर्वैयक्तिक शैली

262. एक व्यक्ति जो संक्रमण के डर से दिन में सैकड़ों बार हाथ धोता है, वह पीड़ित है:
(A) सामान्यीकृत चिंता विकार
(B) पैनिक विकार
(C) सिज़ोफ्रेनिया
(D) बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार

263. पैरानॉयड व्यक्तित्व विकार में शामिल है:
(A) स्पष्ट व्यामोह और विभ्रम की उपस्थिति।
(B) अविश्वास का एक व्यापक, दीर्घकालिक और अनम्य प्रतिरूप।
(C) एक सामयिक प्रतिरूप।
(D) औषधि के प्रति बेहतर प्रतिक्रिया।

264. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): सिज़ोफ्रेनिया को एक विचार विकार माना जाता है।
कारण (R): इसके मुख्य लक्षण विचार सामग्री और प्रक्रिया में गंभीर विक्षोभ का प्रतिनिधित्व करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

265. अचेतन को सचेत करने का लक्ष्य किसके केंद्र में है:

(A) मनोगत्यात्मक चिकित्सा
(B) व्यवहार चिकित्सा
(C) मानवतावादी चिकित्सा
(D) अस्तित्ववादी चिकित्सा

241. "मुक्त साहचर्य," "स्वप्न विश्लेषण," और "स्थानांतरण का विश्लेषण" किसमें उपयोग की जाने वाली तकनीकें हैं:
(A) संज्ञानात्मक चिकित्सा
(B) मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा
(C) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
(D) अंतर्वैयक्तिक चिकित्सा

242. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।
सूची I: (विकार)
P. मनोदशा विकार
Q. चिंता विकार
R. सिज़ोफ्रेनिया
S. व्यक्तित्व विकार
सूची II: (प्राथमिक विशेषता)
1. विचार और धारणा की गड़बड़ी
2. व्यवहार का अनम्य, व्यापक प्रतिरुप
3. भावना की गड़बड़ी
4. आशंका और भय
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

243. नैदानिक मनोविज्ञान का "व्यवहारवादी" मॉडल प्रस्ताव करता है कि असामान्य व्यवहार हैं:
(A) अचेतन द्वंद्व का संकेत।
(B) तर्कहीन विचार प्रक्रियाओं के कारण।
(C) उसी तरह सीखे गए जैसे सामान्य व्यवहार।
(D) असंगत आत्म-अवधारणा का परिणाम।

244. एक व्यक्ति जिसका सामाजिक रूप से अलग रहने का इतिहास है और संबंधों में कोई रुचि नहीं है, उसे संभवतः किसका निदान दिया जाएगा?
(A) पैरानॉयड व्यक्तित्व विकार
(B) असामाजिक व्यक्तित्व विकार
(C) सीमावर्ती व्यक्तित्व विकार
(D) स्किज़ोइड व्यक्तित्व विकार

245. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): बौद्धिक अक्षमता की परिभाषा केवल आईक्यू प्राप्तांक पर आधारित नहीं है।
कारण (R): निदान के लिए अनुकूलन कार्यक्षमता में महत्वपूर्ण कमियां भी मौजूद होनी चाहिए।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

246. बाध्यकारी विचारों और व्यामोह के बीच मुख्य अंतर यह है कि:
(A) व्यामोह निश्चित विश्वास हैं, जबकि बाध्यकारी विचार व्यवहार हैं।
(B) बाध्यकारी विचारों को तर्कहीन माना जाता है, जबकि व्यामोह को सत्य माना जाता है।
(C) बाध्यकारी विचार हमेशा धार्मिक होते हैं।
(D) व्यामोह चिंता के लक्षण हैं।

247. सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सक का प्राथमिक लक्ष्य क्या प्रदान करना है:
(A) प्रारंभिक बचपन में अंतर्दृष्टि।
(B) व्यवहारों को बदलने की रणनीतियाँ।
(C) संज्ञानात्मक विकृतियों के बारे में शिक्षा।
(D) एक वास्तविक संबंध के माध्यम से सुधारात्मक भावनात्मक अनुभव।

248. पदार्थ-संबंधित विकारों में "निवर्तन" शब्द का तात्पर्य है:
(A) पदार्थ का उपयोग बंद करने के कारण होने वाले विशिष्ट लक्षण।
(B) वांछित प्रभाव के लिए पदार्थ की बढ़ती मात्रा की आवश्यकता।
(C) पदार्थ उपयोग का कुअनुकूलक प्रतिरुप।
(D) किसी पदार्थ को उपयोग करने की अत्यधिक इच्छा।

249. पैनिक आक्रमण का अनुभव करने वाले व्यक्ति द्वारा किसके विश्वास करने की सबसे अधिक संभावना है:
(A) "मैं एक बुरा व्यक्ति हूँ।"
(B) "कोई मेरे खिलाफ साजिश रच रहा है।"
(C) "मुझे दिल का दौरा पड़ रहा है" या "मैं पागल हो रहा हूँ।"
(D) "मुझे इस अनुष्ठान को पूर्णता के साथ करना चाहिए।"

250. हैरी स्टैक सुलिवन का अंतर्वैयक्तिक मॉडल किस पर जोर देता है:
(A) यौन आवेगों के ऊपर सामाजिक अनुभव और अंतर्वैयक्तिक संबंध।
(B) जैविक आवेगों की प्रधानता।
(C) केवल व्यवहारिक अधिगम।
(D) केवल संज्ञानात्मक स्कीमा।

251. निम्नलिखित में से कौन सिज़ोफ्रेनिया की सबसे परिभाषित विशेषता है?
(A) तीव्र मनोदशा परिवर्तन
(B) व्यापक चिंता
(C) अनम्य व्यक्तित्व
(D) वास्तविकता के साथ एक मौलिक अलगाव

155. निम्नलिखित में से कौन व्यक्तित्व विकार की परिभाषा का एक प्रमुख पहलू है?
(A) यह एक प्रमुख तनावपूर्ण जीवन घटना के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया है।
(B) यह विचित्र विचारों और अवधारणात्मक विक्षोभ की विशेषता है।
(C) इसका इलाज औषधि के अल्पकालिक पाठ्यक्रम के साथ किया जाता है।
(D) यह अनुभव और व्यवहार का एक स्थायी प्रतिरूप है जो मानदंडों से विचलित होता है।

156. मनोगत्यात्मक मॉडल किसके कार्य से उत्पन्न हुआ था?
(A) बी.एफ. स्किनर
(B) सिगमंड फ्रायड
(C) कार्ल रोजर्स
(D) आरोन बेक

157. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): पैरानोइया सिज़ोफ्रेनिया का एक लक्षण हो सकता है।
कारण (R): सिज़ोफ्रेनिया अक्सर व्यामोह की विशेषता रखता है, और उत्पीड़न के व्यामोह इसकी एक विशेषता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

158. द्विध्रुवी I और द्विध्रुवी II विकार के बीच प्राथमिक अंतर यह है कि द्विध्रुवी I में ______ शामिल है, जबकि द्विध्रुवी II में ______ शामिल है।
(A) अवसाद; उन्माद
(B) अल्प-उन्माद; अवसाद
(C) उन्माद; अवसाद और चिंता
(D) उन्माद; अल्प-उन्माद

159. निम्नलिखित लक्षणों पर विचार करें:
I. रुचि या आनंद में स्पष्ट कमी।
II. महत्वपूर्ण वजन परिवर्तन।
III. मृत्यु के बार-बार आने वाले विचार।
उपरोक्त में से कौन से मनोदशा विकारों के संभावित लक्षण हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

160. व्यवहारवादी दृष्टिकोण से, बाध्यकारी विचार-क्रिया व्यवहारों के बने रहने की व्याख्या किसके द्वारा की जाती है?
(A) शास्त्रीय अनुकूलन।
(B) क्रियाप्रसूत अनुकूलन, जहाँ बाध्यकारी क्रिया चिंता को कम करके नकारात्मक रूप से सुदृढ़ होती है।
(C) दमित इच्छाओं से जुड़ी अचेतन इच्छा पूर्ति।
(D) संज्ञानात्मक स्थिरता बनाए रखने की निरंतर आवश्यकता।

161. 20-35 की सीमा में आईक्यू प्राप्तांक बौद्धिक अक्षमता के किस स्तर के वर्गीकरण की ओर ले जाएगा?
(A) अल्प
(B) गंभीर
(C) मध्यम
(D) अति गंभीर

162. कार्ल रोजर्स मनोचिकित्सा के किस रूप से जुड़े प्राथमिक व्यक्ति हैं?
(A) सेवार्थी-केंद्रित
(B) मनोविश्लेषणात्मक
(C) संज्ञानात्मक
(D) व्यवहारवादी

163. सिज़ोफ्रेनिया में देखा जाने वाला "सपाट प्रभाव" किसका उदाहरण है?
(A) सकारात्मक लक्षण
(B) संज्ञानात्मक लक्षण
(C) नकारात्मक लक्षण
(D) मनोदशा लक्षण

164. निम्नलिखित में से कौन सा असामान्यता को परिभाषित करने के मानदंडों के समूह का भाग नहीं है?
(A) विचलन
(B) कष्ट
(C) अक्षमता
(D) निदान

165. मनोविज्ञान का अंतर्वैयक्तिक मॉडल मानता है कि मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य किसके माध्यम से बना रहता है?
(A) नकारात्मक विचारों की अनुपस्थिति।
(B) एक मजबूत परा-अहं।
(C) संतोषजनक और अनुकूलनीय संबंध।
(D) शारीरिक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने की क्षमता।

166. एक चिकित्सक सेवार्थी से पूछता है, "उस विश्वास के लिए क्या साक्ष्य है? क्या इसे देखने का कोई और तरीका है?" यह तकनीक किसकी विशेषता है?
(A) मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा
(B) संज्ञानात्मक चिकित्सा
(C) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
(D) बायोफीडबैक

167. एक व्यक्ति जो अत्यधिक संदिग्ध है, मनमुटाव रखता है, और सामान्य टिप्पणियों में छिपे हुए अर्थ निकालता है, वह किसके लक्षण दिखा रहा है:

(A) व्यवहारवादी चिकित्सा
(B) संज्ञानात्मक चिकित्सा
(C) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
(D) मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा

266. एकध्रुवीय अवसाद की स्थिति की विशेषता है:
(A) उन्माद के इतिहास के बिना उदास मनोदशा की एक लंबी अवधि।
(B) अवसाद और उन्माद के बीच परिवर्तन।
(C) पुरानी लेकिन अल्प चिंता।
(D) व्यामोह की उपस्थिति।

267. यथार्थवादी तरीके से सोचने पर बल देने वाले प्रश्न किस उपचारात्मक दृष्टिकोण की विशेषता हैं?
(A) मनोविश्लेषणात्मक
(B) सेवार्थी-केंद्रित
(C) संज्ञानात्मक
(D) अंतर्वैयक्तिक

268. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।
सूची I: (पद)
P. सहिष्णुता
Q. निवर्तन
R. निर्भरता
S. दुरुपयोग
सूची II: (सर्वश्रेष्ठ विवरण)
1. अक्षमता पैदा करने वाला कुअनुकूलक उपयोग।
2. समान प्रभाव के लिए बढ़ी हुई मात्रा की आवश्यकता।
3. सहिष्णुता और निवर्तन सहित अनुकूलन की स्थिति।
4. उपयोग बंद करने पर होने वाले लक्षण।
(A) P-2, Q-4, R-3, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

269. व्यवहारवादी मॉडल एक दुर्भीति के बने रहने की व्याख्या किसके माध्यम से करेगा:
(A) अंतर्दृष्टि।
(B) गलत व्याख्या।
(C) अचेतन विस्थापन।
(D) क्रियाप्रसूत अनुकूलन जहाँ परिहार को नकारात्मक रूप से सुदृढ़ किया जाता है।

270. अनुकूलन कार्यक्षमता में कमियों के साथ 65 का आईक्यू, किस निदान की ओर ले जाएगा:
(A) मध्यम बौद्धिक अक्षमता
(B) अल्प बौद्धिक अक्षमता
(C) गंभीर बौद्धिक अक्षमता
(D) सीमावर्ती बौद्धिक कार्यप्रणाली

271. सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में "बिना शर्त सकारात्मक सम्मान" का अर्थ है:
(A) चिकित्सक सेवार्थी को स्वीकार करता है, चाहे उसका व्यवहार या भावनाएं कुछ भी हों।
(B) चिकित्सक सेवार्थी की हर बात से सहमत होता है।
(C) चिकित्सक केवल तभी सकारात्मक होता है जब सेवार्थी प्रगति करता है।
(D) सेवार्थी को सकारात्मक रहना चाहिए।

272. एक गलत संवेदी धारणा ______ है, जबकि एक गलत विश्वास ______ है।
(A) व्यामोह; विभ्रम
(B) विभ्रम; व्यामोह
(C) बाध्यकारी विचार; बाध्यकारी क्रिया
(D) बाध्यकारी क्रिया; बाध्यकारी विचार

273. एक दुर्भीति और सामान्यीकृत चिंता के बीच प्राथमिक अंतर यह है कि दुर्भीति ______ है।
(A) तीव्र
(B) एक विशिष्ट वस्तु पर केंद्रित
(C) तर्कहीन
(D) व्यवहारवादी

274. कौन सा मॉडल सेवार्थी के पिछले इतिहास से सबसे कम संबंधित है?
(A) व्यवहारवादी
(B) मनोगत्यात्मक
(C) अंतर्वैयक्तिक
(D) सभी समान हैं

275. कौन सा विकार मनोदशा विकार नहीं है?
(A) गंभीर अवसादग्रस्तता विकार
(B) द्विध्रुवी विकार
(C) बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार
(D) डिस्थायमिया

276. मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर केंद्रित चिकित्सा कौन सी है?
I. मनोविश्लेषण
II. सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
III. संज्ञानात्मक चिकित्सा
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

277. आनंद का अनुभव करने में असमर्थता के लिए शब्द है:
(A) एलोगिया
(B) इच्छाशक्ति की कमी
(C) एनहेडोनिया
(D) भावात्मक शून्यता

278. एक व्यक्ति जिसे विश्वास है कि उसके आंतरिक अंग सड़ रहे हैं, वह क्या अनुभव कर रहा है:
(A) उत्पीड़न का व्यामोह
(B) भव्य व्यामोह
(C) विभ्रम
(D) कायिक व्यामोह

279. नैदानिक मनोविज्ञान का अंतर्वैयक्तिक मॉडल सुझाव देता है कि मनोविकृति विज्ञान है:
(A) संबंधों का एक विकार।
(B) मस्तिष्क की एक बीमारी।
(C) दोषपूर्ण अधिगम।
(D) तर्कहीन विश्वास।

280. एक व्यक्ति जो दरवाजा बंद है या नहीं, यह बार-बार जांचने की इच्छा महसूस करता है, अनुभव कर रहा है:
(A) बाध्यकारी विचार
(B) बाध्यकारी क्रिया
(C) व्यामोह
(D) दुर्भीति

281. नैदानिक मनोविज्ञान का वह मॉडल जो अवलोकन योग्य व्यवहार और पर्यावरणीय कारकों पर जोर देता है:
(A) मनोगत्यात्मक मॉडल
(B) संज्ञानात्मक मॉडल
(C) व्यवहारवादी मॉडल
(D) अंतर्वैयक्तिक मॉडल

282. द्विध्रुवी II विकार के निदान के लिए किसकी उपस्थिति आवश्यक है:
(A) एक उन्मादी प्रकरण और एक गंभीर अवसादग्रस्त प्रकरण।
(B) केवल अल्प-उन्मादी प्रकरण।
(C) केवल गंभीर अवसादग्रस्त प्रकरण।
(D) कम से कम एक अल्प-उन्मादी प्रकरण और एक गंभीर अवसादग्रस्त प्रकरण।

283. "पैरानोइया" की अवधारणा मौलिक रूप से किसकी भावनाओं में निहित है:
(A) भय और अविश्वास
(B) भव्यता और उत्साह
(C) उदासी और निराशा
(D) उदासीनता

284. बौद्धिक अक्षमता के कारणों के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) यह आनुवंशिक कारकों के कारण हो सकता है।
(B) यह हमेशा खराब पालन-पोषण के कारण होता है।
(C) यह पर्यावरणीय कारकों के कारण हो सकता है।
(D) यह जन्म के दौरान समस्याओं के कारण हो सकता है।

285. एक व्यक्ति जो भव्यता, प्रशंसा की आवश्यकता और समानुभूति की कमी प्रदर्शित करता है, उसे कौन सा व्यक्तित्व विकार है?
(A) सीमावर्ती
(B) असामाजिक
(C) आत्ममुग्ध
(D) स्किज़ोइड

286. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनें।
अभिकथन (A): सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में, चिकित्सक समानुभूति के लिए प्रयास करता है।
कारण (R): चिकित्सक दुनिया को सेवार्थी के दृष्टिकोण से देखने का प्रयास करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

287. निम्नलिखित में से कौन सा सिज़ोफ्रेनिया का एक सकारात्मक लक्षण है?
(A) भावात्मक शून्यता
(B) इच्छाशक्ति की कमी
(C) वाणी की अल्पता
(D) श्रवण विभ्रम

288. पदार्थ-संबंधित विकार को समस्याग्रस्त उपयोग के प्रतिरूप द्वारा वर्गीकृत किया जाता है, इसे कहते हैं:
(A) पदार्थ उपयोग विकार
(B) पदार्थ की मादकता
(C) पदार्थ का निवर्तन
(D) पदार्थ की सहिष्णुता

289. सिज़ोफ्रेनिया में सबसे सामान्य प्रकार का विभ्रम है:
(A) दृश्य
(B) श्रवण
(C) घ्राण
(D) स्पर्श

290. असामान्यता के "चार डी" विचलन, कष्ट, अक्षमता और _________ हैं:
(A) खतरा
(B) व्यामोह
(C) अवसाद
(D) अवधि

291. निम्नलिखित में से कौन पैनिक विकार की मुख्य विशेषता है?
(A) पुरानी, मुक्त-प्रवाही चिंता।
(B) किसी विशिष्ट वस्तु का निरंतर भय।
(C) बार-बार, अप्रत्याशित पैनिक आक्रमण।

(D) दखल देने वाले विचार।

292. असामान्य व्यवहार के मनोगत्यात्मक मॉडल के प्रणेता थे:
(A) कार्ल रोजर्स
(B) आरोन बेक
(C) सिगमंड फ्रायड
(D) बी. एफ. स्किनर

293. निम्नलिखित में से कौन सा व्यक्तित्व विकार नहीं है?
(A) पैरानॉयड व्यक्तित्व विकार
(B) स्किज़ोइड व्यक्तित्व विकार
(C) गंभीर अवसादग्रस्तता विकार
(D) बाध्यकारी व्यक्तित्व विकार

294. चिंता का उपचार करने के लिए बायोफीडबैक का उपयोग करने वाला चिकित्सक किसे मापने के लिए सेंसर लगाएगा:
(A) विचार सामग्री।
(B) हृदय गति या मांसपेशियों का तनाव।
(C) बचपन की यादें।
(D) सामाजिक संकेत।

295. निम्नलिखित में से कौन सा बाध्यकारी क्रिया का उदाहरण है?
(A) कीटाणुओं का डर।
(B) निरंतर विचार कि चूल्हा खुला है।
(C) एक व्यामोह।
(D) बार-बार यह जांचना कि चूल्हा बंद है या नहीं।

296. सिज़ोफ्रेनिया मुख्य रूप से ______ का विकार है।
(A) विचार
(B) मनोदशा
(C) चिंता
(D) व्यवहार

297. "उन्माद" शब्द किस स्थिति को संदर्भित करता है:
(A) तीव्र उदासी।
(B) अत्यधिक उत्साह, ऊर्जा और चिड़चिड़ापन।
(C) निरंतर चिंता।
(D) भावनात्मक अलगाव।

298. बौद्धिक अक्षमता के वर्गीकरण के लिए आवश्यक है कि कमियों की शुरुआत किसके दौरान हो:
(A) विकासात्मक अवधि
(B) वृद्धावस्था
(C) वयस्कता
(D) जीवनकाल में किसी भी बिंदु पर

299. संज्ञानात्मक चिकित्सा में, चिकित्सक और सेवार्थी किसके लिए कार्य करते हैं:
(A) अचेतन द्वंद्वों का पता लगाना।
(B) सकारात्मक व्यवहारों को सुदृढ़ करना।
(C) सेवार्थी के कुअनुकूलक विचार प्रतिरूप को बदलना।
(D) संबंध बनाना।

300. सूची I की मदों का सूची II की मदों से मिलान करें और सही विकल्प चुनें।
सूची I: (मॉडल)
P. मनोगत्यात्मक
Q. व्यवहारवादी
R. संज्ञानात्मक
S. अंतर्वैयक्तिक
सूची II: (केंद्रीय केंद्र)
1. सोचने के प्रतिरूप
2. संबंध
3. अचेतन द्वंद्व
4. सीखी गई प्रतिक्रियाएं
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

21. (C) सिज़ोफ्रेनिया
सिज़ोफ्रेनिया में भव्यता का व्यामोह एक प्रमुख लक्षण है जहाँ व्यक्ति स्वयं को अत्यंत महत्वपूर्ण, शक्तिशाली या ऐतिहासिक व्यक्ति समझने लगता है। वह यह मान सकता है कि उसके पास विशेष शक्तियाँ हैं या उसका किसी महान हस्ती से सीधा संबंध है। यह यथार्थ से उसके अलगाव को दर्शाता है। यह लक्षण पैनिक या चिंता विकारों में नहीं पाया जाता, अपितु यह गंभीर मनोविक्षिप्ति की स्थिति को इंगित करता है।

22. (B) व्यापक, अनम्य और दीर्घकालिक।
व्यक्तित्व विकार की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें व्यवहार और आंतरिक अनुभव के ऐसे प्रतिरूप होते हैं जो व्यापक, अनम्य और दीर्घकालिक होते हैं। ये गुण व्यक्ति के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे सामाजिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में गंभीर समस्याएं उत्पन्न करते हैं। ये प्रतिरूप किशोरावस्था या प्रारंभिक वयस्कता में प्रारंभ होते हैं और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित नहीं होते, जिससे व्यक्ति हेतु सामान्य अनुकूलन करना अत्यंत कठिन हो जाता है।

23. (D) इच्छाशक्ति की कमी
सिज़ोफ्रेनिया के लक्षणों को धनात्मक और ऋणात्मक श्रेणियों में विभक्त किया गया है। धनात्मक लक्षण वे होते हैं जो सामान्य व्यवहार में पृथक से जुड़ जाते हैं, जैसे विभ्रम। इसके विपरीत, ऋणात्मक लक्षण सामान्य मानसिक क्षमताओं के अभाव को दर्शाते हैं। इच्छाशक्ति की कमी एक ऋणात्मक लक्षण है जहाँ व्यक्ति में लक्ष्य-निर्देशित गतिविधियों को प्रारंभ करने या बनाए रखने की प्रेरणा समाप्त हो जाती है। यह दैनिक जीवन की कार्यक्षमता को प्रभावित करता है।

24. (A) स्थानांतरण
मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा में स्थानांतरण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जहाँ सेवार्थी अपने अतीत के महत्वपूर्ण व्यक्तियों से जुड़ी भावनाओं और अपेक्षाओं को अनजाने में चिकित्सक पर आरोपित कर देता है। यह प्रक्रिया चिकित्सक को सेवार्थी के बचपन के अनसुलझे द्वंद्वों और अंतर्वैयक्तिक संबंधों के प्रतिरूप को समझने का अवसर प्रदान करती है। इन भावनाओं का विश्लेषण करके सेवार्थी अपने वर्तमान व्यवहार के पीछे छिपे अचेतन कारणों के विषय में गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकता है।

25. (C) इसका उपयोग गैर-अनुरूपतावादी या अल्पसंख्यक समूहों को उत्पीड़ित करने के लिए किया जा सकता है।
"सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन" को असामान्यता का एकमात्र आधार मानना जोखिमपूर्ण है क्योंकि मानदंड संस्कृति और समय के साथ परिवर्तित होते रहते हैं। इसका दुरुपयोग उन व्यक्तियों को मानसिक रूप से अस्वस्थ घोषित करने हेतु किया जा सकता है जो केवल प्रचलित सामाजिक नियमों से पृथक विचार रखते हैं। यह मानदंड व्यक्तिगत कष्ट या कार्यक्षमता की उपेक्षा करता है और राजनीतिक या सामाजिक दमन का उपकरण बन सकता है, जो उचित नहीं है।

26. (A) द्विध्रुवी I विकार
द्विध्रुवी I विकार एक गंभीर मनोदशा विकार है जिसमें व्यक्ति न्यूनतम एक पूर्ण उन्मादी प्रकरण का अनुभव करता है। उन्माद के दौरान व्यक्ति की ऊर्जा, आत्मविश्वास और सक्रियता अत्यधिक बढ़ जाती है, जिससे प्रायः सामाजिक और व्यावसायिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यद्यपि इसमें गंभीर अवसाद के प्रकरण भी सामान्य हैं, परंतु निदान हेतु एक उन्मादी प्रकरण की उपस्थिति ही इसे अन्य मनोदशा विकारों से पृथक करने हेतु पर्याप्त होती है।

27. (D) शास्त्रीय अनुकूलन के माध्यम से प्राप्त एक अनुकूलित भय प्रतिक्रिया।
व्यवहारवादी मॉडल के अनुसार दुर्भीति शास्त्रीय अनुकूलन का परिणाम है। इसमें एक तटस्थ वस्तु को किसी डरावनी या कष्टदायक घटना के साथ संबद्ध किया जाता है, जिससे वह वस्तु एकाकी ही भय उत्पन्न करने लगती है। यह भय पश्चात में क्रियाप्रसूत अनुकूलन के माध्यम से बना रहता है क्योंकि व्यक्ति उस वस्तु से बचकर अपनी चिंता कम करता है। यह मॉडल मानता है कि जिस प्रकार भय सीखा गया है, उसे पुनः भुलाया भी जा सकता है।

28. (B) निवर्तन
निवर्तन उन शारीरिक और मनोवैज्ञानिक लक्षणों के समूह को कहते हैं जो किसी मादक पदार्थ का सेवन अचानक बंद करने या न्यून करने पर उत्पन्न होते हैं। ये लक्षण पदार्थ के प्रकार के आधार पर भिन्न हो सकते हैं और इनमें कंपन, चिंता या मतिभ्रम सम्मिलित हो सकते हैं। निवर्तन के लक्षण इस बात का प्रमाण हैं कि शरीर उस पदार्थ पर निर्भर हो चुका है। यह व्यसन के चक्र को बनाए रखने में भूमिका निभाता है।

29. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
विभिन्न मनोवैज्ञानिक विकारों की अपनी विशिष्ट पहचान होती है। सामान्यीकृत चिंता विकार में व्यक्ति को दीर्घकाल तक अनियंत्रित चिंता रहती है। पैनिक विकार में अकारण बार-बार तीव्र भय के हमले होते हैं। सिज़ोफ्रेनिया मुख्य रूप से व्यामोह या विभ्रम जैसे लक्षणों द्वारा पहचाना जाता है, जो यथार्थ से अलगाव को दर्शाते हैं। गंभीर अवसादग्रस्तता विकार में व्यक्ति को निरंतर उदासी और हर्ष में रुचि की कमी अनुभव होती है, जिससे जीवन दुष्कर हो जाता है।

30. (D) बिना शर्त सकारात्मक सम्मान
कार्ल रोजर्स की सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में तीन मुख्य स्थितियाँ अनिवार्य मानी गई हैं। इनमें वास्तविकता और समानुभूति के साथ-साथ बिना शर्त सकारात्मक सम्मान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है कि चिकित्सक सेवार्थी को बिना किसी शर्त, निर्णय या मूल्यांकन के पूर्ण रूप से स्वीकार करता है। जब सेवार्थी को ऐसा सुरक्षित और सहायक वातावरण प्राप्त होता है, तो वह निर्भय होकर अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है, जिससे आत्म-साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त होता है।

बिना शर्त सकारात्मक सम्मान पर बल देती है ताकि आत्म-विकास हो सके। संज्ञानात्मक चिकित्सा स्वचालित विचारों की पहचान और संशोधन पर केंद्रित होती है। बायोफीडबैक एक व्यवहारिक तकनीक है जो शारीरिक प्रतिक्रियाओं के स्वैच्छिक नियंत्रण हेतु क्रियाप्रसूत अनुकूलन के सिद्धांतों का प्रभावी उपयोग करती है।

11. (D) दूसरों के प्रति व्यापक अविश्वास और संदेह।
व्यामोह की मुख्य विशेषता दूसरों के प्रति अत्यधिक अविश्वास और अनुचित संदेह है। इस स्थिति से ग्रस्त व्यक्ति को निरंतर आभास होता है कि अन्य व्यक्ति उसे धोखा दे रहे हैं, क्षति पहुँचा रहे हैं या उसके विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं। पर्याप्त साक्ष्य न होने पर भी वे अपने इन विश्वासों पर अडिग रहते हैं। इसके कारण उनके सामाजिक संबंध और दैनिक जीवन में परस्पर मेलजोल रखना अत्यंत कठिन हो जाता है।

12. (B) सहिष्णुता
सहिष्णुता वह स्थिति है जहाँ किसी मादक पदार्थ के नियमित सेवन के कारण शरीर उसके प्रति अभ्यस्त हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप वांछित प्रभाव प्राप्त करने हेतु व्यक्ति को उस पदार्थ की निरंतर अधिक मात्रा की आवश्यकता होने लगती है। यह पदार्थ निर्भरता और व्यसन की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है। सहिष्णुता बढ़ने से व्यक्ति का शारीरिक स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन दोनों ही गंभीर रूप से प्रभावित होने लगते हैं।

13. (D) I, II और III
बौद्धिक अक्षमता के निदान हेतु तीन प्रमुख मानदंडों का पूर्ण होना आवश्यक है। प्रथम, बौद्धिक कार्यक्षमता जैसे तर्क और योजना निर्माण में महत्वपूर्ण कमी होनी चाहिए। द्वितीय, दैनिक जीवन के कार्यों जैसे सामाजिक मेलजोल और स्वतंत्र रहने हेतु अनुकूलन व्यवहार में सीमाएँ होनी चाहिए। अंततः, इन समस्त कमियों का प्रादुर्भाव व्यक्ति की विकासात्मक अवधि अर्थात् 18 वर्ष की आयु से पूर्व होना अनिवार्य माना गया है।

14. (D) दूसरों के साथ संबंध बनाने के दोषपूर्ण प्रतिरूप
नैदानिक मनोविज्ञान का अंतर्वैयक्तिक मॉडल इस विचार पर आधारित है कि मानसिक विकार मुख्यतः दोषपूर्ण सामाजिक संबंधों और अंतर्वैयक्तिक संप्रेषण का परिणाम होते हैं। यह मॉडल मानता है कि व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य उसके सामाजिक तंत्र और दूसरों के साथ जुड़ने के तरीकों से संबद्ध है। उपचार के दौरान चिकित्सक रोगी के वर्तमान संबंधों में सुधार करने और प्रभावी अंतर्वैयक्तिक कौशल विकसित करने पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करता है।

15. (A) समानुभूति
सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में समानुभूति एक महत्वपूर्ण उपचारात्मक कौशल है। इसमें चिकित्सक सेवार्थी की भावनाओं, विचारों और अनुभवों को यथार्थ रूप में समझने का प्रयास करता है। यह बिना किसी निर्णय या मूल्यांकन के सेवार्थी के दृष्टिकोण को अपनाने की प्रक्रिया है। जब सेवार्थी को अनुभव होता है कि उसे गहराई से समझा जा रहा है, तो इससे उपचारात्मक संबंध सुदृढ़ होता है और आत्म-सुधार का मार्ग प्रशस्त होता है।

16. (B) संक्रमण के डर को कम करने के लिए बार-बार हाथ धोना।
बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार में 'बाध्यकारी क्रिया' एक ऐसा पुनरावृत्ति वाला व्यवहार है जिसे व्यक्ति किसी हस्तक्षेप करने वाले विचार से उत्पन्न चिंता को शांत करने हेतु करता है। उदाहरण के लिए, संक्रमण का भय एक बाध्यकारी विचार है और उस भय को न्यून करने हेतु बार-बार हाथ धोना एक बाध्यकारी क्रिया है। यद्यपि व्यक्ति जानता है कि यह व्यवहार अत्यधिक है, फिर भी वह इसे करने हेतु विवश रहता है।

17. (B) भावनात्मक स्थिति
मनोदशा विकारों का प्राथमिक लक्षण व्यक्ति की भावनात्मक स्थिति में गंभीर विक्षोभ उत्पन्न होना है। इन विकारों में व्यक्ति या तो अत्यधिक उदासी और निराशा अनुभव करता है, जैसा कि अवसाद में होता है, या फिर अत्यधिक उत्साह और ऊर्जा का अनुभव करता है, जैसा कि उन्माद में देखा जाता है। ये भावनात्मक उतार-चढ़ाव व्यक्ति के सामान्य जीवन और निर्णय लेने की क्षमता को व्यापक रूप से प्रभावित करते हैं।

18. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संज्ञानात्मक चिकित्सा इस सिद्धांत पर कार्य करती है कि हमारे कष्ट का कारण बाहरी घटनाएं नहीं, अपितु उन घटनाओं के प्रति हमारा दृष्टिकोण होता है। दोषपूर्ण और नकारात्मक विचार प्रतिरूप ही अस्वस्थ भावनाओं और व्यवहारों को जन्म देते हैं। अतः, यदि व्यक्ति के सोचने के तरीके और तर्कहीन विश्वासों को पहचानकर उन्हें चुनौती दी जाए और परिवर्तित किया जाए, तो उसके मनोवैज्ञानिक कष्ट को काफी कम किया जा सकता है।

19. (C) अल्प
अल्प बौद्धिक अक्षमता की श्रेणी में वे व्यक्ति सम्मिलित हैं जिनका बुद्धि-लब्धि प्राप्तांक 50 से 70 के मध्य होता है। इस स्तर के व्यक्ति उचित शैक्षिक और सामाजिक समर्थन के साथ स्वतंत्र रूप से जीवन यापन करना सीख सकते हैं। वे प्रायः प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं और व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से कार्यस्थल पर सफलता प्राप्त कर सकते हैं। उन्हें केवल जटिल परिस्थितियों में सहायता की आवश्यकता होती है।

20. (D) व्यक्तियों को अनैच्छिक शारीरिक प्रक्रियाओं पर स्वैच्छिक नियंत्रण प्राप्त करने में मदद करने के लिए।
बायोफीडबैक एक ऐसी तकनीक है जिसमें इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग करके शरीर की अनैच्छिक गतिविधियों जैसे हृदय गति या मांसपेशियों के तनाव की सूचना प्रदान की जाती है। इस प्रतिपुष्टि का उपयोग करके व्यक्ति इन शारीरिक प्रक्रियाओं को सचेत रूप से नियंत्रित करना सीखता है। यह तकनीक मुख्यतः तनाव, चिंता और उच्च रक्तचाप जैसी समस्याओं के प्रबंधन में बहुत प्रभावी होती है क्योंकि यह शारीरिक शांति प्राप्त करने में सहायक है।

41. (C) 1, 2, 3
नैदानिक मनोविज्ञान के मॉडलों का विकास एक निश्चित क्रम में हुआ है। सर्वप्रथम 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मनोगत्यात्मक मॉडल आया, जिसने अचेतन मन पर ध्यान केंद्रित किया। इसके पश्चात व्यवहारवाद का उदय हुआ, जिसने केवल प्रेक्षणीय व्यवहार और अधिगम पर बल दिया। अंत में, 1960 के दशक के आस-पास संज्ञानात्मक मॉडल प्रमुख हुआ, जिसने यह प्रस्तावित किया कि हमारे विचार ही हमारे व्यवहार और भावनाओं को मुख्य रूप से नियंत्रित करते हैं।

42. (A) एक दोहरावदार व्यवहार या मानसिक कार्य जिसे करने के लिए व्यक्ति बाध्य महसूस करता है।
बाध्यकारी क्रिया एक ऐसा व्यवहार है जिसे व्यक्ति किसी हस्तक्षेप करने वाले विचार से उत्पन्न होने वाली तीव्र चिंता को न्यून करने हेतु बार-बार करने हेतु विवश होता है। यह व्यवहार जैसे हस्त प्रक्षालन, वस्तुओं की गणना या परीक्षण करना हो सकता है। यद्यपि व्यक्ति प्रायः जानता है कि ये कार्य अतार्किक हैं, फिर भी वह इन्हें करने से स्वयं को रोक नहीं पाता क्योंकि ऐसा करने से उसे अस्थायी रूप से मानसिक राहत प्राप्त होती है।

43. (D) डाउन सिंड्रोम
डाउन सिंड्रोम एक प्रमुख आनुवंशिक विकार है जो गुणसूत्र 21 की एक अतिरिक्त प्रति की उपस्थिति के कारण होता है। यह स्थिति जन्म से ही बौद्धिक अक्षमता और विशिष्ट शारीरिक विशेषताओं का कारण बनती है। अन्य विकल्प जैसे फीटल अल्कोहल सिंड्रोम या सीसा विषाक्तता पर्यावरणीय कारकों से संबंधित हैं, जबकि डाउन सिंड्रोम पूर्णतः जैविक और आनुवंशिक असामान्यता का परिणाम है। यह बौद्धिक विकास को प्रभावित करने वाले सर्वाधिक सामान्य आनुवंशिक कारणों में से एक है।

44. (B) वे अपने लचीलेपन और अनुकूलनशीलता के कारण पहचाने जाते हैं।
व्यक्तित्व विकारों की सर्वाधिक स्पष्ट पहचान उनका लचीलापन नहीं अपितु उनका अनम्य और कठोर होना है। ये विकार व्यवहार के ऐसे दीर्घकालिक प्रतिरूप हैं जो विभिन्न स्थितियों में परिवर्तित नहीं होते, जिसके कारण व्यक्ति को सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में भारी कठिनाई होती है। ये विकार सामान्यतः किशोरावस्था में प्रारंभ होते हैं और स्थायी होते हैं। लचीलेपन का अभाव ही वह मुख्य कारण है जिससे ये विकार व्यक्ति हेतु गंभीर कष्ट और अक्षमता उत्पन्न करते हैं।

45. (C) अस्वीकार्य, अचेतन आवेगों के चेतना में आने का खतरा।
मनोगत्यात्मक मॉडल के अनुसार चिंता तब उत्पन्न होती है जब दमित अचेतन इच्छाएं या आवेग 'अहं' की रक्षा प्रणालियों को भेदकर सचेत मन में आने का प्रयास करते हैं। यह आंतरिक संघर्ष व्यक्ति को संकट का अनुभव कराता है, जिसे वह चिंता के रूप में अनुभव करता है। इस मॉडल में माना जाता है कि बचपन के अनसुलझे द्वंद्व और दमित स्मृतियाँ ही वयस्क जीवन में चिंता और अन्य मानसिक विकारों का मुख्य आधार बनती हैं।

46. (D) गतिविधियों में रुचि या आनंद की स्पष्ट कमी।
एनहेडोनिया मनोदशा विकारों, विशेष रूप से गंभीर अवसाद का एक केंद्रीय लक्षण है। इसका अर्थ है उन गतिविधियों में हर्ष या आनंद अनुभव करने की क्षमता का विलोपन, जो पूर्व में व्यक्ति को प्रिय थीं। इसमें व्यक्ति न केवल मानसिक अपितु शारीरिक सुख का अनुभव करने में भी असमर्थ हो जाता है। यह स्थिति व्यक्ति को पूर्णतः निष्क्रिय और सामाजिक रूप से पृथक कर सकती है, जिससे उसका जीवन अत्यंत नीरस और अर्थहीन प्रतीत होने लगता है।

47. (A) सिज़ोफ्रेनिया का एक नैदानिक उपप्रकार जिसमें उत्पीड़न या भव्यता के प्रमुख व्यामोह होते हैं।
सिज़ोफ्रेनिया के संदर्भ में व्यामोह का तात्पर्य उन स्थिर और त्रुटिपूर्ण विश्वासों से है जहाँ व्यक्ति को आभास होता है कि उसे प्रताड़ित किया जा रहा है या वह अत्यंत महान है। ऐसे व्यक्ति प्रायः अत्यधिक शंकित रहते हैं और उन्हें प्रतीत होता है कि उनके विरुद्ध षड्यंत्र रचे जा रहे हैं। यद्यपि आधुनिक प्रणालियों में वर्गीकरण परिवर्तित हुआ है, फिर भी 'पैरानॉयड' शब्द उन रोगियों हेतु प्रयुक्त होता है जिनके लक्षण मुख्य रूप से इन व्यामोहों पर केंद्रित होते हैं।

48. (B) महत्वपूर्ण दूसरों से बिना शर्त सकारात्मक सम्मान की कमी, जिससे असंगति पैदा होती है।
सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा मानती है कि मनोवैज्ञानिक समस्याएं तब उत्पन्न होती हैं जब व्यक्ति को बचपन में अपने अभिभावकों या महत्वपूर्ण व्यक्तियों से बिना शर्त स्नेह और सम्मान प्राप्त नहीं होता। इसके कारण व्यक्ति अपनी वास्तविक भावनाओं का दमन करने लगता है और दूसरों की अपेक्षाओं के अनुरूप बनने का प्रयास करता है। इससे उसके 'वास्तविक स्वरूप' और 'आदर्श स्वरूप' के मध्य एक गहरी असंगति उत्पन्न होती है, जो अंततः मानसिक कष्ट का कारण बनती है।

49. (B) मनोविक्षिप्तिरोधी (जैसे, हैलोपरिडोल)
पदार्थ-संबंधित विकारों में सामान्यतः वे पदार्थ सम्मिलित होते हैं जिनका लोग नशा करने या आनंद प्राप्त करने हेतु दुरुपयोग करते हैं, जैसे मदिरा, कोकीन या मतिभ्रमकारी औषधियाँ। मनोविक्षिप्तिरोधी औषधियाँ नैदानिक उपचार हेतु प्रयुक्त की जाती हैं और इनका दुरुपयोग करके व्यसन होने की संभावना अत्यंत न्यून होती है। अतः, इन्हें मादक पदार्थों की उस श्रेणी में नहीं रखा जाता है जो निर्भरता या दुरुपयोग से संबद्ध विकारों का प्राथमिक कारण बनती हैं।

50. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
मानसिक विकारों के लक्षणों को उनकी विशेषताओं के आधार पर पहचाना जाता है। बाध्यकारी विचार वे अवांछित विचार हैं जो बार-बार मन में आते हैं। बाध्यकारी क्रियाएं उन विचारों से उत्पन्न चिंता को न्यून करने हेतु किए जाने वाले पुनरावृत्ति वाले व्यवहार हैं। व्यामोह एक दृढ़ परंतु त्रुटिपूर्ण विश्वास है जिसे साक्ष्यों से परिवर्तित नहीं किया जा सकता। विभ्रम एक ऐसी संवेदी धारणा है जो बिना किसी बाह्य उत्तेजना के होती है, जैसे ऐसी ध्वनियाँ सुनना जो अन्य नहीं सुन सकते।

31. (A) विचार प्रसारण व्यामोह
विचार प्रसारण एक प्रकार का व्यामोह है जिसमें व्यक्ति को दृढ़ विश्वास होता है कि उसके निजी विचार मस्तिष्क से बाहर निकलकर दूसरों तक पहुँच रहे हैं। उसे प्रतीत हो सकता है कि लोग रेडियो, टेलीविजन या केवल मस्तिष्क के माध्यम से उसके विचारों को सुन सकते हैं। यह लक्षण सिज़ोफ्रेनिया जैसी गंभीर मानसिक स्थितियों में देखा जाता है और दर्शाता है कि व्यक्ति की स्वयं की सीमाओं और यथार्थ के मध्य अंतर समाप्त हो गया है।

32. (A) केवल II
व्यक्तित्व विकार आंतरिक अनुभव और व्यवहार के स्थायी एवं अनम्य प्रतिरूप हैं जो व्यक्ति की संस्कृति की अपेक्षाओं से भिन्न होते हैं। ये प्रतिरूप किशोरावस्था या प्रारंभिक वयस्कता में स्थिर हो जाते हैं और विभिन्न व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्थितियों में बने रहते हैं। ये व्यवहार लचीले नहीं अपितु अत्यंत कठोर होते हैं, जिससे व्यक्ति को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कष्ट और कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इनका निदान सामान्यतः वयस्कों में होता है।

33. (B) स्थानांतरण का विश्लेषण
मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा में स्थानांतरण का विश्लेषण एक केंद्रीय तकनीक है। इसमें चिकित्सक यह प्रेक्षण करता है कि सेवार्थी किस प्रकार अपने अतीत के महत्वपूर्ण संबंधों की भावनाओं को चिकित्सक पर आरोपित कर रहा है। इन प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करके सेवार्थी के अचेतन मन में दबे पुराने द्वंद्वों को उजागर किया जाता है। यह प्रक्रिया सेवार्थी को यह समझने में सहायता करती है कि उसके बचपन के अनुभव वर्तमान व्यवहार को कैसे नकारात्मक रुप से प्रभावित कर रहे हैं।

34. (A) व्यक्ति का वर्तमान सामाजिक नेटवर्क और संबंध।
मनोविकृति विज्ञान का अंतर्वैयक्तिक मॉडल मानता है कि मानसिक लक्षणों को व्यक्ति के वर्तमान सामाजिक परिवेश और संबंधों के संदर्भ में ही उचित ढंग से समझा जा सकता है। यह दृष्टिकोण इस बात पर बल देता है कि दूसरों के साथ अंतःक्रिया करने के तरीके और संबंधों की गुणवत्ता मानसिक स्वास्थ्य को निर्धारित करती है। उपचार में सामाजिक कौशल बढ़ाने और संबंधों के तनावों को दूर करने पर ध्यान दिया जाता है, जिससे मनोवैज्ञानिक कष्ट में कमी लाई जा सके।

35. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बायोफीडबैक तनाव जनित सिरदर्द के प्रबंधन में अत्यंत प्रभावी सिद्ध होता है क्योंकि यह व्यक्ति को शारीरिक जागरूकता प्रदान करता है। इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों के माध्यम से मांसपेशियों के तनाव की तत्काल प्रतिपुष्टि मिलने पर, व्यक्ति विशिष्ट मांसपेशियों को शिथिल करने की तकनीकें सीख सकता है। जैसे-जैसे व्यक्ति अपने तनाव को नियंत्रित करना सीखता है, सिरदर्द की बारंबारता और उसकी तीव्रता में महत्वपूर्ण कमी आती है। यह तकनीक स्वैच्छिक शारीरिक नियंत्रण सिखाती है।

36. (D) मध्यम
मध्यम बौद्धिक अक्षमता की श्रेणी में वे व्यक्ति सम्मिलित होते हैं जिनका बुद्धि-लब्धि प्राप्तांक लगभग 35 से 49 के मध्य होता है। इस स्तर के व्यक्ति दैनिक जीवन के बुनियादी कार्यों और संचार कौशलों को सीख सकते हैं, परंतु उन्हें प्रायः सामाजिक और व्यावसायिक स्थितियों में निरंतर समर्थन की आवश्यकता होती है। वे सरल कार्यों हेतु प्रशिक्षित किए जा सकते हैं और उचित पर्यवेक्षण के साथ समुदाय में सुरक्षित रूप से रहने और कार्य करने में सक्षम होते हैं।

37. (C) कायिक लक्षण विकार या बीमारी चिंता विकार
बीमारी चिंता विकार में व्यक्ति को चिकित्सा साक्ष्यों के अभाव के उपरांत भी लगातार यह भय बना रहता है कि उसे कोई गंभीर व्याधि है। ऐसे व्यक्ति अपने शरीर में होने वाले सामान्य परिवर्तनों को किसी बड़े संकट के रूप में देखते हैं और बार-बार परीक्षण या आश्वासन की खोज करते हैं। यह चिंता इतनी अधिक होती है कि व्यक्ति का अधिकांश समय और ऊर्जा इसी में व्यय हो जाती है, जिससे दैनिक कार्य और मानसिक शांति बाधित होती है।

38. (B) कुअनुकूलक विचार प्रतिरुप की पहचान करना और उन्हें संशोधित करना।
संज्ञानात्मक चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के उन दोषपूर्ण और तर्कहीन विचार प्रतिरूपों को परिवर्तित करना है जो उसके कष्ट का कारण बनते हैं। यह चिकित्सा इस सिद्धांत पर आधारित है कि यदि हम अपनी सोच को अधिक यथार्थवादी और सकारात्मक बना लें, तो हमारी भावनाएं और व्यवहार स्वतः ही सुधर जाएंगे। चिकित्सक सेवार्थी को उसके नकारात्मक स्वचालित विचारों को पहचानने, उन्हें चुनौती देने और स्वस्थ सहायक विचारों को अपनाने में सहायता करता है।

39. (D) दर्द, चिंता या भावनात्मक पीड़ा की व्यक्ति की अपनी रिपोर्ट।
व्यक्तिपरक कष्ट असामान्यता का वह मानदंड है जो पूर्णतः व्यक्ति के अपने अनुभवों और भावनाओं पर आधारित होता है। इसमें व्यक्ति स्वयं सूचित करता है कि वह अत्यधिक मानसिक पीड़ा, चिंता, उदासी या असहजता अनुभव कर रहा है। यद्यपि बाह्य रूप से उसका व्यवहार सामान्य प्रतीत हो सकता है, परंतु उसका आंतरिक कष्ट उसे मनोवैज्ञानिक सहायता हेतु प्रेरित करता है। यह मानदंड निदान प्रक्रिया में रोगी के अपने अनुभव को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है।

40. (A) एनहेडोनिया और रुचि की कमी
उन्माद का प्रकरण ऊर्जा और उत्साह की अत्यधिक वृद्धि की विशेषता है, जबकि एनहेडोनिया या आनंद की कमी अवसाद का मुख्य लक्षण है। उन्माद के दौरान व्यक्ति का आत्म-सम्मान बहुत बढ़ जाता है, वह वाचाल हो जाता है, और उसे निद्रा की आवश्यकता न्यून अनुभव होती है। इसके विपरीत, गतिविधियों में रुचि खोना उन्माद की प्रकृति के विरुद्ध है। अतः, उन्माद के निदान में अत्यधिक सक्रियता और उच्च मनोदशा वाले लक्षणों को ही प्रमुखता दी जाती है।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) कुअनुकूलन
कुअनुकूलन व्यवहार असामान्यता का प्रमुख मानदंड है, जो यह निर्धारित करता है कि व्यक्ति का आचरण उसके लिए कितना हानिकारक है। यह इस बात पर बल देता है कि क्या कोई व्यवहार व्यक्ति को दैनिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन या स्वस्थ संबंधों के निर्वाह से रोकता है। जब व्यवहार लक्ष्यों की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करता है, तो उसे मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में कुअनुकूलक माना जाता है।

2. (A) पैनिक विकार
पैनिक विकार एक तीव्र चिंता विकार है जिसमें व्यक्ति को अकारण अचानक और तीव्र भय के प्रकरणों का अनुभव होता है। इन हमलों के दौरान हृदय गति बढ़ना, अत्यधिक पसीना आना और श्वसन संबंधी कठिनाई जैसे गंभीर शारीरिक लक्षण प्रकट होते हैं। यह स्थिति व्यक्ति के सामान्य जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित करती है क्योंकि वह भविष्य में होने वाले ऐसे दौरों के प्रति निरंतर आशंकित रहता है।

3. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार एक मानसिक स्थिति है जिसमें दो मुख्य घटक होते हैं। बाध्यकारी विचार वे अवांछित और हस्तक्षेप करने वाले विचार या कल्पनाएँ हैं जो मस्तिष्क में बार-बार आते हैं। दूसरी ओर, बाध्यकारी क्रियाएं वे पुनरावृत्ति वाले व्यवहार या मानसिक कार्य हैं जिन्हें व्यक्ति इन विचारों से उत्पन्न होने वाली तीव्र चिंता या मानसिक तनाव को कम करने हेतु विवश होकर करता है।

4. (D) सामाजिक विलक्षणता
मनोवैज्ञानिकों ने असामान्यता की परिभाषा के लिए सांख्यिकीय विचलन, व्यक्तिपरक कष्ट और कुअनुकूलक व्यवहार को प्राथमिक आधार माना है। सांख्यिकीय रूप से दुर्लभ व्यवहार और दैनिक कार्यों में बाधा मानसिक विकार के सूचक होते हैं। इसके विपरीत, सामाजिक विलक्षणता केवल एक विशिष्ट जीवनशैली या भिन्न व्यवहार हो सकता है, जिसे आवश्यक रूप से मानसिक रूप से असामान्य या नैदानिक विकार के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता।

5. (C) दोषपूर्ण अधिगम और अनुकूलन।
व्यवहारवादी मॉडल के अनुसार मनोवैज्ञानिक विकार मुख्यतः दोषपूर्ण अधिगम और पर्यावरणीय अनुकूलन का परिणाम होते हैं। यह दृष्टिकोण मानता है कि असामान्य व्यवहार भी सामान्य व्यवहार की भाँति ही सुदृढ़ीकरण और दंड के माध्यम से सीखे जाते हैं। उपचार प्रक्रिया में नवीन और स्वस्थ प्रतिक्रियाओं को सिखाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है ताकि कुअनुकूलक व्यवहारों को परिवर्तित किया जा सके। यह मॉडल केवल प्रेक्षणीय व्यवहार पर बल देता है।

6. (B) इसमें कई क्षेत्रों के बारे में निरंतर, अत्यधिक और अनियंत्रित चिंता शामिल होती है।
सामान्यीकृत चिंता विकार एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति बिना किसी विशिष्ट कारण के विभिन्न घटनाओं या गतिविधियों के विषय में निरंतर चिंता करता रहता है। यह चिंता अत्यधिक होती है और इसे नियंत्रित करना व्यक्ति के लिए कठिन होता है। इसके साथ प्रायः मांसपेशियों में तनाव, बेचैनी और एकाग्रता की कमी जैसे शारीरिक लक्षण भी देखे जाते हैं। यह स्थिति व्यक्ति के दैनिक सामाजिक और व्यावसायिक जीवन को बाधित करती है।

7. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मनोगत्यात्मक मॉडल के अनुसार मनोवैज्ञानिक विकारों के मूल कारण प्रारंभिक बचपन के अनुभवों और अचेतन मन में निहित होते हैं। मनोयौन विकास की विभिन्न अवस्थाओं के दौरान यदि कोई द्वंद्व अनसुलझा रह जाता है, तो वह वयस्कता में मानसिक लक्षणों के रूप में प्रकट हो सकता है। यह दृष्टिकोण मानता है कि अचेतन इच्छाएं और बचपन के संबंध व्यक्ति के वर्तमान व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करते हैं।

8. (A) गंभीर अवसादग्रस्तता विकार
गंभीर अवसादग्रस्तता विकार एक प्रमुख मनोदशा विकार है जिसमें व्यक्ति न्यूनतम दो सप्ताह तक निरंतर उदासी और गतिविधियों में रुचि की कमी अनुभव करता है। इसके अन्य लक्षणों में निद्रा में परिवर्तन, क्षुधा की कमी, ऊर्जा का अभाव और आत्म-मूल्य में गिरावट सम्मिलित हैं। यह स्थिति सामान्य शोक से अधिक तीव्र होती है और व्यक्ति की सामाजिक एवं व्यावसायिक कार्यक्षमता को बहुत प्रभावित करती है, जिससे चिकित्सा अनिवार्य हो जाती है।

9. (C) यह एक प्रकार का मनोदशा विकार है जिसमें अत्यधिक मनोदशा परिवर्तन होते हैं।
सिज़ोफ्रेनिया एक गंभीर मानसिक विकार है जो मुख्य रूप से विचार प्रक्रिया और यथार्थ की धारणा को प्रभावित करता है। इसके धनात्मक लक्षणों में विभ्रम और व्यामोह सम्मिलित होते हैं, जबकि ऋणात्मक लक्षणों में भावनात्मक शून्यता और प्रेरणा की कमी देखी जाती है। यह विकार व्यक्ति के सामाजिक संबंधों और व्यावसायिक प्रदर्शन में भारी गिरावट का कारण बनता है। यह मनोदशा विकारों जैसे अवसाद या द्विध्रुवी विकार से पूर्णतः भिन्न है।

10. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
विभिन्न मनोवैज्ञानिक उपचार विशिष्ट तकनीकों पर आधारित होते हैं। मनोविश्लेषण में मुक्त साहचर्य का उपयोग अचेतन को जानने हेतु किया जाता है। सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा

51. (C) वर्तमान व्यवहार और उनके पर्यावरणीय निर्धारक।
व्यवहारवादी दृष्टिकोण मनोगत्यात्मक मॉडल के विपरीत अचेतन मन या अतीत के द्वंद्वों पर ध्यान नहीं देता। इसके स्थान पर, यह व्यक्ति के वर्तमान में प्रेक्षणीय व्यवहारों और उनके पीछे के पर्यावरणीय कारकों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह मानता है कि व्यवहार पुरस्कार और दंड के माध्यम से सीखा जाता है। अतः, उपचार का लक्ष्य उन पर्यावरणीय परिस्थितियों को परिवर्तित करना और नवीन प्रतिक्रियाएं सिखाना होता है जो वर्तमान में व्यक्ति हेतु समस्या उत्पन्न कर रही हैं।

52. (D) मानकीकृत आईक्यू परीक्षणों पर व्यक्ति का प्राप्तांक।
बौद्धिक अक्षमता की गंभीरता को निर्धारित करने का प्राथमिक आधार मानकीकृत बुद्धि-लब्धि परीक्षणों पर प्राप्त अंक हैं। सामान्यतः 70 से न्यून बुद्धि-लब्धि स्कोर को अक्षमता का सूचक माना जाता है। इस स्कोर के आधार पर इसे अल्प (50-70), मध्यम (35-49), गंभीर (20-34) और अति गंभीर (20 से न्यून) श्रेणियों में विभक्त किया गया है। यद्यपि अब अनुकूलन व्यवहार को भी महत्व दिया जाता है, फिर भी बुद्धि-लब्धि स्कोर वर्गीकरण हेतु एक निश्चित पैमाना प्रदान करता है।

53. (B) केवल II और III
पैनिक आक्रमण तीव्र भय का एक आकस्मिक विस्फोट है जो प्रायः बिना किसी पूर्व चेतावनी के होता है। इसमें हृदय गति का बढ़ना, शिरोभ्रम और श्वसन में कठिनाई जैसे गंभीर शारीरिक लक्षण सम्मिलित होते हैं। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ये हमले सदैव किसी विशिष्ट भयावह वस्तु से संबद्ध नहीं होते, अपितु कई बार बिना किसी स्पष्ट बाह्य कारण के भी हो सकते हैं। यही अनिश्चितता व्यक्ति में भविष्य के हमलों के प्रति निरंतर भय उत्पन्न करती है।

54. (B) संज्ञानात्मक चिकित्सा
संज्ञानात्मक चिकित्सा का मुख्य कार्य सेवार्थी को उसके उन तर्कहीन और आत्म-पराजयी विश्वासों को पहचानने में सहायता करना है जो उसके मानसिक कष्ट का मूल कारण हैं। चिकित्सक इन विचारों को चुनौती देने हेतु तार्किक साक्ष्य मांगता है और सेवार्थी को अधिक यथार्थवादी ढंग से सोचने हेतु प्रेरित करता है। जब व्यक्ति अपने सोचने के त्रुटिपूर्ण तरीके को परिवर्तित कर लेता है, तो उसके व्यवहार और भावनाओं में भी सकारात्मक सुधार आने लगता है, जो इस चिकित्सा का अंतिम लक्ष्य है।

55. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सिज़ोफ्रेनिया में ऋणात्मक लक्षण जैसे इच्छाशक्ति की कमी और भावनात्मक शून्यता रोगी के जीवन की गुणवत्ता को अत्यधिक प्रभावित करते हैं। इन लक्षणों का उपचार करना धनात्मक लक्षणों जैसे विभ्रम या व्यामोह की तुलना में अधिक जटिल होता है, क्योंकि वर्तमान मनोविक्षिप्तिरोधी औषधियाँ मुख्यतः धनात्मक लक्षणों पर ही प्रभावी होती हैं। इस कारण से, जिन रोगियों में ऋणात्मक लक्षण अधिक प्रमुख होते हैं, उनके पूर्ण स्वस्थ होने या बेहतर सामाजिक जीवन जीने की संभावना न्यून हो जाती है।

56. (A) वाणी की अल्पता
एलोगिया सिज़ोफ्रेनिया का एक महत्वपूर्ण ऋणात्मक लक्षण है, जिसका तात्पर्य व्यक्ति की वाक्-क्षमता और मात्रा में भारी न्यूनता आना है। इस स्थिति में रोगी अत्यंत अल्प संवाद करता है और उसके उत्तर प्रायः बहुत संक्षिप्त या केवल एक शब्द के होते हैं। यह स्थिति विचारों की न्यूनता को भी दर्शाती है, जहाँ व्यक्ति के मन में अभिव्यक्ति हेतु शब्दों का अभाव होता है। यह सामाजिक मेलजोल और सामान्य संप्रेषण को अत्यंत कठिन बना देता है।

57. (C) सामान्यीकृत चिंता विकार में पुरानी चिंता शामिल होती है, जबकि पैनिक विकार में डर के तीव्र प्रकरण शामिल होते हैं।
सामान्यीकृत चिंता विकार और पैनिक विकार दोनों चिंता विकार हैं, परंतु उनकी प्रकृति पृथक है। सामान्यीकृत चिंता विकार में व्यक्ति को दीर्घकाल तक विभिन्न विषयों पर निरंतर और अत्यधिक चिंता रहती है, जो एक स्थायी मानसिक अवस्था बन जाती है। इसके विपरीत, पैनिक विकार आकस्मिक होने वाले तीव्र भय के हमलों की विशेषता है जो अल्प समय तक रहते हैं परंतु अत्यंत भयावह होते हैं। एक निरंतर चलने वाली स्थिति है, जबकि दूसरा अचानक आने वाले तीव्र विक्षोभ जैसा है।

58. (A) सेवार्थी के वर्तमान संबंधों का विश्लेषण करना और उनके अंतर्वैयक्तिक कार्यक्षमता में सुधार करना।
अंतर्वैयक्तिक मॉडल पर आधारित चिकित्सा का मुख्य केंद्र व्यक्ति के वर्तमान सामाजिक संबंध और दूसरों के साथ अंतःक्रिया करने के तरीके होते हैं। चिकित्सक सेवार्थी को यह समझने में सहायता करता है कि उसके संबंधों के तनाव कैसे उसके मानसिक लक्षणों को बढ़ा रहे हैं। उपचार में संप्रेषण कौशलों को सुधारने, सामाजिक सहयोग प्राप्त करने और रिश्तों के संघर्षों को सुलझाने पर बल दिया जाता है। यह मॉडल मानता है कि स्वस्थ सामाजिक संबंध ही मनोवैज्ञानिक कल्याण का आधार हैं।

59. (D) असामाजिक व्यक्तित्व विकार
असामाजिक व्यक्तित्व विकार की पहचान दूसरों के अधिकारों की उपेक्षा करने और सामाजिक नियमों के निरंतर उल्लंघन के प्रतिरूप से होती है। ऐसे व्यक्ति प्रायः आक्रामक होते हैं, असत्य बोलते हैं और अपने कृत्यों के लिए कोई अनुताप या अपराधबोध अनुभव नहीं करते। यह व्यवहार किशोरावस्था से ही प्रारंभ होकर वयस्कता तक बना रहता है। इस विकार के कारण व्यक्ति को विधिक समस्याओं और व्यक्तिगत संबंधों में विफलता झेलनी पड़ती है।

60. (B) बायोफीडबैक
हृदय गति का अनुश्रवण करने और उस सूचना का उपयोग करके उसे नियंत्रित करना सीखना बायोफीडबैक का एक सटीक उदाहरण है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति को अपने शरीर की जैविक गतिविधियों के विषय में तात्कालिक डेटा प्राप्त होता है, जिससे वह समझ पाता है कि तनाव या शिथिलन का उस पर क्या प्रभाव पड़ता है। धीरे-धीरे, व्यक्ति बिना यंत्रों के भी इन

अनैच्छिक प्रक्रियाओं को सचेत रूप से नियंत्रित करने में सक्षम हो जाता है, जो शारीरिक स्वास्थ्य प्रबंधन में बहुत सहायक है।

61. (C) अव्यवस्थित भाषा
सिज़ोफ्रेनिया के धनात्मक लक्षण वे होते हैं जो किसी व्यक्ति के सामान्य मानसिक कार्यों में एक 'अतिरिक्त' तत्व जोड़ते हैं। अव्यवस्थित भाषा इसका एक उदाहरण है, जहाँ रोगी के विचार और शब्द आपस में असंबद्ध होते हैं, जिससे उसकी बात को समझना कठिन हो जाता है। अन्य विकल्प जैसे इच्छाशक्ति की कमी या सामाजिक अलगाव ऋणात्मक लक्षण हैं, क्योंकि वे सामान्य कार्यों के अभाव को दर्शाते हैं। धनात्मक लक्षण प्रायः तीव्र मनोविक्षिप्ति के दौरान अधिक स्पष्ट होते हैं।

62. (D) व्यवहार जो दुर्लभ है या औसत से काफी विचलित होता है।
सांख्यिकीय विरलता असामान्यता को गणितीय आधार पर परिभाषित करती है। इस मानदंड के अनुसार, जो व्यवहार जनसंख्या के औसत से बहुत दूर होते हैं, उन्हें असामान्य माना जाता है। उदाहरण के लिए, अत्यधिक उच्च या अत्यधिक न्यून बुद्धि-लब्धि स्कोर दोनों ही सांख्यिकीय रूप से दुर्लभ हैं। यद्यपि यह विधि वस्तुनिष्ठ है, परंतु यह इस बात का भेद नहीं करती कि कोई दुर्लभ व्यवहार वांछनीय है या नहीं, अतः इसे अन्य मानदंडों के साथ संयुक्त करके प्रयुक्त किया जाता है।

63. (A) इनमें भावनात्मक नियमन में प्राथमिक विक्षोभ शामिल होता है, जिससे अवसाद या उन्माद जैसी स्थितियां पैदा होती हैं।
मनोदशा विकारों की मुख्य पहचान व्यक्ति की भावनाओं का सामान्य सीमा से बाहर चले जाना है। इसमें व्यक्ति या तो हफ्तों तक गहरी उदासी और निराशा के सागर में डूबा रहता है, जिसे अवसाद कहते हैं, या फिर वह अत्यधिक ऊर्जा और उत्साह के दौर से गुजरता है, जिसे उन्माद कहा जाता है। ये विकार व्यक्ति के सोचने, अनुभव करने और कार्य करने के तरीके को पूर्णतः प्रभावित करते हैं, जिससे उसका सामान्य जीवन असंतुलित हो जाता है।

64. (C) P-2, Q-3, R-4, S-1
विभिन्न मनोवैज्ञानिक मॉडल असामान्यता के कारणों को पृथक दृष्टिकोण से देखते हैं। मनोगत्यात्मक मॉडल अचेतन द्वंद्वों को व्यवहार का आधार मानता है। व्यवहारवादी मॉडल का मानना है कि कुअनुकूलक व्यवहार पर्यावरणीय परिस्थितियों से सीखे जाते हैं। अंतर्वैयक्तिक मॉडल दोषपूर्ण संबंधों और संप्रेषण को विकारों का केंद्र मानता है। अंत में, संज्ञानात्मक मॉडल यह प्रस्तावित करता है कि हमारी दोषपूर्ण सोच और त्रुटिपूर्ण विश्वास ही मानसिक कष्ट और मनोवैज्ञानिक समस्याओं के मुख्य कारण होते हैं, जिन्हें परिवर्तित करना आवश्यक है।

65. (B) बाध्यकारी विचारों के कारण होने वाली चिंता को कम करना।
बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार में व्यक्ति को बार-बार कष्टदायक विचार आते हैं जिनसे उसे अत्यधिक चिंता होती है। बाध्यकारी क्रियाएं, जैसे बार-बार हस्त प्रक्षालन या वस्तुओं का परीक्षण करना, इन विचारों से उत्पन्न होने वाले तीव्र मानसिक तनाव को अस्थायी रूप से शांत करने हेतु की जाती हैं। यद्यपि व्यक्ति जानता है कि ये क्रियाएं तार्किक नहीं हैं, परंतु चिंता से मुक्ति पाने की तीव्र इच्छा उसे इन कृत्यों को बार-बार दोहराने हेतु विवश करती है।

66. (A) अनुकूलन कार्यक्षमता में कमी।
बौद्धिक अक्षमता के निदान हेतु केवल बुद्धि-लब्धि स्कोर का न्यून होना पर्याप्त नहीं है। इसके साथ ही व्यक्ति की अनुकूलन कार्यक्षमता में भी महत्वपूर्ण कमी होनी चाहिए। इसका अर्थ है कि व्यक्ति को अपनी आयु के अनुरूप दैनिक जीवन की बुनियादी गतिविधियों, जैसे स्वयं की देखभाल, सामाजिक मेलजोल और स्वतंत्र रूप से कार्य करने में कठिनाई होती है। इन दोनों पक्षों का सम्मिलन ही यह निर्धारित करता है कि व्यक्ति को अपने जीवन हेतु कितने समर्थन की आवश्यकता है।

67. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा को गैर-निर्देशात्मक इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें चिकित्सक सेवार्थी को यह नहीं बताता कि उसे क्या करना चाहिए। इसके स्थान पर, चिकित्सक एक सुरक्षित और स्वीकार्य वातावरण निर्मित करता है। यह दृष्टिकोण इस विश्वास पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति में स्वयं को समझने और परिवर्तित करने की जन्मजात क्षमता होती है। चिकित्सक केवल एक सहायक की भूमिका निभाता है जो सेवार्थी को अपने समाधान स्वयं खोजने हेतु प्रेरित करता है।

68. (D) पदार्थ पर निर्भरता
पदार्थ पर निर्भरता एक ऐसी गंभीर स्थिति है जिसमें व्यक्ति का किसी मादक द्रव्य पर शारीरिक या मनोवैज्ञानिक नियंत्रण समाप्त हो जाता है। इसके मुख्य लक्षण सहिष्णुता और निवर्तन हैं। सहिष्णुता में समान प्रभाव हेतु अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है, जबकि निवर्तन में पदार्थ न मिलने पर पीड़ादायक लक्षण उत्पन्न होते हैं। निर्भर व्यक्ति का संपूर्ण जीवन उसी पदार्थ को प्राप्त करने के इर्द-गिर्द सिमट जाता है, जिससे उसकी व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक जिम्मेदारियाँ उपेक्षित हो जाती हैं।

69. (C) व्यवस्थित और उत्पीड़न या खतरे के विषयों से संबंधित।
व्यामोह में व्यक्ति के त्रुटिपूर्ण विश्वास प्रायः बहुत विस्तृत और एक निश्चित विषय के इर्द-गिर्द व्यवस्थित होते हैं। विशेष रूप से उत्पीड़न के व्यामोह में, व्यक्ति को दृढ़ विश्वास होता है कि कोई व्यक्ति या समूह उसे क्षति पहुँचाना चाहता है। ये विश्वास बाह्य साक्ष्यों के पूर्णतः विपरीत होने पर भी परिवर्तित नहीं होते। ऐसे व्यवस्थित विश्वास व्यक्ति के व्यवहार को अत्यधिक प्रभावित करते हैं, जिससे वह प्रायः सामाजिक रूप से पृथक हो जाता है।

70. (B) यह सुनिश्चित करने के लिए दस बार वापस जाना कि आपने किसी को टक्कर तो नहीं मारी।
'परीक्षण' की बाध्यकारी क्रिया ओसीडी का एक सामान्य लक्षण है जहाँ व्यक्ति को बार-बार यह सुनिश्चित करने की

आवश्यकता होती है कि कुछ अशुभ तो नहीं हुआ। उदाहरण के लिए, यह भय कि वाहन से किसी को टक्कर लग गई है, एक विचार है, परंतु उस भय को शांत करने हेतु बार-बार वापस जाकर मार्ग देखना एक बाध्यकारी क्रिया है। यह व्यवहार व्यक्ति की चिंता को अस्थायी राहत देता है, परंतु यह उसके समय का बहुत बड़ा भाग ले लेता है।

71. (D) अनुभवजन्य रूप से परीक्षण योग्य परिकल्पनाएं और मापने योग्य परिणाम।
व्यवहारवादी मॉडल ने नैदानिक मनोविज्ञान में वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता को बढ़ावा दिया। इसने मनोगत्यात्मक मॉडल के अमूर्त अचेतन विचारों के स्थान पर ऐसे व्यवहारों पर ध्यान केंद्रित किया जिन्हें प्रेक्षित और मापा जा सकता था। इस मॉडल के कारण ही ऐसी चिकित्सा विधियाँ विकसित हुईं जिनका प्रभाव प्रयोगों के माध्यम से सिद्ध किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण परिणामों की माप करने और उपचार की प्रभावशीलता को सांख्यिकीय रूप से प्रमाणित करने पर सर्वाधिक बल देता है।

72. (A) 1, 3, 2, 4
मनोचिकित्साओं का विकास इतिहास के विभिन्न चरणों में हुआ है। सर्वप्रथम फ्रायड ने 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में मनोविश्लेषण विकसित किया। इसके पश्चात 1940 और 50 के दशक में मानवतावादी दृष्टिकोण के साथ सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा आई। लगभग उसी समय व्यवहारवादी तकनीकें प्रमुख हुईं। संज्ञानात्मक चिकित्सा का व्यापक विकास 1960 के दशक में हुआ। बायोफीडबैक जैसी तकनीकें, जो शरीर और व्यवहार को संबद्ध करती हैं, आधुनिक युग में अधिक प्रचलित हुईं, जिससे उपचार के विकल्पों का विस्तार हुआ।

73. (C) उन्मादी या अल्प-उन्मादी प्रकरण
द्विध्रुवी विकारों और एकध्रुवीय अवसाद के मध्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंतर उन्माद या अल्प-उन्माद की उपस्थिति है। एकध्रुवीय अवसाद में व्यक्ति केवल निराशा और उदासी के दौर से गुजरता है। इसके विपरीत, द्विध्रुवी विकार में व्यक्ति को अवसाद के साथ-साथ अत्यधिक ऊर्जा, हर्ष और सक्रियता के प्रकरण भी अनुभव होते हैं। ये विपरीत अवस्थाएं बारी-बारी से आती हैं, जिससे व्यक्ति का जीवन और भावनात्मक संतुलन अत्यंत अस्थिर हो जाता है। अतः, उन्माद की पहचान निदान हेतु महत्वपूर्ण है।

74. (A) भावनात्मक अभिव्यक्ति के दायरे और तीव्रता में महत्वपूर्ण कमी।
भावात्मक शून्यता सिज़ोफ्रेनिया का एक ऋणात्मक लक्षण है जिसमें व्यक्ति अपनी भावनाओं को चेहरे के हाव-भाव, ध्वनि या शारीरिक भाषा के माध्यम से व्यक्त करने में असमर्थ हो जाता है। रोगी प्रायः सुस्त और भावहीन प्रतीत होता है, भले ही वह भीतर से कुछ अनुभव कर रहा हो। उसकी ध्वनि नीरस हो सकती है और वह नेत्र संपर्क से बच सकता है। यह स्थिति दूसरों हेतु रोगी के साथ संवाद करना और भावनात्मक जुड़ाव बनाना अत्यंत चुनौतीपूर्ण बना देती है।

75. (A) केवल I और II
व्यक्तित्व विकार ईगो-सिंटोनिक होते हैं, जिसका अर्थ है कि इनसे ग्रस्त व्यक्ति प्रायः अपने असामान्य व्यवहार को स्वयं के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग मानते हैं और उसे समस्या नहीं समझते। इन्हें ए, बी और सी समूहों में वर्गीकृत किया गया है ताकि लक्षणों को व्यवस्थित ढंग से समझा जा सके। चूँकि ये व्यवहार के गहरे और पुराने प्रतिरूप हैं, अतः इनका उपचार केवल औषधियों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए दीर्घकालिक मनोचिकित्सा की आवश्यकता होती है।

76. (B) मुक्त साहचर्य
मुक्त साहचर्य मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा की एक बुनियादी तकनीक है जिसमें सेवार्थी को बिना किसी हिचकिचाहट के अपने मन में आने वाले प्रत्येक विचार को बोलने हेतु कहा जाता है। यह प्रक्रिया 'अहं' की रक्षा प्रणालियों को शिथिल करने में सहायक होती है, जिससे अचेतन मन में दबी दमित इच्छाएं और स्मृतियाँ धीरे-धीरे प्रकट होने लगती हैं। चिकित्सक इन प्रकट विचारों के मध्य संबंधों का विश्लेषण करके सेवार्थी की मानसिक समस्याओं के मूल कारणों तक पहुँचने का प्रयास करता है।

77. (C) सीसा विषाक्तता
सीसा विषाक्तता बौद्धिक अक्षमता का एक महत्वपूर्ण कारण है जो जन्म के पश्चात पर्यावरणीय कारकों के कारण होता है। जब छोटे बालक पेंट, जल या मृदा के माध्यम से सीसे के संपर्क में आते हैं, तो यह उनके विकसित हो रहे मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र को गंभीर क्षति पहुँचा सकता है। इससे अधिगम की क्षमता में कमी और बुद्धि-लब्धि स्कोर में गिरावट आती है। इसके विपरीत, डाउन सिंड्रोम और फ्रैजाइल एक्स सिंड्रोम आनुवंशिक होते हैं, जो जन्म से ही उपस्थित रहते हैं।

78. (D) चिंता
सामान्यीकृत चिंता विकार की सर्वाधिक केंद्रीय विशेषता अत्यधिक और व्यापक चिंता है। यह चिंता किसी एक विशिष्ट स्थिति तक सीमित नहीं होती, अपितु जीवन के कई क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, कार्य या परिवार के विषय में निरंतर बनी रहती है। व्यक्ति इस चिंता को नियंत्रित करने में स्वयं को असमर्थ पाता है, भले ही वह जानता हो कि यह चिंता तर्कहीन है। यह निरंतर रहने वाली मानसिक बेचैनी ही इस विकार को अन्य आकस्मिक चिंता प्रकरणों से पृथक बनाती है।

79. (A) सामान्य शारीरिक संवेदनाओं की विनाशकारी गलत व्याख्या।
संज्ञानात्मक मॉडल के अनुसार पैनिक आक्रमण तब होता है जब कोई व्यक्ति सामान्य शारीरिक संकेतों, जैसे बढ़ी हुई हृदय गति, को किसी अत्यंत बड़े संकट के रूप में देखता है। वह सोच सकता है कि उसे हृदयाघात हो रहा है या वह मृत्यु के निकट है। यह त्रुटिपूर्ण व्याख्या भय को संवर्धित कर देती है, जिससे शरीर और अधिक लक्षण उत्पन्न करता है, और इस प्रकार एक दुष्चक्र निर्मित हो जाता है। उपचार में इन विनाशकारी विचारों को पहचानना और उन्हें तार्किक विचारों से बदलना सिखाया जाता है।

आधुनिक संस्कृति और साहित्य को भी गहराई से प्रभावित किया है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

157. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सिज़ोफ्रेनिया में व्यामोह एक अत्यंत सामान्य और गंभीर लक्षण है। इसमें व्यक्ति को दृढ़ परंतु त्रुटिपूर्ण विश्वास होता है कि अन्य व्यक्ति उसके विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं या उसे क्षति पहुँचाना चाहते हैं। उत्पीड़न के ये व्यामोह व्यक्ति के व्यवहार को पूर्णतः परिवर्तित कर देते हैं, जिससे वह सदैव भयभीत और रक्षात्मक रहता है। चूँकि सिज़ोफ्रेनिया यथार्थ की धारणा को बाधित करता है, अतः ये व्यामोह रोगी हेतु पूर्ण सत्य होते हैं, जिससे उसका सामाजिक जीवन पूर्णतः अस्त-व्यस्त हो जाता है।

158. (D) उन्माद; अल्प-उन्माद
द्विध्रुवी I और द्विध्रुवी II विकारों के मध्य मुख्य अंतर उनकी तीव्रता में है। द्विध्रुवी I के निदान हेतु न्यूनतम एक पूर्ण उन्मादी प्रकरण का होना आवश्यक है, जो अत्यंत तीव्र होता है और प्रायः चिकित्सालय में भर्ती होने की स्थिति उत्पन्न करता है। इसके विपरीत, द्विध्रुवी II में व्यक्ति कभी पूर्ण उन्माद का अनुभव नहीं करता, अपितु वह केवल अल्प-उन्माद तक ही पहुँचता है। हालाँकि, द्विध्रुवी II में अवसाद के प्रकरण अत्यंत कष्टदायक और दीर्घकालिक हो सकते हैं, जो व्यक्ति हेतु पीड़ादायक है।

159. (D) I, II और III
मनोदशा विकारों, विशेष रूप से अवसाद में, लक्षणों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रेक्षित की जाती है। अभिरुचियों और आनंद में न्यूनता व्यक्ति को पूर्णतः निष्क्रिय बना देती है। शारीरिक स्तर पर, क्षुधा न्यून होने या संवर्धित होने से भार में महत्वपूर्ण परिवर्तन आ सकते हैं। मानसिक पीड़ा इतनी अधिक हो सकती है कि व्यक्ति को जीवन निरर्थक प्रतीत होने लगता है और उसके मस्तिष्क में बार-बार मृत्यु या आत्महत्या के विचार आने लगते हैं। ये समस्त लक्षण मिलकर व्यक्ति की सामान्य जीवन जीने की क्षमता को प्रभावित करते हैं।

160. (B) क्रियाप्रसूत अनुकूलन, जहाँ बाध्यकारी क्रिया चिंता को कम करके नकारात्मक रूप से सुदृढ़ होती है।
व्यवहारवादी दृष्टिकोण ओसीडी के बने रहने की व्याख्या अधिगम के माध्यम से करता है। जब व्यक्ति को कोई भयावह विचार आता है, तो वह अत्यंत चिंतित हो जाता है। जब वह कोई क्रिया, जैसे हस्त प्रक्षालन, करता है, तो उसकी चिंता तत्क्षण न्यून हो जाती है। यह राहत एक पारितोषिक की भाँति कार्य करती है, जिसे नकारात्मक सुदृढ़ीकरण कहा जाता है। भविष्य में चिंता होने पर व्यक्ति वही क्रिया दोहराने हेतु अधिक प्रेरित होता है। इस प्रकार, यह चक्र समय के साथ और अधिक सुदृढ़ होता जाता है।

161. (B) गंभीर
गंभीर बौद्धिक अक्षमता का वर्गीकरण उन व्यक्तियों हेतु किया जाता है जिनका बुद्धि-लब्धि प्राप्तांक 20-25 से लेकर 35-40 की सीमा में होता है। इस स्तर के व्यक्तियों का भाषा विकास अत्यंत सीमित होता है और वे केवल बुनियादी आत्म-देखभाल कौशल ही सीख सकते हैं। उन्हें अपने दैनिक जीवन की समस्त गतिविधियों हेतु निरंतर पर्यवेक्षण और सहायता की आवश्यकता होती है। वे पूर्णतः स्वतंत्र रुप से रहने में असमर्थ होते हैं और प्रायः सामुदायिक रहने के सुरक्षित वातावरण में सर्वाधिक अच्छा कार्य करते हैं।

162. (A) सेवार्थी-केंद्रित
कार्ल रोजर्स मानवतावादी मनोविज्ञान के अग्रणी थे और उन्होंने ही सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा का विकास किया। उनका दृष्टिकोण तत्कालीन पद्धतियों से भिन्न था क्योंकि उन्होंने चिकित्सक की विशेषज्ञता के स्थान पर सेवार्थी की आत्म-सुधार की क्षमता पर विश्वास किया। रोजर्स ने समानुभूति और बिना शर्त सकारात्मक सम्मान जैसी संकल्पनाओं को प्रस्तुत किया, जो आधुनिक मनोचिकित्सा में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। उनकी इस विधि ने उपचार के दौरान सेवार्थी के साथ समानता और सम्मान का व्यवहार करने की परंपरा को बल दिया।

163. (C) नकारात्मक लक्षण
सिज़ोफ्रेनिया में "सपाट प्रभाव" एक प्रमुख ऋणात्मक लक्षण है। इसका अर्थ है व्यक्ति के भावनात्मक हाव-भाव और प्रतिक्रियाओं में आने वाली भारी न्यूनता। ऐसे व्यक्ति के मुख पर कोई भाव नहीं दिखता, उसकी ध्वनि नीरस हो जाती है और वह सामान्य परिस्थितियों में भी कोई हर्ष या शोक प्रकट नहीं करता। चूँकि यह लक्षण व्यक्ति की सामान्य भावनात्मक क्षमताओं के विलोपन या न्यूनता को दर्शाता है, अतः इसे 'ऋणात्मक' श्रेणी में रखा गया है जो सामाजिक संबंधों को बाधित करता है।

164. (D) निदान
असामान्यता को परिभाषित करने हेतु मनोवैज्ञानिकों ने "चार डी" (विचलन, कष्ट, अक्षमता और खतरा) का उपयोग किया है। विचलन सामाजिक मानदंडों से दूरी को दर्शाता है, कष्ट व्यक्तिगत पीड़ा को, अक्षमता दैनिक कार्यों में बाधा को, और खतरा स्वयं या दूसरों को होने वाले जोखिम को दर्शाता है। "निदान" इस सूची का भाग नहीं है बल्कि यह उस प्रक्रिया का नाम है जिसके माध्यम से किसी मानसिक व्याधि की पहचान की जाती है। निदान स्वयं असामान्यता का कोई आधारभूत मानदंड या गुण नहीं है।

165. (C) संतोषजनक और अनुकूलनीय संबंध।
अंतर्वैयक्तिक मॉडल यह मानता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसकी मानसिक शांति उसके रिश्तों की सुदृढ़ता पर निर्भर करती है। जब कोई व्यक्ति दूसरों के साथ स्वस्थ, सम्मानजनक और सुखद संबंध निर्मित कर पाता है, तो उसका मनोवैज्ञानिक कल्याण बना रहता है। इसके विपरीत, यदि संबंधों में दरार, एकाकीपन या संघर्ष हो, तो मानसिक विकारों की संभावना संवर्धित हो जाती है। अतः, यह मॉडल व्यक्ति को अपनी सामाजिक भूमिकाओं को बेहतर ढंग से निभाने और दूसरों के साथ गहराई से जुड़ने हेतु प्रेरित करता है।

मानता है कि यदि कोई व्यवहार सीखा जा सकता है, तो उसे उचित अभ्यास के माध्यम से सुधारा भी जा सकता है।

90. (A) प्रतिदिन 12-14 घंटे सोना।
उन्मादी प्रकरण की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता ऊर्जा में भारी वृद्धि और निद्रा की आवश्यकता में अत्यधिक न्यूनता है। उन्माद से ग्रस्त व्यक्ति प्रायः केवल 2-3 घंटे सोकर भी स्वयं को पूर्णतः तरोताजा अनुभव करता है। इसके विपरीत, अत्यधिक निद्रा अवसाद का लक्षण हो सकती है, परंतु उन्माद का नहीं। उन्माद के दौरान व्यक्ति आवेगी निर्णय लेता है, अत्यधिक धन व्यय करता है और एक साथ कई कार्यों में संलग्न हो जाता है, जो उसकी उच्च ऊर्जा को दर्शाता है।

91. (D) अचेतन को सचेत करना।
मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा का मूल लक्ष्य सेवार्थी के अचेतन मन में दबी उन स्मृतियों, इच्छाओं और संघर्षों को उजागर करना है जो उसके वर्तमान कष्ट का कारण हैं। फ्रायड का मानना था कि जब एक बार व्यक्ति अपने इन छिपे हुए मानसिक द्वंद्वों के प्रति सचेत हो जाता है और उन पर कार्य करता है, तो उसके लक्षण स्वतः ही न्यून होने लगते हैं। यह प्रक्रिया गहरी अंतर्दृष्टि विकसित करने पर केंद्रित है ताकि व्यक्तित्व में स्थायी परिवर्तन लाया जा सके।

92. (B) अनुकूलन व्यवहार
बौद्धिक अक्षमता का वर्गीकरण केवल बुद्धि-लब्धि अंकों पर निर्भर नहीं होता, बल्कि इसमें अनुकूलन व्यवहार का मूल्यांकन भी अनिवार्य है। अनुकूलन व्यवहार का तात्पर्य है कि व्यक्ति अपनी आयु और संस्कृति के अनुरुप दैनिक जीवन की सामाजिक और व्यावहारिक मांगों को कितनी कुशलता से पूर्ण कर सकता है। इसमें स्वयं की देखभाल, गृह कार्य और दूसरों के साथ अंतःक्रिया करने की क्षमता सम्मिलित है। यह आकलन निर्धारित करता है कि व्यक्ति को स्वतंत्र जीवन हेतु कितने समर्थन की आवश्यकता है।

93. (C) बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार
बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार की मुख्य विशेषताएं बार-बार आने वाले अवांछित विचार और उन पर आधारित पुनरावृत्ति वाले व्यवहार हैं। व्यक्ति इन विचारों को अत्यंत कष्टदायक और तर्कहीन मानता है, परंतु उनसे होने वाली चिंता को न्यून करने हेतु वह विशिष्ट अनुष्ठान करने को विवश हो जाता है। उदाहरण के लिए, अशुद्धि का निरंतर विचार और उसके कारण बार-बार हस्त प्रक्षालन। यह चक्र व्यक्ति का बहुत समय और ऊर्जा नष्ट कर देता है, जिससे सामान्य जीवन में बाधा उत्पन्न होती है।

94. (D) अविश्वास और उत्पीड़न के मिथ्या विश्वास
मनोविकृति विज्ञान में व्यामोह शब्द मुख्य रूप से उन स्थितियों को संदर्भित करता है जहाँ व्यक्ति दूसरों के प्रति अत्यधिक शंकित होता है। उसे बिना किसी ठोस आधार के यह दृढ़ विश्वास होता है कि लोग उसके विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं, उसे धोखा दे रहे हैं या उसे क्षति पहुँचाना चाहते हैं। ये विश्वास तर्क या साक्ष्यों से परिवर्तित नहीं होते। यह लक्षण सिज़ोफ्रेनिया और पैरानॉयड व्यक्तित्व विकार में पाया जाता है और व्यक्ति की सामाजिक कार्यक्षमता को प्रभावित करता है।

95. (A) घटनाओं की सहज, अक्सर नकारात्मक व्याख्याएं।
संज्ञानात्मक चिकित्सा में स्वचालित विचार वे त्वरित और अनैच्छिक विचार हैं जो किसी स्थिति के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में मस्तिष्क में तुरंत उद्भूत होते हैं। ये विचार प्रायः नकारात्मक होते हैं और यथार्थ को विकृत कर प्रस्तुत करते हैं, जैसे "मैं सदैव असफल होता हूँ"। चूँकि ये विचार बहुत तीव्रता से आते हैं, व्यक्ति प्रायः इन्हें बिना विचारे सत्य मान लेता है। चिकित्सा में इन विचारों को पहचानना और इनकी तार्किकता की जाँच करना उपचार का महत्वपूर्ण भाग है।

96. (B) रचनात्मकता और मौलिकता
असामान्यता को परिभाषित करने हेतु मनोवैज्ञानिक सामान्यतः उन व्यवहारों को देखते हैं जो व्यक्ति या समाज हेतु समस्याजनक हों। व्यक्तिपरक कष्ट, कुअनुकूलन और स्वयं या दूसरों हेतु संकट होना असामान्यता के स्पष्ट मानदंड हैं। इसके विपरीत, रचनात्मकता और मौलिकता को सामान्यतः सकारात्मक गुण माना जाता है। भले ही ये गुण सांख्यिकीय रूप से दुर्लभ हों, परंतु इन्हें मानसिक विकार का संकेत नहीं माना जाता जब तक कि इनके साथ कोई गंभीर मनोवैज्ञानिक कष्ट न जुड़ा हो।

97. (B) नैदानिक रूप से महत्वपूर्ण अक्षमता या कष्ट।
पदार्थ-संबंधित विकार का निदान केवल किसी पदार्थ के उपयोग मात्र से नहीं किया जाता। यह तब माना जाता है जब वह उपयोग व्यक्ति के जीवन में गंभीर समस्याएं उत्पन्न करने लगे। इसमें स्वास्थ्य का क्षरण, सामाजिक संबंधों में दरार, जीविका की हानि या दैनिक उत्तरदायित्वों को निभाने में अक्षमता सम्मिलित है। जब पदार्थ का उपयोग व्यक्ति हेतु नियंत्रण से बाहर हो जाता है और महत्वपूर्ण कष्ट का कारण बनता है, तभी उसे एक नैदानिक विकार के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

98. (A) हैरी स्टैक सुलिवन
नैदानिक मनोविज्ञान का अंतर्वैयक्तिक मॉडल प्रमुख रूप से हैरी स्टैक सुलिवन के कार्यों और विचारों पर आधारित है। सुलिवन का मानना था कि व्यक्तित्व और मानसिक स्वास्थ्य को एकाकी व्यक्ति में नहीं, अपितु उसके दूसरों के साथ होने वाले अंतर्वैयक्तिक संबंधों के संदर्भ में ही समझा जा सकता है। उन्होंने तर्क दिया कि मानसिक विकार प्रायः बचपन और पश्चात के जीवन में दोषपूर्ण सामाजिक अनुभवों के कारण विकसित होते हैं। उनके इस दृष्टिकोण ने आधुनिक अंतर्वैयक्तिक मनोचिकित्सा की नींव रखी।

99. (C) सेवार्थी को उसके व्यवहार या विचारों की परवाह किए बिना पूर्ण स्वीकृति और गर्मजोशी के साथ देखना।
कार्ल रोजर्स के अनुसार, "बिना शर्त सकारात्मक सम्मान" चिकित्सीय संबंध की एक मूलभूत शर्त है जिसमें चिकित्सक सेवार्थी को उसके किसी भी विचार, भावना या व्यवहार की निंदा या मूल्यांकन किए बिना पूर्ण स्वीकृति देता है। यह वातावरण

80. (B) 20 या 25 से नीचे
अति गंभीर बौद्धिक अक्षमता का निदान तब किया जाता है जब किसी व्यक्ति का बुद्धि-लब्धि स्कोर 20 या 25 से भी न्यून होता है। इस स्तर पर व्यक्ति को अपने जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में निरंतर और गहन सहायता की आवश्यकता होती है। वे प्रायः संवेदी और शारीरिक बाधाओं का भी सामना करते हैं। यद्यपि वे कुछ अत्यंत बुनियादी आत्म-देखभाल कौशल सीख सकते हैं, परंतु वे पूर्णतः दूसरों पर निर्भर होते हैं और उन्हें 24 घंटे देखभाल वाले वातावरण में रहने की आवश्यकता होती है।

81. (B) अंतर्वैयक्तिक मॉडल
अंतर्वैयक्तिक मॉडल इस सिद्धांत पर आधारित है कि हमारा मानसिक स्वास्थ्य दूसरों के साथ हमारे संबंधों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। यह मॉडल विशेष रूप से आरंभिक जीवन के जुड़ाव और संबंधों के उन प्रतिरूपों का अध्ययन करता है जो पश्चात में व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। यह मानता है कि मनोवैज्ञानिक विकार दोषपूर्ण संबंधों या सामाजिक संप्रेषण में विफलता का परिणाम हैं। अतः, चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य रोगी के सामाजिक कौशल को परिष्कृत करना होता है।

82. (C) व्याख्या
सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा एक गैर-निर्देशात्मक दृष्टिकोण है जहाँ चिकित्सक व्याख्या करने या परामर्श देने के स्थान पर सेवार्थी की भावनाओं को प्रतिबिंबित करने पर ध्यान केंद्रित करता है। इसकी तीन मुख्य शर्तें समानुभूति, वास्तविकता और बिना शर्त सकारात्मक सम्मान हैं। व्याख्या करना मुख्य रूप से मनोविश्लेषण की विशेषता है, जहाँ चिकित्सक सेवार्थी के व्यवहार के पीछे छिपे अचेतन कारणों को स्पष्ट करता है। रोजर्स के अनुसार, सेवार्थी स्वयं अपनी समस्याओं को सुलझाने हेतु सर्वाधिक सक्षम व्यक्ति है।

83. (C) मानसिक विकारों की प्रकृति, कारणों और उपचार का अध्ययन।
मनोविकृति विज्ञान मनोविज्ञान और चिकित्सा की वह शाखा है जो मानसिक रोगों के विभिन्न पक्षों का वैज्ञानिक अध्ययन करती है। इसमें यह अन्वेषण किया जाता है कि कोई विकार कैसे विकसित होता है, उसके पीछे कौन से जैविक, मनोवैज्ञानिक या सामाजिक कारण उत्तरदायी हैं, और उसे ठीक करने हेतु कौन सी विधियाँ प्रभावी होंगी। यह क्षेत्र विशेषज्ञों को विकारों का सटीक निदान करने और रोगियों हेतु उपयुक्त उपचार योजना तैयार करने में सहायता प्रदान करता है।

84. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पदार्थ उपयोग विकार में व्यक्ति प्रायः यह जानते हुए भी पदार्थ का सेवन जारी रखता है कि यह उसके स्वास्थ्य, परिवार और जीविका को क्षति पहुँचा रहा है। इसका कारण यह है कि कई मादक पदार्थ मस्तिष्क के पुरस्कार केंद्र को प्रभावित करते हैं, जिससे निर्भरता उत्पन्न होती है। यह निर्भरता व्यक्ति की निर्णय क्षमता और आत्म-नियंत्रण को इतना दुर्बल कर देती है कि वह चाहकर भी व्यसन का त्याग नहीं कर पाता। इस प्रकार, सुदृढ़ीकरण गुण ही इस व्यवहार को बनाए रखते हैं।

85. (C) व्यक्ति के खिलाफ साजिश रची जा रही है या उसे परेशान किया जा रहा है।
उत्पीड़न का व्यामोह सिज़ोफ्रेनिया और अन्य मनोविक्षिप्ति विकारों में देखा जाने वाला सर्वाधिक सामान्य प्रकार का त्रुटिपूर्ण विश्वास है। इसमें व्यक्ति को दृढ़ता से प्रतीत होता है कि अन्य लोग उसे क्षति पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं, उसकी जासूसी कर रहे हैं या उसके भोजन में विष मिला रहे हैं। ये विचार पूर्णतः निराधार होते हैं, परंतु व्यक्ति हेतु ये यथार्थ की भाँति ही सत्य होते हैं। इसके कारण वह सदैव भयभीत, सतर्क और दूसरों के प्रति आक्रामक व्यवहार कर सकता है।

86. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
व्यक्तित्व विकारों को उनकी समान विशेषताओं के आधार पर तीन समूहों में विभक्त किया गया है। समूह ए में वे विकार आते हैं जो विचित्र व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। समूह बी में नाटकीय, अत्यधिक भावनात्मक और अनिश्चित व्यवहार वाले विकार सम्मिलित हैं। समूह सी चिंता और भय की प्रधानता वाले विकारों को दर्शाता है। सामान्य व्यक्तित्व विकार शब्द व्यवहार के उस व्यापक और अनम्य प्रतिरूप को संदर्भित करता है जो व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को प्रभावित करता है और सामाजिक मानदंडों से विचलित होता है।

87. (D) शारीरिक प्रतिक्रियाएँ
बायोफीडबैक अन्य मनोचिकित्साओं से भिन्न है क्योंकि यह मुख्य रूप से शारीरिक पक्ष पर ध्यान केंद्रित करता है। जहाँ अन्य चिकित्साएँ विचारों या भावनाओं को परिवर्तित करने का प्रयास करती हैं, बायोफीडबैक व्यक्ति को उसकी शारीरिक प्रक्रियाओं, जैसे रक्तचाप या मांसपेशियों के खिंचाव, के विषय में सचेत करता है। यंत्र की सहायता से व्यक्ति यह सीखता है कि वह कैसे अपने मानसिक प्रयासों से इन जैविक क्रियाओं को नियंत्रित कर सकता है। यह तनाव न्यून करने हेतु एक व्यावहारिक विधि है।

88. (A) चिंता के अनुभव की अवधि और प्रकृति (तीव्र बनाम दीर्घकालिक)।
पैनिक विकार और सामान्यीकृत चिंता विकार के मध्य सर्वाधिक बड़ा अंतर चिंता के प्रकट होने का ढंग है। पैनिक विकार में भय अत्यंत तीव्र और आकस्मिक हमलों के रूप में आता है जो कतिपय मिनटों तक रहता है। दूसरी ओर, सामान्यीकृत चिंता विकार में चिंता न्यून तीव्र परंतु बहुत दीर्घ काल तक बनी रहती है और व्यक्ति के प्रत्येक विचार में समाहित होती है। एक आकस्मिक होने वाला भावनात्मक विस्फोट है, जबकि दूसरा निरंतर चलने वाला मानसिक बोझ है।

89. (C) अधिगम सिद्धांत
असामान्यता का व्यवहारवादी मॉडल पूर्णतः अधिगम के सिद्धांतों पर आधारित है। यह मानता है कि जिस प्रकार हम स्वस्थ कृत्य करना सीखते हैं, उसी प्रकार हम त्रुटिपूर्ण या असामान्य व्यवहार भी अपने परिवेश से सीखते हैं। इसमें शास्त्रीय अनुकूलन और क्रियाप्रसूत अनुकूलन जैसी प्रक्रियाएं मुख्य भूमिका निभाती हैं। इस मॉडल का लाभ यह है कि यह

लक्षण यथार्थ से अलगाव, जैसे व्यामोह और विभ्रम, और विचार प्रक्रिया में गंभीर विक्षोभ होते हैं। यद्यपि सिज़ोफ्रेनिया के रोगियों को चिंता हो सकती है, परंतु नैदानिक वर्गीकरण में इसे एक पृथक और अधिक व्यापक मानसिक स्थिति के रूप में पहचाना जाता है।

110. (D) स्वयं, दुनिया और भविष्य।
आरोन बेक द्वारा प्रस्तावित संज्ञानात्मक त्रय अवसाद को समझने का एक महत्वपूर्ण ढाँचा है। इसके अनुसार, अवसाद से ग्रस्त व्यक्ति के मस्तिष्क में तीन क्षेत्रों के विषय में गहरे नकारात्मक विचार होते हैं। वह स्वयं को निरर्थक मानता है, विश्व को क्रूर समझता है, और भविष्य को पूर्णतः अंधकारमय तथा निराशाजनक देखता है। ये तीनों नकारात्मक दृष्टिकोण सम्मिलित होकर व्यक्ति के अवसाद को बनाए रखते हैं और उसे किसी भी सकारात्मक परिवर्तन की आशा करने से रोकते हैं, जिससे कष्ट और संवर्धित होता है।

111. (A) चक्रवाती विकार
चक्रवाती विकार एक दीर्घकालिक मनोदशा विकार है जो न्यूनतम दो वर्षों तक बना रहता है। इसमें व्यक्ति बार-बार मनोदशा में उतार-चढ़ाव अनुभव करता है, जहाँ वह कई बार अल्प-उन्मादी लक्षणों और कई बार अवसादग्रस्त लक्षणों का अनुभव करता है। हालाँकि ये लक्षण इतने गंभीर नहीं होते कि उन्हें पूर्ण उन्माद या गंभीर अवसाद कहा जा सके, परंतु इनकी निरंतरता और दीर्घ काल तक बने रहना व्यक्ति की मानसिक शांति और दैनिक जीवन के संतुलन को विचलित कर देता है।

112. (B) शारीरिक उत्तेजना पर सचेत नियंत्रण प्राप्त करने से व्यक्तिपरक चिंता कम हो सकती है।
बायोफीडबैक इस वैज्ञानिक बोध पर आधारित है कि हमारा मस्तिष्क और शरीर परस्पर संबद्ध हैं। जब कोई व्यक्ति यंत्रों के माध्यम से अपनी हृदय गति या मांसपेशियों के तनाव को बढ़ते हुए देखता है, तो वह उसे न्यून करने हेतु मानसिक तकनीकें सीख सकता है। इस प्रकार शारीरिक उत्तेजना को नियंत्रित करने से मन को भी शांति प्राप्त होती है और चिंता के लक्षणों में कमी आती है। यह तकनीक व्यक्ति को सशक्त बनाती है कि वह अपनी शारीरिक प्रतिक्रियाओं को स्वयं प्रबंधित कर सके।

113. (B) केवल II और III
सिज़ोफ्रेनिया मुख्य रूप से विचारों और यथार्थ की धारणा का विकार है, न कि केवल मनोदशा का। इसमें मनोविक्षिप्ति एक प्रमुख तत्व है, जहाँ व्यक्ति यथार्थ से अपना संपर्क खो देता है और उसे व्यामोह या विभ्रम का अनुभव होता है। इसके साथ ही, इसमें ऋणात्मक लक्षण जैसे वाणी की अल्पता और प्रेरणा की न्यूनता भी अत्यंत सामान्य हैं। ये लक्षण व्यक्ति की सामाजिक कार्यक्षमता को अत्यधिक प्रभावित करते हैं और उसे सामान्य विश्व से पृथक कर देते हैं, जो बहुत कष्टदायक है।

114. (A) शोक, भूमिका विवाद, या सामाजिक अलगाव।
मनोविकृति विज्ञान का अंतर्वैयक्तिक मॉडल अवसाद को व्यक्ति के सामाजिक परिवेश और रिश्तों की समस्याओं के साथ संबद्ध कर देखता है। इसके अनुसार, किसी प्रियजन की मृत्यु का शोक, रिश्तों में चल रहे संघर्ष, जीवन की भूमिकाओं में परिवर्तन, या एकाकीपन की भावना ही अवसाद को जन्म देती है। यह दृष्टिकोण मानता है कि यदि व्यक्ति के सामाजिक सहयोग और संप्रेषण कौशल में परिष्कार किया जाए, तो वह अपने भावनात्मक कष्टों से बेहतर ढंग से उभर सकता है और स्वास्थ्य सुधर सकता है।

115. (C) 2, 4, 3, 1
बौद्धिक अक्षमता के स्तरों का वर्गीकरण व्यक्ति की कार्यक्षमता और बुद्धि-लब्धि अंकों के आधार पर किया जाता है। 'अल्प' स्तर पर व्यक्ति सर्वाधिक कार्यक्षम होता है और कुछ समर्थन के साथ स्वतंत्र जीवन यापन कर सकता है। इसके पश्चात 'मध्यम' स्तर आता है जहाँ अधिक सहायता की आवश्यकता होती है। 'गंभीर' स्तर पर व्यक्ति को दैनिक जीवन के कार्यों हेतु व्यापक सहयोग चाहिए होता है। 'अति गंभीर' स्तर सर्वाधिक निम्न स्तर है जहाँ व्यक्ति पूर्ण रूप से दूसरों की देखभाल पर निर्भर होता है।

116. (D) विचार; व्यवहार
बाध्यकारी विचार और बाध्यकारी क्रियाएं ओसीडी के दो पृथक परंतु संबंधित पक्ष हैं। बाध्यकारी विचार मानसिक स्तर पर होने वाली प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति को हस्तक्षेप करने वाले और भयावह विचार आते हैं। इसके विपरीत, बाध्यकारी क्रियाएं बाह्य व्यवहार हैं जिन्हें व्यक्ति उन भयावह विचारों से होने वाली चिंता को शांत करने हेतु करता है। संक्षेप में, विचार मन के भीतर की समस्या है और क्रिया उस समस्या का समाधान करने हेतु किया गया बार-बार का पुनरावृत्ति वाला शारीरिक कार्य है।

117. (C) नए अधिगम के अनुभवों के माध्यम से कुअनुकूलक व्यवहारों को संशोधित करके।
व्यवहारवादी मॉडल का मानना है कि मनोवैज्ञानिक विकार त्रुटिपूर्ण ढंग से सीखे गए व्यवहारों का परिणाम हैं। अतः, उपचार का सर्वाधिक प्रभावी मार्ग 'पुनः सीखना' है। इसमें ऐसी तकनीकें अपनाई जाती हैं जो व्यक्ति को कुअनुकूलक व्यवहारों को त्यागने और उनके स्थान पर अधिक स्वस्थ तथा सामाजिक रूप से स्वीकार्य व्यवहारों को अपनाने में सहायता करती हैं। यह मॉडल अतीत की व्याख्याओं के स्थान पर वर्तमान में व्यवहार को परिवर्तित करने और नवीन सकारात्मक प्रतिरूप विकसित करने पर केंद्रित रहता है।

118. (B) एक निरंतर और दखल देने वाला डर कि हाथ संक्रमित हैं।
बाध्यकारी विचार एक ऐसा मानसिक अनुभव है जहाँ कोई अवांछित विचार या भय व्यक्ति के मस्तिष्क में बार-बार आता है और उसे बहुत व्यथित करता है। हाथों के संक्रमित होने का निरंतर भय इसी का एक उदाहरण है। व्यक्ति इस विचार को निष्कासित करना चाहता है, परंतु वह बार-बार लौट आता है और तीव्र चिंता उत्पन्न करता है। इसके विपरीत, हस्त प्रक्षालन या वस्तुओं को सुव्यवस्थित करना उस विचार के प्रत्युत्तर में की जाने वाली क्रियाएं हैं, जो व्यवहार की श्रेणी में आती हैं।

119. (D) अनम्य और व्यापक हो
व्यक्तित्व विकार का निदान तभी संभव है जब व्यवहार का वह प्रतिरूप व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्थायी अंग बन चुका हो। यह व्यवहार न केवल कठोर और अपरिवर्तनीय होना चाहिए, अपितु यह व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पक्ष, जैसे उसके संबंधों, कार्य और सोचने के तरीके को प्रभावित करना चाहिए। यह किसी अस्थायी तनाव या व्याधि के कारण नहीं होता, बल्कि एक दीर्घकालिक स्थिति है। इसी व्यापकता और अनम्यता के कारण यह व्यक्ति की सामान्य कार्यक्षमता में गंभीर बाधा उत्पन्न करता है।

120. (A) स्वीकृति, समानुभूति और वास्तविकता का वातावरण बनाना।
सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में चिकित्सक की भूमिका किसी विशेषज्ञ की नहीं होती जो परामर्श प्रदान करे। इसके स्थान पर, उसकी मुख्य उत्तरदायित्व एक ऐसा सुरक्षित मनोवैज्ञानिक वातावरण प्रदान करना है जहाँ सेवार्थी बिना किसी निर्णय के भय के अपनी बात कह सके। जब चिकित्सक पूर्ण स्वीकृति, गहरी समानुभूति और प्रामाणिकता प्रदर्शित करता है, तो सेवार्थी स्वयं को बेहतर समझने लगता है। यही सुरक्षित वातावरण सेवार्थी के भीतर दबे हुए सकारात्मक गुणों को जागृत करने में सर्वाधिक सहायक होता है।

121. (C) व्यापक अविश्वास और संदेह।
व्यामोह की सर्वाधिक प्रमुख पहचान दूसरों के प्रति गहरा और अनुचित संदेह है। इस स्थिति में व्यक्ति को आभास होता है कि अन्य लोग उसे धोखा दे रहे हैं, उसे क्षति पहुँचाना चाहते हैं या उसकी जासूसी कर रहे हैं। वे प्रायः निर्दोष टिप्पणियों में भी छिपे हुए अपमान या संकट को खोज लेते हैं। यह अविश्वास केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं होता, अपितु उनके लगभग समस्त संबंधों और सामाजिक अंतःक्रियाओं में व्याप्त होता है, जिससे वे सदैव सतर्क और रक्षात्मक मुद्रा में रहते हैं।

122. (A) निवर्तन
निवर्तन उन विशिष्ट और कष्टदायक शारीरिक एवं मानसिक प्रतिक्रियाओं को संदर्भित करता है जो तब होती हैं जब कोई व्यक्ति उस पदार्थ का सेवन बंद कर देता है जिस पर वह निर्भर हो चुका है। इन लक्षणों में कंपन, मतिभ्रम, तीव्र चिंता या अत्यधिक पसीना आना सम्मिलित हो सकते हैं। ये लक्षण स्पष्ट संकेत हैं कि शरीर ने उस पदार्थ के अभाव में सामान्य कार्य करना बंद कर दिया है। इसी पीड़ा से बचने हेतु व्यक्ति प्रायः पुनः नशा करने लगता है, जो व्यसन का एक दुष्चक्र है।

123. (D) अचेतन द्वंद्वों की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति।
मनोगत्यात्मक मॉडल के अनुसार मनोवैज्ञानिक लक्षण केवल बाह्य व्यवहार नहीं हैं, अपितु वे हमारे अचेतन मन में चल रहे गहरे संघर्षों का संकेत हैं। फ्रायड का मानना था कि जब बचपन के अनसुलझे द्वंद्व या दमित इच्छाएं चेतना में आने का प्रयास करती हैं, तो वे लक्षणों के रूप में प्रकट होती हैं। ये लक्षण एक प्रकार की प्रतीकात्मक भाषा हैं जिन्हें समझने हेतु अचेतन मन की गहराई में जाना आवश्यक है। उपचार का उद्देश्य इन छिपे हुए अर्थों को समझना और द्वंद्वों को सुलझाना है।

124. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बौद्धिक अक्षमता के निदान हेतु केवल बुद्धि-लब्धि स्कोर का न्यून होना पर्याप्त नहीं है। इसके साथ ही यह भी प्रेक्षित किया जाता है कि क्या व्यक्ति अपने दैनिक जीवन की सामाजिक और व्यावहारिक जिम्मेदारियों को पूर्ण कर पा रहा है। यदि किसी व्यक्ति की बुद्धि-लब्धि न्यून है परंतु वह समाज में भली-भाँति घुल-मिल रहा है और अपना कार्य स्वयं कर सकता है, तो उसे बौद्धिक रूप से अक्षम नहीं माना जाएगा। अतः, अनुकूलन व्यवहार का मूल्यांकन बुद्धि-लब्धि के परिणामों की पुष्टि हेतु आवश्यक है।

125. (C) भावनात्मक अनुभव
मनोदशा विकारों की सर्वाधिक बड़ी पहचान व्यक्ति के भावनात्मक अनुभवों में होने वाली गंभीर गड़बड़ियाँ हैं। जहाँ एक स्वस्थ व्यक्ति अपनी भावनाओं को संतुलित रख पाता है, वहीं इन विकारों से ग्रस्त व्यक्ति की भावनाएं या तो अत्यधिक निराशा और उदासी के चरम पर पहुँच जाती हैं, या फिर अत्यधिक उत्तेजना और ऊर्जा के शिखर पर। ये भावनात्मक उतार-चढ़ाव व्यक्ति के सोचने के ढंग और व्यवहार को पूर्णतः परिवर्तित कर देते हैं, जिससे उसका सामान्य जीवन अत्यंत कठिन और असंतुलित हो जाता है।

126. (D) संज्ञानात्मक चिकित्सा
संज्ञानात्मक चिकित्सा में चिकित्सक का मुख्य कार्य सेवार्थी को उसके उन स्वचालित और नकारात्मक विचारों के प्रति सजग करना है जो उसके मस्तिष्क में बिना विचारे उद्भूत होते हैं। ये विचार प्रायः यथार्थ से पृथक होते हैं और व्यक्ति को व्यथित करते हैं। चिकित्सक सेवार्थी को इन विचारों की वास्तविकता की जाँच करना सिखाता है कि क्या वास्तव में वे सत्य हैं। जब व्यक्ति अधिक तार्किक और यथार्थवादी ढंग से सोचना प्रारंभ करता है, तो उसके मानसिक कष्ट न्यून होने लगते हैं और आत्मविश्वास संवर्धित होता है।

127. (A) बार-बार और अप्रत्याशित पैनिक आक्रमण
सामान्यीकृत चिंता विकार और पैनिक विकार दो भिन्न स्थितियाँ हैं। पैनिक आक्रमण आकस्मिक होने वाले तीव्र भय के हमले हैं जो पैनिक विकार की मुख्य पहचान हैं। इसके विपरीत, सामान्यीकृत चिंता विकार में चिंता निरंतर बनी रहती है और विभिन्न दैनिक विषयों पर विस्तृत होती है। इसमें पैनिक हमले अनिवार्य नहीं हैं, बल्कि मांसपेशियों में खिंचाव, बेचैनी और एकाग्रता की कमी जैसे लक्षण प्रमुख होते हैं। यह एक पुरानी अवस्था है जिसमें व्यक्ति को शांत रहना और भविष्य के प्रति आशंकित न होना कठिन लगता है।

128. (B) नकारात्मक लक्षण
सिज़ोफ्रेनिया के ऋणात्मक लक्षण व्यक्ति के सामान्य व्यवहार और भावनाओं में आने वाली 'न्यूनता' को दर्शाते हैं। अत्यंत कम भावनात्मक हाव-भाव प्रदर्शित करना, वाक्-क्षमता न्यून हो जाना और किसी भी कार्य को प्रारंभ करने की प्रेरणा का अभाव इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। ये लक्षण व्यक्ति को पूर्णतः निष्क्रिय बना देते हैं और उसे समाज से पृथक कर देते हैं। उपचार के दृष्टिकोण से, ऋणात्मक लक्षणों का प्रबंधन करना

प्रायः धनात्मक लक्षणों की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि ये स्थायी हो सकते हैं।

129. (B) दूसरों के साथ संबंधों के संदर्भ में।
अंतर्वैयक्तिक मॉडल यह मानता है कि मनोवैज्ञानिक समस्याओं का मूल व्यक्ति के एकाकीपन या उसके भीतर नहीं, अपितु दूसरों के साथ उसके व्यवहार और संबंधों में होता है। यह मॉडल इस बात पर बल देता है कि कैसे संबंधों में तनाव, भ्रांतियाँ या त्रुटिपूर्ण संप्रेषण व्यक्ति के मानसिक कष्ट का कारण बनते हैं। उपचार के दौरान चिकित्सक व्यक्ति को बेहतर सामाजिक कौशल सिखाने और उसके महत्वपूर्ण संबंधों में चल रहे संघर्षों को सुलझाने में सहायता करता है ताकि उसका मानसिक स्वास्थ्य परिष्कृत हो सके।

130. (A) व्यवहारवादी
बायोफीडबैक तकनीक व्यवहारवादी सिद्धांतों पर आधारित है, विशेष रूप से क्रियाप्रसूत अनुकूलन पर। यह मानती है कि जिस प्रकार हम बाह्य व्यवहार सीखते हैं, उसी प्रकार हम अपनी आंतरिक शारीरिक प्रतिक्रियाओं को भी नियंत्रित करना सीख सकते हैं यदि हमें उचित प्रतिपुष्टि प्राप्त हो। जब व्यक्ति को अपनी हृदय गति या मांसपेशियों के तनाव के विषय में सूचना मिलती है, तो वह उसे न्यून करने का प्रयास करता है। सफलता प्राप्त होने पर उसे मानसिक राहत मिलती है, जो भविष्य में इस नियंत्रण हेतु सुदृढ़ीकरण का कार्य करती है।

131. (C) कष्ट, अक्षमता और विचलन के संयोजन द्वारा परिभाषित एक अवधारणा।
मनोविज्ञान में असामान्यता कोई सरल शब्द नहीं है, अपितु यह कई कारकों का सम्मिश्रण है। इसमें यह प्रेक्षित किया जाता है कि क्या व्यक्ति स्वयं पीड़ा में है, क्या उसका व्यवहार उसे समाज में सामान्य रूप से कार्य करने से अवरुद्ध कर रहा है, और क्या वह व्यवहार समाज के स्वीकृत मानदंडों से बहुत पृथक है। जब ये समस्त स्थितियाँ एक साथ उपस्थित होती हैं, तभी उसे नैदानिक रूप से असामान्य माना जाता है। यह परिभाषा व्यक्ति के संपूर्ण मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य को संतुलित दृष्टिकोण से देखती है।

132. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
विभिन्न मनोवैज्ञानिक विकारों की पहचान उनके प्रमुख लक्षणों से की जाती है। दीर्घकालिक और निरंतर चिंता सामान्यीकृत चिंता विकार का सूचक है। हस्तक्षेप करने वाले विचार और उन पर आधारित अनुष्ठान बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार को दर्शाते हैं। आकस्मिक और तीव्र भय के प्रकरण पैनिक विकार की पहचान हैं। अंत में, उन्माद और अव□□□ के मध्य निरंतर होने वाले परिवर्तन द्विध्रुवी मनोदशा विकार को स्पष्ट करते हैं। इन लक्षणों को समझना सटीक निदान और प्रभावी उपचार योजना हेतु अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

133. (D) I, II और III
विभिन्न मनोवैज्ञानिक चिकित्सा पद्धतियाँ विशिष्ट उद्देश्यों के साथ कार्य करती हैं। मनोविश्लेषण अचेतन मन की गहराइयों को समझने पर केंद्रित है। संज्ञानात्मक चिकित्सा का लक्ष्य सोचने के उन त्रुटिपूर्ण मार्गों को परिष्कृत करना है जो मानसिक कष्ट उत्पन्न करते हैं। सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा व्यक्ति को एक ऐसा सुरक्षित वातावरण प्रदान करती है जहाँ वह बिना किसी भय के विकसित हो सके। ये तीनों दृष्टिकोण आधुनिक नैदानिक मनोविज्ञान के स्तंभ हैं और रोगियों को कष्टों से मुक्ति दिलाने हेतु विविध तकनीकों का उपयोग करते हैं।

134. (B) सामान्यीकृत चिंता विकार
"मुक्त-प्रवाही चिंता" वह अवस्था है जहाँ व्यक्ति को बिना किसी विशिष्ट कारण या वस्तु के निरंतर भय और घबराहट अनुभव होती रहती है। यह चिंता किसी एक विषय तक सीमित नहीं होती, अपितु एक विषय से दूसरे विषय पर परिवर्तित होती रहती है, जिससे व्यक्ति सदैव तनावग्रस्त रहता है। यह सामान्यीकृत चिंता विकार की एक प्रमुख विशेषता है, जो इसे विशिष्ट दुर्भीति से पृथक बनाती है। इसमें व्यक्ति को शांति अनुभव करना लगभग असंभव प्रतीत होता है, जो उसके जीवन को कष्टकारी बनाता है।

135. (D) वर्तमान संबंधों की समस्याओं का समाधान।
अंतर्वैयक्तिक मनोचिकित्सा का मुख्य लक्ष्य व्यक्ति के वर्तमान जीवन और उसके महत्वपूर्ण रिश्तों में आने वाली बाधाओं को दूर करना है। यह चिकित्सा इस विश्वास पर आधारित है कि रिश्तों में सुधार आने से मानसिक लक्षणों में स्वतः ही कमी आती है। चिकित्सक सेवार्थी को संप्रेषण के बेहतर ढंग सिखाता है और उसे संबंधों के संघर्षों, भूमिका परिवर्तन या एकाकीपन जैसी समस्याओं का सामना करने में सहायता करता है। यह दृष्टिकोण व्यावहारिक है और व्यक्ति के सामाजिक सहयोग तंत्र को सुदृढ़ बनाने पर केंद्रित है।

136. (A) सहिष्णुता; निवर्तन
मादक पदार्थों के नियमित सेवन से शरीर में दो महत्वपूर्ण स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। सहिष्णुता का अर्थ है कि शरीर अब पदार्थ का अभ्यस्त हो गया है और वही पूर्व प्रभाव प्राप्त करने हेतु व्यक्ति को उसकी अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत, निवर्तन वे नकारात्मक और कष्टदायक लक्षण हैं जो तब होते हैं जब व्यक्ति आकस्मिक रूप से पदार्थ का सेवन बंद कर देता है। ये दोनों स्थितियाँ स्पष्ट रूप से इंगित करती हैं कि व्यक्ति अब पूर्णतः उस पदार्थ पर निर्भर हो चुका है।

137. (C) वाणी की अल्पता
सिज़ोफ्रेनिया के लक्षणों में धनात्मक लक्षण वे हैं जो सामान्य व्यवहार में कुछ जोड़ते हैं, जैसे विभ्रम। ऋणात्मक लक्षण वे हैं जो सामान्य व्यवहार में 'कमी' को दर्शाते हैं। वाणी की अल्पता एक ऋणात्मक लक्षण है जहाँ व्यक्ति बहुत कम संवाद करता है और उसके पास अभिव्यक्ति हेतु विचारों या शब्दों का अभाव होता है। इसके विपरीत, व्यामोह, विभ्रम और अव्यवस्थित व्यवहार धनात्मक श्रेणी में आते हैं क्योंकि वे सक्रिय मानसिक विक्षोभ के प्रकट रूप हैं जो सामान्यतः नहीं होने चाहिए।

138. (A) शारीरिक
बायोफीडबैक तकनीक इस सिद्धांत पर कार्य करती है कि यदि व्यक्ति को उसकी आंतरिक शारीरिक गतिविधियों की

सेवार्थी को निर्भय होकर आत्म-अन्वेषण करने और व्यक्तिगत विकास की दिशा में बढ़ने में सहायक होता है।

100. (D) उपचारात्मक संबंध में प्रामाणिक, खुला और पारदर्शी होना।
सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में अनुरुपता या वास्तविकता का अर्थ है कि चिकित्सक उपचार के दौरान पूर्णतः निष्कपट और पारदर्शी रहता है। वह कोई कृत्रिम मुखौटा धारण नहीं करता, बल्कि अपनी वास्तविक भावनाओं और विचारों को सेवार्थी के साथ आवश्यकतानुसार साझा करता है। यह प्रामाणिकता सेवार्थी को यह अनुभव कराने में सहायक होती है कि वह एक वास्तविक मनुष्य से संवाद कर रहा है, जिससे परस्पर विश्वास और प्रभावी उपचारात्मक गठबंधन विकसित होना संभव हो जाता है।

101. (C) एक व्यक्ति जिसका मकड़ियों का अत्यधिक डर उसे अपना घर छोड़ने से रोकता है।
कुअनुकूलक व्यवहार वह है जो व्यक्ति की सामान्य कार्यक्षमता में बाधा डालता है और उसे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने से रोकता है। मकड़ियों का इतना अधिक भय कि व्यक्ति भवन से बाहर ही न निकल पाए, उसके दैनिक जीवन, सामाजिक मेलजोल और कार्य को गंभीर रुप से बाधित करता है। यह व्यवहार स्थिति के अनुकूल नहीं है और व्यक्ति हेतु हानिकारक है। अतः, यह असामान्यता के मानदंडों में कुअनुकूलन का एक बहुत ही स्पष्ट और नैदानिक रुप से महत्वपूर्ण उदाहरण है।

102. (B) प्रेरणा और लक्ष्य-निर्देशित गतिविधि की कमी।
इच्छाशक्ति की कमी सिज़ोफ्रेनिया का एक गंभीर ऋणात्मक लक्षण है। इसमें व्यक्ति में किसी भी कार्य को प्रारंभ करने या उसे पूर्ण करने की इच्छा और ऊर्जा पूर्णतः समाप्त हो जाती है। वे दीर्घ काल तक बिना कुछ किए बैठे रह सकते हैं और बुनियादी दैनिक कार्यों, जैसे स्नान या भोजन निर्माण, में भी उनकी कोई अभिरुचि नहीं रहती। यह स्थिति रोगी को पूर्णतः निष्क्रिय बना देती है और उसके स्वतंत्र रुप से जीवन यापन की क्षमता को अत्यधिक न्यून कर देती है।

103. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार में व्यक्ति को बार-बार ऐसे विचार आते हैं जो उसे डराते हैं, जिससे उसकी चिंता संवर्धित हो जाती है। इस असहनीय मानसिक तनाव से बचने हेतु, वह कुछ व्यवहारों को बार-बार दोहराने लगता है, जिन्हें बाध्यकारी क्रियाएं कहा जाता है। उदाहरण के लिए, गैस खुली रहने का विचार चिंता उत्पन्न करता है, और उसे बार-बार जाँचना उस चिंता को न्यून करता है। यह चक्र ही इस मानसिक विकार की बुनियादी संरचना और कार्यप्रणाली को परिभाषित करता है।

104. (A) गर्भावस्था के दौरान माता का रुबेला से संक्रमित होना
प्रसवपूर्व कारण वे होते हैं जो शिशु के जन्म से पूर्व, अर्थात् गर्भावस्था के दौरान प्रभावी होते हैं। यदि गर्भवती माता रुबेला जैसे संक्रमण से ग्रसित होती है, तो यह गर्भस्थ शिशु के मस्तिष्क विकास को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है, जिससे जन्म के पश्चात बौद्धिक अक्षमता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अन्य विकल्प जैसे बचपन की चोट या वयस्कता की बीमारियाँ प्रसव के पश्चात के कारक हैं। अतः, गर्भावस्था के दौरान माता का स्वास्थ्य शिशु के विकास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

105. (C) स्थितियों के दौरान व्यापक और स्थायी गुणवत्ता।
व्यक्तित्व विकारों को अन्य मानसिक विकारों से पृथक करने वाली मुख्य विशेषता उनकी स्थिरता और व्यापकता है। जहाँ अन्य विकार समय-समय पर आते-जाते रहते हैं, वहीं व्यक्तित्व विकार के लक्षण व्यक्ति के स्वभाव में रचे-बसे होते हैं और विभिन्न स्थितियों में निरंतर बने रहते हैं। ये व्यवहार के कठोर प्रतिरुप हैं जो जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करते हैं। इसी दीर्घकालिक और अनम्य प्रकृति के कारण इनका उपचार करना अन्य सामान्य नैदानिक विकारों की तुलना में अधिक जटिल होता है।

106. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों की अपनी विशेष तकनीकें होती हैं। व्यवहारवादी चिकित्सा में दुर्भीति के उपचार हेतु व्यवस्थित विसंवेदीकरण का उपयोग होता है। मनोविश्लेषण अचेतन सामग्री को समझने हेतु स्वप्न विश्लेषण पर निर्भर करता है। संज्ञानात्मक चिकित्सा में रोगी के विश्वासों को परखने हेतु सुकराती पूछताछ का प्रयोग किया जाता है। सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में चिकित्सक सेवार्थी की भावनाओं को समझने हेतु समानुभूतिपूर्ण प्रतिबिंब का उपयोग करता है। ये तकनीकें उन मॉडलों के मूल सिद्धांतों को दर्शाती हैं।

107. (D) यह प्रक्षेपण की रक्षा तंत्र का परिणाम है, जहाँ व्यक्ति अपने स्वयं के अस्वीकार्य आवेगों का श्रेय दूसरों को देता है।
मनोगत्यात्मक दृष्टिकोण के अनुसार व्यामोह का मूल कारण प्रक्षेपण नामक रक्षा तंत्र है। इसमें व्यक्ति अपने स्वयं के भीतर के उन विचारों या भावनाओं को स्वीकार नहीं कर पाता जो उसे अनुचित प्रतीत होते हैं। इसके स्थान पर, वह अचेतन रुप से यह मानने लगता है कि अन्य व्यक्ति उसके विषय में वैसा ही सोच रहे हैं या उसे क्षति पहुँचाना चाहते हैं। इस प्रकार, आंतरिक संघर्ष बाह्य संकट के रूप में अनुभव होता है, जिससे व्यापक अविश्वास और संदेह की भावना जन्म लेती है।

108. (B) शारीरिक निर्भरता
शारीरिक निर्भरता वह अवस्था है जहाँ व्यक्ति का शरीर किसी मादक पदार्थ के नियमित सेवन का अभ्यस्त हो चुका होता है। जब पदार्थ का सेवन बंद किया जाता है, तो शरीर सामान्य रुप से कार्य नहीं कर पाता और निवर्तन के लक्षण, जैसे कंपन, पसीना आना या बेचैनी, उद्भूत होते हैं। ये लक्षण स्पष्ट करते हैं कि शरीर को अब कार्य करने हेतु उस पदार्थ की निरंतर उपस्थिति की आवश्यकता है। यह निर्भरता केवल मानसिक इच्छा नहीं, अपितु एक जटिल जैविक प्रतिक्रिया है।

109. (C) सिज़ोफ्रेनिया
सिज़ोफ्रेनिया एक गंभीर मनोविक्षिप्ति विकार है, न कि चिंता विकार। चिंता विकारों में मुख्य लक्षण अत्यधिक भय और आशंका होते हैं, जैसा कि पैनिक विकार या सामान्यीकृत चिंता विकार में देखा जाता है। सिज़ोफ्रेनिया में प्राथमिक

को समझना और उन्हें पार करना ही चिकित्सा की सफलता का आधार है।

148. (D) शांति और शिथिलन में धीरे-धीरे वृद्धि
पैनिक आक्रमण की पहचान आकस्मिक आने वाले तीव्र और अनियंत्रित भय से होती है, न कि शांति से। इसके लक्षणों में हृदय गति का तीव्र होना, पसीना आना, शिरोभ्रम और ऐसा आभास होना सम्मिलित है जैसे व्यक्ति मृत्यु के निकट है या उसका श्वास अवरुद्ध हो रहा है। यह अनुभव अत्यंत भयावह और शारीरिक रूप से क्लांत कर देने वाला होता है। शांति और शिथिलन का संवर्धित होना पैनिक आक्रमण के पूर्णतः विपरीत स्थिति है। पैनिक हमले के दौरान शरीर अत्यधिक उत्तेजना और तनाव की अवस्था में होता है।

149. (C) मनोवैज्ञानिक कल्याण संबंधों की गुणवत्ता से जुड़ा होता है।
अंतर्वैयक्तिक मॉडल का मूल विचार यह है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसका मानसिक स्वास्थ्य पर्याप्त सीमा तक उसके दूसरों के साथ व्यवहार और जुड़ाव पर निर्भर करता है। जब रिश्तों में स्नेह, विश्वास और मुक्त संप्रेषण होता है, तो व्यक्ति स्वस्थ अनुभव करता है। इसके विपरीत, रिश्तों के संघर्ष, एकाकीपन और सामाजिक पृथक्करण ही अधिकांश मानसिक विकारों को जन्म देते हैं। अतः, यह मॉडल व्यक्ति के अंतस में झाँकने के स्थान पर उसके परिवेश के सामाजिक तंत्र को परिष्कृत करने पर सर्वाधिक बल देता है।

150. (B) भव्यता का व्यामोह
भव्यता का व्यामोह एक ऐसी स्थिति है जहाँ व्यक्ति को यह दृढ़ विश्वास होता है कि वह असाधारण रूप से महत्वपूर्ण, शक्तिशाली, धनवान या कोई अत्यंत उच्च हस्ती है। वह मान सकता है कि उसके पास विशेष ईश्वरीय शक्तियाँ हैं। यह विश्वास इतना सुदृढ़ होता है कि कोई भी तर्क या प्रमाण इसे परिवर्तित नहीं कर सकता। यह लक्षण प्रायः सिज़ोफ्रेनिया या द्विध्रुवी विकार के उन्मादी प्रकरणों में प्रेक्षित किया जाता है। यह व्यक्ति की वास्तविकता के साथ खंडित संबंध का एक स्पष्ट और नैदानिक संकेत माना जाता है।

151. (D) मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा: इस बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करना कि बचपन के अनुभव वर्तमान व्यवहार को कैसे आकार देते हैं।
मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा का मूल आधार यह है कि हमारे वर्तमान व्यवहार और भावनात्मक समस्याओं के मूल कारण हमारे प्रारंभिक बचपन के अनुभवों और अचेतन मन में निहित होते हैं। चिकित्सा का प्राथमिक लक्ष्य इन प्रच्छन्न प्रतिरूपों के विषय में गहरी समझ या अंतर्दृष्टि प्राप्त करना है। जब सेवार्थी यह जान लेता है कि उसके अतीत के संबंधों ने उसके वर्तमान को कैसे प्रभावित किया है, तो वह अस्वस्थ व्यवहारों का त्याग करने और बेहतर मानसिक स्वास्थ्य की दिशा में अग्रसर होने में सक्षम होता है।

152. (A) पदार्थ के प्रति शरीर का अनुकूलन, जिससे वांछित प्रभाव के लिए इसकी अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है।
सहिष्णुता पदार्थ निर्भरता की एक मुख्य विशेषता है जहाँ शरीर मादक पदार्थ की उपस्थिति का अभ्यस्त हो जाता है। इसका अर्थ यह है कि पदार्थ की वह मात्रा जो पूर्व में नशा या उत्साह उत्पन्न करती थी, अब वैसा प्रभाव नहीं डाल पाती। परिणामस्वरूप, व्यक्ति उसी मानसिक या शारीरिक अवस्था तक पहुँचने हेतु पदार्थ की मात्रा संवर्धित करने हेतु विवश हो जाता है। यह बढ़ती हुई खुराक स्वास्थ्य हेतु अत्यंत संकटपूर्ण होती है और अंततः व्यक्ति को व्यसन के गहरे गर्त में धकेल देती है।

153. (C) अत्यधिक, व्यापक और नियंत्रित करने में कठिन होती है।
सामान्यीकृत चिंता विकार में चिंता किसी एक विशेष घटना तक सीमित नहीं रहती, अपितु जीवन के प्रत्येक लघु-वृहद पक्ष को अपनी चपेट में ले लेती है। व्यक्ति प्रायः क्षुद्र बातों पर घंटों चिंता करता है और उसे ज्ञात होता है कि यह चिंता निरर्थक है, फिर भी वह इसे अवरुद्ध नहीं कर पाता। यह चिंता उसे शारीरिक रुप से क्लांत कर देती है और उसकी एकाग्रता को विनष्ट कर देती है। यह निरंतर बनी रहने वाली मानसिक बेचैनी ही इस विकार को अन्य अस्थायी चिंता प्रकरणों से पृथक बनाती है।

154. (A) P-4, Q-1, R-3, S-2
विभिन्न मनोवैज्ञानिक संकल्पनाएँ विशिष्ट नैदानिक मॉडलों से संबद्ध हैं। बिना शर्त सकारात्मक सम्मान कार्ल रोजर्स की सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा का आधार है। अनुकूलित प्रतिक्रिया व्यवहारवाद का मुख्य सिद्धांत है, जो अधिगम पर केंद्रित है। स्वचालित नकारात्मक विचार संज्ञानात्मक मॉडल की पहचान हैं, जो हमारे कष्ट हेतु हमारी सोच को उत्तरदायी मानता है। स्थानांतरण मनोविश्लेषण की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जहाँ पुराने संबंधों की भावनाएं चिकित्सक पर आरोपित होती हैं। ये संकल्पनाएँ विकारों को समझने के भिन्न मार्ग प्रदान करती हैं।

155. (D) यह अनुभव और व्यवहार का एक स्थायी प्रतिरुप है जो मानदंडों से विचलित होता है।
व्यक्तित्व विकार की सर्वाधिक प्रमुख परिभाषा यह है कि यह व्यक्ति के भीतर का एक ऐसा स्थायी और कठोर प्रतिरुप है जो सांस्कृतिक अपेक्षाओं से अत्यंत भिन्न होता है। यह व्यवहार किशोरावस्था से ही स्थिर हो जाता है और विभिन्न परिस्थितियों में परिवर्तित नहीं होता। इसके कारण व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। यह किसी बाह्य आघात या औषधियों का अस्थायी प्रभाव नहीं है, अपितु व्यक्ति के व्यक्तित्व की एक दीर्घकालिक और समस्यामूलक संरचना है।

156. (B) सिगमंड फ्रायड
मनोगत्यात्मक मॉडल का विकास सिगमंड फ्रायड के क्रांतिकारी विचारों से हुआ था। उन्होंने यह प्रस्तावित किया कि मानव व्यवहार का एक वृहद भाग हमारे अचेतन मन द्वारा नियंत्रित होता है, जहाँ हमारी दमित इच्छाएं और बचपन के अनुभव संचित रहते हैं। फ्रायड ने ही मनोविश्लेषण की नींव रखी, जो अचेतन द्वंद्वों को समझने और सुलझाने पर बल देती है। उनके इस मॉडल ने न केवल नैदानिक मनोविज्ञान अपितु

सटीक सूचना प्राप्त हो, तो वह उन्हें नियंत्रित कर सकता है। इसमें मांसपेशियों के तनाव, हृदय गति और शरीर के तापमान जैसी प्रक्रियाओं को इलेक्ट्रॉनिक रूप से मापा जाता है। जब व्यक्ति इन परिवर्तनों को तात्कालिक रूप से देखता है, तो वह मानसिक तकनीकों के माध्यम से इन्हें शांत करना सीखता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को शारीरिक उत्तेजना और चिंता के लक्षणों पर स्वैच्छिक नियंत्रण प्रदान करने में प्रभावी सिद्ध होती है।

139. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में चिकित्सक का मूल विश्वास यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के पास स्वयं को समझने और परिष्कृत करने की आंतरिक शक्ति होती है। अतः, चिकित्सक सेवार्थी के व्यवहार की अपनी ओर से कोई व्याख्या प्रदान नहीं करता, क्योंकि ऐसा करना सेवार्थी की स्वायत्तता को न्यून कर सकता है। वह केवल एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है जो सेवार्थी को उसके अपने उत्तर खोजने में सहायता करता है। इस दृष्टिकोण में सेवार्थी को अपने जीवन का सर्वाधिक बड़ा विशेषज्ञ माना जाता है।

140. (B) सीमावर्ती व्यक्तित्व विकार
सीमावर्ती व्यक्तित्व विकार की मुख्य पहचान भावनाओं, आत्म-छवि और अंतर्वैयक्तिक संबंधों में अत्यधिक अस्थिरता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः तीव्र क्रोध, उदासी और चिंता के दौर से गुजरते हैं जो कतिपय घंटों से लेकर दिनों तक रह सकते हैं। उनके संबंधों में 'पूर्णतः श्रेष्ठ' या 'पूर्णतः निकृष्ट' देखने की प्रवृत्ति होती है, जिससे रिश्ते बहुत तनावपूर्ण रहते हैं। इसके अतिरिक्त, उनमें आवेगी व्यवहार, जैसे अत्यधिक व्यय करना या संकट मोल लेना, भी बहुत स्पष्ट रूप से देखा जाता है, जो चिंता का विषय है।

141. (C) कुछ सांख्यिकीय रूप से दुर्लभ व्यवहार वांछनीय होते हैं, जैसे कि उच्च बुद्धिमत्ता।
सांख्यिकीय विचलन का मानदंड असामान्यता को परिभाषित करने हेतु अपर्याप्त है क्योंकि यह केवल दुर्लभता पर ध्यान केंद्रित करता है। यद्यपि मानसिक विकार सांख्यिकीय रूप से विरल होते हैं, परंतु कई सकारात्मक गुण भी दुर्लभ होते हैं, जैसे उच्च रचनात्मकता या असाधारण बुद्धिमत्ता। सांख्यिकीय दृष्टि से ये भी औसत से उतने ही दूर हैं जितने मानसिक विकार। अतः केवल दुर्लभ होने का तात्पर्य यह नहीं है कि कोई व्यवहार नैदानिक रूप से असामान्य या अवांछनीय है। इसे अन्य मानवीय और कार्यात्मक मानदंडों के साथ जोड़ना आवश्यक है।

142. (D) गंभीरता और अक्षमता का स्तर।
उन्मादी और अल्प-उन्मादी प्रकरणों के लक्षण प्रायः समान होते हैं, जैसे ऊर्जा में वृद्धि और वाचालता। हालाँकि, उन्माद अत्यंत अधिक गंभीर होता है और प्रायः व्यक्ति की सामाजिक एवं व्यावसायिक कार्यक्षमता को पूर्णतः बाधित कर देता है, यहाँ तक कि चिकित्सालय में भर्ती होने की आवश्यकता पड़ सकती है। इसके विपरीत, अल्प-उन्माद में लक्षण स्पष्ट तो होते हैं परंतु वे इतने तीव्र नहीं होते कि व्यक्ति का सामान्य कार्य पूर्णतः अवरुद्ध हो जाए। उन्माद में कभी-कभी यथार्थ से अलगाव के लक्षण भी देखे जा सकते हैं।

143. (A) व्यवहारवादी
व्यवहारवादी मॉडल यह मानता है कि दुर्भीति किसी कष्टदायक घटना के दौरान होने वाले नकारात्मक अधिगम का परिणाम है। यह शास्त्रीय अनुकूलन के माध्यम से होता है, जहाँ एक सामान्य वस्तु किसी भयावह अनुभव के साथ संबद्ध हो जाती है और पश्चात में वह वस्तु स्वयं ही भय उत्पन्न करने लगती है। यह मॉडल मानता है कि जिस प्रकार भय सीखा गया है, उसे व्यवहार चिकित्सा की तकनीकों द्वारा विस्मृत भी किया जा सकता है। इसमें अचेतन मन के स्थान पर केवल बाह्य उत्तेजना और प्रतिक्रिया पर ध्यान दिया जाता है।

144. (B) 1, 2, 3, 4
संज्ञानात्मक मॉडल के अनुसार पैनिक आक्रमण एक निश्चित क्रम में विकसित होता है। सर्वप्रथम व्यक्ति अपने शरीर में किसी सामान्य परिवर्तन या संवेदना को अनुभव करता है। इसके पश्चात, वह इस संवेदना की विनाशकारी त्रुटिपूर्ण व्याख्या करता है, जैसे यह विचार करना कि उसकी मृत्यु होने वाली है। इस भय से शारीरिक लक्षण और संवर्धित हो जाते हैं, जिससे चिंता का स्तर अत्यंत उच्च हो जाता है। अंत में, व्यक्ति को पूर्णतः नियंत्रण खोने या किसी बड़ी आपदा के आगमन का तीव्र आभास होता है।

145. (B) 18
बौद्धिक अक्षमता के नैदानिक मानदंडों के अनुसार, इन कमियों का प्रादुर्भाव व्यक्ति की विकासात्मक अवधि के दौरान होना चाहिए। इस अवधि को सामान्यतः 18 वर्ष की आयु से पूर्व परिभाषित किया गया है। इसका महत्व यह है कि यह स्थिति मस्तिष्क के प्रारंभिक विकास के दौरान हुई समस्याओं से संबद्ध होती है, न कि वयस्कता में किसी चोट या व्याधि के कारण होने वाली गिरावट से। 18 वर्ष की यह सीमा बौद्धिक अक्षमता को अन्य संज्ञानात्मक विकारों, जैसे डिमेंशिया, से पृथक करने में सहायता करती है।

146. (A) विचार सामग्री; प्रत्यक्ष ज्ञान
व्यामोह और विभ्रम दो पृथक मानसिक प्रक्रियाएं हैं। व्यामोह विचार सामग्री का विक्षोभ है, जहाँ व्यक्ति को साक्ष्यों के अभाव में भी किसी त्रुटिपूर्ण तथ्य पर दृढ़ विश्वास होता है। इसके विपरीत, विभ्रम प्रत्यक्ष ज्ञान या बोध का विक्षोभ है, जहाँ व्यक्ति को बिना किसी बाह्य वस्तु के संवेदी अनुभव होते हैं, जैसे ध्वनियाँ सुनना। सरल शब्दों में, व्यामोह सोचने की त्रुटि है और विभ्रम अनुभव करने या देखने की त्रुटि है। ये दोनों ही यथार्थ से गहरे अलगाव के महत्वपूर्ण संकेत माने जाते हैं।

147. (C) कुछ पीड़ादायक सामग्री का सामना करने से बचने के लिए एक अचेतन रक्षा तंत्र।
मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा में प्रतिरोध एक अत्यंत महत्वपूर्ण संकल्पना है। जब सेवार्थी चिकित्सा के दौरान अचानक मौन हो जाता है, विषय परिवर्तित कर देता है या सत्र में उपस्थित होने से बचता है, तो इसे प्रतिरोध माना जाता है। चिकित्सक के अनुसार, यह सेवार्थी के अचेतन मन का एक प्रयास है ताकि वह उन कष्टदायक स्मृतियों या अवांछित आवेगों को सचेत मन में आने से रोक सके जो उसके कष्ट का कारण हैं। इन प्रतिरोधों

166. (B) संज्ञानात्मक चिकित्सा
संज्ञानात्मक चिकित्सा में चिकित्सक सेवार्थी के विचारों की तार्किकता की जाँच हेतु वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाता है। "साक्ष्य क्या है?" या "अन्य विकल्प क्या है?" जैसे प्रश्न सेवार्थी को अपने नकारात्मक और स्वचालित विचारों को चुनौती देने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। इस तकनीक का उद्देश्य सेवार्थी को यह सिखाना है कि वह अपने पूर्वाग्रहों को पहचाने और अधिक संतुलित एवं यथार्थवादी सोच विकसित करे। जब सोच परिवर्तित होती है, तो उसके साथ जुड़े कष्टदायक भावनात्मक अनुभव और अस्वस्थ व्यवहार भी न्यून होने लगते हैं।

167. (B) पैरानॉयड व्यक्तित्व विकार
पैरानॉयड व्यक्तित्व विकार की मुख्य पहचान दूसरों के प्रति व्यापक और निराधार अविश्वास है। ऐसे व्यक्ति सदैव सतर्क रहते हैं और उन्हें आभास होता है कि अन्य लोग उन्हें क्षति पहुँचाने या अपमानित करने का प्रयास कर रहे हैं। वे सामान्य बातों में भी दुर्भावनापूर्ण अर्थ निकाल लेते हैं और दीर्घ काल तक मनमुटाव रखते हैं। उनकी यह शंका उनके व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों को पूर्णतः विषाक्त कर देती है, जिससे वे दूसरों के साथ कभी भी घनिष्ठता या विश्वासपूर्ण रिश्ता नहीं बना पाते, जो अत्यंत पीड़ादायक है।

168. (A) एक विकार जो भावनाओं में महत्वपूर्ण विक्षोभ की विशेषता है।
मनोदशा विकार मानसिक स्थितियों का वह समूह है जहाँ व्यक्ति की भावनात्मक अवस्था उसके सामान्य दायरे से बाहर और अनियंत्रित हो जाती है। इसमें व्यक्ति या तो हफ्तों तक गहरी उदासी और ऊर्जा के अभाव का अनुभव करता है, जैसा कि अवसाद में होता है, या फिर वह अत्यधिक ऊर्जा, उत्तेजना और जोखिमपूर्ण व्यवहार के दौर से गुजरता है, जैसा कि उन्माद में होता है। ये विकार व्यक्ति के संपूर्ण मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं और उसके दैनिक जीवन को असंतुलित बना देते हैं।

169. (C) 1, 2, 3
मनोविज्ञान और उसकी चिकित्सा पद्धतियों का विकास एक निश्चित कालक्रम में हुआ है। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में सिगमंड फ्रायड ने मनोविश्लेषण की नींव रखी, जिसने अचेतन मन को केंद्र में रखा। इसके कतिपय दशकों पश्चात व्यवहारवाद का उदय हुआ, जिसने केवल प्रेक्षणीय व्यवहार और अधिगम पर ध्यान केंद्रित किया। 1960 के दशक में संज्ञानात्मक क्रांति आई, जिसने हमारे विचारों और सूचना प्रसंस्करण की भूमिका को प्रमुख माना। यह विकास दर्शाता है कि कैसे हम मानव मस्तिष्क को समझने के विभिन्न स्तरों तक पहुँचे हैं।

170. (A) पिछले संबंध से उत्पन्न अनसुलझा शोक
बायोफीडबैक एक ऐसी तकनीक है जो मुख्य रूप से शरीर की जैविक प्रतिक्रियाओं, जैसे हृदय गति और मांसपेशियों के तनाव, को नियंत्रित करने पर ध्यान केंद्रित करती है। यह तनाव, अर्द्ध-शोष और उच्च रक्तचाप जैसी शारीरिक समस्याओं हेतु उत्कृष्ट है। हालाँकि, पिछले संबंधों के अनसुलझे शोक जैसे भावनात्मक और जटिल मनोवैज्ञानिक मुद्दों का समाधान करने हेतु यह पर्याप्त नहीं है। ऐसी समस्याओं हेतु मनोचिकित्सा के अन्य रूपों, जैसे परामर्श या मनोविश्लेषण, की आवश्यकता होती है जो भावनाओं और स्मृतियों पर कार्य कर सकें।

171. (D) एक माह
सिज़ोफ्रेनिया के निदान हेतु नैदानिक मानदंड यह मांग करते हैं कि सक्रिय-चरण के लक्षण, जैसे व्यामोह, विभ्रम या अव्यवस्थित भाषा, न्यूनतम एक माह की अवधि तक बने रहने चाहिए। इसके अतिरिक्त, विकार के कुछ संकेत न्यूनतम छह माह तक उपस्थित रहने चाहिए। यह समय सीमा यह सुनिश्चित करने हेतु महत्वपूर्ण है कि ये लक्षण किसी अस्थायी समस्या या अल्पकालिक तनाव की प्रतिक्रिया नहीं हैं। सटीक निदान हेतु इन लक्षणों की निरंतरता और गंभीरता का गहन अध्ययन अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

172. (A) केवल I
ओसीडी के संदर्भ में, बाध्यकारी विचार वह हस्तक्षेप करने वाली मानसिक छवि या विचार है जो व्यक्ति को अत्यधिक भयाक्रांत करता है। किसी दुर्घटना का बार-बार आने वाला चित्र इसी का एक स्पष्ट उदाहरण है। इसके विपरीत, दस तक गणना करना एक व्यवहारिक अनुष्ठान या बाध्यकारी क्रिया है जो उस भय को शांत करने हेतु की जाती है। यह विश्वास कि गणना करने से दुर्घटना अवरुद्ध हो जाएगी, उस क्रिया के पीछे का तर्कहीन आधार है। अतः, केवल वह अवांछित चित्र ही शुद्ध बाध्यकारी विचार की श्रेणी में आता है।

173. (C) सामाजिक कौशल
बौद्धिक अक्षमता के वर्गीकरण में अनुकूलन कार्यक्षमता का मूल्यांकन अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें यह प्रेक्षित किया जाता है कि व्यक्ति सामाजिक कौशलों, जैसे दूसरों के साथ संप्रेषण करना और सामाजिक नियमों को समझना, में कितना सक्षम है। इसके अतिरिक्त, बुनियादी दैनिक जीवन के कार्यों और व्यावहारिक कौशलों में उसकी दक्षता को भी मापा जाता है। ये कौशल यह निर्धारित करते हैं कि व्यक्ति समाज में कितनी अच्छी तरह घुल-मिल सकता है। कलात्मक या एथलेटिक कौशल इस नैदानिक वर्गीकरण का भाग नहीं हैं।

174. (B) व्यवहारवादी
व्यवहारवादी मॉडल पूर्णतः अधिगम के सिद्धांतों पर आधारित है। यह मॉडल मानसिक समस्याओं को भी सीखे हुए व्यवहारों के रुप में देखता है। इसमें 'शास्त्रीय अनुकूलन', जहाँ दो उत्तेजनाओं के मध्य संबंध निर्मित होता है, और 'क्रियाप्रसूत अनुकूलन', जहाँ व्यवहार परिणामों द्वारा प्रभावित होता है, जैसे शब्दों का व्यापक उपयोग किया जाता है। यह दृष्टिकोण केवल उस पक्ष पर ध्यान देता है जिसे प्रेक्षित और मापा जा सकता है, और यह मानता है कि नवीन अधिगम के माध्यम से किसी भी व्यवहार को परिवर्तित किया जा सकता है।

175. (D) ईगो-डिस्टोनिक, जिसका अर्थ है कि यह दखल देने वाला और तर्कहीन अनुभव होता है।
बाध्यकारी विचारों और सामान्य चिंताओं में मुख्य अंतर यह है कि बाध्यकारी विचार ईगो-डिस्टोनिक होते हैं। इसका अर्थ है

हैं। उपचार के दृष्टिकोण से, ऋणात्मक लक्षणों का प्रबंधन करना प्रायः धनात्मक लक्षणों की तुलना में अधिक जटिल होता है क्योंकि ये व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्थायी हिस्सा बन सकते हैं। अतः इनका समय पर और प्रभावी निदान उपचार हेतु अत्यंत आवश्यक है।

230. (A) अंतर्वैयक्तिक
नैदानिक मनोविज्ञान का अंतर्वैयक्तिक मॉडल हैरी स्टैक सुलिवन जैसे विचारकों द्वारा विकसित सिद्धांतों के साथ गहराई से संबद्ध है। यह मॉडल इस विचार पर केंद्रित है कि व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य और उसका व्यक्तित्व मुख्य रूप से दूसरों के साथ उसके सामाजिक अनुभवों और संबंधों द्वारा आकार ग्रहण करता है। यह आंतरिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के स्थान पर व्यक्ति के वर्तमान संबंधों और संप्रेषण के तरीकों को सर्वाधिक महत्व प्रदान करता है। यह मानता है कि स्वस्थ संबंधों के माध्यम से ही मनोवैज्ञानिक कल्याण प्राप्त किया जा सकता है।

231. (C) विभ्रम
विभ्रम एक ऐसी मानसिक अवस्था है जहाँ व्यक्ति को बिना किसी वास्तविक बाह्य उत्तेजना के कुछ अनुभव होता है। उदाहरण हेतु, ऐसी ध्वनियाँ सुनना जो अन्य व्यक्ति नहीं सुन सकते, या ऐसी वस्तुएं देखना जो वहां उपस्थित नहीं हैं। यह हमारी इंद्रियों और यथार्थ के मध्य के संपर्क के विच्छेदन को दर्शाता है। विभ्रम सिज़ोफ्रेनिया और कतिपय अन्य गंभीर मानसिक रोगों का एक प्रमुख लक्षण है। यह व्यामोह से भिन्न है क्योंकि यह सीधे तौर पर हमारी संवेदी धारणा को प्रभावित करता है और यथार्थ से व्यक्ति को दूर ले जाता है।

232. (D) बार-बार, अप्रत्याशित पैनिक आक्रमण और भविष्य के हमलों के बारे में चिंता।
पैनिक विकार की सर्वाधिक अनिवार्य पहचान केवल एक पैनिक हमला होना नहीं है, अपितु इन हमलों का बार-बार और बिना किसी पूर्व चेतावनी के होना है। इसके अतिरिक्त, व्यक्ति के मस्तिष्क में सदैव आगामी हमले को लेकर एक गहरा भय बना रहता है, जिसे 'प्रत्याशित चिंता' कहा जाता है। यह भय व्यक्ति के जीवन को इतना प्रभावित करता है कि वह उन स्थितियों या स्थानों से पलायन करने लगता है जहाँ उसे हमले होने की आशंका होती है। यह निरंतर बनी रहने वाली घबराहट ही इस विकार को अत्यंत कष्टदायक और पीड़ादायक बनाती है।

233. (B) व्यवहार विश्लेषण
सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में कार्ल रोजर्स ने तीन मुख्य उपचारात्मक स्थितियों को अनिवार्य बताया है: समानुभूति, अनुरूपता और बिना शर्त सकारात्मक सम्मान। ये स्थितियाँ एक सहायक वातावरण निर्मित करती हैं जहाँ सेवार्थी स्वयं को परिवर्तित कर सकता है। इसके विपरीत, 'व्यवहार विश्लेषण' व्यवहारवादी चिकित्सा की एक तकनीक है, जो केवल प्रेक्षणीय व्यवहार और उसके कारणों को मापने पर बल देती है। रोजर्स के दृष्टिकोण में किसी भी प्रकार का विश्लेषण या मूल्यांकन चिकित्सक द्वारा नहीं किया जाता, क्योंकि यह सेवार्थी की आत्म-खोज में बाधक है।

234. (C) किसी को पहले दो पेय में मादकता महसूस होती थी, लेकिन अब छह की आवश्यकता होती है।
सहिष्णुता पदार्थ निर्भरता की एक ऐसी अवस्था है जहाँ शरीर किसी मादक पदार्थ के प्रति अभ्यस्त हो जाता है। इसका अर्थ यह है कि पदार्थ की वही पूर्व मात्रा अब व्यक्ति पर वैसा प्रभाव नहीं डाल पाती जैसा पहले डालती थी। परिणामस्वरूप, वांछित नशा या मानसिक राहत प्राप्त करने हेतु व्यक्ति को उस पदार्थ की खुराक निरंतर संवर्धित करनी पड़ती है। यह बढ़ती हुई आवश्यकता व्यसन के चक्र को और सुदृढ़ करती है और व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य हेतु बहुत गंभीर संकट उत्पन्न करती है, जो अत्यंत चिंताजनक है।

235. (D) स्वचालित विचार और संज्ञानात्मक विकृतियां
संज्ञानात्मक चिकित्सा का मुख्य केंद्र व्यक्ति के उन 'स्वचालित विचारों' को पहचानना है जो किसी स्थिति में तत्क्षण और अनैच्छिक रूप से मस्तिष्क में उद्भूत होते हैं। ये विचार प्रायः संज्ञानात्मक विकृतियों, जैसे कि प्रत्येक स्थिति में केवल नकारात्मक पक्ष ही देखना, से प्रभावित होते हैं। चिकित्सक सेवार्थी को यह सिखाता है कि वह इन त्रुटिपूर्ण विचार प्रतिरूपों को कैसे चुनौती प्रदान करे और उन्हें अधिक यथार्थवादी एवं संतुलित विचारों से कैसे परिवर्तित करे। जब व्यक्ति अपनी सोच को परिष्कृत कर लेता है, तो कष्ट न्यून हो जाते हैं।

236. (A) मनोयौन विकास के प्रारंभिक चरणों में स्थिरीकरण।
मनोगत्यात्मक मॉडल के अनुसार व्यक्तित्व विकार तब विकसित होते हैं जब व्यक्ति बचपन के मनोयौन विकास के किसी विशेष चरण के द्वंद्वों को उचित रीति से सुलझा नहीं पाता। इसे 'स्थिरीकरण' कहा जाता है, जहाँ व्यक्ति की मानसिक ऊर्जा उसी अवस्था के संघर्षों में अवरुद्ध हो जाती है। ये अनसुलझे मुद्दे वयस्कता में चरित्र की कठोरता और व्यवहार के समस्यामूलक प्रतिरूपों के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। अतः, इस मॉडल में उपचार का उद्देश्य बचपन की इन जड़ों तक पहुँचकर उन्हें सुलझाना होता है ताकि व्यक्तित्व स्वस्थ हो सके।

237. (B) एक उन्मादी प्रकरण
उन्मादी प्रकरण ऊर्जा और उत्साह की एक ऐसी अवस्था है जो सामान्य से बहुत अधिक होती है। इसमें व्यक्ति को कई दिनों तक अत्यधिक हर्ष अनुभव होता है, वह अत्यंत वाचाल हो जाता है, और उसे निद्रा की आवश्यकता भी बहुत न्यून अनुभव होती है। उसका आत्मविश्वास इतना संवर्धित हो जाता है कि वह जोखिमपूर्ण और अविवेकपूर्ण निर्णय लेने लगता है। यह स्थिति व्यक्ति की सामाजिक और व्यावसायिक कार्यक्षमता को गंभीर रूप से बाधित कर सकती है। यह अवसाद के पूर्णतः विपरीत है और द्विध्रुवी विकार का मुख्य घटक है।

238. (C) उत्पीड़न या भव्य प्रकृति के व्यामोह।
सिज़ोफ्रेनिया के संदर्भ में व्यामोह का तात्पर्य उन दृढ़ और त्रुटिपूर्ण विश्वासों से है जहाँ व्यक्ति को आभास होता है कि कोई उसे प्रताड़ित कर रहा है या वह कोई अत्यंत उच्च हस्ती है। ये विश्वास बाह्य यथार्थ या साक्ष्यों के पूर्णतः विपरीत होने पर भी परिवर्तित नहीं होते। पैरानॉयड सिज़ोफ्रेनिया में ये व्यामोह

प्रक्षालन, बार-बार करने लगता है। हालाँकि ये क्रियाएं वास्तव में समस्या का स्थायी समाधान नहीं करतीं, परंतु वे व्यक्ति को तत्क्षण मानसिक राहत का अनुभव कराती हैं। इसी राहत की लालसा में व्यक्ति इन अनुष्ठानों का दास बन जाता है।

185. (A) कायिक चिंताएं
कायिक चिंताओं से संबंधित व्यामोह में व्यक्ति को यह दृढ़ विश्वास होता है कि उसके शरीर में कुछ बहुत बड़ी विकृति है या उसे कोई भयानक व्याधि है। यद्यपि चिकित्सा रिपोर्टें और चिकित्सक उसे आश्वस्त करते हैं कि वह स्वस्थ है, फिर भी वह उनकी बात स्वीकार नहीं करता। वह अपना अधिकांश समय और ऊर्जा अपने लक्षणों की जाँच करने और चिकित्सकों के परामर्श लेने में व्यय कर देता है। यह स्थिति सामान्य चिंता से कहीं अधिक गंभीर है क्योंकि यह पूर्णतः यथार्थ से पृथक त्रुटिपूर्ण विश्वास पर आधारित है।

186. (B) प्रसव के दौरान ऑक्सीजन की कमी
प्रसवकालीन कारण वे होते हैं जो जन्म की प्रक्रिया के दौरान घटित होते हैं। यदि जन्म के समय किसी जटिलता के कारण शिशु के मस्तिष्क को पर्याप्त प्राणवायु प्राप्त नहीं हो पाती, तो इसे 'हाइपोक्सिया' कहा जाता है। यह स्थिति विकसित हो रहे मस्तिष्क की कोशिकाओं को गंभीर क्षति पहुँचा सकती है, जिससे भविष्य में बौद्धिक अक्षमता का संकट बढ़ जाता है। यह डाउन सिंड्रोम जैसे आनुवंशिक या कुपोषण जैसे पश्चात के कारकों से भिन्न है क्योंकि यह केवल प्रसव के उस नाजुक समय से संबद्ध है।

187. (C) व्यक्ति को शारीरिक संवेदनाओं की पुनर्व्याख्या करना सिखाना।
पैनिक विकार हेतु संज्ञानात्मक चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य उस दुष्चक्र को खंडित करना है जहाँ व्यक्ति सामान्य शारीरिक संकेतों को मृत्यु के संकेत के रूप में देखता है। चिकित्सक सेवार्थी को यह समझने में सहायता करता है कि संवर्धित हृदय गति केवल भय की एक सामान्य प्रतिक्रिया है, न कि हृदयाघात। जब व्यक्ति इन संवेदनाओं को उचित और न्यून डरावने तरीके से देखना प्रारंभ कर देता है, तो उसकी चिंता न्यून हो जाती है और पैनिक हमले धीरे-धीरे समाप्त होने लगते हैं। यह आत्मविश्वास संवर्धित करता है।

188. (D) कैटाटोनिया
कैटाटोनिया सिज़ोफ्रेनिया और कतिपय अन्य विकारों में देखा जाने वाला एक विशेष लक्षण है जो शारीरिक गतिविधियों को प्रभावित करता है। इसमें रोगी घंटों तक एक ही असामान्य मुद्रा में स्थिर रह सकता है, जैसे कि वह पाषाण प्रतिमा हो। वह न तो गतिशील होता है और न ही वातावरण के प्रति कोई प्रतिक्रिया देता है। इसे 'कैटाटोनिक स्तब्धता' कहा जाता है। कभी-कभी इसमें अत्यधिक और निरुद्देश्य हलचल भी देखी जा सकती है। यह व्यवहार यथार्थ से गहरे विच्छेद और गंभीर मानसिक विक्षोभ का एक स्पष्ट नैदानिक संकेत है।

189. (A) वयस्क व्यवहार काफी हद तक अचेतन गतिकी और प्रारंभिक बचपन के अनुभवों द्वारा निर्धारित होता है।
मनोगत्यात्मक मॉडल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण धारणा यह है कि हमारा व्यक्तित्व हमारे बचपन के प्रथम कतिपय वर्षों में ही आकार ग्रहण कर लेता है। फ्रायड के अनुसार, अभिभावकों के साथ हमारे आरंभिक संबंध और उस दौरान हुए अनसुलझे संघर्ष हमारे अचेतन मन में संचित रहते हैं। ये अचेतन शक्तियां हमारे वयस्क जीवन के निर्णयों, भावनाओं और मानसिक विकारों को बिना हमारी जानकारी के प्रभावित करती रहती हैं। अतः मानसिक समस्याओं के निराकरण हेतु अतीत की स्मृतियों और अचेतन इच्छाओं को समझना अनिवार्य है।

190. (B) सोचने, महसूस करने और व्यवहार करने का एक दीर्घकालिक, अनम्य प्रतिरूप।
व्यक्तित्व विकार कोई अस्थायी मानसिक व्याधि नहीं है जो आकस्मिक उद्भूत होती हो। यह व्यक्ति के स्वभाव की एक ऐसी समस्यामूलक संरचना है जो दीर्घ काल तक बनी रहती है। इसमें व्यक्ति के सोचने और दूसरों के साथ जुड़ने के तरीके इतने कठोर होते हैं कि वह परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल नहीं पाता। इसके कारण उसे निरंतर कष्ट होता है और उसके संबंधों में दरार उत्पन्न होती रहती है। ये विकार किशोरावस्था में प्रारंभ होते हैं और व्यक्ति के संपूर्ण वयस्क जीवन को प्रभावित करते हैं।

191. (D) I, II और III
पैनिक विकार एक जटिल मानसिक अवस्था है जहाँ व्यक्ति को आकस्मिक और तीव्र भय के हमलों का सामना करना पड़ता है। ये हमले इतने भयावह होते हैं कि व्यक्ति को प्रत्येक समय अगले हमले का भय सताता रहता है, जिसे 'प्रत्याशित चिंता' कहते हैं। इसी भय के कारण कई व्यक्ति जनसंकुल स्थानों या ऐसी स्थितियों से बचने लगते हैं जहाँ से पलायन दुष्कर हो, जिसे एगोराफोबिया कहा जाता है। यह स्थिति व्यक्ति की स्वतंत्रता को पूर्णतः सीमित कर देती है, जिससे उपचार अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

192. (A) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा।
सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में चिकित्सक और सेवार्थी के मध्य का संबंध ही उपचार का सर्वाधिक मुख्य उपकरण है। कार्ल रोजर्स का मानना था कि यदि चिकित्सक सेवार्थी को बिना शर्त स्वीकृति, यथार्थ ईमानदारी और गहरी समानुभूति प्रदान करता है, तो यह संबंध स्वतः ही सकारात्मक परिवर्तन लाएगा। यहाँ किसी विशिष्ट तकनीक से अधिक महत्व इस बात का है कि सेवार्थी कैसा अनुभव कर रहा है। जब उसे आभास होता है कि उसे वास्तव में समझा जा रहा है, तो उसके भीतर आत्म-सुधार की शक्ति जागृत होती है।

193. (B) दीर्घकालिक, अल्प अवसाद वाला व्यक्ति एक पूर्ण गंभीर प्रकरण का अनुभव करता है।
"डबल डिप्रेशन" एक विशेष नैदानिक अवस्था है जहाँ व्यक्ति पूर्व से ही डिस्थायमिया या 'लगातार अवसादग्रस्त विकार' से जूझ रहा होता है। इस पुरानी उदासी के दौरान, उसे अचानक एक 'गंभीर अवसादग्रस्त प्रकरण' का सामना करना पड़ता है,

जो लक्षणों को और अधिक तीव्र और असहनीय बना देता है। इस स्थिति में व्यक्ति को उदासी की एक अत्यंत गहरी परत अनुभव होती है, जिससे उसके लिए सामान्य जीवन यापन करना और उपचार के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देना पर्याप्त चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

194. (A) व्यक्ति की दैनिक कार्य करने की क्षमता में हस्तक्षेप करता है।
कुअनुकूलक व्यवहार असामान्यता का वह मानदंड है जो व्यक्ति की कार्यक्षमता पर ध्यान केंद्रित करता है। यदि किसी व्यक्ति का व्यवहार उसे अपनी जीविका बनाए रखने, परिवार की देखभाल करने या दूसरों के साथ सामान्य संप्रेषण करने से रोकता है, तो उसे कुअनुकूलक माना जाता है। यह इस तथ्य पर निर्भर नहीं करता कि व्यवहार कितना विचित्र है, अपितु इस पर कि वह कितना हानिकारक है। संक्षेप में, जब कोई व्यवहार व्यक्ति को समाज में एक स्वस्थ सदस्य के रूप में कार्य करने से रोकता है, तो वह असामान्य है।

195. (C) क्रियाप्रसूत अनुकूलन
बायोफीडबैक चिकित्सा पूर्णतः क्रियाप्रसूत अनुकूलन के सिद्धांतों पर कार्य करती है। जब व्यक्ति यंत्र के माध्यम से देखता है कि उसके प्रयास से उसकी हृदय गति न्यून हो गई है, तो यह सफलता उसके लिए एक पारितोषिक या 'सुदृढ़ीकरण' का कार्य करती है। यह सकारात्मक परिणाम उसे भविष्य में भी अपनी शारीरिक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने हेतु प्रोत्साहित करता है। धीरे-धीरे अभ्यास से यह नियंत्रण एक सीखी हुई आदत बन जाता है, जिससे व्यक्ति बिना यंत्र के भी तनावपूर्ण स्थितियों में स्वयं को शांत रखना सीख जाता है।

196. (D) व्यक्ति को वही प्रभाव प्राप्त करने के लिए पदार्थ की अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है।
सहिष्णुता विकसित होने का तात्पर्य है कि शरीर अब उस मादक पदार्थ की एक निश्चित मात्रा के प्रति अभ्यस्त हो गया है। प्रारंभ में जो नशा या हर्ष स्वल्प मात्रा से प्राप्त हो जाता था, वह अब शरीर पर कोई विशेष प्रभाव नहीं डालता। परिणामस्वरूप, व्यक्ति उसी स्तर का उत्साह या राहत प्राप्त करने हेतु पदार्थ की खुराक निरंतर संवर्धित करता रहता है। यह बढ़ती हुई खुराक न केवल शारीरिक अंगों को क्षति पहुँचाती है, अपितु व्यक्ति को पदार्थ पर अधिक निर्भर बना देती है, जिससे व्यसन त्यागना और भी दुष्कर हो जाता है।

197. (C) एक विषय से दूसरे असंबंधित विषय पर तेजी से जाना।
अव्यवस्थित भाषा सिज़ोफ्रेनिया का एक प्रमुख लक्षण है जो विचारों के विखंडन को दर्शाता है। इसमें व्यक्ति के संवाद का कोई तार्किक प्रवाह नहीं होता; वह एक वाक्य पूर्ण किए बिना ही किसी पूर्णतः भिन्न विषय पर चला जाता है। इसे कभी-कभी 'शब्दों का सलाद' भी कहा जाता है जब विचार इतने असंबद्ध हो जाते हैं कि उनका कोई अर्थ नहीं निकलता। यह लक्षण दर्शाता है कि व्यक्ति की सोचने की प्रक्रिया पूर्णतः बाधित हो चुकी है, जिससे दूसरों हेतु उसके साथ सार्थक संवाद करना असंभव हो जाता है।

198. (B) मनोगत्यात्मक
व्यवहारवादी मॉडल का प्रादुर्भाव मनोगत्यात्मक मॉडल की न्यूनताओं के प्रत्युत्तर में हुआ था। मनोगत्यात्मक मॉडल पूर्णतः अचेतन मन और ऐसी अदृश्य शक्तियों पर आधारित था जिन्हें वैज्ञानिक रूप से मापना या प्रयोगों द्वारा सिद्ध करना कठिन था। व्यवहारवादियों ने तर्क दिया कि मनोविज्ञान को एक वास्तविक विज्ञान बनने हेतु केवल प्रेक्षणीय और मापने योग्य व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने फ्रायड की काल्पनिक व्याख्याओं के स्थान पर अधिगम और पर्यावरणीय सुदृढ़ीकरण जैसे स्पष्ट सिद्धांतों को रखा, जिससे वस्तुनिष्ठता को बढ़ावा मिला।

199. (D) दैनिक जीवन के लिए काफी समर्थन, लेकिन बुनियादी आत्म-देखभाल सीख सकता है।
मध्यम बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्ति अपनी दैनिक आवश्यकताओं हेतु पर्याप्त सीमा तक दूसरों पर निर्भर होते हैं, परंतु वे पूर्णतः अक्षम नहीं होते। उचित प्रशिक्षण के साथ, वे स्वयं स्नान करना, वस्त्र धारण करना और सरल भोजन निर्मित करना सीख सकते हैं। वे अपनी भावनाओं और आवश्यकताओं को व्यक्त करने हेतु पर्याप्त भाषा कौशल भी विकसित कर सकते हैं। हालाँकि, उन्हें स्वतंत्र रूप से धन के प्रबंधन या जटिल सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु निरंतर मार्गदर्शन और सहयोग की आवश्यकता होती है।

200. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
मानसिक विकारों के लक्षणों का उनके विशिष्ट नैदानिक वर्गीकरण से गहरा संबंध है। वाणी की अल्पता प्रायः सिज़ोफ्रेनिया के ऋणात्मक लक्षणों में देखी जाती है। एनहेडोनिया या आनंद अनुभव करने की क्षमता का लोप अवसाद का एक प्रमुख संकेत है। बाध्यकारी क्रियाएं, जैसे बार-बार हस्त प्रक्षालन, ओसीडी का मुख्य अंग हैं। उन्माद ऊर्जा और उत्साह का वह चरम स्तर है जो द्विध्रुवी मनोदशा विकार की पहचान है। इन संबंधों को समझना विशेषज्ञों को सटीक निदान और प्रभावी उपचार योजना निर्मित करने में सहायता प्रदान करता है।

201. (B) दोहरावदार, अनुष्ठानिक व्यवहार
सामान्यीकृत चिंता विकार की मुख्य पहचान निरंतर बनी रहने वाली मानसिक चिंता और शारीरिक तनाव है, जैसे मांसपेशियों में खिंचाव और बेचैनी। व्यक्ति को एकाग्रता में भी कठिनाई होती है क्योंकि उसका मस्तिष्क सदैव संभावित संकटों के विषय में विचार करता रहता है। इसके विपरीत, पुनरावृत्ति वाले और अनुष्ठानिक व्यवहार, जैसे वस्तुओं को बार-बार गणना करना, बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार की विशिष्ट विशेषता है। यद्यपि दोनों में चिंता होती है, परंतु ओसीडी में उसे शांत करने हेतु विशिष्ट क्रियाएं की जाती हैं।

202. (A) सेवार्थी द्वारा पिछले रिश्ते की भावनाओं को चिकित्सक पर अचेतन रूप से पुनर्निर्देशित करना।
मनोविश्लेषण में स्थानांतरण एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिघटना है जहाँ सेवार्थी अनजाने में अपने अभिभावकों या अतीत के अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों के प्रति अपनी दमित भावनाओं को

चिकित्सक पर आरोपित करने लगता है। वह चिकित्सक के प्रति अनुराग, विद्वेष या अत्यधिक प्रशंसा अनुभव कर सकता है जैसे वह अपने बचपन के किसी संबंध में अनुभव करता था। चिकित्सक इन प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करके सेवार्थी के अचेतन संघर्षों और संबंधों के प्रतिरूपों को उजागर करता है। यह प्रक्रिया संबंधों की समस्याओं को समझने में सहायक है।

203. (C) व्यवहार के प्रतिरुप लचीले और स्थितिजन्य होते हैं।
व्यक्तित्व विकारों की सर्वाधिक बड़ी पहचान व्यवहार का अनम्य और कठोर होना है। ये विकार व्यवहार के ऐसे स्थायी प्रतिरूप हैं जो विभिन्न स्थितियों में परिवर्तित नहीं होते, जिसके कारण व्यक्ति को सामाजिक जीवन में भारी कठिनाई होती है। यदि व्यवहार लचीला और परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तित होने वाला होता, तो उसे व्यक्तित्व विकार नहीं माना जाता। ये विकार किशोरावस्था में प्रारंभ होते हैं और व्यापक होते हैं, जो व्यक्ति के सोचने, अनुभव करने और दूसरों के साथ जुड़ने के प्रत्येक ढंग को गहराई से प्रभावित करते हैं।

204. (D) एक उन्मादी प्रकरण
विचारों का तीव्र प्रवाह उन्माद का एक विशिष्ट लक्षण है जहाँ व्यक्ति के मस्तिष्क में विचार इतनी तीव्रता से आते हैं कि वह उन्हें पूर्णतः व्यक्त भी नहीं कर पाता। वह एक विषय से दूसरे विषय पर अत्यंत तीव्रता से गमन करता है और उसके संवाद में कोई तार्किक संबंध खोजना दुष्कर हो जाता है। यह उसकी अत्यधिक मानसिक ऊर्जा और उत्तेजना का परिणाम है। यह स्थिति अवसाद या पैनिक के पूर्णतः विपरीत है और व्यक्ति की निर्णय लेने की क्षमता को पूर्णतः बाधित कर देती है।

205. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संज्ञानात्मक चिकित्सा चिंता विकारों के उपचार में अत्यंत प्रभावी है क्योंकि यह समस्या की जड़, अर्थात् व्यक्ति के सोचने के ढंग, पर प्रहार करती है। चिंता से ग्रस्त व्यक्ति प्रायः भावी स्थितियों के विषय में अतिरंजित और नकारात्मक विचार रखते हैं, जिसे संज्ञानात्मक विकृति कहा जाता है। यह चिकित्सा उन्हें इन त्रुटिपूर्ण विचार प्रतिरूपों को पहचानने और उन्हें चुनौती देने में सहायता करती है। जब व्यक्ति यथार्थवादी ढंग से सोचना सीखता है, तो उसकी शारीरिक और मानसिक चिंता स्वतः ही न्यून होने लगती है, जो स्थायी समाधान है।

206. (A) विचार; भावना
सिज़ोफ्रेनिया और मनोदशा विकारों के मध्य का बुनियादी अंतर उनके मुख्य लक्षणों के क्षेत्र में है। सिज़ोफ्रेनिया को प्राथमिक रुप से एक 'विचार विकार' माना जाता है क्योंकि इसमें व्यामोह, विभ्रम और यथार्थ से विच्छेद जैसे लक्षण प्रमुख होते हैं। इसके विपरीत, मनोदशा विकारों में प्राथमिक गड़बड़ी व्यक्ति की 'भावनाओं' या मनोदशा में होती है, जैसे गहरा अवसाद या अत्यधिक उत्साह। संक्षेप में, सिज़ोफ्रेनिया में सोचने की प्रक्रिया बाधित होती है, जबकि मनोदशा विकारों में अनुभव करने का ढंग असंतुलित और कष्टदायक हो जाता है।

207. (D) मनोदशा विकार
चिंता विकार और मनोदशा विकार मानसिक रोगों की दो पृथक श्रेणियाँ हैं। पैनिक विकार, ओसीडी और सामान्यीकृत चिंता विकार सभी 'चिंता विकार' के अंतर्गत आते हैं क्योंकि इनका मुख्य लक्षण अत्यधिक भय, आशंका और घबराहट है। इसके विपरीत, मनोदशा विकार वे होते हैं जहाँ व्यक्ति की प्राथमिक समस्या उसकी भावनाओं या मनोदशा में उतार-चढ़ाव होती है, जैसे अवसाद या द्विध्रुवी विकार। यद्यपि दोनों में एक-दूसरे के लक्षण हो सकते हैं, परंतु नैदानिक रुप से इनका वर्गीकरण और उपचार के मार्ग पर्याप्त भिन्न होते हैं।

208. (B) मनोविश्लेषणात्मक
कार्ल रोजर्स ने सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा को मनोविश्लेषण की अत्यधिक निर्देशात्मक और विशेषज्ञ-केंद्रित प्रकृति के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया के रूप में विकसित किया था। मनोविश्लेषण में चिकित्सक एक विशेषज्ञ के रूप में सेवार्थी के अचेतन की व्याख्या करता है और उसे निर्देश प्रदान करता है। रोजर्स ने तर्क दिया कि यह पद्धति व्यक्ति की आत्म-सुधार की क्षमता को अवरुद्ध कर देती है। उन्होंने एक ऐसा 'गैर-निर्देशात्मक' दृष्टिकोण अपनाया जहाँ सेवार्थी को बिना शर्त स्वीकृति मिलती है और वह अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं खोजने हेतु स्वतंत्र होता है।

209. (B) सहिष्णुता
जब कोई व्यक्ति नियमित रुप से मदिरा का सेवन करता है, तो उसका शरीर उस पदार्थ के प्रति अभ्यस्त हो जाता है, जिसे सहिष्णुता कहा जाता है। इसका अर्थ यह है कि अब उसे वही पूर्व नशा या मानसिक प्रभाव अनुभव करने हेतु पहले की तुलना में अधिक मदिरा सेवन की आवश्यकता पड़ती है। यह सहिष्णुता धीरे-धीरे संवर्धित होती जाती है, जिससे व्यक्ति पदार्थ का अधिक मात्रा में सेवन करने लगता है। यह स्थिति न केवल स्वास्थ्य हेतु घातक है अपितु यह पदार्थ पर शारीरिक निर्भरता और व्यसन की ओर ले जाने वाला प्रथम सोपान है।

210. (A) दूसरों के प्रति निराधार अविश्वास और संदेह
व्यामोह की सर्वाधिक मौलिक विशेषता यह है कि व्यक्ति बिना किसी ठोस प्रमाण के दूसरों के अभिप्रायों पर संदेह करता है। उसे लगता है कि अन्य लोग उसके विरुद्ध हैं या उसे धोखा देना चाहते हैं। यह संदेह इतना गहरा होता है कि वह अपने निकटतम व्यक्तियों पर भी विश्वास नहीं कर पाता। यह स्थिति उसे सदैव तनाव और रक्षात्मक मुद्रा में रखती है, जिससे उसके सामाजिक संबंध विनष्ट हो जाते हैं। यह कोई सामान्य चिंता नहीं, अपितु यथार्थ की एक विकृत और नकारात्मक धारणा है जो जीवन को प्रभावित करती है।

211. (C) रोजमर्रा के जीवन कौशल संपन्न करने की व्यक्ति की क्षमता।
अनुकूलन कार्यक्षमता का तात्पर्य है कि व्यक्ति अपनी आयु और समाज की अपेक्षाओं के अनुरुप दैनिक जीवन के व्यावहारिक कार्यों को कितनी कुशलता से निष्पादित कर सकता है। इसमें स्वयं की देखभाल, दूसरों के साथ प्रभावी संवाद और स्वतंत्र रुप से कार्य करने की क्षमता सम्मिलित है। बौद्धिक अक्षमता

कि व्यक्ति इन विचारों को अपना अभिन्न अंग नहीं मानता और उन्हें विचित्र, भयावह या अपने व्यक्तित्व के विपरीत पाता है। वे अनायास मन में आते हैं और व्यक्ति उन्हें निष्कासित करने में असमर्थ अनुभव करता है। सामान्य चिंता प्रायः वास्तविक जीवन की समस्याओं से संबद्ध होती है और व्यक्ति उसे कतिपय सार्थक मान सकता है, जबकि बाध्यकारी विचार पूर्णतः अतार्किक होते हैं।

176. (A) व्यक्ति का वास्तविक स्वरुप और आदर्श स्वरुप के बीच असंगति।
कार्ल रोजर्स के अनुसार मनोवैज्ञानिक कष्ट का मूल कारण 'असंगति' है। जब व्यक्ति जैसा वास्तव में है (वास्तविक स्वरुप) और जैसा वह होना चाहता है या समाज उसे देखना चाहता है (आदर्श स्वरुप), इन दोनों के मध्य एक वृहद अंतर उत्पन्न हो जाता है, तो वह मानसिक रूप से व्यथित रहने लगता है। यह अंतर प्रायः दूसरों से बिना शर्त स्नेह और स्वीकृति न मिलने के कारण संवर्धित होता है। चिकित्सा का लक्ष्य व्यक्ति को स्वयं को स्वीकार करने में सहायता करना है ताकि यह असंगति न्यून हो सके।

177. (B) औषधियों और मदिरा के दुरुपयोग एवं निर्भरता सहित समस्याओं की एक श्रृंखला।
पदार्थ-संबंधित विकार एक व्यापक संज्ञा है जिसमें विभिन्न प्रकार के पदार्थों के उपयोग से संबद्ध समस्याएं सम्मिलित हैं। इसमें न केवल अवैध औषधियाँ, अपितु मदिरा, निकोटीन और चिकित्सक द्वारा प्रदत्त औषधियों का त्रुटिपूर्ण उपयोग भी सम्मिलित है। यह विकार तब माना जाता है जब पदार्थ का उपयोग व्यक्ति के स्वास्थ्य, संबंधों और कार्य में गंभीर बाधा उत्पन्न करने लगे। इसमें दुरुपयोग और निर्भरता, दोनों ही स्थितियाँ सम्मिलित हैं जो व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक कल्याण को विनष्ट करती हैं।

178. (A) संदर्भ का व्यामोह
संदर्भ के व्यामोह में व्यक्ति को आभास होता है कि वातावरण की सामान्य घटनाएं केवल उसी के निमित्त हैं। उदाहरण हेतु, टीवी समाचारवाचक का कोई सामान्य वाक्य उसे अपना गुप्त संदेश प्रतीत हो सकता है या मार्ग पर लगे विज्ञापनों में उसे अपने जीवन के संकेत दृष्टिगोचर हो सकते हैं। यह यथार्थ की धारणा में एक गंभीर विक्षोभ है। व्यक्ति को प्रतीत होता है कि संपूर्ण विश्व उसे कुछ संप्रेषित करना चाह रहा है, जो वास्तव में निराधार होता है। यह प्रायः सिज़ोफ्रेनिया का एक प्रमुख लक्षण होता है।

179. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
मनोविज्ञान के इतिहास में महान विद्वानों ने विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों और सिद्धांतों का विकास किया है। सिगमंड फ्रायड ने मनोविश्लेषण की नींव रखी। कार्ल रोजर्स ने मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा प्रदान की। आरोन बेक ने संज्ञानात्मक चिकित्सा के माध्यम से विचारों को परिवर्तित करने पर बल दिया। बी.एफ. स्किनर ने क्रियाप्रसूत अनुकूलन के सिद्धांतों द्वारा व्यवहार को समझने और बदलने का मार्ग प्रदर्शित किया। इन सभी के योगदान ने आधुनिक नैदानिक मनोविज्ञान को समृद्ध किया है।

180. (D) साइकोमोटर मंदता
साइकोमोटर मंदता का अर्थ है शारीरिक गतिविधियों और सोचने की गति का मंद हो जाना, जो अवसाद का एक प्रमुख लक्षण है। इसके विपरीत, उन्मादी प्रकरण में व्यक्ति अत्यधिक ऊर्जा और तीव्रता का अनुभव करता है। उसके विचार अत्यंत तीव्र गति से चलते हैं, वह अत्यधिक बोलता है, और वह ऐसी गतिविधियों में संलग्न होता है जो जोखिमपूर्ण परंतु रोमांचक होती हैं। उन्माद में व्यक्ति सुस्त होने के स्थान पर अत्यधिक सक्रिय होता है। अतः, मंदता या सुस्ती उन्माद की प्रकृति के पूर्णतः विपरीत है।

181. (C) दूसरों के साथ संबंधों में कठिनाइयाँ।
अंतर्वैयक्तिक मॉडल इस विचार पर बल देता है कि मनोवैज्ञानिक विकार शून्य में उत्पन्न नहीं होते, अपितु वे हमारे सामाजिक जीवन और रिश्तों की परिणति हैं। जब किसी व्यक्ति के रिश्ते तनावपूर्ण होते हैं या उसे सामाजिक सहयोग प्राप्त नहीं होता, तो वह मानसिक रूप से रुग्ण होने लगता है। यह मॉडल मानता है कि संबंधों में सुधार और बेहतर संप्रेषण कौशल विकसित करने से मानसिक कष्ट को पर्याप्त न्यून किया जा सकता है। यह व्यक्ति के अंतस के स्थान पर उसके सामाजिक नेटवर्क को सुदृढ़ करने पर केंद्रित है।

182. (A) प्रतिरोध
मनोविश्लेषण के दौरान प्रतिरोध एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ सेवार्थी अचेतन रूप से चिकित्सा की प्रगति में बाधा उत्पन्न करता है। वह सत्र में विलंब से आ सकता है, संवाद करने से अस्वीकार कर सकता है या महत्वपूर्ण विषयों को टाल सकता है। चिकित्सक इसे एक रक्षा तंत्र के रूप में देखता है जो सेवार्थी को उन कष्टदायक और दमित स्मृतियों का सामना करने से बचाता है जो उसके कष्ट का कारण हैं। इस प्रतिरोध का विश्लेषण करना ही चिकित्सा का महत्वपूर्ण भाग है, क्योंकि यह दमित सामग्री तक पहुँचने का मार्ग देता है।

183. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रारंभिक व्यवहारवाद ने केवल उसी व्यवहार पर ध्यान केंद्रित किया जिसे प्रत्यक्ष रूप से प्रेक्षित और मापा जा सकता था। उन्होंने मस्तिष्क के भीतर चलने वाले विचारों और संज्ञान की भूमिका को पूर्णतः उपेक्षित कर दिया, यह मानकर कि यह वैज्ञानिक रूप से अवलोकनीय नहीं है। इसी कारण से इस मॉडल की प्रायः आलोचना की जाती है, क्योंकि मानव व्यवहार केवल उत्तेजना और प्रतिक्रिया तक सीमित नहीं है, अपितु हमारी सोच भी उसे गहराई से प्रभावित करती है। पश्चात में इसी हेतु संज्ञानात्मक मॉडल विकसित हुआ।

184. (D) चिंता या कष्ट को कम करने के लिए।
बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार में व्यक्ति के मन में बार-बार डरावने विचार आते हैं जो उसे अत्यंत व्याकुल कर देते हैं। इन विचारों से होने वाली असहनीय चिंता से अस्थायी राहत प्राप्त करने हेतु व्यक्ति कुछ क्रियाएं, जैसे वस्तुओं की गणना या हस्त

इसलिए आवश्यक है क्योंकि न्यून बुद्धि-लब्धि वाला व्यक्ति भी उचित प्रशिक्षण के साथ समाज में भली-भाँति रह सकता है। यह संतुलित दृष्टिकोण निदान को अधिक मानवीय और सटीक बनाता है।

221. (C) सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन
सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन असामान्यता का वह मानदंड है जो सर्वाधिक परिवर्तनशील है। जो व्यवहार एक संस्कृति में पूर्णतः सामान्य माना जाता है, वही दूसरी संस्कृति में विचित्र या असामान्य प्रतीत हो सकता है। इसी प्रकार, समय के साथ समाज के नियम परिवर्तित होते रहते हैं; उदाहरण हेतु, अतीत के कई प्रतिबंधित व्यवहार आज सामान्य माने जाते हैं। अतः, केवल सामाजिक नियमों को आधार मानकर किसी को मानसिक रूप से रुग्ण घोषित करना जोखिमपूर्ण हो सकता है। यह मानदंड वस्तुनिष्ठ होने के स्थान पर सांस्कृतिक मान्यताओं पर आधारित है।

222. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में महान विद्वानों ने क्रांतिकारी योगदान दिया है। सिगमंड फ्रायड ने मनोविश्लेषण के माध्यम से अचेतन मन को समझने का मार्ग प्रदर्शित किया। कार्ल रोजर्स ने सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा विकसित की जो आत्म-स्वीकार्यता पर बल देती है। आरोन बेक ने संज्ञानात्मक चिकित्सा के माध्यम से दोषपूर्ण विचारों को परिवर्तित करने की तकनीक प्रदान की। बी.एफ. स्किनर ने व्यवहारवाद और क्रियाप्रसूत अनुकूलन के सिद्धांतों को प्रमुखता दी। इन मॉडलों ने मानसिक रोगों के उपचार हेतु एक व्यापक आधार निर्मित किया है।

223. (D) डिस्थायमिया
डिस्थायमिया एक ऐसा मनोदशा विकार है जो न्यून तीव्र परंतु अत्यंत दीर्घ काल तक चलता है। इसमें व्यक्ति न्यूनतम दो वर्षों तक लगभग प्रत्येक दिन उदासी और निराशा अनुभव करता है। हालाँकि इसके लक्षण गंभीर अवसाद जितने तीव्र नहीं होते कि व्यक्ति का कार्य पूर्णतः अवरुद्ध हो जाए, परंतु इसकी निरंतरता व्यक्ति की जीवन के प्रति ऊर्जा और उत्साह को समाप्त कर देती है। यह एक 'पुरानी उदासी' जैसी स्थिति बन जाती है जो व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व और दृष्टिकोण को नकारात्मक बना देती है, जिससे मानसिक शांति विनष्ट होती है।

224. (A) पैनिक आक्रमण की अचानक, तीव्र और समय-सीमित प्रकृति।
पैनिक आक्रमण और सामान्यीकृत चिंता के मध्य मुख्य अंतर उनकी तीव्रता और अवधि में है। पैनिक आक्रमण आकस्मिक रूप से उद्भूत होता है और कतिपय मिनटों में भय के उच्चतम शिखर पर पहुँच जाता है, जिसके पश्चात वह धीरे-धीरे न्यून होने लगता है। इसके विपरीत, सामान्यीकृत चिंता एक मंद और निरंतर चलने वाले तनाव की भाँति है जो हफ्तों या महीनों तक बिना किसी वृहद विस्फोट के बना रहता है। पैनिक हमला एक तीव्र भावनात्मक संकट है, जबकि सामान्यीकृत चिंता एक स्थायी मानसिक बोझ की भाँति अनुभव होती है।

225. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नैदानिक वर्गीकरण प्रणालियों में व्यक्तित्व विकारों को प्रायः अन्य नैदानिक विकारों से पृथक श्रेणी में रखा जाता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि चिकित्सक केवल तात्कालिक लक्षणों पर ही ध्यान केंद्रित न करें, अपितु व्यक्ति के व्यवहार के उन दीर्घकालिक और अनम्य प्रतिरूपों को भी पहचानें जो उसके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन चुके हैं। यह भेद अधिक सटीक निदान और उपचार योजना निर्मित करने में सहायता करता है क्योंकि व्यक्तित्व विकारों हेतु अन्य सामान्य विकारों की तुलना में अधिक समय और भिन्न मनोचिकित्सा की आवश्यकता होती है।

226. (A) विकृत या तर्कहीन सोच और विश्वास।
मनोविकृति विज्ञान का संज्ञानात्मक मॉडल इस मूल सिद्धांत पर आधारित है कि हमारे विचार ही हमारी भावनाओं और व्यवहार को निर्धारित करते हैं। यदि कोई व्यक्ति विश्व को अत्यंत नकारात्मक और संकटपूर्ण दृष्टिकोण से देखता है या स्वयं को पूर्णतः विफल मानता है, तो वह अवसाद या चिंता का शिकार हो जाएगा। यह मॉडल मानता है कि ये मानसिक विकार घटनाओं के कारण नहीं, अपितु उन घटनाओं की त्रुटिपूर्ण और अतार्किक व्याख्याओं के कारण होते हैं। अतः, उपचार का मुख्य लक्ष्य इन विकृत विचार प्रतिरूपों को परिष्कृत करना होता है।

227. (C) अचेतन; सचेत
मनोविश्लेषण का सर्वाधिक बुनियादी और प्रमुख लक्ष्य अचेतन मन की विषय-वस्तु को सचेत जागरूकता में लाना है। फ्रायड का मानना था कि हमारे मानसिक कष्टों का कारण वे दमित इच्छाएं और कष्टदायक स्मृतियाँ हैं जो हमारे अचेतन मन में प्रच्छन्न रहकर हमारे व्यवहार को प्रभावित करती हैं। जब ये प्रच्छन्न तथ्य सचेत रूप से समझ लिए जाते हैं, तो उनका नकारात्मक प्रभाव न्यून हो जाता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को आत्म-बोध प्रदान करती है और उसे अपने आंतरिक द्वंद्वों को सुलझाने में सक्षम बनाती है, जो उपचार हेतु अनिवार्य है।

228. (D) I, II और III
बौद्धिक अक्षमता एक बहुआयामी स्थिति है जिसके विविध प्रकार के कारण हो सकते हैं। इसमें आनुवंशिक असामान्यताएं, जैसे डाउन सिंड्रोम, महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अतिरिक्त, गर्भावस्था के दौरान संक्रमण या जन्म के समय प्राणवायु की न्यूनता जैसे प्रसवकालीन कारक भी उत्तरदायी हो सकते हैं। जन्म के पश्चात भी कुपोषण, गंभीर व्याधियाँ या सीसे जैसे विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आने से मस्तिष्क के विकास में बाधा आ सकती है। इन समस्त कारकों को समझना निवारण और उचित सहायता प्रदान करने हेतु अत्यंत आवश्यक है।

229. (B) नकारात्मक
सिज़ोफ्रेनिया के ऋणात्मक लक्षण व्यक्ति की सामान्य मानसिक और भावनात्मक कार्यक्षमता में आने वाली 'न्यूनता' को दर्शाते हैं। इच्छाशक्ति की कमी, वाणी की अल्पता और एनहेडोनिया इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये लक्षण व्यक्ति को पूर्णतः निष्क्रिय बना देते हैं और उसे समाज से पृथक कर देते

है, तो यह 'सुधारात्मक भावनात्मक अनुभव' उसके मानसिक घावों को भरने में सहायता करता है। यह अनुभव ही उसे स्वयं को स्वीकार करने और व्यक्तिगत विकास की दिशा में अग्रसर होने हेतु प्रेरित करता है, जो उपचार का मूल आधार है।

248. (A) पदार्थ का उपयोग बंद करने के कारण होने वाले विशिष्ट लक्षण।
निवर्तन पदार्थ निर्भरता का एक गंभीर पक्ष है जो तब प्रकट होता है जब शरीर उस मादक पदार्थ के अभाव में कार्य करने हेतु संघर्ष करता है जिसका वह अभ्यस्त हो चुका है। इन लक्षणों में कंपन, मतिभ्रम, गंभीर चिंता या शारीरिक पीड़ा सम्मिलित हो सकते हैं। ये लक्षण स्पष्ट रूप से यह दर्शाते हैं कि व्यक्ति का शरीर अब जैविक रूप से उस पदार्थ पर निर्भर है। निवर्तन की पीड़ा इतनी अधिक हो सकती है कि व्यक्ति पुनः उसी पदार्थ के सेवन की ओर प्रवृत हो जाता है, जो व्यसन के चक्र को सुदृढ़ करता है।

249. (C) "मुझे दिल का दौरा पड़ रहा है" या "मैं पागल हो रहा हूँ।"
पैनिक आक्रमण के दौरान व्यक्ति को अत्यधिक तीव्र और आकस्मिक शारीरिक लक्षणों का अनुभव होता है, जैसे हृदय गति का अत्यंत तीव्र होना। संज्ञानात्मक रूप से, व्यक्ति इन लक्षणों की अत्यंत विनाशकारी व्याख्या करता है। उसे दृढ़ता से आभास होता है कि उसकी मृत्यु होने वाली है, उसे हृदयाघात हो रहा है या वह अपना मानसिक संतुलन खो रहा है। ये भयावह विचार ही उस भय को और संवर्धित कर देते हैं, जिससे एक दुष्चक्र निर्मित हो जाता है। इन विचारों की पहचान और परिष्कार पैनिक विकार के उपचार का मुख्य भाग है।

250. (A) यौन आवेगों के ऊपर सामाजिक अनुभव और अंतर्वैयक्तिक संबंध।
हैरी स्टैक सुलिवन का अंतर्वैयक्तिक मॉडल फ्रायड के यौन आवेगों पर आधारित दृष्टिकोण से भिन्न है। सुलिवन का मानना था कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास मुख्य रूप से उसके सामाजिक अनुभवों और दूसरों के साथ होने वाली अंतःक्रियाओं से होता है। उनके अनुसार, हमारा मानसिक स्वास्थ्य हमारे रिश्तों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। जब हमारे संबंध सुखद और संतोषजनक होते हैं, तो हम सुरक्षित अनुभव करते हैं। यह मॉडल मानता है कि सामाजिक विश्व और संबंधों का तनाव ही अधिकांश मनोवैज्ञानिक समस्याओं की मुख्य जड़ है।

251. (D) वास्तविकता के साथ एक मौलिक अलगाव (मनोविक्षिप्ति)
सिज़ोफ्रेनिया की सर्वाधिक बुनियादी और परिभाषित विशेषता 'मनोविक्षिप्ति' है, जिसका अर्थ है व्यक्ति का यथार्थ से पूर्णतः संपर्क विच्छेद हो जाना। इसमें व्यक्ति को ऐसी वस्तुएं सुनाई या दिखाई देती हैं जो वहां उपस्थित नहीं हैं और वह ऐसी बातों पर दृढ़ विश्वास कर लेता है जो सत्य नहीं हैं। उसके विचार और भावनाएं असंबद्ध हो जाती हैं, जिससे वह एक ऐसी दुनिया में जीवन यापन करने लगता है जो दूसरों से पृथक है। यह यथार्थ से अलगाव ही इस विकार को अन्य मानसिक व्याधियों से भिन्न और गंभीर बनाता है।

252. (B) प्रारंभिक बचपन में उन्नत शैक्षणिक प्रशिक्षण
उन्नत शैक्षणिक प्रशिक्षण बौद्धिक अक्षमता का कारण नहीं बन सकता; इसके विपरीत, यह बौद्धिक विकास में सहायक ही सिद्ध होता है। बौद्धिक अक्षमता मुख्य रूप से जैविक या पर्यावरणीय संकटों के कारण होती है। इसमें आनुवंशिक स्थितियां, गर्भावस्था के दौरान माता का रुग्ण स्वास्थ्य, जन्म के समय प्राणवायु की न्यूनता या बचपन में मस्तिष्क में लगने वाली गंभीर चोट जैसे कारक सम्मिलित हैं। ये समस्त स्थितियां मस्तिष्क के सामान्य विकास को बाधित करती हैं, जो अधिगम और बोध की क्षमता में न्यूनता का कारण बनती हैं।

253. (C) स्वयं या दुनिया के बारे में एक मौलिक, गहराई से माना जाने वाला विचार।
संज्ञानात्मक चिकित्सा में 'मूल विश्वास' वे गहरे मानसिक ढाँचे हैं जो हमारे संपूर्ण दृष्टिकोण को आकार प्रदान करते हैं। ये विचार बचपन के अनुभवों से निर्मित होते हैं और प्रायः बहुत दृढ़ होते हैं, जैसे "मैं स्नेह के योग्य नहीं हूँ" या "विश्व एक संकटपूर्ण स्थान है"। ये विश्वास हमारी दैनिक सोच और व्यवहार को अनजाने में प्रभावित करते हैं। चिकित्सा में इन मूल विश्वासों को पहचानना और उनमें परिवर्तन लाना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इन्हीं के कारण बार-बार नकारात्मक स्वचालित विचार उद्भूत होते हैं जो कष्ट देते हैं।

254. (D) सिज़ोफ्रेनिया - मनोदशा विकार
सिज़ोफ्रेनिया और मनोदशा विकार नैदानिक मनोविज्ञान की दो पृथक श्रेणियाँ हैं। सिज़ोफ्रेनिया को एक 'विचार विकार' माना जाता है क्योंकि इसमें यथार्थ की धारणा और विचारों का प्रवाह बाधित होता है। इसके विपरीत, मनोदशा विकारों में प्राथमिक समस्या भावनाओं में उतार-चढ़ाव होती है, जैसे अवसाद या द्विध्रुवी विकार। यद्यपि सिज़ोफ्रेनिया के रोगियों को मनोदशा संबंधी समस्याएं हो सकती हैं, परंतु इसका मूल स्वरूप और नैदानिक वर्गीकरण इसे मनोदशा विकारों की श्रेणी से पृथक और विशिष्ट बनाता है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

255. (A) अचेतन विचारों या इच्छाओं का प्रकटीकरण।
मनोगत्यात्मक दृष्टिकोण के अनुसार हमारी संवाद प्रक्रिया में होने वाली स्वल्प त्रुटियां यादृच्छिक नहीं होतीं। फ्रायड का मानना था कि ये हमारे अचेतन मन में दबी उन इच्छाओं या विचारों का संकेत हैं जिन्हें हम सचेत रूप से व्यक्त नहीं करना चाहते। जब 'अहं' की रक्षा प्रणालियाँ एक क्षण हेतु शिथिल होती हैं, तो ये दमित विचार मुख से निर्गत हो जाते हैं। चिकित्सा में इन त्रुटियों का विश्लेषण करके अचेतन मन की गहराईयों को समझने का प्रयास किया जाता है, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को समझने हेतु अनिवार्य है।

256. (B) व्यवस्थित विसंवेदीकरण
व्यवस्थित विसंवेदीकरण व्यवहार चिकित्सा की एक प्रमुख तकनीक है जिसका उपयोग मुख्य रूप से दुर्भीति के उपचार हेतु किया जाता है। यह शास्त्रीय अनुकूलन के सिद्धांतों पर आधारित है। इसमें सेवार्थी को धीरे-धीरे उन वस्तुओं या स्थितियों के संपर्क में लाया जाता है जिनसे उसे भय लगता है, जबकि साथ में उसे शिथिलन की तकनीकें सिखाई जाती

मुख्य लक्षण होते हैं, जो व्यक्ति के व्यवहार को अत्यंत शंकित और रक्षात्मक बना देते हैं। इससे रोगी का दूसरों के साथ सामान्य संबंध बनाए रखना और यथार्थ में जीवन यापन करना अत्यंत दुष्कर हो जाता है।

239. (D) निरंतर, अनियंत्रित चिंता
सामान्यीकृत चिंता विकार की सर्वाधिक प्रमुख पहचान यह है कि व्यक्ति को लगभग प्रत्येक समय किसी न किसी विषय की चिंता बनी रहती है। यह चिंता किसी एक मुद्दे तक सीमित नहीं होती, अपितु स्वास्थ्य, परिवार और कार्य जैसे अनेक विषयों पर विस्तृत होती है। व्यक्ति को ज्ञात होता है कि उसकी चिंता अत्यधिक है, परंतु वह इसे चाहकर भी अवरुद्ध नहीं कर पाता। यह निरंतर बनी रहने वाली मानसिक घबराहट व्यक्ति को शारीरिक रूप से क्लांत कर देती है और उसकी एकाग्रता एवं सामान्य जीवन की शांति को विनष्ट कर देती है।

240. (B) व्यवहार चिकित्सा
बायोफीडबैक तकनीक व्यवहार चिकित्सा के सिद्धांतों पर आधारित है, विशेष रूप से क्रियाप्रसूत अनुकूलन पर। यह इस विचार का समर्थन करती है कि हमारे शारीरिक लक्षण हमारे मानसिक और व्यवहारिक अनुभवों से संबद्ध हैं। यंत्रों के माध्यम से प्रतिपुष्टि प्राप्त करके, व्यक्ति यह सीखता है कि कैसे वह अपने व्यवहार और सोच में परिवर्तन लाकर अपनी अनैच्छिक शारीरिक प्रक्रियाओं को नियंत्रित कर सकता है। यह तकनीक व्यक्ति को सक्रिय रूप से अपने स्वास्थ्य प्रबंधन में सम्मिलित होने हेतु प्रेरित करती है, जो अत्यंत प्रभावी है।

241. (B) मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा
मुक्त साहचर्य, स्वप्न विश्लेषण और स्थानांतरण का विश्लेषण सिगमंड फ्रायड द्वारा विकसित मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा की आधारभूत तकनीकें हैं। इन तकनीकों का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के अचेतन मन की गहराइयों में प्रच्छन्न उन द्वंद्वों और स्मृतियों को उजागर करना है जो उसके वर्तमान कष्ट का कारण हैं। मुक्त साहचर्य में बिना विचारे बोलना, स्वप्न विश्लेषण में प्रतीकों को समझना और स्थानांतरण में चिकित्सक के प्रति भावनाओं का अध्ययन सम्मिलित है। ये विधियाँ सेवार्थी को अपने व्यक्तित्व के अनछुए पक्षों के प्रति अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

242. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
मानसिक विकारों को उनकी मुख्य विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। मनोदशा विकारों में भावनाओं की गंभीर गड़बड़ियाँ होती हैं। चिंता विकारों की पहचान निरंतर रहने वाले भय और आशंका से होती है। सिज़ोफ्रेनिया मुख्य रूप से विचारों और यथार्थ की धारणा में आने वाले विक्षोभ को दर्शाता है। व्यक्तित्व विकार व्यवहार के उन अनम्य और व्यापक प्रतिरूपों की विशेषता है जो सांस्कृतिक मानदंडों से विचलित होते हैं। इन भेदों को समझना सटीक निदान और प्रभावी उपचार योजना तैयार करने हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

243. (C) उसी तरह सीखे गए जैसे सामान्य व्यवहार।
व्यवहारवादी मॉडल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि कोई भी व्यवहार, चाहे वह सामान्य हो या असामान्य, अधिगम की प्रक्रिया का ही परिणति है। जिस प्रकार हम समाज में रहने के उचित ढंग पुरस्कार और दंड के माध्यम से सीखते हैं, उसी प्रकार त्रुटिपूर्ण या असामान्य व्यवहार भी पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण सीखे जाते हैं। यह मॉडल मानता है कि अस्वस्थ व्यवहारों की जड़ें किसी अचेतन मन में नहीं, अपितु व्यक्ति के अनुभव और सुदृढ़ीकरण के इतिहास में निहित होती हैं। अतः, उपचार में 'पुनः सीखने' पर बल दिया जाता है।

244. (D) स्किज़ोइड व्यक्तित्व विकार
स्किज़ोइड व्यक्तित्व विकार की मुख्य पहचान सामाजिक संबंधों में पूर्ण अरुचि और भावनात्मक अभिव्यक्ति का अत्यंत सीमित होना है। ऐसे व्यक्ति एकाकी रहना पसंद करते हैं और उन्हें दूसरों के साथ घनिष्ठ संबंध निर्मित करने या प्रशंसा एवं आलोचना प्राप्त करने में कोई हर्ष नहीं मिलता। वे प्रायः दूसरों को ठंडे और विरक्त प्रतीत होते हैं। यह व्यवहार उनके व्यक्तित्व का एक स्थायी अंग होता है और यह सिज़ोफ्रेनिया की भाँति यथार्थ से पूर्णतः विच्छेद नहीं है, अपितु यह केवल सामाजिक दूरी बनाए रखने का एक कठोर प्रतिरूप है।

245. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बौद्धिक अक्षमता के निदान हेतु केवल बुद्धि-लब्धि स्कोर का न्यून होना पर्याप्त आधार नहीं माना जाता। नैदानिक रूप से यह भी अनिवार्य है कि व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन की जिम्मेदारियों, जैसे सामाजिक मेलजोल और स्वतंत्र कार्य संपादन में भी कठिनाई हो। यदि कोई व्यक्ति न्यून बुद्धि-लब्धि के उपरांत भी समाज में भली-भाँति जीवन यापन कर रहा है, तो उसे अक्षम नहीं कहा जाएगा। अतः, अनुकूलन कार्यक्षमता की परीक्षा बुद्धि-लब्धि के परिणामों को व्यावहारिक धरातल पर परखने हेतु अत्यंत आवश्यक होती है।

246. (B) बाध्यकारी विचारों को तर्कहीन माना जाता है, जबकि व्यामोह को सत्य माना जाता है।
बाध्यकारी विचार और व्यामोह के मध्य एक महत्वपूर्ण नैदानिक अंतर है। ओसीडी से पीड़ित व्यक्ति प्रायः यह समझता है कि उसके बाध्यकारी विचार, जैसे कीटाणुओं का अत्यधिक भय, तर्कहीन और उसकी अपनी मानसिक उपज हैं। इसके विपरीत, व्यामोह से ग्रस्त व्यक्ति को अपने त्रुटिपूर्ण विश्वास पर पूर्ण विश्वास होता है और वह उसे पूर्ण सत्य मानता है, भले ही उसे कितने भी विपरीत साक्ष्य प्रदर्शित किए जाएँ। यह अंतर व्यक्ति के यथार्थ के साथ जुड़ाव के स्तर को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करता है।

247. (D) एक वास्तविक संबंध के माध्यम से सुधारात्मक भावनात्मक अनुभव।
सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में चिकित्सक का मुख्य लक्ष्य सेवार्थी को एक ऐसा सुरक्षित और स्वीकार्य संबंध प्रदान करना है जहाँ वह स्वयं को बिना किसी भय के अभिव्यक्त कर सके। कार्ल रोजर्स का मानना था कि जब सेवार्थी को चिकित्सक से वास्तविक स्नेह, समानुभूति और बिना शर्त स्वीकृति प्राप्त होती

के निदान में यह प्रेक्षित करना अनिवार्य है कि क्या व्यक्ति इन क्षेत्रों में समस्याओं का सामना कर रहा है। केवल न्यून बुद्धि-लब्धि पर्याप्त नहीं है; दैनिक जीवन के संघर्ष ही अक्षमता के स्तर को यथार्थ में परिभाषित करते हैं।

212. (D) अंतर्वैयक्तिक
अंतर्वैयक्तिक मॉडल इस सिद्धांत पर आधारित है कि मनोवैज्ञानिक समस्याएं शून्य में उत्पन्न नहीं होतीं, अपितु वे हमारे सामाजिक जीवन और रिश्तों के संघर्षों की परिणति होती हैं। यह मॉडल मानता है कि परिवार में चल रहे द्वंद्व, सामाजिक भूमिकाओं में परिवर्तन या एकाकीपन की भावना ही मानसिक विकारों को प्रोत्साहित करती है। अतः, यह चिकित्सा व्यक्ति के अचेतन के स्थान पर उसके परिवेश के सामाजिक संबंधों को परिष्कृत करने और बेहतर संप्रेषण कौशल विकसित करने पर सर्वाधिक बल देती है, जो अत्यंत प्रभावी है।

213. (D) I, II और III
बायोफीडबैक एक बहुआयामी तकनीक है जिसके कई नैदानिक अनुप्रयोग हैं। ईईजी का उपयोग मस्तिष्क की तरंगों को नियंत्रित करने और एकाग्रता संवर्धित करने हेतु किया जाता है। ईएमजी मांसपेशियों के तनाव को न्यून करने और शारीरिक शिथिलन सिखाने में सहायक है। थर्मल फीडबैक शरीर के तापमान और रक्त प्रवाह की सूचना प्रदान कर अर्द्ध-शीष और रक्तचाप जैसी समस्याओं के प्रबंधन में सहायता करता है। ये समस्त अनुप्रयोग व्यक्ति को अपनी उन शारीरिक प्रक्रियाओं पर नियंत्रण पाने में सक्षम बनाते हैं जो सामान्यतः वश में नहीं होतीं।

214. (B) इस विकार वाले व्यक्ति आमतौर पर इस बात से अनजान होते हैं कि उनके विचार तर्कहीन हैं।
ओसीडी की एक मुख्य विशेषता यह है कि इससे पीड़ित व्यक्ति सामान्यतः जानता है कि उसके बाध्यकारी विचार और क्रियाएं अत्यधिक या अतार्किक हैं। इसे 'अंतर्दृष्टि' कहा जाता है। वह समझता है कि बार-बार हस्त प्रक्षालन या वस्तुओं की गणना आवश्यक नहीं है, फिर भी वह अपनी चिंता को शांत करने हेतु इन्हें करने हेतु विवश अनुभव करता है। इसके विपरीत, व्यामोह या सिज़ोफ्रेनिया में व्यक्ति को अपने विचारों के त्रुटिपूर्ण होने का आभास नहीं होता। ओसीडी में तर्क और विवशता के मध्य यह निरंतर संघर्ष ही इसे कष्टदायक बनाता है।

215. (D) द्विध्रुवी I विकार
द्विध्रुवी I विकार के नैदानिक निदान हेतु न्यूनतम एक पूर्ण उन्मादी प्रकरण का होना अनिवार्य शर्त है। उन्माद के दौरान व्यक्ति की ऊर्जा, आत्मविश्वास और सक्रियता का स्तर अत्यधिक संवर्धित हो जाता है, जो प्रायः सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में गंभीर बाधाएं उत्पन्न करता है। हालाँकि इस विकार में गंभीर अवसाद के दौर भी अत्यंत सामान्य हैं, परंतु एक भी उन्मादी प्रकरण की उपस्थिति इसे अन्य मनोदशा विकारों से पृथक करने और द्विध्रुवी I की श्रेणी में रखने हेतु नैदानिक रूप से पर्याप्त मानी जाती है।

216. (A) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में कार्ल रोजर्स ने 'अनुरुपता' की संकल्पना पर बहुत बल दिया है। इसका अर्थ है व्यक्ति के 'वास्तविक स्वरूप' और उसके 'आदर्श स्वरुप' के मध्य सामंजस्य स्थापित करना। जब इन दोनों में वृहद अंतर होता है, तो व्यक्ति तनाव और मानसिक कष्ट अनुभव करता है। चिकित्सक एक स्वीकार्य और समानुभूतिपूर्ण वातावरण प्रदान करता है जहाँ सेवार्थी बिना भय के स्वयं को स्वीकार करना सीखता है। इस प्रकार अनुरुपता बढ़ने से व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है और आत्मविश्वास संवर्धित होता है।

217. (C) सकारात्मक
सिज़ोफ्रेनिया के धनात्मक लक्षण वे होते हैं जो किसी व्यक्ति के सामान्य मानसिक कार्यों में एक 'अतिरिक्त' तत्व जोड़ते हैं। व्यामोह, विभ्रम और अव्यवस्थित भाषा इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये लक्षण स्पष्ट रूप से यथार्थ से विच्छेद को दर्शाते हैं और प्रायः मनोविक्षिप्तिरोधी औषधियों के प्रति सकारात्मक अनुक्रिया करते हैं। इसके विपरीत, ऋणात्मक लक्षण किसी सामान्य मानसिक क्षमता के अभाव को दर्शाते हैं। धनात्मक लक्षण अधिक नाटकीय होते हैं और प्रायः संकट के समय अधिक स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं।

218. (D) दमित सामग्री चेतना में उभरने का खतरा पैदा कर रही है।
मनोगत्यात्मक मॉडल के अनुसार चिंता एक आंतरिक चेतावनी संकेत है। फ्रायड का मानना था कि जब हमारे अचेतन मन में दबी हुई अस्वीकार्य इच्छाएं, स्मृतियाँ या भयावह आवेग 'अहं' की रक्षा प्रणालियों को खंडित कर सचेत मन में आने का प्रयास करते हैं, तो व्यक्ति को एक अज्ञात भय या चिंता अनुभव होती है। यह स्थिति दर्शाती है कि व्यक्ति के मस्तिष्क के भीतर एक गहरा संघर्ष चल रहा है। चिकित्सा का उद्देश्य इन प्रच्छन्न आवेगों को समझना और सुरक्षित रीति से सुलझाना है ताकि चिंता का मूल कारण समाप्त हो सके।

219. (A) सामाजिक या व्यावसायिक कार्यक्षमता में महत्वपूर्ण अक्षमता या कष्ट।
पदार्थ उपयोग विकार का निदान केवल किसी मादक पदार्थ के सामयिक उपयोग के आधार पर नहीं किया जा सकता। यह तब माना जाता है जब पदार्थ का सेवन व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों, जैसे उसके परिवार, जीविका या सामाजिक संबंधों को गंभीर रूप से क्षति पहुँचाने लगे। जब व्यक्ति पदार्थ पर से अपना नियंत्रण खो देता है और नकारात्मक परिणामों के उपरांत भी उसे त्याग नहीं पाता, तो इसे एक नैदानिक विकार के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। यह स्थिति व्यक्ति हेतु भारी कष्ट और अक्षमता का कारण बनती है।

220. (B) आईक्यू और अनुकूलन व्यवहार दोनों
बौद्धिक अक्षमता का सटीक आकलन करने हेतु विशेषज्ञ केवल बुद्धि-लब्धि अंकों पर निर्भर नहीं रहते। बुद्धि-लब्धि व्यक्ति की तर्क करने और सीखने की क्षमता को मापता है, जबकि अनुकूलन व्यवहार यह प्रेक्षित करता है कि वह दैनिक जीवन के व्यावहारिक कार्यों को कितनी कुशलता से संपादित करता है। इन दोनों पक्षों का एक साथ मूल्यांकन करना

हैं। इसका उद्देश्य भय के स्थान पर शांति की प्रतिक्रिया को प्रतिस्थापित करना है। यह पूर्णतः प्रेक्षणीय व्यवहार और नवीन अधिगम पर केंद्रित तकनीक है जो प्रभावी सिद्ध होती है।

257. (B) द्विध्रुवी II विकार
द्विध्रुवी II विकार का निदान तब किया जाता है जब व्यक्ति न्यूनतम एक 'अल्प-उन्मादी' प्रकरण और एक 'गंभीर अवसादग्रस्त' प्रकरण का अनुभव करता है। अल्प-उन्माद में ऊर्जा और उत्साह संवर्धित होता है परंतु वह इतना तीव्र नहीं होता कि चिकित्सालय में भर्ती होने की आवश्यकता पड़े। हालाँकि, इस विकार में अवसाद के दौर अत्यंत गहरे और कष्टदायक होते हैं, जिससे व्यक्ति का जीवन पर्याप्त प्रभावित होता है। यह द्विध्रुवी I से भिन्न है क्योंकि इसमें कभी भी पूर्ण उन्माद की तीव्रता नहीं देखी जाती है, जो इसे विशिष्ट बनाती है।

258. (A) संबंधों में खतरों से उत्पन्न चिंता का सामना करना।
अंतर्वैयक्तिक मॉडल के अनुसार, अनेक मानसिक लक्षण वास्तव में व्यक्ति द्वारा सामाजिक असुरक्षा और संबंधों के तनाव से निपटने के प्रयास हैं। सुलिवन का मानना था कि जब हमारे रिश्तों में कलह या एकाकीपन संवर्धित होता है, तो हम अत्यधिक चिंता अनुभव करते हैं। इसी चिंता को न्यून करने हेतु हम अस्वस्थ व्यवहार के प्रतिरूप अपना लेते हैं, जो पश्चात में विकारों का रूप धारण कर लेते हैं। अतः, चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को दूसरों के साथ स्वस्थ और सुरक्षित रीति से जुड़ना सिखाना है ताकि आंतरिक चिंता न्यून हो सके।

259. (C) स्वयं या दूसरों को नुकसान पहुँचाने का जोखिम पैदा करता है।
असामान्यता को परिभाषित करने में "संकट" का मानदंड सर्वाधिक गंभीर माना जाता है क्योंकि यह सुरक्षा से संबद्ध है। इसमें वह व्यवहार सम्मिलित है जो व्यक्ति को स्वयं को क्षति पहुँचाने या दूसरों पर प्रहार करने हेतु प्रेरित करता है। नैदानिक रूप से, जब कोई व्यक्ति अपनी या दूसरों की जान हेतु संकट बन जाता है, तो उसे तत्काल हस्तक्षेप और उपचार की आवश्यकता होती है। यह मानदंड केवल व्यवहार की विचित्रता पर नहीं, अपितु उसके संभावित हिंसक परिणामों पर केंद्रित रहता है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

260. (D) I, II और III
व्यक्तित्व विकार को पहचानने हेतु कुछ बुनियादी मानदंडों का होना आवश्यक है। इसमें व्यक्ति के सोचने और अनुभव करने का एक ऐसा स्थायी प्रतिरूप होना चाहिए जो उसकी संस्कृति की अपेक्षाओं से अत्यंत भिन्न हो। यह प्रतिरूप लचीला नहीं अपितु अनम्य होता है और व्यक्ति के जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टिगोचर होता है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि व्यवहार के ये कठोर ढंग व्यक्ति हेतु गहरा कष्ट उत्पन्न करते हैं और उसकी सामाजिक या व्यावसायिक कार्यक्षमता को गंभीर रूप से बाधित करते हैं।

261. (C) शारीरिक स्थिति
बायोफीडबैक एक ऐसी वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति को उसके शरीर के भीतर होने वाली सूक्ष्म जैविक गतिविधियों की सूचना प्रदान की जाती है। इलेक्ट्रॉनिक मॉनिटर के माध्यम से व्यक्ति अपनी हृदय गति, रक्तचाप और मांसपेशियों के खिंचाव जैसी स्थितियों को प्रेक्षित कर सकता है। इस सूचना का उपयोग करके वह मानसिक प्रयासों के माध्यम से इन शारीरिक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करना सीखता है। यह तकनीक विशेष रूप से उन व्यक्तियों हेतु उपयोगी है जो तनाव और चिंता के कारण होने वाले शारीरिक लक्षणों से मुक्ति पाना चाहते हैं।

262. (D) बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार
संक्रमण का तीव्र भय और उसके प्रत्युत्तर में बार-बार हस्त प्रक्षालन बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार की एक उत्कृष्ट पहचान है। इस विकार में व्यक्ति को ऐसे अवांछित विचार आते हैं जिन्हें वह चाहकर भी अवरुद्ध नहीं कर पाता। इन विचारों से होने वाली अत्यधिक चिंता को न्यून करने हेतु वह एक ही कार्य को बार-बार दोहराने पर विवश हो जाता है। यद्यपि वह जानता है कि यह व्यवहार अत्यधिक है, परंतु वह उस विवशता के सम्मुख विवश अनुभव करता है, जो उसके दैनिक जीवन को पूर्णतः बाधित कर देती है।

263. (B) अविश्वास का एक व्यापक, दीर्घकालिक और अनम्य प्रतिरूप।
पैरानॉयड व्यक्तित्व विकार में व्यक्ति दूसरों के प्रति अत्यधिक शंकित रहता है, जो उसके व्यक्तित्व का एक स्थायी अंग होता है। उसे बिना किसी ठोस कारण के आभास होता है कि अन्य लोग उसे क्षति पहुँचाना या धोखा देना चाहते हैं। यह अविश्वास केवल कतिपय स्थितियों तक सीमित नहीं रहता, अपितु यह व्यापक और कठोर होता है। यह सिज़ोफ्रेनिया की भाँति किसी एक प्रकरण के रूप में नहीं आता, अपितु व्यक्ति के सोचने और दूसरों के साथ व्यवहार करने का एक पुराना और स्थायी ढंग होता है जो परिवर्तित नहीं होता।

264. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सिज़ोफ्रेनिया को 'विचार विकार' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसका सर्वाधिक गहरा प्रभाव व्यक्ति की सोचने की प्रक्रिया और उसकी सामग्री पर पड़ता है। व्यामोह और विभ्रम जैसे लक्षण इस तथ्य के प्रमाण हैं कि व्यक्ति का मस्तिष्क सूचनाओं को उचित रीति से संसाधित नहीं कर पा रहा है। उसके विचार असंबद्ध हो जाते हैं और वह तर्कसंगत निष्कर्ष निकालने की क्षमता खो देता है। चूँकि विचार ही हमारे व्यवहार और यथार्थ की धारणा का आधार हैं, अतः इस विकार में संपूर्ण व्यक्तित्व विखंडित हो जाता है।

265. (D) मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा
मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा का सर्वाधिक केंद्रीय उद्देश्य अचेतन मन की गहराइयों को उजागर करना है। सिगमंड फ्रायड का मानना था कि हमारे दमित भय, अनसुलझे द्वंद्व और बचपन की स्मृतियाँ हमारे अचेतन मन में संचित रहती हैं और हमारे व्यवहार को प्रभावित करती हैं। चिकित्सा के दौरान इन प्रच्छन्न तथ्यों को सचेत मन में लाया जाता है ताकि व्यक्ति अपनी समस्याओं की जड़ तक पहुँच सके। जब एक बार अचेतन द्वंद्व सचेत जागरूकता में आ जाते हैं, तो व्यक्ति उन्हें सुलझाकर मानसिक शांति और स्वास्थ्य प्राप्त कर सकता है।

लिए विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित करता है।

20. तर्कसंगत-भावनात्मक A-B-C मॉडल में निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में व्यवस्थित करें:

I. भावनात्मक और व्यवहारिक परिणाम (C)

II. सक्रिय करने वाली घटना (A)

III. घटना के बारे में विश्वास (B)

(A) I, II, III

(B) II, I, III

(C) II, III, I

(D) III, II, I

21. महाविद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रमों के संगठन के बारे में कौन-सा कथन सत्य है?

(A) निर्देशन कार्यक्रम पूरी तरह से नामित महाविद्यालय परामर्शदाता की उत्तरदायित्व हैं।

(B) ऐसे कार्यक्रमों को विशेष रूप से व्यावसायिक और करियर मार्गदर्शन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

(C) एक सफल कार्यक्रम के लिए संकाय, प्रशासन और छात्रों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है।

(D) निर्देशन कार्यक्रम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है।

22. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।

अभिकथन (A): टाइप 2 मधुमेह में, शरीर की कोशिकाएं इंसुलिन के प्रति प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया नहीं करती हैं।

कारण (R): टाइप 2 मधुमेह मुख्य रूप से एक स्वप्रतिरक्षित बीमारी है जिसके परिणामस्वरुप इंसुलिन उत्पादक कोशिकाओं का विनाश होता है।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।

(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।

(C) A सही है लेकिन R गलत है।

(D) A गलत है लेकिन R सही है।

23. प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का उच्च सेवन, निम्न शारीरिक गतिविधि और दीर्घकालिक तनाव वाली जीवनशैली किसके लिए एक प्रमुख कारक होने की सर्वाधिक संभावना है?

(A) टाइप 1 मधुमेह

(B) बिना किसी पर्यावरणीय प्रभाव के मुख्य रूप से आनुवंशिक विकार

(C) केवल तीव्र संक्रामक रोग

(D) हृदय रोग और टाइप 2 मधुमेह दोनों

24. परामर्श का एक मूल सिद्धांत यह है कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य है:

(A) व्यक्तिगत विकास, समस्या-समाधान या समायोजन चाहने वाले सभी व्यक्ति।

(B) केवल गंभीर मानसिक बीमारी वाले व्यक्ति।

(C) केवल वे छात्र जो अपने शैक्षणिक विषयों में अनुत्तीर्ण हो रहे हैं।

(D) व्यक्तियों को उनकी इच्छा के विरुद्ध अपना व्यवहार बदलने के लिए विवश करना।

25. एक विद्यालय परामर्शदाता जो छात्र के परीक्षण प्राप्तांकों, व्यक्तिगत इतिहास का विश्लेषण करता है और फिर छात्र को कार्रवाई के सर्वोत्तम मार्ग पर परामर्श देता है, मुख्य रूप से किस दृष्टिकोण का उपयोग कर रहा है?

(A) अनिर्देशात्मक परामर्श

(B) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श

(C) निर्देशात्मक परामर्श

(D) समुदाय आधारित हस्तक्षेप

26. निम्नलिखित में से कौन-सा विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम का प्राथमिक लक्ष्य नहीं है?

(A) छात्रों की बीमारियों के लिए चिकित्सा उपचार प्रदान करना।

(B) छात्रों के सर्वांगीण विकास को सुगम बनाना।

(C) शैक्षिक और व्यावसायिक योजना बनाने में छात्रों की सहायता करना।

(D) छात्रों को प्रभावी मुकाबला कौशल विकसित करने में सहायता करना।

27. सामुदायिक मनोविज्ञान हस्तक्षेपों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वे अक्सर केवल व्यक्तियों के बजाय सामाजिक प्रणालियों को लक्षित करते हैं।
2. वे रोकथाम के बजाय उपचार को प्राथमिकता देते हैं।
3. उनका उद्देश्य समुदाय के सदस्यों को परिवर्तन लाने के लिए सशक्त बनाना है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1 और 3

(D) 1, 2 और 3

28. हृदय रोग की प्रकृति का सबसे सटीक वर्णन इस प्रकार है:

(A) हृदय को प्रभावित करने वाली एक एकल, समान बीमारी।

(B) हृदय और रक्त वाहिकाओं को प्रभावित करने वाले विकारों का एक समूह।

(C) परिसंचरण तंत्र का विशेष रूप से संक्रामक रोग।

(D) ऐसी स्थिति जो केवल वृद्ध व्यक्तियों को प्रभावित करती है।

29. निर्देशात्मक और अनिर्देशात्मक परामर्श के बीच मुख्य अंतर इसमें निहित है:

(A) परामर्श सत्रों की अवधि।

(B) चिकित्सा से जुड़ी लागत।

(C) समाधान खोजने के लिए सेवार्थी बनाम परामर्शदाता पर रखी गई उत्तरदायित्व की मात्रा।

275. (C) बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार
मनोदशा विकार वे होते हैं जहाँ प्राथमिक समस्या व्यक्ति की भावनाओं या मनोदशा में होती है, जैसे अवसाद, द्विध्रुवी विकार और डिस्थायमिया। बाध्यकारी विचार-क्रिया विकार एक चिंता विकार है, न कि मनोदशा विकार। ओसीडी में मुख्य लक्षण हस्तक्षेप करने वाले भयावह विचार और उन्हें शांत करने हेतु किए जाने वाले अनुष्ठानिक व्यवहार होते हैं। यद्यपि ओसीडी से पीड़ित व्यक्ति उदासी अनुभव कर सकता है, परंतु नैदानिक वर्गीकरण में इसे चिंता और विवशता के साथ संबद्ध किया जाता है, जो इसे मनोदशा विकारों से पृथक करता है।

276. (D) I, II और III
मनोविश्लेषण, सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा और संज्ञानात्मक चिकित्सा समस्त मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर आधारित उपचार पद्धतियां हैं। मनोविश्लेषण अचेतन मन के द्वंद्वों को समझने पर बल देता है। सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा भावनाओं और आत्म-स्वीकृति के महत्व को उजागर करती है। संज्ञानात्मक चिकित्सा हमारे विचारों और विश्वासों को परिष्कृत करने पर ध्यान केंद्रित करती है। ये तीनों ही दृष्टिकोण मानते हैं कि मानसिक समस्याओं का समाधान व्यक्ति के मन के अनुभवों, स्मृतियों और सोच को परिवर्तित कर किया जा सकता है।

277. (C) एनहेडोनिया
एनहेडोनिया मनोदशा विकारों, विशेष रूप से गहरे अवसाद का एक केंद्रीय और कष्टदायक लक्षण है। इसमें व्यक्ति उन गतिविधियों में भी कोई हर्ष या उत्साह अनुभव नहीं कर पाता जो उसे पूर्व में अत्यंत प्रिय थीं। उसका जीवन पूर्णतः नीरस हो जाता है और वह अपने परिवेश की खुशियों के प्रति उदासीन हो जाता है। यह स्थिति न केवल मानसिक अपितु शारीरिक सुख का अनुभव करने की क्षमता को भी न्यून कर देती है। एनहेडोनिया व्यक्ति को सामाजिक रूप से पृथक कर देता है और जीवन को पूर्णतः निरर्थक अनुभव कराता है।

278. (D) कायिक व्यामोह
कायिक व्यामोह में व्यक्ति को दृढ़ परंतु त्रुटिपूर्ण विश्वास होता है कि उसके शारीरिक अंगों में कुछ अत्यंत भयावह या असामान्य घटित हो रहा है। उदाहरण हेतु, यह मानना कि आंतरिक अंग क्षय हो रहे हैं या शरीर में कोई परजीवी प्रविष्ट हो गया है। यद्यपि चिकित्सक और चिकित्सा परीक्षण यह प्रमाणित करते हैं कि शरीर पूर्णतः स्वस्थ है, फिर भी व्यक्ति अपने इस भयावह विश्वास पर अडिग रहता है। यह यथार्थ की धारणा में एक गंभीर विक्षोभ है जो व्यक्ति के दैनिक जीवन और मानसिक शांति को विनष्ट कर देता है।

279. (A) संबंधों का एक विकार।
अंतर्वैयक्तिक मॉडल मनोविकृति विज्ञान को एक ऐसे दृष्टिकोण से देखता है जहाँ मानसिक समस्याएं व्यक्ति के एकाकीपन की समस्या नहीं, अपितु उसके सामाजिक संबंधों की विफलता हैं। यह मॉडल मानता है कि त्रुटिपूर्ण संप्रेषण, रिश्तों के संघर्ष और सामाजिक समर्थन का अभाव ही व्यक्ति को मानसिक रूप से रुग्ण बनाता है। अतः, उपचार का मुख्य लक्ष्य संबंधों के उन प्रतिरूपों को परिष्कृत करना है जो कष्ट उत्पन्न कर रहे हैं। जब व्यक्ति दूसरों के साथ स्वस्थ ढंग से जुड़ना सीख जाता है, तो लक्षण भी स्वतः न्यून हो जाते हैं।

280. (B) बाध्यकारी क्रिया
द्वार अवरुद्ध है या नहीं, इसे बार-बार परीक्षण करने की तीव्र इच्छा और उसके अनुरूप कार्य करना एक बाध्यकारी क्रिया का स्पष्ट उदाहरण है। यह व्यवहार ओसीडी का अंग है जहाँ व्यक्ति एक ही कृत्य को बार-बार संपादित करने हेतु आंतरिक रूप से विवश अनुभव करता है। यद्यपि वह जानता है कि एक बार परीक्षण करना पर्याप्त था, फिर भी वह उस अनियंत्रित चिंता को शांत करने हेतु ऐसा करता है। यह व्यवहार व्यक्ति का अत्यधिक समय और ऊर्जा विनष्ट करता है और उसके सामान्य कार्यों को बाधित करता है।

281. (C) व्यवहारवादी मॉडल
व्यवहारवादी मॉडल नैदानिक मनोविज्ञान में वस्तुनिष्ठता और वैज्ञानिक प्रेक्षण पर बल देता है। यह मॉडल अचेतन मन या प्रच्छन्न विचारों के स्थान पर केवल उन्हीं व्यवहारों पर ध्यान केंद्रित करता है जिन्हें सीधे प्रेक्षित और मापा जा सकता है। यह मानता है कि हमारे व्यवहार हमारे पर्यावरण से प्राप्त पुरस्कारों और दंडों के माध्यम से निर्मित होते हैं। अतः, उपचार का लक्ष्य उन पर्यावरणीय कारकों को परिवर्तित करना और नवीन सकारात्मक प्रतिक्रियाएं सिखाना होता है जो व्यक्ति को बेहतर ढंग से कार्य करने में सहायक होती हैं।

282. (D) कम से कम एक अल्प-उन्मादी प्रकरण और एक गंभीर अवसादग्रस्त प्रकरण।
द्विध्रुवी II विकार का निदान करने हेतु नैदानिक रूप से दो प्रकार के प्रकरणों का होना अनिवार्य है। व्यक्ति को अपने जीवन में न्यूनतम एक बार अल्प-उन्माद का अनुभव होना चाहिए, जो ऊर्जा में वृद्धि की अवस्था है। साथ ही, उसे न्यूनतम एक गंभीर अवसादग्रस्त प्रकरण का भी सामना करना पड़ा हो। यह इसे द्विध्रुवी I से पृथक बनाता है क्योंकि इसमें कभी पूर्ण उन्माद नहीं होता। यह एक गंभीर स्थिति है जहाँ मनोदशा के दो विपरीत ध्रुवों के मध्य व्यक्ति का जीवन अस्थिर बना रहता है, जो कष्टकारी है।

283. (A) भय और अविश्वास
व्यामोह की जड़ें सदैव गहरे भय और दूसरों के प्रति व्यापक अविश्वास में प्रच्छन्न होती हैं। व्यक्ति को निरंतर यह संकट अनुभव होता है कि अन्य व्यक्ति उसके विरुद्ध क्षति पहुँचाने या अपमानित करने का षड्यंत्र रच रहे हैं। यह असुरक्षा की भावना इतनी तीव्र होती है कि वह किसी भी सामान्य घटना को संदेह की दृष्टि से देखता है। यह कोई क्षणिक शंका नहीं, अपितु सोचने का एक स्थायी और दोषपूर्ण ढंग है। इसी भय और अविश्वास के कारण व्यक्ति समाज से विरक्त हो जाता है और सदैव रक्षात्मक मुद्रा में रहता है।

284. (B) यह हमेशा खराब पालन-पोषण के कारण होता है।
बौद्धिक अक्षमता के कारणों के विषय में यह कहना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि यह सदैव त्रुटिपूर्ण पालन-पोषण का परिणति है। वास्तव में, यह स्थिति मुख्य रूप से जैविक और पर्यावरणीय

अध्याय 09
स्वास्थ्य, परामर्श एवं सामुदायिक मनोविज्ञान

1. निम्नलिखित में से कौन स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली को सबसे सटीक रूप से परिभाषित करता है?
   (A) ऐसी जीवनशैली जो केवल नैदानिक बीमारी से बचने पर केंद्रित हो।
   (B) अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाने या बनाए रखने के लिए व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला व्यवहार।
   (C) किसी के जीवन में किसी भी शारीरिक जोखिम कारक की पूर्ण अनुपस्थिति।
   (D) कल्याण के लिए विशेष रूप से पेशेवर चिकित्सा हस्तक्षेपों पर निर्भर रहना।

2. निम्नलिखित में से कौन-सी टाइप 1 मधुमेह की प्राथमिक विशेषता है?
   (A) यह एक स्वप्रतिरक्षित स्थिति है जहाँ शरीर अपनी ही अग्न्याशय कोशिकाओं पर हमला करता है।
   (B) यह मुख्य रूप से शरीर की कोशिकाओं में विकसित इंसुलिन प्रतिरोध के कारण होता है।
   (C) यह आमतौर पर जीवनशैली कारकों के कारण 40 वर्ष से अधिक उम्र के वयस्कों में विकसित होता है।
   (D) इसे केवल निरंतर आहार और व्यायाम के माध्यम से प्रबंधित और ठीक किया जा सकता है।

3. परामर्श दृष्टिकोण के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
   कथन I: निर्देशात्मक परामर्श में, परामर्शदाता समस्या का निदान करने और समाधान सुझाने में सक्रिय भूमिका निभाता है।
   कथन II: अनिर्देशात्मक परामर्श सेवार्थी की आत्म-निर्देशन और विकास की क्षमता पर बल देता है।
   (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
   (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
   (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
   (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

4. मोटापे और संबंधित बीमारियों की शुरुआत को रोकने के लिए नियमित व्यायाम और स्वस्थ खान-पान को बढ़ावा देने वाला एक समुदाय-व्यापी अभियान किस प्रकार के हस्तक्षेप का उदाहरण है?
   (A) द्वितीयक रोकथाम
   (B) तृतीयक रोकथाम
   (C) तीव्र हस्तक्षेप
   (D) प्राथमिक रोकथाम

5. निम्नलिखित में से किसे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक व्यवहार नहीं माना जाता है?
   (A) नींद की दीर्घकालिक कमी
   (B) अत्यधिक मदिरा सेवन
   (C) नियमित, मध्यम व्यायाम करना
   (D) गतिहीन जीवनशैली

6. निर्देशन और परामर्श का कौन-सा सिद्धांत सेवार्थी के व्यवहार या विश्वासों की परवाह किए बिना उसे अंतर्निहित मूल्य और गरिमा के साथ व्यवहार करने पर बल देता है?
   (A) गोपनीयता का सिद्धांत
   (B) स्वीकृति का सिद्धांत
   (C) विशेषज्ञता का सिद्धांत
   (D) निर्देशन का सिद्धांत

7. परीक्षा से पहले उच्च स्तर की चिंता का अनुभव करने वाले छात्र को स्कूल परामर्शदाता द्वारा विश्राम तकनीक और संज्ञानात्मक पुनर्संरचना कौशल सिखाया जाता है। इस हस्तक्षेप को सबसे सटीक रूप से इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है:
   (A) एक प्राथमिक रोकथाम कार्यक्रम
   (B) एक निर्देशन-मुक्त स्कूल नीति
   (C) विशुद्ध रूप से शैक्षणिक हस्तक्षेप
   (D) एक द्वितीयक रोकथाम कार्यक्रम

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
   अभिकथन (A): स्वास्थ्य और बीमारी को समझने के लिए जैव-चिकित्सीय मॉडल की तुलना में जैव-मनो-सामाजिक मॉडल को अधिक व्यापक माना जाता है।
   कारण (R): जैव-मनो-सामाजिक मॉडल स्वास्थ्य में जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों को एकीकृत करता है, जबकि जैव-चिकित्सीय मॉडल विशेष रूप से बीमारी के शारीरिक या रोगजनक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है।
   (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) A सही है लेकिन R गलत है।
   (D) A गलत है लेकिन R सही है।

9. तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा (RET) के सिद्धांतों के अनुसार, मनोवैज्ञानिक विक्षोभ मुख्य रूप से किसके कारण होता है?

वर्गीकरण में इन दोनों श्रेणियों को उनके लक्षणों और उपचार की प्रकृति के आधार पर स्पष्ट रूप से पृथक रखा गया है।

294. (B) हृदय गति या मांसपेशियों का तनाव।
चिंता का उपचार करने हेतु बायोफीडबैक का उपयोग करते समय, विशेषज्ञ उन शारीरिक संकेतों को मापता है जो सीधे तनाव से संबद्ध होते हैं। हृदय गति का संवर्धित होना और मांसपेशियों में खिंचाव चिंता के स्पष्ट शारीरिक संकेत हैं। सेंसर के माध्यम से जब सेवार्थी इन परिवर्तनों को तात्कालिक रूप से देखता है, तो वह समझ पाता है कि उसकी मानसिक स्थिति शरीर को कैसे प्रभावित करती है। पश्चात वह शिथिलन तकनीकों के माध्यम से इन लक्षणों को नियंत्रित करना सीखता है, जिससे उसकी शारीरिक और मानसिक घबराहट न्यून होती है।

295. (D) बार-बार यह जांचना कि चूल्हा बंद है या नहीं।
बाध्यकारी क्रिया वह पुनरावृत्ति वाला व्यवहार है जो व्यक्ति किसी भयावह विचार से होने वाली चिंता को न्यून करने हेतु करता है। ईंधन के चूल्हे को बार-बार जाँचना इसी का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यहाँ चूल्हा खुला होने का भय एक 'बाध्यकारी विचार' है, और उस भय को शांत करने हेतु बार-बार पाकशाला में जाना 'बाध्यकारी क्रिया' है। यद्यपि व्यक्ति जानता है कि वह पूर्व में परीक्षण कर चुका है, परंतु उसे अपनी बेचैनी को न्यून करने हेतु इस कृत्य को बार-बार दोहराना ही पड़ता है, जो कष्टकारी है।

296. (A) विचार
सिज़ोफ्रेनिया को मुख्य रूप से एक 'विचार विकार' माना जाता है क्योंकि इसका सर्वाधिक गहरा प्रभाव व्यक्ति की सोचने की प्रक्रिया और यथार्थ की धारणा पर पड़ता है। इसमें व्यक्ति के विचार असंबद्ध हो जाते हैं और वह व्यामोह एवं विभ्रम जैसी स्थितियों का अनुभव करता है, जहाँ उसके विश्वास और प्रत्यक्ष ज्ञान यथार्थ से मेल नहीं खाते। यद्यपि इसमें मनोदशा और व्यवहार भी प्रभावित होते हैं, परंतु सोचने की क्षमता में आने वाला यह बुनियादी विक्षोभ ही इस विकार की सर्वाधिक प्रमुख और नैदानिक पहचान मानी जाती है।

297. (B) अत्यधिक उत्साह, ऊर्जा और चिड़चिड़ापन।
उन्माद मनोदशा विकार की एक ऐसी अवस्था है जो अवसाद के पूर्णतः विपरीत होती है। इसमें व्यक्ति अत्यधिक ऊर्जा, असामान्य रूप से उच्च मनोदशा और उत्साह अनुभव करता है। वह अत्यंत तीव्र गति से संवाद करता है, उसे निद्रा की आवश्यकता न्यून प्रतीत होती है और वह प्रायः भव्य योजनाएं निर्मित करता है। इसके साथ ही, कई बार वह अत्यंत चिड़चिड़ा भी हो सकता है यदि उसकी गतिविधियों में कोई अवरोध उत्पन्न करे। यह स्थिति व्यक्ति को आवेगी और जोखिमपूर्ण व्यवहार करने हेतु प्रेरित करती है, जो समस्यामूलक है।

298. (A) विकासात्मक अवधि
बौद्धिक अक्षमता के नैदानिक मानदंडों के अनुसार, यह अनिवार्य है कि बौद्धिक और अनुकूलन कमियों का प्रादुर्भाव व्यक्ति की विकासात्मक अवधि के दौरान हो। इस अवधि को सामान्यतः जन्म से लेकर 18 वर्ष की आयु तक स्वीकार किया जाता है। यह समय सीमा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाती है कि समस्या मस्तिष्क के प्रारंभिक विकास के दौरान उद्भूत हुई है। यदि समान लक्षण वयस्कता में किसी चोट या व्याधि के कारण प्रकट होते हैं, तो उन्हें बौद्धिक अक्षमता के स्थान पर अन्य संज्ञानात्मक विकारों की श्रेणी में रखा जाता है।

299. (C) सेवार्थी के कुअनुकूलक विचार प्रतिरूप को बदलना।
संज्ञानात्मक चिकित्सा में चिकित्सक और सेवार्थी एक सहयोगी दल की भाँति कार्य करते हैं। उनका मुख्य लक्ष्य उन दोषपूर्ण और तर्कहीन विचार प्रतिरूपों की पहचान करना है जो सेवार्थी के मानसिक कष्ट का मूल कारण हैं। चिकित्सक सेवार्थी को इन नकारात्मक विचारों को चुनौती प्रदान करना और उनके स्थान पर अधिक यथार्थवादी एवं स्वस्थ विचार अपनाना सिखाता है। यह प्रक्रिया इस सिद्धांत पर आधारित है कि जब व्यक्ति के सोचने का ढंग परिवर्तित होता है, तो उसके भावनात्मक कष्ट स्वतः ही न्यून हो जाते हैं और व्यवहार परिष्कृत होता है।

300. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
नैदानिक मनोविज्ञान के विभिन्न मॉडल मानसिक विकारों को भिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषित करते हैं। मनोगत्यात्मक मॉडल अचेतन द्वंद्वों को आधार मानता है, जबकि व्यवहारवादी मॉडल कुअनुकूलक व्यवहारों को सीखी गई प्रतिक्रियाओं के रूप में देखता है। संज्ञानात्मक मॉडल विचार प्रतिरूपों और विश्वासों की भूमिका पर बल देता है, वहीं अंतर्वैयक्तिक मॉडल संबंधों की गुणवत्ता को मानसिक स्वास्थ्य का निर्धारक मानता है। ये विविध दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक समस्याओं के समग्र बोध और प्रभावी उपचार हेतु व्यापक आधार प्रदान करते हैं।

(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

41. समुदाय में उच्च रक्तचाप का शीघ्र पता लगाने के लिए स्क्रीनिंग कार्यक्रम किसका एक रूप है?
(A) प्राथमिक रोकथाम
(B) तृतीयक रोकथाम
(C) द्वितीयक रोकथाम
(D) प्रारंभिक (Primordial) रोकथाम

42. तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा में, "वाद-विवाद" (disputing) का तात्पर्य किस प्रक्रिया से है?
(A) सेवार्थी के तर्कहीन विश्वासों को चुनौती देना।
(B) सेवार्थी के जीवन विकल्पों के बारे में बहस करना।
(C) सेवार्थी की भावनात्मक स्थिति की उपेक्षा करना।
(D) तालमेल बनाने के लिए सेवार्थी द्वारा कही गई हर बात से सहमत होना।

43. निम्नलिखित में से कौन हृदय रोग का एक प्रकार नहीं है?
(A) कोरोनरी धमनी रोग
(B) मस्तिष्काघात (स्ट्रोक)
(C) हृदय विफलता
(D) टाइप 2 मधुमेह

44. विद्यालय में एक सफल निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा चरण आवश्यक है?
(A) केवल शैक्षणिक शिक्षण में उपाधि रखने वाले परामर्शदाता को नियुक्त करना।
(B) छात्रों और कर्मचारियों के बीच आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण आयोजित करना।
(C) सभी छात्रों के लिए सभी परामर्श सत्र अनिवार्य करना।
(D) कार्यक्रम के उद्देश्यों को छात्रों से गुप्त रखना।

45. अनिर्देशात्मक चिकित्सा की विशिष्ट प्रगति को क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करें:
I. सेवार्थी को अपनी भावनाओं और व्यवहारों के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है।
II. परामर्शदाता बिना शर्त सकारात्मक सम्मान का वातावरण स्थापित करता है।
III. सेवार्थी अपने वास्तविक स्वरूप की खोज के लिए सुरक्षित महसूस करता है।
IV. सेवार्थी आत्म-बोध की दिशा में कार्य करना प्रारंभ कर देता है।
(A) II, III, I, IV
(B) I, II, III, IV
(C) IV, III, II, I
(D) III, I, II, IV

46. शिक्षण संस्थानों में निर्देशन और परामर्श की मूलभूत आवश्यकता क्या है?
(A) अनुशासन लागू करना और दुर्व्यवहार करने वाले छात्रों को दंडित करना।
(B) छात्र के जीवन में माता-पिता की भूमिका को प्रतिस्थापित करना।
(C) यह सुनिश्चित करना कि सभी छात्र विज्ञान और प्रौद्योगिकी में करियर चुनें।
(D) प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत, सामाजिक और शैक्षणिक क्षमता को अधिकतम करना।

47. एक स्वास्थ्य मॉडल जो मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों की उपेक्षा करते हुए विशेष रूप से बीमारी, रोगजनकों और जैविक असामान्यताओं पर ध्यान केंद्रित करता है, उसे किस रूप में जाना जाता है?
(A) जैव-चिकित्सीय मॉडल
(B) जैव-मनो-सामाजिक मॉडल
(C) समग्र मॉडल
(D) कल्याण (वेलनेस) मॉडल

48. निम्नलिखित व्यवहारों पर विचार कीजिए:
1. तंबाकू धूम्रपान
2. फलों और सब्जियों से भरपूर आहार लेना
3. दैनिक ध्यान का अभ्यास करना
उपरोक्त में से कौन-सा/से स्वास्थ्य-प्रवर्धक के रूप में वर्गीकृत किया गया है?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

49. सामुदायिक मनोविज्ञान में, एक हस्तक्षेप जिसका उद्देश्य पहले से स्थापित दीर्घकालिक बीमारी के नकारात्मक प्रभाव और अशक्तता को कम करना है, कहलाता है:
(A) प्राथमिक रोकथाम
(B) तृतीयक रोकथाम
(C) द्वितीयक रोकथाम
(D) सार्वभौमिक रोकथाम

50. टाइप 1 और टाइप 2 मधुमेह के बीच मुख्य अंतर उनके इसमें निहित है:
(A) अंतर्निहित कारण और रोगजनन।
(B) इंसुलिन थेरेपी का उपयोग करके प्राथमिक उपचार।
(C) मापने योग्य रक्त शर्करा के स्तर पर प्रभाव।
(D) जीवन काल के दौरान प्रारंभ होने की आयु।

51. ई.जी. विलियमसन सर्वाधिक प्रसिद्ध रूप से किस परामर्श दृष्टिकोण से जुड़े हैं?
(A) अनिर्देशात्मक परामर्श
(B) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
(C) निर्देशात्मक परामर्श
(D) गेस्टाल्ट चिकित्सा

(A) बाल्यावस्था के दौरान होने वाली कष्टकारी घटनाएं।
(B) त्रुटिपूर्ण जटिल तंत्रिका-संचारक प्रणाली।
(C) विशिष्ट जीवन घटनाओं के संबंध में तर्कहीन विश्वास।
(D) दूसरों से बिना शर्त सकारात्मक सम्मान की कमी।

10. विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रमों की आवश्यकता के बारे में कौन-सा कथन असत्य है?
(A) इन्हें केवल अपचारी छात्रों की समस्याओं को हल करने के लिए निर्मित किया गया है।
(B) ये छात्रों को शैक्षणिक, व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में सहायता करते हैं।
(C) ये छात्रों को सुविज्ञ करियर विकल्प चुनने में सहायता करते हैं।
(D) इनका उद्देश्य सकारात्मक और सहायक विद्यालयी वातावरण को बढ़ावा देना है।

11. हृदय रोगों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उच्च रक्तचाप एक प्रमुख जोखिम कारक है।
2. ये विशेष रुप से आनुवंशिक कारकों के कारण होते हैं।
3. इनके प्रबंधन में जीवनशैली में बदलाव की कोई भूमिका नहीं है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 3
(D) केवल 2 और 3

12. निर्देशन के संदर्भ में, महाविद्यालय में आवश्यकता आकलन का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) खराब शैक्षणिक रिकॉर्ड वाले छात्रों को अनुशासित करना।
(B) छात्र जनसंख्या की विशिष्ट निर्देशन और परामर्श आवश्यकताओं की पहचान करना।
(C) शिक्षण संकाय के प्रदर्शन का मूल्यांकन करना।
(D) पाठ्येतर गतिविधियों के लिए छात्रों का चयन करना।

13. कार्ल रोजर्स द्वारा विकसित परामर्श दृष्टिकोण, जिसे सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा के रूप में भी जाना जाता है, किसका एक उदाहरण है?
(A) निर्देशात्मक परामर्श
(B) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
(C) अनिर्देशात्मक परामर्श
(D) संकलनात्मक (Eclectic) परामर्श

14. एथेरोस्क्लेरोसिस, जो कई हृदय रोगों में एक प्रमुख प्रक्रिया है, का तात्पर्य है:
(A) गतिविधि के दौरान रक्तचाप में अचानक, अस्थायी गिरावट।
(B) तनाव के कारण अनियमित हृदय गति या अतालता।
(C) लंबे समय तक उपयोग से हृदय की मांसपेशियों का क्षीण होना।
(D) पट्टिका (plaque) जमने के कारण धमनियों का कठोर और संकुचित होना।

15. सूची I (अवधारणा) को सूची II (उदाहरण/विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I (अवधारणा)
P. प्राथमिक रोकथाम
Q. द्वितीयक रोकथाम
R. निर्देशात्मक परामर्श
S. स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार।

सूची II (उदाहरण/विवरण)
1. मधुमेह के लिए प्रारंभिक जांच
2. नियमित शारीरिक गतिविधि
3. परामर्शदाता प्रत्यक्ष समाधान प्रदान करता है
4. विद्यालय-व्यापी धूम्रपान विरोधी अभियान।

(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

16. सामुदायिक मनोविज्ञान में द्वितीयक रोकथाम की परिभाषित विशेषता कौन-सी है?
(A) किसी विकार को होने से ही रोकना।
(B) प्रारंभिक अवस्था में समस्याओं की पहचान करना और उनका उपचार करना।
(C) एक दीर्घकालिक विकार के स्थायी प्रभाव को कम करना।
(D) संपूर्ण जनसंख्या में समग्र कल्याण को बढ़ावा देना।

17. "A-B-C" मॉडल किस परामर्श दृष्टिकोण का केंद्र है?
(A) अनिर्देशात्मक परामर्श
(B) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
(C) निर्देशात्मक परामर्श
(D) मनोविश्लेषणात्मक परामर्श

18. इंसुलिन प्रतिरोध किस स्थिति की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) टाइप 2 मधुमेह
(B) टाइप 1 मधुमेह
(C) विशेष रुप से पहली तिमाही के दौरान गर्भकालीन मधुमेह
(D) सभी प्रकार के हृदय रोग

19. निम्नलिखित में से कौन अनिर्देशात्मक दृष्टिकोण में परामर्शदाता की भूमिका का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(A) एक विशेषज्ञ प्राधिकारी जो सेवार्थी की समस्या की पहचान और निदान करता है।
(B) एक शिक्षक जो सेवार्थी को तर्कसंगत तरीके से सोचने का निर्देश देता है।
(C) एक सुविधादाता जो सेवार्थी के आत्म-अन्वेषण के लिए एक सुरक्षित और स्वीकार्य वातावरण प्रदान करता है।
(D) एक मार्गदर्शक जो इस प्रक्रिया के माध्यम से सेवार्थी के

कारकों के सम्मिश्रण से उद्भूत होती है। इसमें आनुवंशिक विकार, गर्भावस्था के दौरान माता का रुग्ण स्वास्थ्य, जन्म के समय होने वाली जटिलताएं या बचपन में मस्तिष्क को पहुँचने वाली क्षति जैसे गंभीर कारण सम्मिलित होते हैं। पालन-पोषण का ढंग विकास को प्रभावित कर सकता है, परंतु वह बौद्धिक अक्षमता का प्राथमिक नैदानिक कारण नहीं है।

285. (C) आत्ममुग्ध
आत्ममुग्ध व्यक्तित्व विकार की मुख्य पहचान व्यक्ति की स्वयं को अत्यंत महान समझने की भावना और प्रशंसा की निरंतर पिपासा है। ऐसे व्यक्ति मानते हैं कि वे विशिष्ट हैं और केवल अन्य विशिष्ट व्यक्ति ही उन्हें समझ सकते हैं। उनमें समानुभूति का भारी अभाव होता है, जिसका अर्थ है कि वे दूसरों की भावनाओं या आवश्यकताओं को समझने और उनका सम्मान करने में असमर्थ होते हैं। उनका संपूर्ण व्यवहार स्व-केंद्रित होता है, जिससे उनके व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों में गहरा तनाव और द्वंद्व उत्पन्न होता है।

286. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में समानुभूति का तात्पर्य चिकित्सक द्वारा सेवार्थी की आंतरिक दुनिया को यथार्थ रूप में अनुभव करना है। चिकित्सक अपनी धारणाओं को पृथक रखकर विश्व को सेवार्थी के दृष्टिकोण से देखने का प्रामाणिक प्रयास करता है। जब सेवार्थी को यह आभास होता है कि उसकी भावनाओं को गहराई से और बिना किसी निर्णय के समझा जा रहा है, तो वह अधिक सुरक्षित अनुभव करता है। यही सुरक्षित अनुभव उसे आत्म-अन्वेषण और सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में अग्रसर होने हेतु प्रेरित करता है।

287. (D) श्रवण विभ्रम
सिज़ोफ्रेनिया के धनात्मक लक्षण वे होते हैं जो किसी व्यक्ति के सामान्य अनुभवों में एक असामान्य तत्व सम्मिल्लित करते हैं। श्रवण विभ्रम, जिसमें व्यक्ति को ऐसी ध्वनियाँ सुनाई देती हैं जो वास्तव में वहां उपस्थित नहीं हैं, इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। ये ध्वनियाँ उसे आदेश दे सकती हैं या उसका अपमान कर सकती हैं। इसके विपरीत, भावात्मक शून्यता, इच्छाशक्ति की कमी और वाणी की अल्पता ऋणात्मक लक्षण हैं क्योंकि वे सामान्य मानसिक कार्यों के अभाव को दर्शाते हैं। ये लक्षण यथार्थ से विच्छेद का संकेत हैं।

288. (A) पदार्थ उपयोग विकार
पदार्थ उपयोग विकार एक ऐसी अवस्था है जहाँ व्यक्ति किसी मादक पदार्थ का सेवन इस रीति से करता है कि वह उसके लिए हानिकारक और नियंत्रण से बाहर हो जाता है। इसमें मादकता और निवर्तन जैसे लक्षण सम्मिलित हो सकते हैं, परंतु मुख्य तथ्य पदार्थ के उपयोग का वह कुअनुकूलक प्रतिरूप है जो व्यक्ति के स्वास्थ्य, संबंधों और कार्य में बाधा उत्पन्न करता है। जब व्यक्ति नकारात्मक परिणामों के उपरांत भी पदार्थ का त्याग नहीं कर पाता, तो इसे नैदानिक रूप से एक विकार माना जाता है जो तत्काल चिकित्सा की मांग करता है।

289. (B) श्रवण
सिज़ोफ्रेनिया से ग्रस्त रोगियों में श्रवण विभ्रम सर्वाधिक सामान्य और बार-बार प्रेक्षित किया जाने वाला लक्षण है। इसमें रोगी को स्पष्ट रूप से ऐसी ध्वनियाँ सुनाई देती हैं जो अन्य कोई नहीं सुन सकता। ये ध्वनियाँ प्रायः उससे संवाद करती हैं, उसके कृत्यों पर टिप्पणी करती हैं या उसे कतिपय कार्य करने के निर्देश प्रदान करती हैं। यद्यपि दृश्य या स्पर्श संबंधी विभ्रम भी हो सकते हैं, परंतु ध्वनियों का श्रवण इस विकार की नैदानिक पहचान का सर्वाधिक प्रमुख और कष्टदायक भाग माना जाता है जो रोगी को यथार्थ से पृथक करता है।

290. (A) खतरा
असामान्यता को परिभाषित करने हेतु मनोवैज्ञानिकों ने "चार डी" का एक ढाँचा निर्मित किया है: विचलन, कष्ट, अक्षमता और खतरा। 'खतरा' उस व्यवहार को संदर्भित करता है जो स्वयं व्यक्ति या उसके परिवेश के लोगों हेतु संकटपूर्ण या हिंसक हो सकता है। जब कोई व्यवहार इन चारों मानदंडों को पूर्ण करता है, तो उसे नैदानिक रूप से असामान्य स्वीकार किया जाता है। यह ढाँचा यह सुनिश्चित करता है कि केवल विचित्र होने के आधार पर किसी को अस्वस्थ न माना जाए, अपितु उसके प्रभाव और संभावित जोखिम को भी देखा जाए।

291. (C) बार-बार, अप्रत्याशित पैनिक आक्रमण।
पैनिक विकार की सर्वाधिक मुख्य विशेषता तीव्र भय के आकस्मिक और अप्रत्याशित हमलों का होना है। ये हमले बिना किसी पूर्व सूचना के आते हैं और व्यक्ति को ऐसा अनुभव कराते हैं जैसे उसकी मृत्यु होने वाली है या उसका श्वास अवरुद्ध हो रहा है। केवल एक हमला होना पैनिक विकार नहीं है; अपितु जब ये हमले बार-बार होते हैं और व्यक्ति सदैव आगामी हमले के भय में रहने लगता है, तभी इसे पैनिक विकार का निदान प्रदान किया जाता है। यह अनिश्चितता व्यक्ति के सामान्य जीवन को गंभीर रूप से प्रभावित करती है।

292. (C) सिगमंड फ्रायड
असामान्य व्यवहार के मनोगत्यात्मक मॉडल के प्रणेता सिगमंड फ्रायड थे। उन्होंने यह क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किया कि हमारी मानसिक समस्याओं की जड़ें हमारे अचेतन मन और बचपन के अनसुलझे द्वंद्वों में निहित होती हैं। फ्रायड ने मनोविश्लेषण की नींव रखी, जो यह मानती है कि अचेतन इच्छाएं और स्मृतियाँ हमारे वर्तमान व्यवहार को नियंत्रित करती हैं। उनके इस मॉडल ने नैदानिक मनोविज्ञान को नवीन दिशा प्रदान की और यह स्पष्ट किया कि कैसे हमारे अतीत के अनुभव हमारे वर्तमान मानसिक स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करते हैं।

293. (C) गंभीर अवसादग्रस्तता विकार
गंभीर अवसादग्रस्तता विकार एक मनोदशा विकार है, न कि व्यक्तित्व विकार। व्यक्तित्व विकार व्यवहार के वे स्थायी और अनम्य प्रतिरूप हैं जो किशोरावस्था से ही व्यक्ति के स्वभाव का अंग बन जाते हैं, जैसे पैरानॉयड या स्किज़ोइड व्यक्तित्व विकार। इसके विपरीत, अवसाद एक ऐसी स्थिति है जहाँ व्यक्ति की भावनाओं और ऊर्जा के स्तर में भारी गिरावट आती है, जिसे प्रकरणों के रूप में प्रेक्षित किया जाता है। नैदानिक

(D) चिकित्सा के सहायक के रूप में औषधियों का उपयोग।

30. टाइप 1 मधुमेह के मुख्य कारणों में से एक है:
(A) बाल्यावस्था के दौरान उच्च शर्करा वाला आहार।
(B) शारीरिक व्यायाम की कमी।
(C) दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक तनाव।
(D) एक स्वप्रतिरक्षित प्रतिक्रिया।

31. सूची I (परामर्श दृष्टिकोण) को सूची II (प्रमुख प्रवर्तक) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I (परामर्श दृष्टिकोण)
P. निर्देशात्मक
Q. अनिर्देशात्मक
R. तर्कसंगत-भावनात्मक
S. सामुदायिक मनोविज्ञान।
सूची II (प्रमुख प्रवर्तक)
1. कार्ल रोजर्स
2. अल्बर्ट एलिस
3. ई.जी. विलियमसन
4. सामाजिक प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित करना।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-2, R-4, S-1

32. मनोविज्ञान में 'स्वास्थ्य मॉडल' शब्द का तात्पर्य है:
(A) शिक्षण के लिए उपयोग किए जाने वाले मानव शरीर की एक भौतिक प्रतिकृति।
(B) स्वास्थ्य और बीमारी के घटकों को समझने के लिए एक सैद्धांतिक रूपरेखा।
(C) स्वास्थ्य में सुधार की गारंटी देने वाली एक विशिष्ट आहार योजना।
(D) एक प्रसिद्ध व्यक्ति जो स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देता है।

33. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म त्रुटिपूर्ण सुमेलित है?
(A) टाइप 1 मधुमेह - इंसुलिन आश्रित
(B) निर्देशात्मक परामर्श - सेवार्थी-केंद्रित
(C) टाइप 2 मधुमेह - इंसुलिन प्रतिरोध
(D) तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा - A-B-C मॉडल

34. बच्चों में भविष्य की व्यवहार संबंधी समस्याओं को रोकने के उद्देश्य से प्रभावी पालन-पोषण कौशल पर नए माता-पिता के लिए एक कार्यशाला किसका उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) प्राथमिक रोकथाम
(B) तृतीयक रोकथाम
(C) द्वितीयक रोकथाम
(D) प्रतिक्रियाशील हस्तक्षेप

35. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा (RET) चिकित्सा का एक अत्यधिक निर्देशात्मक रूप है।
कारण (R): RET में, चिकित्सक सेवार्थी के तर्कहीन विश्वासों का सक्रिय रूप से विरोध करता है और उन्हें सोचने के अधिक तर्कसंगत मार्ग सिखाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

36. निम्नलिखित में से कौन निर्देशन और परामर्श का सिद्धांत नहीं है?
(A) निर्देशन सभी के लिए है।
(B) निर्देशन व्यक्तिगत भिन्नताओं पर आधारित है।
(C) निर्देशन एक सतत प्रक्रिया होनी चाहिए।
(D) निर्देशन एक आदेशात्मक और बलपूर्वक की जाने वाली प्रक्रिया है।

37. महाविद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम के आयोजन का एक प्रमुख घटक शामिल है:
(A) परामर्शदाता तक पहुंच केवल शीर्ष प्रदर्शन करने वाले छात्रों तक सीमित करना।
(B) समय बचाने के लिए केवल समूह निर्देशन पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) कार्यक्रम के लिए स्पष्ट उद्देश्यों और लक्ष्यों को स्थापित करना।
(D) संकाय सहयोग के बिना स्वतंत्र रूप से कार्यक्रम संचालित करना।

38. हृदय रोग के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा एक परिवर्तनीय जोखिम कारक है?
(A) आयु
(B) उच्च रक्तचाप
(C) पारिवारिक इतिहास
(D) लिंग

39. अनिर्देशात्मक परामर्श का मूल दर्शन सेवार्थी की किस क्षमता पर गहरा विश्वास है?
(A) विशेषज्ञ की सलाह का पालन करने की क्षमता।
(B) आत्म-बोध और समस्या-समाधान की प्रवृत्ति।
(C) अपनी तर्कहीनता को स्वीकार करने की इच्छा।
(D) अपनी बीमारी का निदान करने की क्षमता।

40. स्वास्थ्य जीवनशैली के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: स्वास्थ्य के लिए हानिकारक जीवनशैली मधुमेह जैसी दीर्घकालिक बीमारियों के जोखिम को बढ़ा सकती है।
कथन II: स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली में वे व्यवहार शामिल हैं जो शारीरिक और मानसिक कल्याण को बढ़ाते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

266. (A) उन्माद के इतिहास के बिना उदास मनोदशा की एक लंबी अवधि।
एकध्रुवीय अवसाद वह अवस्था है जहाँ व्यक्ति केवल भावनात्मक विस्तार के 'न्यून' छोर का अनुभव करता है। इसमें व्यक्ति को निरंतर गहरी उदासी, निराशा और ऊर्जा के अभाव का आभास होता है, परंतु उसे कभी भी उन्माद या अत्यधिक उत्साह के प्रकरण नहीं होते। यह इसे द्विध्रुवी विकार से पृथक बनाता है जहाँ मनोदशा के दोनों ध्रुव दृष्टिगोचर होते हैं। एकध्रुवीय अवसाद में व्यक्ति का संपूर्ण जीवन केवल अवसादग्रस्त लक्षणों के इर्द-गिर्द घूमता है, जो उसके लिए अत्यंत पीड़ादायक और कष्टकारी होता है।

267. (C) संज्ञानात्मक
संज्ञानात्मक चिकित्सा में चिकित्सक का मुख्य उपकरण तार्किक प्रश्न पूछना है ताकि सेवार्थी अपनी सोच की परीक्षा कर सके। जब चिकित्सक पूछता है कि "क्या इसे देखने का कोई अन्य यथार्थवादी ढंग है?", तो वह सेवार्थी को उसके नकारात्मक पूर्वाग्रहों से निर्गत करने का प्रयास कर रहा होता है। इसका उद्देश्य सेवार्थी को यह सिखाना है कि वह अपने विचारों का वैज्ञानिक रीति से परीक्षण करे और काल्पनिक भय के स्थान पर तथ्यों पर आधारित सोच विकसित करे। यथार्थवादी सोच ही मानसिक स्वास्थ्य की कुंजी है।

268. (A) P-2, Q-4, R-3, S-1
मादक पदार्थों के उपयोग से संबद्ध विभिन्न संकल्पनाएँ व्यसन के चक्र को स्पष्ट करती हैं। सहिष्णुता का अर्थ है वही प्रभाव प्राप्त करने हेतु पदार्थ की मात्रा संवर्धित करना। निवर्तन वे कष्टदायक लक्षण हैं जो सेवन बंद करने पर उद्भूत होते हैं। निर्भरता एक ऐसी व्यापक स्थिति है जहाँ शरीर और मस्तिष्क उस पदार्थ के दास हो जाते हैं और अनुकूलन विकसित कर लेते हैं। दुरुपयोग वह कुअनुकूलक प्रतिरूप है जहाँ व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों की उपेक्षा कर पदार्थ का सेवन करता है, जिससे उसके जीवन में भारी अक्षमता पैदा होती है।

269. (D) क्रियाप्रसूत अनुकूलन जहाँ परिहार को नकारात्मक रूप से सुदृढ़ किया जाता है।
व्यवहारवादी मॉडल के अनुसार, दुर्भीति इसलिए बनी रहती है क्योंकि व्यक्ति उस भयकारी वस्तु से पलायन करने लगता है। जब वह बचता है, तो उसकी चिंता तत्क्षण न्यून हो जाती है, जो उसे एक मानसिक राहत प्रदान करती है। इस प्रक्रिया को 'नकारात्मक सुदृढ़ीकरण' कहा जाता है। राहत का यह आभास व्यक्ति को भविष्य में भी उस वस्तु से बचने हेतु और अधिक प्रोत्साहित करता है। इसी परिहार के कारण उसे कभी यह ज्ञात नहीं हो पाता कि उसका भय वास्तव में निराधार है, जिससे दुर्भीति स्थायी स्वरुप ग्रहण कर लेती है।

270. (B) अल्प बौद्धिक अक्षमता
अल्प बौद्धिक अक्षमता का निदान तब किया जाता है जब व्यक्ति का बुद्धि-लब्धि प्राप्तांक लगभग 50 से 70 के मध्य होता है और उसे दैनिक कार्यों में स्वल्प कठिनाई होती है। इस स्तर के व्यक्ति उचित शैक्षिक समर्थन के साथ लेखन-पठन सीख सकते हैं और वयस्क होने पर व्यावसायिक कौशल प्राप्त कर सकते हैं। वे प्रायः समाज में स्वतंत्र रूप से रहने में सक्षम होते हैं, परंतु उन्हें जटिल समस्याओं या तनावपूर्ण परिस्थितियों में मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। यह बौद्धिक अक्षमता का सर्वाधिक सामान्य स्तर है।

271. (A) चिकित्सक सेवार्थी को स्वीकार करता है, चाहे उसका व्यवहार या भावनाएं कुछ भी हों।
सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में "बिना शर्त सकारात्मक सम्मान" का अर्थ है कि चिकित्सक सेवार्थी को एक मनुष्य के रूप में पूर्ण रूप से स्वीकार करता है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि चिकित्सक सेवार्थी के प्रत्येक त्रुटिपूर्ण व्यवहार का समर्थन करता है, अपितु वह बिना किसी निर्णय के सेवार्थी के अनुभव और भावनाओं को मूल्य प्रदान करता है। यह पूर्ण स्वीकृति ही एक ऐसा सुरक्षित मनोवैज्ञानिक स्थान निर्मित करती है जहाँ सेवार्थी अपनी कमियों को स्वीकार कर आत्म-सुधार की दिशा में निर्भय होकर अग्रसर हो सकता है।

272. (B) विभ्रम; व्यामोह
विभ्रम और व्यामोह यथार्थ से विच्छेद के दो पृथक रूप हैं। विभ्रम एक संवेदी विक्षोभ है, जहाँ व्यक्ति ऐसी वस्तुएं देखता या सुनता है जो वास्तव में वहां उपस्थित नहीं हैं। इसके विपरीत, व्यामोह एक विचार संबंधी विक्षोभ है, जहाँ व्यक्ति बिना किसी प्रमाण के किसी त्रुटिपूर्ण तथ्य पर दृढ़ विश्वास कर लेता है, जैसे यह विचार करना कि अन्य लोग उसके विरुद्ध हैं। संक्षेप में, विभ्रम हमारी इंद्रियों का भ्रम है और व्यामोह हमारे सोचने की प्रक्रिया का दोष है। ये दोनों ही गंभीर मानसिक विक्षोभ के महत्वपूर्ण सूचक हैं।

273. (B) एक विशिष्ट वस्तु पर केंद्रित
दुर्भीति और सामान्यीकृत चिंता के मध्य का सर्वाधिक बड़ा अंतर उनके केंद्र बिंदु में निहित है। दुर्भीति में भय एक अत्यंत स्पष्ट और विशिष्ट वस्तु या स्थिति, जैसे उच्च स्थान या जंतुओं, तक सीमित होता है। व्यक्ति केवल उसी विशिष्ट स्थिति में भय अनुभव करता है। इसके विपरीत, सामान्यीकृत चिंता विकार में चिंता किसी एक विषय पर नहीं होती, अपितु वह संपूर्ण जीवन और दैनिक घटनाओं पर विस्तृत होती है। दुर्भीति का भय तीव्र परंतु लक्षित होता है, जबकि सामान्यीकृत चिंता एक निरंतर बना रहने वाला व्यापक मानसिक भार है।

274. (A) व्यवहारवादी
व्यवहारवादी मॉडल सेवार्थी के वर्तमान व्यवहार और उसे प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय कारकों पर सर्वाधिक ध्यान केंद्रित करता है। अन्य मॉडलों, जैसे मनोगत्यात्मक या अंतर्वैयक्तिक मॉडल के विपरीत, यह अतीत की स्मृतियों, बचपन के अनुभवों या अचेतन मन की गहराईयों में गमन करना आवश्यक नहीं मानता। इसका मुख्य उद्देश्य यह प्रेक्षित करना है कि वर्तमान में व्यक्ति का व्यवहार किन पुरस्कारों या दंडों द्वारा संचालित है। उपचार का लक्ष्य केवल उन वर्तमान परिस्थितियों को परिवर्तित करना है ताकि व्यक्ति नवीन व्यवहार सीख सके।

52. नीचे दो कथन दिए गए, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): निर्देशन का एक प्रमुख सिद्धांत यह है कि यह एक सतत प्रक्रिया है।
कारण (R): निर्देशन केवल एक ही समय पर प्रदान किया जाना चाहिए, जैसे कि महाविद्यालय प्रवेश के दौरान, जिसके बाद इसकी आवश्यकता नहीं रहती।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

53. महाविद्यालय के लिए निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने में निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक उपयुक्त प्रारंभिक चरण है?
(A) तुरंत दस परामर्शदाताओं को नियुक्त करना।
(B) महंगे मनोवैज्ञानिक परीक्षण सॉफ्टवेयर क्रय करना।
(C) एक समिति गठित करना और गहन आवश्यकता आकलन करना।
(D) प्रत्येक छात्र के लिए अनिवार्य परामर्श सत्र की घोषणा करना।

54. "बिना शर्त सकारात्मक सम्मान" की अवधारणा किस चिकित्सीय दृष्टिकोण के केंद्र में है?
(A) निर्देशात्मक परामर्श
(B) अनिर्देशात्मक परामर्श
(C) तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा
(D) व्यवहार चिकित्सा

55. सूची I (शब्द) को सूची II (संबंधित स्थिति/अवधारणा) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I (शब्द)
P. उच्च रक्तचाप
Q. इंसुलिन
R. पट्टिका (plaque)
S. तर्कहीन विश्वास।
सूची II (संबंधित स्थिति/अवधारणा)
1. मधुमेह
2. तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा
3. हृदय रोग
4. एथेरोस्क्लेरोसिस।
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

56. सामुदायिक मनोविज्ञान के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) यह पूर्णतः आमने-सामने के चिकित्सा मॉडल का पालन करता है।
(B) यह समुदायों और समाजों के कल्याण पर ध्यान केंद्रित करता है।
(C) इसमें अक्सर हाशिए पर रहने वाले या जोखिम वाले समूहों के साथ कार्य करना शामिल होता है।
(D) यह एक प्रमुख रणनीति के रूप में रोकथाम पर बल देता है।

57. एक व्यक्ति का मानना है, "मैं जो कुछ भी करता हूँ उसमें मुझे पूर्ण होना चाहिए, और यदि मैं नहीं हूँ, तो मैं पूर्णतः विफल हूँ।" अल्बर्ट एलिस के अनुसार, यह किसका उदाहरण है?
(A) एक सक्रिय करने वाली घटना।
(B) एक तर्कसंगत विश्वास।
(C) एक तर्कहीन विश्वास।
(D) एक व्यवहारिक परिणाम।

58. टाइप 2 मधुमेह का कारण बहुआयामी है, लेकिन यह सुदृढ़ रूप से किससे जुड़ा है?
(A) मोटापा और शारीरिक निष्क्रियता जैसे जीवनशैली कारक।
(B) शैशवावस्था में विषाणुजनित संक्रमण।
(C) अग्न्याशय के विरुद्ध एक स्वप्रतिरक्षित प्रतिक्रिया।
(D) इंसुलिन उत्पन्न करने की आनुवंशिक अक्षमता।

59. एक विद्यालय-आधारित कार्यक्रम जो सभी छात्रों को तनाव प्रबंधन कौशल सिखाता है, किसका उदाहरण है?
(A) तृतीयक हस्तक्षेप
(B) द्वितीयक हस्तक्षेप
(C) व्यक्तिगत परामर्श
(D) प्राथमिक हस्तक्षेप

60. निम्नलिखित में से कौन निर्देशात्मक परामर्श की प्रकृति की सबसे सटीक विशेषता बताता है?
(A) सेवार्थी सत्र का नेतृत्व करता है, और परामर्शदाता उसका अनुसरण करता है।
(B) परामर्शदाता को एक विशेषज्ञ के रूप में देखा जाता है जो समस्या की पहचान करता है और कार्रवाई का मार्ग सुझाता है।
(C) ध्यान सेवार्थी के अतीत के बाल्यावस्था के अनुभवों पर है।
(D) परामर्शदाता और सेवार्थी भावनाओं की खोज में समान प्रतिभागी हैं।

61. निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
1. उच्च रक्तचाप
2. उच्च कोलेस्ट्रॉल स्तर
3. धूम्रपान
उपरोक्त में से कौन हृदय रोग के प्रमुख कारण/जोखिम कारक हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3

(A) सेवार्थी के लिए दुख अनुभव करना।
(B) सेवार्थी को व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर परामर्श देना।
(C) सेवार्थी के अनुभव को सेवार्थी के दृष्टिकोण से समझना।
(D) पेशेवर दूरी बनाए रखना और भावनात्मक रूप से सम्मिलित न होना।

84. निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने में, 'मूल्यांकन सेवा' घटक में मुख्य रूप से शामिल है:
(A) छात्रों को परामर्श देना।
(B) छात्रों को नौकरियों में नियुक्त करना।
(C) कदाचार के लिए छात्रों को अनुशासित करना।
(D) छात्रों की क्षमताओं, रुचियों और विशेषताओं के बारे में सूचना एकत्र करना और उनकी व्याख्या करना।

85. निम्नलिखित में से कौन तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा का एक केंद्रीय सिद्धांत है?
(A) बाल्यावस्था के अचेतन संघर्ष सभी विक्षिप्तता की जड़ हैं।
(B) संपूर्ण व्यवहार सुदृढीकरण और दंड का परिणाम है।
(C) लोग घटनाओं से नहीं, बल्कि उनके प्रति अपने दृष्टिकोण से विक्षोभित होते हैं।
(D) मनुष्यों में आत्म-बोध की दिशा में एक जन्मजात प्रेरणा होती है।

86. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सीधा कारण नहीं है बल्कि खराब नियंत्रित मधुमेह की एक प्रमुख जटिलता है?
(A) अग्न्याशय की कोशिकाओं का स्वप्रतिरक्षित विनाश
(B) वृक्क रोग (नेफ्रोपैथी)
(C) इंसुलिन प्रतिरोध
(D) अग्न्याशय द्वारा इंसुलिन का उत्पादन

87. इनमें से कौन-सा स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) तनाव को रोकने के लिए सभी सामाजिक अंतःक्रियाओं से बचना।
(B) पूर्णतः विटामिन और पूरक आहारों पर निर्भर रहना।
(C) अत्यधिक, अस्थिर व्यायाम दिनचर्या में संलग्न होना।
(D) कल्याण को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण।

88. परामर्श सिद्धांतों के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: वैयक्तिकीकरण का सिद्धांत कहता है कि प्रत्येक सेवार्थी अद्वितीय है और उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए।
कथन II: गोपनीयता का सिद्धांत पूर्ण है और किसी भी परिस्थिति में इसका कोई अपवाद नहीं है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

89. मस्तिष्काघात (स्ट्रोक) एक प्रकार का हृदय रोग है जो तब होता है जब:
(A) ऑक्सीजन की कमी के कारण हृदय की मांसपेशियां मृत होने लगती हैं।
(B) रक्त शर्करा का स्तर भयावह रूप से उच्च स्तर तक बढ़ जाता है।
(C) मस्तिष्क के एक भाग में रक्त की आपूर्ति बाधित या कम हो जाती है।
(D) पैरों की धमनियां संकुचित हो जाती हैं।

90. महाविद्यालय निर्देशन कार्यक्रम के संदर्भ में, एक 'अभिविन्यास सेवा' किसके लिए निर्मित की गई है:
(A) नए छात्रों को महाविद्यालय के वातावरण में समायोजित होने में सहायता करना।
(B) वरिष्ठ छात्रों को रोजगार खोजने में सहायता करना।
(C) गंभीर मनोवैज्ञानिक विकारों वाले छात्रों के लिए गहन चिकित्सा प्रदान करना।
(D) आने वाले छात्रों के शैक्षणिक ज्ञान का परीक्षण करना।

91. निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
1. यह परामर्शदाता-प्रधान है।
2. यह मानता है कि सेवार्थी अपनी समस्या हल करने में असमर्थ है।
3. परामर्शदाता एक विशेषज्ञ निदानकर्ता है।

उपरोक्त में से कौन निर्देशात्मक परामर्श दृष्टिकोण की विशेषताएं हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

92. सामुदायिक मनोविज्ञान हस्तक्षेप का प्राथमिक लक्ष्य अक्सर होता है:
(A) पर्यावरण के अनुकूल होने के लिए व्यक्ति को परिवर्तित करना।
(B) व्यक्तियों को बेहतर सहायता देने के लिए पर्यावरण या सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तित करना।
(C) समुदाय के सभी सदस्यों को दीर्घकालिक मनोविश्लेषण प्रदान करना।
(D) विशेष रूप से संकट के जैविक कारणों पर ध्यान केंद्रित करना।

93. धूम्रपान जैसा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक व्यवहार परिवर्तित करना मुख्य रूप से कठिन है क्योंकि यह है:
(A) वास्तव में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं।
(B) स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा अनुशंसित।
(C) अक्सर अत्यधिक सुदृढ़ करने वाला और व्यसनी।
(D) उच्च सामाजिक स्थिति का सूचक।

(B) वसा को कीटोन बॉडी में तोड़ना।
(C) रक्त से ग्लूकोज को ऊर्जा के लिए उपयोग की जाने वाली कोशिकाओं में प्रवेश करने में सहायता करना।
(D) एड्रेनालिन के उत्पादन को उद्दीप्त करना।

74. आधुनिक महाविद्यालयों में निर्देशन की एक प्रमुख आवश्यकता छात्रों को किससे निपटने में सहायता करना है:
(A) बढ़ता शैक्षणिक दबाव, प्रतिस्पर्धा और विविध करियर विकल्प।
(B) एक अत्यधिक सरल और तनाव मुक्त शैक्षणिक वातावरण।
(C) किसी भी व्यक्तिगत या सामाजिक चुनौतियों का अभाव।
(D) शिक्षा में तकनीक की अनुपस्थिति।

75. निम्नलिखित सेवाओं पर विचार कीजिए:
1. जॉब प्लेसमेंट सेवाएं प्रदान करना।
2. भावनात्मक संकट के लिए व्यक्तिगत परामर्श देना।
3. नए छात्रों के लिए अभिविन्यास (ओरिएंटेशन) कार्यक्रम आयोजित करना।

उपरोक्त में से कौन महाविद्यालय में एक व्यापक निर्देशन कार्यक्रम के विशिष्ट घटक हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

76. "परामर्शदाता-केंद्रित" किस दृष्टिकोण का दूसरा नाम है?
(A) अनिर्देशात्मक परामर्श
(B) निर्देशात्मक परामर्श
(C) सेवार्थी-केंद्रित परामर्श
(D) संकलनात्मक परामर्श

77. निम्नलिखित में से कौन विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने का सिद्धांत नहीं है?
(A) कार्यक्रम छात्रों की आवश्यकताओं पर आधारित होना चाहिए।
(B) कार्यक्रम के लिए संपूर्ण विद्यालय कर्मचारियों के सहयोग की आवश्यकता होती है।
(C) कार्यक्रम एक पृथक गतिविधि होनी चाहिए, जो पाठ्यक्रम से अलग हो।
(D) कार्यक्रम में मूल्यांकन और सुधार के प्रावधान होने चाहिए।

78. टाइप 1 मधुमेह वाले व्यक्ति को आजीवन इंसुलिन थेरेपी की आवश्यकता होती है क्योंकि:
(A) उनके शरीर की कोशिकाएं उनके द्वारा उत्पादित इंसुलिन के प्रति प्रतिरोधी होती हैं।
(B) उनके आहार में अत्यधिक चीनी होती है।
(C) उनका व्यायाम स्तर अपर्याप्त है।
(D) उनका अग्न्याशय इंसुलिन का उत्पादन नहीं करता है।

79. सूची I (रोकथाम स्तर) को सूची II (कार्रवाई) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I (रोकथाम स्तर)
P. प्राथमिक
Q. द्वितीयक
R. तृतीयक
S. स्वास्थ्य संवर्धन।

सूची II (कार्रवाई)
1. मस्तिष्काघात रोगी के लिए पुनर्वास
2. 40 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं के लिए वार्षिक मैमोग्राम
3. सभी कर्मचारियों के लिए स्वस्थ पोषण पर कार्यशाला
4. समुदाय में नियमित व्यायाम को बढ़ावा देना।

(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

80. गतिहीन जीवनशैली को स्वास्थ्य के लिए एक महत्वपूर्ण हानिकारक व्यवहार माना जाता है क्योंकि यह सुदृढ़ रूप से किससे जुड़ा है:
(A) बेहतर हृदय स्वास्थ्य।
(B) मोटापा, मधुमेह और हृदय रोग का बढ़ा हुआ जोखिम।
(C) बेहतर मानसिक स्पष्टता और एकाग्रता।
(D) सुदृढ़ अस्थियां और मांसपेशियां।

81. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): सामुदायिक मनोविज्ञान हस्तक्षेप अक्सर व्यक्तियों और समूहों को सशक्त बनाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
कारण (R): सशक्तीकरण दृष्टिकोण यह मानता है कि आवश्यक संसाधन और सहायता दिए जाने पर लोग अपनी समस्याओं की पहचान कर सकते हैं और समाधान विकसित कर सकते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

82. प्राथमिक और द्वितीयक रोकथाम के बीच मूल अंतर यह है कि प्राथमिक रोकथाम का लक्ष्य _______ है, जबकि द्वितीयक रोकथाम का लक्ष्य _______ है।
(A) शुरुआत को रोकना; शीघ्र उपचार करना
(B) शीघ्र उपचार करना; शुरुआत को रोकना
(C) प्रभाव कम करना; शीघ्र उपचार करना
(D) शुरुआत को रोकना; प्रभाव कम करना

83. परामर्श के संदर्भ में, "सहानुभूति" (empathy) परामर्शदाता की किस क्षमता को संदर्भित करती है:

(D) 1, 2 और 3

62. परामर्श में गोपनीयता के सिद्धांत का अर्थ है:
(A) परामर्शदाता सेवार्थी की जानकारी किसी के भी साथ साझा कर सकता है।
(B) परामर्शदाता सेवार्थी को अपने स्वयं के सभी व्यक्तिगत रहस्य बताता है।
(C) सेवार्थी को परामर्शदाता की सलाह को गुप्त रखना चाहिए।
(D) विशिष्ट विधिक और नैतिक अपवादों को छोड़कर, सेवार्थी की जानकारी निजी रखी जाती है।

63. निम्नलिखित में से कौन-सा स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार है?
(A) नियमित आधार पर पर्याप्त नींद लेना
(B) गतिहीन जीवनशैली बनाए रखना
(C) संतृप्त वसा से भरपूर आहार का सेवन करना
(D) मादक द्रव्यों के सेवन में संलग्न होना

64. निर्देशन और परामर्श के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) निर्देशन हमेशा चिकित्सीय होता है, जबकि परामर्श निवारक होता है।
(B) निर्देशन एक व्यापक अवधारणा है जिसमें परामर्श इसकी सेवाओं में से एक के रूप में सम्मिलित है।
(C) निर्देशन केवल समूहों के लिए है, जबकि परामर्श केवल व्यक्तियों के लिए है।
(D) निर्देशन शिक्षकों द्वारा प्रदान किया जाता है, जबकि परामर्श विशेषज्ञों द्वारा प्रदान किया जाता है।

65. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): अनिर्देशात्मक परामर्श इस धारणा पर कार्य करता है कि सेवार्थी में अपनी समस्याओं को हल करने की अंतर्निहित क्षमता होती है।
कारण (R): अनिर्देशात्मक परामर्शदाता स्वीकृति और सहानुभूति का वातावरण प्रदान करता है, जो सेवार्थी के आत्म-अन्वेषण और विकास को सुगम बनाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

66. एक छात्र जो अभी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुआ है, सोचता है, "यह भयावह है, मैं पूर्णतः मूर्ख हूँ और मैं जीवन में हर चीज़ में असफल हो जाऊँगा।" RET के A-B-C मॉडल में, छात्र का विचार है:
(A) विश्वास (B)
(B) सक्रिय करने वाली घटना (A)
(C) परिणाम (C)
(D) वाद-विवाद (D)

67. विद्यालय में एक प्रभावी निर्देशन कार्यक्रम होना चाहिए:
(A) कठोर और अपरिवर्तनीय।
(B) केवल उन छात्रों के लिए उपलब्ध जो इसका अनुरोध करते हैं।
(C) एक सतत और व्यवस्थित रूप से आयोजित प्रक्रिया।
(D) विशेष रूप से विद्यालय प्रधानाचार्य द्वारा संचालित।

68. मधुमेह एक दीर्घकालिक स्थिति है जिसकी विशेषता है:
(A) रक्त शर्करा का लगातार निम्न स्तर।
(B) हृदय की रक्त को प्रभावी ढंग से पंप करने में अक्षमता।
(C) पट्टिका के कारण धमनियों का संकुचित होना।
(D) रक्त में ग्लूकोज का उच्च स्तर।

69. हृदयाघात (हार्ट अटैक) से उबरने वाले व्यक्तियों के लिए एक सामुदायिक सहायता समूह, जिसका उद्देश्य उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना और भविष्य की घटनाओं को रोकना है, किसका उदाहरण है?
(A) प्राथमिक रोकथाम
(B) द्वितीयक रोकथाम
(C) तृतीयक रोकथाम
(D) सार्वभौमिक रोकथाम

70. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) कार्ल रोजर्स - निर्देशात्मक परामर्श
(B) कार्ल रोजर्स - अनिर्देशात्मक परामर्श
(C) अल्बर्ट एलिस - अनिर्देशात्मक परामर्श
(D) ई.जी. विलियमसन - तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श

71. एक स्वास्थ्य मॉडल जो स्वास्थ्य को कल्याण की एक सकारात्मक स्थिति के रूप में देखता है, न कि केवल बीमारी की अनुपस्थिति के रूप में, और मन, शरीर तथा आत्मा के परस्पर प्रभाव पर बल देता है, कहलाता है:
(A) जैव-चिकित्सीय मॉडल
(B) न्यूनतावादी (Reductionist) मॉडल
(C) रोगजनक मॉडल
(D) समग्र या जैव-मनो-सामाजिक मॉडल

72. ई.जी. विलियमसन द्वारा प्रस्तावित निर्देशात्मक परामर्श के प्रमुख चरणों को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें:
I. संश्लेषण
II. निदान
III. विश्लेषण
IV. पूर्वानुमान
V. परामर्श/उपचार
(A) III, I, II, IV, V
(B) I, II, III, IV, V
(C) III, II, I, V, IV
(D) II, I, III, IV, V

73. शरीर में इंसुलिन की प्राथमिक भूमिका है:
(A) रक्त में ग्लूकोज के स्तर को बढ़ाना।

94. यह अवधारणा कि मनोवैज्ञानिक तनाव हृदय रोग जैसी शारीरिक बीमारी के विकास में योगदान दे सकता है, किसका एक केंद्रीय विचार है:
(A) जैव-चिकित्सीय मॉडल
(B) केवल रोगजनक मॉडल
(C) संक्रामक रोग मॉडल
(D) जैव-मनो-सामाजिक मॉडल

95. तर्कसंगत-भावनात्मक A-B-C मॉडल ढांचे के भीतर समस्या-समाधान के चरणों को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें:
I. तर्कहीन विश्वास का वाद-विवाद करना।
II. भावनात्मक/व्यवहारिक परिणाम की पहचान करना।
III. सक्रिय करने वाली घटना को पहचानना।
IV. एक नया, अधिक तर्कसंगत दर्शन अपनाना।
V. तर्कहीन विश्वास की पहचान करना।
(A) III, II, V, I, IV
(B) I, II, III, V, IV
(C) III, V, II, I, IV
(D) II, III, I, V, IV

96. निर्देशन की आवश्यकता के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक सटीक कथन है?
(A) निर्देशन केवल वंचित पृष्ठभूमि के व्यक्तियों के लिए आवश्यक है।
(B) निर्देशन एक सार्वभौमिक आवश्यकता है, जिसकी आवश्यकता सभी व्यक्तियों को उनके जीवन के विभिन्न चरणों में होती है।
(C) एक बार वयस्क हो जाने पर, व्यक्ति को निर्देशन की कोई आवश्यकता नहीं रहती।
(D) निर्देशन सीधे आदेश देने के समान है।

97. टाइप 1 मधुमेह का प्राथमिक कारण निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) गतिहीन जीवनशैली
(B) अग्न्याशय में बीटा कोशिकाओं का स्वप्रतिरक्षित विनाश
(C) उच्च वसा वाला आहार
(D) परिधीय ऊतकों में इंसुलिन प्रतिरोध

98. 'अनिर्देशात्मक' परामर्श दृष्टिकोण को किस रूप में भी जाना जाता है?
(A) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
(B) परामर्शदाता-केंद्रित चिकित्सा
(C) समस्या-केंद्रित चिकित्सा
(D) समाधान-केंद्रित चिकित्सा

99. सामुदायिक मनोविज्ञान में, 'सशक्तीकरण' (empowerment) किस प्रक्रिया को संदर्भित करती है?
(A) समुदाय के सदस्यों को प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता देना।
(B) समुदाय के लिए निर्णय लेना क्योंकि वे स्वयं ऐसा नहीं कर सकते।
(C) लोगों को अपने स्वयं के जीवन और समुदायों पर नियंत्रण और प्रभुत्व प्राप्त करने में सहायता करना।
(D) समुदायों को बाहरी विशेषज्ञों पर निर्भर रहने के लिए प्रोत्साहित करना।

100. सूची I (गतिविधि) को सूची II (हस्तक्षेप का प्रकार) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I (गतिविधि)
P. संपूर्ण कक्षा को विश्राम कौशल सिखाना
Q. परीक्षा की चिंता वाले छात्र की परामर्श देना
R. मधुमेह के रोगी को इंसुलिन में सहायता करना
S. पोस्टरों के माध्यम से स्वस्थ भोजन को बढ़ावा देना।
सूची II (हस्तक्षेप का प्रकार)
1. तृतीयक रोकथाम
2. द्वितीयक रोकथाम
3. प्राथमिक रोकथाम (विशिष्ट कौशल)
4. प्राथमिक रोकथाम (सामान्य सूचना)।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

101. किस स्वास्थ्य मॉडल की न्यूनतावादी होने और स्वास्थ्य पर सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रभावों को ध्यान में रखने में विफल रहने के लिए आलोचना की गई है?
(A) जैव-मनो-सामाजिक मॉडल
(B) समग्र स्वास्थ्य मॉडल
(C) जैव-चिकित्सीय मॉडल
(D) कल्याण मॉडल

102. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): टाइप 1 मधुमेह में शरीर इंसुलिन का उत्पादन करने में विफल रहता है।
कारण (R): ऐसा इसलिए है क्योंकि शरीर की अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली अग्न्याशय में इंसुलिन उत्पादक बीटा कोशिकाओं पर आक्रमण करती है और उन्हें नष्ट कर देती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

103. रोजर्स के अनुसार, चिकित्सीय परिवर्तन होने के लिए अनिर्देशात्मक परामर्शदाता को कौन-सी मूल शर्त प्रदान नहीं करनी चाहिए?
(A) सहानुभूति
(B) बिना शर्त सकारात्मक सम्मान
(C) अनुरूपता
(D) आधिकारिक निर्देश

104. "इलाज से बेहतर रोकथाम है" एक कहावत है जो किसके दर्शन को सबसे सटीक रूप से दर्शाती है:
(A) प्राथमिक और द्वितीयक रोकथाम
(B) तृतीयक हस्तक्षेप
(C) निर्देशात्मक परामर्श
(D) विशेष रूप से जैव-चिकित्सीय दृष्टिकोण

105. विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम के भीतर आयोजित की जाने वाली प्रमुख सेवाओं में निम्नलिखित में से कौन-सी सम्मिलित नहीं है?
(A) व्यक्तिगत विवरण सेवा
(B) सूचना सेवा
(C) दंडात्मक अनुशासनात्मक सेवा
(D) स्थापन (प्लेसमेंट) सेवा

106. एक व्यक्ति जो स्वास्थ्य जोखिमों को जानने के बावजूद धूम्रपान जारी रखता है, वह किन कारकों के कारण स्वास्थ्य के लिए हानिकारक व्यवहार में संलग्न हो सकता है:
(A) निकोटीन की लत और सामाजिक दबाव।
(B) फेफड़ों की क्षमता में सुधार करने की इच्छा।
(C) व्यवहार का कोई अल्पकालिक प्रतिफल न होना।
(D) धूम्रपान के लाभों के बारे में सूचना का अभाव।

107. मधुमेह के कारणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. टाइप 1 मुख्य रूप से एक स्वप्रतिरक्षित बीमारी है।
2. टाइप 2 मोटापा और निष्क्रियता जैसे जीवनशैली कारकों से सुदृढ़ रूप से जुड़ा हुआ है।
3. दोनों प्रकार बिल्कुल समान आनुवंशिक उत्परिवर्तन के कारण होते हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

108. तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य सेवार्थी की सहायता करना है:
(A) उनके बाल्यावस्था के आघातों की खोज करना।
(B) भावनात्मक संकट उत्पन्न करने वाले तर्कहीन विश्वासों को पहचानना और परिवर्तित करना।
(C) परामर्शदाता की जीवन समस्याओं को समझना।
(D) ध्यानात्मक आनंद की स्थिति प्राप्त करना।

109. उच्च रक्तचाप हृदय रोग के लिए एक प्रमुख जोखिम कारक है क्योंकि यह:
(A) रक्त शर्करा को भयावह रूप से कम कर देता है।
(B) हृदय में जीवाणु संक्रमण का प्रत्यक्ष परिणाम है।
(C) धमनियों की परत को क्षति पहुँचाता है और हृदय को अधिक कार्य करने के लिए विवश करता है।
(D) हृदय ऊतकों के स्वप्रतिरक्षित विनाश की ओर ले जाता है।

110. कौन-सा कथन "निर्देशन की आवश्यकता" को सबसे सटीक रूप से परिभाषित करता है?
(A) अभाव की वह स्थिति जिसे केवल दुर्बल व्यक्ति ही अनुभव करते हैं।
(B) जीवन के सभी निर्णय किसी विशेषज्ञ द्वारा लिए जाने की आवश्यकता।
(C) मनोवैज्ञानिक औषधियों के लिए एक औपचारिक अनुरोध।
(D) बुद्धिमानीपूर्ण चयन और समायोजन करने में सहायता के लिए सार्वभौमिक मानवीय आवश्यकता।

111. निम्नलिखित परामर्श दृष्टिकोणों के विकास को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें:
I. अनिर्देशात्मक चिकित्सा (कार्ल रोजर्स)
II. मनोविश्लेषण (सिगमंड फ्रायड)
III. तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा (अल्बर्ट एलिस)
IV. निर्देशात्मक परामर्श (ई.जी. विलियमसन)
(A) II, IV, I, III
(B) I, II, III, IV
(C) IV, III, II, I
(D) III, I, IV, II

112. उन लोगों की सहायता के उद्देश्य से एक समुदाय-आधारित हस्तक्षेप, जो पहले से ही मधुमेह से पीड़ित हैं ताकि वे अपनी स्थिति को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर सकें और जटिलताओं को रोक सकें, एक है:
(A) प्राथमिक रोकथाम कार्यक्रम
(B) तृतीयक रोकथाम कार्यक्रम
(C) द्वितीयक रोकथाम कार्यक्रम
(D) स्वास्थ्य संवर्धन अभियान

113. विलियमसन द्वारा पहचाने गए निर्देशात्मक परामर्श दृष्टिकोण में छह चरण विश्लेषण, संश्लेषण, निदान, पूर्वानुमान, परामर्श और ______ हैं:
(A) वाद-विवाद
(B) अनुवर्ती (Follow-up)
(C) विरेचन
(D) आत्म-बोध

114. टाइप 1 और टाइप 2 मधुमेह की प्रकृति में एक मुख्य अंतर यह है कि टाइप 1 की विशेषता _____ है, जबकि टाइप 2 की विशेषता _____ है।
(A) पूर्ण इंसुलिन की कमी; सापेक्ष इंसुलिन की कमी और प्रतिरोध
(B) गहरा इंसुलिन प्रतिरोध; प्राकृतिक रूप से उत्पादित इंसुलिन की पूर्ण कमी
(C) अंतर्निहित विषाणुजनित उत्पत्ति; प्रणालीगत संक्रमणों की विशिष्ट जीवाणु उत्पत्ति
(D) संभावित रूप से उपचार योग्य प्रकृति; चयापचय अवस्था

की स्थायी असाध्य प्रकृति

115. महाविद्यालय में एक निर्देशन कार्यक्रम जो छात्रों को पाठ्यक्रम चुनने और उनके शैक्षणिक मार्ग की योजना बनाने में सहायता करता है, वह किस प्रकार का मार्गदर्शन प्रदान कर रहा है?
(A) व्यक्तिगत निर्देशन
(B) व्यावसायिक निर्देशन
(C) शैक्षणिक निर्देशन
(D) सामाजिक निर्देशन

116. सूची I (स्वास्थ्य अवधारणा) को सूची II (उदाहरण/विशेषता) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I (स्वास्थ्य अवधारणा)
P. हानिकारक व्यवहार
Q. प्रवर्धक व्यवहार
R. हृदय रोग
S. डायबिटीज मेलिटस।
सूची II (उदाहरण/विशेषता)
1. उच्च रक्त ग्लूकोज
2. मस्तिष्काघात
3. गतिहीन जीवनशैली
4. संतुलित आहार।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

117. "निर्देशन सभी छात्रों के लिए है" सिद्धांत का तात्पर्य है कि:
(A) निर्देशन सेवाएं प्रत्येक छात्र के लिए अनिवार्य हैं।
(B) केवल सर्वाधिक प्रतिभाशाली छात्र ही निर्देशन के पात्र हैं।
(C) निर्देशन सेवाएं प्रत्येक छात्र के लिए उपलब्ध होनी चाहिए, न कि केवल समस्याओं वाले छात्रों के लिए।
(D) निर्देशन कक्षा शिक्षण का विकल्प है।

118. निम्नलिखित में से कौन मधुमेह के लिए द्वितीयक रोकथाम रणनीति का सर्वोत्तम उदाहरण है?
(A) शर्करा के जोखिमों के बारे में एक सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियान।
(B) जोखिम वाली जनसंख्या में उच्च रक्त शर्करा के लिए नियमित जांच।
(C) उन रोगियों के लिए एक सहायता समूह जिनका मधुमेह के कारण अंग-विच्छेदन हुआ है।
(D) टाइप 1 मधुमेह के टीके पर शोध।

119. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): सामुदायिक मनोविज्ञान का ध्यान अक्सर उपचार के बजाय रोकथाम पर होता है।
कारण (R): समस्याओं को बड़े पैमाने पर होने से रोकना उनके विकसित होने के बाद व्यक्तिगत रूप से उपचार करने की तुलना में अधिक प्रभावी और कुशल है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

120. तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श में, चिकित्सक की भूमिका का सबसे सटीक वर्णन इस प्रकार है:
(A) एक शिक्षक और प्रेरक।
(B) एक निष्क्रिय और चिंतनशील श्रोता।
(C) सेवार्थी के अचेतन का सह-अन्वेषक।
(D) बिना शर्त गर्मजोशी और स्वीकृति प्रदान करने वाला।

121. कोरोनरी हृदय रोग, जो हृदय रोग का एक सामान्य प्रकार है, प्रत्यक्ष रूप से किसके कारण होता है:
(A) रक्त शर्करा में अचानक वृद्धि।
(B) अग्न्याशय द्वारा इंसुलिन का उत्पादन करने में विफलता।
(C) कोरोनरी धमनियों का संकुचित होना या अवरुद्ध होना।
(D) हृदय कपाटों (वाल्वों) पर एक स्वप्रतिरक्षित हमला।

122. निम्नलिखित में से कौन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक जीवनशैली की प्राथमिक विशेषता है?
(A) व्यवहारों का एक प्रतिरूप जो बीमारी और अकाल मृत्यु के जोखिम को बढ़ाता है।
(B) कल्याण को बढ़ाने वाले व्यवहारों में निरंतर संलग्नता।
(C) शारीरिक स्वास्थ्य के बजाय मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) चिकित्सा परामर्श का कड़ाई से पालन और नियमित जांच।

123. निम्नलिखित परामर्श दृष्टिकोणों पर विचार कीजिए:
1. निर्देशात्मक परामर्श
2. अनिर्देशात्मक परामर्श
3. तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
उपरोक्त दृष्टिकोणों में से कौन-सा/से प्रकृति में अधिक परामर्शदाता-केंद्रित या निर्देशात्मक माना जाता/जाते है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

124. विद्यालय या महाविद्यालय में औपचारिक निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने का प्रथम चरण सामान्यतः होता है:
(A) कार्यक्रम की सफलता का मूल्यांकन करना।
(B) संस्थान की आवश्यकताओं और संसाधनों की पहचान करना।
(C) विभिन्न निर्देशन गतिविधियों को लागू करना।
(D) कार्यक्रम के लिए पूर्णकालिक निदेशक नियुक्त करना।

125. कौन-सा कथन सामुदायिक मनोविज्ञान में प्राथमिक और द्वितीयक रोकथाम के बीच सटीक अंतर करता है?
(A) प्राथमिक रोकथाम सामान्य जनसंख्या को लक्षित करती है, जबकि द्वितीयक रोकथाम जोखिम वाले समूहों को लक्षित करती है।
(B) प्राथमिक रोकथाम उपचार पर केंद्रित है, जबकि द्वितीयक रोकथाम पुनर्वास पर केंद्रित है।
(C) प्राथमिक रोकथाम का उद्देश्य किसी समस्या को प्रारंभ होने से पूर्व रोकना है, जबकि द्वितीयक रोकथाम का उद्देश्य शीघ्र पहचान करना है।
(D) प्राथमिक रोकथाम मनोवैज्ञानिकों द्वारा की जाती है, जबकि द्वितीयक रोकथाम सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा की जाती है।

126. निम्नलिखित में से कौन निर्देशन का मूलभूत सिद्धांत नहीं है?
(A) यह व्यक्ति की गरिमा और मूल्य का सम्मान करता है।
(B) यह जीवन भर चलने वाली एक सतत प्रक्रिया है।
(C) यह व्यक्ति को स्वयं की सहायता करने में सक्षम बनाता है।
(D) इसे व्यक्ति पर थोपा जाना चाहिए।

127. कौन-सा परामर्श दृष्टिकोण "बिना शर्त सकारात्मक सम्मान," "सहानुभूति" और "अनुरुपता" की अवधारणाओं पर सर्वाधिक बल देता है?
(A) अनिर्देशात्मक
(B) तर्कसंगत-भावनात्मक
(C) निर्देशात्मक
(D) व्यवहारिक

128. इंसुलिन प्रतिरोध, जो टाइप 2 मधुमेह का एक प्रमुख कारक है, का अर्थ है कि:
(A) शरीर ने इंसुलिन का उत्पादन पूर्णतः बंद कर दिया है।
(B) शरीर की कोशिकाएं उत्पादित इंसुलिन के प्रति उचित प्रतिक्रिया नहीं देती हैं।
(C) व्यक्ति को इंसुलिन के इंजेक्शन लेने के प्रति मनोवैज्ञानिक प्रतिरोध है।
(D) अग्न्याशय इंसुलिन का एक त्रुटिपूर्ण, गैर-कार्यात्मक रूप उत्पन्न करता है।

129. स्वास्थ्य और बीमारी में जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों के जटिल तथा गतिशील परस्पर प्रभाव पर विचार करने वाला स्वास्थ्य मॉडल है:
(A) जैव-चिकित्सीय मॉडल
(B) जैव-मनो-सामाजिक मॉडल
(C) संक्रामक रोग मॉडल
(D) यांत्रिक (Mechanistic) मॉडल

130. कलंक को कम करने और सहायता मांगने को प्रोत्साहित करने के लिए निर्मित किया गया एक परिसर-व्यापी मानसिक स्वास्थ्य जागरुकता सप्ताह किस प्रकार के सामुदायिक मनोविज्ञान हस्तक्षेप का उदाहरण है?
(A) एक प्राथमिक रोकथाम कार्यक्रम
(B) एक द्वितीयक रोकथाम कार्यक्रम
(C) एक तृतीयक रोकथाम कार्यक्रम
(D) एक नैदानिक उपचार कार्यक्रम

131. विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम का प्राथमिक लक्ष्य है:
(A) समस्याग्रस्त छात्रों की पहचान करना और उन्हें निष्कासित करना।
(B) यह सुनिश्चित करना कि सभी छात्र पूर्ण ग्रेड प्राप्त करें।
(C) प्रत्येक छात्र के समग्र विकास में सहायता करना।
(D) शैक्षणिक निर्देश में शिक्षकों की भूमिका को प्रतिस्थापित करना।

132. जीवनशैली के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली में नियमित शारीरिक गतिविधि और संतुलित आहार सम्मिलित है।
कथन II: स्वास्थ्य के लिए हानिकारक जीवनशैली में दीर्घकालिक तनाव और मादक द्रव्यों का सेवन सम्मिलित हो सकता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

133. तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा के अनुसार, "अनिवार्यतावादी सोच" (musturbation) किसका संदर्भ देती है:
(A) उपलब्धि के लिए एक स्वस्थ प्रेरणा।
(B) एक सक्रिय जीवन घटना।
(C) यह तर्कहीन विश्वास कि किसी को कुछ करना ही चाहिए या वैसा होना ही चाहिए।
(D) विश्राम के लिए एक तकनीक।

134. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): निर्देशात्मक परामर्श को परामर्शदाता-केंद्रित परामर्श के रुप में भी जाना जाता है।
कारण (R): इस दृष्टिकोण में, परामर्शदाता समस्या का निदान करने और समाधान निर्धारित करने में प्रमुख भूमिका निभाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

135. एथेरोस्क्लेरोसिस किसका एक प्राथमिक अंतर्निहित कारण है:
(A) मधुमेह के प्रकार।
(B) स्वप्रतिरक्षित विकार।
(C) संक्रामक रोग।
(D) हृदय रोग।

136. सूची I (मनोवैज्ञानिक) को सूची II (मूल अवधारणा/दृष्टिकोण) के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I (मनोवैज्ञानिक)

P. कार्ल रोजर्स
Q. अल्बर्ट एलिस
R. ई.जी. विलियमसन
S. सामुदायिक मनोविज्ञान।

सूची II (मूल अवधारणा/दृष्टिकोण)

1. विश्वासों का A-B-C मॉडल
2. निदानकर्ता के रूप में परामर्शदाता
3. बिना शर्त सकारात्मक सम्मान
4. रोकथाम और सशक्तीकरण।

(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

137. निम्नलिखित में से कौन आधुनिक समाज में निर्देशन और परामर्श की आवश्यकता का सर्वोत्तम वर्णन करता है?

(A) यह एक पुरानी प्रथा है जिसकी अब आवश्यकता नहीं है।
(B) यह केवल उन व्यक्तियों के लिए आवश्यक है जिन्हें मनोरोग संबंधी स्थितियों का निदान किया गया है।
(C) व्यक्तियों को जटिल व्यक्तिगत, शैक्षिक और व्यावसायिक चुनौतियों से निपटने में सहायता करने के लिए यह उत्तरोत्तर आवश्यक होता जा रहा है।
(D) यह केवल धनवानों के लिए एक विलासिता है।

138. इनमें से कौन-सा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक व्यवहार का उदाहरण है?

(A) न्यूनतम शारीरिक गतिविधि के साथ गतिहीन जीवनशैली बनाए रखना।
(B) रेशायुक्त आहार का सेवन करना।
(C) नियमित तनाव-प्रबंधन अभ्यासों में संलग्न होना।
(D) प्रति रात्रि 7-8 घंटे की नींद लेना।

139. सहायता प्रदान करने के लिए अधिगम कठिनाइयों के प्रारंभिक लक्षणों वाले बच्चों की पहचान करने के लिए एक विद्यालय स्क्रीनिंग कार्यक्रम किसका एक रूप है:

(A) प्राथमिक रोकथाम।
(B) तृतीयक रोकथाम।
(C) सार्वभौमिक निर्देशन।
(D) द्वितीयक रोकथाम।

140. अनिर्देशात्मक दृष्टिकोण में, परामर्शदाता का प्राथमिक उपकरण है:

(A) मनोवैज्ञानिक परीक्षण में उनकी विशेषज्ञता।
(B) चिकित्सीय संबंध स्वयं।
(C) प्रत्यक्ष परामर्श देने की उनकी क्षमता।
(D) मनो-भेषजविज्ञान का उनका ज्ञान।

141. मधुमेह के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:

1. यह एक दीर्घकालिक चयापचय विकार है।
2. इसकी विशेषता उच्च रक्त ग्लूकोज है।
3. यह आंखों, वृक्क और तंत्रिकाओं को प्रभावित करने वाली दीर्घकालिक जटिलताओं का कारण बन सकता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

142. यह दर्शन कि एक व्यक्ति "स्वयं पर सर्वोत्तम विशेषज्ञ है" किस परामर्श दृष्टिकोण के साथ सर्वाधिक जुड़ा हुआ है?

(A) निर्देशात्मक परामर्श
(B) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
(C) मनोविश्लेषणात्मक परामर्श
(D) अनिर्देशात्मक परामर्श

143. महाविद्यालय में एक प्रभावी निर्देशन कार्यक्रम होना चाहिए:

(A) महाविद्यालय के समग्र शैक्षिक ध्येय में एकीकृत।
(B) वर्ष के प्रारंभ में एक बार की घटना।
(C) संकाय से गुप्त और गोपनीय।
(D) केवल नियम तोड़ने वालों को दंडित करने पर केंद्रित।

144. एलडीएल कोलेस्ट्रॉल ("खराब कोलेस्ट्रॉल") का उच्च स्तर किसका प्रमुख कारण है:

(A) टाइप 1 मधुमेह।
(B) धमनियों में पट्टिका का संचय (एथेरोस्क्लेरोसिस)।
(C) शरीर की इंसुलिन का उत्पादन करने में अक्षमता।
(D) तर्कहीन विश्वास।

145. "सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा" किसका दूसरा नाम है?

(A) निर्देशात्मक परामर्श
(B) अनिर्देशात्मक परामर्श
(C) तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा
(D) सामुदायिक हस्तक्षेप

146. मानसिक बीमारी वाले माता-पिता के बच्चों को मुकाबला कौशल सिखाने के लिए निर्मित किया गया एक कार्यक्रम, ताकि बच्चों को समान समस्याएं विकसित करने से रोका जा सके, किसका उदाहरण है?

(A) प्राथमिक रोकथाम
(B) तृतीयक रोकथाम
(C) द्वितीयक रोकथाम
(D) नैदानिक उपचार

147. तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा का मूल विचार यह है कि भावनात्मक परिणाम स्वयं घटनाओं द्वारा नहीं, बल्कि किसके द्वारा निर्धारित होते हैं:

(A) व्यक्ति की आनुवंशिक प्रवृत्तियाँ।
(B) व्यक्ति के पूर्व जीवन के अनुभव।
(C) घटनाओं के बारे में व्यक्ति के विश्वास।
(D) अन्य लोगों का व्यवहार।

148. निम्नलिखित में से कौन मधुमेह का स्वीकृत प्रकार नहीं है?
(A) टाइप 1 मधुमेह
(B) टाइप 2 मधुमेह
(C) गर्भकालीन मधुमेह
(D) संवहनी (Vascular) मधुमेह

149. विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम में 'सूचना सेवा' मुख्य रूप से किसके लिए उत्तरदायी है:
(A) छात्रों पर गोपनीय संचिकाएं रखना।
(B) शिक्षकों को चिकित्सा प्रदान करना।
(C) शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत-सामाजिक सूचना एकत्र करना और प्रसारित करना।
(D) अंतिम परीक्षा आयोजित करना।

150. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): सामुदायिक मनोविज्ञान में तृतीयक रोकथाम का उद्देश्य एक दीर्घकालिक समस्या के स्थायी प्रभाव को कम करना है।
कारण (R): तृतीयक रोकथाम का एक उदाहरण उन व्यक्तियों के लिए पुनर्वास कार्यक्रम है जिन्हें पहले ही मस्तिष्काघात हो चुका है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

151. महाविद्यालय निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने का एक प्रमुख सिद्धांत कौन-सा है?
(A) इसे शैक्षणिक विभागों से पृथक होकर संचालित होना चाहिए।
(B) इसे केवल व्यावसायिक निर्देशन देना चाहिए और व्यक्तिगत समस्याओं की उपेक्षा करनी चाहिए।
(C) इसमें केवल अंशकालिक स्वयंसेवकों को नियुक्त किया जाना चाहिए।
(D) यह छात्रों की बदलती आवश्यकताओं के प्रति लचीला और अनुकूलन योग्य होना चाहिए।

152. कौन-सा कथन किसी युग्म की सही पहचान करता है?
(A) तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा - अल्बर्ट एलिस
(B) निर्देशात्मक परामर्श - कार्ल रोजर्स
(C) अनिर्देशात्मक परामर्श - ई.जी. विलियमसन
(D) सामुदायिक मनोविज्ञान - सिगमंड फ्रायड

153. संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, तनाव प्रबंधन और तंबाकू से बचने वाली जीवनशैली का सबसे सटीक वर्णन इस रूप में किया गया है:
(A) स्वास्थ्य के लिए हानिकारक जीवनशैली।
(B) जैव-चिकित्सीय केंद्रित जीवनशैली।
(C) स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली।
(D) एक अस्थिर जीवनशैली।

154. टाइप 2 मधुमेह से पीड़ित व्यक्ति को अक्सर सर्वप्रथम क्या करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है?
(A) जीवनशैली में बदलाव करना, जैसे आहार और व्यायाम।
(B) तत्काल आजीवन इंसुलिन इंजेक्शन प्रारंभ करना।
(C) अग्न्याशय प्रत्यारोपण शल्यक्रिया करवाना।
(D) निदान की उपेक्षा करना क्योंकि यह गंभीर नहीं है।

155. RET के A-B-C मॉडल में, 'C' का अर्थ है:
(A) सेवार्थी की मूल स्थिति।
(B) परामर्शदाता का निष्कर्ष।
(C) बाल्यावस्था का कारण।
(D) भावनात्मक और व्यवहारिक परिणाम।

156. द्वितीयक रोकथाम का मूलभूत उद्देश्य है:
(A) किसी विकार की प्रारंभिक शुरुआत को रोकना।
(B) शीघ्र पहचान और उपचार के माध्यम से किसी बीमारी या समस्या को बढ़ने से रोकना।
(C) दीर्घकालिक और गंभीर विकारों वाले व्यक्तियों का पुनर्वास करना।
(D) संपूर्ण जनसंख्या में सामान्य कल्याण को बढ़ावा देना।

157. एक बड़े निर्देशन कार्यक्रम के भीतर "परामर्श सेवा" वह घटक है जो किस पर ध्यान केंद्रित करता है:
(A) छात्रों के बारे में डेटा एकत्र करना।
(B) करियर के बारे में सूचना प्रदान करना।
(C) छात्रों को उनकी समस्याओं में सहायता करने के लिए आमने-सामने या छोटे समूह का संबंध।
(D) छात्रों को उपयुक्त रोजगार या पाठ्यक्रमों में रखना।

158. निम्नलिखित शर्तों पर विचार कीजिए:
1. बिना शर्त सकारात्मक सम्मान
2. सहानुभूति
3. अनुरूपता
उपरोक्त में से कौन-सी शर्तें अनिर्देशात्मक दृष्टिकोण में चिकित्सीय परिवर्तन के लिए अनिवार्य मानी जाती हैं?
(A) तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा
(B) निर्देशात्मक परामर्श
(C) मनोविश्लेषण
(D) अनिर्देशात्मक परामर्श

159. निम्नलिखित में से कौन हृदय रोग का प्राथमिक कारण है?
(A) एथेरोस्क्लेरोसिस और उच्च रक्तचाप।
(B) फलों और सब्जियों से भरपूर आहार।

(C) नियमित मध्यम व्यायाम।
(D) स्वस्थ रक्त शर्करा का स्तर।

160. विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रम होने का सर्वाधिक सम्मोहक कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) विद्यालयों के पास अतिरिक्त धन है जिसे व्यय करने की आवश्यकता है।
(B) एक जटिल विश्व में छात्रों की विकासात्मक आवश्यकताओं और चुनौतियों के लिए व्यवस्थित सहायता की आवश्यकता होती है।
(C) शिक्षक छात्रों से वार्ता करने के लिए योग्य नहीं हैं।
(D) यह बिना किसी वास्तविक उद्देश्य के एक सरकारी आदेश है।

161. सूची I (दृष्टिकोण/मॉडल) को सूची II (मूल विचार) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I (दृष्टिकोण/मॉडल)
P. जैव-मनो-सामाजिक मॉडल
Q. निर्देशात्मक परामर्श
R. अनिर्देशात्मक परामर्श
S. तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श।
सूची II (मूल विचार)
1. सेवार्थी में आत्म-चिकित्सा की क्षमता है
2. तर्कहीन विश्वास संकट का कारण हैं
3. स्वास्थ्य जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों का परिणाम है
4. परामर्शदाता निदान करता है और समाधान निर्धारित करता है।
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

162. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): अनिर्देशात्मक परामर्श को सेवार्थी-केंद्रित परामर्श भी कहा जाता है।
कारण (R): सेवार्थी, न कि परामर्शदाता, चिकित्सीय प्रक्रिया के केंद्र में होता है और इसके मार्ग को निर्देशित करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

163. यह कथन "मेरा जीवन सरल और समस्याओं से मुक्त होना चाहिए, और यदि ऐसा नहीं है, तो यह भयावह है और मैं इसे सहन नहीं कर सकता" किसका उदाहरण है जिसे अल्बर्ट एलिस कहेंगे:
(A) सक्रिय करने वाली घटना
(B) तर्कसंगत विश्वास
(C) तर्कहीन विश्वास
(D) सकारात्मक पुष्टि

164. निर्देशन और परामर्श के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) निर्देशन केवल समूहों में किया जाता है, जबकि परामर्श हमेशा आमने-सामने होता है।
(B) कोई अंतर नहीं है; शब्द पूर्णतः विनिमेय हैं।
(C) निर्देशन शैक्षिक समस्याओं के लिए है, जबकि परामर्श व्यक्तिगत समस्याओं के लिए है।
(D) निर्देशन निवारक और विकासात्मक है, जबकि परामर्श उपचारात्मक और चिकित्सीय है।

165. 'कार्डियोवैस्कुलर' शब्द का तात्पर्य है:
(A) फेफड़े और श्वसन प्रणाली।
(B) मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र।
(C) हृदय और रक्त वाहिकाएं।
(D) वृक्क और मूत्र प्रणाली।

166. सार्वजनिक पार्क की सुरक्षा में सुधार के लिए स्थानीय विधि को परिवर्तित करने के लिए कार्य करने वाला एक सामुदायिक मनोवैज्ञानिक किस स्तर पर हस्तक्षेप का उदाहरण है?
(A) व्यक्तिगत
(B) प्रणाली/समुदाय
(C) समूह
(D) जैविक

167. निम्नलिखित में से कौन स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार नहीं है?
(A) नियमित स्वास्थ्य जांच करवाना।
(B) संतुलित आहार लेना।
(C) एक सुदृढ़ सामाजिक समर्थन नेटवर्क बनाना।
(D) मदिरा का दीर्घकालिक और अत्यधिक उपयोग।

168. टाइप 2 मधुमेह के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह मुख्य रूप से एक स्वप्रतिरक्षित प्रतिक्रिया के कारण होता है।
2. इसमें इंसुलिन प्रतिरोध सम्मिलित है।
3. आहार और व्यायाम जैसे जीवनशैली में बदलाव इसके प्रबंधन की कुंजी हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

169. महाविद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने का मुख्य लक्ष्य है:
(A) छात्र की दुर्बलताओं का डेटाबेस बनाना।
(B) यह सुनिश्चित करना कि महाविद्यालय विश्वविद्यालय परीक्षाओं में प्रथम आए।
(C) छात्रों के जीवन के सभी पहलुओं में उनके इष्टतम विकास

257. एक सामुदायिक कार्यक्रम जो दीर्घकालिक मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं वाले व्यक्तियों के लिए रोजगार कौशल प्रशिक्षण और समर्थित रोजगार प्रदान करता है, किसका उदाहरण है?
(A) प्राथमिक रोकथाम
(B) तृतीयक रोकथाम
(C) द्वितीयक रोकथाम
(D) सार्वभौमिक रोकथाम

258. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): सेवार्थी-केंद्रित (अनिर्देशात्मक) चिकित्सा में, परामर्शदाता सेवार्थी के विश्व को सेवार्थी के दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है।
कारण (R): माना जाता है कि यह सहानुभूतिपूर्ण समझ एक मुख्य घटक है जो सेवार्थी की विकास और उपचार की अपनी क्षमता को सुगम बनाती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

259. टाइप 2 मधुमेह के मुख्य कारण में सम्मिलित है:
(A) एक विषाणु जो अग्न्याशय पर आक्रमण करता है।
(B) जन्म से इंसुलिन की पूर्ण अनुपस्थिति।
(C) शरीर द्वारा उत्पादित इंसुलिन का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में अक्षमता।
(D) शर्करा के प्रति एलर्जी की प्रतिक्रिया।

260. निम्नलिखित में से कौन-से कार्य निर्देशात्मक परामर्श दृष्टिकोण की सर्वाधिक विशेषता हैं?
1. सेवार्थी की समस्या का सक्रिय रूप से निदान करना।
2. सेवार्थी के लिए कार्रवाई का मार्ग निर्धारित करना।
3. सेवार्थी को समझने के लिए परीक्षणों के डेटा का विश्लेषण करना।
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

261. महाविद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम का सफल संगठन काफी हद तक किस पर निर्भर करता है:
(A) उपलब्ध खेल सुविधाओं की संख्या।
(B) किसी प्रमुख नगर में महाविद्यालय का स्थान।
(C) इसके उद्देश्यों की स्पष्ट अभिव्यक्ति और महाविद्यालय प्रशासन का समर्थन।
(D) इसके अनुशासनात्मक नियमों की कठोरता।

262. निम्नलिखित में से कौन स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली विकल्प का सर्वोत्तम उदाहरण है?
(A) गतिहीन कार्य और घरेलू जीवन अपनाना।
(B) अत्यधिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के स्थान पर पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों को चुनना।
(C) तनाव प्रबंधन के लिए तंबाकू उत्पादों का उपयोग करना।
(D) चिंता कम करने के लिए सभी चिकित्सीय जांचों से बचना।

263. मस्तिष्काघात और हृदयाघात दोनों किसके प्रकार हैं:
(A) तीव्र मनोवैज्ञानिक जटिलताएँ।
(B) वंशानुगत स्वप्रतिरक्षित विकार।
(C) स्वास्थ्य-प्रवर्धक हस्तक्षेप।
(D) हृदय रोग (Cardiovascular disease) की स्थितियाँ।

264. तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा के A-B-C मॉडल में 'B' (विश्वासों) की क्या भूमिका है?
(A) यह वह संज्ञानात्मक फ़िल्टर है जिसके माध्यम से किसी घटना की व्याख्या की जाती है, और यह प्रतिक्रिया का कारण बनता है।
(B) यह सक्रिय करने वाली घटना या स्थिति है।
(C) यह भावनात्मक या व्यवहारिक प्रतिक्रिया है।
(D) यह वांछित व्यवहार परिवर्तन है।

265. कौन-सा कथन सामुदायिक मनोविज्ञान के सिद्धांतों को सटीक रूप से दर्शाता है?
(A) सामुदायिक समस्याओं को केवल व्यक्तिगत औषधियों के माध्यम से सर्वोत्तम हल किया जाता है।
(B) सरकार सभी सामुदायिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं की एकमात्र प्रदाता है।
(C) लोगों को उनके पारिस्थितिक और सामाजिक संदर्भों में समझा जाना चाहिए।
(D) रोकथाम कार्यक्रम सामान्यतः प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए बहुत महंगे होते हैं।

266. सूची I (रोकथाम प्रकार) को सूची II (फोकस) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I (रोकथाम प्रकार)
P. प्राथमिक
Q. द्वितीयक
R. तृतीयक
S. स्वास्थ्य संवर्धन।
सूची II (फोकस)
1. शीघ्र पहचान और त्वरित उपचार
2. स्थापित बीमारी की जटिलताओं को कम करना
3. स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ाने के लिए कार्य
4. बीमारी की प्रारंभिक घटना को रोकना।
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

P. मूल्यांकन सेवा
Q. सूचना सेवा
R. परामर्श सेवा
S. अनुवर्ती (Follow-up) सेवा।
सूची II (कार्य)
1. व्यक्तिगत समस्याओं में आमने-सामने सहायता प्रदान करना
2. पूर्व छात्रों की स्थिति का निर्धारण करना
3. छात्र को समझने के लिए परीक्षणों और अभिलेखों का उपयोग करना
4. करियर और महाविद्यालयों पर सूचना पत्र प्रदान करना।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

182. टाइप 2 मधुमेह का एक प्रमुख कारण है:
(A) एक विषाणुजनित संक्रमण जो अग्न्याशय को नष्ट कर देता है।
(B) आनुवंशिक संवेदनशीलता और मोटापे जैसे जीवनशैली कारकों का संयोजन।
(C) बाल्यावस्था का आहार जिसमें शर्करा बहुत कम हो।
(D) एक अतिसक्रिय प्रतिरक्षा प्रणाली।

183. निर्देशात्मक परामर्श में, परामर्शदाता को अक्सर किस रूप में वर्णित किया जाता है:
(A) सुविधादाता
(B) सह-यात्री
(C) चिंतनशील दर्पण
(D) शिक्षक या विशेषज्ञ

184. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): नियमित व्यायाम जैसे स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार अपनाने से हृदय रोग का जोखिम कम हो सकता है।
कारण (R): व्यायाम स्वस्थ भार बनाए रखने में सहायता करता है, रक्तचाप कम करता है और कोलेस्ट्रॉल के स्तर में सुधार करता है, ये सभी हृदय स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

185. एक व्यक्ति जो मानता है "मुझे हर किसी के द्वारा प्रेम और अनुमोदित किया जाना चाहिए" वह किस सिद्धांत के अनुसार एक मूल तर्कहीन विश्वास प्रदर्शित कर रहा है?
(A) अनिर्देशात्मक परामर्श
(B) निर्देशात्मक परामर्श
(C) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
(D) सामुदायिक मनोविज्ञान

186. जैव-मनो-सामाजिक मॉडल सुझाव देता है कि हृदय रोग किसके कारण होता है:
(A) जैविक कारकों, मनोवैज्ञानिक तनाव और सामाजिक आदतों की अंतःक्रिया।
(B) केवल उच्च कोलेस्ट्रॉल और उच्च रक्तचाप।
(C) केवल तनाव और टाइप A व्यक्तित्व।
(D) केवल खराब आहार और व्यायाम की कमी।

187. निर्देशन का कौन-सा सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि यह शैक्षिक प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग होना चाहिए, न कि केवल एक अतिरिक्त सेवा?
(A) पृथक्करण का सिद्धांत
(B) सर्व-या-शून्य का सिद्धांत
(C) विशिष्टता का सिद्धांत
(D) एकीकरण का सिद्धांत

188. हस्तक्षेप कार्यक्रमों के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
1. वे शीघ्र पहचान पर केंद्रित हैं।
2. वे उन व्यक्तियों के लिए लक्षित हैं जो पहले से ही प्रारंभिक लक्षण दिखाते हैं।
3. रक्तचाप स्क्रीनिंग केंद्र इसका एक अच्छा उदाहरण है।
उपरोक्त में से कौन द्वितीयक रोकथाम कार्यक्रमों की विशेषताएं हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

189. निम्नलिखित में से कौन हृदय रोग का एक प्रकार नहीं है?
(A) हृदयाघात (Myocardial infarction)
(B) मस्तिष्काघात (Stroke)
(C) वृक्क रोग (Nephropathy)
(D) उच्च रक्तचाप

190. निर्देशात्मक बनाम अनिर्देशात्मक चिकित्सा में परामर्शदाता की भूमिका में मूलभूत अंतर क्या है?
(A) निर्देशात्मक परामर्शदाता औषधि का उपयोग करते हैं; अनिर्देशात्मक परामर्शदाता नहीं।
(B) निर्देशात्मक परामर्शदाता विद्यालयों में कार्य करते हैं; अनिर्देशात्मक परामर्शदाता चिकित्सालयों में कार्य करते हैं।
(C) उनकी भूमिकाओं में कोई मूलभूत अंतर नहीं है।
(D) निर्देशात्मक परामर्शदाता सक्रिय और नैदानिक होते हैं; अनिर्देशात्मक परामर्शदाता सुविधादाता और चिंतनशील होते हैं।

191. एक स्वास्थ्य मॉडल जो जोखिम कारकों की पहचान करने और उन व्यवहारों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करता है जो बीमारी होने से पूर्व कल्याण को बढ़ाते हैं, उसे सबसे सटीक रूप से वर्णित किया गया है:

सक्रिय रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) कार्य करने से पूर्व समस्याओं के गंभीर होने की प्रतीक्षा करना।
(C) सामाजिक समस्याओं के अस्तित्व को अस्वीकार करना।
(D) केवल व्यक्तियों को आमने-सामने की चिकित्सा देना।

235. स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) इनमें वे व्यवहार सम्मिलित हैं जो स्वास्थ्य को बढ़ाते या बनाए रखते हैं।
(B) वे दीर्घकालिक बीमारियों के जोखिम को कम कर सकते हैं।
(C) इनमें तनाव प्रबंधन और सामाजिक समर्थन जैसे पहलू सम्मिलित हैं।
(D) वे पूर्णतः शारीरिक व्यायाम पर केंद्रित हैं।

236. ई.जी. विलियमसन द्वारा निर्देशात्मक परामर्श दृष्टिकोण में 'निदान' (Diagnosis) में क्या सम्मिलित है?
(A) सेवार्थी अपनी समस्या का स्वयं निदान करता है।
(B) परामर्शदाता सेवार्थी की समस्या की प्रकृति और कारण की पहचान करता है।
(C) शारीरिक बीमारी का चिकित्सीय निदान।
(D) परीक्षणों के माध्यम से सूचना एकत्र करने की प्रक्रिया।

237. टाइप 2 मधुमेह का विकास किस शारीरिक प्रक्रिया के साथ सर्वाधिक जुड़ा हुआ है?
(A) अग्न्याशय का स्वप्रतिरक्षित विनाश।
(B) इंसुलिन उत्पादन का पूर्ण और अचानक रुकना।
(C) शरीर की कोशिकाएं इंसुलिन के प्रभावों के प्रति प्रतिरोधी हो जाना।
(D) एक गंभीर विषाणुजनित संक्रमण।

238. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम का समय-समय पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
कारण (R): मूल्यांकन कार्यक्रम की प्रभावशीलता निर्धारित करने, उसकी शक्तियों और दुर्बलताओं की पहचान करने और आवश्यक सुधार करने में सहायता करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

239. एक परामर्शदाता सेवार्थी को यह समझने में सहायता करता है कि "मुझे हर समय पूर्ण होना चाहिए" यह विश्वास तर्कहीन है और उनकी चिंता का स्रोत है। यह हस्तक्षेप किसकी विशेषता है:
(A) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
(B) अनिर्देशात्मक परामर्श
(C) निर्देशात्मक परामर्श
(D) सामुदायिक हस्तक्षेप

240. निम्नलिखित में से कौन-सी प्राथमिक रोकथाम गतिविधि है?
(A) हकलाने वाले बच्चे को वाक्-चिकित्सा (Speech therapy) प्रदान करना।
(B) समुदाय के सभी नए माता-पिता को पालन-पोषण कौशल सिखाना।
(C) सुधारने वाले मदिरासेवियों के लिए एक पुनर्वास कार्यक्रम।
(D) कारखाने के श्रमिकों में फेफड़ों की बीमारी के प्रारंभिक लक्षणों के लिए स्क्रीनिंग करना।

241. कौन-सा स्वास्थ्य मॉडल उच्च रक्तचाप में तनाव की भूमिका, सुधार पर सामाजिक समर्थन के प्रभाव और उपचार के पालन पर विश्वासों के प्रभाव के अध्ययन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?
(A) जैव-चिकित्सीय मॉडल
(B) रोगजनक मॉडल
(C) जैव-मनो-सामाजिक मॉडल
(D) संक्रामक मॉडल

242. अनिर्देशात्मक परामर्श का मुख्य सिद्धांत ऐसा वातावरण प्रदान करना है जिसमें सेवार्थी:
(A) विकसित हो सके और अपने स्वयं के समाधान खोज सके।
(B) जीवन जीने के मार्ग पर प्रत्यक्ष निर्देश प्राप्त कर सके।
(C) बिना किसी परिणाम के अपनी इच्छानुसार व्यवहार कर सके।
(D) किसी विशेषज्ञ द्वारा मनोविश्लेषण किया जा सके।

243. महाविद्यालय निर्देशन कार्यक्रम में "अनुवर्ती सेवा" किसके लिए निर्मित की गई है:
(A) छात्रों का परिसर में पीछा करना ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे कक्षाओं में उपस्थित हों।
(B) छात्र के महाविद्यालय छोड़ने के बाद परामर्श का निरंतर प्रवाह प्रदान करना।
(C) स्नातकों के करियर की प्रगति और उन्हें प्राप्त निर्देशन की प्रभावशीलता की जांच करना।
(D) उन छात्रों को दंडित करना जिन्होंने परामर्शदाता के परामर्श का पालन नहीं किया।

244. धमनियों में वसायुक्त पट्टिका का संचय, जिसे एथेरोस्क्लेरोसिस कहते हैं, किसके विकास में एक केंद्रीय प्रक्रिया है:
(A) टाइप 1 मधुमेह
(B) हृदय रोग के कई रूप
(C) तर्कसंगत-भावनात्मक विकार
(D) स्वप्रतिरक्षित स्थितियां

245. निम्नलिखित में से कौन स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार का उदाहरण है?

3. सामुदायिक मनोविज्ञान
4. अनिर्देशात्मक परामर्श।
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

202. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): निर्देशन का एक केंद्रीय सिद्धांत यह है कि यह निर्देशात्मक दृष्टिकोण में भी सेवार्थी-केंद्रित होता है।
कारण (R): भले ही कोई परामर्शदाता सक्रिय, नैदानिक भूमिका निभाता है, अंतिम लक्ष्य व्यक्तिगत सेवार्थी का कल्याण और सर्वोत्तम हित ही होता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

203. निम्नलिखित में से कौन महाविद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य नहीं है?
(A) छात्रों को उनके शैक्षणिक समायोजन में सहायता करना।
(B) व्यावसायिक और करियर नियोजन सहायता प्रदान करना।
(C) व्यक्तिगत और भावनात्मक चिंताओं में छात्रों की सहायता करना।
(D) महाविद्यालय की प्राथमिक विधि प्रवर्तन संस्था के रूप में कार्य करना।

204. स्वास्थ्य का "जैव-मनो-सामाजिक मॉडल" किसके महत्व पर बल देता है:
(A) बीमारी में केवल जैविक कारक।
(B) शरीर, मन और सामाजिक वातावरण के बीच अंतःक्रिया।
(C) यह विचार कि सभी बीमारियाँ मनोवैज्ञानिक रूप से उत्पन्न होती हैं।
(D) स्वास्थ्य परिदृश्य का विशुद्ध रूप से समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण।

205. निर्देशात्मक और अनिर्देशात्मक परामर्श के बीच प्राथमिक अंतर इसमें निहित है:
(A) सेवार्थी के प्रकार जिनका प्रत्येक दृष्टिकोण उपचार कर सकता है।
(B) चिकित्सा सत्रों की अवधि।
(C) समस्या-समाधान के लिए नियंत्रण का केंद्र (locus of control) और उत्तरदायित्व।
(D) परामर्शदाता की शैक्षणिक योग्यता।

206. स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली की सर्वोत्तम विशेषता क्या है:
(A) नियमों का एक कठोर समूह जिसका पूर्ण रूप से पालन किया जाना चाहिए।
(B) स्वस्थ रहने का एक बार का निर्णय।
(C) कुछ ऐसा जो केवल उन लोगों के लिए प्रासंगिक है जो पहले से ही बीमार हैं।
(D) कल्याण का समर्थन करने वाले व्यवहारों में संलग्न होने का एक सचेत और निरंतर प्रयास।

207. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द व्यावसायिक परामर्श, सामाजिक कौशल प्रशिक्षण और छात्रों को शैक्षणिक विषय चुनने में सहायता करने जैसी गतिविधियों के लिए व्यापक छत्र का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(A) सामुदायिक हस्तक्षेप
(B) निर्देशन और परामर्श
(C) चिकित्सा उपचार
(D) तृतीयक रोकथाम

208. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही शारीरिक युग्म का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) उच्च रक्त शर्करा - उच्च रक्तचाप की विशेषता
(B) इंसुलिन प्रतिरोध - टाइप 2 मधुमेह की विशेषता
(C) पट्टिका का संचय - टाइप 1 मधुमेह की विशेषता
(D) स्वप्रतिरक्षित आक्रमण - एथेरोस्क्लेरोसिस की विशेषता

209. नए शिक्षकों को यह सिखाने वाली कार्यशाला कि अवसाद के लक्षणों वाले छात्रों की पहचान कैसे करें और उन्हें परामर्श हेतु कैसे भेजें, किससे संबंधित गतिविधि का एक उदाहरण है:
(A) प्राथमिक रोकथाम
(B) द्वितीयक रोकथाम
(C) तृतीयक रोकथाम
(D) कार्यक्रम मूल्यांकन

210. A-B-C मॉडल में, यदि कोई छात्र परीक्षा में अनुत्तीर्ण होता है (A) और उदास अनुभव करता है (C), तो एक तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सक किस पर ध्यान केंद्रित करेगा:
(A) विश्वास (B) - जैसे "इस परीक्षा में फेल होने के कारण मैं पूर्णतः विफल हूँ।"
(B) सक्रिय करने वाली घटना (A) - ग्रेड परिवर्तित करने का प्रयास करके।
(C) परिणाम (C) - अवसादरोधी औषधि निर्धारित करके।
(D) वह शिक्षक जिसने अनुत्तीर्ण किया था।

211. निम्नलिखित में से कौन हृदय रोग के लिए अपरिवर्तनीय जोखिम कारक का एक उदाहरण है?
(A) धूम्रपान
(B) गतिहीन जीवनशैली
(C) पारिवारिक इतिहास/आनुवंशिकी
(D) उच्च वसा वाला आहार

212. परामर्श में 'स्वीकृति' के सिद्धांत का तात्पर्य है कि परामर्शदाता:
(A) सेवार्थी के सभी कार्यों और निर्णयों से सहमत होना चाहिए।
(B) सेवार्थी की समस्याओं को हल करने की उत्तरदायित्व

स्वीकार करता है।
(C) प्रत्येक व्यक्ति को स्वीकार करना चाहिए जो परामर्श चाहता है।
(D) सेवार्थी को बिना किसी निर्णय के मूल्यवान व्यक्ति के रूप में स्वीकार करता है।

213. महाविद्यालय निर्देशन कार्यक्रम के सफल होने के लिए, परामर्शदाताओं के साथ-साथ किस समूह का सहयोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है?
(A) परिसर सुरक्षा रक्षक
(B) भोजनालय कर्मचारी
(C) शिक्षण संकाय और प्रशासन
(D) स्थानीय नगर परिषद

214. इनमें से कौन सामुदायिक मनोविज्ञान का प्राथमिक लक्ष्य नहीं है?
(A) लोगों को उनके पारिस्थितिक संदर्भों में समझना।
(B) विशेष रूप से व्यक्तिगत स्तर के दोषों और उनके उपचार पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) व्यक्तिगत और सामुदायिक कल्याण को बढ़ावा देना।
(D) रोकथाम, सशक्तीकरण और सामाजिक न्याय पर बल देना।

215. तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा में मुख्य चिकित्सीय कार्य है:
(A) सहानुभूति और गर्मजोशी प्रदान करना।
(B) दमित स्मृतियों को उजागर करना।
(C) स्वप्नों और मुक्त साहचर्य का विश्लेषण करना।
(D) तर्कहीन विश्वासों का वाद-विवाद करना और उन्हें चुनौती देना।

216. टाइप 1 मधुमेह वाले रोगी को इंसुलिन लेना चाहिए क्योंकि उनका शरीर:
(A) इंसुलिन का उत्पादन बंद कर चुका है।
(B) अपने स्वयं के इंसुलिन के प्रति प्रतिरोधी है।
(C) बहुत अधिक इंसुलिन का उत्पादन करता है।
(D) भोजन से ग्लूकोज को अवशोषित नहीं कर सकता।

217. मनोवैज्ञानिक सिद्धांत में, कौन सा परामर्श दृष्टिकोण अपने केंद्र में सर्वाधिक 'बौद्धिक' या 'संज्ञानात्मक' है?
(A) निर्देशात्मक
(B) अनिर्देशात्मक
(C) तर्कसंगत-भावनात्मक
(D) समुदाय आधारित

218. स्वास्थ्य के लिए हानिकारक व्यवहार, जैसे कि खराब आहार, मुख्य रूप से किसके माध्यम से हृदय रोग में योगदान देता है:
(A) मोटापा, उच्च कोलेस्ट्रॉल और उच्च रक्तचाप जैसे जोखिम कारकों की ओर ले जाना।
(B) तत्काल और अचानक हृदय गति रुकने का कारण बनना।
(C) सीधे हृदय को जीवाणु से संक्रमित करना।
(D) चिकित्सा में व्यक्ति के विश्वास को दुर्बल करना।

219. विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम में "व्यक्तिगत विवरण सेवा" प्रत्येक छात्र के बारे में सूचनाओं के व्यवस्थित संग्रहण को संदर्भित करती है। इसका प्राथमिक उद्देश्य है:
(A) माता-पिता को दुर्व्यवहार की सूचना देना।
(B) सभी छात्रों की उच्च से निम्न तक श्रेणी बनाना।
(C) शिक्षकों के साथ छात्र के रहस्य साझा करना।
(D) छात्र और परामर्शदाता को छात्र की क्षमताओं, रुचियों और आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझने में सहायता करना।

220. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): परामर्श के प्रति अनिर्देशात्मक दृष्टिकोण मानवतावादी दृष्टिकोण में निहित है।
कारण (R): यह मानता है कि यदि उचित चिकित्सीय स्थितियां प्रदान की जाती हैं, तो व्यक्तियों में विकास और आत्म-बोध करने की जन्मजात प्रवृत्ति होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

221. सामुदायिक मनोविज्ञान में एक हस्तक्षेप जो दीर्घकालिक दीर्घकालिक बीमारी वाले व्यक्ति को आवास और रोजगार खोजने में सहायता करने पर केंद्रित है, उसे सबसे सटीक रूप से वर्गीकृत किया गया है:
(A) प्राथमिक रोकथाम
(B) द्वितीयक रोकथाम
(C) तृतीयक रोकथाम
(D) सार्वभौमिक रोकथाम

222. हृदय रोग की प्रकृति का सर्वाधिक सटीक वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) यह एक ही कारण वाली एक ही बीमारी है।
(B) यह एक तीव्र संक्रामक स्थिति है जो सरलता से ठीक हो जाती है।
(C) यह एक ऐसी बीमारी है जो केवल 60 वर्ष से अधिक उम्र के पुरुषों को प्रभावित करती है।
(D) यह हृदय और रक्त वाहिकाओं को प्रभावित करने वाली बीमारियों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए एक व्यापक शब्द है।

223. निर्देशन का अंतिम लक्ष्य क्या है?
(A) व्यक्ति को आत्म-निर्देशन में सक्षम बनाना।
(B) व्यक्ति के लिए निर्णय लेना।
(C) यह सुनिश्चित करना कि व्यक्ति कभी कोई त्रुटि न करे।
(D) जीवन की सभी समस्याओं का स्थायी समाधान प्रदान

करना।

224. कौन-सा परामर्श दृष्टिकोण परामर्शदाता-केंद्रित है, निदान और विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करता है, और ई.जी. विलियमसन को इसके प्रमुख प्रस्तावक के रूप में पहचानता है?
(A) अनिर्देशात्मक परामर्श
(B) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
(C) निर्देशात्मक परामर्श
(D) गेस्टाल्ट चिकित्सा

225. एक महाविद्यालय निर्देशन कार्यक्रम प्रारंभ करने की योजना बना रहा है। इसका सर्वप्रथम चरण क्या होना चाहिए?
(A) निर्देशन कार्यालय के लिए एक भवन क्रय करना।
(B) छात्र समुदाय की आवश्यकताओं का आकलन करने के लिए एक समिति गठित करना।
(C) एक बार व्याख्यान देने के लिए एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक को नियुक्त करना।
(D) हजारों सूचनात्मक विवरणिकाएं (ब्रोशर) निर्मित करना और मुद्रित करना।

226. धूम्रपान, उच्च वसा वाला आहार और व्यायाम की कमी वाली जीवनशैली किसका प्रारूप है:
(A) स्वास्थ्य के लिए हानिकारक जीवनशैली
(B) स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली
(C) एक विशिष्ट खिलाड़ी की जीवनशैली
(D) जैव-चिकित्सीय मॉडल द्वारा निर्धारित जीवनशैली

227. सूची I (स्वास्थ्य स्थिति) को सूची II (प्राथमिक विशेषता/कारण) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I (स्वास्थ्य स्थिति)
P. टाइप 1 मधुमेह
Q. टाइप 2 मधुमेह
R. कोरोनरी हृदय रोग
S. मस्तिष्काघात।
सूची II (प्राथमिक विशेषता/कारण)
1. हृदय को आपूर्ति करने वाली धमनियों का अवरुद्ध होना
2. मस्तिष्क में रक्त के प्रवाह का रुकना
3. अग्न्याशय की कोशिकाओं का स्वप्रतिरक्षित विनाश
4. इंसुलिन प्रतिरोध और सापेक्ष इंसुलिन की कमी।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

228. कौन-सा परामर्श दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि "लोग घटनाओं से नहीं, बल्कि घटनाओं के प्रति अपनी धारणा से विक्षोभित होते हैं"?
(A) निर्देशात्मक परामर्श
(B) अनिर्देशात्मक परामर्श
(C) सामुदायिक मनोविज्ञान
(D) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श

229. उन छात्रों के लिए संकटकालीन हेल्पलाइन (Crisis hotline) स्थापित करना जो आत्महत्या के विचार अनुभव कर रहे हैं, किसका उदाहरण है?
(A) प्राथमिक रोकथाम
(B) तृतीयक रोकथाम
(C) द्वितीयक रोकथाम
(D) विशुद्ध रूप से सूचनात्मक सेवा

230. विद्यालय में एक प्रभावी निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने का एक प्रमुख घटक है:
(A) यह सुनिश्चित करना कि कार्यक्रम माता-पिता से गुप्त रखा जाए।
(B) संपूर्ण विद्यालय कर्मचारियों का समर्थन और सहयोग प्राप्त करना।
(C) यह सुनिश्चित करना कि परामर्शदाता कभी अपना कार्यालय न छोड़े।
(D) केवल अच्छे ग्रेड पाने वाले छात्रों पर ध्यान केंद्रित करना।

231. अनिर्देशात्मक परामर्श में "अनुरुपता" (congruence) या "वास्तविकता" शब्द का अर्थ है कि परामर्शदाता:
(A) एक रिक्त स्क्रीन है जिस पर सेवार्थी भावनाओं को प्रक्षेपित करता है।
(B) चिकित्सीय संबंध में प्रामाणिक, पारदर्शी और वास्तविक होना।
(C) सेवार्थी द्वारा कही गई हर बात से सहमत होना।
(D) एक विशेषज्ञ जो एक पृथक, पेशेवर भूमिका बनाए रखता है।

232. बीमारी के वर्गीकरण के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: हृदय रोग और टाइप 2 मधुमेह दोनों को अक्सर "जीवनशैली की बीमारियाँ" कहा जाता है।
कथन II: ऐसा इसलिए है क्योंकि आहार, व्यायाम और धूम्रपान जैसे परिवर्तनीय जीवनशैली कारक उनके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या है।
(B) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

233. शैक्षिक परिवेश में निर्देशन और परामर्श की सर्वाधिक मूलभूत आवश्यकता किस कारण से उत्पन्न होती है:
(A) छात्रों के बीच व्यक्तिगत भिन्नताओं को दूर करना।
(B) सभी छात्रों को एक ही मानक के अनुरूप बनाना।
(C) छात्रों के पास उपलब्ध रिक्त समय को भरना।
(D) शैक्षणिक शिक्षण का विकल्प प्रदान करना।

234. सामुदायिक मनोविज्ञान में, "रोकथाम" अभिविन्यास का अर्थ है:
(A) समस्याओं को उत्पन्न होने या बढ़ने से पूर्व रोकने के लिए

को सुगम बनाना।
(D) छात्रों और संकाय के बीच अंतःक्रिया को कम करना।

170. कौन-सा परामर्श दृष्टिकोण सर्वाधिक संभावना है जिसमें परामर्शदाता कहता है, "ऐसा प्रतीत होता है कि आप उस अनुभव से बहुत आहत अनुभव कर रहे हैं। क्या आप मुझे उस भावना के बारे में और बता सकते हैं?"
(A) अनिर्देशात्मक परामर्श
(B) निर्देशात्मक परामर्श
(C) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
(D) व्यवहारिक परामर्श

171. निम्नलिखित में से कौन-सी प्राथमिक रोकथाम रणनीति है?
(A) उच्च रक्तचाप के लिए स्क्रीनिंग।
(B) हृदयाघात के बाद हृदय संबंधी पुनर्वास।
(C) मधुमेह के रोगी को औषधि प्रदान करना।
(D) फल और सब्जी के सेवन का संदेश प्रसारित करने वाला एक राष्ट्रव्यापी अभियान।

172. यह विश्वास कि सभी स्वास्थ्य समस्याओं को शारीरिक प्रक्रियाओं द्वारा समझाया जा सकता है और चिकित्सा हस्तक्षेपों के साथ सर्वोत्तम उपचार किया जा सकता है, किसकी विशेषता है:
(A) जैव-मनो-सामाजिक मॉडल
(B) जैव-चिकित्सीय मॉडल
(C) समग्र मॉडल
(D) कल्याण मॉडल

173. निम्नलिखित में से कौन एक अवधारणा और उसके संबंधित परामर्श दृष्टिकोण की त्रुटिपूर्ण युग्म का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) A-B-C मॉडल - तर्कसंगत-भावनात्मक
(B) बिना शर्त सकारात्मक सम्मान - अनिर्देशात्मक
(C) आत्म-बोध - निर्देशात्मक
(D) निदान और परामर्श - निर्देशात्मक

174. विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम के भाग के रूप में "स्थापन (प्लेसमेंट) सेवा" का लक्ष्य है:
(A) छात्रों को निरोध में रखना।
(B) छात्र की असफलता के लिए दोष मढ़ना।
(C) कक्षा में छात्रों के बैठने की व्यवस्था करना।
(D) छात्रों को उपयुक्त शैक्षिक पाठ्यक्रमों या रोजगार में नियुक्त होने में सहायता करना।

175. टाइप 1 मधुमेह की प्रकृति यह है कि यह एक है:
(A) स्वप्रतिरक्षित स्थिति जिसके परिणामस्वरूप इंसुलिन उत्पादन की कमी होती है।
(B) इंसुलिन प्रतिरोध की स्थिति जो वृद्धावस्था में विकसित होती है।
(C) जीवनशैली से प्रेरित चयापचय विकार।
(D) गर्भावस्था से संबंधित अस्थायी स्थिति।

176. शैक्षणिक परिवीक्षा (probation) पर रहने वाले छात्रों के लिए एक सहायता समूह ताकि उन्हें बेहतर अध्ययन कौशल विकसित करने और असफल होने से बचने में सहायता मिल सके, किसका उदाहरण है?
(A) तृतीयक रोकथाम
(B) द्वितीयक रोकथाम
(C) प्राथमिक रोकथाम
(D) सार्वभौमिक रोकथाम

177. सामुदायिक हस्तक्षेप के चरणों को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें:
I. कार्यक्रम का कार्यान्वयन।
II. कार्यक्रम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन।
III. समस्या की पहचान करने के लिए आवश्यकता आकलन।
IV. हस्तक्षेप की योजना और रूपरेखा।
(A) IV, III, I, II
(B) III, IV, I, II
(C) I, II, III, IV
(D) III, I, IV, II

178. विद्यालय या महाविद्यालय में निर्देशन समिति का प्राथमिक कार्य है:
(A) निर्देशन कार्यक्रम के कार्यान्वयन की योजना बनाना, व्यवस्थित करना और उसकी देखरेख करना।
(B) सभी परामर्श मामलों को प्रत्यक्ष रूप से संभालना।
(C) उन छात्रों को दंडित करना जो विद्यालय के नियमों का पालन नहीं करते हैं।
(D) विद्यालय की खेल टीमों का चयन करना।

179. स्वास्थ्य के लिए हानिकारक व्यवहार कोई भी ऐसा कार्य है जो:
(A) केवल एक बार किया जाता है लेकिन तत्काल मृत्यु का कारण बनता है।
(B) आनंददायक है लेकिन समाज द्वारा तिरस्कृत है।
(C) अल्पकालिक या दीर्घकालिक बीमारी के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ाता है।
(D) एक पेशेवर खिलाड़ी की दिनचर्या से विचलित होता है।

180. सामुदायिक मनोविज्ञान का मूल दर्शन किस पर बल देता है?
(A) व्यक्तिगत कमियों और विकृति विज्ञान पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) हस्तक्षेप के प्राथमिक मार्ग के रूप में औषधि पर निर्भरता।
(C) यह विश्वास कि सामुदायिक समस्याओं को हल नहीं किया जा सकता है।
(D) सामाजिक संदर्भों, शक्तियों और रोकथाम पर ध्यान केंद्रित करना।

181. सूची I (निर्देशन सेवा) को सूची II (कार्य) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I (निर्देशन सेवा)

(A) दिन में दो पैकेट सिगरेट पीना।
(B) मुख्य रूप से त्वरित भोजन (फास्ट फूड) से बना आहार लेना।
(C) सप्ताह में पांच दिन 30 मिनट मध्यम व्यायाम करना।
(D) दीर्घकालिक, अनियंत्रित तनाव का अनुभव करना।

246. निर्देशन और परामर्श की आवश्यकता के संबंध में कौन सा कथन असत्य है?
(A) यह व्यक्ति के व्यावसायिक विकास में सहायता करता है।
(B) यह केवल समस्याग्रस्त छात्रों के लिए एक उपचारात्मक प्रक्रिया है।
(C) यह व्यक्ति के व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन में सहायता करता है।
(D) यह व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को सुगम बनाता है।

247. सामुदायिक मनोविज्ञान में द्वितीयक रोकथाम का प्राथमिक लक्ष्य है:
(A) किसी समस्या को कभी होने से रोकना।
(B) दीर्घकालिक समस्या के नकारात्मक दुष्प्रभावों को कम करना।
(C) सामान्य जनसंख्या में कल्याण को बढ़ावा देना।
(D) समस्या को उसके प्रारंभिक चरणों में पहचानना और हस्तक्षेप करना।

248. निर्देशात्मक परामर्श मॉडल में, परामर्शदाता का प्रथम चरण 'विश्लेषण' है, जिसमें सम्मिलित है:
(A) विभिन्न स्रोतों से सेवार्थी के बारे में डेटा एकत्र करना।
(B) सेवार्थी को समाधान देना।
(C) सेवार्थी के तर्कहीन विश्वासों को चुनौती देना।
(D) सेवार्थी की भावनाओं को प्रतिबिंबित करना।

249. निम्नलिखित में से कौन टाइप 1 मधुमेह का एक प्रमुख कारण है?
(A) मोटापा और गतिहीन जीवनशैली।
(B) वृद्ध व्यक्तियों में इंसुलिन संवेदनशीलता में आयु संबंधी गिरावट।
(C) एक स्वप्रतिरक्षित प्रक्रिया जो अग्राशयी बीटा कोशिकाओं को नष्ट कर देती है।
(D) किशोरावस्था के दौरान अत्यधिक शर्करा वाला आहार।

250. तर्कहीन विचार भावनात्मक संकट की ओर ले जाते हैं, यह मूल विचार किस चिकित्सा की नींव है?
(A) तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा
(B) अनिर्देशात्मक चिकित्सा
(C) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
(D) मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा

251. स्वास्थ्य के जैव-चिकित्सीय और जैव-मनो-सामाजिक मॉडल के बीच सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि जैव-मनो-सामाजिक मॉडल:
(A) बीमारी में जीव विज्ञान की भूमिका से इनकार करता है।
(B) स्वास्थ्य के केवल सामाजिक निर्धारकों पर विचार करता है।
(C) जैव-चिकित्सीय मॉडल की तुलना में कम वैज्ञानिक और व्यापक है।
(D) मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों को जैविक कारकों जितना ही महत्वपूर्ण मानता है।

252. निम्नलिखित में से कौन प्रभावी निर्देशन का सिद्धांत नहीं है?
(A) निर्देशन एक सतत और आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।
(B) निर्देशन विशेष रूप से बौद्धिक रूप से प्रतिभाशाली लोगों के लिए एक सेवा है।
(C) निर्देशन व्यक्तिगत भिन्नताओं पर आधारित है।
(D) निर्देशन व्यक्ति, परिवार, विद्यालय और समुदाय को सम्मिलित करने वाला एक सहयोगात्मक प्रयास है।

253. विद्यालय के लिए निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने में, कौन-सी गतिविधि 'सूचना सेवा' के अंतर्गत आएगी?
(A) किसी छात्र का अभिरुचि परीक्षण करना।
(B) चिंता के बारे में आमने-सामने परामर्श सत्र आयोजित करना।
(C) विभिन्न करियर मार्गों के बारे में पोस्टर और विवरणिकाएं प्रदर्शित करना।
(D) मादक द्रव्यों के सेवन की समस्या वाले छात्र की सहायता करना।

254. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म त्रुटिपूर्ण सुमेलित है?
(A) प्राथमिक रोकथाम - शुरुआत को रोकना
(B) द्वितीयक रोकथाम - शीघ्र पहचान
(C) तृतीयक रोकथाम - पुनर्वास
(D) प्राथमिक रोकथाम - दीर्घकालिक बीमारी का उपचार करना

255. निर्देशात्मक और तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श दोनों को इस अर्थ में "निर्देशात्मक" माना जा सकता है कि वे दोनों:
(A) निष्क्रिय, चिंतनशील भूमिका बनाए रखने के लिए परामर्शदाता पर निर्भर करते हैं।
(B) चिकित्सीय प्रक्रिया के निर्देशन में परामर्शदाता की सक्रिय भूमिका सम्मिलित करते हैं।
(C) सेवार्थी के उपचार के प्राथमिक मार्ग के रूप में औषधीय परामर्श का उपयोग करते हैं।
(D) प्रत्येक सत्र में बाल्यावस्था के आघात को उजागर करने पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करते हैं।

256. गतिहीन जीवनशैली और खराब आहार से जुड़ा एक प्रमुख स्वास्थ्य जोखिम किसका विकास है:
(A) शारीरिक फिटनेस में वृद्धि।
(B) टाइप 2 मधुमेह और हृदय रोग।
(C) सुदृढ़ प्रतिरक्षा कार्य।
(D) बेहतर मानसिक तीक्ष्णता।

(A) निवारक
(B) उपचारात्मक
(C) रोगजनक
(D) प्रतिक्रियाशील

192. परामर्श की आवश्यकता के संबंध में कौन-सा कथन सर्वाधिक सटीक है?
(A) केवल गंभीर मानसिक विकारों वाले लोगों को परामर्श की आवश्यकता होती है।
(B) परामर्श एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन की चुनौतियों का सामना करने वाले या व्यक्तिगत विकास चाहने वाले किसी भी व्यक्ति को लाभ पहुँचा सकती है।
(C) परामर्श की आवश्यकता व्यक्तिगत विफलता या दुर्बलता को दर्शाती है।
(D) एक बार जब किसी व्यक्ति को परामर्श मिल जाता है, तो उसे फिर कभी समस्या नहीं होगी।

193. निर्देशन कार्यक्रम में "अनुवर्ती सेवा" (follow-up) किसके लिए महत्वपूर्ण है:
(A) उन छात्रों को दंडित करना जो परामर्श का पालन नहीं करते हैं।
(B) प्रदान किए गए निर्देशन की प्रभावशीलता का आकलन करना और अग्रिम सहायता प्रदान करना।
(C) छात्रों को विशिष्ट करियर के लिए विवश करना।
(D) पूर्व छात्रों के बारे में सूचनाएं एकत्र करना।

194. अल्बर्ट एलिस के A-B-C ढांचे में, कौन-सा घटक चिकित्सीय परिवर्तन का प्राथमिक लक्ष्य है?
(A) B - विश्वास प्रणाली (Belief System)
(B) A - सक्रिय करने वाली घटना (Activating Event)
(C) C - भावनात्मक परिणाम (Consequence)
(D) चिकित्सक का अपना विश्वास

195. निम्नलिखित में से किसे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक व्यवहार माना जाएगा?
(A) विभिन्न प्रकार के फलों और सब्जियों का नियमित सेवन।
(B) विश्राम के लिए किसी अभिरुचि में सम्मिलित होना।
(C) प्रति रात्रि 5 घंटे से कम नींद लेना।
(D) सुरक्षित यौन व्यवहार का अभ्यास करना।

196. सामुदायिक मनोविज्ञान में प्राथमिक रोकथाम के पीछे मुख्य विचार है:
(A) विद्यमान समस्याओं की गंभीरता को कम करना।
(B) किसी समस्या के प्रारंभिक संकेत पर हस्तक्षेप करना।
(C) दीर्घकालिक समस्याओं के लिए दीर्घकालिक चिकित्सा प्रदान करना।
(D) समस्याओं को पहली बार में होने से रोकना।

197. "संकलनात्मक परामर्श" (eclectic counselling) शब्द उस दृष्टिकोण को संदर्भित करता है जहाँ परामर्शदाता:
(A) कड़ाई से एक सैद्धांतिक मॉडल का पालन करता है।
(B) सभी स्थापित परामर्श सिद्धांतों को अस्वीकार करता है।
(C) विभिन्न परामर्श दृष्टिकोणों के सिद्धांतों और तकनीकों को एकीकृत और संयोजित करता है।
(D) केवल उन्हीं तकनीकों का उपयोग करता है जिनका उन्होंने स्वयं आविष्कार किया है।

198. रक्तचाप के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: उच्च रक्तचाप स्वयं एक हृदय रोग भी है और मस्तिष्काघात जैसे अन्य हृदय रोगों के लिए एक प्रमुख जोखिम कारक भी है।
कथन II: सभी उच्च रक्तचाप का प्राथमिक कारण अत्यधिक नमक का सेवन है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या है।
(B) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

199. विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम के प्रभावी होने के लिए, यह आवश्यक है कि यह हो:
(A) एक ऐसा कार्यक्रम जो संदर्भ की परवाह किए बिना हर विद्यालय में एक जैसा हो।
(B) बिना किसी बाहरी सहयोग के एक ही व्यक्ति द्वारा संचालित।
(C) केवल शीर्ष 10% छात्रों पर केंद्रित।
(D) शिक्षकों, अभिभावकों और प्रशासकों के सहयोग से विकसित और कार्यान्वित।

200. टाइप 1 बनाम टाइप 2 मधुमेह के कारण में मुख्य अंतर क्या है?
(A) टाइप 1 स्वप्रतिरक्षित है; टाइप 2 मुख्य रूप से जीवनशैली और इंसुलिन प्रतिरोध से संबंधित है।
(B) टाइप 1 इंसुलिन की कमी के कारण होता है; टाइप 2 इंसुलिन की अधिकता के कारण होता है।
(C) टाइप 1 आहार से उपचार योग्य है; टाइप 2 के लिए प्रारंभ से ही आजीवन इंसुलिन इंजेक्शन की आवश्यकता होती है।
(D) टाइप 1 हृदय को प्रभावित करता है; टाइप 2 वृक्क को प्रभावित करता है।

201. सूची I (शब्द) को सूची II (संबंधित दृष्टिकोण/अवधारणा) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I (शब्द)
P. अनुरूपता
Q. वाद-विवाद
R. संश्लेषण
S. सशक्तीकरण।
सूची II (संबंधित दृष्टिकोण/अवधारणा)
1. तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा
2. निर्देशात्मक परामर्श

267. विद्यालय परिवेश में, छात्रों को निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त अन्य सभी में सहायता के लिए निर्देशन की आवश्यकता होती है:
(A) विषय और भविष्य के करियर का चयन करना।
(B) पारस्परिक कौशल विकसित करना और संघर्षों को हल करना।
(C) व्यक्तिगत और भावनात्मक तनाव का सामना करना।
(D) अपने माता-पिता के वित्तीय निवेशों का प्रबंधन करना।

268. अनिर्देशात्मक परामर्श दृष्टिकोण इस मूल विश्वास पर आधारित है कि:
(A) परामर्शदाता वह विशेषज्ञ है जिसके पास उत्तर हैं।
(B) मनुष्यों में आत्म-बोध की दिशा में एक जन्मजात प्रेरणा होती है।
(C) तर्कहीन विचार सभी समस्याओं की जड़ हैं।
(D) व्यवहार पुरस्कार और दंड द्वारा आकार लेता है।

269. एक व्यक्ति जिसे कई वर्षों से टाइप 2 मधुमेह है और अब वृक्क विफलता का उपचार करा रहा है, यह किस स्थिति का उदाहरण है जिसे किसके द्वारा संबोधित किया जाता है:
(A) प्राथमिक रोकथाम
(B) द्वितीयक रोकथाम
(C) तृतीयक रोकथाम
(D) स्वास्थ्य संवर्धन

270. विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने में 'परामर्श सेवा' की क्या भूमिका है?
(A) छात्र अभिलेख एकत्र करना, व्यवस्थित करना और बनाए रखना।
(B) रोजगार, प्रशिक्षण और अग्रिम शिक्षा के बारे में सूचना प्रदान करना।
(C) निर्देशन कार्यक्रम की समग्र प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
(D) छात्रों को उनकी चिंताओं में सहायता करने के लिए एक पेशेवर, सहायक संबंध प्रदान करना।

271. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. स्वास्थ्य के लिए हानिकारक व्यवहार रोग जोखिम को बढ़ाते हैं।
2. स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार कठिन होते हैं और कोई लाभ नहीं देते हैं।
3. जीवनशैली विकल्पों का दीर्घकालिक स्वास्थ्य परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

272. प्राथमिक और द्वितीयक रोकथाम कार्यक्रम के बीच मुख्य अंतर है:
(A) कार्यक्रम की लागत।
(B) लक्षित जनसंख्या और हस्तक्षेप का समय।
(C) कर्मचारियों की पेशेवर योग्यता।
(D) वह स्थान जहाँ कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

273. परामर्श दृष्टिकोण जो तर्क, कारण और विश्वासों पर प्रश्न करने की वैज्ञानिक पद्धति पर बल देता है, वह है:
(A) अनिर्देशात्मक परामर्श
(B) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
(C) मनोविश्लेषणात्मक परामर्श
(D) व्यक्ति-केंद्रित परामर्श

274. एथेरोस्क्लेरोसिस का एक मुख्य कारण, जो अधिकांश हृदय रोगों का आधार है:
(A) धमनी की दीवारों में कोलेस्ट्रॉल और अन्य पदार्थों का संचय।
(B) लगातार निम्न रक्तचाप।
(C) रक्त प्रवाह में ग्लूकोज की कमी।
(D) एक अतिसक्रिय थायराइड ग्रंथि।

275. महाविद्यालय में एक निर्देशन कार्यक्रम जो भली-भांति व्यवस्थित है, उसमें सामान्यतः होगा:
(A) शैक्षणिक आवश्यकताओं के लिए केवल एक ही सेवा।
(B) कोई परिभाषित कार्यक्रम उद्देश्य या मूल्यांकन नहीं।
(C) विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार की सेवाएँ।
(D) कर्मचारी जो निर्देशन कार्य में प्रशिक्षित नहीं हैं।

276. टाइप 1 मधुमेह का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) जीवनशैली कारक जैसे आहार और व्यायाम।
(B) वृद्ध व्यक्तियों में आयु वृद्धि की प्रक्रिया।
(C) अनियंत्रित दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक तनाव।
(D) कोशिकाओं का आनुवंशिक और स्वप्रतिरक्षित विनाश।

277. "सशक्तीकरण" की अवधारणा किस क्षेत्र के केंद्र में है?
(A) निर्देशात्मक परामर्श
(B) तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा
(C) सामुदायिक मनोविज्ञान
(D) जैव-चिकित्सीय मॉडल

278. निम्नलिखित में से कौन विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने का सिद्धांत नहीं है?
(A) कार्यक्रम को व्यवस्थित रुप से नियोजित किया जाना चाहिए।
(B) कार्यक्रम कठोर और अपरिवर्तनीय होना चाहिए।
(C) कार्यक्रम छात्र की आवश्यकताओं पर आधारित होना चाहिए।
(D) कार्यक्रम के लिए सहयोगी विद्यालय कर्मचारियों की आवश्यकता होती है।

परामर्शदाता द्वारा प्रदान की गई सहानुभूति और पूर्ण स्वीकृति सेवार्थी को बिना किसी भय के अपनी समस्याओं का सामना करने और समाधान खोजने के लिए मानसिक रूप से सशक्त बनाती है।

20. (C) II, III, I
तर्कसंगत-भावनात्मक ए-बी-सी मॉडल के अनुसार, किसी भी भावनात्मक प्रतिक्रिया का एक निश्चित क्रम होता है। सर्वप्रथम एक बाह्य घटना घटित होती है जो प्रतिक्रिया को सक्रिय करती है। इसके पश्चात, व्यक्ति उस घटना के प्रति अपनी निजी धारणा या विश्वास विकसित करता है। अंत में, उस विश्वास के आधार पर व्यक्ति भावनात्मक और व्यवहारिक परिणामों का अनुभव करता है। यह क्रम स्पष्ट करता है कि हमारे विचार ही हमारे अनुभव और मानसिक स्थिति को निर्धारित करने वाले मुख्य कारक हैं।

21. (C) एक सफल कार्यक्रम के लिए संकाय, प्रशासन और छात्रों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है।
महाविद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रम का प्रभावी संचालन केवल परामर्शदाता का उत्तरदायित्व नहीं है, बल्कि यह एक सामूहिक प्रयास होना चाहिए। इसमें संकाय सदस्यों, प्रशासनिक अधिकारियों और स्वयं छात्रों का सक्रिय सहयोग अनिवार्य है ताकि एक व्यापक सहायता प्रणाली विकसित की जा सके। जब संस्थान के सभी घटक मिलकर कार्य करते हैं, तो छात्रों की शैक्षणिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत आवश्यकताओं को अधिक सटीकता से पूरा किया जा सकता है, जिससे परिसर का वातावरण सकारात्मक बनता है।

22. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
टाइप 2 मधुमेह में शरीर की कोशिकाएं इंसुलिन के प्रति प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया करना बंद कर देती हैं, जिसे इंसुलिन प्रतिरोध कहा जाता है। हालाँकि, यह एक स्वप्रतिरक्षित बीमारी नहीं है, बल्कि यह मुख्य रूप से जीवनशैली कारकों, आनुवंशिकता और मोटापे से जुड़ी होती है। इसके विपरीत, टाइप 1 मधुमेह एक स्वप्रतिरक्षित स्थिति है जहाँ शरीर का रक्षा तंत्र ही अग्न्याशय की कोशिकाओं को नष्ट कर देता है। अतः टाइप 2 मधुमेह के कारण और प्रकृति पूर्णतः भिन्न हैं।

23. (D) हृदय रोग और टाइप 2 मधुमेह दोनों
प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन, शारीरिक गतिविधि की कमी और लंबे समय तक बना रहने वाला तनाव स्वास्थ्य हेतु अत्यंत जोखिमपूर्ण है। ये कारक सामूहिक रूप से शरीर में सूजन, इंसुलिन प्रतिरोध और धमनियों में पट्टिका जमने की प्रक्रिया को बढ़ावा देते हैं। इसके कारण न केवल रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ता है, बल्कि टाइप 2 मधुमेह और हृदय रोगों के विकसित होने की संभावना भी अधिक हो जाती है। स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर इन जोखिमों को टाला जा सकता है।

24. (A) व्यक्तिगत विकास, समस्या-समाधान या समायोजन चाहने वाले सभी व्यक्ति।
परामर्श एक व्यापक और समावेशी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य किसी भी व्यक्ति की सहायता करना है जो अपने जीवन में सुधार या समायोजन चाहता है। यह केवल गंभीर मानसिक विकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि शैक्षणिक तनाव, करियर चयन और व्यक्तिगत संबंधों जैसी सामान्य चुनौतियों हेतु भी अत्यंत उपयोगी है। परामर्श व्यक्ति को अपनी समस्याओं को समझने और प्रभावी कौशल विकसित करने में सक्षम बनाता है, जिससे उसका सर्वांगीण विकास और मानसिक स्वास्थ्य काफी बेहतर होता है।

25. (C) निर्देशात्मक परामर्श
निर्देशात्मक परामर्श में परामर्शदाता एक सक्रिय और आधिकारिक भूमिका निभाता है, जहाँ वह सेवार्थी के डेटा और इतिहास का वैज्ञानिक विश्लेषण करता है। विश्लेषण के पश्चात, वह समस्या का सटीक निदान करता है और सुधार हेतु प्रत्यक्ष समाधान या परामर्श प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि परामर्शदाता के पास सेवार्थी की तुलना में अधिक अनुभव और ज्ञान है, जो उसे बेहतर निर्णय लेने और मार्गदर्शन करने में पूरी तरह सक्षम बनाता है।

26. (A) छात्रों की बीमारियों के लिए चिकित्सा उपचार प्रदान करना।
विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम का मुख्य ध्यान छात्रों के मनोवैज्ञानिक, शैक्षणिक और सामाजिक विकास पर होता है, न कि शारीरिक बीमारियों के चिकित्सा उपचार पर। इनका उद्देश्य छात्रों को भविष्य की करियर योजनाओं में सहायता करना, प्रभावी संचार कौशल सिखाना और व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करने हेतु तैयार करना है। चिकित्सा देखभाल हेतु विद्यालय स्वास्थ्य केंद्र या अस्पताल उत्तरदायी होते हैं। निर्देशन सेवाएँ छात्र की क्षमता को अधिकतम करने हेतु एक सहायक ढांचा प्रदान करने का कार्य करती हैं।

27. (C) केवल 1 और 3
सामुदायिक मनोविज्ञान विशेष रूप से उन सामाजिक और प्रणालिगत कारकों पर ध्यान केंद्रित करता है जो व्यक्ति के कल्याण को प्रभावित करते हैं। इसका उद्देश्य केवल लक्षणों का उपचार करना नहीं है, बल्कि समस्याओं को होने से रोकना और समुदाय के सदस्यों को सशक्त बनाना है ताकि वे स्वयं सकारात्मक परिवर्तन ला सकें। यह दृष्टिकोण व्यक्तियों को उनके वातावरण के संदर्भ में समझता है और सामाजिक न्याय तथा सामूहिक कार्यवाही के माध्यम से समुदाय के समग्र मानसिक स्वास्थ्य को सुधारता है।

28. (B) हृदय और रक्त वाहिकाओं को प्रभावित करने वाले विकारों का एक समूह।
हृदय रोग एक व्यापक शब्द है जो हृदय और संपूर्ण संचार प्रणाली से संबंधित कई अलग-अलग बीमारियों को समाहित करता है। इसमें कोरोनरी धमनी रोग, अनियमित हृदय गति और कपाटों की खराबी जैसी विभिन्न स्थितियां शामिल होती हैं। ये बीमारियाँ रक्त प्रवाह को प्रभावित करती हैं और शरीर के अंगों

2. सामुदायिक मनोविज्ञान
3. अनिर्देशात्मक परामर्श
4. तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श।

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

291. सामुदायिक मनोविज्ञान में निम्नलिखित में से कौन-सा हस्तक्षेप का प्रकार नहीं है?
(A) प्राथमिक रोकथाम
(B) द्वितीयक रोकथाम
(C) प्रतिगामी (Regressive) हस्तक्षेप
(D) तृतीयक रोकथाम

292. स्वास्थ्य के लिए हानिकारक जीवनशैली संकटापन्न है क्योंकि इसके प्रभाव अक्सर:
(A) तत्काल और तुरंत दिखाई देने वाले होते हैं।
(B) शरीर के लिए सार्वभौमिक रूप से लाभकारी होते हैं।
(C) दीर्घकालिक बीमारी के जोखिम से असंबंधित होते हैं।
(D) समय की अवधि में संचयी (cumulative) होते हैं।

293. "छात्रों को स्वयं की सहायता करने में सहायता करना" का दर्शन किसका मार्गदर्शक सिद्धांत है:
(A) दंडात्मक अनुशासन
(B) एथलेटिक कोचिंग
(C) निर्देशन सेवाएं
(D) अंतिम परीक्षाएं

294. तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा में, सक्रिय करने वाली घटना (A), विश्वास (B) और परिणाम (C) की पहचान करने के बाद, अगला चरण है:
(A) सक्रियण (A)
(B) वाद-विवाद (D)
(C) प्रतिक्रिया (R)
(D) मूल्यांकन (E)

295. मधुमेह की प्रकृति का सर्वोत्तम वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा करता है?
(A) एक संक्रामक जीवाणु संक्रमण।
(B) एक क्षणिक मनोवैज्ञानिक अवस्था।
(C) कंकाल की अस्थियों की बीमारी।
(D) एक दीर्घकालिक चयापचय विकार।

296. एक सामुदायिक मनोवैज्ञानिक जो विद्यालय प्रणाली में नीतियों को परिवर्तित करने के लिए कार्य कर रहा है ताकि इसे सभी छात्रों के लिए अधिक सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और समावेशी बनाया जा सके, वह किसमें संलग्न है:
(A) प्रणाली-स्तर का हस्तक्षेप
(B) पारंपरिक आमने-सामने की चिकित्सा
(C) जैव-चिकित्सीय बीमारी का उपचार
(D) केवल द्वितीयक रोकथाम

297. कौन-सा परामर्श दृष्टिकोण सेवार्थी के आंतरिक संसाधनों और विकास की क्षमता में सर्वाधिक विश्वास रखता है?
(A) निर्देशात्मक
(B) RET
(C) अनिर्देशात्मक
(D) व्यवहारिक

298. निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने के लिए निम्नलिखित चरणों पर विचार कीजिए:
1. एक निर्देशन समिति गठित करना।
2. छात्रों की आवश्यकताओं का आकलन करना।
3. कार्यक्रम के लिए स्पष्ट उद्देश्यों को तैयार करना।

उपरोक्त में से कौन विद्यालय या महाविद्यालय में आवश्यक प्रारंभिक चरण हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

299. उच्च रक्तचाप और उच्च कोलेस्ट्रॉल किसके महत्वपूर्ण कारक हैं:
(A) टाइप 1 मधुमेह
(B) अनिर्देशात्मक चिकित्सा
(C) राजनीतिक अशक्तीकरण
(D) हृदय रोग (Cardiovascular disease)

300. निर्देशन कार्यक्रम में 'अनुवर्ती' सेवा का प्राथमिक उद्देश्य है:
(A) छात्रों को परामर्श मानने के लिए विवश करना।
(B) कार्यक्रम की सफलता का मूल्यांकन करना।
(C) छात्र अभिलेखों को सार्वजनिक करना।
(D) कक्षा में अनुशासन बनाए रखना।

279. अनिर्देशात्मक परामर्श का आधार "बिना शर्त सकारात्मक सम्मान" शब्द का अर्थ है कि परामर्शदाता:
(A) सेवार्थी जो कुछ भी करता है उससे सहमत होता है।
(B) सेवार्थी को व्यक्तिगत मित्र के रूप में पसंद करता है।
(C) सकारात्मक सामाजिक व्यवहार बनाए रखता है।
(D) बिना किसी निर्णय के सेवार्थी को स्वीकार करता है।

280. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है।
अभिकथन (A): सामुदायिक मनोविज्ञान हस्तक्षेप अक्सर निवारक होने के लिए निर्मित किए जाते हैं।
कारण (R): नशीली दवाओं के दुरुपयोग या विद्यालय छोड़ने जैसी व्यापक समस्याओं को होने के पश्चात व्यक्तिगत उपचार करने की तुलना में उन्हें रोकना सामान्यतः अधिक प्रभावी और नैतिक है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

281. निर्देशात्मक बनाम अनिर्देशात्मक परामर्श की प्रकृति में मुख्य अंतर इसमें निहित है:
(A) सत्र की व्यावसायिक व्यवस्था।
(B) सेवार्थी से ली जाने वाली फीस की लागत।
(C) सत्रों में परामर्शदाता के नियंत्रण की मात्रा।
(D) सेवा प्राप्त करने वाले सेवार्थी की आयु।

282. टेलीविजन पर एक सार्वजनिक सेवा घोषणा जो धूम्रपान के खतरों के बारे में चेतावनी देती है, किस प्रकार के हस्तक्षेप का उदाहरण है?
(A) प्राथमिक रोकथाम
(B) तृतीयक रोकथाम
(C) द्वितीयक रोकथाम
(D) तीव्र नैदानिक उपचार

283. निम्नलिखित में से किसे स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार माना जाता है?
(A) कम गतिविधि वाली गतिहीन जीवनशैली।
(B) तंबाकू उत्पादों का निरंतर धूम्रपान।
(C) अत्यधिक प्रसंस्कृत आहार का सेवन।
(D) प्रभावी और नियमित तनाव प्रबंधन।

284. इंसुलिन प्रतिरोध किसकी प्रमुख विशेषता है:
(A) टाइप 1 मधुमेह
(B) टाइप 2 मधुमेह
(C) गर्भकालीन मधुमेह
(D) अग्न्याशय का कैंसर

285. एक परामर्शदाता जो किसी छात्र की समस्या को ध्यान से सुनता है और फिर कहता है, "आपके परीक्षण प्राप्तांकों और आपकी रुचियों के मेरे विश्लेषण के आधार पर, मैं आपको अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) में करियर बनाने का परामर्श देता हूँ," वह ______ दृष्टिकोण का उपयोग कर रहा है।
(A) अनिर्देशात्मक
(B) संकलनात्मक
(C) निर्देशात्मक
(D) मनोविश्लेषणात्मक

286. विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एक आवश्यक घटक है:
(A) कर्मचारियों में कम से कम दस परामर्शदाता होना।
(B) छात्र की सभी त्रुटियों को दंडित करने के लिए एक प्रणाली।
(C) कार्यक्रम में माता-पिता की कोई भागीदारी न होना।
(D) स्पष्ट और मापने योग्य कार्यक्रम उद्देश्य।

287. परामर्श गतिविधि के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: निर्देशात्मक और तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श दोनों को "सक्रिय" चिकित्सा माना जाता है जहाँ चिकित्सक नेतृत्व करता है।
कथन II: अनिर्देशात्मक परामर्श को "निष्क्रिय" माना जाता है क्योंकि चिकित्सक की मुख्य भूमिका सुनना और प्रतिबिंबित करना है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

288. हृदयाघात (मायोकार्डियल इन्फ्रक्शन) का प्रत्यक्ष कारण निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) मापने योग्य रक्त शर्करा में अचानक गिरावट।
(B) कोरोनरी धमनियों में रुकावट।
(C) यकृत पर एक स्वप्रतिरक्षित आक्रमण।
(D) श्वसन तंत्र की दीर्घकालिक विफलता।

289. निर्देशन और परामर्श की आवश्यकता इस तथ्य से उत्पन्न होती है कि व्यक्तियों को:
(A) सामान्यतः विचार करने में असमर्थ होना।
(B) चयन करने में सहायता की आवश्यकता होना।
(C) एक सरल और स्थिर समाज में रहना।
(D) सरल, स्पष्ट जीवन मार्गों का सामना करना।

290. सूची I (परामर्श अवधारणा) को सूची II (संबंधित विचारधारा) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I (परामर्श अवधारणा)
P. तर्कहीन विश्वास
Q. बिना शर्त सकारात्मक सम्मान
R. निदान और नुस्खा
S. प्रणाली-स्तर का हस्तक्षेप।
सूची II (संबंधित विचारधारा)
1. निर्देशात्मक परामर्श

10. (A) इन्हें केवल अपचारी छात्रों की समस्याओं को हल करने के लिए निर्मित किया गया है।
विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रम केवल समस्याग्रस्त छात्रों के लिए ही नहीं होते, बल्कि वे सभी छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक हैं। ये कार्यक्रम छात्रों को उनकी शैक्षणिक क्षमताओं को समझने, व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करने और भविष्य के लिए सुविज्ञ करियर विकल्प चुनने में सहायता करते हैं। इनका मुख्य लक्ष्य एक सहायक वातावरण का निर्माण करना है जहाँ प्रत्येक छात्र अपने सामाजिक और मानसिक कौशल को निखार सके और सफलता प्राप्त कर सके।

11. (A) केवल 1
हृदय रोगों के संदर्भ में उच्च रक्तचाप एक प्रमुख और प्रमाणित जोखिम कारक है क्योंकि यह धमनियों और हृदय की मांसपेशियों पर अतिरिक्त दबाव डालता है। हालाँकि आनुवंशिक कारक इन रोगों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ा सकते हैं, लेकिन ये पूरी तरह से आनुवंशिकता पर निर्भर नहीं होते हैं। जीवनशैली में सकारात्मक बदलाव, जैसे स्वस्थ आहार और नियमित शारीरिक गतिविधि, इन रोगों के प्रबंधन और रोकथाम में एक निर्णायक भूमिका निभाते हैं, जो उपचार का आधार हैं।

12. (B) छात्र जनसंख्या की विशिष्ट निर्देशन और परामर्श आवश्यकताओं की पहचान करना।
महाविद्यालयों में आवश्यकता आकलन का प्राथमिक उद्देश्य छात्रों के समक्ष आने वाली विविध चुनौतियों और उनकी अपेक्षाओं को गहराई से समझना है। यह प्रक्रिया प्रशासन को यह जानने में सहायता करती है कि छात्रों को किस प्रकार के शैक्षणिक, करियर संबंधी या व्यक्तिगत मार्गदर्शन की सर्वाधिक आवश्यकता है। इस डेटा के आधार पर, निर्देशन कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी और प्रासंगिक बनाया जा सकता है, जिससे संसाधनों का उचित आवंटन सुनिश्चित होता है और कल्याण होता है।

13. (C) अनिर्देशात्मक परामर्श
कार्ल रोजर्स द्वारा विकसित सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा अनिर्देशात्मक परामर्श का एक प्रमुख उदाहरण है। यह दृष्टिकोण इस विश्वास पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति में अपनी समस्याओं को समझने और उन्हें सुलझाने की अंतर्निहित क्षमता होती है। यहाँ परामर्शदाता एक विशेषज्ञ के स्थान पर एक सुविधादाता के रूप में कार्य करता है, जो सहानुभूति और बिना शर्त स्वीकृति का वातावरण प्रदान करता है। यह परिवेश सेवार्थी को आत्म-अन्वेषण और व्यक्तिगत विकास हेतु प्रोत्साहित करता है।

14. (D) पट्टिका (plaque) जमने के कारण धमनियों का कठोर और संकुचित होना।
एथेरोस्क्लेरोसिस एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें धमनियों की आंतरिक दीवारों पर वसा, कोलेस्ट्रॉल और अन्य पदार्थों की पट्टिका धीरे-धीरे जमा होने लगती है। यह जमाव समय के साथ धमनियों को कठोर और संकुचित बना देता है, जिससे शरीर के महत्वपूर्ण अंगों तक रक्त का प्रवाह बाधित हो जाता है। यह स्थिति हृदय रोगों का प्रमुख कारण है क्योंकि जब हृदय को पर्याप्त ऑक्सीजन युक्त रक्त नहीं मिलता, तो हृदयाघात जैसी गंभीर स्थितियां उत्पन्न होती हैं।

15. (A) P-4, Q-1, R-3, S-2
स्वास्थ्य और परामर्श के विभिन्न चरणों को समझना अत्यंत आवश्यक है। प्राथमिक रोकथाम के तहत व्यापक अभियान चलाए जाते हैं, जबकि द्वितीयक रोकथाम में रोगों की प्रारंभिक जांच शामिल होती है। निर्देशात्मक परामर्श में परामर्शदाता सक्रिय रूप से समाधान प्रदान करता है, जो सेवार्थी की सहायता हेतु एक त्वरित मार्ग है। वहीं, नियमित शारीरिक गतिविधि स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार का उत्कृष्ट उदाहरण है जो दीर्घकालिक कल्याण सुनिश्चित करती है। इन सभी प्रक्रियाओं का उद्देश्य सामुदायिक स्वास्थ्य सुधारना है।

16. (B) प्रारंभिक अवस्था में समस्याओं की पहचान करना और उनका उपचार करना।
सामुदायिक मनोविज्ञान में द्वितीयक रोकथाम का ध्यान उन व्यक्तियों या समूहों पर होता है जिनमें किसी समस्या के प्रारंभिक लक्षण दिखाई देने लगे हैं। इसका मुख्य लक्ष्य त्वरित पहचान और प्रभावी हस्तक्षेप के माध्यम से विकार की प्रगति को रोकना है। इस रणनीति के तहत विभिन्न परीक्षणों और परामर्श जैसे उपायों का उपयोग किया जाता है ताकि समस्या गंभीर रूप न ले सके। यह दृष्टिकोण संसाधनों के कुशल उपयोग और व्यक्तिगत कष्ट कम करने में प्रभावी होता है।

17. (B) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
ए-बी-सी मॉडल तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा का केंद्रीय ढांचा है जो यह समझाता है कि हमारी भावनाएं कैसे उत्पन्न होती हैं। यहाँ 'ए' सक्रिय करने वाली घटना को, 'बी' उस घटना के प्रति हमारे विश्वास को और 'सी' हमारे भावनात्मक परिणामों को दर्शाता है। यह मॉडल इस बात पर बल देता है कि विक्षोभ का कारण स्वयं घटना नहीं, बल्कि उस पर हमारा अवास्तविक दृष्टिकोण होता है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों को बदलकर मानसिक स्वास्थ्य सुधार सकता है।

18. (A) टाइप 2 मधुमेह
इंसुलिन प्रतिरोध टाइप 2 मधुमेह की एक आधारभूत विशेषता है, जिसमें शरीर की कोशिकाएं इंसुलिन हार्मोन के प्रति उचित प्रतिक्रिया नहीं दे पाती हैं। इसके कारण ग्लूकोज कोशिकाओं में प्रवेश नहीं कर पाता और रक्त प्रवाह में शर्करा का स्तर बढ़ जाता है। प्रारंभ में, अग्न्याशय इसकी पूर्ति हेतु अधिक इंसुलिन बनाता है, लेकिन समय के साथ वह मांग पूरी करने में असमर्थ हो जाता है। यह स्थिति प्रायः जीवनशैली और मोटापे जैसे कारकों से गहराई से जुड़ी होती है।

19. (C) एक सुविधादाता जो सेवार्थी के आत्म-अन्वेषण के लिए एक सुरक्षित और स्वीकार्य वातावरण प्रदान करता है।
अनिर्देशात्मक दृष्टिकोण में परामर्शदाता की भूमिका एक विशेषज्ञ के स्थान पर एक सहायक की होती है जो सेवार्थी के विकास हेतु अनुकूल परिस्थितियां बनाता है। वह सेवार्थी पर अपने विचार थोपने के बजाय उसे अपनी भावनाओं और व्यवहारों को गहराई से समझने के लिए प्रोत्साहित करता है।

उपयोग सुनिश्चित होता है। यह एक व्यवस्थित ढांचा प्रदान करता है जो छात्रों के विकास हेतु आवश्यक सेवाओं को लागू करने में सहायक है।

38. (B) उच्च रक्तचाप
उच्च रक्तचाप हृदय रोग हेतु एक प्रमुख परिवर्तनीय जोखिम कारक है, जिसका अर्थ है कि इसे चिकित्सा उपचार और जीवनशैली में सुधार के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है। इसके विपरीत, आयु, लिंग और पारिवारिक इतिहास अपरिवर्तनीय कारक हैं क्योंकि इन्हें बदला नहीं जा सकता। उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने से धमनियों पर दबाव कम होता है और हृदयाघात जैसी गंभीर घटनाओं का जोखिम काफी घट जाता है। नियमित निगरानी और स्वस्थ आहार इस जोखिम को कम करने के प्रभावी उपाय हैं।

39. (B) आत्म-बोध और समस्या-समाधान की प्रवृत्ति।
अनिर्देशात्मक परामर्श इस मूल दर्शन पर आधारित है कि प्रत्येक मनुष्य के भीतर विकास और आत्म-सुधार की एक स्वाभाविक शक्ति होती है। यह दृष्टिकोण मानता है कि यदि व्यक्ति को सही वातावरण और स्वीकृति मिले, तो वह स्वयं अपनी समस्याओं की जड़ों तक पहुँच सकता है और समाधान खोज सकता है। परामर्शदाता यहाँ केवल उस प्रक्रिया को सुगम बनाता है, जिससे सेवार्थी अपने वास्तविक स्वरूप को समझ सके और अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करते हुए अपने जीवन को नई दिशा दे सके।

40. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
स्वास्थ्य-प्रवर्धक और स्वास्थ्य हेतु हानिकारक जीवनशैली दोनों ही व्यक्ति के दीर्घकालिक स्वास्थ्य परिणामों को सीधे प्रभावित करती हैं। जहाँ संतुलित आहार और सक्रिय जीवनशैली शारीरिक ऊर्जा को बढ़ावा देती है, वहीं जंक फूड, धूम्रपान और व्यायाम की कमी मधुमेह जैसी बीमारियों के खतरे को बढ़ा देती है। इन दोनों कथनों का संयोजन स्पष्ट करता है कि हमारे दैनिक चुनाव और व्यवहार ही हमारे स्वास्थ्य के स्तर को निर्धारित करने वाले मुख्य आधार हैं। अतः सचेत जीवनशैली अपनाना स्वास्थ्य हेतु अनिवार्य है।

41. (C) द्वितीयक रोकथाम
समुदाय में उच्च रक्तचाप हेतु परीक्षण कार्यक्रम द्वितीयक रोकथाम का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका मुख्य उद्देश्य रोग के लक्षणों के गंभीर होने से पहले ही उसकी प्रारंभिक अवस्था में पहचान करना है। शीघ्र पता चलने पर, उचित उपचार और जीवनशैली में बदलाव के माध्यम से स्थिति को नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे हृदयाघात या मस्तिष्काघात जैसी भविष्य की जटिलताओं को रोका जा सकता है। यह रणनीति बीमारी के प्रसार को सीमित करने और स्वास्थ्य देखभाल लागत कम करने में सहायक होती है।

42. (A) सेवार्थी के तर्कहीन विश्वासों को चुनौती देना।
तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा में "वाद-विवाद" एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जहाँ परामर्शदाता सेवार्थी के अवास्तविक विचारों को तार्किक रूप से चुनौती देता है। इसका उद्देश्य सेवार्थी को यह दिखाना है कि उसके नकारात्मक विचार ठोस प्रमाणों पर नहीं, बल्कि गलत धारणाओं पर आधारित हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से, सेवार्थी अपने स्वयं के विनाशकारी विचारों का विश्लेषण करना सीखता है और उन्हें अधिक संतुलित और स्वस्थ विचारों के साथ बदलने का प्रयास करता है, जिससे दीर्घकालिक मानसिक शांति और संतोष प्राप्त होता है।

43. (D) टाइप 2 मधुमेह
टाइप 2 मधुमेह एक चयापचय विकार है जिसमें शरीर इंसुलिन का सही उपयोग नहीं कर पाता, यह स्वयं एक हृदय रोग नहीं है। हालाँकि, मधुमेह का होना हृदय रोगों के जोखिम को काफी बढ़ा देता है, लेकिन कोरोनरी धमनी रोग और मस्तिष्काघात सीधे हृदय और रक्त वाहिकाओं की कार्यप्रणाली को प्रभावित करने वाली स्थितियां हैं। हृदय रोग मुख्य रूप से रक्त परिसंचरण में आने वाली बाधाओं से संबंधित होते हैं, जबकि मधुमेह मुख्य रूप से रक्त शर्करा के स्तर के नियंत्रण से संबंधित है।

44. (B) छात्रों और कर्मचारियों के बीच आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण आयोजित करना।
विद्यालय में किसी भी प्रभावी निर्देशन कार्यक्रम की नींव आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण पर आधारित होनी चाहिए। यह कदम परामर्शदाता को छात्रों के समक्ष आने वाली वास्तविक समस्याओं, उनकी शैक्षणिक चिंताओं और सामाजिक चुनौतियों को समझने में सहायता करता है। कर्मचारियों की राय लेने से कार्यक्रम को लागू करने में व्यापक सहयोग सुनिश्चित होता है। जब तक विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान नहीं की जाती, तब तक निर्देशन सेवाएं केवल सामान्य बनी रहेंगी और छात्रों के विकास में अपेक्षित सकारात्मक प्रभाव डालने में असमर्थ होंगी।

45. (A) II, III, I, IV
अनिर्देशात्मक चिकित्सा की प्रक्रिया एक निश्चित क्रम में आगे बढ़ती है। सर्वप्रथम, परामर्शदाता बिना शर्त सकारात्मक सम्मान का वातावरण बनाता है ताकि सेवार्थी सुरक्षित महसूस करे। इस सुरक्षा के भाव के साथ, सेवार्थी अपने वास्तविक स्वरूप की खोज शुरू करता है और अपनी भावनाओं के प्रति गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त करता है। अंत में, यह नई समझ सेवार्थी को आत्म-बोध की दिशा में सक्रिय कदम उठाने हेतु प्रेरित करती है। यह क्रमिक विकास व्यक्ति के व्यक्तित्व में स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन सुनिश्चित करता है।

46. (D) प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत, सामाजिक और शैक्षणिक क्षमता को अधिकतम करना।
शिक्षण संस्थानों में निर्देशन और परामर्श का मूल ध्येय छात्र के सर्वांगीण विकास हेतु एक सहायक मंच प्रदान करना है। इसका उद्देश्य केवल शैक्षणिक सफलता नहीं है, बल्कि छात्र को उसके स्वयं के कौशल, रुचियों और व्यक्तित्व को समझने में सहायता करना है। जब छात्र अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक चुनौतियों को पार करना सीख जाता है, तो वह अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग कर पाता है। यह प्रक्रिया उसे एक संतुलित और सफल नागरिक के रूप में विकसित होने हेतु तैयार करती है।

तक ऑक्सीजन पहुँचने में बाधा डालती हैं। यह स्थिति केवल वृद्धों तक सीमित नहीं है और इसके कारण जीवनशैली से लेकर आनुवंशिक कारकों तक भिन्न हो सकते हैं।

29. (C) समाधान खोजने के लिए सेवार्थी बनाम परामर्शदाता पर रखी गई उत्तरदायित्व की मात्रा।
निर्देशात्मक और अनिर्देशात्मक परामर्श के बीच मूलभूत अंतर इस बात में है कि समाधान खोजने का मुख्य उत्तरदायित्व किस पर है। निर्देशात्मक परामर्श में परामर्शदाता सक्रिय रूप से समाधान सुझाता है और प्रक्रिया को नियंत्रित करता है, जबकि अनिर्देशात्मक परामर्श में सेवार्थी को ही अपने मार्ग की खोज हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। यहाँ परामर्शदाता केवल एक सहायक की भूमिका निभाता है, जिससे सेवार्थी अपनी स्वायत्तता और आत्म-निर्भरता को विकसित कर सके और समस्याओं का स्थायी समाधान पा सके।

30. (D) एक स्वप्रतिरक्षित प्रतिक्रिया।
टाइप 1 मधुमेह मुख्य रूप से एक स्वप्रतिरक्षित प्रतिक्रिया के कारण होता है, जहाँ शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली गलती से अग्न्याशय की इंसुलिन बनाने वाली कोशिकाओं को बाहरी हमलावर मानकर नष्ट कर देती है। इसका आहार या व्यायाम से सीधा संबंध नहीं होता है और यह स्थिति प्रायः बचपन में अचानक विकसित होती है। चूंकि शरीर अब इंसुलिन का उत्पादन नहीं कर सकता, इसलिए जीवित रहने हेतु बाहरी इंसुलिन का इंजेक्शन लेना अनिवार्य होता है। यह एक गंभीर जैविक विफलता है।

31. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
परामर्श और मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों का विकास विशिष्ट विद्वानों द्वारा किया गया है। ई.जी. विलियमसन ने निर्देशात्मक परामर्श को बढ़ावा दिया, जबकि कार्ल रोजर्स ने अनिर्देशात्मक दृष्टिकोण की नींव रखी। अल्बर्ट एलिस ने भावनाओं और विश्वासों के बीच संबंध स्थापित करते हुए तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा विकसित की। वहीं सामुदायिक मनोविज्ञान व्यक्तिगत उपचार के स्थान पर संपूर्ण सामाजिक प्रणालियों के सुधार और सशक्तीकरण पर ध्यान केंद्रित करता है। ये सभी धाराएं मानव व्यवहार को समझने के विभिन्न आयाम प्रस्तुत करती हैं।

32. (B) स्वास्थ्य और बीमारी के घटकों को समझने के लिए एक सैद्धांतिक रूपरेखा।
मनोविज्ञान में 'स्वास्थ्य मॉडल' एक ऐसा वैचारिक ढांचा है जो हमें यह समझने में सहायता करता है कि लोग स्वस्थ कैसे रहते हैं और वे बीमार क्यों पड़ते हैं। यह मॉडल स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों के बीच जटिल अंतःसंबंधों की व्याख्या करता है। इन मॉडलों के माध्यम से शोधकर्ता और चिकित्सक बीमारियों की रोकथाम और उपचार हेतु प्रभावी रणनीतियां विकसित करते हैं, जिससे समाज के समग्र स्वास्थ्य परिणामों में महत्वपूर्ण सुधार लाया जा सकता है।

33. (B) निर्देशात्मक परामर्श - सेवार्थी-केंद्रित
निर्देशात्मक परामर्श और सेवार्थी-केंद्रित परामर्श दो विपरीत विचारधाराएं हैं। निर्देशात्मक दृष्टिकोण में परामर्शदाता सक्रिय रूप से निर्देश और समाधान प्रदान करता है, जिससे वह 'परामर्शदाता-केंद्रित' बन जाता है। इसके विपरीत, सेवार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण पूर्णतः व्यक्ति की अपनी भावनाओं और आत्म-बोध पर आधारित होता है, जहाँ परामर्शदाता केवल एक सुविधादाता होता है। अन्य युग्म जैसे टाइप 1 मधुमेह का इंसुलिन पर निर्भर होना और तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा का ए-बी-सी मॉडल वैज्ञानिक रूप से सुमेलित और सटीक हैं।

34. (A) प्राथमिक रोकथाम
प्राथमिक रोकथाम का उद्देश्य किसी भी संभावित समस्या के उत्पन्न होने से पहले ही आवश्यक कदम उठाना है। नए माता-पिता के लिए पालन-पोषण कौशल की कार्यशाला बच्चों में भविष्य की व्यवहार संबंधी जटिलताओं को रोकने का एक अग्रिम प्रयास है। इस प्रकार के हस्तक्षेप शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से स्वस्थ विकास को बढ़ावा देते हैं। यह न केवल व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करता है, बल्कि समाज पर पड़ने वाले चिकित्सा बोझ को भी प्रभावी रूप से कम करता है।

35. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा वास्तव में एक निर्देशात्मक दृष्टिकोण है क्योंकि इसमें चिकित्सक निष्क्रिय नहीं रहता है। चिकित्सक सेवार्थी के उन अवास्तविक और तर्कहीन विश्वासों को सक्रिय रूप से चुनौती देता है जो उसके मानसिक तनाव का कारण बनते हैं। उसे सोचने के अधिक तर्कसंगत और स्वस्थ तरीके सिखाए जाते हैं ताकि वह अपने भावनात्मक अनुभवों पर नियंत्रण प्राप्त कर सके। यह सक्रिय हस्तक्षेप सेवार्थी को अपने व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु एक स्पष्ट दिशा और मार्गदर्शन प्रदान करता है।

36. (D) निर्देशन एक आदेशात्मक और बलपूर्वक की जाने वाली प्रक्रिया है।
निर्देशन का मूल सिद्धांत यह है कि यह एक स्वैच्छिक और सहायक प्रक्रिया होनी चाहिए, न कि किसी पर थोपी गई आज्ञा। यह व्यक्ति की स्वतंत्रता और उसकी गरिमा का सम्मान करता है, उसे अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने हेतु सशक्त बनाता है। निर्देशन एक सतत प्रक्रिया है जो प्रत्येक व्यक्ति की विशिष्ट आवश्यकताओं और भिन्नताओं को ध्यान में रखती है। इसमें बल प्रयोग का कोई स्थान नहीं है, क्योंकि इसका वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण और स्वाभाविक विकास करना है।

37. (C) कार्यक्रम के लिए स्पष्ट उद्देश्यों और लक्ष्यों को स्थापित करना।
महाविद्यालय में किसी भी निर्देशन कार्यक्रम की सफलता हेतु स्पष्ट और मापने योग्य उद्देश्यों का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। बिना निश्चित लक्ष्यों के, कार्यक्रम अपनी दिशा खो सकता है और छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने में विफल हो सकता है। स्पष्ट उद्देश्यों के माध्यम से कार्यक्रम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना सुलभ हो जाता है और संसाधनों का सही

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाने या बनाए रखने के लिए व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला व्यवहार।
स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली उन सकारात्मक आदतों का व्यवस्थित समूह है जिसे व्यक्ति अपने शारीरिक तथा मानसिक कल्याण को सुदृढ़ करने हेतु अपनाते हैं। इसमें केवल रोगों से बचना पर्याप्त नहीं है, अपितु संतुलित पोषण, नियमित व्यायाम और तनाव प्रबंधन के माध्यम से स्वास्थ्य के उच्चतम स्तर को प्राप्त करना सम्मिलित है। यह व्यापक दृष्टिकोण व्यक्ति को अपनी जीवन गुणवत्ता सुधारने हेतु निरंतर और सचेत प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

2. (A) यह एक स्वप्रतिरक्षित स्थिति है जहाँ शरीर अपनी ही अग्न्याशय कोशिकाओं पर हमला करता है।
टाइप 1 मधुमेह एक गंभीर स्थिति है जो तब उत्पन्न होती है जब शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली अग्न्याशय की उन बीटा कोशिकाओं को नष्ट कर देती है जो इंसुलिन का उत्पादन करती हैं। इसके परिणामस्वरूप शरीर में इंसुलिन का निर्माण लगभग समाप्त हो जाता है, जिससे रक्त में ग्लूकोज का स्तर अनियंत्रित हो जाता है। इस स्थिति के समुचित प्रबंधन हेतु रोगी को जीवन भर नियमित रूप से बाहरी इंसुलिन लेने की आवश्यकता होती है।

3. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
निर्देशात्मक परामर्श में परामर्शदाता एक विशेषज्ञ की भूमिका निभाता है जो समस्या का विश्लेषण करके विशिष्ट समाधान सुझाता है। इसके विपरीत, अनिर्देशात्मक परामर्श सेवार्थी की अपनी आंतरिक क्षमताओं और आत्म-निर्णय लेने की शक्ति पर अधिक भरोसा करता है। ये दोनों दृष्टिकोण परामर्श के अलग-अलग सिद्धांतों को दर्शाते हैं, जहाँ एक ओर विशेषज्ञ का अनुभव प्रधान होता है, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति की अपनी समझ और विकास की प्रवृत्ति को प्राथमिकता दी जाती है।

4. (D) प्राथमिक रोकथाम
प्राथमिक रोकथाम का मुख्य उद्देश्य किसी बीमारी या स्वास्थ्य समस्या को उत्पन्न होने से पहले ही रोकना है। समुदाय-व्यापी अभियान जिसमें नियमित व्यायाम और स्वस्थ आहार को प्रोत्साहित किया जाता है, इसी श्रेणी के अंतर्गत आता है क्योंकि यह मोटापे जैसी समस्याओं के मूल कारणों को लक्षित करता है। इस तरह के हस्तक्षेप स्वास्थ्य जोखिमों को कम करके संपूर्ण जनसंख्या के कल्याण को बढ़ावा देने और भविष्य की जटिलताओं को कम करने में सहायक होते हैं।

5. (C) नियमित, मध्यम व्यायाम करना
नियमित और मध्यम श्रेणी का शारीरिक व्यायाम स्वास्थ्य के लिए एक अत्यंत लाभकारी व्यवहार माना जाता है। यह हृदय की कार्यक्षमता को बढ़ाता है, रक्त शर्करा को नियंत्रित करता है और मानसिक तनाव को कम करने में सहायता करता है। इसके विपरीत, नींद की कमी, अत्यधिक मदिरा सेवन और गतिहीन जीवनशैली जैसे व्यवहार विभिन्न दीर्घकालिक बीमारियों के जोखिम को काफी हद तक बढ़ा देते हैं और शरीर को दुर्बल करते हैं, जिससे जीवन प्रत्याशा घटती है।

6. (B) स्वीकृति का सिद्धांत
स्वीकृति का सिद्धांत परामर्श प्रक्रिया का एक आधारभूत स्तंभ है जो परामर्शदाता को सेवार्थी के प्रति बिना किसी निर्णय के सम्मान प्रदर्शित करने का निर्देश देता है। यह सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी विशिष्ट परिस्थितियों के बावजूद अंतर्निहित गरिमा का पात्र है। जब सेवार्थी को स्वीकार्यता का अनुभव होता है, तो वह अधिक खुलकर अपनी समस्याओं को साझा करता है, जो अंततः प्रभावी उपचार और सकारात्मक परिवर्तन हेतु आवश्यक है।

7. (D) एक द्वितीयक रोकथाम कार्यक्रम
द्वितीयक रोकथाम का मुख्य उद्देश्य उन समस्याओं को पहचानना और प्रबंधित करना है जो व्यक्ति में दिखाई देने लगी हैं, ताकि उन्हें बढ़ने से रोका जा सके। परीक्षा की चिंता से जूझ रहे छात्र को विशिष्ट तकनीकें सिखाना इसी श्रेणी में आता है क्योंकि यहाँ प्रारंभिक लक्षणों पर त्वरित हस्तक्षेप किया जा रहा है। यह प्रक्रिया छात्र को प्रभावी कौशल विकसित करने में सहायता करती है, जिससे भविष्य में गंभीर मनोवैज्ञानिक संकट का जोखिम कम होता है।

8. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जैव-मनो-सामाजिक मॉडल स्वास्थ्य और बीमारी की व्याख्या करने के लिए एक व्यापक और आधुनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह मॉडल स्वीकार करता है कि स्वास्थ्य केवल जैविक कारकों तक सीमित नहीं है, बल्कि मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारक भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पारंपरिक जैव-चिकित्सीय मॉडल केवल शारीरिक रोगों पर ध्यान केंद्रित करता है, जबकि यह मॉडल व्यक्ति के समग्र कल्याण को समझने हेतु उसके जीवन के सभी पहलुओं को एकीकृत करता है।

9. (C) विशिष्ट जीवन घटनाओं के संबंध में तर्कहीन विश्वास।
तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा के अनुसार, मनोवैज्ञानिक संकट का मूल कारण बाहरी घटनाएं नहीं, बल्कि उन घटनाओं के प्रति व्यक्ति के अपने तर्कहीन विचार और विश्वास होते हैं। जब व्यक्ति जीवन की चुनौतियों को अत्यंत कठोर और अवास्तविक दृष्टिकोण से देखता है, तो वह अनावश्यक तनाव का अनुभव करता है। चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य इन त्रुटिपूर्ण विश्वासों को पहचानना और उन्हें तर्कसंगत विचारों में परिवर्तित करना है ताकि व्यक्ति बेहतर मानसिक संतुलन प्राप्त कर सके।

47. (A) जैव-चिकित्सीय मॉडल
जैव-चिकित्सीय मॉडल स्वास्थ्य का एक पारंपरिक दृष्टिकोण है जो विशेष रूप से बीमारी के जैविक और शारीरिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है। यह मॉडल शरीर को एक मशीन की तरह देखता है जहाँ बीमारी को एक यांत्रिक खराबी या रोगजनक के आक्रमण के रूप में समझा जाता है। इसमें मनोवैज्ञानिक तनाव या सामाजिक वातावरण की भूमिका को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। इसका मुख्य लक्ष्य औषधियों और शल्य चिकित्सा के माध्यम से लक्षणों को ठीक करना और शारीरिक स्वास्थ्य बहाल करना है।

48. (C) केवल 2 और 3
फलों और सब्जियों से भरपूर संतुलित आहार लेना और दैनिक ध्यान का अभ्यास करना दोनों ही स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहारों की श्रेणी में आते हैं। ये आदतें न केवल शरीर को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करती हैं, बल्कि मानसिक शांति और तनाव कम करने में भी सहायक होती हैं। इसके विपरीत, तंबाकू का धूम्रपान एक गंभीर स्वास्थ्य हेतु हानिकारक व्यवहार है जो कैंसर और हृदय रोगों के जोखिम को बढ़ाता है। अतः केवल सकारात्मक व्यवहार ही व्यक्ति के समग्र कल्याण और आरोग्य को बढ़ाते हैं।

49. (B) तृतीयक रोकथाम
तृतीयक रोकथाम का मुख्य लक्ष्य उन व्यक्तियों की सहायता करना है जो पहले से ही किसी गंभीर या दीर्घकालिक बीमारी से पीड़ित हैं। इसका उद्देश्य बीमारी के कारण होने वाली अक्षमता को कम करना, जटिलताओं को रोकना और रोगी के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है। पुनर्वास सेवाएं और सहायता समूह इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यह रणनीति रोगी को उसकी वर्तमान स्थिति के साथ सर्वोत्तम संभव जीवन जीने में सक्षम बनाती है और समाज में उसकी पुनः सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करती है।

50. (A) अंतर्निहित कारण और रोगजनन।
टाइप 1 और टाइप 2 मधुमेह के बीच प्राथमिक अंतर उनकी उत्पत्ति के कारणों में है। टाइप 1 एक स्वप्रतिरक्षित स्थिति है जहाँ शरीर इंसुलिन का उत्पादन करने वाली कोशिकाओं को नष्ट कर देता है, जबकि टाइप 2 में शरीर इंसुलिन के प्रति प्रतिरोधी हो जाता है। जहाँ टाइप 1 मुख्य रूप से आनुवंशिक और पर्यावरणीय कारकों से प्रेरित है, वहीं टाइप 2 मोटापे और निष्क्रिय जीवनशैली से गहराई से जुड़ा है। दोनों का प्रबंधन और उपचार उनकी विशिष्ट प्रकृति के अनुसार भिन्न होता है।

51. (C) निर्देशात्मक परामर्श
ई.जी. विलियमसन निर्देशात्मक परामर्श दृष्टिकोण के सबसे प्रमुख प्रवर्तक माने जाते हैं, जिसे 'मिनेसोटा स्कूल' भी कहा जाता है। उनके अनुसार, परामर्शदाता एक सक्रिय मार्गदर्शक और विशेषज्ञ की भूमिका निभाता है जो सेवार्थी की समस्याओं का वैज्ञानिक विश्लेषण और निदान करता है। यह दृष्टिकोण इस विचार पर आधारित है कि व्यवस्थित डेटा संग्रहण और परामर्शदाता के अनुभव के माध्यम से सेवार्थी को उसकी समस्याओं का सबसे सटीक और प्रभावी समाधान प्रदान किया जा सकता है, जो उसके भविष्य हेतु लाभकारी हो।

52. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
निर्देशन वास्तव में एक सतत और जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है क्योंकि मनुष्य को जीवन के हर मोड़ पर नई चुनौतियों और निर्णयों का सामना करना पड़ता है। यह केवल प्रवेश या किसी एक विशेष घटना तक सीमित नहीं हो सकता। जैसे-जैसे व्यक्ति विकसित होता है, उसकी आवश्यकताएं और करियर के लक्ष्य बदलते रहते हैं, जिसके लिए निरंतर मार्गदर्शन आवश्यक होता है। अतः यह कहना कि इसकी आवश्यकता केवल एक बार होती है, पूर्णतः गलत है क्योंकि विकास एक निरंतर यात्रा है।

53. (C) एक समिति गठित करना और गहन आवश्यकता आकलन करना।
महाविद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम की सफल शुरुआत हेतु सबसे महत्वपूर्ण कदम एक संगठित समिति का गठन और छात्रों की आवश्यकताओं का व्यापक आकलन करना है। इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि छात्रों को किस प्रकार की सहायता, जैसे कि करियर परामर्श या मानसिक स्वास्थ्य सहायता, की सर्वाधिक आवश्यकता है। बिना किसी योजना या डेटा के संसाधनों पर खर्च करना व्यर्थ हो सकता है। अतः एक सुविचारित रणनीति ही कार्यक्रम की प्रभावशीलता और छात्रों की संतुष्टि सुनिश्चित करती है।

54. (B) अनिर्देशात्मक परामर्श
बिना शर्त सकारात्मक सम्मान अनिर्देशात्मक परामर्श की एक मूल अवधारणा है, जिसे कार्ल रोजर्स ने प्रतिपादित किया था। इसका अर्थ है कि परामर्शदाता सेवार्थी को एक मूल्यवान व्यक्ति के रूप में पूरी तरह स्वीकार करता है, चाहे उसका व्यवहार या विचार कुछ भी हों। यह बिना किसी निर्णय के दी जाने वाली स्वीकृति सेवार्थी के मन से असुरक्षा का भाव निकाल देती है। ऐसा वातावरण सेवार्थी को अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त करने और आत्म-विकास के मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करता है।

55. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
स्वास्थ्य और परामर्श के शब्दों का गहरा संबंध उनकी विशिष्ट स्थितियों से है। उच्च रक्तचाप हृदय रोग का एक मुख्य लक्षण और कारण है, जबकि इंसुलिन सीधे मधुमेह के नियंत्रण से जुड़ा हार्मोन है। धमनियों में पट्टिका जमना एथेरोस्क्लेरोसिस कहलाता है, जो संचार प्रणाली को प्रभावित करता है। वहीं, तर्कहीन विश्वास तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा का आधार हैं, जिनका समाधान मानसिक स्वास्थ्य सुधार हेतु किया जाता है। इन सभी अवधारणाओं को समझना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के एकीकृत प्रबंधन हेतु आवश्यक है।

56. (A) यह पूर्णतः आमने-सामने के चिकित्सा मॉडल का पालन करता है।
सामुदायिक मनोविज्ञान पारंपरिक क्लिनिकल मॉडल से भिन्न है क्योंकि यह केवल व्यक्तिगत आमने-सामने के उपचार तक सीमित नहीं है। इसके बजाय, यह व्यापक सामाजिक प्रणालियों, पर्यावरण और समुदायों के कल्याण पर ध्यान केंद्रित करता है। यह निवारक रणनीतियों पर बल देता है और हाशिए पर रहने वाले समूहों को सशक्त बनाने का प्रयास करता है। इसका मुख्य लक्ष्य व्यक्ति को उसके सामाजिक संदर्भ में

समझना और उन कारकों को बदलना है जो मानसिक तनाव पैदा करते हैं, न कि केवल व्यक्तिगत चिकित्सा देना।

57. (C) एक तर्कहीन विश्वास।
अल्बर्ट एलिस के अनुसार, "मुझे पूर्ण होना ही चाहिए" जैसा विचार एक तर्कहीन विश्वास है क्योंकि पूर्णता का यह मानक अवास्तविक और अप्राप्य है। इस प्रकार की अनिवार्य सोच व्यक्ति पर अनावश्यक मानसिक दबाव डालती है और विफलता के भय को जन्म देती है। जब व्यक्ति अपने आत्म-मूल्य को केवल अपनी उपलब्धियों से जोड़ देता है, तो छोटी सी त्रुटि भी उसे गहरे संकट में डाल सकती है। परामर्श का उद्देश्य ऐसे कठोर विचारों को पहचानना और उन्हें अधिक लचीले दृष्टिकोण में बदलना है।

58. (A) मोटापा और शारीरिक निष्क्रियता जैसे जीवनशैली कारक।
टाइप 2 मधुमेह का विकास मुख्य रुप से प्रतिकूल जीवनशैली आदतों से गहराई से जुड़ा हुआ है। अत्यधिक शारीरिक वजन और व्यायाम की कमी शरीर की कोशिकाओं में इंसुलिन के प्रति प्रतिरोध उत्पन्न करती है, जिससे रक्त में शर्करा का स्तर बढ़ने लगता है। हालांकि आनुवंशिक संवेदनशीलता इसमें भूमिका निभा सकती है, लेकिन दैनिक आदतें ही इस बीमारी के होने की संभावना को निर्धारित करती हैं। आहार में सुधार और नियमित सक्रियता के माध्यम से इस स्थिति को प्रभावी ढंग से प्रबंधित या टाला जा सकता है।

59. (D) प्राथमिक हस्तक्षेप
विद्यालय में सभी छात्रों को तनाव प्रबंधन कौशल सिखाना प्राथमिक हस्तक्षेप का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका उद्देश्य किसी समस्या के होने की प्रतीक्षा करने के बजाय छात्रों को पहले से ही उन उपकरणों और कौशलों से लैस करना है जो उन्हें भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में सहायता करेंगे। यह दृष्टिकोण संपूर्ण छात्र जनसंख्या को लक्षित करता है और निवारक प्रकृति का होता है। मानसिक लचीलापन विकसित करके, यह कार्यक्रम छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और भावनात्मक स्वास्थ्य को सुरक्षित करने में सहायक है।

60. (B) परामर्शदाता को एक विशेषज्ञ के रूप में देखा जाता है जो समस्या की पहचान करता है और कार्रवाई का मार्ग सुझाता है।
निर्देशात्मक परामर्श की मुख्य विशेषता परामर्शदाता की सक्रिय और मार्गदर्शक भूमिका है। यहाँ परामर्शदाता को एक विशेषज्ञ माना जाता है जो सेवार्थी के डेटा, इतिहास और परीक्षण परिणामों का सूक्ष्म विश्लेषण करता है। निदान करने के पश्चात, वह सेवार्थी को समस्या हल करने हेतु विशिष्ट निर्देश और सलाह प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण सेवार्थी की वर्तमान अक्षमता को स्वीकार करते हुए उसे एक स्पष्ट दिशा दिखाने पर केंद्रित है, जिससे वह कम समय में अपनी समस्याओं से प्रभावी ढंग से निपट सके।

61. (D) 1, 2 और 3
हृदय रोग के विकास हेतु उच्च रक्तचाप, उच्च कोलेस्ट्रॉल और धूम्रपान तीनों ही अत्यंत महत्वपूर्ण जोखिम कारक हैं। उच्च रक्तचाप धमनियों को क्षति पहुंचाता है, जबकि उच्च कोलेस्ट्रॉल रक्त वाहिकाओं में पट्टिका जमाकर रक्त प्रवाह को बाधित करता है। धूम्रपान इन दोनों स्थितियों को और अधिक गंभीर बना देता है और हृदय की मांसपेशियों तक ऑक्सीजन की आपूर्ति कम कर देता है। इन कारकों का सामूहिक प्रभाव हृदयाघात और मस्तिष्काघात जैसी जानलेवा स्थितियों की संभावना को कई गुना बढ़ा देता है, जिससे बचाव अनिवार्य है।

62. (D) विशिष्ट विधिक और नैतिक अपवादों को छोड़कर, सेवार्थी की जानकारी निजी रखी जाती है।
परामर्श में गोपनीयता का सिद्धांत एक विश्वासपूर्ण संबंध बनाने हेतु अत्यंत आवश्यक है। इसका तात्पर्य है कि सेवार्थी द्वारा साझा की गई कोई भी संवेदनशील जानकारी उसकी अनुमति के बिना किसी तीसरे पक्ष को नहीं दी जाएगी। हालाँकि, यदि सेवार्थी स्वयं को या दूसरों को गंभीर नुकसान पहुँचाने का जोखिम रखता है, तो कुछ विधिक अपवाद लागू होते हैं। यह सिद्धांत सेवार्थी को बिना किसी संकोच के अपनी आंतरिक समस्याओं को व्यक्त करने हेतु एक सुरक्षित मानसिक स्थान प्रदान करता है।

63. (A) नियमित आधार पर पर्याप्त नींद लेना
पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण नींद लेना एक बुनियादी स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार है जो शरीर की रिकवरी, प्रतिरक्षा प्रणाली और मानसिक सतर्कता हेतु अनिवार्य है। यह तनाव कम करने और चयापचय को संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके विपरीत, गतिहीन जीवनशैली, संतृप्त वसा का सेवन और मादक द्रव्यों का उपयोग स्वास्थ्य हेतु हानिकारक व्यवहार हैं जो दीर्घकालिक बीमारियों के जोखिम को बढ़ाते हैं। स्वस्थ रहने हेतु अपनी दैनिक आदतों में पर्याप्त विश्राम और सक्रियता का संतुलन बनाना अत्यंत आवश्यक है।

64. (B) निर्देशन एक व्यापक अवधारणा है जिसमें परामर्श इसकी सेवाओं में से एक के रूप में सम्मिलित है।
निर्देशन एक व्यापक और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य व्यक्ति के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उसके विकास को सुगम बनाना है। इसमें सूचना प्रदान करना, शैक्षणिक मार्गदर्शन और करियर नियोजन जैसी कई सेवाएँ शामिल होती हैं। परामर्श इसी बड़े ढांचे का एक विशिष्ट और गहन हिस्सा है, जो मुख्य रुप से व्यक्तिगत और भावनात्मक समस्याओं के उपचारात्मक समाधान पर केंद्रित होता है। अतः परामर्श को निर्देशन का एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, जो व्यक्ति को गहरे स्तर पर सहायता प्रदान करता है।

65. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अनिर्देशात्मक परामर्श इस सकारात्मक धारणा पर आधारित है कि प्रत्येक सेवार्थी के पास अपनी समस्याओं को समझने और उन्हें हल करने की आंतरिक क्षमता होती है। परामर्शदाता का मुख्य कार्य सेवार्थी को निर्देश देना नहीं, बल्कि एक ऐसा सुरक्षित वातावरण प्रदान करना है जहाँ वह बिना किसी डर के आत्म-अन्वेषण कर सके। जब सेवार्थी को सहानुभूति और बिना शर्त स्वीकृति मिलती है, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है, जिससे वह अपनी क्षमताओं को पहचानकर स्वयं ही

सकारात्मक व्यक्तिगत विकास की दिशा में आगे बढ़ने लगता है।

66. (A) विश्वास (B)
ए-बी-सी मॉडल के अनुसार, घटना केवल एक उत्तेजक कारक है, लेकिन छात्र की निराशा का वास्तविक कारण उसका अपना विश्वास है। जब छात्र सोचता है कि "मैं पूर्णतः मूर्ख हूँ," तो यह विचार उसके आत्म-सम्मान पर प्रहार करता है और नकारात्मक भावनाओं को जन्म देता है। यह 'बी' यानी विश्वास प्रणाली ही है जो तय करती है कि व्यक्ति किसी भी परिस्थिति पर कैसे प्रतिक्रिया देगा। चिकित्सा का लक्ष्य ऐसे विनाशकारी विश्वासों को पहचानकर उन्हें अधिक तर्कसंगत और सहायक विचारों में बदलना है।

67. (C) एक सतत और व्यवस्थित रूप से आयोजित प्रक्रिया।
विद्यालय में एक सफल निर्देशन कार्यक्रम को एक अस्थायी गतिविधि के बजाय निरंतर चलने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए। यह कार्यक्रम व्यवस्थित रूप से नियोजित होना चाहिए ताकि छात्र के प्रवेश से लेकर स्नातक होने तक उसकी हर शैक्षणिक और व्यक्तिगत आवश्यकता का ध्यान रखा जा सके। निरंतरता यह सुनिश्चित करती है कि छात्रों को समय पर मार्गदर्शन मिले और उनकी बदलती चुनौतियों का समाधान हो सके। एक सुसंगत ढांचा ही छात्रों के विकास में स्थायी और सार्थक सुधार ला सकता है।

68. (D) रक्त में ग्लूकोज का उच्च स्तर।
मधुमेह एक दीर्घकालिक चयापचय विकार है जिसकी मुख्य पहचान रक्त में ग्लूकोज या शर्करा का लगातार उच्च स्तर होना है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब अग्न्याशय पर्याप्त इंसुलिन नहीं बना पाता या शरीर इंसुलिन का प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं कर पाता है। इंसुलिन की कमी के कारण ऊर्जा हेतु उपयोग होने वाला ग्लूकोज कोशिकाओं में जाने के बजाय रक्त प्रवाह में ही जमा होता रहता है। उचित प्रबंधन के बिना, यह स्थिति आंखों, वृक्क और हृदय को गंभीर क्षति पहुँचा सकती है।

69. (C) तृतीयक रोकथाम
हृदयाघात से उबर चुके व्यक्तियों हेतु सहायता समूह तृतीयक रोकथाम का एक बेहतरीन उदाहरण है। यहाँ हस्तक्षेप का उद्देश्य बीमारी के बाद होने वाले शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दुष्प्रभावों को कम करना और भविष्य में दोबारा ऐसी घटना को रोकना है। यह कार्यक्रम रोगियों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, दवाइयों के अनुपालन और पुनर्वास में सहायता प्रदान करता है। इसका मुख्य लक्ष्य व्यक्ति को उसकी बीमारी के साथ एक बेहतर जीवन जीने में सक्षम बनाना है, जिससे उसकी जीवन प्रत्याशा और गुणवत्ता दोनों में सुधार होता है।

70. (B) कार्ल रोजर्स - अनिर्देशात्मक परामर्श
कार्ल रोजर्स को अनिर्देशात्मक परामर्श या सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा के जनक के रूप में जाना जाता है, जो परामर्शदाता की सहानुभूति और स्वीकृति पर आधारित है। इसके विपरीत, ई.जी. विलियमसन निर्देशात्मक परामर्श से जुड़े हैं, और अल्बर्ट एलिस ने तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा विकसित की। इन सभी विचारकों ने परामर्श के क्षेत्र में अलग-अलग दृष्टिकोण प्रदान किए हैं। रोजर्स का मानना था कि सेवार्थी स्वयं अपनी समस्याओं का सबसे अच्छा ज्ञाता है, इसलिए परामर्शदाता को केवल एक सुविधादाता की भूमिका निभानी चाहिए।

71. (D) समग्र या जैव-मनो-सामाजिक मॉडल
समग्र या जैव-मनो-सामाजिक मॉडल स्वास्थ्य को केवल बीमारी की अनुपस्थिति के रूप में नहीं देखता, बल्कि इसे पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की स्थिति मानता है। यह मॉडल इस बात पर बल देता है कि हमारा स्वास्थ्य जैविक बनावट, हमारे विचारों और हमारे सामाजिक संबंधों के बीच होने वाली निरंतर अंतःक्रिया का परिणाम है। यह व्यक्ति को एक संपूर्ण इकाई के रूप में देखता है और मानता है कि मानसिक संतुलन भी शारीरिक स्वास्थ्य बनाए रखने हेतु उतना ही महत्वपूर्ण है जितना चिकित्सीय उपचार।

72. (A) III, I, II, IV, V
विलियमसन के निर्देशात्मक परामर्श में एक निश्चित वैज्ञानिक क्रम का पालन किया जाता है। सबसे पहले 'विश्लेषण' के माध्यम से छात्र का डेटा एकत्र किया जाता है, फिर 'संश्लेषण' में उसे व्यवस्थित किया जाता है। इसके पश्चात 'निदान' में समस्या की पहचान की जाती है और 'पूर्वानुमान' में भविष्य की संभावनाओं का आकलन होता है। अंत में, 'परामर्श' के माध्यम से समाधान प्रदान किया जाता है। यह व्यवस्थित प्रक्रिया परामर्शदाता को छात्र की समस्याओं को गहराई से समझने और उसे सबसे सटीक मार्गदर्शन देने में सक्षम बनाती है।

73. (C) रक्त से ग्लूकोज को ऊर्जा के लिए उपयोग की जाने वाली कोशिकाओं में प्रवेश करने में सहायता करना।
इंसुलिन अग्न्याशय द्वारा उत्पादित एक महत्वपूर्ण हार्मोन है जो शरीर की ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली की कुंजी के रूप में कार्य करता है। इसका मुख्य कार्य रक्त में मौजूद ग्लूकोज को शरीर की विभिन्न कोशिकाओं में पहुँचाना है, जहाँ इसका उपयोग ऊर्जा उत्पादन हेतु किया जाता है। जब इंसुलिन की कमी होती है या शरीर इसका सही उपयोग नहीं कर पाता, तो ग्लूकोज कोशिकाओं में प्रवेश नहीं कर पाता और रक्त में जमा होने लगता है। यह प्रक्रिया शरीर के अंगों को ऊर्जा से वंचित कर देती है।

74. (A) बढ़ता शैक्षणिक दबाव, प्रतिस्पर्धा और विविध करियर विकल्प।
वर्तमान समय में महाविद्यालयी शिक्षा का वातावरण अत्यंत जटिल और प्रतिस्पर्धी हो गया है, जिससे छात्रों पर भारी मानसिक दबाव रहता है। करियर के अनगिनत विकल्पों और सफलता की उच्च अपेक्षाओं के बीच छात्र अक्सर भ्रमित और तनावग्रस्त महसूस करते हैं। ऐसी स्थिति में, निर्देशन और परामर्श की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है ताकि उन्हें सही चुनाव करने और अपनी भावनाओं को प्रबंधित करने में सहायता मिल सके। उचित मार्गदर्शन उन्हें अपनी क्षमताओं को पहचानने और एक संतुलित भविष्य बनाने हेतु आवश्यक कौशल प्रदान करता है।

75. (D) 1, 2 और 3
महाविद्यालय में एक व्यापक निर्देशन कार्यक्रम के कई महत्वपूर्ण अंग होते हैं जो छात्रों के समग्र विकास को लक्षित करते हैं। जॉब प्लेसमेंट सेवाएँ उनके भविष्य के करियर को सुरक्षित करती हैं, जबकि व्यक्तिगत परामर्श उन्हें भावनात्मक और मानसिक संकटों से उबरने में सहायता करता है। इसके साथ ही, अभिविन्यास कार्यक्रम नए छात्रों को संस्थान के नए वातावरण और नियमों के साथ सहज होने में सहायता करते हैं। ये सभी सेवाएँ मिलकर एक ऐसी सहायता प्रणाली बनाती हैं जो छात्र की शैक्षणिक और व्यक्तिगत सफलता सुनिश्चित करती है।

76. (B) निर्देशात्मक परामर्श
निर्देशात्मक परामर्श को "परामर्शदाता-केंद्रित" इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें परामर्शदाता पूरी प्रक्रिया का नेतृत्व करता है और नियंत्रण में रहता है। वह अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करके सेवार्थी की समस्या का विश्लेषण, निदान और समाधान प्रदान करता है। सेवार्थी की भूमिका यहाँ मुख्य रूप से परामर्शदाता द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करने तक सीमित होती है। यह दृष्टिकोण इस विचार पर आधारित है कि परामर्शदाता के पास समस्या का समाधान करने हेतु आवश्यक ज्ञान और अनुभव है, जिससे वह सेवार्थी को सही दिशा दिखा सकता है।

77. (C) कार्यक्रम एक पृथक गतिविधि होनी चाहिए, जो पाठ्यक्रम से अलग हो।
विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम को शिक्षा के मुख्य पाठ्यक्रम से अलग नहीं रखा जाना चाहिए, बल्कि इसे शैक्षणिक प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग होना चाहिए। निर्देशन का वास्तविक लाभ तब मिलता है जब यह छात्र के दैनिक सीखने और विकास के अनुभवों के साथ जुड़ा हो। इसे एक पृथक सेवा के रूप में देखने से इसकी प्रभावशीलता कम हो जाती है। एक एकीकृत दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि मार्गदर्शन छात्र के समग्र व्यक्तित्व विकास और उसकी शैक्षणिक सफलता में निरंतर योगदान देता रहे, जो अत्यंत आवश्यक है।

78. (D) उनका अग्न्याशय इंसुलिन का उत्पादन नहीं करता है।
टाइप 1 मधुमेह के रोगियों में इंसुलिन का उत्पादन करने वाली बीटा कोशिकाएं नष्ट हो जाती हैं, जिससे शरीर प्राकृतिक रूप से इस हार्मोन को बनाने में पूरी तरह असमर्थ हो जाता है। चूंकि इंसुलिन रक्त शर्करा को ऊर्जा में बदलने हेतु अनिवार्य है, इसलिए जीवित रहने हेतु बाहरी इंसुलिन लेना उनके लिए एकमात्र उपाय होता है। यह स्थिति आहार या व्यायाम की कमी का परिणाम नहीं है, बल्कि एक जैविक विफलता है। अतः नियमित इंसुलिन चिकित्सा ही उनके चयापचय को संतुलित रखने का एकमात्र वैज्ञानिक मार्ग है।

79. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
रोकथाम के विभिन्न स्तरों को समझने से स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर ढंग से व्यवस्थित किया जा सकता है। प्राथमिक रोकथाम के तहत सभी के लिए पोषण कार्यशाला जैसे निवारक उपाय किए जाते हैं। द्वितीयक रोकथाम में मैमोग्राम जैसे परीक्षणों के माध्यम से बीमारी का प्रारंभिक अवस्था में पता लगाया जाता है। तृतीयक रोकथाम मस्तिष्काघात के बाद पुनर्वास जैसी सेवाओं के माध्यम से जटिलताओं को कम करती है। अंत में, स्वास्थ्य संवर्धन समुदाय में व्यायाम जैसी स्वस्थ आदतों को बढ़ावा देकर जीवन की गुणवत्ता में दीर्घकालिक सुधार लाता है।

80. (B) मोटापा, मधुमेह और हृदय रोग का बढ़ा हुआ जोखिम।
गतिहीन जीवनशैली स्वास्थ्य हेतु एक गंभीर खतरा है क्योंकि शारीरिक सक्रियता की कमी शरीर के चयापचय को धीमा कर देती है। इससे शरीर में अतिरिक्त वसा जमा होती है, जिससे मोटापा बढ़ता है, जो आगे चलकर टाइप 2 मधुमेह और विभिन्न हृदय रोगों का मुख्य कारण बनता है। नियमित व्यायाम के बिना हृदय की मांसपेशियां कमजोर हो जाती हैं और धमनियों में रुकावट आने की संभावना बढ़ जाती है। आधुनिक जीवनशैली में सक्रिय रहना इन गंभीर बीमारियों के जोखिम को कम करने हेतु अनिवार्य और अत्यंत आवश्यक है।

81. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सामुदायिक मनोविज्ञान में सशक्तीकरण का सिद्धांत इस विश्वास पर आधारित है कि समुदाय के सदस्यों के पास स्वयं की समस्याओं को हल करने की क्षमता होती है। हस्तक्षेप का मुख्य उद्देश्य उन संसाधनों और कौशलों को प्रदान करना है जिनसे लोग अपने जीवन पर अधिक नियंत्रण प्राप्त कर सकें। जब व्यक्तियों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाता है और उन्हें आवश्यक सहायता मिलती है, तो वे अधिक आत्मनिर्भर बनते हैं। यह दृष्टिकोण समस्याओं के स्थायी समाधान और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने में अत्यंत प्रभावी होता है।

82. (A) शुरुआत को रोकना; शीघ्र उपचार करना
प्राथमिक रोकथाम का मुख्य लक्ष्य उन स्थितियों को पैदा ही न होने देना है जिनसे बीमारी विकसित होती है, जैसे टीकाकरण या जागरूकता अभियान। इसके विपरीत, द्वितीयक रोकथाम उन बीमारियों या समस्याओं को लक्षित करती है जो पहले ही शुरु हो चुकी हैं लेकिन अभी तक गंभीर नहीं हुई हैं। यहाँ मुख्य बल शीघ्र पहचान और तत्काल उपचार पर होता है ताकि समस्या को आगे बढ़ने से रोका जा सके। ये दोनों रणनीतियां मिलकर समाज के स्वास्थ्य बोझ को कम करने और कल्याण सुनिश्चित करने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं।

83. (C) सेवार्थी के अनुभव को सेवार्थी के दृष्टिकोण से समझना।
सहानुभूति परामर्श प्रक्रिया का एक अनिवार्य तत्व है जो परामर्शदाता को सेवार्थी के आंतरिक संसार में प्रवेश करने और उसकी भावनाओं को महसूस करने की अनुमति देता है। यह केवल सेवार्थी हेतु दया अनुभव करना नहीं है, बल्कि स्थिति को बिल्कुल वैसे ही देखना है जैसे सेवार्थी उसे देख रहा है। जब सेवार्थी को लगता है कि उसे वास्तव में समझा जा रहा है, तो उसके भीतर सुरक्षा और विश्वास का भाव पैदा होता है। यह गहरा भावनात्मक जुड़ाव ही चिकित्सीय परिवर्तन और आत्म-अन्वेषण का मुख्य आधार बनता है।

84. (D) छात्रों की क्षमताओं, रुचियों और विशेषताओं के बारे में सूचना एकत्र करना और उनकी व्याख्या करना।
निर्देशन कार्यक्रम के भीतर 'मूल्यांकन सेवा' छात्र को गहराई से समझने का एक वैज्ञानिक तरीका है। इसमें विभिन्न मनोवैज्ञानिक परीक्षणों, साक्षात्कारों और शैक्षणिक रिकॉर्ड का उपयोग किया जाता है ताकि छात्र की शक्तियों और कमजोरियों का एक स्पष्ट चित्र प्राप्त हो सके। एकत्रित सूचनाओं की व्याख्या करने से परामर्शदाता को यह निर्णय लेने में सहायता मिलती है कि छात्र को किस प्रकार का मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए। यह सेवा छात्र को आत्म-बोध करने और अपने भविष्य हेतु सुविचारित निर्णय लेने में पूरी तरह सक्षम बनाती है।

85. (C) लोग घटनाओं से नहीं, बल्कि उनके प्रति अपने दृष्टिकोण से विक्षोभित होते हैं।
तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा का यह मूल सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि हमारा मानसिक कष्ट हमारे विचारों की उपज है। बाहरी घटनाएं स्वयं दुखद नहीं होतीं, बल्कि जब हम उन पर 'अत्यंत बुरा' होने का ठप्पा लगा देते हैं, तब हम विक्षोभित महसूस करते हैं। यह दृष्टिकोण व्यक्ति को अपनी प्रतिक्रियाओं हेतु उत्तरदायी बनाता है। अपने तर्कहीन दृष्टिकोण को बदलकर, कोई भी व्यक्ति सबसे चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी अपनी भावनात्मक स्थिरता और मानसिक शांति को बनाए रख सकता है, जो इस चिकित्सा का अंतिम लक्ष्य है।

86. (B) वृक्क रोग (नेफ्रोपैथी)
वृक्क रोग मधुमेह का सीधा कारण नहीं है, बल्कि यह इस बीमारी के लंबे समय तक अनियंत्रित रहने का एक गंभीर परिणाम है। जब रक्त में शर्करा का स्तर लगातार ऊंचा रहता है, तो यह गुर्दे की सूक्ष्म रक्त वाहिकाओं को क्षति पहुँचाता है, जिससे उनकी अपशिष्ट छानने की क्षमता कम हो जाती है। इसके विपरीत, स्वप्रतिरक्षित विनाश और इंसुलिन प्रतिरोध मधुमेह के मूल कारण हैं जो रक्त शर्करा बढ़ाते हैं। अतः अंगों की क्षति को रोकने हेतु मधुमेह का प्रभावी प्रबंधन और नियंत्रण करना प्रत्येक रोगी के लिए अनिवार्य है।

87. (D) कल्याण को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण।
स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली की मुख्य पहचान यह है कि व्यक्ति अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक और सक्रिय रहता है। यह केवल बीमारियों की प्रतीक्षा करने और फिर इलाज करने के बारे में नहीं है, बल्कि दैनिक आधार पर ऐसी आदतें अपनाने के बारे में है जो शारीरिक और मानसिक शक्ति को बढ़ाती हैं। इसमें संतुलित पोषण, नियमित व्यायाम और सकारात्मक सामाजिक संबंध शामिल हैं। ऐसा सक्रिय दृष्टिकोण न केवल दीर्घकालिक रोगों के जोखिम को कम करता है, बल्कि व्यक्ति को अधिक ऊर्जावान और पूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाता है।

88. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
वैयक्तिकीकरण का सिद्धांत यह मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति की परिस्थितियाँ और आवश्यकताएँ अलग होती हैं, इसलिए परामर्श को भी विशिष्ट होना चाहिए। हालाँकि, गोपनीयता का सिद्धांत परामर्श में बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन यह पूर्ण नहीं है। कुछ परिस्थितियों में इसके अपवाद होते हैं, जैसे कि जब सेवार्थी स्वयं को या दूसरों को गंभीर नुकसान पहुँचाने की धमकी देता है या कानून द्वारा जानकारी देना अनिवार्य हो जाता है। अतः परामर्शदाता को इन नैतिक सीमाओं के भीतर कार्य करना पड़ता है ताकि सुरक्षा और विश्वास दोनों बने रहें।

89. (C) मस्तिष्क के एक भाग में रक्त की आपूर्ति बाधित या कम हो जाती है।
मस्तिष्काघात एक गंभीर चिकित्सीय स्थिति है जो तब होती है जब मस्तिष्क के किसी हिस्से को मिलने वाला रक्त प्रवाह अचानक रुक जाता है। इससे मस्तिष्क की कोशिकाओं को आवश्यक ऑक्सीजन और पोषक तत्व नहीं मिल पाते, जिससे वे मिनटों में मरने लगती हैं। यह या तो रक्त वाहिका में रुकावट के कारण होता है या वाहिका के फटने के कारण। चूंकि मस्तिष्क पूरे शरीर का नियंत्रण केंद्र है, इसलिए यह स्थिति स्थायी अक्षमता या जीवन हेतु खतरा पैदा कर सकती है, जिससे तत्काल उपचार अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

90. (A) नए छात्रों को महाविद्यालय के वातावरण में समायोजित होने में सहायता करना।
'अभिविन्यास सेवा' महाविद्यालय में नए छात्रों के प्रवेश को सुगम बनाने हेतु एक सेतु के रूप में कार्य करती है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को संस्थान की संस्कृति, नियमों, उपलब्ध संसाधनों और शैक्षणिक अपेक्षाओं से परिचित कराना है। नए माहौल में छात्र अक्सर घबराहट और अनिश्चितता का अनुभव करते हैं, जिसे यह सेवा दूर करने का प्रयास करती है। उचित अभिविन्यास छात्रों को परिसर के जीवन में बेहतर ढंग से एकीकृत होने में सहायता करता है, जिससे उनकी प्रारंभिक शैक्षणिक और सामाजिक सफलता की संभावना काफी बढ़ जाती है।

91. (D) 1, 2 और 3
निर्देशात्मक परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका एक विशेषज्ञ और नेतृत्वकर्ता की होती है जो पूरी प्रक्रिया को संचालित करता है। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि सेवार्थी वर्तमान में इतना विक्षोभित है कि वह अपनी समस्या का समाधान स्वयं नहीं कर सकता। इसलिए, परामर्शदाता छात्र के डेटा का विश्लेषण करके सटीक निदान करता है और सुधार हेतु विशिष्ट परामर्श देता है। यह मॉडल दक्षता और वैज्ञानिक सटीकता पर बल देता है, जहाँ परामर्शदाता की समझ ही समाधान का मुख्य और सबसे विश्वसनीय स्रोत मानी जाती है।

92. (B) व्यक्तियों को बेहतर सहायता देने के लिए पर्यावरण या सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तित करना।
सामुदायिक मनोविज्ञान पारंपरिक मनोविज्ञान से भिन्न है क्योंकि यह केवल व्यक्ति को बदलने का प्रयास नहीं करता। इसके बजाय, यह उन सामाजिक परिस्थितियों, नीतियों और सामुदायिक संरचनाओं को सुधारने पर ध्यान केंद्रित करता है जो व्यक्ति के संकट का मूल कारण हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, किसी क्षेत्र में बेरोजगारी या भेदभाव को दूर करना व्यक्ति को व्यक्तिगत चिकित्सा देने से अधिक प्रभावी हो सकता है।

146. (A) प्राथमिक रोकथाम
मानसिक बीमारी वाले माता-पिता के बच्चों हेतु कौशल कार्यक्रम प्राथमिक रोकथाम का उदाहरण है क्योंकि यह उन बच्चों को लक्षित करता है जिनमें अभी कोई समस्या नहीं है। इसका उद्देश्य जोखिम वाले कारकों को पहचानकर बच्चों को पहले से ही मानसिक रूप से मजबूत बनाना है ताकि वे भविष्य में समान समस्याओं का शिकार न हों। यह एक अग्रिम रक्षा रणनीति है जो शिक्षा के माध्यम से संभावित विकारों को टालने का प्रयास करती है। ऐसे निवारक उपाय समाज में मानसिक स्वास्थ्य की स्थिरता और दीर्घकालिक सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।

147. (C) घटनाओं के बारे में व्यक्ति के विश्वास।
तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा के अनुसार, हमारा भावनात्मक विक्षोभ सीधे तौर पर उन घटनाओं से नहीं आता जो हमारे साथ होती हैं, बल्कि इस बात से आता है कि हम उन घटनाओं को कैसे देखते हैं। यदि कोई व्यक्ति किसी विफलता को एक 'त्रासदी' मानता है, तो वह बहुत अधिक दुखी होगा, लेकिन यदि वह इसे एक 'सीखने का अवसर' मानता है, तो उसकी प्रतिक्रिया संतुलित होगी। हमारे विश्वास ही हमारी भावनाओं का निर्माण करते हैं। अतः अपने दृष्टिकोण को तर्कसंगत बनाकर हम अपनी भावनाओं पर बेहतर नियंत्रण पा सकते हैं।

148. (D) संवहनी (Vascular) मधुमेह
मधुमेह के मुख्य और वैज्ञानिक रूप से मान्यता प्राप्त प्रकारों में टाइप 1, टाइप 2 और गर्भकालीन मधुमेह शामिल हैं। 'संवहनी मधुमेह' नाम की कोई विशिष्ट चिकित्सीय श्रेणी नहीं है, हालांकि मधुमेह रक्त वाहिकाओं को गंभीर रूप से प्रभावित अवश्य करता है। टाइप 1 इंसुलिन की कमी से होता है, टाइप 2 इंसुलिन प्रतिरोध से और गर्भकालीन मधुमेह गर्भावस्था के दौरान उत्पन्न होता है। प्रत्येक प्रकार के कारण और प्रबंधन के तरीके अलग-अलग होते हैं, इसलिए सटीक निदान और सही शब्दावली का ज्ञान समुचित उपचार हेतु अत्यंत आवश्यक है।

149. (C) शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत-सामाजिक सूचना एकत्र करना और प्रसारित करना।
विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम में 'सूचना सेवा' छात्र को उसके परिवेश और उपलब्ध अवसरों के बारे में जागरूक करने का कार्य करती है। यह सेवा छात्र को भविष्य के करियर विकल्पों और महाविद्यालयों की प्रवेश परीक्षाओं के बारे में महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करती है। जानकारी की कमी अक्सर गलत निर्णयों का कारण बनती है, जिसे यह सेवा प्रभावी ढंग से दूर करती है। जब छात्र के पास सही और अद्यतन सूचना होती है, तो वह अधिक आत्मविश्वास के साथ अपने शैक्षणिक और व्यावसायिक भविष्य की व्यवस्थित योजना बना सकता है।

150. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
तृतीयक रोकथाम विशेष रूप से उन लोगों हेतु है जो पहले से ही किसी गंभीर स्वास्थ्य संकट का सामना कर चुके हैं। मस्तिष्काघात के बाद पुनर्वास कार्यक्रम इसी श्रेणी में आता है क्योंकि इसका लक्ष्य रोगी को शेष क्षमताओं का अधिकतम उपयोग करना सिखाना और स्थायी विकलांगता के प्रभाव को कम करना है। यह हस्तक्षेप बीमारी को पूरी तरह ठीक नहीं करता, बल्कि व्यक्ति को अपनी बदली हुई स्थिति में सर्वोत्तम संभव जीवन जीने में सक्षम बनाता है। यह तर्क स्पष्ट करता है कि तृतीयक रोकथाम दीर्घकालिक रिकवरी पर केंद्रित है।

151. (D) यह छात्रों की बदलती आवश्यकताओं के प्रति लचीला और अनुकूलन योग्य होना चाहिए।
महाविद्यालय निर्देशन कार्यक्रम को कभी भी कठोर या स्थिर नहीं होना चाहिए, क्योंकि छात्रों के सामने आने वाली चुनौतियाँ समय के साथ निरंतर बदलती रहती हैं। आज के छात्रों को नई तकनीकों और बदलते करियर बाजारों का सामना करना पड़ता है। एक सफल कार्यक्रम वह है जो समय-समय पर अपनी सेवाओं और उद्देश्यों का पुनर्मूल्यांकन करे और नई समस्याओं हेतु सदैव तैयार रहे। लचीलापन यह सुनिश्चित करता है कि निर्देशन सेवाएँ छात्रों हेतु हमेशा प्रासंगिक बनी रहें और उनके वास्तविक विकास में प्रभावी योगदान दे सकें।

152. (A) तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा - अल्बर्ट एलिस
अल्बर्ट एलिस ने तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा का विकास किया, जो मानसिक स्वास्थ्य में विचारों और विश्वासों की भूमिका पर आधारित है। अन्य विकल्प गलत सुमेलित हैं क्योंकि कार्ल रोजर्स अनिर्देशात्मक परामर्श से जुड़े हैं। ई.जी. विलियमसन निर्देशात्मक परामर्श के प्रस्तावक हैं, जबकि सिगमंड फ्रायड मनोविश्लेषण से संबंधित हैं। इन विभिन्न दृष्टिकोणों और उनके संस्थापकों की सही पहचान करना परामर्श के सैद्धांतिक आधार को समझने हेतु अनिवार्य है क्योंकि प्रत्येक तकनीक व्यक्ति की सहायता करने हेतु एक अलग और विशिष्ट दर्शन निरंतर प्रस्तुत करती है।

153. (C) स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली।
स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली उन सकारात्मक व्यवहारों का संगम है जो शरीर की प्राकृतिक सुरक्षा को मजबूत करते हैं और दीर्घकालिक रोगों से बचाते हैं। संतुलित आहार शरीर को पोषण देता है, व्यायाम अंगों को सक्रिय रखता है, और तनाव प्रबंधन मानसिक स्पष्टता सुनिश्चित करता है। तंबाकू से बचना कैंसर और हृदय रोगों के जोखिम को कम करने का एक अत्यंत बुद्धिमान निर्णय है। ऐसी जीवनशैली का पालन करना केवल आदतों को बदलना नहीं है, बल्कि अपने जीवन और भविष्य के स्वास्थ्य के प्रति एक गंभीर सकारात्मक प्रतिबद्धता है।

154. (A) जीवनशैली में बदलाव करना, जैसे आहार और व्यायाम।
टाइप 2 मधुमेह के निदान के पश्चात, प्रथम और सबसे प्रभावी कदम जीवनशैली में व्यापक सुधार करना होता है। चूंकि यह स्थिति प्रायः इंसुलिन प्रतिरोध से जुड़ी होती है, इसलिए वजन कम करना और नियमित शारीरिक गतिविधि करना शरीर की इंसुलिन के प्रति संवेदनशीलता को काफी बढ़ा सकता है। कई मामलों में, इन शुरुआती बदलावों से ही रक्त शर्करा का स्तर काफी हद तक नियंत्रित हो जाता है। यह दृष्टिकोण दवाओं की आवश्यकता को कम करता है और बीमारी की प्रगति को रोकने का सबसे प्राकृतिक मार्ग है।

रिकवरी को प्रभावित कर सकते हैं। आज के समय में, केवल शारीरिक उपचार ही पूर्ण स्वास्थ्य हेतु पर्याप्त नहीं माना जाता, जिसके कारण व्यापक और एकीकृत मॉडलों की आवश्यकता महसूस की गई है।

102. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
टाइप 1 मधुमेह वास्तव में एक स्वप्रतिरक्षित विफलता है जहाँ शरीर का रक्षा तंत्र ही उसके विरुद्ध हो जाता है। प्रतिरक्षा प्रणाली अग्न्याशय की उन विशिष्ट कोशिकाओं को पहचान नहीं पाती जो इंसुलिन बनाती हैं और उन्हें नष्ट करना शुरु कर देती है। जब पर्याप्त संख्या में बीटा कोशिकाएं नष्ट हो जाती हैं, तो शरीर रक्त शर्करा को नियंत्रित करने हेतु आवश्यक इंसुलिन की आपूर्ति नहीं कर पाता। यह सीधा कारण-प्रभाव संबंध स्पष्ट करता है कि टाइप 1 मधुमेह मुख्य रूप से एक जैविक और प्रतिरक्षा-संबंधी समस्या है।

103. (D) आधिकारिक निर्देश
कार्ल रोजर्स के अनुसार, परामर्शदाता को सेवार्थी पर अपनी राय या आधिकारिक निर्देश नहीं थोपने चाहिए, क्योंकि यह सेवार्थी की आत्म-निर्भरता में बाधा डालता है। इसके बजाय, सहानुभूति, बिना शर्त सकारात्मक सम्मान और अनुरुपता जैसी शर्तें परामर्शदाता हेतु अनिवार्य हैं। ये गुण एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जहाँ सेवार्थी निर्णय लेने में स्वयं को पूरी तरह स्वतंत्र महसूस करता है। जब परामर्शदाता केवल एक सहायक होता है, तो सेवार्थी का आत्मविश्वास बढ़ता है और वह अपने व्यक्तिगत विकास की जिम्मेदारी अधिक प्रभावी ढंग से स्वीकार करता है।

104. (A) प्राथमिक और द्वितीयक रोकथाम
"इलाज से बेहतर रोकथाम है" का दर्शन स्वास्थ्य देखभाल में निवारक रणनीतियों के महत्व पर बल देता है। प्राथमिक रोकथाम बीमारियों को होने से पहले ही रोकती है, जबकि द्वितीयक रोकथाम उन्हें प्रारंभिक अवस्था में पकड़कर गंभीर होने से बचाती है। ये दोनों ही दृष्टिकोण उपचारात्मक चिकित्सा पर पड़ने वाले अत्यधिक बोझ को कम करते हैं और बहुमूल्य संसाधनों की बचत करते हैं। इस सिद्धांत को अपनाने से न केवल व्यक्तिगत कष्ट कम होता है, बल्कि पूरे समाज का स्वास्थ्य स्तर भी सकारात्मक रूप से ऊपर उठता है।

105. (C) दंडात्मक अनुशासनात्मक सेवा
विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को दंडित करना या डराना नहीं है, बल्कि उनका सहायक मार्गदर्शन करना है। अनुशासन लागू करना प्रशासन का उत्तरदायित्व हो सकता है, लेकिन निर्देशन सेवाएँ छात्र के व्यवहार के पीछे के कारणों को समझने और उसमें सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित करती हैं। सूचना सेवा, व्यक्तिगत विवरण और प्लेसमेंट सेवाएँ छात्रों के उज्ज्वल भविष्य और सर्वांगीण विकास हेतु समर्पित हैं। निर्देशन एक सकारात्मक प्रक्रिया है जो छात्र को सुधारने और आगे बढ़ाने हेतु उसे आवश्यक समर्थन प्रदान करती है।

106. (A) निकोटीन की लत और सामाजिक दबाव।
स्वास्थ्य हेतु हानिकारक व्यवहारों को बनाए रखने में लत और सामाजिक परिवेश की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। निकोटीन जैसे पदार्थ मस्तिष्क में डोपामाइन का स्तर बढ़ाते हैं, जिससे व्यक्ति को अस्थायी खुशी मिलती है और उसे इसकी लत लग जाती है। इसके साथ ही, यदि व्यक्ति के मित्र समूह या परिवेश में धूम्रपान सामान्य है, तो सामाजिक दबाव उसे छोड़ने से रोकता है। ऐसे व्यवहारों को बदलने हेतु केवल जानकारी पर्याप्त नहीं है, बल्कि मजबूत मनोवैज्ञानिक समर्थन और सामाजिक परिवर्तन भी अनिवार्य रूप से आवश्यक होते हैं।

107. (A) केवल 1 और 2
मधुमेह के प्रकारों के बीच के अंतर को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि उनके कारण पूर्णतः भिन्न हैं। टाइप 1 मुख्य रूप से एक स्वप्रतिरक्षित विफलता है, जबकि टाइप 2 जीवनशैली और मोटापे से गहराई से जुड़ा हुआ है। यह धारणा गलत है कि दोनों प्रकार समान आनुवंशिक उत्परिवर्तन के कारण होते हैं, हालांकि दोनों में ही पारिवारिक इतिहास की भूमिका हो सकती है। इन रोगों के प्रबंधन हेतु इनकी विशिष्ट प्रकृति को समझना आवश्यक है ताकि प्रभावी निवारक और उपचारात्मक रणनीतियां अपनाई जा सकें और स्वास्थ्य सुरक्षित रहे।

108. (B) भावनात्मक संकट उत्पन्न करने वाले तर्कहीन विश्वासों को पहचानना और परिवर्तित करना।
तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा का मुख्य कार्य सेवार्थी को यह समझाना है कि उसके मानसिक कष्ट का स्रोत बाहरी परिस्थितियां नहीं, बल्कि उसके स्वयं के अवास्तविक विचार हैं। चिकित्सक सेवार्थी को इन हानिकारक विचारों को तर्क की कसौटी पर परखने हेतु प्रशिक्षित करता है। जब व्यक्ति यह समझ जाता है कि उसके 'चाहिए' वाले विचार उसे पीड़ा दे रहे हैं, तो वह उन्हें लचीले विचारों से बदल सकता है। यह मानसिक पुनर्संरचना व्यक्ति को अधिक संतुलित और खुशहाल जीवन जीने में सहायता करती है, जो अत्यंत कल्याणकारी है।

109. (C) धमनियों की परत को क्षति पहुँचाता है और हृदय को अधिक कार्य करने के लिए विवश करता है।
उच्च रक्तचाप एक मौन घातक समस्या है क्योंकि यह धमनियों की सूक्ष्म संरचना को धीरे-धीरे नष्ट कर देता है। जब रक्त का दबाव अधिक होता है, तो हृदय को पूरे शरीर में रक्त पंप करने हेतु बहुत अधिक मेहनत करनी पड़ती है, जिससे हृदय की मांसपेशियां मोटी और कमजोर हो जाती हैं। यह स्थिति धमनियों में वसा जमा होने की प्रक्रिया को तेज करती है और हृदयाघात के जोखिम को बढ़ाती है। रक्तचाप को नियंत्रित करना हृदय प्रणाली की दीर्घकालिक सुरक्षा हेतु अत्यंत अनिवार्य और प्राथमिक स्वास्थ्य कदम माना जाता है।

110. (D) बुद्धिमानीपूर्ण चयन और समायोजन करने में सहायता के लिए सार्वभौमिक मानवीय आवश्यकता।
निर्देशन की आवश्यकता एक व्यापक मानवीय जरूरत है जो केवल कमजोरियों तक सीमित नहीं है। जीवन के प्रत्येक मोड़ पर, चाहे वह शिक्षा हो या करियर, व्यक्ति को सही दिशा चुनने में कठिनाई हो सकती है। निर्देशन उसे अपनी क्षमताओं और बाहरी

128. (B) शरीर की कोशिकाएं उत्पादित इंसुलिन के प्रति उचित प्रतिक्रिया नहीं देती हैं।
इंसुलिन प्रतिरोध एक चयापचय विफलता है जहाँ कोशिकाएं इंसुलिन के प्रति अपनी संवेदनशीलता खो देती हैं, जो ग्लूकोज के प्रवेश हेतु आवश्यक संदेशवाहक है। इसके कारण रक्त में शर्करा का स्तर बना रहता है, भले ही शरीर पर्याप्त मात्रा में इंसुलिन का उत्पादन कर रहा हो। अग्न्याशय शुरू में अधिक इंसुलिन बनाकर इसकी क्षतिपूर्ति करने का प्रयास करता है, लेकिन अंततः वह असमर्थ हो जाता है। यह स्थिति प्रायः मोटापे और व्यायाम की कमी से उत्पन्न होती है और समय के साथ टाइप 2 मधुमेह की ओर ले जाती है।

129. (B) जैव-मनो-सामाजिक मॉडल
जैव-मनो-सामाजिक मॉडल स्वास्थ्य का एक आधुनिक और एकीकृत दृष्टिकोण है जो मानव स्वास्थ्य को तीन मुख्य आयामों के संगम के रूप में देखता है। यह न केवल हमारी शारीरिक संरचना और जीन को महत्व देता है, बल्कि हमारे विचारों, भावनाओं और हमारे सामाजिक परिवेश व संबंधों को भी बीमारी की उत्पत्ति और उपचार में समान स्थान प्रदान करता है। यह मॉडल स्वीकार करता है कि प्रभावी स्वास्थ्य देखभाल हेतु व्यक्ति के संपूर्ण जीवन संदर्भ को गहराई से समझना और उसका समुचित प्रबंधन करना स्वास्थ्य हेतु अनिवार्य है।

130. (A) एक प्राथमिक रोकथाम कार्यक्रम
मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता सप्ताह एक प्राथमिक रोकथाम कार्यक्रम है क्योंकि यह समस्या होने से पहले पूरे समुदाय को शिक्षित करने का प्रयास करता है। सामाजिक कलंक को कम करके और सहायता मांगने हेतु प्रोत्साहित करके, यह एक ऐसा वातावरण बनाता है जहाँ लोग समय पर मदद ले सकें और गंभीर संकट से बच सकें। इस तरह के कार्यक्रम व्यापक जनसंख्या को लक्षित करते हैं और भविष्य में मानसिक विकारों के बढ़ने की संभावना को कम करने हेतु एक अग्रिम रक्षा प्रणाली के रूप में कार्य करते हैं।

131. (C) प्रत्येक छात्र के समग्र विकास में सहायता करना।
विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम का मुख्य ध्येय छात्र के व्यक्तित्व के हर पहलू को विकसित करना है। इसका उद्देश्य केवल अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं है, बल्कि छात्र को उसकी रुचियों को पहचानने, सामाजिक कौशल विकसित करने और भावनात्मक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाना है। जब छात्र का सर्वांगीण विकास होता है, तो वह न केवल शैक्षणिक रूप से सफल होता है, बल्कि एक आत्मविश्वासी नागरिक भी बनता है। यह कार्यक्रम छात्र की भविष्य की सफलताओं हेतु एक अत्यंत मजबूत और विश्वसनीय नींव प्रदान करता है।

132. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
जीवनशैली और स्वास्थ्य के बीच सीधा और गहरा संबंध होता है, जैसा कि इन दोनों कथनों से स्पष्ट है। संतुलित आहार और सक्रिय जीवनशैली जहाँ शरीर को रोगमुक्त रखती है, वहीं अत्यधिक तनाव और मादक द्रव्यों का सेवन आंतरिक अंगों और मानसिक संतुलन को गंभीर क्षति पहुँचाता है। ये दोनों तथ्य मिलकर यह समझाते हैं कि व्यक्ति के स्वास्थ्य का स्तर उसकी दैनिक आदतों का ही प्रतिबिंब होता है। अतः दीर्घकालिक कल्याण हेतु सकारात्मक व्यवहार अपनाना और हानिकारक प्रवृत्तियों को पूर्णतः त्यागना अनिवार्य है।

133. (C) यह तर्कहीन विश्वास कि किसी को कुछ करना ही चाहिए या वैसा होना ही चाहिए।
अल्बर्ट एलिस के अनुसार, "अनिवार्यतावादी सोच" एक ऐसा मानसिक विकार है जहाँ व्यक्ति अपने लिए कठोर और अवास्तविक नियम बनाता है। "मुझे सफल होना ही चाहिए" जैसे विचार व्यक्ति को अत्यधिक चिंता और हताशा में डाल देते हैं क्योंकि वास्तविकता हमेशा इन अपेक्षाओं के अनुसार नहीं होती। ऐसी सोच व्यक्ति के मानसिक लचीलेपन को समाप्त कर देती है। परामर्श का मुख्य लक्ष्य इन 'अनिवार्य' विचारों को 'पसंद' या 'इच्छा' में बदलना है ताकि व्यक्ति मानसिक शांति और भावनात्मक स्थिरता बनाए रख सके।

134. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
निर्देशात्मक परामर्श को परामर्शदाता-केंद्रित कहा जाता है क्योंकि इसमें परामर्शदाता की विशेषज्ञता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। वह एक सक्रिय चिकित्सक की तरह कार्य करता है जो छात्र के डेटा का विश्लेषण करता है, समस्या की पहचान करता है और सुधार हेतु एक विशिष्ट कार्ययोजना बनाता है। यहाँ यह माना जाता है कि परामर्शदाता के पास समाधान खोजने हेतु छात्र की तुलना में बेहतर कौशल और ज्ञान है। यह प्रभुत्वशाली भूमिका ही इस दृष्टिकोण को निर्देशात्मक बनाती है, जहाँ सेवार्थी विशेषज्ञ के सुझावों का पालन करता है।

135. (D) हृदय रोग।
एथेरोस्क्लेरोसिस अधिकांश हृदय रोगों के पीछे की मुख्य शारीरिक प्रक्रिया है, जिसमें धमनियां वसा और कोलेस्ट्रॉल के जमाव के कारण संकुचित हो जाती हैं। यह रुकावट रक्त के प्रवाह को धीमा कर देती है, जिससे हृदय को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिल पाती। यह प्रक्रिया समय के साथ हृदयाघात और मस्तिष्काघात जैसी गंभीर स्थितियों को जन्म देती है। उच्च रक्तचाप और धूम्रपान इस स्थिति को और अधिक बिगाड़ देते हैं। अतः संचार प्रणाली के स्वास्थ्य को बनाए रखने हेतु इस प्रक्रिया को नियंत्रित करना चिकित्सा विज्ञान में आवश्यक है।

136. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
मनोविज्ञान के प्रमुख विचारकों ने मानव व्यवहार को सुधारने हेतु अलग-अलग मार्ग प्रशस्त किए हैं। कार्ल रोजर्स ने बिना शर्त सम्मान के माध्यम से सेवार्थी की आंतरिक शक्ति को पहचाना, जबकि अल्बर्ट एलिस ने ए-बी-सी मॉडल के जरिए विचारों की भूमिका को स्पष्ट किया। ई.जी. विलियमसन ने व्यवस्थित निदान पर आधारित निर्देशात्मक परामर्श का समर्थन किया। वहीं, सामुदायिक मनोविज्ञान ने व्यक्ति से हटकर संपूर्ण सामाजिक प्रणालियों के सुधार और सशक्तीकरण पर ध्यान केंद्रित किया। ये सभी दृष्टिकोण सामूहिक रूप से मानसिक स्वास्थ्य की समझ को गहरा करते हैं।

है। जब समस्याओं को उनके मूल स्तर पर ही रोक दिया जाता है, तो समाज पर पड़ने वाला मनोवैज्ञानिक और वित्तीय बोझ काफी कम हो जाता है। यह दृष्टिकोण केवल व्यक्तिगत संकटों को हल करने के स्थान पर एक स्वस्थ सामाजिक वातावरण के निर्माण पर बल देता है। निवारक हस्तक्षेपों के माध्यम से, समुदायों की लचीलापन बढ़ती है और लोगों के जीवन में दीर्घकालिक स्थिरता और कल्याण सुनिश्चित होता है।

120. (A) एक शिक्षक और प्रेरक।
तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श में चिकित्सक की भूमिका सक्रिय और शिक्षाप्रद होती है। वह सेवार्थी को केवल सहानुभूति नहीं देता, बल्कि उसे यह सिखाता है कि वह अपने विचारों का तार्किक विश्लेषण कैसे करे। चिकित्सक एक मार्गदर्शक की तरह कार्य करता है जो सेवार्थी को उसके आत्म-विनाशकारी विचारों को त्यागने और अधिक स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाने हेतु प्रेरित करता है। यह निर्देशात्मक शैली सेवार्थी को मानसिक रूप से मजबूत बनाने हेतु आवश्यक उपकरणों और तकनीकों से लैस करती है, जिससे वह अपने जीवन को बेहतर ढंग से नियंत्रित कर सके।

121. (C) कोरोनरी धमनियों का संकुचित होना या अवरुद्ध होना।
कोरोनरी हृदय रोग तब होता है जब हृदय की मांसपेशियों को रक्त पहुँचाने वाली मुख्य धमनियां वसा के जमाव के कारण संकरी हो जाती हैं। इससे हृदय को मिलने वाले ऑक्सीजन और पोषक तत्वों की आपूर्ति में भारी कमी आ जाती है, जिससे सीने में दर्द या भारीपन अनुभव होता है। यदि यह रुकावट पूर्ण हो जाए, तो यह हृदयाघात का कारण बनती है। यह स्थिति प्रायः उच्च कोलेस्ट्रॉल, धूम्रपान और व्यायाम की कमी का परिणाम होती है, जो रक्त प्रवाह को गंभीर रूप से बाधित करके जीवन हेतु संकट उत्पन्न करती है।

122. (A) व्यवहारों का एक प्रतिरूप जो बीमारी और अकाल मृत्यु के जोखिम को बढ़ाता है।
स्वास्थ्य हेतु हानिकारक जीवनशैली उन नकारात्मक आदतों का एक समूह है जो शरीर की प्राकृतिक सुरक्षा प्रणाली को कमजोर करती हैं। इसमें जंक फूड का सेवन, नशा और व्यायाम की अनुपस्थिति जैसे व्यवहार शामिल हैं जो समय के साथ अंगों को स्थायी क्षति पहुँचाते हैं। ऐसी जीवनशैली के परिणाम तुरंत नहीं दिखते, लेकिन ये संचयी होकर बुढ़ापे में या उससे पहले ही गंभीर बीमारियों और मृत्यु के जोखिम को कई गुना बढ़ा देते हैं। सचेत चुनाव करके इन जोखिमों को कम करना प्रत्येक व्यक्ति का उत्तरदायित्व है।

123. (B) केवल 1 और 3
निर्देशात्मक और तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श दोनों ही दृष्टिकोणों में परामर्शदाता एक सक्रिय और प्रभुत्वशाली भूमिका निभाता है। निर्देशात्मक परामर्श में वैज्ञानिक डेटा का उपयोग करके विशेषज्ञ मार्गदर्शन दिया जाता है, जबकि आरईटी में चिकित्सक सेवार्थी के विचारों को सक्रिय रूप से चुनौती देता है और उसे तर्क सिखाता है। ये दोनों ही 'परामर्शदाता-केंद्रित' माने जाते हैं क्योंकि चिकित्सीय प्रक्रिया की दिशा और गति काफी हद तक विशेषज्ञ द्वारा निर्धारित की जाती है। इसके विपरीत, अनिर्देशात्मक परामर्श पूर्णतः सेवार्थी की भावनाओं पर आधारित होता है।

124. (B) संस्थान की आवश्यकताओं और संसाधनों की पहचान करना।
किसी भी संस्थान में निर्देशन कार्यक्रम शुरू करने से पहले वहां की विशिष्ट परिस्थितियों को समझना अनिवार्य है। आवश्यकताओं की पहचान यह सुनिश्चित करती है कि सेवाएँ छात्रों की वास्तविक समस्याओं, जैसे शैक्षणिक तनाव या करियर की दुविधा को लक्षित करें। संसाधनों का आकलन करने से यह पता चलता है कि संस्थान के पास कार्यक्रम को चलाने हेतु आवश्यक बजट, स्थान और योग्य कर्मचारी उपलब्ध हैं या नहीं। यह प्रारंभिक योजना ही कार्यक्रम की स्थिरता और सफलता हेतु एक मजबूत आधार तैयार करने में सहायक होती है।

125. (C) प्राथमिक रोकथाम का उद्देश्य किसी समस्या को प्रारंभ होने से पूर्व रोकना है, जबकि द्वितीयक रोकथाम का उद्देश्य शीघ्र पहचान करना है।
सामुदायिक मनोविज्ञान में रोकथाम के स्तरों के बीच का अंतर हस्तक्षेप के समय और लक्ष्य पर आधारित है। प्राथमिक रोकथाम पूरे समुदाय को शिक्षित करके समस्याओं के जन्म को ही रोकने का प्रयास करती है। दूसरी ओर, द्वितीयक रोकथाम उन जोखिम वाले व्यक्तियों पर ध्यान केंद्रित करती है जिनमें समस्या के शुरुआती लक्षण दिख रहे हैं, ताकि प्रारंभिक हस्तक्षेप से उसे आगे बढ़ने से रोका जा सके। ये दोनों चरण मिलकर एक सुरक्षा कवच बनाते हैं जो समाज में मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की प्रभावी रक्षा सुनिश्चित करता है।

126. (D) इसे व्यक्ति पर थोपा जाना चाहिए।
निर्देशन एक स्वैच्छिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति की गरिमा और उसकी निर्णय लेने की स्वतंत्रता का सम्मान करती है। इसे कभी भी किसी पर थोपा नहीं जाना चाहिए क्योंकि जबरन दिया गया परामर्श स्थायी परिवर्तन लाने में विफल रहता है। निर्देशन का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति को इस योग्य बनाना है कि वह स्वयं अपनी समस्याओं को समझ सके और स्वायत्तता के साथ अपने जीवन के चुनाव कर सके। जब व्यक्ति स्वेच्छा से मार्गदर्शन प्राप्त करता है, तभी वह प्रक्रिया में सक्रिय रूप से सहयोग करता है और सफल होता है।

127. (A) अनिर्देशात्मक
अनिर्देशात्मक परामर्श, विशेष रूप से कार्ल रोजर्स का दृष्टिकोण, इन तीन गुणों को चिकित्सा की सफलता हेतु अनिवार्य मानता है। बिना शर्त सकारात्मक सम्मान सेवार्थी को स्वीकार्यता देता है, सहानुभूति उसे समझ का अनुभव कराती है, और अनुरुपता परामर्शदाता की प्रामाणिकता को दर्शाती है। ये तत्व मिलकर एक ऐसा उपचारात्मक संबंध बनाते हैं जहाँ सेवार्थी सुरक्षित महसूस करता है और अपने भीतर छिपे संघर्षों को सुलझाने की शक्ति पाता है। यह दृष्टिकोण मानता है कि चिकित्सीय वातावरण स्वयं उपचार का सबसे शक्तिशाली और प्रभावी साधन है।

यह दृष्टिकोण मानता है कि एक स्वस्थ वातावरण ही स्वस्थ व्यक्तियों के निर्माण हेतु ठोस आधार प्रदान करता है।

93. (C) अक्सर अत्यधिक सुदृढ़ करने वाला और व्यसनी।
धूम्रपान जैसे व्यवहारों को बदलना चुनौतीपूर्ण है क्योंकि निकोटीन जैसे पदार्थ मस्तिष्क के पुरस्कार तंत्र को सक्रिय करते हैं, जिससे एक मजबूत शारीरिक और मनोवैज्ञानिक लत बन जाती है। व्यक्ति अक्सर तनाव से निपटने या सामाजिक रूप से घुलने-मिलने हेतु इसका सहारा लेता है, जो इस व्यवहार को और अधिक सुदृढ़ करता है। इसके स्वास्थ्य संबंधी खतरों को जानने के बावजूद, निकासी के लक्षणों का भय व्यक्ति को इसे छोड़ने से रोकता है। अतः ऐसे व्यवहारों को बदलने हेतु एक व्यापक और निरंतर सहायता प्रणाली की आवश्यकता होती है।

94. (D) जैव-मनो-सामाजिक मॉडल
जैव-मनो-सामाजिक मॉडल इस विचार का समर्थन करता है कि हमारा मन और शरीर एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। यह मॉडल समझाता है कि दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक तनाव कैसे शरीर के हार्मोनल संतुलन को बिगाड़ सकता है, जिससे रक्तचाप बढ़ता है और धमनियों में सूजन आती है, जो अंततः हृदय रोग का कारण बनती है। केवल जैविक कारकों पर ध्यान केंद्रित करना बीमारी को समझने हेतु अपर्याप्त है। अतः स्वास्थ्य को बनाए रखने हेतु मानसिक स्थिति और सामाजिक परिवेश का समुचित प्रबंधन करना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

95. (A) III, II, V, I, IV
ए-बी-सी मॉडल के माध्यम से समस्या समाधान एक व्यवस्थित प्रक्रिया है। सबसे पहले, उस घटना की पहचान की जाती है जिसने समस्या को जन्म दिया, और फिर उसके कारण उत्पन्न भावनात्मक परिणाम को समझा जाता है। इसके पश्चात, व्यक्ति उन अंतर्निहित तर्कहीन विश्वासों को खोजता है जो इस विक्षोभ का वास्तविक कारण हैं। परामर्शदाता फिर इन गलत विचारों को तार्किक रूप से चुनौती देता है और अंत में व्यक्ति को एक स्वस्थ जीवन दर्शन अपनाने में सहायता करता है। यह क्रमिक बदलाव मानसिक लचीलापन विकसित करने में सहायक है।

96. (B) निर्देशन एक सार्वभौमिक आवश्यकता है, जिसकी आवश्यकता सभी व्यक्तियों को उनके जीवन के विभिन्न चरणों में होती है।
निर्देशन केवल विशिष्ट समस्याओं या कमियों वाले लोगों के लिए ही नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन की एक मूलभूत आवश्यकता है। बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक, प्रत्येक व्यक्ति को करियर, शिक्षा और व्यक्तिगत समायोजन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में जटिल विकल्पों का सामना करना पड़ता है। उचित मार्गदर्शन व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का सही उपयोग करने और बदलती परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बिठाने में सशक्त बनाता है। यह एक विकासात्मक प्रक्रिया है जो व्यक्ति को एक सफल और संतोषजनक जीवन जीने हेतु आवश्यक दिशा प्रदान करती है।

97. (B) अग्न्याशय में बीटा कोशिकाओं का स्वप्रतिरक्षित विनाश
टाइप 1 मधुमेह का मूल कारण एक त्रुटिपूर्ण प्रतिरक्षा प्रणाली है जो शरीर की अपनी ही स्वस्थ अग्नाशयी कोशिकाओं को बाहरी शत्रु समझकर उन पर हमला कर देती है। यह प्रक्रिया इंसुलिन बनाने वाली बीटा कोशिकाओं को पूरी तरह नष्ट कर देती है, जिससे शरीर में इस अनिवार्य हार्मोन का उत्पादन स्थायी रूप से बंद हो जाता है। इसका जीवनशैली या आहार से कोई सीधा संबंध नहीं होता और यह किसी भी उम्र में हो सकता है। अतः ऐसे रोगियों हेतु जीवित रहने के लिए कृत्रिम इंसुलिन ही एकमात्र आधार है।

98. (A) सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा
अनिर्देशात्मक परामर्श को 'सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा' के रूप में जाना जाता है क्योंकि यहाँ पूरी प्रक्रिया का नियंत्रण और दिशा सेवार्थी के हाथों में होती है। परामर्शदाता अपनी राय थोपने के बजाय सेवार्थी की भावनाओं को प्रतिध्वनित करता है और उसे अपने भीतर झांकने हेतु प्रेरित करता है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति की स्वायत्तता और उसके आत्म-सम्मान को विशेष महत्व देता है। यहाँ मुख्य उद्देश्य सेवार्थी को अपनी समस्याओं का विशेषज्ञ बनाना है ताकि वह भविष्य में स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने और चुनौतियों का सामना करने हेतु सक्षम हो सके।

99. (C) लोगों को अपने स्वयं के जीवन और समुदायों पर नियंत्रण और प्रभुत्व प्राप्त करने में सहायता करना।
सामुदायिक मनोविज्ञान में सशक्तीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्तियों और समूहों को उनकी अपनी समस्याओं की पहचान करने और उनके समाधान हेतु आवश्यक संसाधन जुटाने में सक्षम बनाती है। यह लोगों को केवल सहायता प्राप्तकर्ता के स्थान पर सक्रिय कर्ता के रूप में देखती है। जब लोगों को अपनी परिस्थितियों को बदलने की शक्ति और आत्मविश्वास मिलता है, तो पूरे समुदाय का स्वास्थ्य और मनोबल बढ़ता है। यह दृष्टिकोण बाहरी निर्भरता को कम करता है और स्थानीय नेतृत्व तथा सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करता है।

100. (B) P-3, Q-2, R-1, S-4
स्वास्थ्य हस्तक्षेपों को उनकी प्रकृति और लक्ष्यों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। पूरी कक्षा को विश्राम कौशल सिखाना विशिष्ट कौशल वाली प्राथमिक रोकथाम है, जबकि चिंताग्रस्त छात्र का परामर्श देना द्वितीयक रोकथाम है क्योंकि समस्या के लक्षण दिख रहे हैं। इंसुलिन प्रबंधन में सहायता करना तृतीयक रोकथाम है क्योंकि यह स्थापित बीमारी की जटिलताओं को कम करता है। वहीं, पोस्टर के माध्यम से स्वस्थ भोजन का प्रचार करना सामान्य सूचना आधारित प्राथमिक रोकथाम है, जो व्यापक जनमानस में स्वास्थ्य जागरुकता फैलाती है।

101. (C) जैव-चिकित्सीय मॉडल
जैव-चिकित्सीय मॉडल की मुख्य आलोचना इसकी संकीर्णता के लिए की जाती है क्योंकि यह बीमारी को केवल जैविक खराबी के रूप में देखता है। यह मॉडल रोगी को उसके सामाजिक संदर्भ और मानसिक स्थिति से अलग कर देता है, जिससे उपचार केवल लक्षणों को दबाने तक सीमित रह जाता है। यह उन मनोवैज्ञानिक कारकों की अनदेखी करता है जो

137. (C) व्यक्तियों को जटिल व्यक्तिगत, शैक्षिक और व्यावसायिक चुनौतियों से निपटने में सहायता करने के लिए यह उत्तरोत्तर आवश्यक होता जा रहा है।
आधुनिक समाज में जीवन की गति और जटिलता के कारण निर्देशन की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। आज के युग में छात्रों को अनगिनत करियर विकल्पों, अत्यधिक प्रतिस्पर्धा और बदलते सामाजिक संबंधों का सामना करना पड़ता है। उचित मार्गदर्शन के बिना, व्यक्ति अक्सर भ्रम और मानसिक दबाव का शिकार हो जाता है। निर्देशन और परामर्श व्यक्तियों को आत्म-समझ और सही निर्णय लेने हेतु आवश्यक कौशल प्रदान करते हैं, जिससे वे इस चुनौतीपूर्ण विश्व में सफलतापूर्वक और संतुलित रूप से निरंतर आगे बढ़ सकें।

138. (A) न्यूनतम शारीरिक गतिविधि के साथ गतिहीन जीवनशैली बनाए रखना।
गतिहीन जीवनशैली स्वास्थ्य हेतु एक गंभीर खतरा है क्योंकि यह शरीर के महत्वपूर्ण चयापचय कार्यों को धीमा कर देती है। व्यायाम की कमी से कैलोरी का संचय होता है, जो मोटापा, उच्च रक्तचाप और हृदय रोगों के जोखिम को बढ़ाता है। इसके विपरीत, संतुलित आहार, तनाव प्रबंधन और पर्याप्त नींद स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार हैं जो शरीर की कार्यक्षमता को बढ़ाते हैं। अपनी दैनिक दिनचर्या में सक्रियता को सम्मिलित करना दीर्घकालिक बीमारियों से बचने और शरीर को स्वस्थ बनाए रखने हेतु प्राथमिक और बुनियादी कदम माना जाता है।

139. (D) द्वितीयक रोकथाम।
अधिगम कठिनाइयों हेतु विद्यालय स्क्रीनिंग कार्यक्रम द्वितीयक रोकथाम की श्रेणी में आता है क्योंकि यह समस्या के प्रारंभिक लक्षणों की पहचान करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य उन बच्चों को खोजना है जिन्हें अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता हो सकती है, इससे पहले कि उनकी समस्या शैक्षणिक प्रदर्शन को स्थायी रूप से प्रभावित करे। शीघ्र हस्तक्षेप के माध्यम से, इन बच्चों हेतु उचित शैक्षिक रणनीतियां बनाई जा सकती हैं, जिससे वे अपने साथियों के साथ तालमेल बिठा सकें। यह रणनीति समस्या को गंभीर होने से रोकने में प्रभावी होती है।

140. (B) चिकित्सीय संबंध स्वयं।
अनिर्देशात्मक चिकित्सा में परामर्शदाता और सेवार्थी के बीच का मानवीय संबंध ही उपचार का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। यहाँ परामर्शदाता कोई जादुई तकनीक नहीं देता, बल्कि अपनी सहानुभूति और पूर्ण स्वीकृति के माध्यम से एक ऐसा बंधन बनाता है जहाँ सेवार्थी सुरक्षित महसूस करता है। इस गहरे और ईमानदार संबंध में रहकर ही सेवार्थी अपनी दबी हुई भावनाओं को बाहर लाता है और स्वयं को बदलने का साहस पाता है। यह संबंध ही आत्म-बोध और व्यक्तिगत विकास हेतु मुख्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, जो अत्यंत आवश्यक है।

141. (D) 1, 2 और 3
मधुमेह एक दीर्घकालिक और जटिल चयापचय स्थिति है जिसकी मुख्य पहचान रक्त में शर्करा का असामान्य स्तर है। यह बीमारी केवल एक अंग तक सीमित नहीं रहती, बल्कि लंबे समय में यह पूरे शरीर की सूक्ष्म रक्त वाहिकाओं को प्रभावित करती है। उचित नियंत्रण के अभाव में, यह आँखों की रोशनी कम होने, गुर्दे की विफलता और तंत्रिका क्षति जैसी गंभीर जटिलताओं का कारण बन सकती है। अतः इसका समय पर निदान और निरंतर निगरानी रोगी के दीर्घकालिक स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने हेतु चिकित्सा विज्ञान में अनिवार्य मानी जाती है।

142. (D) अनिर्देशात्मक परामर्श
अनिर्देशात्मक परामर्श इस सशक्त विश्वास पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी समस्याओं और उनके समाधानों का सबसे बड़ा विशेषज्ञ है। परामर्शदाता यहाँ केवल एक दर्पण की तरह कार्य करता है जो सेवार्थी की भावनाओं को उसे दिखाता है, न कि उसे निर्देश देता है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति की स्वायत्तता का सम्मान करता है और मानता है कि आत्म-अन्वेषण से प्राप्त उत्तर अधिक स्थायी और सार्थक होते हैं। जब व्यक्ति स्वयं अपने सत्य को खोजता है, तो उसका व्यक्तित्व अधिक परिपक्व और आत्म-निर्भर बनता है, जो सराहनीय है।

143. (A) महाविद्यालय के समग्र शैक्षिक ध्येय में एकीकृत।
एक प्रभावी निर्देशन कार्यक्रम को महाविद्यालय की मुख्य शैक्षणिक संरचना का हिस्सा होना चाहिए, न कि एक बाहरी गतिविधि। जब निर्देशन और परामर्श को पाठ्यक्रम और छात्र जीवन के साथ जोड़ा जाता है, तो यह छात्र के समग्र विकास में अधिक सार्थक भूमिका निभा पाता है। इससे शिक्षकों और प्रशासन के बीच सहयोग बढ़ता है, जिससे छात्र को एक एकीकृत सहायता प्रणाली मिलती है। शिक्षा और मार्गदर्शन का यह समन्वय छात्र की शैक्षणिक सफलता और उसके व्यक्तिगत कल्याण के बीच संतुलन बनाने में पूर्णतः सहायता करता है।

144. (B) धमनियों में पट्टिका का संचय (एथेरोस्क्लेरोसिस)।
खराब कोलेस्ट्रॉल का अधिक होना संचार प्रणाली हेतु अत्यंत हानिकारक है क्योंकि यह धमनियों की आंतरिक दीवारों पर वसा की परतें जमा करता है। इस प्रक्रिया को एथेरोस्क्लेरोसिस कहा जाता है, जो समय के साथ धमनियों को संकुचित कर देती है, जिससे रक्त का प्रवाह बाधित होता है। यह स्थिति हृदय रोगों का मुख्य कारण है क्योंकि इससे हृदय को ऑक्सीजन युक्त रक्त कम मिलता है। कोलेस्ट्रॉल के स्तर को संतुलित रखना धमनियों के लचीलेपन और हृदय के सुचारू कार्य हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण और वैज्ञानिक रूप से अनिवार्य है।

145. (B) अनिर्देशात्मक परामर्श
अनिर्देशात्मक परामर्श को 'सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें परामर्शदाता के स्थान पर सेवार्थी की आवश्यकताओं और अनुभवों को प्राथमिकता दी जाती है। यहाँ सेवार्थी चिकित्सीय प्रक्रिया का चालक होता है, जो अपनी गति से अपनी समस्याओं पर चर्चा करता है। परामर्शदाता केवल एक सहायक की भूमिका निभाता है, जो बिना शर्त सकारात्मक सम्मान का वातावरण प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति के आत्म-बोध और उसकी आंतरिक शक्तियों को जागृत करने पर केंद्रित है, जिससे वह स्वयं को बेहतर बनाने हेतु उत्तरदायी महसूस करता है।

अवसरों के बीच तालमेल बिठाने में सहायता करता है। यह सेवा व्यक्ति को अपनी स्वायत्तता बनाए रखते हुए विवेकपूर्ण निर्णय लेने हेतु पूरी तरह सक्षम बनाती है। अंततः, निर्देशन का वास्तविक लक्ष्य व्यक्ति को स्वयं के जीवन का बेहतर प्रबंधक बनाना है ताकि वह प्रभावी समायोजन कर सके।

111. (A) II, IV, I, III
परामर्श दृष्टिकोणों का इतिहास सिगमंड फ्रायड के मनोविश्लेषण से शुरू हुआ, जिसने अचेतन मन पर ध्यान केंद्रित किया। इसके बाद विलियमसन ने वैज्ञानिक डेटा आधारित निर्देशात्मक परामर्श को लोकप्रिय बनाया। 1940 के दशक में कार्ल रोजर्स ने सेवार्थी की भावनाओं को प्राथमिकता देते हुए अनिर्देशात्मक चिकित्सा पेश की। अंत में, अल्बर्ट एलिस ने संज्ञानात्मक पहलुओं पर जोर देते हुए तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा का विकास किया। यह विकास दर्शाता है कि कैसे परामर्श का ध्यान समय के साथ अचेतन से भावनाओं और फिर विचारों की ओर निरंतर स्थानांतरित हुआ है।

112. (B) तृतीयक रोकथाम कार्यक्रम
मधुमेह से पीड़ित व्यक्तियों हेतु प्रबंधन कार्यक्रम तृतीयक रोकथाम का उदाहरण है क्योंकि यहाँ बीमारी पहले से ही उपस्थित है। इस कार्यक्रम का मुख्य ध्येय बीमारी के लक्षणों को नियंत्रित करना और उन्हें अंगों की गंभीर क्षति, जैसे अंधापन या गुर्दे की विफलता में बदलने से रोकना है। यह रोगियों को स्वस्थ आहार, नियमित दवाओं और जटिलताओं के प्रति सतर्कता बरतने हेतु शिक्षित करता है। तृतीयक रोकथाम का सफल क्रियान्वयन रोगी के जीवन की गुणवत्ता और उसकी सक्रियता को बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

113. (B) अनुवर्ती (Follow-up)
विलियमसन के निर्देशात्मक परामर्श का अंतिम और महत्वपूर्ण चरण 'अनुवर्ती' सेवा है। परामर्श समाप्त होने के बाद यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सुझाया गया समाधान सेवार्थी हेतु प्रभावी रूप से कार्य कर रहा है या नहीं। यह चरण परामर्शदाता को प्रगति की निगरानी करने और यदि आवश्यक हो, तो उपचार योजना में बदलाव करने की अनुमति देता है। बिना अनुवर्ती के, परामर्श अधूरा माना जा सकता है क्योंकि दीर्घकालिक सफलता तभी सुनिश्चित होती है जब सेवार्थी के समायोजन और विकास का समय-समय पर वस्तुनिष्ठ पुनर्मूल्यांकन किया जाए।

114. (A) पूर्ण इंसुलिन की कमी; सापेक्ष इंसुलिन की कमी और प्रतिरोध
टाइप 1 और टाइप 2 मधुमेह के बीच मुख्य शारीरिक अंतर इंसुलिन की उपलब्धता और प्रभावशीलता में है। टाइप 1 में शरीर का रक्षा तंत्र ही अग्न्याशय को नष्ट कर देता है, जिससे इंसुलिन का उत्पादन पूर्णतः शून्य हो जाता है। इसके विपरीत, टाइप 2 में शरीर इंसुलिन तो बनाता है, लेकिन कोशिकाएं उसके प्रति प्रतिरोधी हो जाती हैं। ये दोनों स्थितियां अलग-अलग चिकित्सीय दृष्टिकोणों की मांग करती हैं और चयापचय प्रबंधन हेतु विशिष्ट रणनीतियों की आवश्यकता होती है। अतः सटीक निदान समुचित उपचार के लिए अनिवार्य है।

115. (C) शैक्षणिक निर्देशन
शैक्षणिक निर्देशन विशेष रूप से छात्र की शैक्षणिक यात्रा को सुगम बनाने पर ध्यान केंद्रित करता है। इसमें उपयुक्त विषयों का चुनाव, अध्ययन की आदतों में सुधार और परीक्षा के तनाव को कम करने जैसी सेवाएँ शामिल हैं। यह छात्र को उसकी बौद्धिक क्षमताओं और करियर लक्ष्यों के अनुरूप सही शैक्षिक मार्ग चुनने में सहायता करता है। उचित शैक्षणिक मार्गदर्शन न केवल छात्र के प्रदर्शन में सुधार लाता है, बल्कि उसे सीखने के प्रति उत्साहित भी करता है, जो उसके समग्र व्यावसायिक भविष्य की नींव रखने हेतु अनिवार्य है।

116. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार और बीमारियाँ एक-दूसरे से जटिल रूप से जुड़ी हुई हैं। गतिहीन जीवनशैली एक हानिकारक व्यवहार है जो शरीर को रोगों के प्रति संवेदनशील बनाता है, जबकि संतुलित आहार एक प्रवर्धक व्यवहार है जो आरोग्य को बढ़ाता है। मस्तिष्काघात हृदय रोग का एक गंभीर प्रकार है जो रक्त परिसंचरण में बाधा के कारण होता है। वहीं, रक्त में उच्च ग्लूकोज का होना मधुमेह की प्रमुख पहचान है। इन संबंधों को समझना एक स्वस्थ जीवन शैली की योजना बनाने और भविष्य के जोखिमों को कम करने हेतु महत्वपूर्ण है।

117. (C) निर्देशन सेवाएं प्रत्येक छात्र के लिए उपलब्ध होनी चाहिए, न कि केवल समस्याओं वाले छात्रों के लिए।
यह सिद्धांत इस लोकतांत्रिक विचार पर आधारित है कि प्रत्येक छात्र में असीमित क्षमताएं होती हैं जिन्हें निखारने हेतु मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। निर्देशन को केवल संकटकालीन हस्तक्षेप के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे सभी हेतु एक सकारात्मक विकास प्रक्रिया होना चाहिए। चाहे छात्र प्रतिभाशाली हो या सामान्य, सही दिशा मिलने पर वह अपनी क्षमताओं का बेहतर उपयोग कर सकता है। यह दृष्टिकोण विद्यालय में समानता और सभी छात्रों के सर्वांगीण कल्याण को बढ़ावा देने हेतु शिक्षा जगत में अनिवार्य माना जाता है।

118. (B) जोखिम वाली जनसंख्या में उच्च रक्त शर्करा के लिए नियमित जांच।
द्वितीयक रोकथाम का आधार किसी समस्या को गंभीर होने से पहले प्रारंभिक अवस्था में पकड़ना है। मधुमेह हेतु स्क्रीनिंग या नियमित शर्करा जांच उन लोगों हेतु अत्यंत प्रभावी है जिनमें कोई लक्षण नहीं दिख रहे हैं लेकिन जोखिम अधिक है। शीघ्र पता चलने से जीवनशैली में बदलाव और प्रारंभिक उपचार के माध्यम से बीमारी के पूर्ण विकसित होने को रोका या टाला जा सकता है। यह रणनीति अंग क्षति जैसी भविष्य की महंगी और दर्दनाक जटिलताओं से बचने का सबसे प्रभावी और वैज्ञानिक चिकित्सा मार्ग प्रदान करती है।

119. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सामुदायिक मनोविज्ञान इस व्यापक सत्य को स्वीकार करता है कि बचाव उपचार से हमेशा बेहतर और कम खर्चीला होता

155. (D) भावनात्मक और व्यवहारिक परिणाम।
आरईटी के ए-बी-सी मॉडल में 'सी' उस अंतिम परिणाम को दर्शाता है जो किसी घटना और व्यक्ति के विश्वासों के मिलन से उत्पन्न होता है। यह परिणाम या तो अत्यधिक दुख और चिंता जैसी नकारात्मक भावना हो सकती है या फिर एक संतुलित प्रतिक्रिया। यदि किसी के विश्वास तर्कहीन हैं, तो 'सी' विनाशकारी होगा, लेकिन यदि विचार तर्कसंगत हैं, तो परिणाम सकारात्मक होगा। चिकित्सा का लक्ष्य व्यक्ति को यह समझाना है कि विश्वास प्रणाली को बदलकर वह अपने भावनात्मक परिणामों को पूरी तरह बदल सकता है।

156. (B) शीघ्र पहचान और उपचार के माध्यम से किसी बीमारी या समस्या को बढ़ने से रोकना।
द्वितीयक रोकथाम का मूल ध्येय उन बीमारियों का पता लगाना है जो अभी पनप रही हैं। यह रणनीति उन व्यक्तियों को लक्षित करती है जिनमें लक्षण अभी स्पष्ट नहीं हुए हैं या बहुत कम हैं। शीघ्र हस्तक्षेप करने से बीमारी की जटिलताओं को टाला जा सकता है और इलाज की सफलता की संभावना काफी बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए, नियमित रक्तचाप जांच से हृदयाघात के गंभीर परिणामों को रोका जा सकता है। यह दृष्टिकोण स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली की दक्षता बढ़ाता है और व्यक्तिगत स्वास्थ्य को लंबे समय तक सुरक्षित रखता है।

157. (C) छात्रों को उनकी समस्याओं में सहायता करने के लिए आमने-सामने या छोटे समूह का संबंध।
निर्देशन कार्यक्रम के भीतर 'परामर्श सेवा' सबसे व्यक्तिगत और गहन हस्तक्षेप है। इसमें एक पेशेवर परामर्शदाता छात्र के साथ बैठकर उसकी विशिष्ट चिंताओं, जैसे कि व्यक्तिगत संकट या हीन भावना पर विस्तार से चर्चा करता है। यह सेवा छात्र को एक सुरक्षित और गोपनीय स्थान प्रदान करती है जहाँ वह अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सके। इसका मुख्य लक्ष्य छात्र को आत्म-अन्वेषण में सहायता करना और उसे प्रभावी मुकाबला कौशल सिखाना है ताकि वह अपनी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने में सक्षम हो सके।

158. (D) अनिर्देशात्मक परामर्श
अनिर्देशात्मक परामर्श में सहानुभूति, वास्तविकता और बिना शर्त सकारात्मक सम्मान को चिकित्सा की सफलता हेतु अनिवार्य शर्तें माना जाता है। ये गुण परामर्शदाता को सेवार्थी के साथ एक गहरा और प्रामाणिक संबंध बनाने में सहायता करते हैं, जो किसी भी तकनीक से अधिक शक्तिशाली होता है। जब सेवार्थी को लगता है कि उसे बिना किसी शर्त के स्वीकार किया जा रहा है, तो उसके भीतर की रक्षात्मक प्रवृत्तियां समाप्त हो जाती हैं। यही वह अवस्था है जहाँ वास्तविक व्यक्तिगत विकास और स्थायी सकारात्मक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन शुरु होता है।

159. (A) एथेरोस्क्लेरोसिस और उच्च रक्तचाप।
हृदय रोगों के मूल कारणों में एथेरोस्क्लेरोसिस और उच्च रक्तचाप सर्वाधिक विनाशकारी भूमिका निभाते हैं। एथेरोस्क्लेरोसिस धमनियों में रुकावट पैदा करता है, जिससे रक्त का प्रवाह कठिन हो जाता है, जबकि उच्च रक्तचाप हृदय पर अतिरिक्त बोझ डालता है। ये दोनों स्थितियां मिलकर धमनियों को स्थायी क्षति पहुँचाती हैं और हृदयाघात का मार्ग प्रशस्त करती हैं। संतुलित आहार जैसे सकारात्मक कारक इन रोगों को रोकने में सहायता करते हैं, न कि इनका कारण बनते हैं। अतः हृदय स्वास्थ्य की रक्षा हेतु इन दोनों जोखिमों का प्रबंधन अनिवार्य है।

160. (B) एक जटिल विश्व में छात्रों की विकासात्मक आवश्यकताओं और चुनौतियों के लिए व्यवस्थित सहायता की आवश्यकता होती है।
आधुनिक समय में छात्रों को केवल अकादमिक चुनौतियों का ही नहीं, बल्कि तीव्र सामाजिक परिवर्तनों और प्रतिस्पर्धी माहौल का भी सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में, विद्यालय में एक व्यवस्थित निर्देशन कार्यक्रम छात्रों को सही निर्णय लेने और भावनात्मक संतुलन बनाए रखने हेतु एक अनिवार्य सुरक्षा जाल प्रदान करता है। यह कार्यक्रम छात्रों को उनकी विशिष्ट क्षमताओं को पहचानने और भविष्य को सुरक्षित करने हेतु आवश्यक मार्गदर्शन देता है। व्यवस्थित सहायता के बिना छात्र भ्रम का शिकार हो सकते हैं, जिससे उनका समग्र विकास बाधित होता है।

161. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
मनोविज्ञान और स्वास्थ्य के विभिन्न मॉडल मानव कल्याण को समझने के अलग-अलग दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। जैव-मनो-सामाजिक मॉडल स्वास्थ्य को जैविक, मानसिक और सामाजिक कारकों के संगम के रूप में देखता है। निर्देशात्मक परामर्श में परामर्शदाता सक्रिय रूप से निदान और समाधान देता है, जबकि अनिर्देशात्मक दृष्टिकोण सेवार्थी की आत्म-चिकित्सा क्षमता पर भरोसा करता है। तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श इस बात पर जोर देता है कि हमारे तर्कहीन विश्वास ही हमारे संकट का असली कारण हैं। इन मॉडलों को समझना प्रभावी रणनीतियां बनाने हेतु अत्यंत आवश्यक है।

162. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अनिर्देशात्मक परामर्श को सेवार्थी-केंद्रित कहना बिल्कुल उचित है क्योंकि इसमें परामर्शदाता केवल एक सुविधादाता के रूप में कार्य करता है। प्रक्रिया का केंद्र स्वयं सेवार्थी होता है, जो अपनी भावनाओं, विचारों और समस्याओं पर पूर्ण नियंत्रण रखता है। परामर्शदाता अपनी राय या निर्देश थोपने के बजाय सेवार्थी को अपने मार्ग की खोज स्वयं करने हेतु प्रेरित करता है। यह दृष्टिकोण मानता है कि व्यक्ति में स्वयं को बदलने की शक्ति निहित है और उसे केवल एक स्वीकार्य वातावरण की आवश्यकता है ताकि वह विकास कर सके।

163. (C) एक तर्कहीन विश्वास
"जीवन समस्याओं से मुक्त होना चाहिए" जैसा विचार एक गहरा तर्कहीन विश्वास है क्योंकि यह वास्तविकता के विपरीत है। अल्बर्ट एलिस के अनुसार, ऐसी अवास्तविक अपेक्षाएं व्यक्ति को हताश कर देती हैं जब उसे अनिवार्य रूप से छोटी-बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी सोच व्यक्ति के लचीलेपन को समाप्त कर देती है और उसे भावनात्मक रूप से कमजोर बना देती है। परामर्श का मुख्य कार्य व्यक्ति को यह

छात्रों को निरंतर समर्थन मिले और कार्यक्रम की दीर्घकालिक सफलता जांची जा सके। ये सभी अंग मिलकर छात्र के सर्वांगीण विकास हेतु एक संपूर्ण सहायता प्रणाली बनाते हैं।

182. (B) आनुवंशिक संवेदनशीलता और मोटापे जैसे जीवनशैली कारकों का संयोजन।
टाइप 2 मधुमेह का उदय अक्सर वंशानुगत कारकों और प्रतिकूल पर्यावरणीय परिस्थितियों के मिलन का परिणाम होता है। यदि किसी व्यक्ति के परिवार में मधुमेह का इतिहास है, तो उसमें इसके विकसित होने का जोखिम अधिक होता है, लेकिन मोटापे और व्यायाम की कमी जैसे जीवनशैली कारक इस जोखिम को वास्तविकता में बदल देते हैं। अतिरिक्त वजन शरीर की इंसुलिन के प्रति प्रतिक्रिया करने की क्षमता को कम कर देता है। अतः, एक संतुलित आहार अपनाकर जोखिम में रहने वाले व्यक्ति भी इस बीमारी को प्रभावी ढंग से टाल सकते हैं।

183. (D) शिक्षक या विशेषज्ञ
निर्देशात्मक परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका एक शिक्षक या विशेषज्ञ की तरह होती है, जो अपनी योग्यता और अनुभव के आधार पर सेवार्थी का मार्गदर्शन करता है। वह सेवार्थी की समस्या का वैज्ञानिक विश्लेषण करता है और सुधार हेतु एक ठोस योजना प्रस्तुत करता है। इस दृष्टिकोण में परामर्शदाता सक्रिय रूप से निर्देश देता है कि सेवार्थी को क्या कदम उठाने चाहिए। यह मॉडल उन परिस्थितियों में अत्यंत प्रभावी है जहाँ सेवार्थी भ्रमित है और उसे निर्णय लेने हेतु एक स्पष्ट और आधिकारिक दिशा की तत्काल आवश्यकता होती है।

184. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नियमित शारीरिक व्यायाम हृदय स्वास्थ्य हेतु एक सुरक्षा कवच की तरह कार्य करता है। यह न केवल शरीर के वजन को नियंत्रित रखने में सहायता करता है, बल्कि रक्तचाप को कम करके धमनियों पर पड़ने वाले दबाव को भी घटाता है। व्यायाम करने से शरीर में “अच्छे” कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ता है और रक्त शर्करा संतुलित रहती है, जो सामूहिक रूप से हृदय रोगों के जोखिम को कम करते हैं। यह वैज्ञानिक तथ्य स्पष्ट करता है कि सक्रिय जीवनशैली अपनाना हृदय प्रणाली को दीर्घकालिक सुरक्षा प्रदान करने का सबसे प्राकृतिक तरीका है।

185. (C) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा के अनुसार, “सबके द्वारा प्रेम पाना अनिवार्य है” जैसा विचार एक मूल तर्कहीन विश्वास है जो मानसिक अशांति का कारण बनता है। यह विचार अवास्तविक है क्योंकि हर किसी को प्रसन्न करना असंभव है। जब व्यक्ति इस अवाञ्छनीय लक्ष्य को पाने में विफल होता है, तो वह गहरी चिंता और हीन भावना का अनुभव करता है। आरईटी का उद्देश्य व्यक्ति को यह समझाना है कि दूसरों का अनुमोदन सुखद तो हो सकता है, लेकिन यह उसके आत्म-सम्मान हेतु अनिवार्य नहीं है, जिससे उसे मानसिक स्वतंत्रता मिलती है।

186. (A) जैविक कारकों, मनोवैज्ञानिक तनाव और सामाजिक आदतों की अंतःक्रिया।
जैव-मनो-सामाजिक मॉडल के अनुसार, हृदय रोग केवल उच्च कोलेस्ट्रॉल का परिणाम नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन के कई आयामों का संगम है। दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक तनाव शरीर में सूजन बढ़ाता है, जबकि प्रतिकूल सामाजिक आदतें जैसे धूम्रपान या खराब आहार इस जोखिम को और अधिक तीव्र कर देते हैं। ये सभी कारक आपस में मिलकर धमनियों की कार्यप्रणाली को प्रभावित करते हैं। अतः हृदय के उपचार में दवाइयों के साथ-साथ तनाव प्रबंधन और सामाजिक वातावरण में सुधार करना भी स्वास्थ्य हेतु उतना ही आवश्यक माना जाता है।

187. (D) एकीकरण का सिद्धांत
एकीकरण का सिद्धांत यह मानता है कि निर्देशन कोई ऐसी सेवा नहीं है जिसे केवल आवश्यकता पड़ने पर बाहर से जोड़ा जाए, बल्कि इसे विद्यालय की पूरी शिक्षण प्रक्रिया में समाहित होना चाहिए। छात्र का मार्गदर्शन उसके दैनिक सीखने के अनुभवों का हिस्सा होना चाहिए ताकि वह निरंतर अपनी क्षमताओं के बारे में जागरूक रहे। जब निर्देशन और पाठ्यक्रम साथ-साथ चलते हैं, तो छात्र का विकास अधिक स्वाभाविक और संतुलित होता है। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि छात्र की शैक्षणिक आवश्यकताओं को एक ही मंच पर संबोधित किया जाए।

188. (D) 1, 2 और 3
द्वितीयक रोकथाम का पूरा ध्यान किसी भी विकार को उसकी प्रारंभिक अवस्था में ही पकड़ लेने पर होता है ताकि उसे बढ़ने से रोका जा सके। यह उन व्यक्तियों हेतु होता है जो अभी पूरी तरह बीमार नहीं हैं लेकिन जिनमें कुछ चेतावनी देने वाले लक्षण दिखाई दे रहे हैं। रक्तचाप परीक्षण इसका सबसे सटीक उदाहरण है क्योंकि यह मस्तिष्काघात के जोखिम वाले लोगों की पहचान करती है। शीघ्र पहचान और तत्काल उपचार के माध्यम से, न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य की रक्षा होती है, बल्कि समाज पर पड़ने वाला चिकित्सा बोझ भी काफी कम हो जाता है।

189. (C) वृक्क रोग (Nephropathy)
वृक्क रोग सीधे तौर पर हृदय का रोग नहीं है, बल्कि यह गुर्दे की कार्यप्रणाली से संबंधित एक गंभीर चिकित्सीय स्थिति है। हालांकि हृदय रोग और गुर्दे की बीमारी आपस में संबंधित हो सकते हैं, लेकिन हृदयाघात, मस्तिष्काघात और उच्च रक्तचाप सीधे हृदय और रक्त वाहिकाओं की विकृति के रूप में वर्गीकृत किए जाते हैं। नेफ्रोपैथी अक्सर मधुमेह या अनियंत्रित रक्तचाप की जटिलता के रूप में विकसित होती है। अतः शरीर के विभिन्न अंगों के विशिष्ट विकारों के बीच अंतर को समझना सटीक निदान और समुचित उपचार हेतु अत्यंत आवश्यक है।

190. (D) निर्देशात्मक परामर्शदाता सक्रिय और नैदानिक होते हैं; अनिर्देशात्मक परामर्शदाता सुविधादाता और चिंतनशील होते हैं।
निर्देशात्मक और अनिर्देशात्मक परामर्श के बीच का मुख्य अंतर परामर्शदाता के व्यवहार और उसकी भूमिका में निहित

173. (C) आत्म-बोध - निर्देशात्मक
आत्म-बोध की अवधारणा अनिर्देशात्मक या मानवतावादी परामर्श का मुख्य आधार है, न कि निर्देशात्मक परामर्श का। निर्देशात्मक परामर्श विशेष रूप से विशेषज्ञ द्वारा दिए गए निदान और व्यवस्थित समाधान पर केंद्रित होता है। इसके विपरीत, आत्म-बोध यह मानता है कि व्यक्ति में स्वयं विकसित होने की जन्मजात क्षमता होती है। अन्य युग्म, जैसे ए-बी-सी मॉडल और बिना शर्त सम्मान, अपने संबंधित दृष्टिकोणों के साथ बिल्कुल सही सुमेलित हैं। अतः परामर्श के इन मूलभूत अंतरों को समझना प्रभावी मार्गदर्शन हेतु अत्यंत अनिवार्य है।

174. (D) छात्रों को उपयुक्त शैक्षिक पाठ्यक्रमों या रोजगार में नियुक्त होने में सहायता करना।
विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम में 'स्थापन' सेवा छात्र की शिक्षा और उसके भविष्य के करियर के बीच एक सेतु का कार्य करती है। इसका मुख्य लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि छात्र अपनी रुचियों और क्षमताओं के आधार पर सही अगले कदम का चुनाव करे। यह सेवा छात्रों को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिलाने या उनकी योग्यता के अनुसार रोजगार के अवसर खोजने में व्यावहारिक सहायता प्रदान करती है। उचित स्थापन छात्र की व्यावसायिक सफलता सुनिश्चित करने और उसे समाज का एक उत्पादक हिस्सा बनाने में महत्वपूर्ण है।

175. (A) स्वप्रतिरक्षित स्थिति जिसके परिणामस्वरूप इंसुलिन उत्पादन की कमी होती है।
टाइप 1 मधुमेह एक ऐसी स्थिति है जहाँ शरीर का अपना रक्षा तंत्र ही अग्न्याशय की इंसुलिन बनाने वाली कोशिकाओं को नष्ट करना शुरु कर देता है। इसके परिणामस्वरूप शरीर में इंसुलिन का उत्पादन पूरी तरह बंद हो जाता है, जो रक्त शर्करा के नियंत्रण हेतु आवश्यक है। यह प्रक्रिया किसी गलत जीवनशैली का परिणाम नहीं है, बल्कि एक जैविक त्रुटि है। चूंकि शरीर अब प्राकृतिक रूप से इंसुलिन नहीं बना सकता, इसलिए रोगी को स्वस्थ रहने हेतु जीवन भर बाहरी इंसुलिन के निरंतर समर्थन पर निर्भर रहना पड़ता है।

176. (B) द्वितीयक रोकथाम
शैक्षणिक परिवीक्षा पर रहने वाले छात्रों हेतु सहायता समूह द्वितीयक रोकथाम का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यहाँ हस्तक्षेप का उद्देश्य उन छात्रों की पहचान करना है जिनमें असफलता के प्रारंभिक लक्षण दिख रहे हैं। कौशल प्रशिक्षण और मार्गदर्शन प्रदान करके समस्या को और अधिक गंभीर होने से रोका जा सकता है। यह रणनीति समय रहते सुधारात्मक कदम उठाकर छात्रों को सफलता की मुख्यधारा में वापस लाने का प्रयास करती है, जिससे उनके भविष्य के करियर पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को प्रभावी ढंग से कम किया जा सके।

177. (B) III, IV, I, II
सामुदायिक हस्तक्षेप का आयोजन एक तार्किक और व्यवस्थित क्रम में किया जाता है। सर्वप्रथम, समुदाय की वास्तविक समस्याओं को समझने हेतु आवश्यकता आकलन किया जाता है। इसके आधार पर, हस्तक्षेप की एक विस्तृत योजना और रूपरेखा तैयार की जाती है। योजना तैयार होने के पश्चात ही उसे वास्तविक रूप में लागू या कार्यान्वित किया जाता है। अंत में, यह जानने हेतु कि हस्तक्षेप कितना सफल रहा, कार्यक्रम का मूल्यांकन किया जाता है। यह क्रम सुनिश्चित करता है कि उपलब्ध संसाधनों का पूर्णतः प्रभावी ढंग से उपयोग किया गया है।

178. (A) निर्देशन समिति का प्राथमिक कार्य कार्यक्रम के कार्यान्वयन की योजना बनाना, व्यवस्थित करना और उसकी देखरेख करना है।
निर्देशन समिति संस्थान के भीतर एक केंद्रीय प्रबंधन इकाई के रूप में कार्य करती है जो निर्देशन सेवाओं के सुचारु संचालन को सुनिश्चित करती है। इसका कार्य केवल परामर्श देना नहीं है, बल्कि पूरे विद्यालय हेतु एक व्यवस्थित ढांचा तैयार करना है। यह समिति उपलब्ध संसाधनों का प्रबंधन करती है, कार्यक्रम के लक्ष्यों को निर्धारित करती है और समय-समय पर इसकी प्रभावशीलता की समीक्षा करती है। समिति का नेतृत्व यह सुनिश्चित करता है कि निर्देशन सेवाएँ छात्रों की बदलती आवश्यकताओं के अनुरुप हों और उन्हें अधिकतम लाभ पहुँचा सकें।

179. (C) अल्पकालिक या दीर्घकालिक बीमारी के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ाता है।
स्वास्थ्य हेतु हानिकारक व्यवहार वे आदतें हैं जो शरीर की स्वाभाविक कार्यप्रणाली को बाधित करती हैं और रोगों के पनपने हेतु अनुकूल वातावरण तैयार करती हैं। इनमें धूम्रपान, नशा और व्यायाम की कमी जैसे व्यवहार शामिल हैं। हालांकि इनका प्रभाव तुरंत महसूस नहीं होता, लेकिन ये धीरे-धीरे आंतरिक अंगों को कमजोर करते हैं और मधुमेह तथा हृदय रोगों जैसी गंभीर स्थितियों के प्रति शरीर को संवेदनशील बना देते हैं। अपनी आदतों को सुधारना ही भविष्य के स्वास्थ्य संकटों को टालने का एकमात्र प्रभावी उपाय है।

180. (D) सामाजिक संदर्भों, शक्तियों और रोकथाम पर ध्यान केंद्रित करना।
सामुदायिक मनोविज्ञान इस विचार पर आधारित है कि व्यक्ति को उसके परिवेश से अलग करके नहीं समझा जा सकता। यह दर्शन केवल व्यक्तिगत उपचार के स्थान पर उन सामाजिक परिस्थितियों और प्रणालियों को सुधारने पर बल देता है जो मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। यह समुदायों की आंतरिक शक्तियों को पहचानने और उन्हें सशक्त बनाने का प्रयास करता है ताकि वे अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सकें। रोकथाम इसकी मुख्य रणनीति है, जिसका उद्देश्य समस्याओं को उनके जन्मस्थान पर ही रोकना और न्याय को बढ़ावा देना है।

181. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
विद्यालय में निर्देशन की सफलता हेतु इसकी विभिन्न सेवाओं का समन्वय आवश्यक है। मूल्यांकन सेवा छात्र की क्षमताओं को समझने हेतु परीक्षणों का उपयोग करती है, जबकि सूचना सेवा उसे करियर के अवसरों से अवगत कराती है। परामर्श सेवा व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान हेतु एक गोपनीय मंच प्रदान करती है। अंत में, अनुवर्ती सेवा यह सुनिश्चित करती है कि पूर्व

199. (D) शिक्षकों, अभिभावकों और प्रशासकों के सहयोग से विकसित और कार्यान्वित।
विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम की सफलता केवल परामर्शदाता के प्रयासों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह एक सामूहिक जिम्मेदारी है। शिक्षकों, अभिभावकों और प्रशासन का सक्रिय सहयोग यह सुनिश्चित करता है कि छात्र को विद्यालय और घर दोनों जगह एक जैसा समर्थन और मार्गदर्शन मिले। जब सभी हितधारक मिलकर कार्य करते हैं, तो छात्र की समस्याओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझना और उनका स्थायी समाधान खोजना सरल हो जाता है। यह सहयोगात्मक वातावरण छात्र के सर्वांगीण विकास हेतु एक मजबूत और सुरक्षात्मक ढांचा तैयार करता है।

200. (A) टाइप 1 स्वप्रतिरक्षित है; टाइप 2 मुख्य रूप से जीवनशैली और इंसुलिन प्रतिरोध से संबंधित है।
टाइप 1 और टाइप 2 मधुमेह के बीच मुख्य अंतर उनकी उत्पत्ति के मूल कारणों में निहित है। टाइप 1 मधुमेह एक स्वप्रतिरक्षित विफलता है जहाँ शरीर का रक्षा तंत्र ही अग्न्याशय की कोशिकाओं को नष्ट कर देता है, जिससे इंसुलिन का उत्पादन बंद हो जाता है। इसके विपरीत, टाइप 2 मधुमेह प्रायः मोटापे और व्यायाम की कमी के कारण उत्पन्न होता है, जहाँ शरीर इंसुलिन तो बनाता है लेकिन कोशिकाएं उसके प्रति सही प्रतिक्रिया नहीं देतीं। इन दोनों का उपचार और दैनिक प्रबंधन भी इनकी विशिष्ट प्रकृति के अनुसार भिन्न होता है।

201. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
परामर्श और मनोविज्ञान के शब्द विशिष्ट विचारधाराओं से गहराई से जुड़े हैं। अनुरूपता अनिर्देशात्मक परामर्श का एक स्तंभ है जो परामर्शदाता की प्रामाणिकता को दर्शाता है। वाद-विवाद तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा का हिस्सा है जहाँ गलत विचारों को चुनौती दी जाती है। संश्लेषण निर्देशात्मक परामर्श का एक महत्वपूर्ण चरण है जहाँ डेटा को एकीकृत किया जाता है। वहीं, सशक्तीकरण सामुदायिक मनोविज्ञान का मूल ध्येय है जो लोगों को स्वयं के जीवन पर नियंत्रण पाने में सक्षम बनाता है। इन अवधारणाओं को समझना पेशेवर मार्गदर्शन की नींव को सुदृढ़ करता है।

202. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
निर्देशन का प्रत्येक रूप, चाहे वह निर्देशात्मक हो या अनिर्देशात्मक, अंततः सेवार्थी के कल्याण को ही अपना सर्वोच्च लक्ष्य मानता है। निर्देशात्मक परामर्श में परामर्शदाता यद्यपि सक्रिय और नैदानिक भूमिका निभाता है, लेकिन उसका सारा ज्ञान और अनुभव केवल सेवार्थी की समस्याओं के सबसे सटीक समाधान खोजने हेतु समर्पित होता है। प्रक्रिया की शैली भिन्न हो सकती है, लेकिन प्रेरणा हमेशा व्यक्ति के सर्वोत्तम हितों की रक्षा करना ही होती है। अतः मार्गदर्शन की सफलता का असली पैमाना सेवार्थी के जीवन में आने वाला सकारात्मक सुधार ही है।

203. (D) महाविद्यालय की प्राथमिक विधि प्रवर्तन संस्था के रूप में कार्य करना।
महाविद्यालय निर्देशन कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों का मार्गदर्शन और सहयोग करना है, न कि उन्हें दंडित करना या कानून लागू करना। इसका मुख्य ध्यान शैक्षणिक सफलता, करियर नियोजन और व्यक्तिगत विकास पर होता है। यह सेवा छात्रों को एक सहायक वातावरण प्रदान करती है जहाँ वे बिना डरे अपनी समस्याओं को साझा कर सकें। अनुशासन बनाए रखना प्रशासनिक कार्य हो सकता है, लेकिन परामर्शदाता का कार्य हमेशा सुधारात्मक और कल्याणकारी होता है। अतः निर्देशन सेवाओं को दंडात्मक निकायों से अलग रखना छात्र के विश्वास हेतु अनिवार्य है।

204. (B) शरीर, मन और सामाजिक वातावरण के बीच अंतःक्रिया।
जैव-मनो-सामाजिक मॉडल इस वैज्ञानिक सत्य पर आधारित है कि स्वास्थ्य एक बहुआयामी स्थिति है। यह मानता है कि हमारी शारीरिक संरचना, हमारे विचार और भावनाएं तथा हमारे आसपास का परिवेश और संबंध सभी मिलकर यह निर्धारित करते हैं कि हम कितने स्वस्थ होंगे। यह मॉडल केवल लक्षणों के उपचार के स्थान पर व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को समझने पर बल देता है। स्वास्थ्य के प्रति यह एकीकृत दृष्टिकोण अधिक प्रभावी रोकथाम और दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ सुनिश्चित करने हेतु आज के युग में अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावी माना जाता है।

205. (C) समस्या-समाधान के लिए नियंत्रण का केंद्र (locus of control) और उत्तरदायित्व।
निर्देशात्मक और अनिर्देशात्मक परामर्श के बीच का मूलभूत अंतर इस बात में है कि परिवर्तन की जिम्मेदारी मुख्य रूप से कौन उठाता है। निर्देशात्मक परामर्श में परामर्शदाता एक विशेषज्ञ के रूप में पूरी प्रक्रिया को नियंत्रित करता है और समाधान निर्धारित करता है। इसके विपरीत, अनिर्देशात्मक परामर्श में नियंत्रण का केंद्र स्वयं सेवार्थी होता है, जिसे अपनी भावनाओं को समझने और अपने उत्तर स्वयं खोजने हेतु उत्तरदायी बनाया जाता है। यह अंतर परामर्शदाता की भूमिका को सक्रिय विशेषज्ञ से बदलकर एक सहानुभूतिपूर्ण सुविधादाता के रूप में परिभाषित करता है।

206. (D) कल्याण का समर्थन करने वाले व्यवहारों में संलग्न होने का एक सचेत और निरंतर प्रयास।
स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली कोई अल्पकालिक निर्णय नहीं है, बल्कि यह दैनिक जीवन में स्वस्थ आदतों को बनाए रखने की एक निरंतर प्रक्रिया है। इसमें संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और सकारात्मक सोच जैसे व्यवहारों को स्वेच्छा से अपनाया जाता है। यह जीवनशैली व्यक्ति को न केवल शारीरिक बीमारियों से बचाती है, बल्कि उसे मानसिक रूप से भी ऊर्जावान और प्रसन्न रखती है। जब व्यक्ति अपने स्वास्थ्य की जिम्मेदारी स्वयं लेता है और सचेत होकर अच्छे चुनाव करता है, तभी वह दीर्घकालिक कल्याण और उच्च जीवन गुणवत्ता प्राप्त कर सकता है।

है। निर्देशात्मक परामर्श में चिकित्सक एक विशेषज्ञ की तरह सेवार्थी की समस्या का विश्लेषण करता है और उसे सुधार हेतु विशिष्ट परामर्श देता है। इसके विपरीत, अनिर्देशात्मक परामर्श में चिकित्सक केवल एक सहायक या दर्पण की तरह कार्य करता है, जो सेवार्थी की भावनाओं को उसे दिखाता है ताकि वह स्वयं अपने उत्तर खोज सके। ये दोनों दृष्टिकोण अलग-अलग दार्शनिक आधारों पर टिके हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य सुधार में सहायक हैं।

191. (A) निवारक
निवारक स्वास्थ्य मॉडल का प्राथमिक लक्ष्य बीमारी के पनपने से पहले ही उन कारकों को नियंत्रित करना है जो स्वास्थ्य हेतु खतरा पैदा कर सकते हैं। यह मॉडल सक्रिय रूप से उन व्यवहारों को बढ़ावा देता है जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं और कल्याण सुनिश्चित करते हैं। यह दृष्टिकोण केवल उपचारात्मक होने के स्थान पर भविष्योन्मुखी है, जो जोखिमों की पहचान करके उन्हें समय रहते दूर करने पर ध्यान केंद्रित करता है। इस रणनीति को अपनाने से बीमारियों के प्रसार को रोका जा सकता है और स्वास्थ्य देखभाल की प्रभावशीलता सुधारी जा सकती है।

192. (B) परामर्श एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन की चुनौतियों का सामना करने वाले या व्यक्तिगत विकास चाहने वाले किसी भी व्यक्ति को लाभ पहुँचा सकती है।
परामर्श को केवल गंभीर मानसिक रोगों के इलाज तक सीमित समझना एक भ्रांति है। वास्तव में, यह एक ऐसी सकारात्मक सेवा है जो किसी भी व्यक्ति को उसके जीवन के कठिन दौर, जैसे तनाव या करियर के फैसले के दौरान आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करती है। परामर्श व्यक्ति को अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से समझने और अधिक परिपक्व निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। यह व्यक्तिगत विकास हेतु एक सशक्त माध्यम है, जो व्यक्ति की मानसिक शक्ति और उसके समग्र जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है।

193. (B) प्रदान किए गए निर्देशन की प्रभावशीलता का आकलन करना और अग्रिम सहायता प्रदान करना।
निर्देशन कार्यक्रम में 'अनुवर्ती सेवा' का होना कार्यक्रम की गुणवत्ता बनाए रखने हेतु अनिवार्य है। यह चरण यह जाँचता है कि परामर्श के बाद छात्र के जीवन में क्या वास्तविक सुधार आया है। इससे परामर्शदाता को अपनी कार्यप्रणाली की सफलता का पता चलता है और यदि छात्र को और सहायता की आवश्यकता हो, तो वह समय पर उपलब्ध कराई जा सकती है। अनुवर्ती सेवा यह सुनिश्चित करती है कि मार्गदर्शन केवल एक बार की बातचीत नहीं है, बल्कि छात्र के दीर्घकालिक विकास हेतु एक निरंतर उत्तरदायित्व है।

194. (A) B - विश्वास प्रणाली (Belief System)
ए-बी-सी मॉडल में 'बी' यानी विश्वास प्रणाली ही वह मुख्य बिंदु है जहाँ चिकित्सक परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। अल्बर्ट एलिस के अनुसार, सक्रिय करने वाली घटनाओं को हमेशा बदला नहीं जा सकता, लेकिन उन घटनाओं के प्रति हमारे विश्वास को बदला जा सकता है। जब हम अपने तर्कहीन और हानिकारक विचारों को अधिक तर्कसंगत और स्वस्थ विचारों में बदल देते हैं, तो हमारे भावनात्मक परिणाम स्वतः ही सुधर जाते हैं। यही वह मानसिक परिवर्तन है जो व्यक्ति को स्थायी मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन प्रदान करता है।

195. (C) प्रति रात्रि 5 घंटे से कम नींद लेना।
नींद की दीर्घकालिक कमी एक गंभीर स्वास्थ्य हेतु हानिकारक व्यवहार है जो शरीर की रिकवरी और प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर बना देता है। नियमित रूप से कम सोने से मानसिक सतर्कता घटती है और मोटापा तथा हृदय रोगों का जोखिम बढ़ जाता है। इसके विपरीत, संतुलित आहार और पर्याप्त विश्राम स्वास्थ्य-प्रवर्धक आदतें हैं जो शरीर को मजबूत बनाती हैं। पर्याप्त नींद लेना केवल आराम नहीं है, बल्कि यह शरीर के आंतरिक अंगों और मस्तिष्क की मरम्मत हेतु एक अनिवार्य जैविक आवश्यकता है जिसे अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए।

196. (D) समस्याओं को पहली बार में होने से रोकना।
सामुदायिक मनोविज्ञान में प्राथमिक रोकथाम का पूरा दर्शन "इलाज से बेहतर बचाव" पर आधारित है। इसका मुख्य लक्ष्य उन परिस्थितियों और जोखिमों को खत्म करना है जिनसे भविष्य में कोई मानसिक या सामाजिक समस्या उत्पन्न हो सकती है। यह दृष्टिकोण केवल पीड़ित व्यक्तियों के उपचार के स्थान पर पूरे समाज की स्वास्थ्य संरचना को मजबूत करने का प्रयास करता है। शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से, यह सुनिश्चित किया जाता है कि समस्या कभी उत्पन्न ही न हो सके। यह रणनीति समाज हेतु अत्यंत लाभकारी और कम खर्चीली सिद्ध होती है।

197. (C) विभिन्न परामर्श दृष्टिकोणों के सिद्धांतों और तकनीकों को एकीकृत और संयोजित करता है।
संकलनात्मक परामर्श एक लचीला और व्यापक दृष्टिकोण है जो किसी एक विशिष्ट सिद्धांत तक सीमित नहीं रहता। परामर्शदाता सेवार्थी की अद्वितीय आवश्यकताओं और उसकी समस्या की प्रकृति के आधार पर विभिन्न विचारधाराओं से सर्वोत्तम तकनीकों का चयन करता है। उदाहरण हेतु, वह व्यवहार परिवर्तन के साथ-साथ संज्ञानात्मक विश्लेषण का भी उपयोग कर सकता है। यह 'मध्य मार्ग' परामर्शदाता को अधिक रचनात्मक होने और प्रत्येक सेवार्थी हेतु एक अनुकूलित उपचार योजना बनाने की अनुमति देता है, जिससे परामर्श की सफलता की संभावना काफी बढ़ जाती है।

198. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
उच्च रक्तचाप वास्तव में एक ऐसी स्थिति है जो स्वयं एक बीमारी भी है और अन्य गंभीर हृदय रोगों का मुख्य कारण भी। हालांकि, यह कहना गलत है कि इसका एकमात्र कारण नमक का अत्यधिक सेवन है। उच्च रक्तचाप एक बहुआयामी समस्या है जो आनुवंशिकता, तनाव, मोटापा और गतिहीन जीवनशैली जैसे कई कारकों के मेल से उत्पन्न होती है। नमक का सेवन कम करना प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन पूर्ण उपचार हेतु अन्य जीवनशैली कारकों और नियमित चिकित्सीय सलाह पर भी ध्यान देना अनिवार्य होता है।

सिखाना है कि जीवन की अनिश्चितता को स्वीकार करना ही मानसिक शांति और शक्ति प्राप्त करने का सही मार्ग है।

164. (D) निर्देशन निवारक और विकासात्मक है, जबकि परामर्श उपचारात्मक और चिकित्सीय है।
निर्देशन और परामर्श के बीच का मुख्य अंतर उनके लक्ष्य और कार्यप्रणाली में निहित है। निर्देशन एक व्यापक और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो छात्र के सामान्य विकास और भविष्य की योजना बनाने में सहायता करती है, जो निवारक प्रकृति की होती है। दूसरी ओर, परामर्श एक अधिक गहन और केंद्रित प्रक्रिया है जो पहले से मौजूद व्यक्तिगत या भावनात्मक समस्याओं को हल करने का प्रयास करती है, जिससे यह उपचारात्मक बन जाती है। ये दोनों सेवाएं मिलकर छात्र को एक पूर्ण सहायता प्रणाली प्रदान करती हैं।

165. (C) हृदय और रक्त वाहिकाएं।
'कार्डियोवैस्कुलर' शब्द सीधे तौर पर शरीर की रक्त परिसंचरण प्रणाली को संदर्भित करता है, जिसमें हृदय और रक्त वाहिकाएं शामिल हैं। इस प्रणाली का मुख्य कार्य शरीर के सभी अंगों तक ऑक्सीजन और आवश्यक पोषक तत्व पहुँचाना तथा अपशिष्ट पदार्थों को बाहर निकालना है। जब इस प्रणाली के किसी भी हिस्से में बाधा आती है, तो इसे कार्डियोवैस्कुलर बीमारी कहा जाता है। इस तंत्र को स्वस्थ रखना जीवन हेतु अनिवार्य है क्योंकि यह हमारे शरीर की बुनियादी ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला है जो संपूर्ण स्वास्थ्य का आधार है।

166. (B) प्रणाली/समुदाय
जब कोई हस्तक्षेप व्यक्तिगत व्यवहार के स्थान पर नीतियों या सार्वजनिक वातावरण को बदलने का प्रयास करता है, तो इसे प्रणाली या समुदाय स्तर का हस्तक्षेप माना जाता है। पार्क की सुरक्षा हेतु स्थानीय नियमों में बदलाव करना पूरे क्षेत्र के निवासियों के कल्याण को प्रभावित करता है। सामुदायिक मनोविज्ञान का यह दृष्टिकोण मानता है कि पर्यावरण में सुधार करके हम बड़े पैमाने पर लोगों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को सुरक्षित कर सकते हैं। यह समस्या के मूल कारणों को सामाजिक स्तर पर हल करने का एक प्रभावी मार्ग है।

167. (D) मदिरा का दीर्घकालिक और अत्यधिक उपयोग।
मदिरा का अत्यधिक सेवन स्वास्थ्य हेतु एक गंभीर हानिकारक व्यवहार है जो यकृत, हृदय और मस्तिष्क को अपूरणीय क्षति पहुँचा सकता है। यह न केवल शारीरिक रोगों का कारण बनता है, बल्कि व्यक्तिगत संबंधों और मानसिक स्थिरता को भी नष्ट कर देता है। इसके विपरीत, संतुलित आहार और सामाजिक समर्थन स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार हैं जो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। एक स्वस्थ जीवन जीने हेतु ऐसी नशीली वस्तुओं से दूर रहना अनिवार्य है जो शरीर के आंतरिक अंगों के कार्यों को बाधित करती हैं और जोखिम बढ़ाती हैं।

168. (B) केवल 2 और 3
टाइप 2 मधुमेह की प्रमुख पहचान इंसुलिन प्रतिरोध है, जिसमें शरीर इंसुलिन का सही उपयोग नहीं कर पाता। यह स्थिति मुख्य रूप से स्वप्रतिरक्षित नहीं है, बल्कि यह आनुवंशिकता और प्रतिकूल जीवनशैली आदतों का परिणाम है। इस बीमारी के प्रबंधन में आहार में सुधार और नियमित व्यायाम की भूमिका निर्णायक होती है, क्योंकि ये उपाय कोशिकाओं की इंसुलिन के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ाते हैं। यह स्पष्ट है कि जीवनशैली में सकारात्मक बदलाव न केवल शर्करा को नियंत्रित करते हैं, बल्कि अन्य गंभीर जटिलताओं के जोखिम को भी घटाते हैं।

169. (C) छात्रों के जीवन के सभी पहलुओं में उनके इष्टतम विकास को सुगम बनाना।
महाविद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम का व्यापक लक्ष्य छात्र के व्यक्तित्व को संवारना है ताकि वह भविष्य की चुनौतियों हेतु तैयार हो सके। इसमें छात्र की शैक्षणिक उन्नति, करियर संबंधी स्पष्टता और भावनात्मक स्थिरता शामिल है। निर्देशन केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह छात्र को एक जिम्मेदार नागरिक बनाने का प्रयास करता है। जब छात्र को सही मार्गदर्शन मिलता है, तो वह अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग कर पाता है, जिससे व्यक्तिगत सफलता के साथ-साथ समाज का भी कल्याण सुनिश्चित होता है।

170. (A) अनिर्देशात्मक परामर्श
अनिर्देशात्मक परामर्श में परामर्शदाता सेवार्थी की भावनाओं को प्रतिध्वनित करने और सहानुभूति प्रकट करने पर ध्यान केंद्रित करता है। यहाँ परामर्शदाता अपनी ओर से कोई निर्णय देने के बजाय सेवार्थी को अपनी भावनाओं की गहराई में जाने हेतु प्रोत्साहित करता है। "ऐसा प्रतीत होता है कि आप आहत हैं" जैसे वाक्यांश सेवार्थी को यह महसूस कराते हैं कि उसे सही मायने में समझा जा रहा है। यह बिना किसी शर्त के दी गई स्वीकृति सेवार्थी के मन से झिझक निकाल देती है, जिससे वह आत्म-अन्वेषण के मार्ग पर आगे बढ़ता है।

171. (D) फल और सब्जी के सेवन का संदेश प्रसारित करने वाला एक राष्ट्रव्यापी अभियान।
प्राथमिक रोकथाम का मुख्य उद्देश्य बीमारी के होने से पहले ही जोखिम कारकों को कम करना है। संतुलित आहार के बारे में राष्ट्रव्यापी अभियान पूरी जनसंख्या को शिक्षित करता है ताकि वे स्वस्थ आदतें अपना सकें और भविष्य में बीमारियों के शिकार न हों। इसके विपरीत, परीक्षण या इलाज उन स्थितियों में किए जाते हैं जहाँ बीमारी का अस्तित्व पहले से मौजूद हो। जागरूकता फैलाकर लोगों को स्वस्थ चुनाव करने हेतु सशक्त बनाना समाज के समग्र स्वास्थ्य बोझ को कम करने का सबसे प्रभावी और वैज्ञानिक तरीका है।

172. (B) जैव-चिकित्सीय मॉडल
जैव-चिकित्सीय मॉडल स्वास्थ्य का एक यांत्रिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जहाँ शरीर को एक मशीन के रूप में देखा जाता है। इस मॉडल के अनुसार, बीमारी केवल शारीरिक अंगों में खराबी या बाह्य रोगाणुओं के कारण होती है, जिसे दवाओं या सर्जरी से ठीक किया जा सकता है। यह मॉडल मानसिक स्थिति, सामाजिक परिवेश या व्यक्तिगत आदतों के प्रभाव को पूरी तरह से अनदेखा कर देता है। हालाँकि यह तीव्र रोगों के उपचार में अत्यंत प्रभावी है, लेकिन दीर्घकालिक रोगों के प्रबंधन में इसकी सीमाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

207. (B) निर्देशन और परामर्श
निर्देशन और परामर्श एक व्यापक शब्द है जो छात्र की सहायता हेतु किए जाने वाले सभी प्रकार के प्रयासों को समाहित करता है। इसमें शैक्षणिक विषयों के चुनाव में सहायता करना, सामाजिक कौशल विकसित करना और व्यावसायिक भविष्य की योजना बनाना जैसी विविधतापूर्ण सेवाएँ शामिल हैं। यह प्रक्रिया व्यक्ति को उसकी क्षमताओं और सीमाओं को पहचानने में सक्षम बनाती है ताकि वह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर समायोजन कर सके। इसका मूल उद्देश्य छात्र का सर्वांगीण विकास करना और उसे एक सफल जीवन हेतु पूर्णतः तैयार करना है।

208. (B) इंसुलिन प्रतिरोध - टाइप 2 मधुमेह की विशेषता
इंसुलिन प्रतिरोध टाइप 2 मधुमेह का एक मुख्य शारीरिक आधार है, जहाँ शरीर की कोशिकाएं इंसुलिन हार्मोन को सही ढंग से पहचानने में विफल रहती हैं। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि उच्च रक्त शर्करा मधुमेह की मुख्य विशेषता है, न कि उच्च रक्तचाप की। पट्टिका का संचय हृदय रोगों से जुड़ा है, न कि टाइप 1 मधुमेह से। साथ ही, स्वप्रतिरक्षित आक्रमण टाइप 1 मधुमेह का मुख्य कारण है, न कि एथेरोस्क्लेरोसिस का। इन जैविक अंतरों को समझना सटीक निदान और प्रभावी स्वास्थ्य प्रबंधन हेतु अत्यंत आवश्यक और वैज्ञानिक रूप से अनिवार्य है।

209. (B) द्वितीयक रोकथाम
शिक्षकों को अवसाद के शुरुआती लक्षणों को पहचानने का प्रशिक्षण देना द्वितीयक रोकथाम का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों की मानसिक समस्याओं को उनके गंभीर होने से पहले ही पहचानना और उन्हें शीघ्र परामर्श हेतु भेजना है। प्रारंभिक अवस्था में किया गया यह हस्तक्षेप समस्या को बिगड़ने से रोकता है और छात्र की शीघ्र रिकवरी सुनिश्चित करता है। यह रणनीति विद्यालय के भीतर एक ऐसी सक्रिय निगरानी प्रणाली बनाती है जो जोखिम वाले छात्रों को समय पर आवश्यक सहायता और सुरक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण है।

210. (A) विश्वास (B) - जैसे "इस परीक्षा में फेल होने के कारण मैं पूर्णतः विफल हूँ।"
तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सक के अनुसार, छात्र का अवसाद सीधे परीक्षा में विफल होने से नहीं आता, बल्कि इस घटना के बारे में उसके तर्कहीन विश्वास से आता है। जब छात्र यह अवास्तविक धारणा बना लेता है कि एक असफलता उसे पूर्णतः 'विफल' बना देती है, तो वह गहरे संकट में पड़ जाता है। चिकित्सक का मुख्य कार्य छात्र को यह दिखाना है कि यह विचार तार्किक रूप से सर्वथा गलत है। विश्वास को बदलकर और एक लचीला दृष्टिकोण अपनाकर छात्र अपनी भावनाओं पर नियंत्रण पा सकता है और भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकता है।

211. (C) पारिवारिक इतिहास/आनुवंशिकी
हृदय रोग के जोखिम कारकों में पारिवारिक इतिहास एक अपरिवर्तनीय कारक है क्योंकि हम अपनी आनुवंशिक बनावट को नहीं बदल सकते। यदि किसी व्यक्ति के माता-पिता या भाई-बहन को हृदय रोग है, तो उसमें भी इसका जोखिम स्वाभाविक रूप से अधिक होता है। इसके विपरीत, धूम्रपान और खराब आहार जैसे कारकों को व्यक्ति अपने प्रयासों से बदल सकता है। हालांकि आनुवंशिकी को बदला नहीं जा सकता, लेकिन स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर इसके नकारात्मक प्रभाव को काफी हद तक कम किया जा सकता है और हृदय की रक्षा की जा सकती है, जो अत्यंत आवश्यक है।

212. (D) सेवार्थी को बिना किसी निर्णय के मूल्यवान व्यक्ति के रूप में स्वीकार करता है।
परामर्श में 'स्वीकृति' का सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि परामर्शदाता सेवार्थी को उसके व्यवहार या विचारों के बावजूद एक गरिमापूर्ण इंसान के रूप में सम्मान दे। इसका अर्थ यह नहीं है कि परामर्शदाता सेवार्थी के सभी कार्यों को सही मानता है, बल्कि इसका तात्पर्य उसे बिना किसी पूर्वाग्रह के समझने से है। यह गैर-निर्णयात्मक दृष्टिकोण सेवार्थी के भीतर विश्वास और सुरक्षा की भावना पैदा करता है। जब सेवार्थी को लगता है कि उसे स्वीकार किया जा रहा है, तो वह अपनी समस्याओं को गहराई से सुलझाने हेतु अधिक प्रेरित होता है।

213. (C) शिक्षण संकाय और प्रशासन
महाविद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम की सफलता हेतु शिक्षकों और प्रशासनिक अधिकारियों का पूर्ण सहयोग अनिवार्य है। चूंकि शिक्षक छात्रों के साथ सबसे अधिक समय व्यतीत करते हैं, वे ही छात्रों की शुरुआती समस्याओं को पहचानकर उन्हें परामर्शदाता तक भेज सकते हैं। साथ ही, प्रशासन का सहयोग कार्यक्रम हेतु आवश्यक फंड और उचित नीतियां सुनिश्चित करता है। जब ये सभी पक्ष मिलकर कार्य करते हैं, तो एक ऐसा सहायक वातावरण निर्मित होता है जहाँ छात्र की शैक्षणिक और व्यक्तिगत उन्नति हेतु सभी आवश्यक संसाधन और सहयोग उपलब्ध होते हैं।

214. (B) विशेष रूप से व्यक्तिगत स्तर के दोषों और उनके उपचार पर ध्यान केंद्रित करना।
सामुदायिक मनोविज्ञान केवल व्यक्तिगत दोषों को ढूंढने और उपचार करने तक सीमित नहीं है। इसके विपरीत, इसका मुख्य लक्ष्य व्यक्ति को उसके सामाजिक और पर्यावरणीय संदर्भ में समझना है। यह उन व्यापक सामाजिक प्रणालियों को सुधारने का प्रयास करता है जो मानसिक तनाव का मूल कारण बनती हैं। सशक्तीकरण और रोकथाम इसके प्रमुख सिद्धांत हैं, जो लोगों को अपने समुदाय के भीतर सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। यह दृष्टिकोण मानता है कि एक स्वस्थ समाज ही स्वस्थ व्यक्तियों के विकास हेतु सबसे मजबूत और स्थायी नींव है।

215. (D) तर्कहीन विश्वासों का वाद-विवाद करना और उन्हें चुनौती देना।
तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा में मुख्य कार्य सेवार्थी के उन विचारों को नष्ट करना है जो अवास्तविक और हानिकारक हैं। चिकित्सक वैज्ञानिक तर्क का उपयोग करके सेवार्थी को दिखाता है कि उसके "मुझे ऐसा होना ही चाहिए" वाले विचार निराधार हैं। यह सक्रिय 'वाद-विवाद' सेवार्थी को अपनी स्वयं

जैसे कारक शरीर के चयापचय को बिगाड़ देते हैं। ये दोनों बीमारियाँ अक्सर साथ-साथ चलती हैं और इनके जोखिम कारक भी समान होते हैं। जीवनशैली में सकारात्मक बदलाव लाकर न केवल इन बीमारियों को रोका जा सकता है, बल्कि इनके हानिकारक प्रभावों को भी काफी हद तक कम किया जा सकता है।

233. (A) छात्रों के बीच व्यक्तिगत भिन्नताओं को दूर करना।
शैक्षिक परिवेश में निर्देशन की मूलभूत आवश्यकता इस तथ्य से उत्पन्न होती है कि प्रत्येक छात्र अद्वितीय है। छात्रों की सीखने की क्षमता, उनकी रुचियाँ और उनका पारिवारिक परिवेश अलग-अलग होता है। एक ही शिक्षण पद्धति सभी हेतु प्रभावी नहीं हो सकती। निर्देशन छात्रों को उनकी अपनी विशिष्टताओं को समझने और उनके अनुरूप समायोजन करने में सहायता करता है। यह व्यक्तिगत ध्यान यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक छात्र को उसकी क्षमता के अनुसार विकसित होने का समान अवसर मिले, जिससे शिक्षा अधिक सार्थक और प्रभावी बन सके, जो अनिवार्य है।

234. (A) समस्याओं को उत्पन्न होने या बढ़ने से पूर्व रोकने के लिए सक्रिय रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करना।
सामुदायिक मनोविज्ञान में 'रोकथाम' अभिविन्यास का अर्थ केवल संकटों का समाधान करना नहीं है, बल्कि एक ऐसा समाज बनाना है जहाँ समस्याएँ जन्म ही न ले सकें। यह दृष्टिकोण दूरदर्शी है और उन सामाजिक व पर्यावरणीय कारकों को बदलने पर बल देता है जो तनाव या बीमारी का कारण बनते हैं। सक्रिय रणनीतियों के माध्यम से, जैसे कि शिक्षा और कौशल विकास, समुदायों को अधिक लचीला बनाया जाता है। यह रणनीति उपचारात्मक सेवाओं पर पड़ने वाले बोझ को कम करती है और समाज के समग्र कल्याण को प्रभावी ढंग से सुनिश्चित करती है।

235. (D) वे पूर्णतः शारीरिक व्यायाम पर केंद्रित हैं।
स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली केवल शारीरिक व्यायाम तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक बहुत ही व्यापक अवधारणा है। इसमें पोषण, पर्याप्त नींद, तनाव प्रबंधन और सकारात्मक सामाजिक संबंध जैसे कई महत्वपूर्ण पहलू शामिल हैं। जो लोग केवल व्यायाम पर ध्यान देते हैं और अपने आहार या मानसिक शांति की उपेक्षा करते हैं, वे पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त नहीं कर सकते। समग्र कल्याण हेतु शरीर और मन के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। अतः एक स्वस्थ जीवनशैली में इन सभी सकारात्मक व्यवहारों का एकीकृत समावेश होना अत्यंत अनिवार्य और वैज्ञानिक माना जाता है।

236. (B) परामर्शदाता सेवार्थी की समस्या की प्रकृति और कारण की पहचान करता है।
निर्देशात्मक परामर्श में 'निदान' एक अत्यंत वैज्ञानिक और व्यवस्थित चरण है जहाँ परामर्शदाता एकत्रित डेटा के आधार पर सेवार्थी की समस्या के मूल कारणों का पता लगाता है। यह प्रक्रिया केवल लक्षणों को देखने से कहीं अधिक गहरी है; इसमें परामर्शदाता छात्र की शैक्षणिक विफलता या भावनात्मक संकट के पीछे के छिपे हुए तथ्यों का विश्लेषण करता है। एक सटीक निदान ही परामर्शदाता को एक प्रभावी उपचार योजना बनाने और सेवार्थी को सही दिशा में मार्गदर्शन करने में सक्षम बनाता है, जिससे समस्या का स्थायी समाधान मिल सके।

237. (C) शरीर की कोशिकाएं इंसुलिन के प्रभावों के प्रति प्रतिरोधी हो जाना।
टाइप 2 मधुमेह का प्राथमिक कारण इंसुलिन प्रतिरोध है, जिसमें शरीर इंसुलिन तो बनाता है, लेकिन कोशिकाएं उसे पहचानने और ग्लूकोज ग्रहण करने में विफल रहती हैं। इसके कारण रक्त प्रवाह में शर्करा का स्तर लगातार ऊंचा बना रहता है, जो अंगों को धीरे-धीरे क्षति पहुँचाता है। यह स्थिति अक्सर अतिरिक्त वजन और व्यायाम की कमी से उत्पन्न होती है। जीवनशैली में सुधार करके कोशिकाओं की इंसुलिन के प्रति संवेदनशीलता को काफी हद तक पुनः प्राप्त किया जा सकता है और बीमारी को प्रभावी ढंग से प्रबंधित किया जा सकता है, जो अनिवार्य है।

238. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम की प्रभावशीलता बनाए रखने हेतु समय-समय पर इसका मूल्यांकन करना अत्यंत आवश्यक है। मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि क्या कार्यक्रम अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है और क्या छात्रों को वास्तव में लाभ हो रहा है। इसके माध्यम से कार्यक्रम की कमियों को पहचाना जा सकता है और बदलती आवश्यकताओं के अनुसार सुधार किए जा सकते हैं। एक सतत मूल्यांकन प्रक्रिया ही यह सुनिश्चित करती है कि निर्देशन सेवाएँ अद्यतन, प्रासंगिक और छात्रों के सर्वांगीण विकास में सार्थक योगदान देने में सक्षम बनी रहें।

239. (A) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श का केंद्र ही उन 'अनिवार्यतावादी' विचारों को नष्ट करना है जो व्यक्ति को चिंता में डालते हैं। जब कोई व्यक्ति मानता है कि उसे हमेशा 'पूर्ण' होना चाहिए, तो वह स्वयं पर एक असंभव दबाव बनाता है। परामर्शदाता यहाँ एक तर्कशास्त्री की तरह कार्य करता है जो व्यक्ति को यह समझाता है कि इंसान होने के नाते गलतियाँ करना स्वाभाविक है। इस तर्कहीन विश्वास को चुनौती देने से व्यक्ति का तनाव कम होता है और वह स्वयं को अधिक लचीले और स्वस्थ दृष्टिकोण के साथ स्वीकार करना सीखता है।

240. (B) समुदाय के सभी नए माता-पिता को पालन-पोषण कौशल सिखाना।
प्राथमिक रोकथाम उन सभी व्यक्तियों को लक्षित करती है जिनमें अभी कोई समस्या नहीं है, ताकि उन्हें भविष्य के जोखिमों से बचाया जा सके। नए माता-पिता को शिक्षित करना एक अग्रिम निवेश है जो बच्चों के स्वस्थ भावनात्मक और व्यवहारिक विकास की ठोस नींव रखता है। यह कौशल विकास भविष्य में होने वाली पारिवारिक समस्याओं को रोकने का एक अत्यंत प्रभावी माध्यम है। जब समाज के बुनियादी स्तर पर ऐसी शिक्षा दी जाती है, तो यह पूरे समुदाय के दीर्घकालिक मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करती है, जो अत्यंत आवश्यक है।

224. (C) निर्देशात्मक परामर्श
ई.जी. विलियमसन द्वारा विकसित निर्देशात्मक परामर्श अपनी 'परामर्शदाता-केंद्रित' शैली हेतु जाना जाता है। इस दृष्टिकोण में परामर्शदाता एक सक्रिय विशेषज्ञ की भूमिका निभाता है जो वैज्ञानिक विधियों से सेवार्थी के डेटा का विश्लेषण और निदान करता है। यहाँ यह माना जाता है कि परामर्शदाता के पास समस्या के मूल कारणों को समझने और समाधान निर्धारित करने की अधिक क्षमता है। यह मॉडल विशेष रूप से उन शैक्षणिक स्थितियों में उपयोगी होता है जहाँ सटीक जानकारी और अनुभवी मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है ताकि सेवार्थी सही चुनाव शीघ्रता से कर सके।

225. (B) छात्र समुदाय की आवश्यकताओं का आकलन करने के लिए एक समिति गठित करना।
महाविद्यालय में किसी भी निर्देशन कार्यक्रम की सफल नींव रखने हेतु सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि छात्र वास्तव में किन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। एक व्यवस्थित आवश्यकता आकलन यह सुनिश्चित करता है कि कार्यक्रम के उद्देश्य वास्तविक समस्याओं पर आधारित हों। एक समिति का गठन इस प्रक्रिया को संगठित और समावेशी बनाता है। बिना किसी पूर्व अध्ययन के सेवाएँ शुरू करना संसाधनों की बर्बादी हो सकता है, जबकि एक योजनाबद्ध शुरुआत कार्यक्रम की प्रभावशीलता और विश्वसनीयता को सुदृढ़ करती है, जो छात्रों हेतु लाभकारी है।

226. (A) स्वास्थ्य के लिए हानिकारक जीवनशैली
धूम्रपान, उच्च वसा वाला आहार और शारीरिक निष्क्रियता का संयोजन "स्वास्थ्य हेतु हानिकारक जीवनशैली" का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। ये आदतें सामूहिक रूप से शरीर की आंतरिक प्रणालियों को कमजोर करती हैं और धमनियों में रुकावट, मोटापा और उच्च रक्तचाप जैसी स्थितियां पैदा करती हैं। ऐसी जीवनशैली का पालन करने वाले व्यक्ति में समय से पहले गंभीर बीमारियों के विकसित होने का जोखिम कई गुना अधिक होता है। अपने कल्याण हेतु इन नकारात्मक आदतों को पहचानना और उन्हें स्वस्थ विकल्पों के साथ बदलना प्रत्येक व्यक्ति हेतु अनिवार्य और आवश्यक है।

227. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
विभिन्न स्वास्थ्य स्थितियों की विशिष्टताओं को समझना उनके उपचार हेतु महत्वपूर्ण है। टाइप 1 मधुमेह अग्न्याशय की कोशिकाओं के स्वप्रतिरक्षित विनाश से उत्पन्न होता है, जबकि टाइप 2 इंसुलिन प्रतिरोध से जुड़ा है। कोरोनरी हृदय रोग का मुख्य कारण हृदय को रक्त देने वाली धमनियों का अवरुद्ध होना है। वहीं, मस्तिष्काघात मस्तिष्क के रक्त प्रवाह में बाधा आने पर होता है। इन सभी बीमारियों के पीछे अलग-अलग जैविक प्रक्रियाएं कार्य करती हैं, हालांकि ये सभी जीवनशैली कारकों से गहराई से प्रभावित होती हैं, जो इनके प्रबंधन को काफी चुनौतीपूर्ण बनाते हैं।

228. (D) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श इस दार्शनिक विचार पर आधारित है कि हमारा मानसिक कष्ट हमारी धारणाओं की देन है। अल्बर्ट एलिस ने सिखाया कि घटनाएं स्वयं हमें परेशान नहीं करतीं, बल्कि उन घटनाओं के प्रति हमारी 'अनिवार्यतावादी' सोच हमें तनाव में डालती है। यदि हम अपने विचारों को बदलकर उन्हें अधिक यथार्थवादी और लचीला बना लें, तो हम सबसे कठिन परिस्थितियों में भी शांत रह सकते हैं। यह दृष्टिकोण व्यक्ति को अपनी भावनाओं का स्वामी बनने और नकारात्मक सोच के चक्र को तोड़ने हेतु पूरी तरह सशक्त बनाता है, जो अत्यंत लाभकारी है।

229. (C) द्वितीयक रोकथाम
संकटकालीन हेल्पलाइन द्वितीयक रोकथाम का एक प्रमुख उदाहरण है क्योंकि यह उन व्यक्तियों को तत्काल सहायता प्रदान करती है जो पहले से ही गंभीर मनोवैज्ञानिक संकट का अनुभव कर रहे हैं। इसका लक्ष्य आत्महत्या जैसे अत्यंत घातक परिणामों को रोकना और व्यक्ति को शीघ्र ही पेशेवर उपचार तक पहुँचाना है। यह समय पर किया गया हस्तक्षेप एक जीवन रक्षक प्रणाली के रूप में कार्य करता है। यह रणनीति समस्या को उसके चरम पर पहुँचने से पहले ही नियंत्रित करने का प्रयास करती है, जिससे व्यक्ति को रिकवरी का एक नया अवसर सुलभ होता है।

230. (B) संपूर्ण विद्यालय कर्मचारियों का समर्थन और सहयोग प्राप्त करना।
विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम केवल एक व्यक्ति का कार्य नहीं हो सकता, बल्कि इसकी सफलता हेतु पूरी संस्था का एकजुट होना अनिवार्य है। जब शिक्षक, प्रशासन और अन्य कर्मचारी सहयोग करते हैं, तो छात्रों की समस्याओं को पहचानने और उन पर सामूहिक रूप से कार्य करने का एक मजबूत तंत्र विकसित होता है। शिक्षकों का सहयोग विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि वे ही छात्रों की व्यवहारिक चुनौतियों के प्रथम साक्षी होते हैं। एक एकीकृत और सहयोगी दृष्टिकोण ही विद्यालय में छात्रों हेतु एक सच्चा और प्रभावी सहायक वातावरण सुनिश्चित कर सकता है।

231. (B) चिकित्सीय संबंध में प्रामाणिक, पारदर्शी और वास्तविक होना।
अनिर्देशात्मक परामर्श में 'अनुरूपता' का अर्थ है कि परामर्शदाता सेवार्थी के सामने कोई मुखौटा न पहने, बल्कि वह जैसा महसूस कर रहा है, उसके प्रति ईमानदार रहे। यह प्रामाणिकता सेवार्थी के मन में विश्वास पैदा करती है क्योंकि वह एक वास्तविक मनुष्य के साथ बातचीत कर रहा होता है। जब परामर्शदाता पारदर्शी होता है, तो वह सेवार्थी हेतु भी एक उदाहरण पेश करता है कि वह अपनी भावनाओं के प्रति ईमानदार रहे। यह ईमानदारी भरा संबंध ही चिकित्सीय प्रक्रिया को गहराई प्रदान करता है और सेवार्थी को आत्म-स्वीकृति की ओर ले जाता है।

232. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या है।
हृदय रोग और टाइप 2 मधुमेह को 'जीवनशैली की बीमारियाँ' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनका विकास हमारी दैनिक आदतों से सीधे तौर पर प्रभावित होता है। आहार में अत्यधिक वसा और चीनी, नियमित व्यायाम की कमी और धूम्रपान

की विनाशकारी सोच का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करना सिखाता है। जैसे-जैसे सेवार्थी इन विश्वासों को चुनौती देना सीखता है, वह अपने मानसिक कष्ट को कम करने और एक अधिक तर्कसंगत और सुखी जीवन जीने की दिशा में ठोस व प्रभावी कदम उठा पाता है।

216. (A) इंसुलिन का उत्पादन बंद कर चुका है।
टाइप 1 मधुमेह में शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली अग्न्याशय की उन कोशिकाओं को पूरी तरह नष्ट कर देती है जो इंसुलिन का निर्माण करती हैं। इसके परिणामस्वरूप, शरीर प्राकृतिक रूप से इस अनिवार्य हार्मोन को बनाने में असमर्थ हो जाता है। चूंकि इंसुलिन रक्त से ग्लूकोज को ऊर्जा हेतु कोशिकाओं में पहुँचाने की एकमात्र कुंजी है, इसलिए इसके बिना शरीर कार्य नहीं कर सकता। अतः टाइप 1 मधुमेह के रोगियों हेतु बाहरी इंसुलिन का इंजेक्शन लेना केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि उनके जीवन की रक्षा हेतु एक अनिवार्य चिकित्सा आवश्यकता मानी जाती है।

217. (C) तर्कसंगत-भावनात्मक
तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श अपनी प्रकृति में सर्वाधिक 'बौद्धिक' माना जाता है क्योंकि यह भावनाओं के स्थान पर विचारों की तार्किक प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करता है। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि यदि हम अपनी सोचने की शैली को वैज्ञानिक और तर्कसंगत बना लें, तो हम अपने भावनात्मक विक्षोभ पर सरलता से विजय पा सकते हैं। इसमें परामर्शदाता एक शिक्षक की तरह कार्य करता है जो सेवार्थी को उसके तर्कहीन विचारों का विश्लेषण करना सिखाता है। यह प्रक्रिया भावनाओं को नियंत्रित करने हेतु बुद्धि और तर्क के उपयोग पर अत्यधिक बल देती है।

218. (A) मोटापा, उच्च कोलेस्ट्रॉल और उच्च रक्तचाप जैसे जोखिम कारकों की ओर ले जाना।
खराब आहार और गतिहीन जीवनशैली जैसे व्यवहार सीधे तौर पर शरीर के चयापचय और संचार प्रणाली को बिगाड़ देते हैं। अत्यधिक वसायुक्त भोजन और व्यायाम की कमी से रक्त में कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ जाता है, जिससे धमनियां संकुचित होने लगती हैं और रक्तचाप में वृद्धि होती है। ये स्थितियां सामूहिक रूप से हृदय पर अत्यधिक दबाव डालती हैं और हृदय रोगों का आधार तैयार करती हैं। हालांकि इनका प्रभाव धीरे-धीरे होता है, लेकिन दीर्घकाल में ये जोखिम कारक हृदयाघात जैसी गंभीर और जानलेवा जटिलताओं का मुख्य कारण बनते हैं, जो घातक है।

219. (D) छात्र और परामर्शदाता को छात्र की क्षमताओं, रुचियों और आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझने में सहायता करना।
व्यक्तिगत विवरण सेवा का उद्देश्य छात्र के व्यक्तित्व का एक व्यापक और वैज्ञानिक चित्र तैयार करना है। इसमें छात्र के शैक्षणिक रिकॉर्ड, स्वास्थ्य इतिहास और उसके पारिवारिक परिवेश की जानकारी शामिल होती है। यह विस्तृत जानकारी परामर्शदाता को छात्र की विशिष्ट समस्याओं के पीछे के कारणों को समझने में सहायता करती है। साथ ही, जब छात्र स्वयं अपनी इन विशेषताओं के बारे में जानता है, तो वह अपने करियर और व्यक्तिगत जीवन के बारे में अधिक विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम होता है। यह आत्म-बोध ही भविष्य की सफलता की पहली सीढ़ी है।

220. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अनिर्देशात्मक परामर्श मानवतावादी मनोविज्ञान के इस सकारात्मक दर्शन पर आधारित है कि हर इंसान के पास खुद को बेहतर बनाने की एक जन्मजात शक्ति होती है। कार्ल रोजर्स का मानना था कि यदि सेवार्थी को एक ऐसा वातावरण मिले जहाँ उसे बिना शर्त प्यार और समझ मिले, तो वह स्वयं ही अपने जीवन की बाधाओं को दूर कर लेगा। परामर्शदाता का मुख्य कार्य उसे निर्देश देना नहीं, बल्कि उसके विकास हेतु सही परिस्थितियां बनाना है। यह विश्वास ही इस चिकित्सा को सेवार्थी-केंद्रित और अत्यंत प्रभावशाली बनाता है, जो कल्याणकारी है।

221. (C) तृतीयक रोकथाम
तृतीयक रोकथाम का पूरा ध्यान उन लोगों की सहायता करने पर होता है जो पहले से ही किसी गंभीर और दीर्घकालिक बीमारी के साथ जी रहे हैं। आवास और रोजगार खोजने में सहायता प्रदान करना इस रोकथाम का एक हिस्सा है क्योंकि यह व्यक्ति के सामाजिक पुनर्वास और उसके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने का प्रयास करता है। यह हस्तक्षेप बीमारी को ठीक नहीं करता, बल्कि उसके कारण उत्पन्न सामाजिक चुनौतियों को कम करता है। इसका मुख्य लक्ष्य व्यक्ति को उसकी सीमाओं के बावजूद समाज का एक सक्रिय और आत्मनिर्भर सदस्य बनाना है, जो सराहनीय है।

222. (D) यह हृदय और रक्त वाहिकाओं को प्रभावित करने वाली बीमारियों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए एक व्यापक शब्द है।
हृदय रोग कोई एक अकेली बीमारी नहीं है, बल्कि यह उन सभी विकारों का समूह है जो हमारे परिसंचरण तंत्र को प्रभावित करते हैं। इसमें कोरोनरी धमनी रोग, जन्मजात दोष और रक्त वाहिकाओं की बीमारियाँ जैसे स्ट्रोक शामिल हैं। ये सभी स्थितियां शरीर के विभिन्न हिस्सों तक रक्त और ऑक्सीजन की आपूर्ति को बाधित करती हैं। हृदय रोगों की यह व्यापक प्रकृति दर्शाती है कि इनके कारण और लक्षण अत्यंत विविध हो सकते हैं, जिससे इनके निदान और उपचार हेतु एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जो चिकित्सा विज्ञान में अनिवार्य है।

223. (A) व्यक्ति को आत्म-निर्देशन में सक्षम बनाना।
निर्देशन का अंतिम और सर्वोच्च लक्ष्य व्यक्ति को इस योग्य बनाना है कि वह अपने जीवन की कमान स्वयं संभाल सके। यह केवल एक समय की समस्या को हल करने के बारे में नहीं है, बल्कि व्यक्ति के भीतर वे कौशल विकसित करने के बारे में है जो उसे भविष्य के निर्णय लेने में सशक्त बनाएं। जब कोई व्यक्ति स्वयं को समझने और परिस्थितियों का मूल्यांकन करने में निपुण हो जाता है, तो वह दूसरों पर निर्भर हुए बिना अपने मार्ग का चुनाव कर सकता है। यही आत्म-निर्भरता ही निर्देशन प्रक्रिया की वास्तविक सफलता और सार्थकता है।

241. (C) जैव-मनो-सामाजिक मॉडल
जैव-मनो-सामाजिक मॉडल उच्च रक्तचाप जैसी स्थितियों को समझने हेतु सबसे उपयुक्त है क्योंकि यह केवल शारीरिक लक्षणों तक सीमित नहीं रहता। यह मॉडल देखता है कि कैसे कार्यस्थल का तनाव रक्तचाप बढ़ाता है, कैसे परिवार का सहयोग रिकवरी में सहायता करता है, और कैसे आनुवंशिकता जोखिम निर्धारित करती है। इन तीनों पहलुओं के परस्पर प्रभाव को समझकर ही एक समग्र उपचार योजना बनाई जा सकती है। यह दृष्टिकोण रोगी को एक सक्रिय भागीदार बनाता है और केवल दवाइयों के स्थान पर उसके पूरे जीवन को बेहतर बनाने पर ध्यान देता है।

242. (A) विकसित हो सके और अपने स्वयं के समाधान खोज सके।
अनिर्देशात्मक परामर्श का मुख्य उद्देश्य सेवार्थी को इस योग्य बनाना है कि वह बाहरी सहायता पर निर्भर रहने के स्थान पर अपनी समस्याओं को सुलझाने की शक्ति अपने भीतर खोज सके। परामर्शदाता एक सुरक्षित और स्वीकार्य मानसिक स्थान प्रदान करता है जहाँ सेवार्थी बिना डरे अपने अंतर्द्वंद्वों को व्यक्त कर सकता है। जब उसे सहानुभूति और समझ मिलती है, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। यह स्वतंत्रता ही सेवार्थी को एक परिपक्व व्यक्ति के रूप में विकसित होने में सहायता करती है, जो अपने जीवन के निर्णय स्वयं विवेकपूर्ण ढंग से ले सके।

243. (C) स्नातकों के करियर की प्रगति और उन्हें प्राप्त निर्देशन की प्रभावशीलता की जांच करना।
महाविद्यालय में 'अनुवर्ती सेवा' कार्यक्रम की जवाबदेही और गुणवत्ता को परखने का एक सशक्त माध्यम है। इसका मुख्य कार्य उन छात्रों के संपर्क में रहना है जिन्होंने संस्थान छोड़ दिया है, ताकि यह समझा जा सके कि महाविद्यालय में प्राप्त मार्गदर्शन ने उन्हें पेशेवर जीवन में कितनी सहायता की। यदि स्नातक सफल हो रहे हैं और संतुष्ट हैं, तो यह निर्देशन कार्यक्रम की सफलता को दर्शाता है। यह डेटा प्रशासन को भविष्य के छात्रों हेतु कार्यक्रम को और अधिक बेहतर और प्रासंगिक बनाने के लिए आवश्यक फीडबैक प्रदान करने में सहायक होता है।

244. (B) हृदय रोग के कई रूप
एथेरोस्क्लेरोसिस अधिकांश हृदय रोगों की जननी है क्योंकि यह धमनियों के भीतर एक ऐसी रुकावट पैदा करती है जो पूरे शरीर के रक्त संचार को प्रभावित करती है। जब धमनियां कठोर और संकरी हो जाती हैं, तो हृदय को रक्त पंप करने हेतु अधिक मेहनत करनी पड़ती है, जिससे वह थक जाता है। यदि यह रुकावट कोरोनरी धमनियों में होती है, तो हृदयाघात का खतरा बढ़ जाता है। इस प्रक्रिया को नियंत्रित करना, जैसे कि आहार में सुधार के माध्यम से, हृदय प्रणाली की दीर्घकालिक सुरक्षा और जीवन को बचाने हेतु अत्यंत आवश्यक और वैज्ञानिक माना जाता है।

245. (C) सप्ताह में पांच दिन 30 मिनट मध्यम व्यायाम करना।
नियमित और संतुलित व्यायाम स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार का एक आदर्श उदाहरण है क्योंकि यह हृदय और चयापचय को स्वस्थ रखता है। यह तनाव कम करने और रक्त शर्करा को नियंत्रित करने का एक प्रभावी और प्राकृतिक तरीका है। इसके विपरीत, धूम्रपान और खराब आहार स्वास्थ्य हेतु अत्यंत हानिकारक हैं जो शरीर को गंभीर रोगों की ओर ले जाते हैं। अपने व्यस्त जीवन में व्यायाम हेतु समय निकालना स्वयं के प्रति एक सम्मानजनक कार्य है जो बुढ़ापे में भी शरीर की कार्यक्षमता और ऊर्जा को बनाए रखता है, जो अत्यंत कल्याणकारी है।

246. (B) यह केवल समस्याग्रस्त छात्रों के लिए एक उपचारात्मक प्रक्रिया है।
निर्देशन और परामर्श के बारे में यह सोचना गलत है कि यह केवल समस्याग्रस्त छात्रों के लिए है। वास्तव में, यह एक विकासात्मक और निवारक प्रक्रिया है जो प्रत्येक छात्र हेतु समान रूप से आवश्यक है। प्रतिभाशाली छात्रों को भी अपनी दिशा चुनने और अपनी क्षमताओं को अधिकतम करने हेतु मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। निर्देशन छात्र को करियर नियोजन और भावनात्मक परिपक्वता प्राप्त करने में सहायता करता है। अतः इसे केवल उपचारात्मक मानने के स्थान पर विद्यालयी शिक्षा का एक अनिवार्य और सार्वभौमिक अंग माना जाना चाहिए, जो छात्र हित में है।

247. (D) समस्या को उसके प्रारंभिक चरणों में पहचानना और हस्तक्षेप करना।
सामुदायिक मनोविज्ञान में द्वितीयक रोकथाम का पूरा ध्यान उन लोगों पर होता है जिनमें किसी संकट के शुरुआती संकेत मिल रहे हैं। इसका लक्ष्य समस्या को पूर्ण विकसित विकार बनने से पहले ही रोक देना है। स्क्रीनिंग और त्वरित परामर्श इसके मुख्य उपकरण हैं। उदाहरण हेतु, यदि किसी क्षेत्र के युवाओं में नशे की शुरुआत के लक्षण दिखें, तो वहीं हस्तक्षेप करना द्वितीयक रोकथाम है। यह रणनीति न केवल व्यक्ति को बचाती है, बल्कि समुदाय में समस्या के प्रसार को रोकने और सामाजिक संसाधनों को बचाने में भी अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

248. (A) विभिन्न स्रोतों से सेवार्थी के बारे में डेटा एकत्र करना।
निर्देशात्मक परामर्श के 'विश्लेषण' चरण में परामर्शदाता एक वैज्ञानिक जांचकर्ता की तरह कार्य करता है। वह सेवार्थी के बारे में हर संभव जानकारी, जैसे ग्रेड, स्वास्थ्य रिकॉर्ड और मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के परिणाम एकत्रित करता है। यह डेटा संग्रहण इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके बिना समस्या का सटीक निदान करना पूर्णतः असंभव है। विश्लेषण ही वह ठोस आधार प्रदान करता है जिस पर आगे की पूरी परामर्श प्रक्रिया टिकी होती है। एक व्यवस्थित डेटा ही परामर्शदाता को सेवार्थी की चुनौतियों का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करने में सक्षम बनाता है।

249. (C) एक स्वप्रतिरक्षित प्रक्रिया जो अग्नाशयी बीटा कोशिकाओं को नष्ट कर देती है।
टाइप 1 मधुमेह एक गंभीर स्वास्थ्य स्थिति है जहाँ शरीर का अपना रक्षा तंत्र ही उसके विरुद्ध कार्य करने लगता है। यह एक स्वप्रतिरक्षित विफलता है जहाँ प्रतिरक्षा प्रणाली अग्न्याशय की इंसुलिन उत्पादक कोशिकाओं को बाहरी हमलावर मानकर नष्ट कर देती है। चूंकि इंसुलिन रक्त शर्करा के नियंत्रण हेतु अनिवार्य है, इसलिए इस प्रक्रिया के कारण शरीर में इंसुलिन का निर्माण पूरी तरह बंद हो जाता है। इसका जीवनशैली से

बीमारियों के बोझ को कम करने में निर्णायक और प्रभावी भूमिका निभाते हैं।

283. (D) प्रभावी और नियमित तनाव प्रबंधन।
तनाव प्रबंधन एक अनिवार्य स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार है क्योंकि दीर्घकालिक तनाव शरीर के अंगों और प्रतिरक्षा प्रणाली को गंभीर क्षति पहुँचा सकता है। नियमित विश्राम, योग या ध्यान जैसी तकनीकों को अपनाकर व्यक्ति अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को संतुलित रख सकता है। इसके विपरीत, धूम्रपान और खराब आहार स्वास्थ्य हेतु अत्यंत हानिकारक हैं जो शरीर को रोगों के प्रति संवेदनशील बनाते हैं। अपने मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना और तनाव को नियंत्रित करना न केवल शांति देता है, बल्कि हृदय रोगों जैसे जोखिमों को घटाने हेतु भी आवश्यक है।

284. (B) टाइप 2 मधुमेह
इंसुलिन प्रतिरोध टाइप 2 मधुमेह की एक आधारभूत विशेषता है। इस स्थिति में, शरीर की कोशिकाएं इंसुलिन हार्मोन के प्रति अपनी संवेदनशीलता खो देती हैं, जिससे रक्त में मौजूद ग्लूकोज ऊर्जा हेतु कोशिकाओं में प्रवेश नहीं कर पाता। इसके परिणामस्वरूप रक्त शर्करा का स्तर बढ़ जाता है, जो अंगों को स्थायी क्षति पहुँचा सकता है। यह स्थिति प्रायः जीवनशैली कारकों, जैसे मोटापे और शारीरिक निष्क्रियता से गहराई से जुड़ी होती है। उचित आहार और व्यायाम के माध्यम से इंसुलिन की प्रभावशीलता को सुधारना इस बीमारी के प्रबंधन का सबसे प्रभावी मार्ग है।

285. (C) निर्देशात्मक
यह उदाहरण निर्देशात्मक परामर्श को दर्शाता है क्योंकि यहाँ परामर्शदाता एक सक्रिय विशेषज्ञ की भूमिका में है। वह छात्र के डेटा और व्यक्तिगत इतिहास का सूक्ष्म विश्लेषण करने के बाद स्वयं यह निर्धारित कर रहा है कि छात्र हेतु कौन सा करियर मार्ग सर्वोत्तम होगा। सेवार्थी को केवल समाधान दिया जा रहा है, न कि उसे स्वयं उत्तर खोजने हेतु प्रेरित किया जा रहा है। यह दृष्टिकोण विशेषज्ञ के ज्ञान और अनुभव पर आधारित है, जहाँ परामर्शदाता ही प्रक्रिया का मुख्य केंद्र और दिशा निर्धारित करने वाला महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है, जो छात्र हित में है।

286. (D) स्पष्ट और मापने योग्य कार्यक्रम उद्देश्य।
विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम की प्रभावशीलता हेतु स्पष्ट और मापने योग्य उद्देश्यों का होना अत्यंत अनिवार्य है। बिना किसी निश्चित लक्ष्य के, कार्यक्रम अपनी दिशा खो सकता है और यह जानना असंभव होगा कि छात्रों को वास्तव में लाभ हो रहा है या नहीं। स्पष्ट उद्देश्य न केवल परामर्शदाता को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, बल्कि प्रशासन को भी संसाधनों के सही आवंटन में सहायता करते हैं। जब लक्ष्य मापने योग्य होते हैं, तो कार्यक्रम की समय-समय पर समीक्षा की जा सकती है और छात्रों की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार सुधार किए जा सकते हैं।

287. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
परामर्श के ये दोनों दृष्टिकोण परामर्शदाता की भूमिका के आधार पर एक-दूसरे से पूरी तरह भिन्न हैं। निर्देशात्मक और आरईटी जैसी चिकित्साएं परामर्शदाता को एक सक्रिय मार्गदर्शक और विशेषज्ञ के रूप में देखती हैं जो पूरी प्रक्रिया का नेतृत्व करता है। दूसरी ओर, अनिर्देशात्मक परामर्श में चिकित्सक की भूमिका अधिक ग्रहणशील होती है, जहाँ उसका मुख्य कार्य सेवार्थी की भावनाओं को सुनना और उन्हें प्रतिध्वनित करना है। ये दोनों तथ्य स्पष्ट करते हैं कि परामर्श की शैली सेवार्थी की आवश्यकताओं और चिकित्सक के दार्शनिक दृष्टिकोण के अनुसार सक्रिय या चिंतनशील हो सकती है।

288. (B) कोरोनरी धमनियों में रुकावट।
हृदयाघात का सीधा और मुख्य कारण कोरोनरी धमनियों में अचानक आई रुकावट है, जो हृदय की मांसपेशियों तक रक्त की आपूर्ति को पूरी तरह बंद कर देती है। रक्त और ऑक्सीजन के बिना, हृदय के ऊतक मरने लगते हैं, जिससे गंभीर सीने में दर्द और जानलेवा स्थिति उत्पन्न होती है। यह रुकावट अक्सर वर्षों तक धमनियों में जमी पट्टिका के फटने के कारण होती है। अतः हृदय स्वास्थ्य हेतु धमनियों को साफ और लचीला बनाए रखना अनिवार्य है, जिसे स्वस्थ आहार और सक्रिय जीवनशैली के माध्यम से सरलता से प्राप्त किया जा सकता है।

289. (B) चयन करने में सहायता की आवश्यकता होना।
निर्देशन और परामर्श की आवश्यकता मुख्य रूप से मानव जीवन में आने वाले जटिल विकल्पों के कारण उत्पन्न होती है। एक आधुनिक समाज में, शिक्षा और करियर के क्षेत्रों में सही चुनाव करना किसी भी व्यक्ति हेतु चुनौतीपूर्ण हो सकता है। निर्देशन व्यक्ति को उसकी अपनी क्षमताओं और उपलब्ध अवसरों के बीच सही तालमेल बिठाने में सहायता करता है। यह प्रक्रिया उसे न केवल सही विकल्प चुनने में सक्षम बनाती है, बल्कि उसे अपने निर्णयों के परिणामों की उत्तरदायित्व लेने हेतु भी तैयार करती है, जो एक सफल जीवन का ठोस आधार है।

290. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
परामर्श और मनोविज्ञान के ये शब्द उनकी विशिष्ट दार्शनिक जड़ों को दर्शाते हैं। तर्कहीन विश्वास तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा का आधार हैं, जबकि बिना शर्त सकारात्मक सम्मान अनिर्देशात्मक परामर्श का अनिवार्य गुण है। निदान और नुस्खा निर्देशात्मक परामर्श की विशेषज्ञ-आधारित शैली को प्रकट करते हैं। वहीं, प्रणाली-स्तर का हस्तक्षेप सामुदायिक मनोविज्ञान की पहचान है जो व्यक्ति के स्थान पर पूरे समाज को सुधारने का लक्ष्य रखता है। इन अवधारणाओं का सही मिलान यह समझने में सहायता करता है कि प्रत्येक दृष्टिकोण व्यक्ति की सहायता हेतु कौन सा मार्ग चुनता है।

291. (C) प्रतिगामी (Regressive) हस्तक्षेप
सामुदायिक मनोविज्ञान में प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक रोकथाम ही हस्तक्षेप के मुख्य और वैज्ञानिक रूप से मान्यता प्राप्त प्रकार हैं। ये तीनों स्तर बीमारी को रोकने, शीघ्र निदान करने और जटिलताओं को कम करने के विशिष्ट लक्ष्यों को लक्षित करते हैं। 'प्रतिगामी हस्तक्षेप' जैसा कोई स्वीकृत चिकित्सीय शब्द इस क्षेत्र में नहीं है। सामुदायिक मनोविज्ञान का पूरा ध्यान प्रगतिशील और निवारक रणनीतियों पर होता है जो समाज को सशक्त बनाती हैं। अतः, प्रभावी सामुदायिक

258. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कार्ल रोजर्स की सेवार्थी-केंद्रित चिकित्सा में परामर्शदाता की सहानुभूतिपूर्ण समझ ही वह मुख्य शक्ति है जो उपचार की प्रक्रिया को संचालित करती है। जब परामर्शदाता सेवार्थी के आंतरिक संसार को उसके अपने दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है, तो सेवार्थी को गहराई से 'समझे जाने' का अनुभव होता है। यह अनुभव उसके भीतर की रक्षात्मक प्रवृत्तियों को कम करता है और उसे अपनी भावनाओं के प्रति अधिक ईमानदार बनाता है। यही वह सुरक्षित मानसिक वातावरण है जहाँ व्यक्ति अपनी आंतरिक शक्तियों को पहचानता है और स्वाभाविक रूप से आत्म-विकास की दिशा में बढ़ता है।

259. (C) शरीर द्वारा उत्पादित इंसुलिन का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में अक्षमता।
टाइप 2 मधुमेह का मुख्य कारण इंसुलिन प्रतिरोध है, जिसमें शरीर इंसुलिन तो बनाता है, लेकिन कोशिकाएं उसे पहचानने और रक्त शर्करा को ग्रहण करने में विफल रहती हैं। अग्न्याशय शुरु में अधिक इंसुलिन बनाकर इसकी क्षतिपूर्ति करने का प्रयास करता है, लेकिन समय के साथ वह असमर्थ हो जाता है। यह स्थिति अक्सर अतिरिक्त वजन और व्यायाम की कमी से उत्पन्न होती है। जीवनशैली में सुधार करके कोशिकाओं की इंसुलिन के प्रति संवेदनशीलता को काफी हद तक पुनः प्राप्त किया जा सकता है और बीमारी को प्रभावी ढंग से प्रबंधित किया जा सकता है, जो अनिवार्य है।

260. (D) 1, 2 और 3
निर्देशात्मक परामर्श दृष्टिकोण परामर्शदाता की वैज्ञानिक और सक्रिय भूमिका पर आधारित है। इसमें परामर्शदाता छात्र के शैक्षणिक और व्यक्तिगत डेटा का सूक्ष्म विश्लेषण करता है ताकि समस्या का सटीक निदान किया जा सके। निदान के पश्चात, वह विशेषज्ञ के रूप में छात्र को कार्रवाई का एक स्पष्ट मार्ग सुझाता है और उसे विशिष्ट परामर्श देता है। यह पूरी प्रक्रिया व्यवस्थित और परामर्शदाता-केंद्रित है, जहाँ यह माना जाता है कि विशेषज्ञ का अनुभव और ज्ञान सेवार्थी को उसकी समस्याओं से उबरने में सबसे प्रभावी ढंग से सहायता कर सकता है, जो प्रशंसनीय है।

261. (C) इसके उद्देश्यों की स्पष्ट अभिव्यक्ति और महाविद्यालय प्रशासन का समर्थन।
महाविद्यालय में किसी भी निर्देशन कार्यक्रम की नींव उसके स्पष्ट लक्ष्यों और प्रशासन की सक्रिय प्रतिबद्धता पर टिकी होती है। जब कार्यक्रम के उद्देश्य छात्रों की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप होते हैं, तभी वह सार्थक परिणाम दे पाता है। साथ ही, प्रशासन का सहयोग आवश्यक संसाधन और उचित नीतियां प्रदान करता है जो कार्यक्रम के सुचारु संचालन हेतु अनिवार्य हैं। बिना किसी स्पष्ट दिशा या प्रशासनिक सहायता के, निर्देशन सेवाएँ केवल औपचारिक बनकर रह जाती हैं और छात्रों के सर्वांगीण विकास में अपना पूर्ण योगदान देने में पूरी तरह विफल रहती हैं।

262. (B) अत्यधिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के स्थान पर पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों को चुनना।
स्वास्थ्य-प्रवर्धक जीवनशैली का एक महत्वपूर्ण स्तंभ सही पोषण का चुनाव करना है। प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों को छोड़कर ताजे फलों और साबुत अनाजों को प्राथमिकता देना शरीर को आवश्यक विटामिन प्रदान करता है, जो प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करते हैं। यह सचेत चुनाव न केवल वजन को नियंत्रित रखता है, बल्कि मधुमेह और हृदय रोगों जैसे दीर्घकालिक खतरों को भी कम करता है। अपने आहार के प्रति जागरूक रहना स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति एक जिम्मेदार व्यवहार है जो लंबे समय तक ऊर्जा और जीवन शक्ति सुनिश्चित करता है, जो अनिवार्य है।

263. (D) हृदय रोग (Cardiovascular disease) की स्थितियाँ।
मस्तिष्काघात और हृदयाघात दोनों ही संचार प्रणाली के गंभीर विकार हैं जो रक्त के प्रवाह में बाधा आने के कारण उत्पन्न होते हैं। हृदयाघात तब होता है जब हृदय की मांसपेशियों को रक्त नहीं मिलता, जबकि मस्तिष्काघात तब होता है जब मस्तिष्क के किसी हिस्से को मिलने वाला रक्त प्रवाह अचानक रुक जाता है। ये दोनों ही स्थितियाँ अक्सर धमनियों के संकुचित होने और उच्च रक्तचाप का परिणाम होती हैं। इन स्थितियों के बीच का गहरा संबंध यह दर्शाता है कि पूरे शरीर की रक्त वाहिकाओं के स्वास्थ्य को बनाए रखना जीवन रक्षा हेतु कितना अनिवार्य है।

264. (A) यह वह संज्ञानात्मक फ़िल्टर है जिसके माध्यम से किसी घटना की व्याख्या की जाती है, और यह प्रतिक्रिया का कारण बनता है।
आरईटी के ए-बी-सी मॉडल में 'बी' यानी विश्वास प्रणाली ही वह चश्मा है जिससे हम दुनिया को देखते हैं। अल्बर्ट एलिस के अनुसार, कोई भी बाहरी घटना सीधे तौर पर हमें परेशान नहीं करती, बल्कि उस घटना के बारे में हमारा अपना विचार ही तय करता है कि हम प्रसन्न होंगे या दुखी। यदि हमारा विश्वास तर्कहीन और नकारात्मक है, तो हमारा भावनात्मक परिणाम भी कष्टकारी होगा। अतः मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हेतु इस संज्ञानात्मक फ़िल्टर को पहचानना और उसे अधिक तर्कसंगत बनाना ही चिकित्सा का मुख्य और प्राथमिक लक्ष्य होता है।

265. (C) लोगों को उनके पारिस्थितिक और सामाजिक संदर्भों में समझा जाना चाहिए।
सामुदायिक मनोविज्ञान का यह एक आधारभूत सिद्धांत है कि व्यक्ति का व्यवहार और उसका मानसिक स्वास्थ्य उसके परिवेश से गहराई से जुड़ा होता है। हम किसी व्यक्ति को उसके परिवार और समाज की परिस्थितियों से अलग करके नहीं समझ सकते। यह दृष्टिकोण मानता है कि यदि हमें किसी समस्या का स्थायी समाधान चाहिए, तो हमें उस वातावरण को भी सुधारना होगा जिसमें वह व्यक्ति रह रहा है। केवल व्यक्तिगत उपचार के स्थान पर सामाजिक संदर्भों में सुधार करना ही व्यापक और सकारात्मक परिवर्तन लाने का सबसे प्रभावी और स्थायी मार्ग है।

9. हर्ज़बर्ग के द्वि-कारक सिद्धांत के अनुसार, निम्नलिखित में से किसे 'प्रेरक' कारक माना जाता है?
(A) कंपनी की नीति
(B) वेतन
(C) मान्यता
(D) कार्य परिस्थितियाँ

10. एक प्रबंधक जो अधीनस्थों से परामर्श किए बिना अकेले निर्णय लेता है, वह किस नेतृत्व शैली का प्रदर्शन कर रहा है?
(A) निरंकुश
(B) लोकतांत्रिक
(C) अहस्तक्षेपवादी
(D) परिवर्तनकारी

11. संगठनात्मक और व्यावहारिक मनोविज्ञान की अवधारणाओं के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. संगठनात्मक वातावरण
Q. कार्य संतोष
R. संवेदी अभाव
S. कार्मिक चयन
सूची II: (विवरण)
1. अपने कार्य के प्रति एक अभिवृत्ति संबंधी प्रतिक्रिया
2. सही योग्यता वाले व्यक्तियों को चुनने की प्रक्रिया
3. कार्य परिवेश के प्रत्यक्ष गुण
4. पर्यावरण से कम संवेदी निवेश की स्थिति
कोड:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

12. बहुत अधिक लोगों वाले स्थान पर होने से उत्पन्न होने वाली मनोवैज्ञानिक परेशानी और नकारात्मक भावनाओं को किस रूप में परिभाषित किया गया है?
(A) जनसंख्या घनत्व
(B) भीड़भाड़
(C) संवेदी अतिभार
(D) सामाजिक सुगमीकरण

13. शारीरिक सुदृढ़ता और मनोवैज्ञानिक कल्याण के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) नियमित व्यायाम अक्सर अवसाद और चिंता के लक्षणों में कमी से जुड़ा होता है।
(B) स्वास्थ्य मनोविज्ञान में व्यायाम कार्यक्रमों के प्रति निरंतरता एक प्रमुख चुनौती है।
(C) शारीरिक सुदृढ़ता का संज्ञानात्मक कार्य या आत्म-सम्मान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(D) व्यायाम मनोदशा में सुधार कर सकता है और तनाव प्रबंधन में योगदान दे सकता है।

14. औद्योगिक सुरक्षा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मानवीय भूल कार्यस्थल की दुर्घटनाओं में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है।
II. किसी संगठन में मजबूत 'सुरक्षा वातावरण' दुर्घटना दर को कम कर सकता है।
III. दुर्घटना प्रवणता एक अस्वीकृत सिद्धांत है जिसका कोई आनुभविक समर्थन नहीं है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

15. संचार प्रक्रिया में, प्रेषक के संदेश की व्याख्या करने की प्राप्तकर्ता की क्रिया को कहा जाता है:
(A) कूटवाचन
(B) कूटलेखन
(C) माध्यम चयन
(D) प्रतिपुष्टि

16. एक प्रशिक्षण कार्यक्रम जो वास्तविक कार्य स्थल से दूर एक कृत्रिम कार्य परिवेश में होता है, किसका उदाहरण है?
(A) कार्य-स्थल प्रशिक्षण
(B) वेस्टिब्यूल प्रशिक्षण
(C) कार्य आवर्तन
(D) शिक्षुता

17. अपने संगठन की नीतियों, प्रथाओं और प्रक्रियाओं के बारे में कर्मचारियों की साझा धारणाओं का आकलन करने के लिए निम्नलिखित में से कौन सा सबसे उपयुक्त उपाय है?
(A) कार्य संतोष सर्वेक्षण
(B) संगठनात्मक वातावरण सर्वेक्षण
(C) व्यक्तित्व अनुसूची
(D) निष्पादन मूल्यांकन प्रपत्र

18. कार्मिक चयन प्रक्रिया के निम्नलिखित चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. प्रारंभिक साक्षात्कार
2. कार्य आवेदन
3. पृष्ठभूमि की जांच
4. अंतिम चयन निर्णय
5. रोजगार परीक्षण
(A) 2, 1, 5, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 5, 4
(C) 2, 5, 1, 4, 3
(D) 1, 5, 2, 3, 4

19. नेतृत्व का कौन सा सिद्धांत बताता है कि एक नेता की प्रभावशीलता स्थिति पर निर्भर करती है?
(A) गुण सिद्धांत

एक सख्त परत जमा होने लगती है। यह जमाव समय के साथ धमनियों को संकरा बना देता है, जिससे पूरे शरीर और विशेष रूप से हृदय तक रक्त का प्रवाह धीमा हो जाता है। यह स्थिति अधिकांश हृदय रोगों का मूल कारण है क्योंकि यह अंगों को आवश्यक ऑक्सीजन से वंचित कर देती है। संतुलित आहार और सक्रिय जीवनशैली इस प्रक्रिया को धीमा करने हेतु अनिवार्य हैं। अतः अपनी आदतों के प्रति सचेत रहना हृदय सुरक्षा हेतु अत्यंत आवश्यक है।

275. (C) विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार की सेवाएँ।
महाविद्यालय में एक व्यवस्थित निर्देशन कार्यक्रम अपनी सेवाओं की विविधता के कारण प्रभावी होता है। इसमें छात्रों की शैक्षणिक प्रगति, करियर की दिशा और व्यक्तिगत मानसिक स्वास्थ्य को संबोधित करने हेतु अलग-अलग सेवाएं, जैसे सूचना और परामर्श सेवाएं होनी चाहिए। छात्र समुदाय की आवश्यकताएं अत्यंत विविध होती हैं, इसलिए एक ही प्रकार की सेवा सभी हेतु पर्याप्त नहीं हो सकती। एक बहुआयामी दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि संस्थान का प्रत्येक छात्र अपनी विशिष्ट चुनौतियों हेतु उचित और समय पर मार्गदर्शन प्राप्त कर सके, जो सराहनीय है।

276. (D) कोशिकाओं का आनुवंशिक और स्वप्रतिरक्षित विनाश।
टाइप 1 मधुमेह का प्राथमिक कारण शरीर की अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली में आई एक गंभीर त्रुटि है। यह एक स्वप्रतिरक्षित स्थिति है जहाँ शरीर का रक्षा तंत्र अग्न्याशय की उन इंसुलिन बनाने वाली कोशिकाओं को नष्ट कर देता है जो रक्त शर्करा के नियंत्रण हेतु आवश्यक हैं। इस विनाश के कारण शरीर में इंसुलिन का उत्पादन पूरी तरह बंद हो जाता है। इसका जीवनशैली से कोई सीधा संबंध नहीं होता है। चूंकि यह एक जैविक विफलता है, इसलिए ऐसे रोगियों को स्वस्थ रहने हेतु जीवन भर बाहरी इंसुलिन के निरंतर समर्थन की अनिवार्य आवश्यकता होती है।

277. (C) सामुदायिक मनोविज्ञान
सशक्तीकरण सामुदायिक मनोविज्ञान का एक केंद्रीय सिद्धांत है जो व्यक्तियों और समूहों को अपने जीवन और वातावरण पर अधिक नियंत्रण प्राप्त करने में सक्षम बनाने पर बल देता है। इसका उद्देश्य लोगों को निष्क्रिय सहायता प्राप्तकर्ता के स्थान पर सक्रिय भागीदार के रूप में विकसित करना है। जब किसी समुदाय के सदस्यों को अपनी समस्याओं को स्वयं हल करने हेतु आवश्यक कौशल और संसाधन मिलते हैं, तो उनमें आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता बढ़ती है। यह दृष्टिकोण सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने और समुदाय के समग्र मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने का शक्तिशाली माध्यम है।

278. (B) कार्यक्रम कठोर और अपरिवर्तनीय होना चाहिए।
विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम को कभी भी कठोर या अपरिवर्तनीय नहीं होना चाहिए, क्योंकि छात्रों की आवश्यकताएं और सामाजिक वातावरण निरंतर बदलते रहते हैं। एक सफल कार्यक्रम वह है जो लचीला हो और समय की माँग के अनुसार अपनी कार्यप्रणाली में आवश्यक बदलाव कर सके। यदि निर्देशन सेवाएँ स्थिर और पुरानी परंपराओं पर आधारित होंगी, तो वे छात्रों की आधुनिक चुनौतियों को हल करने में विफल हो जाएंगी। अनुकूलन क्षमता ही कार्यक्रम की प्रासंगिकता बनाए रखती है और यह सुनिश्चित करती है कि मार्गदर्शन हमेशा छात्रों के विकास हेतु प्रभावी बना रहे।

279. (D) बिना किसी निर्णय के सेवार्थी को स्वीकार करता है।
"बिना शर्त सकारात्मक सम्मान" अनिर्देशात्मक परामर्श की एक क्रांतिकारी अवधारणा है जिसका अर्थ है सेवार्थी को उसकी सभी कमियों के साथ पूर्णतः स्वीकार करना। परामर्शदाता यहाँ एक ऐसा न्यायाधीश नहीं होता जो सेवार्थी के कार्यों को सही या गलत ठहराए, बल्कि वह उसे एक मूल्यवान और गरिमापूर्ण इंसान के रूप में देखता है। यह बिना किसी शर्त के दी गई स्वीकृति सेवार्थी के मन से असुरक्षा को पूरी तरह समाप्त कर देती है। ऐसा सुरक्षित मानसिक वातावरण ही सेवार्थी को खुलकर अपनी समस्याओं का सामना करने हेतु प्रेरित करता है, जो आवश्यक है।

280. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सामुदायिक मनोविज्ञान में निवारक हस्तक्षेपों को प्राथमिकता देना एक वैज्ञानिक और नैतिक दृष्टिकोण है। नशीली दवाओं के दुरुपयोग या विद्यालय छोड़ने जैसी समस्याओं को उनके जड़ पकड़ने से पहले ही रोकना, उनके होने के बाद व्यक्तिगत उपचार करने की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी और मानवीय है। निवारक उपाय न केवल आर्थिक संसाधनों की बचत करते हैं, बल्कि समाज के एक बड़े वर्ग को संभावित संकटों से भी बचाते हैं। यह दृष्टिकोण मानता है कि एक स्वस्थ सामाजिक वातावरण का निर्माण करना ही सामुदायिक कल्याण सुनिश्चित करने का स्थायी मार्ग है।

281. (C) सत्रों में परामर्शदाता के नियंत्रण की मात्रा।
निर्देशात्मक और अनिर्देशात्मक परामर्श के बीच का मुख्य अंतर इस बात में है कि परामर्श सत्र की दिशा कौन तय करता है। निर्देशात्मक परामर्श में परामर्शदाता एक सक्रिय मार्गदर्शक के रूप में नियंत्रण अपने हाथ में रखता है, समस्या का निदान करता है और समाधान बताता है। इसके विपरीत, अनिर्देशात्मक परामर्श में नियंत्रण सेवार्थी के पास होता है, और परामर्शदाता केवल एक सहायक की भूमिका निभाता है। नियंत्रण की यह मात्रा ही यह निर्धारित करती है कि परामर्श की प्रक्रिया विशेषज्ञ-आधारित होगी या सेवार्थी की अपनी भावनाओं पर आधारित होगी।

282. (A) प्राथमिक रोकथाम
धूम्रपान के खतरों के बारे में सार्वजनिक घोषणा प्राथमिक रोकथाम का एक आदर्श उदाहरण है क्योंकि इसका उद्देश्य पूरी जनसंख्या को शिक्षित करना है। यह हस्तक्षेप किसी बीमारी के होने की प्रतीक्षा नहीं करता, बल्कि लोगों को पहले से ही सचेत करके उन्हें स्वस्थ आदतों हेतु प्रेरित करता है। जागरूकता फैलाकर जोखिम कारकों को कम करना प्राथमिक रोकथाम की मुख्य रणनीति है। ऐसे कार्यक्रम समाज में स्वास्थ्य के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करते हैं और भविष्य में गंभीर

परामर्शदाता को अपनी कार्यप्रणाली की प्रभावशीलता को मापने और यह समझने में सहायता करती है कि क्या कार्यक्रम के उद्देश्य प्राप्त हुए हैं। यदि छात्र अभी भी चुनौतियों का सामना कर रहा है, तो उसे अग्रिम सहायता प्रदान की जा सकती है। यह निरंतर निगरानी न केवल कार्यक्रम की गुणवत्ता को बढ़ाती है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करती है कि निर्देशन सेवाएँ छात्रों के दीर्घकालिक विकास में सहायक बनी रहें।

कार्य हेतु इन स्थापित निवारक श्रेणियों को समझना और लागू करना ही स्वास्थ्य सुनिश्चित करने का वैज्ञानिक मार्ग है।

292. (D) समय की अवधि में संचयी (cumulative) होते हैं।
स्वास्थ्य हेतु हानिकारक व्यवहारों, जैसे खराब आहार या व्यायाम की कमी का खतरनाक पहलू यह है कि उनका नकारात्मक प्रभाव धीरे-धीरे शरीर में जमा होता रहता है। एक दिन व्यायाम न करने से तत्काल कोई गंभीर बीमारी नहीं होती, लेकिन दशकों तक ऐसी आदतें बनाए रखने से धमनियां कठोर हो जाती हैं और आंतरिक अंग कमजोर पड़ जाते हैं। जब तक लक्षण दिखाई देते हैं, तब तक नुकसान काफी अधिक हो चुका होता है। अतः आज के छोटे-छोटे स्वस्थ चुनाव ही भविष्य के गंभीर स्वास्थ्य संकटों को टालने का एकमात्र और विश्वसनीय तरीका हैं, जो अनिवार्य है।

293. (C) निर्देशन सेवाएं
निर्देशन सेवाओं का मूल दर्शन छात्र की स्वायत्तता और उसके आत्मविश्वास को बढ़ाना है। यह प्रक्रिया छात्र हेतु निर्णय लेने के स्थान पर उसे इस योग्य बनाती है कि वह अपनी समस्याओं और क्षमताओं को स्वयं समझ सके और बुद्धिमानी से अपने मार्ग का चुनाव कर सके। "स्वयं की सहायता करने में सहायता करना" यह सुनिश्चित करता है कि छात्र भविष्य में आने वाली चुनौतियों का सामना करने हेतु आत्मनिर्भर और मानसिक रूप से सशक्त बने। यह दृष्टिकोण उसे समाधान खोजने का कौशल सिखाता है, जो एक सफल और संतुलित जीवन की ठोस नींव है।

294. (B) वाद-विवाद (D)
आरईटी के ए-बी-सी मॉडल में घटना, विश्वास और परिणाम की पहचान करने के बाद, अगला सबसे महत्वपूर्ण उपचारात्मक कदम 'वाद-विवाद' है। इस चरण में, परामर्शदाता सेवार्थी के तर्कहीन और हानिकारक विश्वासों को तार्किक रूप से चुनौती देता है। उसे यह सिखाया जाता है कि वह अपने विचारों को साक्ष्यों की कसौटी पर कैसे परखे और उन्हें अधिक यथार्थवादी विचारों से कैसे बदले। यह सक्रिय मानसिक संघर्ष ही व्यक्ति को अपनी विनाशकारी सोच से मुक्त करने और एक नया, स्वस्थ जीवन दर्शन अपनाने हेतु आवश्यक मार्ग प्रशस्त करता है, जो अत्यंत कल्याणकारी है।

295. (D) एक दीर्घकालिक चयापचय विकार।
मधुमेह एक ऐसी गंभीर चिकित्सीय स्थिति है जो शरीर की भोजन को ऊर्जा में बदलने की क्षमता को स्थायी रूप से प्रभावित करती है। यह एक दीर्घकालिक चयापचय विकार है जिसमें रक्त में ग्लूकोज का स्तर सामान्य से बहुत अधिक हो जाता है क्योंकि शरीर या तो पर्याप्त इंसुलिन नहीं बना पाता या उसका सही उपयोग नहीं कर पाता। यह कोई अल्पकालिक बीमारी नहीं है, बल्कि इसके हेतु जीवन भर सावधानीपूर्वक प्रबंधन और नियमित चिकित्सा की आवश्यकता होती है। उचित नियंत्रण के बिना, यह शरीर के हर महत्वपूर्ण अंग को गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त कर सकता है।

296. (A) प्रणाली-स्तर का हस्तक्षेप
जब कोई हस्तक्षेप व्यक्तिगत उपचार के स्थान पर उन व्यापक नीतियों को बदलने का प्रयास करता है जो छात्रों के विकास को प्रभावित करती हैं, तो इसे प्रणाली-स्तर का हस्तक्षेप कहा जाता है। समावेशी और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील नीतियां बनाना पूरे छात्र समुदाय हेतु एक समान और न्यायपूर्ण वातावरण सुनिश्चित करता है। सामुदायिक मनोविज्ञान का यह दृष्टिकोण मानता है कि पर्यावरण और संस्थागत संरचनाओं में सुधार करके हम बड़े पैमाने पर लोगों के मानसिक स्वास्थ्य को सुरक्षित कर सकते हैं। यह समस्या के मूल कारणों को संस्थागत स्तर पर हल करने का प्रयास है।

297. (C) अनिर्देशात्मक
अनिर्देशात्मक परामर्श मानवतावादी मनोविज्ञान के इस गहरे विश्वास पर आधारित है कि प्रत्येक सेवार्थी के भीतर अपनी समस्याओं को सुलझाने और स्वयं को बेहतर बनाने की असीमित क्षमता होती है। परामर्शदाता यहाँ कोई विशेषज्ञ नहीं होता जो समाधान बताए, बल्कि वह केवल एक सुविधादाता की भूमिका निभाता है जो सेवार्थी के आंतरिक संसाधनों को जागृत करने में सहायता करता है। यह दृष्टिकोण मानता है कि जब व्यक्ति को सही दिशा और स्वीकृति मिलती है, तो वह स्वतः ही आत्म-बोध और विकास की ओर बढ़ता है। यह विश्वास ही व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने हेतु अनिवार्य है।

298. (D) 1, 2 और 3
विद्यालय या महाविद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम की सफल स्थापना हेतु ये तीनों प्रारंभिक चरण अत्यंत अनिवार्य हैं। एक निर्देशन समिति का गठन कार्यक्रम को संगठित ढांचा और व्यापक समर्थन प्रदान करता है। छात्रों की आवश्यकताओं का आकलन यह सुनिश्चित करता है कि सेवाएँ उनकी वास्तविक शैक्षणिक समस्याओं पर आधारित हों। साथ ही, स्पष्ट और मापने योग्य उद्देश्यों को तैयार करना कार्यक्रम को एक निश्चित दिशा देता है और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना सुलभ बनाता है। इन चरणों का व्यवस्थित पालन ही छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु ठोस आधार तैयार करता है।

299. (D) हृदय रोग (Cardiovascular disease)
उच्च रक्तचाप और उच्च कोलेस्ट्रॉल हृदय रोगों के विकास हेतु दो सबसे शक्तिशाली और विनाशकारी जोखिम कारक माने जाते हैं। उच्च कोलेस्ट्रॉल धमनियों की दीवारों पर पट्टिका जमाकर रक्त प्रवाह को बाधित करता है, जबकि उच्च रक्तचाप हृदय की मांसपेशियों और रक्त वाहिकाओं पर अत्यधिक दबाव डालता है। ये दोनों स्थितियां मिलकर संचार प्रणाली को गंभीर रूप से कमजोर करती हैं और हृदयाघात जैसी जानलेवा स्थितियों का मुख्य कारण बनती हैं। इन दोनों कारकों का नियमित प्रबंधन और नियंत्रण करना हृदय प्रणाली की दीर्घकालिक सुरक्षा और समग्र स्वास्थ्य हेतु अनिवार्य है।

300. (B) कार्यक्रम की सफलता का मूल्यांकन करना।
निर्देशन कार्यक्रम में 'अनुवर्ती' सेवा का प्राथमिक कार्य यह देखना है कि परामर्श प्राप्त करने के बाद छात्र के जीवन में वास्तव में क्या सकारात्मक सुधार आया है। यह सेवा

266. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
रोकथाम के विभिन्न स्तर स्वास्थ्य सेवाओं के एक क्रमिक ढांचे को दर्शाते हैं। प्राथमिक रोकथाम बीमारी को होने से पहले ही रोकने का प्रयास करती है, जबकि द्वितीयक रोकथाम शीघ्र पहचान और त्वरित उपचार के माध्यम से उसे नियंत्रित करती है। तृतीयक रोकथाम स्थापित बीमारी की जटिलताओं और स्थायी अक्षमता को कम करने पर ध्यान केंद्रित करती है। अंत में, स्वास्थ्य संवर्धन सामान्य कल्याण और स्वस्थ आदतों को बढ़ावा देकर समाज की समग्र जीवन शक्ति को बढ़ाता है। इन चारों चरणों का समन्वय ही समाज हेतु एक संपूर्ण सुरक्षा तंत्र प्रदान करता है।

267. (D) अपने माता-पिता के वित्तीय निवेशों का प्रबंधन करना।
विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम का कार्य छात्र के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास में सहायता करना है। इसमें विषयों का चुनाव, करियर की योजना बनाना और व्यक्तिगत संघर्षों को सुलझाने जैसे क्षेत्र शामिल हैं। माता-पिता के वित्तीय निवेशों का प्रबंधन करना विद्यालय परामर्शदाता की जिम्मेदारी के दायरे में नहीं आता। निर्देशन सेवाओं का ध्यान छात्र को एक संतुलित और सफल विद्यार्थी बनाने पर होता है, ताकि वह अपने स्वयं के भविष्य की चुनौतियों का सामना करने हेतु आवश्यक कौशल और समझ विकसित कर सके, जो उसके जीवन हेतु अत्यंत अनिवार्य है।

268. (B) मनुष्यों में आत्म-बोध की दिशा में एक जन्मजात प्रेरणा होती है।
अनिर्देशात्मक परामर्श मानवतावादी मनोविज्ञान के इस सकारात्मक विचार पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर स्वाभाविक रूप से बेहतर बनने की इच्छा होती है। कार्ल रोजर्स का मानना था कि यदि सेवार्थी को सही वातावरण, सहानुभूति और बिना शर्त स्वीकृति मिले, तो वह अपनी समस्याओं को स्वयं सुलझा सकता है। परामर्शदाता को विशेषज्ञ बनने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उसे केवल एक सहायक की भूमिका निभानी है जो सेवार्थी की इस प्रेरणा को जागृत करने में सहायता करे। यह विश्वास ही व्यक्ति को आत्म-निर्भर और मानसिक रूप से स्वस्थ बनाता है।

269. (C) तृतीयक रोकथाम
टाइप 2 मधुमेह के कारण होने वाली वृक्क विफलता का उपचार तृतीयक रोकथाम का एक स्पष्ट उदाहरण है। यहाँ बीमारी पहले से ही गंभीर अवस्था में पहुँच चुकी है, और हस्तक्षेप का मुख्य उद्देश्य आगे की जटिलताओं को रोकना और रोगी के जीवन को बचाना है। यह रोकथाम स्थापित बीमारी के स्थायी और विनाशकारी प्रभावों को कम करने का प्रयास करती है। यद्यपि बीमारी को पूरी तरह ठीक नहीं किया जा सकता, लेकिन उचित चिकित्सा सहायता के माध्यम से रोगी को उसकी सीमाओं के भीतर एक बेहतर जीवन जीने में सहायता प्रदान की जा सकती है।

270. (D) छात्रों को उनकी चिंताओं में सहायता करने के लिए एक पेशेवर, सहायक संबंध प्रदान करना।
विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम में 'परामर्श सेवा' सबसे संवेदनशील और व्यक्तिगत अंग है। इसका मुख्य कार्य छात्रों को एक ऐसा सुरक्षित और गोपनीय वातावरण प्रदान करना है जहाँ वे अपनी व्यक्तिगत समस्याओं, जैसे कि परिवार का तनाव या सामाजिक दबाव पर खुलकर चर्चा कर सकें। परामर्शदाता एक पेशेवर मित्र की तरह छात्र की भावनाओं को सुनता है और उसे मुकाबला कौशल सिखाता है। यह सहायक संबंध छात्र को मानसिक रूप से मजबूत बनाता है और उसे अपनी चुनौतियों का समाधान स्वयं खोजने हेतु प्रेरित करता है, जिससे उसका सर्वांगीण कल्याण सुनिश्चित होता है।

271. (C) केवल 1 और 3
स्वास्थ्य हेतु हानिकारक व्यवहार और जीवनशैली विकल्पों का हमारे दीर्घकालिक स्वास्थ्य पर गहरा और निर्णायक प्रभाव पड़ता है। धूम्रपान या व्यायाम की कमी जैसी आदतें शरीर के अंगों को धीरे-धीरे नुकसान पहुँचाती हैं और गंभीर बीमारियों का जोखिम बढ़ाती हैं। यह विचार गलत है कि स्वास्थ्य-प्रवर्धक व्यवहार कठिन होते हैं; वास्तव में ये आदतें जीवन की गुणवत्ता और ऊर्जा के स्तर को काफी बढ़ाती हैं। अतः, अपने दैनिक चुनावों के प्रति जागरूक रहना और स्वस्थ विकल्पों को अपनाना ही भविष्य के रोगों से बचने का सबसे प्रभावी और वैज्ञानिक मार्ग है।

272. (B) लक्षित जनसंख्या और हस्तक्षेप का समय।
प्राथमिक और द्वितीयक रोकथाम के बीच का मुख्य अंतर इस बात में है कि वे कब और किस पर लागू की जाती हैं। प्राथमिक रोकथाम पूरी जनसंख्या को स्वस्थ रखने और बीमारी को होने से पहले रोकने हेतु होती है, जैसे टीकाकरण। दूसरी ओर, द्वितीयक रोकथाम उन जोखिम वाले व्यक्तियों को लक्षित करती है जिनमें समस्या के प्रारंभिक लक्षण दिख रहे हैं, ताकि शीघ्र पहचान से उसे गंभीर होने से रोका जा सके। समय और लक्ष्य का यह अंतर ही इन दोनों रणनीतियों को स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में अलग और महत्वपूर्ण बनाता है जो अनिवार्य है।

273. (B) तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श
तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श अपनी कार्यप्रणाली में अत्यंत वैज्ञानिक और तार्किक है। यह दृष्टिकोण भावनाओं के स्थान पर विचारों के विश्लेषण पर बल देता है और सेवार्थी को सिखाता है कि वह अपने विश्वासों को तर्क की कसौटी पर कैसे कसे। इसमें परामर्शदाता और सेवार्थी मिलकर उन अवास्तविक धारणाओं पर प्रश्न उठाते हैं जो मानसिक कष्ट का कारण बनती हैं। यह 'बौद्धिक' प्रक्रिया व्यक्ति को यह समझने में सहायता करती है कि केवल तर्क के माध्यम से ही वह अपनी भावनाओं को संतुलित कर सकता है और एक स्थिर मानसिक स्थिति प्राप्त कर सकता है।

274. (A) धमनी की दीवारों में कोलेस्ट्रॉल और अन्य पदार्थों का संचय।
एथेरोस्क्लेरोसिस एक क्रमिक शारीरिक प्रक्रिया है जिसमें धमनियों की आंतरिक सतह पर कोलेस्ट्रॉल और वसा की

अध्याय 10

संगठनात्मक एवं मनोविज्ञान के अन्य अनुप्रयोग क्षेत्र

1. कार्य की विषय-वस्तु, उसकी मानवीय आवश्यकताओं और उस संदर्भ के बारे में जानकारी एकत्र करने तथा उसका विश्लेषण करने की प्रक्रिया जिसमें कार्य किया जाता है, कहलाती है:
(A) कार्य मूल्यांकन
(B) कार्य विश्लेषण
(C) निष्पादन मूल्यांकन
(D) कार्मिक भर्ती

2. निम्नलिखित में से कौन खेल प्रदर्शन में सुधार के लिए खोजी जाने वाली 'प्रवाह' की मनोवैज्ञानिक स्थिति का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) किसी कार्य में पूर्ण तल्लीनता और आत्म-चेतना का अभाव।
(B) चिंता का बढ़ा हुआ स्तर और तीव्र शारीरिक उत्तेजन।
(C) विश्राम की गहरी अवस्था और मानसिक कार्य से अलगाव।
(D) विरोधियों को हराने पर केंद्रित आक्रामक प्रतिस्पर्धी भावना।

3. उच्च स्तर के पर्यावरणीय शोर के लंबे समय तक संपर्क में रहने का प्राथमिक मनोवैज्ञानिक प्रभाव निम्नलिखित में से किसे माना जाता है?
(A) दीर्घकालिक स्मृति प्रत्यावाहन की सटीकता में पर्याप्त वृद्धि।
(B) सहायक व्यवहारों और पर-सामाजिकता में महत्वपूर्ण वृद्धि।
(C) संज्ञानात्मक कार्य निष्पादन में बाधा, विशेष रूप से अवधान से संबंधित कार्य।
(D) रचनात्मक और मौलिक समस्या-समाधान की क्षमता में सुधार।

4. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: कार्य संतोष एक बहुआयामी अभिवृत्ति है जो एक कर्मचारी अपने कार्य के प्रति रखता है।
कथन II: एक कर्मचारी अपने कार्य के कुछ पहलुओं, जैसे वेतन से संतुष्ट हो सकता है, लेकिन अन्य पहलुओं, जैसे पर्यवेक्षण से असंतुष्ट हो सकता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

5. निम्नलिखित में से कौन संगठनात्मक विकास हस्तक्षेपों का विशिष्ट लक्ष्य नहीं है?
(A) संगठनात्मक प्रभावशीलता और स्वास्थ्य में वृद्धि करना।
(B) समस्या-समाधान और नवीनीकरण प्रक्रियाओं में सुधार करना।
(C) नियंत्रण बढ़ाने के लिए कठोर पदानुक्रम लागू करना।
(D) एक खुले और सहयोगात्मक कार्य वातावरण को बढ़ावा देना।

6. एक खेल मनोवैज्ञानिक किसी खिलाड़ी के प्रदर्शन में सुधार के लिए उसे एक सफल परिणाम का मानसिक पूर्वाभ्यास करवाता है। इस तकनीक को किस रूप में वर्णित किया जा सकता है?
(A) लक्ष्य निर्धारण
(B) मानस-चित्रण
(C) जैव-प्रतिपुष्टि
(D) प्रगतिशील मांसपेशी शिथिलन

7. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): उच्च जनसंख्या घनत्व हमेशा भीड़भाड़ के नकारात्मक मनोवैज्ञानिक अनुभव का कारण नहीं बनता है।
कारण (R): भीड़भाड़ का अनुभव एक आत्मनिष्ठ भावना है जो व्यक्तिगत, सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों द्वारा मध्यस्थ होती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

8. कार्मिक चयन में यथार्थवादी कार्य पूर्वावलोकन का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) कार्य और संगठन के बारे में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों जानकारी प्रदान करना।
(B) दबाव में आवेदक की संज्ञानात्मक क्षमताओं का परीक्षण करना।
(C) उम्मीदवार के साथ अंतिम वेतन और लाभ संकुल पर विचार-विमर्श करना।
(D) उन उम्मीदवारों को बाहर करना जो न्यूनतम शैक्षिक योग्यता पूरी नहीं करते हैं।

कोई सीधा संबंध नहीं है, और यही कारण है कि इस स्थिति के रोगियों हेतु बाहरी इंसुलिन की अनिवार्य आवश्यकता होती है।

250. (A) तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा
तर्कसंगत-भावनात्मक चिकित्सा इस आधारभूत सत्य पर आधारित है कि हमारे दुख का मुख्य कारण हमारे विचार हैं। अल्बर्ट एलिस ने सिद्ध किया कि जब हम किसी घटना को 'त्रासदी' की तरह देखते हैं या अवास्तविक अपेक्षाएं रखते हैं, तो हम विक्षोभित हो जाते हैं। चिकित्सा का पूरा जोर इन तर्कहीन विचारों को पहचानने और उन्हें तार्किक कसौटी पर परखने पर होता है। जब व्यक्ति यह जान जाता है कि उसकी पीड़ा उसके अपने अस्वस्थ विचारों की उपज है, तो वह उन्हें बदलकर अधिक शांतिपूर्ण मानसिक स्थिति प्राप्त कर सकता है, जो अंतिम लक्ष्य है।

251. (D) मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों को जैविक कारकों जितना ही महत्वपूर्ण मानता है।
जैव-मनो-सामाजिक मॉडल स्वास्थ्य की समझ में एक क्रांतिकारी बदलाव प्रस्तुत करता है। यह मॉडल मानता है कि किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य केवल उसके शरीर की जैविक स्थिति पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसकी मानसिक स्थिति और सामाजिक वातावरण का भी इस पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जैव-चिकित्सीय मॉडल के विपरीत, जो केवल बीमारी को ठीक करने पर ध्यान देता है, यह मॉडल व्यक्ति के पूरे जीवन संदर्भ को एकीकृत करता है। यह समग्र दृष्टिकोण दीर्घकालिक रोगों के प्रबंधन और स्वास्थ्य को बनाए रखने हेतु अधिक प्रभावी और मानवीय है।

252. (B) निर्देशन विशेष रूप से बौद्धिक रूप से प्रतिभाशाली लोगों के लिए एक सेवा है।
निर्देशन का एक मुख्य सिद्धांत यह है कि यह एक लोकतांत्रिक और समावेशी प्रक्रिया है, जो सभी हेतु उपलब्ध होनी चाहिए। यह विचार गलत है कि केवल प्रतिभाशाली छात्रों को ही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति, चाहे उसकी बौद्धिक क्षमता कुछ भी हो, अपने जीवन में चुनौतियों का सामना करता है। निर्देशन व्यक्तिगत भिन्नताओं का सम्मान करता है और प्रत्येक छात्र को उसकी अपनी गति के अनुसार विकसित होने में सहायता करता है। इसका उद्देश्य समाज के हर सदस्य को आत्मनिर्भर बनाना है, न कि किसी विशिष्ट समूह तक सीमित रहना।

253. (C) विभिन्न करियर मार्गों के बारे में पोस्टर और विवरणिकाएं प्रदर्शित करना।
विद्यालय में 'सूचना सेवा' छात्र को उसके भविष्य के अवसरों और बाहरी दुनिया के बारे में जागरूक करने का कार्य करती है। विभिन्न करियर मार्गों और उच्च शिक्षा के विकल्पों के बारे में पोस्टर प्रदर्शित करना इसी सेवा का हिस्सा है। यह जानकारी छात्र को अपनी रुचियों और समाज में उपलब्ध अवसरों के बीच सही तालमेल बिठाने में सहायता करती है। सटीक और अद्यतन सूचना के अभाव में छात्र अक्सर गलत करियर का चुनाव कर सकते हैं। अतः सूचना सेवा उन्हें विवेकपूर्ण निर्णय लेने हेतु तैयार करती है, जो उनके भविष्य हेतु अनिवार्य है।

254. (D) प्राथमिक रोकथाम - दीर्घकालिक बीमारी का उपचार करना
प्राथमिक रोकथाम का उद्देश्य बीमारी को होने से पहले ही रोकना है, न कि स्थापित बीमारी का उपचार करना। दीर्घकालिक बीमारी का उपचार करना वास्तव में तृतीयक रोकथाम या उपचारात्मक चिकित्सा के अंतर्गत आता है। अन्य विकल्प सही सुमेलित हैं: प्राथमिक रोकथाम शुरुआत को रोकती है, द्वितीयक शीघ्र पहचान करती है, और तृतीयक पुनर्वास पर ध्यान केंद्रित करती है। इन अंतरों को समझना स्वास्थ्य प्रबंधन हेतु अनिवार्य है क्योंकि प्रत्येक स्तर हस्तक्षेप के एक अलग समय और लक्ष्य को लक्षित करता है, जिससे समाज का समग्र स्वास्थ्य सुरक्षित रहता है।

255. (B) चिकित्सीय प्रक्रिया के निर्देशन में परामर्शदाता की सक्रिय भूमिका सम्मिलित करते हैं।
निर्देशात्मक और तर्कसंगत-भावनात्मक परामर्श दोनों ही इस मायने में 'सक्रिय' हैं कि इनमें परामर्शदाता एक मार्गदर्शक और विशेषज्ञ के रूप में कार्य करता है। जहाँ निर्देशात्मक परामर्शदाता छात्र के डेटा का विश्लेषण करके समाधान बताता है, वहीं आरईटी चिकित्सक सेवार्थी के तर्कहीन विश्वासों को सक्रिय रूप से चुनौती देता है और उसे सोचने के नए तरीके सिखाता है। ये दोनों ही दृष्टिकोण इस विचार पर आधारित हैं कि परामर्शदाता की सक्रिय भागीदारी सेवार्थी को तेजी से सुधार और समस्या-समाधान की ओर ले जाने हेतु अत्यंत आवश्यक और प्रभावी है।

256. (B) टाइप 2 मधुमेह और हृदय रोग।
आधुनिक जीवनशैली की दो सबसे बड़ी समस्याएँ—शारीरिक निष्क्रियता और खराब आहार—सीधे तौर पर शरीर की चयापचय और हृदय प्रणाली को नष्ट कर रही हैं। गतिहीन जीवन से मोटापा बढ़ता है, जो इंसुलिन प्रतिरोध उत्पन्न करके टाइप 2 मधुमेह का मार्ग प्रशस्त करता है। साथ ही, जंक फूड धमनियों में रुकावट पैदा करता है, जिससे हृदय रोगों का जोखिम बढ़ जाता है। इन बीमारियों से बचने का एकमात्र प्रभावी मार्ग नियमित शारीरिक सक्रियता और पोषक तत्वों से भरपूर संतुलित आहार अपनाना है, जो शरीर के आंतरिक संतुलन को बनाए रखने हेतु अनिवार्य है।

257. (B) तृतीयक रोकथाम
दीर्घकालिक मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं वाले व्यक्तियों हेतु रोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम तृतीयक रोकथाम का एक बेहतरीन उदाहरण है। यहाँ हस्तक्षेप का उद्देश्य बीमारी को ठीक करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति को उसके लक्षणों के बावजूद समाज में पुनः एकीकृत करना और उसे आत्मनिर्भर बनाना है। यह रोकथाम अक्षमता के प्रभाव को कम करती है और रोगी के आत्म-सम्मान तथा जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती है। पुनर्वास के माध्यम से व्यक्ति को अपनी शेष क्षमताओं का सर्वोत्तम उपयोग करना सिखाया जाता है, जिससे वह समाज का एक उत्पादक सदस्य बन सके।

(B) व्यवहारवादी सिद्धांत
(C) फ़ीडलर का आकस्मिकता सिद्धांत
(D) महान व्यक्ति सिद्धांत

20. प्रारंभिक औद्योगिक मनोविज्ञान अध्ययनों में देखा गया 'हॉथोर्न प्रभाव' उस घटना को संदर्भित करता है जहाँ:
(A) भौतिक कार्य परिस्थितियों में परिवर्तन सीधे उत्पादकता बढ़ाते हैं।
(B) प्राथमिक कार्य प्रेरकों के रूप में विशेष रूप से वित्तीय प्रोत्साहनों पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) दोहराव वाले कार्यों की ऊब के कारण उत्पादन में अपरिहार्य कमी।
(D) पर्यवेक्षण और विशेष ध्यान दिए जाने के परिणामस्वरूप उत्पादकता में वृद्धि।

21. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: शोर को किसी भी अवांछित ध्वनि के रूप में परिभाषित किया गया है।
कथन II: शोर का मनोवैज्ञानिक प्रभाव पूरी तरह से उसके डेसीबल स्तर पर निर्भर करता है, न कि उसकी पूर्वानुमान क्षमता या नियंत्रण क्षमता पर।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

22. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): परिवर्तनकारी नेता अनुयायियों को संगठन की भलाई के लिए अपने स्वार्थों से ऊपर उठने के लिए प्रेरित करते हैं।
कारण (R): वे आकस्मिक पुरस्कारों और सुधारात्मक कार्यों की प्रणाली का उपयोग करके इसे प्राप्त करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

23. कार्य अभिवृत्ति का 'भावात्मक' घटक संदर्भित करता है:
(A) कार्य के बारे में कर्मचारी के विश्वास।
(B) कार्य के प्रति एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने का कर्मचारी का इरादा।
(C) कार्य की विशेषताओं का कर्मचारी द्वारा किया गया वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन।
(D) कार्य के प्रति कर्मचारी की भावनाएँ या संवेग।

24. एक खेल मनोवैज्ञानिक जो खिलाड़ियों के बीच समन्वय, संचार और आपसी सहयोग को बढ़ाकर किसी टीम के प्रदर्शन को बेहतर बनाने में सहायता कर रहा है, वह किस पर ध्यान केंद्रित कर रहा है?
(A) टीम सामंजस्य
(B) व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारण
(C) उत्तेजन नियमन
(D) ध्यानात्मक केंद्रण

25. उच्च कर्मचारी टर्नओवर का सामना कर रही एक कंपनी एक परामर्शदाता नियुक्त करती है। कौन सी क्रिया संगठनात्मक विकास के 'निदानात्मक' चरण का प्रतिनिधित्व करती है?
(A) कंपनी-व्यापी नई बोनस संरचना लागू करना।
(B) सामंजस्य के लिए विभाग-व्यापी कार्यशालाएं आयोजित करना।
(C) समस्या के मूल कारणों की पहचान करने के लिए सर्वेक्षण करना।
(D) अप्रभावी माने जाने वाले प्रबंधकों को सेवामुक्त करना।

26. निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा गलत सुमेलित है?
(A) कार्य विस्तार: किसी कार्य की गहराई और उत्तरदायित्व में वृद्धि करना
(B) कार्य विवरण: किसी कार्य के कार्यों, कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों की सूची
(C) कार्य विशिष्टता: आवश्यक ज्ञान, कौशल और क्षमताओं की सूची
(D) कार्य संतोष: कार्य मूल्यांकन से उत्पन्न सकारात्मक भावनात्मक स्थिति

27. 'नियंत्रण का केंद्र' की अवधारणा औद्योगिक दुर्घटनाओं को समझने के लिए प्रासंगिक है क्योंकि बाहरी नियंत्रण केंद्र वाले व्यक्तियों की संभावना अधिक होती है:
(A) यह विश्वास करना कि वे अपने स्वयं के कार्यों के माध्यम से दुर्घटनाओं को रोक सकते हैं।
(B) सुरक्षा व्यवहारों और प्रशिक्षण में सक्रिय रूप से संलग्न होना।
(C) सुरक्षित कार्य वातावरण बनाए रखने के लिए व्यक्तिगत उत्तरदायित्व लेना।
(D) दुर्घटनाओं का श्रेय भाग्य, किस्मत या अन्य शक्तिशाली लोगों को देना।

28. भीड़भाड़ का 'व्यवहार अवरोध' सिद्धांत बताता है कि उच्च घनत्व को नकारात्मक रूप से महसूस किया जाता है क्योंकि यह:
(A) किसी व्यक्ति की सूचना प्रसंस्करण क्षमता को अतिभारित कर देता है।
(B) वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति में हस्तक्षेप करता है या उसे रोकता है।
(C) शारीरिक उत्तेजन को असुविधाजनक स्तर तक ले जाता है।
(D) व्यक्तिगत स्थान के मानदंडों और सांस्कृतिक अपेक्षाओं का उल्लंघन करता है।

(D) दुर्घटनाओं के स्थितिजन्य कारण

70. व्यवहार परिवर्तन का ट्रांसथ्योरेटिकल मॉडल अक्सर व्यायाम की निरंतरता पर लागू किया जाता है। कौन सा चरण उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो निकट भविष्य में व्यायाम शुरू करने का विचार नहीं रखता है?
(A) चिंतन
(B) पूर्व-चिंतन
(C) तैयारी
(D) कार्य

71. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (निर्णय लेने का पूर्वाग्रह)
P. एंकरिंग पूर्वाग्रह
Q. उपलब्धता अनुमानी
R. पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
S. प्रतिबद्धता का बढ़ना
सूची II: (विवरण)
1. ऐसी जानकारी की तलाश करना जो पिछले विकल्पों की पुष्टि करती हो और विरोधाभासी जानकारी को नजरअंदाज करना।
2. नकारात्मक जानकारी के बावजूद पिछले निर्णय के प्रति प्रतिबद्धता बढ़ाना।
3. प्रारंभिक जानकारी पर स्थिर रहने और बाद की जानकारी के लिए पर्याप्त रूप से समायोजन न करने की प्रवृत्ति।
4. लोगों की अपने निर्णय उन जानकारियों पर आधारित करने की प्रवृत्ति जो उनके पास आसानी से उपलब्ध हैं।
कोड:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

72. संगठनात्मक वातावरण और संगठनात्मक संस्कृति के बीच एक प्रमुख अंतर यह है कि:
(A) वातावरण साझा धारणाओं को संदर्भित करता है, जबकि संस्कृति साझा मूल्यों और मान्यताओं को संदर्भित करती है।
(B) वातावरण संस्कृति की तुलना में अधिक स्थिर और स्थायी है।
(C) संस्कृति को वातावरण की तुलना में मापना और बदलना आसान है।
(D) कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है; ये शब्द एक-दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त किए जा सकते हैं।

73. न्यूनतम या बिना किसी बाहरी उत्तेजन वाले वातावरण में रहने के मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन कहलाता है:
(A) पर्यावरणीय अतिभार
(B) भीड़भाड़ अनुसंधान
(C) संवेदी अभाव
(D) शोर निवारण अध्ययन

74. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): प्रभावी संगठनात्मक कामकाज के लिए एक अच्छी तरह से परिभाषित संचार प्रक्रिया महत्वपूर्ण है।
कारण (R): संचार में अस्पष्टता त्रुटियों, संघर्ष और कम उत्पादकता का कारण बन सकती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

75. एक प्रशिक्षक टेनिस खिलाड़ी को गेंद के अपनी ओर आने पर उसकी सिलाई पर ध्यान केंद्रित करने का परामर्श देता है। यह सुधार करने की रणनीति का एक उदाहरण है:
(A) प्रेरणा
(B) उत्तेजन स्तर
(C) टीम सामंजस्य
(D) एकाग्रता

76. किसी संगठन में नौकरियों के लिए योग्य आवेदकों के समूह को आकर्षित करने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) चयन
(B) भर्ती
(C) कार्य विश्लेषण
(D) प्रशिक्षण

77. निम्नलिखित में से कौन संगठन में नीचे की ओर संचार माध्यम का एक उदाहरण है?
(A) टीम के सदस्य द्वारा अपने प्रबंधक को परियोजना की अद्यतन जानकारी देना।
(B) विभिन्न विभागों के दो सहयोगियों द्वारा एक कार्य पर सहयोग करना।
(C) एक प्रबंधक द्वारा अपने अधीनस्थ को निष्पादन प्रतिपुष्टि प्रदान करना।
(D) कर्मचारियों का कंपनी की नीति के बारे में एक-दूसरे से शिकायत करना।

78. निम्नलिखित में से कौन परिवर्तनकारी नेतृत्व की मुख्य विशेषता नहीं है?
(A) आदर्श प्रभाव
(B) प्रेरणादायक अभिप्रेरणा
(C) बौद्धिक प्रोत्साहन
(D) अपवाद द्वारा प्रबंधन

79. यह विश्वास कि किसी के स्वयं के प्रयास एक वांछित प्रदर्शन स्तर तक ले जाएंगे, प्रत्याशा सिद्धांत में 'प्रत्याशा' के रूप में जाना जाता है। यह कार्य संतोष से कैसे संबंधित है?
(A) उच्च प्रत्याशा अक्सर उच्च प्रेरणा में योगदान देती है, जो प्रदर्शन पुरस्कृत होने पर संतुष्टि की ओर ले जा सकती है।
(B) यह कार्य संतोष से संबंधित नहीं है।

38. यह सिद्धांत कि प्रदर्शन उत्तेजन के मध्यम स्तर पर इष्टतम होता है और यदि उत्तेजन बहुत अधिक या बहुत कम हो तो गिर जाता है, कहलाता है:
(A) प्रभाव का नियम
(B) यर्क्स-डोडसन नियम
(C) सामाजिक सुगमीकरण सिद्धांत
(D) प्रणोद न्यूनता सिद्धांत

39. पर्यावरणीय मनोविज्ञान में 'जनसंख्या घनत्व' और 'भीड़भाड़' के बीच का अंतर यह है कि:
(A) घनत्व एक मनोवैज्ञानिक अवधारणा है जबकि भीड़भाड़ एक भौतिक माप है।
(B) भीड़भाड़ और घनत्व एक ही घटना के समानार्थी शब्द हैं।
(C) भीड़भाड़ बाहरी स्थानों को संदर्भित करती है जबकि घनत्व आंतरिक क्षेत्रों को संदर्भित करता है।
(D) घनत्व भौतिक क्षेत्र का माप है जबकि भीड़भाड़ एक आत्मनिष्ठ भावना है।

40. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): संगठनों में प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण कार्य है जिसका उद्देश्य कर्मचारी कौशल और ज्ञान में सुधार करना है।
कारण (R): किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए उसके डिजाइन और कार्यान्वयन से पहले एक विस्तृत प्रशिक्षण आवश्यकता विश्लेषण किया जाना चाहिए।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

41. निम्नलिखित में से कौन औद्योगिक दुर्घटना के 'मानवीय कारक' का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) खराब पुर्जे के कारण मशीन की खराबी।
(B) कार्य क्षेत्र में खराब रोशनी।
(C) कार्यकर्ता की थकान जिसके कारण अवधान भटक गया।
(D) तेल गिरने के कारण फिसलन वाला फर्श।

42. निर्णय लेने में, प्रारंभिक निर्णय पर टिके रहने की प्रवृत्ति, तब भी जब उसे गलत साबित करने वाले साक्ष्य प्रस्तुत किए जाते हैं, कहलाती है:
(A) प्रतिबद्धता का बढ़ना
(B) एंकरिंग पूर्वाग्रह
(C) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
(D) उपलब्धता अनुमानी

43. निम्नलिखित में से कौन व्यक्तिगत स्तर पर लक्षित संगठनात्मक विकास हस्तक्षेप का एक उदाहरण है?
(A) सर्वेक्षण प्रतिपुष्टि
(B) टीम निर्माण
(C) अंतर-समूह विकास
(D) संवेदनशीलता प्रशिक्षण

44. कार्मिक चयन में एक संरचित साक्षात्कार की विशेषता क्या है?
(A) बिना किसी निर्धारित प्रश्न के स्वतंत्र रूप से होने वाली बातचीत।
(B) सभी आवेदकों से पूछे जाने वाले कार्य-संबंधित प्रश्नों का एक मानकीकृत सेट।
(C) व्यक्तित्व का आकलन करने के लिए कार्य से असंबंधित प्रश्न पूछना।
(D) उम्मीदवार को साक्षात्कार की दिशा तय करने की अनुमति देना।

45. कार्य अभिवृत्तियों के अध्ययन में सामान्यतः पहचाने जाने वाले तीन घटक हैं:
(A) वेतन, लाभ और कार्य के घंटे।
(B) नेता, अनुयायी और स्थिति।
(C) भावात्मक, संज्ञानात्मक और व्यवहारात्मक।
(D) कार्य, संबंध और संरचना।

46. निम्नलिखित में से कौन मानव मनोविज्ञान और व्यवहार पर पर्यावरणीय वायु प्रदूषण का एक संभावित नकारात्मक परिणाम है?
(A) परोपकारिता में वृद्धि
(B) स्मृति सुदृढ़ीकरण में वृद्धि
(C) सामुदायिक जुड़ाव की अधिक भावना
(D) संज्ञानात्मक प्रदर्शन में कमी और आक्रामकता में वृद्धि

47. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: लक्ष्य निर्धारण खेलों में प्रेरणा और प्रदर्शन बढ़ाने के लिए एक शक्तिशाली तकनीक है।
कथन II: प्रभावी होने के लिए, लक्ष्य विशिष्ट और चुनौतीपूर्ण होने चाहिए।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

48. वह अवधारणा जो उस सीमा को संदर्भित करती है जिस तक संगठन के नियम, प्रक्रियाएं और संचार औपचारिक और स्पष्ट रूप से बताए गए हैं:
(A) केंद्रीकरण
(B) औपचारिकता
(C) नियंत्रण का विस्तार
(D) विभागीकरण

49. एक विशिष्ट संगठनात्मक विकास कार्यक्रम के निम्नलिखित चरणों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. हस्तक्षेप

29. एक चयन परीक्षण की वह वैधता जो उस सीमा को मापती है जिस तक परीक्षण प्राप्तांक उसी समय प्राप्त किए गए मानदंड माप के साथ सह-संबंधित होते हैं, कहलाती है:
(A) भविष्यसूचक वैधता
(B) विषय-वस्तु वैधता
(C) समवर्ती वैधता
(D) संरचनात्मक वैधता

30. संचार प्रक्रिया के संदर्भ में, 'शोर' में निम्नलिखित सभी शामिल हो सकते हैं, सिवाय:
(A) एक शोरगुल वाला कारखाना परिवेश जिससे बातचीत कठिन हो जाती है।
(B) प्राप्तकर्ता का व्यक्तिगत चिंताओं के कारण विचलित होना।
(C) गैर-विशेषज्ञ श्रोताओं के साथ अत्यधिक तकनीकी शब्दावली का उपयोग करना।
(D) संदेश का इच्छानुसार स्पष्ट और सफल कूटवाचन।

31. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (नेतृत्व सिद्धांत)
P. पथ-लक्ष्य सिद्धांत
Q. परिवर्तनकारी नेतृत्व
R. नेता-सदस्य विनिमय सिद्धांत
S. गुण सिद्धांत
सूची II: (मूल विचार)
1. एक नेता और प्रत्येक अनुयायी के बीच द्वैत संबंधों पर ध्यान केंद्रित करता है।
2. प्रभावी नेताओं की विशिष्ट विशेषताओं की पहचान करता है।
3. नेता का काम अनुयायियों को उनके लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करना और आवश्यक सहायता प्रदान करना है।
4. नेता अनुयायियों को असाधारण परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रेरित और उत्साहित करता है।
कोड:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-1, Q-2, R-3, S-4
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

32. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्यायाम करने और शारीरिक सुदृढ़ता को बढ़ावा देने का प्राथमिक लक्ष्य निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) प्रतिस्पर्धी खेलों के लिए व्यक्ति की एथलेटिक क्षमता को अधिकतम करना।
(B) मनोवैज्ञानिक कल्याण को बढ़ाना, जिसमें मनोदशा में सुधार और तनाव में कमी शामिल है।
(C) शारीरिक उपस्थिति के सामाजिक मानकों के अनुरूप होना।
(D) मानसिक स्वास्थ्य के किसी अन्य प्रकार के हस्तक्षेप की आवश्यकता को समाप्त करना।

33. संवेदी अभाव पर शोध में पाया गया कि संवेदी निवेश में लंबे समय तक कमी के कारण यह हो सकता है:
(A) एकाग्रता और तार्किक चिंतन में सुधार।
(B) मतिभ्रम और बाधित संज्ञानात्मक कार्य।
(C) गहरी, आरामदायक विश्राम की स्थिति।
(D) बढ़ी हुई संवेदी तीक्ष्णता और जागरूकता।

34. संगठनों में निर्णय लेने के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. निर्णय लेने का 'तार्किक मॉडल' यह मानता है कि निर्णय लेने वाले के पास पूर्ण जानकारी है और वह सभी प्रासंगिक विकल्पों की पहचान कर सकता है।
II. 'सीमित तार्किकता' बताती है कि निर्णय लेने वाले अपनी संज्ञानात्मक क्षमता और उपलब्ध जानकारी द्वारा सीमित होते हैं।
III. 'समूह-चिंतन' सोचने का एक ऐसा तरीका है जो आलोचनात्मक मूल्यांकन को बढ़ाता है और बेहतर समूह निर्णयों की ओर ले जाता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

35. एक प्रबंधक का मानना है कि कर्मचारी स्वाभाविक रूप से आलसी होते हैं और उन्हें काम करने के लिए मजबूर और नियंत्रित किया जाना चाहिए। यह विश्वास मैकग्रेगर के किस सिद्धांत के अनुरूप है?
(A) सिद्धांत Y
(B) सिद्धांत Z
(C) सिद्धांत X
(D) प्रेरणा-हाइजीन सिद्धांत

36. निम्नलिखित में से कौन सकारात्मक संगठनात्मक वातावरण की प्रमुख विशेषता है?
(A) पारस्परिक संघर्ष और प्रतिस्पर्धा का उच्च स्तर।
(B) कर्मचारियों और प्रबंधन के बीच विश्वास का निम्न स्तर।
(C) अस्पष्ट भूमिकाएं और निष्पादन प्रतिपुष्टि की कमी।
(D) उच्च समर्थन, विश्वास और खुलेपन की धारणा।

37. एक खिलाड़ी जिसे प्रतियोगिता से पहले अत्यधिक चिंता के कारण प्रदर्शन में गिरावट का सामना करना पड़ रहा है, उसे किस खेल मनोविज्ञान तकनीक से सबसे अधिक लाभ हो सकता है?
(A) अपने शारीरिक प्रशिक्षण की तीव्रता बढ़ाना।
(B) अधिक महत्वाकांक्षी और चुनौतीपूर्ण प्रदर्शन लक्ष्य निर्धारित करना।
(C) उत्तेजन नियंत्रण रणनीतियां जैसे गहरी सांस लेना।
(D) उन्हें प्रेरित करने के लिए उनकी पिछली विफलताओं के वीडियो देखना।

अभिकथन (A): अप्रत्याशित और अनियंत्रित शोर सामान्यतः पूर्वानुमेय और नियंत्रणीय शोर की तुलना में अधिक तनावपूर्ण होता है, भले ही डेसीबल स्तर समान हो।
कारण (R): तनाव कारक का पूर्वानुमान लगाने या उसे नियंत्रित करने की क्षमता व्यक्ति को कार्यक्षमता की भावना देती है, जो तनाव प्रतिक्रिया को कम करती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

60. किसी संगठन के 'सुरक्षा वातावरण' का सबसे अच्छा वर्णन इस रुप में किया गया है:
(A) कार्यस्थल का भौतिक तापमान और मौसम की स्थिति।
(B) सुरक्षा के मूल्य और प्राथमिकता के संबंध में कर्मचारियों की साझा धारणाएं।
(C) कार्यस्थल सुरक्षा के संबंध में नियमों और विनियमों का औपचारिक सेट।
(D) पिछले वित्तीय वर्ष में हुई दुर्घटनाओं की दर्ज संख्या।

61. किस प्रकार के चयन साक्षात्कार में सुसंगत संरचना का अभाव होता है और साक्षात्कारकर्ता को मन में आने वाले कोई भी प्रश्न पूछने की अनुमति होती है?
(A) संरचित साक्षात्कार
(B) स्थितिजन्य साक्षात्कार
(C) असंरचित साक्षात्कार
(D) व्यवहारात्मक साक्षात्कार

62. प्रदर्शन सुधार के मामले में खेल मनोविज्ञान का प्राथमिक ध्यान क्या है?
(A) खिलाड़ी की गति के जैव-यांत्रिकी का विश्लेषण करना।
(B) खिलाड़ियों के लिए इष्टतम पोषण योजनाएं विकसित करना।
(C) शक्ति और सहनशक्ति बढ़ाने के लिए शारीरिक अनुकूलन कार्यक्रम डिजाइन करना।
(D) खिलाड़ी के प्रदर्शन और कल्याण को बढ़ाने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू करना।

63. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: कार्य संतोष और कार्य प्रदर्शन सभी स्थितियों में दृढ़ता से और सकारात्मक रुप से सह-संबंधित होते हैं।
कथन II: संतोष और प्रदर्शन के बीच संबंध अन्य कारकों जैसे व्यक्तित्व और कार्य की प्रकृति से प्रभावित हो सकता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

64. एक संगठनात्मक विकास तकनीक जिसमें कर्मचारियों से डेटा एकत्र करने के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया जाता है, जिसे बाद में संक्षेपित किया जाता है और चर्चा तथा समस्या-समाधान के लिए उन्हें वापस दिया जाता है, कहलाती है:
(A) टीम निर्माण
(B) सर्वेक्षण प्रतिपुष्टि
(C) संवेदनशीलता प्रशिक्षण
(D) प्रक्रिया परामर्श

65. यह भावना कि उच्च जनसंख्या घनत्व के कारण व्यक्ति ने नियंत्रण और गोपनीयता खो दी है, किस पर्यावरणीय मनोविज्ञान अवधारणा का एक केंद्रीय घटक है?
(A) संवेदी अभाव
(B) भीड़भाड़
(C) ध्वनि प्रदूषण
(D) सामाजिक सुगमीकरण

66. कौन सा नेतृत्व सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि नेताओं को अनुयायियों के लिए व्यक्तिगत और कार्य दोनों लक्ष्यों को प्राप्त करने का मार्ग स्पष्ट करना चाहिए?
(A) पथ-लक्ष्य सिद्धांत
(B) गुण सिद्धांत
(C) नेता-सदस्य विनिमय सिद्धांत
(D) सेवक नेतृत्व सिद्धांत

67. संगठनों में प्रशिक्षण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रशिक्षण मूल्यांकन में प्रतिक्रिया, अधिगम, व्यवहार और परिणामों का आकलन किया जाना चाहिए।
II. कार्य-स्थल प्रशिक्षण हमेशा कार्य-बाह्य प्रशिक्षण विधियों से बेहतर होता है।
III. प्रशिक्षण आवश्यकता विश्लेषण प्रशिक्षण प्रक्रिया में एक वैकल्पिक पहला चरण है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

68. अपने कार्य के प्रति कर्मचारी की अभिवृत्ति का "संज्ञानात्मक" घटक संदर्भित करता है:
(A) कार्य के प्रति उनकी भावनात्मक प्रतिक्रिया।
(B) काम पर उनके व्यवहार करने का तरीका।
(C) सर्वेक्षणों में उनके द्वारा व्यक्त संतोष का स्तर।
(D) कार्य के बारे में उनके पास मौजूद विश्वास, राय और जानकारी।

69. एक निर्माण संयंत्र में दुर्घटनाओं की एक श्रृंखला हुई है। प्रबंधन उन्हें कुछ "लापरवाह" श्रमिकों के कारण मानता है। यह स्पष्टीकरण किस अवधारणा को दर्शाता है?
(A) सुरक्षा वातावरण
(B) मानवीय कारक अभियांत्रिकी
(C) दुर्घटना प्रवणता

2. निदान
3. मूल्यांकन और प्रतिपुष्टि
4. प्रवेश और अनुबंध
5. डेटा संग्रह

(A) 2, 4, 5, 1, 3
(B) 4, 5, 2, 1, 3
(C) 4, 2, 1, 5, 3
(D) 1, 2, 4, 5, 3

50. भौतिक वातावरण, चाहे वह प्राकृतिक हो या निर्मित, मानव व्यवहार और कल्याण को कैसे प्रभावित करता है, इसका अध्ययन किसका केंद्र बिंदु है?
(A) पर्यावरणीय मनोविज्ञान
(B) औद्योगिक मनोविज्ञान
(C) सामाजिक मनोविज्ञान
(D) नैदानिक मनोविज्ञान

51. नेतृत्व की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. एक नेता की भूमिका केवल स्पष्ट निर्देश देना और नियमों को लागू करना है।
II. प्रभावी नेता संगठनात्मक वातावरण और कर्मचारी कार्य संतोष को प्रभावित कर सकते हैं।
III. नेतृत्व लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में एक समूह को प्रभावित करने की एक प्रक्रिया है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

52. संगठनात्मक संचार में 'जनप्रवाद' का तात्पर्य है:
(A) औपचारिक, पदानुक्रमित संचार माध्यम।
(B) आधिकारिक कंपनी समाचार पत्र।
(C) संचार जो केवल शीर्ष प्रबंधन से नीचे की ओर प्रवाहित होता है।
(D) एक संगठन के भीतर अनौपचारिक संचार नेटवर्क।

53. एक बास्केटबॉल खिलाड़ी जो अभ्यास की तुलना में खेलों में लगातार बेहतर प्रदर्शन करता है, वह किसका अनुभव कर रहा होगा?
(A) सामाजिक शिथिलन
(B) प्रदर्शन संबंधी चिंता
(C) सामाजिक सुगमीकरण
(D) दबाव में प्रदर्शन का गिरना

54. 'एर्गोनॉमिक्स' शब्द निम्नलिखित में से किस क्षेत्र से सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) उपभोक्ता पसंद को प्रभावित करने के लिए विज्ञापन रणनीतियां विकसित करना।
(B) मानवीय क्षमताओं के अनुरूप उपकरणों और कार्य परिवेशों के डिज़ाइन में सुधार करना।
(C) व्यक्तिगत समस्याओं वाले कर्मचारियों के लिए परामर्श प्रदान करना।
(D) कर्मचारियों को प्रेरित करने के लिए वित्तीय प्रोत्साहन योजनाओं की संरचना करना।

55. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (संगठनात्मक अवधारणा)
P. कार्य विस्तार
Q. कार्य संवर्धन
R. कार्य आवर्तन
S. कार्य विश्लेषण

सूची II: (परिभाषा)
1. कर्मचारियों को व्यवस्थित रूप से एक कार्य से दूसरे कार्य पर ले जाना
2. किसी कार्य में आवश्यक विभिन्न कार्यों की संख्या बढ़ाना
3. किसी कार्य के कर्तव्यों और कौशल आवश्यकताओं को निर्धारित करने की प्रक्रिया
4. किसी कार्य पर कार्यकर्ता के उत्तरदायित्व और नियंत्रण की सीमा बढ़ाना

कोड:
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

56. निम्नलिखित में से कौन प्रभावी संचार में सामान्य बाधा नहीं है?
(A) सक्रिय श्रवण
(B) छनन
(C) चयनात्मक प्रत्यक्षबोध
(D) सूचना अतिभार

57. पर्यावरणीय मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से, भीड़भाड़ का "अतिभार सिद्धांत" यह मानता है कि उच्च घनत्व के नकारात्मक प्रभाव इसके कारण होते हैं:
(A) सामाजिक अंतःक्रियाओं को नियंत्रित करने में असमर्थता।
(B) व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतंत्रता में कमी।
(C) सामाजिक वातावरण से बहुत अधिक उत्तेजन प्राप्त करना।
(D) दूसरों के बहुत करीब होने की शारीरिक असुविधा।

58. मिनेसोटा संतोष प्रश्नावली किसका मापन करने के लिए उपयोग किया जाने वाला उपकरण है?
(A) कार्य संतोष
(B) व्यक्तित्व लक्षण
(C) संगठनात्मक वातावरण
(D) नेतृत्व शैली

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

(C) उच्च प्रत्याशा दबाव पैदा करके सीधे कार्य असंतोष का कारण बनती है।
(D) प्रत्याशा संतुष्टि का एक माप है, न कि इसमें योगदान देने वाला कारक।

80. नागरिकों के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए अधिक पार्क और हरित स्थान बनाने की नगर योजना किसके सिद्धांतों का अनुप्रयोग है?
(A) खेल मनोविज्ञान
(B) पर्यावरणीय मनोविज्ञान
(C) संगठनात्मक मनोविज्ञान
(D) कार्मिक मनोविज्ञान

81. निम्नलिखित नेतृत्व सिद्धांतों को उनके उद्भव के लगभग कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. व्यवहारवादी सिद्धांत
2. गुण सिद्धांत
3. आकस्मिकता सिद्धांत
4. परिवर्तनकारी नेतृत्व
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 1, 2, 4

82. व्यायाम के प्रति अभिवृत्ति का 'व्यवहारात्मक' घटक होगा:
(A) वास्तव में सप्ताह में तीन बार व्यायामशाला जाना।
(B) यह विश्वास करना कि व्यायाम स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।
(C) व्यायाम के बाद प्रसन्नता अनुभव करना।
(D) अगले माह एक व्यायाम कार्यक्रम आरंभ करने की योजना बनाना।

83. भीड़भाड़ के प्रभावों के बारे में कौन सा कथन सबसे सटीक है?
(A) भीड़भाड़ सभी संस्कृतियों में आक्रामकता और असामाजिक व्यवहार की ओर ले जाती है।
(B) उच्च घनत्व वाला वातावरण हमेशा सामाजिक संबंधों और सहयोग को बढ़ाता है।
(C) प्रभाव व्यक्तिगत नियंत्रण और पूर्व अनुभवों द्वारा मध्यस्थ होते हैं।
(D) भीड़भाड़ का पशु व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है लेकिन मनुष्यों पर नहीं।

84. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. औद्योगिक सुरक्षा केवल शारीरिक चोटों को रोकने से संबंधित है, मनोवैज्ञानिक तनाव से नहीं।
II. एक 'अल्प-दुर्घटना' वह घटना है जिसका परिणाम चोट नहीं था लेकिन ऐसा होने की संभावना थी।
III. सुरक्षा प्रशिक्षण सबसे प्रभावी तब होता है जब यह कर्मचारी अनुकूलन के दौरान केवल एक बार होने वाली घटना हो।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल II
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

85. चयन के संदर्भ में, विश्वसनीयता का तात्पर्य है:
(A) वह सीमा जिस तक एक परीक्षण वह मापता है जिसका वह दावा करता है।
(B) परीक्षण सामग्री की कार्य-संबंधता।
(C) समय के साथ मापन प्रक्रिया की निरंतरता और स्थिरता।
(D) परीक्षण प्राप्तांक और भविष्य के कार्य प्रदर्शन के बीच सह-संबंध।

86. प्रशिक्षण आवश्यकता विश्लेषण करने का एक प्रमुख कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) यह सुनिश्चित करना कि सभी कर्मचारियों को समान प्रशिक्षण घंटे प्राप्त हों।
(B) यह निर्धारित करना कि क्या प्रशिक्षण प्रदर्शन संबंधी समस्या का उपयुक्त समाधान है।
(C) उपलब्ध सबसे महंगे प्रशिक्षण कार्यक्रम का चयन करना।
(D) प्रभावशीलता की परवाह किए बिना कानूनी आवश्यकता को पूरा करना।

87. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: संगठनात्मक वातावरण किसी विशेष समय पर संगठनात्मक परिवेश का एक चित्रण है।
कथन II: संगठनात्मक संस्कृति किसी संगठन के गहरे, अधिक स्थायी मूल्यों और मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

88. एक नेता जो दृष्टि और लक्ष्य की भावना प्रदान करता है, और जो गर्व अनुभव कराता है, वह परिवर्तनकारी नेतृत्व के किस घटक का प्रदर्शन कर रहा है?
(A) आदर्श प्रभाव या करिश्मा
(B) बौद्धिक प्रोत्साहन
(C) व्यक्तिगत विचार
(D) प्रेरणादायक अभिप्रेरणा

89. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (संगठनात्मक विकास हस्तक्षेप)
P. संवेदनशीलता प्रशिक्षण
Q. सर्वेक्षण प्रतिपुष्टि
R. प्रक्रिया परामर्श
S. टीम निर्माण
सूची II: (केंद्र बिंदु)
1. समस्याओं की पहचान करने और उन्हें हल करने के लिए प्रश्नावली और समूह चर्चा का उपयोग करना।

(C) नेता अधीनस्थों के एक छोटे समूह ("इन-ग्रुप") के साथ एक विशेष संबंध बनाते हैं।
(D) नेताओं को विशिष्ट प्रभावी व्यवहार प्रदर्शित करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है।

110. निम्नलिखित में से कौन कार्मिक चयन के लक्ष्य का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) कम से कम समय में अधिकतम आवेदकों को काम पर रखना।
(B) यह सुनिश्चित करना कि प्रत्येक आवेदक को नौकरी का प्रस्ताव दिया जाए।
(C) किसी भी माध्यम से आवेदकों की संख्या कम करना।
(D) सही भर्ती निर्णय लेने की संभावना को अधिकतम करना।

111. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): नियमित शारीरिक व्यायाम मानसिक स्वास्थ्य में सुधार से जुड़ा है।
कारण (R): व्यायाम एंडोर्फिन स्राव को बढ़ावा देता है, विक्षेप प्रदान करता है और मनोदशा में सुधार करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

112. वह सीमा जिस तक किसी कार्य के लिए "संपूर्ण" और पहचान योग्य कार्य के अंश को पूरा करने की आवश्यकता होती है, वह कहलाती है:
(A) कौशल विविधता
(B) कार्य पहचान
(C) कार्य महत्व
(D) स्वायत्तता

113. सामान्य जनसंख्या में व्यायाम और शारीरिक सुदृढ़ता को बढ़ावा देने में एक प्रमुख चुनौती है:
(A) इसके लाभों के प्रमाण की कमी।
(B) व्यायाम कार्यक्रमों के प्रति दीर्घकालिक निरंतरता बनाए रखने की कठिनाई।
(C) सभी के लिए व्यायामशाला सदस्यता की उच्च लागत।
(D) अधिकांश लोगों की व्यायाम में संलग्न होने की शारीरिक अक्षमता।

114. संगठन में निम्नलिखित संचार माध्यमों पर विचार कीजिए:
I. औपचारिक रिपोर्ट और ज्ञापन।
II. 'जनप्रवाद' या अनौपचारिक अफवाहें।
III. एक प्रबंधक का अधीनस्थ से संवाद।
इनमें से कौन संगठन में समग्र संचार प्रक्रिया का हिस्सा हो सकते हैं?
(A) केवल I और III
(B) केवल II
(C) केवल I और II
(D) I, II और III

115. प्रेरणा और कार्य संतोष के 'विषय-वस्तु सिद्धांतों' और 'प्रक्रिया सिद्धांतों' के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) विषय-वस्तु सिद्धांत प्रक्रिया सिद्धांतों की तुलना में अधिक आधुनिक हैं।
(B) प्रक्रिया सिद्धांत इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि 'क्या' प्रेरित करता है, जबकि विषय-वस्तु सिद्धांत इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि प्रेरणा 'कैसे' होती है।
(C) विषय-वस्तु सिद्धांत इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि 'क्या' प्रेरित करता है, जबकि प्रक्रिया सिद्धांत इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि प्रेरणा 'कैसे' होती है।
(D) विषय-वस्तु सिद्धांत केवल प्रबंधकों पर लागू होते हैं, जबकि प्रक्रिया सिद्धांत सभी कर्मचारियों पर लागू होते हैं।

116. एक संयंत्र में पाया गया कि दुर्घटना दर रात्रि पाली में सबसे अधिक है। जांच से पता चला कि अपर्याप्त रोशनी और श्रमिक थकान मुख्य कारण हैं। यह किसके महत्व को दर्शाता है?
(A) रात्रि पाली श्रमिकों की दुर्घटना प्रवणता।
(B) रात्रि पाली श्रमिकों के लिए वित्तीय प्रोत्साहनों की कमी।
(C) कंपनी की चयन प्रक्रिया की प्रभावहीनता।
(D) औद्योगिक सुरक्षा में स्थितिजन्य और मानवीय कारक।

117. मनोविज्ञान पर वायु प्रदूषण के प्रभावों पर शोध प्रदूषकों के उच्च स्तर और किसके बीच सह-संबंध का सुझाव देता है?
(A) पर-सामाजिक व्यवहार में वृद्धि।
(B) चिंता और अवसाद के स्तर में कमी।
(C) संज्ञानात्मक कार्य में कमी और चिड़चिड़ापन में वृद्धि।
(D) बच्चों में बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन।

118. किस अवधारणा को व्यवहार विज्ञान ज्ञान का उपयोग करते हुए, संगठन की 'प्रक्रियाओं' में नियोजित हस्तक्षेपों के माध्यम से संगठन की प्रभावशीलता और स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए एक नियोजित, संगठन-व्यापी प्रयास के रूप में परिभाषित किया गया है?
(A) कार्मिक चयन
(B) संगठनात्मक विकास
(C) रणनीतिक प्रबंधन
(D) गुणवत्ता नियंत्रण

119. कार्मिक चयन में उपयोग किया जाने वाला एक व्यवहारात्मक साक्षात्कार प्रश्न होगा:
(A) "आपकी सबसे बड़ी कमजोरियाँ क्या हैं?"
(B) "यदि कोई सहकर्मी अपना काम ठीक से नहीं कर रहा है, तो आप क्या करेंगे?"
(C) "आप पांच वर्ष में स्वयं को कहां देखते हैं?"
(D) "मुझे उस समय के बारे में बताएं जब आपको किसी कठिन ग्राहक से निपटना पड़ा था।"

संस्कृतियों के अनुसार भिन्न नहीं होती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(A) केवल III

(B) केवल I और II

(C) केवल I और III

(D) I, II और III

100. संचार प्रक्रिया में, वह माध्यम जिससे संदेश गमन करता है, कहलाता है:

(A) प्रेषक

(B) प्राप्तकर्ता

(C) प्रतिपुष्टि

(D) माध्यम

101. किर्कपैट्रिक के मॉडल के अनुसार, प्रशिक्षण मूल्यांकन के निम्नलिखित स्तरों को सरल से सबसे जटिल क्रम में व्यवस्थित करें:

1. परिणाम
2. व्यवहार
3. अधिगम
4. प्रतिक्रिया

(A) 4, 3, 2, 1

(B) 4, 2, 3, 1

(C) 4, 3, 2, 1

(D) 3, 4, 1, 2

102. एक संगठन जिसकी विशेषता कम विश्वास, उच्च भय और बंद संचार है, उसका वातावरण कैसा कहा जाता है?

(A) खराब वित्तीय स्थिति

(B) निम्न संगठनात्मक वातावरण

(C) निम्न बाजार हिस्सेदारी

(D) खराब उत्पाद पोर्टफोलियो

103. संगठनात्मक विकास का प्राथमिक उद्देश्य है:

(A) लागत में कटौती के माध्यम से अल्पकालिक लाभ बढ़ाना।

(B) खराब प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों और प्रबंधकों को अनुशासित करना।

(C) दक्षता में सुधार के लिए कार्यबल को छोटा करना।

(D) संगठन की प्रभावशीलता और कर्मचारी कल्याण में सुधार के लिए नियोजित परिवर्तन लागू करना।

104. इनमें से कौन सी तकनीक विशेष रूप से चिंता को प्रबंधित करके खेल प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए डिज़ाइन की गई है?

(A) प्रगतिशील मांसपेशी शिथिलन

(B) नकारात्मक आत्म-भाषण

(C) केवल परिणाम-उन्मुख लक्ष्य निर्धारण

(D) उत्तेजकों का अधिक सेवन

105. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।

कथन I: औद्योगिक दुर्घटनाएँ विशेष रूप से असुरक्षित कार्य परिस्थितियों के कारण होती हैं।

कथन II: कार्यकर्ता का व्यवहार, व्यक्तित्व लक्षण और थकान जैसी क्षणिक स्थितियाँ भी दुर्घटनाओं में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले कारक हो सकते हैं।

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।

(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।

(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

106. चयन के संदर्भ में, एक "मिथ्या सकारात्मक" त्रुटि तब होती है जब एक आवेदक:

(A) काम पर रखा जाता है लेकिन प्रदर्शन खराब रहता है।

(B) अस्वीकार कर दिया जाता है लेकिन उसने काम पर अच्छा प्रदर्शन किया होता।

(C) काम पर रखा जाता है और अच्छा प्रदर्शन करता है।

(D) अस्वीकार कर दिया जाता है और उसने खराब प्रदर्शन किया होता।

107. संगठनात्मक विकास कार्यक्रम का वह चरण जहाँ एक परामर्शदाता समस्याओं की प्रकृति और सीमा का पता लगाने के लिए संगठन के साथ कार्य करता है:

(A) हस्तक्षेप चरण

(B) मूल्यांकन चरण

(C) समाप्ति चरण

(D) निदान चरण

108. पर्यावरण के प्रति मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।

सूची I: (अवधारणा)

P. भीड़भाड़

Q. शोर

R. प्रदूषण

S. संवेदी अभाव

सूची II: (प्राथमिक मनोवैज्ञानिक प्रभाव)

1. एकाग्रता में बाधा और नींद में गड़बड़ी
2. मतिभ्रम और संज्ञानात्मक अक्षमता
3. उच्च घनत्व के कारण तनाव का आत्मनिष्ठ अनुभव
4. कल्याण में कमी और आक्रामकता बढ़ने की संभावना

कोड:

(A) P-3, Q-1, R-4, S-2

(B) P-1, Q-3, R-2, S-4

(C) P-3, Q-4, R-1, S-2

(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

109. नेतृत्व का नेता-सदस्य विनिमय सिद्धांत प्रस्तावित करता है कि:

(A) नेता द्वारा सभी अधीनस्थों के साथ समान व्यवहार किया जाता है।

(B) नेतृत्व की प्रभावशीलता केवल नेता के गुणों से निर्धारित होती है।

2. एक परामर्शदाता ग्राहक को प्रक्रिया घटनाओं को समझने और उन पर कार्रवाई करने में सहायता करता है।
3. टीम के सदस्यों के बीच विश्वास और खुलापन बढ़ाने के लिए उच्च-अंतःक्रिया समूह गतिविधियाँ।
4. पारस्परिक संबंधों और समूह गतिशीलता के बारे में जानने के लिए असंरचित समूह अंतःक्रिया।

कोड:
(A) P-1, Q-4, R-3, S-2
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

90. निर्णय लेने का वह मॉडल जिसमें व्यक्ति इष्टतम समाधान खोजने के बजाय प्रथम विकल्प को चुनते हैं जो "पर्याप्त रुप से अच्छा" होता है, कहलाता है:
(A) संतोषप्रद मॉडल
(B) तार्किक मॉडल
(C) अंतःप्रज्ञात्मक मॉडल
(D) राजनीतिक मॉडल

91. अनुसंधान में अक्सर उद्धृत नियमित शारीरिक व्यायाम का प्राथमिक मनोवैज्ञानिक लाभ है:
(A) व्यक्ति के बुद्धि लब्धि में महत्वपूर्ण वृद्धि।
(B) सभी आवर्ती दैनिक मनोवैज्ञानिक तनावों का उन्मूलन।
(C) कुल संवेदी अभाव के लिए व्यक्तिगत क्षमता में वृद्धि।
(D) चिंता निवारक और अवसादरोधी प्रभाव।

92. खेलों में "प्रदर्शन का गिरना" (चोकिंग) की घटना को सबसे अच्छी तरह किस रूप में वर्णित किया गया है?
(A) दबाव में प्रदर्शन में निरंतर सुधार।
(B) उच्च दबाव वाली स्थितियों में प्रदर्शन में महत्वपूर्ण गिरावट।
(C) प्रवाह और चरम प्रदर्शन की इष्टतम स्थिति।
(D) प्रतियोगिता के दौरान प्रयास की जानबूझकर कमी।

93. शहरी परिवेश में पर्यावरणीय तनाव का एक प्रमुख स्रोत, जो एकाग्रता और नींद में बाधा उत्पन्न करने की क्षमता के लिए जाना जाता है, वह है:
(A) संवेदी अभाव
(B) उच्च जनसंख्या घनत्व
(C) पर्यावरणीय शोर
(D) हरित स्थानों की कमी

94. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): एक अच्छी तरह से डिजाइन किए गए कार्य को कर्मचारियों को स्वायत्तता और प्रतिपुष्टि प्रदान करनी चाहिए।
कारण (R): 'कार्य विशेषता मॉडल' के अनुसार, ये मुख्य कार्य आयाम सकारात्मक मनोवैज्ञानिक स्थितियों की ओर ले जाते हैं, जो बदले में संतोष और प्रेरणा जैसे कार्य परिणामों में सुधार करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

95. निम्नलिखित में से कौन उच्च कार्य संतोष का संभावित परिणाम नहीं है?
(A) कार्यस्थल दुर्घटनाओं की उच्च दर
(B) निम्न कर्मचारी टर्नओवर
(C) निम्न अनुपस्थिति
(D) उच्च संगठनात्मक नागरिकता व्यवहार

96. निम्नलिखित में से कौन अहस्तक्षेपवादी नेतृत्व शैली की परिभाषित विशेषता है?
(A) नेता सभी निर्णय एकतरफा लेता है।
(B) नेता उत्तरदायित्व त्याग देता है और निर्णय लेने से बचता है।
(C) नेता निर्णय लेने की प्रक्रिया में समूह को सम्मिलित करता है।
(D) नेता अनुयायियों को एक प्रभावशाली दृष्टि के साथ प्रेरित करता है।

97. कर्मचारी के प्रदर्शन मानकों के सापेक्ष उसके वर्तमान या पिछले प्रदर्शन का मूल्यांकन करने की प्रक्रिया है:
(A) कार्य विश्लेषण
(B) निष्पादन मूल्यांकन
(C) भर्ती
(D) प्रशिक्षण आवश्यकता विश्लेषण

98. एक कंपनी एक नया सुरक्षा प्रोटोकॉल लागू करती है। इस प्रशिक्षण के 'व्यवहारात्मक' परिवर्तन घटक का मूल्यांकन करने का सबसे अच्छा तरीका निम्नलिखित में से कौन सा होगा?
(A) काम पर कर्मचारियों का अवलोकन करना कि वे नए प्रोटोकॉल का पालन कर रहे हैं या नहीं।
(B) कर्मचारियों से पूछना कि क्या उन्हें प्रशिक्षण सत्र पसंद आया।
(C) नए प्रोटोकॉल के उनके ज्ञान पर कर्मचारियों का परीक्षण करना।
(D) कंपनी के बीमा प्रीमियम में कमी की गणना करना।

99. पर्यावरणीय मनोविज्ञान से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. व्यक्तिगत स्थान सांस्कृतिक रूप से परिभाषित, परिवर्तनशील क्षेत्र है जिसे लोग अपने चारों ओर बनाए रखते हैं।
II. व्यक्तिगत स्थान का अतिक्रमण भीड़भाड़ की भावना का एक प्राथमिक कारण है।
III. आवश्यक व्यक्तिगत स्थान की मात्रा सार्वभौमिक है और

120. खेल मनोविज्ञान में, 'आत्म-भाषण' संदर्भित करता है:
(A) खिलाड़ी के आंतरिक संवाद या विचारों को।
(B) अपने प्रशिक्षक के साथ खिलाड़ी की बातचीत को।
(C) मीडिया के साथ मैच के बाद के साक्षात्कार को।
(D) मैदान पर टीम के साथियों के बीच संचार को।

121. प्रति इकाई क्षेत्र में लोगों के भौतिक माप और उस स्थिति के मनोवैज्ञानिक अनुभव के बीच के अंतर को क्रमशः किन शब्दों द्वारा सबसे अच्छी तरह व्यक्त किया जाता है?
(A) भीड़भाड़ और घनत्व
(B) प्रदूषण और शोर
(C) घनत्व और भीड़भाड़
(D) अभाव और अतिभार

122. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: नेतृत्व की भूमिका आदेश और नियंत्रण तक सीमित है।
कथन II: आधुनिक नेतृत्व सिद्धांत अनुयायियों को सशक्त बनाने, प्रेरित करने और विकसित करने में नेता की भूमिका पर जोर देते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

123. एक निर्णय लेने वाला समूह जो सटीक विश्लेषण और आलोचनात्मक मूल्यांकन के बजाय सद्भाव और सुसंगतता को महत्व देता है, किसके प्रति संवेदनशील होता है?
(A) समूह ध्रुवीकरण
(B) सामाजिक शिथिलन
(C) विचार-मंथन
(D) समूह-चिंतन

124. कार्मिक चयन के संदर्भ में कार्य विश्लेषण का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) नौकरी के लिए उचित वेतन निर्धारित करना।
(B) सफल कार्य प्रदर्शन के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और क्षमताओं की पहचान करना।
(C) नौकरी की रिक्तियों के लिए एक आकर्षक विज्ञापन बनाना।
(D) वर्तमान कर्मचारी के प्रदर्शन का मूल्यांकन करना।

125. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): संगठनात्मक वातावरण कर्मचारी मनोबल और उत्पादकता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकता है।
कारण (R): विश्वास, समर्थन और मान्यता द्वारा पहचाने जाने वाला एक सकारात्मक वातावरण मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करता है और जुड़ाव को बढ़ावा देता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

126. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मनोवैज्ञानिक क्षेत्र)
P. खेल मनोविज्ञान
Q. संगठनात्मक मनोविज्ञान
R. पर्यावरणीय मनोविज्ञान
S. कार्मिक मनोविज्ञान
सूची II: (प्राथमिक केंद्र बिंदु)
1. कार्यस्थल में कर्मचारी व्यवहार को समझना और प्रभावित करना।
2. भौतिक परिवेश के मनोवैज्ञानिक प्रभाव।
3. कर्मचारियों के चयन और प्रशिक्षण की प्रक्रिया में मनोविज्ञान का अनुप्रयोग।
4. एथलेटिक प्रदर्शन और कल्याण को बढ़ाना।
कोड:
(A) P-1, Q-4, R-3, S-2
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

127. निम्नलिखित में से कौन संगठनात्मक वातावरण का आयाम नहीं है?
(A) कंपनी के शेयर की कीमत
(B) स्वायत्तता
(C) सामंजस्य
(D) समर्थन

128. कार्मिक चयन में 'स्थितिजन्य विशिष्टता' के सिद्धांत के अनुसार, कार्य प्रदर्शन की भविष्यवाणी के लिए चयन परीक्षण की वैधता:
(A) सभी नौकरियों और संगठनों में समान होती है।
(B) एक नौकरी या स्थिति से दूसरी स्थिति में काफी भिन्न हो सकती है।
(C) संज्ञानात्मक क्षमता परीक्षणों के लिए हमेशा उच्चतम होती है।
(D) परीक्षण आयोजित करने की लागत से निर्धारित होती है।

129. कार्य संतोष के संभावित घटकों के रूप में निम्नलिखित पर विचार कीजिए:
I. वेतन से संतुष्टि।
II. पर्यवेक्षण से संतुष्टि।
III. सहकर्मियों से संतुष्टि।
इनमें से कौन से घटक कर्मचारी के समग्र कार्य संतोष में योगदान करते हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III

216. यह विश्वास कि दुर्घटनाएं मुख्य रूप से व्यक्तियों के असुरक्षित कार्यों के कारण होती हैं, जिनमें दुर्घटनाओं के प्रति जन्मजात प्रवृत्ति हो सकती है, किसका आधार है?
(A) दुर्घटना प्रवणता सिद्धांत
(B) मानवीय कारक दृष्टिकोण
(C) सुरक्षा के प्रति स्थितिजन्य दृष्टिकोण
(D) सुरक्षा वातावरण मॉडल

217. एक कंपनी एक कर्मचारी की अपने काम पर उत्तरदायित्व और नियंत्रण के स्तर को बढ़ाने का निर्णय लेती है, इस प्रक्रिया को कहा जाता है:
(A) कार्य आवर्तन
(B) कार्य विस्तार
(C) कार्य संवर्धन
(D) कार्य मूल्यांकन

218. मनोवैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से खिलाड़ी के प्रदर्शन को बेहतर बनाने का मुख्य लक्ष्य है:
(A) खिलाड़ी को उनकी क्षमता प्राप्त करने और लगातार प्रदर्शन करने में सहायता करना।
(B) यह सुनिश्चित करना कि खिलाड़ी प्रत्येक प्रतियोगिता जीते।
(C) शारीरिक प्रशिक्षण को मानसिक प्रशिक्षण से प्रतिस्थापित करना।
(D) विरोधियों के व्यवहार का विश्लेषण करना।

219. संचार के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ऊपर की ओर संचार संगठन में निचले स्तर से उच्च स्तर की ओर प्रवाहित होता है।
II. पार्श्व संचार एक ही कार्य समूह के सदस्यों के बीच होता है।
III. नीचे की ओर संचार का उपयोग प्रबंधकों द्वारा लक्ष्य निर्धारित करने और निर्देश प्रदान करने के लिए किया जाता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

220. संवेदी अभाव के नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव दर्शाते हैं कि:
(A) मनुष्य शून्य बाहरी उत्तेजन वाले वातावरण में सबसे अच्छा प्रदर्शन करते हैं।
(B) मानव तंत्रिका तंत्र को उत्तेजन की निरंतर और विविध धारा की आवश्यकता होती है।
(C) भीड़भाड़ सबसे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय तनाव कारक है।
(D) ध्वनि प्रदूषण के कोई दीर्घकालिक परिणाम नहीं होते हैं।

221. "360-डिग्री प्रतिपुष्टि" प्रणाली निष्पादन मूल्यांकन का एक उपकरण है जहाँ प्रतिपुष्टि किससे एकत्र की जाती है?
(A) केवल कर्मचारी के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षक से।
(B) केवल कर्मचारी के साथियों से।
(C) कर्मचारी, उसके पर्यवेक्षक, साथियों, अधीनस्थों और कभी-कभी ग्राहकों से।
(D) एक बाहरी परामर्शदाता से जो कर्मचारी का अवलोकन करता है।

222. किसी भी संगठनात्मक विकास कार्यक्रम में सबसे उपयुक्त प्रारंभिक चरण है:
(A) टीम निर्माण अभ्यास लागू करना।
(B) मौजूदा प्रबंधन टीम को हटाना।
(C) कंपनी के मिशन वक्तव्य को फिर से लिखना।
(D) संगठन की समस्याओं का निदान करना।

223. हर्ज़बर्ग के सिद्धांत के अनुसार, कौन सा कारक अनुपस्थित होने पर असंतोष उत्पन्न करता है, लेकिन उसकी उपस्थिति आवश्यक रूप से उच्च संतोष की ओर नहीं ले जाती है?
(A) वेतन
(B) मान्यता
(C) उत्तरदायित्व
(D) उपलब्धि

224. नीचे दो कथन दिए गए है, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): एक नेता का व्यवहार संगठनात्मक वातावरण को महत्वपूर्ण रूप से आकार दे सकता है।
कारण (R): समर्थन और मान्यता प्रदान करने वाले नेता विश्वास को बढ़ावा देते हैं जबकि दंडात्मक नेता भय का वातावरण बनाते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

225. शारीरिक सुदृढ़ता को बढ़ावा देने का प्राथमिक मनोवैज्ञानिक कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) एथलेटिक परिधानों की बिक्री बढ़ाना।
(B) तनाव कम करना और मनोदशा में सुधार करना।
(C) अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों में जीत सुनिश्चित करना।
(D) संतुलित आहार की आवश्यकता को समाप्त करना।

226. संगठन की अपनी नीतियों, प्रथाओं और प्रक्रियाओं की साझा धारणाएं उसका क्या निर्मित करती हैं?
(A) संगठनात्मक वातावरण
(B) संगठनात्मक संरचना
(C) वित्तीय संपत्ति
(D) बाजार रणनीति

(A) निर्णय मानदंडों की पहचान करना।
(B) विकल्पों का विकास करना।
(C) निर्णय की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
(D) सर्वोत्तम विकल्प का चयन करना।

142. एक कार्य जो व्यक्ति को कार्य निर्धारित करने और उसे पूरा करने में उपयोग की जाने वाली प्रक्रियाओं को निर्धारित करने में उच्च स्तर की स्वतंत्रता और विवेक प्रदान करता है, वह किस मुख्य कार्य आयाम में उच्च है?
(A) कौशल विविधता
(B) कार्य महत्व
(C) प्रतिपुष्टि
(D) स्वायत्तता

143. खेल में लक्ष्य निर्धारण के उपयोग का समर्थन करने वाला मनोवैज्ञानिक सिद्धांत यह है कि:
(A) विशिष्ट, चुनौतीपूर्ण लक्ष्य बिना किसी लक्ष्य या "अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें" जैसे लक्ष्यों की तुलना में उच्च प्रदर्शन की ओर ले जाते हैं।
(B) निराशा से बचने के लिए केवल आसानी से प्राप्त होने वाले लक्ष्य ही निर्धारित किए जाने चाहिए।
(C) खिलाड़ियों को अपने प्रदर्शन लक्ष्यों के बारे में पता नहीं होना चाहिए।
(D) लक्ष्य निर्धारण केवल व्यक्तिगत खेलों के लिए प्रभावी है, टीम खेलों के लिए नहीं।

144. कौन सा संगठनात्मक विकास हस्तक्षेप साथ मिलकर कार्य करने वाले कर्मचारियों के समूहों की प्रभावशीलता में सुधार करने पर ध्यान केंद्रित करता है?
(A) संवेदनशीलता प्रशिक्षण
(B) टीम निर्माण
(C) सर्वेक्षण प्रतिपुष्टि
(D) कार्य पुनर्रचना

145. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:
I. शोर
II. भीड़भाड़
III. प्रदूषण
इनमें से कौन से पर्यावरणीय तनाव कारक पर्यावरणीय मनोविज्ञान के अंतर्गत अध्ययन किए जाते हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

146. एक संयंत्र प्रबंधक ने मामूली दुर्घटनाओं की उच्च दर देखी। व्यक्तियों को दोष देने के बजाय, वह मशीन सुरक्षा कवच को फिर से डिजाइन करने और कार्य क्षेत्र में रोशनी में सुधार करने का निर्णय लेती है। उसका दृष्टिकोण किस पर केंद्रित है?
(A) सुरक्षा में सुधार के लिए स्थितिजन्य कारकों को बदलना।
(B) दुर्घटना-प्रवण कर्मचारियों की पहचान करना और उन्हें हटाना।
(C) एक नई निष्पादन मूल्यांकन प्रणाली लागू करना।
(D) श्रमिकों को प्रेरित करने के लिए उत्पादन कोटा बढ़ाना।

147. कार्मिक चयन वैधता के संदर्भ में "मानदंड" का तात्पर्य है:
(A) कर्मचारियों के चयन के लिए उपयोग किया जाने वाला परीक्षण।
(B) नौकरी के लिए आवेदन करने वाले लोगों की संख्या।
(C) सफल कार्य प्रदर्शन का मानक।
(D) चयन प्रक्रिया की लागत।

148. कार्य अभिवृत्ति का एक घटक, कार्य का "संज्ञानात्मक" मूल्यांकन, इसमें शामिल है:
(A) कार्य परिवेश के प्रति एक भावनात्मक प्रतिक्रिया।
(B) कर्मचारी का नौकरी छोड़ने या बने रहने का इरादा।
(C) अपने पर्यवेक्षक के प्रति एक अचेतन पूर्वाग्रह।
(D) कार्य की विशेषताओं, जैसे वेतन और समय का एक तार्किक मूल्यांकन।

149. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (नेतृत्व शैली)
P. निरंकुश
Q. लोकतांत्रिक
R. अहस्तक्षेपवादी
S. परिवर्तनकारी
सूची II: (प्रमुख व्यवहार)
1. निर्णय लेने में अधीनस्थों को शामिल करता है।
2. समूह को पूर्ण स्वतंत्रता देता है।
3. कार्य के तरीके तय करता है और एकतरफा निर्णय लेता है।
4. अनुयायियों को स्वार्थ से ऊपर उठने के लिए प्रेरित करता है।
कोड:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

150. संवेदी अभाव के अध्ययनों से एक प्रमुख निष्कर्ष यह है कि मानव मस्तिष्क को संवेदी निवेश के एक निश्चित स्तर की आवश्यकता होती है:
(A) गहरी नींद की स्थिति में प्रवेश करने के लिए।
(B) सामान्य रुप से कार्य करने और वास्तविकता की एक स्थिर भावना बनाए रखने के लिए।
(C) अवांछित यादों को मिटाने के लिए।
(D) रचनात्मक उत्पादन को अनिश्चित काल तक बढ़ाने के लिए।

151. तनाव की प्रतिक्रिया, सामान्य अनुकूलन सिंड्रोम के चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. थकावट

2. सचेतता
3. प्रतिरोध

(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 3, 1

152. कार्य संतोष से संबंधित प्रेरणा का कौन सा सिद्धांत एक 'प्रक्रिया सिद्धांत' है?
(A) व्रूम का प्रत्याशा सिद्धांत
(B) मास्लो का आवश्यकताओं का पदानुक्रम
(C) हर्ज़बर्ग का द्वि-कारक सिद्धांत
(D) एल्डरफ़र का ERG सिद्धांत

153. एक बास्केटबॉल प्रशिक्षक अपनी टीम को शांत करने के लिए विराम लेता है जब वे बहुत अधिक उत्साहित होकर गलतियाँ करने लगते हैं। प्रशिक्षक टीम के किस पहलू को प्रबंधित करने का प्रयास कर रहा है?
(A) पोषण का सेवन
(B) दीर्घकालिक करियर लक्ष्य
(C) उत्तेजन स्तर
(D) सामाजिक शिथिलन

154. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: संगठनात्मक विकास सामान्यतः किसी विशिष्ट समस्या के लिए एक अल्पकालिक समाधान है।
कथन II: संगठनात्मक विकास नियोजित परिवर्तन की एक दीर्घकालिक, निरंतर प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य संगठन की अनुकूलन क्षमता में सुधार करना है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

155. दो अलग-अलग समय बिंदुओं पर उन्हीं लोगों को एक ही परीक्षण देकर स्थापित चयन परीक्षण की विश्वसनीयता कहलाती है:
(A) अर्ध-विभाजन विश्वसनीयता
(B) अंतर-मूल्यांकनकर्ता विश्वसनीयता
(C) समानांतर प्रारूप विश्वसनीयता
(D) परीक्षण-पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता

156. संचार में प्रतिपुष्टि महत्वपूर्ण है क्योंकि यह:
(A) अंतिम चरण है जो संचार प्रक्रिया को समाप्त करता है।
(B) प्रेषक को यह निर्धारित करने की अनुमति देता है कि क्या संदेश प्राप्त हुआ और सही ढंग से समझा गया।
(C) विनिमय में प्राथमिक संदेश के रूप में कार्य करता है।
(D) शोर का एक रूप है जो कूटवाचन में हस्तक्षेप करता है।

157. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): पर्यावरणीय मनोविज्ञान में घनत्व और भीड़भाड़ के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है।
कारण (R): भीड़भाड़ की नकारात्मक स्थिति का अनुभव करने के लिए उच्च भौतिक घनत्व आवश्यक है लेकिन पर्याप्त नहीं है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

158. निम्नलिखित में से कौन संगठनों में नेतृत्व की प्रमुख भूमिका का वर्णन करता है?
(A) पूरी तरह से प्रशासनिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) अधीनस्थों के साथ सभी प्रकार के संचार से बचना।
(C) सभी परिस्थितियों में यथास्थिति बनाए रखना।
(D) संगठनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कर्मचारियों को प्रभावित और प्रेरित करना।

159. कार्य विवरणात्मक सूचकांक कार्य के किन पांच पहलुओं से संतोष को मापता है?
(A) कार्य स्वयं, वेतन, पदोन्नति, पर्यवेक्षण और सहकर्मी।
(B) स्वायत्तता, प्रतिपुष्टि, कार्य महत्व, कौशल विविधता और कार्य पहचान।
(C) नेतृत्व, वातावरण, संस्कृति, रणनीति और संरचना।
(D) सुरक्षा, संरक्षा, वेतन, प्रतिष्ठा और आत्म-वास्तविकरण।

160. किस प्रकार की वैधता इस बात से संबंधित है कि चयन उपाय की विषय-वस्तु कार्य की वास्तविक विषय-वस्तु का कितना अच्छा प्रतिनिधित्व करती है?
(A) मानदंड-संबंधी वैधता
(B) विषय-वस्तु वैधता
(C) संरचनात्मक वैधता
(D) समवर्ती वैधता

161. एक कंपनी जो कर्मचारियों को व्यायाम की दिनचर्या बनाए रखने में सहायता के लिए व्यायामशाला प्रदान करती है और वेलनेस कार्यक्रम चलाती है, वह किसे बढ़ावा देने की कोशिश कर रही है?
(A) औद्योगिक सुरक्षा
(B) व्यायाम निरंतरता और शारीरिक सुदृढ़ता
(C) संगठनात्मक विकास
(D) संवेदी अभाव

162. संगठनात्मक वातावरण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह कार्य परिवेश के मापनीय गुणों का एक समूह है।
II. यह वहां काम करने वाले लोगों की सामूहिक धारणाओं पर आधारित है।
III. यह नेतृत्व शैली और संगठनात्मक संरचना से पूरी तरह स्वतंत्र है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

163. एक स्थितिजन्य साक्षात्कार प्रश्न की विशेषता यह है कि इसमें आवेदक से पूछा जाता है:
(A) पिछले अनुभव का वर्णन करने के लिए।
(B) अपने दीर्घकालिक करियर लक्ष्यों को बताने के लिए।
(C) वह एक काल्पनिक कार्य-संबंधी परिदृश्य में कैसा व्यवहार करेगा।
(D) पिछले नियोक्ताओं से संदर्भ प्रदान करने के लिए।

164. व्यक्तियों द्वारा व्यक्तिगत रूप से काम करने की तुलना में समूह में सामूहिक रूप से काम करने पर कम प्रयास करने की प्रवृत्ति कहलाती है:
(A) सामाजिक सुगमीकरण
(B) समूह-चिंतन
(C) वि-वैयक्तिकीकरण
(D) सामाजिक शिथिलन

165. औद्योगिक परिवेश में सुरक्षा कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य है:
(A) दुर्घटनाओं के बाद उनके लिए दोष मढ़ना।
(B) बीमा के लिए न्यूनतम कानूनी आवश्यकताओं को पूरा करना।
(C) दुर्घटनाओं और चोटों की आवृत्ति और गंभीरता को कम करना।
(D) जोखिमों की परवाह किए बिना उत्पादन की गति बढ़ाना।

166. नेतृत्व के फ़ीडलर के आकस्मिकता मॉडल के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन स्थितिजन्य चर नहीं है?
(A) नेता-सदस्य संबंध
(B) नेता का करिश्मा
(C) कार्य संरचना
(D) पद शक्ति

167. किसी विशिष्ट कार्य को सफलतापूर्वक करने या किसी निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने की खिलाड़ी की क्षमता में विश्वास को जाना जाता है:
(A) आत्म-सम्मान
(B) आत्म-जागरूकता
(C) आत्म-आलोचना
(D) आत्म-प्रभावकारिता

168. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सिद्धांत/मॉडल)
P. हर्ज़बर्ग का द्वि-कारक सिद्धांत
Q. व्रूम का प्रत्याशा सिद्धांत
R. मैकग्रेगर का सिद्धांत X/Y
S. फ़ीडलर का आकस्मिकता मॉडल
सूची II: (केंद्रीय अवधारणा)
1. वैलेंस, साधनता, प्रत्याशा
2. प्रेरक और हाइजीन कारक
3. नेतृत्व शैली और स्थितिजन्य अनुकूलता के बीच मेल
4. मानव स्वभाव और कार्य प्रेरणा के बारे में धारणाएं
कोड:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

169. कार्य प्रदर्शन पर शोर के प्रभाव के संबंध में एक प्रमुख निष्कर्ष क्या है?
(A) शोर सभी प्रकार के कार्यों पर प्रदर्शन में सुधार करता है।
(B) कार्य प्रदर्शन पर शोर का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(C) शोर, विशेष रूप से यदि रुक-रुक कर और अनियंत्रित हो, तो जटिल कार्यों पर प्रदर्शन को बाधित करता है।
(D) शोर केवल सरल, दोहराव वाले कार्यों पर प्रदर्शन को बाधित करता है।

170. निम्नलिखित में से कौन कार्य संतोष की सबसे व्यापक परिभाषा है?
(A) किसी के कार्य या कार्य अनुभवों के मूल्यांकन से उत्पन्न सुखद या सकारात्मक भावनात्मक स्थिति।
(B) कर्मचारी द्वारा अर्जित धन की मात्रा।
(C) सहकर्मियों के साथ संघर्ष की अनुपस्थिति।
(D) कर्मचारी की उत्पादकता का स्तर।

171. एक प्रशिक्षण आवश्यकता विश्लेषण में सामान्यतः विश्लेषण के निम्नलिखित सभी स्तर शामिल होते हैं, सिवाय:
(A) संगठनात्मक विश्लेषण
(B) व्यक्ति विश्लेषण
(C) कार्य विश्लेषण
(D) वित्तीय बाजार विश्लेषण

172. नीचे दो कथन दिए गए है, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): संगठनात्मक विकास एक मूल्य-आधारित क्षेत्र है।
कारण (R): संगठनात्मक विकास हस्तक्षेप विशुद्ध रूप से आर्थिक मानकों के बजाय विश्वास और सहयोग जैसे मानवतावादी मूल्यों को प्राथमिकता देते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

(C) केवल I और III
(D) I, II और III

130. नेतृत्व का "महान व्यक्ति" सिद्धांत एक प्रारंभिक दृष्टिकोण है जो निम्नलिखित में से किसके सर्वाधिक समान है?
(A) गुण सिद्धांत
(B) व्यवहारवादी सिद्धांत
(C) आकस्मिकता सिद्धांत
(D) स्थितिजन्य सिद्धांत

131. संचार प्रक्रिया के बुनियादी चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें:
1. कूटवाचन
2. कूटलेखन
3. संदेश
4. माध्यम
5. प्रेषक
(A) 2, 5, 3, 4, 1
(B) 5, 3, 2, 4, 1
(C) 5, 2, 3, 4, 1
(D) 3, 5, 2, 1, 4

132. वह मनोवैज्ञानिक स्थिति जहाँ किसी कार्य पर व्यक्ति के प्रदर्शन में दूसरों की मात्र उपस्थिति से सुधार होता है, कहलाती है:
(A) सामाजिक शिथिलन
(B) वि-वैयक्तिकीकरण
(C) समूह-चिंतन
(D) सामाजिक सुगमीकरण

133. एक प्रबंधक जो कार्य या अधीनस्थों की परिपक्वता की परवाह किए बिना 'एक ही प्रकार का' नेतृत्व दृष्टिकोण अपनाता है, वह किसके केंद्रीय आधार की अनदेखी कर रहा है?
(A) नेतृत्व के गुण सिद्धांत।
(B) नेतृत्व के व्यवहारवादी सिद्धांत।
(C) नेतृत्व के आकस्मिकता और स्थितिजन्य सिद्धांत।
(D) नेतृत्व का "महान व्यक्ति" सिद्धांत।

134. पर्यावरणीय मनोविज्ञान में, 'व्यक्तिगत स्थान' का तात्पर्य है:
(A) व्यक्ति के स्वामित्व वाला भौतिक क्षेत्र, जैसे उसका घर।
(B) किसी व्यक्ति के चारों ओर एक अदृश्य सीमा जिसमें दूसरे प्रवेश नहीं कर सकते।
(C) प्रति नागरिक उपलब्ध सार्वजनिक पार्क क्षेत्र की मात्रा।
(D) इमारत के भीतर एक निर्दिष्ट शांत कमरा।

135. कार्य अभिवृत्तियों के अध्ययन में "भावात्मक" क्रांति ने किसके महत्व पर जोर दिया?
(A) कार्य का तार्किक, संज्ञानात्मक मूल्यांकन।
(B) कार्य का आर्थिक मूल्य।
(C) कार्यस्थल की भौतिक स्थितियाँ।
(D) मनोदशा, भावनाएँ और स्वभाव संबंधी कारक।

136. औद्योगिक दुर्घटनाओं को रोकने के लिए एक प्रमुख रणनीति कार्यकर्ता और कार्य परिवेश के बीच 'मेल' में सुधार करना है। यह दृष्टिकोण किसके लिए केंद्रीय है?
(A) मानवीय कारक मनोविज्ञान (एर्गोनॉमिक्स)
(B) कार्मिक चयन
(C) संगठनात्मक विकास
(D) लेन-देन संबंधी नेतृत्व

137. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: कार्य-बाह्य प्रशिक्षण विधियों में व्याख्यान और प्रतिरूपण जैसी तकनीकें शामिल हैं।
कथन II: कार्य-स्थल प्रशिक्षण विधियों में कार्य आवर्तन और शिक्षण जैसी तकनीकें शामिल हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

138. किसी खेल में स्वयं को सफल होते देखने के लिए मानस-चित्रण का उपयोग किस उद्देश्य को बढ़ाने के लिए की जाने वाली तकनीक है?
(A) आत्मविश्वास और प्रदर्शन
(B) शारीरिक शक्ति
(C) टीम संघर्ष
(D) घबराहट की स्थिति तक उत्तेजन

139. प्रारंभिक 'दुर्घटना प्रवणता' अनुसंधान की एक प्रमुख आलोचना यह थी कि इसने:
(A) स्थितिजन्य और पर्यावरणीय कारकों की भूमिका पर अत्यधिक बल दिया।
(B) प्रशिक्षण और सुरक्षा प्रक्रियाओं पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित किया।
(C) उद्योग में व्यावहारिक अनुप्रयोग के लिए बहुत जटिल था।
(D) बार-बार होने वाली दुर्घटनाओं की सांख्यिकीय संभावना पर विचार करने में विफल रहा।

140. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): असंरचित साक्षात्कार को सामान्यतः संरचित साक्षात्कार की तुलना में कम वैध माना जाता है।
कारण (R): असंरचित साक्षात्कारों में व्यक्तिपरकता और पूर्वाग्रह समग्र विश्वसनीयता और कार्य-संबंधित भविष्यसूचक वैधता को कम करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

141. तार्किक निर्णय लेने के मॉडल में अंतिम चरण है:

प्रभावित करते हैं। इस मॉडल का उपयोग मुख्य रूप से समझने के लिए किया जाता है:
(A) कार्य संतोष और प्रेरणा
(B) औद्योगिक दुर्घटनाएं
(C) संगठनात्मक संचार
(D) कार्मिक चयन

185. एक जिमनास्ट एक कठिन अभ्यास आरंभ करने से पहले "मैं यह कर सकता हूँ" जैसे सकारात्मक आत्म-भाषण का उपयोग करती है। यह किसे बढ़ाने का एक मनोवैज्ञानिक कौशल है?
(A) शारीरिक लचीलापन
(B) अंकों का निर्णय
(C) आत्मविश्वास और एकाग्रता
(D) टीम सामंजस्य

186. संगठनात्मक मनोविज्ञान के इतिहास की निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. हॉथोर्न अध्ययन
2. संगठनात्मक विकास को प्रभावित करने वाले मानवतावादी मनोविज्ञान का उदय
3. एफ.डब्ल्यू. टेलर द्वारा "वैज्ञानिक प्रबंधन"
4. परिवर्तनकारी नेतृत्व सिद्धांतों का विकास

(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 2, 3, 1, 4

187. 'संगठनात्मक नागरिकता व्यवहार' शब्द का तात्पर्य है:
(A) औपचारिक कार्य विवरण में सूचीबद्ध मुख्य कर्तव्य।
(B) कॉर्पोरेट चुनावों में मतदान करने का कर्मचारी का अधिकार।
(C) मुआवजे प्रणालियों द्वारा स्पष्ट रूप से पुरस्कृत व्यवहार।
(D) औपचारिक कार्य आवश्यकताओं के बाहर स्वैच्छिक सहायता।

188. निर्णय लेने में 'सीमित तार्किकता' का अर्थ है कि व्यक्ति:
(A) पूर्ण और पूरी जानकारी के साथ निर्णय लेते हैं।
(B) सूचना संसाधित करने की अपनी क्षमता में सीमित हैं और इस प्रकार 'संतोष' करते हैं।
(C) हमेशा सबसे अतार्किक विकल्प चुनते हैं।
(D) विशुद्ध रूप से भावनात्मक आवेगों के आधार पर निर्णय लेते हैं।

189. नीचे दो कथन दिए गए है, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): खेल मनोविज्ञान का एक प्राथमिक लक्ष्य खिलाड़ियों को उनकी क्षमताओं की ऊपरी सीमा में लगातार प्रदर्शन करने में सहायता करना है।
कारण (R): यह खिलाड़ियों को प्रदर्शन के मानसिक पहलुओं को प्रबंधित करने के लिए मनोवैज्ञानिक कौशल, जैसे लक्ष्य निर्धारण और मानस-चित्रण सिखाकर प्राप्त किया जाता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

190. एक प्रयोग जिसमें प्रतिभागियों को लंबे समय तक अंधेरे, ध्वनि-रोधी कक्ष में रखा जाता है, किसके प्रभावों का अध्ययन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है?
(A) भीड़भाड़
(B) ध्वनि प्रदूषण
(C) पर्यावरणीय सामर्थ्य
(D) संवेदी अभाव

191. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (शब्द)
P. कार्य विशिष्टता
Q. कार्य विवरण
R. कार्य मूल्यांकन
S. कार्य डिजाइन

सूची II: (केंद्र बिंदु)
1. कार्य के कार्यों, कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का विवरण।
2. वेतन संरचना स्थापित करने के लिए कार्यों के सापेक्ष मूल्य का निर्धारण।
3. दक्षता और कर्मचारी संतोष बढ़ाने के लिए कार्य की संरचना करना।
4. कार्य करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और क्षमताओं का विवरण।

कोड:
(A) P-1, Q-4, R-2, S-3
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

192. एक प्रभावी सुरक्षा कार्यक्रम का एक प्रमुख घटक है:
(A) एक दंडात्मक दृष्टिकोण जो हर छोटी उल्लंघन की सजा देता है।
(B) नियमित सुरक्षा प्रशिक्षण और संचार।
(C) निचले स्तर के कर्मचारियों से सुरक्षा प्रक्रियाओं को गुप्त रखना।
(D) यह मान लेना कि सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सामान्य ज्ञान ही पर्याप्त है।

193. वह सीमा जिस तक एक नेता के कार्य संबंधों में आपसी विश्वास, अधीनस्थों के विचारों के लिए सम्मान और उनकी भावनाओं के प्रति विचार होने की संभावना होती है, कहलाती है:
(A) संरचना प्रारंभ करना
(B) विचारशीलता
(C) पद शक्ति
(D) उत्पादन अभिविन्यास

173. लोग खेल और व्यायाम के परिवेश में कैसा व्यवहार करते हैं और कौन से मनोवैज्ञानिक कारक उनकी भागीदारी और प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं, इसका अध्ययन है:
(A) पर्यावरणीय मनोविज्ञान
(B) औद्योगिक मनोविज्ञान
(C) खेल मनोविज्ञान
(D) नैदानिक मनोविज्ञान

174. निम्नलिखित में से कौन 'कार्य-स्थल' प्रशिक्षण विधि का एक उदाहरण है?
(A) मामला अध्ययन पद्धति
(B) वेस्टिब्यूल प्रशिक्षण
(C) प्रतिरुपण अभ्यास
(D) कोचिंग/मेंटरिंग

175. एक बड़ी भीड़ में अपने कार्यों के लिए 'अनाम' और कम जवाबदेह होने की भावना एक ऐसी घटना को जन्म दे सकती है जिसे कहा जाता है:
(A) वि-वैयक्तिकीकरण
(B) सामाजिक सुगमीकरण
(C) वैयक्तिकरण
(D) सामाजिक चिंता

176. कौन सा कथन कार्य अभिवृत्तियों और कार्य संतोष के बीच संबंध का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) कार्य अभिवृत्ति और कार्य संतोष असंबंधित अवधारणाएँ हैं।
(B) कार्य संतोष एक विशिष्ट अभिवृत्ति है जो एक व्यक्ति अपने कार्य के प्रति रखता है।
(C) कार्य अभिवृत्ति एक व्यवहार है, जबकि कार्य संतोष एक भावना है।
(D) कार्य संतोष एक व्यापक अवधारणा है, जबकि कार्य अभिवृत्ति इसका एक विशिष्ट घटक है।

177. निर्णय लेने में 'अनुमानी' को सबसे अच्छी तरह इस रुप में वर्णित किया गया है:
(A) एक जटिल एल्गोरिदम जो इष्टतम समाधान की गारंटी देता है।
(B) त्वरित निर्णय लेने के लिए उपयोग किया जाने वाला मानसिक संक्षिप्त मार्ग।
(C) एक प्रकार का पूर्वाग्रह जो हमेशा गलत निर्णय की ओर ले जाता है।
(D) विचार-विमर्श की औपचारिक प्रक्रिया।

178. किसी संगठन के भीतर एक मजबूत सुरक्षा वातावरण की विशेषता है:
(A) सुरक्षा के प्रति प्रबंधन की प्रतिबद्धता और कर्मचारियों की भागीदारी।
(B) दुर्घटनाओं के लिए व्यक्तियों को दोष देने पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) बहुत कम और खराब तरीके से संप्रेषित सुरक्षा नीतियां।
(D) यह विश्वास कि दुर्घटनाएं अपरिहार्य हैं और कार्य का हिस्सा हैं।

179. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: नेतृत्व प्रबंधन के समान ही है।
कथन II: प्रबंधन जटिलता से निपटने के बारे में है, जबकि नेतृत्व परिवर्तन से निपटने के बारे में है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

180. एक व्यक्ति जो मानता है कि खेलों में सफलता उसकी अपनी कड़ी मेहनत और क्षमता के कारण है, उसके बारे में कहा जाता है कि उसका है:
(A) बाहरी कारणारोपण शैली
(B) अस्थिर कारणारोपण शैली
(C) अनियंत्रित कारणारोपण शैली
(D) आंतरिक कारणारोपण शैली

181. एक प्रबंधक द्वारा की गई निम्नलिखित कार्रवाइयों पर विचार कीजिए:
I. कठिन लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कर्मचारी की प्रशंसा करना।
II. प्रदर्शन पर नियमित, रचनात्मक प्रतिपुष्टि प्रदान करना।
III. स्पष्ट और विशिष्ट कार्य उद्देश्य निर्धारित करना।
ये क्रियाएं मुख्य रुप से नेता की किस भूमिका से संबंधित हैं?
(A) प्रशासनिक और लिपिक कार्य।
(B) कर्मचारियों को अनुशासित करना।
(C) अधीनस्थों को प्रेरित करना और निर्देशित करना।
(D) वित्तीय लेखांकन।

182. पर्यावरणीय मनोविज्ञान का एक प्रमुख केंद्र बिंदु किसके मनोवैज्ञानिक परिणामों को समझना है?
(A) आनुवंशिक प्रवृत्तियां
(B) भौतिक वातावरण
(C) बचपन के प्रारंभिक अनुभव
(D) राजनीतिक व्यवस्था

183. कार्मिक चयन में व्यक्तित्व परीक्षणों के उपयोग की एक सामान्य आलोचना निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) वे कार्य प्रदर्शन के बहुत अधिक भविष्यसूचक होते हैं।
(B) अधिकांश देशों में उनका उपयोग करना अवैध है।
(C) वे केवल संज्ञानात्मक क्षमता को मापते हैं, व्यक्तित्व को नहीं।
(D) आवेदक अधिक वांछनीय दिखने के लिए अपने उत्तरों में बनावटीपन ला सकते हैं।

184. 'कार्य विशेषता मॉडल' प्रस्तावित करता है कि पांच मुख्य कार्य आयाम तीन महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक स्थितियों को

206. एक व्यक्ति अगले छह माह के भीतर व्यायाम कार्यक्रम आरंभ करने के बारे में विचार कर रहा है। व्यवहार परिवर्तन मॉडल के अनुसार, वे किस चरण में हैं?
(A) पूर्व-चिंतन
(B) तैयारी
(C) कार्य
(D) चिंतन

207. संगठनात्मक विकास में टीम-निर्माण हस्तक्षेपों का प्राथमिक उद्देश्य है:
(A) एक समूह के भीतर विश्वास, संचार और सहयोग बढ़ाना।
(B) टीम के सदस्यों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ाना।
(C) व्यक्तियों को उनके स्वयं के अचेतन संघर्षों को समझने में सहायता करना।
(D) कार्यालय के भौतिक स्वरूप को फिर से डिजाइन करना।

208. समान परीक्षण के साथ दोबारा परीक्षण किए जाने पर उसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त अंकों की निरंतरता सूचक है:
(A) वैधता का
(B) विश्वसनीयता का
(C) वस्तुनिष्ठता का
(D) मानकों का

209. 'हेलो प्रभाव' निष्पादन मूल्यांकन या साक्षात्कारों में एक ऐसा पूर्वाग्रह है जहाँ:
(A) मूल्यांकनकर्ता सभी को औसत रेटिंग देता है।
(B) किसी व्यक्ति के बारे में मूल्यांकनकर्ता की समग्र धारणा उनके विशिष्ट गुणों के मूल्यांकन को प्रभावित करती है।
(C) मूल्यांकनकर्ता का निर्णय हाल की घटनाओं से प्रभावित होता है।
(D) मूल्यांकनकर्ता मानक के बजाय व्यक्तियों की एक-दूसरे से तुलना करता है।

210. समाधान के रूप में 'कार्मिक प्रशिक्षण' का सबसे अच्छा उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) एक कर्मचारी को पता नहीं है कि सॉफ्टवेयर के नए हिस्से को कैसे संचालित किया जाए।
(B) एक कर्मचारी प्रेरित नहीं है क्योंकि उसे लगता है कि उसे कम वेतन दिया जा रहा है।
(C) खराब अर्थव्यवस्था के कारण कंपनी की बिक्री कम है।
(D) टूटे हुए हिस्से के कारण मशीन कार्य नहीं कर रही है।

211. एक बड़े समूह में 'अनाम' होने की भावना, जो कभी-कभी असामाजिक व्यवहार की ओर ले जा सकती है, किसका संभावित प्रभाव है?
(A) संवेदी अभाव
(B) सहायक संगठनात्मक वातावरण
(C) उच्च जनसंख्या घनत्व और भीड़भाड़
(D) प्रभावी नेतृत्व

212. कौन सा कथन संगठनात्मक वातावरण को प्रभावित करने में 'नेतृत्व की भूमिका' का सटीक वर्णन करता है?
(A) नेतृत्व का संगठनात्मक वातावरण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(B) वातावरण पूरी तरह से बाहरी आर्थिक कारकों द्वारा निर्धारित होता है।
(C) केवल सीईओ का नेतृत्व महत्वपूर्ण है; मध्य प्रबंधकों का वातावरण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
(D) एक नेता की शैली वातावरण का एक प्रमुख निर्धारक है।

213. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (खेलों में मनोवैज्ञानिक कौशल)
P. लक्ष्य निर्धारण
Q. मानस-चित्रण
R. उत्तेजन नियमन
S. ध्यानात्मक नियंत्रण
सूची II: (उदाहरण)
1. खेल से पूर्व घबराहट शांत करने के लिए गहरी सांस लेना।
2. मानसिक रूप से एक सटीक गोल्फ स्विंग का अभ्यास करना।
3. प्रासंगिक संकेतों पर ध्यान केंद्रित करना और भीड़ के विक्षेपों की अनदेखी करना।
4. प्रति मैच सफल सेवा की संख्या 10% बढ़ाने का निर्णय लेना।
कोड:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-3, Q-2, R-1, S-4

214. "संगठनात्मक नागरिकता व्यवहार" को महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि वे:
(A) औपचारिक रूप से आवश्यक और पुरस्कृत हैं।
(B) संगठनात्मक प्रभावशीलता में योगदान देते हैं लेकिन अक्सर उन्हें नजरअंदाज कर दिया जाता है।
(C) असंतुष्ट कार्यबल के संकेत हैं।
(D) औद्योगिक दुर्घटनाओं के प्राथमिक कारण हैं।

215. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: संगठनों में प्रभावी निर्णय लेने के लिए हमेशा एक धीमी और पूरी तरह से तार्किक प्रक्रिया की आवश्यकता होती है।
कथन II: अंतःप्रज्ञा और अनुमानी, अपने संभावित पूर्वाग्रहों के बावजूद, अनिश्चित वातावरण में त्वरित निर्णय लेने के लिए प्रभावी हो सकते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

194. निम्नलिखित में से कौन संगठनात्मक विकास की प्रक्रिया का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) संगठन में सुधार के लिए एक नियोजित, दीर्घकालिक, सहयोगात्मक प्रक्रिया।
(B) एक त्वरित, ऊपर से नीचे अनिवार्य किया गया परिवर्तन।
(C) केवल खराब प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को निकालने पर केंद्रित प्रक्रिया।
(D) धोखाधड़ी का पता लगाने के लिए एक वित्तीय लेखा-परीक्षा।

195. व्यायाम कार्यक्रम के प्रति किसी व्यक्ति की निरंतरता किसके द्वारा प्रभावित होने की सबसे अधिक संभावना है?
(A) उनकी आँखों का रंग।
(B) उनके परिधानों का ब्रांड।
(C) व्यायाम के लाभों में उनका विश्वास और उनकी आत्म-प्रभावकारिता।
(D) प्राचीन इतिहास का उनका ज्ञान।

196. 'जनप्रवाद' किस प्रकार के संचार का एक उदाहरण है?
(A) औपचारिक और नीचे की ओर
(B) औपचारिक और ऊपर की ओर
(C) बाहरी
(D) अनौपचारिक

197. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: जनसंख्या घनत्व एक वस्तुनिष्ठ माप है।
कथन II: भीड़भाड़ एक आत्मनिष्ठ, मनोवैज्ञानिक अनुभव है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

198. "अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें" जैसे लक्ष्य सामान्यतः खेल प्रदर्शन को बेहतर बनाने में किससे कम प्रभावी होते हैं?
(A) अस्पष्ट, दीर्घकालिक परिणामी लक्ष्य।
(B) विशिष्ट, मापने योग्य और चुनौतीपूर्ण लक्ष्य।
(C) कोई लक्ष्य न होना।
(D) खिलाड़ी के निवेश के बिना किसी अन्य द्वारा निर्धारित लक्ष्य।

199. कार्य विश्लेषण का एक प्राथमिक कार्य निम्नलिखित सभी मानव संसाधन गतिविधियों के लिए आधार प्रदान करना है, सिवाय:
(A) कार्मिक चयन
(B) प्रशिक्षण कार्यक्रम डिजाइन
(C) निष्पादन मूल्यांकन विकास
(D) संगठन की कॉर्पोरेट वित्तपोषण रणनीति

200. संचार प्रक्रिया के निम्नलिखित तत्वों पर विचार कीजिए:
I. प्रेषक एक विचार को कूटबद्ध करता है।
II. संदेश एक माध्यम के द्वारा भेजा जाता है।
III. प्राप्तकर्ता संदेश का कूटवाचन करता है।
संचार होने के लिए इनमें से किसका होना आवश्यक है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

201. यर्क्स-डोडसन नियम सुझाव देता है कि एक जटिल कार्य के लिए, इष्टतम प्रदर्शन हेतु उत्तेजन का स्तर होना चाहिए:
(A) बहुत उच्च
(B) उच्च
(C) अपेक्षाकृत कम से मध्यम
(D) शून्य

202. नेतृत्व का इनमें से कौन सा सिद्धांत एक आकस्मिकता सिद्धांत है?
(A) फ़ीडलर का मॉडल
(B) ओहायो स्टेट अध्ययन
(C) मिशिगन स्टेट अध्ययन
(D) गुण सिद्धांत

203. कर्मचारी द्वारा समान उत्तरदायित्व स्तर पर किए जाने वाले कार्यों की संख्या बढ़ाने को कहा जाता है:
(A) कार्य संवर्धन
(B) कार्य आवर्तन
(C) कार्य संतोष
(D) कार्य विस्तार

204. तेज, अनियंत्रित शोर के लंबे समय तक संपर्क में रहने का प्रत्यक्ष, नकारात्मक संज्ञानात्मक प्रभाव निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) गणितीय क्षमता में सुधार
(B) अवधान और पठन बोध में कमी
(C) बढ़ी हुई रचनात्मकता
(D) अधिक परोपकारिता

205. नीचे दो कथन दिए गए है, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): कार्य संतोष एक वैश्विक अवधारणा है, लेकिन यह कार्य के विभिन्न पहलुओं के बारे में अभिवृत्तियों का एक समूह भी है।
कारण (R): एक कर्मचारी अपने सहकर्मियों से संतुष्ट हो सकता है लेकिन अपने वेतन से असंतुष्ट हो सकता है, और उसका समग्र संतोष इन भावनाओं का मिश्रण है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

227. पर्यावरणीय मनोविज्ञान में एक प्रमुख निष्कर्ष यह है कि शोर जैसे तनाव कारक पर प्रत्यक्ष नियंत्रण:
(A) इसके नकारात्मक प्रभावों को बढ़ा सकता है।
(B) इसके मनोवैज्ञानिक प्रभावों पर कोई प्रभाव नहीं डालता है।
(C) इसके नकारात्मक प्रभावों को कम कर सकता है।
(D) तनाव कारक को सकारात्मक अनुभव में बदल सकता है।

228. कार्मिक चयन में, किसी आवेदक से पूछना, "मुझे उस समय के बारे में बताएं जब आपने पहल की थी," किस प्रकार के साक्षात्कार प्रश्न का उदाहरण है?
(A) स्थितिजन्य
(B) तनाव-उत्प्रेरक
(C) असंरचित
(D) व्यवहारात्मक

229. कार्मिक मूल्यांकन में वह पूर्वाग्रह जिसमें मूल्यांकनकर्ता किसी एक गुण के आधार पर कर्मचारी के सभी गुणों को उच्च या निम्न आंकता है, कहलाता है:
(A) केन्द्रीय प्रवृत्ति त्रुटि
(B) हेलो प्रभाव
(C) नवीनता प्रभाव
(D) प्राथमिकता प्रभाव

230. निर्णय लेने का वह मॉडल जो यह वर्णन करता है कि व्यक्तियों को किसी परिणाम को अधिकतम करने के लिए कैसे व्यवहार करना चाहिए, कहलाता है:
(A) विवरणात्मक मॉडल
(B) निर्देशात्मक मॉडल
(C) अनुमानी मॉडल
(D) अंतःप्रज्ञात्मक मॉडल

231. कर्मचारियों को अपने काम की योजना बनाने और मूल्यांकन करने के लिए अधिक उत्तरदायित्व देकर नौकरी की लंबवत गहराई बढ़ाने को क्या कहा जाता है?
(A) कार्य आवर्तन
(B) कार्य विस्तार
(C) कार्य विशिष्टता
(D) कार्य संवर्धन

232. एक औद्योगिक सुरक्षा जांच जो खराब रोशनी, दोषपूर्ण उपकरण और फिसलन भरे फर्श पर ध्यान केंद्रित करती है, किसका परीक्षण कर रही है?
(A) दुर्घटनाओं के पर्यावरणीय या स्थितिजन्य कारण
(B) दुर्घटनाओं के मानवीय कारण
(C) श्रमिकों के बीच दुर्घटना प्रवणता
(D) नेतृत्व की प्रभावशीलता

233. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: प्रेषक द्वारा संदेश प्रसारित करने के बाद संचार प्रक्रिया पूरी हो जाती है।
कथन II: संचार प्रक्रिया केवल तभी सफल होती है जब प्राप्तकर्ता संदेश का कूटवाचन करता है और उसे वैसे ही समझता है जैसा प्रेषक का इरादा था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

234. नेता-सदस्य विनिमय सिद्धांत में, 'आउट-ग्रुप' के अधीनस्थों की विशेषता क्या है?
(A) उनके कार्य विवरण के आधार पर नेता के साथ एक औपचारिक, कम-विश्वास वाला संबंध।
(B) नेता के साथ उच्च स्तर का विश्वास और अंतःक्रिया।
(C) नेता से अधिक ध्यान और संसाधन प्राप्त करना।
(D) समूह निर्णयों पर गहरा प्रभाव होना।

235. उन वातावरणों के प्रभावों का अध्ययन जिनमें सामान्य स्तर की संवेदी उत्तेजना की कमी होती है, किसका अध्ययन है?
(A) संवेदी अतिभार
(B) भीड़भाड़
(C) शोर
(D) संवेदी अभाव

236. नियमित व्यायाम से जुड़ा एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक लाभ किसकी वृद्धि है?
(A) कार्य असंतोष
(B) आत्म-प्रभावकारिता और आत्म-सम्मान
(C) भीड़भाड़ की भावनाएँ
(D) कार्यस्थल दुर्घटनाएं

237. निम्नलिखित कार्मिक गतिविधियों को सही क्रम में व्यवस्थित करें:
I. कार्य विश्लेषण
II. भर्ती
III. चयन
(A) II, I, III
(B) III, II, I
(C) I, II, III
(D) I, III, II

238. एक प्रबंधक की यह धारणा कि कर्मचारी रचनात्मक होते हैं, उत्तरदायित्व चाहते हैं और आत्म-निर्देशन कर सकते हैं, किसके साथ मेल खाती है?
(A) मैकग्रेगर का सिद्धांत X
(B) दुर्घटना प्रवणता मॉडल
(C) तार्किक निर्णय लेने का मॉडल
(D) मैकग्रेगर का सिद्धांत Y

239. एक प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता का सबसे अच्छा मूल्यांकन किसके द्वारा किया जाता है?

(C) केवल उनका वित्त।
(D) केवल मीडिया।

285. एक प्रशिक्षण कार्यक्रम जो प्रशिक्षुओं को उस वास्तविक उपकरण पर सीखने की अनुमति देता है जिसका वे काम पर उपयोग करेंगे, लेकिन एक कृत्रिम वातावरण में:
(A) शिक्षुता
(B) कार्य निर्देश प्रशिक्षण
(C) वेस्टिब्यूल प्रशिक्षण
(D) कार्य आवर्तन

286. निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(A) संगठनात्मक वातावरण: गहरे स्तर के मूल्य और विश्वास
(B) कार्य संतोष: काम पर एक विशिष्ट व्यवहार
(C) कार्मिक चयन: वर्तमान कर्मचारी के प्रदर्शन का मूल्यांकन
(D) नेतृत्व: एक समूह को प्रभावित करने की प्रक्रिया

287. औद्योगिक सुरक्षा अनुसंधान का एक प्रमुख केंद्र बिंदु है:
(A) व्यवहार और उपकरणों में बदलाव के माध्यम से दुर्घटनाओं की रोकथाम।
(B) गैर-लाभकारी संगठनों में नेतृत्व शैलियों का अध्ययन।
(C) उपभोक्ता खरीद आदतों का विश्लेषण।
(D) संवेदी अभाव के मनोवैज्ञानिक प्रभाव।

288. लचीलापन, नवाचार और जोखिम लेने की विशेषता वाले संगठनात्मक वातावरण को किस रूप में जाना जाता है?
(A) सत्तावादी वातावरण
(B) अभिनव वातावरण
(C) सहायक वातावरण
(D) नियम-बद्ध वातावरण

289. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:
I. कार्य असंतोष के कारण टर्नओवर बढ़ सकता है।
II. कार्य असंतोष के कारण अनुपस्थिति बढ़ सकती है।
III. कार्य असंतोष के कारण संगठनात्मक नागरिकता व्यवहार कम हो सकता है।
इनमें से कौन से कार्य असंतोष के संभावित परिणाम हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

290. व्यवहार परिवर्तन मॉडल का अंतिम चरण, जहाँ नया व्यवहार स्थिर हो जाता है:
(A) समाप्ति
(B) कार्य
(C) रखरखाव
(D) चिंतन

291. नीचे दो कथन दिए गए है, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): यथार्थवादी कार्य पूर्वावलोकन प्रभावी रूप से कर्मचारी टर्नओवर को कम करते हैं।
कारण (R): संतुलित कार्य डेटा आवेदकों को सटीक अपेक्षाएं विकसित करने में सहायता करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

292. शोर, प्रदूषण और जनसंख्या घनत्व मानव व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं, इसका अध्ययन किसके अंतर्गत आता है?
(A) खेल मनोविज्ञान
(B) विकासात्मक मनोविज्ञान
(C) कार्मिक मनोविज्ञान
(D) पर्यावरणीय मनोविज्ञान

293. एक प्रबंधक जो निर्णय लेता है और फिर ऐसी जानकारी तलाशता है जो उसका समर्थन करती है, वह प्रदर्शित कर रहा है:
(A) एंकरिंग पूर्वाग्रह
(B) उपलब्धता अनुमानी
(C) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
(D) पश्चदर्शन पूर्वाग्रह

294. संगठन में नेतृत्व का एक प्रमुख कार्य है:
(A) भविष्य के लिए एक सम्मोहक दृष्टि बनाना और उसे स्पष्ट करना।
(B) विशेष रूप से दैनिक प्रशासनिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) कोई भी कठिन निर्णय लेने से बचना।
(D) कर्मचारी के काम का सूक्ष्म प्रबंधन करना।

295. निम्नलिखित में से कौन कार्मिक चयन का प्राथमिक केंद्र बिंदु नहीं है?
(A) आवेदक की योग्यताओं का आकलन करना
(B) भविष्य के कार्य प्रदर्शन की भविष्यवाणी करना
(C) व्यक्ति-संगठन सामंजस्य सुनिश्चित करना
(D) एक नई उत्पाद श्रृंखला विकसित करना

296. एक 'सुरक्षा संस्कृति' या 'सुरक्षा वातावरण' संदर्भित करता है:
(A) संगठन में सुरक्षा के महत्व के बारे में साझा मूल्यों और धारणाओं को।
(B) कार्यस्थल में तापमान और आर्द्रता के स्तर को।
(C) आधिकारिक लिखित सुरक्षा नियमावली को।
(D) कंपनी द्वारा नियुक्त सुरक्षा निरीक्षकों की संख्या को।

297. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: कार्य संतोष किसी के कार्य का विशुद्ध रूप से संज्ञानात्मक मूल्यांकन है।
कथन II: कार्य संतोष में संज्ञानात्मक और भावात्मक दोनों

250. एक संगठनात्मक विकास प्रतिनिधि जो समूह को संचार और निर्णय लेने जैसी अपनी प्रक्रियाओं को समझने और सुधारने में सहायता करता है, वह किस रूप में कार्य कर रहा है?
(A) प्रक्रिया सलाहकार
(B) तकनीकी विशेषज्ञ
(C) प्रशिक्षक
(D) डेटा विश्लेषक

251. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: खेलों में, उच्च उत्तेजन हमेशा प्रदर्शन के लिए लाभदायक होता है।
कथन II: उत्तेजन और प्रदर्शन के बीच संबंध वक्रीय होता है, और उत्तेजन का इष्टतम स्तर कार्य की जटिलता के साथ बदलता रहता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

252. कार्य विवरण और कार्य विशिष्टता तैयार करने के लिए किसी कार्य के बारे में जानकारी एकत्र करने की व्यवस्थित प्रक्रिया है:
(A) कार्य मूल्यांकन
(B) कार्य विश्लेषण
(C) कार्य आवर्तन
(D) कार्य संवर्धन

253. पर्यावरणीय प्रदूषण के मनोवैज्ञानिक प्रभावों में शामिल हो सकते हैं:
(A) कल्याण और जीवन संतोष में वृद्धि।
(B) बेहतर सामुदायिक सामंजस्य।
(C) चिड़चिड़ापन, तनाव और कम संज्ञानात्मक कार्य।
(D) औद्योगिकीकरण के प्रति अधिक प्रशंसा।

254. एक नेता की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. दृष्टि को प्रेरित करना।
II. परिवर्तन प्रतिनिधि के रूप में कार्य करना।
III. अनुयायियों को सशक्त बनाना।
ये किस प्रकार के नेतृत्व की विशेषता हैं?
(A) लेन-देन संबंधी
(B) निरंकुश
(C) अहस्तक्षेपवादी
(D) परिवर्तनकारी

255. कार्य विस्तार और कार्य संवर्धन के बीच मुख्य अंतर यह है कि:
(A) विस्तार में अधिक कार्य जुड़ते हैं, जबकि संवर्धन में अधिक उत्तरदायित्व और नियंत्रण जुड़ता है।
(B) संवर्धन में अधिक कार्य जुड़ते हैं, जबकि विस्तार में अधिक उत्तरदायित्व और नियंत्रण जुड़ता है।
(C) विस्तार कार्य का लंबवत विस्तार है, जबकि संवर्धन क्षैतिज है।
(D) इनमें कोई अंतर नहीं है।

256. एक मामला अध्ययन एक प्रबंधक का वर्णन करता है जो मानती है कि उसके कर्मचारी स्व-प्रेरित हैं। वह उन्हें स्वायत्तता देती है और निर्णयों में उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करती है। इस प्रबंधक का दृष्टिकोण किसके अनुरूप है?
(A) सिद्धांत X की धारणाएं
(B) सिद्धांत Y की धारणाएं
(C) विशुद्ध रूप से लेन-देन संबंधी शैली
(D) अहस्तक्षेपवादी शैली

257. एक खिलाड़ी एक आदर्श प्रदर्शन के निष्पादन की कल्पना करता है। यह तकनीक मुख्य रूप से किसके द्वारा कार्य करती है?
(A) इसमें शामिल मांसपेशियों को शारीरिक रूप से मजबूत करके।
(B) सफल प्रदर्शन के लिए एक मानसिक प्रारूप बनाकर और आत्मविश्वास बढ़ाकर।
(C) विपक्ष को भयभीत करके।
(D) प्रायोजकों की आवश्यकताओं को पूरा करके।

258. एक नियोजित संगठनात्मक विकास प्रक्रिया में प्रथम चरण है:
(A) समस्या का निदान
(B) मूल्यांकन
(C) हस्तक्षेप
(D) समाधान का कार्यान्वयन

259. नीचे दो कथन दिए गए है, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): चयन में, भविष्यसूचक वैधता में परीक्षण प्राप्तांक को बाद के प्रदर्शन के साथ सह-संबंधित करना शामिल है।
कारण (R): यह स्थापित करता है कि क्या कोई चयन उपाय भविष्य की कार्य सफलता का एक वैध भविष्यवक्ता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

260. भीड़भाड़ का अतिभार सिद्धांत बताता है कि नकारात्मक भावनाएं उत्पन्न होती हैं क्योंकि:
(A) व्यक्ति व्यवहारात्मक स्वतंत्रता की हानि अनुभव करता है।
(B) व्यक्ति के व्यक्तिगत स्थान का भौतिक रूप से उल्लंघन किया जाता है।
(C) व्यक्ति अनाम और वि-वैयक्तिकीकृत अनुभव करता है।
(D) लोगों का उच्च घनत्व मस्तिष्क के लिए सूचना का अतिभार उत्पन्न करता है।

261. वह सीमा जिस तक एक कर्मचारी अपने कार्य के साथ मनोवैज्ञानिक रूप से पहचान करता है और अपने प्रदर्शन स्तर को अपने आत्म-सम्मान के लिए महत्वपूर्ण मानता है:
(A) कार्य संतोष
(B) संगठनात्मक प्रतिबद्धता
(C) कार्य संलिप्तता
(D) संगठनात्मक वातावरण

262. निम्नलिखित में से कौन एक प्रभावी औद्योगिक सुरक्षा कार्यक्रम का प्रमुख घटक है?
(A) रोकथाम के बजाय दोषारोपण पर ध्यान देना।
(B) सुरक्षा के प्रति प्रबंधन की दृढ़ प्रतिबद्धता।
(C) यह विश्वास कि दुर्घटनाएं अपरिहार्य हैं।
(D) पुराने सुरक्षा उपकरणों का उपयोग।

263. एक नेता जो भूमिकाओं और कार्यों को स्पष्ट करता है और प्रदर्शन के आधार पर पुरस्कार प्रदान करता है, वह नेतृत्व की किस शैली का प्रदर्शन कर रहा है?
(A) परिवर्तनकारी
(B) अहस्तक्षेपवादी
(C) करिश्माई
(D) लेन-देन संबंधी

264. असंरचित साक्षात्कार की तुलना में संरचित साक्षात्कार का प्राथमिक लाभ यह है कि यह:
(A) मानकीकरण के कारण अधिक विश्वसनीय और वैध है।
(B) अधिक संवादात्मक है और बेहतर तालमेल बनाता है।
(C) साक्षात्कारकर्ता की ओर से कम तैयारी की आवश्यकता होती है।
(D) उम्मीदवार को स्वेच्छा से बोलने की अनुमति देता है।

265. व्यायाम और शारीरिक सुदृढ़ता के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू करने का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) पेशेवर खेलों के लिए सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों की पहचान करना।
(B) नए प्रकार के व्यायाम उपकरण विकसित करना।
(C) शारीरिक गतिविधि को अपनाने और उसे बनाए रखने को समझना।
(D) मांसपेशियों के संकुचन की शरीर क्रिया विज्ञान का अध्ययन करना।

266. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मनोवैज्ञानिक अवधारणा)
P. संगठनात्मक वातावरण
Q. परिवर्तनकारी नेतृत्व
R. यर्क्स-डोडसन नियम
S. भीड़भाड़
सूची II: (संबद्ध विचार)
1. मध्यम उत्तेजन पर प्रदर्शन इष्टतम होता है।
2. उच्च जनसंख्या घनत्व से आत्मनिष्ठ तनाव।
3. कार्य परिवेश की साझा धारणाएं।
4. अनुयायियों को एक दृष्टि के साथ प्रेरित करना।
कोड:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

267. संचार प्रक्रिया में "शोर" का तात्पर्य है:
(A) केवल तेज ध्वनियाँ।
(B) वह माध्यम जिसके द्वारा संदेश भेजा जाता है।
(C) प्राप्तकर्ता से प्रतिपुष्टि।
(D) कोई भी कारक जो संदेश को विकृत करता है या संचार में हस्तक्षेप करता है।

268. कर्मचारी के अपने कार्य के समग्र सकारात्मक या नकारात्मक मूल्यांकन को कहा जाता है:
(A) संगठनात्मक वातावरण
(B) कार्य संतोष
(C) नेतृत्व
(D) कार्य विश्लेषण

269. नेतृत्व के गुण सिद्धांत और व्यवहारवादी सिद्धांत के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) व्यवहारवादी सिद्धांत स्थिति पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि गुण सिद्धांत नेता पर।
(B) गुण सिद्धांत व्यवहारवादी सिद्धांतों की तुलना में अधिक आधुनिक हैं।
(C) गुण सिद्धांत प्रस्तावित करते हैं कि नेता जन्मजात होते हैं, जबकि व्यवहारवादी सिद्धांत बताते हैं कि नेतृत्व सीखा जा सकता है।
(D) दोनों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

270. घटनाओं के निम्नलिखित क्रम पर विचार कीजिए:
I. एक कंपनी एक नई सुरक्षा नीति लागू करती।
II. कंपनी कर्मचारियों को नई नीति पर प्रशिक्षित करती है।
III. कंपनी दुर्घटना दर में कमी देखती है।
यह क्रम किस प्रक्रिया का उदाहरण है?
(A) कार्मिक चयन
(B) एक सुरक्षा हस्तक्षेप और उसका मूल्यांकन
(C) संगठनात्मक संचार में विफलता
(D) एक खेल मनोविज्ञान हस्तक्षेप

271. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: संवेदी अभाव कुछ संदर्भों में उपचारात्मक हो सकता है।
कथन II: लंबे समय तक संवेदी अभाव तनावपूर्ण होता है और मतिभ्रम का कारण बन सकता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

272. एक मैराथन धावक जो अपनी श्वसन क्रिया और एक स्थिर गति बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित करता है, वह किससे संबंधित कौशल का उपयोग कर रहा है?
(A) टीम सामंजस्य
(B) एकाग्रता और ध्यानात्मक नियंत्रण
(C) प्रशिक्षक के साथ संचार
(D) नेतृत्व

273. निर्णय लेने का "संतोषप्रद" मॉडल किस अवधारणा से जुड़ा है?
(A) पूर्ण तार्किकता
(B) सीमित तार्किकता
(C) समूह-चिंतन
(D) प्रतिबद्धता का बढ़ना

274. निम्नलिखित में से कौन संगठनात्मक विकास हस्तक्षेप का प्राथमिक लक्ष्य है?
(A) नियोजित संगठनात्मक परिवर्तन और सुधार की सुविधा प्रदान करना।
(B) विभागों के बीच संघर्ष का स्तर बढ़ाना।
(C) एक कठोर आदेश संरचना लागू करना।
(D) अल्पकालिक वित्तीय लाभ पर ध्यान केंद्रित करना।

275. संगठन की संस्कृति को सबसे अच्छी तरह किस रूप में वर्णित किया गया है?
(A) दैनिक प्रथाओं और प्रक्रियाओं की धारणाएं।
(B) औपचारिक संगठनात्मक आरेख।
(C) अंतर्निहित साझा मूल्य और धारणाएं।
(D) कंपनी में कर्मचारियों की संख्या।

276. नीचे दो कथन दिए गए है, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): संगठनों में औद्योगिक सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है।
कारण (R): कार्यस्थल पर दुर्घटनाएं मानवीय पीड़ा, उत्पादकता की हानि और वित्तीय लागत का कारण बन सकती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

277. आवेदकों के समूह में से उस व्यक्ति को चुनने की प्रक्रिया जो किसी विशेष पद के लिए सबसे उपयुक्त है, कहलाती है:
(A) भर्ती
(B) प्रशिक्षण
(C) चयन
(D) कार्य विश्लेषण

278. एक कर्मचारी जो अपने कार्य के बारे में अच्छा अनुभव करता है, वह अपनी कार्य अभिवृत्ति के किस घटक का प्रदर्शन कर रहा है?
(A) संज्ञानात्मक
(B) भावात्मक
(C) व्यवहारात्मक
(D) मूल्यांकनात्मक

279. नेतृत्व की भूमिका का सबसे सटीक वर्णन है:
(A) पदानुक्रम में अधिकार का एक औपचारिक पद।
(B) बजट और समय-सारणी प्रबंधित करने का कार्य।
(C) नियमों और विनियमों का प्रवर्तन।
(D) सामान्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दूसरों को प्रभावित करने की प्रक्रिया।

280. शारीरिक सुदृढ़ता व्यवस्था को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक बाधा है:
(A) समय की कमी और निम्न प्रेरणा।
(B) उपयुक्त परिधानों की कमी।
(C) शरीर क्रिया विज्ञान का अपर्याप्त ज्ञान।
(D) पेयजल की उच्च लागत।

281. भीड़भाड़ के नकारात्मक प्रभाव अक्सर तब तीव्र हो जाते हैं जब व्यक्ति अनुभव करते हैं:
(A) अपनी सामाजिक अंतःक्रियाओं पर उच्च स्तर का नियंत्रण।
(B) वे मित्रों और परिवार के बीच हैं।
(C) नियंत्रण की कमी और बाधा की भावना।
(D) वे एक बड़े, खुले स्थान में हैं।

282. निम्नलिखित में से कौन एक संगठनात्मक विकास हस्तक्षेप है?
(A) सर्वेक्षण प्रतिपुष्टि
(B) किसी कर्मचारी को सेवामुक्त करना
(C) वाद दायर करना
(D) नया शेयर जारी करना

283. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: प्रभावी संचार प्रेषक से प्राप्तकर्ता तक एक-तरफ़ा प्रक्रिया है।
कथन II: प्रतिपुष्टि प्रभावी दो-तरफ़ा संचार का एक अनिवार्य घटक है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

284. खिलाड़ी के प्रदर्शन को बेहतर बनाने में एक प्रमुख तत्व किसे प्रबंधित करना है?
(A) केवल उनका आहार।
(B) उनकी मनोवैज्ञानिक अवस्थाएँ, जैसे चिंता और आत्मविश्वास।

में, सभी प्राप्त जानकारी के आधार पर सबसे उपयुक्त उम्मीदवार के संबंध में अंतिम चयन निर्णय लिया जाता है।

19. (C) फ़ीडलर का आकस्मिकता सिद्धांत
फ़ीडलर का आकस्मिकता सिद्धांत नेतृत्व का एक प्रमुख दृष्टिकोण है जो बताता है कि कोई भी एकल नेतृत्व शैली हर परिस्थिति में सर्वश्रेष्ठ नहीं होती है। नेता की प्रभावशीलता उसकी नेतृत्व शैली और स्थिति के बीच के सामंजस्य पर निर्भर करती है। फ़ीडलर ने तीन प्रमुख स्थितिजन्य चरों की पहचान की है: नेता-सदस्य संबंध, कार्य संरचना और पद शक्ति। यदि ये कारक नेता के अनुकूल होते हैं, तो प्रदर्शन उच्च होता है। यह सिद्धांत व्यक्ति के व्यक्तित्व और वातावरण के बीच अंतःक्रिया पर विशेष बल देता है।

20. (D) पर्यवेक्षण और विशेष ध्यान दिए जाने के परिणामस्वरूप उत्पादकता में वृद्धि।
हॉथोर्न प्रभाव औद्योगिक मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण खोज है जो यह बताती है कि श्रमिकों के प्रदर्शन में सुधार केवल भौतिक वातावरण में बदलाव से नहीं होता। जब कर्मचारियों को यह आभास होता है कि प्रबंधन उन पर विशेष ध्यान दे रहा है या उनका पर्यवेक्षण किया जा रहा है, तो उनकी उत्पादकता स्वाभाविक रूप से बढ़ जाती है। यह प्रभाव कार्यस्थल पर सामाजिक कारकों और मानवीय संबंधों के महत्व को रेखांकित करता है, जो केवल वित्तीय लाभों या कार्य स्थितियों में सुधार से कहीं अधिक प्रभावशाली होते हैं।

21. (C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
शोर को सामान्यतः किसी भी ऐसी अवांछित ध्वनि के रूप में परिभाषित किया जाता है जो संचार या शांति में बाधा डालती है। शोर का मनोवैज्ञानिक प्रभाव केवल उसके डेसीबल स्तर या तीव्रता पर निर्भर नहीं करता है, बल्कि अन्य कारक भी अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि शोर अनियंत्रित और अप्रत्याशित है, तो वह पूर्वानुमेय शोर की तुलना में अधिक तनाव पैदा करता है। अतः, ध्वनि की प्रकृति और व्यक्ति का उस पर नियंत्रण ही उसके वास्तविक मानसिक प्रभाव को पूर्णतः निर्धारित करता है।

22. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
परिवर्तनकारी नेता अपने अनुयायियों को प्रेरित और उत्साहित करते हैं ताकि वे व्यक्तिगत लाभ के बजाय संगठन के बड़े लक्ष्यों के प्रति समर्पित हो सकें। वे करिश्मा, बौद्धिक प्रोत्साहन और व्यक्तिगत ध्यान के माध्यम से सकारात्मक परिवर्तन लाते हैं। इसके विपरीत, आकस्मिक पुरस्कारों और सुधारात्मक कार्यों का उपयोग करना 'लेन-देन संबंधी' नेतृत्व की विशेषता है, न कि परिवर्तनकारी नेतृत्व की। परिवर्तनकारी नेतृत्व आंतरिक प्रेरणा और मूल्यों में बदलाव पर ध्यान केंद्रित करता है, जो इसे पारंपरिक विनिमय-आधारित शैलियों से पूर्णतः अलग बनाता है।

23. (D) कार्य के प्रति कर्मचारी की भावनाएँ या संवेग।
कार्य अभिवृत्ति का भावात्मक घटक उस संवेगात्मक प्रतिक्रिया को संदर्भित करता है जो एक कर्मचारी अपने कार्य के प्रति रखता है। इसमें वे भावनाएँ शामिल होती हैं कि व्यक्ति अपने काम को कितना पसंद करता है या उससे उसे कितनी प्रसन्नता मिलती है। यह घटक तार्किक सोच के बजाय अंतर्निहित भावनाओं पर आधारित होता है और अक्सर व्यक्ति के कार्य संतोष का मुख्य आधार बनता है। यह सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है और कर्मचारी के कार्यस्थल पर समग्र व्यवहार को गहराई से प्रभावित करता है।

24. (A) टीम सामंजस्य
टीम सामंजस्य एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें टीम के सदस्य एक साझा लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एकजुट रहते हैं। खेल मनोवैज्ञानिक इस सामंजस्य को बढ़ाने के लिए संचार, आपसी विश्वास और सहयोग पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जब टीम में मजबूत एकता होती है, तो खिलाड़ी एक-दूसरे की क्षमताओं का समर्थन करते हैं और दबाव की स्थिति में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। यह सामूहिक प्रयास व्यक्तिगत प्रतिभा से कहीं अधिक प्रभावशाली होता है और टीम की सफलता सुनिश्चित करने में एक निर्णायक भूमिका का निर्वहन करता है।

25. (C) समस्या के मूल कारणों की पहचान करने के लिए सर्वेक्षण करना।
संगठनात्मक विकास की प्रक्रिया में 'निदान' एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रारंभिक चरण है जहाँ संगठन की वर्तमान स्थिति और समस्याओं का विश्लेषण किया जाता है। इस चरण में आँकड़ों के संग्रह की विभिन्न विधियों जैसे सर्वेक्षण और साक्षात्कार का उपयोग करके यह समझने का प्रयास किया जाता है कि कर्मचारी संगठन क्यों छोड़ रहे हैं। यह चरण किसी भी सुधारात्मक हस्तक्षेप को लागू करने से पहले समस्या के वास्तविक आधारों की पहचान करता है। बिना सटीक निदान के, कोई भी सुधारात्मक कदम पूर्णतः प्रभावी सिद्ध नहीं हो सकता।

26. (A) कार्य विस्तार: किसी कार्य की गहराई और उत्तरदायित्व में वृद्धि करना
कार्य विस्तार वास्तव में एक क्षैतिज प्रक्रिया है जिसमें किसी कर्मचारी के कार्य में समान स्तर के कार्यों की संख्या बढ़ाई जाती है। इसमें उत्तरदायित्व या नियंत्रण की गहराई में वृद्धि नहीं होती, जैसा कि 'कार्य संवर्धन' में होता है। कार्य विवरण और विशिष्टता क्रमशः कार्यों की सूची और आवश्यक योग्यताओं को दर्शाते हैं। कार्य संतोष कार्य के मूल्यांकन से उत्पन्न एक सकारात्मक मानसिक स्थिति है। अतः, विस्तार का अर्थ केवल कार्यों की विविधता बढ़ाना है, न कि उनके नियंत्रण या उत्तरदायित्व के स्तर को बढ़ाना।

27. (D) दुर्घटनाओं का श्रेय भाग्य, किस्मत या अन्य शक्तिशाली लोगों को देना।
नियंत्रण का केंद्र एक व्यक्तित्व विशेषता है जो यह निर्धारित करती है कि व्यक्ति घटनाओं के कारणों को कहाँ देखता है। बाहरी नियंत्रण केंद्र वाले लोग यह मानते हैं कि उनके जीवन की घटनाएँ भाग्य या बाहरी ताकतों के अधीन हैं। औद्योगिक सुरक्षा के संदर्भ में, ऐसे श्रमिक दुर्घटनाओं के लिए स्वयं के व्यवहार को जिम्मेदार नहीं मानते, जिससे उनमें सुरक्षित कार्य

घटक शामिल हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

298. खेल मनोविज्ञान का लक्ष्य मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को किस लिए लागू करना है?
(A) खिलाड़ियों के प्रदर्शन और व्यक्तिगत विकास को बढ़ाने के लिए।
(B) विभिन्न खेलों के इतिहास को समझने के लिए।
(C) खेल आयोजनों के लिए टिकटों की बिक्री बढ़ाने के लिए।
(D) खेल संघों की वित्तीय संरचना का विश्लेषण करने के लिए।

299. संचार प्रक्रिया में, प्रबंधक से उसके अधीनस्थों को भेजा गया ज्ञापन किस माध्यम और दिशा का उदाहरण है?
(A) औपचारिक, ऊपर की ओर
(B) अनौपचारिक, पार्श्व
(C) अनौपचारिक, नीचे की ओर
(D) औपचारिक, नीचे की ओर

300. वह अवधारणा कि उन वातावरणों से मानवीय प्रदर्शन नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं जिनमें पर्याप्त उत्तेजना की कमी होती है, कहलाती है:
(A) भीड़भाड़
(B) संवेदी अभाव
(C) संवेदी अतिभार
(D) ध्वनि प्रदूषण

(A) कार्य-स्थल व्यवहार और संगठनात्मक परिणामों में सकारात्मक बदलाव।
(B) उपस्थित लोगों की संख्या।
(C) कार्यक्रम की लागत।
(D) प्रशिक्षण सत्र का मनोरंजन मूल्य।

240. नीचे दो कथन दिए गए है, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 'जनप्रवाद' संगठनात्मक संचार का एक अपरिहार्य हिस्सा है।
कारण (R): अनौपचारिक सामाजिक माध्यम तेजी से जानकारी प्रसारित करते हैं, यद्यपि इसकी सटीकता संदिग्ध रहती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

241. यह विचार कि विशिष्ट और कठिन लक्ष्य, जब स्वीकार किए जाते हैं, उच्च प्रदर्शन की ओर ले जाते हैं, किसका केंद्रीय सिद्धांत है?
(A) साम्यता का सिद्धांत
(B) लक्ष्य-निर्धारण सिद्धांत
(C) द्वि-कारक सिद्धांत
(D) ERG सिद्धांत

242. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (संगठनात्मक घटना)
P. समूह-चिंतन
Q. सामाजिक शिथिलन
R. जनप्रवाद
S. संगठनात्मक वातावरण
सूची II: (विवरण)
1. आंतरिक परिवेश का प्रत्यक्ष वातावरण या गुणवत्ता।
2. अनौपचारिक संचार नेटवर्क।
3. समूह में प्रयास कम करने की प्रवृत्ति।
4. अनुरुपता के लिए दबाव विचारों के आलोचनात्मक मूल्यांकन को रोकता है।
कोड:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

243. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, व्यायाम की निरंतरता में एक प्रमुख कारक है:
(A) शारीरिक सुदृढ़ता का प्रारंभिक स्तर।
(B) एथलेटिक जूतों की कीमत।
(C) व्यक्ति की प्रेरणा और आत्म-नियमन कौशल।
(D) निकटतम खेल स्टेडियम की दूरी।

244. बहुत अधिक लोगों की उपस्थिति के प्रति व्यक्ति की नकारात्मक प्रतिक्रिया है:
(A) घनत्व
(B) संवेदी अभाव
(C) प्रदूषण
(D) भीड़भाड़

245. हर्ज़बर्ग के सिद्धांत में, 'हाइजीन कारक' कार्य संदर्भ से संबंधित हैं और इनमें निम्नलिखित सभी शामिल हैं, सिवाय:
(A) वेतन
(B) कार्य परिस्थितियाँ
(C) उत्तरदायित्व
(D) कंपनी की नीतियां

246. निम्नलिखित में से कौन संचार प्रक्रिया का एक प्रमुख तत्व है?
(A) प्रेषक
(B) उपरोक्त सभी
(C) संदेश
(D) प्राप्तकर्ता

247. कार्मिक चयन का प्राथमिक लक्ष्य है:
(A) वर्तमान कर्मचारियों के मित्रों और परिवार को काम पर रखना।
(B) योग्यता की परवाह किए बिना रिक्त पदों को यथाशीघ्र भरना।
(C) प्रत्येक आवेदक पर अधिक से अधिक परीक्षण आयोजित करना।
(D) उन व्यक्तियों की पहचान करना जिनके पास कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और क्षमताएं हैं।

248. एक परिवर्तनकारी नेता की भूमिका है:
(A) अनुयायियों को एक साझा दृष्टि प्राप्त करने और उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित करना।
(B) नियमों और मानकों से विचलन की बारीकी से निगरानी करना।
(C) प्रयास के बदले पुरस्कार प्रदान करना।
(D) उत्तरदायित्व त्याग देना और समूह को स्वयं का प्रबंधन करने देना।

249. औद्योगिक सुरक्षा के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) अधिकांश दुर्घटनाएं पूरी तरह से असुरक्षित पर्यावरणीय परिस्थितियों का परिणाम होती हैं।
(B) सुरक्षा प्रशिक्षण दुर्घटना दर को कम करने में अप्रभावी सिद्ध हुआ है।
(C) मानवीय कारक, जैसे असावधानी या थकान, कई दुर्घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
(D) "शून्य-दुर्घटना" का लक्ष्य अवास्तविक है।

विपरीत, वेतन, कंपनी की नीतियां और कार्य परिस्थितियाँ 'हाइजीन' कारक कहलाते हैं। ये कारक यदि असंतोषजनक हों तो कर्मचारी निराश होते हैं, लेकिन इनकी उपस्थिति मात्र से उच्च प्रेरणा नहीं मिलती। मान्यता जैसे कारक कर्मचारी को कार्य के प्रति समर्पित बनाते हैं।

10. (A) निरंकुश
निरंकुश नेतृत्व शैली में संपूर्ण निर्णय लेने की शक्ति और अधिकार केवल नेता के पास केंद्रित होते हैं। इसमें अधीनस्थों से परामर्श या सुझाव नहीं लिए जाते और उनसे केवल आदेशों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है। यह शैली उन परिस्थितियों में प्रभावी हो सकती है जहाँ त्वरित निर्णय लेने की आवश्यकता होती है, लेकिन यह अक्सर कर्मचारियों के मनोबल और रचनात्मकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। इसमें संचार केवल ऊपर से नीचे की ओर होता है, जिससे कार्यस्थल पर लोकतांत्रिक मूल्यों का अभाव रहता है।

11. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
संगठनात्मक वातावरण कार्य परिवेश के उन प्रत्यक्ष गुणों को दर्शाता है जो कर्मचारियों द्वारा अनुभव किए जाते हैं। कार्य संतोष एक कर्मचारी की अपने कार्य के प्रति भावनात्मक और अभिवृत्ति संबंधी प्रतिक्रिया है। संवेदी अभाव एक ऐसी स्थिति है जहाँ व्यक्ति को उसके पर्यावरण से बहुत कम या कोई संवेदी संकेत प्राप्त नहीं होते हैं। कार्मिक चयन वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसमें संगठन के रिक्त पदों के लिए सबसे उपयुक्त ज्ञान और योग्यता वाले व्यक्तियों की पहचान कर उन्हें कार्य हेतु चुना जाता है।

12. (B) भीड़भाड़
भीड़भाड़ एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है जो तब उत्पन्न होती है जब प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्तियों की संख्या व्यक्ति की सहनशक्ति से अधिक हो जाती है। यह केवल एक भौतिक संख्या नहीं है, बल्कि एक नकारात्मक भावनात्मक अनुभव है जो नियंत्रण की कमी और गोपनीयता के उल्लंघन से जुड़ा होता है। भीड़भाड़ के कारण व्यक्ति तनाव, चिड़चिड़ापन और सामाजिक मेलजोल में कमी का अनुभव कर सकता है। यह स्थिति व्यक्ति की वांछित गतिविधियों और व्यक्तिगत स्थान की आवश्यकताओं के बीच संघर्ष उत्पन्न करती है।

13. (C) शारीरिक सुदृढ़ता का संज्ञानात्मक कार्य या आत्म-सम्मान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
शारीरिक सुदृढ़ता और मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच गहरा संबंध होता है। वैज्ञानिक शोध दर्शाते हैं कि नियमित व्यायाम न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारता है, बल्कि यह संज्ञानात्मक क्षमताओं जैसे स्मृति और ध्यान को भी तीव्र करता है। व्यायाम एंडोर्फिन के स्राव को बढ़ाता है, जिससे मनोदशा में सुधार होता है और आत्म-सम्मान में वृद्धि होती है। यह कहना सर्वथा गलत है कि व्यायाम का मानसिक कार्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि यह तनाव और चिंता प्रबंधन में भी अत्यंत प्रभावशाली होता है।

14. (A) केवल I और II
औद्योगिक सुरक्षा में मानवीय भूलें दुर्घटनाओं का एक प्रमुख कारण मानी जाती हैं, जिनमें लापरवाही, थकान और अपर्याप्त प्रशिक्षण शामिल हैं। किसी संगठन के भीतर एक मजबूत 'सुरक्षा वातावरण' कर्मचारियों के व्यवहार को प्रभावित करता है और जोखिमों को कम करके दुर्घटना दर में गिरावट लाता है। यद्यपि 'दुर्घटना प्रवणता' का सिद्धांत विवादित है, लेकिन इसे पूरी तरह से अस्वीकृत नहीं किया गया है, क्योंकि कुछ शोध व्यक्तित्व लक्षणों और दुर्घटनाओं के बीच संबंध की खोज निरंतर कर रहे हैं।

15. (A) कूटवाचन
संचार प्रक्रिया में कूटवाचन वह चरण है जहाँ प्राप्तकर्ता प्रेषक द्वारा भेजे गए संकेतों या सूचनाओं की व्याख्या करता है। इस प्रक्रिया में प्राप्तकर्ता संदेश के अर्थ को समझने का प्रयास करता है ताकि वह प्रेषक के इरादे के अनुसार प्रतिक्रिया दे सके। यदि कूटवाचन सही ढंग से नहीं होता है, तो संचार में गलतफहमी उत्पन्न हो सकती है। यह प्राप्तकर्ता के ज्ञान, अनुभवों और मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है कि वह संदेश को किस प्रकार ग्रहण करता है और उसे पूर्णतः समझता है।

16. (B) वेस्टिब्यूल प्रशिक्षण
वेस्टिब्यूल प्रशिक्षण एक ऐसी विधि है जहाँ प्रशिक्षुओं को वास्तविक कार्यस्थल से दूर एक विशेष रूप से निर्मित कृत्रिम वातावरण में शिक्षित किया जाता है। यहाँ उन्हीं उपकरणों और मशीनों का उपयोग किया जाता है जो वास्तविक नौकरी में होते हैं, ताकि कर्मचारी कार्य की जटिलताओं को सुरक्षित रूप से समझ सकें। इसका मुख्य लाभ यह है कि प्रशिक्षण के दौरान वास्तविक उत्पादन बाधित नहीं होता और किसी भी गलती से होने वाले नुकसान या दुर्घटना का जोखिम कम हो जाता है। यह तकनीकी कार्यों के लिए सर्वश्रेष्ठ है।

17. (B) संगठनात्मक वातावरण सर्वेक्षण
संगठनात्मक वातावरण सर्वेक्षण एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो कर्मचारियों की संगठन के आंतरिक परिवेश के प्रति सामूहिक धारणाओं को मापता है। यह सर्वेक्षण उन नीतियों, कार्य प्रणालियों और नेतृत्व शैलियों के प्रभाव का आकलन करता है जो कार्यस्थल के वातावरण को आकार देते हैं। इसके माध्यम से यह समझा जा सकता है कि कर्मचारी संगठन के समर्थन, स्वायत्तता और पुरस्कार प्रणालियों को किस रूप में देखते हैं। यह जानकारी संगठन की कार्यक्षमता और कर्मचारी मनोबल को सुधारने के लिए अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण मानी जाती है।

18. (A) 2, 1, 5, 3, 4
कार्मिक चयन प्रक्रिया एक व्यवस्थित क्रम में चलती है जो कार्य आवेदन प्राप्त करने से शुरु होती है। इसके बाद, योग्य उम्मीदवारों की पहचान के लिए प्रारंभिक साक्षात्कार लिया जाता है। अगले चरण में, उनकी क्षमताओं और व्यक्तित्व के मूल्यांकन के लिए विभिन्न रोजगार परीक्षण आयोजित किए जाते हैं। फिर, चयनित उम्मीदवारों की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए उनकी पृष्ठभूमि की गहन जांच की जाती है। अंत

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) कार्य विश्लेषण
कार्य विश्लेषण एक व्यवस्थित वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी विशिष्ट कार्य की प्रकृति, कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का सूक्ष्म अध्ययन किया जाता है। इस प्रक्रिया में कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करने हेतु आवश्यक मानवीय कौशल, ज्ञान और योग्यताओं से संबंधित आँकड़े एकत्र किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, यह उस भौतिक एवं सामाजिक परिवेश का भी विश्लेषण करता है, जो अंततः सटीक कार्य विवरण एवं कार्य विशिष्टता तैयार करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होता है।

2. (A) किसी कार्य में पूर्ण तल्लीनता और आत्म-चेतना का अभाव।
खेल मनोविज्ञान के अंतर्गत 'प्रवाह' एक ऐसी मानसिक स्थिति है जहाँ खिलाड़ी अपने खेल में इस कदर मग्न हो जाता है कि उसे बाहरी वातावरण और स्वयं की चेतना का बोध नहीं रहता। इस अवस्था के दौरान व्यक्ति का ध्यान पूरी तरह से वर्तमान कार्य पर केंद्रित होता है और समय का आभास समाप्त हो जाता है। यह स्थिति उत्कृष्ट प्रदर्शन और गहरी संतुष्टि प्रदान करती है, जिससे खिलाड़ी की शारीरिक क्षमताएं उच्चतम स्तर पर होती हैं।

3. (C) संज्ञानात्मक कार्य निष्पादन में बाधा, विशेष रूप से अवधान से संबंधित कार्य।
पर्यावरणीय शोर के उच्च स्तर के लंबे समय तक संपर्क में रहने से मानवीय मस्तिष्क की सूचना प्रसंस्करण क्षमता प्रतिकूल रूप से प्रभावित होती है। इसका सबसे बुरा प्रभाव एकाग्रता और ध्यानात्मक कार्यों पर पड़ता है, जिससे संज्ञानात्मक प्रदर्शन में निरंतर गिरावट आती है। शोर एक तनाव कारक के रूप में कार्य करता है जो मानसिक थकान को बढ़ाता है और जटिल समस्याओं को सुलझाने की गति और सटीकता को बाधित करता है। यह निरंतर व्यवधान उत्पादकता को कम करता है।

4. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
कार्य संतोष को एक बहुआयामी अभिवृत्ति माना जाता है क्योंकि यह कर्मचारी की अपने कार्य के प्रति समग्र भावनात्मक प्रतिक्रिया को दर्शाता है। एक व्यक्ति अपने कार्य के विभिन्न घटकों के प्रति भिन्न दृष्टिकोण रख सकता है। उदाहरण के लिए, एक कर्मचारी अपने वेतन और सुविधाओं से अत्यंत प्रसन्न हो सकता है, जबकि वह अपने पर्यवेक्षक के व्यवहार या कार्यशैली से गंभीर रूप से असंतुष्ट हो सकता है। यह जटिलता दर्शाती है कि संतोष केवल एक तत्व पर आधारित नहीं होता।

5. (C) नियंत्रण बढ़ाने के लिए कठोर पदानुक्रम लागू करना।
संगठनात्मक विकास का मुख्य उद्देश्य मानवीय संबंधों और कार्य प्रक्रियाओं में सुधार के माध्यम से संस्था की कुल प्रभावशीलता को बढ़ाना है। यह दृष्टिकोण लचीलेपन, विश्वास और खुले संवाद पर आधारित होता है ताकि एक सहयोगात्मक वातावरण निर्मित किया जा सके। इसके विपरीत, कठोर पदानुक्रम और अत्यधिक नियंत्रण लागू करना इसके मूल सिद्धांतों के विरुद्ध है। यह प्रक्रिया नवाचार और समस्या समाधान की क्षमताओं को विकसित करने पर बल देती है ताकि संगठन बदलती परिस्थितियों में स्वयं को ढाल सके।

6. (B) मानस-चित्रण
मानस-चित्रण खेल मनोविज्ञान की एक प्रभावी तकनीक है जिसमें खिलाड़ी वास्तविक अभ्यास के बिना अपने मन में सफल प्रदर्शन की कल्पना करता है। इस प्रक्रिया में खिलाड़ी अपनी सभी इंद्रियों का उपयोग करके खेल के विशिष्ट कौशल या परिस्थिति का मानसिक पूर्वाभ्यास करता है। यह अभ्यास खिलाड़ी के आत्मविश्वास को बढ़ाता है, एकाग्रता में सुधार करता है और प्रदर्शन के दौरान होने वाली चिंता को नियंत्रित करने में सहायता करता है। यह मानसिक खाका ही वास्तविक खेल में बेहतर परिणामों का आधार बनता है।

7. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पर्यावरणीय मनोविज्ञान के अनुसार, जनसंख्या घनत्व एक भौतिक माप है, जबकि भीड़भाड़ एक व्यक्तिपरक और मनोवैज्ञानिक अनुभव है। उच्च घनत्व वाली स्थिति हमेशा तनावपूर्ण नहीं होती, क्योंकि भीड़भाड़ का अनुभव व्यक्ति के नियंत्रण की भावना, सामाजिक संदर्भ और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर निर्भर करता है। यदि व्यक्ति परिस्थिति को नियंत्रित कर सकता है, तो वह उच्च घनत्व में भी असहज महसूस नहीं करता। अतः, भीड़भाड़ की भावना विशुद्ध रूप से एक आत्मनिष्ठ धारणा है जो विभिन्न कारकों द्वारा प्रभावित होती है।

8. (A) कार्य और संगठन के बारे में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों जानकारी प्रदान करना।
यथार्थवादी कार्य पूर्वावलोकन का मुख्य उद्देश्य संभावित कर्मचारियों को नौकरी और कार्य परिवेश की वास्तविक तस्वीर दिखाना है। इसमें केवल लाभों को ही नहीं, बल्कि कार्य की चुनौतियों और कठिनाइयों को भी स्पष्ट रूप से बताया जाता है। ऐसा करने से आवेदकों को सटीक अपेक्षाएं विकसित करने में सहायता मिलती है। यह प्रक्रिया उन उम्मीदवारों को स्वयं ही हटने का अवसर देती है जो कार्य की मांगों के अनुरूप नहीं होते, जिससे अंततः भविष्य में कर्मचारी परिवर्तन की दर कम होती है।

9. (C) मान्यता
हर्ज़बर्ग के द्वि-कारक सिद्धांत के अनुसार, मान्यता एक 'प्रेरक' कारक है जो कर्मचारी को अधिक मेहनत करने के लिए आंतरिक रूप से प्रोत्साहित करती है। ये कारक कार्य की विषय-वस्तु से जुड़े होते हैं और दीर्घकालिक संतोष प्रदान करते हैं। इसके

आदतों को अपनाने की प्रेरणा कम हो सकती है। वे मानते हैं कि सुरक्षा उपायों के बावजूद दुर्घटनाएँ होनी ही हैं और वे उन्हें रोक नहीं सकते।

28. (B) वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति में हस्तक्षेप करता है या उसे रोकता है।
भीड़भाड़ का व्यवहार अवरोध सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि उच्च जनसंख्या घनत्व के नकारात्मक परिणाम तब अनुभव होते हैं जब दूसरों की उपस्थिति व्यक्ति की गतिविधियों में बाधा डालती है। जब बहुत अधिक लोग एक सीमित स्थान में होते हैं, तो व्यक्ति अपने व्यक्तिगत और कार्य लक्ष्यों को सुचारू रूप से पूरा करने में कठिनाई महसूस करता है। यह अवरोध हताशा और तनाव को जन्म देता है क्योंकि व्यक्ति अपनी कार्यक्षमता और स्वतंत्रता पर अंकुश महसूस करता है। इस प्रकार, भीड़भाड़ का मुख्य कष्ट लक्ष्यों की अप्राप्ति है।

29. (C) समवर्ती वैधता
समवर्ती वैधता एक प्रकार की मानदंड-संबंधी वैधता है जहाँ एक नए चयन परीक्षण के अंकों की तुलना वर्तमान कर्मचारियों के वास्तविक प्रदर्शन से संबंधित आँकड़ों से उसी समय की जाती है। यह वैधता यह सुनिश्चित करती है कि परीक्षण उन कौशलों और क्षमताओं को सही ढंग से माप रहा है जो वर्तमान में प्रभावी कार्य निष्पादन के लिए आवश्यक हैं। भविष्यसूचक वैधता के विपरीत, इसमें प्रतीक्षा अवधि की आवश्यकता नहीं होती। यह पद्धति यह सत्यापित करने में सहायक है कि परीक्षण के अंकों और कार्य सफलता के बीच सीधा संबंध है।

30. (D) संदेश का इच्छानुसार स्पष्ट और सफल कूटवाचन।
संचार प्रक्रिया में 'शोर' उन सभी बाधाओं को संदर्भित करता है जो संदेश के स्पष्ट संप्रेषण या समझ में व्यवधान उत्पन्न करती हैं। इसमें भौतिक बाधाएं जैसे मशीनों का शोर, मनोवैज्ञानिक बाधाएं जैसे प्राप्तकर्ता का ध्यान भटकना, और भाषाई बाधाएं जैसे जटिल तकनीकी शब्दावली का उपयोग शामिल हैं। संदेश का सफल कूटवाचन शोर का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह प्रभावी संचार का परिणाम है। शोर हमेशा संदेश के मूल अर्थ को विकृत करने या उसे प्राप्तकर्ता तक पहुँचने से रोकने का कार्य करता है।

31. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
पथ-लक्ष्य सिद्धांत बताता है कि नेता का मुख्य कार्य अनुयायियों के लक्ष्यों तक पहुँचने का मार्ग सुगम बनाना और आवश्यक सहायता प्रदान करना है। परिवर्तनकारी नेतृत्व अनुयायियों को प्रेरित करके उन्हें असाधारण परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है। नेता-सदस्य विनिमय सिद्धांत नेता और प्रत्येक अधीनस्थ के बीच विकसित होने वाले विशिष्ट संबंधों पर ध्यान केंद्रित करता है। गुण सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि प्रभावी नेताओं में कुछ जन्मजात और विशिष्ट व्यक्तिगत विशेषताएं होती हैं जो उन्हें अन्य व्यक्तियों से पृथक करती हैं।

32. (B) मनोवैज्ञानिक कल्याण को बढ़ाना, जिसमें मनोदशा में सुधार और तनाव में कमी शामिल है।
मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, व्यायाम का प्राथमिक उद्देश्य शारीरिक सुदृढ़ता के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करना है। नियमित शारीरिक गतिविधि मस्तिष्क में एंडोर्फिन और सेरोटोनिन जैसे रसायनों के स्तर को बढ़ाती है, जो अवसाद और चिंता के लक्षणों को कम करने में सहायक होते हैं। यह न केवल आत्मविश्वास बढ़ाता है, बल्कि दैनिक जीवन के तनावों से निपटने की क्षमता को भी विकसित करता है। इस प्रकार, व्यायाम व्यक्ति के समग्र जीवन की गुणवत्ता और भावनात्मक स्थिरता में सकारात्मक एवं सार्थक परिवर्तन लाता है।

33. (B) मतिभ्रम और बाधित संज्ञानात्मक कार्य।
संवेदी अभाव पर किए गए शोध से पता चलता है कि जब मानव मस्तिष्क को लंबे समय तक बाहरी उत्तेजनाओं से पूरी तरह काट दिया जाता है, तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। मस्तिष्क सामान्य कार्य करने के लिए संवेदी इनपुट पर निर्भर करता है। इसके अभाव में व्यक्ति को मतिभ्रम होने लगता है, सोचने की क्षमता कम हो जाती है और समय का बोध समाप्त हो जाता है। यह स्थिति विश्राम के बजाय मानसिक तनाव और संज्ञानात्मक विघटन पैदा करती है, जो यह सिद्ध करती है कि उत्तेजना का न्यूनतम स्तर अनिवार्य है।

34. (B) केवल I और II
निर्णय लेने का तार्किक मॉडल पूर्ण जानकारी और अधिकतम लाभ के आदर्श परिदृश्य पर आधारित है। इसके विपरीत, 'सीमित तार्किकता' यह स्वीकार करती है कि वास्तविक दुनिया में निर्णय लेने वाले व्यक्ति समय, सूचना और अपनी मानसिक क्षमताओं की सीमाओं के भीतर ही काम करते हैं। 'समूह-चिंतन' एक नकारात्मक प्रक्रिया है जहाँ समूह का सामंजस्य बनाए रखने के दबाव में आलोचनात्मक मूल्यांकन दब जाता है, जिससे अक्सर गलत निर्णय लिए जाते हैं। अतः, प्रथम दो कथन सही हैं जबकि तीसरा कथन भ्रामक और त्रुटिपूर्ण है।

35. (C) सिद्धांत X
डगलस मैकग्रेगर के सिद्धांत X के अनुसार, प्रबंधकों की यह धारणा होती है कि कर्मचारी स्वभाव से आलसी होते हैं, वे काम से बचना चाहते हैं और उनमें महत्वाकांक्षा की कमी होती है। इस विचारधारा के कारण, प्रबंधकों को लगता है कि वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कर्मचारियों को कड़ी निगरानी, नियंत्रण और सजा के डर से निर्देशित किया जाना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण पूरी तरह से बाहरी नियंत्रण पर आधारित है और मानता है कि केवल आर्थिक पुरस्कार ही काम करने का एकमात्र प्रेरक कारक है।

36. (D) उच्च समर्थन, विश्वास और खुलेपन की धारणा।
एक सकारात्मक संगठनात्मक वातावरण वह है जहाँ कर्मचारी स्वयं को सुरक्षित, समर्थित और महत्वपूर्ण महसूस करते हैं। ऐसे वातावरण में प्रबंधन और कर्मचारियों के बीच उच्च स्तर का आपसी विश्वास होता है और सूचनाओं का संचार खुला और पारदर्शी रहता है। यह धारणा कर्मचारियों को अपने विचार साझा करने और नवाचार करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

जब कर्मचारियों को उचित समर्थन और प्रतिपुष्टि प्राप्त होती है, तो उनकी कार्य संतुष्टि और उत्पादकता में वृद्धि होती है, जो अंततः संगठन की समग्र सफलता में सार्थक योगदान देती है।

37. (C) उत्तेजन नियंत्रण रणनीतियां जैसे गहरी सांस लेना।
खेल प्रदर्शन में अत्यधिक चिंता खिलाड़ी की एकाग्रता और मांसपेशियों के समन्वय को बाधित कर सकती है। उत्तेजन नियंत्रण रणनीतियाँ, जैसे गहरी साँस लेना और शिथिलन, शरीर के तनाव स्तर को कम करने में अत्यंत प्रभावी होती हैं। ये तकनीकें खिलाड़ी को मानसिक रूप से शांत करने और अपने ध्यान को पुनः खेल पर केंद्रित करने में सहायता करती हैं। जब उत्तेजन का स्तर इष्टतम होता है, तो खिलाड़ी दबाव में भी अपनी क्षमताओं का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सफल होता है और तकनीकी त्रुटियां कम करता है।

38. (B) यर्क्स-डोडसन नियम
यर्क्स-डोडसन नियम उत्तेजना और प्रदर्शन के बीच एक वक्रीय संबंध का वर्णन करता है। यह नियम बताता है कि प्रत्येक कार्य के लिए उत्तेजना का एक इष्टतम स्तर होता है जिस पर प्रदर्शन उच्चतम होता है। यदि उत्तेजना इस स्तर से बहुत कम या बहुत अधिक हो जाती है, तो कार्य निष्पादन की गुणवत्ता घटने लगती है। जटिल कार्यों के लिए कम उत्तेजना की आवश्यकता होती है, जबकि सरल कार्यों के लिए उच्च उत्तेजना लाभदायक हो सकती है। यह सिद्धांत तनाव प्रबंधन और कार्य कुशलता में बहुत महत्वपूर्ण है।

39. (D) घनत्व भौतिक क्षेत्र का माप है जबकि भीड़भाड़ एक आत्मनिष्ठ भावना है।
पर्यावरणीय मनोविज्ञान में जनसंख्या घनत्व एक वस्तुनिष्ठ भौतिक स्थिति है जिसे प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्तियों की संख्या के रूप में मापा जाता है। इसके विपरीत, भीड़भाड़ एक व्यक्तिपरक मनोवैज्ञानिक अनुभव है जो तब उत्पन्न होता है जब व्यक्ति को लगता है कि दूसरों की उपस्थिति उसके व्यक्तिगत स्थान में हस्तक्षेप कर रही है। एक व्यक्ति उच्च घनत्व वाले स्थान में भी आरामदायक महसूस कर सकता है, जबकि वह कम घनत्व वाली स्थिति में भी भीड़भाड़ का अनुभव कर सकता है, जो पूर्णतः संदर्भ पर निर्भर करता है।

40. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संगठनों में प्रशिक्षण कर्मचारी की कार्यक्षमता और व्यावसायिक विकास के लिए अपरिहार्य है। प्रशिक्षण आवश्यकता विश्लेषण इस प्रक्रिया का आधार है क्योंकि यह उन विशिष्ट क्षेत्रों की पहचान करता है जहाँ कौशल या ज्ञान की कमी है। बिना विश्लेषण के लागू किया गया प्रशिक्षण कार्यक्रम संसाधनों की बर्बादी हो सकता है और वांछित परिणाम नहीं दे पाता। अतः, पहले यह समझना आवश्यक है कि किसे और क्या सिखाने की आवश्यकता है, तभी प्रशिक्षण की प्रभावशीलता और संगठन को होने वाले वास्तविक लाभ सुनिश्चित किए जा सकते हैं।

41. (C) कार्यकर्ता की थकान जिसके कारण अवधान भटक गया।
औद्योगिक दुर्घटनाओं के संदर्भ में 'मानवीय कारक' उन कारकों को संदर्भित करते हैं जो व्यक्ति की शारीरिक या मानसिक स्थिति से जुड़े होते हैं। कार्यकर्ता की थकान एकाग्रता को कम करती है और निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करती है, जिससे दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती है। मशीन की खराबी या खराब प्रकाश व्यवस्था जैसे कारक स्थितिजन्य या पर्यावरणीय कारणों में आते हैं। मानवीय कारकों को समझकर और उन पर ध्यान देकर, जैसे कि उचित विश्राम का प्रबंधन, कार्यस्थल की सुरक्षा को काफी हद तक सुधारा जा सकता है।

42. (A) प्रतिबद्धता का बढ़ना
प्रतिबद्धता का बढ़ना एक ऐसा संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह है जिसमें व्यक्ति अपने द्वारा लिए गए पिछले निर्णय के साथ चिपका रहता है, भले ही नए साक्ष्य स्पष्ट रूप से दर्शाते हों कि वह निर्णय गलत था। ऐसा अक्सर इसलिए होता है क्योंकि व्यक्ति पहले से निवेश किए गए समय या प्रयास को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहता। यह स्थिति तर्कहीनता की ओर ले जाती है और भविष्य में होने वाले नुकसान को बढ़ाती है। लोग अपनी छवि बचाने के लिए भी गलत निर्णयों पर अड़े रहने की प्रवृत्ति दिखाते हैं।

43. (D) संवेदनशीलता प्रशिक्षण
संवेदनशीलता प्रशिक्षण एक व्यक्तिगत स्तर का संगठनात्मक विकास हस्तक्षेप है जिसका उद्देश्य व्यक्तियों में आत्म-जागरुकता और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ाना है। इसमें सहभागी एक असंरचित समूह वातावरण में एक-दूसरे के साथ संवाद करते हैं, जिससे वे अपने व्यवहार के दूसरों पर पड़ने वाले प्रभाव को समझ पाते हैं। यह तकनीक पारस्परिक संबंधों में सुधार और सहानुभूति विकसित करने पर केंद्रित होती है। टीम निर्माण या सर्वेक्षण प्रतिपुष्टि जैसे अन्य हस्तक्षेप समूहों या पूरे संगठन के स्तर पर कार्य करते हैं, न कि केवल व्यक्तिगत व्यवहार पर।

44. (B) सभी आवेदकों से पूछे जाने वाले कार्य-संबंधित प्रश्नों का एक मानकीकृत सेट।
संरचित साक्षात्कार चयन प्रक्रिया में निष्पक्षता और सटीकता सुनिश्चित करने का एक प्रमुख माध्यम है। इसमें साक्षात्कारकर्ता पहले से निर्धारित और कार्य-संबंधित प्रश्नों की एक सूची का उपयोग करता है, जो सभी उम्मीदवारों के लिए समान होती है। मूल्यांकन के मानदंड भी मानकीकृत होते हैं, जिससे विभिन्न आवेदकों के बीच तुलना करना सरल हो जाता है। यह पद्धति साक्षात्कारकर्ता के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों को कम करती है और नौकरी के प्रदर्शन की भविष्यवाणी करने में असंरचित साक्षात्कार की तुलना में अधिक विश्वसनीय और वैध मानी जाती है।

45. (C) भावात्मक, संज्ञानात्मक और व्यवहारात्मक।
कार्य अभिवृत्ति को समझने के लिए तीन प्रमुख घटकों का अध्ययन किया जाता है। भावात्मक घटक कार्य के प्रति कर्मचारी की भावनाओं से संबंधित है। संज्ञानात्मक घटक में कार्य के बारे में व्यक्ति के विश्वास और राय शामिल होती है। व्यवहारात्मक घटक कार्य के प्रति एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने की प्रवृत्ति या इरादे को दर्शाता है। ये तीनों मिलकर यह निर्धारित करते हैं कि एक कर्मचारी अपने कार्य को किस प्रकार देखता है और कार्यस्थल पर उसकी प्रतिक्रिया

क्या होती है। यह कर्मचारी के समग्र प्रदर्शन को प्रभावित करता है।

46. (D) संज्ञानात्मक प्रदर्शन में कमी और आक्रामकता में वृद्धि।
पर्यावरणीय वायु प्रदूषण का मानव मनोविज्ञान पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। प्रदूषित हवा में मौजूद हानिकारक तत्व मस्तिष्क के कार्यों को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे एकाग्रता में कमी और सोचने-समझने की गति धीमी हो जाती है। इसके अतिरिक्त, वायु प्रदूषण के उच्च स्तर को चिड़चिड़ापन और आक्रामक व्यवहार में वृद्धि से जोड़ा गया है। यह मानसिक स्वास्थ्य और समग्र कल्याण को प्रभावित करता है, जिससे सामाजिक अंतःक्रियाओं में नकारात्मकता आ सकती है। अतः, स्वच्छ पर्यावरण मानसिक स्थिरता और शांति के लिए अत्यंत आवश्यक है।

47. (C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
लक्ष्य निर्धारण खेल मनोविज्ञान की एक शक्तिशाली तकनीक है जो प्रदर्शन और प्रेरणा को बढ़ाने में सहायता करती है। प्रभावी लक्ष्य न केवल विशिष्ट और चुनौतीपूर्ण होने चाहिए, बल्कि वे प्राप्त करने योग्य भी होने चाहिए। यदि लक्ष्य बहुत अधिक कठिन या अवास्तविक हों, तो वे प्रेरणा देने के बजाय निराशा और हताशा पैदा कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, लक्ष्यों को मापने योग्य होना चाहिए ताकि खिलाड़ी अपनी प्रगति का आकलन कर सके। अतः, केवल चुनौती ही नहीं, बल्कि व्यावहारिकता भी लक्ष्य निर्धारण में पूर्णतः अनिवार्य है।

48. (B) औपचारिकता
औपचारिकता उस सीमा को दर्शाती है जिस तक किसी संगठन में भूमिकाओं, कार्यों और संचार को लिखित नियमों और प्रक्रियाओं द्वारा नियंत्रित किया जाता है। उच्च औपचारिकता वाले संगठनों में स्पष्ट कार्य विवरण और आधिकारिक संचार माध्यम होते हैं, जो व्यवहार में मानकीकरण सुनिश्चित करते हैं। यह अस्पष्टता को कम करता है और संगठनात्मक नियंत्रण बनाए रखने में सहायता करता है। कम औपचारिकता में कर्मचारियों को अपने कार्य करने के तरीके में अधिक लचीलापन और स्वायत्तता मिलती है, जहाँ अनौपचारिक संवाद को अधिक महत्व दिया जाता है।

49. (B) 4, 5, 2, 1, 3
संगठनात्मक विकास की प्रक्रिया एक व्यवस्थित क्रम का पालन करती है जो संगठन में प्रवेश और अनुबंध से शुरू होती है। इसके बाद, समस्याओं को समझने के लिए प्रासंगिक आँकड़ों का व्यवस्थित रूप से संग्रह किया जाता है। फिर, इन आँकड़ों का विश्लेषण करके समस्याओं के कारणों का निदान किया जाता है। अगले चरण में, पहचान की गई समस्याओं को हल करने के लिए उपयुक्त हस्तक्षेपों को लागू किया जाता है। अंत में, लागू किए गए परिवर्तनों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाता है और आवश्यक प्रतिपुष्टि प्रदान की जाती है।

50. (A) पर्यावरणीय मनोविज्ञान
पर्यावरणीय मनोविज्ञान एक अंतःविषय क्षेत्र है जो मानव व्यवहार और उसके भौतिक परिवेश के बीच की अंतःक्रिया का अध्ययन करता है। इसमें प्राकृतिक वातावरण के साथ-साथ मानव निर्मित परिवेश जैसे भवनों के मनोवैज्ञानिक प्रभावों का विश्लेषण किया जाता है। यह क्षेत्र यह समझने का प्रयास करता है कि भौतिक वातावरण हमारे स्वास्थ्य, तनाव के स्तर और सामाजिक व्यवहार को कैसे प्रभावित करता है। इसके अध्ययन का उद्देश्य ऐसे परिवेशों का निर्माण करना है जो मानवीय कल्याण और उत्पादकता को बढ़ावा देने में अत्यंत सहायक सिद्ध हों।

51. (B) केवल II और III
नेतृत्व केवल आदेश देने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक गतिशील प्रक्रिया है। प्रभावी नेता अपने व्यवहार से संगठन के वातावरण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं और कर्मचारियों की कार्य संतुष्टि में वृद्धि करते हैं। नेतृत्व का मूल उद्देश्य एक समूह को साझा लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर प्रेरित और प्रभावित करना है। इसमें कर्मचारियों को सशक्त बनाना और उनके कौशल विकास के लिए अवसर प्रदान करना भी शामिल है। अतः, नेतृत्व एक प्रेरणादायक और सहभागी प्रक्रिया है जो संगठन को सफल बनाती है।

52. (D) एक संगठन के भीतर अनौपचारिक संचार नेटवर्क।
'जनप्रवाद' एक संगठन के भीतर अनौपचारिक संचार के उस जाल को कहते हैं जो आधिकारिक पदानुक्रम और औपचारिक माध्यमों के बाहर कार्य करता है। यह संचार सामाजिक संबंधों और मित्रता पर आधारित होता है और अत्यंत तीव्र गति से फैलता है। यद्यपि इसकी सूचनाएं हमेशा पूरी तरह सटीक नहीं होतीं, लेकिन यह कर्मचारियों को वह जानकारी प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो औपचारिक स्रोतों से प्राप्त नहीं होती। यह संगठनात्मक संस्कृति और कर्मचारी भावनाओं को समझने का एक प्रभावी माध्यम भी है।

53. (C) सामाजिक सुगमीकरण
सामाजिक सुगमीकरण एक ऐसी घटना है जहाँ दूसरों की उपस्थिति मात्र से व्यक्ति के प्रदर्शन में सुधार होता है, विशेष रूप से उन कार्यों में जो उसने अच्छी तरह सीखे हैं। बास्केटबॉल जैसे खेलों में, दर्शकों की उपस्थिति खिलाड़ी के उत्तेजन स्तर को बढ़ा देती है, जो उसे बेहतर खेलने के लिए प्रेरित कर सकती है। यह प्रभाव जटिल या नए कार्यों के मामले में विपरीत भी हो सकता है, लेकिन अभ्यस्त कौशलों के लिए यह अक्सर सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है और प्रदर्शन को नई ऊंचाइयों पर ले जाता है।

54. (B) मानवीय क्षमताओं के अनुरूप उपकरणों और कार्य परिवेशों के डिजाइन में सुधार करना।
एर्गोनॉमिक्स का मुख्य उद्देश्य कार्यस्थल और उसमें उपयोग होने वाले उपकरणों को मानवीय सीमाओं और क्षमताओं के अनुसार ढालना है। इसका लक्ष्य थकान, शारीरिक परेशानी और चोटों के जोखिम को कम करना है ताकि कार्यक्षमता और सुरक्षा बढ़ सके। इसमें कुर्सियों के डिजाइन से लेकर मशीनों के नियंत्रण पैनलों तक सब कुछ शामिल है। जब कार्य परिवेश मानवीय क्षमताओं के अनुरूप होता है, तो कर्मचारी न केवल

मूल्य, परंपराएं और अंतर्निहित विश्वास सम्मिलित होते हैं जो समय के साथ विकसित होते हैं। वातावरण को अक्सर संस्कृति की बाहरी अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। संस्कृति संगठन की पहचान निर्धारित करती है, जबकि वातावरण यह तय करता है कि कर्मचारी वर्तमान में कैसा अनुभव कर रहे हैं।

73. (C) संवेदी अभाव
संवेदी अभाव एक ऐसी स्थिति है जहाँ किसी व्यक्ति को उसके पर्यावरण से प्राप्त होने वाली सामान्य संवेदी उत्तेजनाओं को न्यूनतम कर दिया जाता है या पूर्णतः समाप्त कर दिया जाता है। इस क्षेत्र में शोध यह समझने के लिए किया जाता है कि उत्तेजना की कमी मानव मस्तिष्क और व्यवहार को कैसे प्रभावित करती है। लंबे समय तक संवेदी अभाव से मतिभ्रम, एकाग्रता में कमी और समय के बोध में बदलाव जैसे गंभीर मनोवैज्ञानिक प्रभाव हो सकते हैं, जो उत्तेजना के न्यूनतम स्तर की आवश्यकता को प्रमाणित करते हैं।

74. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संगठन की सफलता के लिए एक स्पष्ट और प्रभावी संचार प्रणाली अपरिहार्य है क्योंकि यह सूचनाओं के सटीक प्रवाह को सुनिश्चित करती है। यदि संचार अस्पष्ट या अधूरा है, तो इससे कर्मचारियों के बीच भ्रम उत्पन्न होता है, जो कार्यों में त्रुटियों और अनावश्यक संघर्षों का कारण बनता है। प्रभावी संचार न केवल उत्पादकता को बढ़ाता है, बल्कि यह आपसी विश्वास और सहयोग को भी सुदृढ़ करता है। अतः, अस्पष्टता को दूर करना और संदेश के सही कूटवाचन को सुनिश्चित करना प्रबंधन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है।

75. (D) एकाग्रता
एकाग्रता खेल मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण कौशल है जिसमें खिलाड़ी बाहरी विक्षेपों को अनदेखा करके अपना ध्यान केवल प्रासंगिक संकेतों पर केंद्रित करता है। खिलाड़ी द्वारा विशिष्ट वस्तु पर ध्यान केंद्रित करना उसके अवधान को संकुचित करने की एक रणनीति है ताकि वह वस्तु की गति और दिशा का सटीक आकलन कर सके। यह अभ्यास खिलाड़ी को "वर्तमान क्षण" में रहने और उच्च प्रदर्शन के लिए आवश्यक मानसिक स्थिरता प्राप्त करने में सहायता करता है। एकाग्रता में सुधार से खिलाड़ी की प्रतिक्रिया क्षमता और निर्णय लेना बेहतर होता है।

76. (B) भर्ती
भर्ती एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य संगठन के रिक्त पदों के लिए संभावित और योग्य उम्मीदवारों की एक बड़ी संख्या को आकर्षित करना है। यह चयन प्रक्रिया से पहले का चरण है, जहाँ विभिन्न माध्यमों जैसे विज्ञापनों और इंटरनेट के माध्यम से लोगों को आवेदन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। एक प्रभावी भर्ती प्रक्रिया संगठन को सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं के समूह में से चुनने का अवसर प्रदान करती है। इसका मुख्य कार्य आवेदनकर्ताओं की संख्या और गुणवत्ता को बढ़ाना है ताकि आगे की चयन प्रक्रिया सार्थक और सफल हो सके।

77. (C) एक प्रबंधक द्वारा अपने अधीनस्थ को निष्पादन प्रतिपुष्टि प्रदान करना।
नीचे की ओर संचार वह प्रक्रिया है जहाँ सूचना संगठन के उच्च पदस्थ अधिकारियों से निम्न स्तर के कर्मचारियों की ओर प्रवाहित होती है। इसका उपयोग मुख्य रूप से निर्देश देने, लक्ष्यों को समझाने, नीतियों को संप्रेषित करने और कर्मचारियों के प्रदर्शन पर प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए किया जाता है। यह संचार संगठनात्मक अनुशासन और स्पष्टता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। यद्यपि यह अक्सर एकतरफा होता है, लेकिन एक प्रभावी नेता इसे सहयोगात्मक बनाकर कर्मचारियों की भागीदारी और समझ को बढ़ाने का प्रयास करता है ताकि लक्ष्यों की प्राप्ति हो सके।

78. (D) अपवाद द्वारा प्रबंधन
परिवर्तनकारी नेतृत्व अनुयायियों को प्रेरित और विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसके चार मुख्य घटक हैं: आदर्श प्रभाव, प्रेरणादायक अभिप्रेरणा, बौद्धिक प्रोत्साहन और व्यक्तिगत विचार। इसके विपरीत, 'अपवाद द्वारा प्रबंधन' लेन-देन संबंधी नेतृत्व की एक विशेषता है, जिसमें नेता केवल तभी हस्तक्षेप करता है जब मानक पूरे नहीं होते या समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। परिवर्तनकारी नेता भविष्य की दृष्टि पर काम करते हैं और सकारात्मक बदलाव लाते हैं, जबकि अपवाद द्वारा प्रबंधन यथास्थिति बनाए रखने और त्रुटियों को सुधारने तक ही सीमित रहता है।

79. (A) उच्च प्रत्याशा अक्सर उच्च प्रेरणा में योगदान देती है, जो प्रदर्शन पुरस्कृत होने पर संतुष्टि की ओर ले जा सकती है।
विक्टर व्रूम के प्रत्याशा सिद्धांत के अनुसार, यदि किसी कर्मचारी को विश्वास है कि उसके प्रयास बेहतर प्रदर्शन की ओर ले जाएंगे, तो उसकी प्रेरणा बढ़ती है। यह प्रेरणा तब कार्य संतोष में परिवर्तित होती है जब उस प्रदर्शन को कर्मचारी के लिए मूल्यवान पुरस्कारों से जोड़ा जाता है। अतः, प्रत्याशा स्वयं संतुष्टि नहीं है, बल्कि यह उस प्रक्रिया का प्रारंभिक चरण है जो अंततः उच्च प्रदर्शन और उसके परिणामस्वरूप मिलने वाली संतुष्टि के बीच की कड़ी को मजबूत करती है। यह सिद्धांत कर्मचारियों की कार्यकुशलता बढ़ाने में सहायक है।

80. (B) पर्यावरणीय मनोविज्ञान
पर्यावरणीय मनोविज्ञान इस बात का अध्ययन करता है कि भौतिक परिवेश मानवीय व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करता है। पार्कों और हरित स्थानों का निर्माण इसी सिद्धांत पर आधारित है कि प्रकृति के संपर्क में रहने से तनाव कम होता है और मनोवैज्ञानिक कल्याण में वृद्धि होती है। यह क्षेत्र निर्मित और प्राकृतिक वातावरण को इस प्रकार निर्मित करने पर बल देता है कि वे लोगों की सामाजिक और संज्ञानात्मक आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। ऐसे शहरी नियोजन से नागरिकों की जीवन गुणवत्ता और मानसिक स्थिरता में उल्लेखनीय सुधार होता है।

81. (B) 2, 1, 3, 4
नेतृत्व सिद्धांतों का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया रही है। सबसे पहले 'गुण सिद्धांत' आया जिसने नेताओं की जन्मजात

यदि उसे उचित रूप से पुरस्कृत किया जाए। अतः, यह एक जटिल अंतःक्रिया है जो स्थिति पर निर्भर करती है।

64. (B) सर्वेक्षण प्रतिपुष्टि
सर्वेक्षण प्रतिपुष्टि संगठनात्मक विकास की एक प्रभावी तकनीक है जिसमें प्रश्नावली के माध्यम से कर्मचारियों के विचारों और भावनाओं के आँकड़े एकत्र किए जाते हैं। इसके बाद, इन आँकड़ों का विश्लेषण किया जाता है और इसके परिणामों को कर्मचारियों के साथ साझा किया जाता है ताकि वे अपनी समस्याओं पर स्वयं चर्चा कर सकें। यह प्रक्रिया कर्मचारियों को संगठन की कार्यप्रणाली में सुधार लाने में सक्रिय रूप से सम्मिलित करती है। यह न केवल पारदर्शिता को बढ़ावा देती है, बल्कि सामूहिक समस्या-समाधान के माध्यम से प्रभावशीलता में भी वृद्धि करती है।

65. (B) भीड़भाड़
भीड़भाड़ का अनुभव केवल उच्च जनसंख्या घनत्व के कारण नहीं होता, बल्कि यह व्यक्ति द्वारा गोपनीयता और नियंत्रण खोने की भावना से जुड़ा है। जब व्यक्ति को लगता है कि दूसरों की उपस्थिति उसकी गतिविधियों में हस्तक्षेप कर रही है और वह अपने वातावरण को अपनी इच्छानुसार प्रबंधित नहीं कर पा रहा है, तो भीड़भाड़ की भावना उत्पन्न होती है। यह एक नकारात्मक मनोवैज्ञानिक तनाव है जो चिड़चिड़ापन और सामाजिक दूरी की प्रवृत्ति को जन्म देता है। अतः, स्थान की कमी के बजाय नियंत्रण का अभाव इसका मुख्य कारण है।

66. (A) पथ-लक्ष्य सिद्धांत
रॉबर्ट हाउस द्वारा विकसित पथ-लक्ष्य सिद्धांत बताता है कि नेता की मुख्य जिम्मेदारी अनुयायियों को उनके लक्ष्यों तक पहुँचने का मार्ग सुगम बनाना और आवश्यक सहायता प्रदान करना है। नेता को अनुयायियों की बाधाओं को दूर करना चाहिए और उन्हें आवश्यक दिशा-निर्देश तथा प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए ताकि वे सफलता प्राप्त कर सकें। यह सिद्धांत नेतृत्व शैली को अनुयायियों की आवश्यकताओं और कार्य के संदर्भ के अनुसार बदलने पर जोर देता है। जब मार्ग स्पष्ट और पुरस्कृत होता है, तो कर्मचारियों की प्रेरणा और संतोष में स्वतः वृद्धि होती है।

67. (A) केवल I
प्रशिक्षण की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए किर्कपैट्रिक के मॉडल के अनुसार प्रतिक्रिया, अधिगम, व्यवहार और परिणामों का मूल्यांकन करना अनिवार्य है। प्रशिक्षण आवश्यकता विश्लेषण कोई वैकल्पिक चरण नहीं, बल्कि पूरी प्रक्रिया की नींव है, क्योंकि यह बताता है कि प्रशिक्षण वास्तव में आवश्यक है या नहीं। यह मानना भी गलत है कि कार्य-स्थल प्रशिक्षण हमेशा श्रेष्ठ होता है, क्योंकि जटिल सैद्धांतिक ज्ञान के लिए अन्य विधियाँ अक्सर अधिक प्रभावी सिद्ध होती हैं। अतः, प्रशिक्षण का निर्माण हमेशा विशिष्ट उद्देश्यों और आवश्यकताओं पर आधारित होना चाहिए।

68. (D) कार्य के बारे में उनके पास मौजूद विश्वास, राय और जानकारी।
कार्य अभिवृत्ति का संज्ञानात्मक घटक उन विचारों और तार्किक विश्वासों को दर्शाता है जो एक कर्मचारी अपने कार्य के बारे में रखता है। इसमें वे सभी जानकारियां शामिल होती हैं जो व्यक्ति ने अनुभव या अवलोकन के माध्यम से एकत्र की हैं, जैसे वेतन का स्तर या पदोन्नति की निष्पक्षता। यह घटक निर्णय लेने और कार्य के मूल्यांकन के लिए आधार प्रदान करता है। यद्यपि भावनाएँ भी महत्वपूर्ण हैं, लेकिन संज्ञानात्मक घटक व्यक्ति को कार्य के प्रति एक व्यवस्थित और तर्कसंगत दृष्टिकोण विकसित करने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है।

69. (C) दुर्घटना प्रवणता
दुर्घटना प्रवणता एक ऐसा सिद्धांत है जो सुझाव देता है कि कुछ व्यक्तियों में उनके व्यक्तिगत गुणों या व्यक्तित्व लक्षणों के कारण दूसरों की तुलना में दुर्घटनाग्रस्त होने की अधिक संभावना होती है। जब प्रबंधन दुर्घटनाओं के लिए केवल श्रमिकों की लापरवाही को जिम्मेदार मानता है, तो वह इसी सिद्धांत का अनुसरण करता है। हालांकि आधुनिक सुरक्षा मनोविज्ञान पर्यावरणीय और स्थितिजन्य कारकों पर भी जोर देता है, लेकिन यह सिद्धांत मानता है कि कुछ लोग जन्मजात रूप से ही असुरक्षित व्यवहार की ओर प्रवृत्त होते हैं। यह दृष्टिकोण अक्सर विवादित रहता है।

70. (B) पूर्व-चिंतन
व्यवहार परिवर्तन के मॉडल के अनुसार, 'पूर्व-चिंतन' वह प्रारंभिक चरण है जहाँ व्यक्ति अपने अस्वस्थ व्यवहार को बदलने की कोई योजना नहीं रखता है। इस अवस्था में, व्यक्ति अक्सर अपनी समस्या के प्रति जागरुक नहीं होता या उसे बदलने के लाभों को नजरअंदाज करता है। व्यायाम के संदर्भ में, इस चरण में व्यक्ति को व्यायाम की आवश्यकता महसूस नहीं होती और वह भविष्य के लिए भी कोई सक्रिय विचार नहीं करता। बदलाव के प्रति प्रतिरोध और जागरुकता की कमी इस चरण की प्रमुख विशेषताएं मानी जाती हैं।

71. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
एंकरिंग पूर्वाग्रह प्रारंभिक जानकारी पर अत्यधिक निर्भरता को दर्शाता है। उपलब्धता अनुमानी का अर्थ है निर्णयों को उन जानकारियों पर आधारित करना जो आसानी से स्मरण हो जाती हैं। पुष्टिकरण पूर्वाग्रह में व्यक्ति केवल अपने मौजूदा विश्वासों का समर्थन करने वाली जानकारी खोजता है और विरोधी साक्ष्यों को अनदेखा करता है। प्रतिबद्धता का बढ़ना तब होता है जब कोई व्यक्ति पिछले गलत निर्णयों पर अड़ा रहता है, भले ही परिणाम नकारात्मक हों। ये पूर्वाग्रह तार्किक निर्णय लेने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण बाधाएं एवं त्रुटियां उत्पन्न करते हैं।

72. (A) वातावरण साझा धारणाओं को संदर्भित करता है, जबकि संस्कृति साझा मूल्यों और मान्यताओं को संदर्भित करती है।
संगठनात्मक वातावरण कार्यस्थल के परिवेश की वर्तमान स्थिति और कर्मचारियों की साझा धारणाओं का प्रतिबिंब है, जिसे मापना अपेक्षाकृत सरल है। इसके विपरीत, संगठनात्मक संस्कृति बहुत गहरी और स्थायी होती है, जिसमें संगठन के मूल

स्वस्थ रहते हैं, बल्कि उनकी उत्पादकता और मानसिक संतुष्टि में भी पर्याप्त एवं स्थाई सुधार होता है।

55. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
कार्य विस्तार का अर्थ है किसी कार्य में अतिरिक्त कार्यों को जोड़ना। कार्य संवर्धन कार्य की लंबवत गहराई को बढ़ाता है, जिससे कर्मचारी को अधिक उत्तरदायित्व और नियंत्रण प्राप्त होता है। कार्य आवर्तन एक ऐसी पद्धति है जिसमें कर्मचारियों को विभिन्न नौकरियों पर व्यवस्थित रूप से स्थानांतरित किया जाता है ताकि उनकी बोरियत कम हो। कार्य विश्लेषण वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी पद की विशिष्ट आवश्यकताओं, कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का सूक्ष्मता से अध्ययन और निर्धारण किया जाता है ताकि कार्य कुशलता बढ़ सके।

56. (A) सक्रिय श्रवण
प्रभावी संचार में सक्रिय श्रवण एक बाधा नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण सुविधा प्रदान करने वाला कौशल है। इसमें श्रोता न केवल शब्दों को सुनता है, बल्कि संदेश के पीछे की भावनाओं और इरादे को समझने का प्रयास भी करता है। इसके विपरीत, सूचना का छनन, चयनात्मक प्रत्यक्षबोध और सूचना अतिभार संचार को गंभीर रूप से बाधित करते हैं। सक्रिय श्रवण प्रेषक और प्राप्तकर्ता के बीच आपसी समझ को गहरा करता है और गलतफहमी की संभावनाओं को न्यूनतम करता है, जिससे संवाद सार्थक होता है।

57. (C) सामाजिक वातावरण से बहुत अधिक उत्तेजन प्राप्त करना।
भीड़भाड़ का अतिभार सिद्धांत यह बताता है कि जब व्यक्ति बहुत अधिक लोगों के संपर्क में आता है, तो उसे सामाजिक और संवेदी उत्तेजनाओं का सामना करना पड़ता है जो उसकी मानसिक क्षमता से अधिक होती हैं। सूचना का यह अत्यधिक प्रवाह मस्तिष्क को थका देता है, जिससे व्यक्ति तनाव और चिड़चिड़ापन महसूस करता है। ऐसी स्थिति में, व्यक्ति उत्तेजनाओं को नियंत्रित करने में असमर्थ हो जाता है, जिसके परिणामस्वरुप वह उस वातावरण से मानसिक रूप से अलग होने का प्रयास करने लगता है।

58. (A) कार्य संतोष
मिनेसोटा संतोष प्रश्नावली एक व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला मनोवैज्ञानिक उपकरण है जिसे कर्मचारी के कार्य संतोष को मापने के लिए निर्मित किया गया है। यह प्रश्नावली कार्य के विभिन्न पहलुओं जैसे कार्य की प्रकृति, पदोन्नति के अवसर, वेतन और पर्यवेक्षण की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करती है। इसके माध्यम से यह समझा जाता है कि कर्मचारी अपने कार्य के किन क्षेत्रों से संतुष्ट या असंतुष्ट हैं। यह आँकड़े संगठनों को अपनी नीतियों और कार्य प्रणालियों में सुधार करने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

59. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पर्यावरणीय मनोविज्ञान में शोर का मनोवैज्ञानिक प्रभाव उसके नियंत्रण की संभावना पर निर्भर करता है। यदि शोर अचानक और अनियंत्रित है, तो यह व्यक्ति की संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली को अधिक हानि पहुँचाता है क्योंकि व्यक्ति इसके लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं होता। पूर्वानुमान और नियंत्रण की क्षमता व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक रूप से सशक्त बनाती है, जिससे तनाव की तीव्रता कम महसूस होती है। अतः, शोर की तीव्रता के साथ-साथ उसकी प्रकृति और व्यक्ति का उस पर अधिकार तनाव प्रतिक्रिया को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

60. (B) सुरक्षा के मूल्य और प्राथमिकता के संबंध में कर्मचारियों की साझा धारणाएं।
सुरक्षा वातावरण एक मनोवैज्ञानिक अवधारणा है जो यह दर्शाती है कि कर्मचारी अपने संगठन में सुरक्षा को कितनी गंभीरता से लिया जाता हुआ देखते हैं। यह साझा धारणा इस पर आधारित होती है कि संगठन सुरक्षा नियमों को कैसे लागू करता है और सुरक्षा के लिए संसाधनों को क्या प्राथमिकता देता है। जब कर्मचारी महसूस करते हैं कि प्रबंधन वास्तव में उनकी भलाई की चिंता करता है, तो वे स्वयं भी सुरक्षित व्यवहार अपनाते हैं। यह वातावरण आधिकारिक नीतियों से अधिक प्रभावी होता है क्योंकि यह वास्तविक कार्य संस्कृति को दर्शाता है।

61. (C) असंरचित साक्षात्कार
असंरचित साक्षात्कार में कोई पूर्व-निर्धारित प्रश्न या निश्चित रूपरेखा नहीं होती है। साक्षात्कारकर्ता स्वतंत्र रूप से बातचीत करता है और उत्तरों के आधार पर नए प्रश्न पूछता है। यद्यपि यह पद्धति उम्मीदवार के व्यक्तित्व को समझने में सहायक हो सकती है, लेकिन इसमें व्यक्तिपरकता और पूर्वाग्रह का उच्च जोखिम रहता है। विभिन्न उम्मीदवारों की तुलना करना कठिन होता है क्योंकि प्रत्येक से अलग प्रश्न पूछे जाते हैं। इसलिए, व्यावसायिक चयन प्रक्रियाओं में इसे संरचित साक्षात्कारों की तुलना में कम विश्वसनीय और वैध माना जाता है।

62. (D) खिलाड़ी के प्रदर्शन और कल्याण को बढ़ाने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू करना।
खेल मनोविज्ञान का प्राथमिक केंद्र बिंदु खिलाड़ी की मानसिक स्थिति को समझना और उसे प्रदर्शन में सुधार के लिए अनुकूलित करना है। इसमें एकाग्रता बढ़ाना, आत्मविश्वास विकसित करना, चिंता का प्रबंधन और टीम सामंजस्य जैसे पहलुओं पर कार्य किया जाता है। खेल मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि शारीरिक कौशल के साथ-साथ मानसिक दृढ़ता भी सफलता के लिए अनिवार्य है। इसका लक्ष्य केवल जीत हासिल करना नहीं, बल्कि खिलाड़ी के समग्र मानसिक स्वास्थ्य और खेल के प्रति उसके सकारात्मक दृष्टिकोण को भी बनाए रखना होता है।

63. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
कार्य संतोष और कार्य प्रदर्शन के बीच संबंध सरल या सार्वभौमिक नहीं है। यह कहना गलत होगा कि एक संतुष्ट कर्मचारी हमेशा उच्च प्रदर्शन करेगा, क्योंकि शोध दर्शाते हैं कि इनके बीच सह-संबंध अक्सर मध्यम होता है। यह संबंध विभिन्न मध्यवर्ती कारकों जैसे व्यक्ति का कौशल, कार्य की जटिलता और संगठन की पुरस्कार प्रणालियों से प्रभावित होता है। कभी-कभी उच्च प्रदर्शन स्वयं संतोष की ओर ले जाता है

विशेषताओं पर ध्यान दिया। इसके बाद 'व्यवहारवादी सिद्धांत' विकसित हुए, जिनमें नेताओं के कार्यों और शैलियों का अध्ययन किया गया। तत्पश्चात 'आकस्मिकता सिद्धांतों' ने स्थिति के महत्व को रेखांकित किया। अंततः, 'परिवर्तनकारी नेतृत्व' का उदय हुआ, जिसने नेताओं द्वारा अनुयायियों को प्रेरित करने और संगठन में क्रांतिकारी बदलाव लाने की क्षमता पर बल दिया। यह विकास दर्शाता है कि नेतृत्व एक अत्यंत जटिल और बहुआयामी अवधारणा है।

82. (A) वास्तव में सप्ताह में तीन बार व्यायामशाला जाना।
किसी भी अभिवृत्ति का व्यवहारात्मक घटक उस वास्तविक क्रिया या व्यवहार को संदर्भित करता है जो व्यक्ति किसी वस्तु या विचार के प्रति करता है। व्यायाम के संदर्भ में, केवल यह सोचना कि व्यायाम अच्छा है या व्यायाम की योजना बनाना पर्याप्त नहीं है। जब व्यक्ति सक्रिय रूप से व्यायाम की गतिविधियों में संलग्न होता है और नियमित रूप से व्यायामशाला जाता है, तो वह अपनी अभिवृत्ति के व्यवहारात्मक पक्ष को प्रदर्शित करता है। यह घटक अन्य दो घटकों का व्यावहारिक परिणाम होता है और लक्ष्य प्राप्ति के लिए निर्णायक माना जाता है।

83. (C) प्रभाव व्यक्तिगत नियंत्रण और पूर्व अनुभवों द्वारा मध्यस्थ होते हैं।
भीड़भाड़ के मनोवैज्ञानिक प्रभाव सार्वभौमिक नहीं होते, बल्कि वे अत्यंत व्यक्तिपरक होते हैं। उच्च जनसंख्या घनत्व किसी व्यक्ति के लिए तभी तनावपूर्ण होता है जब उसे अपने वातावरण पर नियंत्रण की कमी महसूस होती है। व्यक्ति के पूर्व अनुभव, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और उस समय की सामाजिक स्थिति यह निर्धारित करती है कि वह भीड़ को कैसे ग्रहण करेगा। उदाहरण के लिए, एक उत्सव में भीड़ का आनंद लिया जा सकता है, जबकि एक सीमित कार्यालय स्थान में वही भीड़ कष्टदायक हो सकती है। अतः, नियंत्रण की भावना मुख्य कारक है।

84. (A) केवल II
औद्योगिक सुरक्षा में शारीरिक चोटों के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक तनाव और थकान को भी गंभीरता से लिया जाता है। 'अल्प-दुर्घटना' उन घटनाओं को कहते हैं जहाँ कोई वास्तविक नुकसान नहीं हुआ, लेकिन यदि परिस्थितियाँ भिन्न होतीं तो गंभीर चोट लग सकती थी। ऐसी घटनाओं का विश्लेषण भविष्य की बड़ी दुर्घटनाओं को रोकने में सहायक होता है। सुरक्षा प्रशिक्षण कोई एक बार की घटना नहीं है, बल्कि यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया होनी चाहिए ताकि कर्मचारी बदलते जोखिमों और प्रक्रियाओं के प्रति हमेशा जागरूक रह सकें और सुरक्षित कार्य कर सकें।

85. (C) समय के साथ मापन प्रक्रिया की निरंतरता और स्थिरता।
चयन के संदर्भ में विश्वसनीयता का अर्थ है कि यदि एक ही परीक्षण को किसी व्यक्ति पर बार-बार आयोजित किया जाए, तो परिणाम सुसंगत रहने चाहिए। यह सुनिश्चित करता है कि मापन की विधि त्रुटिमुक्त है और उस पर भरोसा किया जा सकता है। यदि कोई परीक्षण आज एक परिणाम देता है और कल बिल्कुल अलग, तो वह विश्वसनीय नहीं माना जाएगा। विश्वसनीयता किसी भी चयन उपकरण की बुनियादी आवश्यकता है, क्योंकि इसके बिना परीक्षण की वैधता का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। यह चयन प्रक्रिया को निष्पक्ष बनाता है।

86. (B) यह निर्धारित करना कि क्या प्रशिक्षण प्रदर्शन संबंधी समस्या का उपयुक्त समाधान है।
प्रशिक्षण आवश्यकता विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि कर्मचारी के प्रदर्शन में कमी का वास्तविक कारण क्या है। कभी-कभी प्रदर्शन में गिरावट का कारण कौशल की कमी नहीं, बल्कि अपर्याप्त प्रेरणा या संसाधनों का अभाव हो सकता है। ऐसी स्थितियों में प्रशिक्षण देना केवल समय और धन की बर्बादी होगी। यह विश्लेषण यह सुनिश्चित करता है कि संगठन के निवेश का सही उपयोग हो और केवल उन कौशलों पर ध्यान केंद्रित किया जाए जिनकी वास्तव में कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यकता है।

87. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
संगठनात्मक वातावरण कार्यस्थल के परिवेश की वर्तमान स्थिति और कर्मचारियों की साझा धारणाओं का प्रतिबिंब है, जिसे मापना अपेक्षाकृत सरल है। इसके विपरीत, संगठनात्मक संस्कृति बहुत गहरी और स्थायी होती है, जिसमें संगठन के मूल मूल्य और अंतर्निहित विश्वास सम्मिलित होते हैं जो समय के साथ विकसित होते हैं। वातावरण को अक्सर संस्कृति की बाहरी अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। संस्कृति संगठन की पहचान निर्धारित करती है, जबकि वातावरण यह तय करता है कि कर्मचारी वर्तमान में संगठन के बारे में कैसा अनुभव कर रहे हैं।

88. (A) आदर्श प्रभाव या करिश्मा
परिवर्तनकारी नेतृत्व के अंतर्गत 'आदर्श प्रभाव' वह घटक है जहाँ नेता अपने उच्च नैतिक आचरण और स्पष्ट दृष्टि के माध्यम से अनुयायियों का गहरा विश्वास और सम्मान प्राप्त करता है। ऐसे नेता अनुयायियों के लिए एक आदर्श की तरह कार्य करते हैं, जिससे कर्मचारी उनके प्रति गर्व और निष्ठा अनुभव करते हैं। यह प्रभाव उन्हें संगठन के व्यापक हितों के लिए समर्पित होने के लिए प्रेरित करता है। इसमें नेता की व्यक्तिगत शक्ति और आकर्षण महत्वपूर्ण होते हैं, जो समूह के भीतर एक नई ऊर्जा और दिशा का प्रभावी संचार करते हैं।

89. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
संवेदनशीलता प्रशिक्षण असंरचित समूहों के माध्यम से पारस्परिक व्यवहार की समझ विकसित करने पर केंद्रित है। सर्वेक्षण प्रतिपुष्टि प्रश्नावली का उपयोग करके समस्याओं की पहचान के लिए आँकड़े एकत्र करती है। प्रक्रिया परामर्श में एक विशेषज्ञ समूह को उसकी संचार और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को सुधारने में सहायता करता है। टीम निर्माण गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य टीम के सदस्यों के बीच आपसी विश्वास और सहयोग को बढ़ाना है। ये सभी तकनीकें संगठनात्मक स्वास्थ्य और प्रभावशीलता को सुधारने के उद्देश्य से नियोजित की जाती हैं।

90. (A) संतोषप्रद मॉडल
संतोषप्रद मॉडल सीमित तार्किकता की अवधारणा पर आधारित है, जो यह मानता है कि मानवीय मस्तिष्क की सूचना प्रसंस्करण क्षमताएँ सीमित होती हैं। वास्तविक दुनिया की जटिलताओं और समय की कमी के कारण, लोग सभी संभावित विकल्पों का विश्लेषण करने के बजाय उस प्रथम विकल्प को चुन लेते हैं जो उनकी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह "पर्याप्त रूप से अच्छा" दृष्टिकोण इष्टतम समाधान की खोज के बजाय व्यावहारिक निर्णय लेने पर बल देता है। यह मॉडल बताता है कि निर्णय लेना हमेशा पूर्ण तार्किकता पर आधारित नहीं होता।

91. (D) चिंता निवारक और अवसादरोधी प्रभाव।
नियमित शारीरिक व्यायाम के मनोवैज्ञानिक लाभ व्यापक रूप से सिद्ध हैं। व्यायाम करने से मस्तिष्क में एंडोर्फिन जैसे रसायनों का स्राव होता है, जो प्राकृतिक रूप से मनोदशा को बेहतर बनाते हैं और तनाव को कम करते हैं। शोध दर्शाते हैं कि व्यायाम चिंता के स्तर को घटाने और अवसाद के लक्षणों के प्रबंधन में दवाओं के समान प्रभावी हो सकता है। यह व्यक्ति को आत्म-विश्वास और आत्म-प्रभावकारिता की भावना भी प्रदान करता है, जो उसके समग्र कल्याण के लिए आवश्यक है। अतः शारीरिक गतिविधि मानसिक स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण स्तंभ है।

92. (B) उच्च दबाव वाली स्थितियों में प्रदर्शन में महत्वपूर्ण गिरावट।
"प्रदर्शन का गिरना" खेल मनोविज्ञान की एक ऐसी स्थिति है जहाँ एक कुशल खिलाड़ी अत्यधिक मनोवैज्ञानिक दबाव के कारण सामान्य से बहुत खराब प्रदर्शन करता है। यह अक्सर तब होता है जब खिलाड़ी अपने कौशल के प्रति अत्यधिक आत्म-जागरूक हो जाता है, जिससे उसकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया बाधित होती है। अत्यधिक उत्तेजना और विफलता का डर एकाग्रता को तोड़ देता है और मांसपेशियों के समन्वय को प्रभावित करता है। यह स्थिति दर्शाती है कि मानसिक दबाव शारीरिक कौशल को किस प्रकार नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है और विफलता का कारण बनता है।

93. (C) पर्यावरणीय शोर
शहरी क्षेत्रों में पर्यावरणीय शोर तनाव का एक प्रमुख स्रोत है। शोर न केवल एकाग्रता और कार्यक्षमता को बाधित करता है, बल्कि यह नींद की गुणवत्ता को भी गंभीर रूप से प्रभावित करता है। लंबे समय तक शोर के संपर्क में रहने से चिड़चिड़ापन, रक्तचाप में वृद्धि और मानसिक थकान हो सकती है। चूंकि व्यक्ति का इस शोर पर अक्सर कोई नियंत्रण नहीं होता, इसलिए यह मनोवैज्ञानिक रूप से अधिक कष्टदायक सिद्ध होता है और व्यक्ति के समग्र स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अतः शांत वातावरण मानसिक शांति के लिए अनिवार्य है।

94. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हैकमैन और ओल्डहम द्वारा प्रस्तावित कार्य विशेषता मॉडल यह सुझाव देता है कि कार्य के मुख्य आयाम तीन महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक स्थितियों को जन्म देते हैं। जब कर्मचारियों को अपने कार्य में स्वतंत्रता महसूस होती है और उन्हें अपने प्रदर्शन के बारे में जानकारी मिलती है, तो वे अपने कार्य को अधिक सार्थक और जिम्मेदार मानते हैं। ये स्थितियाँ उच्च आंतरिक कार्य प्रेरणा और बेहतर कार्य संतोष जैसे सकारात्मक परिणामों को बढ़ावा देती हैं। अतः, कार्य का सही निर्माण कर्मचारी उत्पादकता और संगठन की सफलता के लिए पूर्णतः अनिवार्य है।

95. (A) कार्यस्थल दुर्घटनाओं की उच्च दर
उच्च कार्य संतोष के परिणाम सामान्यतः संगठन के लिए सकारात्मक होते हैं। संतुष्ट कर्मचारी अपने कार्य के प्रति अधिक समर्पित होते हैं, जिससे अनुपस्थिति कम होती है और संस्था छोड़ने की संभावना भी घटती है। इसके अतिरिक्त, वे 'संगठनात्मक नागरिकता व्यवहार' में अधिक संलग्न होते हैं, जो औपचारिक कर्तव्यों से परे दूसरों की सहायता करना है। इसके विपरीत, दुर्घटनाओं की उच्च दर अक्सर असंतोष या असुरक्षित स्थितियों का संकेत होती है, न कि संतोष का। संतोषपूर्ण कार्य वातावरण सुरक्षा और सतर्कता को बढ़ावा देता है और जोखिम कम करता है।

96. (B) नेता उत्तरदायित्व त्याग देता है और निर्णय लेने से बचता है।
अहस्तक्षेपवादी नेतृत्व शैली में नेता अपने पद की शक्तियों का न्यूनतम उपयोग करता है और समूह के सदस्यों को पूर्ण स्वतंत्रता देता है। इस शैली में नेता मार्गदर्शन प्रदान करने के बजाय स्वयं को अलग कर लेता है और निर्णय लेने का उत्तरदायित्व पूर्णतः अनुयायियों पर छोड़ देता है। यह शैली केवल तभी प्रभावी हो सकती है जब टीम के सदस्य अत्यधिक कुशल हों। अन्यथा, इसमें समन्वय की कमी और उत्पादकता में गिरावट आने की उच्च संभावना रहती है क्योंकि इसमें स्पष्ट नेतृत्व और दिशा का पूर्ण अभाव होता है।

97. (B) निष्पादन मूल्यांकन
निष्पादन मूल्यांकन एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से संगठन किसी कर्मचारी के कार्य निष्पादन का उसके पूर्व-निर्धारित लक्ष्यों और मानकों के सापेक्ष विश्लेषण करता है। इसका मुख्य उद्देश्य कर्मचारी की खूबियों और कमजोरियों की पहचान करना, पदोन्नति के निर्णय लेना और प्रशिक्षण की आवश्यकताओं को निर्धारित करना है। यह प्रक्रिया केवल निगरानी नहीं है, बल्कि यह कर्मचारी को उसके प्रदर्शन पर रचनात्मक प्रतिपुष्टि प्रदान करने का एक अवसर भी है। प्रभावी मूल्यांकन प्रणाली कर्मचारियों को अपने कौशल में सुधार करने के लिए निरंतर प्रेरित करती है।

98. (A) काम पर कर्मचारियों का अवलोकन करना कि वे नए प्रोटोकॉल का पालन कर रहे हैं या नहीं।
किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता का वास्तविक पैमाना यह है कि क्या वह कर्मचारियों के कार्यस्थल पर व्यवहार में कोई सकारात्मक परिवर्तन लाया है। 'व्यवहारात्मक' मूल्यांकन के लिए अवलोकन सबसे प्रभावी विधि है क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप से यह जाँचती है कि कर्मचारी सीखी गई बातों को वास्तविक कार्य परिस्थितियों में लागू कर रहे हैं या नहीं। केवल ज्ञान का परीक्षण करना या उनकी पसंद जानना

यह सुनिश्चित नहीं करता कि वे सुरक्षित रूप से कार्य करेंगे। व्यवहार में परिवर्तन ही प्रशिक्षण के मुख्य उद्देश्यों की प्राप्ति को दर्शाता है।

99. (B) केवल I और II
पर्यावरणीय मनोविज्ञान में व्यक्तिगत स्थान एक अदृश्य सीमा है जिसे लोग अपने चारों ओर बनाए रखते हैं। यह क्षेत्र निश्चित नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक मानदंडों, व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और सामाजिक संबंधों के आधार पर भिन्न होता है। जब कोई अन्य व्यक्ति इस सीमा का उल्लंघन करता है, तो व्यक्ति को असहजता और तनाव का अनुभव होता है। यह कहना गलत है कि व्यक्तिगत स्थान की आवश्यकता सार्वभौमिक है, क्योंकि अलग-अलग संस्कृतियों में लोगों के बीच की स्वीकार्य दूरी के मानदंड काफी भिन्न हो सकते हैं। यह स्थान सुरक्षा प्रदान करता है।

100. (D) माध्यम
संचार प्रक्रिया में माध्यम वह भौतिक या इलेक्ट्रॉनिक साधन है जिसके द्वारा कूटबद्ध संदेश प्रेषक से प्राप्तकर्ता तक पहुँचता है। माध्यम का चुनाव संदेश की प्रकृति, तात्कालिकता और प्राप्तकर्ता की पहुंच पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, यह मौखिक बातचीत, लिखित ज्ञापन या ईमेल हो सकता है। एक उपयुक्त माध्यम का चयन संचार की प्रभावशीलता को बढ़ाता है, जबकि गलत माध्यम संदेश के अर्थ को विकृत कर सकता है या शोर के कारण अवरोध पैदा कर सकता है। माध्यम प्रेषक और प्राप्तकर्ता के बीच सेतु का कार्य करता है।

101. (C) 4, 3, 2, 1
किर्कपैट्रिक का मॉडल प्रशिक्षण मूल्यांकन के चार क्रमिक स्तर प्रदान करता है। सबसे पहले 'प्रतिक्रिया' मापी जाती है, जो प्रशिक्षुओं के अनुभव को दर्शाती है। दूसरे स्तर पर 'अधिगम' का आकलन होता है कि उन्होंने कितना नया ज्ञान प्राप्त किया। तीसरे स्तर पर 'व्यवहार' देखा जाता है कि क्या वे उस कौशल को कार्यस्थल पर लागू कर रहे हैं। अंतिम और सबसे जटिल स्तर 'परिणाम' है, जो संगठन पर प्रशिक्षण के कुल प्रभाव, जैसे उत्पादकता में वृद्धि, का मूल्यांकन करता है। यह मॉडल प्रशिक्षण की पूर्णता सुनिश्चित करता है।

102. (B) निम्न संगठनात्मक वातावरण
संगठनात्मक वातावरण कार्यस्थल के आंतरिक परिवेश के प्रति कर्मचारियों की साझा धारणाओं को दर्शाता है। जब किसी संगठन में कर्मचारियों के बीच भय का माहौल होता है, संचार बाधित होता है और प्रबंधन के प्रति विश्वास की कमी होती है, तो उसे 'निम्न' या नकारात्मक वातावरण कहा जाता है। ऐसा वातावरण कर्मचारियों के मनोबल और उत्पादकता को बुरी तरह प्रभावित करता है। यह न केवल मानसिक तनाव को बढ़ाता है, बल्कि संगठन के समग्र स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचाता है, जिससे कर्मचारी संगठन छोड़ने की प्रवृत्ति भी अधिक दिखाने लगते हैं।

103. (D) संगठन की प्रभावशीलता और कर्मचारी कल्याण में सुधार के लिए नियोजित परिवर्तन लागू करना।
संगठनात्मक विकास एक दीर्घकालिक और व्यवस्थित प्रयास है जो व्यवहार विज्ञान के ज्ञान का उपयोग करके संगठन की अनुकूलन क्षमता को सुधारता है। इसका प्राथमिक लक्ष्य केवल लाभ बढ़ाना नहीं है, बल्कि एक ऐसा कार्य परिवेश बनाना है जहाँ कर्मचारी और संगठन दोनों निरंतर विकसित हो सकें। इसमें नेतृत्व, संचार और समूह गतिशीलता जैसे पहलुओं में नियोजित सुधार किए जाते हैं। यह प्रक्रिया सहभागी होती है और इसका उद्देश्य समस्याओं को हल करने और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए संगठन को आंतरिक रूप से सशक्त बनाना होता है।

104. (A) प्रगतिशील मांसपेशी शिथिलन
प्रगतिशील मांसपेशी शिथिलन एक ऐसी मनोवैज्ञानिक तकनीक है जो शारीरिक और मानसिक तनाव को कम करने में सहायता करती है। इसमें खिलाड़ी शरीर के विभिन्न मांसपेशी समूहों को बारी-बारी से तनावपूर्ण करता है और फिर उन्हें शिथिल छोड़ देता है। यह अभ्यास व्यक्ति को मांसपेशियों के तनाव और शिथिलता के बीच अंतर को पहचानने में मदद करता है। खेल प्रदर्शन में, यह तकनीक प्रतियोगिता से पहले की घबराहट को शांत करने और एकाग्रता बढ़ाने में अत्यंत प्रभावी होती है, जिससे प्रदर्शन में सुधार होता है और थकान कम होती है।

105. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
औद्योगिक दुर्घटनाएं कभी भी केवल एक कारण से नहीं होतीं, बल्कि वे अक्सर कई कारकों का संयुक्त परिणाम होती हैं। यद्यपि असुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ जैसे खराब मशीनरी महत्वपूर्ण हैं, लेकिन मानवीय कारक भी उतने ही प्रभावी होते हैं। कार्यकर्ता की थकान, भावनात्मक स्थिति और ध्यान भटकना दुर्घटना की संभावना को काफी बढ़ा देते हैं। अतः, सुरक्षा प्रबंधन में भौतिक सुरक्षा उपायों के साथ-साथ कर्मचारियों की मानसिक और शारीरिक स्थिति पर ध्यान देना भी अनिवार्य है। सर्वांगीण सुरक्षा दृष्टिकोण ही दुर्घटनाओं को प्रभावी ढंग से न्यूनतम कर सकता है।

106. (A) काम पर रखा जाता है लेकिन प्रदर्शन खराब रहता है।
कार्मिक चयन में 'मिथ्या सकारात्मक' त्रुटि तब होती है जब चयन प्रक्रिया किसी ऐसे आवेदक को योग्य मानकर चुन लेती है जो वास्तव में कार्य में असफल सिद्ध होता है। यह त्रुटि संगठन के लिए महंगी होती है क्योंकि इसमें भर्ती और प्रशिक्षण की लागत शामिल होती है। इसका अर्थ है कि चयन के लिए उपयोग किए गए परीक्षण उस उम्मीदवार की वास्तविक क्षमताओं की भविष्यवाणी करने में विफल रहे। ऐसी त्रुटियों को कम करने के लिए चयन उपकरणों की वैधता और विश्वसनीयता में सुधार करना अत्यंत आवश्यक होता है ताकि श्रेष्ठ प्रतिभा मिले।

107. (D) निदान चरण
संगठनात्मक विकास प्रक्रिया में 'निदान' वह चरण है जहाँ परामर्शदाता और संगठन मिलकर यह पता लगाते हैं कि वास्तव में समस्याएँ कहाँ हैं। इस दौरान आँकड़ों का संग्रह और विश्लेषण

किया जाता है ताकि संगठन की ताकत और कमजोरियों की पहचान की जा सके। यह चरण एक चिकित्सक द्वारा रोग का पता लगाने के समान है। जब समस्याओं के मूल कारणों की सटीक जानकारी मिल जाती है, तभी उनके समाधान के लिए प्रभावी रणनीतियाँ विकसित की जा सकती हैं। बिना उचित निदान के किए गए परिवर्तन प्रायः असफल सिद्ध होते हैं।

108. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
भीड़भाड़ का अर्थ उच्च जनसंख्या घनत्व के कारण होने वाला आत्मनिष्ठ तनाव है। शोर के मुख्य मनोवैज्ञानिक प्रभावों में एकाग्रता में व्यवधान और नींद की गड़बड़ी शामिल है। पर्यावरणीय प्रदूषण न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक कल्याण में कमी और आक्रामक प्रवृत्तियों को भी बढ़ा सकता है। संवेदी अभाव की स्थिति में जब मस्तिष्क को पर्याप्त बाहरी उत्तेजना नहीं मिलती, तो व्यक्ति मतिभ्रम और संज्ञानात्मक अक्षमता का अनुभव कर सकता है। ये सभी पर्यावरणीय तनाव कारक मानवीय व्यवहार को गहराई से प्रभावित करते हैं।

109. (C) नेता अधीनस्थों के एक छोटे समूह ("इन-ग्रुप") के साथ एक विशेष संबंध बनाते हैं।
नेता-सदस्य विनिमय सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि नेता अपने सभी अनुयायियों के साथ समान व्यवहार नहीं करते हैं। इसके बजाय, वे एक छोटे समूह के साथ उच्च विश्वास और विशेष समर्थन वाले संबंध विकसित करते हैं। इस समूह के सदस्य अधिक उत्तरदायित्व लेते हैं और उन्हें बेहतर पुरस्कार प्राप्त होते हैं। बाकी अधीनस्थ उस समूह का हिस्सा होते हैं, जिनके साथ नेता के संबंध केवल औपचारिक और कार्य-आधारित होते हैं। यह सिद्धांत संगठन के भीतर सामाजिक विनिमय प्रक्रियाओं और उनके कार्य परिणामों पर पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट करता है।

110. (D) सही भर्ती निर्णय लेने की संभावना को अधिकतम करना।
कार्मिक चयन का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी विशेष पद के लिए सबसे योग्य और उपयुक्त व्यक्ति का चुनाव किया जाए। यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें आवेदक की योग्यताओं और कार्य की आवश्यकताओं के बीच सर्वोत्तम सामंजस्य स्थापित किया जाता है। सही चयन निर्णय लेने से न केवल संगठन की उत्पादकता बढ़ती है, बल्कि कर्मचारी परिवर्तन दर और प्रशिक्षण लागत में भी कमी आती है। इसका लक्ष्य रिक्त पदों को भरना ही नहीं, बल्कि संगठन की दीर्घकालिक सफलता के लिए श्रेष्ठ मानवीय पूंजी सुनिश्चित करना है।

111. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नियमित शारीरिक व्यायाम मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने का एक शक्तिशाली साधन है। जब हम व्यायाम करते हैं, तो शरीर एंडोर्फिन जैसे रसायन छोड़ता है, जो तनाव और चिंता को कम करने में सहायता करते हैं। इसके अतिरिक्त, व्यायाम व्यक्ति को दैनिक चिंताओं से एक सकारात्मक विक्षेप प्रदान करता है और उसकी ऊर्जा के स्तर को बढ़ाता है। इससे न केवल मनोदशा में सुधार होता है, बल्कि आत्म-सम्मान और नींद की गुणवत्ता भी बेहतर होती है। अतः, शारीरिक गतिविधि और मानसिक शांति के बीच एक गहरा जैविक और मनोवैज्ञानिक संबंध विद्यमान है।

112. (B) कार्य पहचान
कार्य पहचान कार्य विशेषता मॉडल का एक आयाम है जो यह दर्शाता है कि एक कर्मचारी अपने कार्य को कितना पूर्ण महसूस करता है। जब किसी व्यक्ति को यह पता होता है कि उसका कार्य एक बड़े लक्ष्य का एक पहचान योग्य हिस्सा है और वह एक 'संपूर्ण' उत्पाद का निर्माण कर रहा है, तो उसकी कार्य संतोष और प्रेरणा में वृद्धि होती है। इसके विपरीत, यदि कार्य केवल एक छोटा और अर्थहीन खंड लगे, तो जुड़ाव कम हो जाता है। कार्य पहचान से व्यक्ति को अपनी मेहनत का प्रत्यक्ष परिणाम देखने को मिलता है।

113. (B) व्यायाम कार्यक्रमों के प्रति दीर्घकालिक निरंतरता बनाए रखने की कठिनाई।
स्वास्थ्य मनोविज्ञान में यह देखा गया है कि अधिकांश लोग व्यायाम शुरू तो करते हैं, लेकिन कुछ ही समय बाद उसे छोड़ देते हैं। इस निरंतरता के अभाव के पीछे कई मनोवैज्ञानिक कारण होते हैं, जैसे तत्काल परिणामों की कमी और प्रेरणा का कम होना। व्यायाम को एक स्थायी आदत बनाना ही सबसे बड़ी चुनौती है। इसके समाधान के लिए आत्म-नियमन रणनीतियों, सामाजिक समर्थन और यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारण की आवश्यकता होती है। केवल व्यायाम की सुविधा पर्याप्त नहीं है, बल्कि व्यक्ति की मानसिक दृढ़ता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

114. (D) I, II और III
संगठनात्मक संचार एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरह के माध्यम सम्मिलित होते हैं। औपचारिक रिपोर्टें संगठन की आधिकारिक संरचना का हिस्सा हैं जो स्पष्टता सुनिश्चित करती हैं। वहीं, 'जनप्रवाद' या अनौपचारिक अफवाहें सामाजिक संबंधों के माध्यम से सूचनाओं को तेजी से प्रसारित करती हैं। प्रबंधकों और अधीनस्थों के बीच संवाद संगठन की कार्यप्रणाली को सुचारु बनाने के लिए आवश्यक है। ये सभी तत्व मिलकर संगठन के भीतर सूचना के प्रवाह और कर्मचारी संबंधों को आकार देते हैं, जो उत्पादकता के लिए अनिवार्य है।

115. (C) विषय-वस्तु सिद्धांत इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि 'क्या' प्रेरित करता है, जबकि प्रक्रिया सिद्धांत इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि प्रेरणा 'कैसे' होती है।
प्रेरणा के सिद्धांतों को दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है। विषय-वस्तु सिद्धांत उन विशिष्ट आवश्यकताओं और कारकों की पहचान करते हैं जो लोगों को कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसके विपरीत, प्रक्रिया सिद्धांत उन मानसिक प्रक्रियाओं और चरणों की व्याख्या करते हैं जिनके माध्यम से प्रेरणा उत्पन्न और निर्देशित होती है। सरल शब्दों में, विषय-वस्तु सिद्धांत प्रेरक तत्वों की सूची प्रदान करते हैं, जबकि प्रक्रिया सिद्धांत उस आंतरिक तंत्र को समझाते हैं जिसके द्वारा व्यक्ति अपने प्रयासों और लक्ष्यों को चुनता है और उन पर कार्य करता है।

116. (D) औद्योगिक सुरक्षा में स्थितिजन्य और मानवीय कारक।
औद्योगिक दुर्घटनाएं अक्सर कई कारकों के जटिल मिश्रण का परिणाम होती हैं। रात्रि पाली में दुर्घटनाओं का बढ़ना यह दर्शाता है कि अपर्याप्त प्रकाश व्यवस्था जैसे स्थितिजन्य कारक और थकान जैसे मानवीय कारक साथ मिलकर जोखिम बढ़ाते हैं। थकान एकाग्रता और प्रतिक्रिया समय को कम कर देती है, जिससे गलतियों की संभावना अधिक हो जाती है। सुरक्षा सुधार के लिए केवल एक कारक पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं है; इसके बजाय कार्य परिवेश और कर्मचारी की शारीरिक-मानसिक स्थिति दोनों को अनुकूलित करना अनिवार्य है ताकि जोखिम न्यूनतम हो सकें।

117. (C) संज्ञानात्मक कार्य में कमी और चिड़चिड़ापन में वृद्धि।
वायु प्रदूषण के उच्च स्तर का प्रभाव केवल शारीरिक स्वास्थ्य पर ही नहीं, बल्कि मानव व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं पर भी पड़ता है। प्रदूषित वातावरण में मौजूद हानिकारक तत्व मस्तिष्क की कार्यक्षमता को बाधित कर सकते हैं, जिससे एकाग्रता और निर्णय लेने की शक्ति कम हो जाती है। इसके अतिरिक्त, खराब वायु गुणवत्ता के कारण लोग अक्सर अधिक तनावग्रस्त और चिड़चिड़े महसूस करते हैं। यह मानसिक शांति को कम करता है और दैनिक गतिविधियों में चिड़चिड़ापन लाता है, जो अंततः जीवन की गुणवत्ता और सामाजिक संबंधों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है।

118. (B) संगठनात्मक विकास
संगठनात्मक विकास एक सुनियोजित और व्यापक प्रक्रिया है जो संगठन की प्रभावशीलता और उसके सदस्यों के कल्याण को बढ़ाने के लिए व्यवहार विज्ञान के सिद्धांतों का उपयोग करती है। यह केवल किसी एक विभाग तक सीमित नहीं है, बल्कि संपूर्ण संगठन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास है। इसमें विश्वास, सहयोग और खुले संचार जैसे मूल्यों को प्राथमिकता दी जाती है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य संगठन को भविष्य की चुनौतियों के प्रति अधिक लचीला और सक्षम बनाना है ताकि वह अपने उद्देश्यों को कुशलतापूर्वक प्राप्त कर सके और उन्नति कर सके।

119. (D) "मुझे उस समय के बारे में बताएं जब आपको किसी कठिन ग्राहक से निपटना पड़ा था।"
व्यवहारात्मक साक्षात्कार इस सिद्धांत पर आधारित है कि "अतीत का व्यवहार भविष्य के प्रदर्शन का सबसे अच्छा भविष्यवक्ता है।" इस प्रकार के प्रश्नों में आवेदक को अपनी पिछली कार्य स्थितियों का विशिष्ट उदाहरण देने के लिए कहा जाता है। इससे साक्षात्कारकर्ता को यह समझने में सहायता मिलती है कि उम्मीदवार ने वास्तविक समस्याओं को कैसे हल किया और उसके पास कौन से कौशल हैं। यह काल्पनिक प्रश्नों की तुलना में अधिक सटीक जानकारी प्रदान करता है क्योंकि यह व्यक्ति के वास्तविक अनुभवों और कार्यों पर केंद्रित होता है।

120. (A) खिलाड़ी के आंतरिक संवाद या विचारों को।
खेल मनोविज्ञान में आत्म-भाषण एक ऐसी तकनीक है जिसमें खिलाड़ी अपने मन में स्वयं से बात करता है। यह संवाद सकारात्मक या निर्देशात्मक हो सकता है। प्रभावी आत्म-भाषण खिलाड़ी के आत्मविश्वास को बढ़ाता है, उसकी एकाग्रता को केंद्रित करता है और नकारात्मक विचारों को दूर करने में सहायता करता है। जब कोई खिलाड़ी तनाव में होता है, तो सही प्रकार का आंतरिक संवाद उसे शांत रखने और प्रदर्शन के उच्चतम स्तर को प्राप्त करने में निर्णायक भूमिका निभाता है। यह तकनीक मानसिक दृढ़ता विकसित करने का एक सरल एवं प्रभावी साधन है।

121. (C) घनत्व और भीड़भाड़
पर्यावरणीय मनोविज्ञान में 'घनत्व' एक वस्तुनिष्ठ भौतिक माप है जो किसी निश्चित क्षेत्र में उपस्थित लोगों की संख्या को दर्शाता है। इसे गणितीय रूप से व्यक्त किया जा सकता है। इसके विपरीत, 'भीड़भाड़' एक व्यक्तिपरक मनोवैज्ञानिक अनुभव है जो व्यक्ति को तब अनुभव होता है जब उसे स्थान की कमी या नियंत्रण की हानि का आभास होता है। एक ही उच्च घनत्व वाली स्थिति में एक व्यक्ति सहज महसूस कर सकता है जबकि दूसरा भीड़भाड़ का अनुभव कर सकता है। अतः, घनत्व एक भौतिक तथ्य है और भीड़भाड़ एक मानसिक प्रतिक्रिया है।

122. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
आधुनिक नेतृत्व की अवधारणा पारंपरिक आदेश और नियंत्रण के मॉडल से काफी आगे बढ़ चुकी है। जबकि प्रबंधन अक्सर संसाधनों के कुशल उपयोग और नियमों के पालन पर ध्यान केंद्रित करता है, नेतृत्व अनुयायियों को एक साझा दृष्टि के साथ प्रेरित करने के बारे में है। प्रभावी नेता अपने कर्मचारियों को सशक्त बनाते हैं, उनकी क्षमताओं को विकसित करते हैं और उन्हें व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर संगठनात्मक लक्ष्यों के लिए कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। अतः, आधुनिक नेता एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है, न कि केवल एक शासक के रूप में।

123. (D) समूह-चिंतन
समूह-चिंतन एक ऐसी मनोवैज्ञानिक घटना है जहाँ समूह के सदस्य आपसी सहमति और सद्भाव को बनाए रखने के लिए इतने उत्सुक होते हैं कि वे वैकल्पिक विचारों या आलोचनात्मक मूल्यांकन को नजरअंदाज कर देते हैं। इस स्थिति में, समूह का सामंजस्य बनाए रखने का दबाव व्यक्तिगत असहमति को दबा देता है, जिससे अक्सर त्रुटिपूर्ण और पक्षपाती निर्णय लिए जाते हैं। यह विशेष रूप से उन समूहों में होता है जो बहुत अधिक एकजुट होते हैं। बेहतर परिणामों के लिए समूह में स्वस्थ असहमति और वैचारिक विविधता को प्रोत्साहित करना अत्यंत आवश्यक है।

124. (B) सफल कार्य प्रदर्शन के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और क्षमताओं की पहचान करना।
कार्मिक चयन में कार्य विश्लेषण एक अनिवार्य आधार स्तंभ है। यह प्रक्रिया किसी विशिष्ट पद की विषय-वस्तु का गहराई से विश्लेषण करती है ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि उस कार्य को कुशलतापूर्वक करने के लिए व्यक्ति में कौन से गुण होने चाहिए। इसी सूचना के आधार पर चयन परीक्षण और साक्षात्कार के प्रश्न तैयार किए जाते हैं। इसके बिना, यह

अपने कार्य की वास्तविक प्रकृति, मिलने वाले वेतन, विकास के अवसरों, अपने पर्यवेक्षक की कार्यशैली और अपने सहयोगियों के बारे में कैसा महसूस करते हैं। इन अलग-अलग क्षेत्रों का मूल्यांकन करने से प्रबंधन को यह समझने में सहायता मिलती है कि कर्मचारी वास्तव में कहाँ संतुष्ट हैं और किन क्षेत्रों में सुधार की तत्काल आवश्यकता है ताकि उत्पादकता बनी रहे।

160. (B) विषय-वस्तु वैधता
विषय-वस्तु वैधता यह सुनिश्चित करती है कि चयन प्रक्रिया में उपयोग किए जाने वाले परीक्षण वास्तव में उस कार्य की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को दर्शाते हैं। इसके लिए कार्य के सभी प्रमुख कर्तव्यों और कौशलों का विस्तृत विश्लेषण किया जाता है ताकि परीक्षण की सामग्री वास्तविक नौकरी के समान हो। यदि कोई टाइपिंग परीक्षण क्लर्क के चयन के लिए उपयोग किया जाता है, तो इसकी विषय-वस्तु वैधता उच्च होगी क्योंकि यह नौकरी का मुख्य हिस्सा है। यह वैधता प्रमाणित करती है कि चयन माप कार्य के स्वरूप का एक वास्तविक प्रतिनिधि नमूना है।

161. (B) व्यायाम निरंतरता और शारीरिक सुदृढ़ता
संगठनों द्वारा वेलनेस कार्यक्रम और व्यायामशाला की सुविधा प्रदान करने का मुख्य उद्देश्य कर्मचारियों में स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देना है। ये पहल कर्मचारियों को नियमित शारीरिक गतिविधि के लिए प्रेरित करती हैं, जिससे उनकी शारीरिक सुदृढ़ता बनी रहती है। स्वस्थ कर्मचारी कम बीमार पड़ते हैं, जिससे अनुपस्थिति घटती है और कार्य उत्पादकता में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, व्यायाम तनाव कम करने और मानसिक स्पष्टता बढ़ाने में सहायक होता है। यह दर्शाता है कि संगठन अपने कर्मचारियों के स्वास्थ्य को अपनी व्यावसायिक सफलता का एक अभिन्न हिस्सा मानता है।

162. (A) केवल I और II
संगठनात्मक वातावरण कार्यस्थल के उन गुणों को दर्शाता है जो कर्मचारियों द्वारा महसूस किए जाते हैं और जिन्हें मापा जा सकता है। यह वातावरण कर्मचारियों की सामूहिक धारणाओं पर आधारित होता है कि संगठन कैसे कार्य करता है। यह कहना गलत है कि वातावरण नेतृत्व शैली से स्वतंत्र है, क्योंकि वास्तव में प्रबंधकों का व्यवहार ही इस वातावरण को आकार देने वाला प्राथमिक कारक होता है। एक अच्छा वातावरण कर्मचारियों को अधिक प्रतिबद्ध बनाता है, जबकि नकारात्मक वातावरण उत्पादकता और मनोबल को गिराने का कारण बनता है। अतः नेतृत्व और वातावरण जुड़े हैं।

163. (C) वह एक काल्पनिक कार्य-संबंधी परिदृश्य में कैसा व्यवहार करेगा।
स्थितिजन्य साक्षात्कार इस विचार पर आधारित है कि "इरादे व्यवहार की भविष्यवाणी करते हैं।" इस प्रक्रिया में, उम्मीदवार को एक विशिष्ट और काल्पनिक कार्य समस्या दी जाती है और उससे पूछा जाता है कि वह उस स्थिति में क्या कदम उठाएगा। यह साक्षात्कारकर्ता को उम्मीदवार की निर्णय लेने की क्षमता और उसके मूल्यों को समझने में सहायता करता है। यह व्यवहारात्मक साक्षात्कार से अलग है क्योंकि यह अतीत के बजाय भविष्य की संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है। यह विशेष रुप से उन पदों के लिए उपयोगी है जहाँ नई चुनौतियाँ आती हैं।

164. (D) सामाजिक शिथिलन
सामाजिक शिथिलन वह घटना है जिसमें व्यक्ति समूह के भीतर कार्य करते समय व्यक्तिगत रूप से काम करने की तुलना में कम प्रयास करता है। ऐसा अक्सर तब होता है जब व्यक्तिगत योगदान को अलग से मापना कठिन होता है और व्यक्ति को लगता है कि उसकी कम मेहनत दूसरों के बीच छिप जाएगी। यह उत्तरदायित्व के प्रसार के कारण होता है, जहाँ समूह का प्रत्येक सदस्य कम जिम्मेदारी महसूस करता है। इस प्रवृत्ति को कम करने के लिए प्रत्येक सदस्य के कार्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना और व्यक्तिगत जवाबदेही सुनिश्चित करना आवश्यक होता है।

165. (C) दुर्घटनाओं और चोटों की आवृत्ति और गंभीरता को कम करना।
औद्योगिक सुरक्षा कार्यक्रमों का मूल लक्ष्य एक ऐसा कार्य परिवेश निर्मित करना है जहाँ कर्मचारी बिना किसी शारीरिक नुकसान के भय के काम कर सकें। ये कार्यक्रम न केवल दुर्घटनाओं की संख्या को कम करने का प्रयास करते हैं, बल्कि यदि कोई दुर्घटना होती भी है, तो उसकी गंभीरता को न्यूनतम करने के उपाय भी अपनाते हैं। इसमें प्रशिक्षण और सुरक्षा उपकरणों का उपयोग शामिल है। सुरक्षा केवल कानूनी औपचारिकता नहीं है, बल्कि यह संगठन की मानवीय पूंजी की सुरक्षा और परिचालन दक्षता को बनाए रखने के लिए एक अनिवार्य निवेश है।

166. (B) नेता का करिश्मा
फ़ीडलर के आकस्मिकता मॉडल के अनुसार, नेता की प्रभावशीलता उसकी नेतृत्व शैली और स्थिति की अनुकूलता के बीच के मेल पर निर्भर करती है। उन्होंने तीन विशिष्ट स्थितिजन्य चर बताए हैं: नेता-सदस्य संबंध, कार्य संरचना, और पद शक्ति। नेता का करिश्मा एक व्यक्तिगत गुण है, न कि स्थितिजन्य चर। फ़ीडलर का मानना था कि नेतृत्व शैली स्थिर होती है, इसलिए सफलता प्राप्त करने के लिए नेता को उस स्थिति में रखा जाना चाहिए जो उसकी शैली के अनुकूल हो। यह मॉडल कार्यकुशलता और स्थिति के संतुलन पर विशेष बल देता है।

167. (D) आत्म-प्रभावकारिता
अल्बर्ट बांडुरा द्वारा विकसित आत्म-प्रभावकारिता की अवधारणा खेल प्रदर्शन में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह खिलाड़ी का स्वयं की क्षमताओं पर वह विश्वास है कि वह एक विशिष्ट कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण कर सकता है। जिस खिलाड़ी की आत्म-प्रभावकारिता उच्च होती है, वह कठिन चुनौतियों को स्वीकार करता है और विफलता के बाद जल्दी संभल जाता है। यह आत्मविश्वास केवल सामान्य नहीं है, बल्कि यह विशिष्ट कौशल और लक्ष्यों से जुड़ा होता है। यह विश्वास खिलाड़ी की प्रेरणा, प्रयास और अंततः उसके प्रदर्शन के वास्तविक स्तर को पूर्णतः निर्धारित करता है।

समूह की परिपक्वता के अनुसार बदलना चाहिए। यदि कोई प्रबंधक हमेशा एक ही दृष्टिकोण अपनाता है, तो वह स्थिति की मांगों को अनदेखा कर रहा है। उदाहरण के लिए, एक अनुभवी टीम को कम निर्देशन की आवश्यकता होती है, जबकि नई टीम को अधिक मार्गदर्शन चाहिए। अतः, लचीलापन और अनुकूलन क्षमता ही आधुनिक नेतृत्व की वास्तविक सफलता का रहस्य है।

134. (B) किसी व्यक्ति के चारों ओर एक अदृश्य सीमा जिसमें दूसरे प्रवेश नहीं कर सकते।
पर्यावरणीय मनोविज्ञान में व्यक्तिगत स्थान एक मनोवैज्ञानिक सुरक्षा क्षेत्र है जिसे व्यक्ति अपने चारों ओर बनाए रखता है। यह स्थान एक अदृश्य सीमा की तरह होता है, जहाँ दूसरों का अवांछित प्रवेश तनाव और भीड़भाड़ की भावना पैदा कर सकता है। इस स्थान की मात्रा सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर बदलती रहती है। उदाहरण के लिए, मित्रों के साथ यह दूरी कम होती है जबकि अजनबियों के साथ अधिक। यह व्यक्तिगत स्वायत्तता और आत्म-संरक्षण की मानवीय आवश्यकता का एक अनिवार्य हिस्सा माना जाता है।

135. (D) मनोदशा, भावनाएँ और स्वभाव संबंधी कारक।
कार्य अभिवृत्तियों के क्षेत्र में "भावात्मक क्रांति" ने इस पारंपरिक धारणा को चुनौती दी कि कर्मचारी केवल तार्किक प्राणी हैं। इसने रेखांकित किया कि कर्मचारियों की दैनिक मनोदशा और उनके जन्मजात स्वभाव उनके कार्य संतोष और प्रदर्शन को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यस्थल पर होने वाली छोटी-छोटी भावनात्मक घटनाएँ भी कर्मचारी के दृष्टिकोण को बदल सकती हैं। यह दृष्टिकोण प्रबंधन को कर्मचारियों की भावनात्मक भलाई पर ध्यान देने और एक ऐसा वातावरण बनाने के लिए प्रेरित करता है जो सकारात्मक संवेगों को निरंतर बढ़ावा दे सके।

136. (A) मानवीय कारक मनोविज्ञान (एर्गोनॉमिक्स)
मानवीय कारक मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य कार्यप्रणाली और उपकरणों को इस प्रकार निर्मित करना है कि वे मानवीय सीमाओं और क्षमताओं के अनुकूल हों। जब श्रमिक और उसके कार्य परिवेश के बीच उचित सामंजस्य होता है, तो गलतियों की संभावना कम हो जाती है और उत्पादकता बढ़ती है। यह दृष्टिकोण केवल सुरक्षा नियमों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भौतिक बनावट और कार्य प्रक्रियाओं के अनुकूलन पर बल देता है। इस प्रकार, मेल में सुधार करके दुर्घटनाओं को उनके मूल स्तर पर ही प्रभावी ढंग से रोका जा सकता है और सुरक्षा बढ़ाई जा सकती है।

137. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
कर्मचारी प्रशिक्षण की दो मुख्य श्रेणियाँ हैं। कार्य-बाह्य प्रशिक्षण वास्तविक कार्यस्थल से दूर आयोजित किया जाता है और इसमें व्याख्यान तथा प्रतिरूपण जैसी विधियाँ शामिल होती हैं, जो सैद्धांतिक ज्ञान के लिए उपयोगी हैं। दूसरी ओर, कार्य-स्थल प्रशिक्षण वास्तविक कार्य वातावरण में होता है, जहाँ कर्मचारी वरिष्ठों की देखरेख में व्यवहारिक कौशल सीखते हैं। दोनों ही विधियाँ अपनी-अपनी जगह महत्वपूर्ण हैं और इनका चुनाव प्रशिक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों और उपलब्ध संसाधनों के आधार पर किया जाता है ताकि कर्मचारी का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके।

138. (A) आत्मविश्वास और प्रदर्शन
मानस-चित्रण खेल मनोविज्ञान की एक शक्तिशाली तकनीक है जहाँ खिलाड़ी सफल क्रियाओं और उत्कृष्ट परिणामों का मानसिक अनुभव करता है। यह अभ्यास मस्तिष्क में उन्हीं तंत्रिका पथों को सक्रिय करता है जो वास्तविक क्रिया के दौरान उपयोग होते हैं, जिससे मांसपेशियों की स्मृति और समन्वय में सुधार होता है। यह तकनीक खिलाड़ी के भीतर गहरे आत्मविश्वास का संचार करती है और उसे प्रतियोगिता के दौरान शांत रहने में सहायता करती है। जब खिलाड़ी खुद को सफल होते देखता है, तो वास्तविक खेल में उसके बेहतर प्रदर्शन की संभावना स्वतः बढ़ जाती है।

139. (D) बार-बार होने वाली दुर्घटनाओं की सांख्यिकीय संभावना पर विचार करने में विफल रहा।
प्रारंभिक दुर्घटना प्रवणता अनुसंधान ने केवल व्यक्तिगत लक्षणों को दुर्घटनाओं का कारण माना और सांख्यिकीय वास्तविकता को नजरअंदाज कर दिया। सांख्यिकी के अनुसार, किसी भी समूह में कुछ व्यक्तियों का संयोगवश बार-बार दुर्घटनाग्रस्त होना स्वाभाविक है, भले ही उनमें कोई विशिष्ट प्रवणता न हो। इस सिद्धांत की आलोचना इसलिए की गई क्योंकि इसने स्थितिजन्य कारकों और मात्र संयोग की भूमिका को पूरी तरह से दबा दिया। आधुनिक सुरक्षा मनोविज्ञान अब मानता है कि दुर्घटनाएं व्यक्ति और उसके खतरनाक वातावरण के बीच की अंतःक्रिया का परिणाम होती हैं, न कि केवल प्रवणता का।

140. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
असंरचित साक्षात्कारों में कोई पूर्व-निर्धारित प्रारूप न होने के कारण साक्षात्कारकर्ता के व्यक्तिगत पूर्वाग्रह निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं। चूंकि प्रत्येक उम्मीदवार से अलग प्रश्न पूछे जाते हैं, इसलिए उनकी योग्यताओं की निष्पक्ष तुलना करना कठिन हो जाता है। इसके विपरीत, संरचित साक्षात्कार मानकीकृत होते हैं, जो सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित करते हैं और कार्य सफलता की भविष्यवाणी करने में अधिक सटीक होते हैं। अतः, असंरचित विधियाँ अविश्वसनीय परिणामों की ओर ले जा सकती हैं, जिससे चयन की प्रक्रिया की समग्र वैधता और प्रभावशीलता प्रभावित होती है।

141. (C) निर्णय की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
तार्किक निर्णय लेने की प्रक्रिया का अंतिम चरण मूल्यांकन है। इसमें यह जाँच की जाती है कि चुना गया विकल्प वास्तव में समस्या को हल करने में सफल रहा या नहीं और क्या इसने वांछित परिणाम प्राप्त किए। यह चरण अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भविष्य के निर्णयों के लिए एक सीखने का अवसर प्रदान करता है। यदि परिणाम संतोषजनक नहीं हैं, तो निर्णय लेने वाला वापस पिछले चरणों पर जा सकता है और अपनी रणनीति बदल सकता है। मूल्यांकन के बिना, किसी भी निर्णय की वास्तविक सफलता को मापना पूर्णतः असंभव है।

सम्मान करता है, उनके सुझावों को ध्यान से सुनता है और आपसी विश्वास पर आधारित वातावरण विकसित करता है। यह व्यवहार कर्मचारियों की कार्य संतुष्टि और मनोबल को बढ़ाने में अत्यंत प्रभावी होता है। इसके विपरीत, 'संरचना प्रारंभ करना' केवल कार्यों और लक्ष्यों पर केंद्रित होता है। एक संतुलित नेता इन दोनों व्यवहारों का उपयोग करके उत्पादकता और मानवीय संबंधों के बीच सामंजस्य स्थापित करता है।

194. (A) संगठन में सुधार के लिए एक नियोजित, दीर्घकालिक, सहयोगात्मक प्रक्रिया।
संगठनात्मक विकास कोई अल्पकालिक समाधान नहीं है, बल्कि यह एक व्यवस्थित रणनीति है जिसका उद्देश्य संगठन की कुल प्रभावशीलता को बढ़ाना है। यह प्रक्रिया व्यवहार विज्ञान के ज्ञान का उपयोग करती है और इसमें संगठन के सभी स्तरों पर कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी और सहयोग सम्मिलित होता है। इसका मुख्य लक्ष्य संगठन के स्वास्थ्य, संस्कृति और कार्यप्रणालियों में सुधार करना है ताकि वह भविष्य की चुनौतियों के प्रति अधिक सक्षम और लचीला बन सके। यह सहभागी दृष्टिकोण परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध को कम करता है और दीर्घकालिक सफलता को सुनिश्चित करता है।

195. (C) व्यायाम के लाभों में उनका विश्वास और उनकी आत्म-प्रभावकारिता।
किसी व्यक्ति द्वारा व्यायाम कार्यक्रम को लंबे समय तक जारी रखना उसकी शारीरिक सुविधाओं से अधिक उसकी मानसिक दृढ़ता पर निर्भर करता है। आत्म-प्रभावकारिता, यानी अपनी क्षमताओं पर विश्वास, व्यक्ति को बाधाओं के बावजूद व्यायाम करने के लिए निरंतर प्रेरित करती है। यदि व्यक्ति को यह विश्वास है कि व्यायाम उसके स्वास्थ्य को वास्तव में सुधार सकता है, तो उसके निरंतर बने रहने की संभावना अधिक होती है। आंतरिक प्रेरणा और सकारात्मक अभिवृत्ति ही वे मनोवैज्ञानिक कारक हैं जो किसी भी बाहरी सुविधा की तुलना में व्यायाम की निरंतरता सुनिश्चित करते हैं।

196. (D) अनौपचारिक
'जनप्रवाद' संगठन के भीतर अनौपचारिक संचार का वह तंत्र है जो आधिकारिक माध्यमों और पदानुक्रम के बाहर विकसित होता है। यह कर्मचारियों के बीच सामाजिक संबंधों और मित्रता पर आधारित होता है। यह संचार अत्यंत तीव्र होता है और अक्सर उन जानकारियों को प्रसारित करता है जो औपचारिक स्रोतों से प्राप्त नहीं होतीं। यद्यपि इसकी सूचनाएं हमेशा पूरी तरह विश्वसनीय नहीं होतीं, लेकिन यह संगठनात्मक जीवन का एक अपरिहार्य हिस्सा है। यह कर्मचारियों की भावनाओं, चिंताओं और संगठन की वास्तविक संस्कृति को समझने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत भी हो सकता है।

197. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
पर्यावरणीय मनोविज्ञान में जनसंख्या घनत्व और भीड़भाड़ के बीच स्पष्ट अंतर किया गया है। घनत्व एक भौतिक और वस्तुनिष्ठ माप है जिसे प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्तियों की संख्या के रूप में गणितीय रूप से व्यक्त किया जा सकता है। इसके विपरीत, भीड़भाड़ एक मनोवैज्ञानिक और आत्मनिष्ठ अनुभव है, जहाँ व्यक्ति को लगता है कि दूसरों की उपस्थिति उसके व्यक्तिगत स्थान या लक्ष्यों में बाधा डाल रही है। अतः, एक ही उच्च घनत्व वाली स्थिति एक व्यक्ति के लिए भीड़भाड़ वाली हो सकती है जबकि दूसरे के लिए नहीं, जो पूर्णतः धारणा पर निर्भर है।

198. (B) विशिष्ट, मापने योग्य और चुनौतीपूर्ण लक्ष्य।
लक्ष्य निर्धारण के सिद्धांत के अनुसार, "अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें" जैसे अस्पष्ट निर्देश प्रदर्शन में अपेक्षित सुधार नहीं लाते क्योंकि उनमें स्पष्टता की कमी होती है। इसके विपरीत, जब लक्ष्य विशिष्ट और मापने योग्य होते हैं, तो खिलाड़ी को पता होता है कि उसे वास्तव में क्या हासिल करना है। चुनौतीपूर्ण लक्ष्य खिलाड़ी को अपनी सीमाओं से परे जाने के लिए प्रेरित करते हैं, जबकि उनकी स्वीकार्यता प्रेरणा को सुदृढ़ करती है। ऐसे सुव्यवस्थित लक्ष्य एकाग्रता को केंद्रित करते हैं और प्रगति को ट्रैक करने में सहायता करते हैं, जिससे प्रदर्शन बढ़ता है।

199. (D) संगठन की कॉर्पोरेट वित्तपोषण रणनीति
कार्य विश्लेषण मानव संसाधन प्रबंधन की आधारशिला है क्योंकि यह नौकरियों के बारे में विस्तृत और विश्वसनीय आँकड़े प्रदान करता है। इस जानकारी का उपयोग सही आवेदकों को चुनने, कार्य की आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षण कार्यक्रम निर्मित करने और प्रदर्शन के उचित मानक तय करने के लिए किया जाता है। कॉर्पोरेट वित्तपोषण और निवेश रणनीतियाँ संगठन के वित्तीय प्रबंधन का हिस्सा हैं, जो बाजार की स्थितियों पर आधारित होती हैं, न कि व्यक्तिगत नौकरियों के आंतरिक विश्लेषण पर। अतः कार्य विश्लेषण का कार्य मुख्य रूप से मानवीय संसाधनों के कुशल प्रबंधन तक सीमित है।

200. (D) I, II और III
प्रभावी संचार एक बहु-चरणीय प्रक्रिया है जहाँ प्रत्येक तत्व की अपनी विशिष्ट भूमिका होती है। प्रेषक द्वारा विचार को संकेतों में बदलना पहला चरण है, जो संदेश को भेजने योग्य बनाता है। माध्यम वह चैनल है जिसके द्वारा संदेश गमन करता है, जैसे ध्वनि तरंगें या लिखित पत्र। प्राप्तकर्ता द्वारा संकेतों को समझकर अर्थ निकालना अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण चरण है। यदि इनमें से कोई भी एक चरण बाधित होता है, तो संचार प्रक्रिया असफल हो जाती है और सूचना का सही प्रवाह रुक जाता है। अतः सफल संवाद के लिए सभी अनिवार्य हैं।

201. (C) अपेक्षाकृत कम से मध्यम
यर्क्स-डोडसन नियम उत्तेजना और प्रदर्शन के बीच एक वक्रीय संबंध स्थापित करता है। यह बताता है कि प्रत्येक कार्य के लिए उत्तेजना का एक इष्टतम स्तर होता है। सरल कार्यों के लिए उच्च उत्तेजना सहायक हो सकती है, लेकिन जटिल कार्यों के लिए उत्तेजना का स्तर मध्यम या कम होना चाहिए। अत्यधिक उत्तेजना जटिल कार्यों में चिंता और एकाग्रता की कमी पैदा करती है, जिससे प्रदर्शन गिर जाता है। अतः, उच्च स्तरीय मानसिक कार्यों को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए मानसिक शांति और मध्यम उत्तेजना का संतुलन बनाए रखना खिलाड़ी के लिए अत्यंत आवश्यक है।

सही पहचान बनाए रखने के लिए अनिवार्य है। उत्तेजना की कमी मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रतिकूल प्रभावित कर सकती है।

151. (D) 2, 3, 1
हेंस सेली द्वारा प्रतिपादित सामान्य अनुकूलन सिंड्रोम तनाव के प्रति शरीर की क्रमिक प्रतिक्रिया को तीन चरणों में स्पष्ट करता है। सचेतता चरण में शरीर तनाव कारक को पहचानता है और प्रतिक्रिया के लिए तैयार होता है। प्रतिरोध चरण के दौरान, व्यक्ति तनाव का सामना करने का प्रयास करता है। यदि तनाव लंबे समय तक बना रहता है और शरीर इसका मुकाबला करने में असमर्थ हो जाता है, तो वह थकावट के चरण में पहुँच जाता है, जहाँ शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर अत्यंत प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और क्षमता घटती है।

152. (A) व्रूम का प्रत्याशा सिद्धांत
प्रेरणा के प्रक्रिया सिद्धांतों में व्रूम का प्रत्याशा सिद्धांत एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह सिद्धांत इस पर ध्यान केंद्रित करता है कि कर्मचारी किस प्रकार यह तय करते हैं कि उन्हें कितना प्रयास करना चाहिए। यह मानता है कि प्रेरणा तीन चरों: प्रत्याशा, साधनता और वैलेंस का परिणाम है। मास्लो और हर्ज़बर्ग के विषय-वस्तु सिद्धांतों के विपरीत, जो केवल आवश्यकताओं की पहचान करते हैं, यह सिद्धांत प्रेरणा के पीछे की तार्किक और गतिशील मानसिक प्रक्रिया को विस्तार से समझाता है, जिससे कर्मचारी व्यवहार का सूक्ष्म विश्लेषण संभव हो पाता है।

153. (C) उत्तेजन स्तर
खेल मनोविज्ञान में उत्तेजन का अर्थ शरीर और मन की सक्रियता और ऊर्जा की स्थिति से है। यद्यपि प्रदर्शन के लिए उत्तेजन का एक निश्चित स्तर आवश्यक है, लेकिन अत्यधिक उत्तेजन चिंता पैदा कर सकता है, जिससे खिलाड़ी तकनीकी गलतियाँ करने लगते हैं। एक बुद्धिमान प्रशिक्षक उत्तेजन के इस बढ़ते स्तर को पहचानता है और टीम को शांत करने के लिए विराम लेता है ताकि वे अपनी मानसिक एकाग्रता पुनः प्राप्त कर सकें। उत्तेजन का इष्टतम संतुलन ही दबाव की स्थितियों में खिलाड़ी को अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमता से खेलने में सक्षम बनाता है।

154. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
संगठनात्मक विकास कोई एक बार की घटना नहीं है, बल्कि यह एक व्यवस्थित और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसका मुख्य लक्ष्य संगठन के भीतर ऐसी क्षमता विकसित करना है जिससे वह बदलती परिस्थितियों का स्वयं सामना कर सके। इसमें मानवीय व्यवहार और संगठनात्मक प्रक्रियाओं में नियोजित सुधार के माध्यम से दीर्घकालिक परिवर्तन लाए जाते हैं। यह केवल वर्तमान समस्याओं को हल करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संगठन की भविष्य की चुनौतियों के प्रति लचीलापन और प्रभावशीलता बढ़ाने का एक सतत प्रयास है जो संस्था को जीवंत रखता है।

155. (D) परीक्षण-पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता
परीक्षण-पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता एक ऐसी पद्धति है जिसका उपयोग किसी चयन उपकरण की स्थिरता मापने के लिए किया जाता है। इसमें एक ही परीक्षण को एक निश्चित समय अंतराल के बाद उन्हीं व्यक्तियों पर दोबारा आयोजित किया जाता है। यदि दोनों समय के प्राप्तांकों के बीच उच्च सकारात्मक सह-संबंध होता है, तो परीक्षण को विश्वसनीय माना जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि परीक्षण के परिणाम समय के साथ स्थिर रहते हैं और वे किसी क्षणिक कारक से प्रभावित नहीं हैं। यह चयन प्रक्रिया की सटीकता बनाए रखने के लिए अनिवार्य है।

156. (B) प्रेषक को यह निर्धारित करने की अनुमति देता है कि क्या संदेश प्राप्त हुआ और सही ढंग से समझा गया।
संचार प्रक्रिया में प्रतिपुष्टि एक अनिवार्य कड़ी है जो इसे पूर्ण बनाती है। इसके माध्यम से प्रेषक को यह पता चलता है कि उसके द्वारा भेजा गया संदेश प्राप्तकर्ता तक पहुँचा है और उसका सही अर्थ समझा गया है या नहीं। प्रतिपुष्टि दो-तरफा संवाद को बढ़ावा देती है और गलतफहमियों को दूर करने का अवसर प्रदान करती है। बिना प्रतिपुष्टि के, प्रेषक यह कभी सुनिश्चित नहीं कर सकता कि संचार सफल रहा है। यह प्रक्रिया संचार की प्रभावशीलता को सुधारने और भविष्य में सूचनाओं के प्रवाह को सटीक बनाने में सहायक है।

157. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पर्यावरणीय मनोविज्ञान में जनसंख्या घनत्व और भीड़भाड़ के बीच स्पष्ट अंतर है। घनत्व केवल स्थान और लोगों की संख्या का भौतिक अनुपात है, जबकि भीड़भाड़ उस स्थिति के प्रति एक नकारात्मक मानसिक प्रतिक्रिया है। केवल अधिक लोगों का होना ही तनाव पैदा नहीं करता; तनाव तब होता है जब उच्च घनत्व व्यक्ति की गोपनीयता या लक्ष्यों में बाधा डालता है। व्यक्ति भीड़भाड़ तभी महसूस करता है जब उसे उस स्थिति पर अपना नियंत्रण खोता हुआ महसूस होता है। अतः, भौतिक स्थिति और मनोवैज्ञानिक अनुभव के बीच के इस संबंध को समझना आवश्यक है।

158. (D) संगठनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कर्मचारियों को प्रभावित और प्रेरित करना।
नेतृत्व केवल औपचारिक पद तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दूसरों के व्यवहार को सकारात्मक रूप से बदलने की एक कला है। एक नेता का मुख्य कार्य अपने अनुयायियों को एक साझा दृष्टि के प्रति उत्साहित करना और उन्हें उनके कर्तव्यों के प्रति प्रेरित करना है। प्रभावी नेतृत्व से संगठन के भीतर विश्वास का वातावरण बनता है, जिससे कर्मचारी अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमताओं का योगदान देते हैं। नेता कर्मचारियों की आवश्यकताओं और संगठनात्मक उद्देश्यों के बीच सामंजस्य स्थापित करता है, जो अंततः संस्था की समग्र सफलता और उत्पादकता सुनिश्चित करने में निर्णायक सिद्ध होता है।

159. (A) कार्य स्वयं, वेतन, पदोन्नति, पर्यवेक्षण और सहकर्मी।
कार्य विवरणात्मक सूचकांक कार्य संतोष को मापने का एक व्यापक रूप से स्वीकृत उपकरण है जो संतोष के पाँच विशिष्ट आयामों का विश्लेषण करता है। यह मापता है कि कर्मचारी

जानना कठिन है कि किस प्रकार के आवेदक को चुनना संगठन के लिए लाभदायक होगा। अतः, कार्य विश्लेषण नौकरी की आवश्यकताओं और उम्मीदवार की योग्यताओं के बीच सेतु का कार्य करता है।

125. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संगठनात्मक वातावरण कार्यस्थल के उस अनुभव को दर्शाता है जो कर्मचारियों की मनोवैज्ञानिक स्थिति और कार्यक्षमता को गहराई से प्रभावित करता है। जब किसी संगठन में विश्वास और सहयोग की संस्कृति होती है, तो कर्मचारी स्वयं को सुरक्षित और मूल्यवान महसूस करते हैं। यह सकारात्मक भावना उनकी आंतरिक प्रेरणा को बढ़ाती है और उन्हें अधिक उत्पादक बनने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके विपरीत, एक नकारात्मक वातावरण तनाव और अलगाव पैदा करता है। अतः, उत्पादकता बढ़ाने के लिए कर्मचारियों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाला वातावरण निर्मित करना अनिवार्य है।

126. (C) P-4, Q-1, R-2, S-3
खेल मनोविज्ञान एथलीटों के प्रदर्शन और उनके कल्याण को मनोवैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से सुधारने पर ध्यान केंद्रित करता है। संगठनात्मक मनोविज्ञान कार्यस्थल में मानवीय व्यवहार को समझने और संगठनात्मक प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने का प्रयास करता है। पर्यावरणीय मनोविज्ञान भौतिक परिवेश और मानव मन के बीच की अंतःक्रिया का अध्ययन करता है। कार्मिक मनोविज्ञान का मुख्य कार्य कर्मचारियों के चयन और मूल्यांकन में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू करना है। ये सभी क्षेत्र विशिष्ट मानवीय गतिविधियों को वैज्ञानिक आधार प्रदान करके समस्याओं का समाधान करते हैं और उत्पादकता बढ़ाते हैं।

127. (A) कंपनी के शेयर की कीमत
संगठनात्मक वातावरण कर्मचारियों की कार्य परिवेश के प्रति साझा धारणाओं और अनुभवों से निर्मित होता है। इसके प्रमुख आयामों में कर्मचारियों को मिलने वाली स्वायत्तता, टीम का सामंजस्य, प्रबंधन का समर्थन और पुरस्कारों की निष्पक्षता शामिल हैं। कंपनी के शेयर की कीमत एक बाहरी वित्तीय संकेतक है, जो बाजार की स्थितियों पर निर्भर करती है और इसका संगठन के आंतरिक मनोवैज्ञानिक वातावरण से सीधा संबंध नहीं होता है। वातावरण पूरी तरह से मानवीय अंतःक्रियाओं और प्रबंधन की शैलियों द्वारा आकार लेता है जो सीधे कार्यस्थल के भीतर घटित होती हैं।

128. (B) एक नौकरी या स्थिति से दूसरी स्थिति में काफी भिन्न हो सकती है।
'स्थितिजन्य विशिष्टता' का सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि एक चयन परीक्षण जो एक संगठन के लिए बहुत सफल है, वह दूसरी जगह उतना ही प्रभावी हो यह आवश्यक नहीं है। कार्य की प्रकृति और संगठनात्मक संस्कृति में अंतर के कारण परीक्षण की वैधता बदल सकती है। इसलिए, यह माना जाता है कि प्रत्येक चयन उपकरण का उसकी विशिष्ट परिस्थितियों में मूल्यांकन किया जाना चाहिए। यह सिद्धांत चयन प्रक्रियाओं में लचीलेपन और संदर्भ की संवेदनशीलता के महत्व को रेखांकित करता है ताकि भर्ती के निर्णय सटीक और सफल बने रहें।

129. (D) I, II और III
कार्य संतोष एक कर्मचारी की अपने कार्य के प्रति समग्र भावनात्मक प्रतिक्रिया है, जो विभिन्न विशिष्ट पहलुओं के योग से बनती है। वेतन कर्मचारी की आर्थिक आवश्यकताओं और उसकी मेहनत के मूल्य को दर्शाता है। पर्यवेक्षण की गुणवत्ता कर्मचारी के मार्गदर्शन और समर्थन के अनुभव को प्रभावित करती है। सहकर्मियों के साथ संबंध कार्यस्थल पर सामाजिक सहयोग प्रदान करते हैं। जब ये सभी घटक संतोषजनक होते हैं, तो कर्मचारी का समग्र कार्य संतोष उच्च होता है। इनमें से किसी भी एक क्षेत्र में असंतोष पूरे कार्य अनुभव को नकारात्मक बना सकता है।

130. (A) गुण सिद्धांत
नेतृत्व का "महान व्यक्ति" सिद्धांत इतिहास के उन महान नेताओं के अध्ययन पर आधारित है जिन्होंने अपनी विशेष क्षमताओं से दुनिया को बदला। यह सिद्धांत मानता है कि नेता पैदा होते हैं, बनाए नहीं जाते। यह दृष्टिकोण नेतृत्व के 'गुण सिद्धांत' के अत्यंत समान है, क्योंकि दोनों ही इस विचार पर बल देते हैं कि नेतृत्व कुछ विशिष्ट जन्मजात व्यक्तिगत विशेषताओं, जैसे साहस और बुद्धि का परिणाम है। आधुनिक शोध यद्यपि अन्य कारकों को भी महत्व देते हैं, लेकिन ये प्रारंभिक सिद्धांत नेतृत्व की व्यक्तिगत जड़ों को समझने में महत्वपूर्ण हैं।

131. (C) 5, 2, 3, 4, 1
संचार प्रक्रिया का प्रारंभ एक प्रेषक से होता है जो किसी विचार को साझा करना चाहता है। वह अपने विचार को कूटलेखन के माध्यम से संकेतों में बदलता है, जिससे एक संदेश निर्मित होता है। फिर, इस संदेश को भेजने के लिए एक उपयुक्त माध्यम का चुनाव किया जाता है। प्राप्तकर्ता इस संदेश को प्राप्त करता है और कूटवाचन की प्रक्रिया के माध्यम से इसके अर्थ को समझने का प्रयास करता है। यह व्यवस्थित प्रवाह सुनिश्चित करता है कि सूचना एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक प्रभावी ढंग से पहुँच सके और वांछित परिणाम प्राप्त हो।

132. (D) सामाजिक सुगमीकरण
सामाजिक सुगमीकरण एक ऐसी घटना है जिसमें दूसरों की उपस्थिति व्यक्ति के प्रदर्शन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। यह विशेष रूप से उन कार्यों में देखा जाता है जो सरल होते हैं या जिनमें व्यक्ति पहले से ही पूर्णतः कुशल होता है। दूसरों की मौजूदगी व्यक्ति के उत्तेजन स्तर को बढ़ा देती है, जो उसे अधिक ऊर्जा और ध्यान के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। हालांकि, जटिल या नए कार्यों के लिए यह प्रभाव कभी-कभी विपरीत भी हो सकता है। यह अवधारणा सामाजिक वातावरण और कार्यक्षमता के संबंध को स्पष्ट करती है।

133. (C) नेतृत्व के आकस्मिकता और स्थितिजन्य सिद्धांत।
नेतृत्व के आकस्मिकता सिद्धांत इस विचार पर आधारित हैं कि कोई भी नेतृत्व शैली हर स्थिति के लिए इष्टतम नहीं है। एक प्रभावी नेता को अपनी शैली को कार्य की प्रकृति और

168. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
हर्ज़बर्ग का सिद्धांत प्रेरक और हाइजीन कारकों के माध्यम से संतोष को स्पष्ट करता है। व्रूम का प्रत्याशा सिद्धांत प्रेरणा को वैलेंस और प्रत्याशा की मानसिक गणना के रूप में देखता है। मैकग्रेगर का सिद्धांत X और Y प्रबंधकों द्वारा कर्मचारियों के स्वभाव के बारे में रखी जाने वाली विपरीत धारणाओं का वर्णन करता है। फ़ीडलर का आकस्मिकता मॉडल यह प्रस्तावित करता है कि नेता की प्रभावशीलता उसकी व्यक्तिगत शैली और स्थिति की मांगों के बीच सही तालमेल पर निर्भर करती है। ये सभी सिद्धांत संगठनात्मक व्यवहार को समझने के महत्वपूर्ण आधार स्तंभ हैं।

169. (C) शोर, विशेष रूप से यदि रुक-रुक कर और अनियंत्रित हो, तो जटिल कार्यों पर प्रदर्शन को बाधित करता है।
कार्य प्रदर्शन पर शोर का प्रभाव कार्य की प्रकृति और शोर की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। सरल कार्यों पर शोर का प्रभाव कम हो सकता है, लेकिन जटिल कार्यों में, जिन्हें उच्च मानसिक एकाग्रता की आवश्यकता होती है, शोर गंभीर व्यवधान पैदा करता है। विशेष रूप से अप्रत्याशित और अनियंत्रित शोर व्यक्ति के ध्यान को बार-बार भंग करता है, जिससे त्रुटियाँ बढ़ जाती हैं और कार्य पूरा करने की गति धीमी हो जाती है। यह मानसिक थकान को भी त्वरित करता है, जिससे कर्मचारी की समग्र उत्पादकता और निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित होती है।

170. (A) किसी के कार्य या कार्य अनुभवों के मूल्यांकन से उत्पन्न सुखद या सकारात्मक भावनात्मक स्थिति।
कार्य संतोष एक कर्मचारी की अपने कार्य के प्रति समग्र भावनात्मक प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है। यह केवल इस बारे में नहीं है कि वह कितना वेतन पाता है, बल्कि इसमें कार्य की प्रकृति, स्वायत्तता और सहकर्मियों के साथ संबंध भी शामिल है। जब कर्मचारी का अपने कार्य के प्रति मूल्यांकन सकारात्मक होता है, तो वह एक सुखद मानसिक स्थिति का अनुभव करता है। यह संतोष कर्मचारी के मानसिक स्वास्थ्य, उसकी कार्य के प्रति प्रतिबद्धता और उसके कार्यस्थल पर व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है, जिससे संगठन सफल होता है।

171. (D) वित्तीय बाजार विश्लेषण
प्रशिक्षण आवश्यकता विश्लेषण एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जो तीन मुख्य स्तरों पर की जाती है। संगठनात्मक विश्लेषण संगठन के लक्ष्यों और संसाधनों की जाँच करता है। कार्य विश्लेषण नौकरी के विशिष्ट कर्तव्यों और आवश्यक कौशलों की पहचान करता है। व्यक्ति विश्लेषण यह निर्धारित करता है कि किन कर्मचारियों को वास्तव में सीखने की आवश्यकता है और उनकी वर्तमान क्षमता क्या है। वित्तीय बाजार विश्लेषण एक बाहरी आर्थिक प्रक्रिया है जिसका संगठन के आंतरिक प्रशिक्षण की आवश्यकताओं को निर्धारित करने से कोई सीधा संबंध नहीं होता है। अतः यह प्रशिक्षण विश्लेषण का भाग नहीं है।

172. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संगठनात्मक विकास केवल उत्पादकता या दक्षता बढ़ाने के बारे में नहीं है, बल्कि यह गहरे मानवीय मूल्यों पर आधारित एक क्षेत्र है। यह व्यक्तिगत विकास, खुलेपन, आपसी विश्वास और टीम वर्क को प्राथमिकता देता है। इसका मानना है कि जब कर्मचारियों को एक सम्मानजनक और सहयोगात्मक वातावरण मिलता है, तो संगठन स्वाभाविक रूप से अधिक प्रभावी हो जाता है। अतः, इसके हस्तक्षेप केवल तकनीकी सुधारों तक सीमित नहीं होते, बल्कि वे संगठन की मानवीय संस्कृति को बदलने का प्रयास करते हैं। यह दृष्टिकोण आर्थिक लक्ष्यों को मानवीय मूल्यों के साथ संतुलित करता है।

173. (C) खेल मनोविज्ञान
खेल मनोविज्ञान एक विशेष क्षेत्र है जो खेलों में मानवीय व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। यह यह समझने का प्रयास करता है कि मनोवैज्ञानिक कारक जैसे प्रेरणा, आत्मविश्वास और तनाव एक खिलाड़ी के प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करते हैं। साथ ही, यह भी देखता है कि शारीरिक गतिविधि में भागीदारी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को कैसे सुधारती है। खेल मनोवैज्ञानिक खिलाड़ियों को अपनी मानसिक बाधाओं को दूर करने और दबाव की स्थितियों में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए विभिन्न तकनीकों का प्रशिक्षण देते हैं, जिससे खिलाड़ी सफल होते हैं।

174. (D) कोचिंग और परामर्श
कार्य-स्थल प्रशिक्षण वह विधि है जहाँ कर्मचारी वास्तविक कार्य परिवेश में अपने दैनिक कर्तव्यों को निभाते हुए नया ज्ञान और कौशल प्राप्त करता है। कोचिंग इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ एक अनुभवी वरिष्ठ कर्मचारी प्रशिक्षु का मार्गदर्शन करता है और उसे कार्य की बारीकियों को सिखाता है। इसका मुख्य लाभ यह है कि प्रशिक्षण के दौरान कोई उत्पादन हानि नहीं होती और कर्मचारी सीधे वास्तविक समस्याओं से निपटना सीखता है। यह पद्धति व्यवहारिक ज्ञान को तुरंत लागू करने और पेशेवर संबंधों को सुदृढ़ करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

175. (A) वि-वैयक्तिकीकरण
वि-वैयक्तिकीकरण एक ऐसी मनोवैज्ञानिक घटना है जो अक्सर बड़ी भीड़ में होती है, जहाँ व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत पहचान और उत्तरदायित्व की भावना खो देता है। अनाम होने के कारण, व्यक्ति उन सामाजिक मानदंडों और आत्म-नियंत्रण को त्याग सकता है जिनका वह सामान्यतः पालन करता है। इससे आक्रामक या असामाजिक व्यवहार की संभावना बढ़ जाती है क्योंकि व्यक्ति को लगता है कि उसे पहचाना या दंडित नहीं किया जाएगा। यह स्थिति अक्सर भीड़ के आवेगपूर्ण व्यवहार को स्पष्ट करती है, जहाँ सामूहिक उत्तेजना व्यक्तिगत तर्क और नैतिकता पर पूर्णतः हावी हो जाती है।

176. (B) कार्य संतोष एक विशिष्ट अभिवृत्ति है जो एक व्यक्ति अपने कार्य के प्रति रखता है।
मनोवैज्ञानिक रूप से, कार्य संतोष को एक अभिवृत्ति माना जाता है क्योंकि इसमें कार्य के प्रति मूल्यांकन, भावनाएं और व्यवहार

करने की प्रवृत्ति शामिल होती है। यद्यपि 'कार्य अभिवृत्ति' एक व्यापक शब्द है जिसमें कार्य के प्रति सभी दृष्टिकोण शामिल हो सकते हैं, कार्य संतोष विशेष रूप से उस सकारात्मक या नकारात्मक भावना को दर्शाता है जो कार्य के मूल्यांकन से उत्पन्न होती है। यह कर्मचारी की मानसिक स्थिति का एक प्रमुख हिस्सा है जो उसकी कार्य प्रतिबद्धता और उत्पादकता के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है और प्रदर्शन प्रभावित करता है।

177. (B) त्वरित निर्णय लेने के लिए उपयोग किया जाने वाला मानसिक संक्षिप्त मार्ग।
अनुमानी वे मानसिक रणनीतियाँ या सरल नियम हैं जिनका उपयोग लोग जटिल समस्याओं को जल्दी हल करने और निर्णय लेने के लिए करते हैं। वास्तविक जीवन में हमारे पास हमेशा पूरी जानकारी या समय नहीं होता, इसलिए मस्तिष्क उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर त्वरित निर्णय लेने के लिए इन संक्षिप्त मार्गों का सहारा लेता है। यद्यपि ये अक्सर प्रभावी होते हैं, लेकिन कभी-कभी ये संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों और निर्णयों में त्रुटियों का कारण भी बन सकते हैं। ये मानवीय सोच की दक्षता और सीमाओं दोनों को एक साथ स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं।

178. (A) सुरक्षा के प्रति प्रबंधन की प्रतिबद्धता और कर्मचारियों की भागीदारी।
एक मजबूत सुरक्षा वातावरण केवल लिखित नियमों से नहीं, बल्कि संगठन के व्यवहार से स्पष्ट होता है। इसमें प्रबंधन द्वारा सुरक्षा को उत्पादन लक्ष्यों से अधिक प्राथमिकता देना और सुरक्षा उपकरणों में सक्रिय रूप से निवेश करना शामिल है। साथ ही, कर्मचारियों को सुरक्षा प्रक्रियाओं के निर्माण और जोखिमों की रिपोर्टिंग में शामिल किया जाता है। जब संगठन के सभी सदस्य सुरक्षा को एक साझा जिम्मेदारी के रूप में देखते हैं, तो दुर्घटनाओं की संभावना न्यूनतम हो जाती है और कार्यस्थल सुरक्षित बन जाता है। यह संस्कृति उत्पादकता और विश्वास को बढ़ाती है।

179. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
यद्यपि नेतृत्व और प्रबंधन आपस में जुड़े हुए हैं, लेकिन उनके मुख्य कार्यों में गहरा अंतर है। प्रबंधन मुख्य रूप से व्यवस्था बनाए रखने, योजना बनाने और जटिलताओं को सुचारु रूप से नियंत्रित करने पर केंद्रित होता है। इसके विपरीत, नेतृत्व लोगों को एक नई दृष्टि की ओर ले जाने, उन्हें प्रेरित करने और परिवर्तन लाने के बारे में है। प्रबंधक वर्तमान प्रणालियों को कुशलतापूर्वक संचालित करता है, जबकि नेता संगठन को भविष्य की ओर ले जाने के लिए प्रोत्साहित करता है। अतः प्रभावी संगठन को इन दोनों कौशलों के संतुलन की आवश्यकता होती है।

180. (D) आंतरिक कारणारोपण शैली
कारणारोपण सिद्धांत के अनुसार, जब कोई व्यक्ति अपनी सफलता या विफलता का श्रेय स्वयं के प्रयासों और क्षमताओं को देता है, तो उसकी शैली 'आंतरिक' मानी जाती है। खेलों में, आंतरिक कारणारोपण वाले खिलाड़ी यह मानते हैं कि वे अपने प्रदर्शन को नियंत्रित कर सकते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत करने की प्रेरणा बढ़ती है। वे विफलताओं को भी स्वयं की कमी मानकर सुधारने का प्रयास करते हैं, न कि भाग्य या दूसरों को दोष देते हैं। यह दृष्टिकोण दीर्घकालिक विकास और मानसिक दृढ़ता के लिए अत्यंत सकारात्मक है।

181. (C) अधीनस्थों को प्रेरित करना और निर्देशित करना।
एक प्रभावी नेता का प्रमुख उत्तरदायित्व अपने कर्मचारियों की ऊर्जा को संगठनात्मक लक्ष्यों की दिशा में मोड़ना है। प्रशंसा के माध्यम से सकारात्मक सुदृढ़ीकरण प्रदान करना और स्पष्ट उद्देश्य निर्धारित करना प्रेरक व्यवहार हैं। ये क्रियाएं कर्मचारियों में स्पष्टता लाती हैं और उन्हें बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करती हैं। नेतृत्व का यह पक्ष केवल आदेश देने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा वातावरण बनाने के बारे में है जहाँ कर्मचारी स्वयं को समर्थित और महत्वपूर्ण अनुभव करें। इससे कर्मचारी की कार्यक्षमता और निष्ठा दोनों में वृद्धि होती है।

182. (B) भौतिक वातावरण
पर्यावरणीय मनोविज्ञान का मुख्य केंद्र बिंदु यह समझना है कि प्राकृतिक और मानव निर्मित भौतिक परिवेश हमारे मन और व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं। इसमें शोर, भीड़भाड़ और शहरी बनावट के प्रति मानवीय प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। यह क्षेत्र यह पता लगाता है कि कार्यस्थल की प्रकाश व्यवस्था और स्थान का प्रबंधन कर्मचारी की उत्पादकता को कैसे प्रभावित करता है। इसका उद्देश्य ऐसे वातावरण को निर्मित करना है जो मानवीय स्वास्थ्य, संतुष्टि और सामाजिक अंतःक्रियाओं को सकारात्मक रूप से बढ़ावा देने में सक्षम हो ताकि कल्याण सुनिश्चित हो सके।

183. (D) आवेदक अधिक वांछनीय दिखने के लिए अपने उत्तरों में बनावटीपन ला सकते हैं।
कार्मिक चयन में व्यक्तित्व परीक्षणों के उपयोग के साथ सबसे बड़ी समस्या 'सामाजिक वांछनीयता' का पूर्वाग्रह है। आवेदक अक्सर जानते हैं कि नौकरी पाने के लिए उन्हें किस प्रकार का व्यक्तित्व दिखाना चाहिए, इसलिए वे पूरी तरह ईमानदार होने के बजाय उन विकल्पों को चुन सकते हैं जो उन्हें एक आदर्श कर्मचारी के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इसे "बनावटीपन" कहा जाता है, जो परीक्षण की सटीकता और वैधता को कम कर सकता है। हालांकि आधुनिक परीक्षणों में इसे पकड़ने के उपाय होते हैं, लेकिन यह मानवीय प्रकृति के कारण एक चुनौती बनी रहती है।

184. (A) कार्य संतोष और प्रेरणा
हैकमैन और ओल्डहम द्वारा विकसित कार्य विशेषता मॉडल यह समझाता है कि कार्य की बनावट कैसे कर्मचारी की मानसिक स्थिति को प्रभावित करती है। यह मॉडल कौशल विविधता, कार्य पहचान, कार्य महत्व, स्वायत्तता और प्रतिपुष्टि पर ध्यान केंद्रित करता है। जब ये आयाम कार्य में मौजूद होते हैं, तो कर्मचारी अपने काम को अधिक सार्थक और जिम्मेदार मानते हैं, जिससे उनकी आंतरिक प्रेरणा और कार्य संतोष में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। यह मॉडल संगठनों को अधिक आकर्षक और संतोषजनक नौकरियां निर्मित करने के लिए एक वैज्ञानिक एवं सुदृढ़ आधार प्रदान करता है।

185. (C) आत्मविश्वास और एकाग्रता
सकारात्मक आत्म-भाषण एक मानसिक सुदृढ़ीकरण तकनीक है जिसका उपयोग खिलाड़ी अपने भीतर के संदेह को दूर करने के लिए करते हैं। जब कोई खिलाड़ी स्वयं से कहता है कि वह इसे कर सकता है, तो वह न केवल अपने आत्मविश्वास को बढ़ा रहा होता है, बल्कि अपने ध्यान को भी कार्य के निष्पादन पर केंद्रित कर रहा होता है। यह तकनीक मस्तिष्क को विफलता के डर से हटाकर सफलता की संभावनाओं की ओर मोड़ती है। यह तनावपूर्ण स्थितियों में खिलाड़ी को अपनी घबराहट को नियंत्रित करने और मानसिक रूप से शांत रहने में सहायता प्रदान करती है।

186. (A) 3, 1, 2, 4
संगठनात्मक मनोविज्ञान का विकास वैज्ञानिक प्रबंधन के साथ शुरु हुआ, जहाँ कार्य कुशलता पर जोर दिया गया। इसके बाद हॉथोर्न अध्ययन हुए, जिन्होंने कार्यस्थल पर सामाजिक और मानवीय कारकों के महत्व को उजागर किया। मानवतावादी मनोविज्ञान के उदय ने संगठनात्मक विकास के सिद्धांतों को जन्म दिया, जो कर्मचारी कल्याण और विकास पर केंद्रित थे। अंततः, परिवर्तनकारी नेतृत्व जैसे आधुनिक सिद्धांतों का विकास हुआ, जो प्रेरणा और दूरदर्शी नेतृत्व के माध्यम से संगठनात्मक बदलाव लाने पर बल देते हैं। यह विकास मानवीय आवश्यकताओं और उत्पादकता के बीच संतुलन को दर्शाता है।

187. (D) औपचारिक कार्य आवश्यकताओं के बाहर स्वैच्छिक सहायता।
संगठनात्मक नागरिकता व्यवहार वे स्वैच्छिक कार्य हैं जो कर्मचारी के औपचारिक कार्य विवरण का हिस्सा नहीं होते, फिर भी वे संगठन की प्रभावशीलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसमें सहयोगियों की मदद करना और सकारात्मक कार्य वातावरण बनाए रखना शामिल है। ऐसे व्यवहार कर्मचारियों के उच्च कार्य संतोष और प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। यद्यपि ये अनिवार्य नहीं हैं, लेकिन ये एक एकजुट और सहयोगी टीम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो संगठन की सफलता का आधार है। यह व्यवहार कर्मचारी की संस्था के प्रति गहरी निष्ठा को प्रदर्शित करता है।

188. (B) सूचना संसाधित करने की अपनी क्षमता में सीमित हैं और इस प्रकार 'संतोष' करते हैं।
हर्बर्ट साइमन द्वारा प्रस्तावित सीमित तार्किकता का सिद्धांत यह मानता है कि मानवीय निर्णय हमेशा पूर्णतः तर्कसंगत नहीं हो सकते। समय की कमी और मस्तिष्क की सीमित संज्ञानात्मक क्षमता के कारण, लोग सभी संभावित विकल्पों का विश्लेषण करने में असमर्थ होते हैं। इसके बजाय, वे 'संतोषप्रद' रणनीति अपनाते हैं, जिसका अर्थ है उस पहले विकल्प को चुनना जो उनकी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करता हो। यह मॉडल वास्तविक दुनिया में निर्णय लेने की प्रक्रिया का एक यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करता है, जहाँ लोग सर्वश्रेष्ठ के बजाय पर्याप्त समाधान चुनते हैं।

189. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
खेल मनोविज्ञान का मुख्य ध्येय यह सुनिश्चित करना है कि खिलाड़ी अपनी शारीरिक क्षमताओं का मानसिक अवरोधों के बिना पूर्ण उपयोग कर सकें। अक्सर उत्कृष्ट खिलाड़ी भी दबाव या आत्मविश्वास की कमी के कारण असफल हो जाते हैं। उन्हें लक्ष्य निर्धारण जैसी तकनीकें सिखाने से उन्हें स्पष्ट दिशा मिलती है, जबकि मानस-चित्रण उनके आत्मविश्वास को बेहतर बनाता है। ये मनोवैज्ञानिक कौशल उन्हें अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने और कठिन परिस्थितियों में भी अपनी उच्चतम क्षमता से प्रदर्शन करने में सक्षम बनाते हैं। अतः, मानसिक प्रशिक्षण शारीरिक प्रशिक्षण का अनिवार्य पूरक है।

190. (D) संवेदी अभाव
संवेदी अभाव के प्रयोगों में प्रतिभागियों को बाहरी उत्तेजनाओं से अलग करके यह देखा जाता है कि उनका मस्तिष्क सूचनाओं की अनुपस्थिति में कैसी प्रतिक्रिया देता है। चूंकि मानव मस्तिष्क को सामान्य रूप से कार्य करने के लिए निरंतर संवेदी इनपुट की आवश्यकता होती है, इसलिए इस अभाव में व्यक्ति को मतिभ्रम और समय के बोध में बदलाव का अनुभव होने लगता है। ये अध्ययन यह सिद्ध करते हैं कि पर्यावरण के साथ सक्रिय अंतःक्रिया और उत्तेजना का एक न्यूनतम स्तर मानसिक स्वास्थ्य और संज्ञानात्मक स्थिरता बनाए रखने के लिए अनिवार्य है। उत्तेजना जीवन का आधार है।

191. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
कार्य विशिष्टता किसी पद के लिए आवश्यक मानवीय योग्यताओं और कौशलों का विवरण देती है। कार्य विवरण उस पद के कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों की सूची प्रदान करता है। कार्य मूल्यांकन संगठन के भीतर विभिन्न कार्यों के सापेक्ष मूल्य को निर्धारित करता है ताकि एक न्यायसंगत वेतन संरचना बनाई जा सके। कार्य डिजाइन कार्य की विषय-वस्तु और प्रक्रियाओं को इस प्रकार व्यवस्थित करने की कला है कि वे कर्मचारी की दक्षता और मनोवैज्ञानिक संतुष्टि दोनों को अधिकतम कर सकें। ये सभी मानव संसाधन प्रबंधन के अत्यंत आधारभूत एवं महत्वपूर्ण स्तंभ माने जाते हैं।

192. (B) नियमित सुरक्षा प्रशिक्षण और संचार।
एक प्रभावी सुरक्षा कार्यक्रम केवल उपकरणों तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह सुरक्षा की संस्कृति विकसित करने पर केंद्रित होता है। नियमित प्रशिक्षण यह सुनिश्चित करता है कि कर्मचारियों को खतरों और सुरक्षित कार्य प्रणालियों की अद्यतन जानकारी हो। निरंतर संचार सुरक्षा के प्रति जागरूकता को जीवित रखता है और कर्मचारियों को असुरक्षित स्थितियों की रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित करता है। दंडात्मक दृष्टिकोण के बजाय, सहयोग और शिक्षा पर आधारित कार्यक्रम अधिक सफल होते हैं क्योंकि वे कर्मचारियों को सुरक्षा को अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी के रूप में देखने हेतु प्रेरित करते हैं।

193. (B) विचारशीलता
नेतृत्व अनुसंधान में, 'विचारशीलता' उस व्यवहार को दर्शाती है जहाँ नेता अपने अधीनस्थों के साथ गर्मजोशी और समर्थन भरा संबंध बनाता है। ऐसा नेता कर्मचारियों की भावनाओं का

142. (D) स्वायत्तता
कार्य विशेषता मॉडल के अनुसार, स्वायत्तता वह सीमा है जिस तक एक कार्य कर्मचारी को अपने काम के समय और विधियों को निर्धारित करने में स्वतंत्रता प्रदान करता है। जब किसी कार्य में उच्च स्वायत्तता होती है, तो कर्मचारी स्वयं को परिणामों के लिए व्यक्तिगत रुप से जिम्मेदार महसूस करता है, जिससे उसकी आंतरिक प्रेरणा और संतोष बढ़ती है। यह उसे अपने कौशल का उपयोग करने और कार्य को अपनी शैली में पूर्ण करने का अवसर देता है। स्वायत्तता की कमी से कर्मचारी अक्सर स्वयं को केवल एक तंत्र का हिस्सा महसूस करते हैं।

143. (A) विशिष्ट, चुनौतीपूर्ण लक्ष्य बिना किसी लक्ष्य या "अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें" जैसे लक्ष्यों की तुलना में उच्च प्रदर्शन की ओर ले जाते हैं।
लक्ष्य निर्धारण सिद्धांत यह मानता है कि स्पष्ट लक्ष्य खिलाड़ी को सटीक दिशा प्रदान करते हैं। जब लक्ष्य विशिष्ट होते हैं, तो वे खिलाड़ी को अपनी ऊर्जा को केंद्रित करने में सहायता करते हैं। चुनौतीपूर्ण लक्ष्य प्रेरणा को बढ़ाते हैं क्योंकि वे व्यक्ति को अपनी सीमाओं से परे जाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसके विपरीत, "अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें" जैसे अस्पष्ट निर्देशों में स्पष्टता की कमी होती है, जिससे प्रदर्शन का स्तर अक्सर सामान्य ही रहता है। अतः, सफलता के लिए लक्ष्यों का स्पष्ट, चुनौतीपूर्ण और मापने योग्य होना अनिवार्य है।

144. (B) टीम निर्माण
टीम निर्माण एक संगठनात्मक विकास तकनीक है जिसे विशेष रुप से कार्य समूहों के भीतर आपसी संबंधों को सुधारने के लिए निर्मित किया गया है। इसका उद्देश्य टीम के सदस्यों के बीच विश्वास बढ़ाना और साझा लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता पैदा करना है। विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से, सदस्य एक-दूसरे की भूमिकाओं को बेहतर ढंग से समझते हैं। जब एक टीम एकजुट होकर कार्य करती है, तो वह जटिल चुनौतियों का सामना करने में अधिक सक्षम होती है और संगठन की कुल सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देती है। यह सहयोग कार्यकुशलता बढ़ाता है।

145. (D) I, II और III
पर्यावरणीय मनोविज्ञान एक विस्तृत क्षेत्र है जो मानव व्यवहार पर भौतिक परिवेशों के प्रभाव का विश्लेषण करता है। शोर, भीड़भाड़ और प्रदूषण प्रमुख पर्यावरणीय तनाव कारक हैं जिनका अध्ययन इस विषय के केंद्र में है। शोर एकाग्रता को प्रभावित करता है, भीड़भाड़ सामाजिक संबंधों को बदलती है, और प्रदूषण मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ा होता है। ये सभी कारक हमारे दैनिक जीवन की गुणवत्ता, कार्य उत्पादकता और मनोवैज्ञानिक कल्याण को गहराई से प्रभावित करते हैं, जिससे इनका वैज्ञानिक अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है ताकि जीवन स्तर सुधारा जा सके।

146. (A) सुरक्षा में सुधार के लिए स्थितिजन्य कारकों को बदलना।
सुरक्षा प्रबंधन का आधुनिक दृष्टिकोण यह मानता है कि मानवीय त्रुटियों को कम करने के लिए कार्य परिवेश को ही सुरक्षित बनाया जाना चाहिए। जब एक प्रबंधक मशीनों की सुरक्षा और प्रकाश व्यवस्था जैसे भौतिक तत्वों में सुधार करता है, तो वह उन स्थितिजन्य कारणों को दूर कर रहा होता है जो दुर्घटनाओं का आधार बनते हैं। यह दृष्टिकोण 'मानवीय कारक अभियांत्रिकी' पर आधारित है, जो व्यक्ति को दोष देने के बजाय प्रणाली को दोषमुक्त करने पर बल देता है। इससे न केवल दुर्घटनाओं में कमी आती है, बल्कि कर्मचारियों का मनोबल भी बढ़ता है।

147. (C) सफल कार्य प्रदर्शन का मानक।
कार्मिक चयन में 'मानदंड' वह पैमाना है जिसका उपयोग यह जाँचने के लिए किया जाता है कि कोई चयन उपकरण वास्तव में प्रभावी है या नहीं। यह सामान्यतः कार्य के वास्तविक परिणामों को दर्शाता है, जैसे उत्पादकता या कार्य अवधि। वैधता स्थापित करने के लिए, चयन परीक्षण के अंकों की तुलना इस मानदंड से की जाती है। यदि उच्च परीक्षण अंक उच्च कार्य प्रदर्शन के साथ जुड़े हैं, तो चयन प्रक्रिया को वैध माना जाता है। इस प्रकार, मानदंड सफलता की वास्तविक कसौटी है जो चयन की सटीकता प्रमाणित करता है।

148. (D) कार्य की विशेषताओं, जैसे वेतन और समय का एक तार्किक मूल्यांकन।
कार्य अभिवृत्ति का संज्ञानात्मक घटक उन विचारों और तार्किक विश्वासों को दर्शाता है जो एक कर्मचारी अपने कार्य के बारे में रखता है। इसमें वे सभी जानकारियाँ सम्मिलित होती हैं जो व्यक्ति ने अनुभव के माध्यम से एकत्र की हैं, जैसे वेतन का स्तर या कार्य के घंटों का संतुलन। यह घटक भावनाओं के बजाय तथ्यों और विश्लेषण पर आधारित होता है। यह कर्मचारी को अपने कार्य की गुणवत्ता और लाभों का एक व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करने में सहायता प्रदान करता है, जो उसके संतोष का आधार बनता है।

149. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
निरंकुश नेता स्वतंत्र रूप से निर्णय लेते हैं और निर्देश देते हैं। लोकतांत्रिक शैली में निर्णयों में अधीनस्थों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है। अहस्तक्षेपवादी शैली में नेता समूह को पूर्ण स्वतंत्रता देता है और स्वयं को प्रक्रिया से दूर रखता है। परिवर्तनकारी नेतृत्व अनुयायियों को प्रेरित करता है ताकि वे व्यक्तिगत हितों को त्यागकर संगठन के व्यापक उद्देश्यों के लिए कार्य करें। ये शैलियाँ नेता के व्यवहार और समूह की आवश्यकताओं के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रभाव डालती हैं, जो संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

150. (B) सामान्य रूप से कार्य करने और वास्तविकता की एक स्थिर भावना बनाए रखने के लिए।
संवेदी अभाव के अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि मानव मस्तिष्क को स्वस्थ रहने के लिए बाहरी वातावरण से निरंतर सूचनाओं की आवश्यकता होती है। जब ये संवेदी इनपुट समाप्त हो जाते हैं, तो मस्तिष्क स्वयं ही उत्तेजना पैदा करने की कोशिश करता है, जिससे मतिभ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है। यह शोध सिद्ध करता है कि एक विविध और उत्तेजक वातावरण मानसिक संतुलन, संज्ञानात्मक स्थिरता और वास्तविकता की

202. (A) फ़ीडलर का मॉडल
फ्रेड फ़ीडलर द्वारा विकसित आकस्मिकता मॉडल नेतृत्व का वह सिद्धांत है जो बताता है कि कोई भी एकल नेतृत्व शैली हर परिस्थिति में सर्वश्रेष्ठ नहीं होती है। नेता की प्रभावशीलता उसकी व्यक्तित्व शैली और स्थिति के नियंत्रण के बीच के मेल पर निर्भर करती है। ओहायो और मिशिगन के अध्ययन व्यवहारवादी थे, जो केवल नेता के कार्यों पर केंद्रित थे। फ़ीडलर का मॉडल स्थिति के महत्व को रेखांकित करता है, जो इसे एक आकस्मिकता सिद्धांत के रूप में विशिष्ट और आधुनिक नेतृत्व दृष्टिकोण बनाता है। यह शैली और परिस्थिति के सामंजस्य पर बल देता है।

203. (D) कार्य विस्तार
कार्य विस्तार एक कार्य डिजाइन तकनीक है जिसमें कर्मचारी के कार्य में समान स्तर के अतिरिक्त कार्यों को जोड़ा जाता है। इसे 'क्षैतिज कार्य विस्तार' भी कहा जाता है क्योंकि इसमें उत्तरदायित्व या अधिकार की गहराई नहीं बढ़ती, बल्कि कार्यों की विविधता बढ़ती है। इसका मुख्य उद्देश्य काम की एकरसता और बोरियत को कम करना है ताकि कर्मचारी अधिक सक्रिय रह सके। यद्यपि यह कर्मचारी के कौशल उपयोग को बढ़ाता है, लेकिन यदि इसमें उचित चुनौती का अभाव हो, तो यह लंबे समय तक कार्य संतोष बढ़ाने में पर्याप्त सिद्ध नहीं होता है।

204. (B) अवधान और पठन बोध में कमी
पर्यावरणीय मनोविज्ञान में किए गए शोध दर्शाते हैं कि तेज और अनियंत्रित शोर का संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। शोर एक बाहरी विक्षेप के रूप में कार्य करता है जो मस्तिष्क की सूचना प्रसंस्करण क्षमता को सीमित कर देता है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति की एकाग्रता बार-बार भंग होती है और जटिल लिखित सामग्री को समझने की उसकी क्षमता धीमी हो जाती है। यह प्रभाव विशेष रूप से उन बच्चों और कर्मचारियों में अधिक देखा जाता है जो लगातार शोरगुल वाले वातावरण में रहते हैं, जिससे उनकी सीखने की क्षमता और उत्पादकता प्रभावित होती है।

205. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कार्य संतोष एक जटिल और बहुआयामी अभिवृत्ति है। इसे एक 'वैश्विक' भावना के रूप में देखा जा सकता है जहाँ कर्मचारी अपने कार्य के बारे में समग्र रूप से कैसा महसूस करता है। साथ ही, यह विभिन्न पहलुओं जैसे वेतन, पर्यवेक्षण और कार्य की प्रकृति के प्रति अलग-अलग भावनाओं का एक संग्रह भी है। एक व्यक्ति के लिए यह संभव है कि वह अपने सहयोगियों के साथ बहुत खुश हो लेकिन संस्था की वेतन नीतियों से असंतुष्ट हो। समग्र संतोष इन सभी सकारात्मक और नकारात्मक अनुभवों का एक संयुक्त और संतुलित परिणाम होता है।

206. (D) चिंतन
व्यवहार परिवर्तन के मॉडल में 'चिंतन' वह चरण है जहाँ व्यक्ति अपनी समस्या के प्रति जागरूक होता है और बदलाव करने के बारे में गंभीरता से विचार करना शुरू करता है। इस स्तर पर व्यक्ति बदलाव के लाभों और हानियों के बीच तुलना करता है। यद्यपि वह अगले कुछ महीनों में व्यायाम शुरू करने का इरादा रखता है, लेकिन उसने अभी तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। यह चरण बदलाव की दिशा में मानसिक तैयारी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो सक्रिय कार्य से पहले आता है। यह जागरूकता की स्थिति को दर्शाता है।

207. (A) एक समूह के भीतर विश्वास, संचार और सहयोग बढ़ाना।
टीम निर्माण संगठनात्मक विकास का एक प्रमुख हस्तक्षेप है जो समूह की कार्यक्षमता और आंतरिक संबंधों को सुधारने पर केंद्रित होता है। विभिन्न सहभागी गतिविधियों के माध्यम से, सदस्यों को एक-दूसरे की भूमिकाओं को समझने और आपसी गलतफहमियों को दूर करने का अवसर मिलता है। जब टीम के बीच विश्वास का स्तर बढ़ता है, तो सूचनाओं का संचार अधिक पारदर्शी और प्रभावी हो जाता है। यह सामूहिक एकता न केवल कार्यस्थल पर शांति बनाए रखती है, बल्कि जटिल समस्याओं को सुलझाने और संगठनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी निर्णायक सिद्ध होती है।

208. (B) विश्वसनीयता का
मनोवैज्ञानिक मापन में विश्वसनीयता का तात्पर्य परिणामों की निरंतरता और स्थिरता से है। यदि एक ही परीक्षण को किसी व्यक्ति पर बार-बार आयोजित करने के बाद भी लगभग समान परिणाम प्राप्त होते हैं, तो वह परीक्षण विश्वसनीय माना जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि मापन की प्रक्रिया में त्रुटियाँ कम हैं और प्राप्त अंक व्यक्ति की वास्तविक योग्यता को दर्शाते हैं। वैधता इस बात पर ध्यान देती है कि परीक्षण वास्तव में क्या मापता है, जबकि विश्वसनीयता परिणामों की स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करती है, जो चयन उपकरण की बुनियादी आवश्यकता है।

209. (B) किसी व्यक्ति के बारे में मूल्यांकनकर्ता की समग्र धारणा उनके विशिष्ट गुणों के मूल्यांकन को प्रभावित करती है।
'हेलो प्रभाव' निष्पादन मूल्यांकन में एक सामान्य संज्ञानात्मक त्रुटि है जहाँ मूल्यांकनकर्ता किसी कर्मचारी के एक सकारात्मक गुण से इतना प्रभावित होता है कि वह उसके अन्य सभी गुणों को भी उच्च रेटिंग दे देता है। इसके कारण कर्मचारी के प्रदर्शन का वास्तविक और वस्तुनिष्ठ आकलन नहीं हो पाता। यह पूर्वाग्रह साक्षात्कारकर्ता की निष्पक्षता को कम करता है और गलत पदोन्नति निर्णयों का कारण बन सकता है। इसे कम करने के लिए मूल्यांकनकर्ताओं को विशिष्ट व्यवहारों के आधार पर रेटिंग देने के लिए प्रशिक्षित करना अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण माना जाता है।

210. (A) एक कर्मचारी को पता नहीं है कि सॉफ्टवेयर के नए हिस्से को कैसे संचालित किया जाए।
कार्मिक प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य कर्मचारी के ज्ञान और कौशल में कमी को दूर करना है। जब कोई कर्मचारी केवल इसलिए कार्य नहीं कर पाता क्योंकि उसके पास उसे करने की आवश्यक जानकारी या तकनीकी दक्षता नहीं है, तो प्रशिक्षण ही इसका सबसे प्रभावी समाधान है। प्रेरणा की कमी या मशीनी खराबी जैसी समस्याओं के लिए अन्य प्रबंधन हस्तक्षेपों की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षण निवेश तब सार्थक होता है जब वह कर्मचारी को नई तकनीकों को अपनाने और कार्यकुशलता

262. (B) सुरक्षा के प्रति प्रबंधन की दृढ़ प्रतिबद्धता।
एक प्रभावी सुरक्षा कार्यक्रम की सफलता के लिए प्रबंधन का समर्थन और प्रतिबद्धता सबसे अनिवार्य घटक है। जब उच्च प्रबंधन सुरक्षा को एक प्राथमिकता बनाता है और इसके लिए आवश्यक संसाधन तथा प्रशिक्षण प्रदान करता है, तो यह पूरे संगठन में एक सकारात्मक संदेश भेजता है। कर्मचारी तब सुरक्षा नियमों का पालन करने के लिए अधिक प्रेरित महसूस करते हैं क्योंकि वे देखते हैं कि उनकी भलाई को महत्व दिया जा रहा है। एक ऐसी संस्कृति जहाँ सुरक्षा को उत्पादन लक्ष्यों से ऊपर रखा जाता है, वही दुर्घटनाओं को कम करने में सफल होती है और विश्वास बढ़ाती है।

263. (D) लेन-देन संबंधी
लेन-देन संबंधी नेतृत्व एक ऐसी शैली है जो नेता और अनुयायियों के बीच पुरस्कार और सजा के विनिमय पर आधारित होती है। इसमें नेता स्पष्ट भूमिकाएं निर्धारित करता है, कार्यों को समझाता है और अपेक्षित प्रदर्शन प्राप्त करने पर पुरस्कार प्रदान करता है। यह शैली मुख्य रूप से वर्तमान कार्यों की कुशलता और मानकों के पालन पर ध्यान केंद्रित करती है। यद्यपि यह परिवर्तनकारी नेतृत्व की तरह नई दृष्टि प्रदान नहीं करती, लेकिन यह संगठनात्मक स्थिरता बनाए रखने और अल्पकालिक लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए अत्यंत प्रभावी और आवश्यक मानी जाती है, जो अनुशासन बनाए रखती है।

264. (A) मानकीकरण के कारण अधिक विश्वसनीय और वैध है।
संरचित साक्षात्कार चयन प्रक्रिया में निष्पक्षता और वैज्ञानिक सटीकता लाते हैं। इसमें सभी आवेदकों से एक ही क्रम में पूर्व-निर्धारित, कार्य-संबंधी प्रश्न पूछे जाते हैं और उनके उत्तरों का मूल्यांकन भी एक समान पैमाने पर किया जाता है। यह मानकीकरण साक्षात्कारकर्ता के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और व्यक्तिपरकता को कम करता है, जिससे विभिन्न उम्मीदवारों की योग्यता की तुलना करना आसान और सटीक हो जाता है। शोध दर्शाते हैं कि संरचित साक्षात्कार भविष्य के कार्य प्रदर्शन की भविष्यवाणी करने में असंरचित साक्षात्कारों की तुलना में कहीं अधिक सफल और विश्वसनीय सिद्ध होते हैं।

265. (C) शारीरिक गतिविधि को अपनाने और उसे बनाए रखने को समझना।
व्यायाम और शारीरिक सुदृढ़ता के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का अनुप्रयोग मुख्य रूप से व्यवहार परिवर्तन पर केंद्रित होता है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि लोग व्यायाम शुरू करने के लिए कैसे प्रेरित होते हैं और वे किन बाधाओं के कारण इसे बीच में ही छोड़ देते हैं। मनोवैज्ञानिक रणनीतियाँ, जैसे लक्ष्य निर्धारण और आत्म-प्रभावकारिता बढ़ाना, व्यक्तियों को स्वस्थ आदतों को दीर्घकालिक रूप से बनाए रखने में सहायता करती हैं। यह क्षेत्र केवल शरीर क्रिया विज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानवीय प्रेरणा और आदतों के निर्माण की गहरी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को संबोधित करता है।

266. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
संगठनात्मक वातावरण कार्यस्थल के परिवेश के प्रति कर्मचारियों की साझा धारणाओं का प्रतिनिधित्व करता है। परिवर्तनकारी नेतृत्व वह है जहाँ नेता अपनी दृष्टि के माध्यम से अनुयायियों को प्रेरित करता है। यर्क्स-डोडसन नियम उत्तेजना और प्रदर्शन के बीच संबंध बताता है, जहाँ मध्यम उत्तेजना पर प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ होता है। भीड़भाड़ एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है जो उच्च भौतिक घनत्व के कारण व्यक्तिपरक तनाव पैदा करती है। ये सभी अवधारणाएं मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में मानवीय व्यवहार और पर्यावरण के बीच की जटिल अंतःक्रियाओं को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य मानी जाती हैं।

267. (D) कोई भी कारक जो संदेश को विकृत करता है या संचार में हस्तक्षेप करता है।
संचार प्रक्रिया में 'शोर' केवल ध्वनि प्रदूषण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह किसी भी ऐसी बाधा को संदर्भित करता है जो सूचना के स्पष्ट प्रवाह को रोकती है। इसमें भौतिक शोर, प्राप्तकर्ता का ध्यान भटकना, खराब भाषा ज्ञान या व्यक्तिगत पूर्वाग्रह शामिल हो सकते हैं। शोर संदेश के अर्थ को बदल सकता है या उसे पूरी तरह नष्ट कर सकता है, जिससे प्रेषक का मूल उद्देश्य विफल हो जाता है। प्रभावी संचार सुनिश्चित करने के लिए, प्रबंधकों को इन शोर के स्रोतों की पहचान करना और उन्हें न्यूनतम करने का निरंतर प्रयास करना चाहिए ताकि संवाद सफल हो।

268. (B) कार्य संतोष
कार्य संतोष एक कर्मचारी की अपने कार्य के प्रति समग्र भावनात्मक और मूल्यांकनात्मक प्रतिक्रिया है। यह इस बात का प्रतिबिंब है कि कर्मचारी अपने कार्य के विभिन्न पहलुओं—जैसे कार्य की प्रकृति, वेतन, स्वायत्तता और सामाजिक संबंधों—को किस प्रकार देखता है। जब कर्मचारी का अपने कार्य के प्रति अनुभव सकारात्मक होता है, तो वह उच्च संतुष्टि महसूस करता है, जो उसके मानसिक स्वास्थ्य, कार्य के प्रति समर्पण और उत्पादकता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इसके विपरीत, असंतोष से कर्मचारी त्याग दर बढ़ सकती है। अतः, कार्य संतोष संगठनात्मक स्वास्थ्य का सूचक है।

269. (C) गुण सिद्धांत प्रस्तावित करते हैं कि नेता जन्मजात होते हैं, जबकि व्यवहारवादी सिद्धांत बताते हैं कि नेतृत्व सीखा जा सकता है।
नेतृत्व के गुण सिद्धांत इस विचार पर आधारित हैं कि नेताओं में कुछ जन्मजात व्यक्तिगत विशेषताएं होती हैं जो उन्हें दूसरों से अलग करती हैं। इसके विपरीत, व्यवहारवादी सिद्धांत यह मानते हैं कि नेतृत्व को नेता के कार्यों और व्यवहारों के माध्यम से समझा जा सकता है। व्यवहारवादी दृष्टिकोण यह आशा प्रदान करता है कि विशिष्ट प्रभावी व्यवहारों को सीखकर और अपनाकर कोई भी व्यक्ति एक कुशल नेता बन सकता है। यह अंतर नेतृत्व विकास के प्रति एक क्रांतिकारी बदलाव को दर्शाता है, जहाँ अब चयन के बजाय प्रशिक्षण और कौशल विकास पर अधिक बल दिया जाता है।

स्तर के कर्मचारियों के बीच समन्वय को बढ़ावा देता है। नीचे की ओर संचार प्रबंधकों द्वारा लक्ष्य स्पष्ट करने और निर्देश देने का प्राथमिक साधन है। ये तीनों प्रवाह मिलकर एक स्वस्थ सूचना तंत्र का निर्माण करते हैं, जो संगठन की कार्यक्षमता, पारदर्शिता और कर्मचारी संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए अनिवार्य है।

220. (B) मानव तंत्रिका तंत्र को उत्तेजन की निरंतर और विविध धारा की आवश्यकता होती है।
संवेदी अभाव के शोध यह स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि मानवीय मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र निष्क्रियता के लिए नहीं बने हैं। सामान्य संज्ञानात्मक कार्यक्षमता बनाए रखने के लिए हमें अपने पर्यावरण से निरंतर उत्तेजनाओं की आवश्यकता होती है। जब ये उत्तेजनाएं समाप्त हो जाती हैं, तो मानसिक संतुलन बिगड़ने लगता है, जिससे भ्रम जैसी स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। यह प्रमाणित करता है कि एक सक्रिय वातावरण मानसिक स्वास्थ्य के लिए उतना ही अनिवार्य है जितना कि शारीरिक पोषण। पर्यावरण हमारे मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित रखने में सक्रिय भूमिका निभाता है।

221. (C) कर्मचारी, उसके पर्यवेक्षक, साथियों, अधीनस्थों और कभी-कभी ग्राहकों से।
360-डिग्री प्रतिपुष्टि निष्पादन मूल्यांकन की एक आधुनिक पद्धति है। यह केवल प्रबंधक के दृष्टिकोण पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इसमें कर्मचारी के साथ कार्य करने वाले सभी संबंधित पक्षों से जानकारी एकत्र की जाती है। यह कर्मचारी के व्यवहार और प्रदर्शन का एक सर्वांगीण और निष्पक्ष चित्रण प्रदान करती है। इससे कर्मचारी को यह समझने में सहायता मिलती है कि वह संगठन के विभिन्न स्तरों पर कैसा प्रभाव डाल रहा है। यह तकनीक व्यक्तिगत विकास, टीम वर्क और नेतृत्व कौशल में सुधार के लिए अत्यंत मूल्यवान प्रतिपुष्टि प्रदान करती है।

222. (D) संगठन की समस्याओं का निदान करना।
संगठनात्मक विकास की प्रक्रिया हमेशा 'निदान' से शुरु होनी चाहिए। इसमें यह समझने के लिए आँकड़े एकत्र किए जाते हैं कि संगठन की वर्तमान स्थिति क्या है और किन क्षेत्रों में बाधाएं हैं। जैसे एक चिकित्सक उपचार से पहले बीमारी का पता लगाता है, वैसे ही एक प्रबंधक को हस्तक्षेप लागू करने से पहले समस्या के मूल कारणों को समझना आवश्यक है। बिना निदान के किए गए परिवर्तन संसाधनों की बर्बादी हो सकते हैं और समस्याओं को और बिगाड़ सकते हैं। सटीक निदान ही प्रभावी और स्थायी परिवर्तन की ठोस नींव रखता है।

223. (A) वेतन
हर्ज़बर्ग के द्वि-कारक सिद्धांत के अनुसार, वेतन एक 'हाइजीन' कारक है। इसका अर्थ है कि यदि वेतन अपर्याप्त है, तो यह कर्मचारियों में गहरा असंतोष पैदा करेगा। हालांकि, केवल वेतन बढ़ाने से कर्मचारी को लंबे समय तक कार्य करने के लिए आंतरिक प्रेरणा या उच्च संतोष नहीं मिलता है। वास्तविक संतुष्टि और प्रेरणा 'प्रेरक' कारकों जैसे मान्यता और उत्तरदायित्व से आती है। अतः वेतन केवल एक आधारभूत आवश्यकता है जो असंतोष को तो रोक सकती है, लेकिन यह स्वयं में एक शक्तिशाली प्रेरक शक्ति नहीं मानी जाती है।

224. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संगठनात्मक वातावरण का निर्माण काफी हद तक प्रबंधन की कार्यशैली और नेतृत्व व्यवहार पर निर्भर करता है। नेता जो विश्वास और खुलापन दिखाते हैं, वे एक ऐसा माहौल बनाते हैं जहाँ कर्मचारी सुरक्षित महसूस करते हैं और अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमता का उपयोग करते हैं। इसके विपरीत, जो नेता केवल दंड पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वे भय और असुरक्षा का वातावरण निर्मित करते हैं, जिससे उत्पादकता कम हो जाती है। चूंकि वातावरण कर्मचारियों की साझा धारणाओं से बनता है, इसलिए नेता का व्यवहार ही इन धारणाओं का मुख्य स्रोत होता है।

225. (B) तनाव कम करना और मनोदशा में सुधार करना।
शारीरिक सुदृढ़ता को बढ़ावा देने का एक मुख्य मनोवैज्ञानिक आधार मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करना है। नियमित व्यायाम से मस्तिष्क में एंडोर्फिन जैसे रसायनों का स्राव होता है, जो प्राकृतिक रूप से तनाव के स्तर को कम करते हैं और प्रसन्नता की भावना को बढ़ाते हैं। यह न केवल आत्मविश्वास में सुधार करता है, बल्कि दैनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए मानसिक लचीलापन भी प्रदान करता है। व्यायाम को अक्सर चिंता के लक्षणों के प्रबंधन के लिए एक प्रभावी गैर-दवा चिकित्सा के रूप में देखा जाता है, जो जीवन की गुणवत्ता बढ़ाता है।

226. (A) संगठनात्मक वातावरण
संगठनात्मक वातावरण कार्यस्थल के आंतरिक परिवेश के प्रति कर्मचारियों की साझा और सामूहिक धारणाओं का योग है। यह इस बात पर आधारित होता है कि कर्मचारी अपनी नीतियों, कार्य प्रणालियों, नेतृत्व शैली और स्वायत्तता के स्तर को किस रूप में देखते हैं। यह वातावरण कर्मचारियों के मनोबल और उनकी कार्यक्षमता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। यद्यपि संस्कृति गहरी होती है, वातावरण संगठन की तात्कालिक मानसिक स्थिति को दर्शाता है, जिसे प्रबंधन द्वारा सुधारात्मक नीतियों और बेहतर संचार के माध्यम से बदला और सुधारा जा सकता है ताकि उत्पादकता बढ़े।

227. (C) इसके नकारात्मक प्रभावों को कम कर सकता है।
पर्यावरणीय मनोविज्ञान में 'नियंत्रण की भावना' तनाव प्रबंधन का एक प्रमुख कारक है। यदि कोई व्यक्ति किसी तनाव कारक, जैसे शोर, को अपनी इच्छा से नियंत्रित कर सकता है, तो वह उसके प्रति कम तनाव महसूस करता है। नियंत्रण की यह संभावना व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक बोझ को कम कर देती है और उसे परिस्थिति के प्रति अधिक सक्षम महसूस कराती है। इसके विपरीत, अनियंत्रित तनाव कारक संज्ञानात्मक प्रदर्शन और मानसिक स्वास्थ्य को अधिक गंभीर रूप से हानि पहुँचाते हैं क्योंकि वे असहायता की भावना पैदा करते हैं। अतः नियंत्रण महत्वपूर्ण है।

कहता है कि वह अपने कार्य के बारे में अच्छा महसूस करता है, तो वह वास्तव में कार्य के प्रति अपनी सकारात्मक भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहा होता है। यह घटक तार्किक विश्लेषण के बजाय आंतरिक भावनाओं पर आधारित होता है। यह अक्सर कार्य संतोष का सबसे मजबूत संकेतक होता है, क्योंकि यह सीधे तौर पर यह दर्शाता है कि कर्मचारी काम पर आने में खुशी महसूस करता है या तनाव। भावनाएँ ही कार्यस्थल पर व्यक्ति के समग्र व्यवहार को संचालित करती हैं।

279. (D) सामान्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दूसरों को प्रभावित करने की प्रक्रिया।
नेतृत्व केवल किसी औपचारिक पद या अधिकार के बारे में नहीं है, बल्कि यह दूसरों के व्यवहार और दृष्टिकोण को प्रभावित करने की एक गतिशील प्रक्रिया है। एक प्रभावी नेता अपने अनुयायियों के बीच विश्वास और प्रेरणा जगाता है ताकि वे स्वेच्छा से एक साझा उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मिलकर कार्य करें। नेतृत्व में लोगों को एक साथ लाना, उनमें उत्साह भरना और उन्हें बाधाओं को दूर करने के लिए सशक्त बनाना शामिल है। यह प्रबंधन से अलग है क्योंकि यह व्यवस्था बनाए रखने के बजाय लोगों को परिवर्तन और उत्कृष्टता की ओर ले जाने पर केंद्रित होता है।

280. (A) समय की कमी और निम्न प्रेरणा।
शारीरिक सुदृढ़ता के मार्ग में सबसे बड़ी मनोवैज्ञानिक बाधा अक्सर समय का कुप्रबंधन और आंतरिक प्रेरणा का अभाव होती है। कई लोग व्यायाम शुरू करने का विचार तो करते हैं, लेकिन दैनिक जीवन की व्यस्तताओं के कारण इसे प्राथमिकता नहीं दे पाते। प्रेरणा की कमी व्यक्ति को बहाने खोजने के लिए प्रेरित करती है, जिससे निरंतरता टूट जाती है। इसके अतिरिक्त, यदि व्यायाम के परिणाम तुरंत दिखाई नहीं देते, तो व्यक्ति निराश होकर इसे छोड़ देता है। अतः, एक स्थायी व्यायाम दिनचर्या के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति, आत्म-अनुशासन और यथार्थवादी समय नियोजन की अत्यंत आवश्यकता होती है।

281. (C) नियंत्रण की कमी और बाधा की भावना।
पर्यावरणीय मनोविज्ञान के अनुसार, भीड़भाड़ का अनुभव भौतिक घनत्व से अधिक इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति अपनी स्थिति को कितना नियंत्रित कर सकता है। जब एक सीमित स्थान में बहुत अधिक लोग होते हैं और वे व्यक्ति की गतिविधियों या लक्ष्यों में बाधा डालते हैं, तो नकारात्मक भावनाएँ तीव्र हो जाती हैं। नियंत्रण का यह अभाव असहायता और तनाव की भावना पैदा करता है। यदि व्यक्ति को लगता है कि वह स्थिति से बाहर नहीं निकल सकता, तो भीड़भाड़ का मनोवैज्ञानिक प्रभाव उसके मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक व्यवहार को गहराई से प्रभावित करता है।

282. (A) सर्वेक्षण प्रतिपुष्टि
सर्वेक्षण प्रतिपुष्टि संगठनात्मक विकास की एक प्रमुख तकनीक है जिसका उद्देश्य संगठन की प्रभावशीलता में सुधार करना है। इसमें कर्मचारियों से उनकी कार्य स्थितियों और संतोष के बारे में आँकड़े एकत्र किए जाते हैं और फिर उन परिणामों को उनके साथ साझा किया जाता है। यह प्रक्रिया कर्मचारियों को उनकी समस्याओं को समझने और सामूहिक रूप से समाधान विकसित करने में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह पारदर्शिता और विश्वास को बढ़ावा देती है, जो किसी भी सफल संगठनात्मक परिवर्तन के लिए आवश्यक है। अन्य विकल्प केवल प्रशासनिक कार्य हैं, जो नियोजित विकास का हिस्सा नहीं हैं।

283. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
संचार केवल सूचना भेजने की एकतरफा प्रक्रिया नहीं है; यह एक पूर्ण चक्र है जिसमें प्रेषक और प्राप्तकर्ता दोनों की सक्रिय भूमिका होती है। यदि प्रेषक केवल संदेश भेजता है और यह नहीं जानता कि उसे समझा गया या नहीं, तो संचार अधूरा है। प्रतिपुष्टि वह तत्व है जो संचार को दो-तरफा और सार्थक बनाता है। यह प्रेषक को यह पुष्टि देता है कि संदेश का सही अर्थ ग्रहण किया गया है और यदि कोई गलतफहमी है, तो उसे तुरंत सुधारा जा सकता है। अतः, प्रभावी संवाद के लिए प्रतिक्रिया का होना अनिवार्य है जो संदेश को स्पष्ट करता है।

284. (B) उनकी मनोवैज्ञानिक अवस्थाएँ, जैसे चिंता और आत्मविश्वास।
खेल प्रदर्शन केवल शारीरिक क्षमता का खेल नहीं है, बल्कि यह काफी हद तक मानसिक दृढ़ता पर निर्भर करता है। खेल मनोवैज्ञानिक खिलाड़ियों को उनकी चिंता के स्तर को नियंत्रित करने और अटूट आत्मविश्वास विकसित करने में सहायता करते हैं। अत्यधिक चिंता मांसपेशियों के समन्वय को बिगाड़ सकती है, जबकि आत्मविश्वास खिलाड़ी को जोखिम लेने और अपनी सीमाओं से परे जाने के लिए प्रेरित करता है। इन मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं का कुशल प्रबंधन खिलाड़ी को दबाव की स्थितियों में भी शांत रहने और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सक्षम बनाता है, जो अक्सर सफलता का मुख्य आधार होता है।

285. (C) वेस्टिब्यूल प्रशिक्षण
वेस्टिब्यूल प्रशिक्षण एक विशेष प्रकार की कार्य-बाह्य प्रशिक्षण विधि है जहाँ प्रशिक्षुओं को एक ऐसे कक्ष में प्रशिक्षित किया जाता है जो बिल्कुल वास्तविक कार्यस्थल जैसा दिखता है। यहाँ उन्हीं मशीनों और उपकरणों का उपयोग किया जाता है जो नौकरी के दौरान मिलेंगे, ताकि प्रशिक्षु बिना किसी उत्पादन हानि के अभ्यास कर सकें। यह तकनीकी कौशलों को सीखने का एक सुरक्षित और प्रभावी तरीका है, विशेष रूप से उन कार्यों के लिए जहाँ गलतियाँ महंगी पड़ सकती हैं। यह कर्मचारियों को वास्तविक कार्य परिवेश के लिए आत्मविश्वास के साथ तैयार करने में सहायता प्रदान करता है।

286. (D) नेतृत्व: एक समूह को प्रभावित करने की प्रक्रिया
नेतृत्व की सबसे सटीक परिभाषा इसे दूसरों को साझा लक्ष्यों की ओर प्रेरित और प्रभावित करने की एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखती है। यह केवल एक पद नहीं है, बल्कि यह लोगों के व्यवहार को बदलने की कला है। संगठनात्मक वातावरण गहरी संस्कृति के बजाय साझा धारणाओं को दर्शाता है। कार्य संतोष एक अभिवृत्ति है, न कि केवल एक व्यवहार। कार्मिक चयन भविष्य की सफलता की भविष्यवाणी करने के बारे में है,

सकारात्मक महसूस कराती है, जो उसके मानसिक स्वास्थ्य के लिए सुरक्षा कवच है।

237. (C) I, II, III
कार्मिक गतिविधियों का सही क्रम कार्य विश्लेषण से शुरू होता है, जहाँ नौकरी की आवश्यकताओं को समझा जाता है। इस जानकारी के आधार पर, भर्ती प्रक्रिया शुरू की जाती है ताकि योग्य उम्मीदवारों का एक बड़ा समूह आवेदन करने के लिए आकर्षित हो सके। अंत में, चयन प्रक्रिया आयोजित की जाती है जिसमें विभिन्न परीक्षणों के माध्यम से आवेदकों में से सबसे उपयुक्त व्यक्ति को चुना जाता है। यह व्यवस्थित क्रम सुनिश्चित करता है कि संगठन को सही कार्य के लिए सही व्यक्ति प्राप्त हो और भर्ती की प्रक्रिया वैज्ञानिक एवं न्यायपूर्ण बनी रहे।

238. (D) मैकग्रेगर का सिद्धांत Y
डगलस मैकग्रेगर का सिद्धांत Y प्रबंधकों के एक सकारात्मक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। यह सिद्धांत मानता है कि कर्मचारी स्वाभाविक रूप से आलसी नहीं होते, बल्कि वे काम को सहज मान सकते हैं यदि उन्हें सही वातावरण मिले। इस विचारधारा वाले प्रबंधक मानते हैं कि कर्मचारी उत्तरदायित्व स्वीकार करना चाहते हैं और उनमें रचनात्मक क्षमता होती है। इसलिए, वे नियंत्रण के बजाय स्वायत्तता और निर्णयों में भागीदारी पर बल देते हैं। यह दृष्टिकोण कर्मचारियों की आंतरिक प्रेरणा और दीर्घकालिक प्रतिबद्धता को बढ़ावा देने में अत्यंत प्रभावी एवं सफल सिद्ध होता है।

239. (A) कार्य-स्थल व्यवहार और संगठनात्मक परिणामों में सकारात्मक बदलाव।
किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रम की वास्तविक सफलता का असली पैमाना वह सकारात्मक परिवर्तन है जो प्रशिक्षण के बाद कर्मचारी के वास्तविक कार्य व्यवहार में आता है। यदि प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप उत्पादकता बढ़ती है, त्रुटियाँ कम होती हैं या ग्राहक संतुष्टि में सुधार होता है, तो उसे प्रभावी माना जाता है। संगठनात्मक लाभ ही वह अंतिम कसौटी है जिस पर प्रशिक्षण के निवेश को तौला जाता है। केवल ज्ञान प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसका व्यावहारिक अनुप्रयोग ही प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य है जो संगठन की प्रगति सुनिश्चित करता है।

240. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
'जनप्रवाद' संगठन की सामाजिक संरचना का एक अभिन्न अंग है जिसे पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता। यह संचार औपचारिक माध्यमों की तुलना में बहुत अधिक तीव्र होता है क्योंकि यह व्यक्तिगत संबंधों और चर्चाओं पर आधारित होता है। कर्मचारी अक्सर उन सूचनाओं के लिए इस पर निर्भर रहते हैं जो प्रबंधन द्वारा साझा नहीं की जाती हैं। हालांकि इसकी गति तेज है, लेकिन इसमें सूचनाओं के विकृत होने या गलत अफवाहों के फैलने का जोखिम हमेशा बना रहता है। प्रबंधन को औपचारिक संचार में स्पष्टता लाकर इसे संतुलित करना चाहिए।

241. (B) लक्ष्य-निर्धारण सिद्धांत
एडविन लॉक द्वारा विकसित लक्ष्य-निर्धारण सिद्धांत प्रेरणा का एक प्रमुख आधार है। यह सिद्धांत स्पष्ट रूप से बताता है कि "अपना सर्वश्रेष्ठ करो" जैसे अस्पष्ट निर्देशों की तुलना में विशिष्ट और कठिन लक्ष्य कहीं अधिक प्रेरणादायी होते हैं। जब लक्ष्य चुनौतीपूर्ण होते हैं, तो वे व्यक्ति की ऊर्जा और ध्यान को केंद्रित करते हैं और उसे अधिक प्रयास करने के लिए प्रेरित करते हैं। बशर्ते ये लक्ष्य व्यक्ति द्वारा स्वीकार किए गए हों, तो प्रदर्शन में उल्लेखनीय सुधार होता है। यह सिद्धांत आधुनिक प्रबंधन में उद्देश्यों द्वारा प्रबंधन का आधार है।

242. (C) P-4, Q-3, R-2, S-1
समूह-चिंतन में समूह का सामंजस्य बनाए रखने का दबाव आलोचनात्मक सोच को दबा देता है। सामाजिक शिथिलन वह प्रवृत्ति है जहाँ व्यक्ति समूह में काम करते समय कम प्रयास करता है। जनप्रवाद संगठन के भीतर अनौपचारिक संचार नेटवर्क को दर्शाता है। संगठनात्मक वातावरण कार्यस्थल के आंतरिक परिवेश की वह साझा गुणवत्ता या धारणा है जिसे कर्मचारी महसूस करते हैं। ये सभी अवधारणाएं संगठनात्मक व्यवहार की जटिलताओं को समझने में सहायक हैं और दर्शाती हैं कि सामाजिक कारक कार्यस्थल की उत्पादकता और संस्कृति को किस प्रकार आकार देते हैं।

243. (C) व्यक्ति की प्रेरणा और आत्म-नियमन कौशल।
व्यायाम कार्यक्रम की निरंतरता को प्रभावित करने वाले कारकों में मनोवैज्ञानिक कारक सर्वोपरि हैं। केवल व्यायामशाला की सुविधा पर्याप्त नहीं है; व्यक्ति के पास व्यायाम जारी रखने के लिए आवश्यक आंतरिक प्रेरणा और आत्म-नियमन कौशल होना चाहिए। आत्म-नियमन में लक्ष्य निर्धारित करना और बाधाओं के बावजूद डटे रहना शामिल है। जब किसी व्यक्ति में अपनी क्षमताओं पर विश्वास होता है, तो वह दैनिक जीवन के तनावों और आलस्य पर काबू पाकर अपनी शारीरिक सुदृढ़ता की दिनचर्या को सफलतापूर्वक बनाए रख पाता है। यह मानसिक दृढ़ता ही सफलता की कुंजी है।

244. (D) भीड़भाड़
भीड़भाड़ एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है जो तब उत्पन्न होती है जब किसी स्थान पर लोगों की संख्या व्यक्ति की सहनशक्ति या उसकी गोपनीयता की आवश्यकताओं से अधिक हो जाती है। यह मात्र एक भौतिक संख्या नहीं है, बल्कि उसके प्रति व्यक्ति की एक नकारात्मक भावनात्मक प्रतिक्रिया है। भीड़भाड़ के कारण व्यक्ति तनाव, चिड़चिड़ापन और नियंत्रण की कमी महसूस करता है। यह अनुभव व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार को भी प्रभावित करता है, जिससे वह दूसरों से दूरी बनाने की कोशिश कर सकता है। अतः भीड़भाड़ का अनुभव भौतिक स्थिति और मानसिक धारणा की अंतःक्रिया है।

245. (C) उत्तरदायित्व
हर्ज़बर्ग के द्वि-कारक सिद्धांत में हाइजीन कारकों और प्रेरक कारकों के बीच अंतर किया गया है। हाइजीन कारक, जैसे वेतन और कार्य परिस्थितियाँ, कार्य के संदर्भ से जुड़े होते हैं और असंतोष को रोकने के लिए आवश्यक हैं। दूसरी ओर,

बढ़ाने में सीधे तौर पर सक्षम बनाता है, जिससे संगठन को लाभ होता है।

211. (C) उच्च जनसंख्या घनत्व और भीड़भाड़
पर्यावरणीय मनोविज्ञान के अनुसार, जब व्यक्ति बहुत बड़ी भीड़ या उच्च जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र में होता है, तो वह अनाम महसूस करने लगता है। अनाम होने की यह भावना व्यक्ति के व्यक्तिगत उत्तरदायित्व और आत्म-नियंत्रण को कम कर सकती है, जिसे वि-वैयक्तिकीकरण कहा जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति उन सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने की अधिक संभावना रखता है जिनका वह सामान्यतः पालन करता है। यह अक्सर अशांति के दौरान देखा जाता है, जहाँ भीड़ का हिस्सा होने के कारण व्यक्ति स्वयं को दंड और पहचान से सुरक्षित महसूस करता है।

212. (D) एक नेता की शैली वातावरण का एक प्रमुख निर्धारक है।
नेतृत्व और संगठनात्मक वातावरण के बीच एक गहरा और सीधा संबंध होता है। एक नेता जिस तरह से निर्णय लेता है और अपने अधीनस्थों को पुरस्कृत करता है, वही कार्यस्थल के अनुभव या वातावरण को आकार देता है। उदाहरण के लिए, एक सहायक नेता विश्वास और खुलेपन का वातावरण बनाता है, जबकि एक दंडात्मक नेता भय और असुरक्षा का माहौल पैदा करता है। चूंकि वातावरण कर्मचारियों की साझा धारणाओं से बनता है, इसलिए नेता का व्यवहार ही वह मुख्य कारक है जो इन धारणाओं को सकारात्मक या नकारात्मक बनाकर उत्पादकता को प्रभावित करता है।

213. (B) P-4, Q-2, R-1, S-3
लक्ष्य निर्धारण में विशिष्ट प्रदर्शन लक्ष्यों को तय किया जाता है। मानस-चित्रण में मानसिक रूप से कौशल का अभ्यास किया जाता है। उत्तेजन नियमन में तकनीकों से घबराहट को नियंत्रित किया जाता है। ध्यानात्मक नियंत्रण में खिलाड़ी बाहरी विक्षेपों को छोड़कर केवल खेल के महत्वपूर्ण संकेतों पर ध्यान केंद्रित करता है। ये सभी मनोवैज्ञानिक कौशल खिलाड़ियों को न केवल अपनी तकनीकी क्षमताओं में सुधार करने में मदद करते हैं, बल्कि वे दबाव की स्थितियों में मानसिक रूप से दृढ़ बने रहने के लिए भी अनिवार्य उपकरण के रूप में कार्य करते हैं।

214. (B) संगठनात्मक प्रभावशीलता में योगदान देते हैं लेकिन अक्सर उन्हें नजरअंदाज कर दिया जाता है।
संगठनात्मक नागरिकता व्यवहार वे स्वैच्छिक क्रियाएं हैं जो किसी कर्मचारी के औपचारिक कार्य विवरण में नहीं होतीं, जैसे साथियों की मदद करना। यद्यपि ये व्यवहार सीधे तौर पर पुरस्कृत नहीं होते, लेकिन ये संगठन के सुचारु संचालन और एक सकारात्मक सामाजिक वातावरण के लिए अनिवार्य हैं। ये व्यवहार टीम वर्क को मजबूत करते हैं और संघर्षों को कम करते हैं। चूंकि ये स्वैच्छिक हैं, प्रबंधक अक्सर इन्हें सामान्य मान लेते हैं, लेकिन इनकी अनुपस्थिति संगठन की कुल उत्पादकता और कर्मचारी मनोबल को गंभीर रूप से प्रतिकूल प्रभावित कर सकती है।

215. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
वास्तविक संगठनात्मक जीवन में हमेशा पूर्णतः तार्किक निर्णय लेने की प्रक्रिया संभव नहीं होती, क्योंकि अक्सर समय की कमी और अधूरी जानकारी की स्थितियाँ होती हैं। ऐसे में अनुभवी प्रबंधक अंतःप्रज्ञा और मानसिक संक्षिप्त मार्गों का उपयोग करते हैं। यद्यपि इनमें पूर्वाग्रहों का जोखिम होता है, लेकिन अनिश्चित वातावरण में ये त्वरित और प्रभावी निर्णय लेने में अत्यंत सहायक सिद्ध होते हैं। पूर्ण तार्किकता एक आदर्श है, जबकि अंतःप्रज्ञा एक व्यवहारिक उपकरण है जो अनुभव के आधार पर जटिलताओं को सुलझाने में सहायता करता है और समय बचाता है।

216. (A) दुर्घटना प्रवणता सिद्धांत
दुर्घटना प्रवणता सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि दुर्घटनाएं केवल संयोग नहीं होतीं, बल्कि कुछ व्यक्तियों में उनके विशिष्ट व्यक्तित्व लक्षणों के कारण दुर्घटनाग्रस्त होने की जन्मजात संभावना अधिक होती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, सुरक्षा में सुधार का मुख्य तरीका ऐसे व्यक्तियों की पहचान करना और उन्हें जोखिम भरे कार्यों से दूर रखना है। यद्यपि आधुनिक सुरक्षा मनोविज्ञान स्थितिजन्य कारकों को भी समान महत्व देता है, लेकिन यह सिद्धांत मानवीय स्वभाव के उन पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है जो असुरक्षित व्यवहार को बढ़ावा देते हैं।

217. (C) कार्य संवर्धन
कार्य संवर्धन एक ऐसी तकनीक है जो किसी कार्य की लंबवत गहराई को बढ़ाती है। इसमें कर्मचारी को अपने कार्य की योजना बनाने और स्वयं उसका मूल्यांकन करने के लिए अधिक स्वायत्तता और उत्तरदायित्व दिया जाता है। यह कर्मचारी को यह महसूस कराता है कि उसे प्रबंधन द्वारा विश्वसनीय माना गया है, जिससे उसकी आंतरिक कार्य प्रेरणा और संतोष में वृद्धि होती है। यह कार्य विस्तार से भिन्न है, जो केवल कार्यों की संख्या बढ़ाता है। संवर्धन कर्मचारी को व्यक्तिगत विकास और उपलब्धि की भावना प्रदान करने का एक प्रभावी माध्यम है।

218. (A) खिलाड़ी को उनकी क्षमता प्राप्त करने और लगातार प्रदर्शन करने में सहायता करना।
खेल मनोविज्ञान का मुख्य लक्ष्य खिलाड़ियों को मानसिक रूप से इस प्रकार सुदृढ़ बनाना है कि वे अपनी शारीरिक क्षमताओं का उच्चतम उपयोग कर सकें। यह केवल जीतने के बारे में नहीं है, बल्कि दबाव में शांत रहने और अपने खेल पर पूर्ण नियंत्रण रखने के बारे में है। मनोवैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से खिलाड़ी अपनी मानसिक बाधाओं को पहचानते हैं और उन्हें दूर करना सीखते हैं। यह व्यक्तिगत विकास और खेल के प्रति एक स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करने में भी सहायक होता है, जो लंबे समय तक खिलाड़ी के करियर को सफल बनाता है।

219. (D) I, II और III
संगठनात्मक संचार एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो विभिन्न दिशाओं में सूचना के प्रवाह को सुनिश्चित करती है। ऊपर की ओर संचार फीडबैक के लिए आवश्यक है, जिससे प्रबंधन को धरातल की हकीकत का पता चलता है। पार्श्व संचार समान

प्रभाव डालता है। अतः, स्वच्छ पर्यावरण मानसिक स्थिरता और शांति के लिए पूर्णतः अपरिहार्य है।

254. (D) परिवर्तनकारी
परिवर्तनकारी नेतृत्व एक ऐसी शैली है जहाँ नेता अपनी दृष्टि और उत्साह के माध्यम से अनुयायियों को प्रेरित करता है। ऐसे नेता परिवर्तन के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हैं, यथास्थिति को चुनौती देते हैं और संगठन के भविष्य के लिए एक नई राह दिखाते हैं। वे अपने अनुयायियों को सशक्त बनाते हैं और उनकी व्यक्तिगत वृद्धि को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे कर्मचारी संगठन के उद्देश्यों के प्रति गहरा जुड़ाव महसूस करते हैं। यह नेतृत्व शैली केवल कार्यों को पूरा करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संगठन की संस्कृति को बदलने और असाधारण परिणाम प्राप्त करने के बारे में है।

255. (A) विस्तार में अधिक कार्य जुड़ते हैं, जबकि संवर्धन में अधिक उत्तरदायित्व और नियंत्रण जुड़ता है।
कार्य विस्तार एक क्षैतिज विस्तार है जहाँ कर्मचारी के कार्य में समान स्तर की विविधता बढ़ाने के लिए और अधिक कार्य जोड़े जाते हैं। इसका मुख्य लक्ष्य काम की एकरसता को कम करना है। इसके विपरीत, कार्य संवर्धन एक लंबवत विस्तार है जो कर्मचारी को उसके कार्य की योजना बनाने और उसे नियंत्रित करने के लिए अधिक उत्तरदायित्व और स्वायत्तता प्रदान करता है। जहाँ विस्तार केवल कार्य की संख्या बढ़ाता है, वहीं संवर्धन कार्य की गुणवत्ता और कर्मचारी की मनोवैज्ञानिक संतुष्टि को बढ़ाता है, जिससे आंतरिक प्रेरणा और व्यक्तिगत विकास को निरंतर बढ़ावा मिलता है।

256. (B) सिद्धांत Y की धारणाएं
डगलस मैकग्रेगर का सिद्धांत Y उन प्रबंधकों के दृष्टिकोण को दर्शाता है जो मानते हैं कि कर्मचारी स्वाभाविक रूप से स्व-प्रेरित, रचनात्मक और उत्तरदायित्व लेने के इच्छुक होते हैं। ऐसे प्रबंधक कर्मचारियों को स्वायत्तता प्रदान करते हैं, उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करते हैं और उनकी क्षमताओं पर विश्वास करते हैं। यह दृष्टिकोण मानता है कि यदि कार्य परिवेश अनुकूल हो, तो कर्मचारी संगठन के लक्ष्यों के प्रति समर्पित होकर कार्य करेंगे। यह सहभागी प्रबंधन और कर्मचारी सशक्तिकरण को बढ़ावा देता है, जो अंततः उच्च मनोबल और कार्य संतुष्टि की ओर ले जाता है।

257. (B) सफल प्रदर्शन के लिए एक मानसिक प्रारूप बनाकर और आत्मविश्वास बढ़ाकर।
मानस-चित्रण खेल मनोविज्ञान की एक शक्तिशाली तकनीक है जिसमें खिलाड़ी अपनी इंद्रियों का उपयोग करके सफल प्रदर्शन का मानसिक अनुभव करता है। यह अभ्यास मस्तिष्क में उन्हीं तंत्रिका पथों को सक्रिय करता है जो वास्तविक शारीरिक क्रिया के दौरान उपयोग होते हैं। इससे मांसपेशियों की स्मृति और तकनीकी कौशल में सुधार होता है। साथ ही, जब खिलाड़ी खुद को सफल होते देखता है, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और प्रदर्शन के दौरान होने वाली घबराहट कम होती है। यह मानसिक पूर्वाभ्यास वास्तविक खेल की चुनौतियों का सामना करने के लिए खिलाड़ी को तैयार करता है।

258. (A) समस्या का निदान
संगठनात्मक विकास की किसी भी नियोजित प्रक्रिया का पहला और सबसे महत्वपूर्ण चरण 'निदान' है। इसमें यह समझने के लिए आँकड़ों का व्यवस्थित संग्रह और विश्लेषण किया जाता है कि संगठन में वर्तमान में कौन सी समस्याएँ विद्यमान हैं और उनके मूल कारण क्या हैं। यह चरण किसी भी सुधार रणनीति या हस्तक्षेप की आधारशिला रखता है। बिना सटीक निदान के, प्रबंधन केवल लक्षणों का इलाज कर सकता है, जो दीर्घकालिक समाधान नहीं प्रदान करता। अतः, संगठन की वास्तविक स्थिति को गहराई से समझना ही सफल और सार्थक परिवर्तन की दिशा में पहला कदम है।

259. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कार्मिक चयन में भविष्यसूचक वैधता यह निर्धारित करने की एक वैज्ञानिक विधि है कि क्या कोई चयन माप वास्तव में भविष्य की कार्य सफलता की भविष्यवाणी कर सकता है। इसके लिए, उम्मीदवारों के परीक्षण प्राप्तांकों को भविष्य में उनके वास्तविक कार्य प्रदर्शन के साथ सह-संबंधित किया जाता है। यदि परीक्षण में अच्छा प्रदर्शन करने वाले लोग काम पर भी उत्कृष्ट साबित होते हैं, तो परीक्षण को वैध माना जाता है। यह प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि चयन के लिए उपयोग किए जा रहे उपकरण विश्वसनीय हैं और वे संगठन के लिए सही प्रतिभा चुनने में सक्षम हैं।

260. (D) लोगों का उच्च घनत्व मस्तिष्क के लिए सूचना का अतिभार उत्पन्न करता है।
भीड़भाड़ का अतिभार सिद्धांत यह प्रस्तावित करता है कि जब बहुत अधिक लोग एक सीमित स्थान में होते हैं, तो व्यक्ति को सामाजिक संकेतों का अत्यधिक प्रवाह सहना पड़ता है। मानवीय मस्तिष्क की सूचना प्रसंस्करण क्षमता सीमित होती है, और जब इन उत्तेजनाओं का स्तर उस क्षमता से अधिक हो जाता है, तो व्यक्ति अतिभार अनुभव करता है। यह स्थिति तनाव, थकान और चिड़चिड़ापन पैदा करती है क्योंकि व्यक्ति पर्यावरण को नियंत्रित करने में असमर्थ हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप, व्यक्ति अक्सर सामाजिक मेलजोल से बचने की कोशिश करता है ताकि वह मानसिक शांति पुनः प्राप्त कर सके।

261. (C) कार्य संलिप्तता
कार्य संलिप्तता वह मनोवैज्ञानिक स्थिति है जिसमें कर्मचारी अपने कार्य के साथ बहुत गहराई से जुड़ा होता है और वह अपने कार्य को अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानता है। ऐसे व्यक्ति के लिए, उसके कार्य का प्रदर्शन उसके आत्म-सम्मान और व्यक्तिगत पहचान से सीधे जुड़ा होता है। उच्च संलिप्तता वाले कर्मचारी अधिक प्रेरित होते हैं, वे अपने कार्यों में अधिक प्रयास करते हैं और संगठन के लक्ष्यों के प्रति अधिक समर्पित रहते हैं। यह कार्य संतोष से थोड़ा अलग है क्योंकि यह कार्य के प्रति व्यक्ति के गहरे भावनात्मक और पहचान-आधारित जुड़ाव को दर्शाता है।

उत्तरदायित्व एक 'प्रेरक' कारक है जो कार्य की विषय-वस्तु से संबंधित है। यह कर्मचारी को उपलब्धि और व्यक्तिगत विकास की भावना प्रदान करता है, जिससे वह वास्तव में प्रेरित और संतुष्ट महसूस करता है। हाइजीन कारक असंतोष तो दूर कर सकते हैं, लेकिन वे उच्च प्रेरणा और संतोष उत्पन्न नहीं करते।

246. (B) उपरोक्त सभी
संचार एक एकीकृत प्रक्रिया है जिसमें प्रेषक, संदेश, माध्यम और प्राप्तकर्ता सभी का होना अनिवार्य है। प्रेषक वह व्यक्ति है जो संचार की शुरुआत करता है। संदेश वह वास्तविक सूचना है जिसे साझा किया जाना है। माध्यम वह चैनल है जिसके द्वारा संदेश भेजा जाता है, और प्राप्तकर्ता वह व्यक्ति है जिसे संदेश प्राप्त होता है और जो उसका कूटवाचन करता है। यदि इनमें से कोई भी एक तत्व अनुपस्थित हो या ठीक से कार्य न करे, तो संचार की पूरी श्रृंखला टूट जाती है और संवाद अधूरा रह जाता है, जिससे सूचना का प्रवाह बाधित होता है।

247. (D) उन व्यक्तियों की पहचान करना जिनके पास कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और क्षमताएं हैं।
कार्मिक चयन का मुख्य उद्देश्य संगठन के रिक्त पदों के लिए सबसे योग्य उम्मीदवारों की पहचान करना और उन्हें चुनना है। यह प्रक्रिया आवेदक की योग्यताओं और नौकरी की आवश्यकताओं के बीच सर्वोत्तम सामंजस्य बैठाने का एक वैज्ञानिक प्रयास है। सही चयन से संगठन की उत्पादकता बढ़ती है, कर्मचारी परिवर्तन दर कम होती है और भविष्य में होने वाले प्रशिक्षण की लागत में भी कमी आती है। यह संगठन की दीर्घकालिक सफलता और उसकी मानवीय पूंजी की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य है। यह प्रक्रिया निष्पक्ष और तार्किक होनी चाहिए।

248. (A) अनुयायियों को एक साझा दृष्टि प्राप्त करने और उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित करना।
परिवर्तनकारी नेतृत्व अनुयायियों को स्वार्थ से ऊपर उठने और संगठन के व्यापक उद्देश्यों के लिए समर्पित होने के लिए प्रेरित करने की कला है। ऐसे नेता एक सम्मोहक भविष्य की दृष्टि प्रस्तुत करते हैं और अपने अनुयायियों के मूल्यों में बदलाव लाते हैं। वे करिश्माई होते हैं और अपने आचरण से दूसरों को प्रोत्साहित करते हैं। लेन-देन संबंधी नेताओं के विपरीत, परिवर्तनकारी नेता कर्मचारियों की व्यक्तिगत क्षमताओं को विकसित करने और उनमें नेतृत्व के गुण पैदा करने पर बल देते हैं, जिससे संगठन में वास्तविक नवाचार आता है और कर्मचारी संतुष्ट रहते हैं।

249. (C) मानवीय कारक, जैसे असावधानी या थकान, कई दुर्घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
औद्योगिक सुरक्षा में यह माना जाता है कि असुरक्षित भौतिक परिस्थितियों के साथ-साथ मानवीय व्यवहार भी दुर्घटनाओं का एक बड़ा कारण है। थकान एकाग्रता को कम करती है और निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करती है, जिससे गलतियों की संभावना बढ़ जाती है। मानवीय कारकों को समझने का अर्थ है यह पहचानना कि व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक सीमाएँ कार्यस्थल की सुरक्षा को कैसे प्रभावित करती हैं। सुरक्षा कार्यक्रमों में केवल मशीनों को सुरक्षित बनाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि कर्मचारियों को मानसिक रूप से सतर्क रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य है।

250. (A) प्रक्रिया सलाहकार
प्रक्रिया परामर्श संगठनात्मक विकास का एक विशिष्ट हस्तक्षेप है जहाँ एक परामर्शदाता समूह को उसकी अपनी कार्य प्रक्रियाओं, जैसे संचार और निर्णय लेना, को समझने और सुधारने में सहायता करता है। परामर्शदाता सीधे उत्तर प्रदान करने के बजाय, समूह को समस्याओं की पहचान करने और स्वयं समाधान खोजने के लिए सशक्त बनाता है। इसका उद्देश्य समूह की प्रभावशीलता को बढ़ाना और उसे भविष्य की समस्याओं को स्वतंत्र रूप से हल करने में सक्षम बनाना है। यह तकनीक समूह के भीतर अंतःक्रियाओं की गुणवत्ता को सुधारने और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने में प्रभावी है।

251. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
खेल मनोविज्ञान में उत्तेजन और प्रदर्शन के बीच का संबंध वक्रीय होता है, जिसे यर्क्स-डोडसन नियम के रूप में जाना जाता है। इसका अर्थ है कि प्रदर्शन के लिए उत्तेजन का एक इष्टतम स्तर होना चाहिए। यदि उत्तेजन बहुत कम हो, तो ऊर्जा की कमी होती है, और यदि यह बहुत अधिक हो जाए, तो चिंता प्रदर्शन को बिगाड़ सकती है। यह इष्टतम स्तर कार्य की जटिलता पर भी निर्भर करता है; जटिल कार्यों के लिए कम उत्तेजन की आवश्यकता होती है जबकि सरल कार्यों के लिए उच्च उत्तेजन लाभदायक हो सकता है। यह संतुलन आवश्यक है।

252. (B) कार्य विश्लेषण
कार्य विश्लेषण वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी पद की प्रकृति, उसमें निहित कर्तव्यों और आवश्यक मानवीय योग्यताओं का विस्तार से अध्ययन किया जाता है। इसके दो मुख्य परिणाम होते हैं: कार्य विवरण, जो कर्तव्यों की सूची प्रदान करता है, और कार्य विशिष्टता, जो आवश्यक ज्ञान और कौशल को परिभाषित करती है। यह प्रक्रिया भर्ती, चयन, प्रशिक्षण और वेतन निर्धारण जैसे सभी महत्वपूर्ण मानव संसाधन कार्यों के लिए आधारभूत आँकड़े प्रदान करती है। बिना सटीक कार्य विश्लेषण के, प्रभावी और वैज्ञानिक कार्मिक प्रबंधन संभव नहीं है, जो संगठन के लिए घातक है।

253. (C) चिड़चिड़ापन, तनाव और कम संज्ञानात्मक कार्य।
पर्यावरणीय प्रदूषण केवल शारीरिक स्वास्थ्य को ही नहीं, बल्कि मानव मनोविज्ञान को भी गंभीर रूप से प्रभावित करता है। प्रदूषित वातावरण में मौजूद हानिकारक तत्व मस्तिष्क की कार्यक्षमता को बाधित कर सकते हैं, जिससे एकाग्रता में कमी और सोचने की गति धीमी हो जाती है। इसके अतिरिक्त, शोध प्रदूषण के उच्च स्तर को तनाव और चिड़चिड़ापन में वृद्धि से जोड़ते हैं। यह व्यक्ति के समग्र कल्याण को कम करता है और उसके सामाजिक संबंधों एवं कार्य उत्पादकता पर नकारात्मक

270. (B) एक सुरक्षा हस्तक्षेप और उसका मूल्यांकन
वर्णित घटनाक्रम एक व्यवस्थित सुरक्षा प्रबंधन प्रक्रिया का उदाहरण है। सबसे पहले एक नई सुरक्षा नीति का निर्माण करना एक सुधारात्मक हस्तक्षेप है। उसके बाद कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना उस हस्तक्षेप के कार्यान्वयन का हिस्सा है। अंत में, दुर्घटना दर में कमी को मापना उस हस्तक्षेप की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना है। यह दर्शाता है कि संगठनात्मक समस्याओं को वैज्ञानिक तरीके से कैसे हल किया जा सकता है। मूल्यांकन यह प्रमाणित करता है कि नीति और प्रशिक्षण वास्तव में प्रभावी रहे और उन्होंने संगठन के सुरक्षा लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त किया है।

271. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
संवेदी अभाव का प्रभाव उसकी अवधि और संदर्भ पर निर्भर करता है। अल्पकालिक संवेदी अभाव तनाव कम करने और गहन विश्राम के लिए उपचारात्मक या लाभकारी हो सकता है। हालांकि, जब व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध लंबे समय तक उत्तेजनाओं से वंचित रखा जाता है, तो यह अत्यंत तनावपूर्ण हो जाता है। ऐसी स्थिति में मस्तिष्क सामान्य रूप से कार्य करने में असमर्थ हो जाता है, जिससे मतिभ्रम और संज्ञानात्मक विखंडन जैसी गंभीर मनोवैज्ञानिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। अतः, उत्तेजना का संतुलन मानसिक स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है। न कम और न अधिक उत्तेजना होनी चाहिए।

272. (B) एकाग्रता और ध्यानात्मक नियंत्रण
एकाग्रता और ध्यानात्मक नियंत्रण खेल मनोविज्ञान के वे कौशल हैं जो खिलाड़ी को बाहरी विक्षेपों के बावजूद अपने कार्य पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाते हैं। एक मैराथन धावक के लिए, अपनी सांसों और गति पर निरंतर ध्यान देना संवेदी विन्यास का एक रूप है, जो उसे अपनी शारीरिक स्थिति की निगरानी करने और ऊर्जा बचाने में सहायता करता है। यह कौशल खिलाड़ी को थकान और दर्द के बावजूद मानसिक रूप से दृढ़ रहने और अपने प्रदर्शन को चरम स्तर पर बनाए रखने में मदद करता है। यह उच्च धैर्य वाले खेलों में सफलता की कुंजी मानी जाती है।

273. (B) सीमित तार्किकता
'संतोषप्रद' मॉडल हर्बर्ट साइमन द्वारा प्रस्तावित सीमित तार्किकता के सिद्धांत का एक केंद्रीय हिस्सा है। यह मानता है कि मानवीय मस्तिष्क की सूचना प्रसंस्करण क्षमता सीमित होती है और हमारे पास हमेशा पूर्ण जानकारी नहीं होती। इसलिए, निर्णय लेने वाले व्यक्ति सर्वोत्तम विकल्प खोजने के बजाय अक्सर उस पहले विकल्प को चुन लेते हैं जो उनकी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह दृष्टिकोण वास्तविक दुनिया के जटिल वातावरण में निर्णय लेने की एक व्यावहारिक और यथार्थवादी विधि है, जो तार्किकता और दक्षता के बीच संतुलन स्थापित करती है और कार्य को गति प्रदान करती है।

274. (A) नियोजित संगठनात्मक परिवर्तन और सुधार की सुविधा प्रदान करना।
संगठनात्मक विकास एक सुनियोजित और व्यापक प्रयास है जिसका मुख्य ध्येय संगठन की कुल प्रभावशीलता और उसके सदस्यों के कल्याण को बढ़ाना है। यह केवल तात्कालिक समस्याओं को हल करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य संगठन की संस्कृति, व्यवहार और प्रक्रियाओं में सकारात्मक और स्थायी परिवर्तन लाना है। व्यवहार विज्ञान के सिद्धांतों का उपयोग करते हुए, यह हस्तक्षेप कर्मचारियों की भागीदारी और विश्वास को बढ़ावा देता है। अंततः, इसका लक्ष्य एक ऐसा गतिशील संगठन बनाना है जो बदलती चुनौतियों के प्रति अधिक अनुकूल और सफल हो सके तथा प्रगति कर सके।

275. (C) अंतर्निहित साझा मूल्य और धारणाएं।
संगठनात्मक संस्कृति किसी संस्था की वह आत्मा है जो उसके सदस्यों द्वारा साझा किए गए गहरे मूल्यों, विश्वासों और परंपराओं से निर्मित होती है। यह संस्कृति यह निर्धारित करती है कि लोग संगठन के भीतर एक-दूसरे के साथ और बाहरी दुनिया के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। संस्कृति अक्सर अनकही होती है लेकिन यह निर्णयों, कार्यशैली और संगठनात्मक पहचान को गहराई से प्रभावित करती है। यद्यपि वातावरण तात्कालिक धारणाओं को दर्शाता है, संस्कृति बहुत अधिक स्थायी होती है और इसे बदलना एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है, जो नेतृत्व और इतिहास से जुड़ी होती है तथा पहचान बनाती है।

276. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
औद्योगिक सुरक्षा किसी भी संगठन के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि यह सीधे मानवीय जीवन और संस्था की स्थिरता से जुड़ा है। कार्यस्थल पर होने वाली दुर्घटनाएं न केवल कर्मचारियों को शारीरिक पीड़ा पहुँचाती हैं, बल्कि वे संगठन के लिए भी बड़ी आर्थिक हानि का कारण बनती हैं। इसमें चिकित्सा व्यय, कानूनी लागत और कार्य की गति रुकने से होने वाली उत्पादकता की हानि शामिल है। अतः, सुरक्षा उपायों में निवेश करना केवल एक कानूनी दायित्व नहीं है, बल्कि यह एक नैतिक जिम्मेदारी और व्यावसायिक समझदारी है जो संगठन के दीर्घकालिक भविष्य को सुरक्षित करती है।

277. (C) चयन
चयन वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से आवेदकों के समूह में से उन व्यक्तियों की पहचान की जाती है और उन्हें काम पर रखा जाता है जिनके पास किसी विशिष्ट पद के लिए सबसे उपयुक्त ज्ञान, कौशल और क्षमताएं होती हैं। यह भर्ती के बाद का चरण है, जहाँ विभिन्न परीक्षणों, साक्षात्कारों और संदर्भ जांचों का उपयोग करके आवेदकों की योग्यता का मूल्यांकन किया जाता है। चयन का मुख्य लक्ष्य सही कार्य के लिए सही व्यक्ति चुनना है, जिससे भविष्य में उत्पादकता बढ़े और कर्मचारी त्याग दर एवं प्रशिक्षण की लागत में महत्वपूर्ण कमी आए।

278. (B) भावात्मक
अभिवृत्ति के तीन घटकों में से 'भावात्मक' घटक व्यक्ति की भावनाओं और संवेगों से संबंधित होता है। जब एक कर्मचारी

228. (D) व्यवहारात्मक
व्यवहारात्मक साक्षात्कार इस सिद्धांत पर आधारित है कि किसी व्यक्ति का अतीत का व्यवहार ही उसके भविष्य के प्रदर्शन का सबसे विश्वसनीय सूचक है। "मुझे उस समय के बारे में बताएं..." जैसे प्रश्न उम्मीदवार को वास्तविक जीवन के उदाहरण देने के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे उनके वास्तविक कौशल और समस्या-समाधान की शैली का पता चलता है। यह काल्पनिक प्रश्नों की तुलना में अधिक उपयोगी है क्योंकि यह उम्मीदवार को यह दिखाने का मौका देता है कि उसने विशिष्ट चुनौतियों का सामना वास्तव में कैसे किया था। यह भर्ती की वैधता बढ़ाता है।

229. (B) हेलो प्रभाव
'हेलो प्रभाव' मूल्यांकन में एक ऐसी संज्ञानात्मक त्रुटि है जहाँ मूल्यांकनकर्ता किसी कर्मचारी के एक प्रमुख सकारात्मक गुण से इतना प्रभावित हो जाता है कि वह उसके अन्य गुणों को भी उच्च रेटिंग दे देता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई कर्मचारी बहुत मिलनसार है, तो प्रबंधक मान सकता है कि वह काम में भी बहुत कुशल होगा, भले ही उसका वास्तविक प्रदर्शन औसत हो। यह पूर्वाग्रह मूल्यांकन की निष्पक्षता को समाप्त कर देता है और संगठन के लिए गलत निर्णय लेने का जोखिम बढ़ाता है। इससे बचने के लिए वस्तुनिष्ठ साक्ष्यों पर ध्यान देना चाहिए।

230. (B) निर्देशात्मक मॉडल
निर्णय लेने का निर्देशात्मक मॉडल यह बताता है कि एक आदर्श निर्णय लेने वाले को अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए तार्किक रूप से कैसे व्यवहार करना चाहिए। यह मॉडल पूर्ण जानकारी और सभी विकल्पों के गहन विश्लेषण पर आधारित है। यह विवरणात्मक मॉडल से अलग है, जो केवल यह बताता है कि लोग वास्तव में कैसे निर्णय लेते हैं। निर्देशात्मक मॉडल एक मानक के रूप में कार्य करता है जिसका उद्देश्य निर्णय लेने की प्रक्रिया में त्रुटियों को कम करना और सर्वोत्तम संभव परिणाम सुनिश्चित करना है, जो वैज्ञानिक प्रबंधन के सिद्धांतों के अनुरूप है।

231. (D) कार्य संवर्धन
कार्य संवर्धन का मुख्य उद्देश्य किसी कार्य की लंबवत गहराई को बढ़ाना है। इसमें कर्मचारियों को उनके कार्य के नियोजन और नियंत्रण में अधिक स्वायत्तता और उत्तरदायित्व दिया जाता है। यह तकनीक कर्मचारी को केवल कार्य करने वाला न मानकर उसे एक निर्णय लेने वाला भी बनाती है। इससे कर्मचारी को उपलब्धि और व्यक्तिगत विकास की भावना मिलती है, जो उसकी आंतरिक प्रेरणा को बढ़ाने में अत्यंत प्रभावी है। यह कार्य विस्तार से श्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि यह केवल कार्यों की संख्या नहीं बढ़ाता, बल्कि कार्य की गुणवत्ता को भी बढ़ाता है।

232. (A) दुर्घटनाओं के पर्यावरणीय या स्थितिजन्य कारण
औद्योगिक सुरक्षा में जब ध्यान खराब रोशनी और दोषपूर्ण मशीनों जैसी भौतिक स्थितियों पर होता है, तो वह स्थितिजन्य कारकों का विश्लेषण कर रहा होता है। ये ऐसे बाहरी कारक हैं जो किसी भी व्यक्ति के लिए दुर्घटना का जोखिम बढ़ा सकते हैं, चाहे वह कितना भी सतर्क क्यों न हो। इन भौतिक बाधाओं को दूर करना सुरक्षा प्रबंधन का पहला अनिवार्य चरण है। इसे मानवीय कारक अभियांत्रिकी का हिस्सा माना जाता है, जहाँ कार्य परिवेश को मानवीय सुरक्षा के अनुकूल बनाया जाता है ताकि दुर्घटनाओं की संभावना को भौतिक आधार पर समाप्त किया जा सके।

233. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
संचार केवल सूचना भेजने की एकतरफा प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह प्रेषक और प्राप्तकर्ता के बीच अर्थ साझा करने की एक गतिशील प्रक्रिया है। प्रेषक द्वारा संदेश प्रसारित करना केवल आधा कार्य है; संचार तभी सफल माना जाता है जब प्राप्तकर्ता उस संदेश का सही कूटवाचन करे और उसे उसी रूप में समझे जैसा प्रेषक चाहता था। इसके लिए प्रतिपुष्टि की भी आवश्यकता होती है ताकि यह पुष्टि हो सके कि संदेश सही ढंग से पहुँच गया है। प्रभावी संचार का अंतिम मापदंड समान समझ का निर्माण करना है।

234. (A) उनके कार्य विवरण के आधार पर नेता के साथ एक औपचारिक, कम-विश्वास वाला संबंध।
नेता-सदस्य विनिमय सिद्धांत के अनुसार, 'आउट-ग्रुप' के सदस्यों के साथ नेता का संबंध केवल औपचारिक होता है। ये अधीनस्थ अपने कार्य विवरण में दी गई अनिवार्यताओं से अधिक काम नहीं करते और नेता से उन्हें कम समर्थन प्राप्त होता है। नेता और इन सदस्यों के बीच आपसी विश्वास और व्यक्तिगत अंतःक्रिया का स्तर निम्न होता है। इसके विपरीत, 'इन-ग्रुप' के सदस्यों के साथ नेता के संबंध गहरे और सहयोगी होते हैं। यह सिद्धांत संगठनात्मक गतिशीलता में व्यक्तिगत संबंधों के कारण होने वाले विभेदीकरण को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

235. (D) संवेदी अभाव
संवेदी अभाव का तात्पर्य उन परिस्थितियों से है जहाँ व्यक्ति को सामान्य रूप से प्राप्त होने वाली संवेदी उत्तेजनाओं से वंचित कर दिया जाता है। मानव मस्तिष्क को स्वस्थ रहने और वास्तविकता का सही बोध बनाए रखने के लिए उत्तेजना के एक निश्चित स्तर की आवश्यकता होती है। जब यह उत्तेजना नहीं मिलती, तो मस्तिष्क असामान्य व्यवहार प्रदर्शित करने लगता है, जैसे मतिभ्रम और तर्कशक्ति में कमी। संवेदी अभाव पर किए गए शोध यह स्पष्ट करते हैं कि हमारा पर्यावरण हमारे मानसिक संतुलन को बनाए रखने में एक सक्रिय और अपरिहार्य भूमिका निभाता है।

236. (B) आत्म-प्रभावकारिता और आत्म-सम्मान
नियमित शारीरिक व्यायाम के मनोवैज्ञानिक लाभों में आत्म-प्रभावकारिता और आत्म-सम्मान में वृद्धि अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब व्यक्ति व्यायाम के माध्यम से अपने शारीरिक लक्ष्यों को प्राप्त करता है, तो उसे अपनी क्षमताओं पर अटूट विश्वास होने लगता है। यह विश्वास जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी स्थानांतरित होता है, जिससे उसका समग्र आत्म-सम्मान बढ़ता है। व्यायाम के दौरान शरीर में उत्पन्न होने वाले रसायनों के साथ-साथ यह मानसिक उपलब्धि की भावना व्यक्ति को अधिक सशक्त और

न कि वर्तमान मूल्यांकन के बारे में। अतः, नेतृत्व की अवधारणा ही दी गई जोड़ियों में सबसे सही और सटीक रूप से सुमेलित है।

287. (A) व्यवहार और उपकरणों में बदलाव के माध्यम से दुर्घटनाओं की रोकथाम।
औद्योगिक सुरक्षा अनुसंधान का मुख्य ध्येय कार्यस्थल पर जोखिमों को न्यूनतम करना और एक सुरक्षित कार्य परिवेश सुनिश्चित करना है। इसके लिए दो प्रमुख रणनीतियाँ अपनाई जाती हैं: पहला, उपकरणों और मशीनों को अधिक सुरक्षित और मानवीय क्षमताओं के अनुकूल बनाना, और दूसरा, कर्मचारियों के व्यवहार में प्रशिक्षण के माध्यम से सुधार लाना। यह शोध दुर्घटनाओं के मूल कारणों का विश्लेषण करता है ताकि उन्हें भविष्य में होने से रोका जा सके। सुरक्षा केवल नियमों का पालन नहीं है, बल्कि यह व्यवहार और भौतिक परिवेश के बीच एक सक्रिय तालमेल का परिणाम है।

288. (B) अभिनव वातावरण
अभिनव संगठनात्मक वातावरण वह है जहाँ नए विचारों का स्वागत किया जाता है और कर्मचारियों को प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ऐसे वातावरण में लचीलापन अधिक होता है और प्रबंधन जोखिम लेने की प्रवृत्ति को विफलता के भय से ऊपर रखता है। कर्मचारी अपनी भूमिकाओं में स्वायत्तता महसूस करते हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता और समस्या-समाधान की क्षमता बढ़ती है। यह वातावरण उन संगठनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जो तेजी से बदलते बाजार में अपनी प्रासंगिकता बनाए रखना चाहते हैं। यहाँ सुधार और नवाचार को दैनिक कार्य संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा माना जाता है।

289. (D) I, II और III
कार्य असंतोष के परिणाम संगठन के लिए गंभीर हो सकते हैं। जब कर्मचारी अपने कार्य से खुश नहीं होते, तो वे अक्सर नौकरी छोड़ देते हैं, जिससे भर्ती की लागत बढ़ती है। असंतोष के कारण कर्मचारी काम से बचने के लिए बिना कारण अनुपस्थित रहने लगते हैं। इसके अतिरिक्त, वे अपने निर्धारित कर्तव्यों से परे जाकर दूसरों की मदद करना बंद कर देते हैं। ये सभी कारक मिलकर संगठन की उत्पादकता, कार्यक्षमता और समग्र कार्य संस्कृति को बुरी तरह प्रभावित करते हैं, जिससे विकास की गति धीमी हो जाती है। अतः संतोषजनक वातावरण आवश्यक है।

290. (A) समाप्ति
व्यवहार परिवर्तन के मॉडल में 'समाप्ति' वह अंतिम और आदर्श चरण है जहाँ व्यक्ति पूरी तरह से नए और स्वस्थ व्यवहार को अपना लेता है। इस अवस्था में, व्यक्ति को पुराने अस्वस्थ व्यवहार की ओर लौटने का कोई डर नहीं होता। नया व्यवहार अब उसकी पहचान और जीवनशैली का एक स्वाभाविक हिस्सा बन चुका होता है। यद्यपि रखरखाव के चरण में भी व्यवहार जारी रहता है, लेकिन समाप्ति का अर्थ है कि बदलाव अब स्थायी है और इसके लिए अब सचेत प्रयास या निरंतर संघर्ष की आवश्यकता नहीं रह गई है। यह पूर्ण परिवर्तन की स्थिति है।

291. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कार्मिक चयन में यथार्थवादी कार्य पूर्वावलोकन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब आवेदकों को नौकरी के केवल सकारात्मक पहलुओं के बजाय वास्तविक चुनौतियों की भी जानकारी दी जाती है, तो उनकी अपेक्षाएं यथार्थवादी होती हैं। इससे वे उम्मीदवार पहले ही हट जाते हैं जो उस कार्य परिवेश में स्वयं को असमर्थ पाते हैं। जो लोग नौकरी स्वीकार करते हैं, वे मानसिक रूप से तैयार होते हैं, जिससे भविष्य में उनके द्वारा नौकरी छोड़ने की संभावना काफी कम हो जाती है। अतः, पारदर्शिता और सटीक जानकारी संगठन की स्थिरता बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है।

292. (D) पर्यावरणीय मनोविज्ञान
पर्यावरणीय मनोविज्ञान एक अंतःविषय क्षेत्र है जो यह अध्ययन करता है कि भौतिक परिवेश और मानवीय व्यवहार के बीच कैसी अंतःक्रिया होती है। शोर, प्रदूषण और जनसंख्या घनत्व जैसे कारक पर्यावरणीय तनाव कारक कहलाते हैं क्योंकि वे हमारे मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं। यह क्षेत्र न केवल इन प्रभावों को समझता है, बल्कि ऐसे वातावरण को डिजाइन करने के उपाय भी सुझाता है जो मानवीय कल्याण के अनुकूल हों। यह क्षेत्र निर्मित शहरों और प्राकृतिक परिवेश दोनों के मनोवैज्ञानिक महत्व को रेखांकित करता है, जिससे जीवन की गुणवत्ता में सुधार संभव है।

293. (C) पुष्टिकरण पूर्वाग्रह
पुष्टिकरण पूर्वाग्रह निर्णय लेने में एक सामान्य त्रुटि है जहाँ व्यक्ति केवल उन सूचनाओं पर ध्यान देता है जो उसके मौजूदा विश्वासों या निर्णयों का समर्थन करती हैं। साथ ही, वह उन सूचनाओं को नजरअंदाज कर देता है जो उसके विचारों के विपरीत होती हैं। इसके कारण व्यक्ति एक तरफा और पक्षपाती निर्णय लेता है, जिससे उसकी वस्तुनिष्ठता समाप्त हो जाती है। यह पूर्वाग्रह न केवल व्यक्तिगत निर्णयों को बल्कि संगठनात्मक नीतियों को भी प्रभावित कर सकता है, क्योंकि यह सत्य की खोज करने के बजाय केवल स्वयं को सही साबित करने पर केंद्रित होता है।

294. (B) भविष्य के लिए एक सम्मोहक दृष्टि बनाना और उसे स्पष्ट करना।
नेतृत्व का सबसे महत्वपूर्ण कार्य संगठन को एक दिशा प्रदान करना और भविष्य की संभावनाओं को रेखांकित करना है। एक प्रभावी नेता केवल वर्तमान कार्यों के प्रबंधन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह एक ऐसी प्रेरक दृष्टि विकसित करता है जो अनुयायियों को प्रेरित कर सके। इस दृष्टि को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करना और दूसरों को इसके प्रति उत्साहित करना ही नेतृत्व की वास्तविक सफलता है। जब कर्मचारियों को पता होता है कि वे किस बड़े लक्ष्य के लिए कार्य कर रहे हैं, तो उनकी प्रतिबद्धता और प्रदर्शन में स्वतः ही उल्लेखनीय वृद्धि होती है जो लाभ पहुँचाती है।

295. (D) एक नई उत्पाद श्रृंखला विकसित करना
कार्मिक चयन की प्रक्रिया पूरी तरह से संगठन के लिए सही मानवीय पूंजी प्राप्त करने पर केंद्रित होती है। इसका मुख्य लक्ष्य आवेदकों की योग्यताओं का परीक्षण करना, भविष्य

में उनके कार्य प्रदर्शन की सटीक भविष्यवाणी करना और यह सुनिश्चित करना है कि व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषताएं संगठन की संस्कृति के साथ मेल खाती हैं। नई उत्पाद श्रृंखला विकसित करना एक व्यावसायिक रणनीति और नवाचार का हिस्सा है, जो विपणन विभाग के अंतर्गत आता है। कार्मिक चयन केवल इस बात से संबंधित है कि उन उत्पादों को विकसित करने के लिए सही लोग संगठन में उपस्थित हों।

296. (A) संगठन में सुरक्षा के महत्व के बारे में साझा मूल्यों और धारणाओं को।
सुरक्षा वातावरण एक मनोवैज्ञानिक ढांचा है जो यह दर्शाता है कि कर्मचारी सुरक्षा को संगठन के भीतर कितनी प्राथमिकता मिलते हुए देखते हैं। यह केवल लिखित नियमों के बारे में नहीं है, बल्कि यह इस बारे में है कि कार्य वास्तव में कैसे होता है। जब प्रबंधन और कर्मचारी सुरक्षा को एक साझा जिम्मेदारी और मूल मूल्य के रूप में अपनाते हैं, तो असुरक्षित व्यवहार कम हो जाते हैं। यह वातावरण कर्मचारियों को सचेत रहने, गलतियों की रिपोर्ट करने और एक-दूसरे की भलाई सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित करता है, जो दुर्घटना रोकथाम का सबसे सुदृढ़ आधार है।

297. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
कार्य संतोष केवल एक तार्किक मूल्यांकन नहीं है, बल्कि यह एक जटिल अभिवृत्ति है। इसमें संज्ञानात्मक घटक (कार्य के बारे में कर्मचारी के विश्वास) और भावात्मक घटक (कार्य के प्रति उसकी भावनाएं) दोनों गहराई से अंतर्निहित होते हैं। कर्मचारी केवल यह नहीं सोचता कि उसका वेतन कितना है, बल्कि वह यह भी महसूस करता है कि उसे काम पर कैसा अनुभव होता है। ये दोनों मिलकर उसकी समग्र संतुष्टि का निर्माण करते हैं। अतः, कार्य संतोष को समझने के लिए मानसिक और भावनात्मक दोनों प्रतिक्रियाओं का सूक्ष्म विश्लेषण करना आवश्यक एवं अनिवार्य है।

298. (A) खिलाड़ियों के प्रदर्शन और व्यक्तिगत विकास को बढ़ाने के लिए।
खेल मनोविज्ञान का मूल ध्येय मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को खेल के मैदान पर लागू करना है। इसका प्राथमिक उद्देश्य खिलाड़ियों को उनके प्रदर्शन की मानसिक बाधाओं, जैसे चिंता और एकाग्रता की कमी, को दूर करने में सहायता करना है। इसके साथ ही, यह खिलाड़ी के समग्र व्यक्तित्व विकास, मानसिक दृढ़ता और मनोवैज्ञानिक कल्याण पर भी ध्यान केंद्रित करता है। खेल मनोवैज्ञानिक खिलाड़ियों को दबाव में शांत रहने और विफलता से सीखने के कौशल सिखाते हैं। यह दृष्टिकोण खिलाड़ी को केवल एक मशीन के रूप में नहीं, बल्कि एक संपूर्ण मानवीय व्यक्तित्व के रूप में विकसित करता है।

299. (D) औपचारिक, नीचे की ओर
एक प्रबंधक द्वारा अपने अधीनस्थों को भेजा गया ज्ञापन संगठन के आधिकारिक पदानुक्रम का हिस्सा है, इसलिए इसे औपचारिक संचार माना जाता है। चूंकि सूचना उच्च पद से निम्न पद की ओर प्रवाहित हो रही है, इसलिए इसकी दिशा नीचे की ओर है। इस प्रकार के संचार का उपयोग मुख्य रूप से कंपनी की नई नीतियों को बताने, निर्देश देने, लक्ष्य निर्धारित करने और प्रदर्शन पर प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए किया जाता है। यह संगठनात्मक अनुशासन और स्पष्टता बनाए रखने के लिए एक अनिवार्य माध्यम है जो लिखित साक्ष्य के रूप में कार्य करता है और भ्रम मिटाता है।

300. (B) संवेदी अभाव
संवेदी अभाव एक ऐसी स्थिति है जहाँ किसी व्यक्ति को उसके पर्यावरण से प्राप्त होने वाली सामान्य उत्तेजनाओं से वंचित कर दिया जाता है। मानवीय मस्तिष्क को सामान्य संज्ञानात्मक कार्यक्षमता और मानसिक स्थिरता बनाए रखने के लिए बाहरी उत्तेजनाओं के निरंतर प्रवाह की आवश्यकता होती है। जब ये उत्तेजनाएं न्यूनतम हो जाती हैं, तो व्यक्ति का मानसिक संतुलन बिगड़ने लगता है, जिससे मतिभ्रम और एकाग्रता की हानि होती है। यह स्थिति प्रमाणित करती है कि पर्यावरण न केवल हमें सूचना प्रदान करता है, बल्कि यह हमारे मानसिक स्वास्थ्य का एक अपरिहार्य एवं सक्रिय कारक भी है।

Nodia Editions LLP

125, Sector 6, Vidhyadhar Nagar, Jaipur 302039

MRP ₹ 620.00